

प्रासङ्गिक



श्रीमन्महाप्रभु श्रीवल्लभाधीश की प्रेरणा मे आज से पाच वर्ष पूर्व हमने प्रस्तुत ग्रन्थकी प्रथम आवृत्ति 'अप्रवाल प्रेम' मयुग मे प्रकाशित की थी । उस समय यमजो एव प्रकाशनों पर मरस्वर का कठोर नियन्त्रण था । उसके फल स्वरूप हम को काफी मार्च के बाद भी बड़ी मुश्किल से प्रस्तुत ग्रंथ के प्रकाशन की स्वीकृति प्राप्त हुई थी और वह भी केवल ८८० पृष्ठों में ही । इन पृष्ठों में ये वार्ताएँ वदिक टाइपों में प्रथम में प्राप्त ११६ पदों के पूरे उद्धरणों के साथ छपना सर्वथा असभव था । इसलिए ८० वार्ताओं को वदिक टाइपों में छाप कर शेष अष्टछाप की वृहद् चार वार्ताओं को छोटे टाइपों में लेना आवश्यक हो गया था । और पदों का भी मिर्फ प्रारम्भिक अंश दे करही हमें सतोप मानना पडा था । पदों को पूरे नहीं देने में एक कारण और भी था और वह ग्रन्थ की अनेक 'सूचियाँ' एवं 'परिचय' आदि की वृहद् प्रस्तावना देना भी । हमारा यह प्रकाशन-प्रयाम केवल साहित्यिक दृष्टि से हुआ था, इसलिए हिन्दी साहित्य-क्षेत्र में इन वार्ताओं की प्रामाणिकता एवं प्राचीनता का ज्ञान कराना हमारे लिये अत्यावश्यक था । उसके लिये अनेक 'सूचियाँ' ग्रन्थ परिचय' आदि विस्तृत निचय देने भी अपेक्षित थे । हमें सतोप है कि हम हमारे प्रयत्न से हिन्दी साहित्य के उच्च कोटि के तटस्थ विद्वानोंने ८४ वार्ताओं की प्रामाणिकता स्वीकार कर ली है और विरोध पक्ष के अनेक तर्कों को निरूपयोगी भी मान लिया है । इधर सम्प्रदाय में, पूरे पद न दे सकने की हमारी विवशता का अन्यथा प्रचार भी हुआ । साथ में उसकी बहुमूल्य कीमत का भी उस अन्यथा प्रचार में उपयोग किया गया था । पूर्ण पदों को न देने का कारण तो हम ऊपर कह आए ही हैं अतः कीमत के विषय में भी हम कुछ स्पष्ट शब्दों में कह देना चाहते हैं । हमारे सभी प्रकाशन प्रचारार्थ ही होते हैं, उसमें स्वस्वार्थ साधने की व्योपारी-भावना सर्वथा नहीं होती है । फिर भी प्रकाशन बहुमूल्य होता है उसके कई कारण हैं, जिनमेंसे मुख्य ये हैं-१ हमारे प्रकाशन डेढ, दो हजार से ज्यादा नहीं छपते हैं २ प्रकाशनों के कागज आदि उत्तमोत्तम होते हैं । ३ चित्रों आदि का व्यय भी काफी होता है, ४ पुस्तक उपलब्धि, सपादन आदि में भी काफी खर्च होता है, ५ हिन्दी साहित्य में प्रचारार्थ १०० से अधिक पुस्तकें बिना मूल्य दी जाती हैं । ऐसे कई कारणों से इन प्रकाशनों की बहुमूल्यता समझ में आ सकती है । यह भी स्पष्ट कह देना आवश्यक है कि इन ग्रंथों की विक्री के द्रव्य को श्रीमद् भागवत की वृत्ति के समान ही हम निषिद्ध समजते हैं । अतः यह हमारे उपयोग का नहीं है । हमने जिस योजना से इस कार्य को प्रारंभ किया है वह पूर्ण होने पर इसका शेष द्रव्य 'अष्टछाप स्मारक-समिति' को सौंप दिया जायगा जिसमेंसे 'सुधा' प्रकाशित होती रहेगी । हम ऐसी भूल करना सर्वथा नहीं चाहते कि विक्री के इस तुच्छ द्रव्य के बदले में हमारी अपनी असाधारण मूल्यवान् भगवद् भावजनक सेवा का बलिदान दे । अस्तु

हिन्दी, गुजराती सम्मिलित इस-संस्करण के प्रकाशन का कारण भी हमें स्पष्ट कर देना आवश्यक है, जिससे किसी के हृदय में हरिफाई आदि का भी भ्रम न हो ।

पांच वर्षों में हमारा प्रथम सस्करण विशेषतः गुजरात के साम्प्रदायिक जगत में ही समाप्त हुआ तब हिन्दी साम्प्रदायिक जगत में इनकी मांग बढ़ी। इसलिये हिन्दी में इसके द्वितीय सस्करणकी आवश्यकता प्रतीत हुई। इधर कई एक प्रतिष्ठित व्रजभाषा के अध्ययनशील गुजराती व्यक्तिओंने इसके अध्ययनात्मक अविकल गुजराती अनुवाद की भी जोरोंसे मांग की। इसलिये हमको उसका अविकल गुजराती अनुवाद करना पडा और उसके साथ ही उसे सयुक्त रूपमें प्रकाशित करना भी आवश्यक हुआ। इस अध्ययनात्मक अविकल अनुवाद में सबसे बड़ी मुश्किली उसकी भाषा की है। मूल व्रजभाषा की वार्ताएँ प्रधानतः वातचीत की ग्राम्य व्रजभाषा है। अतः मूलवार्ता में कई वाक्य अपूर्ण भी मिलते हैं।

इन अपूर्ण वाक्यों को तो कौंस के शब्दों से पूर्ण कर लिया जा सकता है और कर भी दिया है। किंतु उसके अविकल गुजराती अनुवाद की भाषा में गुजराती भाषा का प्रौढ रूप नहीं आ सकता है। जैसा कि प्रायः प्रत्येक वाक्य मूल में 'सो' से प्रारभ होता है जिसका गुजराती अर्थ 'ते' होता है। वेर वेर यह 'सो' ('ते') का आना भाषा के प्रौढ रूप को आच्छादित कर देता है। अतः भाषाविज्ञान के आधुनिक विद्वानों को यह कंकर की तरह अखरेगा। फिर भी अविकल अनुवाद में उसको छोडा नहीं जा सकता है। अतः पाठकों को चाहिए कि उसके उच्चारण के समय उस पर कम भार देकर वाचे। क्योंकि हम पहले ही कह आए है कि ये वार्ताएँ वातचीत की भाषा में हैं। अतः उसमें 'तकिया कलाम' की तरह 'सो' का प्रयोग कई स्थानों पर हुआ है। इसी प्रकार अन्य भी स्थानों में कई अप्रचलित प्राचीन रूपों के कारण भी अविकल अनुवाद की गुजराती भाषा प्रौढ एवं मनोहर नहीं हो सकती है, जैसा कि 'श्रीआचार्यजी आपु कहे' इसका गुजराती अविकल अनुवाद 'श्रीआचार्यजी पोते कहे' होता है। जहा यह वाक्य वर्तमानकाल के लिये प्रयुक्त हुआ है वहा तो उक्त अनुवाद ठीक ही रहेगा किंतु जहा यही वाक्य भूतकाल में आया है वहा उसका अनुवाद 'श्रीआचार्यजी पोते कहुं' अथवा श्रीआचार्यजी (ए) पोते कहु' ऐसा ही करना होगा। किंतु इससे प्राचीन व्रजभाषा का वह स्वारस्य प्रकट नहीं होता है जो मूल के पढने से हृदय में भाव रूप से शात होता है। इस प्रकार अन्य भी कई स्थलों में अविकल अनुवाद से भाषा का प्रौढ रूप नहीं आ सका है। फिर भी जहा तक हो सका है हम मूल से दूर नहीं गए हैं। अनुवाद में भी हमारा उद्देश्य वार्ताकार की भाषा, शब्द, भाव, शैली से जहां तक हो सके दूर या विमुख न होना ही रहा है। क्योंकि मूल वार्ता महानुभावों की वाणी होने से हृदय में भावों को प्रकट करने में एवं उसके रसास्वाद को लेने में विद्युत के 'करंट' के समान कार्य करती है। अतः उस करंट को गुजराती अनुवाद में भी जहां तक हो सका है छोडा नहीं गया है। इसी प्रकार जहा तक हो सका है अर्थ समझाने के लिये भी अपने घर के शब्द नहीं मिलाये हैं, जहा अपने घर के शब्द धरने आवश्यक प्रतीत हुए वहाँ कौंस में वा पृथक् विवेचन रूप से उन्हें पादट्रीप में ही रखे हैं। इसी प्रकार प्राकृत शब्दों को भी जहा तक हो सका है नहीं आने दिया है। 'साम्प्रदायिक भाषा' एवं शब्दों की जहां तक हो सका है रक्षा ही की है। इस प्रकार हमने यथावुद्धि अध्ययनात्मक अविकल अनुवाद की दृष्टि से इस गुजराती अनुवाद को प्रकाशित किया है। इसीलिये हमने गुजराती एवं व्रजभाषा के दो मित्र ग्रंथ नहीं किये हैं। फिर भी कीमत प्रथम आवृत्ति से भी कम रु १०) ही रखी है।

यहा यह भी कह देना आवश्यक है कि हमने प्रथम केवल गुजराती अनुवाद की जाहिरात की थी जिसका मूल्य प्रथम से रु. ३) और पीछे से रु ५) जाहिर किया था। अतः जिन महानुभावों ने प्रारंभ से रु. ३) दिया है उनको अब सिर्फ ५) ही देने होंगे। यदि उनको यह सम्मिलित सस्करण की अपेक्षा न हो तो वे अपने रुपए वापिस भी ले सकते हैं।

प्रासङ्गिक



श्रीमन्महाप्रभु श्रीवल्लभाधीश की प्रेरणा से आज से पांच वर्ष पूर्व हमने प्रस्तुत ग्रंथकी प्रथम आवृत्ति 'अग्रवाल प्रेस' मथुरा से प्रकाशित की थी। उस समय कागजो एवं प्रकाशनों पर सरकार का कठोर नियंत्रण था। उसके फल स्वरूप हम को काफी खर्च के बाद भी बड़ी मुश्किल से प्रस्तुत ग्रंथ के प्रकाशन की स्वीकृति प्राप्त हुई थी और वह भी केवल ८८० पृष्ठों में ही। इन पृष्ठों में ये वार्ताएँ वहिक टाइपों में ग्रंथ में प्राप्त ११६ पदों के पूरे उद्धरणों के साथ छपना सर्वथा असभव था। इसलिये ८० वार्ताओं को वहिक टाइपों में छाप कर शेष अष्टछप की बृहद् चार वार्ताओं को छोटे टाइपों में लेना आवश्यक हो गया था। और पदों का भी सिर्फ प्रारंभिक अंश दे कर ही हमें सतोष मानना पड़ा था। पदों को पूरे नहीं देने में एक कारण और भी था और वह ग्रंथ की अनेक 'सूचियाँ' एवं 'परिचय' आदि की बृहद् प्रस्तावना देना भी। हमारा यह प्रकाशन-प्रयास केवल साहित्यिक दृष्टि से हुआ था, इसलिये हिन्दी साहित्य-क्षेत्र में इन वार्ताओं की प्रामाणिकता एवं प्राचीनता का ज्ञान कराना हमारे लिये अत्यावश्यक था। उसके लिये अनेक 'सूचियाँ' ग्रंथ परिचय' आदि विस्तृत निबन्ध देने भी अपेक्षित थे। हमें सतोष है कि इस हमारे प्रयत्न से हिन्दी साहित्य के उच्च कोटि के तटस्थ विद्वानोंने ८४ वार्ताओं की प्रामाणिकता स्वीकार कर ली है और विरोध पक्ष के अनेक तर्कों को निरुपयोगी भी मान लिया है। इधर सम्प्रदाय में, पूरे पद न दे सकने की हमारी विवशता का अन्यथा प्रचार भी हुआ। साथ में उसकी बहुमूल्य कीमत का भी उस अन्यथा प्रचार में उपयोग किया गया था। पूर्ण पदों को न देने का कारण तो हम ऊपर कह आए ही हैं अतः कीमत के विषय में भी हम कुछ स्पष्ट शब्दों में कह देना चाहते हैं। हमारे सभी प्रकाशन प्रचारार्थ ही होते हैं, उसमें स्वस्वार्थ माधने की व्योपारी-भावना सर्वथा नहीं होती है। फिर भी प्रकाशन बहुमूल्य होता है उसके कई कारण हैं, जिनमेंसे मुख्य ये हैं- १ हमारे प्रकाशन डेढ़, दो हजार से ज्यादा नहीं छपते हैं २ प्रकाशनों के कागज आदि उत्तमोत्तम होते हैं। ३ चित्रों आदि का व्यय भी काफी होता है, ४ पुस्तक उपलब्धि, संपादन आदि में भी काफी खर्च होता है, ५ हिन्दी साहित्य में प्रचारार्थ १०० से अधिक पुस्तकें बिना मूल्य दी जाती हैं। ऐसे कई कारणों से इन प्रकाशनों की बहुमूल्यता समझ में आ सकती है। यह भी स्पष्ट कह देना आवश्यक है कि इन ग्रंथों की विक्री के द्रव्य को श्रीमद् भागवत की वृत्ति के समान ही हम निषिद्ध समझते हैं। अतः यह हमारे उपयोग का नहीं है। हमने जिस योजना से इस कार्य को प्रारंभ किया है वह पूर्ण होने पर इसका शेष द्रव्य 'अष्टछाप स्मारक-समिति' को सौंप दिया जायगा जिसमेंसे 'सुधा' प्रकाशित होती रहेगी। हम ऐसी भूल करना सर्वथा नहीं चाहते कि विक्री के इस तुच्छ द्रव्य के बदले में हमारी अपनी असाधारण मूल्यवान् भगवद् भावजनक सेवा का बलिदान दे। अस्तु

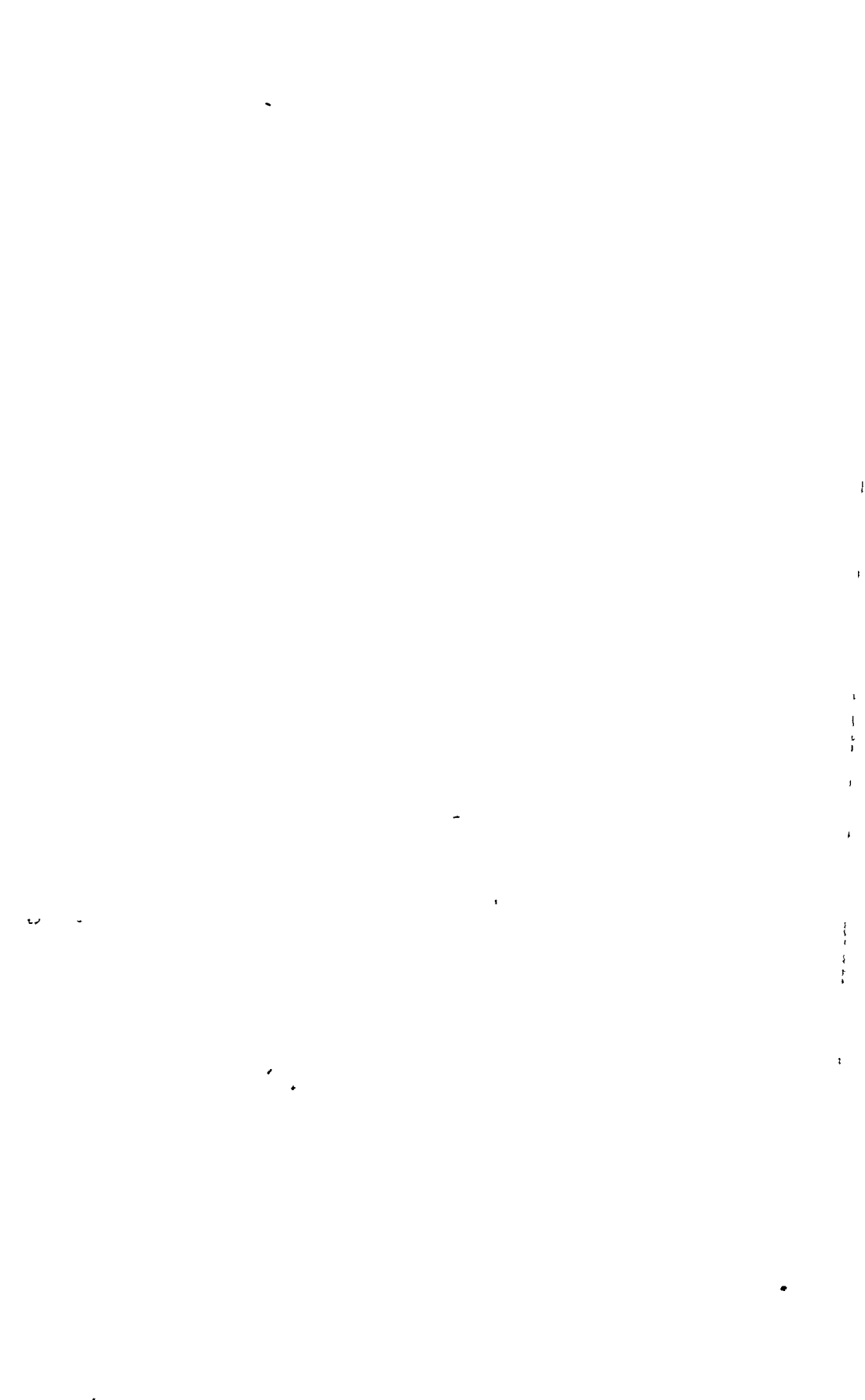
हिन्दी, गुजराती सम्मिलित इस-संस्करण के प्रकाशन का कारण भी हमें स्पष्ट कर देना आवश्यक है, जिससे किसी के हृदय में हरिफाई आदि का भी भ्रम न हो।

पांच वर्षों में हमारा प्रथम संस्करण विशेषतः गुजरात के साम्प्रदायिक जगत में ही समाप्त हुआ तब हिन्दी साम्प्रदायिक जगत में इनकी मांग बढ़ी। इसलिये हिन्दी में इसके द्वितीय संस्करणकी आवश्यकता प्रतीत हुई। इधर कई एक प्रतिष्ठित ब्रजभाषा के अध्ययनशील गुजराती व्यक्तिओंने इसके अध्ययनात्मक अविकल गुजराती अनुवाद की भी जोरोंसे मांग की। इसलिये हमको उसका अविकल गुजराती अनुवाद करना पड़ा और उसके साथ ही उसे संयुक्त रूपमें प्रकाशित करना भी आवश्यक हुआ। इस अध्ययनात्मक अविकल अनुवाद में सबसे बड़ी मुश्किली उसकी भाषा की है। मूल ब्रजभाषा की वार्ताएँ प्रधानतः वातचीत की ग्राम्य ब्रजभाषा है। अतः मूलवार्ता में कई वाक्य अपूर्ण भी मिलते हैं।

इन अपूर्ण वाक्यों को तो कौंस के शब्दों से पूर्ण कर लिया जा सकता है और कर भी दिया है। किंतु उसके अविकल गुजराती अनुवाद की भाषा में गुजराती भाषा का प्रौढ रूप नहीं आ सकता है। जैसा कि प्रायः प्रत्येक वाक्य मूल में 'सो' से प्रारंभ होता है जिसका गुजराती अर्थ 'ते' होता है। वेर वेर यह 'सो' ('ते') का आना भाषा के प्रौढ रूप को आच्छादित कर देता है। अतः भाषाविज्ञान के आधुनिक विद्वानों को यह कंकर की तरह अखरेगा। फिर भी अविकल अनुवाद में उसको छोड़ा नहीं जा सकता है। अतः पाठकों को चाहिए कि उसके उच्चारण के समय उस पर कम भार देकर वाचे। क्योंकि हम पहले ही कह आए हैं कि ये वार्ताएँ वातचीत की भाषा में हैं। अतः उममें 'तकिया कलाम' की तरह 'सो' का प्रयोग कई स्थानों पर हुआ है। इसी प्रकार अन्य भी स्थानों में कई अप्रचलित प्राचीन रूपों के कारण भी अविकल अनुवाद की गुजराती भाषा प्रौढ एवं मनोहर नहीं हो सकती है, जैसा कि 'श्रीआचार्यजी आपु कहे' इसका गुजराती अविकल अनुवाद 'श्रीआचार्यजी पोते कहे' होता है। जहां यह वाक्य वर्तमानकाल के लिये प्रयुक्त हुआ है वहां तो उक्त अनुवाद ठीक ही रहेगा किंतु जहां यही वाक्य भूतकाल में आया है वहां उसका अनुवाद 'श्रीआचार्यजी पोते कहुं' अथवा 'श्रीआचार्यजी (ए) पोते कहु' ऐसा ही करना होगा। किंतु इससे प्राचीन ब्रजभाषा का वह स्वाग्य प्रकट नहीं होता है जो मूल के पढ़ने से हृदय में भाव रूप से ज्ञात होता है। इस प्रकार अन्य भी कई स्थलों में अविकल अनुवाद से भाषा का प्रौढ रूप नहीं आ सका है। फिर भी जहां तक हो सका है हम मूल से दूर नहीं गए हैं। अनुवाद में भी हमारा उद्देश्य वार्ताकार की भाषा, शब्द, भाव, शैली से जहां तक हो सके दूर या विमुख न होना ही रहा है। क्योंकि मूल वार्ता महानुभावों की वाणी होने से हृदय में भावों को प्रकट करने में एव उसके रसास्वाद को लेने में वियुक्त के 'करंट' के समान कार्य करती है। अतः उस करंट को गुजराती अनुवाद में भी जहां तक हो सका है छोड़ा नहीं गया है। इसी प्रकार जहां तक हो सका है अर्थ समझाने के लिये भी अपने घर के शब्द नहीं मिलाये हैं, जहां अपने घर के शब्द धरने आवश्यक प्रतीत हुए वहाँ कौंस में वा पृथक् विवेचन रूप से उन्हें पादटीप में ही रखे हैं। इसी प्रकार प्राकृत शब्दों को भी जहां तक हो सका है नहीं आने दिया है। 'साम्प्रदायिक भाषा' एवं शब्दों की जहां तक हो सका है रक्षा ही की है। इस प्रकार हमने यथावुद्धि अध्ययनात्मक अविकल अनुवाद की दृष्टि से इस गुजराती अनुवाद को प्रकाशित किया है। इसीलिये हमने गुजराती एवं ब्रजभाषा के दो सिद्ध ग्रंथ नहीं किये हैं। फिर भी कीमत प्रथम आवृत्ति से भी कम रु १०) ही रखी है।

यहां यह भी कह देना आवश्यक है कि हमने प्रथम केवल गुजराती अनुवाद की जाहिरात की थी जिसका मूल्य प्रथम से रु. ३) और पीछे से रु ५) जाहिर किया था। अतः जिन महानुभावों ने प्रारंभ से रु. ३) दिया है उनको अब सिर्फ ५) ही देने होंगे। यदि उनको यह सम्मिलित संस्करण की अपेक्षा न हो तो वे अपने रूपए वापिस भी ले सकते हैं।

પૃષ્ઠ	પંક્તિ	અશુદ્ધ	શુદ્ધ
૬૬	૧૮	હું લૌકિક છે	હું લૌકિક છું
૭૨	૨૧	પધરાવી લાભ્યા (પહેલા)	પધરાવી લાભ્યા, પ્રીતિ પૂર્વક સેવા કરવા લાભ્યા (પહેલા)
૭૬	૨૨	એક કામ હતો	એક કામ હતું.
૮૯	૨૨	સાત્વિક ભક્ત છે.	સાત્વિક ભક્ત છે પદ્મનાભદ્રાસની આજ્ઞામાં તત્પર છે
૯૨	૨૧	તે તુલકાનો વૈષ્ણવ પર	તે તુલકાનું વૈષ્ણવ પર
૧૧૩	૨૪	ચાલીને જતા.	ચલાવીને જતા
૧૨૫	૧૭	બધાને ઉત્તર મળ્યો.	બધાને ઉત્તર મળ્યો.
૧૩૨	૨૮	શ્રીગુસાંધજી ભગવદીયના ગુન..કહે	શ્રીગુસાંધજીએ ભગવદીયના ગુણ કહ્યાં.
૧૫૧	૧૯	દોઢ ગઠ પરન્તુ	દોઢ ગઠ, સઘ્ન રહ્યા પરન્તુ
૧૫૧	૨૧	યદ્યપિ એ જલ	યદ્યપિ એમણે જલ
૧૬૭	૩૧	પ્રભુજીદ્વારા થશે	પ્રભુજીની દ્વારા થાય
૧૮૨	૧૫	સેવા નથી કરી	સેવા ન કરી.
૧૯૩	૨૦	શ્રીનવનીત પ્રિયજી પણ રોકે નહીં	શ્રીનવનીતપ્રિયજીએ પણ રોક્યા નહીં.
૨૨૨	૨૩	(લહેરીયા દાર પાઘ)	(જરીની પાઘ)
૨૩૨	૩૦	સુકુંદલસે કહી	સુકુંદલસે કહ્યું.
૨૩૪	૧૬	બતાવે છે	બતાવીએ છીએ
૨૪૬	૨૯	વ્રજનું સ્વરૂપ દેખાડે	વ્રજનું સ્વરૂપ દેખાડયું
૨૬૨	૩૧	તેજ પ્રકારે	તેમજ
૩૦૭	૨૨	સેવા કરે	સેવા કરે
૩૦૮	૨૭	હતો, અષ્ટભુજજી	હતું. અષ્ટભુજજી
૩૧૭	૨૨	ગોપાલદાસે પદ્મારાવલને	ગોપાલદાસને પદ્મારાવલે
૩૨૧	૩૦	પુરુષોત્તમ જ્ઞેશીને કહ્યું	પુરુષોત્તમ જ્ઞેશીની વહુને કહ્યું.
૩૩૯	૨૭	વેપથી તેમજ તે ઝાડ	વેપથી તેજ પ્રકારે તે ઝાડ
૩૪૨	૨૮	વૈષ્ણવ થાય તો	વૈષ્ણવ થઈએ તો
૪૨૪	૨૫	ભંડારમાં દે છે	ભંડા માં દઉં છું
૪૨૪	૨૮	વાસુદેવદાસને કર્યા હશે	વાસુદેવદાસે કર્યા હશે
૪૪૩	૩૦	એમનું શરીર	એમનાં શરીર
૪૪૯	૩૧	આપ પધારે ?	આપ પધાર્યા ?
૪૮૦	૨૯	જે ખીન્ન પ્રકારે	જે ખીન્ન પ્રકારે
૪૮૪	૨૮	એ રહે છે કે	એ રહે કે
૫૦૩	૨૦	ખીન્ને થાન પણ	અને થાન પણ



चौरासी वैष्णवन की वार्ता



शे. श्री. आलाखाने दामोदरदास (अमदावाद.)

(७-म संपत १९५४ आभो वद ३)

શેઠ શ્રી બાલાભાઈ દામોદરદાસ

સ્થળ : અમદાવાદ.

જન્મ : સં. ૧૯૧૪ આસો વદ ૩.

કેળવણી : મેટ્રિક પાસ.

ગુરુદેવ : નિ. ગો. શ્રી મટુલાલ મહારાજશ્રી.

જીવનની મહત્વની વિગત :-તેમના પિતાશ્રી દામોદરદાસ મહોલલાલ એક શરાફને ત્યાં મુનીમગીરી કરતા હતા તેમના માતાજીનું નામ મહાકોરબાઈ હતું. રા. બા. રણુછોડલાલ છોટાલાલ, શેઠ પ્રેમાભાઈ હીમાભાઈ, શ્રી અચરતલાલ ગિરધરલાલની સાથે તેઓને સારી મિત્રતા હતી. અમેરીકા, ઇંગ્લેંડ વગેરેથી ૩ ના લવ મંગાવી તેઓ વ્યાપાર કરતા. આથી આ મડળી 'શોધન' ના નામથી ઓળખાતી આજે તેના કુળની એક અટક છે પિતાજીના સ્વર્ગવાસ બાદ તેઓ ૩ ૨૫-૦-૦ ના માસિક પગારથી શાહપુર મીલમાં સ્ટોરકીપરની નોકરી પર રહ્યા ૩. ૫૦ ના પગારથી માધુસાઈ મીલમાં સેલ્સમેન તરીકે જોડાયા. સાહસિક વૃત્તિથી મધ્યમ સ્થિતિમાં હોવા છતાં શેઠ મંગળદાસ ગિરધરદાસની ભાગીદારીમાં 'ધી આર્યોદય સ્પીનીંગ એન્ડ વીવીંગ મીલ્સની' સ્થાપના કરી તેના એજન્ટસ તરીકે મંગળદાસ એન્ડ બાલાભાઈની કું. ના નામથી શરૂઆત કરી વ્યાપારી કુનેદથી આ મીલ આજે પણ સારી ચાલે છે.

સને ૧૯૦૫ માં પોતાના પુત્ર સાકરલાલ બાલાભાઈની કું. એજન્ટસના નામથી " ધી સારંગપુર કોટન મે. કા. લી. " એ નામની મીલ ઉભી કરી સારંગપુર મીલ નં. ૧ ઉભી કરી. સને ૧૯૨૨ માં ધી સીલ્વર કોટન મીલ્સના એજન્ટસ ગોપાલભાઈ બાલાભાઈની કું. એ નામથી મીલની સ્થાપના કરી બીજી કેટલીક મીલોમાં તેઓ ડાયરેક્ટર છે. ૯૪ વર્ષની ઉંમરે પણ તેઓ મીલમાં જાય છે. કામકાજનું ધ્યાન રાખે છે. દરરોજ શ્રી ગુણાંબજીની ખેડકે અસારવા તથા સાંજે શ્રી નટવરલાલ શ્યામલાલના મંદિરે દર્શન કરવા જાય છે. મથુરામાં ૨૫ વર્ષ ઉપર ૩. ૮૦૦૦૦) ના ખર્ચે " દામોદરજીવન " નામની ધર્મશાળા બંધાવી છે. કાંકરોલીમાં " મહાકોર જીવન " ધર્મશાળા બંધાવી છે. વ્રજમાં જતીપુરા શ્રી ગિરિરાજજીમાં મોતી મહેલમાં " કુંજ જીવન " નામે ધર્મશાળા બંધાવી છે.

સં ૧૯૪૪ માં વિ. ગો. શ્રી નટગોપાલજી બાવાશ્રીના યજ્ઞોપવિત પ્રરતાવમાં કમિટીના અધ્યક્ષ તરીકે રહ્યા હતા મંદિરના બાંધકામમાં તથા સેવાના કાર્યમાં અગ્રેસર રહ્યા હતા. સ્થાનિક વૈષ્ણવ મહાસભાના અધ્યક્ષ છે સાપ્રદાયિક ગ્રંથોમાં યથાશક્તિ મદદ કરે છે. જાહેર જીવનમાં ગુજરાત વૈશ્ય સભા, મીલ એનર્સ એસોસીએશન, મ્યુનીસીપાલિટીમાં રહી સેવા બજાવી છે. તેમના પત્ની રૂક્મણીબાઈની ઉંમર ૭૫ વર્ષની થઈ ત્યાં સુધી સાથે રહી તીર્થયાત્રાઓ કરતાં. તેમનું અલગ જીવનચરિત્ર છાપેલું છે.

શ્રી નાયદારા અને વ્રજની પત્નિકામાં રહીને બંને પતિ પત્ની કુટુંબ સહિત ધાર્મિક જીવન ગાળતાં પરીણામે તેમના પુત્ર પૌત્ર પુત્રીઓ મોતી બહેન, સમરથ બહેન, શિવગંગા બહેન, પુત્રવધુ અ. સૌ ચ પા બહેન વગેરે સેવાપરાયણ જીવન ગાળે છે. પ્રભુને ભોગ ધરાવીને લે છે. સુખોધીનીજી વિગેરેના પ્રવચન સાંભળે છે. શરૂઆતમાં તેઓશ્રી સરયુદાસજી વગેરે મર્યાદામાર્ગીય ભક્તોના સમાગમમાં હતા. ૫ લ. ગો. શ્રી મનોહરદાસજી વગેરે મહાતુલાવી ભક્તોના સમાગમમાં આવતા

પુષ્ટિમાગીની અલૌકિક સિદ્ધિઓનું જ્ઞાન થયું અને પોષણ મલ્યું નિ. ગો. શ્રી મટુલ મહારાજે નાથદ્વારામાં આપને બ્રહ્મસબ્ધ આપ્યું હતું. શ્રી યમુના મહારાણીજી, ગો. શ્રી રણછોડલાલજી મહારાજ વિગેરેની કૃપાથી રોજ ચારથી પાંચ કલાક ધાર્મિક ગ્રંથો વાચે છે હરિ, ગુરૂ, વૈષ્ણવ પ્રત્યે સારી ભાવના સેવે છે. શરીર સપત્તિ સારી છે. યાદ શક્તિ સારી છે. સ્વભાવે બુદ્ધિશાળી, આનંદી અને મિલનસાર છે. ૮૪ વૈષ્ણવોની વાર્તાનું ભાવભાવના સાથેનું પુસ્તક પ્રકટ કરવા શ્રી દ્વારકાદાસ પરીખને ઘણી સારી આર્થિક મદદ કરી હતી

ખાસ શોખ : પુષ્ટિમાગીય પુસ્તકોનું વાંચન, સત્સંગ, રમતગમત,

લગ્ન : સ્વ રક્ષમણી બહેન.

સરનામું : એલિસબ્રિજ, પો. બો ન ૧૯, ટે. નં. ૭૦૦૫

પરિવારની નોંધ : એક પુત્ર શેઠ શ્રી સાકરલાલ બાલાભાઈ તથા પુત્રીઓ





प. ल. शैठ आलाआलाम दामोदरदासनां धर्मपत्नी

गो. वा. प. ल. इक्ष्मणीया (अमदावाद)

(जन्म सवत १९२० पौस वद ४)

પ. ભ. શેઠ બાલાભાઈ દામોદરદાસનાં ધર્મપત્ની ગો. વા. પ. ભ. રૂક્મણીબા.

પ ભ રૂક્મણીબાનો જન્મ સ. ૧૯૨૦ની સાલમા પોસ વદ ૪ ના રોજ વીસા પોરવાડ મેશ્રી વણિક જ્ઞાતિમાં સાધારણ વૈશ્યવ કુટુંબમાં થયો હતો. માતા તેમજ પ્રમાતા બન્નેને મરણદ હતી. તેથી તેમના વૈશ્યવતાના સારા સંસ્કાર ગર્ભથી જ હતા. પિતા નાની ઊંમરમા મૂકી હરીશરણ થયેલા તેથી માતા તથા દાદીમાના હાથ નીચે ઉછરેલા. તે પ્રખ્યાત શોધન કુટુંબમા શેઠ બાલાભાઈ દામોદરદાસ સાથે દેહસંબંધથી જોડાયાં.

શ્રી રૂક્મણીબાને પ્રથમ મર્યાદાલકતો, મહાત્મા સરયુદાસજી મોહનદાસજી વિગેરેનો સત્સંગ કરેલો. પુષ્ટિભક્તિની વ્યાખ્યામા કહેલું છે તે પ્રમાણે દહતા બધાયા પંછી પુષ્ટિ ભગવદ્ભક્તોને જોવા કે અચુભાઈ જોડીશનદાસ, મનોહરદાસજીના સત્સંગથી ભાવનામાં વૃદ્ધિ થઈ. ૪૦ વર્ષ સુધી મર્યાદામાર્ગીય ભક્તોના સમાગમ પછી જે શુદ્ધ પુષ્ટિ જીવ છે તેને પ્રભુ પોતા તરફ આકર્ષણના પ્રસંગો કરી આપે છે.

સંવત ૧૯૬૦ માં કાંકરોલીવાળા બાળકૃષ્ણલાલજી મહારાજની વૃજપરિક્રમા માં કુટુંબ સાથે ગયા હતાં. વ્રજભૂમીનો પ્રતાપ તેમ વલ્લભકુળના ભાવના પ્રધાન સ્વરૂપોથી આકર્ષાઈ સેવામાં ચિત્ત ચોટયુ અને ઘરમા સેવા પધરાવી રાજસેવા કરવા લાગ્યાં. પુષ્ટિભક્તો તેમજ ગોસ્વામી બાળકોને ઘેર બોલાવી તન મન ધનથી સેવા કરી આશીર્વાદ મેળવ્યા છે. તેઓ સફળ મનોરથી હતા.

મનોરથો

(૧) ભગવદ્ સ્વરૂપ શ્રીમદ્-ભાગવત છે એવું તે માનતાં જેથી સમાહો દ્વારા તેનું શ્રવણ કરતાં. હૃષિકેશ, મથુરા સિદ્ધપુર, નૈમિષારણ્ય, વગેરે સ્થળોએ જઈ શ્રીમદ્ ભાગવત સમાધ દ્વારા ભાવપૂર્વક શ્રવણ કરતા.

(૨) પોતાનું વ્રબ યોગ્ય માર્ગે અર્ચાય તે અર્થે મથુરામાં સુયોગ્ય સગવડવાળી પોતાના જેઠ તેમજ પતિને આગ્રહ કરી સં. ૧૯૭૫ ની સાલમાં પોતાના સસરાના નામથી દામોદરજીવન નામની ધર્મશાળા ઝા. ૮૦ હનરના અર્થે બધાવી હતી.

(૩) સવત ૧૯૭૬ માં મધુસુદનલાલજી મહારાજની સાથે કુટુંબ સહિત વ્રજ પરિક્રમા પગે ચાલીને કરી હતી.

દરસાલ એક વખત વ્રજમાં અને એક વખત નાયદારમાં શ્રીસુખ જોયા વગર તેમને ચેન પરતું નહી તેથી પંદર વીસ દિવસ રહી. ફરીથી પાછાં જલ્દી બોલાવવાની પ્રાર્થના કરી. સંતોષપૂર્વક શ્રી દર્શન કર્યા બાદ કમને પાછા નીકળતા.

‘ રસિક સ્નેહી દીનતા ભજન અનન્યતા જુષ્ટ
દયા વૈરાગ્ય ઉદારતા તે કહીયે જનપુષ્ટ ’

આમ તે મહારાણીજીના પક્ષનાં હતાં, એટલે દરેક પુષ્ટિ જીવ ઉપર તેમજ શ્રી વલ્લભકુળ ઉપર એક રસપ્રીતિથી દીનતા સહ ટહેલ કરી યથાયોગ્ય સેવા ટહેલ કરતાં

ગો શ્રી ૧૦૮ નિત્યલીલાસ્થ ગોવર્ધનલાલશ્રીની આગ્રાથી ‘ મોતી મહેલમાં ’ કુજ જીવન નામે સારી સગવડવાળી જગ્યા બધાવી તેનો જતીપુરામાં ઘણી વખત લાલ લીધો છે.

એક વખત શ્રીજીદ્વારમાં કાગળમાં લાલબાગમાં મોટી ગોઠ બાલકો તથા વૈષ્ણવોની કરાવેલી. ત્યાં શ્રી ગોવર્ધનલાલજી તથા દામોદરલાલજી બને હાથી ઉપર પધારે અને સ ચાના હાથના પ પથી કેસુડાંનેા છંટકાવ પોતે વૈષ્ણવો પર કરે અને લાલબાગમાં પ્રસાદ લે તેવી ગોઠવણુ કરી મનોરથ કર્યો હતો. વાવ, કુવા, ગોશાળા વગેરે બંધાવી પરોપકારી કાર્યો કર્યા હતાં.

વૃજમાં ગયા ત્યાં કુદવારા દારા વૃજવાસીઓના ગામો જમાડે, રાસલીલા તેમજ મંદિરોમાં સામગ્રી પહોચાડવી તેમજ વૈષ્ણવોને ધોતી સાડી વહેંચવી વગેરે કાર્યો દારા દ્રવ્યનેા સદુપયોગ કર્યો છે.

પુસ્તકપ્રકાશન દારા—અંગત પૈસાથી વર્ષઉત્સવનાં પટોનું પુસ્તક છપાવી મંદિરો તથા વૈષ્ણવોમાં વહેંચેલુ પૈસાનેા સદ્વ્યય કર્યો છે.

સંવત ૧૯૮૧ ની સાલમાં નટવરલાલ શામલાલના—તેમના ગુરુધરના—મંદિરને રીપેર કરવા વૈષ્ણવોએ કમર કરી. તેથી પ્રભુ પ્રેરણાથી તેમણે તે અગેનુ સર્વકાર્ય પોતાના પતિને હસ્તક લેવા પ્રેર્યા અને ત્રણ લાખનેા ખર્ચ કરી વૈષ્ણવોના સાથથી જે ખુટયા તે પોતે ઊમેરી મંદિરનેા સંગીન અવસ્થામાં મૂક્યાં

એક વખત શ્રી નાથદ્વારા ગયેલા. ત્યા તેમના મનમાં ઉત્કટ ભાવના થઇ કે એક વખત શ્રી ઠાકોરજી મારા હાથની સામગ્રી આરોગે.

જાણે પ્રભુએ તેમની પ્રાર્થના સાબળી હોય તેમ શ્રી દામોદરલાલજીને પ્રેરણા થઇ તેમણે શાકગરીયાજીને ઉથાપનમાં ટેરાગાં નારગીની જવાપુરી શ્રી રૂક્મણીબાને નવડાવી તેમના હસ્તક ધરાવવા કહ્યું. પોતાના હકક પર તરાપ વાગતી હોય તેમ શ્રી શાકગરીયાજીનેા વિરોધ હોવા છતાં તેનેા અલૌકિક લ્હાવો શ્રી રૂક્મણીબાને પ્રાપ્ત થયો હતો.

સ વત ૧૯૮૯માં પોતાના ધરના ઠાકુરજી સાથે શ્રી રણુજીડાલાલજી મહારાજશ્રી પધરાત્રી વૈષ્ણવસહિત વૈભવથી વ્રજમાં અનેક રથજોએ આદન પૂર્વક યાત્રા કરી હતી.

સંવત ૧૯૯૪ ની સાલમાં કાકરોલીવાળા વ્રજભૂષણુલાલજી મહારાજને ત્યા પ્રથમ લાલના પ્રાગટ્ય નિમિત્તે શ્રી દ્વારકાંધિશને વિઠ્ઠલ વિલાસ બાગમાં પધરાવી છપ્પન ભોગનેા મનોરથ કર્યો હતો. તેમના ગૃહમાં નવનીતલાલજીનું લગ્ન કાનપુર થવાનુ હતુ. આ પ્રસંગે શ્રીજીની છેલ્લી ઝાંખી કરવાની ઇચ્છાથી અશકત શરીર હોવા છતા પણુ વદ ૧૨ ના રોજ લગ્ન હોવાને લીધે હિ મનલાઇ સાથે કારતક વદ ૬ ના રોજ નીકળી સાતમના કાંકરોલી આવી આદમના છપ્પન ભોગના દર્શન કરી, ૯ ની મંગળાની ઝાંખી કરી, મહાપ્રસાદ લઇ ૧૦ ના રોજ નીકળી ૧૧ ના રોજ સહીસલામત ઇશ્વરકૃપાથી આવી પહોચતા કુટુબીઓના આનંદનેા પાર રહ્યો ન હતો.

પ. ભ. મનોહરદાસજીનેા સં. ૧૯૭૯ની સાલથી સત્સંગ થયો હતો તેમને કેટલીક વખત છ, છ મહીના પોતાને ત્યા રાખી સત્સંગનેા લાભ લેતા અને યોગ્ય બરદાસ્ત કરતા તેમના પુત્ર-પુત્રીઓ પોત્રો દરેકને ત્યા ઠાકુરજી બિરાજે છે.

પ. ભ મનોરથી અને પ્રેમના સ્ત્રોત સરખા શ્રી રૂક્મણીબેન સ. ૧૯૮૪ ના અપાડ વદ ૪ ના રોજ શ્રી રણુજીડાલાલજી તેમજ શ્રી ગોવિ દલાલજી સુરતવાળાની હાજરીમાં આ દ્વાની દુનિયાનેા ત્યાગ કરી પરમ ગનિનેા પામ્યા

— ८४ वैष्णवों की वार्ताओं की सूची —



वार्ता-सं०	नाम	पृष्ठ सं०	प्रसंग सं०	वार्ता-सं०	नाम	पृष्ठ सं०	प्रसंग सं०
१	दामोदररास हरसानी	१	१०	२५	जादवेंद्रदास कुम्हार	२८१	३
२	कृष्णदास मेघन	२७	८	२६	गुसाईदास सारस्वत	२८४	१
३	दामोदरदास संभलवाले	४१	८	२७	माधवभट्ट कास्मीरी	२८७	४
३/१	लौंडी	६६	१	२८	गोपालदास बासनाड़े वाले	२९५	१
४	पद्मनाभदास	६८	७	२९	पद्मारावल सांचोरा	३०८	४
४/१	तुलसा	८९	३	३०	पुरुषोत्तम जोसी सांचोरा	३१७	१
४/२	पारवती	९५	१	३१	जगन्नाथ जोसी	३२३	४
४/३	रघुनाथदास	९७	१	३१/१	जगन्नाथ जोसी की माता	३३२	१
५	रजो क्षत्राणी	१०२	१	३१/२	नरहरि जोसी	३३८	३
६	सेठ पुष्पोत्तमदास	१०८	१०	३२	राना व्यास सांचोरा	३४८	३
६/१	रुक्मिणी	१२८	३	३३	रामदास सांचोरा	३६१	१
६/२	गोपालदास	१३३	२	३४	गोविंद दुवे सांचोरा	३७१	३
७	रामदाम सारस्वत	१३५	२	३५	राजा दुवे माधो दुवे	३८४	१
८	गदाधरदास कपिल	१४६	३	३६	रुत्तमदलोकदास	३९८	१
९	त्रेनीदास माधवदास	१५९	२	३७	ईश्वर दुवे सांचोरा	४०२	१
१०	हरिवंस पाठक	१६९	१	३८	वासुदेवदास छकड़ा	४०४	७
११	गोविंददास भल्ला	१७४	३	३९	वावाचेनु, कृष्णदास घघरी		
१२	अम्मा क्षत्राणी	१८३	२		जादव खवास	४२६	१
१३	गज्जन धावन	१८९	२	४०	जगतानंद सारस्वत ब्रा०	४३७	१
१४	नारायणदास ब्रह्मचारी	१९५	५	४१	आनंददास विश्वभरदास	४४०	१
१५	एक क्षत्राणी	२०४	२	४२	अडेल की एक ब्राह्मणी	४४६	१
१६	जीयदास सूरी	२१७	१	४३	प्रयाग की एक क्षत्राणी	४५१	१
१७	देवा कपूर क्षत्री	२१९	१	४४	गोरजा समराई सास बहू	४५६	१
१८	दिनकर सेठ	२२१	१	४५	कृष्णादासी	४६३	२
१९	दिनकरदास मुकुंददास	२२८	९	४६	बूला मिश्र	४६९	१
२०	प्रभुदास जलोटा क्षत्री	२३८	४	४७	रामदास मेवाडा,		
२१	प्रभुदास भाट	२५०	१		मीराबाई के प्रोहित	४७९	१
२२	पुरषोत्तमदास-स्त्री-पुरुष	२५६	१	४८	रामदास चौहान	४८४	२
२३	त्रिपुरदास कायस्थ	२६३	२	४९	रामानंद पंडित	४९०	२
२४	पूरनमल जैवल	२७४	१	५०	पिष्णुदास छीपा	५०२	३

वार्ता-स०	नाम	पृष्ठ स०	प्रसंग स०	वार्ता-स०	नाम	पृष्ठ स०	प्रसंग स०
५१	जीवनदास क्षत्री	५१४	१	६६	कविराज भाट	६१२	१
५२	भगवानदास सारस्वत	५२३	१	६७	गोपालदास पजाब के	६१५	१
५३	भगवानदास साँचोरा	५२८	१	६८	जनार्दनदास चोपडा क्षत्री	६१९	१
५४	अच्युतदास सनोढिया	५३४	१	६९	गड्डू स्वामी सनाढ्य	६२५	१
५५	अच्युतदास गौड ब्राह्मण	५३७	१	७०	कन्हैयालाल क्षत्री	६२८	२
५६	अच्युतदास सारस्वत ,,	५४३	१	७१	नरहरदास गोडिया	६३९	१
५७	नारायणदास कायस्थ	५४७	१	७२	नरहर सन्यासी	६४७	२
५८	नारायणदास भाट	५५५	१	७३	सदू पाडे, भवानी, नरो	६५४	४
५९	नारायणदास लुहाणा			७४	गोपालदास जटाधारी	६६५	२
	दीवान	५५९	१	७५	कृष्णदास खो पुरुष	६७३	१
६०	सिंहनंद की एक क्षत्राणी	५६९	१	७६	सतदास चोपडा क्षत्री	६८२	४
६१	दामोदरदास की माता			७७	सुन्दरदास माधोदास	६९५	१
	वीरवाई	५७९	१	७८	मावजी पटेल और विरजो	७०६	२
६२	दोऊ स्त्री पुरुष सिंहनद के	५८९	१	७९	गोपालदास क्षत्री नरोडाके	७१३	४
६३	अडेल का एक सुतार			८०	वादरायणदास	७२२	१
	कारीगर	५९८	१	८१	सूरदास	७२६	१
६४	एक क्षत्री जाको अन्य			८२	परमानंददास	७८८	७
	मागीसों स्नेह हतो	६०२	१	८३	कुभनदास	८३७	१५
६५	लघु पुरुषोत्तमदास क्षत्री	६०९	१	८४	कृष्णदास अधिकारी	९११से९८६,	१०

— चित्रसूची —



सं.	नाम	पृ.	सं.	नाम	पृ.
१	श्रीवल्लभाचार्यजी ('नमामि हृदये शेषे' वाला चित्र)	मुख पृष्ठ पर	८	श्रीनाथजी का प्राकट्य	६६१
२	श्रीवल्लभाचार्यजी तीन सेवकों सहित	१०	९	सामुहिक वैष्णवोंका चित्र	७११
३	श्रीद्वारकानाथजी	४६	१०	सूरदास	७३७
४	दामोदरदाम दीवान सभलवाले का घर	६९	११	परमानंददास	७९५
५	शेठ पुरुषोत्तमदास का घर काशी	१०८	१२	कुभनदाम	८५७
६	श्रीमहाप्रभुजी की पर्णकुटी अडेल	३०६	१३	श्रीनाथजी (त्रिरंगी चित्र)	८६१
७	श्रीमहाप्रभुजी की बैठक उजैन	३१०	१४	कृष्णदाम	९७७



श्रीहरिः ।

* श्रीकृष्णाय नमः ❀ श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः *

चौरासी वैष्णवन की वार्ता—

★

अथ चौरासी वैष्णवन की वार्ता श्रीगोकुलनाथजी प्रगट किये ताकौ भाव
श्रीहरिरायजी कहत हैं सो लिख्यते—

★

श्रीहरिरायजी कृत भावप्रकाश—

चौरासी वैष्णवन कौ कारन यह है, जो-दैवी जीव चौरासी लक्ष योनि में परे हैं, तिनमें तें निकासिवे के अर्थ चौरासी वैष्णव किये । सो जीव चौरासी प्रकार के हैं । राजसी, तामसी, सात्विकी, निर्गुण, ये चार प्रकार के (भूतल में) गिरे, तामें तें गुणमय राजसी, तामसी, सात्विकी, रहन दिये, सो श्रीगुसांईजी उद्धार करेंगे ।

श्रीआचार्यजी विना श्रीगोवर्द्धनधर रहि न सके, तातें अपने अंतरंगी निर्गुण पक्षवारे चौरासी वैष्णव (प्रगट) किये । सो एक एक लक्ष योनिमें तें एक एक वैष्णव निर्गुण वारे को उद्धार (इन) वैष्णवन द्वारा किये ।

भावप्रकाश—

चौरासी वैष्णवोनुं कारण आछे, ज-दैवी जिवो चौरासी लाख योनिमां पड्याछे तेमांथी निकासिवाने अर्थ चौरासी वैष्णवो कर्था. ते जिव चौरासी प्रकारना छे. राजसी, तामसी, सात्विकी, निर्गुणु अरु चार प्रकारना भूतलमां गियां (पड्या) तेमांथी गुणमय राजसी, तामसी, सात्विकी, रहेवा दीधा. तेमने श्रीगुसांईजु उद्धार करेशे.

श्रीआचार्यजु विना श्रीगोवर्द्धनधर (दीवानां) रही न सक्या तेथी पोताना अंतरंगी निर्गुणु पक्ष वाणा चौरासी वैष्णवोने प्रकट कर्था (भूतलमां) ते अेक अेक लक्ष योनिमांथी अेक अेक वैष्णव निर्गुणुवाणानो उद्धार (आ दीवाना) वैष्णवो द्वारा कर्था.

ઔર રસ શાસ્ત્ર મેં રસાદિક વિહાર કે આસન ચૌરાસી વર્ણન કિયે હૈં । સો ન્યારે ન્યારે અંગ કે ભાવરૂપ યે ચૌરાસી વૈષ્ણવ રસ લીલા સંવંધી નિર્ગુન હૈં, શ્રીઠાકુરજી કે અંગરૂપ । તાતેં શાસ્ત્ર રીતિ સોં આસન ચૌરાસી યા ભાવ સોં અલૌકિક હૈં ।

ઔર શ્રીઆચાર્યજી કે અંગ દ્વાદસ હૈં, સો સ્વરૂપાત્મક હૈં । ઁક ઁક અંગ મેં સાત સાત ધર્મ હૈં । ઁશ્વર્ય, વીર્ય, યશ, શ્રી, જ્ઞાન, વૈરાગ્ય યે છહ ધર્મ, ઁક ધર્મી સાતમો । યા પ્રકાર વારહ સત્તે ચૌરાસી વૈષ્ણવ, શ્રીઆચાર્યજી કે અંગ રૂપ અલૌકિક સર્વ સામર્થ્ય રૂપ હૈં ।

ઔર સાક્ષાત્ પૂર્ણ પુરુષોત્તમ કી લીલા ચૌરાસી કોસ વ્રજ મેં હૈં । સો ઁક ઁક જીવકોં અંગીકાર કરિ, દૈવી જીવ જો ચૌરાસી લક્ષ યોનિ મેં ગિરે હૈં, તિનકોં ઉદ્ધાર કરિ, ચૌરાસી કોસ વ્રજ મેં જો જીવ (જા) લીલા સંવંધી હૈ, તિનકોં તહાં પ્રાપ્ત કરિવે કે અર્થ ચૌરાસી વૈષ્ણવ અલૌકિક પ્રગટ કિયે ।

હહ ભાવ તેં ચૌરાસી વૈષ્ણવ શ્રીઆચાર્યજી કે હૈં ।

બીજુ રસશાસ્ત્રમાં રસાદિક વિહારનાં આસન ચૌરાસી વર્ણન કર્યા છે. તે ભિન્નભિન્ન અંગના ભાવ રૂપ એ ચૌરાસી વૈષ્ણવો રસ લીલા સંબંધી નિર્ગુણ છે. શ્રીઠાકુરજીના અંગરૂપ. તેથી શાસ્ત્ર રીતિથી આસન ચૌરાસી આ ભાવથી અલૌકિક છે.

અને શ્રીઆચાર્યજીનાં અંગ દ્વાદશ છે તે સ્વરૂપાત્મક છે. એક એક અંગમાં સાત સાત ધર્મ છે. એશ્વર્ય, વીર્ય, યશ, શ્રી, જ્ઞાન, વૈરાગ્ય એ છ ધર્મ એક ધર્મી સાતમો. આ પ્રકારે બાર સાતાં ચૌરાસી વૈષ્ણવ શ્રીઆચાર્યજીના અંગરૂપ અલૌકિક સર્વ સામર્થ્ય રૂપ છે.

વળી સાક્ષાત્ પૂર્ણ પુરુષોત્તમની લીલા ચૌરાસી કોસ વ્રજમાં છે. તે એક એક જીવનો અંગીકાર કરી, દૈવી જીવ જે ચૌરાસી લાખ યોનીમાં પડ્યા છે તેમનો ઉદ્ધાર કરી ચૌરાસી કોસ વ્રજમાં જે જીવ (જે) લીલા સંબંધી છે તેને ત્યાં પ્રાપ્ત કરાવવાને અર્થ ચૌરાસી વૈષ્ણવ અલૌકિક પ્રગટ કર્યાં.

આ ભાવથી ચૌરાસી વૈષ્ણવ શ્રીઆચાર્યજીના છે.

ભાવપ્રકાશનું સ્વરૂપ—શ્રીહરિરાયજીનો કહેવો આ ભાવપ્રકાશ નિર્ગૂઢ છે. તેથી અત્રે તેના ગુહ્યનું ઉદ્ધારન કરવું આવશ્યક છે. આ ભાવપ્રકાશમાં દૈવી જીવોનું સ્વરૂપ અને તેના ઉદ્ધારની પ્રક્રિયાને કહેવામાં આવી છે. શ્રીવદ્ધભાવનારના પુષ્ટિ દેવી જીવોના મૂળ સ્વરૂપની સુગતિનો સામ્પ્રદાયિક દતિહાસ આ પ્રકારે છે—

સો એક દિન શ્રીગોકુલનાથજી ચૌરાસી વૈષ્ણવન કી વાર્તા કરત કલ્યાણ મઠ આદિ વૈષ્ણવન કે સંગ રસમગ્ન હોઈ ગંચે, સો શ્રીસુબોધિનીજી કી કથા

એક દિવસ શ્રીગોકુલનાથજી ચૌરાસી વૈષ્ણવોની વાર્તા કરતાં કલ્યાણ મઠ આદિ વૈષ્ણવોની સગે રસમગ્ન થઇ ગયા. તે શ્રી સુબોધિનીજીની કથા

બૃહદ્વામન પુરાણને અનુસાર પુષ્ટિ પુરુષોત્તમ ભગવાન શ્રીકૃષ્ણનો આવિર્ભાવ સારસ્વત કંથમાં મુખ્યતઃ શ્રુતિઓને અર્થે વ્રજમાં થયો હતો. પ્રભુએ આવિર્ભૂત થઇને વ્રજમાં અનેક લીલાઓ કરી તે પર્યંતના સર્વેય પ્રયત્નો શ્રુતિરૂપા આદિ ભક્તોના ઉદ્ધારાર્થે જ હતા. યદ્યપિ આપે ધ્રુવતા કે શ્રુતિઓ મારા મૂળધામની લીલામા પ્રાપ્ત થાય તો વિના કોઇપણ પ્રકારના પ્રયત્ને જ, આવિર્ભૂત થયા વિના પણ તેમ થતુ જ તથાપિ આપને ભૂતલ ઉપર પુષ્ટિમાર્ગને પ્રકટ કરવો હતો તેથી આપે ભૂતલ ઉપર પ્રકટ થઇને સ્વ સ્વરૂપ વડે વિવિધ લીલાઓ કરી શ્રીગોપીજનોનો સમુદ્ધાર કર્યો. તે વડે એ સિદ્ધાંતને પણ પ્રકટ કર્યો કે પુષ્ટિમાર્ગમાં જીવના ઉદ્ધાર અર્થે પ્રભુ પ્રયત્ન કરે છે. ન્યારે મર્યાદામાર્ગમાં જીવને સ્વયં પ્રયત્ન કરવો પડે છે. આમ મર્યાદામાર્ગથી પુષ્ટિમાર્ગની વિલક્ષણતા પણ પ્રકટ થઇ. તદુપરાંત આપે પોતાના પુષ્ટિમાર્ગની સર્વોત્કૃષ્ટતાને પણ સિદ્ધ કરી. જે ગોપિકાદિ સ્ત્રી ભક્તોમા આપે પોતાના સાક્ષાત્ સ્વરૂપવાળા અનુગ્રહ માર્ગને સ્થાપિત કર્યો તે ભક્તો શ્રીઉદ્ધવજીના શબ્દોમા “ ક્વેમાઃ સ્ત્રિયો વનચરીર્વ્યમિચારદ્વષ્ટા. ”.....

એ પ્રકારના હતા. અર્થાત કેવળ સાધન રહીત જ નહી કિન્તુ લોકવેદના ધર્મોથી વિપરીત ગતિવાળાં પણ હતાં છતા તેમના ઉપર પરમ અનુગ્રહ કરી તેમને પોતાના અપર સ્વરૂપ એવા પ્રેમતુ દાન કહ્યું અને તેમને પુષ્ટિમાર્ગના ગુરુની કક્ષાએ સ્થાપ્યા. તેથી જ બ્રહ્મા, મહાદેવ અને ઉદ્ધવ આદિ પરમ ઉચ્ચ શ્રેણીના ભક્તો પણ તેમના ચરણ-રજની સદાય આકાક્ષા રાખે છે. એટલું જ નહી કિન્તુ સ્વયં ભગવાન પુષ્ટિ પુરુષોત્તમ શ્રીકૃષ્ણ પણ તેમની ધ્રુવજાને સદાય આધીન રહે છે. આ જ પુષ્ટિમાર્ગની સર્વોત્કૃષ્ટતા છે.

આ પુષ્ટિમાર્ગનો ભાવિષ્યમાં પણ ભૂતલ ઉપર પુનઃ પ્રકાશ કરવો છે એમ વિચારીને ઉક્ત વ્રજસ્થ ભક્તોમાંથી કેટલાક ભક્તોને આપે ભૂતલ ઉપર રાખ્યા. એ વડે પુષ્ટિસ્થ પ્રભુએ પોતાના કાર્પની ‘ તર્કગોચરતા ’ ‘ સર્વ તંત્ર સ્વતંત્રતા ’ અને ‘ વિરૂદ્ધ ધર્માશ્રયત્વ ’ ને પણ પ્રકટ કર્યું. કેમ કે વૈદિક સિદ્ધાંતને અનુસાર ભગવાનતું જેને દર્શન-સ્પર્શન થાય તેની ભૂતલ ઉપર સ્થિતિ કરી સભવતી જ નથી એટલે કે તેને જન્મ જન્માતર હોઇ શકે નહીં. પરંતુ પુષ્ટિમાર્ગમા કેવળ ભગવદીચ્છા જ એક માત્ર પ્રમાણ રૂપ હોઇ અન્ને બધુ જ શક્ય છે. પ્રભુની ધ્રુવજા જે પ્રકારથી જેની સાથે જેવી ક્રીડા કરવાની હોય છે તે પ્રકારથી તેની સાથે પોતે તેવી ક્રીડા કરે છે. તેમા વેદ આદિ નિયામક હોતાં નથી. પ્રભુનાં સ્વતંત્ર અને વિરૂદ્ધ ધર્મ ક્રીડનનાં અનેક દષ્ટાંતો શ્રીમદ્ભાગવતાદિમાં છે. અત તેમાંથી કેવળ અહી એક જ દષ્ટાંત આપી ઉક્ત વાતને સ્પષ્ટ કરવામા આવે છે.

રાક્ષસી પૂતના છજ કરીને પ્રભુ પાસે આવી તેનો આપે તત્કાળ મોક્ષ કર્યો અને ભક્ત સુચુકુંદને સ્વયં દર્શન આપીને પણ તેનો બીજા જન્મમાં ઉદ્ધાર કર્યો. આ પ્રકારતું પ્રભુતું સર્વતંત્ર સ્વતંત્ર વિરૂદ્ધ ધર્મવાણું ક્રીડન છે. એથી એ સિદ્ધ થાય છે કે પુષ્ટિમાર્ગમાં પ્રભુની ધ્રુવજા જ એક માત્ર પ્રમાણ છે.

કહન કી સુધિ નાહીં, સો અર્દ્ધરાત્રિ હોઝ ગઈં । તવ ઇક વૈષ્ણવ ને શ્રીગોકુલ-
નાથજી સોં વિનતી કરી, જો-મહારાજાધિરાજ ! આજ કથા કવ કહોગે ?

કહેવાની સુધિ રહી નહી. તે અર્ધરાત્રિ થઇ ગઇ ત્યારે એક વૈષ્ણવે શ્રીગોકુલ-
નાથજીને વિનંતી કરી, જે મહારાજાધિરાજ ! આજ કથા ક્યારે કહેશે ? અર્ધ-

‘સંવાદ’ને અનુસાર ભગવદીચ્છાથી જે જીવો ભૂતલ ઉપર રહ્યા તેમને જન્મ જન્મ-માતરે પ્રાપ્ત થયા. અને ‘સહસ્ર પરિવત્સર’ જેટલો કાળ તેમને પ્રભુથી વિદ્યુરે થયો તેથી કૃષ્ણ વિયોગ જનિત ‘તાપકલેશાનદ’ નું તેમનામાંથી તિરોધાન થયું ત્યારે ભગવદીચ્છાથી આ ભૂતલના જીવોની સુધિ શ્રીસ્વામિનીજી દ્વારા પ્રભુને આવી. એટલે આપને તે જીવોના ઉદ્ધારનો વિચાર આવ્યો.

આ સમયે આપે નામાત્મક સ્વરૂપ વડે લીલા કરી જીવોના ઉદ્ધારનો સંકલ્પ કર્યો કેમકે રૂપ અને નામ એમ બે પ્રકારથી પુષ્ટિમાર્ગમાં આપ સ્થિત થયા છે. રૂપલીલા વડે આપે શ્રીગોપીજનોનો ઉદ્ધાર પૂર્વે કર્યો છે. તેથી દ્વિતીય નામલીલા રૂપથી આપે આધુનિક દેવી જીવોના ઉદ્ધારનો સંકલ્પ કર્યો. ત્યારે નામ-સ્વરૂપના અધિષ્ઠાતા વાક્યપતિ-વૈશ્વાનરને આપે ભૂતલ ઉપર પ્રકટ થવાની આજ્ઞા આપી અને વિષ્ણુ અને વ્યાસને પ્રિય એવા ગૃહાર્થરૂપ શ્રીમદ્ભાગવતના સ્વારસ્યને પ્રકટ કરી તે દ્વારા દેવી જીવોના ઉદ્ધાર કરવાનો નિર્દેશ કર્યો. આજ્ઞાનુસાર શ્રીમદ્-વલ્લભ ભૂતલ ઉપર પ્રકટ થયા.

શ્રીમદ્વલ્લભ ભૂતલ ઉપર પધાર્યા એટલે શ્રીગોવર્ધનધર પણ ત્યા રહી શક્યા નહીં. કેમકે ઉભયમાં પરસ્પર અતીવ સ્નેહ છે અન્ય પ્રકારે અધિષ્ઠાતા દેવ વિના નામ-સ્વરૂપની સ્થિતિ સંભવ નથી તેથી આપ પોતાના અંતરગી નિર્ગુણુ-કેવળ ભાવરૂપ, આનંદરૂપ-દેવી જીવોને લઇ સાક્ષાત નામાત્મક શ્રીમદ્ભાગવત સ્વરૂપ દ્વાદશાગવાળા શ્રીગોવર્ધનધર શ્રીનાથજીના રૂપથી ભૂતલ ઉપર પ્રકટ થયા. આ કેવળ ભાવરૂપ દેવી જીવો તે ભૂતલના જન્મજન્મ-માતરને પ્રાપ્ત થયેલા દેવી-જીવોના આધિદેવિક રૂપ હતા તેમને શ્રીગોવર્ધનધરે અલ્પસમય કરાવવાની આજ્ઞા સમયે શ્રીમદાચાર્યચરણુમાં ભાવપ્રકારથી સ્થાપ્યા. એટલે એ શ્રીઆચાર્યજીના દ્વાદશ અંગ રૂપ સ્વરૂપાત્મક થયા. તે ઐશ્વર્ય, વીર્ય, યશ, શ્રી, જ્ઞાન, વૈરાગ્ય અને ધર્મી એ સાત ગુણુ-ગુણી સ્વરૂપ હતા. એટલે દ્વાદશાગના સાત ગુણુ, ગુણી પ્રકારે ૮૪ સંખ્યાત્મક હતા. સિદ્ધાતાનુસાર ગુણુ-ગુણીનો અભેદ હોવાથી તે સર્વેય નિર્ગુણુ સર્વ સામર્થ્ય રૂપ હતા તદુપરાત ગજસ, તામસ અને સાર્વિક ભાવ-ભેદ વાળા અંશ-અશી ઠાટાનકાટી જીવોને પણ શ્રીગોવર્ધનધરે શ્રીમદાચાર્યચરણુમાં ભાવ-તત્ત્વ-રૂપથી સ્થાપ્યા હતા તેમને શ્રીમદાચાર્યચરણુ પાછળથી શ્રીવિકૃદેશમાં સ્થાપ્યા હતા. જેમાં ૨૫૨ સગુણુ અશી પ્રકારનાનો સમુદ્ધાર પોતે કર્યો. અને અન્ય અશાત્મક સગુણુ જીવોનો સ્વવંશ દ્વારા આજ પર્વે ત શ્રીવિકૃદેશ કરી રહ્યા છે. શ્રીમદાચાર્યચરણુમાં સ્થિત આ લીલાસ્થ આધિદેવિક સ્વરૂપો અગરૂપ હોવાથી, તેમજ અગના ધર્મ રૂપ ગ્સ ના આસનો હોઇ, તે તે અગના આસનના ભાવરૂપ પણ છે એથીપણુ ગ્સ ના સમયે તેમની નિર્ગુણુતા સિદ્ધ થાય છે એવી રીતે ત્રજ ચોરાગી ડોસમાં પ્રભુની વિશિષ્ટ પ્રકારની એક એક લીલાની સ્થિતિ હોઇ, તેમજ અગના ધર્મ રૂપ ને લીલાગો હોઇ તેમની એક એક ડોસમાં તે તે અગ રૂપી જીવોની પ્રાધાન્યના માની ગઇ છે. એથી ભૂતલ-સ્થિત

અર્દ્રરાત્રિ ગઈ । તવ શ્રીમુખતે શ્રીગોકુલનાથજીને કહી, (જો) આજ કથા કો ફલ કહત હૈ । વૈષ્ણવ કી વાર્તા મેં સગરો ફલ જાનિયો । વૈષ્ણવ ઉપરાંત ઓર કહુ પદારથ નાહીં હૈ । યહ પુષ્ટિમાર્ગ હૈ સો વૈષ્ણવ દ્વારા ફલિત હોયગો । શ્રી આચાર્યજી હૂ યહી કહતે, જો-દમલા ! તેરે લિયે માર્ગ પ્રગટ કિયો હૈ । તાતે વૈષ્ણવ કી વાર્તા હૈ સો સર્વોપરિ જાનિયો । યા પ્રકાર ચૌરાસી વૈષ્ણવ શ્રીઆચાર્યજી કે નિર્ગુન પક્ષ કે મુલિયા જાનનેં ।

રાત્રિ ગઈ. ત્યારે શ્રીમુખથી શ્રીગોકુલનાથજીએ કહ્યું, જે આજ કથાનું ફલ કહીએ છીએ. વૈષ્ણવની વાર્તામાં સઘળું ફળ જાણુને, વૈષ્ણવ ઉપરાંત બીજો કોઈ પદાર્થ નથી. આ પુષ્ટિમાર્ગ છે તે વૈષ્ણવ દ્વારા ફલિત થશે. શ્રીઆચાર્યજી પણ એજ કહેતા, જે 'દમલા ! તારા માટે માર્ગ પ્રકટ કર્યો છે' તેથી વૈષ્ણવની વાર્તા છે તે સર્વોપરિ જાણુને. આ પ્રકારે ચૌરાસી વૈષ્ણવ શ્રીઆચાર્યજીના નિર્ગુણ પક્ષના મુખિયા જાણવા.

ભૌતિક સ્વરૂપોનો તેમનાજ આધિદૈવિક સ્વરૂપો વડે ઉદ્ધાર કરાવી ત્યા તે તે લીલામાં તેમની સ્થિતિ કરાવી. આ પ્રકારે આધિદૈવિક અને આધિભૌતિક દેવી જીવોનાં સ્વરૂપો ને જાણવા પછી હવે દેવી જીવોના ઉદ્ધારની પ્રક્રિયાને કહેવામા આવે છે. પુષ્ટિમાર્ગની દેવી જીવોના ઉદ્ધારની પ્રક્રિયા આ પ્રકારે છે. પ્રથમ તેમને તેના આધિદૈવિક સ્વરૂપનો સંબંધ કરાવી તેમને ભગવાન સાથેના સાક્ષાત્ સંબંધને યોગ્ય કરવામાં આવે છે. કેમકે આધિદૈવિક ભગવાનનો ભૌતિક પદાર્થો સાથે સાક્ષાત્ સંબંધ થઈ શકે નહી. એથીજ ભગવાન શ્રીકૃષ્ણ સાક્ષાત્ રૂપથી વ્રજમાં પ્રાદુર્ભૂત થયા ત્યારે નિત્યલીલાના વૃંદાવન આદિ સ્થાનો, શ્રીગિરિરાજજી આદિ પર્વતો અને શ્રીયમુનાજી આદિ નદી તેમજ વૃક્ષાદિની સાથે નિત્યસિદ્ધ શ્રીગોપીજનોનાં ભાવાત્મ રૂપો જે પ્રભુના સ્વરૂપમાં સિદ્ધ હતા તેમનો તે તે નામરૂપ સ્થલ, વ્યક્તિ આદિમા તેમના પોતાના સ્પર્શ દ્વારા પ્રવેશ કરાવ્યો હતો. જેથી સમગ્ર વ્રજ વ્યાપિ વૈકુઠ ગોલાક રૂપ થયું. અને તેને ભગવાનના આધિદૈવિક ચરણારવિંદનો સ્પર્શ થયો. શ્રીગોપીજનો આદિને પણ ભગવાનનો સાક્ષાત્ સંબંધ થયો. ત્યારેજ લીલા દ્વારા તે સર્વેયનો સમુદ્ધાર કર્યો. 'વેણુગીત'ની મુખોધિની તથા 'વિદ્વન્મંડન' આદિથી આ વાત સિદ્ધ છે.

એ પ્રક્રિયાને અનુસારજ શ્રીમદાચાર્યચરણે પણ અલ્પસંબંધનો પ્રકાર યોજ્યો છે અને તે દ્વારા તેના આધિદૈવિક ભાવ રૂપનો તેનામા પ્રવેશ કરાવ્યો છે. ત્યારેજ તે જીવ નિર્ગુણ રસમય અલ્પની સેવાનો આધિકારી થઈ શક્યો. તેથીજ આપે સેવામાં ભૌતિક પાત્ર દોષોને ન માનવાની માર્મિક આજ્ઞા કરી છે.

એજ પ્રકારે કૃષ્ણના લીલાત્મક ભૌતિક સ્વરૂપાદિમા પણ આચાર્યશ્રી તે તે લીલાના ભાવ સ્થાપન વડે તેમની આધિદૈવિકતાનો પ્રકાશ કરાવી તેમને સાક્ષાત્ કરી આપે છે એથીજ અત્રે વૈદિક 'મૂર્તિ-પ્રતિષ્ઠા વિધાન'નું સ્થાન જોવામાં આવતું નથી.

अब रहे राजसी, तामसी, सात्विकी, गुणमय । तिनके उद्धारार्थ श्रीगुसांईजी ने चौरासी वैष्णव राजसी किये, चौरासी वैष्णव तामसी किये (और) चौरासी वैष्णव सात्विकी किये । ये तीनों जूथ मिलि के दोयसौ वावन श्रीगुसांईजी के अंग संबंधी हैं ।

या प्रकार श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी के सेवकन को भाव कहे ।

अब श्रीआचार्यजी के चौरासी वैष्णवनकी वार्तानिमें गूढ आसय श्रीगोकुलनाथजी कहे हैं, तहां श्रीहरिरायजी कछुक भाव प्रगट करत हैं, पुष्टिमागीय वैष्णवन के जनाइवे के अर्थ ।

अब प्रथम सेवक सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के दामोदरदास, जिन को श्रीआचार्यजी 'दमला' कहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—श्रीआचार्यजी महाप्रभु दामोदरदास को 'दमला' कहते । सो यातें, जो-दमला, सो 'अमला', मल करि कै रहित । तहां यह संदेह होय, जो-साधारण वैष्णव में मल नहीं, तो दामोदरदास के दरसन तें, इनके नाम

हुवे रखा राजसी, तामसी, सात्विकी, गुणमय तेमना उद्धारार्थ श्रीगुसांईजीने चौरासी वैष्णव राजसीकर्या, चौरासी वैष्णव तामसी कर्या- (अने) चौरासी वैष्णव सात्विकी कर्या. अे त्रये युथ मणीने असे वावन श्रीगुसांईजीना अंग संबंधी छे.

आ प्रकारे श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीना सेवकाने भाव कयो.

हुवे श्रीआचार्यजीना चौरासी वैष्णवाने वार्ताओमा गूढआसय श्रीगोकुलनाथजी कहे छे त्वा श्रीहरिरायजी कंधक भाव प्रगट करे छे, पुष्टिमागीय वैष्णवाने जणाववाने अर्थ

हुवे प्रथम सेवक ते श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना दामोदरदास, जेमने श्रीआचार्यजी 'दमला' कहेता, तेमनी वार्ताने भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—श्रीआचार्यजी महाप्रभु दामोदरदासने 'दमला' कहेता. ते अेथी, जे-दमला ते अमला, मल करीने रहित. त्यां आ स देह थाय, जे-साधारण वैष्णवमां मल नथी तो दामोदरदासना दरशनथी, अेअनुं नाम लेवाथी

લિયે તેં પાપ જાય, તો ઇનકો નામ દમલા સો અમલા કહે, તાકો પ્રયોજન કહા ?
 યહ સંદેહ હોય તહાં કહત હૈં, જો-યહ ભક્તિમારગ મેં શ્રીઠાકુરજી મેં પ્રીતિ
 હોઈ તહાં તાઈ અમલ હૈં । જવ શ્રીઠાકુરજી તેં અધિક શ્રીઆચાર્યજી મેં પ્રીતિ
 હોય તવ તાસોં અમલા કહિયે । દામોદરદાસ કો એક દઢ ભાવ શ્રીઆચાર્યજી મેં
 હૈં । ક્યોં, જો દામોદરદાસ કી ગોદિ મેં માથો ધરિ કે શ્રીઆચાર્યજી પોઢેં હતે,
 સો ગોવર્દનધર સાક્ષાત્ પધારે તવ વરજે “ નિકટ મતિ આવો, મહાપ્રભુજી જાગેંગે ”
 એસો દઢ ભાવ હૈં, જો-ઉઠિ કે શ્રીઠાકુરજી, કોં દંડોત, હૂ ન કિયે ।

ઔર શ્રીગુસાંઙજી પૂછે, જો-શ્રીઠાકુરજી સોં વડે ક્યોં કહે ? તવ
 દામોદરદાસ ને કહી, જો-દાન વડો કે દાતા વડો ? દાતા જહાં चाहे તહાં
 દાન ચલ્યો જાય । જહાં चाहे તહાં દાતા દાન કૂં રાખે । યહ ભાવ દઢ હૈં ।
 તાતેં શ્રીઆચાર્યજી ‘દમલા’ કહતે । જો-કોઈ પ્રકાર સોં અન્ય સંબંધ કોં ગંધ
 હૂ નાહોં હૈં । તાતેં અમલા હૈં ।

ઔર ઇનકો નામ દામોદરદાસ યાતેં હૈં, જો-‘પુરુષોત્તમ સહસ્ર નામ’ મેં
 શ્રીઆચાર્યજી કહે હૈં, “ દામોદરો ભક્તવશ્યો ” ઔર શ્રીસુબોધિનીજી મેં વિસ્તાર
 કરિકે લિખે હૈં । જો-પુરુષોત્તમ સાક્ષાત્ ભક્તન કે વસ દિખાયે । સો અપનો

પાપ જાય તો એમનું નામ દમલા તે અમલા કહ્યું તેનું પ્રયોજન શું ? આ સ દેહ
 હોય ત્યાં કહે છે, જે-આ ભક્તિમાર્ગમાં શ્રીઠાકુરજીમાં પ્રીતિ હોય ત્યાં સુધી
 અમલ છે. જ્યારે શ્રીઠાકુરજીથી અધિક શ્રીઆચાર્યજીમાં પ્રીતિ હોય ત્યારે તેને
 અમલા કહીએ. દામોદરદાસને એક દઢભાવ શ્રીઆચાર્યજીમાં છે. કેમ ? જે-(એક
 સમય) દામોદરદાસની ગોદીમાં શ્રીમસ્તક ધરીને શ્રીઆચાર્યજી પોઢયા હતા. તે
 (સમયે) શ્રીગોવર્દનધર સાક્ષાત્ પધાર્યા. ત્યારે રોજ્યા (જે) નિકટ ન પધારે, શ્રીમહા-
 પ્રભુજી જાગી જાશે. એવો દઢભાવ છે. જે ઉઠીને શ્રીઠાકુરજીને દડવત પણ ન કર્યા.

વળી શ્રીગુસાંઙજી પૂછે, જે શ્રીઠાકુરજીથી મોટા કેમ કહ્યા ? ત્યારે દામોદરદાસે
 કહ્યું, જે-દાન મોટું કે દાતા મોટા ? દાતા જ્યાં ઇચ્છે ત્યાં દાન ચલ્યો જાય । જ્યાં
 ઇચ્છે ત્યાં દાતા દાનને રાખે, આ ભાવ દઢ છે તેથી. શ્રીઆચાર્યજી દમલા કહેતા
 જે-કોઈ પ્રકારથી અન્ય સંબંધને ગંધ પણ નથી. તેથી ‘અમલા’ છે

અને એમનું નામ દામોદરદાસ એથી છે, જે ‘પુરુષોત્તમ સહસ્રનામ’ માં
 શ્રીઆચાર્યજી કહે છે “ દામોદરો ભક્તવશ્યો ” અને શ્રીસુબોધિનીજીમાં વિસ્તાર
 કરીને લખે છે, જે પુરુષોત્તમ સાક્ષાત્ ભક્તોને વશ દેખાડયા તે પોતાનું બંધન

बंधन छोड़ि न सके, और जसोदाजी को, ब्रजभक्तन को स्वरूप दिखाये । जसोदाजी इतने भक्त हैं, जो—श्रीठाकुरजी कों बांधे । सो उन भक्तन की संमति देखि कै बंधाने, जो—दाम ब्रजभक्त लाये हैं । परंतु जसोदाजी को बंधन छुड़ाये की सामर्थ्य नहीं है । तातेँ यमलार्जुन वृक्ष गिरे, तब सोर भयो, तब ब्रजभक्तन ने दाम छोर हैं । तातेँ श्रीठाकुरजी सों जसोदाजी बड़े, श्रीदामोदरजी सों ब्रजभक्त बड़े । सो भक्तवत्सलता प्रगट करी ।

तैसेँ ही दामोदरदास नाम करि, दामोदर जो—अनन्य भक्त हैं—तिनके बस श्रीआचार्यजी हैं । तातेँ कहते, ‘दमला ! यह मार्ग तेरे लिये प्रगट कियो है ।’ तामें यह आयो, जो—और भक्त बोहोत हैं परन्तु तेरे मैं बस हों, यह जताये ।

और दामोदरदास को अलौकिक स्वरूप हैं सो ललिताजी को प्रागट्य है । उहां सगरी रहस्य—लीला में श्रीस्वामिनीजी की आज्ञाकारी जैसे ललिताजी, तैसे ही इहां आचार्यजी की आज्ञाकारिनी ललितारूप दामोदरदास । जो—जनम ही तें बाल ब्रह्मचारी सखी रूप, गृहस्थाश्रम कों जानत नहीं ।

छोडी न सक्या. अने जशोदाजुनुं, प्रजभक्तोनुं स्वरूप देखाउयुं. जशोदाजु अटलां भक्त छे, जे श्रीठाकुरजुने बांध्या. ते भक्तोनी संमति जेधने बांधाया, जे दारकुं प्रजभक्तो लाव्यां छे. परंतु जशोदाजुनुं बाधन छोडाववानुं सामर्थ्य नथी. तेथी यमलार्जुन वृक्ष पडयां त्यारे डोलाहुल थयो. त्यारे प्रजभक्तोअे दाम छोडयां छे. तेथी श्रीठाकुरजुथी जशोदाजु भोटां, श्रीदामोदरजुथी प्रजभक्तो भोटां, ते भक्तवत्सलता प्रकट करी.

तेज प्रकारे दामोदरदास नाम करी, दामोदर, जे—अनन्य भक्त छे तेमना वश श्रीआचार्यजु छे. तेथी कहेता ‘दमला ! आ मार्ग तारा भाटे प्रगट कर्यो छे. तेमां अे आव्युं. जे भीज भक्तो धर्या छे परंतु तारे हुं वश छुं अेम जणान्युं.

अने दामोदरदासनुं अलौकिक स्वरूप छे ते ललिताजुनु प्रागट्य छे. त्यां सधणी रहस्य—लीलां श्रीस्वामिनीजुनी आज्ञाकारी जम ललिताजु ते प्रकारे अर्ही आचार्यजुनी आज्ञाकारिणी ललितारूप दामोदरदास. जे जनमथी जे पादप्रलयचारी, सणी रूप, गृहस्थाश्रमने जणुता नथी.

सो ललिताजी को भाव यह कीर्तन में जानने—

❁ राग केदारो ❁

हँसि हँसि दूध पीवत नाथ ।

मधुर कोमल वचन कहि कहि, प्रानप्यारी साथ ॥ १ ॥

कनक कटोरा भरयो अमृत, दियो ललिता हाथ ।

लाडिली अचवाय पहले, पाछें आप अघात ॥ २ ॥

चिंतामनि चित्त बस्यो सजनी, निरखि पिय मुसिकात ।

स्यामा स्याम की नवल छवि परि 'रसिक' बलि बलि जात ॥ ३ ॥

याको यह भाव है, जो—दोऊ स्वरूप रतन खचित सज्या ऊपर विराजे हैं, तहां ललिताजी कनक कटोरा में दूध ओटि के मिश्री सुगंध डारि ले आई । तब ललिताजी ने विचार कियो, जो—दोऊ स्वरूप विराजे हैं तातें पहले मैं श्रीस्वामिनीजी के हाथ में दउंगी तो श्रीठाकुरजी कों पान कराय कै पान करेगी । तहां मनोरथ सिद्ध न होयगो । तातें श्रीठाकुरजी के हाथ में दउंगी तब पहले पान श्रीस्वामिनीजी करेगी । तातें दूधको कटोरा श्रीठाकुरजी के हाथ में दियो । तब “ लाडिली अचवाय पहले पाछें आप अघात । ” काहेतें उनके हाथ सों वे आरोगे । उनके हाथ सों चिंतामनि रूप श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी के हृदय में है वे आरोगे । तातें श्रीस्वामिनीजी के पान किये तें श्रीठाकुरजी तृप्त होत हैं ।

ते ललिताञ्जने भाव आ कीर्तनमां जल्पुवे—

* राग केदारो *

हँसि हँसि दूध पीवत नाथ ।.....

(उपर जुआ)

आने आ भाव छे, जे अन्ने स्वरूप रतन जडित शया उपर बिराज छे, त्यां ललिताञ्जने कनक कटोरांमां दूध ओटिने मिश्री सुगंध पधरावी ले आऽयां तयारे ललिताञ्जने विचार कर्यो, जे अन्ने स्वरूप बिराज छे तेथी पहेलां हु श्रीस्वामिनी-ञ्जना हाथमां दधश तो श्रीठाकुरञ्जने पान करावीने (पछी) पान करशे त्यां मनोरथ सिद्ध थशे नही. तेथी श्रीठाकुरञ्जना हाथमां दधश तयारे पहेला पान श्रीस्वामिनीञ्ज करशे तेथी दूधने कटोरा श्रीठाकुरञ्जना हाथमां दीयो. तयारे ' लाडिली अचवाय पहेले पाछें आप अघात ' कुभठे अमना हाथथी अ आरोगे (अने) तेमना हाथथी चिंतामणी रूप श्रीठाकुरञ्ज श्रीस्वामिनीञ्जना हृदयमां छे ते आरोगे. तेथी श्रीस्वामिनीञ्जना पान करवाथी श्रीठाकुरञ्ज तृप्त थाय छे. आ प्रकारे ललिताञ्जनी

या प्रकार ललिताजी की प्रीति चातुर्य देखि कै श्रीठाकुरजी मुसिकाने । यह नवल छवि दूध पान करिवे के समय की शोभा ऊपर मैं—श्रीहरिरायजी—बलिहारी जात हौं ।

या प्रकार कौ भाव दामोदरदास को श्रीआचार्यजी महाप्रभुन में है । तातें न्यारी श्रीठाकुरजी की सेवा नाही पधराई । श्रीआचार्यजी महाप्रभु ठाकुर हैं । यह “मानसी सा परामता” मानसी सेवा के अधिकारी हैं । लीला रस में मगन रहत हैं ।

वार्ता-प्रसंग १—पाछें एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप ब्रज में पांडु धारे तब दामोदरदास साथ हे । श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप दामोदरदासको दमला कहते और कहते, जो—“दमला ! यह मार्ग तेरे लिये प्रगट कियो है ।”

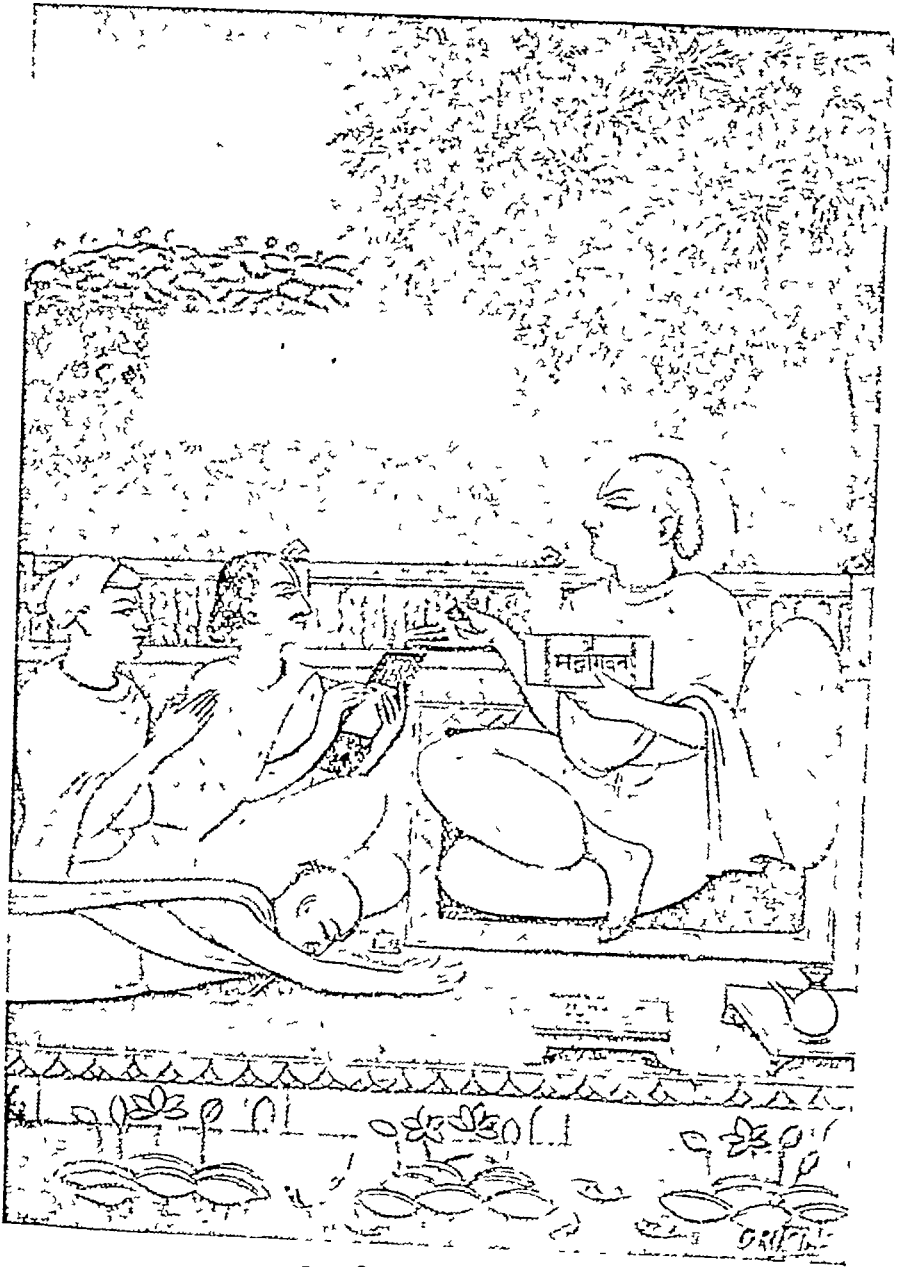
सो श्रीगोकुल में चोतरा एक गोविंदघाट ऊपर हतो, सो ता ठोर छोंकर के नीचे श्रीआचार्यजी आप विश्राम करते । ताके पास श्रीद्वारकानाथजी को मंदिर है । तहां श्रीआचार्यजी को चिंता उपजी । क्यों जो—श्रीठाकुरजी ने आज्ञा दीनी है, जो—जीवन को ब्रह्मसंबंध करवाओ । तातें श्रीआचार्यजी ने बिचारयो, जो—जीव

प्रीति चातुर्य जेधने श्रीठाकुरजी हुर्या. जे नवल छवि दूधपान करवाना समयनी शोभा उपर हु—श्रीहरिरायजी—बलिहारी जठं धुं.

आ प्रकारनो भाव दामोदरदासनो श्रीआचार्यजी महाप्रभुजिमां छे. तेथी अलग श्रीठाकुरजीनी सेवा नहीं पधरावी (डेभके) श्रीआचार्यजी महाप्रभु ठाकुर छे. जे ‘मानसी सा परामता’ मानसी सेवाना अधिकारी छे लीलारसमां मगन रहे छे.

वार्ता-प्रसंग १—पछी ओक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु आपे ब्रजमां यरखु धर्या तयरे दामोदरदास साथ हुता. श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप दामोदरदासने ‘दमला’ कहेता अने कहेता, जे—“दमला आ मार्ग तारा भाटे प्रकट कर्यो छे”

श्री गोकुलमां चोतरा ओक गोविंदघाट उपर हुतो. ते जग्याजे छोंकर (शमीवृक्ष) ना नीचे श्रीआचार्यजी आप विश्राम करता. तेनी पास श्रीद्वारकानाथजी मंदिर छे. त्यां श्रीआचार्यजीने चिंता उपजल. डेभ ? जे—श्रीठाकुरजीजे आज्ञा आपी छे, डे जेवाने (तमे) ब्रह्म (नो) संबंध करवाओ. तेथी श्रीआचार्यजीजे विचार्यो, डे



तीन सेवकों का चित्र.

- १-दण्डवत् करने वाले . श्रीदामोदरदास हरसानी ।
 २-हाथ जोड़ कर बैठे हुए कृष्णदास मेघन ।
 ३-लिखने वाले : माधवभट्ट काश्मीरी ।

तो दोषसहित हैं, और श्रीपूर्णपुरुषोत्तम तो गुणनिधान हैं, ऐसे संबंध कैसे होय ? तातें चिंता उपजी, सो अत्यंत आतुर भये ।

ता समें श्रीठाकुरजी तत्काल प्रगट होइके श्रीआचार्यजी सों पूछी, जो-तुम चिंतातुर क्यों हो ? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कहे, जो-जीव को स्वरूप तो तुम जानत ही हो, दोषवंत है । जो-तुमसों जीवनको संबंध कैसे होय ? तब श्रीठाकुरजी कहें, जो-“तुम (जा) जीव कों नाम देउगे तिनके सकल दोष निवृत्त होइंगे, तातें तुम जीवनकों अंगीकार करो ।”

भावप्रकाश—जीवन के उद्धारिवे की चिंता भई ताको कारन यह जो-उत्तम वस्तु कों अंगीकार कराइ सुख लेय, प्रीतम कों मध्यम वस्तु दोष सहित जीव कैसे अंगीकार कराइये ? यह मारग की रीति है ।

तथा जगत में महात्मी जीव हैं, जो-आप ब्रह्मसंबंध करावें तो लोक में जीव कों दृढ़ विश्वास कोइ एक कों होय । तातें श्रीठाकुरजी के श्रीमुख तें ब्रह्मसंबंध की आज्ञा कराये । तामें जीवनकों दृढ़ विश्वास कराये, जो-श्रीआचार्यजी कों वचन दिये हैं, जाकों ब्रह्मसंबंध होइंगो ताकों न छोड़ेंगे । यह महात्म्य तें जीव ब्रह्मसंबंध करेंगे, तातें श्रीठाकुरजी सों कहवाये ।

एव तो दोष सहित छे. अने श्रीपूर्ण पुरुषोत्तम तो गुण निधान छे. अंभ संबंध कैसे थाय ? तेथी चिंता उपए. ते (थी) अत्यंत आतुर थया.

ते समये श्रीठाकुरए (अ) तत्काल प्रकट थयने श्रीआचार्यएने पुछ्युं, जे तमे चिंतातुर कैसे छे ? तयारे श्रीआचार्यए महाप्रभु आप कहे, जे-एवतु स्वरूप तो तमे ज्ञाने न छे (के) ते दोषवंत छे. (तेथी) तमारी साथे एवोना संबंध केवी रीते थाय ? तयारे श्रीठाकुरए कहे, जे-तमे (जे) एवने ' नाम ' (अष्टाक्षर, पचाक्षर मत्र) आपशा तेना सकल दोष निवृत्त थशे तेथी तमे एवोना अंगीकार करे.

भावप्रकाश—एवोने उद्धारवानी चिंता थई तेतुं कारणे अ, जे उत्तम वस्तुने अंगीकार करावी सुअ दे, प्रीतम ने मध्यम वस्तु दोष सहित एव कैसे अंगीकार करावीअ ? आ मार्गनी रीति छे.

तथा जगतमां महात्मी एव छे, जे आप ब्रह्मसंबंध करावे तो लोकमां एवने दृढ़ विश्वास होअ अकने थाय. तेथी श्रीठाकुरएना श्रीमुखथी ब्रह्मसंबंधनी आज्ञा करावी. ते वडे एवोने दृढ़ विश्वास कराये, जे, श्रीआचार्यएने (श्रीठाकुर-एअ) वचन आप्युं छे. (के) जेने ब्रह्मसंबंध थशे तेने नहीं छोडे. आ महात्म्यथी एव ब्रह्मसंबंध करे. तेथी श्रीठाकुरएथी कहेवडायुं.

ये बातें श्रावण सुदि एकादसी के दिन मध्यरात्र कों भई ।
प्रातःकाल पवित्रा द्वादसी हती । तातें पवित्रा सूत को सिद्ध करि
राख्यो हतो, सो पवित्रा धराये । ता समे के अक्षर हैं, ताको
श्रीआचार्यजी ने “सिद्धान्त-रहस्य” ग्रन्थ कियो है ।

ता समे दामोदरदास नेक दूरि सोये हते । तातें दामोदर-
दास सों श्रीआचार्यजी ने पूछी, जो दमला ! तें कछु सुन्यो ?
तब दामोदरदास ने कछ्यो, जो-महाराज ! मैंने श्रीठाकुरजी के
वचन सुने तो सही, परि समुझ्यो नहीं ।

तब श्रीआचार्यजी आप कहे, जो-मोकों श्रीठाकुरजी ने
आज्ञा कीनी है, जो-तुम जीवनको ब्रह्मसंबंध करवावो, तिनको हों
अंगीकार करुंगो । और जिनको तुम नाम देउगे तिनके सकल
दोष निवृत्त होइंगे, तातें ब्रह्मसंबंध अवश्य करनो ।

भावप्रकाश—दामोदरदास ने कही, जो-मैंने श्रीठाकुरजी के वचन सुने
परि समुझ्यो नहीं । ताको कारन यह जताये, जो-एकादशाध्याय में भगवद्गीता
में श्रीठाकुरजी के वचन है, जो अपुने पढ़िकै समुझो चाहे सो समुझे न जाय, जब
गुरु कृपा करें तब समुझो जाय । तातें श्रीठाकुरजी के कहतें दामोदरदास समुझे

ये वार्ता श्रावण सुदि ऐकादशीना द्विसे मध्य रात्रिसे थई. प्रातःकाल
पवित्रा द्वादशी हती. तेथी पवित्रुं सूतनुं सिद्ध करी राख्युं हतुं, ते धराव्युं. ते
समयना अक्षर छे. तेना श्रीआचार्यजीसे ‘सिद्धान्त-रहस्य’ ग्रन्थ कियो छे.

ते समये दामोदरदास थोडी दूर सोया हता. तेथी दामोदरदासने श्रीआचार्यजी-
से पूछ्युं, जे दमला ! तें कछु सांख्युं ? त्यारे दामोदरदासे कछुं, जे-महाराज !
मैं श्रीठाकुरजीनां वचन सांख्युं तो भरा पणु समझ्यो नहीं.

त्यारे श्रीआचार्यजी आप कहे, जे मने श्रीठाकुरजीसे आज्ञा करी, छे, जे तमे
ज्योने ब्रह्मसंबंध करवावो. तेने हुं अंगीकार करीण. अने जेने तमे नाम
देशे तेना सकल दोष निवृत्त थये. तेथी ब्रह्मसंबंध अवश्य करनुं.

भावप्रकाश—दामोदरदासे कछु, जे में श्रीठाकुरजीनां वचन सांख्युं
पणु समझ्यो नहीं. तेनुं काणुं से सुख्युं, जे-एकादशाध्यायमां भगवद्गीतामां
श्रीठाकुरजीनां वचन छे जे आप जेणे लखीने समजना अंछे ते (यथाथ) न
समजय. त्यारे गुरु कृपा करे त्यारे समजुं शक्य तेथी श्रीठाकुरजीनां कहेनाथी

तब श्रीठाकुरजी के सेवक भये । तातें दामोदरदास तो श्रीआचार्यजी के सेवक हैं, जब श्रीआचार्यजी समुझावें तब ही समुझे ।

यह कहि यह जताये, जो-हृदय में दृढ़ ज्ञान गुरु की कृपा ही तें होय । स्वामी-सेवक भाव प्रगट दिखाये । जो दामोदरदास समुझे तो श्रीआचार्यजी की बराबरि ज्ञान कह्यो जाई, तातें कहे मैं समुझ्यो नहीं । अथवा कहे, जो-मैं समुझ्यो नहीं, सो मेरे समुझिवे को कहा प्रयोजन है ? आप कहें ताके समुझिवे को प्रयोजन मोकों है ।

और कथा कहत में श्रीआचार्यजी दामोदरदास सों कहते, जो-दमला ! बड़ी बार भई है, श्रीठाकुरजी की वार्ता नहीं करी ।

भावप्रकाश—ताको तात्पर्य यह है, जो-श्रीठाकुरजी की वार्ता आपु श्रीस्वामिनीरूप दामोदरदास ललित सखीरूप सों नहीं करी । ललिता सों एकांत रहस्य वार्ता, श्रीठाकुरजी के मिलन को प्रसंग प्रथम जा प्रकार लीला करी है सो नहीं करी । सो करन के लिये सवन के आगे ऐसे कहतें, कथा कहत समय, जो-ठाकुरजी की वार्ता नहीं करी ।

दामोदरदास समजे त्यारे (तो) श्रीठाकुरजीना सेवक तथा (कहेवाय) तेथी दामोदरदास तो श्रीआचार्यजीना सेवक छे ज्यारे श्रीआचार्यजी समजवे त्यारे ज समजे. जे कहीने जेम सूख्यु, जे हृदयमां दृढज्ञान गुरुनी कृपाथी ज थाय. (जेमां) स्वामी-सेवकभाव प्रकट पताव्यो. जे दामोदरदास समजे तो श्रीआचार्यजीनी परापरि ज्ञान (दामोदरदासमां छे जेम) कहेवाय तेथी कहे हुं समज्यो नहीं. अथवा कहे, जे हुं समज्यो नहीं, मारे ते समजवानुं शु प्रयोजन छे ? आप कहे तेने (ज) समजवानुं प्रयोजन मारे छे.

अने कथा कहेतांमां श्रीआचार्यजी दामोदरदासने कहेता जे-दमला ! पडुवार थर छे श्रीठाकुरजीनी वार्ता नहीं करी.

भावप्रकाश—तेनुं तात्पर्य जे छे, जे श्रीठाकुरजीनी वार्ता आपु श्रीस्वामिनी रूप दामोदरदास ललिता सखी रूपथी नहीं करी. ललिताथी एकांत रहस्य वार्ता, श्रीठाकुरजीना भगवानो प्रसंग प्रथम जे प्रकारे लीला करी छे ते नहीं करी ते करवाने माटे अंधानी आगण जेम कहेता कथा कहेती समय, जे श्रीठाकुरजीनी वार्ता नहीं करी.

वार्ता-प्रसंग २--और श्रीआचार्यजीने श्रीठाकुरजी की पास तीन बार यह माँग्यो, जो-मेरे आगे दामोदरदास की देह न छूटे। ताको हेतु यह है, जो-श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप सन्यास ग्रहण करिवे को बिचार मन में करे। ता समे श्रीगोपीनाथजी तथा श्रीगुसाईंजी दोऊ भाई बालक हते। तातें मारग की वार्ता श्रीआचार्यजी महाप्रभु दामोदरदास कों समझाह कै थापी। दामोदरदास सों कछु गोप्य न राख्यो।

और श्रीआचार्यजी श्रीभागवत अहर्निश देखते, कथा कहते और दामोदरदास सुनते। और मारग को सब सिद्धांत, भगवल्लीला-रहस्य श्रीआचार्यजी ने दामोदरदास के हृदय विषे स्थाप्यो।

दामोदरदास के हृदय विषे मारग स्थापि कितेक दिन पाछे श्रीआचार्यजी आप सन्यास ग्रहण किये। तब कितेक दिन पाछे श्रीगुसाईंजी ने श्रीअक्काजी सों पूछी, जो-आचार्यजी ने मार्ग प्रगट कियो है सो उत्सव को कहा प्रकार है? हम तो कछु जानत नाहीं। तब अक्काजी ने कह्यो, जो-मार्ग तथा उत्सव को प्रकार सब दामोदरदास सों कह्यो है, सो उनसों तुम पूछो। तुमसों दामोदरदास सब कहेंगे।

वार्ता प्रसंग—२ अने श्रीआचार्यजीने श्रीठाकुरजीनी पास त्रयवार अे माँग्युं, जे भारी आगण दामोदरदासनी देह न छूटे. तेना हेतु अे छे, जे, श्रीआचार्यजी महाप्रभु आपे सन्यास ग्रहण करवाने विचार मनमा क्यो. ते समे श्रीगोपीनाथजी तथा श्रीगुसाईंजी जेई साथ आगणक हुता. तेथी मार्गनी वार्ता श्रीआचार्यजी महाप्रभु (अे) दामोदरदासने समझवीने (तेमना हृदयमां) स्थापी (हुती) दामोदरदासथी कंछ गोप्य न राख्युं (हुतं).

अने श्रीआचार्यजी श्रीभागवत अहर्निश अवलोकता. कथा कहुता अने दामोदरदास सोलगतता. अने मार्गना अधे सिद्धांत. भगवल्लीला रहस्य श्रीआचार्यजीने दामोदरदासना हृदय विषे स्थाप्यु (हुतु).

दामोदरदासना हृदय विषे मार्ग स्थापी केलसक निवम पत्री श्रीआचार्यजी आपे सन्यास ग्रहण क्यो. त्पारपत्री केलसक निवम आद श्रीगुसाईंजीने श्रीअक्काजीने प्रक्युं, जे. आचार्यजीने मार्ग प्रकट क्यो छे. ते. उत्सवने या प्रकार छे? अने तो कंछ ज्ञानता नथी. तेथी अक्काजीने कहुं. जे मार्ग तथा उत्सवने अधे प्रकार दामोदरदासने क्यो छे. ते अनेमनाथी तमे प्रछो. तमने दामोदरदास अधुं कहुंछे.

તબ શ્રીગુસાઈંજી દામોદરદાસ કે ઘર પધારે । તબ દામોદર-
દાસ ને વહુન સન્માન કરિ ભક્તિભાવસોં ઘરમેં પધરાયે । તા પાછે
શ્રીગુસાઈંજી ને ઉત્સવ કે પ્રકાર પૂછે, સો સવ દામોદરદાસ ને કહે ।

ભાવપ્રકાશ—યામેં સંદેહ વહોત હૈ, જો-શ્રીઆચાર્યજી કર્તુમ્,
અકર્તુમ્, અન્યથા કર્તુમ્, સર્વસામર્થ્યયુક્ત હૈ, સો શ્રીઠાકુરજી પાસ ક્યોં માંગે ?

તાકો અભિપ્રાય યહ હૈ, જો-દામોદરદાસ કોં પ્રેમલક્ષણા ભક્તિ દદ્દ હોય
ચુકી હૈ, ઓર લલિતાજી કો સ્વરૂપ હૈ । સો શ્રીઠાકુરજી કોં પરમપ્રિય હૈ । લલિતાજી
મધ્યા હૈ, દોડ સ્વરૂપ કી સેવા મેં મગન હૈ । સો ઇનકોં શ્રીઆચાર્યજી કે દર્શન ઓર
શ્રીઠાકુરજી કે દર્શન દોડ મેં ભાવ હૈ । જાતે શ્રીઆચાર્યજી શ્રીઠાકુરજી સોં કહે,
જો-મેં દામોદરદાસ કોં જૈસે નિત્ય અનુભવ કરાવત હોં તૈસે તુમહ નિત્ય અપને
સ્વરૂપ કો અનુભવ કરાઝ્યો । યહ કહિકે યહ જતાયે, જો દામોદરદાસ પર અત્યંત
પ્રીતિ શ્રીઆચાર્યજી કી હૈ । તાતે જાને, જો-મતિ કહૂં મેરે પાછેં દમલા કોઈ
ઘાત સોં દુઃખ પાવે, તાતે શ્રીઠાકુરજી સોં કહે ।

ઓર માર્ગ દામોદરદાસ કે હૃદય મેં સ્થાપન ક્રિયે સો શ્રીગુસાઈંજી કે
લિયે । તાકો તાત્પર્ય યહ હૈ, જો-યદ્યપિ શ્રીગુસાઈંજી ઈશ્વર હૈ, વાલકુ હૈ, તો

ત્યારે શ્રીગુસાંઈજી દામોદરદાસના ઘરે પધાર્યા. ત્યારે દામોદરદાસે બહુ સન્માન
કરી ભક્તિભાવથી ઘરમાં પધરાવ્યા. ત્યારપછી શ્રીગુસાંઈજીએ ઉત્સવનો પ્રકાર પૂછ્યો,
તે બંધો દામોદરદાસે કહ્યો.

ભાવપ્રકાશ—આમાં સ દેહુ ઘણો છે, જે, શ્રીઆચાર્યજી કર્તુમ્
અકર્તુમ્ અન્યથા કર્તુમ્ સર્વ સામર્થ્યયુક્ત છે તે શ્રીઠાકુરજી પાસે કેમ માંગ્યું ?
તેનો અભિપ્રાય આ છે, જે દામોદરદાસને પ્રેમલક્ષણા ભક્તિ દદ્દ થઈ ચુકી છે.
અને લલિતાજીનું સ્વરૂપ છે. તે શ્રીઠાકુરજીને પરમ પ્રિય છે. લલિતાજી મધ્યા છે,
(તેથી) બન્ને સ્વરૂપોની સેવામાં મગન છે. તેથી એમને શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન
અને શ્રીઠાકુરજીનાં દર્શન બન્નેમાં ભાવ છે. તેથી શ્રીઆચાર્યજીએ શ્રીઠાકુરજીને
કહ્યું, જે-હું દામોદરદાસને જેમ નિત્ય અનુભવ કરાઉ છું તેમ તમે પણ નિત્ય
તમારા સ્વરૂપનો અનુભવ કરાવજો.

આ કહીને એ સૂચવ્યું, જે દામોદરદાસ ઉપર અત્યંત પ્રીતિ શ્રીઆચાર્યજીની છે. તેથી જણે, જે, કદાચ એમ ન થાય જે મારી પાછળ દામોદરદાસ ઠોઠ
વાતથી દુઃખ પામે, તેથી શ્રીઠાકુરજીને કહ્યું.

અને માર્ગ દામોદરદાસના હૃદયમાં સ્થાપન કર્યો તે શ્રીગુસાંઈજીને માટે.
તેનું તાત્પર્ય એ છે, જે યદ્યપિ શ્રીગુસાંઈજી ઈશ્વર છે, બાલક છે, તો શું થયું ? પરંતુ

कहा भयो ? परंतु श्रीआचार्यजी महाप्रभु अपनो भक्तिमार्ग दामोदरदास के हृदय में स्थापन करते । आपु श्रीमुख तें कहते, “यह मार्ग दमला तेरे लिये प्रगट कियो है । ” तातें वैष्णव के हृदय में स्थापन करें तो आगे वैष्णव में फैले । जो श्रीगुसांईजी के हृदय में प्रथम धर्म रहे, तो गोकुल में ही धर्म रहतो । गोकुल में तो पहले ही सों शेष अशेष माहात्म्य धारण किये हैं । काहेतें, बिन्दु सृष्टि है, और वैष्णव सो तो नादसृष्टि है । तातें इनकों तो भक्ति दियेतें होइ । यातें गोपालदास गाये हैं “ भक्तिमार्गीय जीव स्वतंतर केवल भक्त न थाय । ” तातें भक्तिमार्गीय जीव स्वतंत्र है, दैवी, परंतु केवल आप तें भक्ति न बढ़े । तातें श्रीआचार्यजी ‘नवरत्न’ में कहे हैं, जो—“निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशैर्जनैः ।”

या प्रकार भक्तन के हृदय में राखें, तातें भक्तिमार्ग प्रकट भयो । नहीं तो ईश्वरमार्ग कहावतो (तहां) केवल ईश्वरमार्ग कहावे, भक्तिमार्ग में ईश्वर मार्ग हू कहावे । जहां भक्ति तहां भगवान, जहां भक्ति नहीं तहां भक्तिमार्ग की रीति सों भगवान न रहें, अंतरयामी ह्वे रहें । तातें भक्तन को उत्कर्ष जामें होई सो भक्तिमार्ग कहावे ।

श्रीआचार्यजी महाप्रभु पोतानो भक्तिमार्ग (तो) दामोदरदासना हृदयमां स्थापन करता. (हुता) आप श्रीमुखी कहेता, आ मार्ग दमला तारा भाटे प्रकट कर्यो छे. तेथी वैष्णवना हृदयमां स्थापन करे तो आगण वैष्णवोमां इवे. जे श्रीगुसांईजीना हृदयमां प्रथम धर्म रहे तो गोकुलमां न धर्म रहेतो. गोकुलमां तो पहलाथी न शेष—अशेष माहात्म्यने धारण कराव्यु छे (स्थाप्युं न छे) कम डे बिन्दु—सृष्टि छे. अने वैष्णव अे तो नाद—सृष्टि छे. तेथी अने तो भक्ति दीधाथी थाय. तेथी गोपालदासे गाथुं छे—“ भक्तिमार्गीय अेव स्वतंतर केवण भक्त न थाय ” तेथी भक्तिमार्गीय अेव स्वतंत्र छे दैवी, परंतु केवण पोतानी भेणे (तेने) भक्ति न बढ़े. तेथी श्रीआचार्यजी ‘नवरत्न’ मां कहे छे, न

“ निवेदनं तु स्मर्तव्यं सर्वथा तादृशैर्जनैः ”

आ प्रकारे भक्तनोना हृदयमां राख्यो तेथी भक्तिमार्ग प्रकट थयो. नहीं तो ईश्वरमार्ग कहेनातो. (त्यां) केवण ईश्वरमार्ग कहेनाय. भक्तिमार्गमां ईश्वरमार्ग पणु कहेनाय. अ्यां भक्ति त्यां भगवान, अ्यां भक्ति नहीं त्यां भक्तिमार्गनी रीतिथी भगवान न रहे. अंतरयामी थय रहे. तेथी भक्तनोना उत्कर्ष अेमां होय ते भक्तिमार्ग कहेनाय.

वार्ता—प्रसंग ३—बहुरि एक समय दामोदरदास और श्रीगुसांईजी एकांत में बैठे हते । तब श्रीगुसांईजी दामोदरदास सों पूछे । जो-तुम श्रीआचार्यजी कों कहा करि के जानत हो ? तब दामोदरदास ने कह्यो, जो-हम तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों जगदीस सो संसार में सब कोऊ कहत हैं जो सबतें बड़े जगदीस श्रीठाकुरजी हैं, तिनतें अधिक करि जानत हैं । तब श्रीगुसांईजी दामोदरदास सों कहे, जो-तुम ऐसे क्यों कहत हो ! जो-श्रीठाकुरजी तें बड़े हैं ? तब दामोदरदास ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-महाराज ! दान बड़ो के दाता बड़ो ? काहुके पास धन बहोत है तो कहा करे ? देई ताको जानिये । और श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को सर्वस्व धन श्रीनाथजी हैं । सो हम जैसे जीवनकों आपु दान कियो है । तातें हम श्रीआचार्यजी कों सर्व ते बड़े करि जानत हैं ।

वार्ता—प्रसंग ४—बहुरि एक समय श्रीगुसांईजी बैठक में बैठे हते । द्वै चार वैष्णव कुंभनदास, गोविंददास आदि एकांत हसिवे खेलिवे के लिये पास बैठे हते । आपु उनसों हंसत खेलत मसकरी करत बहोत ही प्रसन्नता में खेल की वार्ता करत हते । ता समें दामोदरदास तहाँ आये । तब श्रीगुसांईजी बहोत आदर सन्मान

वार्ता प्रसंग—३ इरी अक समय दामोदरदास अने श्रीगुसांईजी अकांतमां भेडा हुता. त्यारे श्रीगुसांईजी दामोदरदासने पूछे, ने-तमे श्रीआचार्यजीने शुं इरीने न्णो छे ? त्यारे दामोदरदासे कहुं, ने, अमे तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुने जगदीश, ने संसारमां सर्वन्नु कहे छे ने सर्वथी मोटा जगदीश ङकुरे छे तेमनाथी (पणु) अधिक इरी न्णोअे छीअे. त्यारे श्रीगुसांईजी दामोदरदासने कहे, ने तमे अमे केम कहे छे ने श्रीठाकुरजी मोटा छे ? त्यारे दामोदरदासे श्रीगुसांईजीने कहुं, ने महाराज ! दान मोटुं के दाता मोटा ? केअनी पासे धन अहु छे तो शुं इरे ? दे तेतुं न्णोअे. अने श्रीआचार्यजी महाप्रभुतुं सर्वस्व धन श्रीनाथजी छे. ते अमारा नेवा लवाने आपे दान क्युं छे. तेथी अमे श्रीआचार्यजीने सर्वथी मोटा इरी न्णोअे छीअे.

वार्ता प्रसंग—४ इरी अक समय श्रीगुसांईजी भेडकमां भिरान्या हुता. भे अार वैष्णवो कुंभनदास, गोविंददास आदि अकांत हुसवा भेलवाने मटे पासे भेडा हुता. आप अेमनाथी हुसता, भेलता, भरकरी इरतां अहुज प्रसन्नतामां भेलनी वार्ता इरता हुता. ते समये दामोदरदास त्यां आग्या. त्यारे श्रीगुसांईजीअे अहु आदर

किये । पाछें दामोदरदास तहाँ आय के दंडवत् करि के बैठे । तब श्रीगुसांईजी सों दामोदरदासने कह्यो, जो-महाराज ! अपनो मारग निश्चितता को नहीं । यह मार्ग है सो तो अत्यंत कष्ट आतुरता को है, दुःख को है । तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-तुम धन्य हो । साँची कहत हो । परि हमकों जब श्रीआचार्यजी की कृपा होइगी तब कष्ट आतुरता होइगी । यह मार्ग तो श्रीआचार्यजी के अनुग्रह विना न होई ।

तब दामोदरदाम दंडवत् किये और कहें, जो-हमकों राजसों एकवेर विनती करनी सो करी । पाछे आप प्रभु हो, भली जानोगे सो करोगे । परि यह मारग तो या भाँतिको है । तब श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये और कहैं, जो-हमकों यह वार्ता श्रीआचार्यजी महाप्रभु तुम द्वारा कहे । जो-तुम न कहोगे तो और कौन कहेगो ? तुमकों देखत हैं तब चित्त अति प्रसन्न होत है, तातें सुखेन कहो । आप सारिखे श्रीआचार्यजी के सेवक जानिके कहत हैं । पाछें दामोदरदास की शिक्षा अंगीकारि करत भये । तातें बड़े सो बड़े ।

भावप्रकाश—यह लोकरीति सों विरुद्ध है । जो-सेवक स्वामीसों शिक्षा करें । यह संदेह होय तहां कहत हैं, दामोदरदास ललितारूप हैं । सो

सन्मान कर्तुं, पछी दामोदरदास त्यां आवीने दंडवत् करीने भेदा. त्यारे श्रीगुसांईजीने दामोदरदासे कहुं, जे महाराज ! आपणो मार्ग निश्चितताको नथी. आ मार्ग छे ते तो अत्यंत कष्ट आतुरताको छे, दुःखको छे. त्यारे श्रीगुसांईजी कहे, जे, तमे धन्य छे. साँची (वात) कहे छे. परंतु अमने न्यारे श्रीआचार्यजीनी कृपा थशे त्यां कष्ट आतुरता थशे. आ मार्ग तो श्रीआचार्यजीना अनुग्रहविना न होय (न अने).

त्यारे दामोदरदासे दंडवत् कर्ता. अने कहुं, जे अमने राजथी अेकवार विनती करवी (हती) ते करी. पछी आप प्रभु छे लकी नखुशे ते करशे. परंतु आ मार्ग तो आ प्रकरने छे. त्यारे श्रीगुसांईजी अहु प्रसन्न थया अने कहे, जे अमने आ वार्ता श्रीआचार्यजी महामुप्रभुअे तमारी द्वारा कही. जे तमे न कहेशे तो भीजे डालु कहेशे ? तमने जेधअे थीअे त्यारे चित्त अतिप्रसन्न थाय छे तेथी सुभेथी कहे. आपना जेवा श्रीआचार्यजीना सेवक नखीने कहे छे. पछी दामोदरदासनी शिक्षा अंगीकार करत थया. तेथी भेदा ते भेदा.

भावप्रकाश—आ लोकरीतिथी विरुद्ध छे, जे सेवक स्वामीने शिक्षा करे आ सदेहु थाय त्यां कहे छे, दामोदरदास ललितारूप छे ते श्रीगुसांईजीने

श्रीचंद्रावलीजी कों (गुसाईंजी कों) परकीयारसभाव है । परकीयारस में प्रीति बहोत हैं, अष्टप्रहर चित्त प्यारे सों लग्यो रहत है । सो जारभाव को प्रकार दिखाये । जो-और के संग हांसी कैसी ?

तथा दामोदरदासकी देह मात्र दीसत है, परंतु श्रीआचार्यजी को आवेस अष्ट प्रहर रहत है । जो-मुख सों श्रीआचार्यजी बोलत हैं । तातें श्रीगुसाईंजी कहत हैं, जो-हमकों यह वार्ता श्रीआचार्यजी महाप्रभु तुम द्वारा कहे ।

वार्ता-प्रसंग ५—और एक दिन दामोदरदास के पिता को श्राद्धदिन हतो । ता दिन श्रीगुसाईंजी तहाँ पधारे । वाके पिता को श्राद्ध करवायो । पाछें उत्थापन के समें दामोदरदास दरसन कों आये । तब श्रीगुसाईंजीने कही, जो-मोको श्राद्ध की दक्षिणा देउ । तब दामोदरदास ने कही, जो-दक्षिणा में एक बात कहूँगो । सो 'सिद्धान्तरहस्य' के डेढ़ श्लोक को व्याख्यान कहे । यह ऐसी बात है । तब श्रीगुसाईंजी कहे, जो-आगे कहो । तब दामोदरदास ने कही, जो मैंने तो इतनो संकल्प कियो है । तब श्रीगुसाईंजी चुप करि रहें । पाछें दामोदरदास ने मारग की प्रणालिका कही । श्रीभागवतकी टीका श्रीसुबोधिनीजी, श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके ग्रन्थनकी टीका और रहस्यवार्ता श्रीगुसाईंजीकी आगे सब कहें ।

(श्रीगुसांभलने) परकीया रसभाव छे परकीया रसमां प्रीति धरणी छे. अष्टप्रहुर चित्त प्याराथी लाग्युं रहे छे. तेजरभावने प्रकर देखाडयो. जे पीजनी सगे हांसी इवी ?

तथा दामोदरदासनी देह मात्र देखाय छे परंतु श्रीआचार्यलने आवेश अष्टप्रहुर रहे छे. जे, सुभथी श्रीआचार्यलपोसे छे. तेथी श्रीगुसांभल कहे छे, जे, अमने आ वार्ता श्रीआचार्यल महाप्रभु तमारी द्वारा कहे.

वार्ता प्रसंग—५ अने अेक दिवस दामोदरदासना पिताने श्राद्धदिन हुते. ते दिवसे श्रीगुसांभल त्या पधार्या. अेमना पितालुं श्राद्ध कराव्युं. पछी उत्थापनना समये दामोदरदास दर्शने आव्या. त्यारे श्रीगुसांभलअे कहुं, जे, मने श्राद्धनी दक्षिणा दे. त्यारे दामोदरदासे कहुं, जे दक्षिणांमां अेकवात कहीश. ते 'सिद्धान्तरहस्य' ना उाठ श्लोकलुं व्याख्यान कहुं, अे अेवी वात छे. त्यारे श्रीगुसांभल कहे जे आगे कहे. त्यारे दामोदरदासे कहुं, जे अेथेला संकल्प कर्थे छे. त्यारे श्री गुसांभल रूप थर्ध रखा. पछी (तो) दामोदरदासे मार्गनी प्रणालिका कही. श्रीभागवतनी टीका श्रीसुबोधिनील, श्रीआचार्यल महाप्रभुना अंधानी टीका अने रहस्यवार्ता श्रीगुसांभलआगण सर्व कहुं.

ता पाछें श्रीगुसाईंजी दामोदरदास कों नमस्कार करन न देते । यातें, जो-श्रीगुसाईंजी अपने मनमें यों विचारे, जो-श्रीआचार्यजी महाप्रभु दामोदरदास के हृदे विषे (सदा) सर्वदा बसत हैं । तो इन पास क्यों नमस्कार करन दीजे ? यातें नमस्कार न करन देते । और दामोदरदासकों श्रीगुसाईंजी अनो चरणोदक हू न देते ।

पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने दामोदरदास कों दरसन दीनो और आज्ञा दीनी, जो-तू श्रीगुसाईंजी को चरणोदक नित्य लीजियो । तब प्रातःकाल दामोदरदास श्रीगुसाईंजी के पास आये । चरणोदक माग्यो । तब श्रीगुसाईंजीने चरणोदक की नाहीं कीनी । तब दामोदरदासने श्रीगुसाईंजी सों कह्यो, जो-मोको श्रीआचार्यजी की आज्ञा भई है और श्रीआचार्यजी को दरसन भयो है । और कह्यौ है, जो-चरणोदक लीजियो । तब श्रीगुसाईंजीने चरणोदक दीनो ।

भावप्रकाश--श्राद्ध करावये को अभिप्राय यह (है) जो-दामोदरदास के पितरन को उद्धार तो होइ चुक्यो । जब ए भक्त में (है) । मर्यादामार्ग में नृसिंहजी ने प्रह्लाद सों कह्यो है । एकीस पुरषा भक्त के तरे । सो दामोदरदास तो पुष्टिमार्गीय है । तातें इनके पितर तरे यामें कहा संदेह है ? परंतु पुष्टिमार्ग

ते पथी श्रीगुसाईंजी दामोदरदासने नमस्कार करवा न देता. (ते) अथी, जे-श्रीगुसाईंजी पीताना मनमां अम विचारे, जे श्रीआचार्यजी महाप्रभु दामोदरदासना हृदय विषे (सदा) सर्वदा बसे छे. तो अमनी पास कें नमस्कार करवा दधये ? तेथी नमस्कार न करवा देता, अने दामोदरदासने श्रीगुसाईंजी पीतानुं यरखोदक पखु न देता.

पथी श्रीआचार्यजी महाप्रभुअे दामोदरदासने दर्शन आभ्यु अने आज्ञा दीधी, जे, तू श्रीगुसाईंजीनुं यरखोदक नित्य लेके. तयारे प्रातःकाल दामोदरदास श्रीगुसाईंजीनी पास आव्या. यरखोदक मांग्युं. तयारे श्रीगुसाईंजीअे यरखोदकनी ना छडी. तयारे दामोदरदासे श्रीगुसाईंजीने कछु, जे, मने श्रीआचार्यजीनी आज्ञा थई छे अने श्रीआचार्यजीना दर्शन थया छे, अने कछुं छे, जे यरखोदक लेके. तयारे श्रीगुसाईंजीअे यरखोदक आभ्युं.

भावप्रकाश--श्राद्ध कराववानो अलिप्राय अे छे, जे दामोदरदासना पितृअोनो उद्धार तो थई युक्त्यो, अयारे अे भक्तमां छे मर्यादामार्गमां नृसिंहजीअे प्रह्लादने कछु छे, अेकवीस पुरषा भक्ताना तरे, तो दामोदरदास तो पुष्टिमार्गीय छे. तेथी अमना पितृअो तरे अेमां शे अ देहु छे ? परंतु पुष्टिमार्गना

के संबंध बिना पुष्टिमार्ग में अंगीकार न होई। तातें श्रीगुसांईजी को संबंध श्राद्ध द्वारा पाय पुष्टिमार्ग में अंगीकार भयो। जो-दामोदरदास के श्राद्ध तें पुष्टिमार्ग में अंगीकार होई। परंतु गुरु की अपेक्षा है। गुरु बिना अंगीकार में दृढ़ अंगीकार नहीं। तातें श्रीगुसांईजी को संबंध कराये।

तहां यह संदेह होय, जो-दामोदरदास कों श्राद्ध कराये। इनके पितरन को पुष्टि को संबंध भयो। और भगवदीय को नहीं कराये। सो उनके पितरन को कैसे होयगो? यह संदेह होय तहां कहत हैं, यह पुष्टिमार्गीय दैवी जीव के आधिदैविक (मूलभूत) दामोदरदास हैं। जहां इनके पितरन को पुष्टि संबंध भयो तब सगरे पुष्टिमार्गीय के पितरन को पुष्टि संबंध भयो। जैसे मारग, दामोदरदास के पितरन को पुष्टि संबंध (भयो) ऐसे मारग दामोदरदास के लिये। तामें सगरे पुष्टि मार्ग के (जीवन के) लिये। या प्रकार मूल में भक्ति ता करि के सत्र में फेले। या प्रकार दामोदरदास की भक्ति करि के जीव में भक्ति बढ़ी हैं। जीव को सामर्थ्य नहीं है जो-पुष्टिमार्ग की भक्ति एक छिन करि सके।

और दक्षिणा में दामोदरदास ने 'सिद्धांत रहस्य' के डेढ़ बलोक को व्याख्यान

संबंध बिना पुष्टिमार्गिमां अंगीकार न थाय तेथी श्रीगुसांईजीने संबंध श्राद्ध द्वारा पायी पुष्टिमार्गिमां अंगीकार थयो। जे दामोदरदासना श्राद्ध (करवा) थी (पणु) पुष्टिमार्गिमां अंगीकार थाय, परंतु गुरुनी अपेक्षा छे। गुरु बिना अंगीकारमां दृढ़ अंगीकार नहीं। तेथी श्रीगुसांईजीने संबंध कराव्यो।

सां आ संदेह थाय जे दामोदरदासने श्राद्ध कराव्युं (तेथी) जेमना पितृज्योने पुष्टिने संबंध थयो। भीज भगवदीयाने नहीं कराव्युं ते जेमना पितृज्योतुं थुं थये? आ संदेह होय सां कहे छे, आ पुष्टिमार्गीय दैवी ज्योना आधिदैविक (मूलभूत) दामोदरदास छे। ज्यां जेमना पितृज्योने पुष्टि (ने) संबंध थयो सां सधणा पुष्टिमार्गीयाना पितृज्योने (पणु) पुष्टिसंबंध थयो। जे मार्ग, (प्रकारे) दामोदरदासना पितृज्योने पुष्टिसंबंध थयो) तेवो मार्ग (प्रकारे) दामोदरदासने अर्थे जेमां सधणा पुष्टिमार्गिना (ज्यो) ने माटे, आ प्रकारे मूलमां लक्षित तेनाथी अधामां क्वे। आ प्रकारे दामोदरदासनी लक्षित करीने ज्योमां लक्षित वधी छे। ज्योतुं सामर्थ्य नहीं, जे पुष्टिमार्गिनी लक्षित अक क्षण (पणु) करी शके।

अने दक्षिणां दामोदरदासे 'सिद्धांत रहस्य' ना डेढ़ श्लोकनु व्याख्यान

कियो । तब श्रीगुसाईंजी कहें आगे कहो । तब दामोदरदासने कही, जो-मैंने तो इतनो (ही) संकल्प कियो है । ताको कारन यह है, जो-सत्य संकल्प (तो) इतने ही में सगरो मारग है ।

श्रीगुसाईंजी चरणोदक दामोदरदास कों न देते, दंडोत् करन न देते । सो यातें, जो-श्रीस्वामिनीजी की अनन्य सखी है । उनही कों करे । तातें दामोदरदास ने हठ नहीं कियो । चरणोदक न लियो । तातें श्रीआचार्यजी (ने) दामोदरदास कों समझायो । जो-तू श्रीगुसाईंजी को चरणोदक लीजियो, दंडोत् करियो । मैं श्रीगुसाईंजी के हृदय में बिराजत हूँ । मेरो स्वरूप मोतें प्रगटे है । तब दामोदरदास श्रीगुसाईंजी सों यह भेद कर्हे । तब श्रीगुसाईंजी कहे, लेहू । प्रसन्न होइ के चरणोदक दिये । जाने, जो-श्रीआचार्यजी के भावतें लेत है । मेरे भाव तें नहीं ।

याही तें श्रीगोपीनाथजी (श्रीआचार्यजी के बड़े पुत्र) यद्यपि श्रीगुसाईंजी के बड़े भाई हैं । परंतु काहू वैष्णव ने चरणोदक नहीं लियो । या भाव तें श्रीगुसाईंजी के सात बालक और बल्लभकुल के चरणोदक में श्रीआचार्यजी को भाव जनायो । तातें चरणोदक लेनो । दंडोत् करनो । यह सिद्धांत जनायो ।

क्युं. त्यारे श्रीगुसांघणु कहे आगण कहे. त्यारे दामोदरदासे क्युं, न मे तो अटलो (न) संकल्प क्यो छे, तेतुं कारण अ छे, न, सत्य संकल्प तो अटलाभां न अधे मारग छे.

श्रीगुसांघणु अरखोदक दामोदरदासने न देता, दंडवत् करवा न देता. ते अथी न श्रीस्वामिनीअनी अनन्य सखी छे (तेथी) अमने न (दंडवत्) करे. तेथी दामोदरदासे लठ न क्यो. अरखोदक न लीधु. तेथी श्रीआचार्यअअे दामोदरदासने समझव्या, न, तू श्रीगुसांघणुतु अरखोदक लेन, दंडवत् करे. हुं श्रीगुसांघणुना हृदयमां बिराजु छु. मार स्वरूप, माराथी प्रकटया छे. त्यारे दामोदरदास श्रीगुसांघणुने आ भेद कहे त्यारे श्रीगुसांघणु कहे वो. प्रसन्न थधने अरखोदक आप्युं. नखे, न श्रीआचार्यअना भावथी ले छे, मारा भावथी नहीं.

तेथी न श्रीगोपीनाथअ (श्रीआचार्यअना मोटा पुत्र) यद्यपि श्रीगुसांघणुना मोटा भाध छे परंतु डोध वैष्णवे अरखोदक नहीं लीधुं. आ भावथी श्रीगुसांघणुना सात पासक अने श्रीवल्लभकुलना अरखामृतमां श्रीआचार्यअनो भाव देभाडयो, तेथी अरखोदक लेवु, दंडवत् करवा, अ सिद्धांत अताव्यो.

वार्ता-प्रसंग ६—और दामोदरदास को श्रीआचार्यजी तीसरे दिन दरसन देते। मारग की रहस्यवार्ता कहते। ऐसी कृपा करते। और कदाचित तीसरे दिन दरसन न होतो तो ता दिन दामोदरदास के पेट में पीड़ा बहुत होती, अत्यंत कष्ट पावते। और पाछे दरसन होतो तब तत्काल कष्ट निवर्त्त होई जातो। ऐसी भांति केतेक वर्षपर्यंत श्रीआचार्यजी दरसन दीनो, ऐसी कृपा करते। जो बात होती सो सब दामोदरदास श्रीगुसाईंजीकी आगे कहते। और मारग के प्रकार (प्रकाश ?) की वार्ता अहर्निश करते। श्रीगुसाईंजी दामोदरदास की ऊपर बहोत कृपा करते और कहते, जो दामोदरदास के हृदय में श्रीआचार्यजी महाप्रभु सदा विराजे हैं।

भावप्रकाश—दामोदरदास को तीसरे दिन श्रीआचार्यजी दरसन देते। ताको हेतु यह, जो-तीन दिन लों दरसन को आवेस तामें मगन रहते। तीसरे दिन शरीर की सुधि होती। सो विरह कष्ट होतो। सो दरसन करि फेरि स्वरूपानंद में मगन होई जाते।

वार्ता-प्रसंग ७—और पहले दामोदरदास श्रीगुसाईंजी की आधी गादी दावि के बैठते। सो एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभु

वार्ता प्रसंग-६—भीलुं दामोदरदासने श्रीआचार्यजी त्रीज दिवसे दर्शन आपता, मारगनी रहस्य वार्ता कहेता, अेवी कृपा करता. अने कदाचित त्रीज दिवसे दर्शन न थतुं तो ते दिवसे दामोदरदासना पेटमां पीडा अहु थती, अत्यंत कष्ट पावता अने पथी दर्शन थतुं त्त्यारे तत्कास कष्ट निवृत्त थध नतुं, अेवी प्रकारे केलाक वर्ष पर्यंत श्रीआचार्यजीअे दर्शन आयुं, अेवी कृपा करता. जे बात छेय ते पथी दामोदरदास श्रीगुसांघज्ज आगण कहेता अने मारगना प्रकार (प्रकाश ?) नी वार्ता अहर्निश करता. श्रीगुसांघज्ज दामोदरदासनी उपर अहु कृपा करता अने कहेता जे दामोदरदासना हृदयमां श्रीआचार्यजी महाप्रभु सदा विराजे छे.

भावप्रकाश—दामोदरदासने तीजे दिवसे श्रीआचार्यजी दर्शन देता तेना हेतु अे जे त्रण दिवस पर्यंत दर्शनना आवेश तेमां मगन रहेता. त्रीज दिवसे शरीरनी सुध आवती तेथी विरह कष्ट थतुं. ते दर्शन करी करी स्वरूपानंदमां मगन थध नता.

वार्ता प्रसंग-७—अने पहिला दामोदरदास श्रीगुसांघज्जनी आधी गादी पाणीने भेसता. ते अेक दिवस श्रीआचार्यजी महाप्रभुअे जेथुं, त्त्यारे श्रीआचार्यजीअे दामो-

ને દેખ્યો । તવ શ્રીઆચાર્યજી ને દામોદરદાસ સૌં પૂછી, જો-દમલા ! તૂ શ્રીગુસાંઈજી કૌં કહા કરિકે જાનત હૈ ? તવ દામોદરદાસ ને કહી, જો-મહારાજ ! હૌં તો ઇનકૌં તુમારે પુત્ર કરિકે જાનત હૂં । તવ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ દામોદરદાસ સૌં કહે, જો-જૈસૈં તૂ મોકૌં જાનત હૈ । તૈસૈં ઇનકો સ્વરૂપ જાનિયો ।

વાર્તા-પ્રસંગ ૮—એક સમૈં શ્રીગુસાંઈજી બૈઠે હે । તવ દામોદર-દાસ ને કહી, મહારાજ ! અપનો મારગ નિસંગતા કો નાહીં । રૂપ પ્રગટ કર્તા (હૈ) । (ઔર કહી, જો) એક સમૈં શ્રીમહાપ્રભુજી પૌઢે હતે । તવ શ્રીગોવર્ધનનાથજી આપ કહે, જો-જીવ કો ઉદ્ધાર કરો । લીલાકર્તા અવલંબન, સુદ્ધિ કરતા ઉદ્દીપન ભાવ, યા પ્રકાર હેઢ શ્લોક કહે ।

શ્રાવણસ્યામલે પક્ષે એકાદશ્યાં મહાનિશિ ।

સાક્ષાત્ ભગવતા પ્રોક્તં તદક્ષરશ ઉચ્યતે ॥ ૧ ॥

બ્રહ્મસંબંધકરણાત્ સર્વેષાં દેહજીવયોઃ ।

યહ હેઢ શ્લોક મૈં સવ આયો ।

ભાવપ્રકાશ—સો (અમિપ્રાય) કહત હૈં । શ્રાવણ મહિના કે પતિ ભગવાન હૈ । એક અમલ જો ઉજયારો પક્ષ ભક્તજનન કો હૈ । તિન એકાદશી કો

દરદાસને પૂછ્યું, જે-દમલા ! તૂ શ્રીગુસાંઈજીને શું કરીને જાણે છે ? ત્યારે દામોદરદાસે કહ્યું, જે-મહારાજ ! હું તો એમને તમારા પુત્ર કરીને જાણું છું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ દામોદરદાસને કહે, જે-જેમ તૂ મને જાણે છે તેમ એમનું સ્વરૂપ જાણજે.

વાર્તા પ્રસંગ-૮—એક સમયે શ્રીગુસાંઈજી ધિરાજ્યા હતા ત્યારે દામોદરદાસે કહ્યું, મહારાજ ! આપણા માર્ગ નિસંગતાનો નથી. રૂપ પ્રગટ કર્તા છે. (અને કહ્યું જે) એક સમયે શ્રીમહાપ્રભુજી યોઢ્યા હતા ત્યારે શ્રીગોવર્ધનનાથજી આપ કહે, જે જીવનો ઉદ્ધાર કરો. લીલા કર્તા અવલંબન, શુદ્ધિકર્તા ઉદ્દીપનભાવ, એ પ્રકારે ઠાઠ શ્લોક કહે.

‘શ્રાવણસ્યામલે પક્ષે એકાદશ્યાં મહાનિશિ ।

સાક્ષાત્ ભગવતા પ્રોક્તં તદક્ષરશ ઉચ્યતે ॥

બ્રહ્મસંબંધકરણાત્ સર્વેષાં દેહ જીવયોઃ.’ ।

આ ઠાઠ શ્લોકમાં બધું આપ્યું.

ભાવપ્રકાશ—તે, અમિપ્રાય કહે છે. શ્રાવણ મહિનાના પતિ ભગવાન છે. એક અમલ જે ઉજયારો પક્ષ ભક્તજનોનો છે તે એકાદશીનો દિવસ

दिन प्रभुन को है । एकादश्यां । एकादस इंद्रिय की सुद्धि भक्तजनन कों करायवे कों । महानिशि, जो-अर्द्धरात्रि, रासलीला में साक्षात् भगवान (भक्तन) सों निसंक होई रहस्यवार्ता करत हैं लीला में, तेसे ही श्रीआचार्यजी सों बोले । सगरे अक्षर कहत हैं । यहाँ ताई श्रीआचार्यजी ऊपर भाव । श्रीगोवर्द्धननाथजी अब कहें । ब्रह्मसंबंध करावो । सबकों देह जीवकों । (तातें दामोदरदास ने श्रीगुसाईजी सों कह्यो) जो-भक्तिमारग के विस्तार की आज्ञा हैं, सो तुम करो । अज्ञान जीव हैं । याही ब्रह्मसंबंध तें दोष जाइगें, अंगीकार कराये । एक श्लोकमें लीला । आधे श्लोक में मारग की रीति । सब इनमें आयो । या प्रकार श्रीगुसाईजी सों दामोदरदास ने कह्यो ।

और ता पाछे दामोदरदास की सहायता सों आपने 'शृंगाररसमंडन' ग्रन्थ कियो ।

वार्ता-प्रसंग ९—और प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभु दामोदरदास सों कह्यो, जो-यह मारग तेरे लिये प्रगट कियो है । जो-जहां लगि श्रीआचार्यजी के मारग की स्थिति है तहां ताई दामोदरदास की (भी) मारग में स्थिति गोप्य है ।

प्रभुनो छे. अेकादशी (अेटले) अेकादश इंद्रियोनी शुद्धि भक्तजननेने करायवा भाटे. महानिशि, जे, अर्द्धरात्रि, रासलीलाभां साक्षात् भगवान (भक्तो) थी निशंक थध रहस्य वार्ता करे छे लीलाभां. ते ज प्रकारे श्रीआचार्यजी साथे बोल्यो. (ते) सधणा अक्षर कहे छे, अहीं सुधी श्रीआचार्यजी ऊपर भाव. श्रीगोवर्द्धननाथजी हुवे कहे छे, ब्रह्मसंबंध करवो. पंधाने देह जवनने. (तेथी दामोदरदासे श्रीगुसाईजीने कहुं,) जे भक्तिमारगना विस्तारनी आज्ञा छे ते तमे करे. अज्ञान जवो छे. आ ज ब्रह्मसंबंधथी दोषो जशे. अंगीकार करावथी. अेक श्लोकभां लीला. अउधा श्लोकभां मारगनी रीति. पधुं अेभां आबुं. आ प्रकार श्रीगुसाईजीने दामोदरदासे कहुं. अने तयार पछी दामोदरदासनी सहायताथी आपे 'शृंगार रसमण्डन' ग्रन्थ कर्यो.

वार्ता प्रसंग-८—वणी प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभु अे दामोदरदासने कहुं (लुं) जे आ मार्ग तारा भाटे प्रकट कर्यो छे. ते न्यां सुधी श्रीआचार्यजीना मार्गनी स्थिति छे त्यां सुधी दामोदरदासनी (पखुं) मार्गभां स्थिति गोप्य छे.

और दामोदरदास ने कह्यो, जो-मैंने श्रीठाकुरजी के वचन सुने परि समुझयो नाहीं । ता सभें श्रीआचार्यजी ने कह्यो अज हू, दस जन्म को अंतराय है ।

भावप्रकाश—ताको हेतु यह, जो-जब लगि श्रीआचार्यजी महाप्रभु के मारग की स्थिति है तब लगि दामोदरदास को प्रागट्य फेरि फेरि हैं । (गोप्य रीति सों) मारग को स्तंभ यातें हैं, जो-श्रीआचार्यजी ने दामोदरदास के हृदय में भगवदलीला स्थापी । सो संपूर्ण सृष्टि के उद्धार के निमित्त । दामोदरदास के जनम दसलों मारग की स्थिति है, जैसे बल्लभकुल को प्रागट्य है । तेसैं हि भक्ति दृढ करन के लिए दामोदरदास को हू अनेक वैष्णवन में प्रागट्य है ।

वार्ता-प्रसंग १०—एक सभें श्रीआचार्यजी 'सुंदर' सिलाके पास (जाकों 'पूजनी' सिला कहें हैं तहां छोंकर के नीचे श्रीआचार्यजी की बैठक है तहां) दामोदरदास की गोदि में मस्तक धरि आप पौढे हे । ता समय श्रीगोवर्द्धननाथजी मंदिरतें श्रीआचार्यजी के पास पधारे । तब दामोदरदास ने सेनही में श्रीगोवर्द्धननाथजी सों कह्यो जो तुम अब हि यहां मति आवो । तुम चंचल हो (तातें) श्रीआचार्यजी जागि उठेंगे । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ठाड़े होय रहे ।

अने दामोदरदासे कछुं, जे में श्रीठाकुरजानां पयन सालण्यां परंतु समन्ये नही. ते समये आचार्यज्ये कछुं, उल्लु दश जन्मनो अंतराय छे.

भावप्रकाश—तेनो हेतु आ, जे, ज्यां सुधी श्रीआचार्यज्ये महाप्रभुना मार्गनी स्थिति छे त्यां सुधी दामोदरदासतु प्राकटय इरी इरीने छे (गोप्य रीतिथी) मार्गनो स्तंभ तेथी छे, जे, श्रीआचार्यज्ये दामोदरदासना हृदयमां भगवदलीला स्थापी ते संपूर्ण सृष्टिना उद्धार निमित्त, दामोदरदासना जन्म दश सुधी मार्गनी स्थिति छे. जेभ वल्लभकुलतुं प्राकटय छे तेची ज रीते भक्ति दृढ करवा माटे दामोदरदासतुं पण अनेक वैष्णवोमां प्राकटय छे.

वार्ता प्रसंग-१०—अेक समय श्रीआचार्यज्ये 'सुंदर' सिलानी पास (जेने 'पूजनी' सिला कहे छे त्या शसीवृक्ष नीचे श्रीआचार्यज्येनी भेड छे त्यां) दामोदरदासनी गोदीमा मस्तक धरीने आप पोढया उता. ते समये श्रीगोवर्द्धननाथज्ये मंदिरथी श्रीआचार्यज्येनी पास पधर्या. तयारे दामोदरदासे सेनमा ज श्रीगोवर्द्धननाथज्येने कछुं, जे तमे उमया अही न आवो. तमे ययस छे. (तेथी) श्रीआचार्यज्ये जगी उठ्ये. तयारे श्रीगोवर्द्धननाथज्ये उला थय रहा. तयारे श्रीआचार्यज्ये जगी उठ्या. कहे.

તબ શ્રીઆચાર્યજી જાગિ ઉઠે । કહે, બાબા ! ઉહાં ક્યોં ઠાઢે હોય રહે હો ? પાસ પધારો । તબ શ્રીગોવર્દ્દનધર પાસ આય શ્રીઆચાર્યજી સોં કહે । જો તુમ્હારો સેવક (ને) મોકૂં બરજ્યો, જો-યહાં મતિ આવો । શ્રીઆચાર્યજી જાગિ ઉઠેંગે । તારેં મેં દૂરિ ઠાઢો રહ્યો । તબ શ્રીઆચાર્યજી દામોદરદાસ ડપર સ્ત્રીજન લાગેં । જો-તેં શ્રીગોવર્દ્દનનાથજી કોં ક્યોં બરજે ? તબ શ્રીગોવર્દ્દનનાથજી કહેં । इनसों क्यों स्त्रीज्ञत हो ? इननें अपनो धर्म राख्यो । इनकों ऐसेहि चाहियें । तब श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धनधर कों गोदिमें बैठाय कपोल परख करि कहें, बाबा, कछू आज्ञा करो । तब श्रीगोवर्द्धनधर कहें । मोकूं गाय बहुत प्रिय हैं । तब श्रीआचार्यजी सदूपांडे कों बुलाय वेदकर्म करिवे की पवित्री हती सो दे कहे, याके दाम करि श्रीगोवर्द्धननाथजी कों गाय ल्याय देउ ।

✽

✽

✽

અવ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને કે સેવક કૃષ્ણદાસ મેઘન ક્ષત્રી, સોરોં મેં રહતે, તિનકી વાર્તા કો ભાવ કહત હેં—

ભાવપ્રકાશ—સો કૃષ્ણદાસ વિસાખા સક્ષી તેં પ્રગટે હેં । વિસાખાજી શ્રીસ્વામિનીજી કી છાયારૂપ હેં । જૈસેં છાયા સરીર કે સંગ લાગી ઢોલે તેંસેં વિસાખાજી શ્રીસ્વામિનીજી કે સંગ રહત હેં । તાહી પ્રકારસોં કૃષ્ણદાસ હ

ખાવા ! ત્યાં કેમ ઉભા થઈ રહ્યા છો ? પાસે પધારો, ત્યારે શ્રીગોવર્દ્દનધર પાસે આવી શ્રીઆચાર્યજીને કહે, જે તમારા સેવકે મને રોક્યો, જે અહીં ન આવો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી દામોદરદાસ ઉપર ખીજવા લાગ્યા. જે, તેં શ્રીગોવર્દ્દનનાથજીને કેમ રોક્યા ? ત્યારે શ્રીગોવર્દ્દનનાથજી કહે, એને કેમ ખિજો છો ? એણે એનો ધર્મ રાખ્યો. એને એમ જ બેધએ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી શ્રીગોવર્દ્દનધરને ગાદીમાં ખેસાડી કપોલ પરસ કરી કહે, ખાવા ! કંઈ આજ્ઞા કરો. ત્યારે ગોવર્દ્દનધર કહે, મને ગાય બહુ પ્રિય છે, ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી સદુપાંડેને બુલાવી વેદકર્મ કરવાની પવિત્રી હતી તે દઈ (ને) કહે, આણું દ્રવ્ય કરી શ્રીગોવર્દ્દનનાથજીને ગાય લાવી દો.

✽

✽

✽

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના સેવક કૃષ્ણદાસ મેઘન ક્ષત્રી, સોરજીમાં રહતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહે છે—

ભાવપ્રકાશ—તે કૃષ્ણદાસ વિશાખા સખીથી પ્રકટયા છે. વિશાખાજી શ્રીસ્વામિનીજીની છાયા રૂપ છે. જેમ છાયા શરીરની સંગે લાગી ફરે તેમ વિશાખાજી શ્રીસ્વામિનીની સંગે રહે છે, તેજ પ્રકારથી કૃષ્ણદાસ પણ શ્રીઆચાર્યજીના

श्रीआचार्यजी के संग रहत हैं। कृष्णदास में ऐश्वर्य को आवेस बहोत है। सो आगे (वार्ता में) वरनन करत हैं।

वार्ता-प्रसंग १—श्रीआचार्यजी महाप्रभुने पृथ्वी परिक्रमा करी। तीनों बेर कृष्णदास संग रहे। प्रथम परिक्रमा में बदरीनारायण के 'परली' ओर 'किरणी' नाम पर्वत हैं, तहांते एक बड़ी सिला गिरी। सो कृष्णदास मेघन ने हाथ सों थांभी। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप बहुत प्रसन्न भये। सो अलौकिक फल देते। परंतु परीक्षा देखन अर्थ कृष्णदाससों कह्यो, जो-तु माँगि कहा माँगत है? तब कृष्णदास तीन वस्तु मांगे। १ मारग को सिद्धांत हृदयारूढ होई। २ मुखरता दोष जाई। ३ मेरे गुरुके घर पधारो और उनकों अंगीकार करो। तामें दोइ वस्तु दीनी। गुरुके घर पधारिवे की नाहीं कीनी।

भावप्रकाश—यह पहले को गुरुभाव हृदय में हतो सो बाहिर प्रगट्यो। तातें अलौकिक दान श्रीआचार्यजी ने छिपाय लियो। दो वस्तु दिये। गुरुकी नाहीं किये। सो दैवी न हतो। दैवी विना एतन्मारग में अंगीकार नाहीं। या प्रकार दो वस्तु दिये। परंतु और को गुरुभाव रहे। तातें मारग को अनुभव हू न भयो। मुखरताको दोष हू न गयो। प्रथम सामर्थ्य तें कलुक सामर्थ्य हू घटी।

सगे रहे छे। कृष्णदाससंग अश्वर्यनो आवेश धर्यो छे। ते आगण (वार्तामां) वरुन करे छे

वार्ता-प्रसंग १—श्रीआचार्यजी महाप्रभुसे पृथ्वी परिक्रमा करी। त्रये वार कृष्णदास संग रह्यो। प्रथम परिक्रमामां बदरीनारायणना 'परली' अने 'किरणी' नाम (ना) पर्वत छे त्यांथी एक मोटी सिला पदी। ते कृष्णदास मेघन हाथथी थांली। त्तारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप अहु प्रसन्न थया। ते अलौकिक फल देता। परंतु परीक्षा लेवा भये कृष्णदासने कहुं, जे-तू मांगि, शुं मागे छे? त्तारे कृष्णदास त्रय वस्तु मागी : १ मार्गना सिद्धांत हृदयारूढ थाय, २ मुखरता दोष जय, ३ मारा गुरुना घर पधारो अने अने अंगीकार करे। त्तारे जे वस्तु आपी गुरुना घर पधारवानी ना कही।

भावप्रकाश—आ पहेलांते गुरुभाव हृदयमां हतो ते बाहर प्रकटयो। तेथी अलौकिक दान श्रीआचार्यजीसे छिपावी दीधु। जे वस्तु आपी। गुरुनी ना कही। ते दैवी न हतो। दैवी विना आ मार्गमां अंगीकार नथी। आ प्रकारे जे वस्तु आपी। परंतु भीजनो गुरुभाव नथो तेथी मार्गना अनुभव पयु न थयो। मुखरतानो दोष पयु न गयो। प्रथम सामर्थ्यथी कलुक सामर्थ्य पयु घटयुं।

वार्ता-प्रसंग २—बहुचि श्रीआचार्यजी श्रीवदरिकाश्रम तें आगें व्यासजीकी गुफामें पधारे । सो तहां जीवकी गम्य नाहीं । तातें कृष्णदास सों श्रीआचार्यजी ने कह्यो, जो-तू ठाडो रहियो । (सो) जब श्रीआचार्यजी आगे कों पधारे । तब वेदव्यासजी सामें ही आये । सो श्रीआचार्यजी कों पधराइ के अपने धाम ले गये । पाछें वेदव्यासजीने श्रीआचार्यजी सों कह्यो । जो तुमने श्रीभागवतकी टीका करी है सो मोकों सुनावो । तब श्रीआचार्यजी 'युगलगीत' के अध्याय को एक श्लोक कहे । सो श्लोक । " वामबाहुकृतवामकपोलो वल्गितभ्रूधरार्पितवेणुम् । कोमलांगुलीभिराश्रितमार्गं गोप्य ईरयति यत्र मुकुन्दः " ॥ १ ॥ या श्लोक को व्याख्यान कियो, सो तीन दिन में संपूर्ण भयो । तब वेदव्यासजी ने कह्यो, जो-मैं यह व्याख्यान की अवधारना नाहीं करि सकत, तातें अब क्षमा करो । पाछें श्रीआचार्यजी कह्यो, जो-तुम वेदांत के ऐसे सूत्र कहा किये, जो-मायावाद पर अर्थ लग्यो । तब व्यासजी ने कह्यो, जो-मैं कहा करूं ? मोकूं आज्ञा ही एसी हती । जो-ऐसे करियो । जामें दोइ अर्थ प्राप्त होइ । तब श्रीआचार्यजी ने कह्यो, जो-हमने तो ब्रह्मवाद पर अर्थ कियो है, सो सुनायो । सो सुनके वेदव्यासजी बहोत प्रसन्न भये ।

वार्ता-प्रसंग २—इरी श्रीआचार्यजी श्रीपद्मिकाश्रमथी आगण व्यासजीनी गुफामां पधार्या । त्यां लवनी गम्य नथी । तेथी कृष्णदासने श्रीआचार्यजीके कहुं, जे तू उल्ला रहेजे । (पछी) ज्यारे श्रीआचार्यजी आगण पधार्या । त्यारे वेदव्यासजी साम्हे आव्या । श्रीआचार्यजीने पधरावीने पोताना धाम लघगया । पछी वेदव्यासजीने श्रीआचार्यजीने कहुं, जे तमे श्रीभागवतनी टीका करी छे ते मने संलणावो । त्यारे श्रीआचार्यजी ' युगल गीत ' ना अध्यायने अक श्लोक कहे, ते श्लोक—

“ वामबाहुकृतवामकपोलो वल्गितभ्रूधरार्पितवेणुम् ।

कोमलांगुलीभिराश्रितमार्गं गोप्य ईरयति यत्र मुकुन्दः । ”

आ श्लोकतुं व्याख्यान कर्युं । ते त्रणु द्विपसमां संपूर्णुं थयुं । त्यारे वेदव्यासजीके कहुं, जे हुं आ व्याख्याननी अवधारणा करी शकतो नथी तेथी लवे क्षमा करे । पछी श्रीआचार्यजीके कहुं, जे तमे वेदांतना जेवां सूत्रो शुं कर्या जे मायावाद पर अर्थ लाग्यो ? त्यारे व्यासजीके कहुं, जे हुं शुं करुं ? मने आज्ञा न जेवी लती, जे जेम करजे के जेमां मने अर्थ प्राप्त थाय । त्यारे श्रीआचार्यजीके कहुं, जे-जमे तो ब्रह्मवाद उपर अर्थ कर्या छे ते संलणाव्यो । ते संलणीने वेदव्यासजी अहुं प्रसन्न

ता पाछें वेदव्यासजी सों विदा होइ के श्रीआचार्यजी तीसरे दिन पधारे । तब कृष्णदास कों ठाड़ो देखि प्रसन्न भये । कहे, तू ठाड़ो है । तू गयो नहीं । सो काहेते ? तब कृष्णदास ने कछो, जो-महाराज ! हौं कहाँ जाउं । मोकों तुमारे चरणारविंद विना कछू और आश्रय नहीं है । तब यह सुनिके श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप बहुत प्रसन्न भये । और कछो, जो-माँगि । तब फेरि वेई तीनि वस्तु माँगी । तामें दोई तो दीनी । गुरु के घर की नहीं कीनी ।

भावप्रकाश—और को गुरुभाव हतो । तातें प्रथम तें कछुक सामर्थ्य हू घटी । सो व्यासजी की गुफा में श्रीआचार्यजी कृष्णदास कों संग नहि ले गये । सो यातें 'युगलगीत' को प्रसंग कहनो है । ताकी धारना अब ही कृष्णदास सों होइगी नहीं । व्यासजी सों हू धारना ना भई । सो यातें व्यासजी कला अवतार हैं । पुरुषोत्तम की वानी भावरूप की धारना कैसें होइ ? यह श्रीभागवत व्यासजी में श्रीपुरुषोत्तम आप विराज कें कहि गये । व्यासजी द्वारा मात्र हैं । श्रीभागवत के रस को अनुभव नाहि है । सो रहस्य हरजीवनदास नें या पद में कछो है—

थया. ते पश्री वेदव्यासलथी विदाय थधनि श्रीआचार्यल त्रीज द्विसे पधार्था. त्यारे कृष्णदासने (तेज स्थाने) उलो जेध प्रसन्न थया. कहे, तु (त्यारनो) उलो छे ? तू गयो नहिं, ते केम ? त्यारे कृष्णदासे कछुं, जे, महाराज ! हुं क्यां जडे ? मने तमारा चरणारविंद विना कंध भीजे आश्रय नथी. त्यारे आ सांलणीने श्रीआचार्यल महाप्रभु आप अहु प्रसन्न थया. अने कछुं, जे-मांग. त्यारे इरी तेज त्रण वस्तु मागी. तमां जे ते आपी, गुरुना धरनी ना कही.

भावप्रकाश—भीजनो गुरुभाव हतो. तेथी प्रथमथी कंधक सामर्थ्य पणु घटयुं. तेथी व्यासलनी गुफांमां श्रीआचार्यल कृष्णदासने साथे नही लध गया. ते अथी, (ठ) युगलगीतने प्रसंग कहेवे छे. तेनी धारणा हनु कृष्णदासथी नहिं थाय. व्यासलथी पणु धारणा न थध. ते अे माटे (डे) व्यासल कला अवतार छे. (तेथी) पुरुषोत्तमनी वाणी लावइपनी धारणा डेनी रीते थाय ? आ श्रीभागवत व्यासलमां श्रीपुरुषोत्तम आप बिराजने कही गया. व्यासल द्वारा मात्र छे. श्रीभागवतना रसनो अनुभव नथी. ते रहस्य हरजीवनदासे आ पदमां कछुं छे,

* राग केदारो *

जोंलों हरि आपुनपों न जनावें ।
 तोंलों वेद पुरान स्मृति सब पढ़े सुनें नहिं आवें ॥१॥
 सुनि विरंचि नारायण मुख सों नारद सों कहि दीनो ।
 नारद कहि वेदव्यास सों आप सोध नहिं कीनो ॥२॥
 वेदव्यास औषध की नाईं पढ़ि तन ताप नसायो ।
 तिनतें पढ़े मुनि सुकदेवा परिक्षित कों जु सुनायो ॥३॥
 जदपि नृपति सुनि ब्रज की लीला दसम कही सुकदेवा ।
 तोऊ सर्वात्मभाव न उपज्यो तारें करी न सेवा ॥४॥
 श्रीभागवत अमृत दधि मथिके श्रीवल्लभ सर्वोत्तम ।
 करि आवरन दूरि निजजन के हाथ दिये पुरुषोत्तम ॥५॥
 सेवा अरु श्रृंगार विविध रस श्रीवल्लभ प्रगटायो ।
 करि कृपा निज दैवी जीवन पर 'हरजीवन' स्वाद चखायो ॥६॥

या प्रकार श्रीआचार्यजी की कृपा तें रस की प्राप्ति है ।

वार्ता-प्रसंग ३—बहुरि एक समय श्रीआचार्यजी गंगासागर पधारे । तहाँ श्रीआचार्यजी आप पौढ़े हते । और कृष्णदास पांव दावत हते । तब श्रीआचार्यजी आप मनमें विचारे, जो-धान के सुरसुरा होइ तो आरोगें । तब यह बात श्रीआचार्यजी के मन की कृष्णदास मेघन ने जानी । सो इतने में श्रीआचार्यजी कों निद्रा आई । तब कृष्णदास उठिकें गंगासागर उपर आये । तब देखे तो पार एक दीया बरत है । ताकी अटक तें पेरि कें गंगाजी के पार

राग केदारो

“ जेदों हरि आपुनपों न जनावें ” × × × (उपर लुआ)

आ प्रधारे श्रीआचार्यजी की कृपाथी रसनी प्राप्ति छे.

वार्ता प्रसंग ३—इरी एक समय श्रीआचार्यजी 'गंगासागर' पधार्या. त्यां श्रीआचार्यजी आप पौढया हुता. अने कृष्णदास यरखु दाणया हुता. त्यारे श्रीआचार्यजी आप मनमां विचारे, जे, धानना सुरसुरा (पौंभ) होइ तो आरोगीअ. त्यारे आ वार्ता श्रीआचार्यजीना मननी कृष्णदास मेघने जाणी. अरदाभां श्रीआचार्यजीने निद्रा आवी. त्यारे कृष्णदास उठीने 'गंगासागर' उपर आव्या. त्यारे देखे तो पार

ता पाछें वेदव्यासजी सों विदा होइ के श्रीआचार्यजी तीसरे दिन पधारे । तब कृष्णदास कों ठाढ़ो देखि प्रसन्न भये । कहे, तू ठाढ़ो है । तू गयौ नहीं । सो काहेते ? तब कृष्णदास ने कह्यो, जो-महाराज ! हौं कहाँ जाउं । मोकों तुमारे चरणारविंद बिना कछु और आश्रय नहीं है । तब यह सुनिके श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप बहुत प्रसन्न भये । और कह्यो, जो-माँगि । तब फेरि वेई तीनि वस्तु मांगी । तामें दोई तो दीनी । गुरु के घर की नहीं कीनी ।

भावप्रकाश—और को गुरुभाव हतो । तातें प्रथम तें कछुक सामर्थ्य हू घटी । सो व्यासजी की गुफा में श्रीआचार्यजी कृष्णदास कों संग नहि ले गये । सो यातें 'युगलगीत' को प्रसंग कहनो है । ताकी धारना अब ही कृष्णदास सों होइगी नहीं । व्यासजी सों हू धारना ना भई । सो यातें व्यासजी कला अवतार हैं । पुरुषोत्तम की बानी भावरूप की धारना कैसे होइ ? यह श्रीभागवत व्यासजी में श्रीपुरुषोत्तम आप विराज कें कहि गये । व्यासजी द्वारा मात्र हैं । श्रीभागवत के रस को अनुभव नाहि है । सो रहस्य हरजीवनदास नें या पद में कह्यो है—

थया. ते पछी वेदव्यासजी विदाय थधनि श्रीआचार्यजी तीन दिवसे पधार्या. त्यारे कृष्णदासने (तेज स्थाने) उलो जेध प्रसन्न थया. कहे, तु (त्यारना) उलो छे ? तू गयो नहिं, ते केम ? त्यारे कृष्णदासे कछुं, जे, महाराज ! हुं क्यां जठि ? भने तमारा चरणारविंद बिना कंछ भीजे आश्रय नथी. त्यारे आ सांसणीने श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप जहु प्रसन्न थया. अने कछुं, जे-मांग. त्यारे इरी तेज त्रण वस्तु मांगी. तमां जे ते आपी, गुरुना घरनी ना कडी.

भावप्रकाश—जीवनो गुरुभाव हतो. तेथी प्रथमथी कंछक सामर्थ्य पण घटयुं. तेथी व्यासजीनी गुफांमां श्रीआचार्यजी कृष्णदासने साथे नही लध गया. ते अथी, (४) युगलगीतनो प्रसंग कहेवो छे. तेनी धारणा हजु कृष्णदासथी नहिं थाय. व्यासजी पण धारणा न थध. ते अे भाटे (४) व्यासजी कला अवतार छे. (तेथी) पुरुषोत्तमनी वाणी भावपनी धारणा इवी रीते थाय ? आ श्रीभागवत व्यासजीमां श्रीपुरुषोत्तम आप विराजने कडी गया. व्यासजी द्वारा मात्र छे. श्रीभागवतना रसनो अनुभव नथी. ते रहस्य हरजीवनदासे आ पदमां कछुं छे,

* राग केदारो *

जौंलौं हरि आपुनपों न जनावें ।
 तौंलौं वेद पुरान स्मृति सब पढ़े सुनें नहि आवें ॥१॥
 सुनि विरंचि नारायण मुख सों नारद सों कहि दीनो ।
 नारद कहि वेदव्यास सों आप सोध नहि कीनो ॥२॥
 वेदव्यास औपध की नाई पढ़ि तन ताप नसायो ।
 तिनतें पढ़े मुनि सुकदेवा परिक्षित कों जु सुनायो ॥३॥
 जदापि नृपति सुनि ब्रज की लीला दसम कही सुकदेवा ।
 तोऊ सर्वात्मभाव न उपज्यो तारें करी न सेवा ॥४॥
 श्रीभागवत अमृत दधि मथिके श्रीबल्लभ सर्वोत्तम ।
 करि आवरन दूरि निजजन के हाथ दिये पुरुषोत्तम ॥५॥
 सेवा अरु श्रृंगार विविध रस श्रीबल्लभ प्रगटायो ।
 करि कृपा निज दैवी जीवन पर 'हरजीवन' स्वाद चखायो ॥६॥
 या प्रकार श्रीआचार्यजी की कृपा तें रस की प्राप्ति है ।

वार्ता-प्रसंग ३—बहुरि एक समय श्रीआचार्यजी गंगासागर
 पधारे । तहाँ श्रीआचार्यजी आप पौढ़े हते । और कृष्णदास पांव
 दाबत हते । तब श्रीआचार्यजी आप मनमें विचारे, जो-धान के
 सुरसुरा होइ तो आरोगें । तब यह बात श्रीआचार्यजी के मन की
 कृष्णदास मेघन ने जानी । सो इतने में श्रीआचार्यजी कों निद्रा
 आई । तब कृष्णदास उठिकें गंगासागर उपर आये । तब देखे तो
 पार एक दीया बरत है । ताकी अटकर तें पेरि कें गंगाजी के पार

राग केदारो

“ जेदों हरि आपुनपों न जनावें ” x x x (उपर जुआ)

या प्रकारे श्रीआचार्यजी की कृपाथी रसनी प्राप्ति छे.

वार्ता प्रसंग ३—इरी अेक समय श्रीआचार्यजी 'गंगासागर' पधार्थी. त्यां
 श्रीआचार्यजी आप पोढया हुता. अने कृष्णदास यरुण दापता हुता. त्यारे श्रीआ-
 चार्यजी आप मनमां विचारे, जे, धानना सुरसुरा (पौंभ) होइ तो आरोगीअे. त्यारे
 या वार्ता श्रीआचार्यजीना मननी कृष्णदास मेघने जाण्णी. अेरदाभां श्रीआचार्यजीने
 निद्रा आवी. त्यारे कृष्णदास उठीने 'गंगासागर' उपर आव्या. त्यारे देखे तो पार

गये । तहां एक गांव हतो । तहां खेत में तें गीलो धान कटवायो । टका की जगे द्वै टका दे के सुरमुरा सिद्ध करवाये । पाछे कृष्णदाम श्रीगंगाजी में पैरि कें श्रीआचार्यजी के पास आये । तब श्री-आचार्यजी के चरणारविंद दावि कें जगाये । सुरमुरा आगे राखे । कह्यो, जो-महाराज आरोगो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन नें पूछी, जो-तू कहां तें लायो ? तब कृष्णदास सब वृत्तांत कह्यो । तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होई कहें, जो-कछु मांगि । तब वेई तीन वस्तु मांगी । तब श्रीआचार्यजी ने कह्यो, जो-जीव कहा मांगि जानें ? या समें जो मांगतो सोई देतो । जो कहेतो तो श्रीठाकुरजी को स्वरूप दिखावतो ।

पाछे श्रीआचार्यजी आप सोरों पधारे । तब कृष्णदास ने विनती करिकें कह्यो, जो-मेरे गुरु कों ले आउँ ? तब श्रीआचार्यजी नें कह्यो, जो-तू खेद पावेगो । पाछे कृष्णदास इकेलेई गुरु के इहाँ गये । सो जब गुरु ने कृष्णदास कों देख्यो तब कह्यो, जो-तेनें और गुरु किये ? तब कृष्णदास नें कह्यो, जो-मैंने तो और गुरु नाहीं किये । मेरे गुरु तो आप ही हो । परि तुम्हारे प्रतापतें मैंने पूर्ण पुरुषोत्तम पाये हैं । तब वाने कह्यो, जो-पूर्ण पुरुषोत्तम कैसें जानिये ?

એક દીવા બળે છે. તેની અડકળથી તરીને ગંગાજીની પાર ગયા. ત્યા એક ગામ હતું. ત્યાં ખેતરમાંથી લીધું ધાન કટાયું. ટકાની જગાએ બે ટકા આપી સુરમુરા સિદ્ધ કરવાયા. પછી કૃષ્ણદાસ ગંગાજીમાં તરીને શ્રીઆચાર્યજીની પાસે આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીના ચરણારવિંદ દાખીને જગાવ્યા. સુરમુરા આગળ રાખ્યા. કહ્યું, જે-મહારાજ ! આરોગા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુએ પૂછ્યું, જે-તું ક્યાંથી લાવ્યો? ત્યારે કૃષ્ણદાસે સર્વ વૃત્તાંત કહ્યું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પ્રસન્ન થઈ કહે, જે કંઈ માંગ. ત્યારે તેજ ત્રણ વસ્તુ માંગી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, જીવ શું માંગી જાણે ? આ સમયે જે માંગતો તેજ દેતો. જે કહેતો તો, શ્રીઠાકુરજીનું સ્વરૂપ દેખાડતો (સાક્ષાત્ દર્શન કરાવતો).

પછી શ્રીઆચાર્યજી આપ સોરોં (સોરમજી) પધાર્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસે વિનતી કરીને કહ્યું, જે મારા ગુરુને લઈ આવું. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, જે, તું ખેદ પામીશ. પછી કૃષ્ણદાસ એકલા જ ગુરુને ત્યાં ગયા. તે ત્યારે ગુરુએ કૃષ્ણદાસને જોયો ત્યારે કહ્યું. જે. તેં ખીલ ગુરુ કર્યા ? ત્યારે કૃષ્ણદાસે કહ્યું, જે, મેં તો ખીલ ગુરુ નથી કર્યા. મારા ગુરુ તો આપજ છે પરંતુ તમારા પ્રતાપથી મેં પૂર્ણ પુરુષોત્તમ ને મેળવ્યા છે. ત્યારે તેને કહ્યું, જે પૂર્ણ પુરુષોત્તમ કેમ જાણીએ ? ત્યારે

तब गुरु के आगे अग्नि की अंगीठी धकधकात होती । तामेंतें कृष्ण-
दास ने दो हाथ की अंजुली भरि के अंगार हाथ में लिये और कहें,
जो-श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप पूर्ण पुरुषोत्तम होइ तो मेरे हाथ
मति जरियो । और, जो-अन्यथा होई तो मेरे हाथ जरि करि भस्म
होइ जैयो । सो एक मुहूर्त लों अग्नि हाथ में राखी । तब उन गुरु ने
भय खाई । तब कह्यो के डारि दे । पाछें उन गुरु ने कृष्णदास के
हाथ पकरि के अपने हाथ सों अग्नि डारि दीनी । तब कृष्णदास
तहांते खेद पाइ के उठि आये ।

यह प्रसंग सब बल्लभाष्टक की टीका में श्रीगोकुलनाथजी
ने विस्तारपूर्वक कह्यो है ।

भावप्रकाश—सो गंगासागर के तीर पधारे । सो रात्रि कों पोढ़े
हते । सो अर्धरात्रि कों मुरमुरा की मन में आई जो भोग धरिये । सो कृष्णदास
पर कृपा करन के लिये । काहेतें, पुरुषोत्तम कों कछु वस्तु की अपेक्षा होइ नहीं ।
कदाचित्त होई तो काहू के ऊपर कृपा करन के अर्थ । सो कृष्णदास कों जनाई ।
तब कृष्णदास तैरि के पार जाय ले आये । यह ईश्वरकार्य है । जीवसों न होइ ।

गुरुनी आगण अग्निनी अंगीठी प्रज्वलित हुती, तेभांथी कृष्णदासे जे हाथथी
आपणे भरिने अंगारा हाथमां दीधा अने कहुं, जे श्रीआचार्यजि महाप्रभु आप
पूर्ण पुरुषोत्तम होइ तो मारा हाथ न भजो, अने जे अन्यथा होइ तो मारा हाथ
भरिने भस्म थइ जअयो, ते अक मुहूर्त सुधी अग्नि हाथमां राखी, तयारे ते गुरु
उर्यो, तयारे कहुं के नाभी दे, पछी ते गुरुजे कृष्णदासना हाथ पकडीने पोताना
हाथथी अग्नि नाभी दीधी, तयारे कृष्णदास त्याथी जेद पासीने उठी आव्या,

आ प्रसंग जधो 'वदसभाष्टक' नी टीकाभां श्रीगोकुलनाथजिजे विस्तार-
पूर्वक कह्यो छे,

भावप्रकाश—गंगासागरना तीरे पधार्या, ते रात्रिजे पोढया हुता, ते
अर्द्धरात्रिजे मुरमुरानी मनमां आवी, जे भोग धरीजे, ते कृष्णदास उपर कृपा
करवाने भाटे, ठेम जे पुरुषोत्तमने कछु वस्तुनी अपेक्षा होइ नहीं, कदाचित् होइ
तो कछुना उपर कृपा करवा भाटे, ते कृष्णदासने जणवावी, तयारे कृष्णदास तनीने पार
जध लध आव्या, आ ईश्वर कार्य छे, जवथी न थाय, पछी कृष्णदासे यरज्जुदापीने
जगाव्या, तयारे श्रीआचार्यजि आप आरोगीने बहु प्रसन्न थया, तयारे कहुं मांग,

तब कृष्णदास चरन दावि के जनाये (जगाये) तब श्रीआचार्यजी आप आरोगि के वहीत प्रसन्न भये । तब कहे मांगि । पाछे वही तीन वस्तु मांगे ।

तब श्रीआचार्यजी कहे, जीव कहा मांगे ? जीव को माँगनो ही बाधक है । ताते परमानंददास ने गायो है “ माँगे सर्वस्व जात हैं परमानंद भाखे ” ।

और गुरु को भाव चित्त में हतो । ता करि महाप्रभु के वचन को विश्वास न भयो । जो—एकवार दिये सो दृढ़ हैं । फेरि कहा माँगनो ? और मारग की दुर्लभता दिखाये । श्रीमहाप्रभुजी के मन की बात मुरमुरा की जाने । परतु मारग हृदयारूढ़ कृपा ही तें होइ । दोष को स्वरूप है, जो—मुखरता दोष, जीव को स्वभाव हू जीव के हाथ नहीं । जब श्रीआचार्यजी छोडावें तब ही छूटे । ताते श्रीआचार्यजी विना और में ईश्वरबुद्धि तथा गुरुबुद्धि करे ताको एतन्मारग को फल कबहू सिद्ध न होइ । यह भाव जताये । पाछे कृष्णदास गुरु के यहाँ सँ दुःख पाय, अन्याश्रय छोड़ि, महाप्रभु के पास आये । तब मारग को सिद्धांत हृदयारूढ़ भयो और मुखरता दोष हू गयो । ताते फेरि श्रीआचार्यजी सँ नहीं मांग्यो । अन्याश्रय एसो बाधक है ।

वार्ता-प्रसंग ४—बहुरि मार्ग हृदयारूढ़ भये पाछे कदाचित् गोप्य वार्ता होइ सो सवन के आगे कहें । तब काहू वैष्णव ने

पछी तेज त्रैवस्तु मांगी, तयारे श्रीआचार्यजी कहे एव शुं मांगे ? एवतुं मांगवु न बाधक छे, तेथी परमानंददासे गायु छे, “मांगे सर्वस्व जात हैं परमानंद भाखे.”

अने गुनने भाव चित्तमां हतो तेने करीने महाप्रभुना वचन उपर विश्वास न थयो, जे एकवार दीधु ते दृढ़ छे, इरी शु मांगवुं ? अने मार्गनी दुर्लभता अतापी, श्रीमहाप्रभुजीना मननी बात मुरमुरानी जणी परंतु मांग हृदयारूढ़ कृपाथी न थाय, दोषतुं स्वरूप छे जे मुखरता दोष एवने स्वभाव पणु एवना हाथ नथी, तयारे श्रीआचार्यजी छोडावे तयारे छूटे, तेथी श्रीआचार्यजी विना जीवमां ईश्वरबुद्धि तथा गुरुबुद्धि करे तेने एतन्मार्गनु इल डोड द्विस सिद्ध न थाय, आ भाव न एवाव्यो, पछी कृष्णदास गुनने साथी दुःख पामी अन्याश्रय छोडी महाप्रभुनी पासो आव्यो, तयारे मार्गने सिद्धांत हृदयारूढ़ थयो, अने मुखरता दोष पणु गयो, तयारे इरी श्रीआचार्यजीथी मांग्युं नदी, अन्याश्रय एवो बाधक छे,

वार्ता प्रसंग ४—इरी मार्ग हृदयारूढ़ थया पछी कदाचित् गोप्य वार्ता होइ ते अधानी आगथ छे, तयारे डोड वैष्णवे श्रीआचार्यजीने इणुं, जे मदाराज ! इणु-

श्रीआचार्यजी सों कही, जो-महाराज ! कृष्णदास गोप्य वार्ता सवन के आगे कहत है । तव श्रीआचार्यजी ने कृष्णदास सों पूछी, जो-तू गोप्य वार्ता सवन के आगे क्यों कहत है ? तव कृष्णदास ने कह्यौ, जो-महाराज ! आप उनहीं सों पूछिये, जो-मैंने कहा कह्यौ है ? तव उन वैष्णव सों श्रीआचार्यजी ने पूछी, जो-तुमसों इन कृष्णदास नें कहा वार्ता कही ? तव उन वैष्णव नें कह्यौ, जो-महाराज ! हमकों तो कछु सुधि रही नाहीं । तव श्रीआचार्यजी मुसिकाई के चुप करि रहे ।

भावप्रकाश—मारग हृदयारूढ़ भयो । सो रसके भरते रह्यो न जाई । सो रहस्यवार्ता वैष्णवसों करे । तामें यह जताये, कृष्णदास अपुने अनुभव करन अर्थ कहते । परंतु पात्र विना रस ठेरे नाहीं । (तातें वैष्णव ने कही, कछु सुधि रही नाहीं) । और कृष्णदास की कछु दामोदरदास तें उतरती दसा । जो-कहे विना रह्यो न जातो । यह दोऊ भाव जताये ।

वार्ता-प्रसंग ५—और एक समें श्रीआचार्यजी सों कृष्णदास नें प्रश्न पूछयो, जो-महाराज ! श्रीठाकुरजी कों प्रिय वस्तु कहा है ? ताको प्रतिउत्तर श्रीआचार्यजी कहत हैं, जो-श्रीठाकुरजी उत्तम

दास गोप्य वार्ता अधानी आगण कहे छे, त्यारे श्रीआचार्यजीके कृष्णदासने पूछ्युं जे तू गोप्य वार्ता अधानी आगण केम कहे छे ? त्यारे कृष्णदासे कहुं, जे महाराज ! आप अनेन पूछीअे, जे मे' शुं कहुं छे ? त्यारे ते वैष्णवने श्रीआचार्यजीके पूछ्युं, जे तमने आ कृष्णदासे शी वार्ता कही ? त्यारे ते वैष्णवे कहुं, जे-महाराज ! अमने तो कंठ सुध रही नथी. त्यारे श्रीआचार्यजी हसिने चुप थध रहा.

भावप्रकाश—मार्ग हृदयारूढ़ थयो. ते रसना भरथी रह्यो न अय. ते रहस्यवार्ता वैष्णवथी करे. तेमां आ सूयव्युं (जे) कृष्णदास पोताना अतुलवार्थ कहेता. परंतु पात्र विना रस ठेरे नही. (तेथी वैष्णवे कहुं, कंठ सुध रही नही) अने कृष्णदासनी कंठक दामोदरदासथी उतरती दशा, जे, कछा विना रह्यो न अतो. अे अने भाव सूयव्या.

वार्ता प्रसंग ५—वणी अेक समये श्रीआचार्यजीने कृष्णदासे प्रश्न पूछयो, जे महाराज ! श्रीठाकुरजीने प्रिय वस्तु शी छे ? तेना प्रतिउत्तर श्रीआचार्यजी कहे छे, जे श्रीठाकुरजी उत्तम थी उत्तम वस्तुना लोक्रा छे. परंतु गोरस अति प्रिय छे. गोरस

तें उत्तम वस्तु के भोक्ता हैं। परंतु गोरम अति प्रिय है। गोरस जग्देन चाणी कहियत है। ताको भाव अनिर्वचनीय है। और सबन तें भक्त को स्नेहमय प्रभाव अतिप्रिय है। जातें भक्तवत्सल कहवावत हैं।

तव कृष्णदास ने फेर पूछी, जो-श्रीठाकुरजी कौं अप्रिय वस्तु कहा है? तव श्रीआचार्यजी नें कही। जो-श्रीठाकुरजी कौं थुंआ समान अप्रिय और नाहीं है। ताहूतें अप्रिय श्रीठाकुरजी कौं भक्त को द्वेषी है।

भावप्रकाश—गोरस सो वैष्णव को स्नेह परस्पर, और वैष्णव को द्वेष सो थुंआ। जहां स्नेह तहां श्रीठाकुरजी पधारे जानिये। जहाँ द्वेष तहाँ तें श्रीठाकुरजी द्विर जानिये।

फेरि कृष्णदास ने प्रश्न पूछ्यो, जो-महाराज! श्रीरघुनाथजी संपूर्ण सृष्टि कौं ले के स्वधाम पधारे। और राजा दशरथ कौं स्वर्ग दियो। सो काहेते? ताको प्रतिउत्तर श्रीआचार्यजी कहे, जो-श्रीरघुनाथजी तो परमदयाल हैं। तातें स्वर्ग दीनो नांतर स्वर्ग की (हू) योग्यता राजा दशरथ कौं न हती। काहेते, जो-अपनो वचन सत्य करिये कौं श्रीगमचंद्रजी कौं बनवास पठाये। ऐसो कर्म कियो।

भावप्रकाश—यह पक्ष हीनाधिकारी को है, काहेते, माक्षात पुरुषोत्तम

मनाधीय चाणी श्रेयाय छे। तेना भाव अनिर्वचनीय छे। अने अधाधी भक्ततेना अनन्य प्रभाव अति प्रिय छे। तेधी भक्तवत्सल श्रेयाय छे।

त्यारे प्रश्नाने द्वि प्रश्न। के श्रीठाकुरजने अप्रिय वस्तु शी छे? त्यारे विधानाचार्यजने द्वि प्रश्न। के श्रीठाकुरजने थुंआ समान अप्रिय भीलुं नथी। तेनाधीय अप्रिय श्रीठाकुरजने भक्तने द्वेषी छे।

द्वि प्रश्नाने प्रश्न प्रश्न। के महाराज! श्रीरघुनाथज संपूर्ण सृष्टिने लधने राजा दशरथ को। अने राजा दशरथने स्वर्ग दीयुं। ते शायी? तेना प्रतिउत्तर श्रीआचार्यजने द्वि प्रश्न। के श्रीरघुनाथज तो परम दयाल छे। तेधी स्वर्ग दीयुं। नहि तो राजा दशरथ (के) योग्यता राजा दशरथने न हती। केन। के योनाथुं वचन सत्य करिये कौं श्रीगमचंद्रजने बनवास पठाये। ऐसो कर्म कियो।

भावप्रकाश—आ भक्त हीनाधिकारीने छे, शायी (७) साक्षात् पुरुषो-

की लीला तें मन बाहर करि यह प्रश्न कहा ? यामें यह जताये । (कृष्णदास कीं) अवही “मानसी सा परा मता” यह फल नाही भयो । तव कृष्णदास के समाधान के अर्थ आप कहे, जो-रामचन्द्रजी दयाल है ।

यह कहि अपने मारग को सिद्धांत जताये । जो-अपने हठधर्म करि धर्मी, जो श्रीठाकुरजी तिनकीं श्रम करावे तो हीन फल धर्म को स्वर्ग ही मिले । श्रीठाकुरजीको फल न मिले ।

वार्ता-प्रसंग ६—और एक समे श्रीआचार्यजी सों कृष्णदास नें फेर प्रश्न पूछयो, जो-भक्त होइ के श्रीठाकुरजी की लीला को भेद नाही जानत सो काहेतें ? तब श्रीआचार्यजी ने कछो, जो-ये विधि पूर्वक समर्पन ज्यों कछो है त्यों नाही करत ।

विधि, सो समर्पन पदार्थ को ज्ञान नाही । अहंता-ममता अपनी सत्ता अहंकार को समर्पन । जो-अब दास भयो । प्रभु आधीन हों । प्रभु करें सो सर्वोपर सिद्धांत है । यह भेद अपने में नाही । और अपनी योग्यता मानि भगवदीय को संग नाही करत है । तातें योग्यता मानें तब प्रभु अप्रसन्न होई जात है । यह मारग दैन्य को है । सो दैन्य नाही है । इत्यादिक अंतरायतें अपनी स्वरूप

तमनी लीलाथी मन बाहर करी आवो प्रश्न शो ? आभां आ सूच्यु (३) (कृष्णदासने) ह्यु ‘ मानसी सा परा मता ’ ये इल नथी थयुं । तेथी कृष्णदासना समाधान अर्थे आप कहे, जे रामचन्द्रजी दयाल छे ।

ये कही पोताना मार्गना सिद्धांत बताव्यो । जे पोताना हठधर्म करीने धर्मी जे श्रीठाकुरजी तेमने श्रम करावे तो हीन इल धर्मनुं स्वर्ग जे भणे । श्रीठाकुरजीनुं इल न भणे ।

वार्ता प्रसंग ६—इरी एक समये श्रीआचार्यजीने कृष्णदासने प्रश्न पूछयो, जे, भक्त थधने श्रीठाकुरजीनी लीलातो भेद नथी जानतो ते शा भटे ? त्यारे श्रीआचार्यजीने कछुं, जे, ये विधिपूर्वक समर्पण जेम कछुं छे तेम करतो नथी ।

विधि अथले समर्पण पदार्थनुं ज्ञान, (ते) नथी । अहंता-ममता पोतानी सत्ता अहंकारनुं समर्पण । जे हवे (हुं) दास थयो, प्रभु आधीन हुं । प्रभु करे ते सर्वोपर सिद्धांत छे । आ भेद (ज्ञान) पोताभां नथी । अने पोतानी योग्यता मानी भगवदीयता संग नथी करतो । तेथी योग्यता माने त्यारे प्रभु अप्रसन्न थायइछे । आ भागी हीनतातो छे । ते दैन्य नथी । इत्यादिक अंतरायथी पोतानुं स्वल्प अने

और भगवदीय को स्वरूप, श्रीठाकुरजी को स्वरूप नहीं जानत है। और भगवद्भक्त को संग करे तो श्रीठाकुरजी की लीला को भेद जाने। सो तो योग्यता समज नहीं करत है। और जो-कछू करत है सो अंतःकरण पूर्वक नहीं करत है। तातें श्रीठाकुरजी को स्वरूप और लीला को भेद नहीं जानत है।

उत्तम भक्त को संग करे। श्रीभागवत श्रीसुबोधिनीजी आदि ग्रन्थ को अहर्निश अवगाहन करे। तब भगवद्भाव उत्पन्न होई। श्रीठाकुरजी ब्रजभक्तन विषे सदैव रहत हैं। तहां सेवा करि के बंधे हैं। तहां एतन्मार्गीय वैष्णव ताके हृदय में श्रीठाकुरजी विराजत हैं। ताको संग करनो। तहां गजनधावन आदि वैष्णव को दृष्टांत दीनों। जिन-जिन ने भावपूर्वक सेवा करी तिन-तिन के सकल मनोरथ सिद्ध भये। जातें लीलास्थ ब्रजभक्तन के भाव को विचार करनो।

जो वैष्णव श्रीठाकुरजी को स्वरूप जानत है। तिनको स्वरूप अलौकिक दृष्टि सों जान्यो जाय। जो आज्ञा होइ सो जाने। जो वैष्णव श्रीठाकुरजी को जानत है, सो जो कछू काज करत है सो श्रीठाकुरजी के अर्थ करत हैं, और श्रीठाकुरजी विषे विरह ताप

लगवदीयतुं स्वरूप श्रीठाकुरल्लुं स्वरूप नथी जल्लुतो, अने लगवद्भक्तने संग करे तो श्रीठाकुरल्लुनी लीलाने लेद जल्ले, ते तो योग्यता समल्ल करतो नथी, अने जे कंध करे छे ते अंतःकरणपूर्वक नथी करतो, तेथी श्रीठाकुरल्लुं स्वरूप अने लीलाने लेद जल्लुतो नथी.

उत्तम भक्तने संग करे, श्रीभागवत, श्रीसुबोधिनी आदि ग्रन्थतुं अहर्निश अवगाहन करे त्यारे लगवद्भाव उत्पन्न थाय, श्रीठाकुरल्लु ब्रजभक्तने विषे सदैव रहल्ले छे, त्यां सेवा वडे अधाया छे, त्यां आ मार्गना वैष्णव तेमना हृदयमां श्रीठाकुरल्लु गिराने छे, तेमने संग करवो त्यां गहिन धावन आदि वैष्णवोतुं दृष्टांत दीधुं, जेणे जेणे लावपूर्वक सेवा करी तेना तेना सकल मनोरथ सिद्ध थाया, तेथी लीलास्थ ब्रजभक्तने लावने विचार करवो.

जे वैष्णव श्रीठाकुरल्लुं स्वरूप जल्ले छे तेमल्लुं स्वरूप अलौकिक दृष्टिथी जल्लुं जय, (के) जे (ने) आज्ञा थाय ते जल्ले, जे वैष्णव श्रीठाकुरल्लुने जल्ले छे ते जे कंध कार्य करे छे ते श्रीठाकुरल्लुना मारि करे छे, अने श्रीठाकुरल्लु प्रत्ये विरहताप-

भाव करत हैं। अपुने स्वदोष को विचार करत हैं। (ऐसे जीव) अपुने स्वरूप विचारे, जो-हों कौन हों? पहले कहा हतो? भगवद् संबंध किये तें हों कौन हो गयो? अब मोकों कहा कर्तव्य? रात्रि-दिवस ऐसे विचार करत रहे तब अपनो स्वरूप जाने। ये प्रागट्य श्रीब्रजभक्तन के अर्थ है। तातें उत्तम संग होइ तो एतन्मार्गीय ठाकुर कों जाने। और शास्त्र पुरान अनेक इतिहास हैं। तातें ब्रजराज के घर प्रगटे सो स्वरूप जान्यो न जाय। ये ठाकुर तो तब ही जाने जाय जब भगवद्भक्त को संग करे। सेवा को प्रकार एतन्मार्गीय वैष्णव जानत हैं। तिनसों मिलि, भाव पूछि के सेवा करनी। तब भगवद्भाव उत्पन्न होइ। श्रीठाकुरजी की लीला को सब भेद जाने।

वार्ता-प्रसंग ७—और एक समें श्रीआचार्यजी श्रीवद्वीनाथजी के मंदिर पाँउ धारे। तब वेदव्यासजी साथ हे। तब श्रीआचार्यजी वेदव्यासजी सों पूछी, जो-भ्रमरगीत के अध्याय में उद्धव कों ब्रजभक्त पास पठाये। ता प्रसंग में आधो श्लोक घटत है। तब वेदव्यासजीने अर्द्धश्लोक कह्यो, सो श्लोक। “आत्मत्वाद्भक्तवश्यत्वात्सत्यवाक्त्वात्स्वभावतः” सो याकी टीका श्रीआचार्यजी नें पहले

भाव करे छे, पोताना स्वदोषनो विचार करे छे, (अथवा एव) पोताना स्वरूपने विचारे, जे हुं कौणु कुं? पहलेना शुं हतो? भगवद्संबंध कर्थाथी (हवे) हुं कौणु थयो? हवे भने शुं कर्तव्य छे? रात्रि दिवस अथ विचार करतो रह्ये, त्यारे पोतानुं स्वरूप नाल्ये, अथ प्रागट्य प्रणलकताना भाटे छे तेथी उत्तम संग होय तो आ मार्गना ढाकुरने नाल्ये, अने शास्त्र पुराण अनेक इतिहास छे तेनाथी प्रणराजना घर प्रगटय ते स्वरूपने नाल्युं न जाय, अथ ढाकुर तो त्यारे न नाल्यथा जाय न्यारे भगवद्भक्तनो संग करे, सेवानो प्रकार आ मार्गना वैष्णुवो नाल्ये छे, तेमनाथी भणी, भाव पूछीने सेवा करवी, त्यारे भगवद्भाव उत्पन्न थाय, श्रीढाकुरजीनी लीलानो अधो भेद नाल्ये,

वार्ता प्रसंग ७—वणी अथ समथे श्रीआचार्यजीअथ श्रीवद्वीनाथजीना मंदिरे यरणु धर्यां, त्यारे वेदव्यासजी साथे हुता, त्यारे श्रीआचार्यजीअथ वेदव्यासजीने पूछ्युं, जे, भ्रमरगीतना अध्यायमां उद्धवने प्रणलकत पास भेदकथा ते प्रसंगमां अधो श्लोक घटे छे, त्यारे वेदव्यासजीअथ अर्द्ध श्लोक कह्यो, ते श्लोक—

“आत्मत्वाद्भक्तवश्यत्वात्सत्यवाक्त्वात्स्वभावतः” ते अथनी टीका श्रीआचार्य-

ही कीनी ही । सो सुनिके वेदव्यासजी कहै, जो-तुम धन्य हो । ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीबद्रीनाथजी के मंदिर में पधारे । ता दिन वामनद्वादसी हती । ता दिन श्रीआचार्यजी व्रत करते । सो फलाहार व्यासजी हू दूंदे । और कृष्णदास हू दूंदे । परंतु मिल्यो नहीं । तब श्रीबद्रीनाथजी ने श्रीआचार्यजी सों कह्यौ । जो-मैनें फलाहार को सर्वत्र खोज कियो । परि पावत नहीं । तातें तुम रसोई करि के श्रीठाकुरजी कों भोग समर्पि के भोजन करो । तब श्रीआचार्यजी विचारे, जो-श्रीठाकुरजी की इच्छा एसी ही दीसत है । इतने में कृष्णदास ने आइ के कह्यौ, जो-महाराज ! इहां कछू फलाहार पाइयत नहीं । तब वेदव्यासजी द्वारा श्रीठाकुरजी ने कही, जो सामग्री करि भोजन करो । “उत्सवांते च पारणा” यह वचन है । ता पाछे श्रीआचार्यजी आपु रसोई करिके श्रीठाकुरजी कों भोग समर्पि के आप भोजन कियो ।

पाछें ता दिनतें वामनद्वादसी के दिन व्रत न करते । पाछे श्रीआचार्यजी श्रीबद्रीनाथजी तें विदा होइके कृष्णदास कों साथ लैके पधारे ।

भावप्रकाश—फलाहार ना मिल्यो । ताको प्रयोजन यह, जो-श्री-

थलमे पहुँचायी करी हुती. ते सांभलीने वेदव्यासल कहे, जे, तमे धन्य छे। त्पारपछी श्रीआचार्यल महाप्रभु श्रीबद्रीनाथलना मंदिरमां पधार्या. ते दिवसे वामनद्वादसी हुती. ते दिवसे श्रीआचार्यल व्रत करता (हुता). ते इलाहार व्यासल पबु भोजे अने कृष्णदास पबु भोजे. परंतु भज्ये नहीं. त्पारे श्रीबद्रीनाथलमे श्रीआचार्यलने कछु, जे, में इलाहारनी सर्वत्र तपास करी परंतु भगतो नहीं. तेथी तमे रसोई करीने श्रीठाकुरलने भोग समर्पिने भोजन करे. त्पारे श्रीआचार्यल विचारे, जे श्रीठाकुरलनी इच्छा अेवी ज देखाय छे. अेतलामां कृष्णदासे आवीने कछु, जे-महाराज ! अहीं कंठ इलाहार प्राप्त थतो नहीं. त्पारे वेदव्यासल द्वारा श्रीठाकुरलमे कछु, जे सामग्री करीने भोजन करे. ‘उत्सवांते च पारणा’ अेषुं पबु वचन छे. ते पछी श्रीआचार्यल आप रसोई करीने श्रीठाकुरलने भोग समर्पिने पोते भोजन क्युं.

पछी ते दिवसथी वामनद्वादसीना दिवसे व्रत न करता. पछी श्रीआचार्यल श्रीबद्रीनाथलथी विदाय थधने कृष्णदासने साथे लधने पधार्या.

भावप्रकाश—इलाहार न भज्ये तेतु प्रयोजन अे, जे, श्रीआचार्यल

आचार्यजी चाहें सो सवहि मिले । व्यासजी कृष्णदास सारिखे वृंढनहारे । सो फलाहार यातें न मिल्यो, जो-श्रीआचार्यजी के मन में सामग्री उत्सव की करनी । ऊपर तें मर्यादा राखिवे के लिये फलाहार की कही । सो फलाहार न मिल्यो । तातें वेदव्यासजी द्वारा श्रीठाकुरजी ने कहवाई ।

तातें श्रीगुसाईंजी ने सात लालजीन में, बड़े घर (प्रथम पुत्र श्रीगिरि-धरजी के घर) यह रीति राखी उपवास । और ठौर “ उत्सवांते च पारणा ” श्रीठाकुरजी सब सामग्री अरोगे ।

वार्ता-प्रसंग ८—(पाछें) श्रीआचार्यजी ने जब आसुरव्यामोह लीला करी, तब कृष्णदास ने हू विप्रयोग करि देह को त्याग कियो ।

✽ ✽ ✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक दामोदरदास संभलवारे क्षत्री, कनौज के वासी, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—दामोदरदास कों बालपनैं तें विरह हतो, जो-श्रीठाकुरजी की प्राप्ति कौन प्रकार सों होई ? सो दामोदरदास एक समय प्रयाग में आये हते

याहे तो अंधुं न भणे. व्यास७, कृष्णदास सरभा भोगवावाणा. ते इलाहार अये भाटे न भज्यो, न, श्रीआचार्य७ना मनमां उत्सवनी सामग्री करवी (अम हतु) उपरथी मर्यादा राखवाने भाटे इलाहारतुं कथुं. ते (थी) इलाहार न भज्यो. तेथी वेदव्यास७ द्वारा श्रीठाकुर७अये कहेवडाव्युं.

तेथी श्रीगुसांठ७अये सात लाल७अये (ना धर)मां, मोटा धरे (प्रथम पुत्र श्रीगिरिधर७ने त्यां) आ रीति राखी उपवास (नी) (अने) भी७ नग्याअये (छ धरमां) ‘ उत्सवांते य पारणा ’ श्रीठाकुर७ अधी सामग्री आरोगे.

वार्ता प्रसंग-८—(पछी) श्रीआचार्य७अये न्यारे आसुरव्यामोह लीला करी त्यारे कृष्णदासे पणु विप्रयोग करी देहना त्याग कर्ये. ॥ वार्ता २ ॥

✽ ✽ ✽

हुवे श्रीआचार्य७ महाप्रभुना सेवक दामोदरदास संभलवाणा क्षत्री, कनौजना वासी, तेमनी वार्ताना भाव कहीअये छीअये—

भावप्रकाश—दामोदरदासने बालपणुथी विरह हतो. न श्रीठाकुर७नी प्राप्ति कथा प्रकारे थाय ? ते दामोदरदास अके समय प्रयागमां आव्या हुता. मकर

मकर स्नान कों । सो कृष्णदास सों मिलाप भयो । तब चर्चा करत कृष्णदास (मेघन) ने कही, श्रीवल्लभाचार्यजी प्रगट भये हैं । सो दक्षिण में पधारे हैं । कृष्णदेव राजा के समीप मायावाद खंडन किये हैं । उनकी कृपातें निश्चय श्रीठाकुरजी मिलेंगे । मेरे गुरु सों नेह है तिनसों कछु कार्य भेरो भयो नहीं । तातें अब मैं जहां श्रीआचार्यजी होइंगे तहां जाऊँगो । यह दामोदरदाससों कहि कें कृष्णदास दक्षिण देस गये ।

जब तें दामोदरदास के पास तें कृष्णदास मेघन श्रीआचार्यजी के पास गये । तब तें दामोदरदास कों विरह बहोत रहे । जो सोकों श्रीआचार्यजी कौन प्रकार मिलेंगे ? या प्रकार विरह करत महा महीना में मकर-स्नान दामोदरदास किये । सो महा सुदी १५ कों दामोदरदास मकर-स्नान करत हते । ता समय एक तांबे को पत्र गंगा-यमुना के संगम में ते दामोदरदास के हाथ आयो । सो दामोदरदास घर लाये । जब रात्रि कों दामोदरदास सोये । तब दामोदरदास कों स्वप्न भयो । यह पत्र बांचे ताकी तू सरन जैयो । तब सवारे उठि के प्रयाग में बड़े-बड़े पंडित ब्राह्मण महापुरुष मकर-स्नान कों आये हते । तिन सवन कों बँचायो । कोई बांचि न सके । तब दामोदरदास कासी में सेठ पुरुषोत्तमदास के

स्नान भाटे. ते कृष्णदासथी भेगाप थयो. त्यारे अर्था करतां कृष्णदासे (मेघने) कथुं, श्रीवल्लभाचार्यजी प्रकट थया छे. ते दक्षिणमां पधार्या छे. कृष्णदेव राजांनी समीप मायावादनु खंडन क्युं छे अमनी कृपाथी निश्चय श्रीठाकुरजी भणशे मारे गुरुथी स्नेह छे तेनाथी कंध कार्य भाइं थयु नहीं. तेथी हुवे हुं ज्यां श्रीआचार्यजी हुशे त्यां जे छुं. आठलुं दामोदरदासने कहीने कृष्णदास दक्षिण देश गया.

ज्यारथी दामोदरदासनी पासैथी कृष्णदास मेघन श्रीआचार्यजीनी पासै गया त्यारथी दामोदरदासने विरह धणुा रहे. जे, मने श्रीआचार्यजी डोणु प्रकारे भणशे ? आ प्रकारे विरह करतां महा महिनामां मकर-स्नान दामोदरदासे क्युं. ते महा सुद १५ मे दामोदरदास मकर स्नान करता हुता ते समये अक तांपानो पत्र गंगा-यमुनाना संगममांथी दामोदरदासना हाथ आये (भजे) ते दामोदरदास घर लाये. (पछी) रात्रिअे ज्यारे दामोदरदास सोया त्यारे दामोदरदासने स्वप्न थयु. (ठ) आ-पत्र बांचे तेनी तू शरणे जे. त्यारे सवारे उठीने प्रयागमां मोटा-मोटा पंडित ब्राह्मण महापुरुष मकर स्नान करवा आये हुता. ते पधाने वंयाये. (परतु) डोठ वांथी न शक्या त्यारे दामोदरदास, काशीमां

यहाँ व्यौहार हतो । (तहां गये) खरच की हुंडी सेठ पुरुषोत्तमदास के यहां ले गये हते । तिनसों सगरी बात दामोदरदास ने कही, जो—यह पत्र श्रीआचार्यजी वाँचेंगे । और काहूकी सामर्थ्य नहीं । मोसों कृष्णदास सेधन कहि गये हैं । जो—श्रीआचार्यजी की सरन तें श्रीठाकुरजी मिलेंगे । (सो) यह सुनिके सेठ पुरुषोत्तमदास हू कों चटपटी लागी, जो—मोकों कव श्रीआचार्यजी को दरसन होइगो ? सो सेठ पुरुषोत्तमदास की वार्ता के भाव में वर्णन करेंगे । या प्रकार दामोदरदास दिन १५ कासी रहे । परंतु पत्र कोऊ न वांच्यो । तव कन्नौज में अपने घर आये । एसे विरह करत कलूक महिना में श्रीआचार्यजी महाप्रभु कन्नौज पधारे । तव गामके बाहर वागमें उतरे ।

वार्ता—प्रसंग १—जब श्रीआचार्यजी कन्नौज पधारे तहां गाम के बाहिर एक बाग हतो तहां आप उतरे, और कृष्णदास कों गाम में पठायो । जो—सीधो सामग्री ले आउ । परि काहू सों कहियो मति । जो—श्रीआचार्यजी आप पधारे हैं ।

भावप्रकाश—यह कहे ताको अभिप्राय यह है, जो—दामोदरदास कृष्णदास कों मिलेगो । सो दामोदरदास सों पहिले आपहि कहे, जो—श्रीआचार्यजी

शेठ पुरुषोत्तमदासने त्यां व्यवहार हुतो (त्यां गया) भर्षनी हुंडी शेठ पुरुषोत्तमदासने त्यां लघ गया हुता. तेमने सधणी वात दामोदरदासे कही. न, आ पत्र श्रीआचार्यजी वांच्यो. भीज डोछनी सामर्थ्य नहीं. मने कृष्णदास सेधन कही गया छे के श्रीआचार्यजीनी शरणाथी श्रीठाकुरजी भणशे. जे सांखणीने शेठ पुरुषोत्तमदासने पत्र चटपटी लागी छे मने क्यारे श्रीआचार्यजीतुं दर्शन थाय ? ते शेठ पुरुषोत्तमदासनी वार्ताना भावमां वर्णन करीशुं. आ प्रकारे दामोदरदास द्विस १५ काशी रखा. परंतु पत्र डोछजे न वांच्यो. त्यारे कन्नौजमां पोताने धरे आया. जेन विरह करतां डेटलाक महिनामां श्रीआचार्यजी महाप्रभु कन्नौज पधार्या. त्यारे गामना आहुर भागमां उतर्या.

वार्ता प्रसंग १—ज्यारे श्रीआचार्यजी कन्नौज पधार्या (त्यारे) त्यां गामना आहुर जेक भाग हुतो त्यां आप उतर्या. जने कृष्णदासने गाममां मोक्यो, के सीधुं—सामग्री लघ आव. परंतु डोछने कहीश नही के श्रीआचार्यजी आप पधार्या छे.

भावप्रकाश—जे कहुं, तेना अविप्राय जे छे, के दामोदरदास कृष्णदासने भणशे, ते दामोदरदासने पहेलां पोते न कहे के श्रीआचार्यजी पधार्या छे, ते

पधारे हैं । सो दामोदरदास द्रव्यपात्र है । तातें इनके बुलायवे की अपेक्षा यह मनमें आवे तो कृष्णदासको विगार होइ । सो ताते बरजि दिये, जो-काहूसों कहियो मति । प्रीति होइगी तो आपुही आवेगो । यह अभिप्राय जाननो ।

और दूसरो अभिप्राय यह है, जो-जा दिन श्रीआचार्यजी कन्नौज पधारे तातें पहेलेई श्रीआचार्यजी आपकों (श्रीठाकुरजीकी) आज्ञा भई हती । जो-यहांके (कन्नौज के) जीव पावन करने हैं । तातें श्रीआचार्यजी आप विचारे, जो-आग्या भई है तो आपही होइगो ताके लिये नहीं करी हती ।

तब कृष्णदास गाम में गये । सीधो सामग्री सब लीनी । सो सब ले के चले । तहां दामोदरदास राजद्वार तें आवत हते । सो मारग में जात कृष्णदास को पहचानें । तब दामोदरदास घोड़ा तें उतरि के पास आये । तब दंडवत् करि के कह्यो और पूछयो जो-श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे हैं ? तब कृष्णदास ने विचार्यो तातें कछु उत्तर दियो नहीं ।

तब दामोदरदास ने विचार्यो, जो-आचार्यजी बिना ए काहे को आवे ? सो जब कृष्णदास चले तब दामोदरदास पाछे पाछे आये । घोड़ा घर पठवाइ दियो ।

दामोदरदास द्रव्यपात्र छे तेथी तेमने पोदाववानी अपेक्षा (छे) ज्येभ (जे कृष्णदासना मनभां) आवे तो कृष्णदासना भगाड थाय, तेथी शैकी दीधा, डे डार्धने कहीश नहीं. प्रीति हुशे तो पोतेन आवशे. आ अभिप्राय ज्ञावे.

अने भीजे अभिप्राय आ छे, डे न द्विसे श्रीआचार्यज्ज कन्नोज पधार्या तेना पहेलां न श्रीआचार्यज्ज आपने (श्रीठाकुरज्जनी) आज्ञा थध हुती. डे अर्हीना (कन्नोजना) ज्ञेवे (ने) पावन करवा छे. तेथी श्रीआचार्यज्ज आप विचारे डे आज्ञा थध छे तो ज्येनी भेजे थशे. तेथी ना करी हुती

त्यारे कृष्णदास गामभां गया. सीधु-सामग्री यधुं दीधुं. ते यधुं लधने याव्या. त्यां दामोदरदास राजद्वारथी आवता हुता. ते भागभां नतां कृष्णदासने ज्ञाणभ्या. त्यारे दामोदरदास घोडाथी उतरिने पास आव्या त्यारे दंडवत् करीने कछु अने पूछयुं; डे श्रीआचार्यज्ज महाप्रभु पधार्या छे ? त्यारे कृष्णदासे विचार कर्या, डे श्रीआचार्यज्जनी आज्ञा नहीं तेथी कंध उत्तर आव्या नहीं. त्यारे दामोदरदासे विचार्युं, डे श्रीआचार्यज्ज विना ज्ये शा भारे आवे ? त्यारे, न्यारे कृष्णदास याव्या त्यारे दामोदरदास पाछण पाछण आव्या. घोडाने घर भोकदी दीधा.

तब कृष्णदास को ओर दामोदरदास को दूरि तें आवत श्रीआचार्यश्री ने देखें। तब दामोदरदास ने दंडवत् किये। तब कृष्णदास सों श्रीआचार्यजी ने पूछी, जो-तेने वासों क्यों कह्यो ? तब इनने (कृष्णदास ने) कही, महाराज ! मैंने तो इनसों नहीं कही। तब दामोदरदासने श्रीआचार्यजी सों विनती कीनी, जो-महाराज ! इनने तो मोसों नहीं कही। हों तो इनके पाछे चल्यो आयो हूं।

पाछे श्रीआचार्यजी (ने) दामोदरदास सों पूछी, जो-पत्र पायो है सो लायो है ? तब दामोदरदास ने विनती कीनी, जो-महाराज ! पत्र को कहा काम है ? तब श्रीआचार्यजी आप कही, जो-तोकों आज्ञा भई है। जो-पत्र बांचे ताकी सरन जैयो। तातें पत्र लयाऊ। तब पत्र मंगवायो।

भावप्रकाश—श्रीआचार्यजी ने कृष्णदास सों कह्यो, जो-तेने इन सों क्यों कह्यो ? यह कहे ताको कारन यह जो 'तेने आज्ञा नाहीं' यह कह्यो तामें हमारे पधारनो तो, कह्यो। तब दामोदरदास ने कही, जो-इनने नहीं कह्यो। मैं इनके पाछे चल्यो आयो हूं। या प्रकार दैन्यता सिद्ध किये।

और दामोदरदास ने कह्यो, पत्र को कहा काम है ? यह कहि दामोदरदास

त्यारे कृष्णदासने (अने) दामोदरदासने दूरथी आपतां श्रीआचार्यश्रीके जेया। त्यारे दामोदरदासे दंडवत् कर्था- त्यारे कृष्णदासने श्रीआचार्यश्रीके पूछ्युं, के तेने अने केम कछुं ? त्यारे कृष्णदासे कछुं, महाराज ! मे तेने अने नथी कछुं। त्यारे दामोदरदासे श्रीआचार्यश्रीने विनति करी, जे महाराज ! अने तो मने नथी कछुं, हुं तो अनेनी पाछण आयेया आयेया छुं।

पछी श्रीआचार्यश्रीके दामोदरदासने पूछ्युं, के पत्र मलयो छे ते लायेया छे ? त्यारे दामोदरदासे विनति करी, के महाराज ! पत्रतुं शुं काम छे ? त्यारे श्रीआचार्यश्रीके येते कछुं, के तेने आज्ञा थछ छे, के पत्र बांचे तेनी शरणे नजे. तेथी पत्र लाव. त्यारे पत्र मंगायेया.

भावप्रकाश—श्रीआचार्यश्रीके कृष्णदासने कछुं, के तेने अने केम कछुं ? अने (म) कहे तेनुं कारण आ छे, के, तेने आज्ञा नथी अने कछुं, तेमां अमाइ पधारतुं तो कछुं. त्यारे दामोदरदासे कछुं के अनेभणे नथी कछुं. हुं अनेनी पाछण आयेया आयेया छु. या प्रकारे दीनता सिद्ध करी.

अने दामोदरदासे कछुं, पत्रतुं शुं काम छे ? अने कही दामोदरदासे अने

ने यह जतायो, जो--आप ईश्वर हो। मोकों अनुभव भयो है। तब (श्रीआचार्यजी) कहे ल्याव, भगवद् आज्ञा होय तेसे हि करनो।

तब श्रीआचार्यजी ने पत्र मंगवायो हतो सो बांच्यो। पाछे वाको अभिप्राय दामोदरदास सों कह्यो। पाछे दामोदरदास कों नाम सुनायो। पाछे श्रीआचार्यजी कों दामोदरदास नें अपने घर पधराये। पाछे दामोदरदास की स्त्री हू सरनि आई। तब दामोदरदास कों और उनकी स्त्री कों समर्पन करवायो। एक लोंड़ी दैवी जीव हती, सोउ सरन आई।

तब दामोदरदास नें विनती करी, जो--महाराज ! अब कहा आज्ञा होत हैं अब हम कहा करे ? तब श्रीआचार्यजी श्रीमुग्व तें आज्ञा किये, जो--अब तुम सेवा करो। तब दामोदरदास नें कही, जो--महाराज ! सेवा कौन प्रकार करे ? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने कही, जो--कहूं श्रीठाकुरजी को स्वरूप होय सो देखो। सो एक दरजी के यहाँ श्रीठाकुरजी को स्वरूप हतो। ताकों द्रव्य देके स्वरूप अपने घर ले आये। पाछें घर सब पोते पात्र सब बदलाये। पाछें श्रीआचार्यजी ने वा स्वरूप कों पंचामृत करवायो। श्रीद्वारकानाथजी नाम धर्यो।

भताव्युं के आप धरवर छे, भने अनुभव थयो छे, त्यारे (श्रीआचार्यजी) कहे, लाव, भगवद् आज्ञा होय तेमन करवुं।

त्यारे श्रीआचार्यजीये पत्र मंगाव्यो हतो ते वांच्यो, पछी अनेना अलिप्राय दामोदरदासने कह्यो, पछी दामोदरदासने नाम संसणाव्युं, पछी श्रीआचार्यजीने दामोदरदासे पोताना घरे पधराव्या, पछी दामोदरदासनी स्त्री पल्लु शरणे आवी, त्यारे दामोदरदासने अने तेमनी स्त्रीने समर्पण करवायुं, अेक लुंड़ी दैवी छव हती तो पल्लु शरणु आवी।

त्यारे दामोदरदासे विनती करी, के महाराज ! हवे शी आज्ञा थाय छे ? हवे अमे शुं करीअे ? त्यारे श्रीआचार्यजीये श्रीमुभथी आज्ञा करी, के हवे तमे सेवा करे, त्यारे दामोदरदासे कहुं, के महाराज ! सेवा क्या प्रकारे करे ? त्यारे श्रीआचार्यजी महाप्रभुये कहुं, के कोर्ध नगे श्रीठाकुरजीतुं स्वरूप होय तो जुयो, ते अेक दरजीने त्यां श्रीठाकुरजीतुं स्वरूप हतुं, तेने द्रव्य धने स्वरूप पोताने घर लघ आव्या, पछी घर अथुं पोतयुं, पात्र अथां अदल्यां, पछी श्रीआचार्यजीये अे स्वरूपने पंचामृत कराव्युं, श्रीद्वारकानाथजी नाम धर्युं।



दामोदरदास संभलवाले के ठाकुरजी

श्रीद्वारकानाथजी

[काँकरोली, तृतीय गृह]

भावप्रकाश—श्रीद्वारकानाथजी नाम यातें धरयो, जो—राज रीति सों प्रथम सेवा को विस्तार दामोदरदास के माथे सोंपे हैं ।

पाछें सिंहासन पाट बैठाये । दामोदरदास के माथे सेवा पधराय के पाछे श्रीआचार्यजी आप रसोई करि के भोग समर्प्यो । समयानुसार भोग सरायो । तब बी—ा समर्पन लागे । तब देखें तो पान हरे हैं । तब श्रीआचार्यजी दामोदरदास सों खीज के कहें, जो—हरे पान श्रीठाकुरजी कों न समर्पिये । उत्तम तें उत्तम सामग्री होइ सो श्रीठाकुरजी कों समर्पिये । श्रीठाकुरजी तो उत्तम तें उत्तम वस्तु के भोक्ता हैं । (तातें) उत्तम तें उत्तम सामग्री होइ सो श्रीठाकुरजी कों समर्पिये । ता पाछें स्त्री पुरुष भली भाँति सों सेवा करन लागे । सो श्रीद्वारकानाथजी की सेवा भली भाँति सों होन लागी । और श्रीआचार्यजी नें आज्ञा दीनी, जो उतर्यो परकाले (वस्त्र को थान) होय तामें तें श्रीठाकुरजी कों न समर्पिये । मारे परकाले मेंतें प्रथम श्रीठाकुरजी कों लीजिये । और उत्तम सामग्री होइ तामें ते और ठौर न खरचिये । ता पाछे स्त्री—पुरुष नीकी भाँति सों सेवा करन लागे ।

भावप्रकाश—श्रीद्वारकानाथजी नाम अथी धर्युं के, राजरीतिथी प्रथम सेवानो विस्तार दामोदरदासने माथे सोंप्यो छे.

पछी सिंहासन (उपर) पाट भेसाव्या. दामोदरदासना माथे सेवा पधरावीने पछी श्रीआचार्यजीके पोते रसोई करीने भोग समर्प्यो. समयानुसार भोग सराव्यो. तयारे भीडा समर्पवा लाग्या. तो देखे तो पान लीलां (कायां) छे. तयारे श्रीआचार्यजी (अ) दामोदरदासने भीलने कहुं, लीलां पान श्रीठाकुरजीने न समर्पिये. (पीलां, पाकेलां, पान समर्पिये) उत्तमथी उत्तम सामग्री होय ते श्रीठाकुरजीने समर्पिये. श्रीठाकुरजी तो उत्तमथी उत्तम वस्तुना भोक्ता छे. (तेथी) उत्तमथी उत्तम सामग्री होय ते श्रीठाकुरजीने समर्पिये. ते पछी स्त्री—पुरुष सुंदर रीतिथी सेवा करवा लाग्यां. ते श्रीद्वारकानाथजीनी सेवा सुंदर रीतिथी थवा लागी. अने श्रीआचार्यजीके आज्ञा करी, के उतरैलुं (वापरैलुं) वस्त्रुं थान होय तेमांथी (वस्त्र) श्रीठाकुरजीने न समर्पिये. व्याभा थानमांथी श्रीठाकुरजीने (माटे वस्त्र) लेवुं. अने उत्तम सामग्री होय तेमांथी भील जगाये न अर्यो. ते पछी स्त्री—पुरुष सुंदर रीतिथी सेवा करवा लाग्या.

अने सेवा सामग्री थती ते सोनाना इतराभां अमरस राखता. ते अथी उच्यताथी के भीजे कोठ न नष्टे के व्याभा कंठ सामग्री धरी छे. अ रीतथी दामोदरदास सेवा करवा लाग्या.

और सेवा सामग्री ऐसी होती जो—सोने के कटोरा में अमरस राखते, सो ऐसो उच्यतातें सो और कोई न जानें, जो—यामें कछु सामग्री धरी है। या भांति सों दामोदरदास सेवा करन लागे।

भावप्रकाश—पाछे वस्त्रादिक की रीति बताये। जो—और कार्य में कछु आयो होय तो (सो वस्तु) श्रीठाकुरजी के काम न आवें। जाके अर्थ उठे तिनको प्रसादी कहावे। तातें पहले श्रीठाकुरजी कों सब सामग्री में ते लेनो। श्रीठाकुरजी की सामग्री में ते अन्य ठौर खरच न करनो। या प्रकार पुष्टिमार्ग की रीति सबकों बताये।

सामग्री पीरी सोने के पात्र में मिलि जाइ। उज्ज्वल सामग्री रूपे के पात्र में मिलि जाइ। यह गूढ भाव जनाये। सोने के मिष श्रीस्वामिनीजी के भाव तें, रूपे के मिष श्रीचंद्रावलीजी के भाव सों सेवा करते।

पाछें श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा कों पधारे।

और दामोदरदास श्रीठाकुरजी को जल आप भरतें। सो एक दिन दामोदरदास को सुसर दामोदरदास के घर आइके दामोदरदास सों कहन लागे, जो—तुम जल भरि लावत हो, सो हमकों जाति में लज्जा आवति है। तातें तुम मति भरो। लोंडो पास जल भराओ।

तब दामोदरदास बिचारे, जो—सूरदासजी गाये हैं। “सूर

भावप्रकाश—पछी वस्त्रादिकनी रीति बतावी। डे भील कार्यभां कंठ आव्युं होइ तो (ते वस्तु) श्रीठाकुरजीना काम (भां) न आवे, जने माटे पर्याय तेनी प्रसादी कहेवाय. तेथी पहेलां श्रीठाकुरजीने माटे पछी सामग्रीभांथी लेवुं. श्रीठाकुरजीनी सामग्रीभांथी भील जगे पर्य न करवुं. ये प्रकारे पुष्टिमार्गनी रीति अधाने बतावी.

सामग्री पीणी सोनाना पात्रभां मणी जय. उज्ज्वल सामग्री रूपाना पात्रभां मणी जय. या गूढ भाव सूच्यो. सोनाना मिषे श्रीस्वामिनीजीना भावथी, रूपाना मिषे श्रीचंद्रावलीजीना भावथी सेवा करता.

पछी श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमाभां पधार्या, अने दामोदरदास श्रीठाकुरजीनुं जल पोते भरता. ते एक दिवस दामोदरदासने सासरे दामोदरदासने घर आवीने दामोदरदासने कहेवा लाग्यो डे तमे जल भरि लावो छे ते अभने जातिभां लज्जा आवे छे. तेथी तमे जल न भरै. लुंड़ी पास जल भरावो.

त्यारे दामोदरदासे विचार्युं, डे सूरदासजी गाये छे, डे “सूर लजन कलि

भजन कलि केवल कीजे लज्जा का'न निवारि ” और कीर्तन दें गाये हैं । “ का'न न काहूकी मन धरिये व्रत अनन्य एक लहीए हो ” यह विचारि अस्त्री सों कहे तुमहू जल लेंन चलो । तब दामोदरदास ने दूसरे दिन एक घड़ा तो आप लियो, एक घड़ा स्त्री के हाथ में दीनो । तब स्त्री भगवदी सो घड़ा (गागरि) ले ससुर के (दामोदरदास के) हाट आगे तें चले । तब दोऊ जने (फेर) बाकी हाटके नीचे होय के निकसे । तब जल लैके आये । तब पाछे दामोदरदास को ससुर आयो । सो आइ के दामोदरदास के पाइन पर्यो । और कह्यो, जो-धैं चूक्यो, जो-तुमसों कह्यौ । अब तें तुमही जल भरो, परि अस्त्रीजन पास जल मति भरावो । आज पाछे हम कछु न कहेंगे । तब आपहि जल भरन लागे । श्रीठाकुरजी दामोदरदास सों सानुभावता जनावन लागे । जो-कछु चाहिये सो दामोदरदास पास मांगि लेइ । बातें करे । सेवा करि के दामोदरदास ने श्रीठाकुरजी कों ऐसे प्रसन्न किये । सो इनकी सेवा देखि के श्रीआचार्यजी वहीत प्रसन्न भये । तब आप अपने श्रीमुखतें कहें, जो-जिन राजा अंबरीष न देख्यो होइ सो दामोदरदास कों देखो, राजा अंबरीष तो मर्यादामार्गीय हुतो । और ये पृष्टि-मार्गीय है । इनमें इतनी अधिकताई है ।

केवल कीजे लज्जा का'न निवारि ” भील कीर्तनमां गाय छे “ का'न न काहू की मन धरिये व्रत अनन्य एक लहीए हो ” ये विचारी स्त्रीने कहे, तमे पणु जल लेवा यावो । तारे दामोदरदासे भील द्विसे एक घडा तो पोते दीयो (अन) एक घडा स्त्रीना हाथमां आव्यो । तारे स्त्री भगवदीय ते (अन) घडा (गागरी) लछ सासरानी (दामोदरदासना) हुकान आगणथी आव्यां । ते अनते जणु (इरी) येनी हुकाननी नीचे थधने निकय्यां । तारे जल लधने आव्यां । ते पछी दामोदरदासने सासरे आव्यो । ते आवीने दामोदरदासना पगे पउयो । अने कछुं, जे हुं बूक्यो, जे तमने कछुं, लुवेथी तमे ज जल लरे परंतु स्त्रीजन पास जल न लरावो, आज पछी अमे कंध नही कहीये, तारे पोते ज जल लरवा लाग्या । (तारे) श्रीठाकुरल दामोदरदासने सानुभावता जणुपवा लाग्या । जे कंध जेधये ते दामोदरदास पासेथी मांगी ले, पातो करे । सेवा करीने दामोदरदासे श्रीठाकुरलने सेवा प्रसन्न क्यो । ते अमनी सेवा जेधने श्रीआचार्यल भहु प्रसन्न थया । तारे पोते पोताना श्रीमुखथी कछुं, जे जेणे राज अंबरीष न जेयो हाथ ते दामोदरदासने लुयो । राज अंबरीष तो मर्यादामार्गीय हुतो अने आ पृष्टिमार्गीय छे, अनामां अरदी अधिकता छे ।

भावप्रकाश—दामोदरदास जलकी सेवा श्रीयमुनाजी के भावतें करते । तातें श्रीआचार्यजी कहें । मर्यादामें अंबरीष पुष्टि में दामोदरदास राजसेवा किये । तब ततहरा रूपे के, अंबरीष की उपमा कैसे जानिये ? जैसे श्रीठाकुरजी की मुखकी उपमा चंद्रमाकी । काहेतें ? कहां मर्यादा कहां पुष्टि ? कोटि गुनो तारतम्य जाननो ।

जब दामोदरदास के सुसरने कही, अस्त्रीसों जल मति भरावो । तब दामोदरदास कहे, जल न भरावेंगे । पाछे ससुर गयो । तब दामोदरदासने विचार्यों, जो जलकी सेवा (स्त्री जनसों) कराई । सो जो अब मैं छुडाऊँ तो मोकों ससुर की का'नको दोष परे । परंतु एकवार बरजोंगो, प्रीति होइगी तो स्त्री आपुहि न छोड़ेगी । (यों विचार के) जो—एकवार भयों सो सौ वार भयों । अब गामके (लोग तो) जान चुके । अब मैं सेवा क्यों छोड़ों ? प्रीति होइगी तो या भांति (विचार के) भरेंगी । तातें मैं हठ करिके भराऊँ तो प्रीति बिना श्रीठाकुरजी अंगीकार न करेंगे । तातें एकवार बरजों तो सही । तब (स्त्री सों) कहें । अब मैंही जल भरोंगो । तुम मति भरो । तिहारे पिताको लाज लागत है । तब स्त्री नें कही तुमहि भरो । या प्रकार पिताकी का'नको दोष भयो । सो आगे जाय

भावप्रकाश—दामोदरदास जलनी सेवा श्रीयमुनाजीना साथी करता । तेथी श्रीआचार्यजी कहे, मर्यादां अंबरीष; पुष्टिमां दामोदरदासे राज-सेवा करी । तयारे ततहरा (जलने गरम करवाना हांडा) इषाना, तो अंबरीषनी उपमा डेम अनिये ? जम श्रीठाकुरजीना मुष्नी उपमा अद्रमानी, डेम ? कथां, मर्यादा ? कथां पुष्टि ? डाटी गालु तारतम्य अणुपु ।

ज्यारे दामोदरदासना सासराने कथु, स्त्रीथी जल न भरावो तयारे दामोदरदास कहे, जल नहीं भरावीये, पछी सासरो गये । तयारे दामोदरदासे विचार्युं डे जलनी सेवा (स्त्री जन) थी करावी ते जे हवे डे छोडावु तो मने सासरानी मर्यादानो दोष लागे । परंतु एकवार कहीश । प्रीति हसे तो स्त्री पोते ज नही छोडे । (जेम विचारिने) जे एकवार अर्थु ते सो वार अर्थु । (दोडा तो) आणी युक्त्या । हवे डुं सेवा डेम छोडुं ? प्रीति हसे तो आ प्रकारे (विचारिने) बरसे । तेथी डे हठ करीने बरावु तो प्रीति बिना श्रीठाकुरजी अंगीकार नही करे तेथी एकवार रेकु तो भरो तयारे (स्त्रीने) कहे, हवे डुं ज जल बरीश, तमे न बरो । तभारा पिताने लाज लागे छे तयारे स्त्रीके कथुं, तमेज बरो आ प्रकारे पितानी ' मर्यादा ' नो दोष थयो, ते आगण जधने अन्याश्रय थयो ।

के अन्याश्रय भयो । जो दामोदरदास ससुर के आग्रह काँन तें जलकी सेवा छुड़ावते (छोड़ते ?) तो इनहूकों बाधक होतो । तासों फेर सेवा करन लागे ।

वार्ता—प्रसंग २—और एक सभें उष्णकाल के दिन हते । तब दामोदरदास श्रीठाकुरजी कों मंदिर में पघराइ पोढ़ाइ के आप चौवारे जाइ सोये । तब श्रीद्वारकानाथजी ने लोंड़ी कों आज्ञा दीनी, जो—तू किंवाड़ खोलि । सोकों गरभी बोहोत होत है । तब लोंड़ी ने मंदिर के किंवाड़ खोले । तब श्रीद्वारकानाथजी ने लोंड़ी सों कह्यौ, जो—पंखा करि । तब लोंड़ी ने पंखा कियो । तब श्रीठाकुरजी ने लोंड़ी सों कह्यौ, जो—तू जा, रहन दे । तब लोंड़ी किंवाड़ खुले छोड़िके सोयवे गई । तब सवारो भयो । तब दामोदरदास देखे तो मंदिर के किंवाड़ खुले हैं । तब पूछे, जो—किंवाड़ कौन ने खोले हैं ? तब लोंड़ी ने दामोदरदास सों कह्यो, जो—सोखूँ श्रीठाकुरजी ने आज्ञा दीनी ही, जो—तू किंवाड़ खोलि । तब मैंने किंवाड़ खोले हैं । तब दामोदरदास ने कही, जो—सोखूँ खोलिवे की क्यों न कही ? आप खोले । फेर दामोदरदास के मनमें आई, जो—श्रीठाकुरजी नें सोसों किंवाड़ खोलिवे की क्यों न कही ? । और लोंड़ी सों क्यों कहें ? परि प्रभु बड़े दयाल हैं । जाके विषे स्नेह होइ । ताही सों संभाषन करे । श्रीआचार्यजी के अंगीकार में

जे दामोदरदास सासराना आग्रह ' भयाँदा ' थी जलनी सेवा छोड़ावता (छोड़ता ?) तो जेमने पणु बाधक थतो. तेथी इरी सेवा करवा लाग्या.

वार्ता प्रसंग-२—वणी जेक सभये उष्णकालना दिवस हुता. त्तारे दामोदरदास श्रीठाकुरजीने मंदिरमां पघरावी पोढावीने पोते चौवारे (उपरना खुद्दा चौरामां) जध सोया. त्तारे श्रीद्वारकानाथजीजे हुंडीने आज्ञा करी, के तू कमाउ भोस. मने गरसी भहु न थाय छे. त्तारे हुंडीजे मंदिरनां कमाउ भोल्यां. त्तारे श्रीद्वारकानाथजीजे हुंडीने कहुं के (तू) पंखा कर. त्तारे हुंडीजे पंखा कर्यो. त्तारे श्रीठाकुरजीजे हुंडीने कहुं, के तू ज (हुवे) रहेवा दे. त्तारे हुंडी कमाउ खुद्दां छोडीने सुवा गर्ध. त्तारे सवार थयुं. त्तारे दामोदरदास ज्जजे तो मंदिरनां कमाउ खुद्दां छे. त्तारे पुछयुं, के कमाउ केखे भोल्यां छे ? त्तारे हुंडीजे दामोदरदासने कहुं, के मने श्रीठाकुरजीजे आज्ञा करी हुती के तू कमाउ भोस. त्तारे में कमाउ भोल्यां छे. त्तारे दामोदरदासे कहुं, के मने भोसवानुं केम न कहुं ? तें पोते भोल्यां ? पछी दामोदरदासना मनमां आव्युं के श्रीठाकुरजीजे मने कमाउ भोसवानुं केम न कहुं, ज्जने हुंडीने केम कहुं ? परंतु प्रभु (तो) भहु दयालु छे. जेना विषे (मां) स्नेह हुय तेनाथी

सब समान हैं। लौकिक में कोऊ ऊंचनीच कहियो (परि) श्रीठाकुरजी स्नेह के बस हैं। पाछें श्रीठाकुरजी ने दामोदरदास सों कह्यो, जो-मैंने खुलाए हैं और इन (नें) खोले हैं। जो-तू यासों क्यों खीझत हैं ? तू तो चौवारे जाय सोयो। और मोकों भीतर सुवायो। तब दामोदरदास नें कह्यो, जो-प्रसाद तब लेहूँ (जब) मंदिर नयो समराऊं। तब स्त्रीनें कह्यो, जो-ऐसे क्यों बने ? यह तो कछु पांच-सात दिनको तो काम नाहीं। तब दामोदरदास नें कह्यो, जो-सखड़ी महाप्रसाद तो नहीं लेऊगो। फलाहार करूंगो। तब त्योंही करत मंदिर सिद्ध भयो। तब आछो दिन देखि के श्रीद्वारकानाथजी कों मंदिर में बैठाये। तब बड़ो उत्सव कियो। पाछें सब वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवायो। ता पाछें आपु महाप्रसाद लियो।

भावप्रकाश—श्रीठाकुरजी ने लोंड़ी की पास पंखा कराये, परि स्त्री कों नाहिं जताये। सोउ जल की सेवा छोड़ी, तातें इनकों न कहे। काहें तें ? पहले स्त्री जल की सेवा न करती तो चिंता नाहीं। (सेवा) करि के छोरनो हतो तो दस-पांच दिन जल भरि कें। पाछें अपने मनतें न भरते तो चिंता नाहीं। ससुर के कहेतें छोड़े, तातें श्रीठाकुरजी लोंड़ी सों किंवाड खोलाय पंखा की सेवा कराये।

संभाषण करे. श्रीआचार्यलना व्यंगीकारमां अधा समान छे. लौकिकमां केछ उंच नीच कहेजे (परंतु) श्रीठाकुरल स्नेहने वश छे. पछी श्रीठाकुरलये दामोदर-दासने कछुं, के में भोलाव्यां छे अने अने भोल्यां छे. जे, तू अने केम भीजे छे ? तू तो चौवारे जठ सोयो अने मने भीतर सुवाज्यो ? त्यारे दामोदरदासे कछुं, के प्रसाद त्यारे लठि (न्यारे) मंदिर नयुं सिद्ध करावु. त्यारे स्त्रीये कछुं, के अम केम अने ? आ तो कंठ पांच-सात दिवसतु तो काम नथी. त्यारे दामोदरदासे कछुं, के सभडी महाप्रसाद तो नही लठि. इलाहार करीश. त्यारे तेमज करतां मंदिर सिद्ध थयुं. त्यारे सुंदर दिवस जेधने श्रीद्वारकानाथलने मंदिरमा (पाठ) भेसाउया. त्यारे भोटो उत्सव करयो. पछी अधा वैष्णवोने महाप्रसाद लेवडाव्यो. ते पत्री पोते महाप्रसाद दीधो.

भावप्रकाश—श्रीठाकुरलये लु डीनी पासे पंखा कराव्यो परंतु स्त्रीने नही जण्वाव्यु. ते पणु जलनी सेवा छोडी तेथी तेने न कछु. ठमठ पहेलां स्त्री जलनी सेवा न करती तो चिंता नही (सेवा) करीने छोडवी हुती तो दस पांच दिवस जल भरिने. पछी पोनाना मनथी न भरती तो चिंता नही. (दामोदर-दास) ना भासराना कहेवाथी छोडी तेथी श्रीठाकुरल लु डी पासे कमाड भोलावी

और श्रीआचार्यजी की यह आज्ञा हैं, जहां तांइ पूरन स्नेह को प्रकार हृदयारूढ न होई तहां तांई सेवा (यथा देहे तथा देवे) अपनी देहकों सीत-उष्ण विचारि कें करे । सो दामोदरदास चौवारें सोये । श्रीठाकुरजी कों वियारि आयवे को मारग न हतो । तातें मंदिर की रीति प्रगट कराईवेके लिये श्रीठाकुरजी ने लोंड़ी सों किंवाड खुलाये । लोंड़ी कों मानसी सेवा को अधिकार हतो । अष्ट प्रहर गोप्य-रीति सों मानसी करती । कोई जानतो नहीं । तातें श्रीठाकुरजी उह लोंड़ी के उपर व्होत प्रसन्न रहते ।

जब दामोदरदास लोंड़ी पर खीजे । सो श्रीठाकुरजी सहि न सके । जो मोकों प्रिय हैं ता पर खीझत है ? सो लोंड़ी की पक्ष श्रीठाकुरजी ने करी । तथा दामोदरदास कों अपराध तें छोड़ावे कों बोले, जो-मेनें यासों खुलाए । तू क्यों खीझत है ? आज पाछें या पर प्रीति राखियो । याको स्वरूप अलौकिक जानियो । तू जाय चौवारे पर सौयो । मोकों वियारि आयवे की ठौर नहीं । चित्रा सखी होइ अपनी सेवा भूलि गयो ? मंदिर सँवारनो । तब दामोदरदास चौंकि परे, सो यह, जो अपने स्वरूप को अनुभव भयो । तब कहे मन्दिर बने तब खानपान

पंभानी सेवा करावी. अने श्रीआचार्यजीनी आ आज्ञा छे, (के) ज्यां सुधी पूर्ण स्नेहको प्रकार हृदयारूढ न थाय त्यां सुधी सेवा (यथा देहे तथा देवे) पोतानी देहने शीत-उष्ण वियारीने करे. ते दामोदरदास चौवारे सोया. श्रीठाकुरजीने पवन आववानो भाग न हुतो तेथी मंदिरनी रीति प्रकट कराववाने माटे श्रीठाकुरजीने लुंड़ीथी कमाड भोलाव्यां. लुंड़ीने मानसी सेवानो अधिकार हुतो. आठे पहर गुप्त रीतिथी मानसी (सेवा) करती. कांठ जाणतो नहीं. तेथी श्रीठाकुरजी ते लुंड़ी उपर अहु न प्रसन्न रहता.

ज्यारे दामोदरदास लुंड़ी उपर भीज्या (त्यारे) श्रीठाकुरजी सही न शक्या (केम?) न (अ) मने प्रिय छे तेना उपर भीज छे? (तेथी) ते लुंड़ीने पक्ष श्रीठाकुरजीने कर्ये. तथा दामोदरदासने अपराधथी छोडावाने पोत्या के मे' अनी पासे (कमाड) भोलाव्यां छे. तू केम भीज छे? आन पछी अना उपर प्रीति राखजे. अतुं स्वरूप अलौकिक जाणजे. तू नभ चौवारे उपर सोयो. मने पवन आववानी नगा नहीं । चित्रा सखी थध तारी सेवा भूली गयो ? मंदिर सिद्ध करवुं. त्यारे दामोदरदास चौंकी पडया. ते अ, न, पोताना स्वरूपने।

करूं, यह टेक चित्रा के आवेस में कहे । पाछें कारीगर बुलाय काम लगाये । पाछें स्त्री नें कही खानपान बिना कैसें चलेगो ? एक दिन को काम नाही है । तारें खानपान बिना रह्यो न जायगो । वह आवेस रहेंतें, तब खानपान मति करियो । अब तो करो । तब कहे फलाहार लेजंगो । या प्रकार मंदिर सँवराये । जारी, झरोखा, निजमंदिर, तिवारी, चोक्र, टेरा, परदा, जैसें लीलासृष्टि में करत हतें ताही भाव सों सगरे मंदिर को व्योत किये । मुहूरत देखि पधराये । बड़ो उत्सव (कियो) वैष्णव को समाधान श्रीआचार्यजी की भेट काहे ।

वार्ता-प्रसंग ३—बहुरि एक दिन दामोदरदास श्रीठाकुरजी को राजभोग समर्पि सैय्या मंदिर में सैय्या लँवारन गये । तब देखे तो दुलीचा उपर बिलाई ने बिगाड्यो है । तब दामोदरदास ने कह्यो, जो-श्रीठाकुरजी तो अपनी सैया हू राखि सकत नाही । ऐसें कह्यो, तब श्रीठाकुरजी ने धार चोकी उपरसूं लात मारि डारि दीनों और दामोदरदास सों श्रीठाकुरजी नें कह्यो, जो-सेवक तू के सेवक मैं ? सेवक होइ के ऐसें बोलत है ? ऐसे बहुत खीजे पाछें । दामोदरदास नें बिनती कीनी और बहुत मनुहार करी । सब सामग्री सिद्ध करि

अनुभव थयो. तयारे कहे, मंदिर अने तयारे पान-पान करूं. आ टेक चित्राना आवेशमां क्यो. पछी कारीगर (ने) पोलावी कामे लगाडया. पछी स्त्रीअे कहुं, पान पान बिना ठम आलशे ? अेक दिवसतुं काम नथी. तेथी पानपान बिना रहेवाशे नछी. ते आवेश रहे तयारे पानपान न करता. हुवे तो करे, तयारे कहे, इलाहार लघश. आ प्रकारे मंदिर सिद्ध कराव्युं. जरी, ज़ेराभा, निजमंदिर तिवारी, चोक्र टेरा, पडदा जम लीलासृष्टिमां करता हुता ते ज भावथी पधा मंदिरनी सगवड करी. मुहूर्त जेधने श्रीठाकुरज्जने पधराव्या. मोटा उत्सव (क्यो) वैष्णवतुं समाधान, श्रीआचार्यज्जनी भेट काठी.

वार्ता-प्रसंग ३—इरी अेक दिवस दामोदरदास श्रीठाकुरज्जने राजभोग समर्पि (ने) सैय्या मंदिरमां सैय्या समहारवा गया. तयारे ज्जुअे तो दुलीचा (गलीचा-गादी) उपर बिलाडीअे अगाड क्यो छे. तयारे दामोदरदासे कहुं, के श्रीठाकुरज्ज तो पोतानी सैया (पल्लु) राभी शकता नथी. अेम कहुं. तयारे श्रीठाकुरज्जअे थाल चोडी उपरथी लात मारी इंडी दीयो. अने दामोदरदासने श्रीठाकुरज्जअे कहुं, के सेवक तू के सेवक हुं ? सेवक थधने अेवुं पोले छे ? अेम अहु भीज्या. पछी दामोदरदासे बिनती करी अने अहु ज मनुहार करी, पछी सामग्री सिद्ध करीने श्रीठाकुरज्जने

के श्रीठाकुरजी कों भोग भ्रमर्ष्यों । श्रीठाकुरजी अरोगे । परि तोहू दोय मास लों बोले नाहीं । पाछे बहोत बिनती करन लागे । तब बोलन लागे ।

भावप्रकाश—श्रीठाकुरजी ने राजभोग को थार लात मारि के डारि दियो । सो या भाव तें, जो—श्रीआचार्यजी नें अब ही दासभाव को अधिकार दियो है । और यह हांसी तो सख्य भाव को अधिकार भयो होइ तब ही बने । तातें बिना श्रीआचार्यजी के दिये तू (तें) विशेष भाव कर्यो । तातें तेरो धर्यो भोग नाहीं अंगीकार करूंगे । या प्रकार शिक्षा किये । तातें अधिकार बिना विशेष विचार किये इतनो अंतराय जताये, वैष्णव कों ।

वार्ता-प्रसंग ४—ब्रह्मरि एक समय दामोदरदास हरसानी इनके घर पाहूने आये । सो संभलवारे के घर दिन पांच सात रहे । तब इन बहुत भली भांति सों समाधान कियो । पाछें दामोदरदास हरसानी इनसों बिदा होइके अडेल आये । तब श्रीआचार्यजी दामोदरदास सों पूछे, जो-दमला ! तू कहाँ उतर्यो हो ? कहा प्रसाद लियो हो ? तब दामोदरदास हरसानी नें श्रीआचार्यजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! कन्नौज में दामोदरदास संभलवारेके घर उतर्यो हो ।

भोग समर्था. (त्यारे) श्रीठाकुरजी आरोग्या. परंतु तोपणु भे भडिना सुधी भोल्या नहीं. पछी अहु न बिनती करवा लाग्या. त्यारे भोसवा लाग्या.

भावप्रकाश—श्रीठाकुरजी रानभोगने थाल लात मारीने ईंकी दीधो ते ये सावधी के श्रीआचार्यजीके हुनु तो दासभावने अधिकार दीधो छे अने आ हांसी तो सख्यभावने अधिकार होय त्यारे अने. तेथी, बिना श्रीआचार्यजीना दीधे, ते विशेष भाव कर्यो. तेथी तारे धर्यो भोग अंगीकार नही करे. आ प्रकारे शिक्षा करी. तेथी अधिकार बिना विशेष विचार करे आटवो अंतराय सूख्यो, वैष्णवने.

वार्ता-प्रसंग ४—इरी अेक समय दामोदरदास हरसानी अेभने घरे परेले आप्या. ते संभलवाणाने घरे दिरस पांच सात रह्या. त्यारे अेभले अहु सारी रीते समाधान कर्युं. पछी दामोदरदास हरसानी अेभनाथी विदाय थधने अउस गया. त्यारे श्रीआचार्यजीके दामोदरदासने पूछ्युं के, दमला ! तूं क्यां उतर्यो हुतो ? शा प्रसाद दीधो हुतो ? त्यारे दामोदरदास हरसानीके श्रीआचार्यजीने बिनती करी, के महाराज ! कन्नौजमें दामोदरदास संभलवाणाने त्यां उतर्यो हुतो

अनसखड़ी महाप्रसाद लेतो। तब श्रीआचार्यजी दामोदरदास संभलवारे उपर अप्रसन्न भये और कहे, (मन में बिचारे जो) यह मेरो अंतरंग सेवक याकों सखड़ी महाप्रसाद क्यों न लिवायो? यह बात श्रीआचार्यजी के मनकी दामोदरदाम संभलवारे नें घर बैठे जानी। जो-श्रीआचार्यजी महाप्रभु मेरे ऊपर अप्रसन्न भये हैं। तब स्त्री सों कही, जो-तू श्रीठाकुरजी की सेवा नीकी भांति सों करियो। और मैं तो श्रीआचार्यजी के दरसन कों अडेल जात हों। तब दामोदरदास अडेल कों चले। सो अडेल जाइ पहाँचे। तब श्रीआचार्यजी के दरसन किये। साष्टांग दंडवत् किये। तब श्रीआचार्यजी पीठ दे बैठे। तब दामोदरदास संभलवारेने श्रीआचार्यजी सों विनती करि के कह्यो, जो-महाराज! मेरो अपराध कहा है? और जीव तो अपराध करत ही आयो है। परि अपराध क्यों जानिए तो भली बात है। तब श्रीआचार्यजी नें कह्यो, जो तेनें दामोदरदास हरसानी कों सखड़ी महाप्रसाद क्यों न लिवायो? और अनसखड़ी प्रसाद क्यों लिवायो? तब दामोदरदास संभलवारे नें श्रीआचार्यजी सों विनती कीनी, जो-महाराज, दामोदरदास सों पूछिये! तब श्रीआचार्यजी नें दामोदरदास हरसानी सों पूछी, जो-दमला! तेनें दामोदरदास संभलवारे के यहां सखड़ी महाप्रसाद क्यों न लियो?

अनसखड़ी महाप्रसाद लेतो, तयारे श्रीआचार्यजी दामोदरदास संभलवाणा उपर अप्रसन्न थया, अने कहुं, (मनभां विचार्युं के) आ भारे अंतरंग सेवक तेने सखड़ी महाप्रसाद केम न लेवडाय्ये? आ वात श्रीआचार्यजीना मननी दामोदरदास संभलवाणाये घर भेठे नाली, के श्रीआचार्यजी महाप्रभु भारे उपर अप्रसन्न थया छे, तयारे स्त्रीने कहुं, के तू श्रीठाकुरजीनी सेवा सारी रीते करजे, अने हुं तो श्रीआचार्यजीना दर्शन भठि अडेल नउं छुं, तयारे दामोदरदास अडेल ग्याल्या, ते अडेल नछ पहुंन्या, त्यां श्रीआचार्यजीनां दर्शन कर्यां, साष्टांग दंडवत् कर्यां, तयारे श्रीआचार्यजी पीठ दध भेडा, तयारे दामोदरदास संभलवाणाये श्रीआचार्यजीने विनती करीने कहुं, के महाराज! भारे अपराध शे छे? अने छव तो अपराध करतो न आव्ये छे, परंतु अपराध कर्ये नालीये तो सारी वात छे, तयारे श्रीआचार्यजीये कहुं, के ते दामोदरदास हरसानीने सखड़ी महाप्रसाद केम न लेवडाय्ये? तयारे दामोदरदास संभलवाणाये श्रीआचार्यजीने विनती करी, के महाराज! दामोदरदासने न पूछीये, तयारे श्रीआचार्यजीये दामोदरदास हरसानीने पूछ्युं, के दमला! ते दामोदरदास संभलवाणाने त्यां सखड़ी महाप्रसाद केम न लीघा?

तब दामोदरदास नें कह्यो, जो-महाराज ! श्रीठाकुरजी प्रातःकाल बालभोग अरोगते सोई लेतो। सो सखडी की रुचि रहती नाहीं, तातें न लेतो। तब श्रीआचार्यजी ने कह्यो, जो-तू तो तेरी इच्छा तें न लेतो। परि मोक्षों तो याके ऊपर बड़ी खुनस भई हती। सो भक्तन के अंतःकरण की भक्ति देखिवे कों प्रभु को नाट्य है। काहे तें, जो-दामोदरदास संभल्वारे ने कन्नौज में अपने घर बैठे श्रीआचार्यजी के अंतःकरण की जानी। सो श्रीआचार्यजी तो भक्त के हृदय में सदा स्थित हैं। वह भक्त हृदे की बात कहा न जाने ? परि भक्त परीक्षार्थ यह प्रभु को नाट्य है। पाछें दामोदरदास कों बहुत सन्मान करि के श्रीआचार्यजी ने घर पठाये। तब दामोदरदास अपने घर कन्नौज आइ पहोंचे। पाछें स्त्री पुरुष भली भांति सों सेवा करन लागे।

भावप्रकाश—दामोदरदास हरसानी संभल्वारे के ऊपर कृपा करन के अर्थ इनके घर पाहुने आये। दामोदरदास संभल्वारे तनुजा वित्तजा भली-भांति सों राजसेवा करे हैं और जो वैष्णव (इनके यहां होय के) श्रीआचार्यजी के दरसन कों जाते तिन सवन के संग न्यारी न्यारी भेट पठावते। वैष्णव को समाधान वहीत करते। खडिया में विना कहे खरची वैष्णव कों भरि देते। सो श्रीआचा-

त्यारे दामोदरदासे क्युं, के, महाराज ! श्रीठाकुरजी प्रातःकाल बालभोग अरोगता ते न लेतो। ते सखडीनी रुचि रहती नही। तेथी न लेतो। त्यारे श्रीआचार्यजीके क्युं, के तू तो तारी इच्छाथी न लेतो परंतु मने तो आना उपर षडु रीस थडुती। ते लक्ष्मिना अंतःकरणनी लक्ष्मि जेया प्रभुतुं (आ) नाट्य छे, केभके, दामोदरदास संभलवाणायें कन्नौजमां पोताना घर पेठे श्रीआचार्यजीना अंतःकरणनी (वात) लक्ष्मी, ते श्रीआचार्यजी तो लक्ष्मिना हृदयमां सदा भिराजे छे, ते लक्ष्मि हृदयनी वात शुं न लखे ? परंतु लक्ष्मि परिक्षार्थ आ प्रभुतुं नाट्य छे, पछी दामोदरदासने षडु न सन्मान करीने श्रीआचार्यजीके घर भेकल्या। त्यारे दामोदरदास पोताना घर कन्नौज आवी पड़ोन्था। पछी स्त्री-पुरुष सारी रीते सेवा करवा लाग्यां।

भावप्रकाश—दामोदरदास हरसानी संभलवाणाना उपर कृपा करवाने भाटे जेमने त्यां पाहुणे आव्या। दामोदरदास संभलवाणा तनुज वित्तज सारी रीतिथी राजसेवा करे छे जे जे वैष्णव (जेमने त्यां थडने) श्रीआचार्यजीनां दर्शने जय ते पधानी संगे अलग अलग भेट भेकल्या, वैष्णवतुं समाधान षडु न करता, खडिया (थैला) मां विना कहे अथी वैष्णवोने लरी

र्यजी के आगे बढ़ाई बहोत भई । जो-आवे सो (बढ़ाई) करे । तब श्रीआचार्यजी के मनमें यह आई, जो-हृदय के भीतर को भाव सुद्ध होइ तब काम होइ । जो अन्याश्रय न होइ । यह श्रीआचार्यजी के हृदय की जानिके दामोदरदास हरसानी इनके यहां पाहुने आये (कृपा करनके अर्थ) । सो दामोदरदास के हृदय की सगरी रीति आछी देखी, परंतु स्त्री में रंच पिताकी का'नि जानि सखड़ी महाप्रसाद न लिये । दिन पांच सात रहे । परंतु अपने हृदय को अभिप्राय कछु दामोदरदास सों मार्ग की वार्ता नहीं कहे । पाछें श्रीआचार्यजी पास आये । तब श्रीआचार्यजी पूछे कहांते आये ? तब चिनती करी, जो-दामोदरदास संभलवारे के यहां पाहुने गयो हतो सो सखड़ी नहीं लियो, अनसखड़ी लियो । यह कहिके यह जताये, जो-दामोदरदास को भाव दृढ़ है । तातें अनसखड़ी लीनी । स्त्री को भाव दृढ़ नहीं है तातें सखड़ी (महाप्रसाद) नहीं लियो । तब श्रीआचार्यजी दामोदरदास संभलवारे के ऊपर अप्रसन्न भये । जो-मेरे अंतरंग सेवक कों पायके स्त्रीकूं अन्याश्रय सों न छुड़ायो ? फेर ऐसो समें कब पावेगो ? सो यह बात श्रीआचार्यजी के हृदय की संभलवारे ने जानी । स्त्रीकों पराश्रय है तातें नहीं जानी ।

हेता. ते श्रीआचार्यजीनी आगण अहु अडाध थध. जे आवे ते (अडाध) करे. तारे श्रीआचार्यजीना मनमां जे आव्युं डे हृदयनी भीतरने भाव शुद्ध होय तो काम थाय. जे अन्याश्रय न थाय. आ श्रीआचार्यजीना हृदयनी आशुने दामोदरदास हरसानी जेमने त्यां पराएु आव्या (कृपा करवाने भाटे). ते दामोदरदासना हृदयनी अधी रीति सुद्ध जेध. परंतु स्त्रीमां रंचक पितानी मर्यादा आशुने सखड़ी महाप्रसाद न दीधो. दिन पांच सात रधा. परंतु पिताना हृदयने अभिप्राय कंठ दामोदरदासने मार्गनी वार्ता न कही पछी श्रीआचार्यजी पास आव्या. तारे श्रीआचार्यजीजे पूछ्यु, कयांथी आव्या ? तारे चिनती करी, जे दामोदरदास संभलवाणाने त्यां पराएु गयो हुतो. ते सखड़ी नहीं दीधो. अनसखड़ी दीधो. जे कहीने जे सुख्यु, डे दामोदरदासने भाव दृढ़ छे. तेथी अनसखड़ी दीधो. स्त्रीने भाव दृढ़ नथी तेथी सखड़ी (महाप्रसाद) नहीं दीधो. तारे श्रीआचार्यजी दामोदरदास संभलवाणाना ऊपर अप्रसन्न थया. डे मारा अंतरंग सेवकने प्राप्त करीने (पणु) स्त्रीने अन्याश्रय न छोडाव्यो. इरी जेवो समय क्यारे मणशे ? आ वात श्रीआचार्यजीना हृदयनी संभलवाणजे आशु. स्त्रीने पराश्रय छे तेथी न आशु—

वार्ता-प्रसंग ५—और सिंहनंद के वैष्णव श्रीआचार्यजी के दरसन कों जाते सो कन्नौज में दामोदरदास के घर उतरते । सो दामोदरदास सबन कों प्रसाद लिवावते । ता पाछे जब वैष्णव अडेल कों बिदा होते तब जितने वैष्णव होते तिन सबन प्रति एक एक मोहौर; एक एक नारियल, श्रीआचार्यजी की भेट कों पठावते । काहेते ? जो मेरी दंडवत खाली हाथ कैसे करोगे ? सो वे दामोदरदास ऐसे भगवदीय हे ।

वार्ता-प्रसंग ६—और दामोदरदास को ससुर बहुत संपन्न हतो । तिनने एक सौ लोड़ी बेटी के दायजे में दीनी हती । जो-मेरी बेटी बैठी रहेगी । और कामकाज सब लोड़ी करेंगी । परि वह लोड़ी पास काम न करावती । सेवा संबंधी कार्य सब आपुही करती । और लोड़ी सब और कामकाज करती । सो वह ऐसी भगवदीय ही ।

वार्ता-प्रसंग ७—बहुरि एक समें श्रीआचार्यजी आप दामोदरदास संभलवारे के घर पौढ़े हते । और दामोदरदास संभलवारे पांव दावत हते । तब श्रीआचार्यजी इन सों पूछे, जो-तोकों, तेरे मनमें काहू बात को मनोरथ है ? तब दामोदरदासने कह्यौ, जो-महाराज ! मोकों तो आपके अनुग्रह तैं काहू बात को मनोरथ रह्यो नाहीं । तब श्री आचार्यजी नैं कह्यौ, जो-तु जाइके अपनी स्त्री सों

वार्ता-प्रसंग ५—वणी सिंहनंदना वैष्णव आचार्यलता दर्शने जाता ते कन्नौजमां दामोदरदासना घर उतरता, ते दामोदरदास अधाने प्रसाद लेवडावता, ते पछी न्यारे वैष्णव अडेल माटे विदाय थता त्यारे नेटला वैष्णव थता ते अधा प्रति अेक अेक मोहौर अेक अेक नारियल श्रीआचार्यलनी लेखुं भेकलता, शा माटे ? के, भारी दंडवत भाडी हाथे केम करशे ? ते दामोदरदास अेवा लगवदीय हुता,

वार्ता-प्रसंग ६—अने दामोदरदासने सासरे अडु न संपन्न हुते, तेखे अेकसो लुंठीअो भेटीना दायजमां आपी हुती, के, भारी भेटी भेसी रहेशे, अने कामकाज अधी लुंठीअो करशे, परंतु ते लुंठी पासे काम न करावती, सेवा संधी कार्य अडुं आप न करती, अने लुंठी अधी भीनुं कामकाज करती, ते अेवी लगवदीय हुती,

वार्ता-प्रसंग ७—इरी अेक समें श्रीआचार्यल आप दामोदरदास संभलवाणाना घर पौढया हुता, अने दामोदरदास संभलवाणा अरखु हाथता हुता, त्यारे श्रीआचार्यलअे अेभने पूछथुं, के तने तारा मनमां कोष वातने मनोरथ छे ? त्यारे दामोदरदासे कहुं, के महाराज ! मने तो आपना अनुग्रहथी कोष वातने मनोरथ रह्यो नथी,

पूछि आउ । तब दामोदरदास अपनी स्त्री सों पूछी, जो-तेरे काहू वात को मनोरथ है ? तब स्त्रीनें कह्यो, जो- और तो कछु मनोरथ रह्यौ नाहीं । एक पुत्र को मनोरथ है । तब श्रीआचार्यजी सों आइ के दामोदरदास नें कह्यौ, जो-महाराज ! स्त्री कों तो एक पुत्र को मनोरथ है । तब श्री आचार्यजी आप श्रीमुख ते आज्ञा करे, जो-पुत्र होइगो । पाछें श्रीआचार्यजी आप श्रीनाथजीद्वार (जतीपुरा) पधारे । ता पाछे समय भयो तब वाके गर्भ की स्थिति भई । ता पाछे केतेक दिन में वा बाखरि में एक डाकोतिया आयो । तब ताको सब स्मार्त की स्त्री पूछन लागी । तब तामें तें काहूने दामोदरदास की स्त्री सों कही, जो-असूकी तु हू पूछि, तेरे कहा होइगो ? पाछें एक लोंड़ीने जाइके वा डाकोतिया सों पूछी, जो-कहा होइगो ? बेटा होइगो के बेटी होइगी ? तब वा डाकोतिया ने कह्यौ, जो-बेटा होइगो ।

ता पाछे केतेक दिनमें श्रीआचार्यजी कन्नौज पधारे । तब दामोदरदास चरन छवन लागे । तब श्रीआचार्यजी नें कह्यौ, जो-तू मोकों छुवे मति । तोकों अन्याश्रय भयौ है । तब दामोदरदास नें कह्यौ, जो-महाराज ! हों तो कछु जानत नाहीं । तब श्रीआचार्यजी नें कह्यौ, जो-तू अपनी स्त्रीकों पूछि । तब दामोदरदास ने अपनी

त्यारे श्रीआचार्यलये कहुं, के तू नधने तारी स्त्रीने पूछी आव. त्यारे दामोदरदासे पोतानी स्त्रीने पूछयुं, तने केधं वातनेा मनोरथ छे ? त्यारे स्त्रीये कहुं, के भीजे तो केधं मनोरथ रह्यो नथी अेक पुत्रनेा मनोरथ छे. त्यारे श्रीआचार्यल पासे आवीने दामोदरदासे कहुं, के भडाराज ! स्त्रीने तो अेक पुत्रनेा मनोरथ छे. त्यारे श्रीआचार्यल पोते श्रीमुखथी आज्ञा करी, के पुत्र थशे. पछी श्रीआचार्यल पोते श्रीनाथलद्वार (नतीपुरा) पधार्या. ते पछी समय थयो त्यारे तेने गर्भनी स्थिति थध. ते पछी केइसाक दिवसमां ते व्याप्तर (वाडा)मां अेक डाकोतिया आवयो. त्यारे तेने षधी स्मार्तनी स्त्रियो पूछवा लागी; त्यारे तेमांथी केधंये दामोदरदासनी स्त्रीने कहुं, के असूकी तू पणु पछ तारे शुं थशे ? पछी अेक लुंठीये नधने ते डाकोतियाने पूछयुं, के (मारी शेडाणीने) शुं थशे ? भेरा थशे के भेटी थशे ? त्यारे ते डाकोतियाये कहुं के भेरा थशे.

ते पछी केइसाक दिवसमां श्रीआचार्यल कन्नौज पधार्या. त्यारे दामोदरदास यरलु स्पर्श करवा लाग्या. त्यारे श्रीआचार्यलये कहुं, के तू भने अडीश नही. तने अन्याश्रय थयो छे. त्यारे दामोदरदासे कहुं, के भडाराज ! हुं तो कंठं नणुतो नथी. त्यारे श्रीआचार्यलये कहुं, के तू तारी स्त्रीने पूछ. त्यारे दामोदरदासे पोतानी

स्त्रीसों पूछी । तब स्त्रीने जो प्रकार भयो हतो सो सब कह्यो । सो सब बात दामोदरदासनें श्रीआचार्यजी सों आय कही । तब श्री-आचार्यजी दामोदरदास सों कहे, जो-पुत्र तो होइगो परि म्लेच्छ होइगो । पाछे श्रीआचार्यजी आप अडेल पधारे ।

पाछे यह बात दामोदरदासकी स्त्रीने सुनी, तब तें श्रीठाकुरजी की सामग्री तथा पात्र कों आप स्पर्श न करती । कहेती, जो-मेरे पेट में म्लेच्छ है, तो मैं श्रीठाकुरजी की सामग्री तथा पात्र कैसे छूओं ? या भांति सों रहे । पाछें जब प्रसूति के दिन आये । तब दामोदरदासकी स्त्रीने अपनी महतारी सों कह्यौ, जो-मेरे पुत्र होय तो होत मात्र ही तू तत्काल ले जैयो । मैं वाको सुख न देखोंगी । जो-वाको महोडो हम देखें तो हमारो अनिष्ट होइ । तातें वाको महोडो नाहीं दीखे एसो उपाइ तू करियो । पाछें वाकी महतारी ने त्योंही कियो । प्रसूत होत मात्र तत्काल अपने घर ले गई । सो धाइ कों देकें बड़ो कियो ।

भावप्रकाश—एक समें जब श्रीआचार्यजी कन्नौज पधारे तब दामोदरदास सों आज्ञा करी, कछु मनोरथ होइ सो मांगि ले । या प्रकार फेरि दामोदरदास की परीक्षा किये । (काहते ?) जो-स्त्री कों पराश्रय है ।

स्त्रीने पूछ्युं । त्यारे स्त्रीमे, जे प्रकार थयो हुतो ते थयो कही, ते थधी वात दामोदरदासने श्रीआचार्यजीने आपीने कही । त्यारे श्रीआचार्यजी दामोदरदासने कहे, जे पुत्र तो थयो परंतु म्लेच्छ (युद्धिवाणो) थयो । पछी श्रीआचार्यजी आप अडेल पधार्यो ।

पछी आ वात दामोदरदासनी स्त्रीमे सांभणी त्यारथी (ते) श्रीठाकुरजीनी सामग्री तथा पात्रने पोते स्पर्श न करती । (अने) कहेती, जे मारा पेटमां म्लेच्छ छे तो हुं श्रीठाकुरजीनी सामग्री तथा पात्रने केम अडकुं ? आ प्रकारथी रह्ये । पछी त्यारे प्रसूतिना दियस आप्या त्यारे दामोदरदासनी स्त्रीमे पोतानी माताने कहुं, जे मारे पुत्र थाय ते थतां मात्र ज. तू तत्काल लभ जजे. हुं अेतुं महेडुं नही जेठे. जे अेतुं महेडुं अमे जेधये तो अमाइं अनिष्ट थाय. तेथी तेहुं महेडुं न देआय अेवो उपाय तू करजे. पछी अेनी माताअे तेमज क्युं. प्रसूत थतां मात्र तत्काल पोताना धरे (आलक)ने लभ जभ. अने धाधने आपीने तेने भेटा क्यो.

भावप्रकाश—अेक समय त्यारे श्रीआचार्यजी कन्नौज पधार्यो त्यारे दामोदरदासने आज्ञा करी, कंछ मनोरथ होय तो मांगी ले. आ प्रकारे डूरी दामोदरदासनी परीक्षा करी—केमके स्त्रीने पराश्रय छे. तेनी संगथी आने पणु पराश्रय

ताके संगतें याहुकों पराश्रय होई । तो कछु वर दीजे । इतने पुष्टिमार्ग के फलसों रहित होई । परि दामोदरदास तो दृढ़ है । तातें कहे, महाराज ! आपु के चरनारविंद की सेवा मिली अब मोकों काहू बात को मनोरथ नहीं है । तब श्रीआचार्यजी ने दामोदरदास सों कह्यो, स्त्री कों पूछि आउ । यामें यह जानिये, जो-श्रीआचार्यजी दामोदरदास सों बोले परि स्त्री सों कछु बोले नहीं । और स्त्री हू आप आय श्रीआचार्यजी सों विनती नहीं कीनी । यामें यह जानिये, जो-(स्त्री) बहोत श्रीमहाप्रभुजी की निकट हूँ नहीं आवती, और मन में अन्याश्रय हतो । तातें कह्यो, एक पुत्र सेवा अर्थ होय । सो यह विचार नहीं आयो, जो-पुष्टिमार्ग की सेवा मांगे ते मिले । पुत्र को कहा प्रमान है, जो-सेवा करेगो ? इतने यह वचन में (श्रीआचार्यजी ने जान्यो) जो-मेरो आश्रय छुड्यो । जाउ, पुत्र लेके सगरी भक्ति सकामी होइ गई । तातें मुकुंददास ने सप्तम स्कंध में प्रह्लाद नृसिंहजी सों कहे हैं, “स्वामि सों निज अर्थ हि चाहें । निदन भक्ति अवगाहें ।” स्वामी सों लौकिक वैदिक अपनो सुख कछु चाहे सो निंदित है, वाको भक्ति न मिले । या प्रकार पुत्र दे आप श्रीगोवर्धनधर पास गिरिराज पधारे । फेरि जब स्त्री ने अन्याश्रय कियो तब आप कन्नौज पधारे । और दामोदरदास कों

थाय तो कंठ वर आपीये. अटले पुष्टिमार्गना क्षुध्ती रहित थाय. परंतु दामोदर-दासतो दृढ छे तेथी कहे, महाराज ! आपना चरनारविंदनी सेवा भणी हुवे भने डाँध वातनो मनोरथ नथी. त्तारे श्रीआचार्यजीये दामोदरदासने कहुं, स्त्रीने पूछी आव. अेमां अेम अण्णिये के श्रीआचार्यजीये दामोदरदासथी षोढया परंतु स्त्रीथी कंठ षोढया नहीं. अने स्त्री पणु पोते आवीने श्रीआचार्यजी पासे विनती न करी. अेमां अेम अण्णिये के स्त्री श्रीमहाप्रभुजीनी पासे पणु धण्णी आवती नहीं. अने मनमां अन्याश्रय हुतो. तेथी कहुं अेक पुत्र सेवा अर्थ होय. ते अेम विचार न आव्यो के पुष्टिमार्गनी सेवा मांग्याथी भणे. पुत्रनुं शु प्रमाणु छे के सेवा करेशे ? अेटलां वचनमां (श्रीआचार्यजीये अण्णियुं) के भारे आश्रय छुट्यो. अठ पुत्र लधने सधणी लक्ति सकामी थध गध. तेथी मुकुंददासे सप्तस्कंधमां प्रह्लाद नृसिंहजीथी कहे छे “स्वामि सों निज अर्थ ही याहे, निदन लक्ति अवगाहे” स्वामीथी लौकिक वैदिक पोतानु सुष्य कंठ याहे तो निदित छे. अेने लक्ति न भणे आ प्रकार पुत्र आपी आप श्रीगोवर्धनधर पासे गिरिराज पधारे. पछी अ्यारे स्त्रीये अन्याश्रय क्यो त्तारे आप कन्नोज पधार्या. अने

चरन यातें छवन नहीं दिये, जो-स्त्री के हाथ को खानपान दामोदरदास ने कियो है । तातें चरनपरस करिवे को अधिकार नहीं है । यह दामोदरदास कूं जतायो ।

तातें अन्याश्रय बराबरि दोष दूसरो नहीं है । जैसे, एक पति छोड़िकें दूसरो पति करे तब स्त्री को सगरो धर्म जाई । ताही प्रकार अन्याश्रय रंच करे तो वैष्णव को धर्म नाश होई । यह सिद्धांत दिखाये । फेरि स्त्री कों अनन्यता भई, तातें श्रीठाकुरजी की सामग्री-सेवा परस नहीं करती । तब वह अन्याश्रय पुत्र द्वारा हृदय तें निकर्यो । काहे तें, श्रीभागवत में कहे हैं भक्त कों श्रीठाकुरजी विना और ठौर ममत्व होई सो वस्तु कों श्रीठाकुरजी तत्काल नाश करे । तब ज्ञान वैराग्य दृढ़ होइके आश्रय सिद्ध होई । भक्ति न होइ तो वस्तु गये औरहू अन्याश्रय सदा करे । सो स्त्री की पुत्र में ममता देखि के नष्ट श्रीआचार्यजी ने अपने जानिके किये । तब स्त्री कों ज्ञान भयो । तब अपनी माता सों कहे, जो-मैं पुत्र को मुख न देखोंगी । सो पुत्र होन समय नेत्रन सों पट्टी बांधि लीनी । सो उनकी माता पुत्र को जन्मत ही अपने घर ले गई । तहां पुत्र वरस १० को हे पाछें म्लेच्छ भयो । स्त्री पुरुष मन लगाइके श्रीद्वारकानाथजी की सेवा करी ।

दामोदरदासने चरण स्पर्श ऐसी न करवां दीधां डे स्त्रीना हाथनुं पानपान दामोदर-
दासे कथुं छे. तेथी चरणस्पर्श करवानो अधिकार नथी. आ दामोदरदासने जणायुं.

तेथी अन्याश्रय बराबर भीजे दोष नथी. जेभ अक पति छोडीने भीजे पति करे स्त्रीना सधणो धर्म जय. तेज प्रकारे अन्याश्रय रंचक करे तो वैष्णवना धर्म नाश थाय. आ सिद्धांत देखाडयो. इरी स्त्रीने अनन्यता थध त्यारे श्रीठाकुरजी-नी सामग्री-सेवा (नो) स्पर्श न करती त्यारे ते अन्याश्रय पुत्र द्वारा हृदयथी निकर्यो डेभ ? जे श्रीभागवतमां कहे छे, अकतने श्रीठाकुरजी विना भीजे जग्याअे ममत्व होय तो ते वस्तुना श्रीठाकुरजी तत्काल नाश करे. त्यारे ज्ञान वैराग्य दृढ थधने आश्रय सिद्ध थाय. अकित न होय तो वस्तु गये भीजे पणु अन्याश्रय सदा करे. ते स्त्रीनी पुत्रमां ममता जेधने श्रीआचार्यजीअे पोतानां जणुी (तेने) नष्ट करी. त्यारे स्त्रीने ज्ञान थयुं. त्यारे पोतानी माताने कथुं, डे हुं पुत्रनुं मडोडुं नही जेठं. ते पुत्र थवाना समये नेत्रो उपर पट्टी बांधी दीधी. पछी ऐनी माता पुत्रने जन्मथी ज पोताना धरे लधं गध. त्यां पुत्र वरस १० नो थध पछी म्लेच्छ थयो. स्त्री-पुरुषे मन लगाडीने श्रीद्वारकानाथजीनी सेवा करी.

वार्ता-प्रसंग ८—बहुरि एक समय दामोदरदास की देह छूटी । तब स्त्री ने घर में छिपाय राखी । पाछें वैष्णव सों कह्यो, जो-तुम एक नाव अडेल को भाड़े करि लावो । सो वैष्णव नाव भाड़े करि लाये । तब नाव में श्रीद्वारकानाथजी और घर में की सब मामग्री तृण पर्यंत कछु घर में राख्यो नाहीं । घर में हतो सो सब नाव में धर्यो । तब वैष्णवन सों कह्यो, जो-यह नाव अडेल ले जाउ । सब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के मंदिर में पहुँचाओ । सो वैष्णव नाव लेके चले । सो कोस तीस चालीस उपर नाव गई । पाछें स्त्री ने प्रगट कियो । जो दामोदरदास की देह छूटी है । तब वैष्णव सब आये । संस्कार कियो । तब दामोदरदास को बेटा तुरक भयो, सो आयो । सो आय के देखे तो घर में कछु नाहीं । जल को करवा भर्यो है । सो देखिके मूँड पटक रह्यो । पाछें दामोदरदास को ससुर आयो । तिननें बेटी सों कह्यो, जो-बेटी तेनें घर में कछु राख्यो नाहीं ? जो-अब तू कहा खायगी ? तब वानें कही, जो-तुम देउगे सो खाजंगी । क्षत्री लोगन के या समें सगे सहोदरे कछु देत हैं । एसी ज्ञाति की रीति है । तब दामोदरदास की स्त्री ने जलपान न कर्यो । सो थोरे ही दिन में देह छूटी । कृति दोउन की साथ भई । तब यह बात केतेक दिन पाछे काहू वैष्णव ने श्रीआचार्यजी आगे कही ।

वार्ता प्रसंग-८—वर्णी एक समये दामोदरदासनी देह छुटी. त्यारे स्त्रीये घरमां संताडी राभी. पछी वैष्णुवोने कहुं, के तमे नाव अउलनी लाउ करी लावो. ते वैष्णुव नाव लाउ करी लाव्या. त्यारे नावमां श्रीद्वारकानाथल अने घरनी अंधी सामग्री तलु पर्यंत कंघ घरमां राख्युं नही. घरमां हतुं ते अधुं नावमां धर्युं. त्यारे वैष्णुवोने कहुं, के आ नाव अउल लध जव. अधुं श्रीआचार्यल महाप्रभुलना मंदिरमां पहुँचाउा. ते वैष्णुवो नाव लधने याव्या. ते कोस ३०-४० उपर नाव गध त्यारे स्त्रीये (वातने) प्रकट करी के दामोदरदासनी देह छूटी छे. त्यारे वैष्णुवो अधा आवीने संस्कार कर्यो. त्यारे दामोदरदासना भेटा तुरक थयो ते आव्यो. ते आवीने लुये तो घरमां कंघ नथी. जलनेा करवो लर्यो छे. ते जेधने माथुं पटकीने रडी गयो. पछी दामोदरदासना सासरे आव्यो तेले जेटीने कहुं, के जेटी ! तें घरमां कंघ राख्युं नही ? जे हवे तूं शुं भाधश ? त्यारे तेले कहुं, के तमे देशो ते भाधश. क्षत्री लोकोमां आ समये सगां संअंधी कंघ दे छे अवी ज्ञातिनी रीति छे. त्यार (पछी) दामोदरदासनी स्त्रीये जलपान न कर्युं. ते थोडा ज दिवसमां देह छुटी. कृति अन्नेनी साथे थध. त्यारे आ वात केरलाक दिवस पछी कोध वैष्णुवे श्रीआचार्यल आगण कडी

तब श्रीआचार्यजी नें कह्यो, जो-इनको ऐसो ही चाहिये। सो वे दामोदरदास तथा उनकी स्त्री ये दोउ श्रीआचार्यजी के सेवक ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं, सो कहां ताई कहिये।

भावप्रकाश—पाछें दामोदरदास की देह छूटी। तब स्त्री ने देह छिपाइ यातें राखे, जो-पुत्र मलेच्छ है। सगरी वस्तु श्रीजी की है सो ले जायगो। तातें नाव भरि के सब वस्तु श्रीआचार्यजी के यहां पहुंचाई। जब कोस चालीस नाव गई तब स्त्रीने जाहेर कियो। ससुर आदि ज्ञाति के सवने दामोदरदास की देह को संस्कार कियो। पाछें वेटा दोरि के आयो सो देखे तो माटी को कहुवा जलसों मर्यो है। और कछु है नाहीं। जब खबर पाई तब नाव लेके दोर्यो। परंतु पायो नाहीं। तब माथो पीटि रह्यो। यामें यह जतायो, जो-लौकिक होइ के अलौकिक वस्तु लेन को उपाय करे सो दुख ही पावे। परंतु हाथ लागे नाहीं।

और ससुर ने कह्यो, कछु राख्यो नाहीं। अब तू कहा खायगी? यह लौकिक पूछयो। तब स्त्रीने अलौकिक बात कही, जो-अब तुम देउगे सो खाऊंगी। या समें क्षत्री लोगन में देत हैं। तासों निर्वाह करूंगी। ताको अर्थ यह, जो-श्रीठाकुरजी पधारे सो सेवा विना घर की वस्तु कैसे लेऊं?

त्यारे श्रीआचार्यजीके कछुं, के अने अने न जेधये. अ दामोदरदास तथा तेमनी स्त्री अ जेठ श्रीआचार्यजीना सेवक अवा कृपापात्र भगवदीय हुता. तेथी तेमनी वार्ताना पार नही. ते क्यां सुधी कहीये ? -

भावप्रकाश—पछी दामोदरदासनी देह छुटी. त्यारे स्त्रीके देह संताडी अ माटे राभी के पुत्र मलेच्छ छे. सवणी वस्तु श्रीजीनी छे ते लध नशे. तेथी नाव बरीने पधी वस्तु श्रीआचार्यजीने त्यां मोकलावी. न्यारे कोस ४० नाव गध' त्यारे स्त्रीके नहेर कर्युं. (दामोदरदासना) श्वसुर आदि ज्ञातिना पधाये दामोदरदासनी देहने संस्कार कर्यो. पछी वेटा दोडीने आयेते ते जुअे तो माटीने करवे नलथी बर्यो छे, पीनुं कंध नथी. न्यारे अपर मणी त्यारे नाव लधने दोडयो. परंतु मणी नही. त्यारे माथुं पीटी रह्यो. अमां अ नताव्युं, के लौकिक थधने अलौकिक वस्तु लेवाने उपाय करे तो दुःख न पावे. परंतु हाथ लागे नही. अने (दामोदरदासना) श्वसुरे कछुं. कंध राभ्युं नही. हुवे तू थुं पाधश? अ लौकिक पूछथुं. त्यारे स्त्रीके अलौकिक बात कही. के हुवे तमे देशे ते पाधश. आ समये क्षत्री लोकामां दे छे तेनाथी निर्वाह करीश. तेने अर्थ अ, के श्रीठाकुरजी

અલૌકિક વસ્તુ કે સંગ ગઈ । સેવા વિના મૈં લૌકિક હૌં । સો લૌકિક સૌં નિર્વાહ કરૂંગી । યા પ્રકાર સ્ત્રી ને હૂ દેહ છોડિ દિયો । ક્રિયા-કર્મ સવ દામોદરદાસ કે સંગ ભયો ।

❀ લોંઢી કી વાર્તા ❀

ઔર વહ લોંઢી ઘડી ભગવદીય હતી । તાકી વાર્તા નાહીં લિખી । સો યાતે શ્રીજમુનાજી કી સખી હૈ । લીલા મૈં ઇનકો નામ કૃષ્ણાવેસનિ હૈ । સદા કૃષ્ણ કે સ્વરૂપ કો આવેસ રહતો । સો દ્વાપર મૈં વિદુરજી કી સ્ત્રી યહ લોંઢી હતી । સો શ્રીઠાકુરજી મૈં અત્યંત સ્નેહ । વિદુરજી કે ઘર વિના બુલાયે જાતે । સો અવ દામોદરદાસ કે યહાં આઈ । સો લોંઢી દામોદરદાસ કે વ્યાહ મૈં આઈ । યાકૌં પુષ્ટિસંબંધ ભયો । માનસી મૈં મગન રહતી ।

ઁક દિના દામોદરદાસ (કે) સેવા કરત મૈં મન મૈં આઈ, જો-નકાસ મૈં જાહ ઘોઢા સ્વરીદિયે । તાહી સમય ઁક વૈષ્ણવ દામોદરદાસ કૌં મિલન કૌં આયો । તવ લોંઢી ને કહી, નકાસ મૈં ઘોઢા સ્વરીદન ગયે હૈં । તવ વહ વૈષ્ણવ ચલ્યો ગયો । પાછૈં યહ વાત કાહ ને દામોદરદાસ સૌં કહી, જો-તુમ સેવા મૈં હતે (તવ) લોંઢી ને ઁસે કહી । તવ દામોદરદાસ લોંઢી સૌં પૂછી । તવ લોંઢીને

પધાર્યા, તેથી સેવા વિના ધરની વસ્તુ કેમ લેઉ ? અલૌકિક વસ્તુના સંગ ગઇ. સેવા વિના (હવે) હું લૌકિક છે. તે લૌકિકથી નિર્વાહ કરીશ. આ પ્રકારે સ્ત્રીએ પણ દેહ છોડી દીધો. ક્રિયા કર્મ અધું દામોદરદાસની સાથે થયું.

❀ લુંડીની વાર્તા ❀

અને તે લુંડી બહુ ભગવદીય હતી. તેની વાર્તા નથી લખી તે એ માટે કે (તે) શ્રીયમુનાજીની સખી છે. લીલામાં એનું નામ ‘કૃષ્ણાવેશની’ છે. સદા કૃષ્ણના સ્વરૂપનો આવેશ રહેતો. દ્વાપરમાં વિદુરજીની સ્ત્રી આ લુંડી હતી. તે શ્રીઠાકુરજીમાં અત્યંત સ્નેહ. વિદુરજીના ઘર વિના બુલાયે (શ્રીઠાકુરજી) જતા. તે હવે દામોદરદાસને ત્યાં આવી. તે લુંડી દામોદરદાસના લગ્નમાં આવી. અને પુષ્ટિસંબંધ થયો. માનસીમાં મગન રહેતી.

એક દિવસે સેવા કરતા દામોદરદાસના મનમાં આવ્યું, કે નકાશમાં (ગુજરીમાં) બધ ઘોડા ખરીદીએ. તેજ સમયે એક વૈષ્ણવ દામોદરદાસને મળવાને આવ્યો. ત્યારે લુંડીએ કહ્યું, નકાશમાં ઘોડા ખરીદવા ગયા છે. ત્યારે તે વૈષ્ણવ ચાલ્યો ગયો. પછી એ વાત ઠાઠએ દામોદરદાસને કહી, કે તમે સેવામાં હતા ત્યારે લુંડીએ એમ

कही, तिहारो मन वा समय कहां हतो ? जहां मन तहां देह जानियो । तव दामो-
दरदास चुप होइ रहे ।

सो जव नाव में सगरी सामग्री धरी । तामें सामग्री सदृश लोंडी हू है । सो
वह नाव पर श्रीद्वारकानाथजी के संग गई । तव श्रीआचार्यजी सों वैष्णव ने आइ
कही, महाराज ! श्रीद्वारकानाथजी वैभव सहित पधारे हैं । ता समें श्रीगोपीनाथजी
ठाड़े हते । (तव) श्रीगोपीनाथजी कहे, लक्ष्मी सहित नारायण पधारे (हैं) ।
तव श्रीआचार्यजी कहे, वैभव ठाकुर को देखि के तिहारो मन प्रसन्न भयो है ?
(तव) श्रीगोपीनाथजी कहे, तिहारो कहाइके श्रीठाकुरजी की वस्तु में अपनो
मन करेगो ताको, निरमूल नास जायगो । तव श्रीआचार्यजी कहें, हमारो मारग
तो ऐसोई है । सो द्रव्य तें कछुक गोपीनाथजी प्रसन्न भये हते । सो एक पुत्र
भयो । परंतु वंस नाहीं चलयो । पाछे श्रीआचार्यजी वैष्णव सों आज्ञा किये ।
सगरी सामग्री श्रीजमुनाजी में पधराइ देउ । श्रीद्वारकानाथजी कों हमारे घर
पधराई लावो । तव वह लोंडी हू सामग्री रूप है । सो देह सहित श्रीजमुनाजी
पास चली गई । सगरी सामग्री श्रीजमुनाजी में पधराई । श्रीद्वारकानाथजी श्री-

कछुं. त्यारे दामोदरदासे लुं डीने पूछ्युं. त्यारे लुं डीये कछुं, तमाइं मन ते समये
झ्यां हुतुं ? ज्यां मन त्यां देह जणुजे. त्यारे दामोदरदास युप थरु रखा.

ज्यारे नावमां सधणी सामग्री धरी, तेमां सामग्री सदृश (समान) लु डी
पणु छे. ते नाव उपर श्रीद्वारकानाथजीनी साथे गध. श्रीआचार्यजीने वैष्णुवे आनीने
कछुं, महाराज ! श्रीद्वारकानाथजी वैभव सहित पधार्या छे. ते समये श्रीगोपीना-
थजी उभा हुता. (तारे) श्रीगोपीनाथजी कहे, लक्ष्मी सहित नारायण पधार्या छे.
त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, ठाकुरने वैभव जेधने ताइं मन प्रसन्न थयुं छे ? (त्यारे)
श्रीगोपीनाथजी कहे, तमहारो कहेवाधने श्रीठाकुरजीनी वस्तुमां पोतानुं मन करेशे
तेनो निर्भूल नाश जशे. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, अमारो मार्ग तो अवेो ज छे.
ते, द्रव्यथी कंठक श्रीगोपीनाथजी प्रसन्न थया हुता. ते, अक पुत्र थयो परतु वंश
न यात्यो. पछी श्रीआचार्यजीने वैष्णुवेने आज्ञा करी, सधणी सामग्री श्रीजम-
नाजीमां पधरावी दे. श्रीद्वारकानाथजीने अमारा धरे पधरावी लावो. त्यारे ते लुं डी
पणु सामग्री रूप छे. ते देह सहित श्रीजमुनाजीनी पासे यादी गध. सधणी सामग्री
श्रीजमुनाजीमां पधरावी. श्रीद्वारकानाथजी श्रीआचार्यजीना धरे भिराज्या. आ लुं डीनी

અલૌકિક વસ્તુ કે સંગ ગઈ । સેવા વિના મૈં લૌકિક હૌં । સૌ લૌકિક સૌં નિર્વાહ કરૂંગી । યા પ્રકાર સ્ત્રી ને હૂ દેહ છોડિ દિયો । ક્રિયા-કર્મ સવ દામોદરદાસ કે સંગ ભયો ।

❀ લોંઢી કી વાર્તા ❀

ઔર વહ લોંઢી બઢી ભગવદીય હતી । તાકી વાર્તા નાહીં લિખી । સૌ યાતે શ્રીજમુનાજી કી સખી હૈ । લીલા મૈં ઇનકો નામ કૃષ્ણાવેસનિ હૈ । સદા કૃષ્ણ કે સ્વરૂપ કો આવેસ રહતો । સૌ દ્વાપર મૈં વિદુરજી કી સ્ત્રી યહ લોંઢી હતી । સૌ શ્રીઠાકુરજી મૈં અત્યંત સ્નેહ । વિદુરજી કે ઘર વિના બુલાયે જાતે । સૌ અબ દામોદરદાસ કે યહાં આઈ । સૌ લોંઢી દામોદરદાસ કે વ્યાહ મૈં આઈ । યાકૌં પુષ્ટિસંબંધ ભયો । માનસી મૈં મગન રહતી ।

एक दिना दामोदरदास (के) सेवा करत में मन में आई, जो-नकास में जाह घोड़ा खरीदिये । ताही समय एक वैष्णव दामोदरदास कों मिलन कों आयो । तब लोँडी ने कही, नकास में घोड़ा खरीदन गये हैं । तब वह वैष्णव चलयो गयो । पाछें यह बात काहू ने दामोदरदास सों कही, जो-तुम सेवा में हते (तब) लोँडी ने ऐसे कही । तब दामोदरदास लोँडी सों पूछी । तब लोँडीने

પધાર્યા, તેથી સેવા વિના ધરની વસ્તુ કેમ લેઉ ? અલૌકિક વસ્તુના સંગ ગઇ. સેવા વિના (હવે) હું લૌકિક છું. તે લૌકિકથી નિર્વાહ કરીશ. આ પ્રકારે સ્ત્રીએ પણ દેહ છોડી દીધા. ક્રિયા કર્મ બધું દામોદરદાસની સાથે થયું.

❀ લુંડીની વાર્તા ❀

અને તે લુંડી બહુ ભગવદીય હતી. તેની વાર્તા નથી લખી તે એ માટે કે (તે), શ્રીયમુનાજીની સખી છે. લીલામાં એતું નામ ' કૃષ્ણવેશની ' છે. સદા કૃષ્ણના સ્વરૂપને આવેશ રહેતો. દ્વાપરમાં વિદુરજીની સ્ત્રી આ લુંડી હતી. તે શ્રીઠાકુરજીમાં અત્યંત સ્નેહ, વિદુરજીના ઘર વિના બુલાયે (શ્રીઠાકુરજી) જતા. તે હવે દામોદરદાસને ત્યાં આવી. તે લુંડી દામોદરદાસના લગ્નમાં આવી. એને પુષ્ટિસબંધ થયો. માનસીમાં મગન રહેતી.

એક દિવસે સેવા કરતા દામોદરદાસના મનમાં આવ્યું, કે નકાશમાં (ગુજરીમાં) જઇ ઘોડા ખરીદીએ. તેજ સમયે એક વૈષ્ણવ દામોદરદાસને મળવાને આવ્યો. ત્યારે લુડીએ કહ્યું, નકાશમાં ઘોડા ખરીદવા ગયા છે. ત્યારે તે વૈષ્ણવ ચાલ્યો ગયો. પછી એ વાત ઠાઇએ દામોદરદાસને કહી, કે તમે સેવામાં હતા ત્યારે લુડીએ એમ

कही, तिहारो मन वा समय कहां हतो ? जहां मन तहां देह जानियो । तव दामो-
दरदास चुप होइ रहे ।

सो जब नाव में सगरी सामग्री धरी । तामें सामग्री सदृश लोंड़ी हू है । सो
वह नाव पर श्रीद्वारकानाथजी के संग गई । तव श्रीआचार्यजी सों वैष्णव ने आइ
कही, महाराज ! श्रीद्वारकानाथजी वैभव सहित पधारे हैं । ता समें श्रीगोपीनाथजी
ठाड़े हते । (तव) श्रीगोपीनाथजी कहे, लक्ष्मी सहित नारायण पधारे (हैं) ।
तव श्रीआचार्यजी कहे, वैभव ठाकुर को देखि के तिहारो मन प्रसन्न भयो है ?
(तव) श्रीगोपीनाथजी कहे, तिहारो कहाइके श्रीठाकुरजी की वस्तु में अपनो
मन करेगो ताको, निरमूल नास जायगो । तव श्रीआचार्यजी कहें, हमारो मारग
तो ऐसोई है । सो द्रव्य तें कलुक गोपीनाथजी प्रसन्न भये हते । सो एक पुत्र
भयो । परंतु वंस नाही चलयो । पाछे श्रीआचार्यजी वैष्णव सों आज्ञा किये ।
सगरी सामग्री श्रीजमुनाजी में पधराइ देउ । श्रीद्वारकानाथजी कों हमारे घर
पधराई लावो । तव वह लोंड़ी हू सामग्री रूप है । सो देह सहित श्रीजमुनाजी
पास चली गई । सगरी सामग्री श्रीजमुनाजी में पधराई । श्रीद्वारकानाथजी श्री-

कह्युं. त्यारे दामोदरदासे लुं डीने पूछ्युं. त्यारे लुं डीये कह्युं, तभाइं मन ते समये
अ्यां हेतुं ? अ्यां मन त्यां देह अणुअे. त्यारे दामोदरदास रुप थई रखा.

अ्यारे नावमां सधणी सामग्री धरी, तेमां सामग्री सदृश (समान) लु डी
पणु छे. ते नाव उपर श्रीद्वारकानाथजीनी साथे गध. श्रीआचार्यजीने वैष्णुवे आवीने
कह्युं, महाराज ! श्रीद्वारकानाथजी वैभव सहित पधार्या छे. ते समये श्रीगोपीना-
थजी उभा हुता. (त्यारे) श्रीगोपीनाथजी कहे, लक्ष्मी सहित नारायण पधार्या छे.
त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, ठाकुरने वैभव अेधने ताइं मन प्रसन्न थयुं छे ? (त्यारे)
श्रीगोपीनाथजी कहे, तम्हारे कहेवाधने श्रीठाकुरजीनी वस्तुमां पोतातुं मन करे
तेना निर्भूल नाश अशे. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, अ्यमारे मार्ग तो अ्येवो अ छे.
ते, द्रव्यथी कंठक श्रीगोपीनाथजी प्रसन्न थया हुता. ते, अेक पुत्र थयो परंतु व श
न आल्यो. पछी श्रीआचार्यजीअे वैष्णुवेने आज्ञा करी, सधणी सामग्री श्रीजम-
नाजीमां पधरावी हो. श्रीद्वारकानाथजीने अ्यमारा धरे पधरावी लावो. त्यारे ते लुं डी
पणु सामग्री रूप छे. ते देह सहित श्रीजमुनाजीनी पासे आली गध. सधणी सामग्री
श्रीजमुनाजीमां पधरावी. श्रीद्वारकानाथजी श्रीआचार्यजीना धरे अिराअ्या. आ लुं डीनी

आचार्यजी के घर बिराजे । यह लोंड़ी की अलौकिक बात हती । सो लोगन में विरुद्ध सी लागी । तार्ते श्रीगोकुलनाथजी प्रकास नाहीं किये । सामग्री रूप कहें । पाछें काहू वैष्णव ने श्रीआचार्यजी सों विनती कीनी, महाराज ! सामग्री तो दामोदरदास की स्त्री वैष्णव ने पठाई । सो आप अंगीकारि क्यों नाहीं किये ? तब श्रीआचार्यजी कहे, जो-बेटा म्लेच्छ है । सुनके आवे झगरो करे । द्रव्य दुःख को मूल है । दामोदरदास की स्त्री ने पठायो । श्रीमहारानीजी (कों) अंगीकार हू करायो । लौकिक झगरो हू मिटायो । पाछें काहू वैष्णव नें, स्त्री ने हू देह छोड़ी इनकी बात कही । तब श्रीआचार्यजी कहे स्त्री पुरुष भले वैष्णव टेक के हते ।

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक पद्मनाभदास कन्नौजिया ब्राह्मन,
कनौज के बासी, तिनकी घाता को भाव कहत हैं—

वार्ता-प्रसंग १—सो प्रथम पद्मनाभदास व्यासासन बैठते । सो कन्नौज में आप अपने घर कथा कहते । जंचे आसन बैठते । काहूके घर जानो न परतो । वृत्ति घर बैठे चली आवती । या भांति रहते । सो एक समय श्रीआचार्यजी आप कन्नौज पधारे । तब पद्मनाभदास दरसन कों आये । तब पद्मनाभदासने श्रीआचार्यजी

अलौकिक वार्ता हुती । ते लोडाभां विरुद्ध न्वी लागी तेथी श्रीगोकुलनाथजीये प्रकाश न कर्यो, सामग्री रूप कहे । पछी डोढ वैष्णुवे श्रीआचार्यजीने विनंती करी, महाराज ! सामग्री तो दामोदरदासनी स्त्री वैष्णुवे मोकली ते आप अंगीकार डेम न करी । त्यारे श्रीआचार्यजी कहे डे भेटा म्लेच्छ छे । सांभणोने आवे तो अगडो करे । द्रव्य दुःखनुं मूल छे । दामोदरदासनी स्त्रीये मोकल्युं श्रीमहाराणीजी (ने) अंगीकार पणु करायु । लौकिक अगडो पणु मटाव्यो पछी डोढ वैष्णुवे स्त्रीये पणु देहु छोडी ज्येनी वात कही । त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, स्त्री पुरुष सारां वैष्णुव टेकनां हुतां ।

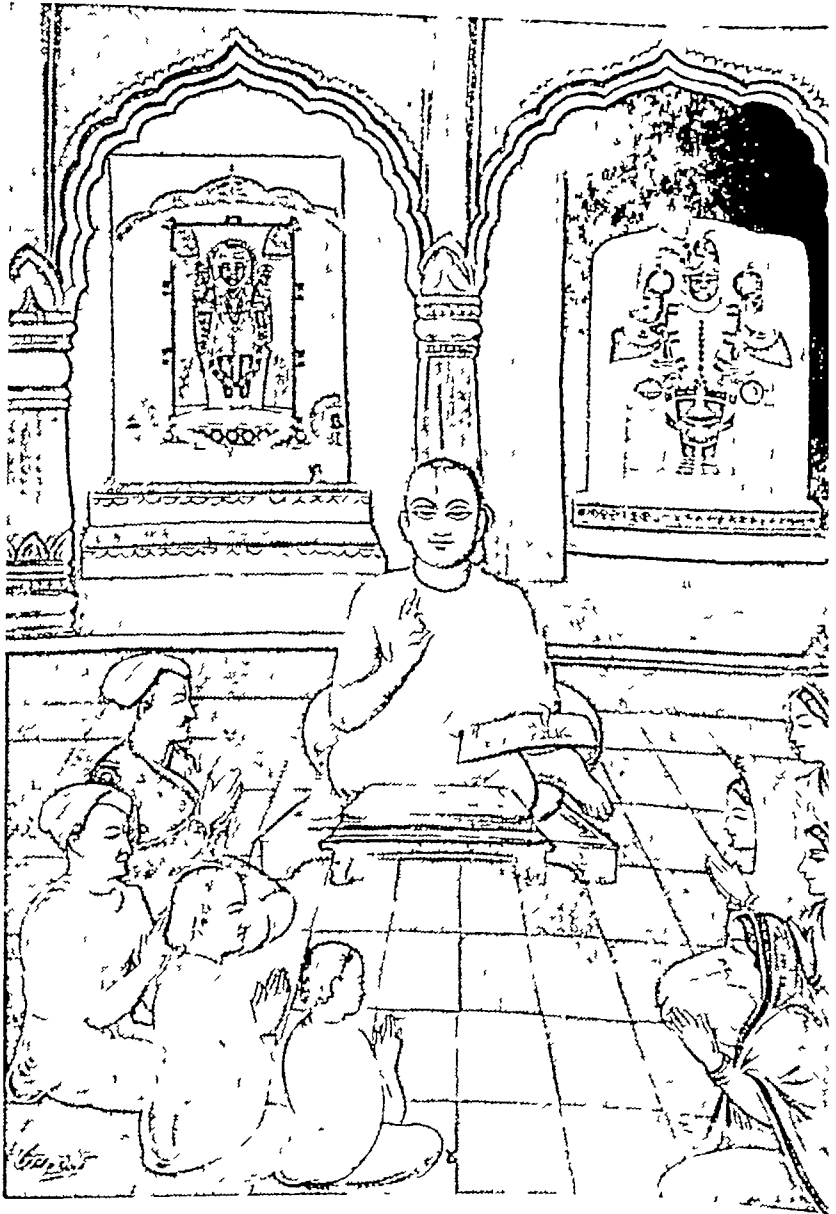
✽

✽

✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना सेवक पद्मनाभदास कन्नौजिया ब्राह्मण,
कन्नौजभां रहेता, तेमनी वार्ताना भाव कहीये छीये—

वार्ता प्रसंग-१—ते पद्मनाभदास प्रथम व्यासासने भेसता । ते कन्नौजभां पाते पाताना धरे कथा कहेता । उंचा व्यासने भेसता । डोढना घर नवुं न पडतुं । वृत्ति घर भेसां यादी आवती । जे रीते रहेता । ते जेक समय श्रीआचार्यजी आप कन्नौज पधार्यो । त्यारे पद्मनाभदास दर्शने आव्या । त्यारे पद्मनाभदासे श्रीआचार्यजी महा-



दामोदरदास दीवान संभलवाले का घर, कन्नौज.

बाईं ओर क्रमशः —

- १ दामोदरदास, संभलवाले । २ पुरुषोत्तमदास महेश ।
३ पञ्चनाभदास । ४ रघुनाथदाम ।

दाईं ओर क्रमशः —

- ५ दामोदरदाम की स्त्री । ६ तुलमा । ७. पावरती । ८ लोडी ।

हाप्रभु के श्रीमुखतें भगवद्वाता को प्रसंग सुन्यो । तब जानी, गो-ए साक्षात ईश्वर हैं । श्री पूर्ण पुरुषोत्तम यही है । सो पुरुषोत्तम ज्ञानि के पद्मनाभदास श्रीआचार्यजी की सरनि आये । नाम पायो । पाछे समर्पन करवायो । पाछे उत्थापन के समे श्रीआचार्यजी ने पोथी खोली । तहां दामोदरदास संभलचारे के घर बिराजे हते । सो पद्मनाभ अपने घर तें आये, श्रीआचार्यजी को दंडवत् करिके बैठे । अब आचार्यजी नें निबंध को श्लोक कह्यो, सो श्लोक—

पठनीयं प्रयत्नेन सर्वहेतुविवर्जितम् ।

वृत्त्यर्थं नैव युंजीत प्राणैः कण्ठगतैरपि ॥ १ ॥

तदभावे यथैव स्यात् तथा निर्वाहमाचरेत् ।

त्रयाणां येन केनापि भजन् कृष्णमवाप्नुयात् ॥ २ ॥

यह श्लोक पढ़े । सो पद्मनाभदासजी ने अंजुली भरि के संकल्प कियो, जो—कथा कहि के वृत्ति न करूंगो । ऐसे श्रीआचार्यजी ने आगे संकल्प कियो । तब श्रीआचार्यजी कहे, जो—श्रीभागवत वृत्त्यर्थ न कहनो और तो तुम्हारि वृत्ति है तुम ब्राह्मण हो । तातें और महाभारत इत्यादिक तो कहनो । तब पद्मनाभदास ने कह्यो, जो—हाराज ! अब तो संकल्प कियो सो तौ कियो । तातें कछु न कहनो । अब श्रीआचार्यजीने कही, जो—तुम तो गृहस्थ हो । कौन भांति सों निर्वाह करोगे ? तब पद्मनाभ नें श्रीआचार्यजी सों कह्यो, जो—

शुना श्रीमुखतें भगवद्वाता को प्रसंग सांभल्यो । त्पारे जण्युं के जे साक्षात धर छे । श्रीपूर्ण पुरुषोत्तम जेण छे । ते पुरुषोत्तम जण्योने पद्मनाभदास श्रीआचार्यजीने शरणे आब्या । नाम पाब्या पछी समर्पण क्युं । पछी उत्थापनना समये श्रीआचार्यजीने पोथी खोली । त्यां दामोदरदास संभलवाणाना घर (आप) बिराया हता । ते पद्मनाभदास पोताना घरथी आब्या । (पछी) श्रीआचार्यजीने दंडवत् करीने भेडा । त्पारे श्रीआचार्यजीने निबंधना श्लोक क्यो । ते श्लोक—

पठनीयं प्रयत्नेन सर्वहेतुविवर्जितम् .. (उपर ज्यो)

जे श्लोक भोल्या । (त्पारे) पद्मनाभदासजीने जोषो लरीने संकल्प क्यो । कथा कहीने वृत्ति नही करे । जेभ श्रीआचार्यजीने आगण संकल्प क्यो । त्पारे श्रीआचार्यजीने क्युं, के श्रीभागवत वृत्त्यर्थ न कहेवुं, भीजुं तो तमारी वृत्ति, तमे आसण छे । तेथी भीजुं महाभारत इत्यादि तो कहेवुं । त्पारे पद्मनाभदासजीने क्युं के, महाराज ! हवे तो संकल्प क्यो ते तो क्यो । तेथी कंध न कहेवुं । त्पारे श्रीआचार्यजीने क्युं, के तमे तो गृहस्थ छे । कंध रीते निर्वाह करेशो ? त्पारे पद्मनाभ-

श्रीभागवत वृत्त्यर्थ न कहूँगे । और जिजमान के घर वृत्ति कर लाऊँगे । तातें निर्वाह करूँगे । पाछे जिजमान के घर वृत्त्यर्थ गये । तिनमें बहुत आदर कियो । तब पद्मनाभदास के मनमें ग्लानी आई । जो-पहिले तो कबहुँ भिक्षा करी नाहीं । अब वैष्णव भये पाछे भिक्षा माँगन निकस्यो । सो उचित नाहीं । पहले तो उपवीत गरे में हतो । ताकों तो उचित है, जो-भिक्षावृत्ति करें । परि अब तो गरे में माला पहरी । ताकों तो यह भिक्षा-वृत्ति उचित नाहीं । तब फेरि संकल्प कियो, जो-भिक्षावृत्ति न करूँगे । तब फेरि श्रीआचार्यजीने पूछी, जो-अब निर्वाह कैसे करोगे ? तब पद्मनाभदास ने कही, जो-वैश्य-वृत्ति करि निर्वाह करूँगे । पाछे कोड़ी बेचते, लकड़ी लै आवते । परि और बात न विचारी । देहादि पर्यंत सेवा कीनी । ऐसे टेकी ।

.भावप्रकाश—सो पद्मनाभदास चंपकलता सखी है, श्रीस्वामिनीजी की । जब पद्मनाभदासने श्रीआचार्यजीसों विनती करी, जो-हम ब्राह्मन हैं । भिक्षावृत्ति करेंगे । यह टेक देखि श्रीआचार्यजी वहीत प्रसन्न भये । (और कह्यो) जो-वैष्णव कों टेक ही बड़ो धर्म है ।

पाछे पद्मनाभदास के सगरे कुटुम्ब कों (जब) अंगीकार किये तब पद्म-

दासे श्रीआचार्यजीने कहुँ, के श्रीभागवत वृत्ति अर्थे नही कहुँ अने जजमानने त्यांथी वृत्ति करी लावीश. तेनाथी निर्वाह करीश. पछी जजमानने त्यां वृत्त्यर्थ गया. तेणे अहुँ ज आदर कर्था. त्यारे पद्मनाभदासना मनमां ग्लानी आवी के पहुलां तो आर्य भिक्षा करी नथी. हुवे वैष्णव थया पछी भिक्षा मांगवा निकस्यो. ते उचित नही. पहुलां तो जनाध गणांमां हुती तेने तो उचित छे जे भिक्षावृत्ति करे. परंतु हुवे तो गणांमां भाणा पहुरी. तेने तो आ भिक्षावृत्ति उचित नथी. त्यारे इरी संकल्प कर्था के, भिक्षावृत्ति नही कइं. त्यारे इरी श्रीआचार्यजीने पूछ्युं, के हुवे निर्वाह केवी रीते करशा ? त्यारे पद्मनाभदासे कहुँ, के वैश्यवृत्ति करी निर्वाह करीश. पछी कोड़ी बेचता, लाकड़ां ले आवता. परंतु भील वात न विचारी. देहादि पर्यंत सेवा करी. अया टेकी (हुता).

भावप्रकाश—पद्मनाभदास चंपकलता सखी छे, श्रीस्वामिनीजीनी. अयारे पद्मनाभदासे श्रीआचार्यजीने विनती करीके अने आक्षेप छीअे, भिक्षावृत्ति करीशु. अे टेक जेध श्रीआचार्यजी अहुँ प्रसन्न थया. (अने कहुँ) के वैष्णवने टेक ज भोटा धर्म छे. पछी पद्मनाभदासना सधणा कुटुम्बने (अयारे) अंगीकार कर्तु

नाभदास ने कही, महाराज ! हमकों कहा कर्तव्य है ? तब श्रीआचार्यजी कहे भगवत्सेवा करो । तब पद्मनाभदास ने कही, महाराज ! मैंने तो पुराण महाभारत आदि शास्त्र बहौत देखे हैं । सो मोकों श्रीठाकुरजी के स्वरूप में विश्वास आवनो कठिन है । जो-स्वरूप को माहात्म्य प्रगट होत ही देखूं तब मेरो विश्वास दृढ़ होई । काहेतें विश्वास ही फलरूप है । तब श्रीआचार्यजी कहें, हमारे संग ब्रज चलो । तुमकों (माहात्म्य) दिखावेंगे । तब पद्मनाभदास ब्रजकू चले । सो महावन के पास रमनस्थल है । तहां श्रीजमुनाजी के किनारे (सामने पार कर्णावल में) श्रीआचार्यजी विराजे हते । प्रातःकाल को समय है और श्रीजमुनाजी को कराड़ो दूख्यो । तामें ते एक भगवत्स्वरूप जैसे ताडको वृक्ष (होय) इतने बड़े, श्रीआचार्यजी के आगें आइ कहें, मेरी सेवा करो । तब श्रीआचार्यजी कहे, महाराज ! या काल में वैष्णव की सामर्थ्य नहीं जो-आपकी सेवा-शृंगार करे । सेवा कराइवे को मनोरथ होइ तो भक्तन सों पधराए जाय (एसे) गोदसे बैठो । तब सेवा होई । तब छोटी स्वरूप करि श्रीआचार्यजी के चिबुकसों मस्तक ठाकुरजी को लग्यो इतने बड़े भये । सो स्वरूप श्रीयमुनाजी, गिरिराज, सखा, सखी, गांऊ, कुंज, चौरासी कोस सगरो स्वरूपात्मक चिह्न सहित है । तातें श्रीआचार्यजी

त्यारे पद्मनाभदासे कछुं, महाराज ! अमने शुं कर्तव्य छे ? त्यारे श्रीआचार्यजी-अये कछुं, भगवत्सेवा करे, त्यारे पद्मनाभदासे कछुं, महाराज ! मे तो पुराण, महाभारत आदि शास्त्र बहुत जेयां छे, ते मने श्रीठाकुरजीना स्वरूपमां विश्वास आवनो कठिण छे, जे स्वरूपनुं माहात्म्य प्रकट थतां न जेउ (त्यारे) मारे विश्वास दृढ़ थाय, विश्वास न इक्षरूप छे, त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, अमारा संगे ब्रजमां यावो, तमने (माहात्म्य) देखाडीशुं, त्यारे पद्मनाभदास ब्रजमां यावया, ते महावननी पासे रमणस्थल छे त्यां श्रीजमुनाजीना किनारे (सामने पार कर्णावलमां) श्रीआचार्यजी बिराजया हुता, प्रातःकालने समय छे, अने श्रीजमुनाजीने कराडो दूख्यो, तेमांथी अेक भगवत्स्वरूप जेवु ताडनुं वृक्ष होय अेटवु मोटु श्रीआचार्यजी आगण आवीने कहे, मारी सेवा करे, त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, महाराज ! आ कालमां वैष्णवोनी सामर्थ्य नहीं उ आपनी सेवा-शृंगार करे, सेवा करानवानो मनोरथ होय तो सकतोथी पधराव्या जय (अेम) गोद जवा (अेटला उंया थध) जेसो, त्यारे सेवा थाय, त्यारे नातुं स्वरूप करी श्रीआचार्यजीना चिबुकथी मस्तक श्रीठाकुरजीनुं लाग्युं अेटला मोटा थया, ते स्वरूप श्रीयमुनाजी, गिरिराज, सखा, सखी, गांऊ, कुंज, चौरासी कोस (ब्रज) सधणुं स्वरूपात्मक चिह्न सहित छे, तेथी

श्रीमथुरानाथजी नाम करे । (और) पद्मनाभदास कों कहै । क्यों तेरो मनोरथ भयो ? तब पद्मनाभदास प्रेममें विह्वल होइ कहें । महाराज ! आपु सारीखे मेरे धनी हो । आपकी कृपातें कहा न होई ? तब श्रीआचार्यजी कहे, “यथा लाभ संतोष” करि भावपूर्वक सेवा करियो । तब आज्ञा मांगि श्रीमथुरानाथजी कों कन्नौज में अपने घर पधराइ लाये । प्रीतिपूर्वक सेवा करन लागे । (पहले) भिक्षावृत्ति करतें । तब पद्मनाभदास के मन में आई, जो—मैं वैष्णव कहाई के भीख मांगौ ! श्रीआचार्यजी ‘यथा लाभ संतोष’ सों कहे हैं । और उत्तम पक्ष यही है । “अव्यावृत्तो भजेत् कृष्णं पूजया श्रवणादिभिः” ॥ २ ॥ या प्रकार अव्यावृत्त को नेम ले सेवा मन लगाई के करन लागे ।

वार्ता—प्रसंग २—एक समे श्रीआचार्यजी प्रयाग में हते । तहां पद्मनाभदास पास हे । तब रात्र प्रहर एक गई हती । तब पद्मनाभदास सों श्रीआचार्यजी नें कह्यो, जो—श्रीअक्काजी पार है । सो पार तें पधराय लाओ । सो इतनो सुनि कें उठि चले । तब पांच सात वैष्णव उहां सोये हते । सो कहन लागे, जो—ब्राह्मण बावरो भयो है । या समे कहां जायगो ? नाव सब बँधी हैं । घटवारे सब घर

श्रीआचार्यजी श्रीमथुरानाथजी नाम पाड्युं । (अने) पद्मनाभदासने कहे, ठम तारे मनोरथ (पूरे) थयो ? तारे पद्मनाभदास प्रेमथी विह्वल थधने कहे, महाराज ! आप ढवा मारा धण्णी छे, आपनी कृपाथी शुं न थाय ? तारे श्रीआचार्यजी कहे, ‘यथा लाभ संतोष’ करी भावपूर्वक सेवा करेज् । तारे आज्ञा मांगी श्रीमथुरानाथजीने कन्नौजमां पोताना धरे पधरावी लाव्या । (पहिला) भिक्षावृत्ति करता तारे पद्मनाभदासना मनमां आव्युं के, हुं वैष्णव कहेवाधने लीप मांगुं ? श्रीआचार्यजी ‘यथा लाभ संतोष’ थी कहे छे, अने उत्तम पक्ष अेज् छे ‘अव्यावृत्तो भजेत् कृष्णं पूजया श्रवणादिभिः’ या प्रकारे अव्यावृत्तने नेम लध सेवा मन लगावीने करवा लाग्या ।

वार्ता प्रसंग-२—अेक समये श्रीआचार्यजी प्रयागमां हुता । त्यां पद्मनाभदास पास हे हुता । त्यां रात्रि प्रहर अेक गध हुती । तारे पद्मनाभदासने श्रीआचार्यजीके कहुं, के श्रीअक्काजी पार छे तो पारथी पधरावी लावो । ते अेट्लुं सांलणीने (तरत) उठी याव्या । तारे पांच-सात वैष्णवो त्यां सोया हुता । ते कहेवा लाग्या, के ब्राह्मण बावरो थयो छे, या समये क्यां नशे ? नाव अंधी आंधेली छे । घटवाणा अंधा धर

गये हैं। तातें या बिरियां जायवे की नाहीं। परि याकों (पद्मनाभ-
दास कों) श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की आज्ञा को विश्वास है। जो
यह बात अवश्य होइगी। सो घाट ऊपर आये। तब इत उत देखन
लागे। इतने में ही अकस्मात् एक लरिका एक डोंगी लेके आयो।
तब चानें पद्मनाभदास सों पूछी, जो-तू पार जाइगो ? तब पद्मनाभ-
दास ने कह्यो, जो-हां, हां, जाउँगो। सो उन पार उतार दीनों।
पीछे फेरि पूछयो, जो-तू फेरि आवेगो ? तब पद्मनाभदास नें कह्यो,
जो-घड़ी दो में आऊंगो। तब उन लरिका नें कह्यो, जो-डोंगी राखत
हों, वेग आईयो। पाछे अडेल में आइके श्रीअक्काजी कों पधराइ
ल्याये। बाही डोंगी में बैठारि पार उतरे। तब, पाछें फेरि देखें तो
डोंगी नाहीं। और लरिका हू नाहीं। पाछे श्रीअक्काजी कों पधराय
के लाये। तब श्रीआचार्यजी पद्मनाभदास कों आज्ञा दीनी, जो-
जाउ, सोय रहो। तब पद्मनाभदास जहां वैष्णव सब जाइके
सोये हते, तहां आये। तब वैष्णव पूछन लागे, जो-तुम कहा करि
आये ? तब पद्मनाभदास ने कह्यो, जो-ऐसे श्रीअक्काजी कों पध-
राय लायो हूं। तब सब वैष्णव नें कह्यो, जो-तुमने श्रीठाकुरजी कों
श्रम बहुत करायो। पाछे उन वैष्णव नें (जब) श्रीआचार्यजी सों
कह्यो, जो-महाराज ! पद्मनाभदास ने श्रीठाकुरजी कों श्रम बहुत

गया छे. तेथी आ समय जवानो नथी. परंतु आसने (पद्मनाभदासने) (तो)
श्रीआचार्यजी महाप्रभुनी आज्ञानो विश्वास छे, के आ बात अवश्य थसे. ते
घाट उपर आव्या. तयारे आसतेम जेवा लाव्या. अउरसामा अकस्मात् अके आसके
अके उंगी (छोडी) लधने आव्यो. तयारे तेणे पद्मनाभदासने पूछयुं, के तू पार
जधश ? तयारे पद्मनाभदासे क्युं के छे ! छे ! जधश. ते अणे पार उतारी दीधा.
पछी इरी पूछयुं, के तू इरी आवीश ? तयारे पद्मनाभदासे क्युं, के घडी जेसां
आवीश. तयारे ते आसके क्युं, के उंगी राखुं छुं; जल्दी आवजे. पछी अउरसामां
आवीने श्रीअक्काजने पधरावी लाव्या. तेज उंगीसां जेसादीने पार उतर्या. तयारे
पाछुं इरीने लुमे तो उंगी नथी, अने आसके पणु नथी. पछी श्रीअक्काजने पध-
रावीने लाव्या. तयारे श्रीआचार्यजीअने पद्मनाभदासने आज्ञा आपी के, जव सुध
रहो. तयारे पद्मनाभदास नयां वैष्णुव अथा जधने सूध रह्या हुता. त्यां आव्या.
तयारे वैष्णुव पूछना लाव्या, के तमे शुं करी आव्या ? तयारे पद्मनाभदासे क्युं के,
आवी रीते श्रीअक्काजने पधरावी लाव्या छुं. तयारे अथा वैष्णुवोअने क्युं, के तमे
श्रीठाकुरजने श्रम अहुं ज कराव्यो. पछी अने वैष्णुवोअने (तयारे) श्रीआचार्यजीने

श्रीमथुरानाथजी नाम करे । (और) पद्मनाभदास
 भयो ? तब पद्मनाभदास प्रेममें विह्वल होइ कहैं ।
 हो । आपकी कृपातैं कदा न होई ? तब श्रीआच
 करि भावपूर्वक सेवा करियो । तब आज्ञा मांगि
 अपने घर पधराइ लाये । प्रीतिपूर्वक सेवा करन
 तब पद्मनाभदास के मन में आई, जो—मैं वैष्णव
 चार्यजी 'यथा लाभ संतोष' सों कहे हैं । और
 भजेत् कृष्णं पूजया श्रवणादिभिः " ॥ २ ॥ या
 मन लगाई के करन लागे ।

वार्ता—प्रसंग २—एक समे श्रीआच
 पद्मनाभदास पास हे । तब रात्र प्रहर
 दास सों श्रीआचार्यजी नें कह्यो, जो—श
 तैं पधराय लाओ । सो इतनो सुनि के
 वैष्णव उहां सोचे हते । सो कहन लागे
 है । या समे कहां जायगो ? नाव सब

श्रीआचार्यजी श्रीमथुरानाथजी नाम पाठ्युं
 तारे मनोरथ (पुरे) थयो ? तारे पद्मनाभदास
 राज ! आप जवा मारा धरणी छे, आपनी कृपाथ
 कहे, ' यथा लाभ संतोष ' करी भावपूर्वक सेव
 रानाथजीने कन्नोभमां पोताना धरे पधरावी ला
 तारे पद्मनाभदासना मनमां आभ्युं के, हुं वैष्ण
 चार्यजी ' यथा लाभ संतोष ' थी कहे छे, अने
 भजेत् कृष्णं पूजया श्रवणादिभिः ' आ प्रकारे
 लगावीने करवा लाग्या ।

वार्ता प्रसंग-२—एक समये श्रीआचार्यजी
 पासो हुता. त्यां रात्रि प्रहर एक गध हुती. त्य
 कहुं, के श्रीअक्राळ पार छे तो पारथी पधरावी
 छी याख्या. तारे पांय-सात वैष्णवो त्यां सोया
 आवरो थयो छे. आ समये क्यां नशे ? नाव थं

रजी कों भोग समर्प्यो । इतने में ही पाछेंतें व्यौपारी रोवत पीटत आयो । तब पूछी, जो-श्रीआचार्यजी कहा करत हैं? तब पद्मनाभदास नें कह्यो, जो-भोजन करत होइंगे । तब व्यौपारी ने कह्यो, जो-हमारो माल सगरो लूटि गयो है । और श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप भोजन करत हैं ! तब पद्मनाभदास ने मन में विचार्यो, जो-यह बात श्रीआचार्यजी सुनेंगे तो भोजन न करेंगे । तातें आप सुने नहीं (ऐसैं करनो) ।

तब पद्मनाभदास वा व्यौपारी की बांह पकरि के बाहिर ले आये । तब पूछी, जो-साँच कहे । तेरो माल कितनो गयो है? तब उन व्यौपारी नें बतायो । तब वा व्यौपारी की बांह पकरि के पद्मनाभदास एक साह की दूकान पे ले गये । ता साह नें पद्मनाभदास की बहुत आगतासागता करी । पाछे वा साह ने कह्यो, जो-आज्ञा करो, कैसे पधारे हो ? तब पद्मनाभदास नें साह सों कह्यो, जो-या व्यौपारी कों इतनो द्रव्य देनों चाहिये । या द्रव्य को खतपत्र व्याज हम लिखि देइंगे । तब वा साह नें कही, जो-पद्मनाभदासजी ! तुमकों जितनो द्रव्य चाहिये तितनो द्रव्य लेउ । खतपत्र की कहा बात है ? तब पद्मनाभदास ने कह्यो, जो-पहिले तो खतपत्र लिखूंगो । और पाछे द्रव्य लेउंगो । बिना खतपत्र लिखे तो मैं

रसेध करीने श्रीआचार्यने लोग समर्थो. अरुदासां न पाछणथी वेपारी रेतो पीठतो आव्या. त्पारे पूछ्युं, के श्रीआचार्यल शुं करे छे ? त्पारे पद्मनाभदासे कहुं, के लोअन करता हशे. त्पारे वेपारीअे कहुं, के अमारे माल सधणो लुटाध गयो छे अने श्रीआचार्यल महाप्रभु आप लोअन करे छे ! त्पारे पद्मनाभदासे मनमां विचार्युं, के आ वात श्रीआचार्यल सांलणशे तो लोअन नही करे. तेथी आप सांलणे नही (अम कर्युं).

त्पारे पद्मनाभदास ते वेपारीनी आंहु पकडीने अहुर लध आव्या. त्पारे पूछ्युं, के सायुं कहे, तारे माल केरलो गयो छे ? त्पारे अे वेपारीअे अताव्युं अरुदे ते वेपारीनो हाथ पकडीने पद्मनाभदास अेक शाहनी दुकाने लध गयो. ते शाहे पद्मनाभदासनी अहु न आगता स्वागता करी. पछी ते शाहे कहुं, के आज्ञा करे केम पधार्यो छे ? त्पारे पद्मनाभदासे शाहने कहुं, के आ वेपारीने आरहुं द्रव्य आपुं अेधअे. अे द्रव्यहुं अतपत्र व्याज अमे लभी दधशुं. त्पारे ते शाहे कहुं, के पद्मनाभदासल ! तमने अेरहुं अेधअे तेरहुं द्रव्य लो. अतपत्रनी शी वात छे ? त्पारे पद्मनाभदासे कहुं, के पहिले तो अतपत्र लभीश अने पछी द्रव्य लधश. बिना

करवायो । तब श्रीआचार्यजी ने कछो, (जो) यह, जो-कछु भयो है, सो मेरी इच्छा सों भयो है । तातें तुम इन पद्मनाभदास सों कछु मति कहो ।

भावप्रकाश—यह वार्ता में यह सिद्धांत भयो, जो-गुरु के कार्यार्थ प्रभु कों कष्ट (श्रम) करावे तो वैष्णव कों बाधक नहीं । गुरु के प्रसन्न भये सब कार्य सिद्ध होइ । और उह रात्रि श्रीगुसांईजी के प्रागख्य के गर्भ-स्थिति को मुहूरत हतो । तातें श्रीआचार्यजी आज्ञा किये । श्रीठाकुरजी डोंगी लाये । तातें यह जताए, जो-श्रीगुसांईजी के लिये सगरो कार्य करें यामें कहा कहनों ? यामें श्रीगुसांईजी के स्वरूप की श्रीठाकुरजी तें अधिकता दिखाए । और पद्मनाभदास को पूरन विश्वास दिखाए । जो-श्रीआचार्यजी के वचन खाली कबहूँ न जाइ । सर्वथा कार्यसिद्ध होयगो ।

वार्ता-प्रसंग ३—बहुरि एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीगोकुल तें अडेल कों जात हते । तब एक ब्यौपारी क्षत्री कछुक वस्तु लेके साथ में चल्यो । सो कन्नोज के उरे रह्यो । श्रीआचार्यजी तो कन्नोज बीच पधारे । ब्यौपारी पाछे रह्यो सो ताके ऊपर चोर परे । वस्तु सब छूटि लीनी । श्रीआचार्यजी आप रसोई करि के श्रीठाकुर-

कछुं, के भडाराज ! पद्मनाभदासने श्रीठाकुरलने अहु न श्रम कराव्यो । त्यारे श्रीआचार्यलने कछुं, के आ न कंठ थयुं छे ते भारी धन्धाथी थयुं छे । तेथी तने आ पद्मनाभदासने कंठ न कहे ।

भावप्रकाश—आ वार्तामां आ सिद्धान्त थयो, के गुरुना कार्यार्थ प्रभुने कष्ट (श्रम) करावे तो वैष्णवने बाधक नहीं । गुरुना प्रसन्न थये अहु कार्य सिद्ध थाय । अने ते रात्रि श्रीगुसांईजीना प्राकटयना गर्भ-स्थितितुं मुहूर्त हुतुं । तेथी श्रीआचार्यलने आज्ञा करी, श्रीठाकुरल डोंगी लाव्या । तेथी अने नताव्युं के, श्रीगुसांईजीने माटे अहुं कार्य (श्रीठाकुरल) करे तेमां शु कहेवुं ? अनेमां श्रीगुसांईजीना स्वरूपनी श्रीठाकुरलथी अधिकता देखाडी । अने पद्मनाभदासने पूरण विश्वास देखाडयो, के श्रीआचार्यलनां वचन आदी कहीये न अय । सर्वथा कार्य सिद्ध थाय न ।

वार्ता प्रसंग-३—इरी अके सभय श्रीआचार्यल महाप्रभु श्रीगोकुलथी अउल पधारेता छता । त्यारे अके वेपारी क्षत्री केटीक वस्तु लधने साथमां आव्यो । ते कन्नोजनी आ तरइ रह्यो । श्रीआचार्यल तो कन्नोजना भली पधार्या । वेपारी पाछण रह्यो । ते अनेना उपर चोर पड्या । वस्तु अधी छुटी लीधी । श्रीआचार्यल आये

रजी कों भोग समप्यों। इतने में ही पाछेंतें व्यौपारी रोवत पीटत आयो। तब पूछी, जो-श्रीआचार्यजी कहा करत हैं? तब पद्मनाभदास नें कह्यो, जो-भोजन करत होइंगे। तब व्यौपारी ने कह्यो, जो-हमारो माल सगरो लूटि गयो है। और श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप भोजन करत हैं! तब पद्मनाभदास ने मन में विचार्यो, जो-यह बात श्रीआचार्यजी सुनेंगे तो भोजन न करेगे। तातें आप सुने नहीं (ऐसैं करनो)।

तब पद्मनाभदास वा व्यौपारी की बांह पकरि के बाहिर ले आये। तब पूछी, जो-साँच कहे। तेरो माल कितनो गयो है? तब उन व्यौपारी नें बतायो। तब वा व्यौपारी की बांह पकरि के पद्मनाभदास एक साह की दूकान पे ले गये। ता साह नें पद्मनाभदास की बहुत आगतासागता करी। पाछे वा साह ने कह्यो, जो-आज्ञा करो, कैसे पधारे हो? तब पद्मनाभदास नें साह सों कह्यो, जो-या व्यौपारी कों इतनो द्रव्य देनों चाहिये। या द्रव्य को खतपत्र व्याज हम लिखि देइंगे। तब वा साह नें कही, जो-पद्मनाभदासजी! तुमकों जितनो द्रव्य चाहिये तितनो द्रव्य लेउ। खतपत्र की कहा बात है? तब पद्मनाभदास ने कह्यो, जो-पहिले तो खतपत्र लिखूंगे। और पाछे द्रव्य लेउंगे। विना खतपत्र लिखे तो मैं

रसोअ करीने श्रीआचार्यजीने लोग समर्थी। अरुआमां न पाछणथी वेपारी रीते पीटते आव्यो। त्पारे पूछ्युं, के श्रीआचार्यजी शुं करे छे? त्पारे पद्मनाभदासे कहुं, के लोअन करता छुशे। त्पारे वेपारीअे कहुं, के अमारो माल सधणो लुटाछ गयो छे अने श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप लोअन करे छे! त्पारे पद्मनाभदासे मनमां विचार्युं, के आ वात श्रीआचार्यजी सांलणशे तो लोअन नही करे, तेथी आप सांलणे नहीं (अम कर्युं)।

त्पारे पद्मनाभदास ते वेपारीनी आंहु पकडीने अहार लछ आव्यो। त्पारे पूछ्युं, के सायुं कहे, तांरो माल केरदो गयो छे? त्पारे अे वेपारीअे अताव्युं अेरदो ते वेपारीनो हाथ पकडीने पद्मनाभदास अेक शाहनी दुडाने लछ गयो। ते शाहे पद्मनाभदासनी अहु न आगता स्वागता करी। पछी ते शाहे कहुं, के आज्ञा करे केम पधार्या छे? त्पारे पद्मनाभदासे शाहने कहुं, के आ वेपारीने आरहुं द्रव्य आपवुं जेछअे। अे द्रव्युं अतपत्र व्याज अमे लभी दधशुं। त्पारे ते शाहे कहुं, के पद्मनाभदासअ! तमने जेरहुं जेछअे तेरहुं द्रव्य लो। अतपत्रनी शी वात छे? त्पारे पद्मनाभदासे कहुं, के पहेसां तो अतपत्र लभीश अने पछी द्रव्य लधश। विना

करवायो । तब श्रीआचार्यजी ने कह्यो, (जो) यह, जो-कछु भयो है, सो मेरी इच्छा सों भयो है । तातें तुम इन पद्मनाभदास सों कछु मति कहो ।

भावप्रकाश—यह वार्ता में यह सिद्धांत भयो, जो-गुरु के कार्यार्थ प्रभु कों कष्ट (श्रम) करावे तो वैष्णव कों बाधक नाहीं । गुरु के प्रसन्न भये सब कार्य सिद्ध होइ । और उह रात्रि श्रीगुसांईजी के प्रागट्य के गर्भ-स्थिति को मुहूरत हतो । तातें श्रीआचार्यजी आज्ञा किये । श्रीठाकुरजी डोंगी लाये । तातें यह जताए, जो-श्रीगुसांईजी के लिये सगरो कार्य करें यामें कहा कहनों ? यामें श्रीगुसांईजी के स्वरूप की श्रीठाकुरजी तें अधिकता दिखाए । और पद्मनाभदास को पूरन विश्वास दिखाए । जो-श्रीआचार्यजी के बचन खाली कबहूँ न जाइ । सर्वथा कार्यसिद्ध होयगो ।

वार्ता-प्रसंग ३—बहुरि एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीगो-कुल तें अडेल कों जात हते । तब एक ब्यौपारी क्षत्री कछुक वस्तु लेके साथ में चल्यो । सो कन्नोज के उरे रह्यो । श्रीआचार्यजी तो कन्नोज बीच पधारे । ब्यौपारी पाछे रह्यो सो ताके ऊपर चोर परे । वस्तु सब लूटि लीनी । श्रीआचार्यजी आप रसोई करि के श्रीठाकुर-

कहुं, के भडारान ! पद्मनाभदासे श्रीठाकुरने अहु न श्रम कराव्यो । त्यारे श्रीआचार्यने कहुं, के आ ने कंभ थयुं छे ते मारी धन्धाथी थयुं छे । तेथी तमे आ पद्मनाभदासने कंभ न कहे ।

भावप्रकाश—आ वार्तामां आ सिद्धान्त थयो, के गुरुना कार्यार्थ प्रभुने कष्ट (श्रम) करावे तो वैष्णवने बाधक नहीं । गुरुना प्रसन्न थये अघु कार्य सिद्ध थाय । अने ते रात्रि श्रीगुसांईजीना प्रागट्यना गर्भ-स्थितिनुं मुहूर्त हतुं । तेथी श्रीआचार्यने आज्ञा करी, श्रीठाकुरने डोंगी लाव्या । तेथी अने जताव्युं के, श्रीगुसांईजीने माटे अघुं कार्य (श्रीठाकुरने) करे तेमां शु कहेवुं ? अनेमां श्रीगुसांईजीना स्वरूपनी श्रीठाकुरने अधिकता देयाडी । अने पद्मनाभदासने पूरण विश्वास देयाडयो, के श्रीआचार्यने वचन आदी कहीये न अय । सर्वथा कार्य सिद्ध थाय न ।

वार्ता प्रसंग-३—इरी अेक समय श्रीआचार्यने महाप्रभु श्रीगोकुलथी अडेल पधारेता हता । त्यारे अेक वेपारी क्षत्री केटीक वस्तु लधने साथमां आव्यो । ते कन्नोजनी आ तरक रह्यो । श्रीआचार्यने तो कन्नोजना भडीं पधार्या । वेपारी पाछण रह्यो । ते अेना उपर चोर पया । वस्तु अघी लुंटी लीधी । श्रीआचार्यने आव्ये

रजी कों भोग समर्प्यो । इतने में ही पाछेंतें व्यौपारी रोवत पीटत आयो । तव पूछी, जो—श्रीआचार्यजी कहा करत हैं ? तव पद्मनाभदास नें कह्यो, जो—भोजन करत होइंगे । तव व्यौपारी ने कह्यो, जो—हमारी माल सगरो लूटि गयो है । और श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप भोजन करत हैं ! तव पद्मनाभदास ने मन में विचार्यो, जो—यह बात श्रीआचार्यजी सुनेंगे तो भोजन न करेंगे । तातें आप सुने नहीं (ऐसैं करनो) ।

तव पद्मनाभदास वा व्यौपारी की बांह पकरि के बाहिर ले आये । तव पूछी, जो—साँच कहे । तेरो माल कितनो गयो है ? तव उन व्यौपारी नें बतायो । तव वा व्यौपारी की बांह पकरि के पद्मनाभदास एक साह की दूकान पे ले गये । ता साह नें पद्मनाभदास की बहुत आगतासागता करी । पाछे वा साह ने कह्यो, जो—आज्ञा करो, कैसे पधारे हो ? तव पद्मनाभदास नें साह सों कह्यो, जो—या व्यौपारी कों इतनो द्रव्य देनों चाहिये । या द्रव्य को खतपत्र व्याज हम लिखि देइंगे । तव वा साह नें कही, जो—पद्मनाभदासजी ! तुमकों जितनो द्रव्य चाहिये तितनो द्रव्य लेउ । खतपत्र की कहा बात है ? तव पद्मनाभदास ने कह्यो, जो—पहिले तो खतपत्र लिखूंगे । और पाछे द्रव्य लेउंगे । विना खतपत्र लिखे तो मैं

रसेाध करीने श्रीगुरुदेवने लोग समर्थी. अरदासां न पाछणथी वेपारी रीता पीरता आव्यो. त्पारे पूछ्युं, के श्रीआचार्यल शुं करे छे ? त्पारे पद्मनाभदासे क्छुं, के लोअन करता हुशे. त्पारे वेपारीअे क्छुं, के अभासे माल सधणे लुटाध गया छे अने श्रीआचार्यल महाप्रभु आप लोअन करे छे ! त्पारे पद्मनाभदासे मनमां वियायुं, के आ वात श्रीआचार्यल सांलणसे तो लोअन नही करे. तेथी आप सांलणे नहीं (अेम करुं).

त्पारे पद्मनाभदास ते वेपारीनी आंहु पकडीने अहार लध आव्यो. त्पारे पूछ्युं, के सायुं क्छे, तासे माल केरलो गया छे ? त्पारे अे वेपारीअे अताव्युं अेरले ते वेपारीता लुथ पकडीने पद्मनाभदास अेक शाहनी दुअने लध गया. ते शाहे पद्मनाभदासनी अहु न आगता स्वागता करी. पछी ते शाहे क्छुं, के आज्ञा करे केम पधारां छे ? त्पारे पद्मनाभदासे शाहने क्छुं, के आ वेपारीने आरहुं द्रव्य आपवुं जेधअे. अे द्रव्यतुं अतपत्र व्याज अमे लभी दधुं. त्पारे ते शाहे क्छुं, के पद्मनाभदासल ! तमने नेरहुं जेधअे तेरहुं द्रव्य लो. अतपत्रनी शी वात छे ? त्पारे पद्मनाभदासे क्छुं, के पडेसां तो अतपत्र लभीश अने पछी द्रव्य लधश. विना

लेउंगो नाहीं । तब साह ने कही । जो-तुम्हारी इच्छा । पाछे पद्मनाभदास ने खतपत्र व्याज लिखि अपनो धरम गहने लिखि दीनो । पाछे व्यौपारी तो द्रव्य लेके अपने घर गयो । तब पद्मनाभदास सों श्रीआचार्यजी ने पूछी, जो-तू कहां गयो हो ? तब पद्मनाभदास नें कह्यो, जो-महाराज ! एक काम हो तहां गयो हो । सो श्रीआचार्यजी आपु तो ईश्वर हैं । तत्काल बात कों जानि गये । तब पद्मनाभदास सों श्रीआचार्यजी नें कह्यो, जो-हमकों वा व्यौपारी के संग कछु बिसावनों हतो कहा ? जो वाको माल देते ? वह पाछें रह्यो तो हम कहा करें ? परि तेनें बुरी करी । जो-रिन काढ़ि के पैसा दीनो । तब पद्मनाभदास नें कह्यो, जो-महाराज ! रिन तो काल्हि देऊंगो । यह कितनीक बात है । परि वह व्यौपारी पुकारतो तो राज भोजन घड़ी दोग अवेरो करते । तो मेरो सगरो जन्मारो बृथा होय जातो । तब श्रीआचार्यजी ने कह्यो, जो-तेने धर्म गहने लिखि दीनो सो कहा है ? तब पद्मनाभदास ने कह्यो, जो-महाराज ! ऐसे गाढ़ो लिखे बिना दियो न जाय । पाछे श्रीआचार्यजी आप तो अडेल पधारे । पाछे पद्मनाभदास एक राजा हतो ताके पास गये । पाछें राजानें कह्यो, जो-मोको कृपा करिके कथा सुनावो । तब

भतपत्र लभे तो हुं लघश नहीं । त्यारे शाहे कछुं, के तमारी छच्छा । पछी पद्मनाभदासे भतपत्र व्याज लभी पोतानो धर्म घराणे लभी आभ्यो । पछी वेपारी तो द्रव्य लघने पोताना घरे गयो । त्यारे पद्मनाभदासने श्रीआचार्यजीके पूछ्युं, के तूं क्यां गयो हुतो ? त्यारे पद्मनाभदासे कछुं, के महाराज ! अेक काम हुतो त्यां गयो हुतो । ते श्रीआचार्यजी तो आप धर्म छे, तत्काल वातने नण्णी गया । त्यारे पद्मनाभदासने श्रीआचार्यजीके कछुं, के अमे अे वेपारीनी साथे कंठ भासनो वीमो कर्यो हुतो शुं ? ते अेना भास आपता ? ते पाछण रह्यो तो अमे शुं करीअे ? परंतु तें जोडुं क्युं, के इणु काढीने पैसा आभ्या । त्यारे पद्मनाभदासे कछुं, के महाराज ! इणु तो काल छश । अे केटदीक वात छे । परंतु ते वेपारी अुम पाउते तो राज लोअन घडी जे जोडुं करता । तो भारो सघणो नभारे व्यर्थ थध नतो । त्यारे श्रीआचार्यजीके कछुं, के तें धर्म घराणे लभी दीधो ते शुं छे ? त्यारे पद्मनाभदासे कछुं, के, महाराज ! अेधु कछिण लभ्या बिना आभ्युं न नय । पछी श्रीआचार्यजी आप तो अउल पधार्या । पछी पद्मनाभदास अेक राज हुतो तेनी पास गया । त्यारे राजअे कछुं, के अने कृपा करीने कथा संलगावो । त्यारे पद्मनाभदासे कछुं, के राज ! श्रीसागवत

पद्मनाभदास नें कह्यो, जो-राजा ! श्रीभागवत तो न कहूंगो। कहो तो महाभारत सुनाउं। तब राजा नें कह्यो, जो-भलो, महाभारत ही सुनावो। तब महाभारत कहन लागे। सो जब युद्ध को प्रसंग आयो, तब सबन के हथियार छुड़ाइ धरे। तब आगे कहन लागे। सो कथा में कोऊ (ऐसो) वीररस उपज्यो सो आपुस में लात मुक्किन सों लरन लागे। पाछें केतेक दिनमें महाभारत समाप्त भयो। तब राजा बहुत दक्षिणा देन लाग्यो। तब पद्मनाभदास ने कह्यो, जो-इतनो द्रव्य नहीं लेजंगो। मेरे साथे रिन है। सो तितनो लेजंगो। पाछे वा माहकों जितनो मूल व्याज देनो हतो तितनो लीनो। बाकी सब फेरि डार्यो। सो वे पद्मनाभदास ऐसे भगवदीय हे।

भावप्रकाश—तब व्यौपारी ने कह्यो, जो-हमारो माल सब छूटि गयो। आप भोजन कों पधारे हैं ? यह कह्यो ताको कारन यह, जो-आपु दयाल न्है के जीव दुःखी जानिके भोजन कैसें करत हैं ? जो-दयाल है सो परायो दुःख दूरि करिके भोजन करत है। श्रीआचार्यजी ने कही (जो तैने) व्यौपारी कों द्रव्य क्यों दिवायो ? रिन काढ़िके। कछु हम वीमा कियो हतो ? पाछें रह्यो छूटि गयो। तें बुरी करी। ताको कारन यह, जो-रिनहत्या साथें लीनी। सो बुरी करी, सरीर को कहा भरौसो है ? देह छूटि जाय तो रिन साथे रहे।

तो कहीश नही। कछो तो महाभारत संलणावुं। त्यारे राजये कछुं, के ललो, महाभारत न संलणावो। त्यारे महाभारत कछेवा लाग्या। ते न्यारे युद्धनो प्रसंग आय्यो त्यारे यधाना हथियार छोडावी (ने) धर्यां। त्यारे आगण कछेवा लाग्या। ते कथाभां डोर्ध (येवो) वीररस उपज्यो ते आपुसभां लात मुक्काओथी लडवा लाग्या। पछी केरदाक द्विसभां महाभारत समाप्त थयुं। त्यारे राज थहु न दक्षिणा देवा लाग्यो। त्यारे पद्मनाभदासे कछुं, के अेरुं द्रव्य लघश नहीं। मारे साथे ऋणु छे तेरुं लघश। पछी ते शाहुकारने नेरुं (द्रव्य) मूल व्याज देवानुं लुठुं तेरुं दीधुं। पाडी थहुं पाछुं दीधुं। ते पद्मनाभदास येवा भगवदीय हुता।

भावप्रकाश—त्यारे वेपारीये कछुं, के अमारो माल थधो लुंटाथ गयो अने आप भोजन माटे पधार्या छे ? अेम कछु, तेनुं कारणु अे के पोते, दयालु थधने लुव दुःखी जालीने भोजन केम करे छे ? न दयालु छे ते पारकुं दुःख दुर करीने भोजन करे छे। श्रीआचार्यज्ये कछुं, (के ते) वेपारीने द्रव्य केम अयाव्यु ऋणु कादीने ? कछ अमे वीमा क्यो हुतो ? पाछण गह्यो लुंटाथ गयो। ते थोटुं क्युं। तेनुं कारणु अे के ऋणु-हत्या साथे दीधी। ते थोटुं क्युं, शरीरनो शे भरौसो छे ? देह छुटी नथ तो ऋणु साथे रहे।

तब पद्मनाभदास ने कही । या व्यौपारी को रुदन सुन घरी दौय आप भोजन अवेरो करते । मेरो जन्म वृथा होइ जातो । (ताको अभिप्राय) सेवक के आगे स्वामी को कछु श्रम होइ, सेवक श्रम दूरि न करे, तो धर्म जाइ । पाछे धिक्कार वह सेवक को जीवे सो वृथा है । और रिन की केतिक बात है ? अब चुकाई देऊंगो । ताको कारन यह, जो-काल की कहा सामर्थ्य है ? आपुकी कृपाते बाधक न होइगो । और धरम गहने धर्यो तामें एक भाव यह है, (जो) अपना वैदिक ब्राह्मन को धर्म गहने धर्यो होइगो यह गौन भाव है । काहेते, श्रीआचार्यजी की सरन आये । तब (सब) समर्पन कियो । जो-वैदिक धर्म न्यारो रहे, तो पुन्य को फल स्वर्ग भोगनो परे । ताते इनने तो सर्व समर्पन करि एक पुष्टि भक्तिरूप धर्म राखे है । ताहीते श्रीआचार्यजी हू पूछ्यो, (जो) ऐसे धर्म साहके इहां गहने धर्यो ? परंतु पद्मनाभदास को श्रीआचार्यजी को स्वरूप हृदयारूढ हतो । श्रीआचार्यजी के सुख के लिये धर्महू की अपेक्षा राखे नहीं । गहने धरे । और व्यौपारीको द्रव्य देके बहोत मनमें प्रसन्न भये । भली भई (व्यौपारी) इहां आयो । जो-चल्यो जातो तो जहां तहां देसमें निंदा करतो । जो-मैं श्रीआचार्यजी की संग लूटि गयो । काहेते ? लौकिक राजाके संग लूट्यो न जाइ तो ऐसे ईश्वर के

त्यारे पद्मनाभदासे कह्युं, (के) आ वेपारीनुं रुदन सांभणी धडी ये आप भोजन भोडुं करता (तो) मेरो जन्म वृथा थय नतो. (तेनो अभिप्राय) सेवकना आगे स्वामीने कंध श्रम थय (अने जो) सेवक श्रम दूर न करे तो धर्म नय. पछी धिक्कार ये सेवकने. जेवे तो वृथा छे. अने ऋणनी टोटली वात छे ? हुमणुं युकावी दधश. तेनुं कारण ये के कालनी शी सामर्थ्य छे ? आपनी कृपाथी बाधक थये नहीं. अने धर्म धरेणु धर्यो, तेमां अक भाव ये छे (के) पोतानो वैदिक ब्राह्मणनो धर्म धरेणु धर्यो हुशे. ये गौण भाव छे; केमके श्रीआचार्यजनी शरणे आंव्या त्यारे (अथु) समर्पणु कथुं. जे वैदिक धर्म अलग रहे तो पुन्यनु ईल स्वर्ग भोगववुं पडे. तेथी अमणु तो सर्व समर्पणु करी अक पुष्टि भक्ति रूप धर्म राख्ये छे. तेथी श्रीआचार्यजये पणु पूछ्युं, के जेवे धर्म शाहुकारने त्यां धरेणु धर्यो ? परंतु पद्मनाभदासने श्रीआचार्यजनु स्वरूप हृदयारूढ हतुं. श्रीआचार्यजना सुअने माटे धर्मनी पणु अपेक्षा राभी नहीं. धरेणु धर्यो. अने वेपारीनु द्रव्य दधने अहुज मनमां प्रसन्न थया. अतु थयुं (वेपारी) अहीं आंव्यो, जे (अन्यत्र) यात्यो नतो तो ज्यां त्यां देशमां निंदा करतो, के हु श्रीआचार्यजनी साथे लुंटाध गयो. केमके, लौकिक राजनी साथे लुंटाध शके नहीं, तो आवा धश्वरनी

संग लूटि गयो ? सो पद्मनाभदास कहे, मेरे धर्म की परीक्षा अर्थ लूट्यो गयो । सो व्यौपारी कों द्रव्य दियो । अब जहां जाइगो तहां श्रीआचार्यजी की बड़ाई करेगो । मोकों नफा सहित द्रव्य दिये । या भावसों पद्मनाभदास की श्रीआचार्यजी में अनिर्वचनीय प्रीति है ।

और राजा जादा द्रव्य देन लाग्यो सो आप (पद्मनाभदास) यार्ते न लिये, जो—इनकों अव्यावृत्त को नेम है । वृत्ति के अर्थ कथा नहीं कहनी । यह संकल्प है । यह सगरो काम श्रीआचार्यजी के सुखके अर्थ किये । सो साह कों रूपैया दिवाय धर्म को कागद लिखे हते सो ले आये । पाछें घर आय सेवा करन लागे ।

वार्ता—प्रसंग ४—और पद्मनाभदास के घर बेटी कुमारी हती । ताके निमित्त एक वर श्रीआचार्यजी को सेवक चाहियत हतो । सो वैष्णव सों पृछन लागे । तब वैष्णव नें कह्यौ, जो—एक वर श्रीआचार्यजी को सेवक है । परि सनोदिया ब्राह्मण है । सो पद्मनाभदास कों सेवक सुनत ही लौकिक व्यवहार की तो सुधि नहीं आई । वैष्णव नें कह्यौ, जो—भलो वैष्णव है । याकों कन्या दीजिये । तब पद्मनाभदास नें कह्यौ, जो—भलो । तब पद्मनाभदास नें वा वैष्णव कों कुंकुम मंगाई तिलक कियो और कह्यौ, मैं बेटी तुमकों दे चुक्यो । लगन को दिन तुम पूछो ता दिन व्याह करूं । विवाह

सगे लुंटाछ गयो ? ते पद्मनाभदास कहे, मारा धर्मनी परीक्षा भाटे लुटाछ गयो । ते वेपारीने द्रव्य दीधुं । हुवे न्यां नशे त्यां श्रीआचार्यजीनी पडाछ करशे । मने नक्ष सहित द्रव्य आप्युं । आ भावथी पद्मनाभदासनी श्रीआचार्यजीमां अनिर्वचनीय प्रीति छे । अने राज वधारे द्रव्य देवा लाग्यो । ते आप (पद्मनाभदासे) पोते अेम न दीधु । हे अेमने अंव्यावृत्तने नेम छे । वृत्तिना अर्थे कथा नहीं कहेवी । अे संकल्प छे । आ अंधु काम श्रीआचार्यजीना सुअना भाटे क्युं । ते शाहुने रूपीया अंपावी धर्मने कागण लभ्यो हुतो । ते लछ आंव्या । पछी घर आवीने सेवा करवा लाग्या ।

वार्ता प्रसंग-४—पद्मनाभदासना घर भेटी कुमारी हती । तेना निमित्त अेक वर श्रीआचार्यजीने सेवक जेधता हुतो । ते वैष्णवने पूछवा लाग्या । त्यारे (अेक) वैष्णवने कहुं, हे अेक वर श्रीआचार्यजीने सेवक छे । परंतु सनोदिया ब्राह्मण छे ते पद्मनाभदासने सेवक सांभणतां न लौकिक व्यवहारनी तो सुध नहीं आवी, वैष्णवने कहुं, हे लडो वैष्णव छे । अेने कन्या आपो । त्यारे पद्मनाभदासे कहुं, हे, साइं । त्यारे पद्मनाभदासे ते वैष्णवने कुंकु मंगावीने तिलक क्युं । अने कहुं, हुं (मारी) भेटी तमने छूक्यो । लगनो दिवस तमे पूछा ते, दिवस लगन करूं । (अेम) विवाह

सही करि प्रसन्न होइ अपने घर आये । तब बड़ी बेटी एक तुलसां हती, सो व्याह होत ही विधवा भई । लौकिक पति को मुख नहीं देखयो । सो श्रीमथुरानाथजी की सेवा में तत्पर हती, तासों कछौ, जो-अपनी बेटी को विवाह अमुके वैष्णव सों सही करि आयो हूं । तब तुलसाने कछौ, जो-वह तो सनोदिया ब्राह्मण है । हम कन्नौजिया ब्राह्मण है । सो ऐसे कैसे होइ ? तब पद्मनाभदास ने कछो, जो-अब तो भई सो भई । तब तुलसां नें कही, जो-सगाई फेरो । तब पद्मनाभदासने कही, जो-छुरी लाओ । अंगूठा काटो । जा अंगूठा करि तिलक कियो है । तब तुलसां ने कछो, जो-अंगूठा कैसे काटिये ? तब पद्मनाभदास ने कही, तो सगाई कैसे फेरिये ? अंगूठा कटे तो सगाई फिरे । पाछें पद्मनाभदास नें विवाह करि दीनों । जाति के सब झख मारि रहे । वैष्णव के कहे को ऐसो विश्वास, तातें सगाई न फेरी ।

भावप्रकाश—जब तुलसाने कछो, अंगूठा कैसे काट्यो जाय ? तब पद्मनाभदासने कछौ, श्रीआचार्यजी के सेवक पर तन, मन, धन न्योछावरि करिये । सो सगाई कैसे फेरी जाइ ? या प्रकार तुलसांकों मारग को अभिप्राय बताए ।

भरो करी प्रसन्न थई चोताने घरे आव्या । त्यारे भोटी भेटी अेक तुलसां हती । ते लग्न थतां न विधवा थई हती । लौकिक पतिनुं भुअ न जेथुं । ते श्रीमथुरानाथजी सेवासां तत्पर हती । तेने कछुं, के आपणी भेटीना विवाह अमूक वैष्णव साथे करी आव्यो छुं । त्यारे तुलसांअे कछुं, के ते तो सनोदीया ब्राह्मण छे । अमे कनोथया ब्राह्मण छीअे । ते अेम केम थाय ? त्यारे पद्मनाभदासे कछुं, के हवे तो थईते थई । त्यारे तुलसांअे कछुं, के सगाध इरवो । त्यारे पद्मनाभदासे कछुं, के छरी लाव्यो । अंगुठा काटो, केम जे अंगुठाथी तिलक क्युं छे । त्यारे तुलसांअे कछुं, के अंगुठा केवी रीते कापिअे ? त्यारे पद्मनाभदासे कछुं, तो सगाध केवी रीते इरिये ? अंगुठा कपाय तो सगाध इरे । पछी पद्मनाभदासे विवाह करी दीवो । अतिना अधा नभ भारी रखा । वैष्णवना कहुवानो अेवो विश्वास, तेथी सगाध न इरवी ।

भावप्रकाश—त्यारे तुलसांअे कछुं, अंगुठा केवी रीते कपाय ? त्यारे पद्मनाभदासे कछुं, श्रीआचार्यजीना सेवक उपर तन, मन, धन न्योछावर करीअे तो सगाध केम इरवी नय ? या प्रकारे तुलसाने भागिनो अभिप्राय अताव्यो । ते द्विसथी तुलसानो प्रेम वैष्णवोसां पद्मनाभदासना संगथी थयो ते श्रीठाकुरज

ता दिन तें तुलसां को प्रेम वैष्णवन में पद्मनाभदासके संगतें भयो । सो श्रीठाकुरजी तुलसांहू को अनुभव जतावन लागे । पाछें प्रसन्न होइके वैष्णवकों अपनी बेटी ब्याहि दिये । जाति सगरी झुखि मारि रही । ताको कारन यह है, (जो) जहां ताई दृढ़ स्नेह नाहों, तहां ताई लौकिक वैदिक को डर है । जब दृढ़ स्नेह प्रभु में भयो । तब सगरी चिंता मिटी । लौकिक वैदिक बाधा हूँ न करि सके । ऐसे एक वैष्णव पद्मनाभदास भये ।

वार्ता-प्रसंग ५—और एक क्षत्राणी पद्मनाभदास के घर नित्य आवती । तब पद्मनाभदास की बेटी तुलसांने एक दिन बासों कछौ, जो-क्षत्राणी ! तू नित्य क्यों आवत है ? तब वा क्षत्राणी नें कही, जो-ए महापुरुष हूँ । बड़े भगवदीय हूँ । और मेरे संतति नाहीं होती है । तातें आवति हों । तुम मेरी विनती पद्मनाभदासजी सों करियो । तब एक दिन तुलसां नें पद्मनाभदास सों कछौ, जो-या क्षत्राणी के संतति नाहीं । ताके लिये तुमसों विनती करत है । तब पद्मनाभदास नें तुलसां सों कछौ, जो-जल लाउ । तब तुलसांने जल आगे लाइ धर्यो । तब वह जल लेके चरणोदक करि वा क्षत्राणी को दियो । और कछौ, जो-जा, तेरे पुत्र होइगो । ताको नाम मथुरादास धरियो । पाछें वाके पुत्र भयो । (ताको) नाम मथुरादास धर्यो ।

तुलसांने पशु अनुभव जतावना लाग्या. पछी प्रसन्न थधने (ते) वैष्णवनी साथे पोतानी बेटीने विवाह करी दीयो, जति अधी जभ मारीने रही. तेतुं कारण ये छे, के ज्यां सुधी दृढ स्नेह नथी त्यां सुधी लौकिक वैदिकने डर छे. ज्यारे दृढ स्नेह प्रभुमां थयो त्यारे सधणी चिंता मटी. लौकिक वैदिक पशु बाधा न करी शके. जेवा जेक वैष्णव पद्मनाभदास थया.

वार्ता प्रसंग-५—वणी जेक क्षत्राणी पद्मनाभदासना घर नित्य आवती. त्यारे पद्मनाभदासनी बेटी तुलसांजे जेक दिन जेने कछुं, के क्षत्राणी ! तू नित्य केम आवे छे ? त्यारे ते क्षत्राणीजे कछुं, के जे महापुरुष छे. मोटा भगवदीय छे. जेने मारे संतती नथी थती, तेथी हुं आधुं छुं. तमे मारी विनंती पद्मनाभदासने करजे. त्यारे जेक दिवस तुलसांजे पद्मनाभदासने कछुं, के जे क्षत्राणीने संतती नथी. ते मारे तमने विनंती करे छे. त्यारे पद्मनाभदासे तुलसांने कछुं, के जल लाव. त्यारे तुलसांजे जल आगे लध धर्युं. त्यारे ते जल लधने चरणोदक करी ते क्षत्राणीने आधुं. जेने कछुं, के जा, तारे पुत्र थयो. तेतुं नाम मथुरादास धरजे. पछी तेने पुत्र थयो. (तेतुं) नाम मथुरादास धर्युं.

भावप्रकाश—अपनो चरणोदक क्यों दिये ? भगवदीय अपनी बड़ाई तो करावत नहीं । तातें श्रीठाकुरजी को चरणोदक दियो होयगो । तहां कहत हैं, जो-पद्मनाभदासनें विचारी, जो-तुच्छ कामना पुत्रादिककी है । याके लिये श्रीठाकुरजी को चरणोदक कहा ? श्रीठाकुरजी कों श्रम काहेकों कराऊं ? तातें अपनो चरणोदक दिये । परंतु पद्मनाभदास सदा श्रीआचार्यजी के स्वरूप में मगन रहत हैं । सो जल ले श्रीआचार्यजी के भाव तें दिये । और इनकों कछु कामना की बड़ाई की अपेक्षा नहीं है । भगवदीय को आश्रय करें, सो सगरो मनोरथ वाको पूरन होइ । यह पुत्र की कहा बात है ? ताकों (क्षत्राणीकों) पुत्रकामना हती सो पुत्र दिये । परंतु बाधक नहीं । जो-अपने किये को अहंकार नहीं । ता समय, जो-बुद्धि की प्रेरणा भई । सो भगवद् इच्छा तें कार्य करत हैं । अपनो कियो जानत नहीं है । श्रीगुसाईजी लिखे हैं “ बुद्धि प्रेरक कृष्णस्य पादपद्मं प्रसीदतु ” जो-कार्य होत है । जैसी ताकी बुद्धि प्रेरक होई करत है सो कार्य सब कृष्णही को जाननो । जो-अपनो, और को जाने सोई संसार समुद्र में भ्रमत है । तातें पद्मनाभदास ने अपनो चरणोदक दियो । परंतु यह भाव नहीं, जो-मेरे चरणोदकसों पुत्र होइगो । भगवद् इच्छा तें सब होत है । यह सिद्धांत दिखाए ।

भावप्रकाश—पोतानुं यरशोदक ठेम आप्युं ? भगवदीय पोतानी मोटाध तो करावता नथी. तेथी श्रीठाकुरजुनु यरशोदक दीधुं हुशे. त्यां कहे छे, ठे पद्मनाभदासे विचार्युं, ठे तुच्छ कामना पुत्रादिकनी छे. अने माटे श्रीठाकुरजुनुं यरशोदक शुं ? श्रीठाकुरजुने श्रम शुं काम करावु ? तेथी पोतानु यरशोदक आप्यु. परंतु पद्मनाभदास सदा श्रीआचार्यजुना स्वप्नमां मगन रहेता हुता. ते जल लध श्रीआचार्यजुना भावथी आप्युं. अने अने कध कामनानी (ठे) मोटाधनी अपेक्षा न हुती. भगवदीयने आश्रय करे तो सधणो मनोरथ तेनो पूर्युं थाय. आ पुत्रनी शी वात छे ? तेने (क्षत्राणीने) पुत्र कामना हुती. ते पुत्र आय्यो. परतु बाधक नहीं. (ठम) ठे पोताना कर्माना अहु कार नथी. ते समये जे बुद्धिनी प्रेरणा थध ते भगवदीयछाथी कार्य करे छे. पोतानुं क्युं जाणुता नथी. श्रीगुसांभजु लपे छे ठे— “ बुद्धिप्रेरक कृष्णस्य पादपद्मं प्रसीदतु ” जे कार्य थाय छे, जेवी तेनी बुद्धिप्रेरक थध करे छे ते कार्य अधु कृष्णुनु जे जाणुवुं. जे पोतानुं ठे भीजनु जाणु ते जे स सार समुद्रमां भ्रमे छे. तेथी पद्मनाभदासे पोतानुं यरशोदक आप्युं. परतु जे भाव (थी) नहीं, ठे मारा यरशोदकथी पुत्र थशे. भगवदीयछाथी अधुं थाय छे. आ सिद्धांत देखाड्यो.

वार्ता-प्रसंग ६—और एक समे बड़े रामदासजी अपने सेव्य श्रीठाकुरजी को पद्मनाभदास के घर पधराइ के श्रीनाथजी के दरसन को गये । सो श्रीनाथजी की सेवामें श्रीआचार्यजी की आज्ञा तें रहे और श्रीनाथजी की सेवा करन लागे । श्रीनाथजी के भीतरिया भये । तब पद्मनाभदास श्रीठाकुरजी की सेवा करन लागे । कितनेक दिन पाछें मुगल की फौज आई । सो तानें गाम लूट्यो, सो श्रीठाकुरजी को एक मुगल ले गयो । तब पद्मनाभदास वा मुगल के साथ दिन सातलों रहे । जलपान हू न कर्यो । तब आठमे दिन मुगल सो मुगलानी ने कह्यो, जो-यह ब्राह्मन जलपान नाहिं करत है । याको सात दिन भये हैं । अन्नजल छोड़े । सो जो-यह मरेगो तो तेरे माथे हत्या चढ़ेगी । तातें याको देवता है । सो वाको दे । तब मुगल ने श्रीठाकुरजी पद्मनाभदास को दिये । सो लेके पद्मनाभदास अपने घर आये । ता पाछे आप स्नान करि श्रीठाकुरजी को पंचामृत स्नान करवायो । अंग वस्त्र करि शृंगार कयो । रसोई करि भोग समर्प्यो । पाछें समयानुसार भोग सराय अनोसर करि पाछें वैष्णवन को महाप्रसाद लिवायो । पाछें आप महाप्रसाद लियो । और जा दिन श्रीठाकुरजी कन्नौज में मुगल के हाथ परे । ता दिन

वार्ता प्रसंग-६—वर्षी अेक समये मोटा रामदासल पोताना सेव्य श्रीठाकुरलने पद्मनाभदासना धरे पधरावीने श्रीनाथलना दर्शन गया. ते श्रीनाथलनी सेवामां श्रीआचार्यलनी आज्ञाथी रह्या. अने श्रीनाथलनी सेवा करवा लाग्या. श्रीनाथलना भीतरिया थया. त्यारे पद्मनाभदास श्रीठाकुरलनी सेवा करवा लाग्या. ते डेरसाक दिवस पछी मुगलनी फौज आवी. तेणे गाम लुट्युं. ते श्रीठाकुरलने अेक मुगल लध गयो. त्यारे पद्मनाभदास अेक मुगलनीसाथे दिवस सात सुधी रह्या. जलपान पखु न कर्युं, त्यारे आठमा दिवसे मुगलने मुगलानीअे कह्युं, के आ ब्राह्मण जलपान नथी करतो. तेने सात दिवस थया छे, अन्नजल छोडे. ते (थी) जे आ मरेशे तो तारे माथे हत्या लागेशे. तेथी तेना देवता छे ते अेने दे. त्यारे मुगले श्रीठाकुरल पद्मनाभदासने आख्या. ते लधने पद्मनाभदास पोताना धरे आख्या. ते पछी पोते स्नान करी श्रीठाकुरलने पंचामृत स्नान कराव्यां. अंगवस्त्र करी शृंगार कर्यो. रसोइ करी भोग समर्प्यो. पछी समयानुसार भोग सरावी अनोसर करी पछी वैष्णवने महाप्रसाद लेवलाव्या. पछी पोते महाप्रसाद लीधो. अने जे दिवसे श्रीठाकुरल कन्नौजमां मुगलना हाथे पड्या. ते दिवस मोटा रामदासलअे पखु अे वात जाण्णी, ने ते दिव-

बड़े रामदासजी ने हू यह बात जानी। सो ता दिन तें बड़े रामदासजी ने हू सात दिनलों भोजन नाहिं कियो। परि श्रीनाथजी की सेवा सावधानतासों करत रहे। यह बात पद्मनाभदासजी ने अपने घर बैठे जानी। जो-रामदासजी ने हू या बात के ऊपर बहोत दुःख पायो। यह जानि पद्मनाभदास श्रीनाथजी के दरसन कों तथा रामदासजी के मिलिवे कों श्रीनाथजीद्वार गये। सो श्रीनाथजी के दरसन किये। पाछें रामदासजी कों मिले। तब रामदासजी सों पद्मनाभदासजी नें कह्यो, जो-होंतो दुःख पायो सो तो न्याव है। जो-तुम मेरे माथे सेवा पधराय आये। परि तुमने दिन सातलों प्रसाद न लियो, सो काहेते? तब रामदासजी नें कह्यो, जो-तुम कहत हो सो तो साँच, परि मैंहू तो बहोत दिनलों सेवा करी है। तातें इतनो संबध तो चाहिये। पाछें कितनेक दिन रहिके पद्मनाभदास श्रीनाथजी सों तथा रामदासजी सों विदा होइके अपने घर कनौज आये। पाछें फेरि सेवा करन लागे।

भावप्रकाश—या वार्ता में यह सिद्धांत दिखाये, जो पुष्टिमार्गीय वैष्णव के ठाकुर अपने घर पधारे तो भिन्न भाव न राखनो। श्रीआचार्यजी के संबंधी जानि माथे पधारे जानि सेवा करनी। और रामदासजी के भाव में यह

सथी भोटा रामदासलये पशु सात दिवस सुधी लोअन न क्युं। परंतु श्रीनाथलनी सेवा सावधानथी करता रखा। ये वात पद्मनाभदासलये पोताना घर भेडे जाणी, के रामदासल पशु आ वातना उपर भहु न दुःख पाभ्या। ये जाणी पद्मनाभदास श्रीनाथलना दर्शने तथा रामदासलने भणवा भाटे श्रीनाथलद्वार गया। ते श्रीनाथलनां दर्शन कर्था। पछी रामदासलने भणवा। त्यारे रामदासलये पद्मनाभदासने क्युं, के हुं तो दुःख पाभ्या ते तो न्याय छे, के तमे मारा माथे सेवा पधरावी आव्या। परंतु तमे दिवस सात सुधी प्रसाद न दीघा ते शा भाटे? त्यारे रामदासलये क्युं, के तमे कहे छे ते साभ्युं परंतु में पशु घण्टा दिवस सुधी सेवा करी छे, तथी अरतो संभध तो जेअये। पछी केलाक दिवस रहिने पद्मनाभदास श्रीनाथलथी तथा रामदासलथी विदाय थधने पोताना घर कनौज आव्या। पछी इरी सेवा करवा लाग्या।

भावप्रकाश—आ वार्तामां आ सिद्धांत देखाउये, के पुष्टिमार्गीय वैष्णवना ठाकुर पोताने घर पधारे तो भिन्न भाव न राखवे। श्रीआचार्यलना संभधी जाणी माथे पधारे जाणी सेवा करवी। अने रामदासलना भावमां ये अताव्युं, के

जताए, जो-अपने सेव्य ठाकुर कहूँ पधराइ निश्चित न होई । उनके दुःखतें दुःखी होई । उनके सुखतें सुख पावे । यह सिद्धांत दिखाए ।

वार्ता-प्रसंग ७—बहुए एक समय पद्मनाभदास ने बिचारी, जो-श्रीठाकुरजी सहित कुटुंब सहित श्रीआचार्यजी के दरसन करिये । श्रीमुख के वचनामृत सुनिये । सो श्रीठाकुरजी सहित कुटुंब सहित अडेल सैं आये । सो कछुक दिन रहे । परि द्रव्य को संकोच बहुत हतो । तातें श्रीठाकुरजी कों भोग समर्पे । सो छोला तलिके समर्पे । सो छोला आछी रीति सों बीनि के पहले दिन भिजोइ राखे, दूसरे दिन नीकी भांति सों तलिके समर्पे । सो या भांति, पातरि में एक मूठि दारि की भावना करते । एक मूठि भात की । एक मूठि खीर की । सागादिक सब को नाम ले न्यारि न्यारि मूठि धरतें । सो श्रीठाकुरजी लगरी सामग्री को भावसों आरोगते । या प्रकार नित्य करें । पाछें एक दिन एक वैष्णव श्रीआचार्यजी सों यह सब प्रकार कहे, जो-महाराज ! पद्मनाभदास श्रीठाकुरजी कों या भांति छोला समर्पत हैं । सो एक दिना श्रीआचार्यजी भोग समर्पवे की बिरियां पद्मनाभदास के घर पधारे । सो पद्मनाभदास सों पूछे, जो-यह ढेरि न्यारि न्यारि क्यों है ? तब पद्मनाभदास ने कही, यह-

पोताना सेव्य ठाकुरने डाँठ जगाये पधरावीने निश्चित न थाय. जेमना दुःखी दुःखी थाय, जेमना सुखी सुख पावे, जे सिद्धांत देखाउयो.

वार्ता प्रसंग-७—इरी जेक समय पद्मनाभदासे विचार्युं डे श्रीठाकुरसहित कुटुंबसहित श्रीआचार्यजनां दर्शन करीये. श्रीमुखनां वचनामृत सांखणीये. ते श्रीठाकुरसहित कुटुंबसहित अउलमां आया. ते डेवलाक हिवस रखा. परंतु द्रव्यना सकोच घबो उतो. तेथी श्रीठाकुरने भोग समर्पे ते छोला (गला) तणीने समर्पे. ते छोला सुंदर रीतिथी वीणीने पलेला हिवसे खिलवी राख्या. वीण हिवसे सुंदर रीतिथी तणीने समर्पे. ते आ प्रकारे-(डे) पातरमां जेक मूठी दाणनी लावना करता. जेक मूठी लातनी, जेक मूठी भीरनी, साकाहिके पधालुं नाम लध अलग अलग मूठी धरता. ते श्रीठाकुरस सघणी सामग्रीना लावथी आरोगता. जे प्रकार नित्य करे. पडी जेक हिवस जेक वैष्णवे श्रीआचार्यजने आ पधे प्रकार कही, डे महाराज ! पद्मनाभदास श्रीठाकुरने आ प्रकारे छोला समर्पे छे. ते जेक हिवस श्रीआचार्यज भोग समर्पवानी वपते पद्मनाभदासना घर पधारे. ते पद्मनाभदासने पूछे, डे आ ढगदी न्यारी न्यारी डेम छे ? त्यारे पद्मनाभदासे कहुं, आ

दारि है। यह भात है। यह खीर है। यह कढ़ि है। यह सागादिक है। या प्रकार सब ढेरि कों सामग्री बताए। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को हृदय भरि आयो। और जान्यो, जो-याके द्रव्य को संकोच है तातें यों करत है। परंतु द्रव्य को उपाय नाहिं करत है। बड़ो धैर्य है। तातें याके ऊपर श्रीठाकुरजी बड़े प्रसन्न हैं। पाछें श्री-आचार्यजी घर पधारे भोजन किये। और श्रीअक्काजी सों कहे। जो-पद्मनाभदास के घर द्रव्य को बहोत संकोच है। सो छोला नित्य श्रीठाकुरजी कों घरन है। तब श्रीअक्काजी ने संज्ञा समय सगरी सामग्री सिद्ध करि एक वैष्णव के हाथ पठाई। तब तुलसां ने पद्मनाभदास सों कह्यो, जो-श्रीआचार्यजी के इहां सों सामग्री आई है। तब पद्मनाभदास ने कह्यो, हम जाने अब हमकों काढिवे को उपाइ किये हैं। जतन सों धरि राखो। तब तुलसां ने धरि राखी। पाछे दूसरे दिन फेरि सामग्री सांझ कों श्रीअक्काजी ने पठाई। तब तुलसां ने फेरि पद्मनाभदास सों कही। तब पद्मनाभदास ने कही, हमकों बेगि विदा दिये। तातें सबेरे चलेंगे। अब यह धरि राखो। पाछें प्रातःकाल भयो। तब श्रीठाकुरजी कों बेगि ही राज-भोग सों पहुँचि, श्रीमथुरानाथजी सों पूछे, जो-महाराज ! आपको

दाण छे, आ लात छे, आ भीर छे, आ कटी छे, आ शाकादिक छे, आ प्रकारे भधी ढगदीआ ने सामग्री भतावी। त्पारे श्रीआचार्यल महाप्रभुनु हृदय भरि आव्युं, अने नष्ट्युं, के आने द्रव्यने सङ्केय छे, तेथी अम करे छे परंतु द्रव्यने उपाय करते नथी। अहु धैर्य छे, तेथी अने उपर श्रीठाकुरल अहु प्रसन्न छे। पछी श्रीआचार्यल घर पधार्या। (पछी) लोअन क्युं, अने श्रीअक्कालने कहे, के पद्मनाभदासना घर द्रव्यने अहु न सङ्केय छे, ते छोला नित्य श्रीठाकुरलने धरे छे। त्पारे श्रीअक्कालने संध्या समय भधी सामग्री सिद्ध करीने अेक वैष्णवना हाथे भेकदी। त्पारे तुलसांने पद्मनाभदासने कहुं, के श्रीआचार्यलने त्यांथी सामग्री आवी छे। त्पारे पद्मनाभदासे कहुं, अने नष्ट्युं छे अने कढवाने उपाय कर्यो छे, सावयेतीथी धरी राखे। त्पारे तुलसांने धरी राखी। पछी भीन द्विसे इरी सामग्री सांजे श्रीअक्कालने भेकदी। त्पारे तुलसांने इरी पद्मनाभदासने कहुं, त्पारे पद्मनाभदासे कहुं, अने वहुला विदाय कर्यो। तेथी सवारे यादीशुं। लमणं आ धरी राखे। पछी प्रातःकाल थयो त्पारे श्रीठाकुरलने वहुला न राजलोगथी पहुँच्यी श्रीमथुरानाथलने पूछे, के महाराज ! आपने श्रीआचार्यलना धरे पधारवानी भुञ्छा हाय ते त्यां नाना

श्रीआचार्यजी के घर पधारिवे की इच्छा होइ, तो उहां नाना प्रकार की सामग्री हैं। मेरे इहां तो जो समय जैसो प्राप्त होइ, तैसो धरुंगो। तब श्रीमथुरानाथजीने कही, मोकों तेरो कियो भावत है। तातें जो धरेगो सो प्रीति तें आरोगुंगो। तब अनोसर कराई, एक नाव भाड़े करि लाये। तुलसां सों कहे। दोउ दिन को सीधो सामग्री है। सो श्रीअक्काजी कों दे आव। तब तुलसां सारी सामग्री श्रीआचार्यजी के यहां दे आई।

पाछें सगरी वस्तु नाव पर धरि श्रीमथुरानाथजी कों नाव पर पधराई श्रीआचार्यजी के पास विदा होन आये। और दंडवत् करि विनती कीनी, जो-महाराज! आज्ञा होइ तो घर जाय। तब श्रीआचार्यजी पूछे, जो-श्रीठाकुरजी कहां है? तब पद्मनाभदास ने कही, महाराज! नाव पर पधारे हैं। तब श्रीआचार्यजी विदा किये। और मनमें विचारे। जो-ओंचको पद्मनाभदास क्यों गयो? तब श्रीअक्काजी ने कही, दोय दिन सीधो पठायो सो फेरि दे गये। तब श्रीआचार्यजी ने कह्यो, जो-सीधो पठवायो तातें गयो। नाहीं तो न जातो। ऐसे श्रीआचार्यजी ने श्रीमुख तें कह्यो। पाछें पद्मनाभदास घर जाय सेवा करन लागे।

प्रकारनी सामग्री छे। भारे अहीं तो जे समये जेयुं प्राप्त हुशे तेषुं धरीश, त्यारे श्रीमथुरानाथलये कहुं, भने ताइं क्युं इये छे। तेथी जे धरीश ते प्रीतिथी आरोगीश। त्यारे अनोसर करावी अेक नाव भाउे करी लाव्या। (पछी) तुलसांने कहुं, अन्ने द्विवसतुं सीधुं सामग्री छे ते श्रीअक्काजने दध आव। त्यारे तुलसां अधी सामग्री श्रीआचार्यलने त्यां दध आवी।

पछी सधणी वस्तु नाव उपर धरी श्रीमथुरानाथलने नाव पर पधरावी श्रीआचार्यलनी पासे विदाय थवा आव्या अने दंडवत् करी विनती करी, के महाराज! आज्ञा होय तो घर जाय। त्यारे श्रीआचार्यलये पूछ्युं, के श्रीठाकुरल क्यो छे? त्यारे पद्मनाभदासे कहुं, के, महाराज! नाव उपर पधार्या छे। त्यारे श्रीआचार्यलये विदाय कर्या, अने मनमां विचार्युं के अग्रानक पद्मनाभदास केम गयो? त्यारे श्रीअक्कालये कहुं, जे द्विवसतुं सीधुं भोकेल्युं ते पाछु देध गया छे। त्यारे श्रीआचार्यलये कहुं, के सीधुं भोकेल्युं तेथी गयो। नहीं तो न जातो। अेम श्रीआचार्यलये श्रीमुखी कहुं-पछी पद्मनाभदास घर जा सेवा करवा लाग्या।

ભાવપ્રકાશ—યા વાર્તા મેં યહ જતાયે, જો-ગુરુ-દ્રવ્ય શ્રીઠાકુ-રજી કે દ્રવ્ય તેં હૂ ભારી હૈ । તાતેં શ્રીભાગવત મેં (સ્કં. ૧૧ અ. ૧૭ શ્લોક ૨૮) કહે હૈં । ભિક્ષા માંગી કે લાઈ ગુરુ કે આગે ધરિયે । જો-ગુરુ આજ્ઞા દેઈ તો સ્વાઈ । નાહીં તો ભૂખ્યો રહિ જાઈ । પરંતુ માંગે નાહીં । માંગી ભિક્ષા હૂ આજ્ઞા વિના નહિં લીની જાય તો ગુરુ કો (દ્રવ્ય) કેસે લિયો જાઈ ? તાતેં શ્રી-આચાર્યજી ‘વિવેકધૈર્યાશ્રય’ મેં લિખે હૈં, જો— “ત્રિદુઃખસહનં ધૈર્યમ્” ॥

જવ મુગલ ઠાકુર લે ગયો તવ પદ્મનાભદાસ ચાહે તો ભસ્મ કરિ ડારેં, પરિ પદ્મનાભદાસ (કષ્ટ) સહે । આપ સાત દિન ભૂખે રહે । વાસોં કહ્ન ન કહે । (યહ અલૌકિક દુઃખ કહ્યો) લૌકિક દુઃખ જો વેટી પરજ્ઞાત કોં દીની । યહ જ્ઞાતિ મેં નિંદા સો સહે । સ્નાનપાનાદિક કો દુઃખ સો સહે । પરંતુ ધર્મ ન છોડે । તાતેં શ્રીગોકુલ-નાથજી શ્રીસર્વોત્તમ કી ટીકા મેં લિખે હૈં । કોટિન વૈષ્ણવન મેં દુર્લભ પદ્મનાભદાસ સારિખે હૈં । સો શ્રીઆચાર્યજી કે મારગ કો શ્રીઆચાર્યજી કે સ્વરૂપ કોં જાનત હૈં ।

સો उन पद्मनाभदास की ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप सदा प्रसन्न रहते, तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं । सो कहां ताई कहिये ।

✽

✽

✽

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તામાં એ જણાવ્યું, કે ગુરુ-દ્રવ્ય શ્રીઠાકુરજીના દ્રવ્યથી પણ ભારે છે. તેથી શ્રીભાગવતમાં (સ્કં. ૧૧ અ. ૧૭ શ્લોક ૨૮ માં) કહે છે, ભિક્ષા માંગી લાવીને ગુરુ આગળ ધરીયે. એ ગુરુ આજ્ઞા દે તો ખાય. નહીં તો ભૂખ્યો રહી જાય. પરંતુ માંગે નહીં. એ માંગવી ભિક્ષા પણ આજ્ઞા વિના ન લેવાય તો ગુરુનું (દ્રવ્ય) કેમ લેવાય ? તેથી શ્રીઆચાર્યજી ‘વિવેકધૈર્યાશ્રય’ માં લખે છે, કે “ત્રિદુઃખ સહનં ધૈર્યમ્”

જ્યારે મુગલ ઠાકુર લઇ ગયો ત્યારે પદ્મનાભદાસ ધારે તો (તેને) ભસ્મ કરી નાખે પરંતુ પદ્મનાભદાસે (કષ્ટ સહ્યું) પોતે શતદિવસ ભૂખ્યા રહ્યા. એને કંઈ ન કહ્યું. (આ અલૌકિક દુઃખ કહ્યું) લૌકિક દુઃખ (એ) જે વેટી પરજ્ઞાતિને આપી. એ જ્ઞાતિમાં નિંદા તે સહે. સ્નાનપાનાદિકનું દુઃખ તે સહે. પરંતુ ધર્મ ન છોડે. તેથી શ્રીગોકુલનાથજી શ્રીસર્વોત્તમની ટીકામાં લખે છે, કરોડો વૈષ્ણવોમાં પદ્મનાભદાસ સરખા દુર્લભ છે. તે શ્રીઆચાર્યજીના મારગને શ્રીઆચાર્યજીના સ્વરૂપને જાણે છે.

તે પદ્મનાભદાસની ઉપર શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ આપ સદા પ્રસન્ન રહેતા. તેથી તેમની વાર્તાનો પાર નહીં, તે ક્યાં સુધી કહીએ ?

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी के सेवक पद्मनाभदास की बेटी तुलसां
तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ए लीलामें पद्मनाभदास की सखी है । पद्मनाभदास तो चंपकलता अष्टसखीन में । और चंपकलता की सखी मणिकुंडला, जैसे मणिकी ज्योतिकी कुंडाली चारों ओर फूले । सो (यह) तुलसां सात्त्विक भक्त है । पद्मनाभदास की आज्ञा में तत्पर है ।

वार्ता-प्रसंग १—एक दिन तुलसां के घर वैष्णव आयो । सो श्रीआचार्यजी को सेवक हतो । सो श्रीमथुरानाथजी के दरसन राजभोग आरती के क्रिये । तब तुलसां ने उन वैष्णव सों कह्यो, जो-उठो स्नान करो । महाप्रसाद लेउ । तब उह वैष्णव ने कह्यो, जो-होंतो घर जाह स्नान करुंगो । तब तुलसां चुप करि रही । पाछे वह वैष्णव उठि के अपने घर गयो । तुलसां के मनमें बहोत खेद भयो, जो-मेरे घर तें वैष्णव भूखयो गयो ।

भावप्रकाश—ताको कारन यह, महाप्रसाद की नहीं करी, जो-ज्ञात व्यौहार के लिये लियो नहीं । सो तुलसां समझ गई । तातें आग्रह नहीं कियो । यह गौड़ ब्राह्मन हतो और लीला में ललिताजी की सखी है । सौरभा इनको

हुवे श्रीआचार्यजनां सेवक पद्मनाभदासनी बेटी तुलसां, तेमनी वार्ताभा
भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे दीक्षामां पद्मनाभदासनी सखी छे, पद्मनाभदास तो य पकलता अष्टसखीअेमां, अने यं पकलतानी सखी मणिकुंडला, जेस मणीनी ज्योतिनी कुंडाली तारे तरङ्ग कूवे तेम, आ तुलसां सात्त्विक भक्त छे.

वार्ता प्रसंग-१—अेक दिवस तुलसांना घर वैष्णव आअेयो, ते श्रीआचार्यजनां सेवक हुतो, तेणे श्रीमथुरानाथजनां दर्शन राजभोग आर्तिनां क्यो, तारे तुलसांअे ते वैष्णवने कहुं, के उठो, स्नान करो, महाप्रसाद लो, तारे ते वैष्णवे कहुं, के हुं तो घर जठ स्नान करीश, तारे तुलसां चुप करी रही, पछी ते वैष्णव उठीने पोताना धरे गयो, तुलसांना मनमां धरो ज भेद थयो, के भारा धरथी वैष्णव लूण्यो गयो.

भावप्रकाश—तेतुं कारण अे (४) महाप्रसादनी ना कही, (केभङ्ग) ज्ञाति-व्यवहारने माटे दीधा नहीं, ते तुलसां समञ्ज गछ, तेथी आग्रह न क्यो, अे गौडब्राह्मण हुतो अने दीक्षामां ललिताजनी सखी छे, सौरभा अेतुं नाम छे.

नाम है। इनके अंगरें अतर गुलाब की सुगंध आवती। यह वैष्णव ललिताजी की सखी है। और तुलसां चंपकलता की सखी है। और तुलसां के बस श्रीमथुरानाथजी हैं। तातें यह वैष्णव नें महाप्रसाद न लियो। जो-ललिताजी की आज्ञा बिना कैसे लेउ? तातें यह वैष्णव अपने घर चलयो गयो। तब तुलसां के मनमें खेद भयो।

तब मनमें आई जो-ज्ञाति व्यौहार के लिये सखड़ी न लीनी होइगी। तो भलो, परि सवेरे पूरी प्रसाद लिवाऊंगी। पाछे मैदा छानि सिद्ध करि राख्यो। पाछे सोइ रही। ता दिन तुलसां ने महाप्रसाद नहीं लियो। पाछे रात्रिकों श्रीमथुरानाथजी ने तुलसां सों स्वप्न में कछ्यो, जो-सवारे वा वैष्णव कों महाप्रसाद लिवाइयो। वह वैष्णव अपने घर महाप्रसाद न लेइगो।

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो-काल्हि उह वैष्णव महाप्रसाद लेइगो। तू चिंता मति करे। पाछे श्रीठाकुरजी नें उह वैष्णव कों जताये, जो-तुलसां के इहां महाप्रसाद क्यों न लियो? सवेरे लीजियो। ललिताजी की हू आज्ञा है। सो ललिताजी हू कहे। तुलसां के इहां महाप्रसाद लीजो। हमारे उनके भाव में भेद नहीं।

वार्ता-प्रसंग २—पाछे प्रातःकाल तुलसां ने पूरी करी। श्री-

येना शरीरमांथी अत्तर गुलाबनी सुगंध आवती। ये वैष्णव ललिताजीनी सखी छे। अने तुलसां चंपकलतानी सखी छे। अने तुलसांने वश श्रीमथुरानाथजी छे। तेथी ये वैष्णवे महाप्रसाद न दीधो। (ते अम) के ललिताजीनी आज्ञा बिना केम लउ ? तेथी आ वैष्णव पोताने घर आइयो गयो। त्तारे तुलसांना मनमां भेद थयो।

त्तारे मनमां आव्युं, के ज्ञाति व्यवहारने माटे सखडी नही दीधी होय तो लले, परंतु सवारे पूरी प्रसाद लेवडावीश। पछी भेदा छाणीने सिद्ध करी राख्यो। पछी सुइ रही। ते द्विसे तुलसांअे महाप्रसाद न दीधो। पछी रात्रिअे श्रीमथुरानाथजीअे तुलसांने स्वप्नमां कछुं, के सवारे अे वैष्णवने महाप्रसाद लेवडावने अे वैष्णव पोताना धरे महाप्रसाद लेशे नही।

भावप्रकाश—अेमां अे ज्ञाव्युं के, काल अे वैष्णव महाप्रसाद लेशे, तू यि ता न करीश पछी श्रीठाकुरजीअे ते वैष्णवने ज्ञाव्युं, के तुलसांने त्यां महाप्रसाद केम न दीधो ? सवारे लेने। ललिताजीनी पणु आज्ञा छे। ललिताजी पणु कहे, तुलसांने त्यां महाप्रसाद लेने, अेमां अेमना भावमां भेद नथी।

वार्ता प्रसंग-२—पछी प्रातःकाल तुलसांअे पूरी करी। श्रीठाकुरजीने ज्ञाव्यो।

ठाकुरजी कूं जगाये । सेवा सिंगार करन लागी । इतने ही में उह वैष्णव सवारे नहाय के श्रीठाकुरजी की सेवासों पहाँचि तुलसां के घर आयो । जब तुलसां भोग समर्पि के बाहर आई । तब वा वैष्णव सों जयश्रीकृष्ण कियो । और तुलसां ने कह्यो, जो-उठो स्नान करो, भगवद्स्मरण करो । तब वा वैष्णव ने कही, मैं स्नान करि अपरसही में आयो हूं । (तथा कहुं वार्ता में यहू है, जो-स्नान करि तिलक मुद्रा करि भगवद्स्मरण कियो) । समय भये तुलसां ने राजभोग सरायौ, आरती करी । वैष्णव ने दरसन कियो । पाछे तुलसां श्रीठाकुरजी कों अनोमर करि बाहर आई । और वा वैष्णव कों प्रसाद की पातर धरी । तामें पूरी, बुरा, दहीथरा, संधानो धर्यो । और कह्यो, जो-प्रसाद लेउ । तब वा वैष्णव ने कही, जो-यह नाहीं लेउंगो । सखड़ी महाप्रसाद धरो, लेउंगो । तब तुलसां ने कह्यो, कछू संकोच मति करो, यह तो ज्ञाति को व्यौहार है । तब वैष्णव ने कह्यो, जो-सो तो साँच । पहले तो मेरे मन में ऐसी ही । परि अब तो आज्ञा भई है । तातें अब तो सखड़ी महाप्रसाद लेउंगो । तब तुलसां (ने) सखड़ी, अनसखड़ी दोऊ धरी, वैष्णव के आगे । पाछे वा वैष्णव ने सखड़ी प्रसाद लियो । प्रसाद ले वह वैष्णव अपने घर गयो । तब तुलसां मनमें बहोत प्रसन्न भई ।

सेवा शंगार करवा लागी । अरुलामां ते वैष्णव सवारे नहायने श्रीठाकुरजीनी सेवाथी पहेँचीने तुलसांना घर आव्यो । न्यारे तुलसां भोग समर्पिने अहार आवी, त्यारे ते वैष्णवने जयश्रीकृष्ण कर्था । अने तुलसांअे कहुं, के उठो स्नान करो, भगवद्-स्मरण करो । त्यारे ते वैष्णवने कहुं, हुं स्नान करी अपरसमां न आव्यो छुं । (तथा कोउ वार्तामां अे पणु छे, के स्नान करी तिलक-मुद्रा करी भगवद्-स्मरण कर्था) । समय थये तुलसांअे राजभोग सरायो आरती करी । वैष्णवने दर्शन कर्था । पछी तुलसां श्रीठाकुरजीने अनोसर करी आहर आवी । अने ते वैष्णवने प्रसादनी पातर धरी, तेमां पूरी, बुरो, (आंड), दहीथरा अने अथाळुं धर्युं । अने कहुं, के प्रसाद लो । त्यारे ते वैष्णवने कहुं, के आ नहीं लउं । सभडी महाप्रसाद धरो, लधश । त्यारे तुलसांअे कहुं, कर्धसंकोच न करो । आ तो ज्ञातिने व्यवहार छे । त्यारे वैष्णवने कहुं, के अे तो सायुं, पहेला तो मारा मनमां अेम न लतुं । परंतु लवे तो आज्ञा थर्ध छे । तेथी लवे तो सभडी महाप्रसाद लधश । त्यारे तुलसांअे सभडी, अनसभडी अने धरी, वैष्णवना आगण । पछी ते वैष्णवने सभडी महाप्रसाद दीयो । प्रसाद लध ते वैष्णव पोताने घर गयो । त्यारे तुलसां मनमां अहुं न प्रसन्न थर्ध ।

और काम परवसतें कोई लादे, जो-मारे तब करे । तैसें हमहू प्रीति खानपान में है । सेवा लोगन की निंदा भये तें है, जो-बड़े पद्मनाभदास की संतति, सेवा नहीं करत । या प्रकार लोगन की प्रतिष्ठा अर्थ । तातें हमकों कहा अनुभव जतावें ? सूरदासजी नें गायो है । “ सूर अधमकी कौन चलावें उदर भरे अरु सोये ” । ऐसे अधम जो हैं, तिनकी बात नहीं करनी । जो-शरीर को सुख चाहत है । या प्रकार के हम हैं । परंतु श्रीआचार्यजी के ग्रन्थ को पाठ सदा करियत है । ताको भाव यह, जो-ऐसेहू अधमकों श्रीआचार्यजी के ग्रन्थ मात्र कहे । भावहू न जानत होइ तो पाठही के किये तें श्रोठाकुरजी सगरो अनुभव जतावे । तातें यह कहि अपनो पुरुषार्थ नहीं कहे । श्रीआचार्यजी को प्रताप कहे, जो-उनके ग्रन्थ के पाठतें कृपा प्रभु करत हैं । या प्रकार प्रेम में लपेटे वचन तुलसां के सुनिके श्रीगुसांईजी को हृदय भरि आयो ।

ऐसी भगवदीय तुलसां हती । जिनके ऊपर श्रीगुसांईजी सदा प्रसन्न रहते । तातें इनकी वार्ता को पार नहीं । सो कहां तांई कहिये ।

✽

✽

✽

काम. भीनुं काम परवशथी ढाध अलाकारे लाहे ठे मारे तो करे. तेम अमारी पणु प्रीति खानपानमां छे. सेवा लोडानी निदा थाय ते माटे छे. ठे (आवा) मोटां पद्मनाभदासनी संतती (थधने) सेवा नथी करती ? आ प्रकारे लोडानी प्रतिष्ठा अर्थे. तेथी अमने शे अनुभव जणुवे ? सूरदासज्ये गायुं छे, ठे “ सूर अधमनी कान यलावे उदर भरे अरु सोये ” जेवा अधम जे छे तेनी वात न करवी, जे शरीरतुं सुख याहे छे. आ प्रकारनां अमे छीजे. परंतु श्रीआचार्यज्येना अन्थेना पाठ सदा करीजे छीजे. तेना भाव जे ठे जेवा अधमने पणु श्रीआचार्यज्येना अन्थ मात्र कछा. भाव पणु न जणुतो होय तो पाठ कर्याथी पणु श्रीठाकुरज्ये सधणो अनुभव जणुवे. तेथी जे कछी पोतानो पुरुषार्थ न कछो. श्रीआचार्यज्येना प्रताप कछो, ठे जेमना अन्थेना पाठथी कृपा प्रभु करे छे. आ प्रकारे प्रेममां लपेटेलां वचन तुलसांनां सांलणीने श्रीगुसांइज्येनुं हृदय भरि आण्युं.

जेवी भगवदीय तुलसां हती. जेना उपर श्रीगुसांइज्ये सदा प्रसन्न रहेता. तेथी जेमनी वार्तानो पार नहीं. ते ज्यां सुधी कछीजे ?

✽

✽

✽

पारवती

अब श्रीआचार्यजी के सेवक पद्मनाभदास के बेटा ताकी यह पारवती
तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ए राजसी भक्त है। पद्मनाभदास तो चंपकलता अष्ट-
सखीन में। तिनकी सखी सुचरिता, सो इहां पुरुषोत्तमदास मेहरा क्षत्री भये। सो
सुन्दर चरित्र सबकों सुखरूप कार्य के करता है, ए। और सुचरिता की सखी
रूपविलासिनी है। सो यहां पारवती भई। सो लीला में पागवती को रूप बहोत
सुन्दर हतो। सो राजसी है। अपनो रूप बहोत सँवारती। सो रूप के गर्व तें
लीला सों गिरी।

वार्ता-प्रसंग १—सो पारवती श्रीठाकुरजी की सेवा नीकी
भांति सों करती। पुरुषोत्तमदास मेहरा इनकों नीकी भांति सों
जानते। सो जब कन्नौज जातें तब याके घर उतरते। सो एक समें
पुरुषोत्तमदास मेहरा कन्नौज आइ, अडेल श्रीगुसाईंजी के दरसन कों
गये। यहां पारवती के हाथ पांच सुफेद भये। तब ग्लानि दैन्यता
भई। तब अपने पूर्व स्वरूप की हू खवरि परी, जो-मैं पुरुषोत्तमदास
की मखी हों। मेरो काम इनद्वारा होयगो। तब पत्र पुरुषोत्तमदास
कों लिख्यो, जो-मेरी बिनती तुम श्रीगुसाईंजी सों करियो। मेरी
देह को यह प्रकार भयो है। तातें भोकों सेवा करत पाक करत
बहुत ग्लानि आवति है।

हुवे श्रीआचार्यलला सेवक पद्मनाभदासना भेटा, तेनी यहु पार्वती, तेनी
वार्ताना भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे राजसी लकत छे। पद्मनाभदास तो चंपकलता अष्ट-
सखीआमां (छे)। तेनी सखी सुचरिता ते अहीं पुरुषोत्तमदास मेहरा क्षत्री थया।
ते, सुन्दरचरित्र, अधाने सुखरूप कार्याना कर्ता छे। अे अने सुचरितानी सखी रूप-
विलासिनी छे। ते अहीं पार्वती थछ। वीलाभां पार्वतीतु रूप यहु सुंदर हतु।
अे राजसी छे। पोतानु रूप यहु सम्हागती। ते रूपना गर्वथी वीलाभांथी पडी।

वार्ता प्रसंग-१—अे पार्वती श्रीठाकुरलनी सेवा सुंदर रीतिथी करती। पुरु-
षोत्तमदास मेहरा अने सुंदर रीतिथी जणुता। ते जयारे कन्नौज जता, तयारे अना घर
उतरता। ते अेक समय पुरुषोत्तमदास मेहरा कन्नौज आवी अडेल श्रीगुसाईंलला
दर्शने गया। त्यां पार्वतीना हाथ-पग संदेह थया। तयारे ग्लानि दैन्यता आवी। तयारे
पोताना पूर्व स्वरूपनी पणु अप्पर पडी। के हुं पुरुषोत्तमदासनी सखी छुं। भाइं
काम अेमना द्वारा थये। तयारे पत्र पुरुषोत्तमदासने लख्यो के, भारी बिनती तमे
श्रीगुसाईंलने करजे। भारी देहने आ प्रकार थयो छे। तेथी भने सेवा करतां, पाक
करता यहु ज ग्लानि आवे छे।

भावप्रकाश—ताको आशय यह है, जो—मैं (ने) श्रीठाकुरजी सों रूप को गर्व कियो ताको फल पायो । अब कब कृपा करेंगे सो श्रीगुसांईजी सों बिनती करि लिखिये ।

यह पत्र पठायो, एक मोहौर श्रीगुसांईजी कों भेट पठाई । सो पत्र पुरुषोत्तमदास नें श्रीगुसांईजी कों बांचि सुनायो । मोहौर आगे राखी । बिनती कीनी । तब श्रीगुसांईजी पुरुषोत्तमदास कों कहे, जो—दिन दोई चारि में कहूंगो ।

भावप्रकाश—सो यातें, जो—लीला में रूप को गर्व ता अपराध तें (यह) भयो । तथा औरहू कोई अपराध न होइ । सो विचारे । तब और अपराध नाहीं देखे ।

फेर तीन दिन पाछे श्रीगुसांईजी ने पुरुषोत्तमदास सों कही । जो—पारवती कों पत्र लिखो, जो—थोरे दिन में सरीर को भोग निवृत्त होइगो । सेवा में ग्लानि मति करियो । श्रीठाकुरजी थोरे से दिन में तेरो रोग निवृत्त करेंगे । तब पुरुषोत्तमदास मेहरा ने पारवती कों पत्र लिख्यो । तामें श्रीगुसांईजी के श्रीमुख के वचन कहे सो लिखि पठाये । सो पत्र पारवती के पास पहुँच्यो । सो पत्र बांचि पारवती प्रसन्नता सों सेवा करन लागी । सेवा करत ग्लानि मन में न लावे । पाछे सहिना तीन चारि में हाथ पाँव नीके भये ।

भावप्रकाश—अने आशय अछे ठे, में श्रीठाकुरजी रूपको गर्व कर्यो, तेनुं ईस मज्युं । हुवे कर्यो कृपा करशे ते श्रीगुसांईजीने बिनती करीने लभ्यो ।

आ पत्र भोइल्यो । अक मोहौर श्रीगुसांईजीने भेट भोइली । ते पत्र पुरुषोत्तमदासने श्रीगुसांईजीने वांछी संलगाव्यो । मोहौर आगण राभी, बिनती करी । त्यारे श्रीगुसांईजी पुरुषोत्तमदासने कहे, के दिवस अे बारमां कहीश ।

भावप्रकाश—ते अथी ठे लीलामां रूपको गर्व (कर्यो) । ते अपराधथी (आ) थयु । तथा भीजे पणु ठाठे अपराध न होय ते विचारे । त्यारे भीजे अपराध न ज्यो ।

इरी त्रणु दिवस पछी श्रीगुसांईजीने पुरुषोत्तमदासने कहुं, के पार्वतीने पत्र लभ्यो, के थोडा दिवसमां शरीरने भोग निवृत्त थशे । सेवामां ग्लानी न करती । श्रीठाकुरजी अहु थोडा दिवसमां तारे रोग निवृत्त करशे । त्यारे पुरुषोत्तमदास मेहराअे पार्वतीने पत्र लभ्यो । तमां श्रीगुसांईजीना श्रीमुखनां वचन कहुं । ते लभी भोइल्यो । ते पत्र पार्वतीनी पास पहुँच्यो । ते पत्र वांछीने पार्वती प्रसन्नताथी सेवा करवा लागी । सेवा करतां ग्लानी मनमां न लावे । पछी सहिना त्रणु बारमां हाथ-पग सारा थया ।

तब पारवती बहोन प्रसन्नतासों सेवा करन लागी। तब फेर श्रीगुसांईजी कों पत्र लिखि, पुरुषोत्तमदास मेहरा की पास पठायो। तामें लिखी, जो-महाराज के प्रताप तें नीकी भई हों। और भेट पठाई। सो पुरुषोत्तमदास मेहरा ने श्रीगुसांईजी कों बांचि सुनायो। तब श्री गुसांईजी बहोन प्रसन्न भये। सो पारवती ऐसी अगवदीय हती, जो-प्रभुन की आज्ञा प्रमाण चलती, तातें श्रीगुसां-ईजी सदा इनके ऊपर प्रसन्न रहते। तातें इनकी वार्ता को पार नार्हीं। सो कहां तांई कहिये।

* * *

अब श्रीआचार्यजी के सेवक पद्मनाभदास के नाती, पारवती को वेटा रघुनाथदास, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—पारवती लीला में रूपविलासिनी राजसी भक्त और रघुनाथदासको नाम गुनाभिरान्या। इनमें गुन बहोत, जो-कोई और सों एक दिन में काम होइ सो एक घरि में यह करें। सो ए तामसी है। सो दोऊ सुचरिता की सखी बराबरि की है। पुरुषोत्तमदास मेहरा की दोऊ आज्ञाकारिनी हैं। वार्ता-प्रसंग १—सो रघुनाथदास कासी गये। तहां बहोत शास्त्र पढ़ि के श्रीगोकुल आये। श्रीगुसांईजी के दरसन किये।

त्यारे पार्वती अहु न प्रसन्नताथी सेवा करवा लागी। त्यारे इरी श्रीगुसांईजीने पत्र सभी पुरुषोत्तमदास भहेरानी पास भेजव्यो। तेसां लख्युं, के महाराजना प्रतापथी (हुं) सारी थध छुं. अने लेट भेजव्यो। ते (पत्र) पुरुषोत्तमदास भहेराये श्रीगुसांईजीने वांथी संलगाव्यो। त्यारे श्रीगुसांईजी अहु न प्रसन्न थया। ते पार्वती अयेवी अगवदीय हती. जे, प्रभुनी आज्ञा-प्रमाण यासती. तेथी श्रीगुसांईजी सदा अनेना उपर प्रसन्न रहैता. तेथी अनेनी वार्ताको पार नही. ते कथां सुधी कहीअे ?

* * *

हुवे श्रीआचार्यजीना सेवक पद्मनाभदासना नाती, पार्वतीना वेटा, रघुनाथ-दास, तेनी वार्ताको भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—पार्वती लीलाभां रूपविलासिनी राजसी भक्त (छे). अने रघुनाथदासतुं नाम गुनाभिरान्या (छे). अेमां गुण अहु छे. जे, ठोअ अन्यथी अेक द्विवसमां काम थाय ते अे अेक धडीमां करे. अे तामसी छे. ते अने सुचरितानी सभी बराबरीनी छे. पुरुषोत्तमदास भहेरानी अने आज्ञाकारिणी छे.

वार्ता प्रसंग-१—ते रघुनाथदास कासी गया. त्यां अहु न शास्त्र पढ़ीने श्री-गोकुल आया. श्रीगुसांईजीना दर्शन कयां. इंडवत कयां. त्यारे श्रीगुसांईजीअे

दंडोत करी। तब श्रीगुसांईजी श्रीआचार्यजी के सेवक जानि (के) बहोत आदर सन्मान किये। आप कथा सुबोधिनीजी की कहते। तब रघुनाथदास को आगे बैठावते। सो एक दिन परमानंद सोनी ने रघुनाथदास से पूछी, जो-तू तो कासी में बहोत शास्त्र पढ्यो है। सो आज श्रीगुसांईजी ने कहा कथा कही है, सो कहो।

भावप्रकाश—श्रीगुसांईजी श्रीआचार्यजी के सेवक पद्मनाभदास की सखी जानि रघुनाथदाम को बहोत आदर करते। और परमानंददास को नाम लीला में चंद्रका है। चंद्रमा की उजियारीवत् इनकी देह की कांति है। श्रीगुसांईजी (श्रीचंद्रावलीजी) अनेक चंद्रमारूप तिनकी अंतरंगिनी यह है। तार्ते रघुनाथदास से कटाक्ष के वचन कहे।

तब रघुनाथदास ने परमानंद सोनी से कह्यो, जो-तुम सांच फूछो तो मैं कछु ससुझत नाहीं। श्रीआचार्यजी के मारग की परिपाटी और मारग की बात नाहीं जानत हों। रघुनाथदास को मान सब मर्दन व्हे गयो।

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो-शास्त्रादिक वेद पुरान के पढे तें श्रीआचार्यजी के ग्रन्थ को सिद्धान्त जान्यो न जाइ। कृपा ही को मारग है। सो कृपा ही तें जान्यो जाइ।

श्रीआचार्यजीना सेवक जलुने भहु ७ आदर सन्मान क्युं, पोते कथा श्रीसुबोधिनीजीनी कहेता। तयारे रघुनाथदासने आगण भेसाउता। ते अेक द्विस परमानंद सोनीअे रघुनाथदासने पूछ्युं, डे तुं तो काशीमां भहु शास्त्र लष्ये छे। ते आण श्रीगुसांईअे शी कथा कही छे ? ते कहे।

भावप्रकाश—श्रीगुसांईजी श्रीआचार्यजीना सेवक पद्मनाभदासनी सखी जलुनी, रघुनाथदासने भहु आदर करता। अने परमानंददासनु नाम लीलामां यद्रिका छे। यद्रमानी उजियारीवत् अेमना देहनी कांति छे। श्रीगुसांईजी (श्रीचंद्रावलीजी) अनेक यद्रमाइप तेमनी अंतरंगिनी आ छे। तेथी रघुनाथदासने कटाक्षनां वचन कथां।

तयारे रघुनाथदासे परमानंद सोनीने कहुं, डे तमे सायुं पूछे तो हुं कंठ समजतो नथी। श्रीआचार्यजीना मार्गनी परिपाटी अने मार्गनी वार्ता नथी जलुतो। (अेम) रघुनाथदासनु मान भधुं मर्दन थर्धगयुं।

भावप्रकाश—अेमां अे जताव्यु, डे शास्त्रादिक वेदपुराणुना लएयाथी श्रीआचार्यजीना ग्रन्थने सिद्धान्त जलुथे न जय। कृपाने ज मार्ग छे। ते कृपाथी ज लएयु जय।

पाछे परमानंद सोनी नें श्रीगुसांईजी सों कही, जो-महाराज ! रघुनाथदास तो कछु समुझत नाहीं । तब श्रीगुसांईजी ने रघुनाथदास कों चारि ग्रन्थ अर्थ सहित पढ़ाए (और) मारग की प्रणालिका कही ।

१ 'सिद्धान्तरहस्य' ग्रन्थ में सगरे मारग को सिद्धान्त बताए । २ 'कृष्णाश्रय' ग्रन्थ में एक आश्रय दृढ़ करि दिये । ३ 'नवरत्न' ग्रन्थ में लौकिक वैदिक चिंता दूरि करि दीनी । ४ 'सेवाफल' में सेवा को फल बताइ दिये । पाछे रघुनाथदास समुझन लागे । श्रीगुसांईजी की कथा को भेद लीला को प्रकार सब जानन लागे । बड़े पंडित भये ।

वार्ता-प्रसंग २—सो केतेक दिन पाछे कन्नौज में अपने घर आज्ञा मांगि के आये । भगवत्सेवा में ममत्व बढ्यो । तब माता पारवती सों कह्यो, जो-होंतो न्यारो होउंगो । श्रीठाकुरजी की सेवा करोंगो ।

भावप्रकाश—यह कहेवे में अभिप्राय यह है, जो-पारवती और रघुनाथदास बराबरि की सखी हैं । तामें पारवती राजसी है । और रघुनाथदास तामसी भक्त है । सो पारवती ने श्रीठाकुरजी वस किये हैं, सेवा करि के । सो भेद रघुनाथदास ने देख्यो । सो एक बराबरि के तामसी । सो सह्यो न गयो,

पछी परमानंद सोनीजे श्रीगुसांईजीने कछु, के महाराज ! रघुनाथदास तो कंध समजतो नथी । त्यारे श्रीगुसांईजीजे रघुनाथदासने चार ग्रन्थ अर्थसहित लाव्वाव्या. (अने) मार्गनी प्रणालिका पढ़ी कही ।

'सिद्धान्त रहस्य' ग्रन्थमां सघणो मार्गनी सिद्धान्त पताव्यो, 'कृष्णाश्रय' ग्रन्थमां एक आश्रय दृढ़ करी दीधो. उ 'नवरत्न' ग्रन्थमां लौकिक वैदिक (नी) चिंता दूर करी दीधो ४ 'सेवाफल'मां सेवानुं इस पतावी दीधुं. पछी रघुनाथदास समजवा लाग्या. श्रीगुसांईजीनी कथानो भेद लीलानो प्रकार पधुं जाणवा लाग्या. मोटा पंडित थया.

वार्ता प्रसंग-२—ते केतसाक द्विवस पछी कन्नौजमां पोताना घर आज्ञा मांगीने आंव्या. भगवत्सेवामां ममत्व वधुं. त्यारे माता पार्वतीने कछु, के हुं तो अलग थधश. श्रीठाकुरजीनी सेवा करीश.

भावप्रकाश—जे कहेवानो अभिप्राय जे छे, के पार्वती अने रघुनाथदास बराबरनी सखी छे. तेमां पार्वती राजसी छे अने रघुनाथदास तामसी भक्त छे. ते पार्वतीजे श्रीठाकुरजीने वश कर्था छे. सेवा करीने. ते भेद रघुनाथद से जेथो.

जो-मेरे श्रीठाकुरजी इनने मन लगाइ के बस किये हैं, सो अब मैं बस करों । तातें पारवती तें कहें, मैं न्यारो होइ के सेवा करुंगो ।

तब पारवती ने कही, जो-भलेही सेवा करि । प्रीति काहू के बांटे में नाहीं । श्रीआचार्यजी की कृपा ते होइगी । पाछे रघुनाथदास न्यारे भये । सो वाकी माता पारवती जल भरि लावे । पात्र मांजे । श्रीठाकुरजी की परचारणी सब करि पाछे अपने न्यारे घर में आय अकेली लीटी करि के भाव सों भोग धरे । पाछे जल के घूट सों उतार के लेइ । श्रीठाकुरजी की सेवा शृंगार बिना सगरो राजस खानपान देह सुख सब त्याग कियो । या भांति सों करत दिन द्वै चारि बीते । पाछे श्रीमथुरानाथजी ने कह्यो, तू धन्य है, मेरी सेवा नाहीं छोड़े । अपना सुख सब छोड़े । मन में तापहू बहुत कियो । अब तू कबहू तो दारि करि । मेरो गरो अकेली लीटी लेत खरखरात है । तब पारवती ने कह्यो, जो-महाराज ! तुम तो रघुनाथदास के इहां दारि भात खीरि आदि सब सालन सामग्री नित्य अरोगत हो । गरो क्यो खरखरात है ? तब श्रीठाकुरजीने पारवती सों कह्यो, जो-सोकों तो तेरो कियो भावत है । तातें लीटी अकेली आरोगत हों ।

ते अे पणु पारापरीना, तामसी. ते सहन थयु नहीं. डे मारा श्रीठाकुरजी (ने) अेभणु मन लगाडीने वश कर्या छे. ते हुवे हु वश कर. तेथी पार्वतीने कहे, हु अलग रहिने सेवा करीश.

त्यारे पार्वतीअे कहुं, डे भले, सेवा कर. प्रीति केधना लागमां नथी. श्री-आचार्यजीनी कृपाथी थरो. पछी रघुनाथदास अलग थया. ते अेनी माता पार्वती जल भरि लावे पात्र मांजे-श्रीठाकुरजीनी परचारणी अधी करे. पछी पोताना घरमां आवी अकेली लीटी (घटिं यणानी पीणी रोटी) करिने लावथी लाग धरे. पछी जलना घूटथी उतारिने ले. श्रीठाकुरजीनी सेवा शृंगार बिना सधणुं राजस खानपान देहसुख अंधु त्याग कर्युं. अे प्रकारे रहेतां अेथार दिवस वीत्या. पछी श्रीमथुरानाथजीअे कहुं, तू धन्य छे, मारी सेवा न छोडी. पोताहुं सुभ अंधुं छोड्युं. मनमां ताप पणु धरो कर्या. हुवे तू केधक वभत तो दाण कर. माइं गणुं अेकली लीटी लेतां छोदाय छे. त्यारे पार्वतीअे कहुं, डे, महाराज ! तमे तो रघुनाथदासने त्यां दाण, लात, पीर, आदि अंधुं शाक-सामग्री नित्य आरोगा छे. गणुं डेअ छोदाय छे ? त्यारे श्रीठाकुरजीअे पार्वतीने कहुं, डे भने तो ताइं क्युं लावे छे. तेथी लीटी अकेली आरोग्य छु.

भावप्रकाश—यह कहि (यह) जताए, जो-प्रीति की लीटी मोकों प्रिय है । अहंकार करि छप्पनभोग प्रिय नहीं हैं । रघुनाथदास के इहांहू आरोगत हों । श्रीआचार्यजी की का'नि तैं । परंतु तेरो कियो बहोत भावत है । यह कहि यह जताए, जो-भक्तजन सुख लेइ श्रीठाकुरजी लिये जानिए । और इतनो कहे पारवती सों, सो पारवती के लिये । जो-मैं अपने गरे को नाम लेउंगो, तब यह सगरी सामग्री करेगी । पाछें प्रसाद लेइगी । तब मोकों सुख होइगो ।

या प्रकार पारवती को सुख विचारे । तब पारवती सगरी सामग्री अपने घर करन को दौरी आवती । दारि, भात, सालन सब करती । पारवती ने विचार्यों, जो-ठाकुरजी सुखी होइ सो करनो ।

पाछे रघुनाथदास कळक दिन सेवा करी । पाछे ज्ञान भयो । जो-पारवती की सेवा अहंकार करि छुड़ाई । तातैं प्रभु मोपर अप्रसन्न हैं । तातैं भगवदीय सों मिलि के चलूंगो, तो श्रीठाकुरजी प्रसन्न होइंगे । अहंकार किये मेरी यहू, सेवा जाइगी । यह ज्ञान श्रीगुसांईजी ने मारग को सिद्धान्त बतायो हतो, तातैं उनकी कृपा तैं भयो । तब रघुनाथदास पारवती सों कहे, माता ! अब तुम ही सेवा करो । तुम आज्ञा करो सो मैं करूं । मैं चूक्यो । तब पारवती

भावप्रकाश—ये कही (ये) जताव्युं, डे प्रीतिनी लीटी मने प्रिय छे. अहंकार करी छप्पनभोग प्रिय नहीं. रघुनाथदासने त्यां पणु आरोग्य छुं. श्रीआचार्यजीनी का'निथी, परंतु तारी करी (सामग्री) बहुत रये छे. ये कही, ये जताव्युं, डे भक्तजन सुख ले(ये) श्रीठाकुरजी (ये) लीधुं जणुये. मने येठकुं क्युं पारवतीने, ते पारवतीने माटे. डे, हुं मारा गणानु नाम लछश तो यधी सामग्री करे. पछी प्रसाद देसे. त्पारे मने सुख थसे.

या प्रकारे पारवतीनुं सुख विचार्युं. त्पारे पारवती यधी सामग्री पेताना धरे करवाने दोडी आवती. दान, भात, शाक यधुं करती. पारवतीये विचार्युं, डे श्रीठाकुरजी सुखी थाय तेम करवुं.

पछी रघुनाथदासे केरदाक द्विस सेवा करी. पछी ज्ञान थयुं, डे पारवतीनी सेवा अहंकार करी छोडावी. तेधी प्रभु मारा उपर अप्रसन्न छे. तेधी भगवदीयथी भणीने यादीश तो श्रीठाकुरजी प्रसन्न थसे. अहंकार करवाथी मारी या सेवा पणु जसे. या ज्ञान श्रीगुसांईजीये मार्गना सिद्धान्त पताव्यो लते. तेधी येमनी कृपाथी थयुं. त्पारे रघुनाथदास पारवतीने कहे, (डे) माता ! हवे तमे ज सेवा करे. तमे

कों कछु ईरण्या तो नाहीं । सुद्ध भक्त है । सो प्रसन्न होइ रसोई करन
 लागी । रघुनाथदास सों शृंगारादि करावे । या प्रकार ऐसैं करत
 पारवती के संग करि रघुनाथदास कों प्रीति भई । तब दोऊन कों
 बराबरि अनुभव होन लाग्यो । या प्रकार पद्मनाभदाम को परिवार
 अलौकिक भयो । या प्रकार वैष्णव सात भये । परंतु पद्मनाभदास
 के कुटुंब सहित वार्ता एक जाननी, तातें वैष्णव ४ भये । वार्ता ॥४॥

✽ ✽ ✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक रजो क्षत्राणी
 तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो रजो क्षत्राणी लीला में ललिताजी की सखी है ।
 इनको नाम रतिकला है । रति, जो-प्रीति ताकी कला । अथवा रति, जो-विहार
 ताकी कला, जो-जिनकों श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी को विहार सिद्ध हो ।
 यही भाव में मगन हैं । और जानत ही नाहीं । श्रीस्वामिनीजी के लिये नाना
 प्रकार की सामग्री करनी । निकुंजादिक में रात्रि कों दूधादिक अरोगावनो । यह
 ललिताजी की सेवा है । तातें यहांहू रजो कों यह नेम, जो-रात्र की सामग्री

आज्ञा करे ते हुं कइं. हुं यूक्ये. त्पारे पार्वतीने कंठ धर्या तो हुती नहीं. शुद्ध
 लक्ष्मि छे. ते प्रसन्न थछ रसोछ करवा लागी. रघुनाथदास पासे शृंगारादि करावे. आ
 प्रकारे ऐम करतां पार्वतीना संगथी रघुनाथदासने प्रीति थछ. त्पारे अन्नेने परापर
 अनुभव थवा लाग्ये. आ प्रकारे पद्मनाभदासने परिवार अलौकिक थयो. आ
 प्रकारे वैष्णव सात थया. परंतु पद्मनाभदासना कुटुंबसहित वार्ता ऐक जणुवी. तेथी
 वैष्णव ४ थया. वार्ता ॥ ४ ॥

✽ ✽ ✽

हुये श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीने सेवक रजो क्षत्राणी, तेमनी वार्ताने
 भाव कहीये छीये—

भावप्रकाश—ते रजो क्षत्राणी लीलाમાં લલિતાજીની સખી છે. એમનું
 નામ રતિકલા છે. રતિ જે પ્રીતિ તેની કલા. અથવા રતિ જે વિહાર તેની કલા, જે
 જેમને શ્રીઠાકુરજી, શ્રીસ્વામિનીજીનો વિહાર સિદ્ધ હતો. આ ભાવમાં મગન છે. બીજું
 જણતાં જ નથી. શ્રીસ્વામિનીજીને માટે નાના પ્રકારની સામગ્રી કરવી. નિકુંબદિકમાં
 રાત્રિએ દૂધાદિક આરોગાવવું એ લલિતાજીની સેવા છે. તેથી અહીં પણ રજોને એ
 નેમ જે રાત્રિની સામગ્રી નિહનેમથી શ્રીઆચાર્યજીને આરોગાવવી. તે લીલામાં રતિ-
 કલાને બહુ તાપ હતો. જે શ્રીસ્વામિનીજીને પીરસું એવું ભાગ્ય માફ ક્યારે થશે ?

नित्य नेम सों श्रीआचार्यजी कों आरोगावनो । सो लीला में रतिकला कों बहोत ताप हतो । जो—श्रीस्वामिनीजी कों परोसों (एमो) भाग्य मेरो कव होय ? काहेतें, (जो) अरोगावनो सो ललिता की सेवा है । सो कैसे मिले ? ललिताजी तो अत्यंत प्रिय मध्याजी हैं । सगरी लीला की सिद्धि करता । सो ताप रतिकला के हृदय को है । (सो) अब श्रीआचार्यजी (श्रीस्वामिनीजी) मनोरथ पूरन करें, ताप मिटाए । काहेतें ? नारायणदास ब्रह्मचारी ब्राह्मन हते । तिनकी करी खीरि श्रीगोकुलचंद्रमाजी खीरि लेवे कों श्रीआचार्यजी सों कहे । तब श्रीआचार्यजी कहे, पाक कैसे लियो जाइ ? पाछे श्रीगोकुलचंद्रमाजी के ग्रन्थ (वाक्य) तें लिये ।

और इहां रजो क्षत्राणी हती । ताकी अनसखड़ी आप नित्य नेम सों लेते । सो लीला संबंध को भाव विचारि के । तथा रजो एकांगी अनन्य भक्त के बस होइके, सो प्रेमके भरतें मर्यादा छूटि जाय । यामें रजो को प्रेम जताए । रजो के प्रेमते मर्यादा स्वरूप को तिरोधान होइ जातो । लीला रस में मगन होइ सामग्री अंगीकार करें ।

वार्ता—प्रसंग १—सो रजो नित्य पकवान सामग्री करि रात्रकों ले आवती । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन आरोगते । वाके नेम हतो ।

ठेमठे आरोगावनुं अे ललिताञ्जनी सेवा छे । ते ठेम भणे ? ललिताञ्जनी अत्यंत प्रिय मध्याञ्ज छे । सधणी लीलानी सिद्धि कर्ता । ते ताप रतिकलाना हृदयने छे । ते हुवे श्रीआचार्यञ्ज (श्रीस्वामिनीञ्ज) अे मनोर्थ पूरुं कर्था, ताप मटाये । ठेमठे ? नारायणदास ब्रह्मचारी ब्राह्मण हुता । तेमनी करी खीर, श्रीगोकुलचंद्रमाञ्ज अे खीर लेवा भाटे श्रीआचार्यञ्जने कहुं । त्यारे श्रीआचार्यञ्ज अे कहुं, पाक ठेम लध शकय ? पछी श्रीगोकुलचंद्रमाञ्जना वाक्यथी लीघी ।

अने अही रजे क्षत्राणी हती । तेनी अनसखड़ी पोते नित्य नेमथी लेता, ते लीला संबंधने भाव विचारिने । तथा रजे अेकांगी अनन्य भक्ताना वश थधने । ते प्रेमना लरथी मर्यादा छुटी अय । अेमां रजेने प्रेम जताव्ये । रजेने प्रेमथी मर्यादा स्वरूपनुं तिरोधान थध जतुं । लीला रसमां मगन थध सामग्री अंगीकार करे ।

वार्ता प्रसंग-१—ते रजे नित्य पकवान सामग्री करी रात्रिअे लध आवती । ते श्रीआचार्यञ्ज महाप्रभुञ्ज आरोगता अेने नेम हुता । ते अेक द्विअे लध अटने ।

सो एक दिन लक्ष्मण भट्ट को श्राद्ध दिन हतो। सो श्री-आचार्यजी ने ब्राह्मण भोजन को बुलाए हते। तहां घृत धोरो सो चहियत हतो। तब श्री आचार्यजी ने एक वैष्णव सों कह्यो, जो-रजो के इहां ते घृत ले आवो। सो एक वैष्णव जाइ के रजो सों कह्यो, जो-श्रीआचार्यजी ने घृत मँगायो है। तब रजोने वा वैष्णव सों कह्यो, जो-घृत काहेको मँगायो है? तब वा वैष्णवने कह्यो, जो-लक्ष्मण भट्टजी को श्राद्ध दिन आज है। सो ब्राह्मण भोजन को बुलाए हैं तहां घृत घट्यो है। सो तातें मँगायो है। तब रजोने कह्यो, जो-घृत मेरे नाहीं है, जाय कहियो। तब वैष्णव फिर आयो। और श्रीआचार्यजी सों कह्यो, जो-महाराज! रजो के घृत नाहीं है। तब श्रीआचार्यजी कहे। जो-एकवार तू फेरि जा। खीजि के कहियो जो घृत दे। तब वह वैष्णव फेरि आयो। रजो सों कह्यो, जो-श्री-आचार्यजी खीजत हैं। तातें घी देउ। तोहू रजोने घृत दीनो नाहीं। कह्यो, मेरे घृत नाहीं है, कहां ते देऊं? तब वैष्णव फिर आय श्रीआचार्यजी सों कह्यो, जो-महाराज! रजो घृत नाहीं देत। पाछे और ठौरतें घी मँगाइ काम चलायो। पाछे रात्र भई। तब रजो सामग्री सिद्ध करि श्रीआचार्यजी के पास आई। तब श्रीआचार्यजी पीठि दे बैठे। तब रजोने कह्यो, जो-महाराज, जीव तो दोष ते भर्यो है। अपराध

श्राद्ध दिवस हुतो. ते श्रीआचार्यलये आह्वण (ने) लोअन अर्थे भोलाव्या हुता. त्यां धी थोडुंके लेधतुं हुतुं. त्पारे श्रीआचार्यलये अेक वैष्णवने क्खुं, के रणेने त्यांथी धी लध आवो. ते अेक वैष्णवे नधने रणेने क्खुं, के श्रीआचार्यलये धी मंग्गव्युं छे. त्पारे रणेअे ते वैष्णवने क्खुं, के धी शा मारे मंग्गव्युं छे? त्पारे ते वैष्णवने क्खुं, के लक्ष्मण लक्ष्मणे श्राद्ध दिन आने छे. ते आह्वण (ने) लोअन (अर्थे) भोलाव्यां छे त्यां धी धर्युं छे. तेथी मंग्गव्युं छे. त्पारे रणेअे क्खुं, के धी मारे नथी, नध क्खेने. त्पारे वैष्णव पाछे आव्यो, अने श्रीआचार्यलने क्खुं, के, महाराज! रणेने (त्यां) धी नथी. त्पारे श्रीआचार्यल क्खे, के अेकवार तू इरी न. भीलने क्खेने, के धी हे. त्पारे ते वैष्णव इरीने आव्यो. रणेने क्खुं, के श्री-आचार्यल भीने छे तेथी धी हे. तोपणु रणेअे धी दीधुं नही. क्खुं, मारे धी नथी. ध्यांधी हठ? त्पारे वैष्णव (अे) पाछा आवीने श्रीआचार्यलने क्खुं, के, महाराज! रणे धी नथी आपती. पछी भील नगाअेथी धी मंग्गवी काम चलाव्युं. पछी रात्रि थध. त्पारे रणे सामग्री सिद्ध करी श्रीआचार्यलनी पासे आवी. त्पारे श्रीआचा-र्यल पीठे धध भेहा. त्पारे रणेअे क्खुं, महाराज! लव तो दोषथी लर्यो छे. अप-

कहा, जो-आप दरसन नहीं देत ? तब श्रीआचार्यजी ने कह्यो, जो-आज लक्ष्मण भट्टजी को श्राद्ध हतो। सो तेंनें घृत क्यों नहीं दीनो ? तब रजोने कही, मेरे घी नहीं हतो। तब श्रीआचार्यजी ने कही, सामग्री कहाँ ते करि लाई ? तब रजोने कही, महाराज ! आपु के घर में हू घी हतो क्यों नहीं लिये ? तब श्रीआचार्यजी कहे, उह तो श्रीठाकुरजी को हतो। वामें ते कैसें लियो जाई ? तब रजो ने कही, मेरे घर में कौन है ? श्रीठाकुरजी तें अधिक आपको स्वरूप है। सो आपकी लीला-संबंधी सामग्री में तें श्राद्ध में कैसे दजं ? और मैं लक्ष्मण भट्टकी लौड़ी नहीं हों। मैं तो आपकी लौड़ी हों, आप मेरी परीक्षा लेन अर्थ घी मंगायो। सो पहले वैष्णव पठायो तब तो लौकिक आवेस सों घी घटयो। तब आपु कहे, रजो सों ले आवो। यह लौकिक प्रवाह आज्ञा जानि के मैंने घी की नहीं करी। सो पाछें आपु यह मनमें विचारे, जो-श्राद्ध के लिये ब्राह्मण भोजन में वेगे चाहिये। फेरि जो उह वैष्णव आईकें कह्यो, जो-खीजि के कहे घी देहू। तब मैं मर्यादा जानी। जो-पुष्टि कार्य में क्रोध को प्रयोजन है नहीं। काहेतें, भावही सों सगरी वस्तु सिद्ध है। और मर्यादा में तो वेद वस्तु बिना कर्मको नास होई। (वस्तु तें) पूरनता है। तातें

राधे शो ? के आप दर्शन नथी देता ? त्यारे श्रीआचार्यलये कहुं, के आप लक्ष्मण भट्टलतुं श्राद्ध लतुं। ते घी केम नहीं आभ्युं ? त्यारे रजोये कहुं, मारे घी न लतुं। त्यारे श्रीआचार्यलये कहुं, सामग्री क्यांथी करी लावी ? त्यारे रजोये कहुं, महाराज ! आपना घरमां यणु घी लतुं, केम नहीं लीधुं ? त्यारे श्रीआचार्यलये कहे, ते तो श्रीठाकुरलतुं लतुं। तेमांथी केम लेवाय ? त्यारे रजोये कहुं, मारा घरमां डोणु छे ? श्रीठाकुरलथी अधिक आपतुं स्वरूप छे, ते आपनी लीला-संबंधी सामग्रीमांथी श्राद्धमां केम दह ? अने हुं लक्ष्मण भट्टलनी लुंठी नथी। हुं तो आपनी लुंठी धुं। आपे मारी परीक्षा लेवा माटे घी मंगाव्युं। ते पहलेसा वैष्णव भोक्तयो, त्यारे तो लौकिक आवेशथी घी घटयुं। त्यारे आप कहे, रजो पासेथी लई आवो। आ लौकिक प्रवाह आज्ञा मानीने में घीनी ना कही। पछी आपे ये मनमां विचार्युं, के श्राद्धने माटे ब्राह्मण-भोजनमां नददी जेधये। इरी ते वैष्णवे आवीने कहुं, के भीलने कहुं (छे), घी हे। त्यारे में मर्यादा जणु। (केम) जे पुष्टिकार्यमां कौधतुं प्रयोजन नहीं। केमके सावथी न अंधी वस्तु सिद्ध छे। अने मर्यादामां तो ते वस्तु बिना कर्मना नाश थाय। (वस्तुथी) पूर्णता छे। तेथी वस्तुने माटे कौध छे केम ? ये वस्तु आवश्यक जेधये।

वस्तु के लिये क्रोध है। जो—यह वस्तु आवश्यक चाहिये। तातें मर्यादा की आज्ञा हुआ नहीं माने। और मर्यादा के कार्यार्थ घी हुआ नहीं दियो। पाछें तीसरे पुष्टि के आवेस ते मांगतें तो मैं घी देती। और आपको घी मंगावनो हतो। (तो) इतनो उह वैष्णव सों कहि देते, जो—रजो सों कहियो। तेरे पुष्टि—धर्म में हानि नहीं है, घी दीजो। तो मैं काहे कों फेरती? और महाराज! जानि वृद्धि के कूआ में कैसे परुं? आपु की कृपा तें इतनो ज्ञान भयो तब मैं घी नहीं दियो। आपु तो बुद्धि प्रेरक हो। मेरे हृदय में बैठि के घी देवे की नहीं कहे। उहां के घी मंगाये। सो मैं बिना मोल की दासी हों। आपु कृपा करिये।

भावप्रकाश—याही तें शिक्षापत्र में कह्यो है। श्रीठाकुरजी की आज्ञा तीन प्रकार की है। लौकिक आज्ञा प्रवाहसे के करन अर्थ। याही तें श्रीभागवत में लौकिक आदि कार्य यह तीन ही वरनन हैं। अलौकिक कार्य में श्रीठाकुरजी को आश्रय और भगवदीय को संग। वैदिक कार्य में तीर्थ देव—पूजा कर्मादि। लौकिक में कुटुंब पालनों खानपान शरीर को सुख। सो तीनों फलहू न्यारे न्यारे कहे हैं। लौकिक तें संसार। वैदिक तें स्वर्गादिक। अलौकिक तें भगवद् प्राप्ति। या प्रकार के भेद सों घी नहीं दियो।

तेथी भर्यादानी आज्ञा पणु न भानी. अने भर्यादा कार्यने अर्थे घी पणु न आर्युं. पछी त्रीजे पुष्टिना आवेशथी मांगता तो हुं घी देती. अने आपने घी मंगावपुं उतुं तो अरुं ते वैष्णवने कही देता, के रजोने कहुने, तारा पुष्टि धर्ममां हानी नथी, घी आपने. तो हुं शुं काम इरती? अने महाराज! जणु जेधने कुआमां केम पडुं? आपनी कृपाथी आरुं ज्ञान थयुं, तारे में घी नहीं आर्युं. आप तो बुद्धिप्रेरक छे. मारा हृदयमां प्येसीने घी देवानी ना कही. त्यांथी घी मंगाव्युं. ते हुं विना मोलनी दासी छुं. आप कृपा करे.

भावप्रकाश—तेथीज शिक्षापत्रमां कथुं छे, श्रीठाकुरजीनी आज्ञा त्रणु प्रकारनी छे. लौकिक आज्ञा प्रवाह जेवु करवाने माटे. तेथी श्रीभागवतमां लौकिक आदि कार्य अत्रणु वणुं न कर्या छे. अलौकिक कार्यमां श्रीठाकुरजीने आश्रय अने भगवदीयने संग. वैदिक कार्यमां तीर्थ देव—पूजा कर्मादि. लौकिकमां कुटुंब पालपुं, खानपान शरीरनुं सुख. ते त्रणु इल पणु अलग अलग कथां छे. लौकिकथी संसार, वैदिकथी स्वर्गादिक, अलौकिकथी भगवद् प्राप्ति. अत्र प्रकारना लेखथी घी नहीं दीधुं.

तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइ के दरसन दिये । तब रजो ने सामग्री श्रीआचार्यजी के आगे राखी । और कह्यो, जो अरोगो । तब श्रीआचार्यजी ने रजो सों कह्यो, जो-आजु श्राद्ध दिन है । सो दूसरी बेर लेनो नाहीं । तब रजो ने कह्यो, जो-महाराज ! घर की होइ सो लोगन के मर्यादा के लिये मति लेहू । यह तो लियो चाहिए ।

भावप्रकाश—ताको अर्थ यह, जो-लीला के भाव सों अपने निज स्वरूप सों अरोगो । अब मर्यादा को आवेस कहां राखोगे ? लीला के आवेस में मन दीजे । भक्तन को मनोरथ पूरन करो । इतनो सुनत ही आप [में] पुष्टिलीला को आवेस हे गयो । मर्यादा की आज्ञा सब जात रही । सामग्री अरोगे । जैसे परमानंदजी गाये, “ हरि तेरी लीला की सुधि आवे ” । इतनो सुनत ही तीन दिन लों शरीर को अनुसंधान न रह्यो । ऐसे लीला में आवेस होइ, रजो को मनोरथ पूरन किये । तातें रजो एकांगी भगवदीय है ।

तब रजो के आग्रह तें श्रीआचार्यजी ताहू दिन सामग्री अरोगे । सो वह रजो क्षत्राणी श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही । तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं । सो कहां ताई कहिये ।

*

*

*

त्यारे श्रीआचार्यल्लये प्रसन्न थधने दर्शन आभ्यां. त्यारे रज्जेये सामग्री श्रीआचार्यल्लना आगण राभी. अने कहुं, के आरोगो. त्यारे श्रीआचार्यल्लये रज्जेने कहुं, के आजु श्राद्ध दिवस छे ते भील वार लेवुं नहीं. त्यारे रज्जेये कहुं, के महाराज ! घरनी होइ तो लोडोनी मर्यादाने भाटे न लेा. आ तो लेवी जेधये.

भावप्रकाश—तेनो अर्थ जे छे लीलाना आवधी पोताना निज स्वरूपथी आरोगो. हुवे मर्यादानो आवेश कयां राभशो ? लीलाना आवेशमां मन हो. सकतेनो मनोरथ पूरुं करे. जेटहुं सांभणतां ज आपमां पुष्टिलीलानो आवेश थध गयो. मर्यादानी आज्ञा भधी जती रही. सामग्री आरोग्या. जम परमानंदल्लये गायु, ‘ हरि तेरी लीलानी सुधि आवे ’ जेटहुं सांभणतां ज त्रणु दिवस सुधी शरीरनुं अनुसंधान न रह्युं. जे प्रकारे लीलामां आवेश थध रज्जेनो मनोरथ पूरुं कर्यो. तेथी रज्जे जेकांगी भगवदीय छे.

त्यारे रज्जेना आग्रहथी श्रीआचार्यल्ल ते दिवसे पणु सामग्री आरोग्या. ते रज्जे क्षत्राणी श्रीआचार्यल्ल महाप्रभुनी जेवी कृपापात्र भगवदीय हुती. तेथी जेनी वार्तानो पार नहीं. ते कयां सुधी कहीजे.

*

*

*

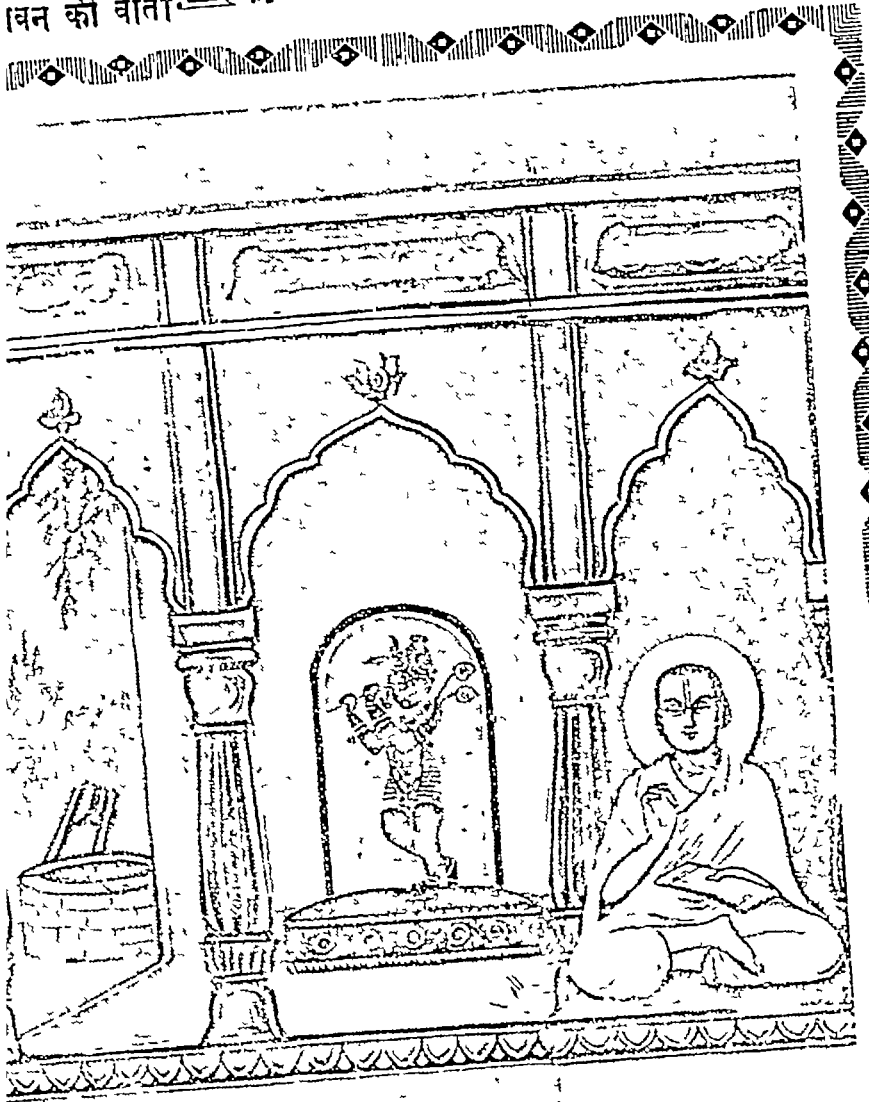
वार्ता ॥ ५ ॥

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, सेठ पुरुषोत्तमदास काशी में रहते,
तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सेठ पुरुषोत्तमदास कों दामोदरदास संभलवारे को संग है । जब ताँवे को पत्र बँचाइवे कों कासी गये ता दिन तें सेठ कों श्रीआचार्यजी के दरसन की आरती भई । सो श्रीआचार्यजी पहली पृथ्वी परिक्रमा करि कासी पधारे । तब सेठ ने मनिकर्निका घाट पर श्रीआचार्यजी के दरसन पाये । सो कृष्णदास सों पूछे, श्रीआचार्यजी दक्षिण देस में कृष्णदेव राजा की सभा में मायावाद खंडन किये है, सोई हैं ? तब कृष्णदास मेघन ने कही, एही हैं । तब सेठ पुरुषोत्तमदास श्रीआचार्यजी के सन्मुख जाइ दंडोत् किये । विनती करी, महाराज ! कृपा करके सरन लीजे । कृपा करि घर पावन करिए । तब श्रीआचार्यजी दैन्यता देखि सेठ पुरुषोत्तमदास के घर पधारे । सेठकों, सेठ की बेटी रुकिमिनी कों, सेठ के बेटा गोपालदास आदि सब कों नाम सुनाए, ब्रह्मसंबंध कराए । तब सेठ ने विनती करी, महाराज ! अब हमकों कहा कर्तव्य है ? तब श्रीआचार्यजी कहे, भगवत् सेवा पुष्टिभार्ग की रीति सों करो । सो सेठ के घर श्रीमदनमोहनजी ठाकुर हते । पास हजार दस पन्द्रह रुपैया हतो सो घर बनाए । सों नौव में तें श्रीम-

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजना सेवक, सेठ पुरुषोत्तमदास काशीमां रहता हुता, तेमनी वार्ताना भाव कहीअ छीअ—

भावप्रकाश—सेठ पुरुषोत्तमदासने दामोदरदास संभलवाणानो संग छे. अ्यारे तांयानो पत्र व याववा काशी गया, ते दिवसथी सेठने श्रीआचार्यजना दर्शननी आरती थध. ते श्रीआचार्यजो पहली पृथ्वी परिक्रमा करी काशी पधार्या त्यारे सेठने मणिकर्णिका घाट उपर श्रीआचार्यजनां दर्शन थयां. ते कृष्णदासने पूछे, श्रीआचार्यजो (अ) दक्षिण देशमां कृष्णदेव राजनी सभामां मायावाद खंडन कर्यो छे, तेज छे ? त्यारे कृष्णदास मेघने कहु, अज छे. त्यारे सेठ पुरुषोत्तमदासे श्रीआचार्यजना सन्मुख अधने दंडवत् कर्यां. विनती करी, महाराज ! कृपा करीने शरणे लो. कृपा करी घर पावन करो. त्यारे श्रीआचार्यजो दीनता अेध सेठ पुरुषोत्तमदासना घर पधार्या. सेठ ने, सेठनी बेटी रुकमिनीने, सेठना बेटा गोपालदास आदि अंधाने नाम सलणायु. ब्रह्मसंध कराव्यु. त्यारे सेठे विनती करी, महाराज ! हुवे अमने शुं कर्तव्य छे ? त्यारे श्रीआचार्यजो कहे, भगवत्सेवा पुष्टिभार्गनी रीतिथी करो. ते सेठना घर श्रीमदनमोहनजो ठाकुर हुता. पास दस-पहर अजर रुपैया हुता.



सेठ पुरुषोत्तमदाम का घर, काशी.

बायें से —

- १ पुत्र गोपालदास ।
३. बेटी रुक्मिणी ।

- ० सेठ पुरुषोत्तमदाम ।
- ४ सेठ की स्त्री ।



दनमोहनजी ठाकुर निकसे । और द्रव्य बहुत निकस्यो, करोड़धुजी कहाए । साठ करोड़ द्रव्य पाये । सो पिता कछुक दिन श्रीमदनमोहनजी की पूजा करि देह छोड़े । पाछे सेठ ने पूजा बहोत दिन लों करी, द्रव्य बहोत कमाए । सो श्रीमदनमोहनजी कों श्रीआचार्यजी ने पंचामृत स्नान कराए, पाट बैठाये, सेठ के माथे पधराए ।

सो सेठ पुरुषोत्तमदास लीला में श्रीस्वामिनीजी की सखी हैं । इंदुलेखा इनको नाम है । और सेठ की बेटी रुकिमिनी इन्दुलेखा की सखी, मोदनी नाम है । और गोपालदास सेठ को बेटा, सो इंदुलेखा की सखी गानकला है । सो सेठ पुरुषोत्तमदास श्रीमदनमोहनजी की राजसेवा करते । बावन बीड़ा को नेग हतो । याको कारन यह है, जो-लीला में बीड़ा अरोगाइवे की सेवा इंदुलेखा की है । तातें पुरुषोत्तमदास ने बावन बीड़ा राखे । सो श्रीठाकुरजी के भावतें वीस, और बत्तीस बीड़ा श्रीस्वामिनीजी के भावतें । याकौ आसय यह, जो-श्रीठाकुरजी कों विश्वास प्रिय है । तातें वीसों विश्वा निश्चयात्मक दृढ़ विश्वास जताइवे कों वीस बीड़ा, श्रीठाकुरजी के भावतें । श्रीस्वामिनीजी कों शृंगार प्रिय हैं, तातें जुगल रूप के सिंगार सोरह दूने बत्तीस भये । या प्रकार श्रीस्वामिनीजी कों

ते, धर पनाव्युं. ते, नीमभांथी श्रीमदनमोहनजी ठाकुर निकस्यो. अने द्रव्य धल्लुं निकस्युं. करोड़धवळ कहेवाया. साठ करोड द्रव्य मल्युं. ते पिताअये थोडाक द्विपस सुधी श्रीमदनमोहनजीनी पूज करी देह छोडये. पछी शेठे पूज पळु द्विपस सुधी करी. द्रव्य धल्लुं कमाया. ते श्रीमदनमोहनजीने श्रीआचार्यअये पंचामृत स्नान करावी पाट पेसाडया. शेठना माथे पधराव्या.

ते शेठ पुरुषोत्तमदास लीलामां श्रीस्वामिनीजीनी सखी छे. इंदुलेखा अमनुं नाम छे. अने शेठनी बेटी रुकमणी इंदुलेखानी सखी, मोदनी नाम छे. अने गोपालदास शेठनो बेटा ते इंदुलेखानी सखी गानकला छे. ते शेठ पुरुषोत्तमदास श्रीमदनमोहनजीनी राजसेवा करता. बावन बीडानो नेग हतो. अमुं, कारण अये छे, हे लीलामां बीडा अरोगाववानी सेवा इंदुलेखानी छे. तेथी पुरुषोत्तमदासे बावन बीडां राख्यां. ते श्रीठाकुरजीना भावथी वीस अने पत्तीस बीडां श्रीस्वामिनीजीना भावथी. अनेो आशय अये हे, श्रीठाकुरजीने विश्वास प्रिय छे. तेथी वीसो विश्वा निश्चयात्मक दृढ़ विश्वास देखाडवाने वीस बीडा श्रीठाकुरजीना भावथी. श्रीस्वामिनीजीने शृंगार प्रिय छे. तेथी जुगल रूपनो शृंगार सोस दुना पत्तीस थया, अये प्रकारे श्रीस्वामिनीजीने

प्रसन्न किये । या प्रकार कहि (यह जताए, जो-) जितनी सेवा सेठ पुरुषोत्तमदास करते, सो भावपूर्वक करते । सामग्री वस्त्र आभूषण हूँ मैं ।

और श्रीमदनमोहनजी की सेवा श्रीठाकुरजी के भावतें अधिक श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के भावतें करतें । तातें श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइकें श्रीमदनमोहनजी के दोऊ चरन स्याम दरसन कराए । ताको आसय यह, जो-सर्वाङ्ग गौर, सो तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु को निजस्वरूप-श्रीस्वामिनीजी को श्रीअंगवर्ण । और चरन दोऊ स्याम, सो श्रीकृष्ण के श्रीअंगवर्ण । तामें चरन स्याम को अभिप्राय, निकुंजादिक लीला में श्रीठाकुरजी दूसरे स्वरूप (श्रीस्वामिनीजी) के चरन-आश्रित हैं । तातें श्रीठाकुरजी के भावतें श्रीआचार्यजी की सेवा दिखाए । या प्रकार सेठ पुरुषोत्तमदास पर अनुग्रह श्रीआचार्यजी किये ।

सो श्रीमदनमोहनजी कों श्रीआचार्यजी ने पंचामृत स्नान कराइ पाट बैठारे, सेठ के माथे पधराए ।

वार्ता-प्रसंग १—और सेठ कासी मुख्य विश्वेश्वर महादेव, सो कासी के राजा है, तिनके दरसन कों कबहू नहिं जाते । सो एक दिन विश्वेश्वर महादेव ने स्वप्न में सेठ पुरुषोत्तमदास सों कह्यो, जो-गांव को नातो तुम नाहीं राखत, तो वैष्णव को नातो तो राखो,

प्रसन्न कर्था. या प्रकार कही (ये सूच्युं डे,) जेठली सेवा सेठ पुरुषोत्तमदास करता, ते (यधी) भावपूर्वक करता. सामग्री, वस्त्र-आभूषणमां पण.

अने श्रीमदनमोहनजी की सेवा श्रीठाकुरजी भावथी अधिक श्रीआचार्यजी महाप्रभुना भावथी करता. तेथी श्रीआचार्यजी प्रसन्न थधने श्रीमदनमोहनजीनां अन्ने यरणु श्याम दर्शन कराव्यां. तेना आशय ये, 'डे अधुं' अंग गौर, ये तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुजनुं निज स्वरूप-श्रीस्वामिनीजनुं श्रीअंग वर्ण अने यरणु अने श्याम, ते श्रीकृष्णना श्रीअंग (ने) वर्ण. तेमां यरणु श्यामने अभिप्राय निकुंजदिक लीलामां श्रीठाकुरजी भीज स्वरूप (श्रीस्वामिनीजी) ना यरणु आश्रित छे. तेथी श्रीठाकुरजी भावथी श्रीआचार्यजी की सेवा देखाडी. ये प्रकारे सेठ पुरुषोत्तमदास उपर अनुग्रह श्रीआचार्यजी किये. ते श्रीमदनमोहनजीने श्रीआचार्यजीके पंचामृत स्नान करावी पाट भेसाडया, सेठने माथे पधराव्या.

वार्ता प्रसंग-१—सेठ, काशी मुख्य विश्वेश्वर महादेव के (जे) काशीना राज छे, तेमना दर्शन कहीय न जाता. ते अके द्विस विश्वेश्वर महादेव स्वप्नमां सेठ पुरुषोत्तमदासने कहुं, 'डे गाभने नातो तमे नथी राखता, तो वैष्णवने नातो तो राखो.

कबहूँ हम कों महाप्रसाद तो दियो करो । तब सवेरे सेठ पुरुषोत्तम-
दास सेवा सों पहुँचि कें महाप्रसाद को डबरा बीरा ले विस्वेस्वर
महादेव के देवालय कों चले । तब गांव के लोग सब आश्चर्य हे
रहे, जो-सेठ कबहूँ नहीं आवते सो आजु क्यों आये ? सो कितने
लोग संग सेठ के चले । सो सेठ महाप्रसाद को डबरा, बीड़ा चारि
धरे, श्रीकृष्णस्मरण करिके उठि चले । तब बड़े बड़े सैव ब्राह्मण
हते सो सेठ पुरुषोत्तमदास सों कहे, तुम दंडवत् नमस्कार नहीं
किये ? श्रीकृष्णस्मरण करि उठि चले सो उचित नहीं । तब सेठ
पुरुषोत्तमदास ने कही, हमारे इनके भगवत्स्मरण को व्यौहार है ।
तुम पूछि लीजो । तुम सों विस्वेस्वर महादेवजी कहेंगे ।

सो उन ब्राह्मणन में एक ब्राह्मण महादेवजी को कृपापात्र
हतो । सो उन ब्राह्मण सों महादेवजी ने कही, जो-हमने सेठ सों
महाप्रसाद मांग्यो हतो । हमारे इनके भगवत् स्मरण को व्यौहार
ही है । तातें इन सों और कछु मति कहियो । ता पाछें बड़े उत्सव
के पाछें महाप्रसाद विस्वेस्वर महादेव कों ले जाते ।

भावप्रकाश—यह कहिवे को अभिप्राय यह, जो-सेठ पुरुषोत्तमदास
अब सेवक भये तब इनकी आज्ञा में सगरे लोग द्रव्य अर्थ रहें । सो महादेवजी ने
कोठवार अमने महाप्रसाद तो आभ्या करे। त्यारे सवारि शैठ पुरुषोत्तमदास सेवार्थी
पहुँचीने महाप्रसादने उभरे (अक मोटु उँडु वाउकाना जेपुं पात्र) भीडां लछ
विश्वेश्वर महादेवना देवालये यादया, त्यारे गांमना लोको अधा आश्चर्यवत थर
रहा, के शैठ कोठ दिवस नथी आवता ते आन केम आव्या ? ते केउलाक लोको तो
शैठनी साथे गया, ते शैठ महाप्रसादने उभरे, भीडां चार धरी श्रीकृष्ण-स्मरण
करीने उठी यादया, त्यारे मोटा मोटा शैव ब्राह्मणु हुता ते शैठ पुरुषोत्तमदासने उहे,
तमे दंडवत् नमस्कार केम न कर्या ? श्रीकृष्ण-स्मरण करी उठी यादया ते उचित नहीं.
त्यारे शैठ पुरुषोत्तमदासे कछु, अमारि अमने लगवत्स्मरणने व्यवहार छे, तमे
पूछी लेजे, तमने विश्वेश्वर महादेव कहेसे.

पछी ते ब्राह्मणुमां अक ब्राह्मणु महादेवने कृपापात्र हुता, ते ब्राह्मणुने
महादेवने कछु, के अमने शैठ पासे महाप्रसाद मांग्यो हुता, अमारि अमने लग-
वत्स्मरणने व्यवहार न छे, तेथी अमने भीलुं कंध कहेता नहीं, ते पछी मोटा
उत्सवनी पाछण महाप्रसाद (शैठ) विश्वेश्वर महादेवने लछ नता.

भावप्रकाश—अे कहेवानो अभिप्राय अे, के शैठ पुरुषोत्तमदास हुवे
सेवक थया, त्यारे अेमनी आज्ञामां अधा लोको द्रव्य भाटे रहे, ते महादेवने अे

जाने, जो-अब सगरे अनन्य होंगे । तो हमारो महात्म्य हू घटि जायगो, और भगवद् आज्ञा कलिकाल आयो, सो जीवन कों बहिर्मुख करने हैं । और सेठ पुरुषोत्तमदास ने भक्ति फैलाई सो इनसों तो कछु चले नहीं । तब महादेवजी ने यह उपाइ कियो, जो-सेठजी तो महाप्रसाद दें जाइ, ता करि सगरे लोग महादेवजी के देवालय जान लागे, जो-कोउ बरजे तो उत्तर करें, सेठजी सरीखे जात हैं तो हमारी कहा ? महादेवजी बड़े भगवदीय हैं । या प्रकार जीव बहिर्मुख भये । परन्तु यह न जाने, जो-सेठकों आज्ञा भई सो गये, परन्तु रुकिमिनी गोपालदास कबहुँ नहीं गये, हम कैसे जाइ ! परन्तु सबकों उत्तम फल नहीं देनो है । तातें सेठ पुरुषोत्तमदास हू गये ।

वार्ता-प्रसंग २—और एक दिन विस्वेस्वर महादेवजी ने कालभैरव कों, कोतवाल कासी के हते, तिनसों कछो, जो-सेठ पुरुषोत्तमदास वैष्णवन के घरतें अर्द्धरात्रिकों आवत हैं अवेरे सवेरे, सो सेठ पुरुषोत्तमदास के घर की चौकी दीजो । कोई छलावा, चोरादिक उपद्रव न करे । तब कालभैरव नित्य सेठ पुरुषोत्तमदास के घर की चौकी पहरा देते ।

आद्युं, डे हुवे अधा अनन्य थसे, तो अभाइं माहात्म्य पाणु धटी जसे. अने भगवदाज्ञा, कलिकाल आये छे तेथी जेवने अहिर्भुष करवा (नी) छे. अने सेठ पुरुषोत्तमदासे भक्ति इलावी ते अभना उपर तो कंध आवे नही. तारे महादेवज्ये जे उपाय कर्यो. सेठज तो महाप्रसाद देवा जय, तेथी सधणा लोक महादेवजना देवालये जवा लाग्या. जे डोष टोके तो उत्तर आपे, डे सेठज सरणा जय छे तो अमारी शी (वात ?), महादेवज मोटा भगवदीय छे. जे प्रकार जव अहिर्भुष थया. परंतु जे न जणु डे सेठने आज्ञा थध ते गया. परंतु इकभणी, गोपालदास क्यारेय गया नही. अमे हम जधजे ? परंतु अधाने उत्तम इल देवुं नथी. तेथी सेठ पुरुषोत्तमदास पाणु गया.

वार्ता प्रसंग-२—पछी अेक दिवसे विश्वेश्वर महादेवज्ये कालभैरवने, (जे) काशीना डेतवाले हुता तेभने, कछुं, डे सेठ पुरुषोत्तमदास वैष्णवोना घरथी अडधी रात्रे आवे छे मोडा-जुला. तेथी सेठ पुरुषोत्तमदासना घरनी चौकी देजे. डोष छणीज्या, चोर विगेरे उपद्रव न करे. तयथी कालभैरव नित्य सेठ पुरुषोत्तमदासना घरनी चौकी पहरा देता..

सो एक दिन वैष्णव के घरतें अर्द्धरात्रि समें सेठ पुरुषोत्तम-
दास आवत हे । सो घर के द्वार ऊपर तब काहुकों देख्यो । सो
पाछें फिरि कें देखें तब पूछे, जो-तू कौन है ? तब कालभैरव ने कह्यो,
जो-मोको महादेवजी ने तिहारे घर की चौकी पहरा देवे की कही
है, सो नित्य चौकी देत हों । तब सेठ पुरुषोत्तमदास बोले नाहीं,
किंवाड़ दे घर में आये ।

भावप्रकाश—यह कहि के यह जताये, जो-सेठ ऐसे कृपापात्र भगवदीय
हते । परन्तु वैष्णव के संग अर्थ आपु चलाइ के जाते । तातें वैष्णव को संग अवश्य
करनों । काहेतें ? श्रीआचार्यजी लिखे हैं, “पोषकाभावे तु शिथिलम्” (अर्थात्)
पोषक को अभाव होई तब मन सिथिल व्हे जाइ, भक्ति घटि जाइ । सो पोषण
सत्संग तें होइ ।

और कालभैरव को महादेवजी राखे सो यातें, जो-कासी में भूत, छलावा
वहोत, तथा चोरादिक । सो महादेवजी विचारे, जो-मोको भगवान् ने कासी
को राज दियो है, जातें या गाँव में अन्याव होइ सो मेरे मार्यें । तातें भगवदीय
को कछु विगार होइ तो भगवान् मोपर अग्रसन्न होइ जाई । और सेठजी हमको
महाप्रसाद (ह) कृपा करिकें दिये, हमारो तो कछु लेत नाहीं । तातें इतनी

ते अेक दिवस वैष्णवना घरेथी अर्द्ध रात्रि समये सेठ पुरुषोत्तमदास आवता
हुता. ते घरना द्वार उपर त्तारे कोधने जेयो. ते पाछुं करीने जेयुं, त्तारे पूछयुं, के तू
कोणु छे ? त्तारे कालभैरवे कछुं, के मने महादेवज्ये त्तारा घरना चौकी पहरे
देवानुं कछुं छे. ते नित्य चौकी दै छुं. त्तारे सेठ पुरुषोत्तमदास भोल्या नही. कभाड
छ धरमां आया.

भावप्रकाश—आ कहीने अे ज्ञान्युं, के सेठ अेवा कृपापात्र भगवदीय
हुता. परन्तु वैष्णवना संग अर्थ पोते आलीने जता. तेथी वैष्णवना संग अवश्य
करने. केभे ? श्रीआचार्यज्ये लभे छे, (के) “पोषकाभावे तु शिथिलम्” (अर्थात्)
पोषकने अभाव होय तो मन शिथिल थछ जय. अक्ति घटी जय. ते पोषण सत्संगथी
थाय. अने कालभैरवने महादेवज्ये राभ्या. ते अेथी के, कासीमां भूत, छणीआ
धरा तथा चोर आदि. ते महादेवज्ये विचारे, के मने भगवाने कासीनुं राज आप्युं
छे. तेथी आ गाममां अन्याय थाय ते मारा माथे, तेथी भगवदीयने कंठ पिगाड
थाय तो भगवान मारा उपर अग्रसन्न थछ जय. अने सेठज्ये अमने महाप्रसाद
(पणु) कृपा करीने आप्ये. अमाइं तो कंठ लेता नथी. तेथी अेटली चौकसी तो

चौकसी तो करी चाहिये। तातें कालभैरव सों चौकी पहरा की कहे। (सो यातें), जो—कदाचित् कछु विगार हू होइ तो दंड कालभैरव के माथें। तातें आपु नॉहीं दिये।

वार्ता—प्रसंग ३—और एक दक्षिण देस को ब्राह्मण कासी में आयो, सो सैवी महादेवजी को कृपापात्र हतो। जब महादेवजी दरसन देइ तब वह ब्राह्मण खानपान करे। सो ऐसैं करत जन्माष्टमी को उत्सव आयो। सो सेठ पुरुषोत्तमदास बड़े मंडान सों जन्माष्टमी को उत्सव करते। सो महादेवजी जन्माष्टमी के दिन सेठ पुरुषोत्तमदास के घर आये। सो नौमी कों नंदमहोत्सव पाछें दुपहर कों आये। तब ब्राह्मण कों दरसन भयो। तब वह ब्राह्मण नें विस्वेस्वर महादेवजी सों पूछयो, जो—कालिह तिहारो दरसन नाहीं भयो। आजु दुपहर कों भयो, ताको कारन कहा ? तब महादेवजी ने कही, मैं जन्माष्टमी को उत्सव देखन कों (सेठ के घर) गयो हो, कालिह सवारे तें। सो आजु आयो। तब वह ब्राह्मण नें कही, जो—ऐसे सेठ कौन हैं ? जिनके घर तुम उत्सव देखन जात हो ? तब विस्वेस्वर महादेवजी ने कही, जो—वे बड़े भगवद्भक्त हैं, हम सों श्रेष्ठ हैं।

भावप्रकाश—ताकौ यह अर्थ, जो—सेठ पुष्टिमार्गीय भगवद्भक्त हैं, हम मर्यादामार्गीय हैं।

३२वीं जेठजे. तेथी कालभैरवने चौकी पहरेतनुं कछु. (ते जेथी), के कदाचित् कंठ भगाड पणु थाय तो दंड कालभैरवना माथे. तेथी पोते नहीं दीधो.

वार्ता प्रसंग-३—वणी जेठ दक्षिण देशने आहणु काशीमां आव्यो. ते शैवी महादेवजने कृपापात्र हतो. न्यारे (तेने) महादेवज दर्शन देत्यारे ते आहणु खानपान करे. ते जेठ करतां जन्माष्टमीने उत्सव आव्यो. ते सेठ पुरुषोत्तमदास मोठा मंडान (मंडाणु)थी जन्माष्टमीने उत्सव करता. तेथी महादेवज जन्माष्टमीना द्विसे सेठ पुरुषोत्तमदासना घरे आव्यो. ते नवमीना नंद महोत्सव पछी अपोरना (देवालयमां) आव्यो. त्यारे आहणुने दर्शन थयां. त्यारे ते आहणु विश्वेश्वर महादेवजने पूछयुं, के काल तमारों दर्शन न थयां, आज अपोरे थयां, तेनुं कारणु शुं ? त्यारे महादेवजजे कछुं, के जन्माष्टमीने उत्सव जेवाने (शेठना घर) गयो हतो, काल सवारथी. ते आज आव्यो. त्यारे ते आहणु कछुं, के जेठ शेठ कोणु छे (के) जेठना घरे तमे उत्सव जेवा जव छे ? त्यारे विश्वेश्वर महादेवजजे कछुं, के जेठ मोठा भगवद्भक्त छे. जमारथी श्रेष्ठ छे.

भावप्रकाश—तेने जे अर्थ, के सेठ पुष्टिमार्गीय भगवद्भक्त छे, जेठ मर्यादामार्गीय छीजे.

तब ब्राह्मण ने कह्यो, जो-ऐसे भगवद्भक्त हमहूँ कौं करो । तब महादेवजी ने कह्यो, सेठ पुरुषोत्तमदास के सेवक जाइ के होउ । वे नाम सुनावत हैं, उनकौं श्रीआचार्यजी की आज्ञा है । तब वह ब्राह्मण ने कही, जो-तुम ही नाम सुनावो । तब महादेवजी ने कही, जो-हमारो दियो नाम फलेगो नाहीं ।

भावप्रकाश—ताको अर्थ यह, हमारो नाम दिये मर्यादाभक्ति को अधिकारी होइगो । ताते पुष्टिमार्ग को अधिकार उनहीं को है ।

तब वह ब्राह्मण सेठ पुरुषोत्तमदास के द्वार पर आइ सेठ कौं खबर कराई । तब मनुष्यन नें कही, एक ब्राह्मण तुमसौं मिलन आयो है । तब सेठ नें कही, जो-माथो खाली करन आयो होइगो ।

भावप्रकाश—याको अर्थ यह, जो-महादेवजी को भक्त है, नाम सुनेगो, परन्तु दृढ़ भक्ति बहुत दिन लों पचेंगे तब होइगी ।

पाछें सेठ सेवा तें पहाँचिके बाहिर आवे । तब वह ब्राह्मण ने दंडवत् कियो । तब सेठ पुरुषोत्तमदास ने कही, तुम यह अनुचित क्यों करत हो ? हम क्षत्रिय हैं, तुम ब्राह्मण होइके दंडवत् करत हो ? तब उह ब्राह्मण ने कही, जो-हमकौं नाम देहु, सेवक करो । तब सेठने कही, हम तो काहूँ कौं नाम देत नाहीं । सेवक नाहीं करत ।

त्यारे आत्मणु कछुं, के अया लगवद्भक्त अभने पणु करे। त्यारे महादेवणुके कछुं, सेठ पुरुषोत्तमदासना सेवक (त्यां) ञधने थाव, ते नाम संलणावशे, अभने श्रीआचार्यणुनी आज्ञा छे, त्यारे ते आत्मणु कछुं, के तमे ञ नाम संलणावो, त्यारे महादेवणुके कछुं, के अमाइं दीधेणुं नाम इलशे नहीं।

भावप्रकाश—तेनो अर्थ अ, (के) अमाइं नाम दीधे मर्यादा लकितनो अधिकारी थधश. तेथी पुष्टिमार्गनो अधिकार (तो) अभने ञ छे.

त्यारे अ आत्मणु सेठ पुरुषोत्तमदासना द्वार उपर आवीने शेठने अणर करावी. त्यारे मनुष्याके कछुं, अके आत्मणु तमने मणवा आव्या छे. त्यारे शेठ कछुं, के माथुं भादीं करवा आव्या छे।

भावप्रकाश—अनो अर्थ अ, के महादेवणुनो लकत छे, नाम सांलणशे, परंतु दंड लकित पणु दिवस सुधी भडेनत करीशुं त्यारे थशे.

पछी शेठ सेवाथी पहोंचीने अणार आव्या. त्यारे ते आत्मणु दंडवत कर्या. पछी शेठ पुरुषोत्तमदासे कछुं, तमे आ अनुचित केम करे छे ? अमे क्षत्रिय छीअ. तमे आत्मणु थधने दंडवत करे छे ? त्यारे ते आत्मणु कछुं, के अभने नाम आव्या. सेवक करे। त्यारे शेठ कछुं, अमे तो केधने नाम आपता नथी. सेवक करता नथी.

भावप्रकाश—ताको अर्थ यह, नाम देवे वारे, सेवक करवे वारे तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु हैं। यह बात तो वह ब्राह्मण समुहयो नहीं।

तब बहोत आग्रह किये, परन्तु सेठ ने नाम नहीं दियो। तब महादेवजी पास फिर आयो। कह्यो—सेठ तो नाम नहीं देत। तब विस्वेस्वर महादेव ने कह्यो, जो-तू फेरि जाइके सेठजी सों कहियो, जो-मोको महादेवजी ने पठायो है। जो अबके नहीं फेरेंगे। तब वह ब्राह्मण फेरि आइके सेठजी सों कही, जो-मोको महादेवजी ने पठायो है, सो नाम देउ।

भावप्रकाश—ताको यह अर्थ, जो-जीव पुष्टिमार्ग को है। ताते नाम देऊ।

तब सेठ ने उह ब्राह्मण को नाम सुनाय हाथ जोरि के जै-श्रीकृष्ण कियो। तब वह ब्राह्मण ने कह्यो, तुम मोको नाम सुनाए, अब हाथ जोरि के नमस्कार क्यों करत हो? तब सेठ ने कही, हम श्रीआचार्यजी की आज्ञाते नाम देत हैं। हमारे तिहारे गुरु श्रीआचार्यजी महाप्रभु हैं। जब श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारें तब उनके पास फेरि नाम सुनियो। हमारे तिहारे भगवत् स्मरण को व्यौहार भयो। पाछें वह ब्राह्मण अडेल में जाइ श्रीआचार्यजी के

भावप्रकाश—तेनो अर्थ अ, (ठ) नाम आपवा वाणा, सेवक करवा वाणा तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु छे. अ वात तो ते आत्मण समज्यो नहीं.

त्यारे अहु आग्रह कर्यो. परंतु सेठ नाम न दीधुं. त्यारे महादेव पासे पाछे आव्यो. कहुं, सेठ तो नाम नहीं आपता. त्यारे विस्वेस्वर महादेव कहुं, के तू इरी नधने सेठने कहुजे, के भने महादेव अ भेकल्यो छे. तेथी (तने) हुवे पाछे नही भेकले. त्यारे ते आत्मण इरी आवीने सेठने कहुं, के भने महादेव अ भेकल्यो छे. तेथी नाम आप्यो.

भावप्रकाश—तेनो अर्थ, ठे अ पुष्टिमार्गने छे, तेथी नाम दे.

त्यारे सेठ ते आत्मणने नाम संलणापी हाथ जेडीने जैश्रीकृष्ण कर्यो. त्यारे ते आत्मण कहुं, तमे भने नाम संलणाव्युं. हुवे हाथ जेडीने नमस्कार केम करे छे? त्यारे सेठ कहुं, अमे श्रीआचार्यजीनी आज्ञायी नाम आपीअे छीअे. अमार तमार गुरु श्रीआचार्यजी महाप्रभु छे. न्यारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारि त्यारे तेमनी पासे इरी नाम सांलणजे. अमार तमारे सगवत् स्मरणने व्यवहार

पास नाम निवेदन पाये। तब वह कलक दिन रहि दक्षिण देस गयो। वैष्णव भयो।

भावप्रकाश—यह वार्ता में यह संदेह हैं, जो—महादेवजी जन्माष्टमी को उत्सव देखन सेठ पास आये। सो श्रीआचार्यजी संबंधी लीला (है), सो गोपालदास गाये हैं—‘यह मारग श्रीवल्लभवर नो, जहाँ नहि प्रवेश विधि हर नो’।

यहाँ यह भाव जाननो, जो—सेठ के घर सारस्वत कल्प की पूर्णावतार की लीला है। तहां सगरी लीला हैं। सो महादेवजी कों कल्पांतर की लीला, सो अंसकला है, ताको अनुभव भयो। यह कहि यह जताए, जो—श्रीआचार्यजी के ठाकुर हैं, तहां पुष्टिमार्गीय वैष्णव कों पूर्ण पुरुषोत्तम के स्वरूप का दरसन होइ। अन्यमार्गी कों ऐसे दरसन न होइ। ताते महादेवजी उह ब्राह्मण सों कहे, जो—सेठ के सेवक होउ। तब तुमारो पुष्टिमार्ग में अंगीकार होइगो।

वार्ता-प्रसंग ४—और सेठ पुरुषोत्तमदास एक दिन मंदिरमें बैठे हे, मंदिर वस्त्र करत हते। सो दूरितें गोपालदास देखि के मनमें बिचार कियो, जो—अब सेठजी वृद्ध भये हैं। ताते अब मै सेवामें तत्पर होउं। तब गोपालदास न्हाइ आये। तब गोपालदास के मनकी जानिके

थयो. पछी ते ब्राह्मणु अउदमां जठ श्रीआचार्यजनी पासे नाम निवेदन पाभ्यो. पछी ते थोडा दिवस रहि दक्षिणु देश गयो. वैष्णव थयो.

भावप्रकाश—आ वार्तामां अे स देहू छे, हे महादेवजु जन्माष्टमीनो उत्सव जेना शेठ पासे आब्या. ते (जन्माष्टमी) श्रीआचार्यजु संबंधी लीला छे. ते गोपालदास गाय छे हे— “अेवो मारग श्रीवल्लभ वर नो रे, जहां नहूँ प्रवेश विधि हर नो रे.”

अही अे भाव जाणुवो, हे शेठना धरे सारस्वत कल्पनी पूर्णावतारनी लीला छे. (अेठले) तेमां भधी लीला छे. ते महादेवजुने कल्पांतरनी लीला, जे अंशकला (नी) छे, तेनो अनुभव थयो. अे कही, अे जाणुवु, हे श्रीआचार्यजुना ठाकुर छे त्यां पुष्टिमार्गीय वैष्णवने पूर्ण पुरुषोत्तमना स्वरूपनां दर्शन थाय. अन्यमार्गीयने अेवां दर्शन न थाय. तेथी महादेवजु ते ब्राह्मणुने कहे, हे तू शेठनो सेवक था. त्यारे तारे पुष्टिमार्गमां अंगीकार थशे.

वार्ता प्रसंग-४—वणी शेठ पुरुषोत्तमदास अेक दिवस मंदिरमां जेठु लता मंदिर वस्त्र करता लता. ते दूरथी गोपालदासे जेठने मनमां विचार क्यो, हे लुवे शेठ वृद्ध थया छे. तेथी लुवे लु सेवामां तत्पर थउं. त्यारे गोपालदास न्हाइ

बुलाए। वेटा ! आगे आउ। तब गोपालदास निकट आइके देखे तो बीस पच्चीस बरस के सेठ हैं। तब सेठ पुरुषोत्तमदास ने गोपालदास सों कही, जो-भगवदीय सदा तरुन हैं। परन्तु जो अवस्था होइ ताको मान दियो चाहिए। तातें आजु पाछें ऐसी मनमें मति लाइयो।

भावप्रकाश—याको अर्थ यह, जो-गोपालदास के मन में यह आई, जो-मैं तरुन हों, सेठजी वृद्ध हैं, अब मैं सेवा में तत्पर होउं। या बात में गोपालदास को बिगार जान्यो, जो-तू, हम कहा सेवा करेंगे? श्रीआचार्यजी जासों कृपा करेंगे वासों ही श्रीठाकुरजी सेवा करावेंगे। सो तरुन कहा, वृद्ध कहा? आजु पाछें ऐसी मनमें कबहू मति लाइयो। सो या प्रकार मान मर्दन करि बेगिही समुझाए। काहेतें? गोपालदास लीला में सेठ की सखी हैं, तातें ए न समुझावें तो और कौन समुझावें?

वार्ता-प्रसंग ५—और एक समय सेठ दक्षिण में गये। तहां झारखंड में मंदार पर्वत है, ताके ऊपर मंदारमधुसूदन ठाकुर हैं। सो उह पर्वत तें मनुष्य गिरै तो चोट न लगे, अनजाने। और जानि के सगरे पाप कहि के ऊपर तें गिरै तो देह छूटै। पाछे दूसरे जनम में कामना सिद्ध होय। एसो वा पर्वत को माहात्म्य लोक में प्रसिद्ध है।

आव्या. त्पारे (शेठ) गोपालदासना मननी जलुने (तेभने) जेलाव्या. (कछुं), जेटा ! आगण आव. त्पारे गोपालदास पासे आवीने जेजे तो बीस पच्चीस बरसना शेठ छे. त्पारे शेठ पुरुषोत्तमदासे गोपालदासने कछुं, के भगवदीय सदा तरुण छे. परन्तु जे अवस्था होय तेने मान आपवुं जेधजे. तेथी आण पछी जेवुं मनमां न लावीश.

भावप्रकाश—जेनो अर्थ जे, के गोपालदासना मनमां जे आव्यु, के हुं तरुण छु. शेठ वृद्ध छे. हवे हुं सेवामां तत्पर थाउ. ते वातमां गोपालदासने (शेठजे) भगाउ जेज्यो, के तू, हुं शुं सेवा करीशुं ? श्रीआचार्यजे जेना उपर कृपा करेशे, तेनाथी जे श्रीठाकुरजे सेवा करावशे. ते तरुण शुं ? वृद्ध शुं ? आण पछी जेवुं मनमां कही न लावीश. आ प्रकारे मान-मर्दन करी जलदी जे समजव्या. केभडे गोपालदास लीलामां शेठनी सखी छे. तेथी जे न समजवे तो भीजे डाणु समजवे?

वार्ता प्रसंग-५—वणी जेक समय शेठ दक्षिणमां गया. त्यां झारखंडमां 'मंदार' पर्वत छे. तेना उपर 'मंदार-मधुसूदन' ठाकुर छे. ते पर्वतथी मनुष्य परे तो चोट न लागे, अनजाने. जेने जलुने जेधां पाप कहीने उपरथी परे तो देह छूटै पछी भीजे जन्ममां कामना सिद्ध थाय. जेवुं ते पर्वतनुं माहात्म्य लोकमां प्रसिद्ध छे.

तहां एक बेर श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा करत पधारे हे । तहां एक समय सेठ पुरुषोत्तमदास और एक ब्राह्मण वैष्णव विरक्त संग दोड जने गये । सो उहां रात्रि बहै गई । तातें पर्वत पर सोइ रहे । अर्द्ध रात्र समय एक ब्राह्मण-सिद्ध को रूप धरि श्री-ठाकुरजी आपु आये । तब सेठ बोले नाहीं । उह वैष्णव सेठ के संग को पूछे, जो-तुम कौन हो ? तब उन कह्यो, जो-मैं ब्राह्मण हों, या पर्वत पर रहत हों । तुम कौन हो ? तब वाने कही-हम श्रीबल्लभा-चार्यजी के सेवक हैं । तब उन ब्राह्मण ने कही, हमारे पास मणि है, तुम लेउगे ? तब वैष्णव ने कही, मणि में कहा गुण है ? तब उह ब्राह्मण ने कही, जितनो द्रव्य चाहिए सो मणि सो मिलै । तब उह विरक्त वैष्णव ने कही, जो-मैं कहा करूंगो ? जगदीस सेर चून देइगो । तातें सेठ पुरुषोत्तमदास गृहस्थ हैं, इनको बहोत खरच हैं, इनको देउ । तब ब्राह्मण ने कही, जो-सेठजी को जगावो । तब उह वैष्णव नें जगाइ के सेठजी सो कही, यह मणि लेउ । यासों जितनो द्रव्य चाहिए तितनो होइगो । तब सेठ पुरुषोत्तमदास ने कही, जो-हमारे तो मणि नाहीं चाहिए । तब उह सिद्ध-ब्राह्मण मणि लेकै फिरि गयो । तब वैष्णव ने सेठजी सो कह्यो, तुम मणि क्यों न लिये ? तब सेठ ने कही, तू क्यों न लियो ? पहले तो तोको देत हो ।

त्यां अेकवार श्रीआचार्यल पृथ्वी परिक्रमा करतां पधार्थां हुता. त्यां अेक समय सेठ पुरुषोत्तमदास अने अेक ब्राह्मण वैष्णव विरक्त अने नखु साथे गया. त्यां रात्रि थई गई. तेथी पर्वत उपर सूई रह्या. (पडी) अर्द्ध रात्रिना समय अेक ब्राह्मण-सिद्धल रूप धरी श्रीठाकुरल पोते (त्यां) पधार्थां. त्यारे शेठ प्पाव्या नई. ते वैष्णव शेठनी साथेना (हते, ते) पूछे, के तमे कोणु छे ? त्यारे अेणु क्खुं, के हुं ब्राह्मणु छुं. आ पर्वत उपर रहुं छुं. तमे कोणु छे ? त्यारे तेणु क्खुं, अमे श्रीवल्लभाचार्यलना सेवक छीअे. त्यारे ते ब्राह्मणु क्खुं, अमारी पासे मणिु छे तमे लेशे ? त्यारे वैष्णवे क्खुं, मणिमां शा गुणु छे ? त्यारे ते ब्राह्मणु क्खुं, जेठलुं द्रव्य जेठअे तेठलुं ते मणीथी मणे. त्यारे ते विरक्त वैष्णवे क्खुं, के हुं (मणीने) गुं करीश ? जगदीश सेर चून आपसे. तेथी शेठ पुरुषोत्तमदास गृहस्थ छे अेमने प्पहुं न अर्थ छे. अेमने आपो. त्यारे ब्राह्मणु क्खुं, के शेठने जगाउ. त्यारे ते वैष्णवे जगाडीने शेठने क्खुं, आ मणिु ले. अेनाथी जेठलुं द्रव्य जेठअे तेठलुं थसे. त्यारे शेठ पुरुषोत्तमदासे क्खुं, के अमारे तो मणिु जेठता नथी. त्यारे ते सिद्ध ब्राह्मणु मणिु लहने पाछा गया. त्यारे वैष्णवे शेठने क्खुं, तमे मणिु केम न दीघो ? त्यारे शेठे क्खुं, तं केम न

તવ ઉહ વૈષ્ણવ ને કહી, મૈં વિરક્ત હોં, મણિ કહા કરુંગો? જગદીસ સેર ચૂન જહાં તહાં તેં દેહંગેં । તવ સેઠ ને કહી, તોકોં સેર ચૂન દેહંગેં તો મોકોં દસ સેર હૂ દેહંગેં । કહા જગદીસ કે કલ્હુ ટોટો હૈ? સો બ્રાહ્મણ વાવરે ! મૈં શ્રીઠાકુરજી કો આશ્રય છોહિ મણિ કો આશ્રય કરું ? પાછે સેઠ અપને ઘર આચે ।

ભાવપ્રકાશ—યહ વાર્તા મૈં બહોત સંદેહ હૈં, જો-સેઠ સેવા છોહિ કેં દક્ષિણ ક્યોં ગયે ? इनके कल्लु कामना तो नाँही । सो दक्षिण में उहां मधुसूदन ठाकुर के वहाँ क्योँ गये ? तहां कहत हँ, जो-सेठ के मन में यह आई, जो-दक्षिण में श्रीआचार्यजी को जनम है । सो जनमस्थान के दरसन करि आजं, ताके लिये दक्षिण गये । तब मंदार मधुसूदन ठाकुर सेठजी सों कहे, जो-तुम कृपा करिकें या पर्वत में मेरे पास आओ तो या स्थल को पाप दूरि होय । काहेतें ? मेरे, यहाँ अनेक पापी आवत हँ, सो कोऊ पर्वततेँ महात्म्य सुनिकें गिरत है । सो उनके पाप बहोत भये हँ । तातेँ सगरे तीर्थ गंगाजी आदि भगवदीय के आइवे को मार्ग देखत हँ । तातेँ तुम या देस में आये हो तो पवित्र करो । और तुम आवोगे तो या तीरथ को महात्म्य बढैगो । तिहारो तो कल्लु बिगरे है नाहीं, प्रभु के आश्रयतेँ । या प्रकार

લીધો ? પહુલાં તો તને આપતો હતો. ત્યારે તે વૈષ્ણવે કહ્યું, હું વિરક્ત છું. મણિ (લઇને) શું કરતો ? જગદીશ શેઠ ચૂન (લોટ) બ્યાં ત્યાંથી આપશે. ત્યારે શેઠે કહ્યું, તને શેર ચૂન દેશે તો મને દશ શેર ચૂન પાણુ દેશે. શું જગદીશને કંઈ ટાટા છે ! તેથી હું બ્રાહ્મણ આવરા ! હું શ્રીઠાકુરજીનો આશ્રય છોડી મણીનો આશ્રય કરું ? પછી શેઠ પોતાના ઘર આવ્યા.

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તામાં બહુ સંદેહ છે, કે શેઠ સેવા છોડીને દક્ષિણ ઠેકમ ગયા ? એમને તો કંઈ કામના હતી નહીં ? તો પછી દક્ષિણમાં ત્યાં મધુસૂદન ઠાકુરને ત્યાં ઠેકમ ગયા ? ત્યાં કહે છે, કે શેઠના મનમાં એ આવ્યું કે દક્ષિણમાં શ્રી-આચાર્યજીનું પ્રાકટ્ય છે. તે જન્મ સ્થલનાં દર્શન કરી આવું. તે માટે દક્ષિણ ગયા. ત્યારે મંદાર મધુસૂદન ઠાકુરે શેઠજીને કહ્યું, કે તમે કૃપા કરીને આ પર્વતમાં મારી પાસે આવો, તો આ સ્થલનાં પાપ દૂર થાય. કેમકે ? મારે ત્યાં અનેક પાપી આવે છે. તે કાઠ પર્વતથી મહાત્મ્ય સાંભળીને પડે છે. તેથી એમનાં પાપ ઘણાં થયાં છે. તેથી અધાં તીર્થ ગંગાજી આદિ ભગવદીયના આવવાનો માર્ગ જુએ છે, તેથી તમે આ દેશમાં આવ્યા છો તો પવિત્ર કરો. અને તમે આવશો તો આ તીર્થનું મહાત્મ્ય વધશે. તમારું તો કંઈ ખગડતુ નથી. પ્રભુના આશ્રયથી. એ પ્રકારે મંદાર મધુસૂદને

संदार मधुसूदन कहे । तब सेठजी उह पर्वत पर गये । तब मणि लेइके लुभ्याए । परंतु सेठजी निष्काम हैं, इनको कछु डर नहीं । ताते, जो-ऐसे निष्काम होइ वामें तीर्थ कों पवित्र करिवे को सामर्थ्य होय, तिनको वाधक न परें । और सकामी कों तीर्थ हू वाधक हैं । यातें, जो-उह स्थल के महात्म्य तें पर्वत तें गिरै तब मनोरथ के फल पावें । यह कहि जताये, जो-मनोरथ कामना कछु वस्तु की कामना भई तब पुष्टिमार्ग सों गिरै । और निश्चय मणि न लिये ताकौ अभिप्राय यह जताए, जो-विना मांगे (हू) कछु फल मिलै ताके लियेमें (भी) वाधक अन्य-संबंध होई, तो कामनातें तो निश्चय अन्याश्रय होय । तातें सेठ नें उह विरक्त वैष्णवसों कही, जो-‘वावरे’ ताकौ कारन यह, जो-मणि आदि कछु फल दें आवें, तासों बोलनो नहीं, आपुहि चलयो जाइ । या प्रकार सेठ के द्वाश्रय हुतो ।

वार्ता-प्रसंग ६—और एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु कासी पधारे । सो सेठ पुरुषोत्तमदास के घर उतरे । तब सेठ पुरुषोत्तमदास के ठाकुर श्रीमदनमोहनजी कों पंचामृत स्नान कराइ आपु भोग धरि भोजन किये । तब दासोदरदास हरस्नानी नें श्रीआचार्यजी सों विनती करी, जो-महाराज ! यह कहा ? यहां पंचामृत

क्युं, त्पारे शेठते पर्वत उपर गया. त्पारे मणि लधने लोभ देप्याडेयो. परंतु शेठते निष्काम छे. अमने कंध डर नथी. तेथी, न् अवा निष्काम होय अमनामां तीर्थनि पवित्र करवानु सामर्थ्य होय. तेमने पाधक न थाय. अने सकामीने तीर्थ पणु पाधक छे. अथी न् अ स्थलना महात्म्यथी पर्वत उपरथी पडे, त्पारे मनोरथतुं इल पामे. अे कही न्पुण्युं, डे मनोरथ कामना, होध वस्तुनी कामना थध, त्पारे पुष्टिमार्गथी पडेयो. अने, निश्चय मणि न लीधो. तेना अक्षिप्राय अे न्पुण्यो, डे विना मांगे पणु कंध इल मणे तेना देवाथी (पणु) पाधक अन्यसंबंध थाय, तो कामनाथी तो निश्चय अन्याश्रय थाय. तेथी शेठे अे विरक्त वैष्णवने क्युं, डे ‘वावरा’ तेनुं कारण अे डे मणि आदि कंध इल देवा आवे तेनाथी ओलवुं नही. अेनी मणे आदेयो न्पु. आ प्रकारे शेठने द्वाश्रय हुतो.

वार्ता प्रसंग-६—वणी अेक समय श्रीआचार्यते महाप्रभु कासी पधार्थ. ते शेठ पुरुषोत्तमदासने धरे उतर्था. त्पारे शेठ पुरुषोत्तमदासना ठाकुर श्रीमदनमोहनते पंचामृत स्नान करावी ताते भोग धरी भोजन क्युं. त्पारे दासोदरदास हरस्नानीअे श्रीआचार्यते विनती करी, डे महाराज ! आ शुं ? अही पंचामृत (थी) ठाकुरने

ठाकुर कों न्हुवाए ? तब श्रीआचार्यजी कहे, जदपि यह हमारी आज्ञा तें नाम देत है, तऊ इतनी मर्यादा राखी चाहिए ।

भावप्रकाश—याको आसय यह, जो-सेवक करें ताके सन्मुख शिष्य के पाप आवत हैं, सो गुरु सामर्थ्यवान होइ, सो पाप कों जरावे । सो सेठ जदपि मेरी आज्ञातें नाम देत हैं, भगवदीय हैं, तातें पाप कहा करें याकों ? परंतु तऊ मर्यादा सों सेव्य कों पंचामृत के न्हुवाएतें सेठ के पंचतत्व को शरीर सुद्ध होय, एक यह गौणभाव । और उत्तम भाव यह, जो-सेठ श्रीमदनमोहनजी की श्रीआचार्यजी महाप्रभु के भावसों सेवा करत हैं । तातें श्रीआचार्यजी पंचामृत स्नान कराइ, श्रीगोवर्द्धनधर रूप करि भोग धरत हैं । यह मुख्य भाव जाननो ।

वार्ता-प्रसंग ७—बहुरि एक दिन कामी के राजा के मन में आई, जो-सेठ पुरुषोत्तमदास सों हम मिलिए । सो राजा गंगा पार रहत हतो । तहां ते प्रातःकाल आयो । ता समय सेठजी छोटी परदनी पहरे गोबर संकेलत हते । तब सेठ के लोगन नें सेठ सों कह्यो, जो-तुम सों मिलन कों राजा आवत हैं । सो आछे वस्त्र पहरिकें गादी पर बैठो । तब सेठ कहे, जो-आवन दे । राजा को कहा डर है ? तब राजा आयो । तब सेठ गोबर भरे हाथ राजा के

न्हुवाया ? त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, यदपि ये अमारी आज्ञाथी नाम आवे छे, तोपणु अरुदी मर्यादा राखी नैछे ।

भावप्रकाश—अने आशय अे के, सेवक करे तेना सन्मुख शिष्यनां पाप आवे छे. ते (ने) गुरु सामर्थ्यवान होय तो पापने पाणे ते शैठ यदपि मारी आज्ञाथी नाम दे छे, भगवदीय छे, तेथी पाप शु करे, अमने परंतु तो पणु मर्यादा (दृष्टि) थी सेव्य (स्वर्ण) ने पंचामृत वडे न्हुवायाथी शैठनुं पंचतत्वनुं शरीर शुद्ध थाय अेक आ गौण भाव. अने उत्तम भाव अे, के शैठ श्रीमदनमोहनजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुना भावथी सेवा करे छे तेथी श्रीआचार्यजी पंचामृत स्नान करावी (ते स्वर्णने) श्रीगोवर्द्धनधर रूप करी भोग धरे छे. अे मुख्य भाव अणुवे ।

वार्ता प्रसंग-७—इरी अेक द्विस कारीना राजना मनमां आव्युं के शैठ पुरुषोत्तमदासने अमे भणीअे. ते राज गंगापार रहतेता हते. त्यांथी प्रातःकाल आव्यो. ते समय शैठ नानी परदनी (पोतडी) पहुरीने छाणु अेकहुं करता हता. त्यारे शैठना भाणुसाअे शैठने कहुं, के तमने भणवाने राज आवे छे. ते सारां वस्त्र पहुरीने गादी उपर पेसा. त्यारे शैठ कहे, के आववा दे. राजने शुं उर छे ? त्यारे राज आव्यो, त्यारे शैठ छाणु लरेसा हाथथी राजनी आगण आव्यो. त्यारे, राज

आगे आये । तब राजा चतुर हतो सो कहे, सेठजी ! तुम धन्य हो । या संसार में मान बढ़ाई एक तिहारी छुटी है । तब सेठ ने कही, हम गृहस्थ हैं, घर को काम करवो चाहिए । तब राजा प्रसन्न होइके घर गयो । या प्रकार सेठ कों प्रतिष्ठा की चाह रंचक हू नाहीं । गाय की टहल, सो अपने घर को काम कहे ।

भावप्रकाश—ताको आसय यह, जो—जैसे श्रीठाकुरजी की सेवा जैसे गाय की सेवा । यही घर को काम है । लौकिक वैदिक काम है सो गृहस्थ को काम हैं । या भांति तें सेठ ने कही ।

वार्ता-प्रसंग ८—सो ऐसे सेवा करत जन्माष्टमी आई । तब श्रीआचार्यजी ने नंदरायजी के घर जन्म-उत्सव भयो ता लीला के भाव तें पालना नन्द-महोत्सव किये । तब नंदरायजी, यशोदाजी, गोपी-ग्वाल सों रह्यो न गयो । सो साक्षात् पधारे । नन्द-महोत्सव अनिर्वचनीय भयो । सो दरसन सेठ पुरुषोत्तमदास कों, रुक्मिणी कों, गोपालदास कों भये ।

भावप्रकाश—काहेतें ? ये लीला संबन्धी पात्र हैं ।

पाछें श्रीआचार्यजी ने जसोदाजी गोपीग्वाल सों कहे, जो-या काल में तुम साक्षात् पधारे सो उचित नाहीं । तब सबनने कह्यो,

चतुर हतो ते कहे, श्रेष्ठ ! तमे धन्य छे. या संसारमां मोटाईअक तमारी छुटी छे. त्तारे श्रेष्ठ कछुं, अमे गृहस्थ छीअे, घरतुं काम करवुं जेधअे. त्तारे राजा प्रसन्न थअने घर गयो. या प्रकारे श्रेष्ठने प्रतिष्ठानी याहना रंचक पछु न हती. गायनी टहलने पोताना घरतुं काम कछुं.

भावप्रकाश—अेनो आशय अे, डेअे श्रीठाकुरअनी सेवा अेमज गायनी सेवा, अेज घरतु काम छे. लौकिक वैदिक काम छे, अे अहारातु काम छे. अे प्रकारे श्रेष्ठ कछुं.

वार्ता प्रसंग-८—अेम सेवा करतां जन्माष्टमी आवी. त्तारे श्रीआचार्यअे, नंदरायअना धरे जन्म उत्सव थयो ते लीलाना लावथी पासना नंद-महोत्सव अयो. त्तारे नंदरायअ, यशोदाअ, गोपी ग्यासथी रहवैअुं नही. ते साक्षात् पधार्या. (तथी) नंद-महोत्सव अनिर्वचनीय थयो. ते दर्शन श्रेष्ठ पुरुषोत्तमदासने, रुक्मिणीने, गोपालदासने थयां.

भावप्रकाश—डेअे अे लीला संबन्धी पात्र छे.

पछी श्रीआचार्यअे यशोदाअ, गोपीग्यास, ने कछुं, डे या कामां तमे साक्षात् पधार्या ते उचित नही. त्तारे अेअे कछुं, अ्यां तमे साक्षात् स्वामिनी अे

जहां तुम साक्षात् स्वामिनी रूप वहै उत्सव करो तहां हमसों क्यों रह्यो जाइ? तब श्रीआचार्यजी ने कही, जो (अबसों) हम सब तिहारे भेष धरावेंगे। तिनके भीतर वहै पधारियो। तब कहे, जो-आछो भेष सों पधारेंगे। ता दिन तें श्रीआचार्यजी ने भेष की रीति जन्माष्टमी पें किये। या प्रकार प्रथम ही जन्म-उत्सव सेठ पुरुषोत्तमदास के घर कियो। ता पाछें सेठ पुरुषोत्तमदास नित्य श्रीमदनमोहनजी कों पालने झुलावते। जन्म-उत्सव के भाव में सदा भगन रहते।

वार्ता-प्रसंग ९—और श्रीआचार्यजी के पास वादी बहोत आवें। सो वाद करत संझा वहै जाय। सो आपुके भोजन बिना किये वैष्णव महाप्रसाद लेइ नाहीं। तब श्रीआचार्यजी पत्रावलंबन ग्रन्थ करिकें एक कागद पर लिखे, एक वैष्णव कों दिये, जो-विश्वेस्वर महादेवजी के देवालय में लगाइ भीति सों, यह कहियो-जितने पंडित सब, ब्राह्मण वादी आवें सो संदेह होइ, सो यामें देख लेउ। जो उत्तर न पावो तो श्रीआचार्यजी पास आइयो। तब वैष्णव 'पत्रावलंबन' ग्रन्थ ले जाइ महादेव के पास भीति में लगाइ, सगरे मायावादी तो तहां आवें ही, तिनसों वैष्णव ने कही, जो-संदेह श्रीआचार्यजी सों पूछनो होइ सो याकों बांचि लेउ। सो सबन कों

थरुँ उत्सव करो त्यां अभाराथी केम रहेवाय? त्यारे श्रीआचार्यलये कहुं, के (हुवेथी) अमे अधा तभारे वेष धरावीशुं, तेमना अंदर (भावइपथी) पधारजे. त्यारे कहे, के साइं, वेष द्वारा पधारीशुं, ते द्विसथी श्रीआचार्यलये वेषनी रीति जन्माष्टमी उपर करी. या प्रकारे प्रथम ज जन्म उत्सव सेठ पुरुषोत्तमदासना घरे कर्यो. ते पछी सेठ पुरुषोत्तमदास नित्य श्रीमदनमोहनलने पालने झुलावता. जन्म महोत्सवना भावमां सदा भगन रहेता.

वार्ता प्रसंग-९—पणी श्रीआचार्यलनी पासे वादी घण्टा आवे. ते वाद करतां सांज थरुँ जय. तेथी आपना लोअन कर्या विना वैष्णव महाप्रसाद ले नही. त्यारे श्रीआचार्यलये 'पत्रावलंबन' ग्रंथ करीने अक कागण उपर (तेने) लप्यो. (पछी) अक वैष्णवने आय्यो, के विश्वेश्वर महादेवलना देवालयमां लगाडी लीतथी, अम कहेजे, (के) नेहला पंडितो, शैव, ब्राह्मणो, वादी आवे ते संदेह होइ तो आमां नेह लो. जे उत्तर न भजे तो श्रीआचार्यल पासे आवजे. त्यारे (ते) वैष्णव 'पत्रावलंबन' ग्रंथ लई जई महादेवनी पासे लीतमां लगाडी, अधा मायावादी तो त्यां आवता ज हुता, तेमने वैष्णवे कहुं, के संदेह श्रीआचार्यलने पूछयो

ઉત્તર મિલ્યો, સવ સુપ વ્હૈ રહે। ઔર કહે, જો-શ્રીઆચાર્યજી ઈશ્વર હૈં, इतने छोटे ग्रन्थ में हजारन मायावादीन कों निरुत्तर किये।

આવપ્રકાશ—મહાદેવજી કે પાસ લગાડવે કૌ આસય યહ હૈ, જો-હમારો કિયો તિહારે इष्ट महादेव कों प्रमाण है। तो तुमकों जीतने कितनीक बात है। और इतने पर या कासी के राजा विस्वेश्वर हँ। उनके पास यह झगरो डारे हँ। खोटे खरे के महादेव साक्षी हँ। अब जो न मानोगे तो तुम कों महादेव दंड देइंगे। या प्रकार महादेव सों कहवाइ सगरे पंडितन कों जीते। जैसे पुष्टिमागीयन कों इष्ट ब्रजभूमि और श्रीकृष्ण तैसे सैवकों इष्ट कासी, महादेव। सो कासी में महात्म्य दंड जताए विना जगत में भक्तिमार्ग को विस्तार नहोय, वैष्णवन कों पाछे ते सैव द्वेष करि दुख देइ। तातें श्रीआचार्यजी कासी में या प्रकार कौ महात्म्य पत्रावलंबन द्वारा जताए, सबकों। यातें, जो-कोई पंडित वादी काहू वैष्णवसों बोलि न सके।

વાર્તા-પ્રસંગ ૧૦—ઔર एक सेठ के सगे खंबंधी में माया लगत हो। सो सेठजी सों कहे नित्य, जो-गया कों चलौ तो मैं तिहारे संग चलौं। तब सेठ कहे, अबकास पाइके चलेंगे। सो चैत महिना आयो। तब उह मामा ने बहोत बहोत आग्रह कियो,

હુાય તેા આને વાંચી લો. તેમાં બધાનો ઉત્તર મળ્યો. બધા સુખ થઇ ગયા. અને કહે, કે શ્રીઆચાર્યજી ધર્મર છે. આટલા નાના અંથમાં હજારો માયાવાદીઓને નિરુત્તર કર્યા.

આવપ્રકાશ—મહાદેવજીની પાસે લગાડવાનો આશય એ છે, કે અમારો કર્યો તમારા ઇષ્ટ મહાદેવને પ્રમાણ છે. તે તમને જીતવા તે કેટલીક વાત છે? અને એટલા ઉપર આ કાશીના રાજા વિશ્વેશ્વર છે, તેમની પાસે આ ઝઘડો નાખ્યો છે. ખોટા-ખરાના મહાદેવ સાક્ષી છે. હવે એ નહીં માનો તે તમને મહાદેવ દંડ દેશે. એ પ્રકારે મહાદેવથી કહેવડાવીને બધા પંડિતોને જીત્યા. જમ પુષ્ટિમાગી યોનાં ઇષ્ટ બ્રજભૂમિ અને શ્રીકૃષ્ણ તેમ શૈલીના ઇષ્ટ કાશી (ને) મહાદેવ, તેથી કાશીમાં માહાત્મ્ય દંડ જણાવ્યા વિના જગતમાં ભક્તિમાર્ગનો વિસ્તાર ન થાય. વૈષ્ણવોને પાછળથી શૈવ દ્રેષ કરી દુઃખ દે, તેથી શ્રીઆચાર્યજીએ કાશીમાં આ પ્રકારતું માહાત્મ્ય પત્રાવલંબન દ્વારા જણાવ્યું, બધાને. (તે) એથી કે કોઇ પંડિત વાદી કોઇ વૈષ્ણવથી બોલી ન શકે.

વાર્તા પ્રસંગ-૧૦—અને એક શેઠના સગા સંબંધીમાં માયા લાગતો હતો. તે શેઠને કહે નિત્ય, કે, ગયા ચાલો, તે હું તમારી સાથે ચાલું. ત્યારે શેઠ કહે, નવરાશે ચાલીશું. તે શેઠ મહિના આવ્યા, ત્યારે તે મામાએ બહુ બહુ આગ્રહ કર્યો કે, ગયા

जो-गया चलो । तब सेठ ने दोड़ गाड़ी की तैयारी कराई । एक गाड़ी पर राजभोग पाछे सेठ चले । सो कोस पांच छह गये । तब एक बेंगन को खेत (आयो), तामें ते खेतवारे नें सुंदर बेंगन चीनिकें बड़ो टोकरा भरि के धरयो, सो सेठ की दृष्टि परी । तब सेठजी नें गाड़ी ठाड़ी कराई । यह विचारे, जो-श्रीमदनमोहनजी के सेनभोग लायक साग होइगो । तब वासों कहे, जो-यह बेंगन को कहा लेइगो ? तब उह कह्यो, एक रुपैया लगेगो । तब सेठ नें रुपैया दे बेंगन सब गाड़ी में धरि गाडीवान सों कहे, बेगे गाड़ी पाछें कों घर कों हांकि, तोकों एक रुपैया देउंगो । इहां श्रीमदनमोहनजी रुकिमिनी सों कहें, बेग तू उठि कै न्हाइ के पूरी करि, सेठ साक लेके आवत हैं । तब रुकिमिनी ने कही, महाराज ! सेठ तो गया कों गये हैं । तब श्री-ठाकुरजी ने कही, सेठ गया करि आयो, उनकी गया पूरण भई । तू उठि के पूरी बेगे करि । तब रुकिमिनी न्हाइ के, मैदा घर में सिद्ध हतो, सो पूरी करन लागी । पहर एक रात्रि गई हती । कछुक पूरी बाकी रही, तब सेठ घर पर आई पुरारे । तब गोणलदास ने किवाड खोलि दिये । तब सेठ रुकिमिनी सों पूछे, कहा समय है ? तब रुकिमिनी ने कही, पूरी करी हैं, साक नाहीं है । तब सेठजी ने कही, मैं साक लायो हों । तब रुकिमिनी ने कही, बेगे सँवारि देउ,

यातो. त्पारे शेठ भे गाडीनी तैयारी करावी. अक गाडी उपर राजभोग पछी शेठ यात्या. ते कोस पांच छ यात्या त्पारे अक रींगणुतुं भेतर (आव्यु). तेमांथी भेतर-वाणाअे सुंदर रींगणुं वीणुनि मोठा टोकरे भरिनि धर्या. ते शेठनी दृष्टि पडी. त्पारे शेठअे गाडी उली रभावी. अे विचार्युं, के श्रीमदनमोहनअेना सेनभोग लायक शाक थशे. त्पारे तेने कछुं, के आ रींगणुतुं शुं लधश ? त्पारे ते यात्या, अक इपीअे लागशे. त्पारे शेठ इपीअे आपी रींगणुं अधां गाडीमां धरी गाडीवानने कहे, न्हदी गाडी पाछण घर तरक लुंक. तने अक इपैये आपीश. अह्नी श्रीमदन-मोहनअे इकमणुनि कहे, तू न्हदी उठीने रानान करीने पूरी कर शेठ शाक लधने आवे छे. त्पारे इकमणुअे कछुं, महाराज ! शेठ तो गयाअे गया छे. त्पारे श्रीठकुरअे कछुं, शेठ गया करी आव्यो. अेमनी गया पूरण थध. तू उठीने पूरी न्हदी कर. त्पारे इकमणु नलधने मैदा, घरमां सिद्ध हुतो ते पूरी करवा लागी. प्रहर अक रात्रि गध हुती. थोडीक पूरी आडी रह्नी त्पारे शेठ घर उपर आवीने थोडार्या. त्पारे गोपालदासे कमाउ थोडी दीधां. त्पारे शेठ इकमणुनि पूछे, शा समय छे ? त्पारे इकमणुअे कछुं, पूरी करी छे, शाक नथी. त्पारे शेठअे कछुं, हुं शाक लाव्यो छुं.

धोरी स्त्री पूरी रही है। तब सेठजी और गोपालदास मिलिके बेंगन सँवारि दिये। रुकमिनी ने सामग्री सिद्ध करी। सेठहू न्हाइके भोग धरे। तब सेठ गोपालदास सों कहे, दस पांच वैष्णव वेगे मिले सो लिवाइ लाउ। तब गोपालदास वैष्णवन कों बुलाइ लाये। इतने समय भयो भोग सराए। सेन आरती करि श्रीठाकुरजी कों पोढ़ाए। अनौसर कराइ वैष्णवन सों मिलिके महाप्रसाद लिये। पाछें उह माझा कछुक दिन में गया करि आयो। तब कछो, तुम पाछे तैं क्यों फिरि आये ? तब सेठने कही, मोकों कहा पूछत हो, मेरे घरमें कछु काम हतो। तातें फिरि आयो।

भावप्रकाश—या वार्ता में यह सिद्धांत भयो, जो—सामग्री उत्तम देखिये तामें अपने प्रभु को स्मरण करिये। वाकों बहोत मोल में (खरीदिये), झगरो न करिये। अपने सामर्थ्य प्रमान लीजिये। और भगवत सेवा रूप यह धर्म के आगे सगरे वैदिक धर्म तुच्छ जानिये। तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होंइ। सेठ की प्रीति अर्थ दूसरे फिरि सेनभोग श्रीठाकुरजी अरोगे। तातें स्नेह है सोई प्रभु प्रसन्नता को कारन है।

सो वे सेठ पुरुषोत्तमदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता को पार नहीं, सो कहाँ ताई कहिए।

* * *

त्यारे इकभणीअे इछुं, जददी सुधारी हो. थोडी पूरी (इरवी) पाडी छे. त्यारे शेठअने गोपालदासे मणीने रींगणां सुधारी दीधां. इकभणीअे सामग्री सिद्ध करी. शेठे पणु न्हाइने लोग धर्या. त्यारे शेठ गोपालदासने इछे, दश-पांच वैष्णुवे जददी भणे तेमने भोलावी लावे. पछी गोपालदास वैष्णुवेने भोलावी लाव्या. अेइलाभां समय थयो, लोग सराव्या. सेन आरती करी श्रीठाकुरअेने पोढाव्या. अनौसर करावी वैष्णुवेने मणीने महाप्रसाद लीधो. पछी ते भाभो इेइलाक दिवसभां गया करी आव्या. त्यारे इछुं, तमे पाछणथी केम इरीने पाछा आव्या ? त्यारे शेठे इछुं, भने शुं पूछा छे. मारा घरभां इंछ काम उठुं. तेथी इरी आव्या.

भावप्रकाश—या वार्तासां अे सिद्धांत थयो इे, सामग्री उत्तम जेधअे. तेभां पोताना प्रभुनुं स्मरण करवु. तेने धर्या भूदयथी (परीदवुं), अधेडो न करवो. पोतानी सामर्थ्य प्रमाणे लधअे. अने भगवत्सेवा रूप या धर्मनी आगण अधा वैदिक धर्मो तुअअे अणीअे त्यारे श्रीठाकुरअे प्रसन्न थाय. शेठनी प्रीति भाटे इरी जीअे वार सेनभोग श्रीठाकुरअे आरोग्या. तेथी स्नेह छे तेज प्रभु प्रसन्नतानु कारणे छे.

ते शेठ पुरुषोत्तमदास श्रीआचार्यअे महाप्रभुना अेवा कृपापात्र भगवदीय हता. तेमनी वार्ताको पार नहीं, ते अ्यां सुधी इडीअे.

* * *

मंगाइ दियो। सो रुकिमिनी पहर रात्रि पिछली सों उठि नित्य नेगतेँ अधिक सामग्री करें। सो मंगलातेँ राजभोग पर्यन्त अरोगावे। पाछे उत्थापन के पहर एक पहले न्हाइ सामग्री करें। सो उत्थापन तें सयन पर्यंत अरोगावे। ऐसे करत कितनेक दिन बीते। तब सेठ नें रुकिमिनी सों पूछयो, जो-कार्तिक न्हाते तो तोकों कबहू देखयो नाहीं, तू गंगाजी कौन समय न्हाति है? तब रुकिमिनी कही, मेरे कार्तिक न्हाइवे को कहा काम है? जाकों कछू कामना होइ सो कार्तिक न्हाइ। मैं तो याही भांति न्हात हों। तब सेठ पुरुषोत्तमदास बहुत प्रसन्न भये।

भावप्रकाश—तहाँ यह संदेह होइ, जो-रुकिमिनी ने कार्तिक न्हाइवे को नाम लेके सेठ पास सामग्री क्यों लीनी, अरोगाइवे को नाम लेती तो कहा सेठ सामग्री न देते? तहाँ कहत हैं, जो-जैसे कुमारिकान को मन श्रीठाकुरजी सों लाग्यो तब न्यारे मनोरथ (कियो), (सो) जसोदाजी सों कह्यो चाहिये। तब जसोदाजी सों कहे; जो-तुम कहो तो हम कात्यायनी देवी को पूजन करें, मागसिर महिना, श्रीयमुनाजी स्नान। तब श्रीजसोदाजी ने श्रीनंदरायजी सों कहि न्यारी सामग्री पूजन की घी खँड सब कुमारिकान कों दिये। तब कात्यायनी देवी को मिस करी श्रीयमुनाजी को पूजन कियो। काहेतें? श्रीठाकुरजी श्रीयमुनाजी एक

ते इकभण्णी प्रहुर रात्रि पाछलीअे उठी नित्य नेक (अंधाए)थी अधिक सामग्री करे. ते मंगलाथी राजभोग पर्यन्त आरोगावे. पछी उत्थापनना अेक प्रहुर पछेसां न्हाधने सामग्री करे. ते उत्थापनथी शयन पर्यंत आरोगावे. अेभ करतां केरदाक द्विवस वीत्या. त्यारे शेठ इकभण्णीने पूछयुं, के कार्तिक न्हातां तो तने कहीये जेध नहलीं. तू ग गाल कया समये न्हाय छे? त्यारे इकभण्णी कहे, मारे कार्तिक न्हावानुं शुं काम छे? जेने कंध कामना ह्येय ते कार्तिक न्हाय. हुं तो आ प्रकारे न्हाउं छुं. त्यारे शेठ पुरुषोत्तमदास अहु प्रसन्न थया.

भावप्रकाश—सां अे संदेह थाय के इकभण्णीअे कार्तिक न्हावानुं नाम लधने शेठ पासे सामग्री केम लीधी? आरोगाववानुं नाम लेती तो शुं शेठ सामग्री न आपता? सां कहे छे, के जेम कुमारिकानुं मन श्रीठाकुरअथो लाग्यु, सारे अलग मनोरथ (कर्यो). ते यशोदाअथी कहेवुं जेधअे. सारे यशोदाअने कहे, के तमे कडे तो अमे कात्यायनी देवीनु पूजन करीअे. मार्गशीर्ष महिने, श्रीयमुनाअनु स्नान. त्यारे श्रीयशोदाअे श्रीनंदारायअने कहीने न्यारी सामग्री पूजनी घी-पांड अधु कुमारिकाअेने आप्यु. त्यारे कात्यायनी देवीनुं भिष (अहाना) करीने श्रीयमुनाअनु

ही हैं। तातें “ पुरुषोत्तमसहस्रनाम ” में श्रीआचार्यजी कहे हैं, “ कात्यायनी व्रत व्याज सर्वभावाऽऽश्रिताङ्गनः ”। कात्यायनी व्रत को व्याज, जो-मिस करि सर्व प्रकार को भाव सगरे अंग में आवेस करि प्रभुको आश्रय कियो, तैसे ही रुकिमिनी ने हू कार्तिक, मार्गसिर, माह, वैशाख इत्यादिक को नाम ले व्रजभक्तन के भाव पूर्वक सेवा करी। यामें यह जताये, जैसे व्रजभक्तन के भाव की खबरि काहुकों न परी तैसे रुकिमिनी के भाव की खबरि काहुकों न परी। और की कहा ? सेठ पुरुषोत्तमदास हू रुकिमिनी के हृदय के भावकों पहोंचि न सकते, ऐसो अगाध हृदय हतो।

वार्ता-प्रसंग ३—बहुरि एक समय रुकिमिनी की देह असक्त भई। तब रुकिमिनी ने कह्यो, अब देह छूटे तो आछो। जा देह तें भगवान की सेवा न भई सो देह कौन काम की ? पाछें भगवत् इच्छा तें देह छूटी। तब काहु वैष्णव ने श्रीगुसाईजी सों कही, महाराज ! रुकिमिनी ने गंगा पाई। तब श्रीगुसाईजी कहे, जो-ऐसे मति कहो। ऐसे कहो, जो-गंगाजी ने रुकिमिनी पाई।

भावप्रकाश—काहेतें, जो-गंगाजी किनारे तो अनेक जीव देह छोड़त हैं। परन्तु गंगाजी कों ऐसी भगवदीय कहाँ मिलै ? या प्रकार श्रीमुखतें कहें। ताको कारन यह, जो-भगवदीय गंगाजी आदि तीरथ कों पवित्र करत हैं। तातें

पूजन कर्तुं। डेभके श्रीडाकु२७ श्रीयमुना७ अेक ७ छे। तेथी ‘ पुरुषोत्तम सहस्रनाम ’ मां श्रीआचार्य७ कहे छे, ‘ कात्यायनीव्रतव्याज सर्वभावाऽऽश्रितांगनः ’ कात्यायनी व्रतनुं व्याज ७ मिष करी सर्व प्रकारनो भाव अधा अंगमां आवेश करी प्रभुनो आश्रय कर्तुं। तेज प्रकारे इकभणीअे पणु कार्तिक, मार्गशीर्ष, महा, वैशाख धत्या-दिकनुं नाम लध व्रजभक्तोना भावपूर्वक सेवा करी। अेमां अे अताव्युं, ७म व्रजभक्तोना भावनी अपर डाधने न पडी तेम इकभणीना भावनी अपर डाधने न पडी। भीजने तो शुं ? सेठ पुरुषोत्तमदास पणु इकभणीना हृदयना भावने पहांथी न शकता अेवुं अगाध हृदय .हुतुं।

वार्ता प्रसंग-३—इरी अेक समय इकभणीनी देह अशक्त थध। त्तारे इकभणीअे कहुं, हुवे देह छूटे तो साइं ! ७ देहथी भगवाननी सेवा न थधते देह कोण कामनी ? पछी भगवद् धन्धाथी देह छुटी। त्तारे कोध वैष्णवे श्रीगुसांथलने कहुं, महाराज ! इकभणीअे गंगा भेजवी। त्तारे श्रीगुसांथल कहे, अेम न कहे। अेम, कहे, के गंगाअे इकभणी भेजव्या।

भावप्रकाश—डेभके, गंगाअेने किनारे तो अनेक अेवो देह छोडे छे। परतु गंगाअेने अेवी भगवदीय कथां भणे ? अे प्रकारे श्रीमुअथी कहुं। तेनुं कारण

नन्ददासजी ने (ह) पंचाध्याई में गायो है—“ गंगादिकन पवित्र करन अवनि पर डोलें ” । भगवदीय को प्रागद्य जीवन के उद्धारार्थ ही है । जैसे भगवान् को प्रागद्य तैसेही भगवदीय को प्रागद्य हैं । सो ‘ पुष्टिप्रवाहमर्यादा ’ ग्रंथ में श्रीआचार्यजी भगवदीय को स्वरूप लिखे हैं—

“ तस्माज्जीवाः पुष्टिमार्गे भिन्ना एव न संशयः ।

भगवद्रूपसेवार्थं तत्सृष्टिर्नान्यथा भवेत् ॥१२॥

स्वरूपेणावतारेण लिंगेन च गुणेन च ।

तारतम्यं न स्वरूपे देहे वा तत्क्रियासु वा ॥१३॥

पुष्टिमार्गीय जीव यह संसार के जीवन तें भिन्न हैं, यामें संशय नहीं । भगवान को रूप ही हैं । भगवान की सेवा ही के अर्थ जगत में पुष्टि धर्म प्रगट करिवे के लिये जन्मे हैं । भगवान के स्वरूप में, भगवान के अवतार में, भगवान के जैसे गुन हैं, भगवान की जैसी क्रिया हैं, तैसे ही भगवदीय में लक्षण हैं । तातें भगवान में अरु भगवदीय में तारतम्य नहीं हैं । या प्रकार श्रीगुसाईंजी भगवदीय के गुण सब रुक्मिणी में कहै ।

सो यह रुक्मिणी श्री आचार्यजी महाप्रभुन की सेवक ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही । तातें इनकी वार्ता को पार नहीं, सो कहां ताई कहिए ।

✽

✽

✽

એ કે, ભગવદીય ગંગાઈ આદિ તીર્થોને પવિત્ર કરે છે તેથી નંદદાસજીએ (પણ) પંચાધ્યાયીમાં ગાયુ છે, ‘ગંગાદિકન પવિત્ર કરન અવની પર ડોલે’ ભગવદીયનું પ્રાકટ્ય જીવોના ઉદ્ધારાર્થે જ છે. જેમ ભગવાનનું પ્રાકટ્ય તેમજ ભગવદીયનું પ્રાકટ્ય છે. તે “પુષ્ટિપ્રવાહમર્યાદા” ગ્રંથમાં શ્રીઆચાર્યજી ભગવદીયનું સ્વરૂપ લખે છે—

“ તસ્માજ્જીવાઃ પુષ્ટિમાર્ગે ભિન્ના એવ ન સંશયઃ ”

પુષ્ટિમાર્ગના જીવ આ સંસારના જીવોથી ભિન્ન (બુદ્ધ) છે. તેમાં સંશય નથી. ભગવાનનું રૂપ જ છે. ભગવાનની સેવાને માટે જ જગતમાં પુષ્ટિધર્મ પ્રકટ કરવાને અર્થે જન્મ્યા છે. ભગવાનના સ્વરૂપમાં, ભગવાનના અવતારમાં, ભગવાનના જેવા ગુણ છે, ભગવાનની જેવી ક્રિયા છે, તેવાં જ ભગવદીયોમાં લક્ષણ છે. તેથી ભગવાનમાં અને ભગવદીયમાં તારતમ્ય નથી. આ પ્રકારે શ્રીગુસાઈજી ભગવદીયના ગુણ બંધા રૂકમણીમાં કહે.

આ રૂકમણી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુની સેવક એવી કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતી. તેથી એની વાર્તાનો પાર નહી, તે ક્યાં સુધી કહિએ ?

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, सेठ पुरुषोत्तमदास के बेटा गोपालदास, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सेठ पुरुषोत्तमदास लीला में इन्दुलेखा श्रीस्वामिनीजी की सखी हैं, ताकी सखी गायनकला सो ये हैं । ब्रजभक्तन को विरह संयुक्त गायन तिनकी कला गोपालदास में झलकत है । यह कहि यह जताए, जो-गोपालदास विरह में सदा मगन रहतें ।

वार्ता-प्रसंग १—सो गोपालदास सों श्रीमदनमोहनजी सानु-भाव हते, सो जो बहिए सो मांगि लेते । ऐसे सदैव कृपा करते । और गोपालदास कीर्तन बहुत करते । सो एक समय होरी के दिनन में गोपालदास कों बहोत विरह भयो । होरी के भाव संयोग रस की विस्मृति बहे गई । तब नित्य जैसे ब्रजभक्त 'वेणुगीत' 'जुगलगीत' गावत हैं, ता भावसों दोइ कीर्तन 'ललना' कहिकें गाये ।

भावप्रकाश—सो ललना को अर्थ यह, जो-ब्रज की ललना या प्रकार विरह में गान करति हैं ।

सो ललना गावत ही श्रीठाकुरजी लीला सहित दरसन दिखे । तब गोपालदास बलिहारी लिये । तातें गाये, जो- "मदन-मोहन के वारनैं बलि बलि दास गोपाल ।"

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुलना सेवक सेठ पुरुषोत्तमदासना बेटा गोपालदास, तेनी वार्ताना भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—सेठ पुरुषोत्तमदास लीलामां इन्दुलेखा श्रीस्वामिनीजी सखी छे, तेनी सखी गायनकला ते आ छे, ब्रजभक्तना विरह संयुक्त गायन तेनी कला गोपालदासमां जणके छे, अे कहीअे म गणायुं, के गोपालदास विरहमां सदा मगन रहेता.

वार्ता-प्रसंग १—ते गोपालदासने श्रीमदनमोहनजी सानुभाव हुता, जे जेधअे ते मांगी लेता, अेवी सदैव (सदा) कृपा करता, अने गोपालदास कीर्तन अहु करता, ते अेक समय होरीना दिवसामां गोपालदासने अहु विरह थयो, होरीना भाव (रस) संयोगरसनी विस्मृति थई गई, त्तारे नित्य जेम ब्रजभक्त वेणुगीत, जुगलगीत गाय छे, ते भावसों जे कीर्तन 'ललना' कहीने गायां.-

भावप्रकाश—ते 'ललना' ना अर्थ अे, के ब्रजनी ललना अे प्रकारे विरहमां गान करे छे.

ते ललना गातां ज श्रीठाकुरजी लीलामां सहित दर्शन दीयां, त्तारे गोपालदासने बलिहारी लीधी, (ओवारी गया), तेथी गाथुं, के- "मदनमोहनने वारने अलि अलि दास गोपाल"

वार्ता-प्रसंग २—सो कितनेक दिन पाछे गोपालदास की देह असक्त भई। तब भगवत् नाम को उच्चार करते। तब श्रीमदन-मोहनजी आप हुंकारी देते, एसी कृपा करते। ऐसे करत रात्रि को गोपालदास को नींद आवती, फेरि चौंकि के विरह में पुकारते। श्रीमदनमोहनजी ! तब मंदिर सों श्रीठाकुरजी कहते, क्यों पुकारते हो ? मैंतो तेरे जिकट हों। तब गोपालदास कहते, महाराज ! आपु क्यों जागत हो ? मेरो तो पुकारिवे को सुभाव परयो है। तब मदनमोहनजी कहते, मोसों तेरो विरह सह्यो नाहीं जात। तातें तेरो समाधान करत हों। या प्रकार गोपालदास मंदिर को अरु चौक को ताला लगाइ चौखटि पर माथो धरि के, एक वस्त्र बिछाइ विरह में परे रहते। शरीर के सुख की खबरि ही नाहि रहती। तातें विरह के कीर्तन बहुत गाये हैं।

और श्रीआचार्यजी के ग्रन्थ सुबोधिनी, निबंध, श्रीगुसाईंजी के रहस्य ग्रन्थ सो सब गोपालदास अनोसर में देख्यो करते। समय पर भगवत् सेवा करते। व्यौपार-बनिज लौकिक वैदिक सर्व त्याग करि लीलारस में मगन रहतें। सो श्रीगुसाईंजी गोपालदास ऊपर बहोत प्रसन्न रहते। काहेतें, जो-सेठ पुरुषोत्तमदास को परिवार

वार्ता प्रसंग-२—ते डेउलाक द्विपस पछी गोपालदासनी देह अशक्त थई। त्यारे लगवत्नामने उच्चार करता। त्यारे श्रीमदनमोहनजी आप हुंकारी देता, एवी कृपा करता। एभ करतां रात्रिये गोपालदासने नींद आवती। पछी योंकीने विरहमां पुकारता ' श्रीमदनमोहनजी ' त्यारे मंदिरमांथी श्रीठाकुरजी कहेता, केम पुकारे छे ? हुं तो तारी पासे छुं। त्यारे गोपालदास कहेता, महाराज ! आप केम जगो छे ? भारे तो पुकारवाने स्वभाव पज्यो छे। त्यारे श्रीमदनमोहनजी कहेता, मने तारो विरह सही शकतो नथी। तेथी ताइं समाधान करूं छुं। ए प्रकारे गोपालदास मंदिरतुं अने चौकतुं तालुं लगाडी चौखटि एपर माथुं धरीने एके वस्त्र बिछावी विरहमां पज्या रहेता। शरीरना सुखनी अपर न रहती। तेथी विरहनां कीर्तन भहु गायो छे।

अने श्रीआचार्यजीना ग्रन्थ सुबोधिनी, निबंध, श्रीगुसाईंजीना रहस्य ग्रन्थ ते अथा गोपालदास अनोसरमां जेया करता। समय एपर लगवत्सेवा करता। वेपार वाणिज्य लौकिक वैदिक अथुं त्याग करी लीला रसमां मगन रहेता। तेथी श्रीगुसाईंजी गोपालदास एपर भहु न प्रसन्न रहेता। केभके, ते शैठ पुरुषोत्तमदासने परिवार एवे न जेथये (एभ कहेता)। विरहनी दशा अनिर्वचनीय छे। तेथी गोपालदासनी

ऐसो ही चाहिये । विरह की दसा अनिर्वचनीय है । तातें गोपालदास की वार्ता को विस्तार नाहीं किये । सेठ पुरुषोत्तमदास के परिवार सहित वार्ता एक । या प्रकार वैष्णव ग्यारह भये, परन्तु परिवार सहित वार्ता एक गिनवे तें वैष्णव छै भये । वार्ता ॥६॥

✽ ✽ ✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक रामदासजी सारस्वत ब्राह्मण, पूरबमें रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो ए रामदासजी लीला में राधा सहचरी की सखी है । 'प्रेम मंजरी' इनको नाम है । ए कुमारिका के जूथ में है ।

सो रामदास के पिता के पास द्रव्य बहोत हतो । परन्तु पुत्र नाहीं हतो । सो सूर्य की उपासना बहोत करी । तब सूर्य प्रसन्न होइ के एक पुत्र दियो । सो रामदासजी बरस आठ के भये तब पिता ने विवाह रामदास को कियो । पाछें देह छोड़ी । सो रामदास को एक मर्यादामार्गीय वैष्णव को सत्संग भयो । तब मर्यादामार्गीय वैष्णव ने कही, कोई तीर्थ करे हो ? तब रामदासजी कहे, पिता की देह छूटी, अब घर छोड़ि के कैसे जाँइ ? तब वा मर्यादामार्गीय वैष्णव ने कही, भलो ! गंगासागर तो तिहारे निकट है । यहां तो न्हाइ आवो, चलो मैं संग

वार्तानो विस्तार नथी क्यो. सेठ पुरुषोत्तमदासना परिवार सहित वार्ता अेक, या प्रकारे वैष्णुव अग्यार थया परन्तु परिवार सहित वार्ता अेक गणुवाथी वैष्णुव छ थया. वार्ता ॥ ६ ॥

✽ ✽ ✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुना सेवक रामदासजी, सारस्वत ब्राह्मण, पूरबमां रहेता, तेमनी वार्ताना भाव कहे छे—

भावप्रकाश—अे रामदासजी लीलामां राधा सहचरीनी सखी छे. प्रेम-मंजरी अेमनुं नाम छे. अे कुमारिकाना युथमां छे, ते रामदासना पितानी पासे द्रव्य धणुं हतुं. परन्तु पुत्र न हतो. ते, सूर्यनी उपासना अहु करी. तेथी सूर्ये प्रसन्न थधने अेक पुत्र आप्यो. ते रामदासजी बरस आठना थया त्यारे पिताने रामदासना विवाह क्यो. पछी देह छोडी. ते रामदासने अेक मर्यादामार्गीय वैष्णुवना सत्संग थयो. त्यारे मर्यादामार्गीय वैष्णुवे क्युं, क्यो तीर्थ क्युं छे ? त्यारे रामदासजी कहे, पितानी देह छूटी. हुवे घर छोडीने केवी रीते अय ? त्यारे ते मर्यादामार्गीय वैष्णुवे क्युं, भलो, गंगासागर तो तारी पासे छे. अहीं तो न्हाइ आवो.

वार्ता-प्रसंग १—सो रामदासजी अष्ट-प्रहर अपरस में रहते । जलपान बीड़ा अपरस में लेते ।

भावप्रकाश—यह कहि यह जताए, जो-लौकिक काहू सों बोलते नहीं । ब्यौहार-बनिज कछु न करते, स्त्रीसंग हू छोड़े ।

या प्रकार भगवत सेवा करते । श्रीठाकुरजी को नेगहू बहोत हतो । द्रव्य हू बहोत हतो । सो कछुक दिन में द्रव्य थोरो सो आइ रह्यो ।

भावप्रकाश—ताको अभिप्राय यह, जो-रंच द्रव्यको अहंकार हतो । सो अन्याश्रय श्रीठाकुरजी कों छुड़ाय दैन्य करनो है । तातें द्रव्य थोरो सो रह्यो ।

तब रामदास ने बिचारयो, जो-कछु द्रव्य को उपाइ करयो चहिए । तब पुरब देस में पटवस्त्र बुनावत हैं तिनकों तांती कहत हैं । सो तांतीन कों व्याज द्रव्य दिये । सो व्याज बहोत आवन लाग्यो, तब रामदासजी के मन में कछुक हरख भयो । तातें श्रीठाकुरजी आज्ञा किये, जो-तू मोकों तांतीन ऊपर राख्यो ?

भावप्रकाश—ताको असय यह, जो-मैं भाव-प्रीति सों रहत हों । सो पहले द्रव्य पर राख्यो । जो-द्रव्य घट्यो तब व्याज पर राख्यो । जो-तांती सों

वार्ता प्रसंग-१—ते रामदासल आठे पहार अपरसमां रहेता जलपान भीड़ा अपरसमां लेता ।

भावप्रकाश—अे कही अेम जणान्युं के लौकिक डायथी भोलता नहीं । व्यवहार, वाणिज्य, कंध न करता. स्त्री संग पणु छोडयो.

आ प्रकारे भगवतसेवा करता. श्रीठाकुरलनो नेक पणु धर्यो हुतो. द्रव्य पणु धर्यो हुतुं. ते केटलाक द्विसमा द्रव्य थोडुंक आवी रह्युं.

भावप्रकाश—तेनो अभिप्राय अे, के रचक द्रव्यनो अहकार हुतो. ते श्रीठाकुरलने अन्याश्रय छोडावीने दीनता करवी छे. तेथी द्रव्य थोडुंक रह्युं.

त्यारे रामदासे विचार कर्यो, के कंध द्रव्यनो उपाय करवो जेधअे त्यारे पूर्व देशमां कपडां पणुवे छे तेने तांती (पणुकरेनो भुभी) कहे छे ते तांती लोकेने व्याजे द्रव्य आव्युं. ते व्याज धर्युं आववा लाग्युं. त्यारे रामदासलना मनमां कंधक लुधं थयो तेथी श्रीठाकुरलअे आज्ञा करी, के तें भने तांती लोके उपर राख्यो ?

भावप्रकाश—तेनो आशय अे, के-हुं (तो) भाव-प्रीतिथी रह्युं छुं. ते पहेलां द्रव्य उपर राख्यो. द्रव्य घट्युं त्यारे व्याज उपर राख्यो. ते तांतीनुं

व्याज आवै । तामें मेरी सेवा (करी) । व्याज को द्रव्य महा हीन, द्रव्य को मैल । सो तासों (सेवा) करे, सो तापर मैं कैसें रहूंगो ?

तब यह आज्ञा सुनि के रामदास चौंकि परे ।

भावप्रकाश—सो यह, जो-हाय हाय ! मैं बुरो काम कियो । अब भगवत् इच्छा होइगी सो सही, परन्तु ऐसो कार्य कब हूँ न करनो ।

तब तांतीन पास गये । कहे, मेरो सगरो द्रव्य देहु । तब तांतीन ने कही, तुम कों व्याज दिये जात हैं तो द्रव्य कहा देय ? कहा थोरे दिनन में (ही) मांगन लागे ? तब रामदासजी कहे, सोको लरिका साथ काम परयो है, लरिका कहे सो करनो ।

भावप्रकाश—यह कहि यह जताये, जो-वालक कौ ख्याल विरुद्ध है । कोई खिलोना कों ऊंचे बैठारे, काहु कों नीचे बैठारे । काहु कों फोरि डारे । सोई प्रभु कौ स्वभाव, कर्तुं, अकर्तुं अन्यथा कर्तुं सर्व सामर्थ्य । जो-मन में आवे सो करें । यह सिद्धांत कहे । परन्तु तांती जाने कोई वालक होइगो ।

सो सगरो द्रव्य भेलो करिके रामदासजी कों दिये । सो घर लाये । सेवा करन लागे । सो कलक दिन में सगरो द्रव्य उठि गयो ।

व्याज आवे तेनाथी भारी सेवा करी, व्याजनुं द्रव्य महा हीन, द्रव्यनो भेल तेनाथी सेवा करे ? तेना उपर हुं केम रहीश, ?

त्यारे आ आज्ञा सांखणीनि रामदास चौंकी पडया.

भावप्रकाश—ते अ, हे हाय ! हाय ! मैं जोहुं काम क्युं, हुवे लगवहीच्छा हुशे ते थशे. परंतु अेवु काम कही न करवुं.

त्यारे तांती लोको पासो गया. कहे, माइं अंधुं द्रव्य हो. त्यारे तांती लोकोअे क्युं, तमने व्याज आवे जधअे छीअे तो द्रव्य केम छअे ? शुं थोडा द्विसोमां (न) मांगवा लाग्या ? त्यारे रामदासअे कहे, माइं आसक साथे काम पडयुं छे. आसक कहे ते करवुं.

भावप्रकाश—अे कही अे जणुअ्युं, हे आसकना विचार (परस्पर) विरुद्ध होय छे. कोध रमकडाने उंचे पेसाडे, कोधने नीचे पेसाडे. कोधने तोडी नाअे. तेवो न प्रभुनो स्वभाव, कर्तुं, अकर्तुं, अन्यथाकर्तुं सर्वसामर्थ्य. न मनमां आवे ते करे. अे सिद्धांत कथो. परंतु तांतीअे जणुअ्युं, हे कोध आसक (धरमां) हुशे.

ते अंधुं द्रव्य लेगुं करीने रामदासअेने आअ्युं ते घर लाग्या. सेवा करवा लाग्या. ते थोडा द्विसमां अंधुं द्रव्य उठी गयुं.

लेखो निकार । तब बनिया ने कही, तुम लेखो चुकाइ रूपैया १०० अधिक धरि अपने हाथ सों लिखि गये हो, फेरि देखि लेहु । सबही में श्रीठाकुरजी के हस्ताक्षर देखे, तब चुप करि रहै । तब घ में आइ बिचारे, जो-अब घर में रहनो नहीं । चाकरी करूंगो ।

भावप्रकाश—ताको कारन यह, जो-घरमें रहों तो श्रीठाकुरजी का श्रम होय, द्रव्य खानो परें, स्त्री की प्रीति साधारण है । तातें यह खायगी ।

तब एक घोरा लिये । हथियार बांधि चाकरि करन प्रयाग में आये । तब जलपान बीड़ा, बिना अपरस में लेन लागे ।

भावप्रकाश—ताको कारन यह, जो-कछु अपरस को अहंकार हतो, जो-और सों ऐसी अपरस नहीं बनत सोउ श्रीठाकुरजी छुड़ाई अहंकार मिटाये । औ यह जताये, जो-ऐसी अपरस कौन कामकी, जामें श्रीठाकुरजी कों श्रम करनो परै

पाछें एक दिन रामदासजी प्रयाग तें अड़ेल में श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के दरसन करन आये । सो पांचो कपरा पहरि हथियार बांधि दंडवत् किये । तब श्रीआचार्यजी रामदास सों देखिकें कहे धन्य है । तब वैष्णव पास बैठे हे सो कहन लागे, महाराज ! अब

हिसाब्य निकाण. त्पारे वाणीआये कछुं, तमे हिसाब्य चुकाची इपीआ सो अंधि धरी तमारा हाथथी लभी गया छे. इरी जेठलो. त्पारे वहीमां श्रीठाकुरज्जन हस्ताक्षर जेया, त्पारे चुप करी रखा. त्पारे घरमां आवीने विचार्युं, के हवे घरम रहेपुं नहीं. आकरी करीश.

भावप्रकाश—जेतुं कारण जे, के घरमां रहुं तो श्रीठाकुरज्जने श्रम थाय द्रव्य आवु पडे, स्त्रीनी प्रीति साधारण छे. तेथी जे पारी.

पछी जेक घोडा लीघो, हथियार बांधी आकरी करवा प्रयागमां आव्या. त्यां जलपान पीडा, बिना अपरसमां लेवा लाग्या.

भावप्रकाश—जेतुं कारण जे, के, कंठक अपरसनेो अहंकार हतो, जे भीजथी आवी अपरस नथी राभी सकाती, ते पणु श्रीठाकुरज्जजे छोडावी अहंकार मटाडयो. वणी जे जणुव्युं, के आवी अपरस शा कामनी, जेमां श्रीठाकुरज्जने श्रम करवो पडे ?

पछी जेक हिवस रामदासज्ज प्रयागथी अउलमां श्रीआचार्यज्ज महाप्रभुन दर्शन करवा आव्या. ते पांचे कपडां पहरी, हथियार बांधी दंडवत कर्यो. त्यां श्रीआचार्यज्ज रामदासने जेधने कहे, धन्य छे. त्पारे वैष्णव पास जेडा हुता ते कडेप

याकों धन्य क्यों कहत हो ? याकी अपरस तो छूटी, सिपाइन में रहत है, हथियार बांधत है ? तब श्रीआचार्यजी कहे, यह धन्य है । श्रीठाकुरजी कों श्रम नहीं करावत है । तातें या समान धीरज काहू कों नहीं, यह श्रीमुख तें कहे ।

भावप्रकाश—ताको कारन यह, जो—कहा बहोत अपरस सों कार्य होत हैं ? पुष्टिमार्गीय धर्म बहोत कठिन है । द्रव्य सगरो गयो, रिन माथे भयो, परन्तु धीरज नहीं छूट्यो । सो कहा ? जो—मन श्रीठाकुरजी में रख्यो । हृदय के भीतर चिंता रूप कष्ट नहीं भयो । पाछें श्रीठाकुरजी रिन चुकाये । सो मनमें प्रसन्न न भयो । चाकरी को कार्य कियो । अत्र दैन्यता याकों भई है, मन श्रीठाकुरजी में है । या आसयतें श्रीआचार्यजी धन्य कहे ।

वार्ता—प्रसंग २—और श्रीआचार्यजी के द्वार आगे एक खाड़ा हतो । सो आपु न्हाइवे कों पधारे, तब कहे, यह खाड़ा अजहू भरयो नहीं है ? यह कहिकें आपतो श्रीयमुनाजी—स्नान कों पधारे, सगरे वैष्णव खाड़ा भरन लागे । तब रामदासजी एक बड़ो टोकरा ले जहां ताई श्रीआचार्यजी न्हाइ के पधारें तहां ताई खाड़ा पूरि बराबर धरति करि दिये । तब श्रीआचार्यजी आपु रामदास कों

लाग्या, महाराज ! हुवे अने धन्य डेम कहे छे ? अनी अपरस तो छूटी. सिपाई-ओमां रहे छे, हथियार बांधे छे ? तारे श्रीआचार्यल कहे, अे धन्य छे. श्रीठाकुर-एने श्रम करावता नथी. तेथी अेना समान धीरज डोछने नथी. अेम श्रीमुखी कहे.

भावप्रकाश—तेतुं कारण अे, हे शुं धरणी अपरसथी काम थाय छे ? पुष्टिमार्गीय धर्म धरणी कठिण छे. द्रव्य अधुं गयुं. ऋण माथे थयुं, परंतु धीरज नहीं छोडी. ते शु ? हे मन श्रीठाकुरलमां रखुं. हृदयना महीं चिंता रूपी कष्ट नहीं थयु. पछी श्रीठाकुरलअे ऋण युकायुं. ते मनमां प्रसन्न न थया. चाकरीतुं काम क्युं. हुवे अेने दैन्यता थछ. मन श्रीठाकुरलमां छे. ते आशयथी श्रीआचार्यलअे (अेमने) धन्य कहा.

वार्ता प्रसंग-२—भीलुं श्रीआचार्यलता द्वार आगण अेक भाडा हतो. ते पोते न्हावाने पधार्या तारे कहे, आ भाडा हुलु लर्या नथी ? अे कहीने आप तो श्रीयमुनाल-स्नान भाटे पधार्या. (पछी) अधा वैष्णवो भाडा लरया लाग्या. तारे रामदासलअे अेक मोठा टोकरो लई न्यां सुधी श्रीआचार्यल न्हाछने पधार्या त्यां सुधीमां भाडा पुरी परापर धरती करी दीधी. तारे श्रीआचार्यल पोते रामदासने

देखे खाड़ा भरते, सगरे कपड़े धूरि सों अरे देखिके फेरि श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइ के कहे, रामदास धन्य है।

भावप्रकाश—सो यातें, जो-और वैष्णव आछे कपरा उतारि एक घोती पहरि खाड़ा भरें। रामदास श्रीआचार्यजी की आज्ञा सुनि के परम भाग्य सेवा मानि खाड़ा भर्यो, सिपाइपने की लाज सरम सत्र छोड़ी। ता पर श्रीआचार्यजी वदोत प्रसन्न भये। जो-या प्रकार भगवत् सेवा में प्रतिष्ठा मन में न आवे, छोटी मोटी हीन सेवा भाग्य मानि के करनो। यह सिद्धान्त जताए।

फेरि रामदासजी बरस एक में द्रव्य बहोत कमाइ घर आये। पाछे भली भांति सों सेवा करन लागे।

भावप्रकाश—सो श्रीठाकुरजी कों धीरज देखनो हतो। पाछे द्रव्य की कहा है ? जो चाहिए सो सब सिद्ध है।

वार्ता-प्रसंग ३—पाछे एक दिन स्त्रीने कही, तुम दूसरो व्याह करो तो संतति होइ।

भावप्रकाश—ताको कारन यह, जो-स्त्री कों रामदास के हृदय के अभिप्राय की खबरि नाहीं। तातें जान्यो, जो-मोसों राजी नहीं हैं, तो दूसरो व्याह करो। व्याह करे एक पुत्र होइ।

भाडा भरतो जेठ, अधां कपड़ां धूणथी लर्यां जेठ, इरी श्रीआचार्यजी प्रसन्न थधने कहे, रामदास धन्य छे।

भावप्रकाश—ते जेथी, छे भीज वैष्णवो सारां कपड़ां उतारी जेठ घोती पहेरी भाडा भरवा लाग्या। (त्यारे) रामदासे श्रीआचार्यजीनी आज्ञा सांभलीने परमभाग्य सेवा मानी भाडा भर्यो। सिपाइपणुनी लाज सरम अधी छोड़ी। ते उपर श्रीआचार्यजी अहु प्रसन्न थया, छे आ प्रकारे भगवत्सेवाभां प्रतिष्ठा मनभां न आवे। नानी, मोटी हिन सेवा भाग्य मानीने करवी जे सिद्धांत सूच्यो।

पछी रामदासजी वर्ष जेठभां द्रव्य अहु कमाई घर आया। पछी सारी रीते सेवा करवा लाग्या।

भावप्रकाश—श्रीठाकुरजीने धीरज देखनी हुती, पछी द्रव्यनी शी (वात) छे : न जेठजे ते अधु सिद्ध छे।

वार्ता प्रसंग-३—पछी जेठ द्विपस स्त्रीजे कहुं, तमे भीजे विवाह करे तो संतान थाय।

भावप्रकाश—तेतुं कारण जे, छे स्त्रीने रामदासना अभिप्रायनी अपर नथी। तेथी अजुयुं, छे माराथी राजी नथी तो भीजे विवाह करे। विवाह करवाथी जेठ पुत्र थाय।

तब रामदास ने कही, जो-मोकों पुत्र की इच्छा नहीं है। तब स्त्री ने कही, मेरे एक पुत्र की इच्छा है। तब रामदास ने कही, जो-तिहारे इच्छा है तो श्रीनवनीतप्रियजी की सेवा बालभाव सों करि। जैसे खानपान सों लडावत है। तिहारो मनोरथ पूरन होइगो। पाछे कछुक दिनन में पुत्र भयो।

भावप्रकाश—सो रामदासजी ने तो भावरूप अलौकिक बात कही, जो-श्रीठाकुरजी कों बालभाव सों लडावोगी तो एई बालक होइगें। जसोदाजी के सौभाग्य कों पावोगी। सो तो स्त्री उत्तम अधिकारी होइ तो समुझे। तार्ते पुत्र की कामना सहित श्रीठाकुरजी की बालभाव सों सेवा करी। सो श्रीठाकुरजी ने पुत्र दियो। परन्तु रामदासजी के फल कों नहीं पायो। रामदास कों कबहु लौकिक कामना में मन न भयो। तार्ते श्रीआचार्यजी प्रसन्न रहते। तार्ते रामदास के भाव की कहां ताई कहिये।

सो रामदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते। सो इनकी वार्ता को पार नहीं, सो कहां ताई कहिये।
वार्ता ॥७॥

✽

✽

✽

त्यारे रामदासे कछुं, के मन पुत्रनी इच्छा नथी। त्यारे स्त्रीअे कछुं, भारे अेक पुत्रनी इच्छा छे। त्यारे रामदासे कछुं, के तारी इच्छा छे तो श्रीनवनीतप्रियलनी सेवा बालभावथी करे। जेम खानपानथी (लौकिकमां) प्यार करे छे (पुत्रने) (तेम श्रीठाकुरलने करे), तारे मनोरथ पूरे थरे। पछी केरलाक दिवसमां पुत्र थयो।

भावप्रकाश—ते रामदासलअे तो भावरूप अलौकिक बात कही, के श्रीठाकुरलने बालभावथी लडावीश (प्रेम करीश) तो तेज बालक थरे (बालकवत् सुख आपसे) थरोदालना सौभाग्यने भेजवीश। ते तो स्त्री उत्तम अधिकारी होय तो समजे। तेथी पुत्रनी कामना सहित श्रीठाकुरलनी बालभावथी सेवा करी। ते श्रीठाकुरलअे पुत्र आयो। परन्तु रामदासलतुं (कहेलुं) इल न भयुं। रामदासलतुं मन ढाछ दिवस लौकिक कामनामां न गयुं। तेथी श्रीआचार्यल प्रसन्न रहेता। तेथी रामदासना भावनी (बात) क्यां सुधी कहीअे ?

ते रामदास श्रीआचार्यल महाप्रभुलना अेवा कृपापात्र भगवदीय हुता। ते अेमनी वार्ताना पार नथी, ते क्यां सुधी कहीअे ?
वार्ता ॥ ७ ॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, गदाधरदास कपिल सारस्वत ब्राह्मण,
कड़ा में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो गदाधरदास मकरस्नान कों तीर्थराज प्रयाग वरस के वरस जाते । सो एक समय गदाधरदास प्रयाग में हते । तहां श्रीआचार्यजी पधारे । सो पंडित सब श्रीआचार्यजी सों चर्चा करन आवते । सो गदाधरदास को काका प्रयाग रहतो, तहां गदाधरदास उतरते । सो गदाधरदास को काका पण्डित हतो, परन्तु सैव हतो । सो काका ने गदाधरदास सों कही, श्रीवल्लभाचार्यजी पधारे हैं । तिनसों कछु सन्देह पूछनो है, सो मैं जात हों । तब गदाधरदास कहे, जो—मैं हूँ चलंगो, सो दोऊ आये । तब गदाधरदास के काका ने श्रीआचार्यजी सों पूछयो, जो—महाराज ! ठाकुर तो एक हैं परन्तु वैष्णव सम्प्रदाय में न्यारे न्यारे क्यों मानत हैं ? कोई कृष्ण कों, कोई राम कों, कोई नृसिंह, कोई नारायण आदि, तामें निश्चय कौन ठाकुर हैं ? तब श्रीआचार्यजी कहे, जैसे चक्रवर्ती राजा को राज तो सगरी पृथ्वी पर, और राजा देस देस के गाँव गाँव के, सोऊ राजा कहावें, परन्तु चक्रवर्ती के आज्ञाकारी । तैसे ही पूर्णपुरुषोत्तम श्रीकृष्ण, सो सर्वोपरि । और अवतार अंसकला करिके होइ, सब श्रीकृष्ण के आज्ञाकारी । ठाकुर सब कों

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुना सेवक गदाधरदास कपिल सारस्वत ब्राह्मण,
कड़ा में रहते, तेमनी वार्ताको भाव कहिये छिये—

भावप्रकाश—ते गदाधरदास मकरस्नान माटे तीर्थराज प्रयाग वषे वषे जाता. ते अके समय गदाधरदास प्रयागमां हुता. त्यां श्रीआचार्यजी पधार्या. ते पंडित अथा श्रीआचार्यजी साथे चर्चा करवा आवता. ते गदाधरदासने काका प्रयाग रहेतो. त्यां गदाधरदास उतरता. ते गदाधरदासने काका पण्डित हुतो. परतु सैव हुतो. ते काकाये गदाधरदासने कछुं, श्रीवल्लभाचार्यजी पधार्या छे. तेमनाथी कंध संदेह पूछवे छे. ते हुं नउ छुं. त्तारे गदाधरदास कहे, ते हुं पणु यादीश. पछी अने आन्या. त्तारे गदाधरदासना काकाये श्रीआचार्यजीने पूछयुं, ते महाराज ! ठाकुर तो अके छे परन्तु वैष्णव सम्प्रदायमां अलग—अलग डेम माने छे ? काध कृष्णने, काध रामने, काध नृसिंह, काध नारायण आदि तेमां निश्चय क्या ठाकुर छे ? त्तारे श्रीआचार्यजी कहे, जेम अकवर्ती राजतुं राज्य अधी पृथ्वी उपर (अने), भील राज देश देशना, गाम गामना, ते पणु राज कहेवाय. परतु अकवर्तीना आज्ञाकारी. तेज प्रभाये पूणु पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण ते सर्वोपरी, भील अवतार अंश कला करीने

कहिए । तब गदाधरदास को काका चुप करि रह्यो । गदाधरदास दैवी जीव तिनके मन में सिद्धांत बैठि गयो, जो-श्रीआचार्यजी की सरन जइए तो श्रीकृष्ण की प्राप्ति होइगी । तब गदाधरदास ने श्रीआचार्यजी कों दण्डवत प्रणाम करि विनती किये, महाराज ! सरन लीजिए । मैं संसार में बहोत भटक्यो । तब श्रीआचार्यजी ने कही, जो-तुम अपने काका कों तो पूछो । इनको चित्त दुख पावै तो सेवक काहे कों होउ ? तब गदाधरदास के काका ने कही, महाराज ! हमारे तो गायत्री मंत्र सों काम है, और तो हम जानत नाहीं, गदाधरदास की ए जाने । ना हम हां कहें, ना हम ना कहें । तब गदाधरदास ने कही, अब मैं आपको दास भयो । अब संसारी जीव सों व्यौहार मेरे नाहीं है । तातें मैं आपु के सरन आयो हों, कृपा करिके सरन लीजिये । और यह बहिर्मुख कब कहेगो, जो-तू सेवक होउ । या प्रकार गदाधरदास के वचन सुनिके, गदाधरदास को काका उहां तें उठि बाहर आइ ठाड़ो भयो ।

तब श्रीआचार्यजी गदाधरदास के ऊपर बहोत प्रसन्न भये । कहे, विना सेवक ऐसी टेक है तो सेवक भये भलो वैष्णव होइगो । पाछे श्रीआचार्यजी कहे, जा, त्रिवेणी न्हाइ आव, तब गदाधरदास न्हाइ के अपरस में आये । तब श्रीआचा-

थाय. पंधा श्रीकृष्णुना आज्ञाकारी. डाकुर पंधाने कहीअे. त्तारे गदाधरदासने कडा चुप करी रह्यो. गदाधरदास दैवीअव, तेमना मनमां सिद्धांत पेसी गयो, ते श्रीआचार्यअनी शरणे अथअे तो श्रीकृष्णुनी प्राप्ति थसे. त्तारे गदाधरदासे श्रीआचार्यअने दंडवत् प्रणाम करी विनती करी, महाराज ! शरणे दो. हुं संसारमां अहु अटकयो. त्तारे श्रीआचार्यअअे कहुं, ते तमे तमारा कडाने तो पूछे ? अेनुं अित्त दुःअ पासे तो सेवक शा आटे थाव ? त्तारे गदाधरदासना कडअे कहुं, महाराज ! अमारे तो गायत्री मंत्रथी काम छे. अीनुं तो अमे अणुता नथी. गदाधरदासनी अे अणु, न अमे हा कहीअे, न अमे ना कहीअे. त्तारे गदाधरदासे कहुं, हुवे हुं आपने दास थयो. हुवे संसारी अवथी व्यवहार आरे नथी. तेथी हुं आपने शरणे आअे अुं. कृपा करीने शरणे दो. अने आ अहिअुअ क्यारे कहेसे, ते तू सेवक था. आ प्रकारे गदाधरदासनां वचन सांअणीने गदाधरदासने कडा त्पांथी उठीने आहुर आवी उलो रह्यो.

त्तारे श्रीआचार्यअ गदाधरदासना उपर अहु प्रसन्न थया. कहे, विना सेवक आनी टेक छे तो सेवक थये अलो वैष्णव थसे. पछी श्रीआचार्यअ कहे, अ, त्रिवेणी न्हाय आव त्तारे गदाधरदास न्हाअने अपरसमां आअे. त्तारे श्रीआ-

आवते । वैष्णव भये पाछें अव्यावृत से रहते । सो सब ठौर को जानो छोड़ दियो । जो आवे तामें निर्वाह करें । चित्त मानसी सेवा फलरूप में इनको लग्यो । “चेतस्तत्प्रवणं सेवा” या भाव में मगन रहें । तनुजा, वित्तजा जो बने सो करें । बहोत संग्रह करे नहीं । जो आवे ताकी सामग्री करि श्रीमदनमोहनजी को भोग धरें । वैष्णव को महाप्रसाद लिवाह देते । यह प्रकार त्याग पूर्वक रहते ।

सो एक दिन भगवद् इच्छा तें जजमान के घर तें कछु आयो नहीं ।

भावप्रकाश—ताको कारन यह, जो—श्रीठाकुरजी ने इनकी परीक्षा लिये । जो अव्यावृत को संकल्प तो होनो सहज ही है, परन्तु न मिले तब धीरज रहे यह महा कठिन है । ताते कछु न आयो ।

तब मंगला में जल की लोटी भोग धरे । सिंगार में, राज-भोग में जल ही धरे । पाछे उत्थापन में सेन पर्यन्त जल ही धरे । परन्तु उधारो न लिये ।

भावप्रकाश—काहे तें, यह ब्यौहार हैं । और उधारो लेय जहाँ ताँई वाको द्रव्य न देय तहाँ ताँई वाकी सेवा है । इनकी नहीं । और काल को प्रमाण नहीं । उधारो लियो देह छूटि जाय तो रिन माथे रहे, जन्म लेनो होइ ।

वृत्त जेवा रहैता, ते अधी जगानुं जघुं छोडी दीधुं, जे आवे तेमां निर्वाह करे, चित्त मानसी सेवा इसरूपमां अभनुं लाग्युं, ‘चेतस्तत्प्रवणुं सेवा’ जे भावमां मगन रहे, तनुज-वित्तज जे अने ते करे, आहु संग्रह करे नहीं, जे आवे तेनी सामग्री करी श्रीमदनमोहनजने भोग धरे, वैष्णवने महाप्रसाद लेवडावी देता, जे प्रकारे त्यागपूर्वक रहैता,

ते अके द्विस लगवद्विच्छाथी यजमानना धरथी कंधं आव्युं नहीं,

भावप्रकाश—तेनुं कारणुं जे, हे श्रीठाकुरजुंज्ये परीक्षा दीधी, हे अव्या-वृत्तनो सकल्प थवो सहज न छे परन्तु न मणे तयारे धीरज रहे, जे महा कठणुं छे, तेथी कंध न आव्युं,

त्यारे मंगलामां जलनी लोटी भोग धरी, शृंगारमां राजभोगमां जल न धर्युं, पछी उत्थापनमां, सेनपर्यंत जल न धर्युं, परंतु उधार न दीधुं,

भावप्रकाश—हेमके जे व्यवहार छे, भीनुं, उधारे ले (तो) ज्यां सुधी तेनु द्रव्य न हे त्यां सुधी तेनी सेवा छे, ज्येमनी नहीं, अने कालनु प्रमाण नहीं, उधारे दीधुं (ने) देह छुटी जय तो ऋणुं माथे रहे, जन्म लेवो पडे, ज्येम

यह शास्त्र में कहे हैं । परन्तु इनके तो काल को डर नहीं । अव्यावृत्त श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ग्रन्थ को आश्रय किये ।

ऐसे करत रात्रि प्रहर डेढ़ गइ, सोइ रहे । परन्तु छाती में आगि सी लागी, जो-आजु मेरे ठाकुर भूखे रहे ।

भावप्रकाश—याको हेतु यह, जो-जदपि ये जल धरि के मानसी में सब आरोगाये हैं, श्रीठाकुरजी अरोगे हैं । काहेतें ? येहू श्रीराधा सहचरी की सखी है । कलकंठी इनको नाम है । कुमारिका के जूथ में हैं । इनको श्रीयमुनाजी को आश्रय है । राधा सहचरी के गान समय ये सुर भरत हैं । इनहूँ को कंठ बहोत सुन्दर है । तातें जमुनाजी के भाव सों सगरे भोग में जल ही धरे । तातें सगरी सामग्री भाव करि सिद्ध हैं । परन्तु या सामग्री में वैष्णव को समाधान नहीं । सगरी इन्द्रिय की सेवा नहीं, सामग्री हाथसों धरे और ब्रजभक्तन की मानसी हू करे । और श्रीठाकुरजी को न्यारो मनोरथ हू करे । यह पुष्टिमार्ग की रीति है, जो-सामग्री हाथ सों भोग धरन में प्रीति न होइ तो ब्रजभक्तन के भाव हू छूटि जाइ । ज्ञानमार्ग की रीति व्हे जाइ । “पत्रं, पुष्पं, फलं, तोयं, यो मे भक्त्या प्रयच्छति” या वाक्य में बोध अर्थ है । मर्यादामार्गीय के भाव में पत्र, पुष्प, फल, जल, जैसो

शास्त्रमां कहे छे. परंतु आम्ने तो कालनो डर नथी. अव्यावृत्त (यद्य) श्रीआचार्यजी महाप्रभुना ग्रन्थनो आश्रय कर्यो छे.

ऐसे करत रात्रिप्रहर डेढ गइ. परन्तु छातीमां आगि जेवुं लाग्युं, के आनभारा ठाकुर भूख्या रह्या.

भावप्रकाश—ऐनो हेतु ऐ, के यद्यपि ऐ जल धरीने मानसीमां अयुं आरोगाव्युं छे, श्रीठाकुरजी आरोग्या छे; डमके ऐ पणु श्रीराधा सहचरीनी सखी छे. ‘कलकंठी.’ ऐमनुं नाम छे. कुमारिकाना जूथमां छे. ऐमने श्रीयमुनाजीनो आश्रय छे. राधा सहचरीना गान समये ऐ स्वर पूरे छे. ऐमनो पणु कंठ अहु सुंदर छे. तेथी श्रीयमुनाजीना भावथी अथा लोगमां जल ज धर्युं. तेथी सधणी सामग्री भाववडे सिद्ध छे. परंतु आ सामग्रीमां वैष्णवतुं समाधान नथी. अधी इन्द्रियोनी सेवा नथी. सामग्री हाथथी धरे अने ब्रजभक्तनोनी मानसी पणु करे. अने श्रीठाकुरजीने अलग मनोरथ पणु करे. ऐ पुष्टिमार्गनी रीति छे. जे सामग्री हाथथी लोग धरवामां प्रीति न होय तो ब्रजभक्तनो भाव पणु छूटी जय. ज्ञानमार्गनी रीति यद्य जय. “पत्रं, पुष्पं, फलं, तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति” आ वाक्यमां बोध अर्थ छे. मर्यादा मार्गीयना भावमां पत्र, पुष्प,

वैष्णवन को बुलाइ, महाप्रसाद की पातरि धरी। तब वैष्णव महा-
प्रसाद लेत बोले, जो-गदाधरदास ! रात्रि को तुम महाप्रसाद दिये
सो यह सामग्री तो हमहू करत हैं, परन्तु ऐसी स्वाद नहीं होत।
सो ऐसी क्रिया हमहू को बतावो। कैसे करी हती ? तब गदाधरदास
ने कही, कालिह मेरे घर कछु न हतो। सो रात्रिको रुपैया चारि
आये। एक रुपैया की जलेबी बजार सों लायो। या प्रकार सब
कहे। तब सगरे वैष्णव गदाधरदास की ऊपर प्रसन्न भये।

भावप्रकाश—ताको हेतु यह है, जो-श्रीठाकुरजी, श्रीआचार्यजी इनके
ऊपर प्रसन्न हैं। सो सगरे वैष्णवन के हृदय में हैं। बुद्धि के प्रेरक श्रीकृष्ण हैं
ताते निष्कपट शुद्ध भाव वारे वैष्णव पर कोई अप्रसन्न न होय। या प्रकार वैष्णव
प्रसन्न भये। तब गदाधरदासजी ने एक कीर्तन गायो—

“ गोविंद-पद-पल्लव सिर पर विराजमान,
तिनको कहा कहि आवै सुखको प्रमान।
ब्रज-दिनेस देस बसत कालानल हू न ब्रसत,
विलसत मन हुलसत करि लीला रस पान।
भीजे नित नैन रहत, हरि के गुनगान कहत,
जानत नहिं त्रिविध ताप मानत नहिं आन।
तिनके मुख-कमल दरस, पावन पदरेंतु परस,
अधम जन 'गदाधर' से पावत सन्मान। ”

पातर धरी. त्पारे वैष्णुव महाप्रसाद लेतां भोल्या, के गदाधरदास ! रात्रिमे तभे
महाप्रसाद दीधो ते सामग्री तो अभे पशु करीमे छीमे परन्तु एवो स्वाद नथी थतो.
तो एवी क्रिया अभने पशु भतावो. केवी रीते करी छती ? त्पारे गदाधरदासे कछु,
झाल भारा घर (मां) कंठ न छतुं. ते रात्रिमे इपीआ रार आल्या. (ते) एक
इपीआनी जलेपी अजरथी लाव्यो. ए प्रकार भयो कछो. त्पारे भधा वैष्णुवो
गदाधरदासनी उपर प्रसन्न थया.

भावप्रकाश—तेनो हेतु ए छे, के श्रीठाकुरे, श्रीआचार्ये अभना
उपर प्रसन्न छे, ते भधा वैष्णुवाना हृदयमां छे. बुद्धिप्रेरक श्रीकृष्णे छे. तेथी
निष्कपट शुद्ध भाववाणा वैष्णुव पर डोअ अप्रसन्न न थाय. या प्रकारे वैष्णुवो
प्रसन्न थया, त्पारे गदाधरदासमे एक कीर्तन गायुं—

‘ गोविंद-पद-पल्लव सिर पर विराजमान ’ x x x (उपर जुओ).

जो—मैं अधम जन हों, परन्तु तुम भगवदीय हो। सो मो सारिखे को सन्मान करत हो। या प्रकार वैष्णवन में और श्रीठाकुरजी में दृढ़ प्रीति एक रस हती। तारें श्रीठाकुरजी और वैष्णव इनके बस हते। ऐसे गदाधरदास उत्तम भगवदीय हे।

वार्ता-प्रसंग २—और एक दिन गदाधरदास ने वैष्णव महा-प्रसाद को बुलाए हते। सगरी सामग्री करी, परन्तु साग कछु न हतो। तब गदाधरदास ने वैष्णव बैठे हते, तिनसों कही—ऐसो कोई वैष्णव है, जो—साग लै आवे! सो माधोदास, वेनीदास के भाई जिनने वेस्या घर में राखी हती सो बोले, कहो तो मैं ले आजं।

भावप्रकाश—ताको आसय यह, जो—मैं वेस्या राखी है, मेरो लायो लेहुगे ?

तब गदाधरदास कहे, ले आवो।

भावप्रकाश—सो गदाधरदास के हृदय में दोषदृष्टि नहीं है। श्री-आचार्यजी को संबंध जानत है। तारें कहे ले आवो।

तब बथुवा की भाजी ले आये। तब गदाधरदास प्रसन्न है कै कहे, वेगे सँचारि देउ।

कहे, हुं अधमजन छुं। परतु तमे भगवदीय छे, ते भासो जेवानुं सन्मान करे छे। आ प्रकारे वैष्णवोभां अने श्रीठाकुरजीभां दृढ़ प्रीति अेक रस हती। तेथी श्रीठाकुरजी अने वैष्णवो अेभने वश हुता। अेवा गदाधरदास उत्तम भगवदीय हुता।

वार्ता-प्रसंग-२—वणी अेक दिवस गदाधरदासे वैष्णवोने महाप्रसाद (लेवा) भाटे जेदाख्या हुता। अधी सामग्री करी परंतु शाक कंठ न हुतुं। त्यारे गदाधरदासे वैष्णवो जेदा हुता तेभने कहुं, अेवो कोठ वैष्णव छे, के शाक कंठ आवे ? त्यारे माध-वदास वेणीदासना साथ, जेभखे वेस्या घरभां राखी हती, ते जेदाख्या, कहे तो हुं कंठ आवुं।

भावप्रकाश—अेनो आशय अे, के मे' वेस्या राखी छे, भाइं लाव्युं जेशे ? त्यारे गदाधरदास कहे, कंठ आवो।

भावप्रकाश—ते गदाधरदासना हृदयभां दोषदृष्टि नथी। श्रीआचार्यजीने संबंध जखे छे। तेथी कहे, कंठ आवो।

त्यारे अथुवानी साथ कंठ आव्या। त्यारे गदाधरदास प्रसन्न थअने कहे, जसदी सुधारी हो।

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो-प्रीति सों लाये, तब सँवारिवे की मुख्य सेवा हू दिये । तामें जताए, जो-सेवां प्रीति सों करै । कैसे हू होउ ताके हाथ को श्रीठाकुरजी प्रीति सों अंगीकार करैं ।

पाछें सामग्री सिद्ध करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरें । समय भये भोग सराइ अनोसर करि सगरे वैष्णवन कों महाप्रसाद की पातरि धरें । सो सब वैष्णव महाप्रसाद लेत साग बखान्यो । तब गदाधरदास परोसत माधवदास पास आये, तब प्रसन्न होइकै माधोदास सों कहे, जो-तिहारो लायो साग श्रीठाकुरजी आरोगे । तातें तोकों हरि-भक्ति दृढ़ होऊ । यह आशीर्वाद दिये ।

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो-रंच सेवा साग की माधोदास दीनता सों किये । तातें श्रीठाकुरजी प्रीतिसों आरोगे । यह तब जानिए, जो-वैष्णव प्रसाद लेइ सराहना करैं । तब दोऊ सेवा सिद्ध होय और भगवदीय समान उदार कोऊ नाहीं, जो-रंच साग की सेवा किये जनम जनम को संसार मिटाइ हरिभक्त करि दिये । ऐसे गदाधरदास भगवदीय हे ।

वार्ता-प्रसंग ३—और एक दिन गांव के बाहिर बनजारा आइ उतरयो । ताकों बेल चहिए । सो गाम में आइ दस-पंद्रह गदाधरदास

भावप्रकाश—अमां अे सूयव्युं, ठे प्रीतिथी लाव्या, त्पारे सुधारवानी भुष्य सेवा पणु आपी. तेमां न्णुव्यु, ठे सेवा प्रीतिथी करे. डेवो पणु (७व) होय, तेना हाथनुं श्रीठाकुरल प्रीतिथी अ गीकार करे छे.

पछी सामग्री सिद्ध करी श्रीठाकुरलने भोग धर्यो. समय थये भोग सरावी अनोसर करी अथा वैष्णुवोने महाप्रसादनी पातर धरी. त्पारे वैष्णुवोअे महाप्रसाद लेतां शाकने वभाण्युं. त्पारे गदाधरदास पीरसता पीरसता माधवदास पास आव्या. त्पारे प्रसन्न थधने माधवदासने कहे, के ताइं लावेलुं शाक श्रीठाकुरल आरोग्या. तेथी तने हरिभक्ति दृढ थरो. अे आशीर्वाद दीधा.

भावप्रकाश—अेमां अे न्णुव्यु, के रयक सेवा शाकनी माधवदासे दीनताथी करी. तेथी श्रीठाकुरल प्रीतिथी आरोग्या. अे त्पारे न्णुअे, के (न्यारे) वैष्णुव प्रसाद लर्थ वभाणु करे. त्पारे अन्ने सेवा सिद्ध थाय. अने लगवदीय समान उदार ठाठ नहूँ, के रयक शाकनी सेवा करी (तेमां) न्न्म न्न्मने संसार मटाडी हरि-भक्त करी दीधा. अेवा गदाधरदास लगवदीय छे.

वार्ता-प्रसंग ३—धीलुं, अेक द्विस गामना अलार वणुजारे आवी उतर्यो हुतो. तेने अणद अेधता हुता. ते गाममां आवी दश-पंढर गदाधरदासना सगा प्राणु

के सगे ब्राह्मण बैठे हते। सो गदाधरदास की ईर्ष्या करते, जो-भगत भयो है। सो बनजारे ने उन ब्राह्मणन सों पूछयो, हमकों बैल मोल कों लेने सो कहां मिलेंगे ? तब उन ब्राह्मणन ने कही, गदाधरदास भगत है, उनके यहां जितने चाहिए तितने लेहु। परन्तु यों तो वे न देइंगे। उनके पास रुपैया दे आवो। कहियो, हमकों जहां सों चाहो तहां सों मंगवाइ देहु। पाछे दूसरे दिन जइयो। तब बैल तुमकों मिलेंगे। तब बनजारा १००) रुपैया लै गदाधरदास के पास गयो। कह्यो, हमकों बल लेने हैं। सो तुम मँगाइ देहु। तब गदाधरदास ने कही, बाबा! हमारे बैल कहां ? गाँव में पूछो, हम तो जानत नहीं। तब बनजारे ने १००) रुपैया गदाधरदास के आगे धरि दिये। उठि चलयो। कह्यो, कालिह बैल लेन आऊंगो। मोसों गाँव के लोगन ने या भांति बताए हैं। तब गदाधरदास ने जानी, जो-हमारी जातिके ने याकों बहकायो होइगो। तब गदाधरदास ने कही, कालिह मध्याह्न समे तो न देखोगे। तौड बनजारा प्रसन्न होइके कहै, जो-आछो। यह रुपैया राखो।

पाछें गदाधरदासजी १००) रुपैया की सामग्री मँगाये। सगरे पाक सिद्ध करि दूसरे दिन भोग धरे। फेरि सगरे वैष्णवन कों परोसत हते मध्याह्न समे, तब बनजारा आयो। तब गदाधरदास

पेडा हुता. ते गदाधरदासनी धर्या करता, डे भगत थयो छे. ते वलुञ्जाराये ब्राह्मणोने पुछ्युं, अमारे अणद मोलथी लेवा छे. ते क्यां भणशे ? त्यारे ते ब्राह्मणोये कछुं, गदाधरदास भगत छे. तेमने त्यां जेयसा जेधये तेयसा लेा. परंतु अम तो अे नहीं आपे. अेमनी पासे (पहुसां) इपीया आपी आवो. कहेजे, अमने न्यांथी धर्या ह्यय त्यांथी मंगावी हो. पछी भीज दिवसे जजे. त्यारे अणद तमने भणशे. त्यारे वलुञ्जारे इपीया सो लघ गदाधरदासनी पासे आव्यो. कछुं, अमने अणद लेवा छे. ते अमने मंगावी आपे. त्यारे गदाधरदासे कछुं, साध ! अमारे अणद क्यां ? गामभां पूछा. अमे तो नलुता नथी. त्यारे वलुञ्जाराये इपीया सो गदाधरदासनी आगण धरी दीया. (पछी) उठीने आव्यो. कछुं, डाल अणद लेवा आवीश. मने गामना दोडोअे आ प्रकारे अताव्युं छे. त्यारे गदाधरदासे नलुयुं, डे अमारी ज्ञातिनाअे आने अरमाव्यो छे. त्यारे गदाधरदासे कछुं, डाल मध्याह्न समे तो नहीं जेध शके, तो वलु वलुञ्जारे प्रसन्न थधने कहे, डे अले, अे इपीया राणे. पछी गदाधरदासअे इपीया सो नी सामथी मंगावी, अधो पाक सिद्ध करी भीज दिवसे लाग धर्यो. पछी अथा वैष्णवोने पीरसता हुता, मध्याह्न समे, त्यारे वलुञ्जारे आव्यो. त्यारे गदाधरदासे

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो-प्रीति सों लाये, तब सँवारिवे की मुख्य सेवा हू दिये । तामें जताए, जो-सेवां प्रीति सों करै । कैसे हू होउ ताके हाथ को श्रीठाकुरजी प्रीति सों अंगीकार करे ।

पाछें सामग्री सिद्ध करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरें । समय भये भोग सराइ अनोसर करि स्वगरे वैष्णवन कों महाप्रसाद की पातरि धरें । सो सब वैष्णव महाप्रसाद लेत साग बखान्यो । तब गदाधरदास परोसत भाधवदास पास आये, तब प्रसन्न होइकै माधोदास सों कहे, जो-तिहारो लायो साग श्रीठाकुरजी आरोगे । तातें तोकों हरि-भक्ति दृढ़ होऊ । यह आसीर्वाद दिये ।

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो-रंच सेवा साग की माधोदास दीनता सों किये । तातें श्रीठाकुरजी प्रीतिसों आरोगे । यह तब जानिए, जो-वैष्णव प्रसाद लेइ सराहना करे । तब दोऊ सेवा सिद्ध होय और भगवदीय समान उदार कोऊ नहीं, जो-रंच साग की सेवा किये जनम जनम को संसार मिटाइ हरिभक्त करि दिये । ऐसे गदाधरदास भगवदीय हे ।

वार्ता-प्रसंग ३—और एक दिन गांव के बाहिर बनजारा आइ उतरयो । ताकों बेल चाहिए । सो गाम में आइ दस-पंद्रह गदाधरदास

भावप्रकाश—अेभां अे सूयव्युं, डे प्रीतिथी लाव्या, त्तारे सुधारवानी भुष्य सेवा पणु आपी. तेभां न्णुव्यु, डे सेवा प्रीतिथी करे. डेयो पणु (७व) डेय, तेना डथनुं श्रीठाकुरणु प्रीतिथी अंगीकार करे छे.

पछी सामग्री सिद्ध करी श्रीठाकुरणुने लोग धर्यो. समय थये लोग सरावी अनोसर करी अथा वैष्णुवाने महाप्रसादनी पातर धरी. त्तारे वैष्णुवाने महाप्रसाद लेतां शाकने वभाणुं. त्तारे गदाधरदास पीरसता पीरसता भाधवदास पास आव्या. त्तारे प्रसन्न थयने भाधवदासने डडे, डे ताइं लावेळुं शाक श्रीठाकुरणु आरोग्या. तेथी तने हरिभक्ति दृढ थये. अे आशीर्वाद दीयो.

भावप्रकाश—अेभां अे न्णुव्युं, डे रयक सेवा शाकनी भाधवदासे दीनताथी करी. तेथी श्रीठाकुरणु प्रीतिथी आरोग्या. अे त्तारे न्णुव्युं, डे (न्यारे) वैष्णुव प्रसाद लई वभाणु करे. त्तारे अन्ने सेवा सिद्ध थाय. अने भगवदीय समान उदार डोड नहीं, डे रयक शाकनी सेवा करी (तेभां) न्णुव्युं न्णुव्युं संसार मटाडी हरि-भक्त करी दीयो. अेवा गदाधरदास भगवदीय छे.

वार्ता-प्रसंग ३—भीणुं, अेक द्वियस गामना अडार वणुअारे आवी उतर्यो उतो. तेने अणुदनेडता उता. ते गामभां आवी दश-पंढर गदाधरदासना सगा आणुणु

के सगे ब्राह्मण बैठे हते। सो गदाधरदास की ईरण्या करते, जो-भगत भयो है। सो बनजारे ने उन ब्राह्मणन सों पूछ्यो, हमकों बैल मोल कों लेने सो कहां मिलेंगे ? तब उन ब्राह्मणन ने कही, गदाधरदास भगत है, उनके यहां जितने चाहिए तितने लेहु। परन्तु यों तो वे न देइंगे। उनके पास रुपैया दे आवो। कहियो, हमकों जहां सों चाहो तहां सों मंगवाइ देहु। षाछे दूसरे दिन जइयो। तब बैल तुमकों मिलेंगे। तब बनजारा १००) रुपैया लै गदाधरदास के पास गयो। कह्यो, हमकों बल लेने हैं। सो तुम मँगाइ देहु। तब गदाधरदास ने कही, बाबा! हमारे बैल कहां ? गाँव में पूछो, हम तो जानत नहीं। तब बनजारे ने १००) रुपैया गदाधरदास के आगे धरि दिधे। उठि चलयो। कह्यो, काल्हि बैल लेन आऊंगो। मोसों गाँव के लोगन ने या भांति बताए हैं। तब गदाधरदास ने जानी, जो-हमारी जातिके ने याकों वहकायो होइगो। तब गदाधरदास ने कही, काल्हि मध्याह्न समे तो न देखोगे। तौउ बनजारा प्रसन्न होइके कहै, जो-आछो। यह रुपैया राखो।

पाछें गदाधरदासजी १००) रुपैया की सामग्री मँगाये। सगरे पाक सिद्ध करि दूसरे दिन भोग धरे। फेरि सगरे वैष्णवन कों परोसत हते मध्याह्न समे, तब बनजारा आयो। तब गदाधरदास

प्रेम लता. ते गदाधरदासनी धर्या करता, के लगत थयो छे. ते वणुआराअे ब्राह्मणोने पुछ्युं, अमारे अणद मोलथी लेवा छे. ते क्यां भणशे ? त्यारे ते ब्राह्मणोअे कछुं, गदाधरदास लगत छे. तेभने त्यां जेठला जेठथे तेठला लेा. परंतु अेभ तेा अे नहीं आपे. अेभनी पासे (पहुलां) इपीआ आपी आवेा. कहेअे, अेभने ज्यांथी धर्या लुय त्यांथी भंगावी हो. पछी थील द्विसे जेअे. त्यारे अणद तेभने भणशे. त्यारे वणुआरे इपीआ सो लघ गदाधरदासनी पासे आव्येा. कछुं, अेभने अणद लेवा छे. ते अेभने भंगावी आपे. त्यारे गदाधरदासे कछुं, लार्थ ! अमारे अणद क्यां ? गामभां पूछे. अेभे तेा जणुता नथी. त्यारे वणुआराअे इपीआ सो गदाधरदासनी आगण धरी दीवा. (पछी) उहीने आव्येा. कछुं, काल अणद लेवा आवीश. भने गामना लोकाअे आ प्रकारे अताअुं छे. त्यारे गदाधरदासे जणुं, के अमारी जातिनाअे आने लरभाव्येा छे. त्यारे गदाधरदासे कछुं, काल मध्याह्न समे तेा नहीं जेठ शके, तेा वणु वणुआरे प्रसन्न थठने कहे, के लले, अे इपीआ राणेा. पछी गदाधरदासअे इपीआ सो नी सामग्री भंगावी, अथे पाक सिद्ध करी थील द्विसे लोग धर्या. पछी अथा वैष्णवोने पीरसता लता, मध्याह्न समे, त्यारे वणुआरे आव्येा. त्यारे गदाधरदासे

ને કહી, ખલે સમય આયો । એ સવ ઠાકુરજી કે બૈલ હૈં । યામૈં વછરા
હૂ હૈં, તરુન હૂ હૈં । જૈસે ચાહિયે તૈસે દેખિ લેહુ ।

ભાવપ્રકાશ—યાકો આસય યહ, બૈલ ધર્મ કો રૂપ હૈં । સો ગદાધર-
દાસ કહે, આજુકે કાલ મૈં ધર્મ ઇન વૈષ્ણવન મૈં હૈં । સો ધર્મ લેનો હોઈ તો દેખિ લે ।
બૈલકૌં યહ, જો-જા કારજ મૈં લગાવૈ સોઈ કરે । નાહીં ન કરે । જો-ખવાવૈ સોઈ
ખાવૈ । સંતોષ કરે તૈસે યે વૈષ્ણવ હૈં । જો-જા કાર્ય મૈં ચલત હૈં સો પ્રાપ્ત હોય,
તારૈં સંતોષ હૈં ।

સો વનજારે કી સામગ્રી શ્રીઠાકુરજી અરોગે । વૈષ્ણવ મહા-
પ્રસાદ લિયે । ઔર ગદાધરદાસ પ્રસન્ન હોઈકે કહેં । સો ઉહ વનજારે
કૌં જ્ઞાન હોઈ ગયો । જો-એ તો ભગવદ્-ભક્ત હૈં । ગાંવ કે લોગન ને
મસૂખરી કરી, લરાઈવે કો ઉપાય કરયો હતો । પરન્તુ મેરે વડે ભાગ્ય
હૈં, જો-યા મિષ મો સારિખે પાપી કી સત્તા અંગીકાર કિયે । અવ
મૈં ઇનકી સરન જાઝંગો । કૃતાર્થ હોઝં । તવ સાષ્ટાંગ દંડવત્ ગદા-
ધરદાસ કૌં કરિ કહ્યો, મૈં રાત્રિ-દિન સંસાર સમુદ્ર મૈં મટકત હૌં ।
અવ તિહારી સરન આયો હૂં । મેરો ઉદ્ધાર કરો । તવ ગદાધરદાસ
નેં કહી, હમ તો સેવક કરત નાહીં । પરન્તુ એ સગરે વૈષ્ણવ ઔર હમ
શ્રીઆચાર્યજી કે સેવક હૈં, સો અહેલ મૈં વિરાજત હૈં, તિનકે સેવક

કહ્યું, ઠીક સમય ઉપર આવ્યો. આ બધા શ્રીઠાકુરજીના બળદ છે. એમાં વાછડાં પણ
છે. તરૂણ પણ છે. જેવા જોધએ તેવા જોધ લે.

ભાવપ્રકાશ—એનો આશય એ, કે બળદ ધર્મનું રૂપ છે. તે, ગદા-
ધરદાસ કહે, આજના કાળમાં ધર્મ આ વૈષ્ણવોમાં છે. તે ધર્મ લેવો હોય તો જોધ
લે. બળદને, જે કામમાં લગાડો તે કરે, ના ન કહે. જે ખવડાવો તેજ ખાય. સંતોષ
કરે. તેવા આ વૈષ્ણવો છે જે કામમાં ચાલે છે તેને પ્રાપ્ત થાય, તેમાં સંતોષ છે.

તે વણજારાની સામગ્રી શ્રીઠાકુરજી આરોગ્યા. વૈષ્ણવોએ મહાપ્રસાદ લીધો.
અને ગદાધરદાસે પ્રસન્ન થઈને કહ્યું. તેથી તે વણજારાને જ્ઞાન થઈ ગયું, કે આ તો
ભગવદ્-ભક્ત છે. ગામના લોકોએ મશકરી કરી લડાવવાનો ઉપાય કર્યો હતો. પરન્તુ
મારાં મોટાં ભાગ્ય છે, કે આ બહાને મારા સરખા પાપીની સત્તા અંગીકાર કરી.
હવે હું એમની શરણે જઈશ. કૃતાર્થ થઈ. ત્યારે સાષ્ટાંગ દંડવત્ ગદાધરદાસને કરી
કહ્યું, હું રાત્રિ દિન સંસારસમુદ્રમાં ભટકું છું. હવે તમારી શરણે આવ્યો છું. મારો
ઉદ્ધાર કરો. ત્યારે ગદાધરદાસે કહ્યું, અમે તો સેવક કરતા નથી. પરંતુ આ બધા વૈષ્ણવો
અને અમે શ્રીઆચાર્યજીના સેવક છીએ. તે અડલમાં બિરાજે છે. તેમનો સેવક થા.

होउ । पाछें गदाधरदास ने दैवी जीव जानि वाकों महाप्रसाद दिये । तव बनजारा अङ्गेल आइ श्रीआचार्यजी पास नाम पाइ कृतार्थ भयो ।

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो-भगवदीय के एक क्षन के संग तें, जो-उत्तम जीव होय तो वाकों कार्य है जाइ । गदाधरदास ऐसे भगवदीय हे । इनके हृदय को अगाध भाव है, सो कैसे कह्यो जाय ।

सो वे गदाधरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे । तातें इनकी वार्ता को पार नहीं, सो कहाँ ताई कहिये । वार्ता ॥८॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक वेनीदास माधवदास, दोऊ भाई क्षत्री हते, कङ्गामें रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—वेनीदास वृषभानजी के गाड़ा को बैल है । सो ऋषभ सखा कों सींग मारयो । सो तीन दिन ऋषभ सखा दुख पायो । ताके शाप तें गिरे भूमि पर । और माधवदास रत्नप्रभा ललिताजी की सखी है । सो इहां भगवद् इच्छा तें दोउ भाई भये । परन्तु मन मिले नहीं । सो माधोदास ने वेस्या घर में राखी हती, सो वैष्णव सब निंदा करते । परन्तु उह वैष्णव दैवी हती । चंद्रावली

पछी गदाधरदासे दैवी श्रव नश्री अने महाप्रसाद आये। तारे वल्लभारे अउस आवी श्रीआचार्यल पास नाम पामी कृतार्थ थयो।

भावप्रकाश—अमां अ नश्राव्युं, हे भगवदीयना अके क्षणना सगथी उत्तम श्रव होय तो तेनुं कार्य थय नय. गदाधरदास अवा भगवदीय हुता. अमना हृदयने अगाध भाव छे ते देवी रीते कही शक्य ?

ते गदाधरदासल श्रीआचार्यल महाप्रभुलना अवा कृपापात्र भगवदीय हुता. तथी अमनी वार्ताना पार नथी. ते क्यां सुधी कहीअ. वार्ता ॥ ८ ॥

✽

✽

✽

हुवे श्रीआचार्यल महाप्रभुना सेवक वेणीदास माधवदास अे लाभ क्षत्री हुता, कडांमां रहता, तेमनी वार्ताना भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—वेणीदास वृषभानलना गाडाने अणद छे. तेणुे ऋषभ सखाने शिंगडुं आयुं. ते तणुे द्विवस (सुधी) ऋषभ सखा दुःख पाये. तेना शापथी पृथ्वी पर पड्या. अने माधवदास रत्नप्रभा ललितालनी सखी छे. ते अहीं भगवद्विच्छाथी अन्ने लाभ थया. परंतु, मन भणे नहीं. ते माधवदासे वेस्या घरमां राणी हुती. ते वैष्णवो अथा निन्दा करता. परंतु ते वैष्णव 'वी

की सखी चन्द्रलता लीला में इनकौ नाम हतो । सो अलौकिक संबंध बिना दैवी जीव की दृढ़ प्रीति बंधे नहीं ।

वार्ता-प्रसंग १—पाछें एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु कड़ा में पधारे । तब सगरे वैष्णव दरसन कों आये । पाछें माधवदास सुने । सोऊ आय श्रीआचार्यजी कों दंडवत् कियो । तब सगरे वैष्णव दरशन कों आये । तब सगरे वैष्णवन नें श्रीआचार्यजी सों कही, महाराज ! माधवदास ने वेस्या राखी है । तब श्रीआचार्यजी पूछे, क्यों माधवदास ! वेस्या राखी है ? तब माधवदास ने कही, महाराज ! मेरो मन वाके ऊपर आसक्त है । तातें राखी है । या प्रकार तीन बेर श्रीआचार्यजी पूछे । तीनों बेर माधवदास ने कही, महाराज ! मेरो मन वा पर आसक्त है, तातें राखी है । तब श्रीआचार्यजी चुप ह्वे रहे ।

भावप्रकाश—याको अभिप्राय यह, जो-प्रथम वैष्णव निंदा करते, सोउ माधोदास कों वेस्या को संग छुड़ावन कों । जो-निंदा तें लाज पाइ छोड़ेंगे, यातें करते । अपने भाई जानिकें, ईरण्या द्वेष भाव नहीं हतो । जो-द्वेष होइ तो सगरेन कों बाधक होई । पाछें श्रीआचार्यजी सों वैष्णवन ने कही । सोउ माधोदास

हुती. यद्रावलीनी सखी, चन्द्रलता लीलायां अभ्यंतुं नाम हतु. ते अलौकिक संबंध बिना दैवी श्रवणी दृढ प्रीति बंधाय नहीं. ।)

वार्ता-प्रसंग-१—पछी एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु कड़ायां पधार्या. तयारे पधा वैष्णव दर्शने आव्या. पछी माधवदासे सांलश्रुं. (तेथी) तेभले पशु आवी श्रीआचार्यजीने दंडवत् कर्या. तयारे सघणा वैष्णव दर्शने आव्या. तयारे पधा वैष्णवोअे श्रीआचार्यजीने कहुं, महाराज ! माधवदासे वेस्या राभी छे. तयारे श्रीआचार्यजी पूछे, केम माधवदास ! ते वेस्या राभी छे ? तयारे माधवदासे कहुं, महाराज ! माइं मन तेना उपर आसक्त छे. तेथी राभी छे. अे प्रकारे त्रशुवार श्रीआचार्यजीअे पूछ्युं. त्रशुवार माधवदासे कहुं, महाराज ! माइं मन अेना उपर आसक्त छे. तेथी राभी छे. तयारे श्रीआचार्यजी चुप थर् रहा.

भावप्रकाश—अेना अभिप्राय अे, हे प्रथम वैष्णव निंदा करता. ते पशु माधवदासने वेस्याना सग छोडाववा भाटे, हे निंदाथी लाज पामीने छोडी दे, तेथी करता. पोतानो बाध जणुनिने. धर्ष्या, द्वेषभाव नहीं हुतो. अे द्वेष होय तो पधाने बाधक थाय. पछी श्रीआचार्यजीने वैष्णवोअे कहुं, ते पशु माधव-

के लिये, जो—श्रीआचार्यजी के कहे तें छूटै तो आछो । लौकिक में वैष्णव की निंदा होत हैं सो छूटै । सो श्रीआचार्यजी सर्व लीला को प्रकार जानत हैं । तातें कहैं, क्यों रे माधवदास ! तू वेस्या राखे है ? यह कही । यह कहते, जो—वेस्या को संग छोड़ दे तोकों बाधक है । तो माधवदास छोड़ि देते । आपु बड़ाई करी । क्योंरे माधवदास ! वेस्या सरीखी हीन कों अंगीकार करि राखे ? संसार में वही जात हती ! लौकिक सोंउ न डरप्यो ? तब माधवदास कहे, मन वा पर आसक्त है गयो । जो—याकों कहुँ ठिकानो नाही है तातें संसार की लाज सरम वैष्णव की हू का'नि छोड़ि राखी है । सो मैं नाही राखी, मनके प्रेरक आपु हो । आपही वा पर आसक्त कियो, सो आपही राखी है । या प्रकार तीन वार कहे । सो यातें जो—साँची प्रीति होइगी (तो) एक दृढ़ वचन साँचे निकसैगे । सो साँचेही तीन वार माधवदास ने कही । तब आपु प्रसन्न भये । जो ऐसे टेक के वैष्णव दुर्लभ हैं ।

तब सगरे वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रसन्न सों कहे, महाराज ! अब ताई तो आपुकी का'नि हती । अब आपु सों हू कहि छुट्यो । आपु वासों कछु कहे नाही ?

भावप्रकाश—यह कहे यातें, जो—वैष्णवन कों बड़ी चिंता भई, जो—

दासना भाटे, हे श्रीआचार्यजीना कहेवाथी छुटे तो साइं । लौकिकमां वैष्णवोनी निंदा थाय छे, तेथी छुटे (तो साइं), परंतु श्रीआचार्यजी सव वीदानो प्रकार जणु छे तेथी कहे, हेम माधवदास ! तू वेस्या राखे छे ? जेम कहुं, जेम कहेता, हे वेस्यानो संग छोडी हे तने बाधक छे. तो माधवदास छोडी देता. (परंतु) पोते वप्पाणु कर्था. हेम माधवदास ! वेस्या जेवी हीनने अंगीकार करी राखी ? संसारमां वही जती हती. लौकिकथी ये न उर्यो ? त्यारे माधवदासे कहुं, मन जेनी उपर आसक्त थय गयुं. जेटले जेतु कंध ठेकाणुं नथी तेथी ससारनी लाज शरम (तथा), वैष्णवनी का'नि (पणु) छोडीने राखी छे. ते में नथी राखी. मनना प्रेरक आप छे. आपे ज तेना उपर आसक्त कर्था. ते आपे ज राखी छे. आ प्रकार त्रणु वार कहुं. ते जेथी, हे जे साथी प्रीति हुशे तो जेक दृढ वचन सायां निकणशे. ते साथे ज त्रणु वार माधवदासे कहुं. त्यारे पोते प्रसन्न थया, हे आवा टेकना वैष्णव दुर्लभ छे.

त्यारे सवणा वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रसन्नने कहे, महाराज ! हनु सुधी आपनी भयादा हती. हुवे आपने पणु कही छुट्यो. आपे जेने कंध न कहुं ?

भावप्रकाश—जे कहुं जेथी, हे वैष्णवोने मोटी चिंता हती, हे आप

की सखी चन्द्रलता लीला में इनको नाम हतो । सो अलौकिक संबंध बिना दैवी जीव की दृढ़ प्रीति बंधे नहीं ।

वार्ता-प्रसंग १—पाछें एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु कड़ा में पधारे । तब सगरे वैष्णव दरसन कों आये । पाछें माधवदास सुने । सोऊ आय श्रीआचार्यजी कों दंडवत् कियो । तब सगरे वैष्णव दरशन कों आये । तब सगरे वैष्णवन नें श्रीआचार्यजी सों कही, महाराज ! माधवदास ने वेस्या राखी है । तब श्रीआचार्यजी पूछे, क्यों माधवदास ! वेस्या राखी है ? तब माधवदास ने कही, महाराज ! मेरो मन वाके ऊपर आसक्त है । तातें राखी है । या प्रकार तीन बेर श्रीआचार्यजी पूछे । तीनों बेर माधवदास ने कही, महाराज ! मेरो मन वा पर आसक्त है, तातें राखी है । तब श्रीआचार्यजी चुप ह्वे रहे ।

भावप्रकाश—याको अभिप्राय यह, जो-प्रथम वैष्णव निंदा करते, सोउ माधोदास कों वेस्या को संग छुड़ावन कों । जो-निंदा तें लाज पाइ छोड़ेंगे, यातें करते । अपने भाई जानिकें, ईरण्या द्वेष भाव नहीं हतो । जो-द्वेष होइ तो सगरेन कों बाधक होई । पाछें श्रीआचार्यजी सों वैष्णवन ने कही । सोउ माधोदास

हुती. यद्रावलीनी सप्ती, यन्द्रलता लीलाभां येमनुं नाम हुतु. ते अदौष्टिक सपथ विना दैवी श्रवनी दृढ प्रीति अधाय नहीं. ।

वार्ता-प्रसंग-१—पछी एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु कड़ाभां पधार्या. त्यारे अधा वैष्णव दर्शने आव्या. पछी माधवदासे सांलथुं. (तेथी) तेमणे पणु आवी श्रीआचार्यजीने दंडवत् कर्या. त्यारे सधणा वैष्णव दर्शने आव्या. त्यारे अधा वैष्णवोअे श्रीआचार्यजीने कहुं, महाराज ! माधवदासे वेश्या राभी छे. त्यारे श्रीआचार्यजी पूछे, हेम माधवदास ! ते वेश्या राभी छे ? त्यारे माधवदासे कहुं, महाराज ! माइं मन तेना उपर आसक्त छे. तेथी राभी छे. अे प्रकारे त्रणुवार श्रीआचार्यजीअे पूछथुं. त्रणुवार माधवदासे कहुं, महाराज ! माइं मन अेना उपर आसक्त छे. तेथी राभी छे. त्यारे श्रीआचार्यजी चुप थछे रखा.

भावप्रकाश—अेना अभिप्राय अे, हे प्रथम वैष्णव निंदा करता. ते पणु माधवदासने वेश्याना संग छोडाववा भाटे, हे निंदाथी लाज पाभीने छोडी दे, तेथी करता. पोतानो भाध जणुने. धर्या, द्वेषभाव नहीं हुतो. अे द्वेष होय तो अधाने पाधिक थाय. पछी श्रीआचार्यजीने वैष्णवोअे कहुं, ते पणु माधव-

के लिये, जो—श्रीआचार्यजी के कहे तें छूटै तो आछो । लौकिक में वैष्णव की निंदा होत हैं सो छूटै । सो श्रीआचार्यजी सर्व लीला को प्रकार जानत हैं । तातें कहैं, क्यों रे माधवदास ! तू वेस्या राखे है ? यह कही । यह कहते, जो—वेस्या को संग छोड़ दे तोकों बाधक है । तो माधवदास छोड़ि देते । आपु बड़ाई करी । क्योंरे माधवदास ! वेस्या सरीखी हीन कों अंगीकार करि राखे ? संसार में वही जात हती ! लौकिक सौंड न डरप्यो ? तत्र माधवदास कहें, मन वा पर आसक्त हूँ गयो । जो—याकों कहुँ ठिकानो नहीं है तातें संसार की लाज सरम वैष्णव की हूँ का'नि छोड़ि राखी है । सो मैं नहीं राखी, मनके प्रेरक आपु हो । आपही वा पर आसक्त कियो, सो आपही राखी है । या प्रकार तीन वार कहे । सो यातें जो—साँची प्रीति होइगी (तो) एक दृढ़ वचन साँचे निकसैंगे । सो साँचेही तीन वार माधवदास ने कही । तत्र आपु प्रसन्न भये । जो ऐसे टेक के वैष्णव दुर्लभ हैं ।

तब खगरे वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों कहे, महाराज ! अब ताई तो आपुकी का'नि हती । अब आपु सों हूँ कहि छूट्यो । आपु वासों कछु कहे नहीं ?

भावप्रकाश—यह कहे यातें, जो—वैष्णवन कों बड़ी चिंता भई, जो—

दासना भाटे, हे श्रीआचार्यजीना कहेवाथी छुटे तो साइं । लौकिकमां वंशुवोनी निंदा थाय छे, तेथी छुटे (तो साइं), परंतु श्रीआचार्यजी सब लीलानो प्रकार लखे छे तेथी कहे, हेम माधवदास ! तू वेश्या राभे छे ? अम कछुं, अम कहेता, हे वेश्यानो संग छोडी हे तने बाधक छे. तो माधवदास छोडी देता. (परंतु) पोते वंशु कर्था. हेम माधवदास ! वेश्या लवी छीनने अंगीकार करी राभी ? संसारमां वही जती हुती. लौकिकथी ये न उर्यो ? त्यारे माधवदासे कछुं, मन अनी उपर आसक्त थय गयुं. अटवे अंतु कय ठेकाछुं नथी तेथी संसारनी लाज शरम (तथा), वैष्णुवनी का'नि (पणु) छोडीने राभी छे. ते में नथी राभी. मनना प्रेरक आप छे. आपे ज तेना उपर आसक्त कर्थुं. ते आपे ज राभी छे. आ प्रकार त्रणु वार कछुं. ते अथी, हे जे साथी प्रीति हुशे तो अक दृढ वचन सायां निकणशे. ते साथे ज त्रणु वार माधवदासे कछुं. त्यारे पोते प्रसन्न थया, हे व्यावा टेकना वैष्णव दुर्लभ छे.

त्यारे सधना वैष्णुव श्रीआचार्यजी महाप्रभुलने कहे, महाराज ! लल्लु मुधी आपनी भयादा हुती. लवे आपने पणु कही छूट्यो. आपे अने कंठ न कछुं ?

भावप्रकाश—अे कछुं अथी, हे वैष्णुवाने मोठी चिंता हुती, हे व्याप

આપુ આગે કહિ દિયો । અવ યાકો કૈસે કલ્યાન હોઈગો ? યહ ચિંતા કરિ ફેરિ વૈષ્ણવ ને કહી, આપુ યાસોં કહ્લુ કહે નાહીં ? સો કહો, યહ જતાયે ।

તવ શ્રીઆચાર્યજી વૈષ્ણવન કો સમાધાન કિયો । તુમ ચિંતા મતિ કરો । યાકો મન વા પર આસક્ત હૈ, સો શ્રીઠાકુરજી કો ફેરત કિતનીક વાર લગેગી ? ઔર ગદાધરદાસ ને યાકોં આસીર્વાદ દિયો હૈ, જો-હરિ-ભક્તિ દદ્દ હોઈગી સોઈ યહ માધવદાસ હૈ ।

ભાવપ્રકાશ—યહ કહિ યહ જતાયે, જો-યાકી ચિન્તા તુમ મતિ કરો । યહ સંસાર મેં પરિવેવારો નાહીં હૈ । વેસ્યા આદિ ઔરહૂ કોં સંસાર તેં કાઢનવારો હૈ । ગદાધરદાસ ને દદ્દ ભક્તિ દીની સો મૈને દીની । અવ, જો-મૈં હઠ કરિકે છુઢાજું તો ગદાધરદાસ ભગવદીય કી કૃપા કૈસેં જાની જાય ? યાતેં ગદાધરદાસ ને હરિ-ભક્તિ દીની સો દદ્દ હોઈગી । તુમ યાકી ચિંતા મતિ કરો ।

તવ સ્વ વૈષ્ણવ પ્રસન્ન હોઈકે ચુપ હે રહે । તા પાછે માધવ-દાસ કો મન ફિર-યો । સો વેસ્યા દૂરિ કીની । વૈષ્ણવ કી રીતિ મર્યાદા મેં ચલન લાગે । ભલે વૈષ્ણવ ભયે ।

ભાવપ્રકાશ—યામેં યહ જતાયે, જો-વેસ્યા કોં દૂરિ કીની સો યહ અર્થ વેસ્યા કોં વતાણ, જો-તૂ શ્રીગુસાંઈજી કી સખી હૈ । જવ શ્રીગુસાંઈજી પધારેંગે

આગળ કહી દીધુ . હવે એતું કલ્યાણ કેમ થશે ? એ ચિંતા કરી ફરી વૈષ્ણવોએ કહ્યું, આપે એને કંઈ ન કહ્યું ? તે કહો એમ જણાવ્યું.

ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ વૈષ્ણવોતું સમાધાન કર્યું. તમે ચિંતા ન કરો. એતું મન એના ઉપર આસક્ત છે. તે શ્રીઠાકુરજીને ફેરવતાં કેટલીક વાર લાગશે. એને ગદાધરદાસે એને આશીર્વાદ આપ્યો છે, કે હરિભક્તિ દદ્દ થશે. તે જ આ માધવદાસ છે.

ભાવપ્રકાશ—એ કહી એ જણાવ્યું, કે આની ચિંતા તમે ન કરો. આ સંસારમાં પડવાવાળો નથી. વેશ્યા વિગેરે ખીજને પણ તે સંસારમાંથી કાઢવા-વાળો છે. ગદાધરદાસે દદ્દ ભક્તિ આપી તે મે આપી. હવે એ હું હઠ કરીને છોડાવુ તો ગદાધરદાસ ભગવદીયની કૃપા કેમ જણી અથ ? તેથી ગદાધરદાસે હરિ-ભક્તિ આપી તે દદ્દ થશે. તમે આની ચિંતા ન કરો.

ત્યારે બધા વૈષ્ણવો પ્રસન્ન થઇને ચુપ થઇ રહ્યા. તે પછી માધવદાસતું મન ફર્યું. તે વેશ્યાને દૂર કરી. વૈષ્ણવની રીતિ મર્યાદામાં ચાલવા લાગ્યા. સારા વૈષ્ણવ થયા.

ભાવપ્રકાશ—આમાં આ જતાવ્યું કે, વેશ્યાને દૂર કરી તે એ અર્થ કે, વેશ્યાને ખતાવ્યું, કે તૂ શ્રીગુસાંઈજીની સખી છે. જ્યારે શ્રીગુસાંઈજી પધારશે

तब तेरो कार्य होइगो । तातें अब हमसों तोसों न बने । यह कहि के काढ़े । तब वह वेस्या विना घी की चुपरी रखी अंगाखरी खाई के निर्वाह पन्द्रह वर्ष लों कियो । पाछें श्रीगुसांईजी कड़ा में पधारे, तब वेस्या ने सुनी । तब श्रीगुसांईजी सों आइ विनती करी, महाराज ! मेरो अङ्गीकार करिए । तब श्रीगुसांईजी कहे, हम वेस्या कों सेवक नाहीं करत । तब घर आइ कें परि रही । अब, जल छोड़ दियो । सो आठ दिन श्रीगुसांईजी कड़ा में रहे । दूरि तें वेस्या दरसन करि जाइ । पाछें नौमें दिन श्रीगुसांईजी पधारन लागे । तब वेस्या दोइ मनुष्यन के हाथ पकरि कें आई । कह्यो, महाराज ! आजु नौमो दिन है । विना अन्नजल मेरे अब प्रान छुटेंगे, जो-आप अंगीकार न करोगे । तब श्रीगुसांईजी ने जानी, जो-अब याको दोष दूरि भयो, सुद्ध भई । तब उह वेस्या कों नाम सुनायो । पाछें उह ब्रह्मसंबंध की विनती करी, महाराज ! माधवदास कहि गये हैं, जो-तू श्रीगुसांईजी की दासी हैं । सो आपके लिये पन्द्रह वरस लों सुखी अङ्गाकरी खाय देह राखी । अब नौमें दिन तें जल हू त्यागो है । और जो मोकों आज्ञा करो सो मैं करों । मैं तो दुष्ट हों, परन्तु माधवदास के सम्बन्ध तें मोकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के दरसन हू भये, और

त्यारे ताइं कार्य थरो. तेथी हुवे भारे तारे न भने. अब कहीने काठी. त्यारे ते वेश्याये विना घीनी चोपडी रुपी अंगाखरी पाधने निर्वाह पंदर वर्ष सुधी क्यो. पछी श्रीगुसांईजी कडांमां पधार्या. त्यारे वेश्याये सांखण्युं. त्यारे श्रीगुसांईजीने आवीने विनती करी, महाराज ! भने अंगीकार करे. त्यारे श्रीगुसांईजी कहे, अबे वेश्याने सेवक नथी करता. त्यारे घर आवीने पडी रही. अन्नजल छोडी दीधुं. ते आठ दिवस श्रीगुसांईजी कडांमां रखा. दूरथी वेश्या दर्शन करी नथ. पछी नवमा दिवसे श्रीगुसांईजी पधारना लाग्या. त्यारे वेश्या ये मनुष्योना हाथ पकडीने आवी. क्युं, महाराज ! आज नवमो दिवस छे. विना अन्नजल भारा हुवे प्राण छूटथे. ने आप अंगीकार नही करे तो, त्यारे श्रीगुसांईजीये नप्युं, हे हुवे आना दोष दूर थयो, शुद्ध थध. त्यारे ते वेश्याने नाम सांखणाव्युं. पछी तेणीये ब्रह्मसंबंधनी विनती करी, महाराज ! माधवदास कही गया छे, हे तू श्रीगुसांईजीनी दासी छे. ते आपने मोटे वरस पंदर सुधी सुकी अंगाखरी पाध देह राखी. हुवे नवमा दिवसथी नल पणु छोड्युं छे. हुवे न आज्ञा करे ते हुं कइं. हुं तो दुष्ट छुं. परन्तु माधवदासना संबधथी भने श्रीआचार्यजी महाप्रभुनां दर्शन पणु थयां (छे), अबे आपनां दर्शन पणु थयां.

आपके हू भये । तातें मोकों ब्रह्मसंबंध कराइ मेरे माथे भगवत् सेवा पधरावो, तो मेरे प्रान रहेंगे । तब श्रीगुसाईंजी शुद्ध भाव देखि के ब्रह्मसंबंध कराए । लालजी पधराय दिये । वैष्णवन सों कहे, याकों रीति भांति सब बताइ दीजो, ता प्रकार यह सेवा करै । ऐसे करत वेस्या कों अटकाव भयो । सो वैष्णव तो बरजे, जो-चारि दिन लों कछु मति जलादि छवो । परन्तु वाको प्रेम बहोत सो रह्यो न जाइ, अटकाव में सेवा करै । पाछें पांचवें दिन अपरस काढ़े । श्रीठाकुरजी कों पञ्चामृत स्नान करावै । सो वैष्णवन ने उनसों व्यौहार छोड़ि दियो । पाछें कछुक दिन में श्रीगुसाईंजी कड़ा पधारे । तब सबन ने श्रीगुसाईंजी सों कही, महाराज ! वह वेस्या अटकाव में हू बहोत बरजे परन्तु मानत नाहीं, सेवा करत है । पाछें वेस्या सों, ऐसे मुनि श्रीगुसाईंजी निकट बुलाइ कहे, अटकाव में लोटी क्यों भरत हो ? तब वेस्या ने कही, महाराज ! मेरे जितने रोम हैं इतने धनी लौकिक में किये । सब आपकी कृपा तें छूटे । अब एक धनी अलौकिक आपु करि दिये, तिन विना कैसे चारि दिन रह्यो जाइ ? सो आपु तो अन्तर्यामी हो । एक क्षण को अन्तराइ सह्यो नहिं जात है । अरु पाँचवे दिन अपरस हू काढ़ि पञ्चामृत सों

तेथी मने ब्रह्मसंबंध करावी मारा माथे भगवत्सेवा पधरावो तो मारा प्राणु रहेरो। त्यारे श्रीगुसांभोज्ये (तेने) शुद्ध भाव जेधने (तेने) ब्रह्मसंबंध कराव्युं. लालज पधरावी दीधा. (पछी) वैष्णुवोने कहे, आने (सेवानी) रीति भांति अधी जतावी देखे. ते प्रकारे जे सेवा करे. जेम करतां वेश्याने अटकाव थयो. ते वैष्णुव तो शेके, के यार द्विस सुधी जलादि डोभ (वस्तु) ने न अडो. परन्तु जेने प्रेम धणु। ते रह्यो न जय, अटकावमां (पणु) सेवा करे. पछी पांचमा द्विसे अपरस काढे. श्रीठाकुरजने पञ्चामृत स्नान करावे. तेथी वैष्णुवोज्ये तेनाथी व्यवहार छोडी दीधा. पछी थोडा द्विसमां श्रीगुसांभोज कडा पधार्या. त्यारे अधाज्ये श्रीगुसांभोजने कथु, महाराज ! जे वेश्या अटकावमां पणु धणुं शेकवा छतां मानती नथी. सेवा करे छे जेवुं सांखणी श्रीगुसांभोज्ये वेश्याने पासे जेलावी पृछयुं, अटकावमां दोटी (जारी) डेम भरो छे ? त्यारे वेश्याज्ये कथु, महाराज ! मारा जेटला शेम छे तेटला धणु लौकिकमां कर्या. अधा आपनी कृपाथी छुटया. हुवे जेक धणु अलाकिक आपे करी दीधा. तेना विना यार द्विस डेम रही शकय ? आप तो अन्तर्यामी छे. जेक क्षणुने अन्तराय सह्यो जतो नथी. वणी पांचमा द्विसे अपरस पणु काडी पञ्चामृतथी श्रीठाकुरजने स्नान करावु छुं. आ मर्यादा पणु राखुं छुं. हुवे

श्रीठाकुरजी कों स्नान करावत हों । यह मर्यादा हू राखत हों । अब आप सवके अन्तर की जानत हो । जो आज्ञा देउ सो करों । तब श्रीगुसाईंजी याके ऊपर श्रीठाकुरजी प्रसन्न देखिकै कहे, जैसे करति है तैसेई करियो । या प्रकार चाको समाधान करि घर पठाई । जो-बेगि जा, तेरे लिये श्रीठाकुरजी वैठि रहे हैं । तब वह दंडोत् करिके गई ।

पाछें श्रीगुसाईंजी वैष्णवन सों कहें, जो-वह वेस्या करें, सो करन देऊ । चासों मति कछु कहियो । चाकी देखादेखी और कोई मति करियो । वा पर श्रीठाकुरजी वाही भांति प्रसन्न हैं, तुम पर मर्यादा ही सों प्रसन्न होंइगे । या प्रकार उह वेस्या कों माधवदास के संग तें प्रेम भयो ।

वार्ता-प्रसंग २—माधवदास, बेनीदास सों मिलि के रहते । सो एक दिन सोती की माला बहोत मोल की भारी विकान आई । सो देखिकै माधवदास ने बेनीदास सों कही, यह माला श्रीनवनीत-प्रियजी लाइक है, सो लेहु । तब बेनीदास ने कही, माला की कहा है ? हमारे जो कछु वस्तु है सो सब श्रीठाकुरजी की ही है । यह कहिकै बात टारि दिये ।

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो-संसार में आसक्त, सो लोगन

आप अधाना अंतरनी नखुं छे, नम आज्ञा हो तेम कइं. त्तारे श्रीगुसांठल अना उपर श्रीठाकुरलने प्रसन्न लेधने कहे, नम करे छे तेमन करन. अ प्रकारे अतुं समाधान करी घर भेकडी. न, नदही न, तारा भाटे श्रीठाकुरल भेसी रखा छे. त्तारे ते दंडवत् करीने गथे.

पछी श्रीगुसांठल वैष्णवाने कहे, ठे अ वेश्या करे ते करना हो. अने कंठ कहेता नही. अनी देखादेखी थीन डोध न करता. अना उपर श्रीठाकुरल अज प्रकारे प्रसन्न छे. तभारा उपर मर्यादाथी न प्रसन्न थरो. आ प्रकारे ते वेश्याने माधवदासना संगथी प्रेम थयो.

वार्ता प्रसंग-२—माधवदास वेणीदासने भणीनि रहता. ते अक द्विस भातीनी भाणा अहु मूढयनी लारी वेयावा आवी. ते लेधने माधवदासे वेणीदासने कछुं, आ भाणा श्रीनवनीतप्रियल लायक छे, ते लेा. त्तारे वेणीदासे कछुं, मासानी शी (वात) छे. अमारे ने कंठ वस्तु छे ते अधी श्रीठाकुरलनी न छे. अम कही वातने टाणी दीधी.

भावप्रकाश—अमां अम नखुं, ठे संसारमां आसक्त (होय) ते

के दिखाइवे के लिये सब श्रीठाकुरजी को कहै । परन्तु श्रीठाकुरजी के लिये खर्च न करे ।

तब माधवदास नें कही, जो-सब श्रीठाकुरजी को है तो श्रीठाकुरजी के लिये माला क्यों नहीं लेत ? तब भाई बेनीदास ने कही, जो-हमसों कैसे लीनी जाइ ? तब माधवदास ने कही, जो-मेरो द्रव्य बांटे देहु । मैं तुमसों न्यारो रहूंगो ।

भावप्रकाश—यामें यह कहे, तुम बैल हो, सो केवल गृहस्थाश्रम को व्यौहार लादो । हों तो न्यारो रहि मनोरथ करूंगो ।

सो द्रव्य आधो बांटे के न्यारे भये । सो थोरो द्रव्य हतो, सो माला लीनी न गई । परन्तु मन में यह, जो-ऐसी श्रीनवनीत-प्रियजी कों अंगीकार होई । सो द्रव्य लै के दक्षिण कमावन गये । और यह माला कों माधवदास ने अलौकिक अंगीकार विचारे । सो लौकिक में जाय नहीं, सो प्रयाग में बिकन आई । तब प्रयाग के वैष्णव मोल ले श्रीआचार्यजी कों दिये । श्रीआचार्यजी ने श्रीनवनीतप्रियजी कों पहराए । उहां माधवदास ने द्रव्य बहोत कमायो, सो पहिली माला तें उत्तम माला लेके चले । सो मारग में एक बड़ी

लोढाने देखाउवाने भाटे अधु श्रीठाकुरजुं कहे. परंतु श्रीठाकुरजुना भाटे अर्थ न करे.

त्यारे माधवदासे कहुं, के अधुं श्रीठाकुरजुं छे तो श्रीठाकुरजुने भाटे माला केम नथी लेता ? त्यारे भाई बेनीदासे कहुं, के अमारथी डेवी रीते लीधी जय (केमके अमे गृहस्थ छीअे), त्यारे माधवदासे कहुं, भाइं द्रव्य वाटी दे. (हुं) तमारथी अलग रहीश.

भावप्रकाश—अेमां अे कहुं, तमे अणद छे, तेथी देवण गृहस्थाश्रमनो व्यवहार (इपी षोअ) उठावो. हु तो अलग रही मनोरथ करीश.

ते द्रव्य अउधुं वांटीने अलग थया. ते द्रव्य थोडुं लुतुं, तेथी माला लेवाध नहीं. परंतु मनमां अे, के अेवी (माला) श्रीनवनीतप्रियजुने अंगीकार थाय (तो साइं). ते द्रव्य लधने दक्षिण कमावा गया. (अहलीं) अा मालानो माधवदासे असांकिड (रीते) अंगीकार वियार्यो. ते लौकिडमां जय नहीं. (तेथी) ते प्रयागमां वेयावा आपी. त्यारे प्रयागना वैष्णुवोअे मोल लध (ते) श्रीआचार्यजुने आपी. श्रीआचार्यजुअे (ते) श्रीनवनीतप्रियजुने पहुरावी. त्यां माधवदासे द्रव्य अहुं कमाव्युं. ते पहुरेडी मालाथी (पहुं) उत्तम माला लधने याहया. ते मार्गमां अेक

नदी आई। तहां नाव पर बैठे, और हू बहोत लोग बैठे। और नाव मध्य धारा में जब आई तब श्रीनवनीतप्रियजी लाल छरी ले के आये। सो एक माधवदास को दरसन भये तब श्रीमुख तें कहे, नाव डूबाऊं? तब माधवदास कहे, “निच्छेच्छातः करिष्यति।” तब श्रीनवनीत-प्रियजी कहै, तू कहां गयो हतो? तब माधवदास कहे माला लेन गयो हो। तब श्रीनवनीतप्रियजी कहे, कहा हमारे माला नाहीं हैं? देखि उहि माला श्रीआचार्यजी धराए हैं। और मेरे बहोतेरी हैं। तब माधवदास कही, महाराज! आपके बहोतेरी हैं, परि सेवक को यह धर्म नाहीं जो बैठे रहे। उद्यम करनो। तब नाव डूबत तें रही।

भावप्रकाश—श्रीठाकुरजी नाव पर आइके कहें सो यातें, जो-तेरे पीछे मोकों दक्षिण जानो पर्यो, सो तू क्यों गयो? मेरे कहा माला नाहीं है? तातें नाव डूबाऊं तो तू कहा करै? मनोरथ तेरो धरयो रहै। तब माधवदास कहै, “निजेच्छातः करिष्यति” सो “निजानां सेवकानां तस्य (तेषाम्) इच्छातः करिष्यति”। जो-भक्तन की इच्छा होइ सो ही सदा आपु करत आए हो। “भक्त मनोरथ-पूरुकाय नमः” आपको नाम है। सो माला को अङ्गीकारि श्रीआचार्यजी महाप्रभुन द्वारा होइ। ता पाछे सरीर रूपी नाव डूवे ताकी मोकों कछु चिन्ता नाहीं है।

भाटी नदी आवी, त्यां नाव उपर भेडा. भील पणु घणुा लोडो भेडा. (पछी) नाव मध्यधारांमं न्यारे आवी त्यारे श्रीनवनीतप्रियल लाल छरी लधने आव्या. ते अेक माधवदासने दर्शन थयां. त्यारे श्रीमुखे कछुं, नाव डूबाडुं? त्यारे माधवदास कहे, ‘निजेच्छातः करिष्यति’ त्यारे श्रीनवनीतप्रियल कहे, तूं क्यां गयो हतो? त्यारे माधवदास कहे, माणा लेवा गयो हतो. त्यारे श्रीनवनीतप्रियल कहे, शुं अमारै माला नथी? देअ, अेज माला श्रीआचार्यलअे धरावी छे. भील पणु मारे घणुी छे. त्यारे माधवदासे कछुं, महाराज! आपने घणुी छे परंतु सेवकनो अे धर्म नथी के भेसी रहे, उद्यम करवा. त्यारे नाव डूबवाथी रही.

भावप्रकाश—श्रीठाकुरल नाव उपर आवीने कहे, ते अेथी के तारी पाछण मारे दक्षिणु नवुं पडयुं. ते तूं केम गयो? मारे शुं माला नथी? तेथी नाव डूबाडुं तो तुं शु करे? मनोरथ तारो धर्यो रहे. त्यारे माधवदास कहे, ‘निजेच्छातः करिष्यति’ अेटवे ‘निजनां सेवकानां (तेषाम्) इच्छातः करिष्यति’ के अकतोनी इच्छा होय ते न आप सदा कृता आव्या छे. ‘भक्त मनोरथ-पूरुकाय नमः’ आपनुं नाम छे, तेथी मालानो अगीकार श्रीआचार्यल महाम-प्रभुलनी द्वारा थये. ते पछी शरीररूपी नाव डूबे तेनी मने कंठ चिंता नथी. न्यारे

सो हरिवंस पाठक पहले गनेश के उपासक हते । सो जब श्रीआचार्यजी 'पत्रावलंबन' कासी में किये । पंडितन कों जीते तब हरिवंस पाठक के मन में आई, जो-मैं हूँ श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के दरसन करि आजं । सो दरसन कों आये । तब विप्ररूप देखिके मन में आई, जो-ए ऊ ब्राह्मण हैं, हम हूँ ब्राह्मण हैं । ए पंडित हैं । सो मेरे कहा काम है ? मेरे गनेश के दरसन में ढील लगे सो ठीक नाहीं हैं । यह विचारि दूरि तें देखि पाछे फिरे । सो घर में आइ गनेश की पूजा कौ सामान लै चलन लागे । सो द्वार पर ठोकर लगी, गिरि परे, सो मूर्छा आइ गई । तब गनेश ने सपने में हरिवंस पाठक सों कहे, तू श्रीआचार्यजी के दरसन करे बिना मेरे पास आवत हतो, सो मैं तेरो मुंह न देखोंगो, श्रीआचार्यजी को अपराध कियो । श्रीआचार्यजी पूर्णपुरुषोत्तम हैं । तिनसों अपराध क्षमा कराइ मेरे पास आइयो । तब हरिवंस पाठक कों शरीर की सुधि भई । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन पास दोरघो आयो । दण्डवत् करि बिनती करी, महाराज ! आप पूर्णपुरुषोत्तम हो, मैं नहीं जान्यो । अब मेरो अपराध क्षमा करि सरन लेहु । तब श्रीआचार्यजी कहे, हम हूं ब्राह्मण हैं, तुम हूं ब्राह्मण हो । सरन आइवे की क्यों

ते हरिवंश पाठक पहले गणेशना उपासक हुता. ते न्यारे श्रीआचार्यजीके 'पत्रावलंबन' कासीमें किये, पंडितोंने जल्य त्यारे हरिवंश पाठकना मनमां आब्युं, के हु पणु श्रीआचार्यजी महाप्रभुजनां दर्शन करी आवु. ते दर्शन माटे आब्या. त्यारे विप्ररूप जेधने मनमां आब्यु, के जे पणु ब्राह्मणु छे. अमे पणु ब्राह्मणु छीजे. जे पंडित छे तेथी मारे (अमनाथी) शु काम छे ? मने गणेशना दर्शनमां ढील थाय ते ठीक नथी. जे विचारी दूरथी जेधने पाछा कर्था. ते धरमां आवी गणेशनी पूजनेा सामान लध आलवा लाग्या. ते द्वार उपर ठोकर वागी. पडी गया. ते मूर्छा आवी गध. त्यारे गणेश स्वभमां हरिवंश पाठकने कहे, तू श्रीआचार्यजीना दर्शन कर्था बिना मारी पासे आवतो हुतो तेथी हुं ताइं मुष्प नही जेठ. (तें) श्रीआचार्यजीनेा अपराध कर्था. श्रीआचार्यजी पूर्ण पुरुषोत्तम छे. तेमनी पासे अपराध क्षमा करावी मारी पासे आवन्ते. त्यारे हरिवंश पाठकने शरीरनी सुध आवी. ते श्रीआचार्यजी महाप्रभुज पासे दारुयो आब्यो. दण्डवत् करी बिनती करी, महाराज ! आप पूर्णपुरुषोत्तम छे, (अं) में नहीं जान्युं. हुवे मारे अपराध क्षमा करी (मने) शरणु ले। त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, अमे पणु ब्राह्मणु छीजे, तमे पणु ब्राह्मणु छे.

कहत हो ? तब हरिवंस पाठक ने कही, महाराज ! हम तो अज्ञानी जीव हैं, संसार समुद्र में पड़े हैं । सो आपके स्वरूप कों कहा जानें ? हम तो गनेश के उपासक हैं । सो गनेश हू आप के अपराध सों डरपत हैं । तातें मोकों तिहारे पास पठाये । जो-अपराध क्षमा कराइ आव । सो मैं अब जान्यो, जो-हम सों चड़े आप हो, अब मोकों सरन लेहु । तब श्रीआचार्यजी सेठ पुरुषोत्तमदास के इहाँ उतरे हते । तहाँ हरिवंस पाठक कों नाम सुनाये । तब हरिवंस पाठक ने विनती करी, महाराज ! घर में स्त्री है, एक वेटा, एक वेटी है । ताकों अंगीकार करिये । तब श्रीआचार्यजीने कही, तुम भगवत् स्वरूप कहूँ ते लावो । तब तेरे घर पधारि सबकों नाम-निवेदन कराइ, श्रीठाकुरजी पधराय देइंगे । तिनकी तुम सेवा करियो, और की सेवा मति करियो । तब हरिवंस पाठक ने कही, महाराज ! पुरुषोत्तम पाये पाछे ऐसो को अभागो है, जो-और देवता के पाछे द्वार भटकेगो । यह कहि बजार में आइ कछु न्योछावर दे, एक छोटे से लालजी को स्वरूप लियो । सो श्रीआचार्यजी के पास आय विनती करी, महाराज ! अब कृपा करिके वेगि पधारिये । काहेतें ? शरीर को भरोसो नाहीं । और कदाचित कोईको काल आइ जाइ तो जीव को अकाज होइ ।

शरणे आववानुं ठम कहे छे ? तारे हरिवंश पाठके कथुं, महाराज ! अमे तो अज्ञानी जव छीअे. संसार समुद्रमां पडया छीअे. ते आपना स्वरूपने शुं जाणीअे ? अमे तो गणेशना उपासक छीअे. ते गणेश पखु आपना अपराधथी डरे छे. तेथी मने तमारी पासे मोकटयो, ठे अपराध क्षमा करावी आवे. तेथी में हुवे जाण्यु, ठे अमाराथी मोटा आप छे. हुवे मने शरणे ले. तारे श्रीआचार्यज श्रेष्ठ पुरुषोत्तमदासने त्यां उतर्या हुता. त्यां हरिवंश पाठकने नाम संब-
णायुं. तारे हरिवंश पाठके विनती करी, महाराज ! घरमां स्त्री छे, एक वेटा एक वेटी छे. तेने अंगीकार करे. तारे श्रीआचार्यजअे कथुं, तू भगवत्स्वरूप द्वाध जगेथी लाव. तारे तारा धरे पधारी पधाने नाम-निवेदन करावी श्रीठाकुरज पधरावी द्धश. तेमनी तमे सेवा करजे. पीजनी सेवा न करता. तारे हरिवंश पाठके कथुं, महाराज ! पुरुषोत्तम मज्या पछी अवे द्वाणु अलागो छे, ठे पीज देवतानी पाछण द्वारे लटकशे ? अे कही अजरमां आवी कंध न्योछावर द्ध अेक नानुं सरथुं लावजनुं स्वरूप दीधुं. पछी श्रीआचार्यज पासे आवी विनती करी, महाराज ! हुवे कृपा करीने नददी पधारो. ठमठे ? शरीरने लशेसो नही. अने (जे) कदाचित द्वाधनेो काल आवी जय तो जवतुं अकाज थाय. आ

यह आरति देखि श्रीआचार्यजी महाप्रभु प्रसन्न होइ हरिवंस पाठक के घर पधारे । सगरी अपरस सिद्धि कराई । सगरे कुटुम्ब कों नाम निवेदन कराइ श्रीठाकुरजी कों पंचामृत सों स्नान कराइ पाट वैठारे । पाछें आप पाक करि भोग धरि भोजन किये । सवन कों जूठनि धरी । पाछे आप सेठ पुरुषोत्तमदास के घर पाँऊ धारे ।

पाछें आप पृथ्वी-परिक्रमा कों पधारे । तब हरिवंस पाठक सों कहे, जो-सन्देह होइ सो सेठ पुरुषोत्तमदास सों पूछि लीजो । सो हरिवंस पाठक सेवा भली भांति सों करते । श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे ।

वार्ता-प्रसंग १—सो एक समय हरिवंस पाठक पटना ब्यौहार कों गये हते । सो पटना के हाकिम सों बहोत मिलाप हतो । सो वह हाकिम मनमें अपने में जाने, जो-ए कछु मांगे तो मैं इनकों देंऊं । सो एक दिन उह हाकिम ने कही, मैं तुम ऊपर बहुत प्रसन्न हों, तातें तुम जो-कछु मांगो सो मैं देहुं । तब हरिवंस पाठक ने कही, कोई दिन कछु काम परैगो तो कहूंगो । सो ऐसे करत डोल उत्सव के दिन निकट आये । तब श्रीठाकुरजी ने हरिवंस पाठक सों जताई, जो-तू डोल झोकों न झुलावेगो ? तब हरिवंस पाठक मनमें विचारे, अब कहा करिये ? दिन थोरे रहे, चले सो तो न पहुँचिये । तब वह हाकिम पास

आरती जेठ श्रीआचार्यजी महाप्रभु प्रसन्न थै हरिवंस पाठकना धरे पधार्या । अधी अपरस सिद्धि करावी । अधा कुटुम्बने नाम-निवेदन करावी श्रीठाकुरजीने पंचामृतस्य स्नान करावी पाट जेसाउया । पछी पोते पाक करी भोग धरी भोजन धर्युं । अधाने जूठण धर्युं । पछी पोते सेठ पुरुषोत्तमदासना धरे अरण्य धर्या (पधार्या) ।

पछी पोते पृथ्वीपरिक्रमा भट्टे पधार्या । तारे हरिवंस पाठकने कहे, के स देह होय ते सेठ पुरुषोत्तमदासने पूछी देखे । ते हरिवंस पाठक सेवा सारी रीतिथी करता । (तेथी) श्रीठाकुरजी सानुभावता जणाववा लाग्या ।

वार्ता प्रसंग-२—ते एक समय हरिवंस पाठक पटना व्यवहार भट्टे गया हुता । ते पटनाना हाकेमथी अहु भेग हुतो । तेथी ते हाकेम पोताना मनमां जण्णे, के अ कंठ मांगे तो हुं अमने दई । ते एक दिवस अ हाकेमे कछुं, हुं तमारो उपर वण्णे प्रसन्न भु । तेथी तमे जे कंठ मांगे ते हुं दई । तारे हरिवंस पाठके कछुं, केठ दिवस कंठ काम परेगे तो दहीग । ते अम करतां उअ उत्सवना दिवस नण्क आव्या । तारे श्रीठाकुरजी अ हरिवंस पाठकने जणाव्युं, के त उअ मने नहों जडावे ? तारे हरिवंस पाठक मनमां विचारे, (के) हवे गुं करीअे ! दिवस थोडा रह्या । यादीये तो न पहुँचाय ।

गये और कहें, कछू मांगत है, सो मोकों दियो चाहिए । तब वह हाकिम ने कही, जो-चाहो सो मांगो । तब हरिवंस ने कही, जो-मोकों दिन ३ में कासी पहुँच्यो चाहिए । तब वह हाकिम ने घोड़ा और मनुष्य साथ दिये । सो मजलि-मजलि पर घोड़ा की डाक पर चले जाई, घोड़ा मनुष्य पलटत जाई । सो ऐसे करत दूसरे दिन आइ पहुँचे । रात्रि कों सब डोल की तैयारी सिद्ध करि राखी, दूसरे दिन झुलाए, बड़ो सुख भयो । पाछे दिन दस-पंद्रह रहिके पटना आये । तब वह हाकिम ने हरिवंस पाठक सों पूछी, ऐसो घर में कहा जरूरी काम हतो ? जो-यह मांग्यो । कछू द्रव्यादिक मांगते, तो लाख रुपैये की रीझि देतो । तब हरिवंस पाठक ने कही, जो-हम गृहस्थ हैं । अनेक काम घर के हैं । सो गयो हतो । या प्रकार अपनो धर्म गोप्य राखे । ऐसे भगवदीय हे । ता पाछे बड़े उत्सव, छोटे उत्सव, सगरे घर आइ के करते ।

भावप्रकाश—यामें यह सिद्धान्त जताए, जो-सनेही होइ सो उत्सव अपने ठाकुर पास करे तो ठाकुर प्रसन्न रहें । और श्रीठाकुरजी की सेवा को प्रकार काहू सों कहनो नाहीं, जैसे हरिवंस पाठक उह हाकिम सों कछु न कहे । घरहू में जदपि वैष्णव हते तऊ श्रीठाकुरजी के अनुभव की बात नाहीं कही ।

त्यारे ते हाकिम पास गया. अने कछुं, कंठ भागुं छुं ते अने आपपुं जेधये. त्यारे ते हाकिमे कछुं, के जेधये ते मांगो. त्यारे हरिवंशे कछुं, के मारे दिन त्रयुमां काशी पहां-यपुं जेधये. त्यारे ते हाकिमे घोडा अने मनुष्य साथे आप्यां. ते मुझमे मुझमे घोडानी जेपे उपर जय. घोडा मनुष्य अदसता जय. ते अमे कस्तां भीजे दिवसे आवी पहोअ्या. रात्रिअे अधी डालनी तैयारी सिद्ध करी राखी. भीजे दिवसे झुलाव्या. अहु सुभ थयुं. पछी दिवस दस-पंद्र रहिने पटना आव्या. त्यारे ते हाकिमे हरिवंश पाठकने पूछयुं, अयुं घरमां शुं जरूरी काम अहुं, के आ मांग्युं ? कंठ द्रव्यादिक मांगता, तो लाख रुपियातुं धनाम देतो. त्यारे हरिवंश पाठके कछुं, के अमे गृहस्थ छीअे. अनेक काम घरनां छे ते गयो अतो. अे प्रकारे पोतानो धर्म गोप्य राख्यो. अेवा भगवदीय अता. ते पछी मोटा नाना उत्सवो अंधा घर आवीने करता.

भावप्रकाश—आमां आ सिद्धांत जणाव्यो, के स्नेही होय ते उत्सव पोताना ठाकुर पास करे तो ठाकुर प्रसन्न रहे. अने श्रीठाकुरजीनी सेवानो प्रकारे काधने कहेवो नही. जम हरिवंश पाठक ते हाकिमने कंठ न कहे. घरमां पणु यदपि वैष्णव अता तोपणु श्रीठाकुरजीना अनुभवनी बात न करी.

सो हरिवंस पाठक श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे । तातें इनकी वार्ता को पार नहीं, सो कहां ताई कहिये ।

वार्ता ॥१०॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, गोविंददास भट्टा क्षत्री, थानेश्वर में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो गोविंददास थानेश्वर में सिपाइगीरी करते, हथियार बांधते । थानेश्वर के हाकिम पास रहते । रुपैया पांच-सात को रोज पावते । सो थानेश्वर में श्रीआचार्यजी पधारे । तब थानेश्वर में बहोत जीव सरन आये । तब गोविंददास भट्टाने श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों विनती करी, जो-महाराज ! मेरे द्रव्य बहोत है, कहा करूँ ? तब श्रीआचार्यजी ने कही, भगवद् सेवा करो । तब गोविंददास भट्टा ने कही-महाराज ! स्त्री अनुकूल नहीं है । ताको आसय यह जो-देवी नहीं है । तब श्रीआचार्यजी कहें, स्त्री को त्याग कर । तब गोविंददास ने स्त्री को त्याग करि सगरो द्रव्य लाइ श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों विनती करी, महाराज ! द्रव्य को कहा करूँ ? स्त्री को तो त्याग करघो । तब श्रीआचार्यजी नें कही, यह द्रव्य के चारि भाग कर । एक भाग श्रीनाथजी की भेट कर । एक

ते हरिवंस पाठक श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हुता । तथी अमनी वार्ता को पार नहीं, ते कयां सुधी कहुँये ?

वार्ता ॥१०॥

✽

✽

✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक गोविंददास भट्टा क्षत्री, थानेश्वर में रहेता, तेमनी वार्ता को भाव कहुँये छीये—

भावप्रकाश—ते गोविंददास थानेश्वर में सिपाइगीरी करते । हथियार बांधता । थानेश्वर के हाकिम पास रहेता । रुपैया पांच-सात को रोज पावते । सो थानेश्वर में श्रीआचार्यजी पधारे । तब थानेश्वर में बहोत जीव सरन आये । तब गोविंददास भट्टाने श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों विनती करी, जो-महाराज ! मेरे द्रव्य बहोत है, कहा करूँ ? तब श्रीआचार्यजी ने कही, भगवद् सेवा करो । तब गोविंददास भट्टा ने कही-महाराज ! स्त्री अनुकूल नहीं है । ताको आसय यह जो-देवी नहीं है । तब श्रीआचार्यजी कहें, स्त्री को त्याग कर । तब गोविंददास ने स्त्री को त्याग करि सगरो द्रव्य लाइ श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों विनती करी, महाराज ! द्रव्य को कहा करूँ ? स्त्री को तो त्याग करघो । तब श्रीआचार्यजी नें कही, यह द्रव्य के चारि भाग कर । एक भाग श्रीनाथजी की भेट कर । एक

भाग स्त्री कों दें । यातें, जो—व्याह भयो ताकों छोड़े को दोष पूंजी दिवे छूट्यो । दो भाग तू लेकें भगवत् सेवा करि । तव गोविंददास भल्ला नें कही, महाराज ! कछु आपु अंगीकार करिए । तव श्रीआचार्यजी नें कही, भलो, एक भाग हम कों दे । तव गोविंददास ने द्रव्य के चारि भाग करे । एक भाग श्रीनाथजी कों भेंट किये, एक भाग श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों भेंट कियो । एक भाग स्त्री कों दियो । एक भाग को द्रव्य ले महावन में आइ रह्यो । सो यातें, जो—गांव में स्त्री को प्रतिबंध परे । तातें महावन आइ, श्रीमथुरानाथजी की सेवा करन लागे ।

वार्ता—प्रसंग १—सो गोविंददास महावन में नित्य के चौबीस टका की सामग्री करें, भोग धरें । उहांई मर्यादामार्गीय वैष्णव कों लिवाय देई, बचै सो गाइ कों खवाइ देइ । तामें तें आपु कछु न लेई । आपु न्यारि लीटी करि भोग धरि खाँय ।

भावप्रकाश—याको आसय यह, जो—महावन में नन्दरायजी को देवालय कराइ ब्राह्मन कों पूजा सोंपी हती । सो मर्यादा रीति सों करते । खरच नन्दरायजी देते । सो ठाकुर हते । ब्राह्मन पूजा करते । सो देवालय को आपु कैसे लेइ ? तातें न्यारी लीटी करि मन ही सों भोग धरि लेते ।

श्रीनाथजीने लेट करे. ओक लाग स्त्रीने दे. ते ओथी दे, लगन थयुं तेने छोडयाने होष पूंज आयाथी भटे. ये लाग लधने तू भगवत्सेवा करे. त्यारे गोविंददास लह्याओ कछुं, महाराज ! कंधक आप अंगीकार करे. त्यारे श्रीआचार्यजीके कछुं, भले, ओक भाग अपने आप. त्यारे गोविंददासे द्रव्यना चार लाग कर्या. ओक भाग श्रीनाथजीने लेट कर्या. ओक भाग श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीने लेट कर्या, ओक भाग स्त्रीने दीधे. ओक लागतुं द्रव्य लध महावनमां आवी रह्या. ते ओ भाटे दे गाममां स्त्रीने प्रतिबंध पडे. तेथी महावन आवी श्रीमथुरानाथजीने सेवा करवा लाग्या.

वार्ता प्रसंग-१—ते गोविंददास महावनमां नित्यना चौबीस टकानी सामग्री करे (अने) लोग धरे. (पछी) त्यांज मर्यादामार्गीय वैष्णवोने लेवडावी दे. अये ते गायने अवडावी दे. तेमांथी पोते कंध न ले. पोते अलग लीटी (पीणी शैटी) करी लोग धरीने आय.

भावप्रकाश—अने आशय ओ, दे महावनमां नंदरायजीतुं देवालय करावी ब्राह्मणने पूजा सोंपी हती. ते मर्यादा रीतिथी करता. अर्थ नंदरायजी देता. ते ठाकुर हुता. ब्राह्मण पूजा करता. ते देवालयतुं पोते डम ले ? तेथी अलग लीटी करी मनथींज लोग धरीने देता.

ऐसे करत द्रव्य सब निघट्यो । तब श्रीनाथजीद्वार आइ श्रीगोवर्द्धनधर की परचारगी करन लागे । दोऊ समय के पात्र मांजे । रात्रि पहर डेढ़ रहे पाछली, तब उठि देह कृत्य करि न्हाइ के गागरि ले मथुरा आइ श्रीयमुना-जल की गागर भरि राजभोग पहले आवते । पात्र सब मांजि रसोइ पोति अपनी सब सेवा सों पहोंचि पर्वत तें नीचे आइ, तिलक घोइ माला उतारि गांठि बांधि गोवर्द्धन के आसपास सों कोरी भिक्षा मांणि लावते । सो सेर पांच-सात को आहार हू हतो । सो आहार लाइक आवे तब आइके अपने हाथ सों पीस रोटी करि श्रीगोवर्द्धनधर की ध्वजा कों दिखाइ चरणामृत मिलाइ कें लेते । पाछें सेनभोग के पात्र मांजते । रसोई पोति सेवा सों पहोंचि सेन करते । या प्रकार सेवा करते । परन्तु श्रीगोवर्द्धन-नाथजी कों आछे न लागतो ।

भावप्रकाश—ताको कारन यह, जो-भाव प्रीति सों ऐसी सेवा करें, तो श्रीगोवर्द्धनधर वाके पाछे लगे डोलते । परन्तु गोविन्ददास भल्ला तामसी हते, सो अहंकार सों करते । स्त्री को त्याग हू अहंकार सों करयो । महावन में हू चौबीस टका की सामग्री नित्य करते । सो अहंकार सों करते । इहां हू सगरी सेवा

अम करतां द्रव्य अधुं घट्युं. त्यारे श्रीनाथल्लद्वार आवी श्रीगोवर्द्धनधरनी परचारगी करवा लाग्या. अन्ने समयनां पात्र मांजे. रात्रिप्रहुर देढ रहे पाछली त्यारे उठी देह कृत्य करी न्हाइनि गागर लई मथुरा आवी श्रीयमुनाल्लनी गागर भरि राज-भोग पहलेसां आवता. (पछी) पात्र अधां मांजि रसोइ पोती, पोतानी अधी सेवाथी पहोंचीने पर्वतथी नीचे आवी तिलक घोइ माला उतारी, गांठ बांधी गोवर्द्धननी आसपासथी डोरी भिक्षा मांणि लावता. ते सेर पांच-सातनां आहार पणु हुतो. ते आहार लायक आवे त्यारे आवीने पोताना हाथथी पीसीने रोटी करी श्रीगोवर्द्धन-धरनी ध्वजने देखाडी यश्चामृत भेणचीने लेता. पछी सेनभोगनां पात्र मांजता. रसोइ पोती सेवाथी पहोंची सेन करता. या प्रकारे सेवा करता. परंतु श्रीगोवर्द्धन-नाथल्लने साइं न लागतुं.

भावप्रकाश—तेनुं कारणे अ, डे भाव प्रीतिथी अवी सेवा करे तो श्री-गोवर्द्धनधर अनी पाछण लाग्या डोलता. परंतु गोविन्ददास भल्ला तामसी हुता. ते अहु कारथी (सेवा) करता. स्त्रीना त्याग पणु अहु कारथी कर्यो. महावनमां पणु चौबीस टकानी सामग्री नित्य करता ते अहु कारथी करता. अही पणु अधी सेवा

अहंकार तें करते । सरीर को कष्ट पावते । परन्तु सगरे सेवकन कों नीचे करि दिये । जो-मो बराबर कौन करेगो । तातें श्रीगोवर्द्धनधर कों आछो न लगतो ।

तब श्रीगोवर्द्धनधर ने अडेल में श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों कह्यो, जो-तिहारो सेवक मोकों बहुत खिजावत है ।

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो-अहंकार सों बहोत सेवा करत है, मोकों खिजावत है, अपसन्न करत है । और तिहारो सेवक यों कहे तामें यह जताए, जो-हों तो वाकों दण्ड देतो परन्तु तिहारो सेवक है सो तुम ही समुझावो ।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु अडेल तें आगरे पधारिकै सब वैष्णवन सों पूछे, श्रीठाकुरजी किन रुठाए हैं ?

भावप्रकाश—सो सब सों पूछिवे को कारन यह, जो-आप तो जानत हैं, जो-गोविंददास भल्ला ने रुठाए । परन्तु सब सों पूछें, जो-अहंकार सहित और हू कोई सेवा करै तो श्रीठाकुरजी अपसन्न होइंगे ।

तब सगरे वैष्णवन ने कही, महाराज ! हम तो कछु जानत नाहीं । अहंकार कौन बात को करै ? हम सों (तो) कछु वनत नाहीं । तब प्रसन्न होइ आगरे तें आपु मथुरा पधारे । तब यहाँहू सब कहे,

अहंकारथी करता. शरीरतुं कष्ट पावता, परन्तु अथा सेवकाने नीचे करी दीधा, के भारा परापर (सेवा) ठाणु करशे ? तेथी श्रीगोवर्द्धनधरने साइं न लागतुं.

त्यारे श्रीगोवर्द्धनधरे अउलभां श्रीआचार्यल महाप्रभुलने कछुं, के तभारे सेवक भने अहु भीजवे छे.

भावप्रकाश—अभां आ जणुअयुं, के अहंकारथी अहु सेवा करे छे, भने भीजवे छे. अपसन्न करे छे. अने तभारे सेवक अम कछु, तेभां अ जणुअयुं, के हुं तो अने दंड देतो, परन्तु तभारे सेवक छे तेथी तमे ज समजवो.

त्यारे श्रीआचार्यल महाप्रभु अउलथी आत्रे पधारीने अथा वैष्णवाने पूछे, श्रीठाकुरलने कोए रिसाव्या छे ?

भावप्रकाश—अधाने पूछवानुं कारण अ, के आप तो जणु छे, के गोविंददास लक्ष्मीअ रिसाव्या छे. परन्तु अधाने पूछे (तेनुं तात्पर्य अ) के अहंकार सहित भीजे पणु ठाध सेवा करे तो श्रीठाकुरल अपसन्न थरे (अम जणुअयुं).

त्यारे अथा वैष्णवोअ कछुं, (के) महाराज ! अमे तो कंध जणुता नथी. अहंकार कंध पातनो करे ? अभाराथी (तो) कंध अनतुं नथी. त्यारे प्रसन्न थध आथाधी

महाराज ! हम तो कुछ जानत नहीं । तब आप यहां ते हू प्रसन्न होइ के श्रीनाथजीद्वार पधारें । तब स्नान करि के मंदिर में पधारें । श्रीगोवर्धनधर के दोउ कपोलन पर हाथ फेरिकें पूछें, बाबा ! अनमने क्यों हो ? तब श्रीगोवर्धनधर नें कही, तिहारो सेवक मोकों वहोत खिजावत है ! तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन ने सगरे सेवक बुलाइ, सेवा-दहल, महाप्रसाद की पूछे । सो सब को शिक्षा दिचे, जो-अहंकार भति करियो । तब गोविंददास सों पूछे, सो वे सब कहें । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें, श्रीनाथजी की रसोई में सगरे सेवक महाप्रसाद लेत हैं । तुमहू लियो करो ।

भावप्रकाश—यह कहि यह जताए, जो-सगरे सेवक की रीति चलो । अहंकार छोड़ो । और प्रभु अक्लिष्ट कर्मा है, दुःख पाय अहंकार सों करिये सो प्रभु को भावे नहीं ।

तब गोविंददास ने कही, महाराज ! देव-अंस कैसे लेहुं ?

भावप्रकाश—यामें यह भाव सों कहें, जो-सगरे देव-अंस लेत हैं मैं कैसे लेऊं ?

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे, जो-हमारी रसोई में महाप्रसाद लेउ ।

आप भयुरा पधार्या । त्पारे अली पणु अथा कहे, महाराज ! अमे तो कंध जलता नथी । त्पारे आप अलीथी पणु प्रसन्न थधने श्रीनाथलद्वार पधार्या । त्पारे स्नान करीने मंदिरमां पधार्या । श्रीगोवर्धनधरना अन्ने कपोलो उपर हाथ फेरवीने पूछे, बाबा ! अप्रसन्न डेम छे ? त्पारे श्रीगोवर्धनधरे कहुं, तमारो सेवक मने अहु पिजवे छे । त्पारे श्रीआचार्यल महाप्रभुलअये अथा सेवकाने जोलावी (तेमने) सेवा-दहल, महाप्रसादतुं पुछ्युं । अर्थात् अथाने शिक्षा दीधी, डे अहंकार न करता । त्पारे गोविंददासने पूछ्युं, त्पारे तेमणे अथुं कहुं । त्पारे श्रीआचार्यल महाप्रभुल कहे, श्रीनाथलनी रसोइमां अथा सेवक महाप्रसाद ले छे (त्यां) तमे पणु दीधा करे ।

भावप्रकाश—आ कहीने अये जलान्यु, डे अथा सेवकानी रीतिअये यातो । अहंकार छोडो । वणी प्रभु अक्लिष्टकर्मा छे । दुःख पायी अहंकारथी करीअये ते प्रभुने अये नहीं ।

त्पारे गोविंददासे कहुं, महाराज ! देवअंश डेवी रीते लठे ?

भावप्रकाश—अेमां अे भावथी कहु, डे अथा देवअंश ले छे, हुं डेवी रीते लठे ?

त्पारे श्रीआचार्यल महाप्रभुल कहे, डे अमारी रसोइमां महाप्रसाद ले ।

भावप्रकाश—ताको आसय यह, जो—आपकी रसोई होइ, यह कहि यह जताये, जो—श्रीगोवर्धनधर की सेवा छोड़ि हमारी करो। इहां रहो। सब सेवकन सों मिलिके चलो तो निर्वाह होय। नाही तो हमारे पास रहो महाप्रसाद लेहु।

तब गोविंददास फेरि अहंकार करि कहें, देव—अंस, गुरु—अंस कैसे लेहुं? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन नें कही, जो—सेवा छोड़ि देउ।

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो—श्रीनाथजी के यहाँ अहंकार किये तब सहज में सेवा छूटि गई। सो सेवा छोड़ि दीनी, परन्तु आज्ञा न मानी। तारें श्रीगोकुलनाथजी कहे क्षत्री अहंकारी ने सेवा छोड़ि दीनी। वाको आसय यह, जो—श्रीगोकुलनाथजी कों अहंकार प्रिय नाही है। तामसानां अधोगतिः। काहेतें, अहङ्कार दास-भाव में विरोधी है। तारें क्षत्री अहंकारी कहे। ताको आसय यह, और क्षत्री सेवक वहीत भये परन्तु अहङ्कार क्षत्रीपने को छोड़ि दिये। और इनकों वैष्णव नाही कहें, क्षत्री अहङ्कारी कहे। सो क्षत्रीपनो दासहू भये पै नास न भयो, गुरु आगें। तारें उत्तम कुल-मद वाधक दिखाए। जो—एक दिन अहङ्कार सों सेवा छूटे। सेवा ठाकुर न करावें। यह सिद्धांत दिखाये।

भावप्रकाश—तेनो आशय अये, ठे आपनी रसोई होय, अये कही अये जणायुं, ठे श्रीगोवर्धनधरनी सेवा छोडी अमारी करो, अहीं रहे। अथा सेवकाने मणीने आलो तो निर्वाह होय, नहीं तो अमारी पासे रहे, महाप्रसाद लो।

त्यारे गोविंददास इरी अहंकार करी कहे, देवअंस, गुरुअंस केम लई? त्यारे श्रीआचार्यजी महाप्रभुअये कहुं, के सेवा छोडी दो।

भावप्रकाश—अेमां अये जणायुं ठे, श्रीनाथअने त्यां अहंकार कर्यो त्यारे सहजमां सेवा छुटी गई। ते सेवा छोडी दीधी परन्तु आज्ञा न मानी। तेथी श्री-गोकुलनाथअये कहुं, क्षत्री अहंकारीअये सेवा छोडी दीधी। अेनो आशय अये, ठे श्रीगोकुलनाथअने अहंकार प्रिय नहीं। 'तामसानां अधोगतिः।' इम ठे, अहंकार दासभावमां विरोधी छे। तेथी 'क्षत्री अहंकारी' (अेम) कहुं, तेनो आशय अये (ठे) पील क्षत्री सेवक धरा थया परंतु अहंकार क्षत्रीपणानो छोडी दीधो। अने आमने वैष्णव न कथा, क्षत्री अहंकारी कथा, ते क्षत्रीपणुं दास थया छतां ये नास न थयुं। गुरु आगे! तेथी उत्तम कुल-मद वाधक देखाडयो। तेथी अेक दिवस अहंकारवडे सेवा छुटे। सेवा ठाकुर न करावे। अये सिद्धांत देखाडयो, तेथी

તાતેં શિક્ષાપત્ર મેં લિખે હૈ—

અસાધનઃ સાધનો વા ન સાધુઃ સાધુરેવ વા ।

શરણાદેવ નિખિલં ફલં પ્રાપ્નોત્યસંશયઃ ॥

યા માર્ગ મેં કિતને અસાધન હૈ । જિનસોં ભગવદ્ધર્મ નાહોં બનત । કિતને સાધન વહોત કરત હૈ, સેવા-સ્મરણ, જપ-પાઠ । વામેં કોઈ સાધુ, જો-સાત્વિક હૈ કોઈ અસાધુ રાજસી-તામસી હૈ । પરન્તુ સરન રાત્રિ દિન દઢ હૈ પ્રભુ કી । તિનહી કોં પ્રાપ્તિ નિશ્ચય હૈ, યહ જતાયે ।

વાર્તા-પ્રસંગ ૨—તવ ક્ષત્રી અહંકારી નેં સેવા છોડિ દીની, પાછે મથુરા આયો । પરન્તુ વિના સેવા-પૂજા રહ્યો ન જાઈ, દૈવી હૈ । તવ કેસોરાયજી કી સેવા હજારે લીની । સો વિપરીત કિયે ।

ભાવપ્રકાશ—કાહે તેં, પહેલે મહાવન મેં મથુરાનાથજી કી સેવા છોડિ દિયે, શ્રીગોવર્ધનધર કી સેવા કિયે, સો તો ઠીક કિયે । પરન્તુ શ્રીગોવર્ધનનાથજી કી સેવા છોડિ ફેર મર્યાદા મેં ગયે । તાતેં વિપરીત ભયે, સો કહત હૈ ।

પાછે એક દિન ગોવિંદદાસ ને કેસોરાયજી કી સૈયા-નિવાર ભરાણે । સો બુનનવારે કોં મેવા ત્વવાઈ બુનાયે । સો વહોત સુન્દર ભઈ ।

શિક્ષાપત્રમાં લખ્યુ છે—

“ અસાધનઃ સાધનોવા ન સાધુઃ સાધુરેવ વા ।

શરણાદેવ નિખિલં ફલં પ્રાપ્નોત્યસંશયઃ ॥ ”

આ માર્ગમાં કેટલાક અસાધન છે. જેમનાથી ભગવદ્ધર્મ નથી બનતો. કેટલાક સાધન બહુ કરે છે. સેવા-સ્મરણ, જપ-પાઠ. તેમાં ઠાઠ સાધુ જે સાત્વિક છે ઠાઠ અસાધુ રાજસી-તામસી છે. પરન્તુ શરણ રાત્રિ-દિવસ દઢ છે પ્રભુનું, તેમને જે પ્રાપ્તિ નિશ્ચય છે, એ જણાવ્યું.

વાર્તા પ્રસંગ-૨—ત્યારે ક્ષત્રી અહંકારીએ સેવા છોડી દીધી. પછી મથુરા આવ્યો. પરન્તુ વિના સેવા-પૂજા રહ્યો ન જાય, દૈવી છે. ત્યારે કેશવરાયજીની સેવા ધબરે લીધી. તે પણ વિપરીત ક્યું.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે પહેલાં મહાવનમાં મથુરાનાથજીની સેવા છોડી દીધી (અને) શ્રીગોવર્ધનધરની સેવા કરી તે તો ઠીક ક્યું. પરન્તુ શ્રીગોવર્ધનનાથજીની સેવા છોડી ફરી મર્યાદામાં ગયા. તેથી વિપરીત થયું, એમ કહે છે.

પછી એક દિવસ ગોવિંદદાસે કેશવરાયજીની સૈયાની પાટી ભરાવી. તે ભરવાવાળાને મેવા ખવડાવી ભરાવી. તે બહુ જ સુંદર થયું. અને મથુરાના હાકેમે ખાટલો

और मथुरा के हाकिम ने खाट-निवार, सो बुनाइ। तब काहू ने कही, केसोरायजी की सैया भई तैसी न भई। यह सुनिकें वह हाकिम केसोरायजी के मंदिर में आयो। सो तिवारी में केसोरायजी की सैया धरी हती। तापर चढ़ि बैद्यो। सो कोई ने गोविंददास भल्ला सो कही, जो-मथुरा को हाकिम आइ श्रीठाकुरजी की सैया पर बैद्यो है। तब गोविंददास गुपती छेत आयो। सो हाकिम को उहाँई मारयो। पाछें हाकिम के मनुष्यन ने गोविंददास को अपराध कियो। यह बात मथुरा के वैष्णवन ने सुनी। सो गोविंददास की देह को अग्नि-संस्कार कियो।

पाछें यह बात एक वैष्णव नें श्रीआचार्यजी सो कहे, महाराज! ऐसे वैष्णव की यह गति कैसे भई? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन ने कही, याके परलोक में तो कुछ हानि नहीं भई (परि) यह मेरी आज्ञा न मान्यो तातें ऐसो भयो। यह पहले जन्म में नन्दरायजी को भेंसा हतो। सो याके ऊपर श्रीठाकुरजी चढ़ते। सो याने एक दिन श्रीठाकुरजी के पूंछ की मारी, ताको दंड भयो। और श्रीनन्दरायजी के इहां श्रीठाकुरजी को मंदिर बन्यो तब याकी पीठ पर पानी-माटी बहोत होयो है।

भावप्रकाश—यह कहि यह जताए, जो-तहांहू भार उठायो और यहांहू

पाटी (हुती) ते लरावी. त्पारे डोअये कहुं, केशवरायलनी शैया थड तेवी न थड. अे सांलणीने ते लुकेभ केशोरायलना मंदिरमां आव्यो. ते, तिभारीमां केशवरायलनी शैया धरी हुती ते पर यहि भेडा. ते डोअये गोविंददास लखाने कहुं, डे मथुराने लुकेभ आवी श्रीठाकुरलनी शैया उपर भेडा छ. त्पारे गोविंददास गुप्ती लडने आव्यो. ते लुकेभने त्यां न मार्यो. पछी लुकेभना मनुष्याये गोविंददासने अपराध कर्यो. अे पात मथुराना वैष्णुवेअे सांलणी. ते गोविंददासनी देहने अग्नि-संस्कार कर्यो.

पछी आ पात अेक वैष्णुवे श्रीआचार्यलने कही, महाराज! आवा वैष्णुवनी आवी गति केभ थड? त्पारे श्रीआचार्यल महप्रभुलअे कहुं, अेना परलोकमां तो डंड लानी नथी थड. (परंतु) अेखे मारी आज्ञा न मानी तेथी अेवुं थयुं. अे पछेला जन्ममां नंदरायलने पाडा हुते, ते अेनी उपर श्रीठाकुरल यडता. ते अेने अेक दिवस श्रीठाकुरलने पूंछडी मारी, तेने दंड थयो. अने श्रीनंदरायलने त्यां श्रीठाकुरलनुं मंदिर बन्युं त्पारे अेनी पीठ उपर पाणी-माटी पडु न वहां छ.

भावप्रकाश—अे कही अे ननुअु, डे त्यां पणु बार उठाव्यो अने

भार उठायो । परन्तु प्रीति सों सेवा नहीं करी, जैसो अधिकार पूर्व को होय तैसोई कार्य बने ।

और गोविन्ददास सारस्वत कल्प में नन्दरायजी के पास हथियार बाँधि के रहते । सो मथुरा में कंस को कर देते, सो इनके हाथ देते । लीला में इनको नाम 'मनसुखा' गोप है । सो श्रीठाकुरजी ने जब धोबी के वस्त्र लूटे, मारे, तब मनसुखा, कंस को पैसा टका राखतो, ताको लूटिके मारग में बहोतन को मारे । सो सब अधमरे दस-पांच भये । सोऊ बैर भाव इनको चलयो आयो ।

पाछें ये स्वेतवाराह कल्प भयो, यामें श्रीनंदरायजी के घर भेंसा भये । ता वात को पांच हजार वरस भये । तहाँ श्रीठाकुरजी को पूंछ की दीनी, यह अपराध परयो । सो मथुरा को हाकिम मलेच्छ हतो । सो कंस को तोषा-खाना करतो । ताको गोविन्ददास ने मारें, जो-याने नन्दरायजी पास तें पैसा बहोत लियो है । और अब श्रीठाकुरजी की सैया पर बैठ्यो । यह मारन लायक है, तातें मारे । और दस-पांच अधमरे पहले किये, तिन सवन मिलि कें गोविन्ददास को मारे । सबको बैर छूट्यो । पाछे अब नन्दरायजी पास फेरि गोप भये । या प्रकार कहि

अही पद्य सार उठाव्यो. परन्तु प्रीतिथी सेवा नहीं करी. ज्यो अधिकार पूर्वना होय तेषु न कार्य बने.

भीष्म गोविन्ददास सारस्वत कल्पमां नंदरायजीनी पासे हथियार बांधीने रहेता. ते मथुरामां कंसने कर (नंदरायजी) आपता, ते आमना हाथथी देता. लीलामां आमनुं नाम ' मनसुखा ' गोप छे. ते श्रीठाकुरजीजे न्यारे धोभीनां वस्त्र लुट्यां, (तेमने) मार्या. सारे मनसुखाजे, (जे) कंसना पैसा-टका राखतो, तेने लुटीने अहु न्युने मार्या (हुता). ते अधा अधमरा दश-पांच थया. ते पद्य बैर-साव ज्येमने आट्यो आव्यो. पछी ते स्वेत वाराहकल्प थयो, तेमां श्रीनंदरायजीने धर लेसा थया. ते वातने पांच हजार वर्ष थयां. त्यां श्रीठाकुरजीने पूंछ मारी, ते अपराध पड्यो. ते मथुराने हाकिम मलेच्छ हुतो. ते कंसनुं तोषा-खाना (अहु-मूढय वस्त्र-आबरणुना सडार) (नी रणवाली) करतो. तेने गोविन्ददासे मार्या. ते अथी डे (तेषु) नंदरायजी पासेथी पैसा अहु लीधो छे अने हुवे श्रीठाकुरजीनी सैया उपर बैठो. जे मारवा लायक छे. तेथी मार्या अने दश-पांच अधमुवा पहला कर्या. ते अधाजे मणीने गोविन्ददासने मार्या. अधानु वैर छुट्युं. पछी, हुवे (जे) नंदरायजी पासे दूरी गोप थया. या प्रकारे कही ज्ये जाताव्यु, डे

यह जताए, जो—पिल्ले वैर सों वैर होइ, पिल्ले स्नेह सों स्नेह होइ । सो गोविन्द-दास भल्ला ऐसे भगवदीय हते । इनकी वार्ता में यह सिद्धांत जताए, जो—अहंकार न करनो । और अपुने हठ करि गुरु की आज्ञा उलङ्घन न करनो । और पुष्टिमार्गीय श्रीठाकुरजी की सेवा छोड़ि के मर्यादामार्गीय श्रीठाकुरजी की सेवा न करनी ।

सा वे गोविन्ददास श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के, ऐसे कृपा-पात्र भगवदीय हे । तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिये । वार्ता ॥११॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकनी, अम्मा क्षत्राणी, कड़ा में रहती, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में रोहिनी हती । सो श्रीनंदरायजी के उहां रही । पाछें मथुरा गई । परंतु ब्रज में इनको मन रह्यो । तातें अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को संबंध पाइ ब्रजलीला में अंगीकार भयो । तातें इनको पुत्रभाव ही दृढ है । सो अम्मा क्षत्राणी कड़ा में रहती, कुटुंब बहोत हतो । सो अम्मा के दोइ बेटा भये । एक वर्ष दोइ को । एक वर्ष चारि को । तब अम्मा को पति, सास, सुसर, मा, बाप, सब मरि गये । अम्मा और दोऊ बेटाई रहे । सो गदाधरदास कड़ा में रहते । तहां

पाछवा वेश्ठी वेश्ठी थाय पाछवा स्नेहथी स्नेह थाय ते गोविंददास जेवा भगवदीय हुता । जेमनी वार्तामां ज्वा सिद्धांत भताज्ये, डे अहंकार न करवे । जने पोते हठ करिने गुरुनी आज्ञानु उल्लंघन न करवुं । वणी पुष्टिमार्गीय श्रीठाकुरजी की सेवा छोडीने मर्यादामार्गीय श्रीठाकुरजी की सेवा न करवी ।

ते गोविंददास श्रीआचार्यजी महाप्रभुजना जेवा कृपापात्र भगवदीय हुता तेथी जेमनी वार्ता ज्यां सुधी कडीजे । वार्ता ॥ ११ ॥

✽

✽

✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजनी सेवकनी अम्मा क्षत्राणी, कड़ा में रहेती, तेमनी वार्ताना भाव कडीजे छीजे—

भावप्रकाश—जे लीला में रहिणी हती, ते श्रीनंदरायजने त्यां रही । पछी मथुरा गछ । परंतु ब्रजमां जेमनुं मन रह्युं । तेथी हुवे श्रीआचार्यजी महा-प्रभुजना संबंध प्राप्त करिने ब्रजलीलामां अंगीकार थयो । तेथी जेमने पुत्र भाव ज दृढ छे । ते अम्मा क्षत्राणी कड़ा में रहेती, कुटुंब बहुत हतुं । ते अम्माने जे जेटा थया, जेक वर्ष जेने, जेक वर्ष जारने । तयारे अम्माने पति, सास, सुसरा, मा-बाप जथा मरी गया, अम्मा जने जे जेटा रह्यो । ते (जेक समय)

श्रीआचार्यजी पधारे हे । सो अम्मा के एक रात्र, सुपन श्रीठाकुरजी ने दियो, जो-तू श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सरनि सवेरे जैयो । मैं श्रीआचार्यजी महाप्रभुन पास हों । सो मोकों पधराई सेवा करियो । तब अम्मा की नींद खुली । सो विरह वहोत भयो । जो-कब सवेरो होइ ? कब मैं श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सरनि जाँउ ? सो सवेरो होत ही न्हाइ के श्रीआचार्यजी महाप्रभुन पास आई, दंडवत् कियो । महाराज ! मोकों सरनि लीजिए, और आपके पास श्रीबालकृष्णजी हैं, सो मोकों कृपा करिकें रात्र कों, या प्रकोर आज्ञा करी है । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आपु अम्मा को सुद्ध भाव देखि कें आपु नाम-निवेदन कराए । और एक ब्राह्मन दक्षिन सों आयो हतो, सो वाके पास छोटे से लालजी हते । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु कों दे, बद्रीकाश्रम में जाई कछु दिन तपस्या करि देह छोड़ी । सो ठाकुर अम्मा के माथे पधराय दिये । और आज्ञा किये, (जो) इनको नाम श्रीबालकृष्णजी है । इनकी बालभाव सों पुत्र की नाँइ स्नेह करि सेवा करियो । या प्रकार कृपा किये । और अम्मा के दोइ बेटा । सो श्रीठाकुरजी के अंतरंग सखा हैं । बड़ो 'अर्जुन'; छोटे 'भोज' तिनहू कों नाम निवेदन कराई, अम्मा कों आज्ञा

गदाधरदास कडामां रहेता हुता त्यां श्रीआचार्यजी पधर्या हुता. ते अम्माने अेक रात्रिअे श्रीठाकुरजीअे स्वपन आभ्यु, ठे तू श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीनी शरणे सवारे न्ने अने हु श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीनी पासे छुं. ते मने पधरावी सेवा करन्. त्तारे अम्मानी निद्रा भुली ने विरह धणो थयो, ठे क्यारे सवार थाय, क्यारे हुं श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीनी शरणे न्ने ? ते सवार थतां न् न्हाधने श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी पासे आवी दंडवत करी. (कथुं) महाराज ! मने शरणे दो. अने आपनी पासे श्रीबालकृष्णजी छे ते मने कृपा करीने रात्रिअे आपु प्रकारे आज्ञा करी छे. त्तारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप अम्माने शुद्ध भाव न्नेधने पोते (तेने) नाम-निवेदन कराव्युं अने अेक ब्राह्मण दक्षिणथी आव्यो हुतो ते अेनी पासे नाना सख्या लालजी हुता. ते श्रीआचार्यजी महाप्रभुने दध, बद्रीकाश्रममां न्ध, थोडा दिवस तपस्या करी देह छोडी. ते ठाकुर अम्माने माथे पधरावी दीधा. अने आज्ञा करी, ठे अेनुं नाम श्रीबालकृष्णजी छे. अेमनी बालभावथी पुत्रनी माङ्क सेवा करन्. अे प्रकारे कृपा करी. भीनुं, अम्माना ये भेटा, ते श्रीठाकुरजीना अंतरंग सखा छे. भोटो अर्जुन, नानो भोज. तेमने पणु नाम निवेदन करावी अम्माने आज्ञा आपी ठे आ ये भेटाने डोधना हाथनु

दिये, जो—इन दोऊ बेदान कों काहू के हाथ को खान मति दीजो । ये ठाकुर की महाप्रसादी दीजो । येऊ लीला संवंधी हैं । महाप्रसाद विना और खाइंगे तो इनकों अंतराय होइगो । या प्रकार अम्मा कों अंगीकार करि श्रीआचार्यजी महाप्रभु आपु कासी पधारें । सन्यास ग्रहण करि आसुरव्यामोह लीला करी ।

वार्ता—प्रसंग १—सो यह अम्मा क्षत्राणी सेवा बालभाव सों प्रीति सों करें । सो वाके दोऊ बेदा अम्मा कहतें । सो श्रीठाकुरजी हू सानुभाव होइ के अम्मा कहते । सो ऐसे करत श्रीठाकुरजी हू दोऊ बेदा के संग खेलते । ईद घसि के आपुस में लगावते, उड़ावते । सो देखिके अम्मा मन में बहोत सुख पावती । पुत्रभाव सों बरजती । जो—यह कहा खेल ? कहूं नेत्रन हू में परेंगो । ऐसे करत कछुक दिन में एक बेदा वाको बड़ो मरि गयो । तब अम्मा श्रीठाकुरजी सों पहाँचि के रोवन बैठती । क्षत्रीन में बहोत रोवत हैं । तब अम्मा कों रोवति देखि श्रीठाकुरजी कहतें, अम्मा मति रोवे । या प्रकार बरजते । खेद करते । सो अम्मा मानती नाहीं । ऐसे करत अम्मा को दूसरो बेदा छोटी हू मरि गयो । तब अम्मा बहोत रोवन लागी । तब श्रीठाकुरजी बरजते, अम्मा रोवे मति । परंतु रोवत तें न रहेती । तब श्रीठाकुरजी अड़ेल में श्रीगुसांईजी सों कहे, जो—अम्मा रोवति है । सो मैं बहोत दुख पावत हों । तातें तुम आय के समुझावो ।

प्राणा दृश नही. आ ङाकुरनी महाप्रसादी आपन. ओ पणु लीला संवंधी छे. महाप्रसाद विना भीनु पारो तो अने अतराय पडरो. ओ प्रकारे अम्मानो अंगीकार करी श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप काशी पधार्या. (पछी) सन्यास ग्रहण करी आसुरव्यामोह लीला करी.

वार्ता—प्रसंग १—आ अम्मा क्षत्राणी (श्रीठाकुरजी) सेवा बालभाव सों प्रीतिपूर्वक करे. ते अने ओ भेटा तेने अम्मा (माता) छुटेता. ते श्रीठाकुरजी पणु सानुभाव धरने अम्मा छुटेता. ते अम्मा करतां श्रीठाकुरजी पणु अने भेटानी संगे भेसता. ईद घसीने परंपर लगावता, उड़ावता, ते जेधने अम्मा मनमां अहु सुख पावती. पुत्रभावथी रोकती के आ शी रमत ? ईध अंगोमां पणु पडरो. अम्मा करतां केरदाद दिवसमां अने ओक पुत्र भेटा मरी गयो. तयारे अम्मा श्रीठाकुरजी (नी सेवा) थी परवारीने सेवा भेसती. क्षत्रीयोमां अहु इवे छे. तयारे अम्माने शेती जेध श्रीठाकुरजी छुटेता, अम्मा ! तू रोदश नही. आ प्रकारे रोकता, भेद करता. परंतु अम्मा मानती नही. अम्मा करतां अम्मानो भीजे नानो पुत्र पणु मरी गयो. तयारे अम्मा अहु सेवा लागी. तयारे (पणु) श्रीठाकुरजी रोकता. अम्मा रोदश नही. परंतु सेवा विना न रहेती. तयारे श्रीठाकुरजी अउसमां श्रीगुसांईजीने छुटे, के अम्मा इवे छे. तेथी हुं अहु दुःख पासुं छुं. तेथी तमे आचीने समजवो.

भावप्रकाश—ये दोऊ वेटा की देह यासों छूटी, जो—बड़े होइ तो संसार के कार्य में लगें । अम्मा को मन इनके व्याहादिक में लगे । सो वे अंतरंग सखा हैं । तातें बेगि बुलाइ लिए । परन्तु अम्मा भगवदीय होइकें क्यों रोई ? ताको आसय यह है, जो—लोगन में पुत्र—सोक, सो तो अम्मा के नाहीं है । परन्तु श्रीठाकुरजी दोऊ वेटान के संग खेलते, ईंट घसि कें परस्पर देह सों लगावते, उड़ावते । सो खेल अनेक प्रकार को अम्मा दर्सन करती । सो खेल को सुख गयो । दोऊ श्रीठाकुरजी के खिलौना वेटा हते । सो अब किन सों खेलेंगे ? या भाव सों अम्मा रोवती । तातें श्रीठाकुरजी अम्मा के ऊपर प्रसन्न हैं कें बरजते । अम्मा को दुःख सहि न सकते । और जो—पुत्र को ममत्व करिके रोवती तो श्रीठाकुरजी न बोलते ।

तब श्रीगुसांईजी अडेल तें कडा पधारिकें, अम्मा के घर जाइ अम्मा सों कहे, तू मति रोवे । श्रीठाकुरजी खेद पावत हैं ।

भावप्रकाश—या प्रकार कहि अम्मा के वेटान को स्वरूप दिखाए । जो—अंतरंग सखा हैं । बड़े होइ तो संसार में ठीक न परे । तातें तू रोवे मति ।

तब अम्मा रोवत तें रही । सो अम्मा को ऐसो स्नेह हतो ।

भावप्रकाश—जे अन्ने वेटानी देहु जेथी छूटी ऊ मोटा थाय तो संसारना कार्यमां लागे, अम्मानुं मन जेभना लगन आदिमां लागे, ते (श्रीठाकुरजीना) अंतरंग सखा छे, तेथी जल्दी ज्योलावी लीधा परतु अम्मा लगवदीय थधने केम शोध ? तेनो आशय जे छे ऊ लोकांमां पुत्र-शोक (अहु होय छे) ते तो अम्मांमां नथी, परंतु श्रीठाकुरजी अन्ने पुत्रोनी संगे रमता, धंट धसीने परस्पर देहुथी लगाडता उडावता, ते कीडा अनेक प्रकारनी (ते) अम्मा दर्शन करती ते कीडानु सुख गयु, अन्ने पुत्र श्रीठाकुरजीनां रमकडां हुतां ते हुवे डोनी साथे रमशे ? जे लावथी अम्मा शैती, तेथी श्रीठाकुरजी अम्माना उपर प्रसन्न थधने शकता, अम्मानु दुःख सहन करी शकता नहीं, अने जे पुत्रनु ममत्व करीने शैती तो श्रीठाकुरजी न ज्योलाता ।

त्यारे श्रीगुसांईजी अडेलथी कडा पधारीने अम्माने धरे जध अम्माने कहे, तू रोवत नहीं, श्रीठाकुरजी क्लेश पावे छे ।

भावप्रकाश—या प्रकार कही अम्मानां पुत्रोनु स्वरूप देखाईयुं, ऊ अंतरंग सखा छे, मोटा थाय तो संसारमां ठीक न पडे, तेथी तू शोधन नहीं ।
त्यारे अम्मा शैती अंध थध, ते अम्मानो जेवो स्नेह हुतो, ऊे ज्यारे श्रीठा-

जो-जब श्रीठाकुरजी कों उठावें तब दोऊ हाथ सों सोंधो अतर आदि लगाइ श्रीअंग परस करें। जो-मेरे हाथ कठिन हैं। कोमल बालक को श्रीअंग है। या प्रकार सगरी सेवा प्रीति पूर्वक करती।

भावप्रकाश—यह सोंधो है, सो श्रीस्वामिनीजी के स्नेह रूप सचिकन है। यह कहि यह जताये, जो-ब्रजभक्तन के जसोदा-रोहिनी के भाव सों सेवा करती। तातें श्रीठाकुरजी अम्मा के ऊपर बहोत प्रसन्न रहतें।

वार्ता-प्रसंग २—और एक समय श्रीठाकुरजी के आगें दूध को कटोरा भरिकें धरयो। टेरा लगाइ के अम्मा बाहर आई। ऐसे में श्रीगुसाईजी अम्मा के घर पधारो। तब अम्मा सों यह पूछे, जो-श्रीठाकुरजी के कहा समय है? तब अम्मा ने कही, बाबा, पधारो। आपु कों सदा समय है। तब श्रीगुसाईजी टेरा सरकाय भीतर गये। सो देखें तो श्रीठाकुरजी कटोरा हाथ में लिये दूधपान करत हैं। तब श्रीगुसाईजी टेरा लगाइ पाछें वैसेही फिरि आये। तब अम्मा ने कही, जो-बाबा, पाछें क्यों फिरि आये? तब श्रीगुसाईजी ने कह्यो, जो-श्रीठाकुरजी आपु दूध पीवत हैं। तब अम्मा ने कही, यह तो लरिका है। कहा तुम नहीं जानत-हों? तब श्रीगुसाईजी ने कही, यह दूध

कुरलने लगावे तयारे अन्ने हाथथी सोंधो अतर आदि लगावीने श्रीअंग (ना) स्पर्श करती. (केम ?) के मारा हाथ कणु छे. आसकतुं श्रीअंग डोमस छे. आ प्रकारे अधी सेवा-प्रीतिपूर्वक करती.

भावप्रकाश—सोंधो छे ते श्रीस्वामिनीजीना स्नेह रूप सचिकणु छे. ओ कडी ओ जणायुं, के प्रजभक्तोना (अर्थात्) यशोदा-रोहिणीना भावथी सेवा करती. तेथी श्रीठाकुरल अम्माना उपर अहु प्रसन्न रहेता.

वार्ता-प्रसंग २—वणी अेक समय श्रीठाकुरलनी आगण ह्दने कटोरो लरीने धर्यो. टेरा लगाडीने अम्मा अहारे आवी. अेतसाभां श्रीगुसांथल अम्माना धरे पधार्यो. तयारे अम्माने अे पूछ्युं, के श्रीठाकुरलने शो समय छे? तयारे अम्माअे क्छुं, आवा! पधारो. आपने सदा समय छे. तयारे श्रीगुसांथल टेरो (पठे) असेडीने अंहर पधार्यो. तो लुवे तो श्रीठाकुरल कटोरो हाथभां लठने ह्दपान करे छे. तयारे श्रीगुसांथल टेरो लगाडी पछी अेमज पाछा पधार्यो. तयारे अम्माअे क्छुं, के आवा! पाछा केम इरी आव्या? तयारे श्रीगुसांथलअे क्छुं, के श्रीठाकुरल येते ह्द पीवे छे. तयारे अम्माअे क्छुं, अे तो आसक छे. शुं तमे नथी जणता? तयारे श्रीगुसांथलअे

हमारे डेरा पहोंचाय दीजो। तब अम्मा ने कही, तुमही अरोगनहारे हो। भावे यहां अरोगो, भावे ऊहां अरोगो। यह अम्मा के स्नेह के बचन सुनिकें श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये। अपुने डेरा पधारे। पाछें अम्मा हू दूध लेकें आई, श्रीगुसांईजी कों पान करायो।

भावप्रकाश—याको कारन यह, जो-अम्मा रोहिनीजी को स्वरूप है। सो श्रीबालकृष्णजी रोहिनीजी के भाव तें हैं। तातें श्रीबालकृष्णजी दूध आरोगत हते तब श्रीगुसांईजी पाछें फिरे। सो यातें, जो-श्रीनवनीतप्रियजी श्रीगुसांईजी के ठाकुर हैं। वह हेते तो आप पान करावतें। परंतु रोहिनीजी सों और श्रीचंद्रावलीजी सों स्नेह बहोत हैं। रोहिनीजी चंद्रावलीजी को भाव जानत हैं। तातें श्रीगुसांईजी प्रसन्न होइकें कहें, यह प्रसादी दूध हमको पठाईयो। सो यह पिछलो लीला को स्नेह जतायो। तब अम्मा ने कही, चाहे यहां आरोगो चाहे उहां आरोगो। ताको कारन यह, जो-तुमही अरोगनहारे हो। सो ये ठाकुरजी कों तुमही राखनहारे हो। ये ठाकुर तिहारे हैं।

पाछें श्रीगुसांईजी ने अम्मा की देह छूटे पाछें श्रीनवनीतप्रियजी के पास पधराये।

इहुं, ऐ दूध अमारा भूझमे पढोंयाडी देजे। तयारे अम्माये इहुं, तमेज आरोगवावाणा छे। याहे अही आरोगो, याहे त्यां आरोगो। ऐ अम्मानां 'स्नेहनां पयन सांलणीने श्रीगुसांछल घणु प्रसन्न थया। (पछी) पोते मुझमे पधार्या। पछी अम्मा पणु दूध लधने आवी। श्रीगुसांछलने पान कराव्युं।

भावप्रकाश—तेनुं कारणु ऐ, उ अम्मा रोहिणीजनुं स्वरूप छे। ते श्रीबालकृष्णु रोहिणीजना भावथी छे। तेथी श्रीबालकृष्णु दूध आरोगता हुता तयारे श्रीगुसांछल पाछा इर्या। ते ऐ माटे छे श्रीनवनीतप्रियज श्रीगुसांछलना ठाकुर छे। ते होता तो आप पान करावता, परंतु रोहिणीजने अने श्रीचंद्रावलीजने स्नेह धणु छे। रोहिणीज श्रीचंद्रावलीजने भाव जणु छे। तेथी श्रीगुसांछल प्रसन्न थधने कहे, आ प्रसादी दूध अमने भोइलन। ऐ पाछेला लीलाने स्नेह जणुआये। तयारे अम्माये इहुं, याहे अही आरोगो, याहे त्यां आरोगो। तेनु कारणु ऐ, उ तमे ज आरोगवावाणा छे। ते ऐ ठाकुरजने तमे ज राखवावाणा छे। ऐ ठाकुरज तमारा छे।

पछी श्रीगुसांछलऐ अम्मानी देह छूट्या पछी श्रीनवनीतप्रियज पासे पधराव्या।

भावप्रकाश—काहेतें ? रोहिनीजी सों श्रीगुसांईजी को भाव मिल्यो है । रोहिनीजी हू लीला की साधक है । यातें अम्मा की का'नि श्रीगुसांईजी बहोत राखते ।

सो अम्मा ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती । तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिये । वार्ता ॥१२॥

भावप्रकाश—या वार्ता में यह सिद्धांत जताये, जो—भक्तन को क्लेश श्रीठाकुरजी सों सह्यो न जाइ । तातें लौकिक वैदिक दुःख आनि पड़े तो वैष्णव धीरज राखि क्लेश न करे । जो क्लेश हू करे तो श्रीठाकुरजी संबंधी क्लेश करे ।

✽ ✽ ✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक गज्जनधावन क्षत्री, आगरे में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

वार्ता-प्रसंग १—इनके माथें श्रीनवनीतप्रियजी श्रीआचार्यजी ने पधराये । सो प्रकार एक क्षत्राणी की वार्ता में कहेंगे ।

भावप्रकाश—सो गज्जन श्रीचंद्रावलीजी की सखी, लीला में सुभ-आनना इनको नाम है । सो श्रीठाकुरजी प्रगटे ताके दूसरे दिन ये प्रगटी है । दसमीं को । तातें सुभआनना श्रीठाकुरजी के संग बाललीला खेल बहोत खेली हैं ।

भावप्रकाश—डेभडे ? रेहिणीजीने अने श्रीगुसांईजीने भाव भणे छे. रेहिणीजी पणु लीलानी साधक छे. तेथी अम्माना का'नि श्रीगुसांईजी धणी राखता. ते अम्मा अेवी कृपापात्र भगवदीय हती. तेथी अेनी वार्ता कथां सुधी कहीअे— वार्ता ॥ १२ ॥

भावप्रकाश—आ वार्तामां अे सिद्धांत ज्ञाण्यो, ढ भक्तोने क्लेश श्रीठाकुरजी सहनाय नही. तेथी लौकिक वैदिक दुःख आवी पडे तो वैष्णव धीरज राखी क्लेश न करे. जे क्लेश पणु करे तो श्रीठाकुरजी संबंधी क्लेश करे.

✽ ✽ ✽

हुवे श्रीआचार्यजीने सेवक गज्जनधावन क्षत्री, आगरामां रहेता, तेमनी वार्ताने भाव कहीअे छीअे—

वार्ता प्रसंग-१—अेमना माथे श्रीनवनीतप्रियजी श्रीआचार्यजीने पधराव्या. अे प्रकार अेक क्षत्राणीनी वार्तामां कहीअुं.

भावप्रकाश—अे गज्जन श्रीचंद्रावलीजीनी सखी, लीलामां सुभ-आनना अेमनुं नाम छे. ते श्रीठाकुरजी प्रकट्या सारे तेना भीज दिवसे अे प्रकटी छे, दसमीअे. तेथी सुभआनना श्रीठाकुरजीनी साथे बाललीलानी रमत

श्रीचंद्रावलीजी कों सगरे खेल के मिलाप को भेद ये बतावती । ताते श्रीचंद्रावलीजी कों अति प्रिय हैं । तातें श्रीआचार्यजी गज्जन के साथे श्रीनवनीतप्रियजी पधराये । जो—ये श्रीगुसांईजी के ठाकुर हैं । गज्जन श्रीगुसांईजी की सखी हैं, सदा संग खेले हैं । सो संबंध अब फेरि खेलेंगे ।

सो कछुक दिनमें गज्जन सों श्रीनवनीतप्रियजी सानुभावता जनावन लागे । गज्जन कों गाय करते, घोड़ा करते । आपु ऊपर चढ़तें । सो गज्जन के घोंटू घसि गये । परन्तु देह की सुधि नाहीं । सो एक दिन गज्जन सों श्रीनवनीतप्रियजी कहें, भोकों श्रीआचार्यजी के इहां पधराइ के तुमहू उहां रहो ।

भावप्रकाश—ताको कारन यह, जो—गज्जन को ऐसो स्नेह बढ्यो, जो—सेवा की रीति भूलि गये । खेल में अनोसर आदि । तब श्रीठाकुरजी विचारे, जो—याकों व्यसन अवस्था की सिद्धि होइ चुकी है । अब यह अपने गाम घरमें रहेगो तो बाधक होइगो ।

तब गज्जन तत्काल श्रीनवनीतप्रियजी कों गोकुल पधराय कें आये । श्रीआचार्यजी कों दंडवत् करि कहें, जो—महाराज ! श्रीनवनीतप्रियजी आपुके घर पधारे हैं । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु

धरणी रही छे । श्रीचंद्रावलीजीने अधी डीडाना भिक्षापना भेद ये बतावती । तेथी श्रीचंद्रावलीजीने अति प्रिय छे । तेथी श्रीआचार्यजीने गज्जनना साथे श्रीनवनीतप्रियजी पधराव्या । डेभडे ये श्रीगुसांईजीना ठाकुर छे । गज्जन श्रीगुसांईजीनी सणी छे । सदा साथे भेदे छे । ते संबंधथी हुवे इरी भेदशे ।

ते थोडा द्विसमां गज्जनने श्रीनवनीतप्रियजी सानुभावता ज्ञानुपवा लाग्या । गज्जनने गाय करता, घोडा करता, पाते उपर चढता । तेथी गज्जननाःडींयणु घसाध गया । परंतु देहदुं सान नहीं (रहे) । ते अेक द्विस गज्जनने श्रीनवनीतप्रियजी कहे, भने श्रीआचार्यजीने त्यां पधरावीने तभे पणु त्यां रहे ।

भावप्रकाश—तेनुं कारण अे, के गज्जनने अेवो स्नेह बधे डे सेवानी रीति भूली गया । रमतमां, अनोसर आदि । तयारे श्रीठाकुरजीने विचार्युं डे, आने व्यसन अवस्थानी सिद्धि थई युकी छे । हुवे आ जे पाताना गाम—धरमां रहेशे तो बाधक थशे ।

तयारे गज्जन तत्काल श्रीनवनीतप्रियजीने गोकुल पधरावीने आव्या । श्रीआचार्यजीने दंडवत् करिने कहे, के महाराज ! श्रीनवनीतप्रियजी आपना घरे पधार्या छे ।

कहें, सैया न्यारी नाही है। कछ पात्र नये नाही। या प्रकार ओंचका कैसे पधारे हैं ? तब गज्जन में कही, अब तो श्रीनवनीतप्रियजी की इच्छा तो ऐसी है। तब श्रीआचार्यजी, जो—कछ सामग्री बनि आई सो सिद्ध करि अरोगाय, अपने श्रीअंग में सोंधो लगाई पास लै पौढ़े।

भावप्रकाश—सोंधो लगायवे को कारन यह, जो—अत्तर आदि सुगंध श्रीस्वामिनीजी के श्रीअंग को गंध स्नेह रूप है, सो प्रगट नहीं कहे। सो यों कहे, तामें जताए, जो—श्रीस्वामिनी स्वरूप है संग लै पौढ़ें।

पाछें मर्यादा राखिवे के लिये छोटीसी पलंगड़ी बनवाये। ता पर दूसरे दिन श्रीनवनीतप्रियजी को पौढ़ाए। तब श्रीनवनीतप्रियजी ने कही, सैया छोटी है। मेरे पाँव नीचे लटकत हैं। तातें मैं तिहारे संग पौढ़ंगो।

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो—कहा मैं बालक हों तिहारे भाव सों ? तिहारे घर तो तरुण हों। और जसोदाजी के भावसों बालक हों। तातें तुम मेरो छोटे स्वरूप देखिकें सैया छोटी क्यों बनवाई ? तातें मैं तिहारे पास पौढ़ंगो। मोकों भावत हैं।

त्यारे श्रीआचार्यजी महुाप्रभु कहे, सैया अलग नथी। कंध पात्र नवां नथी। व्या प्रकारे अयानक डेम पधार्या छे ? त्यारे गज्जने कछुं, हुमणुं तो श्रीनवनीतप्रियजीनी इच्छा अवी छे। त्यारे श्रीआचार्यजीने जे कंध सामग्री अपनी आवी ते सिद्ध करीने आरोगावी। (पछी) पोताना श्रीअंगमां सुगंधी द्रव्य लगाडी पास लघ पोढ्या।

भावप्रकाश—सुगंधी द्रव्य लगाडवानुं कारण अे, डे अत्तर आदि सुगंध श्रीस्वामिनीजीना श्रीअंगना गंध स्नेहरूप छे। ते प्रकट नही कछुं, तेथी अेम कहे। तेमां जणुव्युं, डे श्रीस्वामिनी स्वरूप थध साथे लघ पोढ्या।

पछी मर्यादा राखवाने माटे नानी सरणी पलंगडी अनावडावी। ते उपर थीज दिवसे श्रीनवनीतप्रियजीने पोढाव्या। त्यारे श्रीनवनीतप्रियजीने कछुं, सैया नानी छे। मारा पग नीचे लटके छे। तेथी हुं तमारी साथे पोढीश।

भावप्रकाश—अेमां अे जणुव्युं, डे शुं हुं आलक छुं तमारा आवथी ? तमारा धरे तो तरुण छुं। अने यशोदाजीना भावथी आलक छुं। तेथी तमे माइं नातुं स्वरूप जेधने सैया नानी डेम अनावडावी ? तेथी हुं तमारी पास पोढीश। अने अे छे।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु फेरि सोंधो श्रीअंग में लगाई पास लै पौढ़ें । पाछें सवारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने बड़ी सैया सँवराई, ता पर पौढ़ाये । तब फेरि श्रीनवनीतप्रियजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों कहें, जो—मैं तिहारे पास पौढ़ूंगो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कहें, जो—महाराज ! लोगन में मर्यादा राखी चाहिये । और तिहारे पास मूँढा को साज नब राखि श्रीस्वामिनीजी स्वरूप सों मैं पास ही हों । ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कहें ।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो—ऊपर की मर्यादा छोड़े तें जीव को बिगार होइ । देखादेखी कोई करे ।

तब श्रीनवनीतप्रियजी सैया में पोढ़न लागे ।

वार्ता—प्रसंग २—सो गज्जन मंदिर के द्वार में सन्मुख सेवा समय बैठे रहे । अनोसर में हूं मंदिर में रहे । श्रीनवनीतप्रियजी संग खेलें, न्यारे न रहें । सो एक दिन पान न हते । सो श्रीअक्काजी ने गज्जन सों कहें, यह पैसा ले जाव, पान ले आवो ।

भावप्रकाश—सो गज्जन अक्काजी सों कहि न सके, जो—मोसों श्रीनवनीतप्रियजी हिलै हैं । यह सिद्धांत बताए । जदपि श्रीठाकुरजी वैष्णव सों

त्यारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु इरी सुगंधित द्रव्य श्रीअंगे लगाडी पासे लध पोढ्या । पछी सवारे श्रीआचार्यजी महाप्रभुये मोठी सैया सिद्ध करावी ते उपर पोढाव्या । त्यारे इरी श्रीनवनीतप्रियजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुने कहे, के हुं तभारी पासे पोढीश । त्यारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कहे, के महाराज ! लोकोमां मर्यादा राखी जेधये । अने तभारी पासे मूँढा (स्वामिनीनां वस्त्र-आभरण आदि) तो साज अघो राखी श्रीस्वामिनीजी स्वरूपथी हुं पासे न छुं । अम श्रीआचार्यजी महाप्रभुये पोते छुं ।

भावप्रकाश—अमां अे नृणांयु, के उपरनी मर्यादा छोडवाथी जवनो अगाड थाय देखादेखी ठाड करे ।

त्यारे श्रीनवनीतप्रियजी सैयामां पोढवा लाग्या ।

वार्ता प्रसंग-२—ते गज्जन मंदिरना द्वारमां सन्मुख सेवा समय भेसी रहे । अनोसरमां पणु मंदिरमां रहे । श्रीनवनीतप्रियजी साथे जेदे । असंग न रहे । ते अेक दिवस पान न हुतां ते अकाल्पये गज्जनने छुं, आ पैसा लध जाव, पान लध आवो ।

भावप्रकाश—ते गज्जन अकाल्पने कही न शक्या के भाशथी श्रीनवनीतप्रियजी हुणी गया छे । (तेमां) अे सिद्धांत नृणांयो (के) यदपि श्रीठाकुरजी

बोले, पास राखे, तो हू गुरु आज्ञा देय तो आज्ञा माथे पर धरिकें गुरु के कार्य कों जाय तो धरम रहें । ठाकुर हू प्रसन्न रहें । तातें गज्जन गये । परंतु श्रीनवनीत-प्रियजी हू वरजे नहीं । वैष्णव को भाव देखिवे के लिये ।

तब गज्जन पान लेन कों गये । सो बाहर निकसत ही विरह ज्वर ऐसो चढ्यो जो एक हाट पर परि रहे ।

भावप्रकाश—काहे तें, इनकों व्यसन अवस्था है चुकी है । सो श्री-आचार्यजी सों और कोई भगवदीय, जो-भाव में मगन है, तिनसों बोलनो मिलनो । और सों सब देह-संबंध छूटि गयो ।

इहां श्रीआचार्यजी ने श्रीनवनीतप्रियजी कों राजभोग धरे । तब श्रीनवनीतप्रियजी ने कही, गज्जन आवें तब मैं अरोगों । तब श्रीआचार्यजी ने सब सों पूछी, जो-गज्जन कहां गयो है ? तब श्रीअक्काजी ने कही, मैं पान लेन पठायो है । तब श्रीआचार्यजी कहें, गज्जन कों क्यों पठवाए ? गज्जन सों श्रीनवनीतप्रियजी हिले हैं । आजु पाछें इनसों कछू मति कहियो, कहुं मति पठाईयो ।

भावप्रकाश—यामें यह जताए, जो-फलदसा कों पाये । इनकों मानसी सिद्ध होइ चुकी हैं ।

वैष्णवथी भेले, पास राखे, तोपणु गुरु आज्ञा दे तो आज्ञा माथे यढावीने गुरुना कार्य भाटे नय तो धर्म रहे. ठाकुर पणु प्रसन्न रहे. तेथी गज्जन गया. परंतु श्रीनवनीतप्रियणु पणु रोठे नहीं. वैष्णवने भाव लेवाने भाटे.

त्यारे गज्जन पान लेवाने गया. ते बाहर निकणतां न विरहज्वर अये यढयो के अेक दुकान उपर, पडी रखा.

भावप्रकाश—ठेभके, अेभने व्यसन अवस्था थध युकी छे. तेथी श्रीआचार्यणुथी अने ठाध भगवदीय दे न भावमां मथ छे तेभनाथी भोखवुं मणवुं. भीअथी अधो देहु-संबंध छुटी गयो (छे).

अहुं श्रीआचार्यणुअे श्रीनवनीतप्रियणुने राजभोग धर्या. त्यारे श्रीनवनीतप्रियणुअे कछुं, गज्जन आवे त्यारे हुं आरोगुं. त्यारे श्रीआचार्यणुअे पधाने पूछ्युं, के गज्जन क्यां गयो छे ? त्यारे श्रीअक्काणुअे कछुं, में पान लेवा मोकल्यो छे. त्यारे श्रीआचार्यणु कहे, गज्जनने केम मोकल्यो ? गज्जनथी श्रीनवनीतप्रियणु लुग्या छे. आज पडी अेने कंध कहेसो नहीं, कंध मोकलता नहीं.

भावप्रकाश—अेमां अे नणुणुं, दे इंसदशाने पाअ्यो छे. अेने मानसी सिद्ध थध युकी छे.

तब श्रीअक्काजीने कही, अब इनसों कछु टहल न कहोंगी । तब एक वैष्णव सों श्रीआचार्यजी ने कही, गज्जन कों बेगि पठाइ दीजो । हाट पर परयो है । तुम पान लाइयो । तब वैष्णव जाइ देखें तो द्वार के पासई एक हाट पर परे हैं । तब कहें बेगि जाव तुमकों श्रीआचार्यजी बुलाये हैं । तब यह सुनत ही गज्जन कों विरह-ज्वर उतरि गयो । दोरि के आये । तब श्रीनवनीतप्रियजी सों कहें, बाबा ! भोजन क्यों नहीं करत ? तब श्रीनवनीतप्रियजी कहें, तू आयो ! अब मैं भोजन करूंगो । यह प्रकार गज्जन के और श्रीनवनीतप्रियजी के स्नेह हतो । सो गज्जन ऐसे भववदीय हते । सो तातें इनकी वार्ता को पार नहीं, सो कहां ताई कहिये । वार्ता ॥१३॥

भावप्रकाश—इनकी वार्ता में यह सिद्धांत जताए, जो-व्यसन अवस्था सर्वोपरि है । जामें श्रीठाकुरजी वस होई । सो कुंभनदासजी गाये हैं “ जोपै विरह परस्पर व्यापे तो कछु जीय वनि आवें ” सो गज्जन की परस्पर प्रीति दिखाये । ॥ वैष्णव त्रयोदस ॥

✽

✽

✽

त्यारे श्रीअक्काज्ये कछु, हुवे अने क'ध टहल नही कछुं. त्यारे अेक वैष्णवने श्रीआचार्यज्ये कछुं, गज्जनने जदही भेकदी देजे. दुकान उपर पड्यो छे. तमे पान लावजे. त्यारे वैष्णव जध देजे, तो, द्वारनी पासे ज (ते) अेक दुकान उपर पडया छे. त्यारे कछे जदही जव, तमने श्रीआचार्यज्ये भोलाव्या छे. त्यारे अे सांलगतां ज गज्जनने विरह-ज्वर उतरि गयो. दैडीने आव्या. त्यारे श्रीनवनीतप्रियजने कछे, भावा ! लोजन केम नथी करता ? त्यारे श्रीनवनीतप्रियज कछे, तू आव्या ? हुवे हुं लोजन करीश. आ प्रकारे गज्जनने अने श्रीनवनीतप्रियजने स्नेह हुतो. ते गज्जन अेवा लगवदीय हुता. तेथी अेमनी वार्ताते पार नहीं. ते क्यां सुधी कहीअे ? -
वार्ता ॥ १३ ॥

भावप्रकाश—अेमनी वार्तामां आ सिद्धांत जशाव्या, उे व्यसन अवस्था सर्वोपरि छे, जमां श्रीठाकुरज वस थाय. ते कुंभनदासज्ये गायुं छे “ जे पे विरह परस्पर व्यापे तो कछु जीय वनि आवे. ” ते गज्जननी परस्पर प्रीति देखाडी.
॥ वैष्णव १३ ॥

✽

✽

✽

अब श्रीभाचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, नारायणदास ब्रह्मचारी, सारस्वत ब्राह्मण, महावन में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

वार्ता-प्रसंग १—सो नारायणदास ब्रह्मचारी के माथे श्रीगोकुलचंद्रमाजी पधराये । सो प्रकार एक क्षत्राणी की वार्ता में कहेंगे । जहां चारि स्वरूप चारि वैष्णवन के माथे पधराये हैं ।

भावप्रकाश—नारायणदास लीला में सोरह हजार अग्निकुमारिका हैं, तिनमें मुख्य राधा सहचरी हैं । तिनकी सखी हैं, मधुरेक्षण, सो इनको नाम है । मधुर है इक्षण (जो) दृष्टि जिनकी । सो श्रीठाकुरजी के मुख की सुंदरता देखत देह की सुधि भूलि जाती । ऐसी स्वरूपासक्ति । स्वरूप को चिंतवन अष्ट-प्रहर करती ।

सो नारायणदास श्रीगोकुलचंद्रमाजी की सेवा भली भांति सों करते । गाय कों घाम घोड़के खवावते । जो-मति कहूं दूध में रज आवें । श्रीठाकुरजी अत्यंत सुकुमार हैं ।

भावप्रकाश—यह कहि यह जताये, जो-दूध में रज को संदेह करते । सो साग-सामग्री, जल सब में भली भांति सों चौकसी राखते । जो-प्रभु कों कोई वस्तु में दुःख न होइ ।

हुवे श्रीभाचार्यजी महाप्रभुजना सेवक नारायणदास ब्रह्मचारी, सारस्वत ब्राह्मण, महावनमां रहता, तेमनी वार्ताको भाव कह्यो छीये—

वार्ता-प्रसंग १—ते नारायणदास ब्रह्मचारीने माथे श्रीगोकुलचंद्रमाजी पधराव्या ते प्रकार एक क्षत्राणीनी वार्तामां कह्यो। ज्यां यार स्वर्ण यार वैष्णवोना माथे पधराव्यां छे.

भावप्रकाश—नारायणदास लीलामां सोण हुनर अग्निकुमारिका छे. तेमां मुख्य राधा सहचरी छे, तेमनी सखी छे. मधुरेक्षणा, अमृत नाम छे. मधुर छे इक्षण (जो) दृष्टि जेनी. ते श्रीठाकुरजना मुखनी सुंदरता जेतां ज देखत देह भूलि जाती. ऐसी स्वरूपासक्ति. स्वरूपतुं चिंतवन अष्ट-प्रहर करती.

ते नारायणदास श्रीगोकुलचंद्रमाजीनी सेवा सारी रीतिथी करता. गायने घाम घोड़ने खवावता. केम? जे रणे कंठ दूधमां रज आवे, श्रीठाकुरज अत्यंत सुकुमार छे.

भावप्रकाश—जे कही जे जणुव्युं, जे दूधमां रजने संदेह करता, साग-सामग्री, जल अघामां सारी रीतिथी चौकसी राखता. जे प्रभुने कोठ वस्तुमां दुःख न थाय.

और नारायणदास त्याग दसा में रहते। उत्तम रीति सों चुकटी लेते। सो कोरो अन्न न्यारो न्यारो तथा बिना मांगे घर आवें तामें निरवाह करते। सो नारायणदास जहां तहां पांच धोइवे कों माटी लेते तहां द्रव्य देखते। सो वा पर माटी डारि उठि चलते। परंतु द्रव्य को परस न करते। सो एक दिन रात्रि कों इनकी खाट के आसपास द्रव्य बहोन फैल्यो। सो सवेरे देखि के भतीजी सों कहें, घरमें बिगार परयो है। सो बुहारि डारि आव। तब भतीजी ने बुहारि सों बुहारिकें डारि दियो। जगे सब लीपि डारी।

भावप्रकाश—याको आसय यह, जो—नारायणदास नें ब्रह्मचर्य बालपने सों धारन करि द्रव्य मिलिवे को उपाइ बहोत किये। सो द्रव्य प्राप्त कछु न भयो। पाछें चालिस बरस के भये। तब श्रीआचार्यजी के सेवक भये। तब श्रीठाकुरजी के स्वरूप को ज्ञान भयो। तब द्रव्य को हू ज्ञान भयो। तब द्रव्य कों अग्निकी विष्टा हू कहे हैं। सो या प्रकार जानन लागे। तब रिद्धि सिद्धि इनके छलिवे कों आई। तब जहां तहां द्रव्य दिखें। परंतु बिगार विष्टावत् जानें। तातें वापर माटी डारें। सो यातें, जो—और के हाथ यह माया रूप द्रव्य परेगो तो वाहू को बिगार होइगो। तातें ऊपर माटी डारि दें। और जब घर में द्रव्य फैल्यो देखे

अने नारायणदास त्याग दशाभां रहता, उत्तम प्रकार्थी चुकटी लेता, ते केइ अन्न अलग अलग तथा बिना मांगे घर आवे तेभां निर्वाह करता, ते नारायणदास न्यां न्यां पग धोवाने माटी लेता त्यां (त्यां) द्रव्य लेता, (त्यारे) तेना उपर माटी नाभी उठी आसता, परंतु द्रव्यने स्पर्श न करता, ते अेक दिवस रात्रिअे अेमनी आरनी आसपास द्रव्य धलुं इत्युं, ते सवारे लेधने लत्रीलने कहे, घरभां अगाड पड्यो छे ते अडीने नाभी आव, त्यारे लत्रीलअे सावरणीथी अडीने नाभी दीधुं, ज्या अधी दीपी नाभी,

भावप्रकाश—अेने आशय अे ठे, नारायणदासे अक्षयर्थ आत्यकालथी धारण करी द्रव्य मणवाना उपायो धणा कर्था, ते द्रव्य प्राप्त कछ न थयुं, पछी आदीस वर्षना थया, त्यारे श्रीआचार्यलना सेवक थया, त्यारे श्रीठाकुरलना स्वरूपनु ज्ञान थयुं, त्यारे द्रव्यतुं पणु ज्ञान थयुं, द्रव्यने अग्निनी विष्टा (अगाड) पणु कहे छे, ते आ प्रकारे अणुवा लाग्या,—त्यारे रिद्धि सिद्धि अेमने छणवाने आनी, त्यारे ज्यां त्यां द्रव्य लेयुं, परंतु अगाड विष्टावत् अणुयुं, तेथी तेना उपर माटी नाभी, ते अेथी ठे पीअने हाथ आ मायाइप द्रव्य (उपर) पडरी तो तेनुं पणु अनिष्ट थरी, तेथी उपर माटी नाभी देता, अने ज्यारे घरभां द्रव्य

तब भतीजी सों कहें, जो-विगार परयो है । परंतु आपु छूवे न बुहारे । तब भतीजी हू श्रीआचार्यजी की सेवकनी कृपापात्र हती । नारायणदास के स्वरूपकों जानती ।

नारायणदास तो “मधुरेक्षणा” राधा सहचरी की सखी हैं । इनकी सखी “चतुरा” भतीजी को नाम है । सो नारायणदासकों बहोत प्रिय याते हैं, जो-सामग्री करन में बहोत चतुर हैं । बाल विधवा भई । तातें नारायणदास के इहां रहेती । सो लीला को नाम इहां हू चतुरा हतो । सो चतुर भतीजी ने नारायणदास के सब्द सुनत ही द्रव्य बुहारि कें बाहर डारि दियो । नारायणदास ने बुहारिवे की कही परन्तु इनमें जान्यो, जो-नारायणदास विगार कहे सो जगे हू लीपनीं । ऐसी बुद्धि भतीजी की देखि श्रीठाकुरजी इनसों बहोत प्रसन्न रहते । या प्रकार दोऊ श्रीगोकुलचंद्रमाजी की सेवा करते ।

वार्ता-प्रसंग २—और एक दिन नारायणदास न्हाइ के मंदिर में जाइ श्रीठाकुरजी कों मंगल-भोग धरि पाछें सिंगार किये । श्री-ठाकुरजी के मुखचंद्र की सोभा देखि थकित हें बड़ी वेंरलों निहारि रहे । पाछें पूछी, जो-महाराज ! इह घटा कहां बरसेगी ? तब

इत्युं जुअे त्पारे लत्रीअने कहे, हे अगाड पडयो छे. परंतु पोते अडे न आडे. त्पारे लत्रीअ पए श्रीआचार्यअनी सेवकनी कृपापात्र हती. नारायणदासना स्वप्नने अश्रुती.

नारायणदास तो ‘ मधुरेक्षणा ’ राधा सहचरीनी सखी छे. अनी सखी ‘ चतुरा ’ लत्रीअनुं नाम छे. ते नारायणदासने अहु प्रिय अथी छे, हे सामग्री करवाभां अहु चतुर छे. बाल विधवा थध. तेथी नारायणदासने त्यां रहेती. ते लीलानुं नाम अहीं पए चतुरा हतु. ते चतुर लत्रीअने नारायणदासने शब्द सांलणतां अ द्रव्य आडीने अहार नाभी दीधुं. नारायणदासे आडवानुं कथुं, परंतु अश्रु अश्रुं, हे नारायणदासे अगाड कसो, तेथी अगा पए लीपनी. अनी अुद्धि लत्रीअनी नेध श्रीठाकुरअ अनाथी अहु प्रसन्न रहेता. आ प्रकारे अने श्रीगोकुलचंद्रमाअनी सेवा करतां.

वार्ता-प्रसंग २—अणी अेक द्वियस नारायणदास न्हाअने मंदिरभां अअ श्रीठाकुरअने मंगल-भोग धरी पछी शंगार क्ये. (ते समये) श्रीठाकुरअना सुअयंदनी शोभा नेध अकित (विस्मित) थध वएणी वार अुधी नेध रखा. पछी पूछयुं, हे-

पधरायो । इतने में एक वैष्णव ने नारायणदास को बधाई दी, जो-श्रीगोकुल में श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे हैं । तब नारायणदास ताती खीर भरयो धार श्रीगोकुलचंद्रमाजी को भोग धरिकें श्रीआचार्यजी के दरसन को श्रीगोकुल चले । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु महावन पधारत हते । सो मारग में दरसन भयो । तब नारायणदास ने दंडवत् कियो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीमुख तें कहें, नारायणदास ! श्रीठाकुरजी को कहा समय है ? तब नारायणदास ने बिनती करी, महाराज ! शृंगार-भोग धरि आपुके दरसन को आयो हों । तब श्रीआचार्यजी उतावलि पधारे । सो तत्काल अस्नान करि मंदिर में पधारे । झारी लिये । तब देखे तो श्रीगोकुलचंद्रमाजी हाथ खेंचि रहे हैं । श्रीहस्त खीर सों भरे हैं । सिंघासन पर, बखन पर खीर के छांटा परे हैं । तब श्रीआचार्यजी ने श्रीगोकुलचंद्रमाजी सों पूछयो, जो-बाबा ! हस्त क्यों खेंचि रहे हो ? तब श्रीगोकुलचंद्रमाजी ने कही, नारायणदास ताती खीर समर्पि के गयो । सो मैं हस्त सों खीर उठाई । सो ताती लागी । तब मैं हस्त झटकि कें आंगुरि चाटी है । सो मेरो ओष्ठ हस्त दाझें है । और मंदिर में जहां तहां छांटा परे हैं । तब श्रीआचार्यजी श्रीहस्त सों ओष्ठ देखे तो अत्यंत आरक्त

नारायणदासने पधाछ आपी, के श्रीगोकुलमां श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधार्या छे । त्यारे नारायणदास ताती भीर भरेलो धार श्रीगोकुलचंद्रमाजीने भोग धरिने श्रीआचार्यजीना दर्शन श्रीगोकुल यादया । ते (सभये) श्रीआचार्यजी महाप्रभु महावन पधारता हुता, ते मार्गमां दर्शन थयुं । त्यारे नारायणदासे दंडवत् कर्या । त्यारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीमुखी छे, नारायणदास ! श्रीठाकुरजीने सो समय छे ? त्यारे नारायणदासे बिनती करी, महाराज ! शृंगार-भोग धरि आपुना दर्शन आव्यो छुं । त्यारे श्रीआचार्यजी उतावणे पधार्या । ते तत्काल स्नान करी मंदिरमां पधार्या जारी लधने । त्यारे लुये तो, श्रीगोकुलचंद्रमाजी हाथ खेंचि रह्या छे, श्रीहस्त भीरथी भर्या छे । सिंघासन उपर बखे उपर भीरना छांटा पज्या छे । त्यारे श्रीआचार्यजीने श्रीगोकुलचंद्रमाजीने पूछयुं, के बाबा ! हाथ केम खेंचि रह्या छे ? त्यारे श्रीगोकुलचंद्रमाजीने कहुं, नारायणदास गरम भीर समर्पिने गयो ते में हस्तथी भीर उठावी ते गरम लागी, त्यारे में हाथ झटकि कें आंगुरी चाटी छे । तेथी मारे होइ हस्त दाझ्या छे । अने मंदिरमां ज्यां त्यां छांटा पज्या छे । त्यारे श्रीआचार्यजी श्रीहस्तथी ओष्ठ देखे तो अत्यंत दास छे । त्यारे भीर पंजाथी ठंडी करिने भोग

हैं। तब खीर पंखा सों सीरी करिके भोग समर्पि आपु बाहिर आये। तब नारायणदास कों खीजि के कहें, क्यों तू श्रीठाकुरजी कों ताती खीर समर्पि ? तब नारायणदास ने कही, महाराज ! आपुकी वधाई सुनि उतावलि में खीर समर्पि। तब श्रीआचार्यजी कहें, आजु पाछें ऐसो काम कबहू मति करियो।

भावप्रकाश—याको आसय यह, जो—नारायणदास श्रीआचार्यजी की वधाई सुनि परवस है गये। सो जाने, जो—ताती होइगी तो श्रीठाकुरजी सीरी करि लेंहगे। परंतु श्रीआचार्यजी के दरसन कों हील करनो धरम नहीं। या भाव सों गये। तब श्रीगोकुलचंद्रमाजी, नारायणदास के हाथ को धरयो तातो हू अरोगत हों यह जताइवे के लिये सगरो हस्त खीर में डारि झटकें। तथा उतावलि में, जो—कोई भोग धरे, शृंगार करें, तो कलु अपराध परे यह जताए। और नारायणदास श्रीआचार्यजी के पास जाइवे कों मन कियो अलौकिक, तउ सेवा में इतनो श्रम श्रीठाकुरजी कों भंयो, जो—लौकिक वैदिक कार्य के लिये उतावलि करें, ताको तो बहोत ही अपराध परे। तातें सेवा करत मन ठिकाने राखनो। अथवा खीर की सामग्री को स्वरूप प्रगट कियो, जो—यह श्रीस्वामिनीजी के

समर्पि आप आहुर आव्या। त्यारे नारायणदासने भीलने कछु, केम ते श्रीठाकुरलने गरम भीर समर्पि ? त्यारे नारायणदासे कछु, महाराज ! आपनी वधाइ सांखणी उतावणमां भीर समर्पि। त्यारे श्रीआचार्यल कहे, आज पछी अबुं काम करिये न करीश।

भावप्रकाश—अने आशय अे, हे नारायणदास श्रीआचार्यलनी वधाइ सांखणी परवश थइ गया। ते लखे हे गरम हूशे तो श्रीठाकुरल ढंडी करी देशे, परंतु श्रीआचार्यलना दर्शन भाटे विलंभ करवो धर्म नथी, आ लावथी गया। त्यारे श्रीगोकुलचंद्रमाल, नारायणदासना हथितुं धरुं गरम पखु (हुं) आरोगुं छुं अे लखववाने भाटे आपो हाथ भीरमां नाथीने आटक्यो। अने उतावणमां ले हाइ भोग धरे, शृंगार करे, तो कइ अपराध पडे, अे लखव्युं वणी नारायणदासे श्रीआचार्यलनी पासे लवानुं मन क्युं अदौकिक, तोपखु सेवामां आटवो श्रम श्रीठाकुरलने थयो। (तो) ले दौकिक वैदिक कार्यमां उतावण करे तेने तो अहु ल अपराध पडे (अेमां कहेवुं थुं ?) तेथी सेवा करतां मन ठेकाखे राखवुं। अथवा भीरनी सामग्रीनुं स्वरूप प्रकट क्युं। हे आ श्रीस्वामि-

भावकी है। और शृंगार-भोग हूँ उनही के भाव को है। तातें खीर कों देखत श्रीठाकुरजी प्रेम सों प्रथम हस्त खीर में डारत हैं। तातें खीर सीरी करि अंगुरी डारि देखिये। सुहाय तब भोग धरिये। यह सिद्धांत दिखाये।

पाछें समय भये श्रीआचार्यजी आचमन, मुख-वस्त्र कराइ वीड़ी अरोगाई, भोग सराये। तब श्रीगोकुलचंद्रमाजी श्रीआचार्यजी के दोउ श्रीहस्त पकरि के कहें, जो-यह खीर महाप्रसाद आपु लेहु। तब श्रीआचार्यजी कहें, जो-महाराज! ज्ञाति-व्यौहार कठिन हैं, तातें मर्यादा राखी चाहिये। तब श्रीगोकुलचंद्रमाजी कहें, मेरी आज्ञा है तातें लेहु। तब श्रीआचार्यजी खीर महाप्रसाद अरोगे। सो तब ताही दिनतें खीर अनसखड़ी में होति है।

भावप्रकाश—यामें, या कारन तें श्रीगोकुलचंद्रमाजी कहें, खीर ऐसी सामग्री में ज्ञाति की मर्यादा अपने भक्तन में मति राखो। तब आगेंगे। ता दिन तें खीर अनसखड़ी में करें। ताको कारन यह, जो-अनसखड़ी श्रीठाकुरजी सगरे भोग में अरोगत हैं। और खीर उत्सव के भोग में नाहीं राखे। नित्य में राखे। ताको कारन यह, जो-उत्सव में राखे तो वैष्णव उत्सव में करें। तातें खीर सदा प्रिय है। यामें रीतु के, उत्सव को विचार नाहीं। जब बने तबहि करिये।

नीलना भावनी छे, अने शृंगार-भोग पणु अमना न भावना छे तेथी भीरने जेतां न श्रीठाकुरल प्रेमथी प्रथम हस्त भीरमां नापे छे, तेथी भीर ढंडी करीने आंगणी नाभी जेधये, अमाय तयारे भोग धरवो, अ सिद्धांत देखाओ।

पछी समय थये श्रीआचार्यल अये आचमन, मुख-वस्त्र करावी, भीड़ी आरोगावीने भोग सराव्या, तयारे श्रीगोकुलचंद्रमाल, श्रीआचार्यलना अने श्रीहस्त पकडीने कहे, के आ भीर-महाप्रसाद आपु लो, तयारे श्रीआचार्यल कहे, के महाराज! ज्ञाति-व्यवहार कइल-छे, तेथी मर्यादा राखी जेधये, तयारे श्रीगोकुलचंद्रमाल कहे, मारी आज्ञा छे तेथी लो, तयारे श्रीआचार्यल भीर-महाप्रसाद आरोग्या, तयारे ते द्विसथी भीर अनसखड़ीमां थाय छे।

भावप्रकाश—आमां, आ कारणथी श्रीगोकुलचंद्रमाल अये कथुं, के भीर नवी सामग्रीमां ज्ञातिनी मर्यादा पोताना लक्तोमां न रापे। तयारे आरोग्या, ते द्विसथी भीर अनसखड़ीमां करी, तेनुं कारण अये, के अनसखड़ी श्रीठाकुरल अथा भोगमां आरोगे छे, अने भीर उत्सवना भोगमां न रापी, नित्यमां रापी, तेनुं कारण अये, के उत्सवमां रापे तो वैष्णव उत्सवमां (न) करे, तेथी भीर सदा प्रिय छे, अमां ऋतुनो, उत्सवनो विचार नहीं, अयारे अने तयारे करीअे।

वार्ता-प्रसंग ५—या प्रकार नारायणदास सेवा बहोत करी । पाछें इनकी देह थकी । तब एक दिन नारायणदास सों श्रीठाकुरजी नें कही, कछ् मांगि । तब नारायणदास ने श्रीगोकुलचंद्रमाजी सों कह्यो, मैं यह तुम सों मागत हों श्रीगुसाईंजी के घर पधारि के सेवा कराईयो ।

भावप्रकाश—ताको कारन यह, जो-श्रीगुसाईंजी के घर विना श्रीठाकुरजी सुख न पावेंगे ।

तब श्रीगोकुलचंद्रमाजी बहोत प्रसन्न भये, जो-तू मेरो सुख मांग्यो । अपुनो सुख कछ् न मांग्यो । पाछे नारायणदास की भतीजी की देह छूटी । ताके तीसरे दिन नारायणदास की देह छूटी । ता पाछे कृष्णदास स्वामी महावन में रहते । नारायणदास की ज्ञाति के हते । श्रीगुसाईंजी के सेवक । तिन पास कछ्क दिन श्रीगोकुलचंद्रमाजी सेवा कराये ।

भावप्रकाश—सो यातें, जो-लीला में येह नारायणदास की सखी है । मृदुवेनी इनको नाम है । तातें सेवा कराये । पाछें मथुरा में श्रीगुसाईंजी के घर पधारें । इनकी वार्ता को यह सिद्धांत भयो, जो-ब्रह्मचारी के धर्म दिखाये ।

वार्ता-प्रसंग ५—या प्रकारे नारायणदासे सेवा पाहु करी. पछी ऐमनी देह थाकी त्तारे ऐक हिवस नारायणदासने श्रीठाकुरल्ले कछु, कंभ मांग ! त्तारे नारायणदासे श्रीगोकुलचंद्रमाल्लेने कछु, हुं त्तमारी पासै ऐ मांगुं छुं (के) श्रीगुसांछल्लेने धरे पधारीने सेवा करावजे.

भावप्रकाश—तेतुं कारणे ऐ, के श्रीगुसांछल्लेना धर विना श्रीठाकुरल्ले सुख नहीं पासे.

त्तारे श्रीगोकुलचंद्रमाल्ले धरुा प्रसन्न थया, के तें माइं सुख मांग्युं. पोतातुं सुख कंभ न मांग्युं. पछी नारायणदासनी लत्रील्लेनी देह छूटी. तेना त्रीज हिवसे नारायणदासनी देह छूटी. ते पछी कृष्णदास स्वामी महावनमां रहते. नारायणदासनी ज्ञातिना हुता. श्रीगुसांछल्लेना सेवक तेमनी पासै थोडाके हिवस श्रीगोकुलचंद्रमाल्ले सेवा करावी.

भावप्रकाश—ते ऐथी, के लीलामां ऐ पलु नारायणदासनी सखी छे. 'मृदुवेनी' ऐमनुं नाम छे. तेथी सेवा करावी. पछी मथुरामां श्रीगुसांछल्लेना धरे पधार्या. ऐमनी वार्ताने या सिद्धांत थयो, के ब्रह्मचारीना धर्म देखाडया,

जो-अपनी महाप्रसाद की पातरि धरि प्रसन्न हों। श्रीठाकुरजी सों अपुनो सुख न मांग्यो। प्रभु को सुख विचारे, यह पुष्टिमार्ग की रीति हैं।

सो नारायनदास की वार्ता को पार नहीं सो कहां ताई कहिये। वार्ता ॥ १४ ॥

✽ ✽ ✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकनी, एक क्षत्रानी, महावन में रहती, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो ये क्षत्रानी लीला में श्रीस्वामिनीजी की अंतरंगिनी सखी, भद्रा इनको नाम है। सो एक क्षत्री के घर जन्मी। सो ग्यारह बरस की भई। तब माता-पिता व्याह करिवे की कहें। तब ये कहे, जो-मेरो व्याह मति करो। जा दिन मेरो व्याह करोगे ता दिन वर मरेगो। और तुमह मरोगे। तब वे डरपि के चुप हूँ रहते। सो तेरह बरस की भई तब माय-बाप की ज्ञाति में निंदा होन लगी। सो एक सों सगाई करी। सो उह व्याहन आयो। सो फेरा परत ही याके मा, बाप, उह वर, तीनों मरि गये। तब यह घर में अकेली रहे। यासों गाम में संवंधी कोऊ न बोले। जो-इन ने व्याह होत ही मा-बाप और वर सब कों मारे। यामें प्रीति करेगो सो मरेगो। यह लोग कहते। सो नारायनदास

ठे पैतानी महाप्रसादनी पातर धरी प्रसन्न थवुं। श्रीठाकुरजी पासे पैतानुं सुख न मांग्युं। प्रभुनुं सुख विचारे, अ पुष्टिमार्गनी रीति छे।

ते नारायणदासनी वार्ताना पार नहीं, ते क्यां सुधी कहीअे ? वार्ता ॥१४॥

✽ ✽ ✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुनी सेवकनी, एक क्षत्राणी, महावनमां रहती, तेनी वार्ताना भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे क्षत्राणी लीलामां श्रीस्वामिनीजीनी अंतरंगिनी सखी, 'भद्रा' अेतु नाम छे। ते अेक क्षत्रीना धरे जन्मी। ते अग्यार वर्षनी थध त्यारे माता-पिता लक्ष धरानुं कहे। त्यारे अे कहे, ठे माइं लक्ष न करो। जे द्विषस माइं लग्न करशे ते द्विषसे वर भरशे। अने तमे पणु भरशे। त्यारे अे उरीने चुप थध रहेतां। ते तेर वर्षनी थध। त्यारे मा-बापनी ज्ञातिमां निंदा थवा लागी। तेथी अेकनी साथे सगाध करी। पछी ते परणुवा आये। ते फेरा पडतां ज अेनां मा-बाप, अेना वर अे त्रशे मरी गयां। त्यारे अे धरमां अेकही रहे। तेनाथी गाममां संवंधी (त्रिगेरे) टोड न थोदे। डेम ? ज, अेशे लग्न थतां ज मा-बाप अने वर थधाने भार्या। अेमां प्रीति करशे ते भरशे, आवुं दोटा कहेता।

के घर श्रीआचार्यजी पधारत हते, तव यह क्षत्रानी कों दरसन भयो । सो सुद्ध जीव हती सो जान्यो । इनकी सरनि जइये । तव श्रीआचार्यजी सों विनती करि दंडवत् कियो, महाराज ! मोकों अंगीकार करो । अब मेरे प्रतिबंध लौकिक सब छूटें । तव श्रीआचार्यजी नाम निवेदन कराये । तव यह क्षत्रानी ने कही, महाराज ! अब मोकों कहा आज्ञा है ? तव श्रीआचार्यजी ने कही, भगवत्सेवा करो । तव क्षत्रानी ने कही, महाराज ! लीला में सदा आपु की सेवा करी है । अरु आपु भगवत्सेवा की कही । सो भगवत्सेवा तो बहोत लोग करत हैं । परंतु आपु के चगनारविन्द मिलनो बहोत दुर्लभ हैं । सो मोकों साधन में मति डारो । मोकों सदा अपुनी सेवा देउ । सो सदा आपु के संग रहों । आपु के दरसन करों । मोकों एक आपु के चरनारविंद को आश्रय है । तव श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइ के कहें, जो-तू सांच कही, परंतु हमकों पृथ्वी-परिक्रमा करनी हैं । तातें स्त्रीजन को संग ठीक नहीं । पाछें श्रीआचार्यजी कुमकुम मँगाइ एक वस्त्र पर दोऊ चरन में कुमकुम लगाइ छाप करि वह क्षत्रानी कों दियो । और कहे, इनकी सेवा करियो । मैं तो पर प्रसन्न हों । तेरो सगरो मनोरथ पूरन होइगो । तव उह क्षत्राणी श्रीआचार्यजी कों भली भांति सों घर में पधराय श्रीआचार्यजी की श्रीस्वामिनीजी के

पछी नारायणदासना धरे श्रीआचार्यजी पधार्या हुता. तयारे आ क्षत्राणीने दर्शन थयां. ते शुद्ध जव हुती तेथी जल्युं, आभनी शरणे नधये. तयारे श्रीआचार्यजीने दंडवत करी विनंति करी, महाराज ! अने अंगीकार करे. हुवे मारे प्रतिबंध लौकिक अंधुं छुट्युं. तयारे श्रीआचार्यजीने नाम-निवेदन कराव्युं. तयारे आ क्षत्राणीजे कथुं, महाराज ! हुवे अने शी आज्ञा छे ? तयारे श्रीआचार्यजीने कथुं, भगवत्सेवा करे. तयारे क्षत्राणीजे कथुं, महाराज ! लीलांमां सदा आपनी सेवा करी छे अने आपे तो भगवत्सेवानुं कथुं । ते भगवत्सेवा तो धर्या दोढा करे छे. परंतु आपनां यरणारविंद भणनां अहु दुर्लभ छे. तेथी अने साधनमां न नापे. अने सदा आपनी सेवा हो. तेथी सदा आपनी साथे रहुं. आपनां दर्शन करुं, अने जेक आपनां यरणारविंदने आश्रय छे. तयारे श्रीआचार्यजी प्रसन्न थधने कहे, हे ते सायुं कथुं. परंतु अमारे पृथ्वी-परिक्रमा करवी छे. तेथी स्त्रीजनने संग ठीक नहीं. पछी श्रीआचार्यजीने कुंमकुम मंगावीने जेक वस्त्र उपर अने यरणुंमां कुमकुम लगावी छाप करी ते क्षत्राणीने आयुं अने कथुं, आनी सेवा करे. हुं तारी उपर प्रसन्न छुं. तारे अंधे मनोरथ पूर्युं थरे. तयारे ते क्षत्राणी श्रीआचार्यजीने सुंदर रीतिथी धरमां पधरावी श्रीआचार्यजीनी श्रीस्वामिनीना

भाव सों सेवा करती । श्रीआचार्यजी दरसन देते । सब रस को अनुभव करावते । पाछें श्रीआचार्यजी पृथ्वी-परिक्रमा करत कासी में पधारे ।

इहां एक दिन उह क्षत्रानी श्रीजमुना-जल भरन अपरस में गागरि लेकें ब्रह्मांड घाट गई । सो गागरि लें श्रीयमुनाजी में पैठी । तब किनारे पर थोरे जल में चारि स्वरूप देखे । तब क्षत्रानी ने कही, तुम परम सुंदर जल में क्यों विराजे हो ? तब चारयो स्वरूप ने कही, तू हम कों घर पधराव । अब कछुक दिन में श्रीआचार्यजी पधारेंगे । तब उनकों दीजो । तब उन क्षत्रानी ने कही, मैं घर में श्रीआचार्यजी सों पूछि आउं, तब पधराऊं । तब गागरि भरि के बेगे दोरि आई, मंदिर में जाइ विनती करी, महाराज ! चारि स्वरूप श्रीजमुनाजी के किनारे हैं । सो कहे, मोकों पधराव । सो कहा आज्ञा है ? तब श्रीआचार्यजी ने कही, जा, बेगि पधराई लाव । तब आई के चारों स्वरूप पधराइ मंदिर में वस्त्र पहराइ भोग धरयो । यामें यह जताये, जो-बह क्षत्राणी को ममत्व श्रीआचार्यजी की सेवा को हतो । भगवद् सेवा पर न हतो । परन्तु श्रीठाकुरजी चारि स्वरूप ह्वे आपु ही पधारे । तातें श्रीआचार्यजी की सेवा है, ता वैष्णव के पास श्रीठाकुरजी विनु जतन आप सों पधारत हैं ।

भावथी सेवा करती. श्रीआचार्यजी (तेने) दर्शन आपता. अधा रसनो अनुभव करावता. पछी श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा करतां काशीमां पधार्या,

अर्ही अेक दिवस ते क्षत्राणी श्रीयमुनाजल भरवा अपरसमां गागर लधने ब्रह्मांड घाटे गध. ते गागर लध श्रीयमुनाजमां पैठी. तारे किनारा उपर थोडा जलमां यार स्वरूप जेयां. तारे क्षत्राणीअे कह्युं, तमे परमसुंदर जलमां केम भिराजे छे ? तारे यारे स्वरूपे कह्युं, तू अमने घर पधराव. हुवे थोडा दिवसमां श्रीआचार्यजी पधारसे. तारे अमने आपज. तारे ते क्षत्राणीअे कह्युं, हुं घरमां श्रीआचार्यजीने पूछी आपुं तारे पधरावु. तारे गागर भरिने जल्दी होडी आवी. (पछी) मंदिरमां जध विनती करीने कह्युं, महाराज ! यार स्वरूप श्रीयमुनाजना किनारे छे, ते कडे (छे) (के) (अ)मने पधरावो. ते शी आज्ञा छे ? तारे श्रीआचार्यजीअे कह्युं, ज, जल्दी पधरावी लाव. तारे आवीने यारे स्वरूपने पधरावीने मंदिरमां, वस्त्र पहरावीने भोग धरयो. तेमां अे जलान्युं, के ते क्षत्राणीनुं ममत्व श्रीआचार्यजीनी सेवामां हुतुं. भगवत्सेवा उपर न हुतु परंतु श्रीठाकुरजी यार स्वरूपे थछे आपज पधार्या. तेथी श्रीआचार्यजीनी सेवा छे ते वैष्णवनी पासे श्रीठाकुरजी विना यत्न पोतानी भेजे पधारे छे.

यह बात कासी में श्रीआचार्यजी ने जानी । तहां तें ब्रज कों पधारे । सो प्रथम अडेल आये । पाछें कडा में पधारे । सो कडा में देवाकपूर क्षत्री हते । सो गदाधरदास के पास ही इनको घर हतो । सो एक दिन गदाधरदास के इहां वैष्णव महाप्रसाद लेत हते । गदाधरदास परोसत हते । सो देवाकपूर को घर कल्लक ऊंचो हतो । सो देवाकपूर ऊपर तें देखत हते । सो एक वैष्णव के पास बैठे श्रीठाकुरजी भोजन करत हते । सो मूरछा खाये । सो घरि एक में सावधान हे गदाधरदास पास आइ कहें, सगरे वैष्णव कहां गये ? तब गदाधरदास ने कही महाप्रसाद लें अपुने घर गये । तब देवाकपूर ने कही, तिहारे वैष्णव के बीच में श्रीठाकुरजी भोजन करत में देखे, सो मोकों मूरछा आई । सो अब दोरघो आयो हों । सो अब मोकों श्रीठाकुरजी के दरसन कैसे हौई ? तब गदाधरदास ने कही, तेरे बड़े भाग्य हैं, जो-दरसन भये । अब कहां दरसन ? तब देवाकपूर ने कही, कोई उपाव बतावो, मैं तिहारी सरनि हों । जो-मोकों श्रीठाकुरजी मिलें । सगरो जनम योंही गमायो । तब गदाधरदास ने कही, श्रीआचार्यजी की सरनि जाव । श्रीआचार्यजी की कृपा तें वैष्णवन कों श्रीठाकुरजी मिले हैं । उनकी कृपा तें

ये बात काशीमां श्रीआचार्यजीने ज्ञानी । (त्यारे आप) त्यांथीं ब्रज भाटे पधार्या । ते प्रथम अडेल आंव्या । पछी कडांमां पधार्या । ते कडांमां देवाकपूर क्षत्री हुता । ते गदाधरदासनी पासे ज येमनुं धर हतुं । ते एक दिवस गदाधरदासने त्यां वैष्णव महाप्रसाद लेता हुता । गदाधरदास परोसता हुता । ते देवाकपुरनुं धर कंधक उयुं हतुं । ते देवाकपुरे उपरथी जेता हुता । ते एक वैष्णवनी पासे भेसी श्रीठाकुरजी लोजन करता हुता । ते (जेधने) मूरछां पाधी । ते धडी एकमां सावधान थध गदाधरदास पासे आवीने कडे, पंधा वैष्णवो कथां गया ? त्यारे गदाधरदासे कछुं, महाप्रसाद लध पोताना धरे गया । त्यारे देवाकपुरे कछुं, तभारा वैष्णवो(नी) वयमां श्रीठाकुरजीने लोजन करतां में जेया, ते मने मूरछां आवी । ते हुवे हुं द्वाडयो आंव्यो छुं । ते हुवे मने श्रीठाकुरजीनां दर्शन ठेवी रीते थाय ? त्यारे गदाधरदासे कछुं, तारा बहु लाग्य छे, ठे दर्शन थयां । हुवे दर्शन कथां ? त्यारे देवाकपुरे कछुं, डोध उपाय पतावो, हुं तभारी शरणु छुं । जे मने श्रीठाकुरजी भणे । पंधा जन्म जेम ज भोयो । त्यारे गदाधरदासे कछुं, श्रीआचार्यजीनी शरणे जव । श्रीआचार्यजीनी कृपाथी वैष्णवोने श्रीठाकुरजी भणे छे ।

तुमहू कों मिलेंगे । अब कासी तें पधारे हैं । सो दोय चारि दिन में इहां पधारेंगे । सो देवाकपूर नित्य गदाधरदास के इहां आइ पूछे । जो-आरति बढ़ी । सो घर को कार्य भूलि गये । सो दोय चारि दिन पीछें श्रीआचार्यजी कडा में पधारे । तव देवाकपूर आइकें श्रीआचार्यजी कों दंडवत् कियो । विनती करी, महाराज ! कृपा करिकें सरनि लीजिये । तव गदाधरदास नें श्रीआचार्यजी सों देवाकपूर के समाचार कहें । या प्रकार याकों वैष्णवन में श्रीठाकुरजी के दरसन करि आरति भई है । दैवी जीव है । तव श्रीआचार्यजी प्रसन्न ह्वे देवाकपूर कों नाम निवेदन करायो । तव देवाकपूर ने विनती करी, अब हमकों कहा आज्ञा है ? तव श्रीआचार्यजी कहे, तुमहू हमारे संग ब्रज चलो । तहां श्रीठाकुरजी तिहारे माथे पधराइ देंगें । तुम सेवा करियो । तव देवाकपूर की स्त्री घर रही । देवाकपूर संग चले ।

पाछें श्रीआचार्यजी आगरें पधारे । सो आगरें में गज्जनधावन क्षत्री हते । सो इनके पिता पास द्रव्य बहोत हतो । चारि बेटा हते । तामें गज्जन छोटा हतो, और घर में गज्जन की माता हती । स्त्रीजन में और कोई न हतो । सो गज्जन के पिता ने नाव के ऊपर भवैया को नाच करायो । सो गज्जन सहित चारघो

अभनी कृपाथी तमने पशु भणशे. हुवे काशीथी पधारे छे. ते ये चार द्वि-समां अही पधारशे. तेथी देवाकपुर (त्यारथी) नित्य गदाधरदासने त्यां आवीने पूछे. ठम ? न आति वधी. ते धरतुं काम भूली गया. त्यारे ये चार द्वि-स पछी श्रीआचार्यजी कडां पधार्या. त्यारे देवाकपुरे आवीने श्रीआचार्यजीने दंडवत् कर्था. विनती करी. महाराज ! कृपा करीने शरणे लो. त्यारे गदाधरदासे श्रीआचार्यजीने देवाकपुरना समाचार कथा, (ठ) आ प्रकारे अभने वैष्णवोंमां श्रीठाकुरजीना दर्शन करीने आति थध छे. दैवी जव छे, त्यारे श्रीआचार्यजी प्रसन्न थध देवाकपुरने नाम-निवेदन कराव्युं. त्यारे देवाकपुरे विनती करी, हुवे अभने शी आज्ञा छे ? त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, तमे पशु अभारी साथे ब्रज यावो. त्यां श्रीठाकुरजी तमारा माथे पधरावी दधथुं. तमे सेवा करजे. त्यारे देवाकपुरनी स्त्री धर रही. देवाकपुर साथे याट्या.

पछी श्रीआचार्यजी आत्रे पधार्या. ते आत्रामां गज्जनधावन क्षत्री हुता. अभना पिता पासे द्रव्य धखुं हुतु. चार बेटा हुता. तेमां गज्जन नानो हुतो. अभने धरमां गज्जननी माता हुती. स्त्रीजनमां भीजुं दध न हुतुं. ते गज्जनना पिताअे नावना उपर लवैयाने नाच कराव्यो, ते गज्जन सहित चार बेटा अभने

बेटा पास और गांव के मिलापि सगे संबंधी मिलि पचास-साठि मनुष्य हते । सो रात्रि अर्द्ध गई । इतने नाव अकस्मात् फाटी, सो सगरे डूबे । एक गज्जन के हाथ नाव को टूक परघो, सो गज्जन नें पकरघो, सो वह टूक वहिके आगरे तें कोस चारि पर लग्यो । सवेरो भयो । तव गज्जन घर आये । अपनी मासों समाचार कहें । भाई पिता सब डूबे । तव गज्जन की माता सती भई । गज्जन अकेले रहे । व्यौपार करना छोड़ि दियो । दोई चार घरी श्रीयमुनाजी पर जाइ बैठे । पाछें अपने घर बैठे रहें । बहोत काहु सों बोलनो नाहीं, मन में वैराग्य आयो । जो-पिता, भाई सब मरें, हम हू मरेंगे । कहा करें ? भगवान कृपा करें तो आछो है । या प्रकार सब सों उदास रहें ।

और जीयदास सूरि क्षत्री हू आगरे में रहें । सो जीयदास बरस साठि के भये । सो आगरे में कोतवाली लिये । सगरे आगरे को न्याव करते । सो एक दिन एक ब्राह्मणी को, एक स्रद्र को जगरो आयो । सो ब्राह्मणी की पास स्रद्र ने द्रव्य लीनो सो देय नाहीं । तव ब्राह्मणी पुकारी । तव स्रद्र नें कछु रूपैया जीयदास कों दिये । और कछो, ब्राह्मणी कों झूठी करियां । तव जीयदास नें ब्राह्मणी कों लोभ के बस झूठी किये । जोरावरि फारगती लिखाइ दिये । सो वह ब्राह्मणी

गामनां भेजापी सगां संबंधी भणी पचास-साठ मनुष्य पासे हतां ।
ते रात्रि अर्द्धी गध. अटलाभां नाव अकस्मात् क्षटी. ते अंधा
डुप्या. एक गज्जनना हाथे नावना टूकडो पडयो. ते गज्जने पकडयो. ते टूक
वहीने आगराथी डोस यार उपर लाग्यो. सवार थयुं. त्यारे गज्जन धर आंव्या
पोतानी माने समाचार कथा. साध-पिता अंधा डुप्या. त्यारे गज्जननी माता सती
थध. गज्जन अटला रथा. वेपार करेवा छोडी दीघा. ये यार धडी श्रीयमुनाए उपर
जधने येसे. पछी पोताना धरमां येसी रहे. अहु डोअथी येसवुं नहीं. मनमां
वैराग्य आंव्या, डे पिता-साध अंधा भयां. असे पणु भरीशुं. शुं करे ? भग-
वान कृपा करे तो साइं छे. या प्रकारे अंधाथी उदास रहे.

अने जयदास सूरि क्षत्री पणु आआमां रहेता. ते जयदास वर्ष साठना थया
(त्यारे) तेभणु आआमां डोतवाली लीधी. अंधा आआनो न्याय करता. ते एक द्विबस
अक प्राह्मणीनो अक श्रद्रनो अघडो आंव्यो. ते प्राह्मणीनी पासेथी शूद्रे द्रव्य लीधुं
(हंतुं) ते हे नहीं. त्यारे प्राह्मणी पुकारी. त्यारे शूद्रे थोडा इपीया जयदासने आया.
अने कछुं, प्राह्मणीने जूठी करजे. जयदासे प्राह्मणीने लोभना वशे जूठी करी. अण
जपरिधी क्षरगती लपावी दीधी. तेथी ते प्राह्मणी कटपे. पछी जयदासना

कल्पें। सो जीयदास के सगरे सरीर में कोढ़ भयो। तब जीयदास दैवी है, तातें ज्ञान भंयो। जो-मैं ब्राह्मणी कों लोभ के बस झूठी कीनी। तातें यह कोतवाली को काम महा बुरो है। तब कोतवाली छोड़ि वह ब्राह्मणी कों बुलाय कहें, माता! मैं लोभ के बस झूठी तुमकों या रीति सों कीनी। सो ब्याज सहित रुपैया मोसों ले जाव। तिहारे अपराध तें मेरी यह गति भई हैं। सो ब्याज सहित वाकों रुपैया दिये। और दस रुपैया और अपनी ओर तें दीनें। तब वह बहोत आसिरवाद देंन लगी। तब (तें) जीयदास हू वैराग्य करि श्रीयमुनाजी के किनारें जाई बैठें। सो तीसरे पहर घर आइ खान पान करतें। सो कछुक दिन में जीयदास की देह आछी भई। कोढ़ सब जात रह्यो।

पाछें एक दिन गज्जन श्रीयमुनाजी के तीर बैठे हते। तहां जीयदास हू आइ वेठे, पास। तब परस्पर बतराये। तब गज्जन ने अपनी बात सब कही। जो-हमारे पिता भाई सब डूब मरे। माता सती भई। तब तें वैराग्य भयो है। तब जीयदास नें अपनी बात कही। जो-मैं ब्राह्मणी को द्रव्य अन्याय करिके लियो। तातें मेरी देह चिगरी। तब ज्ञान भयो। अब कोई प्रकार भगवान की प्राप्ति होइ तो आछो। तब गज्जन ने कही, चाह मेरे हू है। परंतु कैसे मिले? भगवान तो

सधणा शरीरमां डाढ थयो. त्पारे ज्यदास दैवी छे. तेथी ज्ञान थयु डे, में प्राह्मणीने लोभना वशे झूठी करी. तेथी आ डातवालीतु काम अहु प्योडुं छे. त्पारे डातवाली छोडी. पछी प्राह्मणीने पोलवीने कहे, माता! में लोभना वशे तभने आ प्रकारे झूठी करी. तेथी व्याज सहित रुपैया भारी पासेथी लध जव. तभारा अपराधथी भारी आ गति थध छे. पछी व्याज सहित अने रुपैया आया. अने दश रुपैया भीज पोतानी तरङ्गथी आया. त्पारे ते अहु आशीर्वाद देवा लागी त्पारथी ज्यदास पणु वैराग्य करी श्रीयमुनाजना किनारे जधने भेसे. ते त्रीज प्रहुरे धर आवी पानपान करता. पछी थोडाक दिवसमां ज्यदासनी देह सारी थध. डाढ अधे जतो रह्यो.

पछी अेक दिवस गज्जन श्रीयमुनाजना तीरे भेडा हुता. त्पारे ज्यदास पणु आवी पासे भेडा. त्पारे परस्पर वातो करी त्पारे गज्जने पोतानी वात अधी कडी, डे अभारे पिता-बाध अधे डूपी भया. माता सती थध. त्पारथी वैराग्य थयो छे. त्पारे ज्यदासे पोतानी वात कडी, डे में प्राह्मणीतुं द्रव्य अन्याय करीने लीधुं. तेथी भारी देह अगडी, त्पारे ज्ञान थयुं. हुवे डाध प्रकारथी भगवाननी प्राप्ति थाय

कोई बड़े महापुरुष की कृपा होई तो मिलें। तब जीयदास ने कही, जो-सो तो सांच, पगन्तु हम महा पापी ! हमकों महापुरुष कहां मिलें ? सो अब भगवान को आश्रय करि श्रीयमुनाजी को आश्रय किये हैं। जो-वने सो सही। या प्रकार दोऊ जनें नित्य मिलै, बातें करे।

सो ऐसे करत कडासों श्रीआचार्यजी आगरे पधारे। सो श्रीयमुनाजी के तीरे संख्यावंदन करत हते। इतने में गज्जन और जीयदास आये। सो श्रीआचार्यजी को दरसन भयो। तब दोउ बतराये, ये महापुरुष हैं। इनकी सरनि जाँय। पाछें गज्जन ने कृष्णदास मेघन सों पूछ्यो, ये कौन हैं ? तब कृष्णदास मेघन ने कही, श्रीवल्लभाचार्यजी हैं। दक्षिण में, कासी में, मायावाद खंडन करि भक्तिमारग प्रगट किये हैं। तब गज्जन ने और जीयदास ने दंडौत् किये। और विनती करी, जो-महाराज ! हम संसार-समुद्र में बूडत हैं। हमकों सरनि ले उद्धार करो। तब श्रीआचार्यजी ने श्रीयमुनाजी में न्हाय के नाम निवेदन कराये। पाछें जीयदास ने कही, महाराज ! हमारे घर पधारो। तब जीयदास के घर पधारि जीयदास के वेटा दोई हते, पुरुषोत्तमदास, छवीलदास, तिनकों नाम-निवेदन कराये। पाछें

तो साइं. त्यारे गज्जने कछुं, याहुना तो मारेय छे परंतु ट्टवी रीते भणे ? भगवान तो केछ मोटा महापुरुषनी कृपा थाय तो भणे. त्यारे ज्यदासे कछुं, छे ते तो सायुं. परंतु अमे महापापी ! अमने महापुरुष ज्यां भणे ? तेथी हुवे भगवानने आश्रय करी श्रीयमुनाजने आश्रय कर्यो छे. जे अने ते अइं. जे प्रकारे अने जणु नित्य भणे, वातो करे.

ते अमे करतां कडाथी श्रीआचार्यज्ये आया पधार्या. ते श्रीयमुनाजना तीरे संख्यावंदन करता हुता. अटलाभां गज्जन अने ज्यदास आव्या. ते श्रीआचार्यजनां दर्शन थयां. त्यारे अनेअे वातो करी कछुं, छे आ महापुरुष छे. अमनी शरणे जधअे. पछी गज्जने कृष्णदास मेघनने पूछ्युं, अे ठाणु छे ? त्यारे कृष्णदास मेघने कछुं, श्रीवल्लभाचार्यज्ये छे, दक्षिणभां, काशीभां मायावाद अंडन करी लडितमार्ग प्रकट कर्यो छे. त्यारे गज्जने अने ज्यदासे दंडवत् कर्या. अने विनंती करी, छे महाराज ! अमे संसारसमुद्रभां दुषीअे छीअे. अमने शरणे लध उद्धार करे. त्यारे श्रीआचार्यज्ये श्रीयमुनाजभां स्नान करावीने नाम-निवेदन कराव्युं. पछी ज्यदासे कछुं, महाराज ! अमारा धरे पधारो. त्यारे ज्यदासना धरे पधारि, ज्यदासना अे अेटा हुता, पुरुषोत्तमदास, छवीलदास, तेमने नाम-निवेदन कराव्युं.

गज्जन को घर खाली हतो । तहां पधारिकें सामग्री करि भोग धरि नोज्जहिं ।
 गज्जन कों जीयदास कों जूठन दिये । तव गज्जन नें, जीयदास ने चित्तों कों
 महाराज ! अब हमकों कहा कर्तव्य है ? तव श्रीआचार्यजी कहें, हमारे मंगल
 गोकुल चलो । दोऊ जनेन कों श्रीठाकुरजी पधराइ देइगे । मो एक चले ।
 तव गज्जन और जीयदास संग चलें । देवाकपूर कड़ा तें संग आये हैं

और नारायनदास ब्रह्मचारी महावन में रहते । सो इनके पिता नरु
 जाइ क्षत्री पास जीविका लावतो । तासों निर्वाह होतो । मो एक दिन नरु
 कों संग लै मथुरा आयो । सो एक क्षत्री के घर जाइ कछु नांजे । सो
 मिम करि कछो, जो-धिकार है ब्राह्मण कों, नित सचेरे होइ हो नरे जनेन
 रीत्यो । परंतु कबहू पेट न भरयो । ताते तोकों कबहू लज्जा न आई । तव
 नारायनदास कों बुरी लागी, मो महावन चले आये । तव नारायनदास
 के महावन आयो । तव नारायनदास ने कही, अब नेगे कुछ को नरे
 लायो भीख कछु न खाजंगो । तव पिताने नसुझायो, जनेन जनेन
 कर्म है । मांगन जैये तहां तो अनादर होइगो । मो न नांरिजे तो नरु

पत्नी गज्जनतुं घर भांडी हतुं । तां पधारिके सामग्री करि भोग धरि नोज्जहिं ।
 गज्जन ने जीयदासने कूंडल दीधी, तव गज्जनने, अधरके चित्तों कों
 देवे अभने शुं कर्तव्य है ? तव श्रीआचार्यजी कहें, हमारे मंगल
 गोकुल चलो । दोऊ जनेन कों श्रीठाकुरजी पधराइ देइगे । मो एक चले ।
 दास साथे आइया, देवाकपूर कड़ा तें संग आये हैं

अते नारायणदास कइये हो नरु बरनां होइगो ।
 नरु क्षत्री पासैधी अजिका कइये, तव नरु निर्वाह होतो ।
 गज्जनदासने संग लै मथुरा आयो । सो एक क्षत्री के घर जाइ कछु नांजे ।
 क्षत्रीसे रीस करीने कहुं, जो-धिकार है ब्राह्मण कों, नित सचेरे होइ हो नरे जनेन
 गांगतां वीत्ये, परंतु कबहू पेट न भरयो । ताते तोकों कबहू लज्जा न आई । तव
 नारायणदास कों बुरी लागी, मो महावन चले आये । तव नारायणदास
 के महावन आयो । तव नारायणदास ने कही, अब नेगे कुछ को नरे
 लायो भीख कछु न खाजंगो । तव पिताने नसुझायो, जनेन जनेन
 कर्म है । मांगन जैये तहां तो अनादर होइगो । मो न नांरिजे तो नरु

तब नारायणदास ने कही, तिहारो कर्म मांगन को है, सो मांगो। मैं तो तिहारो न रहोंगो। सो श्रीयमुनाजी के तीर ब्रह्मांडघाट जाई बैठें। जो-आवे तामें निर्वाह करें। गायत्री जपें। काहुसों बोले नहीं। ऐसे करत नारायणदास के पिता-माता की देह छूटी। ता पाछें घर में आइ रहे। सो द्रव्य को उपाय साधन बहोत किये। परंतु द्रव्य न पाये। तब एकादश स्कंध में अष्टसिद्धि कहे हैं। ताहू के साधन बहोत किये। परंतु साधन कछु सिद्ध न भयो। तब हार मानि रहें। ऐसे करत चालीस बरस के भये। तब वैराग्य आयो। जो-द्रव्य के पीछें इतने दिन वृथा पचे। अब मथुरा जाइ भगवान के लिये तप करों। जहाँ ध्रुवजी तप करचो है। सो आयके सगरो दिन गायत्री जपें। रात्रि कों पावसेर दूध लेइ। या प्रकार दिन छै बीते। तब श्रीआचार्यजी आगरे तें मथुरा पधारै। सां ध्रुवघाट पर मध्याह्न की संध्या करत नारायणदास की ओर देखे। तब नारायणदास के मनमें यह आई, जो-इनके सेवक होंइ तो श्रीठाकुरजी कृपा करें। तब श्रीआचार्यजी कों दंडौत करि विनती किये, महाराज ! मोकों कृपा करि सेवक करिये। तब श्रीआचार्यजी कहे, तुम ब्रह्मचारी हो। पहले तो द्रव्य के लिये बहोत उपाय कियो। सो सिद्ध न भयो।

मांगवानुं छे ते भगि। हुं तो तमारै त्यां नही रहुं। ते श्रीयमुनाजीना तीरे ब्रह्मांड घाटे जध भेडा। जे आवे तेमां निर्वाह करे। गायत्री जपे। काष्ठी भोदे नही। जेम करतां नारायणदासना पिता मातानी देह छूटी। ते पछी घरमां आवीने रखा। ते द्रव्यने उपाय साधन धणां कर्या, परंतु द्रव्य न भयुं। तारे जेकादश स्कंधमां अष्ट सिद्धि कहे छे। तेनां पशु साधन धणां कर्या, परंतु साधन कछु सिद्ध न थयुं। तारे हार मानी रखा। जेम करतां चालीस वर्षना थया। तारे वैराग्य आव्यो। जे, द्रव्यनी पाछण आटला हिवस वृथा परया। हुवे मथुरा जध भगवानने माटे तप करे। ज्यां ध्रुवजीये तप कर्युं छे। पछी त्यां आवीने आव्यो हिवस गायत्री जपे। रात्रिजे पासेर दूध ले, जे प्रकारे हिवस छ बीत्या। तारे श्रीआचार्यजी आव्याथी मथुरा पधार्या। ते ध्रुवघाटनी उपर मध्याह्ननी संध्या करतां नारायणदासनी तरइ जेयुं। तारे नारायणदासना मनमां जे आव्युं, जे जेमना सेवक थयजे तो श्रीठाकुरजी कृपा करे। तारे श्रीआचार्यजीने दंडवत् करी विनती करी, महाराज ! मने कृपा करी सेवक करे। तारे श्रीआचार्यजी कहे, तमे ब्रह्मचारी छो। पहलेतां तो द्रव्यने माटे बहु उपाय कर्या। ते सिद्ध न थयो। हुवे तू श्रीठाकुरजीने माटे तप करे छे तेथी सेवक थवानुं जेम कहे छे ?

गज्जन को घर खाली हतो । तहां पधारिकें सामग्री करि भोग धरि भोजन किये । गज्जन कों जीयदास कों जूठन दिये । तब गज्जन नें, जीयदास नें बिनती करी, महाराज ! अब हमकों कहा कर्तव्य है ? तब श्रीआचार्यजी कहें, हमारे संग श्री-गोकुल चलो । दोऊ जनेन कों श्रीठाकुरजी पधराइ देंगे । सो सेवा करियो । तब गज्जन और जीयदास संग चलें । देवाकपूर कड़ा तें संग आये हे ।

और नारायनदास ब्रह्मचारी महावन में रहतें । सो इनको पिता मथुरा में जाइ क्षत्री पास जीविका लावतो । तासों निर्वाह होतो । सो एक दिन नारायनदास कों संग लै मथुरा आयो । सो एक क्षत्री के घर जाइ कछु मांग्यो । तब क्षत्री ने रिस करि कह्यो, जो-धिकार है ब्राह्मण कों, नित सवेरे होत ही तेरो जनम मांगते वीत्यो । परंतु कबहु पेट न भरयो । तातें तोकों कबहु लज्जा न आई । यह सुनतही नारायनदास कों बुरी लागी, सो महावन चले आये । पिता और ठोर तें मांगि के महावन आयो । तब नारायनदास ने कही, अब मेरो मुख मति देखो । मैं तेरो लायो भीख कछु न खाऊंगो । तब पिताने समुझायो, अपनो ब्राह्मण को यही कर्म है । मांगन जैये तहां तो अनादर होइगो । सो न मांगिये तो काम कैसे चले ?

पछी गज्जनतुं धर आदी हुतुं । त्यां पधारिने सामग्री करी भोग धरी भोजन कर्तुं । गज्जन ने ज्यदासने जूठणु दीधी । त्यारे गज्जने, ज्यदासे, बिनती करी, महाराज ! हुवे अमने शुं कर्तव्य छे ? त्यारे श्रीआचार्यज्ज कहे, अमारी साथे श्रीगोकुल यावो । अन्ने ज्यदाने श्रीठाकुरज्ज पधरावी दधशुं, ते सेवा करजे । त्यारे गज्जन अने ज्यदास साथे याव्या । देवाकपूर कडाथी संग आंव्या हुता ।

अने नारायणदास ब्रह्मचारी महावनमां रहेता । ते अमने पिता मथुरामां जध क्षत्री पासैथी जविका लावतो । तेनाथी निर्वाह थतो । ते अेक द्विस नारायणदासने संग लध मथुरा आंव्यो । ते अेक क्षत्रीना धरे जध कध मांग्युं । त्यारे क्षत्रीअे रीस करीने कथुं, के धिःकार छे ब्राह्मणने, नित्य सवार थतां ज तारे जन्म मांगतां वीत्यो । परंतु अ्यारेथ पेट न भरयुं । तेथी तने अ्यारे थ लाज न आवी ? अे सांखणतां ज नारायणदासने भोटु लाग्युं । ते महावन यादी आंव्या । पिता भीज्ज जगाअेथी मांगीने महावन आंव्यो । त्यारे नारायणदासे कथुं, हुवे माइं मुष्य न जुअ्यो । हुं तारी लावी लीष्य आदि कध नही पाडं, त्यारे पित्ताअे समज्जोव्या (के) आपणा ब्राह्मणतुं अेज कर्म छे । मांगवा जैये त्यां तो अनादरे थाय । ते न मांगीअे तो काम केम यावे ? त्यारे नारायणदासे कथुं, तमाइं कर्म

तव नारायनदास ने कही, तिहारो कर्म मांगन को है, सो मांगो। मैं तो तिहारे न रहोंगो। सो श्रीयमुनाजी के तीर ब्रह्मांडघाट जाई बैठे। जो-आवे तामें निर्वाह करें। गायत्री जपें। काहुसों बोले नहीं। ऐसे करत नारायनदास के पिता-माता की देह छूटी। ता पाछें घर में आइ रहे। सो द्रव्य को उपाय साधन बहोत किये। परंतु द्रव्य न पाये। तव एकादश स्कंध में अष्टसिद्धि कहे हैं। ताहू के साधन बहोत किये। परंतु साधन कछू सिद्ध न भयो। तव हार मानि रहें। ऐसे करत चालीस बरस के भये। तव वैराग्य आयो। जो-द्रव्य के पीछें इतने दिन वृथा पचे। अब मथुरा जाइ भगवान के लिये तप करों। जहाँ ध्रुवजी तप करयो है। सो आयके सगरो दिन गायत्री जपें। रात्रि कों पावसेर दूध लेइ। या प्रकार दिन छै बीते। तव श्रीआचार्यजी आगरे तें मथुरा पधारे। सां ध्रुवघाट पर मध्याह्न की संध्या करत नारायनदास की ओर देखे। तव नारायनदास के मनमें यह आई, जो-इनके सेवक होंइ तो श्रीठाकुरजी कृपा करें। तव श्रीआचार्यजी कों दंडौत करि विनती किये, महाराज! सोकों कृपा करि सेवक करिये। तव श्रीआचार्यजी कहे, तुम ब्रह्मचारी हो। पहले तो द्रव्य के लिये बहोत उपाय कियो। सो सिद्ध न भयो।

भांगवानुं छे ते मांगो. हुं तो तभारे त्यां नहीं रहुं. ते श्रीयमुनाञ्जना तीरे ब्रह्मांड घाटे जग्ये. जे आवे तेमां निर्वाह करे. गायत्री जपे. ढाधथी भोवे नहीं. जेम करतां नारायणदासना पिता मातानी देह छूटी. ते पछी घरमां आवीने रखा. ते द्रव्यने उपाय साधन धरुं कर्यां, परंतु द्रव्य न भयुं. तारे जेकादश स्कंधमां अष्ट सिद्धि कहे छे. तेनां पण्य साधन धरुं कर्यां, परंतु साधन ढाध सिद्ध न थयुं. तारे हार मानी रखा. जेम करतां चालीस वर्षना थया. तारे वैराग्य आव्यो. जे, द्रव्यनी पाछण आवला हिवस वृथा पय्या. हुवे मथुरा जग्ये भगवानने माटे तप करे. जयां ध्रुवज्ये तप कर्युं छे. पछी त्यां आवीने आव्यो हिवस गायत्री जपे. रात्रिये पाशेर दूध ले. जे प्रकारे हिवस छ बीसा. तारे श्रीआचार्यञ्ज आआथी मथुरा पधार्या. ते ध्रुवघाटनी उपर मध्याह्ननी संध्या करतां नारायणदासनी तरफ् ज्ये. तारे नारायणदासना मनमां जे आव्युं, जे जेमना सेवक थयजे तो श्रीठाकुरञ्ज कृपा करे. तारे श्रीआचार्यञ्जने दंडवत् करी विनती करी, महाराज! मने कृपा करी सेवक करे. तारे श्रीआचार्यञ्ज कहे, तमे ब्रह्मचारी छे. पहेलां तो द्रव्यने माटे जहु उपाय कर्यां. ते सिद्ध न थयो. हुवे तू श्रीठाकुरञ्जने माटे तप करे छे तथी सेवक थवानुं जेम कहे छे ?

अब तू श्रीठाकुरजी के लिये तप करत है, तातें सेवक होइवे की क्यों कहत हो ? तब नारायनदास ने कही, महाराज ! आप पूरणपुरुषोत्तम हो । मेरे जनम की सगरी बात कहि दीनी । सो आपु की कृपा बिना श्रीठाकुरजी दुर्लभ हैं तातें अब मैं बहोत भटक्यो । अब आपु मोपर कृपा की दृष्टि करी, तब मेरो मन सेवक हौंन को भयो । तैसे कृपा करिके सरन लीजे ।

तब श्रीआचार्यजी नारायनदास को नाम निवेदन कराये । तब नारायनदास ने विनती करी, महाराज ! अब हमको कदा कर्तव्य है ? सो आज्ञा दीजें । तब श्रीआचार्यजी कहे, हमारे संग महावन चलो । तिहारे माथे श्रीठाकुरजी पधराइ देंगे । तिनकी तुम सेवा करियो । तब नारायनदास ने कही, मेरो घर महावन है । सो पधारिये । और मेरे एक भतीजी है ताको सेवक करिये । सो श्रीआचार्यजी सांझको श्रीगोकुल पधारे । रात्रिकों रहे । प्रातःकाल नारायनदास के घर महावन पधारिके नारायनदास की भतीजी को नाम निवेदन कराये । इतने उह महावन मे क्षत्रानी सों चारों स्वरूप ने कही, श्रीआचार्यजी नारायनदास के घर पधारे हैं, तहां हमको ले चलो ।

वार्ता-प्रसंग १—सो एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु पृथ्वी-

त्यारे नारायणदासे कहुं, महाराज ! आप पूर्ण पुरुषोत्तम छे । मारा जन्मनी सधणी बात छेही दीधी । ते आपनी कृपा बिना श्रीठाकुर छे दुर्लभ छे । तेथी हुवे हुं भहु भटक्यो । हुवे आप मारा उपर कृपानी दृष्टि करी त्यारे भाइं मन सेवक थवानुं थयुं । तेवी कृपा करीने शरणे लो ।

त्यारे श्रीआचार्यजी नारायणदासने नाम-निवेदन कराव्यु । त्यारे नारायणदासे विनती करी, महाराज ! हुवे अभने शुं कर्तव्य छे ? ते आज्ञा आपो । त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, अभारी साथे महावन यावो । तमारा माथे श्रीठाकुर पधरावी दधशुं । तेमनी तमे सेवा करजे । त्यारे नारायणदासे कहुं, भाइं घर महावन छे । ते पधारे । अने मारे अक बत्री छे । तेने सेवक करे । पछी श्रीआचार्यजी सांजना श्रीगोकुल पधार्या । रात्रिअे रखा । प्रातःकाल नारायणदासना घर महावन पधारीने नारायणदासनी बत्रीअेने नाम-निवेदन कराव्युं । अटलाभां महावनमां ते क्षत्राणीने यारे स्वरूपे कहुं, श्रीआचार्यजी नारायणदासना धरे पधार्या छे त्यां अभने लई यावो ।

वार्ता-प्रसंग १—ते अक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु पृथ्वी परिक्रमा करतां

परिक्रमा करत महावन पधारे। सो तव वा क्षत्रानी ने ब्रह्मांडघाट पे श्रीयमुनाजी में तें चारों स्वरूप प्राप्त भये हते, सो वे चारों स्वरूप लायके श्रीआचार्यजी के पास राखे। सो श्रीआचार्यजी ने चारों स्वरूप चारों वैष्णवन के माथे पधराये। श्रीनवनीतप्रियजी, गज्जन-धावन के माथे पधराये। श्रीगोकुलचंद्रमाजी, नारायनदास के माथे पधराये। श्रीलाडलेसजी, जीयदास सूरी क्षत्री के माथे पधराये। श्रीललितत्रिभंगीजी, देवाकपूर के माथे पधराये। और चारों वैष्णवन सों श्रीआचार्यजी ने कही, ये मेरे सर्वस्व हैं। सो तिहारे माथे पधराये हैं। सो सेवा प्रीति सों नीकी भांति सों करियो। और तुम सों न बनि आवें तव हमारे घर पधराइयो। सो चारों कों सेवा की रीति बताये। पाछें देवाकपूर और जीयदास सों कहे, तुम घर पधराइ ले जाव, गज्जन पाछें तें आवेगो। तव जीयदास घर आये। सेवा करन लागें, आगरे में। सो इनकी वार्ता में आगें कहेंगे। और देवाकपूर कडा में आये। तिनकी सेवा को प्रकार देवाकपूर की वार्ता में कहेंगे। नारायनदास कों सेवा की रीति बताये। सो नारायनदास ने सेवा करी। सो नारायनदास की वार्ता में पहलें कहि आये हैं।

वार्ता—प्रसंग २—अब श्रीआचार्यजी गज्जन कों और श्रीनव-

महावन पधार्या। त्यारे ते क्षत्राणीते ब्रह्मांड घाट उपर श्रीयमुनाल्लभांथी तार स्वरूप प्राप्त थयां हुतां। ते त्यारे स्वरूप लावीने श्रीआचार्यल्लनी पासे राख्यां। ते श्रीआचार्यल्लये त्यारे स्वरूप त्यारे वैष्णवोना माथे पधराव्यां। श्रीनवनीतप्रियल्ल, गज्जन-धावनने माथे पधराव्या। श्रीगोकुलचंद्रमाल्ल, नारायणदासना माथे पधराव्या। श्रीलाडलेशल्ल, लयदास सूरी क्षत्रीना माथे पधराव्या। श्रीललितत्रिल्लंगील्ल, देवाकपुरने माथे पधराव्या। अने त्यारे वैष्णवोने श्रीआचार्यल्लये कहुं, ये भाइं सर्वस्व छे। ते तभारा माथे पधराव्यां छे। ते सेवा प्रीतिथी सुंदर रीतिथी करन्ते। अने (न्यारे) तभाराथी न भनी आवे त्यारे अभारा धरे पधरावजे। ते त्यारेयने सेवानी रीति भतावी।

पछी, देवाकपूर अने लयदासने कहे, तमे घर पधरावी लक्ष लय। गज्जन पछीथी आवशे। त्यारे लयदास धरे आव्या। सेवा करवा लाव्या आयाभां। ते अनेभनी वार्ताभां आगण कहीशुं। अने देवाकपूर कडाभां आव्या। तेभनी सेवानी प्रभार देवाकपूरनी वार्ताभां कहीशुं। नारायणदासने सेवानी रीति भतावी। ते नारायणदासे सेवा करी। ते नारायणदासनी वार्ताभां पहलें कही आव्या छीअे।

वार्ता—प्रसंग २—हुये श्रीआचार्यल्ल गज्जनने अने श्रीनवनीतप्रियल्लने संग

नीतप्रियजी कों संग लेके श्रीगोकुल पधारें । संग में दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास हैं । सो श्रीगोकुल आये । प्रातःकाल जन्माष्टमी ही । सो श्रीगोकुल में उत्सव किये । एक दहेंडी दहीं सों दधिकादो किये । एक उपरनामें श्रीनवनीतप्रियजी कों झुलाये । एक ओर दामोदरदास हरसानी । एक ओर कृष्णदास मेघन पकरे । गज्जन ने नृत्य कियो । श्रीआचार्यजी पालने झुलाये । साक्षात् नंदराय, यसोदाजी, ब्रज-भक्त, गोप गोपी सब नंदालय की लीला प्रगट करी । अनुभव सेवक कों कराये । पाछें गज्जन कों श्रीनवनीतप्रियजी पधराई आगरे कों विदा किये । सो गज्जन आगरे आइ सेवा किये । सो प्रकार गज्जन की वार्ता में ऊपर कहि आये हैं ।

पाछें श्रीआचार्यजी पृथ्वी-परिक्रमा कों पधारे । सो उह क्षत्रानी श्रीआचार्यजी की ऐसी कृपापात्र ही । तिनकों श्रीआचार्यजी की सेवा पे दृढ़ भाव हो । चार स्वरूप प्रथम ही पधारें । परि श्रीआचार्यजी की सेवा में समत्व राखें । सो इनकी वार्ता गूढ़ है । सो वहीत प्रकास नाहीं कियो ।

वार्ता ॥१५॥

✽

✽

✽

लघने श्रीगोकुल पधार्यां । संगमां दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास छे । ते श्रीगोकुल आव्या । प्रातःकाल जन्माष्टमी हुती । ते श्रीगोकुलमां उत्सव कर्यो । एक दहेंडी (दहेंडुं भाटीनुं वासणु । भटकी) दहेंडी दधि-कादव कर्यो । एक उपरणांमां श्रीनवनीतप्रियलने झुलाव्या । एक तरङ्ग दामोदरदास हरसानी, एक तरङ्ग कृष्णदास मेघन (छडा) पकडे । गज्जनने नृत्य कर्युं । श्रीआचार्यलने पालने झुलाव्या । साक्षात् नंदराय, यशोदाल, ब्रजभक्तो, गोप-गोपी अधी नंदालयनी लीलाने प्रगट करी अनुभव सेवकाने कराव्या । पछी गज्जनने श्रीनवनीतप्रियल पधरावी आव्यो । ते गज्जनने आव्यो । ते प्रकार गज्जननी वार्तामां उपर कही आव्या छीअे ।

पछी श्रीआचार्यल पृथ्वी परिक्रमा करवा पधार्यां । ते क्षत्राणी श्रीआचार्यलनी अेवी कृपापात्र हुती । तेने श्रीआचार्यलनी सेवा उपर दृढभाव हुतो । (तेथी) चार स्वरूप प्रथमंज पधार्यां । परंतु श्रीआचार्यलनी सेवामां समत्व राअे । ते अेनी वार्ता गूढ़ छे । ते अहु प्रकाश कर्यो नथी ।

वार्ता ॥१५॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, जीयदास सूरी क्षत्री, आगरे में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—जीयदास लीला में श्रीयमुनाजी की सखी है। स्यामा इनको नाम है। सो स्यामा की पांच सखी हैं। तिनके नाम कहत हैं। कावेरी सखी, इहां पुरुषोत्तमदास भये। मनोहर सखी, सो इहां छबीलदास भये। हीरा सखी, सो इहां कृष्णदास भये। छविधामा सखी, सो इहां हरजी भये। मंजुकि सखी, सो इहां मथुरामल्ल भये। अब छहो जने जा प्रकार श्रीलाडिलेसजी की सेवा करि लीला में प्राप्त भये, सो प्रकार कहत हैं।

वार्ता-प्रसंग १—अब जीयदास सूरी क्षत्री के भाये श्रीआचार्यजी श्रीलाडिलेसजी पधराये। सो आगरे आये। प्रातःकाल तें संध्या लों सेवा मन लगाइ के तनुजा-वित्तजा मानसी करें। सो अनोसर करत विरह ऐसो भयो, जो-देह छूटि गई। या प्रकार श्रीलाडिलेसजी चारि प्रहर जीयदास सो सेवा कराई।

भावप्रकाश—काहेतें, जीयदास उत्तम अधिकारी हैं। लीला में मगन ह्वे गये। पाछें लौकिक-वैदिक न देखें।

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुना सेवक, जियदास सूरी क्षत्री, आआमां रहता, तेमनी वार्ताना भाव कहिये छिये—

भावप्रकाश—जियदास दीवामां श्रीयमुनाजीनी सखी छे। श्यामा ज्येतुं नाम छे। ते श्यामानी पांच सखी छे। तेनां नाम कहिये छिये। कावेरी सखी, अहीं पुरुषोत्तमदास थया। मनोहर सखी, ते अहीं छबीलदास थया। हीरा सखी, ते अहीं कृष्णदास थया। छविधामा सखी, ते अहीं हरजी थया। मंजुकी सखी, ते अहीं मथुरामल्ल थया। हुवे छये जणु ज प्रकारे श्रीलाडिलेसजीनी सेवा करी दीवामां प्राप्त थया ते प्रकार कहे छे।

वार्ता-प्रसंग १—हुवे जियदास सूरी क्षत्रीना भाये श्रीआचार्यजी श्रीलाडिलेसजी पधराव्या। ते आआ आव्या। प्रातःकालथी सायंकाल मुधी सेवा मन लगाडीने तनुज-वित्तज मानसी करी। पछी अनोसर करतां विरह ज्येवा थयो, के देह छूटी गइ। आ प्रकारे श्रीलाडिलेसजी गार प्रहर जियदास पासे सेवा करावी।

भावप्रकाश—डेभके, जियदास उत्तम अधिकारी छे। (तेथी) दीवामां मगन थइ गया। पछी लौकिक-वैदिक न ज्येथुं।

पाछें जीयदास के दोय बेटा हते । पुरुषोत्तमदास, छबील-
दास, सो कोइ दिन सेवा करी । सो इन दोऊ भाईन कें संतति न भई ।

भावप्रकाश—सो काहेतें, जीयदास की देह छूटे पाछें दोउ भाई
लौकिक में व्यौहार छोड़ि कें श्रीठाकुरजी में मन लगाइ सेवा करी ।

सो जब जानें अब देह छूटेगी तब ये दोऊ भाई के मामा
कृष्णदास चोपड़ा क्षत्री हते, तिनके माथें श्रीलाडिलेसजी पधराये ।
सो कृष्णदास चोपड़ा नें कछुक दिन भली भांति सों सेवा कीनी ।
पाछें एक समय महामारी आई । सो तब कृष्णदास के सब कुटुंब
की देह छूटी । कृष्णदास आपु अकेले रहे ।

भावप्रकाश—सो काहेतें, जो-कुटुंब दैवी न हतो । तातें कोई सेवक
न भयो । और द्रव्य जितनो दैवी हतो, तितनो श्रीठाकुरजी अंगीकार किये ।
पाछें आसुरी रह्यो, सो आगरे में पठान आयकें गाम लूटे, मारे । तामें कृष्णदास
श्रीलाडिलेसजी रहें । इनको द्रव्य सब लूटि गयो ।

तब कृष्णदास के मित्र हरजी, मथुरामल्ल हे । सो श्रीआचा-
र्यजी के सेवक हे । तिनके घर कृष्णदास जाइकें रहें । सो मथुरामल्ल
तो दिन तीन लों सेवा करि देह छोड़ी । भगवत्प्राप्ति भई । पाछें

पछी ज्यदासना ये भेटा हुता. पुरुषोत्तमदास, छबीलदास. तेभणु केरदास
द्विस सेवा करी. (परंतु) आ ये लाधने संतती न थध.

भावप्रकाश—डेभके, ज्यदासनी देह छुट्या पछी अन्ने बाधआये
लौकिकमां व्यवहार छोडीने श्रीठाकुरजिमां मन लगाडी सेवा करी.

पछी न्यारे जण्युं, के हुवे देह छूटये त्यारे अये ये लाधना मामा कृष्णदास
चोपडा क्षत्री हुता. तेमना माथे श्रीलाडिलेशज पधराव्या. ते कृष्णदास चोपडाअये केरदास
द्विस सारी रीते सेवा करी. पछी अयेक समय महामारी (महामृत्यु, डोलेरा) आवी
त्यारे कृष्णदासना अथा कुटुंबनी देह छुटी. कृष्णदास पोते अयेकला रखा.

भावप्रकाश—डेभके, कुटुंब दैवी न हुतु. तेथी डोध सेवक न थथे.
अने द्रव्य जेटुं दैवी हुतुं तेरतु श्रीठाकुरजिअये अंगीकार क्युं. पछी आसुरी
रह्यु, ते आआमां पठाण आवीने गाम लुटयुं, मार्या. तेमां कृष्णदास, श्रीलाडिलेशज
रखा. अमेतुं द्रव्य अयुं लुंटाध गयुं.

त्यारे कृष्णदासना मित्र हरज, मथुरामल्ल हुता. ते श्रीआचार्यज(ना)सेवक हुता.
तेमना धरे कृष्णदास जठने रखा. ते मथुरामल्ले त्रणु द्विस सुधी सेवा करी देह छोडी.

हरजी और कृष्णदास मिलि के सेवा करी । पाछें कृष्णदास की देह छूटी, लीला में प्राप्त भये । पाछें हरजी ने डेढ़ बरस लों श्रीलाड-लेसजी की सेवा करी । ता पाछें श्रीगुसाईंजी के घर श्रीगोकुल पधारे । सो जीयदास श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते । इनकी वार्ता को पार नार्हीं, सो कहां ताई कहिये । वार्ता ॥१६॥

भावप्रकाश—पाछें हरजी की देह विगरी सो बड़े श्रीगिरिधरजी के लालजी श्रीदामोदरजी, श्रीमुरलीधरजी, श्रीगोपीनाथजी । इनके घर श्रीगोकुल में श्रीठाकुरजी की सगरी सामग्री वस्त्र-आभूषण सहित पधराइ, विरह करि देह छोड़ी । सो ये छेहों श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हे । लीला संबंधी हते, सो एकही जनम में प्रभुकों पाये ।

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, देवाकपुर क्षत्री, कडा में रहते,
तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—देवाकपूर और देवाकपूर की स्त्री दोऊ श्रीजसोदाजी की सखी हैं । देवाकपूर को नाम प्रवीना लीला में, देवाकपूर की स्त्री को नाम लीला में रसलीना है ।

लगवत्प्राप्ति थछ, पछी हरल्य अने कृष्णदासे भणीने सेवा करी. पछी कृष्णदासनी देह छुटी, लीलाभां प्राप्त थया. पछी हरल्यउडे ३६ वर्ष सुधी श्रीलाडलेसल्यनी सेवा करी. ते पछी श्रीगुसांछल्यना घर श्रीगोकुल पधार्या. ते ल्यदास श्रीआचार्यल्यना अवा कृपापात्र लगवदीय हुता. अमनी वार्ताना पार नहों, ते क्यां सुधी कहीअये? वार्ता ॥१६॥

भावप्रकाश—पछी हरल्यनी देह अगडी. ते मोटा श्रीगिरिधरल्यना लालल्य श्रीदामोदरल्य, श्रीमुरलीधरल्य, श्रीगोपीनाथल्य अमना धरे श्रीगोकुलभां श्रीठाकुरल्यनी अधी सामग्री वस्त्र-आभूषण सहित पधरावी, विरह करी देह छोडी. तेथी अे छेहे श्रीआचार्यल्यना कृपापात्र लगवदीय हुता, लीला संबधी हुता. ते अेक व जन्मभां प्रभुने पाभ्या.

* * *

हुवे श्रीआचार्यल्य महाप्रभुल्यना सेवक, देवाकपूर क्षत्री, कडाभां रहता,
तेमनी वार्ताना भाव कहीअये छीअे—

भावप्रकाश—देवाकपूर अने देवाकपूरनी स्त्री अन्ने श्रीयशोदाल्यनी सखी छे. देवाकपूरतुं नाम प्रवीणल्य लीलाभां छे. देवाकपूरनी स्त्रीतुं नाम लीलाभां रसलीना छे.

वार्ता-प्रसंग १—सो देवाकपूर के साथे श्रीआचार्यजी ने श्रीललितत्रिभंगीजी की सेवा पधराये। सो देवाकपूर ने अस्त्री सहित बहोत दिन श्रीललितत्रिभंगीजी की सेवा करी। पाछें देवाकपूर की देह छूटी। तब देवाकपूर की स्त्री ने बहोत दिन सेवा करी। कितनेक दिन पाछें देवाकपूर की स्त्री की देह छूटी। सो तब वाके सगें संबंधीन नें याको अग्नि-संस्कार कियो। ता पाछें घर आइ मंदिर के किंवाड खोलकें बेटान ने देखयो तो सगरी सामग्री ज्यों की त्यों स्थित हैं। और श्रीठाकुरजी नाहीं। सैया खाली परी हैं। श्रीठाकुरजी अंतरधान भये। सो काहू कों जानी न परी। ऐसे अंतरधान भये। देवाकपूर के बेटा चारि हते। परि सेवा श्रीठाकुरजी उनतें न कराये।

भावप्रकाश—काहेतें, जदपि नाम श्रीगोपीनाथजी, श्रीगुसांईजी के बड़े भाई के पास पाये हते। परंतु लौकिक वैदिक कार्य में आसक्त हते। तातें सेवा श्रीठाकुरजी ने न कराई। और श्रीगोपीनाथजी जिनकों नाम दिये, सो मर्यादामार्गीय भये। ये बलदेवजी मर्यादा रूप हैं। और श्रीललितत्रिभंगीजी श्रीआचार्यजी के सेव्य पुष्टि पुरुषोत्तम, सो संबंध कैसे बनें ? और चारि बेटान के आगें वैष्णव कां सेवा कैसे मिले ? तातें श्रीठाकुरजी अंतरधान व्है गये। पाछें सिंहनंद में एक

वार्ता-प्रसंग १—ते देवाकपूरना साथे श्रीआचार्यजीके श्रीललितत्रिभंगीजी सेवा पधरावी। ते देवाकपूर स्त्री सहित अहु द्विस पर्यंत श्रीललितत्रिभंगीजी सेवा करी, पछी देवाकपूरनी देह छूटी। त्पारे देवाकपूरनी स्त्रीके अहु द्विस सेवा करी। केउसाक द्विस पछी देवाकपूरनी स्त्रीनी देह छूटी। त्पारे अनां सगांस'अ'धीअके अने अग्नि-संस्कार कर्यो। ते पछी घर आवी मंदिरनां कभाउ आदीने पुत्राके जेयुं, ते सवणी सामग्री जेभनी तेम स्थित छे अने श्रीठाकुरजी नथी। सैया आदी पछी छे। श्रीठाकुरजी अंतर्धान थया। ते केउथी जेयुं न गयुं, अे प्रकारे अंतर्धान थया। देवाकपूरना जेयुं आर हुता। परंतु श्रीठाकुरजीके जेभनी पासे सेवा न करावी।

भावप्रकाश—इभके यद्यपि (ते सर्वेके) नाम श्रीगोपीनाथजी, श्रीगुसां-
इजना मोटा बाध पासे पार्युं हुतुं। परंतु लौकिक वैदिक कार्यमां आसक्त हुता। तेथी सेवा श्रीठाकुरजीके न करावी। वणी श्रीगोपीनाथजीके जेभने नाम दीधु ते मर्यादामार्गीय थया। अे बलदेवके मर्यादा रूप छे। अने श्रीललितत्रिभंगीजी श्रीआचार्यजीके सेव्य पुष्टि पुरुषोत्तम ते स'बंध इम अने ? अने आर पुत्रोनी आगण वैष्णवाने सेवा देवी रीते भये ? तेथी श्रीठाकुरजी अंतर्धान थथ

श्रीगुसाईजी की सेवकनी ब्राह्मणी हती, वाके घर प्रगट व्है सब बात वा ब्राह्मणी सां कही । गोप्यरीति सां व्होत दिन लां सेवा कराये । सां श्रीगुसाईजी की वार्ता के भाव में लिखे हैं । जा प्रकार श्रीगुसाईजी के कुल में पधारें, सो ।

सो वह देवाकपूर और देवाकपूर की स्त्री बड़े भगवदीय हे । तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिये । वार्ता ॥१७॥

भावप्रकाश—इनकी वार्ता में यह सिद्धांत जताए, जो-दैवी जीव विनु श्रीठाकुरजी में स्नेह न होइ । श्रीठाकुरजी सेवा हू न करावें ।

✽ ✽ ✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, दिनकर सेठ क्षत्री, प्रयागमें रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहन हैं—

भावप्रकाश—ये दिनकर सेठ लीला में भगवद् संबंधिनी सखी श्री-ठाकुरजी की है । सो श्रीस्वामिनीजी सां व्होत प्रीति है । श्रीठाकुरजी की वार्ता सब पूछती । इनसां सगरी अपनी प्रीति की बात कहती । सो लीला में इनको नाम “मनआतुरी” है । सदा श्रीस्वामिनीजी की वार्ता सुनि श्रीठाकुरजी सां कहती । दोऊन की वार्ता सुनन में मन आतुर, जो मन रहि न सकतो । सुनिवे

गया. पछी सिंहुनंदमां अेक श्रीगुसांईजीनी सेवकनी ब्राह्मणी-हती तेने धरे प्रकट थध अधी बात ते ब्राह्मणीने कही. गोप्य रीतिथी धरा द्विवस सुधी सेवा करावी. ते श्रीगुसांईजीनी वार्ताना भावमां लभ्युं छे. आ प्रकारे श्रीगुसांईजीना कुलमां पधार्यां ते.

ते देवाकपूर अने देवाकपूरनी स्त्री, महान भगवदीय हतां. तेथी तेमनी वार्ता कथां सुधी कहीअे ? वार्ता ॥ १७ ॥

भावप्रकाश—अेमनी वार्तामां आ सिद्धांत जताव्यो, के देवी जीव विना श्रीठाकुरजीमां स्नेह न होय. श्रीठाकुरजी सेवा पणु न करावे. वैष्णव ॥ १७ ॥

✽ ✽ ✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना सेवक, दिनकर सेठ क्षत्री, प्रयागमां रहते, तेमनी वार्ताना भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे दिनकर सेठ लीलामां भगवद् संबंधिनी सखी श्रीठा-कुरजीनी छे. अेने श्रीस्वामिनीजीथी अहु प्रीति छे. श्रीठाकुरजीनी वार्ता अधी पूछती. (श्रीस्वामिनी) अेने अधी पोतानी प्रीतिनी बात कहेती. लीलामां अेतुं नाम ‘मनआतुरी’ छे. सदा श्रीस्वामिनीजीनी वार्ता सांभणी श्रीठाकुरजीने कहेती. अनेनी वार्ता सांभणनामां मन आतुर, के मन रही न शके. सांभणनातुं व्यसन

को व्यसन हतो । तातें श्रीठाकुरजी कों, श्रीस्वामिनीजी कों परम प्रिय हैं । सो दिनकर सेठ प्रयाग में एक बड़ो द्रव्यमान क्षत्री हतो, वाके घर जन्में । सो पांच बरस के भये ता दिन तें श्रीठाकुरजी की कथा-बाराता होई, सो सुनन में इनको मन लाग्यो । पाछे बरस दस-बाराह के भये । तब गहना-कपड़ा अपुने तथा घर में जो हाथ लगे सो कथा कहेनवारे कों दे आवें । तातें इनके मा-बाप, तीन भाई हते सो सब दिनकर सेठ कों चोर कहते । घर में इनको विश्वास न करतें । सो एक समय दिनकर सेठ के बड़े भाई को व्याह हतो । तातें इनहूँ कों सुंदर जरी को वागा, चीरा पहराये । आभूषन पहराये । घोरा पर चढ़ाये । बरात में ले चलें । तब दिनकर सेठ के मन में यह आई, जो-आजु भाजिवे को दाव परें तो यह सब कथा कहनवारे कों दे आजुं । सो जब बरात वेटीवारे के द्वारे गई तब सगरे कुटुंबी व्याह के कार्य में लगें । दिनकर सेठ भाजिकै दस-पांच कथा कहनवारे के घर जाइ सगरे आभूषन-वस्त्र वांटि दिये । और कहें, जो-हमारे भाई, पिता, कुटुंबी, काहू सों कहियो मति । पाछें दिनकर सेठ एक धोती पहरे घर में आई बेठे । तब माता ने पूछी, आभूषन वस्त्र कहां है ? पाछें पिता हूँहूँहूँ आइ के दिनकर सेठ कों

हुतुं. तेथी श्रीठाकुरजीने श्रीस्वामिनीजीने परमप्रिय छे. ते दिनकर सेठ प्रयागमां अेक भोटा द्रव्यपात्र क्षत्री हुतो, तेना धरे जन्म्या. ते पांच वर्षना तथा ते द्विवसथी श्रीठाकुरजीनी कथा वार्ता (जयां) थाय ते सांखणवामां अेमनुं मन लाग्यु. पछी वर्ष दश-पारना तथा, तयारे धरेणुं, कपडां पोतानां तथा धरमां जे हाथ लागे ते कथा कहेवावाणाने दई आवे. तेथी अेमनां मा-बाप (तथा) तणु साई हुता ते अंधा दिनकर सेठने अेर कहेता. धरमां अेना विश्वास न करता. ते अेक समय दिनकर सेठना भोटा साईनुं लख हुतुं. तेथी अेने पणु सुंदर जरीना वाधा, (वस्त्र) थिरे (लहेरीयादार पाध) पहेराण्यां. आभूषणु पहेराण्यां. घोडा उपर चढाण्या. जनमां लई आह्या. तयारे दिनकर सेठना मनमां अे आव्यु, के आजु सागवानो दाव पडे तो आ अधुं कथा कहेवावाणाने आपी आवुं. पछी जयारे जन भेटीवाणाना द्वारे गध सारे अंधा कुटुंबी लखना कार्यमां लाग्या. दिनकर सेठ सागीने दश-पांच कथा कहेवावाणाना धरे जध (तेमने) अंधां आभूषणु-वस्त्र वांटी आण्यां. अने कथुं, के अमारा साई-पिता, कुटुंबी काधने कहेरो नही. पछी दिनकर सेठ अेक धोती पहरे धरमां आवी भेडा. तयारे माताअे पूछ्युं, आभूषणु वस्त्र कयां छे ? पछी पिता भोणता भोणता आवीने दिनकर

वहोत मारयो । तीन दिन लों कोठा में मूदि राखें । परंतु दिनकर सेठ बोले नाहीं । कछ्छ न बताये । तब पिता, भाई हार मानि कें बैठि रहें । दिनकर सेठ सगरे दिन कथा वार्ता सुनें । जहां जाइ तहां श्रोता वक्ता इनकों सेठ कहें । इनकी सराहना करें । और लोगन में ज्ञाति में कुटुंबीन में याकों चोर कहें । सो दिनकर सेठ कहाये । सो सांझ कों घर आवें । तब मा वाप खाइवे कों देइ सो खाँइ । जेसो पहिरवे को देइ सो पहरें । एक बार सांझ कों खाय । कथा कहनवारे के घर कहूँ जागरन होई, भगवद् वार्ता होइ, तहांई सोई रहते । घर में रहन न देते । जो कछ्छ नजर परेगो सो नजर चुकाइ कें ले जाइगो । ज्ञाति में चोर कहाये । तातें इनको व्याह न भयो । ऐसे करत माता-पिता रहें तबलों खानपान चल्यो गयो । पाछे माता-पिता मरे । तब भाई सों न बने । तब दिनकर सेठ ने विचारयो । अब यह गाँव छोड़िये तो आछो । सो प्रातःकाल त्रिवेनी न्हाइवे कां घाट पर दिनकर सेठ आये । और श्रीआचार्यजी नें अडेल तें कृष्णदास मेघन सों कह्यो, जो-सहर में जाई खांड दोइ-चारि रुपैया की ले आउ । सो कृष्णदास मेघन त्रिवेनी में आये । दोऊ अस्नान करत हे । तब दिनकर सेठ नें कही, तुम

शेठने बहुत मारयो. त्रणु द्विवस सुधी डाढाभां भूढी राण्यो. परंतु दिनकर शेठ पोट्या नहीं. कंई न बताव्युं. त्यारे पिता-बाध हार मानीने भेसी रखा. दिनकर शेठ आप्पो द्विवस कथा-वार्ता सांभणे. ज्यां जय त्यां श्रोता वक्ता अभने शेठ कहे. अभनी वडाध करे. अने लोढाभां, ज्ञातिभां, कुटुंबीज्याभां अने चोर कहे. ते दिनकर शेठ कहेवाया. ते सांज धर आवे. त्यारे मा-पाप आवानुं हे ते आय. जवुं पडेरवानुं हे ते(वुं) पडरे. जेकवार सांज आय. कथा कहेवा-वाणाना धरे (ठ) कोर्ध जगे जगरणु होय, भगवद् वार्ता होय, (तो) त्यांज सूँ रहेता. (माता पिता) धरमां रहेवा न हे, (डेम ?) ज (जणु) जे नजर पडशे तो नजर चुकावीने लध जशे. ज्ञातिभां चोर कहेवाया. तेथी अभनुं लगन न थयुं. अभ करतां मातापिता रखां त्यां सुधी खानपान याव्युं गयुं. पछी मातापिता मर्यां. त्यारे बाधथी न अने । त्यारे दिनकर शेठे विचार्युं, हुवे आ गाम छोडिजे तो साइं. तेथी प्रातःकाल त्रिवेणी न्हावाने घाट उपर दिनकर शेठ आव्या. अने (अहीं) श्रीआचार्यज्ये अडेसथी कृष्णदास मेघनने कल्युं, हे शहरमां जध भांड भे चार रुपीआनी लध आवो. ते कृष्णदास मेघन त्रिवेणीभां आव्या. अन्ने स्नान करता हुता. त्यारे दिनकर शेठे कल्युं, तमे कोणु छे ? त्यारे. कृष्णदास पूछे, तमे

कौन हो ? तब कृष्णदास पूछे, तुम कौन हो ? हम सों पूछो सो तुमकों कछु काम है ? तब दिनकर सेठ ने कही, मोकों यह गाँव छोड़नो है । सो तुमकों परदेसी जानि पूछयो । जो—काहू कों भगवद् वार्ता—कथा आवत होइ तो मैं उनके संग जाऊं । मेरे घर में द्रव्य बहोत है । सो माता—पिता हते तबलों निर्वाह भयो । अब तीन भाई हैं, सो मोकों चोर कहि बुरें बचन बोलत हैं । मेरो ब्याह भयो नाही । सो ठाकुरने आछी करी । तब कृष्णदास दैवी जानि कहें, तुमकों (कथा) सुनिवे को व्यसन है तो अड़ेल में श्रीआचार्यजी के श्रीमुख की कथा तो एक दिन सुनो । पाछें जहाँ मन होई तहां जैयो । तब दिनकर सेठ इतनो सुनत ही उहां ते नाव पर चढ़ि अड़ेल आये । ता समय श्रीआचार्यजी पोढ़ि कें उठे हे । पहर सवा दिन पिछलो हतो । तब दिनकर सेठ नें दंडौत् कियो । तब श्रीआचार्यजी ने कही, आवो दिनकर सेठ ! बेठो कथा सुनो । पाछें आपु दसमस्कंध में भ्रमरगीत को व्याख्यान किये । सो दिनकरदास के नैनन सों आंसु के प्रवाह बहें । मन में कहें, हाइ हाइ ! इतने दिन मेरे योंई बृथा गये । अब तो इनकी सरनि व्हें सदा इनके पास रहि कथा श्रुति कों पान करों । पाछें कथा व्हे चुकी । तब दिनकर सेठ ने विनती

झाणु छे ? अबने पूछे छे ते तभारे कंई काम छे ? त्तारे दिनकर शेठे कछुं, मारे आ गाम छोडवुं छे. ते तभने परदेशी जाणुनि पूछयु. के छोडने भगवद्-वार्ता-कथा आवडती होय तो हुं अबनी साथे जाऊ. मारा धरमां द्रव्य धरु छे. ते मातापिता हतां त्यां सुधी निर्वाह थयो. हुवे त्रणु बाध छे ते मने चार कछी भोटां वचन कहे छे. माइं लक्ष थयुं नथी. ते ठाकुरे साइं क्युं. त्तारे कृष्णदास (तेभने) दैवी जाणुनि कहे, तभारे कथा सांभणवानु व्यसन छे तो अबडेलमां श्री-आचार्यजना श्रीमुअनी कथा तो अबेक दिनस सांभणो. पछी ज्यां मन होय त्यां जाऊ. त्तारे दिनकर शेठ अबेठुं सांभणीने त्यांथी नाव उपर यदी अबडेल आव्या. ते समये श्रीआचार्यज पोढीने उठ्या हुता. प्रहर सवा दिनस पाछलो हुतो. त्तारे दिनकर शेठे दंडवत् कर्या. त्तारे श्रीआचार्यज अबे कछु, आवो दिनकर शेठ ! भेसो, कथा सांभणो. पछी पोते दशमस्कंधमां ' भ्रमरगीत ' (छे ते) तु व्याख्यान क्युं. ते दिनकरदासनी आंभोभांथी आंसुनो प्रवाह बहो. मनमां कहे; होय, होय, आटला दिनस मारा अबे न वृथा गया. हुवे तो अबनी शरणे थध सदा अबनी पासे रही कथा—श्रुतिनुं पान करूं. पछी कथा थध चुकी. त्तारे दिनकर शेठे विनती करी, महाराज ! मने कृपा करीने शरणे दो. त्तारे श्रीआचा-

करी, महाराज ! मोकों कृपा करिकें सरनि लीजिये । तब श्रीआचार्यजी ने कही, तू कथा तो बहोत सुनी । परंतु अबलों सेवक नाहीं भयो ? तुमकों बड़े बड़े पंडित स्वामी मिलें तिनके सेवक क्यों नहिं भये ? तब दिनकर सेठ ने कही, महाराज ! जितने स्वामी पंडित मिले तितने द्रव्य के संगी मिले । जहांलों भेट करी तहांलों प्रीति बहुत करते । अब कोई मोसों बोलत नाहीं । परंतु श्रीठाकुरजी ने कृपा करी, जो—आपु के दरसन भये । आपु साक्षात् भगवान हो । मैं कहूं देस में जातो तो जनम विगरतो । अब मेरो उद्धार करो । मेरे कोई लौकिक प्रतिबंध नाहीं है । तब श्रीआचार्यजी कहें, श्रीयमुनाजी में सगरे कपरा सहित न्हाई आव । तब दिनकर सेठ न्हाई आये । तब श्रीआचार्यजी ने नाम निवेदन कराये । पाछे कहें, भगवद् सेवा करो । तब दिनकर सेठ ने कही, महाराज ! आपु तो अंतःकरण की जानत हो । मैं तो आपु के मुख की कथा सुनोंगो । यामें सगरी सेवा है । तब श्रीआचार्यजी कहे, आछो, हमारे संग रहो । सो दिनकर सेठ पास सौ रुपैया हते । तामें पचास श्रीआचार्यजी की भेट धरें । पचास रहें तामें नित अंगाकरि—दारि करतें ।

वार्ता—प्रसंग १—सो दिनकरदास को कथा उपर बहोत आसक्ति

यंछ्ये कछुं, ते कथा तो धरणी सांभणी. परंतु हनु सुधी सेवक नथी थयो ? तमने भोटा भोटा पंडित—स्वामी भज्या, तेमना सेवक ठेम नहुँ थयो ? त्यारे दिनकर शेठे कछुं, महाराज ! जेटला स्वामी-पंडित भज्या तेटला द्रव्यना संगी भज्या. ज्यां सुधी भेट करी त्यां सुधी प्रीति बहुत करता. हुवे डाध माराथी भोलतुं नथी. परंतु श्रीठाकुरछ्ये कृपा करी, ठे आपना दर्शन थयां. आप साक्षात् भगवान छे. हुं डाध (पीज) देशमां जतो तो जनम भगडतो. हुवे मारे उद्धार करे. मारे डाध लौकिक प्रतिबंध नथी. त्यारे श्रीआचार्यछे कहे, श्रीयमुनाछमां यथां कपडा सहित न्हाध आप. त्यारे दिनकर शेठ न्हाध आप्या. त्यारे श्रीआचार्यछ्ये नाम-निवेदन कराव्युं. पछी कहे, भगवत्सेवा करे. त्यारे दिनकर शेठे कछुं, महाराज ! आप तो अंतःकरणनी जणो छे. हुं तो आपना भुभनी कथा सांभणीश. ज्येमां यधी सेवा छे. त्यारे श्रीआचार्यछे कहे, भवे, अमारी साथे रहे. ते दिनकर शेठ पासे सो रुपैया हुता तेमांथी पचास श्रीआचार्यछनी भेट धर्या पचास रह्या तेमां नित्य अंगाभरी—दाण करता.

वार्ता—प्रसंग १—ते दिनकरदासनी कथा उपर बहुत आसक्ति हुती. ते श्रीआ-

हती । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आपु अङ्गेल में कथा कहते । सो तब एक दिन दिनकर सेठ श्रीयमुनाजी के तीर रसोई करन कों गये । तहां न्हाइ के चून सानि अंगाकरि गढि, पातरि पर धरि उपरा बराइ दियो । ताही समय श्रीआचार्यजी को एक जलधरिया जल भरन आयो । तब तासों दिनकरदास ने पूछी, जो-श्रीआचार्यजी महाप्रभु आपु कहा करत हैं ? तब वह जलधरियाने कही, श्रीआचार्यजी पोथी खोले हैं, अब कथा कहेंगे । तब दिनकर सेठ उन जलधरिया के वचन सुनत ही कच्ची लीटी ले जलपान किये । सेके नार्हीं । बेगि ही आय कथा सुने । पाछें कथा श्रीआचार्यजी कहि चुके तब जलधरिया ने श्रीआचार्यजी सों कह्यो, महाराज ! दिनकर सेठ कच्ची अंगाकरि बिना सेकी खायकें आयो है । तब श्रीआचार्यजी दिनकर सेठ तें प्रछे, तू बिना सेकी अंगाकरि क्यों खायो ? तब दिनकर सेठ बोल्यो, महाराज ! अंगाकरि तो नित्य सेकि कें लेऊंगो परंतु यह आपुके मुख सों कथामृत कब सुनोगों ? जो-अंगाकरि सेकतो तो यह अमृत कैसे मिलतो ? तब श्रीआचार्यजी बहोत प्रसन्न होइ कें कहें, आजु पाछें रसोई सँवारिकें भोग धरिकें महाप्रसाद लेकें आइयो । जब तू आवेगो तब कथा कहुंगो ।

चार्यजी महाप्रभु आपु अङ्गेलमां कथा कहेता । त्यारे अेक द्विस दिनकर सेठ श्रीयमुना-
 लना तीरे रसोइ करवाने गया । त्यां न्हाधने चुन आंधी अंगाभरी गढी पातर उपर
 धरी छायां अणावी दीधां । ते न समथे श्रीआचार्यजीने अेक नलधरीआ नल भरवा
 आव्यो । त्यारे तेने दिनकरदासे पूछ्युं, के श्रीआचार्यजी महाप्रभुए पोते शुं करे छे ?
 त्यारे अे नलधरीयाअे कहुं, श्रीआचार्यजीअे पोथी ओदी छे, हवे कथा कहेसे । त्यारे
 दिनकर सेठ अे नलधरीआनां वचन सांलणतां न काथी लीटी लधने नलपान क्युं ।
 सेडी नहुी । तरत न आवीने कथा सांलणी । पछी कथा श्रीआचार्यजी कहुी चुक्या
 त्यारे नलधरीयाअे श्रीआचार्यजीने कहुं, महाराज ! दिनकर सेठ काथी अंगाभरी
 बिना सेकेदी आधने आव्यो छे । त्यारे श्रीआचार्यजीअे दिनकर सेठने पूछ्युं, तें बिना
 सेडी अंगाभरी केम आधी ? त्यारे दिनकर सेठ ओल्या, महाराज ! अंगाभरी तो
 नित्य सेडीने लधश परंतु आ आपना मुअथी कथामृत क्यारे सांलणीश ? जे अंगा-
 भरी सेकतो तो आ अमृत केवी रीते भणतुं ? त्यारे श्रीआचार्यजी अहु प्रसन्न थधने
 कहे, आन पछी रसोइ सिद्ध करी लोग धरीने महाप्रसाद लधने आवणे । त्यारे तू
 आवीश त्यारे कथा कहुीश तारा आव्या बिना कथा नहुी कहुं । आनथी तू मुअथ

तेरे आघे बिना कथा न कहुंगो । आजु तें तू मुख्य कथा को ओता है । ता पाछें दिनकर सेठ हू वेगी रसोई करते । जो-श्रीआचार्यजी मेरे लिये बैठि रहें सो आछो नाहीं । और कोई दिन रंच ठील हू लगे तो जब दिनकर सेठ आवें तब आपु कथा कहतें ।

भावप्रकाश—यामें यह सिद्धांत भयो, जो-काची अंगाकरि असमर्पित को महादोष है । परंतु श्रीआचार्यजी की कथा में दृढ़ स्नेह है । ताके अर्थ लीनी । तातें बाधक नहीं भयो । और प्रसन्न भये । तातें श्रीआचार्यजी में दृढ़ स्नेह होई ताकों कोई दोष बाधक न होई । यह जताये ।

पाछे जहां लों जीये तहां लों श्रीआचार्यजी के मुख की कथा सुनी । रात्रि दिन लीला की भावना में मगन रहतें । लीला में हू श्रीस्वामिनीजी इनसों सगरी वार्ता करते । सो श्रीआचार्यजी कथा सुनाय अपने स्वरूप को अनुभव जतायो ।

सो दिनकर सेठ ऐसे भगवदीय है । वार्ता ॥१८॥

भावप्रकाश—इनकी वार्ता में यह सिद्धांत वैष्णव कों जताये, जो-कथा सुनिवे को मन होइ (तो) पहलेंही वेगि रसोई करि श्रीठाकुरजी सों पहांचि के जैये । तातें श्रीआचार्यजी 'भक्तिवर्द्धिनी' में कहे हैं, 'सेवायां वा कथायां वा यस्या-

कथानो श्रोता छे, ते पछी दिनकर सेठ पणु जल्दी रसोई करता, केभ जे भारा भाटे श्रीआचार्यजी जेसी रहे ते ठीक नहीं, अने केछ दिवस रंचक वार पणु थाय तो दिनकर सेठ आवे तयारे पोते कथा कहेता.

भावप्रकाश—आमां जे सिद्धांत थयो, ते काची अंगाभरी असमर्पितनो महादोष छे परंतु श्रीआचार्यजी कथांमां दृढ़ स्नेह छे तेने भाटे लीधी, तेथी बाधक नहीं थयो, अने (श्रीमहाप्रभुज) प्रसन्न थयो, तेथी श्रीआचार्यजीमां दृढ़ स्नेह होय तेने केछ दोष बाधक न थाय, जे ज्ञानुं.

पछी जयां सुधी ज्यो त्यां सुधी श्रीआचार्यजीना मुपनी कथा सांभणी रात्रिदिवस लीलाना भावनामां मगन रहेता, लीलांमां पणु श्रीस्वामिनीजी जेभनाथी जधी वार्ता करतां, ते श्रीआचार्यजीजे कथा सांभणावी पोताना स्वप्नो अनुभव ज्ञानुं.

ते दिनकरसेठ जेवा भगवदीय हुता.

वार्ता ॥ १८ ॥

भावप्रकाश—जेमनी वार्तांमां जे सिद्धांत वैष्णवोने ज्ञानुं, ते कथा सांभणावतुं मन होय, तो पहेलां जे जल्दी रसोई करी श्रीठाकुरजीने पहांचीने जधजे, तेथी श्रीआचार्यजी 'भक्तिवर्द्धिनी' मां कहे छे, 'सेवायां वा कथायां

सक्तिर्ददा भवेत्' प्रथम सेवा है, पाछे कथा है। दाऊ करिके प्रभु में आसक्ति भई चाहिये। कोई प्रकार सों होउ, सर्वोपरि आसक्ति है। सो दिनकर सेठ की भई। ता करि लीला की प्राप्ति भई।

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, दिनकरदास, मुकुन्ददास सहनिया कायस्थ, मालवा देस में रहते, तिनकी चार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में नंदरायजी के भाई हतें। दिनकरदास तो धरानन्द हैं और मुकुन्ददास ध्रुवनन्द हैं। सो ये मालवे में एक कायस्थ के जन्में। सो उनके पिता उज्जैन में हाकिम के पास रहते। सो एक दिन हाकिम सों बोला-चालि हे गई। तब दिनकरदास मुकुन्ददास को पिता चाकरि छोड़ि घर उठि आयो। सो दिन दस-पांच में देह छोड़ी। तब दोऊ भाई बरस दस-बारह के भये। सो घर में द्रव्य को संकोच भयो। तब घरतें निकसि के कासी गये। तब द्रव्य बहोत कमाये। तब दोऊ जने घर चलन लागे। सो कासी तें कोस एक बाहर निकसे। तब एक सर्प निकस्यो। सो मुकुन्ददास कों काटिकें बिल में धसि गयो। सो जहर चढ्यो। तब दिनकरदास कासी में उठाय ल्याये। सो बहोत

वा यस्यासकितर्द्धदा भवेत्' प्रथम सेवा छे, पछी कथा छे. अन्ने वडे प्रभुमां आसकित थवी जेधजे. ठाध प्रकारथी थाव. सर्वोपरि आसकित छे. ते दिनकर सेठनी थध. ते वडे लीलाभां प्राप्त थध.

✽

✽

✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजना सेवक, दिनकरदास मुकुन्ददास, सहनिया कायस्थ, मालवा देशमां रहता, तेभनी चार्ताको भाव कहीजे छीजे—

भावप्रकाश—जे लीलाभां नंदरायजना साथ हुता. दिनकरदास तो 'धरानन्द' छे अने मुकुन्ददास 'ध्रुवनन्द' छे. ते माणवामां जेक कायस्थने त्यां जन्म्या. जेमना पिता उज्जैनमां हाकिम पास रहेता. ते जेक दिवस हाकिमथी पोलायादी थर्ध गध. त्यारे दिनकरदास मुकुन्ददासने पिता याकरी छोडी धर आयेयो आयेयो. ते दिवस दश-पांचमां देहु छोडी. त्यारे अन्ने साथ बरस दश-बारना थया. ते धरमां द्रव्यने स ठाय थयो. त्यारे धरथी निकणीने काशी गया. त्यां द्रव्य अहु कमाया. त्यारे अन्ने जणु धर आववा लाग्या. ते काशीथी गाउ जेक बाहर निकज्या. त्यारे जेक सर्प निकज्यो. ते मुकुन्ददासने काठीने धरमां धसी गयो. ते विष चढ्युं. त्यारे दिनकरदास काशीमां उठावी लाग्या. ते अहु

झारनवारे जतन किये । परंतु विष उतरे नहीं । तब दिनकरदास ने पुकारिकै रुदन कियो । सो श्रीआचार्यजी कासी में पुरुषोत्तमदास के घर विराजत हते । कृष्णदास बाजार कछु कार्यार्थ आये हते । सो कृष्णदास ने दिनकरदास को विलाप सुनि, भगवदीय को हृदय कोमल सो, पूछयो । ऐसो दुःख तुम क्यों करत हो ? तब दिनकरदास ने कही, पहले द्रव्य के दुःख सों घर तें निकसि इहां आये, द्रव्य कमाये । सो घर जात हते सो हमारे भाई कों सर्प काट्यो । सो बहोत जतन कियो । परन्तु जहर उतर्यो नहीं । अब हमहं कासी में गंगाजी में डूबि मरेंगे । घर जाय कहा करें ? तब कृष्णदास कों दया आई । और दैवी जाने । सो श्रीआचार्यजी को चरणामृत पास हतो । सो मुकुन्ददास कों पानी में घोरि के पिवाचे । सो तत्काल जहर उतरि गयो । मुकुन्ददास उठि बैठे । चरणामृत सों बुद्धि निर्मल हे गई । सो मुकुन्ददास ने कृष्णदास कों भगवद्स्मरण करि दंडोत् किये । और पूछे, श्रीआचार्यजी कहां विराजे हैं । तब कृष्णदास ने कही, तुम हम कों दंडवत् क्यों करी ? तब मुकुन्ददास ने कही, तुम्हारे हृदय में श्रीआचार्यजी बैठिके मोपर कृपा करी । नहीं तो संसारसमुद्र में हम परे हैं सो श्रीआचार्यजी हू कों नहीं जाने । और तुमकों हू न जाने । परन्तु तुम कृपा

आडवाणाये येतन कर्या, परंतु विष उतरे नहीं. सारे दिनकरदासे पोकारीने इहन कथुं. ते श्रीआचार्यजी काशीमां शैठ पुरुषोत्तमदासने धरे विराजता हुता. कृष्णदास अजरमां कंठ काम भाटे व्याव्या हुता. ते कृष्णदासे दिनकरदासतुं इहन सांभणी, भगवदीयतुं हृदय डोमण तेथी पूछयुं, आवुं दुःख तमे डेम करे छे ? सारे दिनकरदासे कथुं, पहलेदां द्रव्यना दुःखथी धरथी निकणी अहीं व्याव्या, द्रव्य कमाया. हुवे धर जता हुता ते अमारा लाधने सर्प काट्यो. ते अहु यत्न कर्यो परंतु विष उतर्युं नहीं. हुवे अमे पणु काशीमां गंगांमां डूबी मरीथुं. धर जठ थुं करे ? सारे कृष्णदासने दया आवी. वणी दैवी एत जणया. तेथी श्रीआचार्यजीतुं चरणामृत पासे हुतुं ते मुकुन्ददासने पाणीमां घोणीने पीवडांथुं. ते तत्काल विष उतरी गथुं. मुकुन्ददास उठीने भेठा. चरणामृतथी बुद्धि निर्मल थध गठ. पछी मुकुन्ददासे कृष्णदासने भगवद्स्मरण करी दंडवत् कर्या. अने पूछयुं, हे श्रीआचार्यजी कथां विराज छे ? सारे कृष्णदासे कथुं, तमे अमने दंडवत् डेम कर्या ? सारे मुकुन्ददासे कथुं, तमारा हृदयमां श्रीआचार्यजीये भेरीने भाग उपर कृपा करी. नहीं तो संसारसमुद्रमां अमे पड्या हुता. ते श्रीआचार्यजीने पणु

करिके जताये । तातें भगवदीय कों दंडौत किये बाधक नहीं हैं । तब कृष्णदास ने कही, यह चरणामृत की बात श्रीआचार्यजी सों मति कहियो । नहीं तो मोपर खीझेंगे । और गांव में काहू सों मति कहियो । हमकों सब आयकें दुःख देंयगे । तब यहां रहनों कठिन परेगो । पाछे मुकुंददास ने कृष्णदास सों पूछी, जो-श्री-आचार्यजी कहां विराजे हैं ? तब कृष्णदास ने कही, जो-श्रीआचार्यजी सेठ पुरुषोत्तमदास के यहाँ विराजे हैं । यह कहि के कृष्णदास तो कारजकों गये । तब मुकुंददास ने कही, भाई श्रीआचार्यजी की सरनि चलो । तब दिनकरदास ने कही, श्रीआचार्यजी कौन हैं ? तब मुकुंददास ने कही, साक्षात् भगवान् हैं । मोकों उनके चरणामृत के पाये ज्ञान भयो । तुमहु जब दरसन करि चरणामृत लेहुगे तब श्रीआचार्यजी के स्वरूप कों जानोगे । तातें बेगे चलो, ढील मति करो । तब दोउ भाई आई श्रीआचार्यजी कों दंडौत करि विनती किये, महाराज ! हम महा अपराधी हैं । संसार के दुःख सुख में परे हैं । सो हमारो उद्धार करो । तब श्रीआचार्यजी कहे, तुम कायस्थ हो, सो यह पुष्टिमार्ग कैसे सधेगो ? तब मुकुंददास ने कही, महाराज ! आपकी कृपातें सब सधेगो ? आपकी कृपा सुद्र-चाण्डाल पर

नहीं जलुया. अने तमने पणु न जलुया. परंतु तमे कृपा करीने जताव्या. तेथी भगवदीयने दंडवत् करवामां बाधक नहीं. तारे कृष्णदासे कहुं, आ यरणामृतनी वात श्रीआचार्यजने न कहेता. नहीं तो मारा उपर भीजशे. अने गाममां (ये) डोढने नहीं कहेता. अमने अधा आवीने दुःख देखे. तारे अहीं रहेवुं कठिणु पडशे. पछी मुकुंददासे कृष्णदासने पूछयुं, के श्रीआचार्यज कयां बिराजे छे ? तारे कृष्णदासे कहुं, के श्रीआचार्यज शेठ पुरुषोत्तमदासने त्यां बिराजे छे. अम कही कृष्णदास तो कार्य भाटे गया. तारे मुकुंददासे कहुं, बाध ! श्रीआचार्यजनी शरणे यावो. तारे दिनकरदासे कहुं, श्रीआचार्यज डोणु छे ? तारे मुकुंददासे कहुं, साक्षात् भगवान छे. मने अमना यरणामृतना भणे ज्ञान थयुं. तमे पणु अतारे दर्शन करी यरणामृत देखो तारे श्रीआचार्यना स्वप्नने जलुशो. तेथी जलदी यावो, ढील न करे. तारे अन्ने बाध आवी श्रीआचार्यजने दंडवत करी विनती करी, महाराज ! अमे महा अपराधी छीअे. संसारना दुःख सुखमां पडया छीअे. ते अमारो उद्धार करे. तारे श्रीआचार्यज कहे, तमे कायस्थ छे, ते आ पुष्टिमार्ग देखी रीते सधाशे ? तारे मुकुंददासे कहुं, महाराज ! आपनी कृपाथी अधु सधाशे. आपनी कृपा सुद्र यांडाल उपर होय तो तेनाथी पणु अधुं

होइ तो वासों हू सत्र सधे। आपकी कृपा बड़े पंडित ब्राह्मन पर न होय तो वासों न सधे। तार्ते आप हमकों कृपा करिके सरनि लेहु। सो सरनके प्रताप तें हमारो कल्याण होइगो। तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न ह्वे कें कहें, हम जाने, यह कृष्णदास मेघन को काम है। पाछें दिनकरदास मुकुन्ददास को न्हाय के नाम निवेदन कराये। सो कलूक दिन उहां श्रीआचार्यजी के पास रहिकें मारग की रीति सब सीखें। पाछे विनती किये, महाराज! आज्ञा होइ तो घर जैये। हमकों अब कहा कर्तव्य है? तब श्रीआचार्यजी ब्रह्मसंबंध की पत्री लिखि हस्ताक्षर दिये। कहे, इनकी सेवा करियो। जो कलू खानपान करो सो इनकों भोग धरिकें लीजो। तब दोऊ भाई विदा होयकें मालवा में अपने घर आये। स्त्रीजन कों रसोई करि भोग धरि न्यारे धरि देय। काहेतें, दैवी नाहीं। श्रीआचार्यजी के सेवक होनको मन नाहीं। सो मुकुन्ददास कों श्रीआचार्यजी को चरणामृत मिल्यो। तार्ते सगरे शास्त्र वेद-पुराण कंठाग्र भये।

वार्ता-प्रसंग १—सो मुकुन्ददास कवित्त बहोत सुंदर करते। श्रीआचार्यजी के, श्रीगुसांईजी के, श्रीठाकुरजी के, एकसे करते। और मुकुन्ददासने एक 'मुकुन्दसागर' ग्रन्थ भाषा में कियो है। तामें

सधाय. (अने) आपनी कृपा मोटा पंडित ब्राह्मणु उपर न होय तो अनाथी पणु न सधे. तेथी आप अमारा उपर कृपा करी शरणु दो. शरणुना प्रतापथी अमाइ कट्याणु थरो. त्यारे श्रीआचार्यजी प्रसन्न थधने कहे, अमे अणुयुं, आ कृष्णदास मेघननुं काम छे. पछी दिनकरदास, मुकुन्ददासने न्हावावीने नाम-निवेदन कराणु. पछी दैसाक दिनस त्यां श्रीआचार्यजीनी पासे रहिने मार्गनी अधी रीति शिष्या. पछी विनंती करी, महाराज! आज्ञा होय तो घर जैये. अमने हुवे शुं कर्तव्य छे? त्यारे श्रीआचार्यजी अे ब्रह्मसंबंधनी पत्री लिखिने हस्ताक्षर दीया. (अने) कलु, आनी सेवा करजे. जे कंठ खानपान करो, ते आने भोग धरिने लेजे. त्यारे अने साध विद्या थधने भाणवामां पोताना धरे आण्या. स्त्रीजनने रसोइ करी भोग धरी अलग धरी हे; कभडे दैवी नथी. श्रीआचार्यजीनां सेवक थवानुं मन नथी. पछी मुकुन्ददासने श्रीआचार्यजीनुं चरणामृत मणु. तेथी अथां शास्त्र वेद-पुराण कंठाग्र थयां.

वार्ता-प्रसंग १—ते मुकुन्ददास कवित्त अहु सुंदर करता. श्रीआचार्यजीनां, श्रीगुसांईजीनां, श्रीठाकुरजीनां, अे सरनां करतां. पणी मुकुन्ददासने अे 'मुकुन्दसागर' ग्रन्थ

श्रीभागवत द्वादसस्कंध (पर्यंत) को अर्थ धरि दिये हैं। और मुकुंददास एक समय उज्जैन के कारकून है कें गये। सो उज्जैन के ब्राह्मण पंडित सब आइ के मिलें। और कहें, कहो तो हम तुमकों श्रीभागवत सुनावें। तब मुकुंददास ने कही, अवकास नाहीं है। अवकास होयगो तब सुनेंगे।

भावप्रकाश—याको कारन यह, जो श्रीआचार्यजी के सुबोधिनी आदि ग्रन्थ तिनके आगे तुमारी कथा सुनिवे को अवकास कहाँ ? और ब्राह्मण को मन उदास न होय तातें कहें अवकास होयगो तब सुनेंगे।

सो वह ब्राह्मण दूसरे चौथे मुकुंददास कों पूछें, जो-जब कहोगे तब श्रीभागवत सुनावेंगे। ऐसे करत बहोत दिन बीते। सो एक दिन मुकुंददास चोपड खेलत हुते सो वह पंडित ने देख्यो। तब मन में विचारयो, जो-आजु बात कहन को दाव पायो। इतने चोपड खेलि चुके। तब पंडित ने कही, तुम कहो तो श्रीभागवत तुम कों सुनाउं। तब मुकुंददास ने कही अवकास होयगो तब सुनेंगे। तब पंडित ने कही, चोपड खेलिवे को अवकास है। (और) श्रीभागवत सुनन कों कहे अवकास होयगो तब सुनेंगे। याको कारन कहा ? तब मुकुंददास ने विचारयो, इनने तो प्रतिउत्तर भारी

लापाभां क्यो छे. तेभां श्रीभागवत द्वादश स्कंध (पर्यंत) ने अर्थ धरी दीधो छे. भीलुं, मुकुंददास एक समय उज्जैनना कारकून थधने गया. ते उज्जैनना ब्राह्मण पंडित थधा आवीने भल्या. अने कहे, कहे तो अमे तमने श्रीभागवत संलणावीये त्यारे मुकुंददासे कहुं, नवराश नथी. नवराश हुशे त्यारे सांलणीशुं.

भावप्रकाश—अनु कारण अ, हे श्रीआचार्यजनां सुबोधिनी आदि ग्रंथ तेनी आगण तम्हारी कथा सांलणवानी नवराश कयां ? अने ब्राह्मणनुं मन उदास न थाय तेथी कहे नवराश हुशे त्यारे सांलणीशुं.

पछी ते ब्राह्मण भीजे थोथे दिवसे मुकुंददासने पूछे, हे त्यारे कहेशा त्यारे श्रीभागवत संलणावीश. अमे हस्तां धणुा दिवस वीत्या. ते अके दिवस मुकुंददास थोपड रभता हुता ते. ते पंडिते जेथुं. त्यारे मनभां विचार्युं, हे आज पात कहेवाने दाव भल्या छे. अस्ताभां थोपड रभी चुक्या. त्यारे पंडिते कहुं, तमे कहे तो श्री-भागवत तमने संलणावुं. त्यारे मुकुंददासे कही नवराश हुशे त्यारे सांलणीशुं. त्यारे पंडिते कहुं, थोपड रभवानी नवराश छे अने श्रीभागवत सांलणवाने भाटे कहे, हे नवराश हुशे त्यारे सांलणीशुं. अनुं कारण शुं ? त्यारे मुकुंददासे विचार्युं

दियो। अब अपनहू याकों देनो। तब कहें, हमारो श्रीभागवत जानें है ? तब पंडित नें कही, तुम्हारो श्रीभागवत न्यारो है ? तब उन नें कही, हमारो श्रीभागवत न्यारो है। तब पंडित ने कही, तुमहि अपनो श्रीभागवत सुनावो। तब मुकुंददास ने कही, कोई समय पाय के तुमकों सुनाय देंङ्गे। या प्रकार कहिकें टारे। परन्तु उह मार्गीय ब्राह्मन न हतो, तातें वाके सुख की कथा न सुने।

भावप्रकाश—तातें छसठ अपराध में लिख्यो है, 'अवैष्णवानां श्री-भागवत श्रवणं वृक्षजन्मत्रयं' इत्यादिक। पुष्टिमार्गीय वैष्णवन कों दोष लगे। इह, जीव कों बहोत संदेह हैं। काहेते ? भगवन्नाम में सवन को अधिकार है। सूद्रादि चांडाल पर्यंत जो कहे सुने सो सब को कल्याण होय। श्रीभागवत में हू अजामिल आदि पवित्र भये हैं। सो यह सब महात्म्य जगत में प्रसिद्ध है। और पुष्टिमार्ग में भगवद्नाम कीर्तन श्रीभागवत सुनन कों अन्यमार्गीय सों क्यों नाही ? जो-भगवद्नाम सुने तें दोष कैसे ? यह सन्देह बड़ो गूढ़ है। तहां कहत हैं, जो-मर्यादामार्ग में तो मुक्तिफल है। और पुष्टिमार्ग में तो एकांगी पुष्टिभक्ति सो फल है। सो भक्ति श्रीआचार्यजी के आश्रय तें होय। सो आश्रय

अरे तो प्रति उत्तर जपरै आये। हवे आपणे पण तेने देयो। त्यारे कहे, अमाइं श्रीभागवत जणे छे ? त्यारे पंडिते कहुं, तमाइं श्रीभागवत शुं लुहुं छे ? त्यारे, अमरे कहुं, अमाइं श्रीभागवत लुहुं छे। त्यारे पंडिते कहुं, तमेज तमाइं श्रीभागवत सांभणावो। त्यारे मुकुंददासे कहुं, केछ समय भेजवीने तमने सांभणावी दशुं। अ प्रकारे कहीने टाण्या। परंतु ते मार्गीय ब्राह्मण न हते, तेथी तेना मुपनी कथा न सांभणी।

भावप्रकाश—तेथी 'छसठ अपराध' मां लप्युं छे 'अवैष्णवानां श्रीभागवत श्रवणं वृक्ष जन्म त्रयं' इत्यादिक पुष्टिमार्गीय वैष्णवने दोष लागे। आ, जवने अहु संदेह छे; केभडे भगवन्नाममां अधानो अधिकार छे। सूद्रादि चांडाल पर्यंत, जे कहे सांभणे ते अधानुं कल्याण थाय। श्रीभागवतमां पण अजामिल आदि पवित्र थया छे। अ अंधुं महात्म्य जगतमां प्रसिद्ध छे, अने पुष्टिमार्गमां भगवद्नाम कीर्तन श्रीभागवत सांभणावतुं अन्यमार्गीयथी केम नहीं ? भगवद्नाम सांभणवार्थी दोष केम ? आ संदेह अहु गूढ़ छे। त्यां कहे छे, के मर्यादामार्गमां तो मुक्तिफल छे, अने पुष्टिमार्गमां तो एकांगी पुष्टिभक्ति ते कण छे। ते भक्ति श्रीआचार्यजना आश्रयथी थाय। ते आश्रय अने अन्याश्रयने सेह

तें काहू को बुरो न मनावनो परतो । लोग जानते, चोपड में आसक्ति है । या प्रकार सों अपने हृदय में पुष्टिमार्गीय धर्म छिपाये हते ।

सो एक समें सूर्यग्रहण परयो । तब मुकुंददास नदी में न्हाय कें भगवद्नाम नदी में ठाड़े लेत हते । ता समे वह पंडित ने आय के कही, भलो, या समें अपना श्रीभागवत कछ सुनावो । तब मुकुंददास ने एक श्लोक श्रीभागवत को कहि कें वाको अर्थ करन लागे । सो सगरो दिन, सगरी राति वीति गई, सबेरो भयो । गांव के लोग नदी न्हायकों आये । तब वह पंडित नें कही, दूसरो दिन भयो । अब या श्लोक को अर्थ पूरो करोगे ? तब मुकुंददास ने कही, यह श्लोक को भाव छै महिना लों होइगो । तब वह पंडित थकित ह्वै रह्यो । कह्यो, तुमकों ईश्वर की दीनी सामर्थ्य है । जीव कहा जाने ? तब मुकुंददास ने कही, हमारो श्रीभागवत ऐसो है । कछ जानत होय तो हमकों सुनाव । तब उह पंडित हारि मानि के घर गयो । और पंडित आय कछ पूछते तो वाके प्रश्न कों बहोत दूषन लगाय प्रति-उत्तर देते, जो-फिरि वह पंडित न आवें । ऐसो श्रीआचार्यजी को कृपावल हतो । श्रीसुबोधिनी आदि सब साख्र में प्रवेश हो । सो वे मुकुंददास कछक दिन पाछें मानसी सेवा की भावना करिकें देह

चोपडमां आसक्ति छे, आ प्रकारथी पोताना हृदयमां पुष्टिमार्गीय धर्म छपावी राख्यो हुतो.

पछी ओक समय सूर्यग्रहण पड्युं. त्यारे मुकुंददास नदीमां स्नान करीने लग-वनाम नदीमां उला-उला लेता हुता. ते समये ते पंडिते आपीने कछुं, लले, आ समये तमाइं श्रीभागवत कंधक संसणावो. त्यारे मुकुंददासे ओक श्लोक श्रीभागवतने कहीने ओना अर्थ करवा लाग्या. ते आओ हिस (ने) आभी रात्रि वीती गध. सवार थयुं. गामना लोडो नदी न्हावाने आया. त्यारे ते पंडिते कछुं, भीजे हिस थये छे. लवे आ श्लोकने अर्थ पूरो करीओ ? त्यारे मुकुंददासे कछुं, आ श्लोकने लाव छ महिना सुधी थये. त्यारे ते पंडित थकित थय गये. कछुं, तमने धंधरनी आपेदी सामर्थ्य छे. थय शुं न्हाये ? त्यारे मुकुंददासे कछुं, अमाइं श्रीभागवत आपुं छे. कंध न्हायता हो तो संसणावो. त्यारे ते पंडित हार मानीने धरे गये. (अने) भीज पंडिते आपी कछ पूछता तो ओमना प्रश्नने अहु दूषण लगाडीने प्रतिउत्तर आपता ते करी ते पंडित न आवे. ओपुं श्रीआचार्यशुं कृपाअल हुतुं. श्रीसुबोधिनी-आदि पथा शास्त्रोमा प्रवेश हुतो.

पछी ते मुकुंददासे डेसक हिस पछी मानसी-सेवानी लावना करीने देह

छोड़ि लीला में प्राप्त भये । तब काहू वैष्णव आयकें श्रीआचार्यजी सों कह्यो, मुकुंददास अवंतिका पाई । तब श्रीआचार्यजी वैष्णव कों वरजे, जो-ऐसे मति कहो । ऐसे कहो, जो-अवंतिका ने मुकुंददास पाये । सो मुकुंददास ऐसे टेक के भगवदीय भये । वार्ता ॥१९॥

भावप्रकाश—काहेतें, जो-संसारी लोग हैं तिनकों तीर्थकी चाह है । और तीर्थ है, सो भगवदीयकों चाहत हैं । जो-भगवदीय तीर्थ को परस करें । जो-तीर्थ के पास जाइ सो (सब पापन तें मुक्त हों) और दिनकरदास बड़े भाई की वार्ता को विस्तार यातें नहीं किये, जो-जा दिन तें उह श्रीआचार्यजी के सेवक वहै मालवा में आये ता दिन तें श्रीमहाप्रभुजी के हस्ताक्षर ब्रह्मसंबंध को प्रकार वांचि नित्य माथो पीटि के रोवे । जो-हम लीला में नंदरायजी के भाई वहै के अब इतने दिन तें संसार में भटकत हैं । हमकां धिकार । या प्रकार विरह करत तीन महीना में लीला की प्राप्ति भई । तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनीय विरह दसा की है । सो लोक में विरुद्ध चलेंगे तातें बहोत प्रकास नहीं किये । तातें दोऊ भाई दिनकरदास मुकुंददास बड़े भगवदोय कृपापात्र हे । वैष्णव ॥१९॥

✽

✽

✽

छाडीने लीलाभां प्राप्त थया. त्यारे डेअ वैष्णुवे आवीने श्रीआचार्यलने इहुं, जे मुकुंददास अयंतिका (उन्नैन) पाभ्या. त्यारे श्रीआचार्यल (ते) वैष्णुवने रेडे, जे अम न डहो. अम डहो, डे अयंतिकाअे मुकुंददासने प्राप्त कर्था. ते मुकुंददास अेवा टेकना भगवदीय थया. वार्ता ॥१९॥

भावप्रकाश—ते शायी, डे संसारी दोका छे तेमने तीर्थनी याहना छे अने तीर्थ छे, ते भगवदीयाने याहे छे. डम जे, भगवदीय तीर्थने स्पर्श करे, जे तीर्थनी पासे अय ते (तीर्थ) (अथा पापोथी मुक्त थाय) अने दिनकरदास मोटा बाधनी वार्ताना विस्तार अेथी न. कर्था, डे जे दिवसे ते श्रीआचार्यलना सेवक थर्थ मालवाभां आग्या, ते दिवसथी श्रीमहाप्रभुलना हस्ताक्षर ब्रह्मसंबंधने प्रकार वांची (वांचीने) नित्य माथुं पीटीने शेता, डे अमे लीलाभां नंदरायलना बाध थधने हुवे आटला दिवसथी संसारभां भटकीअे छीअे. अमने धिःकार छे. आ प्रकारे विरह करी तथु महिनाभां लीलानी प्राप्ति थध. तेथी अमनी वार्ता अनिर्वचनीय विरह दशानी छे. ते लोकभां विरुद्ध यासशे, तेथी धणो प्रकाश नथी कर्था. तेथी अने बाध दिनकरदास मुकुंददास मोटा भगवदीय कृपापात्र हुता.

✽

✽

✽

અવ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુન કે સેવક, પ્રભુદાસ જલોટા ક્ષત્રી,
સિંહનંદ કે વાસી, તિનકી વાર્તાકો ભાવ કહત હૈ—

ભાવપ્રકાશ—યે પ્રભુદાસ જલોટા ક્ષત્રી, લીલા મેં લલિતાજી કી સખી
હૈ । ‘મન્મથમોદા’ इनको नाम है । कामलीला की सामग्री सब सिद्ध करत हँ । और
विहारलीला की वार्ता में ललिताजी सों वार्ता करि मग्न रहत हँ । तातें इनको
नाम ‘मन्मथमोदा’ है । सो सिंहनंद में एक क्षत्री के घर जन्मे । सो बरस तेरह के
भये । तब इनको व्याह भयो । सो स्त्री महाकुपात्र आई । सो सवन कों गारी देय ।
जो-वस्तु पावे सो चुराय के मा-बाप कों दे आवे । ऐसे करत प्रभुदास के माय-
बाप ने देह छोड़ी । और सगरे संबंधी उह स्त्री के दुःख सों कोई घर में आवे
नाहीं । सो एक दिन वह स्त्री ने प्रभुदास सों कही, कहूं तें द्रव्य ल्याव । तब
प्रभुदास ने कही, द्रव्य कहां है ? मिलेगो तो लाऊंगो । तब स्त्री ने प्रभुदास कों
मारघो । प्रभुदास कों रीस चढ़ी । सो स्त्री कों मारघो । तब स्त्री ने चूरी फोरि
मूंड़ मुड़ाय गाँव के हाकिम सों कहि आई, मैं यह प्रभुदास की अब स्त्री नाहीं ।
जो-यह घर में आवेगो तो याके ऊपर मैं मरूंगी । तब प्रभुदास हू आये । सो कहे,
मै घर छोड़ि के जात हों । मेरे तेरे वेदावो । या प्रकार वेदावो करिकें गाँव तें

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, પ્રભુદાસ જલોટા ક્ષત્રી, સિંહનંદના
વાસી, તેમની વાર્તાને લાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ પ્રભુદાસ જલોટા ક્ષત્રી લીલામાં લલિતાજીની સખી છે.
‘મન્મથમોદા’ એનું નામ છે. કામલીલાની સામગ્રી બધી સિદ્ધ કરે છે અને વિહાર
લીલાની વાર્તામાં લલિતાજીથી વાર્તા કરી મગ્ન રહે છે. તેથી એમનું નામ મન્મ-
થમોદા છે. તે સિંહનંદમાં એક ક્ષત્રીના ઘર જન્મ્યા. પછી વર્ષ તેરના થયા ત્યારે
એમનું લગ્ન થયું. તે સ્ત્રી મહા કુપાત્ર આવી. બંધાને ગાળો દે. જે વસ્તુ મળે તે
ચોરીને માખાપને દઇ આવે. એમ કરતાં પ્રભુદાસના મા-બાપે દેહ છોડી. અને
બંધાં સંબંધી તે સ્ત્રીના દુઃખથી ડાઘ ધરમાં આવે નહીં. પછી એક દિવસ તે
સ્ત્રીએ પ્રભુદાસને કહ્યું, ક્યાંયથી દ્રવ્ય લાવ. ત્યારે પ્રભુદાસે કહ્યું, દ્રવ્ય ક્યાં છે ?
મળશે તો લાવીશ. ત્યારે સ્ત્રીએ પ્રભુદાસને માર્યો. પ્રભુદાસને રીસ ચઢી, તે સ્ત્રીને
મારી. ત્યારે સ્ત્રી ચુડી ફેડી માથું મુડાવી ગામના હાકિમને કહી આવી, હું
આ પ્રભુદાસની હવે સ્ત્રી નથી, જે આ ઘરમાં આવશે તો એના ઉપર હું મરીશ.
ત્યારે પ્રભુદાસ પણ આવ્યા. અને કહ્યું, હું ઘર છોડીને જઈ છું. મારે તારે ડાઘ

निकसि गये । सो राजनगर सिकंदरपुर में आये । तहाँ रामदास क्षत्री इनकी ज्ञाति को हुतो, तहाँ उतरे । सो उह रामदास कां मर्यादामार्गीय वैष्णव को संग भयो हतो । सो वहाँ प्रभुदास कछु दिन रहे ।

सो श्रीआचार्यजी राजनगर सिकंदरपुर के पास बगीची हती तहाँ उतरे हे । सो वह बगीची में प्रभुदास आये । सो श्रीआचार्यजी को दरसन करिके मन में यह आई, जो—इनके सेवक होंई । तव श्रीआचार्यजी सों विनती करी, महाराज ! मोकों सेवक करिये, कृपा करि कै । तव श्रीआचार्यजी ने कही, तेरे रामदास मरजादा मार्गीय की संग है । ताते हमारे सेवक मति होउ । तव प्रभुदास ने कही, महाराज ! आप कहो तो उह रामदास कों हू आपको सेवक कराउं । तव मोकों सेवक करोगे ? मेरो कह्यो रामदास नटेगो नाहीं । तव श्रीआचार्यजी कहे, कहा भयो सेवक कराये ? वाको अंगीकार मर्यादा में ही है । परंतु जा, रामदास कों ले आउ । दोउन कों संग ही सेवक करेंगे । तव प्रभुदास रामदास के पास आइ केँ कह्यो, श्रीवल्लभाचार्यजी साक्षात् पुरुषोत्तम हैं । सो पधारे हैं । गांव वाहर बगीची में । सो हम तुम दोऊ जनें सेवक होय तो मिलि के सेवा करें । तव रामदास ने कही, मेरे तो एक वैरागी गुरु है । वाकी कंठी बांधी

दावे नही. आ प्रकारे छूटाछेडा करीने गामथी निकणी गया. ते राजनगर सिकंदरपुरमां आल्या. त्यां रामदास क्षत्री ज्येमनी ज्ञातिने हुतो. त्यां उतर्या. ते रामदासने मर्यादामार्गीय वैष्णवने संग थयो हुतो. त्यां प्रभुदास थोडाक दिवस रखा.

त्यारे श्रीआचार्यजी राजनगर सिकंदरपुरनी पासे बगीची हती त्यां उतर्या हुता. ते बगीचीमां प्रभुदास आल्या. पछी श्रीआचार्यजीनां दर्शन करीने मनमां ज्ये आण्यु, ते ज्येमना सेवक थद्ये. त्यारे श्रीआचार्यजीने विनती करी, महाराज ! मने सेवक करे, कृपा करीने. त्यारे श्रीआचार्यजीजे कछुं, तारे रामदास मर्यादामार्गीयने संग छे. तेथी अभारे सेवक न था. त्यारे प्रभुदासे कछुं, महाराज ! आप कहे तो ते रामदासने पणु आपने सेवक कराउं. त्यारे मने सेवक करेशो ? माउ कछुं रामदास ना नही कहे. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, थुं थयुं सेवक करावे ? तेना अंगीकार मर्यादामां न छे. परंतु न, रामदासने लघु आव. आनेने संग सेवक करीथुं. त्यारे प्रभुदासे रामदासनी पासे आवीने कछुं, श्रीवल्लभाचार्यजी साक्षात् पुरुषोत्तम छे. ते पधारे छे, गांव बाहर बगीचीमां. तो अभेतमे आने सेवक थद्ये तो मणीने सेवा करीजे. त्यारे रामदासे कछुं, मारे तो

हैं। सो अब दूसरो गुरु कैसे करूं ? तब प्रभुदास कहें, अब हमारे तेरे न बनेगी। मेरे बह्म-पात्र देहु। तब रामदास ने कही, तुम्हारे लिये सेवक होउंगो। परंतु मैं अपुनी टेव न छोड़ोंगो। तब प्रभुदास कहे, सेवक तो होऊ। रीति मति करियो। तब रामदास प्रभुदास दोऊ आये। श्रीआचार्यजी न्हावई के दोऊन कों नाम सुनायें। तब प्रभुदास कों तो श्रीआचार्यजी के स्वरूप को ज्ञान भयो। रामदास कों न भयो। तब प्रभुदास ने विनती करी, महाराज ! दोऊन कों कृपा करिकें निवेदन करावें। तब श्रीआचार्यजी कहें, रामदास कों नाहीं। तब प्रभुदास समझि गये। तब कहें, मोही कों कृपा करिकें कगवो। तब श्रीआचार्यजी ने प्रभुदास कों ब्रह्मसंबंध करायो। पाछें भगवद् सेवा की प्रभुदास रामदास हू मिलि कें कही। तब श्रीआचार्यजी कहें, अब ही नाहीं। कछु दिन पीछें। यह कहि कें आप तो श्रीगोकुल पधारे। प्रभुदास पुष्टिमार्गी रीति बतावे। रामदास मर्यादाभारंग की रीति करें। ऐसे करत कछु दिन में श्रीआचार्यजी के बड़े पुत्र श्रीगोपीनाथजी राजनगर सिकंदरपुर में पधरें। तब रामदासजी ने विनती करी, महाराज ! सेवा पधराय दीजे। तब श्रीगोपीनाथजी ने एक ब्राह्मन के घर श्रीमदनमोहनजी हते सो कछु

अक वैरागी गुरु छे। तेनी कंठी पांथी छे। हुवे भीजे गुरु देवी रीते कइं ? त्यारे प्रभुदास कहे, हुवे अमारे तारे नहीं अने। मारां वस्त्रपात्र हे। त्यारे रामदासे कछुं, तमारे दीधे सेवक थधश। परंतु हुं मारी टेव नहीं छोडु। त्यारे प्रभुदास कहे, सेवक तो था, रीति न करीश। त्यारे रामदास-प्रभुदास अन्ने आण्य। श्रीआचार्यजी अन्ने न्हुवडावीने अन्नेने नाम संभणायुं। त्यारे प्रभुदासने तो श्रीआचार्यजीना स्वइपनुं ज्ञान थयुं। रामदासने न थयुं। त्यारे प्रभुदासे विनती करी, महाराज ! अन्नेने कृपा करीने निवेदन करावीअे। त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, रामदासने नहीं। त्यारे प्रभुदास समझ गया। त्यारे कहे, मने अ कृपा करीने करावे। त्यारे श्रीआचार्यजी अन्ने प्रभुदासने ब्रह्मसंबंध कराव्युं। पछी भगवद्सेवानु प्रभुदास, रामदासे पणु भणीने कछुं। त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, हुमणुं नाहीं, थोडा दिवस पछी। अे कछीने आप तो गोकुल पधार्या। (पछी) प्रभुदास तो पुष्टिमार्गनी रीति अतावे। रामदास मर्यादाभारंगनी रीति करे। अेम करतां थोडा दिवसमां श्रीआचार्यजीना मोटा पुत्र श्रीगोपीनाथजी राजनगर सिकंदरपुरमां पधार्या। त्यारे रामदासअे विनती करी, महाराज ! सेवा पधरावी आपो। त्यारे श्रीगोपीनाथजी अे अेक ब्राह्मणुना धरे श्रीमदनमोहनजी हुता। ते ब्राह्मणुने कंध

ब्राह्मन कों देके दोऊनके माथे पधराये। पाछें श्रीगोपीनाथजी अडेल पधारे। सो रामदास मर्यादा मार्ग की रीति आह्वाहन विसर्जन पूजा की रीति करें। पाछें एक दिन प्रभुदास अर्धरात्रि कों अपनी वस्तु ले भाजि चलयो (क्यों), जो-रामदास के संग कहां ताई माथो पचाऊँ ? याकों तो ज्ञान नाही। जेसो यह जेसे हि मर्यादामार्गीय ठाकुर श्रीगोपीनाथजीने पधराइ दिये। तातें तहां तें चले श्रीगोकुल में श्रीआचार्यजी कों दंडौत् किये। तव श्रीआचार्यजी ने कही, प्रभुदास आयो ? तव प्रभुदास ने विनती करी, महाराज ! नीठ नीठ दुःसंग तें छुट्यो। तव श्रीआचार्यजी ने कही, हम तोसों पहले ही कह्यो, उह मर्यादा मार्ग को अधिकारी है। तू पुष्टिमार्गीय है। भली करी संग छोडि के आयो। तव प्रभुदास ने विनती करी, महाराज ! अब मोकों चरणारविंद के पास राखो, मैं बहुत संसार में भ्रम्यो। तव श्रीआचार्यजी कहें, अब हमारे पास रहे सुखेन। तव ता दिन तें प्रभुदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी के संग ही रहें।

वार्ता-प्रसंग १—सो एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभु मथुरा पधारे। सो विश्रांत घाट पास आय बैठक है तहां संध्यावंदन करत हते। पास चार वैष्णव ठाड़े हते। दामोदरदास हरमानी, कृष्णदास

आपीने अन्नेना माथे पधराव्यां। पछी श्रीगोपीनाथजी अडेल पधार्यां। ते रामदास मर्यादामार्गनी रीति आह्वान-विसर्जन पूजनी रीति करे। पछी अेक दिवस प्रभुदास अडधी रात्रिअे पोतानी वस्तु लधने लागी याट्या। (डेम ?) जे रामदासना संगे क्यां सुधी माथुं पयावुं ? अेने तो ज्ञान नथी। जेयो आ तेना जे मर्यादामार्गीय ठाकुर श्रीगोपीनाथजीअे पधरावी आया। तेथी त्यांथी यादी श्रीगोकुलमां (आवीने) श्रीआचार्यजीने दडवत् कर्यां। त्यारे श्रीआचार्यजीअे कथुं, प्रभुदास आव्यो ? त्यारे प्रभुदासे विनती करी, महाराज ! नीठ नीठ दुःसंगथी छुट्यो। त्यारे श्रीआचार्यजीअे कथुं, अमे तने पहेलां जे कथुं छेते ते मर्यादामार्गने अधिकारी छे। तू पुष्टिमार्गीय छे। सार्ं कथुं, संग छोडीने आव्यो। त्यारे प्रभुदासे विनती करी, महाराज ! हुवे मने चरणारविंदनी पासे राष्यो। हुं अहु जे संसारमां भ्रम्यो। त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, हुवे अमारी पासे सुपेथी रहे। त्यारे ते दिवसथी प्रभुदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीनी साथे जे रहा।

वार्ता-प्रसंग १—ते अेक दिवस श्रीआचार्यजी महाप्रभु मथुरा पधार्यां। ते विश्रांतघाट पास आवी भेडक छे त्यां संध्यावंदन करता हुता। पासे चार वैष्णव

मेघन, प्रसुदास और एक वैष्णव मथुरा को हतो। सो तब तहां रूप-सनातन कृष्णचैतन्य के सेवक, श्रीआचार्यजी के पास दरसन करि दंडौत् कियो। पाछें रूप-सनातन नें श्रीआचार्यजी सों पूछ्यो, जो-महाराज ! ये वैष्णव कौन हैं ? तब श्रीआचार्यजी ने कही, ये हमारे सेवक हैं। तब रूप-सनातन ने कही, महाराज ! आपको मारग तो पुष्टि है और ये दुबरावल क्यों है ? तब श्रीआचार्यजी ने कही, हम तो इनकों बरजे, जो-यह मारग में मति परो। परंतु ये मेरो कह्यो न मान्यो। ताको फल भोगत हैं। या प्रकार गूढ रीति सों श्रीआचार्यजी कहें, परंतु रूप-सनातन कछू समझे नहीं। पाछें रूप-सनातन आज्ञा मांगि श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन कों गये। तब कृष्णचैतन्य ने पूछी, तुम कहां तें आये ? तब रूप-सनातन ने कही, हम ब्रज के दरसन करिकें आये हैं। तब कृष्णचैतन्य ने पूछी, वहां श्रीवल्लभाचार्यजी के दरसन भये तुमकों ? तब रूप-सनातन ने कही, मथुरा में विश्रांत घाट पर दरसन भये। तब कृष्णचैतन्य नें पूछी, वार्ता को प्रसंग कियो ? तब रूप-सनातन ने कही, हम पूछें, आपको मारग पुष्टि, आपुके वैष्णव दुर्बल बहोत ? तब आपु कहें, हम तो इनकों बरजे, जो-या मारग में मति परो। सो ये मानें नहीं

उभा हुता. दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, प्रसुदास अने अेक वैष्णव मथुरानो हुतो. त्तारे त्तयां रूप-सनातन चैतन्यता सेवक श्रीआचार्यजी पास (आनी) दर्शन करीने दंडवत कर्या. पछी रूप-सनातने श्रीआचार्यजीने पूछ्युं, के महाराज ! अे वैष्णव कोणु छे ? त्तारे श्रीआचार्यजीअे कछुं, के अे अमारा सेवक छे. त्तारे रूप-सनातने कछुं, महाराज ! आपनो मार्ग तो पुष्टि छे अने अे दुभण्णा केम छे ? त्तारे श्रीआचार्यजीअे कछुं, अमे तो अेमने रेक्या, के आ मार्गमां न परा. परंतु अेमले माइं कछुं न मान्युं, तेतुं इल लोगवे छे. आ प्रकार गूढ रीतिथी श्रीआचार्यजीअे कछुं. परंतु रूप-सनातन कंठ समज्या नहुं. पछी रूप-सनातन आज्ञा मांगी श्री-जगन्नाथरायजीता दर्शन गयो. त्तारे कृष्णचैतन्ये पूछ्युं, तमे क्यांथी आख्या ? त्तारे रूप-सनातने कछुं, अमे ब्रजनां दर्शन करीने आख्या थीअे. त्तारे कृष्णचैतन्ये पूछ्युं, त्तयां श्रीवल्लभाचार्यजीनां दर्शन तमने थयां ? त्तारे रूप-सनातने कछुं, मथुरामां विश्रांत घाट उपर दर्शन थयां. त्तारे कृष्णचैतन्ये पूछ्युं, वार्ताको प्रसंग कर्या ? त्तारे रूप-सनातने कछुं, अमे पूछ्युं, के आपनो मार्ग पुष्टि, (अने) आपनो वैष्णव दुर्बल बहोत ? त्तारे आपे कछुं, अमे तो अेमने रेक्या, के आ मार्गमां न परा. ते अेमले

कह्यो, ताको फल भोगत हैं। यह सुनत ही श्रीआचार्यजी को भाव, कृष्णचैतन्य को एक महरत लौं मूर्छा आई। ऐसे तीनवार कही, सो तीनों वेर मूर्च्छा आई। पाछें चौथी वार पूछी, तब रूप-सनातन ने कही, अब हमसों कही न जाई। सो कृष्णचैतन्य कछू समुझे।

भावप्रकाश—काहेतें ? कलुक श्रीआचार्यजी के स्वरूप को ज्ञान हतो। तातें कलुक समुझे। जो-सगरो समुझते तो उनकी देह छूटि जाती। और श्रीआचार्यजी कहें, यह मारग में मति परो। सो कह्यो न मान्यो तब फलदसा को भोगें। जैसे पंचाध्याई में ब्रजभक्तन सों, श्रीठाकुरजी कहें, घर जाउ, परंतु ब्रजभक्त यह बात न माने। तब रासलीला के फल को पाये। सो अब तो मर्यादा रीति सों कहे। काहेते ? वेद की मर्यादा यह, जो-सेवक होन आवे तो एक वार ना कहनो। उह सेवक को भाव दृढ़ता देखन को। पाछें वाके पूरन प्रीति सेवक होन की होय तो सेवक किये वाको फल मिलें। तातें वैष्णव को ना कहनो। और “यह मारग में मति परो,” सो यह मारग ब्रजभक्तन को है। जैसे ब्रजभक्त सर्व समर्पन करि सरन भये तब खानपान देह-सुख सब छूट्यो। विप्रयोग की फलदसा को भोगत हैं। तातें देह कृष होय विरह के उसास उठें। नेत्रन में जल भराय, कंठ रुकि

कछुं नही मान्युं, तेहुं इस लोगवे छे. ये सासणतांन श्रीआचार्यजीना लाव (हृद), कृष्णचैतन्यने एक मुहूर्त सुधी मूर्च्छा आवी. येम त्रलु वार कछुं, ते त्रले वार मूर्च्छा आवी. पछी चौथी वार पूछ्युं. त्तारे रूप-सनातने कछुं, हवे अमाराधी कछुं न जय. ते कृष्णचैतन्य कंधक समन्या.

भावप्रकाश—डेभडे कंधक श्रीआचार्यजीना स्वरूपनुं ज्ञान हतुं. तेथी कंधक समन्या जे अंधु समनता तो येमनी देह छुटी जती. अने श्रीआचार्यजी कहे, आ मार्गिभां न पडो ते कछुं न मान्युं त्तारे इसदशाने लोगवे (न) जम पंचाध्याईभां ब्रजभक्तोने श्रीठाकुरजीये कछुं घर जव, परंतु ब्रजभक्तोये ये वात न मानी त्तारे रासलीलाना इसने पाभ्यां. ते हवे तो मर्यादा रीतिथी कहे, डेभडे वेदनी मर्यादा ये, डे सेवक थवा आवे तो एकवार ना कहेवी. ते सेवकना लावनी दृढता जेवा माटे, पछी तेनी पूरुं प्रीति सेवक थवानी होय तो सेवक करवाथी तेने इस भणे. तेथी वैष्णवने ना कहेवी, अने ‘आ मार्गिभां न पडो’ ते आ मार्ग ब्रजभक्तोने छे. जम ब्रजभक्तो सर्व समर्पण करी शरणे थयां त्तारे खानपान देह सुष अंधुं छुट्युं. विप्रयोगनी इसदशाने लोगवे छे. तेथी देह कृष

જાય, સગરિ દેહ મેં પસીના હોય, મૂછિત હોઈ, હસિ પરે, રુદન કરે, નિર્ત કરે
ઇત્યાદિ ભક્તિ કે લક્ષન હૈં ।

વાર્તા—પ્રસંગ ૨—ઔર પ્રમુદાસ રસોઈ હાથ સોં સદા કરતે ।
સો એક દિન રસોઈ વિગરિ ગઈ । દારિ કાચી રહી ઔર લીટી જરિ
ગઈ । તવ પ્રમુદાસ કે મનમેં યહ આઈ, જો-એસી વિગરી રસોઈ શ્રી-
ઠાકુરજી કોં કહા સમર્પે ? તાતેં ચરણામૃત મિલાહ કે લિયે ।

ભાવપ્રકાશ—કાહેતેં ? પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ હૈ । તિનકો મન કોમલ હૈ ।
જેસે શ્રીઠાકુર અત્યંત કોમલ હૈ, તેસે ભક્તન કો મન હૂ હૈ । તાતેં યહ વિચારે, જો-
કહા એસી સામગ્રી સમર્પે ? અરુ દગ્ધ અન્ન કો દોષ હૂ હૈ । ‘વૃન્તાકં ચ કર્લિંગં
ચ દગ્ધાન્નં ચ મસૂરિકાઃ ।’ ઇત્યાદિ વિચારિ કેં શ્રીઠાકુરજી કોં સમર્પે નાહોં ।
ઔર અનપ્રસાદી કો મહાદોષ હૈ । તાતેં ચરણામૃત મિલાહ કે લિયે ।

તવ શ્રીઠાકુરજી ને શ્રીઆચાર્યજી સોં કહ્યો, જો-મેં પ્રમુદાસ
કી વાટિ દેખી, સો આજુ મોકોં ભોગ ન ધર્યો । આપુ લિયે ।

ભાવપ્રકાશ—યામેં યહ જતાયે, જો-શ્રીઠાકુરજી જદપિ એક હૈં,
નંદરાજકુમાર । પરંતુ ભક્તન કે ભાવ કરિ કેં જિતને ભક્ત હૈં તિનકે તિતને

થાય. વિરહના શ્વાસ ઉઠે. નેત્રોમાં જલ ભરાય. કઠ રોકાઈ જાય. બધા શરીરમાં પરસેવો
થાય. મૂરિછંત થાય, હુસી પડે, રુદન કરે, નૃત્ય કરે ઇત્યાદિ ભક્તિનાં લક્ષણ છે.

વાર્તા—પ્રસંગ ૨—અને પ્રમુદાસ રસોઈ સદા હાથથી કરતા. તે એક દિવસ રસોઈ
બગડી ગઇ ઘણ કાચી રહી, અને લીટી બળી ગઇ. ત્યારે પ્રમુદાસના મનમાં એ
આવ્યું, કે એવી બગડી રસોઈ શ્રીઠાકુરજીને શું સમર્પવી ? તેથી ચરણામૃત મેળ-
વીને લીધી.

ભાવપ્રકાશ—કેમકે પુષ્ટિમાર્ગીય વૈષ્ણવ છે તેમનું મન કોમલ છે. જમ
શ્રીઠાકુરજી અત્યંત કોમલ છે તેમ ભક્તોનું મન પણ છે. તેથીએ વિચારે કે હું
એવી સામગ્રી સમર્પું ? અને ઘાઝ્યા અન્નનો દોષ પણ છે. “વૃન્તાકં ચ કર્લિંગં
ચ દગ્ધાન્નં ચ મસૂરિકાઃ” । ઇત્યાદિ વિચારીને શ્રીઠાકુરજીને સમર્પી નહીં. વળી
અનપ્રસાદીનો (પણ) મહાદોષ છે તેથી ચરણામૃત મેળવીને લીધી.

ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ શ્રીઆચાર્યજીને કહ્યું, કે મેં પ્રમુદાસની રાહ જોઇ. તે
આજ મને ભોગ ન ધર્યો. પોતે લીધું.

ભાવપ્રકાશ—એમાં એ બતાવ્યું, કે યદપિ શ્રીઠાકુરજી એક છે. નંદ-

ठाकुर हैं। सो प्रभुदास के भाव के ठाकुरजी नें कहीं, जो-प्रभुदास ने भोग नहीं धरयो।

तब श्रीआचार्यजी नें प्रभुदास सों कह्यो, तू आजु श्रीठाकुरजी कों भोग समर्पें बिना क्यों लियो? तब प्रभुदास ने विनती करी, महाराज! दारि काची रही अंगाकरि जरि गई। तातें चरणामृत मेलि कें लियो। तब श्रीआचार्यजी कहे, ऐसी रसोई क्यों करी? श्रीठाकुरजी बड़ी वेरलों बाट देखी। तातें सावधानी सों आछी रसोई करि भोग धरिके लीजो। ता दिन तें प्रभुदास सावधानी सों रसोई करते।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जदपि चरणामृत मिलाय कें लियो सो अन्न दोष मित्यो। परंतु भगवद् भोग पदार्थ न भयो। तातें वैष्णव कों जैसे श्रीठाकुरजी कों भोग धरयो होय तेसे लेनो। दहीं न्यारो धरयो होइ तो दही में भात मिलाइ के अपने न लीजें। काहेतें? दूधभात, दहींभात, न्यारे न्यारे भक्तन के भाव की सामग्री हैं। तातें चरणामृत यथा प्रसादी वस्तु पधराय ले, काहू सामग्री में तें अपने भोग अर्थ न लेनो। दासधर्म प्रभु को उच्छिष्ट जैसे अरोगे होई वाही प्रकार को लेनो। पतिव्रता को यह लक्षण है। इत्यादि भाव जताये।

राजकुमार, परंतु लक्तोना लावथी नटला लक्त छे तेमना तेटला ठाकुर छे. ते प्रभुदासना लावना ठाकुरे कछुं, छे प्रभुदासे भोग नही धर्यो.

त्यारे श्रीआचार्यज्ये प्रभुदासने कछुं, ते व्याज श्रीठाकुरज्ये भोग समर्प्ये बिना केम दीधुं? त्यारे प्रभुदासे विनती करी, महाराज! दाण काची रही, अंगा-परी पणी गछ. तेथी यरणाभृत पधरावीने दीधुं. त्यारे श्रीआचार्यज्ये कहे, जेवी रसोछ केम करी? श्रीठाकुरज्ये षडु वार सुधी राह जेछ. तेथी सावधानीथी सुंहर रसोछ करी भोग धरीने लेजे. ते द्विसथी प्रभु सावधानीथी रसोछ करता.

भावप्रकाश—जेभां जे ज्ञान्युं, छे यदपि यरणाभृत भेणवीने दीधुं ते अन्न-दोष मट्यो. परंतु भगवद्भोग पदार्थ न थयो. तेथी वैष्णवे जेवुं श्रीठाकुरज्ये भोग धर्युं होय तेवुं लेवुं. दहीं जुहुं धर्युं होय तो दहींभां लात भेणवीने पोते न लेवुं. केमके दूधभात, दहींभात, अलग अलग लक्तोना लावनी सामग्री छे. तेथी यरणाभृत जेम प्रसादी वस्तु पधरावी ले. काछ सामग्रीभांथी पोताना भोग अर्थे न लेवुं. दासधर्म प्रभुतुं उच्छिष्ट जेवुं आरोग्युं होय तेज प्रकारनुं लेवुं. पतिव्रतातुं जे लक्षण छे. इत्यादि भाव ज्ञान्या.

वार्ता—प्रसंग ३—और एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु ब्रज में पधारे । सो गोवर्द्धन के पास राधाकुंड स्थल है । तहां सीतकाल के दिन हते । सो बेगहि श्रीआचार्यजी ने रसोई करि भोग धरें, आपु भोजन करयो । पाछें प्रभुदास सों कहें, जो—महाप्रसाद ले । तब प्रभुदास नें कही, महाराज ! मैं स्नान नाहीं कियो ।

भावप्रकाश—ताको आसय यह, जो—श्रीआचार्यजी के सेवक सगरे अपनी न्यारी न्यारी रसोई करते, सो लेते । परन्तु श्रीआचार्यजी श्रीकुंड में स्नान करि, रसोई करि, भोग धरे । सो वह स्थल श्रीस्वामिनीजी को हैं । सो आपुकों बहोत प्रिय है । तातें प्रभुदास ऊपर कृपा करनार्थ श्रीआचार्यजी कहे, महाप्रसाद ले । तब प्रभुदास मर्यादा के वचन कहें, मैं न्हायो नाहीं । ता समें श्रीआचार्यजी पुष्टिलीला में मग्न हे । सो प्रभुदास कों ब्रज को स्वरूप दिखाये ।

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आपु दोय श्लोक कहिकें ब्रजको स्वरूप दिखाये । सो श्लोक—

“ वृक्षे वृक्षे वेणुधारी पत्रे पत्रे चतुर्भुजः ।

यत्र वृंदावने तत्र लक्ष्यालक्ष्यकथा कुतः ॥ १ ॥

जलादपि रजः पुण्यं रजसोऽपि जलं वरम् ।

यत्र वृंदावनं तत्र स्नात्वास्नात्वाकथा कुतः ॥ २ ॥

वार्ता—प्रसंग ३—वणी अेक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु ब्रजमां पधार्यां ते श्रीगोवर्द्धन पास राधाकुंड स्थल छे, त्यां शीतकालना द्विस लता. ते तरत न श्रीआचार्यजी रसोई करी भोग धरें. पोते भोजन क्युं. पछी प्रभुदासने कहे, हे महाप्रसाद ले. त्तारे प्रभुदासे क्युं, महाराज ! में स्नान नथी क्युं.

भावप्रकाश—तेनो आशय अे, हे श्रीआचार्यजीना अधा सेवका पोतानी अलग-अलग रसोई करता, ते लेता. परतु श्रीआचार्यजी—श्रीकुंडमां स्नान करी रसोई करी भोग धरे. ते स्थल श्रीस्वामिनीजीनुं छे. ते पोताने अहु प्रिय छे. तथी प्रभुदास उपर कृपा करवाने माटे श्रीआचार्यजी अे क्युं. महाप्रसाद ले. त्तारे प्रभुदासे मर्यादानां वचन कथां. हुं न्हायो नथी. ते समये श्रीआचार्यजी पुष्टिलीलामां मग्न छे ते प्रभुदासने ब्रजनु स्वरूप देखाउयुं.

त्तारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु पोते अे श्लोक कहीने ब्रजनुं स्वरूप देखाउते श्लोक—

‘ वृक्षे वृक्षे वेणुधारी पत्रे पत्रे चतुर्भुजः ’ (उपर नुअे)

यह कहें कृपा करिकें । सो प्रभुदास ब्रज को स्वरूप अलौकिक देखें ।

भावप्रकाश—वृक्ष वृक्ष के नीचे वेणुधारी साक्षात् श्रीगोवर्द्धनधर भक्तन के संग लीला करत हैं । ऐसे वृक्ष भगवदीय हैं । तिनके पत्र कैसे हैं ? चत्रभुज रूप हैं । तथा वृंदावन के वृक्ष वृक्ष वेणुधारी श्रीगोवर्द्धनधर रूप हैं । तिन को आशय, चत्रभुज रूप नारायण पत्र रूप होई आश्रय वृक्षन को कियो है । ऐसी वृंदावन है । सो लक्ष्यालक्ष्य कथा हैं । लौकिक लोगन कों अलक्ष्य है । और भगवदीयन कों स्वरूपात्मक हैं । सो कथा कही न जाई । या बातकों भक्तजन जाने, कृष्ण रूप जाने । कृष्णरूप वृक्ष है सो लोगन कों न दीसैं । तैसेहि श्रीवृंदावन की रजसों जल श्रेष्ठ है । और जलतें रज श्रेष्ठ है । तहाँ न्हायवे की कथा कहा कहिये ? भावे जलमों न्हाय, भावे रज लगाये । सो रज उड़िकें लागी तव न्हाइवे की अपेक्षा रहि नाहीं । परंतु मर्यादा के लिये न्दानो ।

यह सुनिकें प्रभुदास कों अलौकिक श्रीवृंदावन के दरसन भये । तव बिना न्हाये महाप्रसाद लिये, श्रीआचार्यजी की आज्ञा तें । या प्रकार प्रभुदास कों श्रीवृंदावन को अलौकिक स्वरूप वर्णन कियो । जहां वेद-मर्यादा की गम्य नाहीं ।

आ इष्टुं कृपा करीने. ते प्रभुदासे ब्रजतुं अलौकिक स्वरूप ज्ञेयुं.

भावप्रकाश—वृक्ष वृक्षनी नीचे वेणुधारी साक्षात् श्रीगोवर्द्धनधर भक्तोनी साथे लीला करे छे. अत्रां वृक्ष. भगवदीय छे. तेभनां पत्तां देवां छे ? अतुर्भुज रूप छे. तथा वृंदावननां वृक्ष-वृक्ष वेणुधारी श्रीगोवर्द्धनधर रूप छे. तेनो आशय, अतुर्भुज रूप नारायण पत्तां रूप थर्ष वृक्षोने आश्रय कर्यो छे. अत्रुं वृंदावन छे. ते लक्ष्यालक्ष्य कथा छे. लौकिक लोकानां अलक्ष्य (न देष्याय तेवी) छे. अने भगवदीयने स्वरूपात्मक छे ते कथा कही न जाय. आ वातने भक्तजनो (न) कृष्णरूप ज्ञेयुं. कृष्णरूप वृक्ष छे ते लोकाने न देष्याय. तेवीन रीते श्रीवृंदावननी रजथी नल श्रेष्ठ छे. अने नलथी रज श्रेष्ठ छे. सां न्हावानी कथा शु कहिअे ? आहे नलथी न्हाय, आहे रज लगावे. ते रज उडीने लागे त्यारे न्हावानी अपेक्षा रहे नहीं. परंतु मर्यादाने माटे न्हावुं.

अे सांभणीने प्रभुदासने श्रीवृंदावननां अलौकिक दर्शन थयां. त्यारे बिना न्हाये महाप्रसाद लीघो. श्रीआचार्यजीनी आज्ञाथी. आ प्रकारे प्रभुदास प्रति (श्रीआचार्यजीने) श्रीवृंदावनतुं अलौकिक स्वरूप वर्णन क्युं. ज्यां वेद-मर्यादानी गम्य नथी.

वार्ता-प्रसंग ४—और एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीगोवर्द्धनधर के मंदिर में श्रीगोवर्द्धनधर को श्रृंगार करत हते। तब यह मनमें आई, जो-आज दहीं होय तो समर्पिये। तब प्रभुदास सों कहे, जा, कहुँ दहीं मिले तो ले आव। तब प्रभुदास चले। सो एक अहिरनी मिली। तब वासों पूछे, तेरे पास दहीं है? तब उन कह्यो, दहीं मीठो सुंदर है। परंतु तू मोकों कहा देयगो? तब प्रभुदास ने कही, दहीं मोकों दे। जो-तू मांगे सो मैं तोकों देऊ। तब अहिरनी ने कही, एक टका दे और कहा तू मोकों मुक्ति देइगो? तब प्रभुदास ने कही, जा, तोकों टका और मुक्ति दोउ दीने। तब अहिरनी ने कही, मैं कैसे मानों? तब प्रभुदास ने एक कागद पर लिखि दीनो, जो-दहीं के पलटें मुक्ति दीनी। तब अहिरनी अपने अंचल सों बांधि के अपने घर आई। तब वाने परोसनि सों कही, आजु मैं दहीं के पलटे मुक्ति ले आई हों। तब परोसनि नें कही, अरी जा, तोकों बेरागिया ने ठगि लियो। मुक्ति कहा देयगो? जब वा अहिरनी ने कही, ऐसे मति कहे, उह बड़े महापुरुष हैं। मोकों सांचेही मुक्ति दीनी हैं। मोकों कागद लिखि दियो है। सो मेरे छेडे बांध्यो है। उह झूठ न बोले। तब उह कह्यो, अब जानि परेगी। पाछें घरि दौय में वाकी देह छूटी।

वार्ता-प्रसंग ४—वणी अेक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीगोवर्द्धनधरना मंदिरमां श्रीगोवर्द्धनधरना श्रृंगार करता लुता। त्पारे अे मनमां आव्युं, के आव्ण दही होय तो समर्पिये। त्पारे प्रभुदासने कहे, जा, कंधथी दहीं भजे तो लध आव। त्पारे प्रभुदास यादया। ते अेक लरवाउणी मणी। त्पारे तेने पूछयुं, तारी पासे दहीं छे? त्पारे अेले कहुं, दहीं मीठा सुंदर छे। परंतु तू भने शुं आपीश? त्पारे प्रभुदासे कहुं, दहीं भने दे, जे तू भागे ते हुं तने आपुं। त्पारे लरवाउणीअे कहुं, अेक टका दे, भीलुं शुं तूं भने मुक्ति आपीश? त्पारे प्रभुदासे कहुं, जा, तने टका अपने मुक्ति अपने आप्यां। त्पारे लरवाउणीअे कहुं, हुं केम भातुं? त्पारे प्रभुदासे अेक कागद उपर लभी दीधुं, के दहीना पदले मुक्ति आपी। त्पारे लरवाउणी पोताना छेउ आंधीने पोताना घरे आवी। त्पारे तेणीअे पाडाशण्ठी कहुं, आव्ण हुं दहीनां पदले मुक्ति लध आवी हुं। त्पारे पाडाशण्ठे कहुं, अररी जा, तने बेरागीआअे डगी दीधी। मुक्ति शुं देशे? न्यारे ते लरवाउणीअे कहुं, अेम न कहे अे भोटा महापुरुष छे। भने साअे जे मुक्ति आपी छे। भने कागद लभी दीधो छे, ते भास छेउ आंध्यो छे। ते लुठ न भोले। त्पारे तेणीअे कहुं, हुवे नपुयं पउशे। पठी घटी जेमां तेनी देह छुटी। त्पारे यमहते।

तब जमदूत आये । इतने में ही विष्णुदूत आयेकें जमदूतन सों कहे, छोड़ि देऊ याकों, मुक्ति करेंगे । जब जमदूतन ने कही, यह मुक्ति को कछु साधन तो कियो नाहीं । मुक्ति कैसे होयगी ? तब विष्णुदूत ने कही, याकों श्रीआचार्यजी के सेवक प्रभुदास ने दहीं के पलटे मुक्ति दीनी है । सो ले जायंगे । तब जमदूत फिरि गये । विष्णुदूत याकों विमान पर बैठाये के ले चले । तब इनने कह्यो, मेरी परोसनि कों विश्वास नाहीं है । तातें वासों कहि चलो । तब वासों कहे, श्रीआचार्यजी के सेवक ने दहीं के पलटे याकों मुक्ति दीनी हती, सो याकों ले जात हैं । तब वह अपने घर तें दोरि कें आय देखें तो उह अहिरनी मरी परी हैं । तब उह परोसनि ब्रजवासीन सों कहै, छेड़े एक चिट्ठी बंधि है सो देखो तो । तब वाको अंचल देखे तो दहीं के पलटें मुक्ति लिखी है । तब वाकों विश्वास आयो । तब वे हू चली । मैं हू वा महापुरुष पास जाय मुक्ति लेहु । सो वे श्रीआचार्यजी की सेवकनी होय कृतार्थ भई ।

और यहां श्रीआचार्यजी दहीं भोग धरें । तब श्रीनाथजी कहे, दहीं बहोत मीठो है । पाछें मंदिर तें पधारे तब श्रीआचार्यजी कहे, प्रभुदास दहीं बहोत मीठो सुंदर लायो । कहा दियो ? तब प्रभु-

आप्या. अष्टलाभां न विष्णुदूताये आवीने यमदूताने कछुं, छोडी दे अने, (अनी) मुक्ति करीशुं. न्यारे यमदूताये कछुं, आने मुक्तिखुं साधन तो कंध क्युं नथी. मुक्ति केवी रीते थशे ? त्यारे विष्णुदूते कछुं, आने श्रीआचार्यलना सेवक प्रभुदासे दहीने अदले मुक्ति आपी छे. तेथी लभ नभशुं. त्यारे यमदूतो पाछा गया. विष्णुदूत अने विमान उपर भेसाहीने लभयात्या. त्यारे अछे कछुं, भारी पाडाशणने विद्यास नथी तेथी तेने कही आलो. त्यारे तेने कहे, श्रीआचार्यलना सेवके दहीना अदले आने मुक्ति आपी लुती ते आने लभ नभये छीये. त्यारे ते पोलाना घरथी दोरीने आवी लुये तो ते लरवाण्णी मरी पडी छे. त्यारे ते पडाशण प्रनवासीआने कहे, छे अके गिह्ठी भांधी छे ते लुये तो. त्यारे तेना छेउ देणे तो दहीना अदले मुक्ति लभी छे. त्यारे तेने विद्यास आप्या. त्यारे ते पणु यादी. (७) हुं पणु ते मलापुरप पासे नभ मुक्ति लउं. पछी ते श्रीआचार्यलनी सेवकनी थम कृतार्थ थम.

अही श्रीआचार्यलये दहीं लोग धर्युं. त्यारे श्रीनाथल कहे, दहीं अहु भीहुं छे. पछी मंदिरथी पधार्या त्यारे श्रीआचार्यल कहे, प्रभुदास ! दहीं अहु न भीहुं सुंदर लाये. शुं आप्युं ? त्यारे प्रभुदासे कछुं, मलाराज ! अहु भोधुं

दास ने कही, महाराज ! महा मोंघो आयो है । दहीं के पलटें मुक्ति दीनी है । तब श्रीआचार्यजी कहें, भक्ति क्यों न दीनी ? श्रीठाकुरजी प्रीति सों आरोगे, मुक्ति तुच्छ कहा दीनी ? तब प्रभुदास कहें, महाराज ! मुक्ति उनने मांगी । जो भक्ति मांगती तो भक्ति देतो ।

वार्ता ॥ २० ॥

भावप्रकाश—याको कारन यह, जो-ता दिन दान एकादसी हती । सो वा दिना दहीं अवश्य चाहिये । तातें श्रीआचार्यजी कहें, आजु दहीं आवश्यक चाहिये । और श्रीआचार्यजी के सेवक को माहात्म्य दिखायो, जो-भक्ति मुक्ति देवे को सामर्थ्य हैं ।

✽ ✽ ✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, प्रभुदास भाट, सिंहनंद में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो ये लीला में ललिताजी की सखी है । कलहंसी इनको नाम है । सो ये सिंहनंद में एक भाट हतो ताके घर प्रगटे । सो प्रभुदास को पिता देसाधिपति के आगे चलतो । देसाधिपति के कवित करतो । द्रव्य बहुत हतो । सो प्रभुदास वरस दस के भये । सो महा मूरख भये । पिता ने बहुत

आप्युं छे. दहीना अदले मुक्ति आपी छे. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे. भक्ति केम न आपी ? श्रीठाकुरजी प्रीतिथी आरोग्या. मुक्ति तुच्छ शुं दीधी ? त्यारे प्रभुदास कहे, महाराज ! मुक्ति अछे मांगी. जे भक्ति मांगती तो भक्ति आपतो. वार्ता ॥२०॥

भावप्रकाश—अेतुं कारण अे, के ते दिवस दान अेकादशी हुती. तेथी ते दिवसे दहीं अवश्य अेधअे. तेथी श्रीआचार्यजी कहे, आज दही अवश्य न अेधअे. वणी श्रीआचार्यजीना सेवकतुं माहात्म्य देखाडुं, के भक्ति मुक्ति देवानुं तेमनामां सामर्थ्य छे.

✽ ✽ ✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना सेवक, प्रभुदास भाट, सिंहनंदमां रहेता, तेमनी वार्तानो भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—ते लीलामां ललिताजीनी सखी छे. कलहंसी अेतुं नाम छे. ते सिंहनंदमां अेक भाट हुतो तेना धरे प्रकटया. ते प्रभुदासनेो पिता देशाधिपतिनी आगण यावतो. देशाधिपतिनां कवित करतो. द्रव्य बहुत हुतुं. ते प्रभुदास वर्ष दशना थया. ते महा मूर्ख थया. पिताअे बहुत बाणाव्या.

पढ़ायो । परंतु कछु पढ़े नहीं । पाछें पिता की देह छूटी । पाछे जब प्रभुदास वरस पंद्रह के भये तब दिल्ली में आये । सो देसाधिपति पास गये । तब देसाधिपति ने कह्यो, कछु कवित्त कहो । तब प्रभुदास ने कही, कवित्त किन कों कहत है ? मैं तो जानत नहीं । और मैं कछू तुम तें चाहत नहीं । ठाकुर खायवे कों देत है । कहा तू पालेगो ? तब देसाधिपति ने कही, याकों गाम बाहिर काढ देउ । तब ये दिल्ली तें उदास है कें चले । सो मथुरा आय विश्रांत घाट पर रोवन लागे । जो-भगवान मोकों मूरख क्यों किये ? अब मैं कहां जाऊं ? जहां जाऊं तहां आदर सनमान तो कोइ करत है नहीं । या प्रकार चिंता में हते । ताही समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु मथुरा पधारे, विश्रांत घाट पर । तब आपु दैवी जानि कें कहें, प्रभुदास ! तू रोवत क्यों है, न्हाय ले । तब प्रभुदास न्हाये । तब श्रीआचार्यजी नाम निवेदन करायें । तब प्रभुदास कों अपने स्वरूप को और श्रीआचार्यजी के स्वरूप को ज्ञान भयो । ताही समय दंडीत् करि यह एक दोहा किये—

“ जब तें विछुरयो नाथ सों परयो जगत भव रूप ।

ता हित वल्लभ प्रगट है दरसायो निज रूप । ”

परतु कंठ लक्ष्या नहीं. पछी पितानी देह छुटी. पछी न्यारे प्रभुदास वर्ष पंद्रहना तथा त्यारे दिल्लीमां आव्या. ते देशधिपति पास गया. त्यारे देशधिपतिअये कछु, कंठ कवित्त कहे, त्यारे प्रभुदासे कछु, कवित्त काने कहे छे ते हु तो ज्ञातो नहीं. अने हु कंठ तमारथी आहते नहीं. ठाकुर प्पानाने दे छे. शुं तू पालीश ? त्यारे देशधिपतिअये कछुं, अने गाम अहार काढी दे. त्यारे अये दिल्लीथी उदास थधने आह्या. ते मथुरा आवी विश्रांत घाट उपर रेवा लाग्या, दे भगवाने मने भूषं डेम क्यो ? हुवे हु कयां जठ ? ज्यां जठं त्यां आदर सनमान तो काध करतुं नहीं. आ प्रकारे यितामां हुता. तेज समये श्रीआचार्यअ महाप्रभुअ मथुरा पधार्या विश्राम घाट उपर. त्यारे पोते दैवी ज्ञानिने कहे, प्रभुदास ! तू इवे डेम छे ? न्हाय ले. त्यारे प्रभुदास न्हाया. त्यारे श्रीआचार्यअये नाम-निवेदन कराव्युं. त्यारे प्रभुदासने पोताना स्वरूपतुं अने श्रीआचार्यअना स्वरूपतुं ज्ञान थथुं. तेज समये दंडवत् करी आ अेक दोहा क्यो—

“ जज ते' पिछुरयो नाथसों, परयो जगत भव रूप ।

ता हित वल्लभ प्रगट है, दरसायो निज रूप ॥ ”

यह सुनिकें श्रीआचार्यजी बहुत प्रसन्न भये । तब कहें, प्रभुदास ! तोकों यह मारग स्फुरयो । अब तुम भगवत् सेवा करो । तब प्रभुदास ने कही, महाराज ! यह सब आपु की कृपा, केवल प्रमेय बल तें आप मोकों अंगीकार किये । मो बरोबर दुःखी कोऊ न हतो । और छिन में मोकों सुख के समुद्र को अनुभव करायो । अब यह बिनती है, जो-मोकों कबहू दुःसंग न रहे । एक दृढ़ विश्वास आपु के चरन को रहे । तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइ के कहें, जा, ऐसोइ होइगो । पाछें मथुरा में एक स्वरूप न्योछावरि देकें लालजो कों ले आये । सो श्रीआचार्यजी पंचामृत स्नान कराय प्रभुदास के माथे पधराय दिये । और प्रसन्न ह्वे के कहें, तोकों सगरी रीति आपुहि फूरेगी । तातें बेगे अपुने गाँव जाय सेवा करो । तब प्रभुदास दंडौत् करि श्रीठाकुरजी कों पधराय कें सिंहनंद आये । सो घर में कुटुंब को संग छोडि कें न्यारो घर एक ले भगवद् सेवा करन लागे । व्याह तो इनको भयो नाहीं ।

वार्ता-प्रसंग १—सो प्रभुदास सदा एकरस प्रीतिसों सेवा करते । रात्र कों वैष्णव को संग करे । द्रव्य घर में बहुत हतो । सो भगवद् सेवा, गुरु सेवा, वैष्णव सेवा, में लगाये । और लौकिक वैदिक सब

अे सांभंगीने श्रीआचार्यजी अहु प्रसन्न थया । तयारे कहे, प्रभुदास तने आ मागि स्फुरयो । हुवे तमे भगवद् सेवा करे । तयारे प्रभुदासे कहुँ, महाराज ! आ अधी आपनी कृपा, केवल प्रमेय बलथी आपे मने अंगीकार कर्यो । मारा परापर दुःखी कोऊ न हतो । अने क्षणमां मने सुअना समुद्रनो अनुभव कराव्यो । हुवे अे बिनती छे, क मने अ्यारेय दुःसंग न रहे । अेक दृढ़ विश्वास आपना अणुनो रहे । तयारे श्रीआचार्यजी प्रसन्न थधने कहे, अ अेमज थरो पछी मथुरामां अेक स्वरूप लालजतुं न्योछावरि दधने लध आव्या । तेने श्रीआचार्यजीअे पंचामृत स्नान करावीने प्रभुदासना माथे पधरावी दीधु । अने प्रसन्न थधने कहे, तने अधी रीति आप भेणे स्फुरे । तेथी नददी तारा गाभ नध सेवा कर । तयारे प्रभुदास दंडवत करी, श्रीठाकुरजीने पधरावी सिंहनंद आव्या । ते घरमां कुटुअनो संग छोडीने अलग घर अेक लध भगवद् सेवा करवा लाग्या । लग्न तो अेमतुं थयुं न हतुं ।

वार्ता-प्रसंग १—ते प्रभुदास सदा अेक रस प्रीतिथी सेवा करता । रात्रिअे वैष्णवोना संग करे । द्रव्य घरमां धलुं हतुं । ते भगवद् सेवा, गुरुसेवा, वैष्णव-सेवामां लगाव्युं । अने लौकिक वैदिक अधुं छोडी दीधुं । अेम करे अेअेले वैष्णव पआले

छोड़ दिये । ऐसे करे, सो वैष्णव सराहें और ज्ञाति के निंदा करें । परंतु वे काहु की न सुने । ऐसे करत वृद्ध भये । पाछें सरীর में असावधानता भई । सावधानता छूटे । तब सगरे ज्ञाति के मिलि कें पृथोदक तीरथ ले आये । तब तहां सावधानता भई । आंख खोलि देखें तो पृथोदक तीर्थ है । तब सब सों कहे, इहां क्यों मोकों लयाये ? तब सगरे ज्ञाति के कहें, यह पृथोदक तीर्थ है । तुम विकल भये तब लयाये । तब प्रभुदास कहे, यह पृथोदक कहा मोकों कृतार्थ करेगो ? हों तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु को सेवक हों । तुम मोकों वरस लों इहां राखोगे तोहू मेरी देह इहां न छूटेगी । तातें तुम मोकों सिंहनंद ले चलो । मैं श्रीठाकुरजी के चरणारविंद के दरसन करोंगो । तब वहां मेरी देह छूटेगी । यह प्रभुदास नें कही । परंतु ज्ञाति के सगरे संबंधी माने नाहीं । प्रभुदास को दिन पांच-सात पृथोदक में राखे । तब प्रभुदास आछे भये, चलन फिरन लागे । संबंधी हारिके प्रभुदास को घर लाये । तब प्रभुदास न्हाय कें विनती किये, महाराज ! श्री-आचार्यजी ने तुमकों मेरे माथे पधराये हैं । सो ये वावरे लोग तुम्हारे चरणारविंद को आश्रय छुडाई के पृथोदक को आश्रय करायो । सो आपु ऐसो क्यों करो, जो-मेरी देह उहां छूटे ? या

अने ज्ञातिना निंदा करे. परंतु अे कोधनी न सांभणे. अेम करतां वृद्ध थया. पछी शरीरमां असावधानता थछ. सावधानता छुटी. त्तारे अथा ज्ञातिना भणीने 'पृथोदक तीर्थ' लछ आण्वा. त्तारे त्थां सावधानता थछ. आंअ जोदी लुअे तो पृथोदक तीर्थ छे. त्तारे अधाने कछुं, भने अहीं केअ लाण्वा ? त्तारे अथा ज्ञातिना कळे, आ पृथोदक तीर्थ छे. त्तमे विकल थया त्तारे लाण्वा. त्तारे प्रभुदास कळे, आ पृथोदक शुं भने कृतार्थ करे ? हुं तो श्रीआचार्यअ महाप्रभुअना सेवक छुं. त्तमे भने वर्ष (अक) पर्यंत अहीं राअशा तो पणु भारे देह अहीं नहीं छूटे. तेथी त्तमे भने सिंहनंद लछ थालो. हुं श्रीठाकुरअनां चरणारविंदनां दर्शन करीश. त्तारे त्थां भारे देह छुशे. अेम प्रभुदासे कछुं. परंतु ज्ञातिना अथा संबंधी माने नहीं. प्रभुदासने दिवस पांच-सात पृथोदकमां राअ्या. त्तारे प्रभुदास सारा थया. याअया करवा लाण्वा. संबंधी हारीने प्रभुदासने घर लाण्वा. त्तारे प्रभुदासे न्हाअने विनती करी, महाराज ! श्रीआचार्यअअे त्तमने भारा माथे पधराण्वा छे. ते आ आपरा लेके त्तभारा चरणारविंदना आश्रय छोडावीने पृथोदकना आश्रय करण्वा. परंतु आप अेअुं केअ करे के भारे देह त्थां छूटे ? अे प्रभारे श्रीठाकुरअने विनती

प्रकार श्रीठाकुरजी सों बिनती करि सिंहनंद में एक वैष्णव के माथे पधराइ, दंडौत करि मंदिर के बाहर आइ, सगरे वैष्णवन सों भगवद् स्मरण करि देह छोड़ि दिये । तब सिंहनंद के सगरे वैष्णव जहां मिलि कें भगवद् वार्ता करे तहां प्रभुदास की बड़ाई करें, जो-प्रभुदास धन्य हैं । बड़े भगवदीय, जो-तीर्थ को आश्रय न किये । श्रीठाकुरजी को आश्रय किये ।

सो सिंहनंद में एक कीरत चोधरी हतो ।

भावप्रकाश—सो कंस को धोवी हतो । श्रीठाकुरजी ने वाके वस्त्र मथुरा में लूटे हते । ताको औतार हतो ।

सो उह वैष्णव के पास आय कें निंदा करन लाग्यो, जो-प्रभुदास पृथोदक तीर्थ तें फिरि आयकें हिंडव देश में देह छोड़ी । तिनकी बड़ाई क्यों करत हो ? तब गांव के चोधरी जानि वैष्णव चुप हे रहे । या प्रकार दोह चार दिन निंदा करी । सो एक दिन रात्रि कों सोयो हतो सो चारि जने आयकें सुगदर ले, कीरत चोधरी कों खाट तें ओंघों पटकि दियो । मारन लगे । तब कीरत चोधरी ने कही, तुम मोकों क्यों मारत हो ? तुम्हारो कहा बिगाग्यो है ? तब वे चारों विष्णुदूत हतें सो कहें, तू प्रभुदास की निंदा क्यों करत है ?

करी, सिंहनंदमां अेक वैष्णवने माथे पधरावी, दंडवत करी, मंदिरनी षण्णर आवी सधणा वैष्णवोने भगवद्स्मरण करी देह छोडी दीधी. त्तारे सिंहनंदना सधणा वैष्णव न्यां मणीने भगवद्वातां करे त्यां प्रभुदासनी वडाध करे. के प्रभुदास धन्य छे. माथा भगवदीय, के तीर्थना आश्रय न कर्ये, श्रीठाकुरणना आश्रय कर्ये.

ते सिंहनंदमां अेक कीरत चोधरी हतो.

भावप्रकाश—ते कंसने धोपी हतो. श्रीठाकुरणने अेनां वस्त्र मथुरामां लूटयां हतां. तेने अवतार हतो.

ते अे वैष्णवोनी पासे आवीने निंदा करवा लाग्या. के प्रभुदास पृथादक-तीर्थथी करी आवीने हिंडव देशमां देह छोओ. तेमनी वडाध केम करे छे ? त्तारे गामने चोधरी ढण्णी वैष्णव चुप थररह्या. अे प्रकारे अे चार दिवस निंदा करी. ते अेक दिवस रात्रिअे सूते हतो त्तारे चार ढण्णा आवीने सुगदर लध कीरत चोधरीने आरथी उंधे पछाडी दीधे. (पछी) मारवा लाग्या. त्तारे कीरत चोधरीअे छुं, तमे मने केम मारे छे ? तमाइं शुं षगाडयुं छे ? त्तारे ते चारे विष्णुदूत हता ते छे, तू प्रभुदासनी निंदा केम करे छे ? तेथी आण तने मारीने ताइं हडा

तातें आजु तेरो हाड चूर-चूर करेंगे, मारिके । तब कीरत चोधरी हाहा खाय नाक घसिकें कही, अब मैं प्रभुदास की निंदा न करुंगो, बड़ाई करुंगो । तुम मोकों मति मारो । तब विष्णुदूत कहे, आजु छोड़त है, परंतु अब कबहू निंदा करेगो तो तोकों न छोड़ेंगे । यह कहि विष्णुदूत गये । तब दूसरे दिन वैष्णव मिलिकें प्रभुदास की बड़ाई करत हते तहां कीरत चोधरी आयो । तब मगरे वैष्णव चुप ह्वै रहे । तब कीरत चोधरी ने कही, वैष्णव ! तुम कहे सो सांच, प्रभुदास बड़े भगवदीय हे । उनकों तीर्थ सों कहा काम ? उनकों श्रीठाकुरजी को आश्रय है । या प्रकार बड़ाई बहोत करी । तब वैष्णव चक्रित होय रहे । और पूछी, जो-तुम तो पहले निंदा करत हते और आजु बहोत बड़ाई करत हो ताको कारन कहा ? तब कीरत चोधरी ने अपनी पीठि दिखाई । और कहे, जो-चारि जने मोकों रात्रिकों बहुत मारें और कहे, जो-तू प्रभुदास की निंदा क्यों करत है ? तातें वे बड़े भगवदीय हते । तुम सुखेन उनकी बड़ाई करो । तब मगरे वैष्णव प्रसन्न होइ बड़ाई करन लागे । सो प्रभुदास ऐसे भगवदी हते ।

वार्ता ॥ २१ ॥

भावप्रकाश—यह प्रभुदास की वार्ता में यह सिद्धांत भयो, जो-पुष्टि-

सांगीने लूका करीशुं । तारे कीरत चोधरीअे आल्ल करी नाक घसीने कहुं, हुवे हुं प्रभुदासनी निंदा नहीं करूं । वभाषु करीश । तमे मने न मारे । तारे विष्णुदूत कहे, आज छोडीअे छीअे । परंतु हुवे क्यारेय निंदा करीश तो तने नडी छोडीअे । अेम कही विष्णुदूत गया । तारे भीज द्विसे वैष्णुवो मणीने प्रभुदासनी वडाइ करता हुता त्यां कीरत चोधरी आव्यो । तारे अंधा वैष्णुवो चुप थध रखा । तारे कीरत चोधरीअे कहुं, वैष्णुव ! तमे कहुं ते सायुं छे । प्रभुदास मोटा लगवदीय छे । अेमने तीर्थथी शुं काम ? अेमने श्रीठाकुरजीने आश्रय छे (हुतो), अे प्रकारे वडाइ धणी करी । तारे वैष्णुव अकित थध रखा । अने पूछयुं, के तमे तो पहुलां निंदा करता हुता अने आजे अहु वडाइ करे छे । तेतुं कारणु शुं ? तारे कीरत चोधरीअे घातानी पीड देयाडी । अने कहुं, के तार जणे मने रात्रिअे अहु भार्यो अने कहुं, के तू प्रभुदासनी निंदा केम करे छे ? तथी ते मोटा लगवदीय हुता । तमे सुणेथी अेमनी वडाइ करे । तारे अंधा वैष्णुव प्रसन्न थध वडाइ करवा लाग्या । ते प्रभुदास अेवा लगवदीय हुता ।

वार्ता ॥२१॥

भावप्रकाश—अे प्रभुदासनी वार्तामां अे सिद्धांत थयो, के पुष्टिसांगीअे

मार्गीय वैष्णव कों कोई तीर्थ को आश्रय न करनो । श्रीआचार्यजी को आश्रय राखनो । और भगवदीय की निंदा करे, जो-याहू लोक में दुःख पावें । मरें तब नरक में जाइ । काहेतें ? भगवान कों भगवदीय प्रिय हैं । अपुनो अपराध सहे परंतु भगवदीय को अपराध नहीं सहि सकें ।

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, पुरुषोत्तमदास स्त्री-पुरुष क्षत्री हते, आगरे में राजघाट पर रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये पुरुषोत्तमदास लीला में श्रीचंद्रावलीजी की अंतरंग सखी हैं । पुरुषोत्तमदास को नाम माधवी, इनकी स्त्री को नाम मालती है । सो ये आगरे में राजघाट पर दोग क्षत्री के घर पास हते । तहां जन्म दोउ लिये । सो उन दोग क्षत्री के परस्पर बहोत मित्रता हती । सो दोऊ जने कही, अपनैं वेटा, वेटी को विवाह करें तो आछो । सो दोऊ के दोऊ भये । तब विवाह किये । पाछें वरस दिन के भीतर दोऊ के पिता की देह छूटी । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आगरे पधारे । सो ता समय पुरुषोत्तमदास और इनकी स्त्री बारी पर वेठें हते । सो श्रीआचार्यजी को दरसन होत ही दोऊ आपस में वतराये । जो-इनकी सरनि

वैष्णुवे ढाछ तीर्थनो आश्रय करेवो नही । श्रीआचार्यजीनो आश्रय राखेवो अने भगवदीयनी निंदा करे तो आ लोकमां पणु दुःख पावे (ने) मरे त्यारे नईमां अथ; ठभठे भगवानने भगवदीय प्रिय छे । पीतानो अपराध सहे परंतु भगवदीयनो अपराध नहीं सहि शकता ।

✽

✽

✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीनो सेवक, पुरुषोत्तमदास, स्त्री-पुरुष क्षत्री हुता, आगरामां राजघाट उपर रहेता, तेमनी वार्ताना भाव कहीअ छीअ—

भावप्रकाश—अये पुरुषोत्तमदास लीलामां श्रीचंद्रावलीजीनी अंतरंग सखी छे पुरुषोत्तमदासतुं नाम माधवी, अेमनी स्त्रीतुं नाम मालती छे । ते आगरामां राजघाट उपर अन्ने क्षत्रीना घर पास हुतां । त्यां अन्नेअे जन्म लीधा । ते अन्ने क्षत्रीने परस्पर अहु ज मित्रता हुती । ते अन्ने जणुअे कहुं, आपणुं भेटा भेटीनो विवाह करीअे तो साइं । ते अन्नेने अन्ने थयां । त्यारे विवाह कर्यो । पछी वर्ष दिवसनी अंहर अन्नेना पितानी देह छुटी । पछी श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी आआ पधार्या । ते समये पुरुषोत्तमदास अने अेमनी स्त्री बारी उपर भेठां हुतां । ते श्रीआचार्यजीनां दर्शन थतां अन्नेअे आपसमां वातो करी, ठे

जैये । सो पुरुषोत्तमदास दौरिकें उछंडे माथें श्रीआचार्यजी कों दंडौत् क्रिये । और विनती क्रिये, महाराज ! हमकों कृपा करिकें सरनि लीजिये । मेरे घर पधारिये । तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम अडेल में आइयो । श्रीगुसांईजी पास नाम पाइयो । तब पुरुषोत्तमदास नैं कही, महाराज ! श्रीगुसांईजी में और आप में कहा भेद है ? तातें आपु सेवक करिये । सरीर को कहा भगोसो है । पाछें आपुके दरसन दुर्लभ हैं । या प्रकार दैवी जीव है सो स्वरूप को ज्ञान भयो । तब श्रीआचार्यजी पुरुषोत्तमदास के घर पधारें । पुरुषोत्तमदास कों और इनकी स्त्री कों नाम निवेदन करायें । तब पुरुषोत्तमदास ने और इनकी स्त्री ने विनती करी, महाराज ! अब हमकों कहा आज्ञा है-? तब श्रीआचार्यजी कहे, भगवद् सेवा करो । तब पुरुषोत्तमदास नैं कही, महाराज ! श्रीठाकुरजी पधराय दीजिये । सेवा करें । तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम्हारें माथे कलंक आवेगो । सो तुम गंगा न्हाण कों जैयो । तब अडेल आवोगे तब तुम्हारे माथे श्रीठाकुरजी पधराइ देइंगे । अवहि तुम्हारे दोऊ जने की माता हैं । सो आसुरी जीव हैं । सो क्लेश करेंगी । तब पुरुषोत्तमदास स्त्री सहित कहें, माता तो हम पर दोउ की बहोत हित करत है । सो क्लेश कैसे होइगो ? तब श्रीआचार्यजी कहें, अवलों तुम वैष्णव न हतें । तातें

अमनी शरणे जैये. पछी पुरुषोत्तमदास ढोडीने निम्नरेला वाणे उधाडे माथे श्रीआचार्यजीने दंडवत कर्या. अने विनंती करी, महाराज ! अमने कृपा करीने शरणे दो. मारा धरे पधारो. तारे श्रीआचार्यजी कहे, तमे अडेलमां आवणे, श्रीगुसांईजी पास नाम पावणे. तारे पुरुषोत्तमदासे कहुं, महाराज ! श्रीगुसांईजीमां अने आपमां शे भेद छे ? तेथी आप सेवक करो. शरीरनो शे बरोसो छे ? पछी आपनां दर्शन दुर्लभ छे. या प्रकारे दैवी जिव छे तेथी स्वइपनुं ज्ञान थयुं. तारे श्रीआचार्यजी पुरुषोत्तमदासना धरे पधार्या. पुरुषोत्तमदासने तथा अमनी स्त्रीने नाम निवेदन कराव्यां, तारे पुरुषोत्तमदासे अने अमनी स्त्रीअे विनंती करी, महाराज ! हने अमने शी आज्ञा छे ? तारे श्रीआचार्यजी कहे, भगवद्सेवा करो. तारे पुरुषोत्तमदासे कहुं, महाराज ! श्रीठाकुरजी पधरावी आपो, सेवा करीअे. तारे श्रीआचार्यजी कहे, तमारा माथे कलंक आवशे. ते तमे गंगा न्हावाने जणे. ते समथे अडेल आवशे तारे तमारा माथे श्रीठाकुरजी पधरावी दधशुं. हणु तमारे अने जणानी माताअे छे ते आसुरी जिव छे. ते क्लेश करशे. तारे पुरुषोत्तमदास स्त्री सहित कहे, माता तो अमारी अन्नेनी अमारा उपर धणो ज रनेहु करे छे.

प्रीति करत हैं । वैष्णव भये सुनेंगी तब देखोगे । तातें हम इहां ते बेगे पधारेंगे । क्लेश मोकों भावत नाही । तब पुरुषोत्तमदास स्त्री सहित डरपिके बेग ही भेट जो वनि आई सो करी । श्रीआचार्यजी कों बिदा किये । श्रीआचार्यजी क्लेश जानि ततकाल अडेल पधारे । सो पुरुषोत्तमदास और इनकी स्त्री डरपि कें तीन दिनलों अपनी माता कों वैष्णव भये न बतायें । कोरो दूध ल्याय के पीके रहें । तब पुरुषोत्तमदास की माता नें गरे में माला देखी, तब कह्यो, बेटा ! गरे में माला कैसी ? आपुने क्षत्री जनेऊ सर्वोपरि हैं । माला कैसी ? तब पुरुषोत्तमदास बोले नाही । तब वह पुरुषोत्तमदास की स्त्री को माथो गरो उधारिकें देख्यो । सो माला देखिके बहोत रोई । कह्यो, ये स्त्री-पुरुष दोउ वैरागी भये । पाछें जाय के पुरुषोत्तमदास की माता नें पुरुषोत्तमदास की स्त्री की माता सों कह्यो, जो-तेरी बेटी और मेरो बेटा दोऊ माला पहिरी हैं । दोऊ वैरागी भये, अब कहा करनो ? तब उनने कही, चलो इनकी माला उतराउ, नाही तो दोऊ मरेंगे । सो दोऊ आयके स्त्री पुरुष सों कहें, जो-याहि छिन माला दोऊ उतारो । नाही तो दोऊन की हत्या लेऊगे । तब पुरुषोत्तमदास ने दस-बीस क्षत्री सगे संबंधी बुलाय कें

ते क्लेश डेम थरे ? त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, हनु सुधी तमे वैष्णव न हुतां तेथी प्रीति करे छे. वैष्णव थयां सांबणशे त्यारे जेशे. तेथी अमे अर्हीथी नदही पधारीशुं. क्लेश मने गमतो नथी. त्यारे पुरुषोत्तमदास स्त्री सहित डरीने (तेभणु) न्हेला न भेट न अपनी आवी ते करी. (पछी) श्रीआचार्यजीने विदाय कयां. श्रीआचार्यजी क्लेश जणु ततकाल अडेल पधारां, ते पुरुषोत्तमदास अने अेमनी स्त्री डरीने त्रणु दिवस सुधी पोतानी माताने (पोते) वैष्णव थया (ते) जणुअथुं नहीं. डाइं दूध लावीने पीने रखां. त्यारे पुरुषोत्तमदासनी माताअे गणामां माला देणी. त्यारे कहुं, भेटा ! गणामां माणा डेरी ? आपणु क्षत्री (छीअे) (तेने तो) जनोअ सर्वोपर छे. माला डेवी ? त्यारे पुरुषोत्तमदास भेटया नहीं. त्यारे तेणु पुरुषोत्तमदासनी स्त्रीनुं माथुं गणुं उधाडीने जेथुं. ते माणा जेधने पडु न रोअ. कहुं, अे स्त्री-पुरुष अन्ने वैरागी थयां. पछी जधने पुरुषोत्तमदासनी माताअे पुरुषोत्तमदासनी स्त्रीनी माताने कहुं, के तारी भेटी अने मारो भेटा अन्नेअे माला पहेरी छे. अन्ने वैरागी थयां हुवे शुं करवुं ? त्यारे तेणु कहुं, यादो अेमनी माला उतरावो. नहीं तो अन्ने मरीशुं. पछी अन्नेअे आवीने स्त्री-पुरुषने कहुं, के आन क्षणु अन्ने माला उतारो. नहीं तो अन्नेनी हत्या (तमने) लागशे. त्यारे

सबके आगे माता सों कही, जो—यह माला हमारे सिर के साटे हैं। माथो जाय तो चिंता नाहीं परंतु माला तो न छोड़ेंगे। तारें तुम्हारो माला सों कहा काम है? तुम्हारो मन होय तो हमारे भेले रहो, चाहिये सो लेहु और कहो तो तुमकों न्यारो घर करिकें देय, मनुष्य चाकर रहेगो। जो तुमकों चाहिये सो लेहु। हम सों बनेगी सो तुम्हारी टहल करेंगे। चाहो तुम याहि घर में रहो। हम न्यारो घर करिकें रहें। तुम कहो तेसे करें। क्लेश मति करो। परंतु हम माला सर्वथा न छोड़ेंगे। और तुम्हारे हाथ को छुयो खानपान न करेंगे। तुम माला पहिरो, वैष्णव होउ, तब तुम्हारे हाथको पानी काम आवें। यह सुनिके दोउ की माता क्रोध करि कें कह्यो, जो—तुम दोउ बेरागी भये (अब) हमहू कों बेरागी करत हैं? हम पाले हैं, अब हम चमार—भंगी ठेहरे तुमारे लेखे, जो—हमारो छुयो जल न लगे! हम दोउ तुमारे ऊपर मरेंगी। या प्रकार पांच दिनलों जल कोइ न लियो। सगरे सगे संबंधी गांव को हाकिम हू आयकें सबकों समुझायो। परंतु दोउ न माने। सो रात्रि कों पुरुषोत्तमदास स्त्री—पुरुष सोय गये, तब दोऊ की माता घर में कूप हतो तामें गिरि परी, सो देह छूटी गई। सवरे दोऊन को संस्कार पुरुषोत्तमदास ने

पुरुषोत्तमदासे दश—वीस क्षत्री सगां—संबंधी षोलावीने अधानी आगण माताने कहे, हे आ माला अमारा शिरना साटे छे, माथु नय तो चिंता नही परंतु माला तो नही छोडीये। तेथी तमारे भाणथी शु काम छे? तमाइ मन होय तो अमारा बेगां रहे, ओधये ते लो, अने कहे तो तमने अलग घर करी दे। मनुष्य—चाकर रहेसे। न तमने ओधये ते लो। अमाराथी अनसे ते तमारी टहल करीशुं। लावे तमे आज धरमां रहे। असे अलग घर करीने रहीये। तमे कहे तेम करे। कवेश न करे, परंतु असे भाणा सर्वथा नही छोडीये। अने तमारा हाथतुं अडेलुं खानपान नही करीये। तमे माला पहेरे। वैष्णव थाव। लारे तमारा हाथतुं काम आवे। अ सांखणीने अन्नेनी माताये क्रोध करीने कहुं, हे तमे अन्ने वैरागी थयां। (हुवे) अमने पशु वैरागी करे छे? असे पाज्यां, हुवे असे अमार लंगी धर्यां तमारा मनथी, हे अमाइ अडेलुं जल नही लो? असे अन्ने तमारा उपर मरीशुं। आ प्रकारे पांच दिवस सुधी जल टाधये न लीधुं। अथां सगां—संबंधी गांमने हाकेम पशु आवीने अधाने समजाव्यां परंतु अन्ने न माने। पछी रात्रिअे पुरुषोत्तमदास स्त्री—पुरुष सूई गयां, त्यारे अन्नेनी माता धरमां कूये हुतो तेमां पडी, ते देह छूटी गयो। सवारे पुरुषोत्तमदासे अन्नेने

पात्र में कैसे करिये ? हम पातरि में करि भोजन करेंगे । तब पुरुषोत्तमदास कहे, महाराज ! द्रव्य तो निघट नहीं गयो । और कसेरे सब सूए नहीं । और नये पात्र आवेंगे । या प्रकार उह कहिकें श्रीगुसाईजी को वाही श्रीठाकुरजी के पात्र में भोजन कराये ।

भावप्रकाश—सो यातें जो इनकों श्रीगुसाईजी में भाव हैं । और लीला में श्रीचंद्रावली श्रीठाकुरजी संग वही पात्र में भोजन करतीं । सो ये श्रीचंद्रावलीजी की सखी हैं । सब लीला की स्फूर्ति हैं । तातें श्रीठाकुरजी के पात्र में भोजन कराये । और स्त्री-पुरुष को श्रीगुसाईजी में स्नेह बहोत हैं । सो यह विचारे, दूसरे पात्र में फेर ठलाये तें सामग्री को सवाद फिरि जायगो । सगरी सीतल है जायगी । तातें और में ठलायवे तें ढील भोजन करिवे में होयगी, सोउ आछी नहीं । तातें स्नेह सों उही पात्र में भोजन कराये ।

पाछें श्रीगुसाईजी भोजन करिवे बैठें । तब पुरुषोत्तमदास की स्त्री पास आय बैठी । कह्यो, महाराज ! यह सामग्री आरोगो । तब श्रीगुसाईजी कहें, मोकों चहिये सो मैं लेउंगो । तब पुरुषोत्तमदास की स्त्री ने कही, महाराज ! नंदरायजी के घर जैसे आरोगत हो, तैसेही सगरे वैष्णवन के घर आरोगो ।

तमदास कहे, महाराज ! द्रव्य तो घटी गयुं नथी अने इंसारा अधा भर्या नथी. भीज नयां पात्र आवशे. आ प्रकारे तेभणे कहीने श्रीगुसांघलने श्रीठाकुरलना पात्रभांज लेाजन इरावरायुं.

भावप्रकाश—ते अथी, ठे अमने श्रीगुसांघलमां भाव छे. अने दीलामां श्रीचंद्रावलील श्रीठाकुरलनी साथे तेज पात्रमां लेाजन करती. तेथी अ श्रीचंद्रावलीलनी सखी छे. अधी दीलानी स्फूर्ति छे. तेथी श्रीठाकुरलना पात्रमां लेाजन कराव्यु. अने स्त्री-पुरुषने श्रीगुसांघलमां स्नेह अहु छे. तेथी अ विचारे (ठे) भीज पात्रमां इरी ठलाववाथी सामग्रीने स्वाद इरी जशे. अधी शीतल थध जशे. तेथी भीज (पात्र) मां ठलाववाथी लेाजन करवामां ढील थशे ते पणु ठीक नहीं. तेथी स्नेहथी तेज पात्रमां लेाजन कराव्युं.

पछी श्रीगुसांघल लेाजन इरवा अिराव्या. त्यारे पुरुषोत्तमदासनी स्त्री पासे आवी भेठी. कहुं, महाराज ! आ सामग्री आवेगो. त्यारे श्रीगुसांघल कहे, मने जेधशे ते हुं लधश. त्यारे पुरुषोत्तमदासनी स्त्रीअे कहुं, महाराज ! नंदरायलना धरे जेभ आवेगो छे तेज प्रकारे अधा वैष्णवना धरे आवेगो.

भावप्रकाश—यामें यह जताये, नंदरायजी के घर तो भक्तन को जैसे मनोरथ है तैसे अरोगत हो । इहां कहें, मोकों स्वे तैसे लेउंगो । सो कैसे बनेगी ?

या प्रकार श्रीगुसाईंजी सों प्रेम संयुक्त वार्ता करे । बार बार सगरी सामग्री भोजन कराये, श्रीगुसाईंजी कों प्रसन्न किये । पाछें श्रीठाकुरजी की सैया श्रीठाकुरजी के विछोना तकिया तापर श्रीगुसाईंजी कों पौढाय कें स्त्री-पुरुष चरनसेवा करन लागें । तब श्रीगुसाईंजी कहें, उठो, अब दोउ जने जाय महाप्रसाद लेउ । तब पुरुषोत्तमदास स्त्री-पुरुष कहें महाराज ! महाप्रसाद तो नित्य लेइंगे । या प्रकार श्रीगुसाईंजी कों नित्य नौतन प्रीति सों हठ करिकें पांच-सात दिन राखे । नित्य नये पात्र, सैया, वस्त्र होय । ऐसे स्त्री-पुरुष कृपापात्र भगवदीय हे ।

वार्ता ॥ २२ ॥

भावप्रकाश—इनकी वार्ता में यह सिद्धांत भयो, जो-गुरु में श्रीठाकुरजी सों अधिक प्रीति इनकी है । तैसे वैष्णव करें तब फल कों पावे । वै०॥२२॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, त्रिपुरदास कायस्थ, शेरगढ़ के वासी, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में श्रीठाकुरजी की अंतरंग सखी है, जा

भावप्रकाश—अमां अे नृणांयुं, हे नंदरायलना धरे तो लक्तोना लवेो मनोरथ छे तेमन आरोगो छे. अह्नीं कहे, भने इये तेम लईश. ते ठेम अनशे ?

आ प्रकारे श्रीगुसांथलथी प्रेमसंयुक्त वार्ता करे. बारंवार अधी सामग्री लोअन करावी श्रीगुसांथलने प्रसन्न कर्था. पछी श्रीठाकुरलनी शैया श्रीठाकुरलनां पिछानां-तकिया उपर श्रीगुसांथलने पौढावीने स्त्री-पुरुष चरन सेवा करवा लाग्यां. त्यारे श्रीगुसांथल कहे, हे उठो, हवे अन्ने नखु नधने महाप्रसाद लेो. त्यारे पुरुषोत्तम-दास स्त्री-पुरुष कहे, महाराज ! महाप्रसाद तो नित्य लइशुं (परंतु आ सेवा क्यां?). आ प्रकारे श्रीगुसांथलने नित्य नौतम प्रीतिथी लुठ करीने पांच-सात दिवस राख्या. नित्य नवां पात्र, शैया, वस्त्र थाय. अेवां स्त्री-पुरुष कृपापात्र भगवदीय लतां.

भावप्रकाश—आमनी वार्तानां आ सिद्धांत थयो, हे गुरुमां श्रीठाकुरलथी अधिक प्रीति अेमनी छे. तेम वैष्णव करे त्यारे इलने पासे. वार्ता ॥२२॥

✽

✽

✽

हवे श्रीआचार्यल महाप्रभुलना सेवक, त्रिपुरदास कायस्थ, शेरगढना वासी, तेमनी वार्ताना लाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे लीलामां श्रीठाकुरलनी अंतरंग सखी छे. न

भक्तन कों व्योरा कल्लु संदेसो कहेनो होई, देनो होई, सो हरनी के हाथ देते । इनके नेत्र विसाल बड़े हैं । ताते इनको नाम हरनी लीला में हैं । सो सेरगढ़ में एक कायस्थ के यहाँ जन्मे । सो एक राजा के सगरो काम (करे) दिवान कहावतो, इनको पिता । सो जब त्रिपुरदास बरस बारह के भये तब उनकों संगहि राखतो । सगरो काम त्रिपुरदास कों सिखायो । सो राजा एक समय आगरे कों देसाधिपति के पास चल्यो । तब त्रिपुरदास कों संग ले राजा के संग आगरे आयो । कल्लुक दिन आगरे में, रहिकें राजा देसाधिपति सों विदा होइकेँ देस कों चल्यो । सो श्रीगोवर्द्धन, श्रीगोवर्द्धनधर के दरसन कों आयो । तामें त्रिपुरदास पिता सहित आये । सो दिन तीन गोवर्द्धन में रहे । तब त्रिपुरदास को मन श्रीनाथजी के स्वरूप में आसक्त होय गयो । सो चौथे दिन राजा विदा होई केँ चलिवे की तैयारी करी । सो सुनि केँ त्रिपुरदास कों विरह ज्वर चढ़ि आयो । सो व्याकुल भये । तब ता ने पूछी, त्रिपुरदास कैसे हैं ? तब त्रिपुरदास ने कही, मेरी देह छूटेगी, जो मोकों ले चलोगे । ताते केतो तुमहूं महिना दौय रहो, के राजा के संग जाउ, मैं पाछे तें आछे दरसन करिकें आऊंगो । तब मेरे प्रान रहैं । तब

सक्तोने विगतवार कंई संदेशो कहेवो होय, देवो होय, ते हरणीना हाथे देता. अनां नेत्र मोटां ने विशाल छे. तेथी तेनुं नाम हरणी लीलाभां छे. अ शेरगढभां अक कायस्थने त्यां जन्म्या. ते अक राजने आं अधुं अमनो पिता काम करतो, दिवान कहेवडावतो. त्यारे त्रिपुरदास वर्ष पारना तथा त्यारे अने साथे ज राखतो. अधु काम त्रिपुरदासने शिपाडयुं. ते राज अक समय आगराथी देशाधिपतिने पासे गयो. त्यारे त्रिपुरदासने साथे लई राजनी सगे (ते) आगरा आव्यो. (पछी) थोडा दिवस आत्राभां रहिने राज देशाधिपतिथी विदाय थधने देशभां आदयो. ते गोवर्द्धन, श्रीगोवर्द्धनधरनां दर्शन आव्यो. तेभां त्रिपुरदास पिता सहित आव्या. ते दिवस त्रय गोवर्द्धनभां रद्या. त्यारे त्रिपुरदासनु मन श्रीनाथजीना स्वरूपभां आसक्त थई गयु. ते चोथा दिवसे राज विदाय थधने आलवानी तैयारी करी ते सांलणीने त्रिपुरदासने विरह-ज्वर यढी आव्यो. ते व्याकुल थया. त्यारे पिताअे पूछयुं, त्रिपुरदास ठेभ छे ? त्यारे त्रिपुरदासे कछु, मारी देह छूटशे अे मने लई आलशा तो. तेथी कां तो तमे पणु महिना ये रहे। के राजना संगे जव. हुं पछीथी सारी रीते दर्शन करीने आवीश. त्यारे मारा प्राणु रहे. त्यारे त्रिपुरदासना पिताअे राजने अधा सभात्यार कद्या. आ प्रकार

त्रिपुरदास के पिता ने राजा से सब समाचार कहे । या प्रकार मेरो वेटा कहत हैं । तब राजा ने कही, कहा चिंता है ? असवारी और मनुष्य राखि चलो । पाछे तें वेटा आय रहेगो । तब पितानें आय कही, वेटा ! तुम रहो इहां । चिंता मति करो । यह सुनत ही त्रिपुरदास कों आनंद भयो । ड्वर उतरि गयो । तब पिता प्रसन्न होइ पालकी मनुष्य दिये । जो-वेटा ! वेग अइयो । मैं वृद्ध भयो हों । राजा को काम काज करना है । तब त्रिपुरदास कहे, तुम चलो मैं वेगो आउंगो । तब पिता राजा के संग गयो । सो मारग में एक जमींदार से लराई भई । तहां त्रिपुरदास के पिता कों गोली लगी । सो मरि गयो । राजा उह जमींदार कों मारिकें आगे चल्यो । पाछें उह राजा (ने) त्रिपुरदास पास मनुष्य पठायो । सो सब समाचार त्रिपुरदास से उन (ने) कह्यो । सो सुनिकें त्रिपुरदास प्रसन्न भये । जो भली भई । अब मेरे कोई बंधन तो है नहीं । अब श्रीगोवर्द्धनधर के दरसन सदा करोंगो । पाछे पिता को कर्म मानसी गंगा पर सब किये । सुद्ध भये । सो नित्य सगरे दरसन करते । तब श्रीआचार्यजी एक दिन त्रिपुरदास से कहे, जो-तू कोन है ? दोय महिना भये दरसन करते, अब अपने घर जाउ । तब त्रिपुरदास ने कही, महाराज ! अब मैं कहाँ जाउं ? माता मरी जन्म तें, पिता अब मरयो,

माता पुत्र कहे छे. त्तारे राज्ज्ये कछुं, शी चिंता छे ? असवारी अने मनुष्य राखी आवो. पछीथी पेटा आवी रहेशे. त्तारे पिताजे आवी कछुं, पेटा तसे रहे. अहीं, चिंता न करे. जे सांभणतां न त्रिपुरदासने आनंद थयो. नवर उतरी गयो. त्तारे पिता प्रसन्न थय पालणी-मनुष्य दीधां. (कछुं) क पेटा नददी आवजे. हुं वृद्ध थयो छुं. राजतुं काम-काज करवुं छे. त्तारे त्रिपुरदास कहे, तसे आवो हुं नददी आवीश. त्तारे पिता राजनी साथे गयो. ते भागभां जेक नमीनदारथी लडाध थय त्यां त्रिपुरदासना पिताने गोणी वागी. ते मरी गयो. राज ते नमीनदारने मारीने आगण आवयो. पछी ते राजजे त्रिपुरदास पासे भाणुस भोकल्यो. ते पधा समायार त्रिपुरदासने जेणु कछा. ते सांभणीने त्रिपुरदास प्रसन्न थया. क बलुं थयुं. हुवे मारे (पीनुं) डोध पधन तो छे नहीं. हुवे श्रीगोवर्द्धनधरनां दर्शन सदा करीश. पछी पितानुं कर्म मानसीगंगा छपर पधुं कयुं. शुद्ध थया. पछी नित्य पधां दर्शन करता. त्तारे श्रीआचार्यज्ज जेक दिवस त्रिपुरदासने कहे, क तू कोणु छे ? जे महिना थयां दर्शन करतां. हुवे तारे धरे न. त्तारे त्रिपुरदासे कछुं, महाराज ! हुवे हुं क्यां नहं ? माता मरी

मेरो व्याह भयो नहीं। सो अब मेरो मन श्रीनाथजी के स्वरूप में अटक्यो है। सो मैं कहाँ जाऊँ ? तब श्रीआचार्यजी त्रिपुरदास की प्रीति देखिकें कहें, हम ऐसो करि देई तोका, जहां रहें तहां श्रीनाथजी के दरसन करें। एक छिनको वियोग न होई। तब त्रिपुरदास ने दंडौत करिकें विनती कियो, जो—महाराज ! मोकों यही चाहिये। काहेतैं, मोसों मांग्यो जाय नहीं। नित्य खरच हू चाहिये। और श्रीनाथजी के दरसन बिना मोसों रखो हू नहीं जाय। सो यह चिंता हती। जो आपु कृपा करिकें जो आज्ञा करो सो मैं करूं। तब श्रीआचार्यजी त्रिपुरदास कों न्हवाइ के नाम निवेदन कराये। और श्रीनाथजी को चरणामृत महाप्रसाद दिये। सो नेत्रन के आगें श्रीनाथजी के स्वरूप को दरसन होन लाग्यो। तब श्रीआचार्यजी कहे, अब तुम इहां तें जाउ। जहां रहोगे तहां प्रभु तुमकों दरसन देखेंगे। तू श्रीठाकुरजी कों कबहू पीठ न देख्यो। तब त्रिपुरदास श्रीआचार्यजी कों दंडौत करि, विदा होई चले। तब यह प्रन कियो जो श्रीनाथजी के चरणामृत महाप्रसाद लिये बिना जल न लेनो। यह मन में निश्चय करि घर में आये।

वार्ता—प्रसंग १—सो त्रिपुरदास कों श्रीनाथजी के विषे बहोत ममत्व हतो। जो—श्रीनाथजी कों पीठ कबहू न देते। श्रीनाथजी के

जन्म-भथी। पिता हुवे भरयो। माइं लक्ष्म थयुं नथी। हुवे माइं मन श्रीनाथजना स्वरूपमां अटक्यु छे। ते हुं क्यां जठं ? त्यारे श्रीआचार्यज त्रिपुरदासनी प्रीति जेधने कहे, अमे जेवुं करी दृष्ट्ये तने दे ज्यां रहे त्यां श्रीनाथजनां दर्शन करे। जेक क्षणतो वियोग न होय। त्यारे त्रिपुरदासे दंडवत् करीने विनती करी, हे महाराज ! मने जेज जेधजे, हेमहे भारथी मांग्युं जय नहीं। नित्य अर्थ पणु जेधजे अने श्रीनाथजनां दर्शन विना भारथी रही पणु शक्य नहीं। ते चिंता हती। आप कृपा करीने जम आज्ञा करे तेम हुं करूं। त्यारे श्रीआचार्यज जे त्रिपुरदासने नहुवडावीने नाम—निवेदन कराव्युं। अने श्रीनाथजनां चरणामृत, महाप्रसाद आप्यां। ते नेत्रोनी आगण श्रीनाथजना स्वरूपनां दर्शन थना लाव्यां। त्यारे श्रीआचार्यज कहे, हुवे तमे अहीथी जव. ज्यां रहेशो त्यां प्रभु तमने दर्शन आपशे। तू श्रीठाकुरजने कही पणु पीठ नहीं दे। त्यारे त्रिपुरदास श्रीआचार्यजने दंडवत् करी विदा थध याहया। त्यारे जे प्रणु क्युं, हे श्रीनाथजना चरणामृत महाप्रसाद दीधा विना जल न लेवु। आ मनमां निश्चय करी धरमां आव्या।

वार्ता—प्रसंग २—ते त्रिपुरदासने श्रीनाथजना विषे अहुं ज ममत्व हुतुं जे,

चरणामृत महाप्रसाद बिना जल हू न लेते । सो त्रिपुरदास एक तुरक की चाकरी करते । सो तुरक की ओर तैं एक परगना पर गये । सो बहोत कमाये । सो, जो-वस्तु नौतन आवैं अन्न, साक, फल-फूल, वस्त्र सो पहिले श्रीनाथजी कों अंगीकार होइ । ता पाछें आपु कछु लेय । और त्रिपुरदास वेठे, ठाढ़े, चलते, श्रीनाथजी कों पीठ न देते ।

भावप्रकाश—सो कहा, जो-श्रीनाथजी के स्वरूप को भूलनो सोई पीठि हैं । सो सदा दरसन करतहि सब काम करते ।

और बरस के बरस आछो दगला श्रीनाथजी कों पठावते । सो श्रीगुसाईंजी पहिले त्रिपुरदास कों दगला आछो देखिकें अंगीकार करावते । सो एक समय उह म्लेच्छ ने त्रिपुरदास सों लेखो लीनो । सो कछुक दाम त्रिपुरदास के ऊपर निकसे । सो उनसों मांग्यो । तब त्रिपुरदास ने कही मेरे पास अब तो नाहीं है । कमायकें भर देउंगो । तब उह तुरक ने सगरो घर लूटि लियो । त्रिपुरदाम कों बंदीखाने दिये । सो अर्ध रात्रि गई । तब चार जने आयकें उह तुरक कों खाट तैं ओंधो डारि दियो । और मुगदर सों मारन लागे । तब उह तुरकने कही, मोकों क्यों मारत हो ? मैं तुम्हारो कहा बिगारयो है ? तब विष्णुदूत ने कही त्रिपुरदास कों बंदीखाने में क्यों दिये ?

श्रीनाथजीने पीठ डही पणु न देता. श्रीनाथजीना यशुामृत, महाप्रसाद बिना जल पणु न लेता. ते त्रिपुरदास अेक तुरकनी चाकरी करता. ते तुरकनी तरइथी ते अेक परगना उपर गया. त्यां षडु कमाया. ते जे वस्तु नवीन आवे, अन्न, शाक, इल-इल वस्त्र ते पहिलां श्रीनाथजीने अंगीकार थाय. ते पछी पोते इंधक ले. अने त्रिपुरदास षेठतां, उठतां, यासतां, श्रीनाथजीने पीठ न देता.

भावप्रकाश—ते शुं ? हे श्रीनाथजीना स्वइपने भूलवुं तेज पीठ छे. ते सदा दर्शन करतां ज अंधुं काम करता.

अने वर्षोवर्ष सुंदर उगलो श्रीनाथजीने भोक्तता. ते श्रीगुसांइज पहेलां त्रिपुरदासने उगलो सुंदर जोधने अंगीकार झावता. ते अेक समय ते म्लेच्छ त्रिपुरदास पासेथी हिसाअ लीधो. ते थोडाक पैसा त्रिपुरदास उपर निकल्या. ते अेकनाथी मांग्या. त्यारे त्रिपुरदासे इधुं, भारी पासे लुभलां तो नथी. कमावीने लरी इश. त्यारे ते तुरके अंधुं घर लुंथी लीधुं. त्रिपुरदासने अंधीपानामां नाभ्या. ते अर्द्धरात्रि थय गय. त्यारे चार जणाअे आवीने ते तुरकने आठ उपरथी उधो नाभी दीधो अने मुगदणथी मार्या लाभ्या. त्यारे ते तुरके इधुं, मने केम भारो छो ? मे तमाइं शुं षगाउथुं छे ?

तोंकों मारि हाड तोरि डारेंगे । तब वह तुरक हाहा खाय नाक भूमि में घसिकें कह्यो, मैं अब ही तुरत जाय त्रिपुरदास कों छोड़ि देउंगो । तुम मोकों मति मारो । तब विष्णुदूत गये । तब उह तुरक त्रिपुरदास पास जाइके कह्यो, अपने घर जाउ । तब त्रिपुरदास नें कही अब रात्रि बहुत गई है, सकारे जाउंगो । तब उह तुरक ने कही काहू को जीव लेइगो ? याही समय जाउ । तब त्रिपुरदास घर आये ।

सो इतने में भेटिया श्रीनाथजी के आये । सो त्रिपुरदास कों चरणामृत महाप्रसाद दिये तब त्रिपुरदास ने विचारयो, जो-बरस के बरस श्रीनाथजी कों जड़ावर पठावतो हो । परि अब तो कछू पास है नाहीं । सो एक लिखिवे की द्वाति रही । वाको मुहरो ऊपर को रूपे को हतो । सो बेचि एक रंगी खारका को थान ले आय भंडारी कों दियो । और कहें श्रीगुसांईजी सों मति कहियो । श्रीनाथजी के भंडार में दीजो । कहा करिये, अब तो मैं कछू लायक नाहीं हों । सो भेटीआ ने उह रंगी श्रीनाथजी के भंडार में दीनी । पाछें प्रबोधिनी के दिन श्रीगुसांईजी मंडप करि देवोत्थापन करि श्रीनाथजीकों दगला उढ़ाये । तब श्रीनाथजी कहे, जो मोकों सीत बहोत लागत है । तब दूसरो दगला उढ़ाये । तब फेरि श्रीनाथजी नें कही मेरो

त्यारे विष्णुदूते कछुं, त्रिपुरदासने अंधीपानामां डेम नाभ्या ? तने मारी तारां लुडकां तोडी नाभीशुं । त्यारे ते तुरके आलल करी नाक भूमिमां घसीने कछुं, हुं लमलुं न तरत नधने त्रिपुरदासने छोडी क्षश. तमे भने न मारे. त्यारे विष्णुदूत गया. त्यारे ते तुरके त्रिपुरदास पासे नधने कछुं, तमारा घर नव. त्यारे त्रिपुरदासे कछुं, हुवे रात्रि घण्टी गछछे, सवारे नधश. त्यारे ते तुरके कछुं. डेधने लव लधश ? आ न समये नव. त्यारे त्रिपुरदास घर आव्या.

अरदांमां लेटीआ श्रीनाथलना आव्या. ते त्रिपुरदासने यरलुामृत, महा-प्रसाद आव्या. त्यारे त्रिपुरदासे विचार्युं, डे वर्षोवर्ष श्रीनाथलनी नडावर (शिया-गामां पहुरवानां वस्र) मोडलतो हुतो, परंतु हुवे तो कंध पासे नथी. पथी अक लभ-वानो भडीआ रह्यो हुतो. अतुं महुडुं. उपरतुं इपातुं हुतुं. ते वेयी अक रंगीन आदीतुं थान लध आवी लंडारी (लेटीआ) ने आव्युं. अने कछुं, श्रीगुसांईलने डुलेशो नही. श्रीनाथलना लंडारमां आपजे. गुं करीअे ? हुवे तो हुं कंध लायक नथी. पथी लेटीआअे ते रंगीन थान श्रीनाथलना लंडारमां आव्युं. पथी प्रयो-धिनीना दिवसे श्रीगुसांईलअे मंडप करी देव-उत्थापन करी श्रीनाथलने उगला

सीत गयो नाहीं । बहोत लागत है । तब श्रीगुसाईंजी दूसरी अंगीठी धरि, एक अंगी करि, रजाई ऊपर उढायें । तब श्रीनाथजी ने कही मोकों सीत बहोत लागत है । तब श्रीगुसाईंजी विचारे, जो-यह वैष्णव की जडावर आई है सो अंगीकार नाहीं भई, ताके लिये सीत है । तब श्रीगुसाईंजी भंडारी कों बुलाय कें कहे, जो-जडावर किन किन की आई हैं । सो वैष्णवन के नाम सुनावो । सो भंडारी ने सुनाये । तब श्रीगुसाईंजी कहे, त्रिपुरदास की बरस के बरस आवती सो तो सुनाये नाहीं । (तब) भंडारी ने कही, महाराज ! त्रिपुरदास के द्रव्य को संकोच है । सो जडावर नाहीं आई । एक रंगी को धान आयो है । सो भंडार में मेली मरगजी परी है । (तब) श्रीगुसाईंजी कहे, उह रंगी त्रिपुरदास की बेगि ल्यावो । सो भंडारी ले आयो । तब श्रीगुसाईंजी दरजी सों कहे, बेगे डोरा डारि दुलाई सी करि देउ । सो दरजी ने डोरा डारि दुलाई करि दियो । तब श्रीगुसाईंजी उह दुलाई श्रीनाथजी कों उढाये । तब श्रीनाथजी ने कही, अब मेरो जाडो गयो, गरमी भई । सो सीतकाल में दस-पांच बेर उह दुलाई अंगीकार करि भक्तवश्यता दिखाई । यह बात त्रिपुरदास ने जानी । तब गद्गद् होइ यह पद गायो, सो पद—

ओढाव्या. त्तारे श्रीनाथल छहे, के भने ढंड घणुी लागे छे. त्तारे भीजे उगलेो ओढाव्या. त्तारे इरी श्रीनाथलये छहुं, भारी ढंड गध नही. घणुी लागे छे. त्तारे श्रीगुसांघलये भील अंगीठी धरी. ओइ अंगी इरीने (इतुं वस्र पहुरावीने) रजध उपरथी ओढावी. तोपणु श्रीनाथलये छहुं, भने ढंड घणुी लागे छे. त्तारे श्रीगुसांघलये वियायुं, के आ वैष्णवनी जडावर आवी छे ते अंगीकार नथी थध तेने माटे ढंड छे. त्तारे श्रीगुसांघल लंडारीने षोलावीने छहे, के जडावर डेानी डेानी आवी छे ? ते वैष्णवोनां नाम संलणावो. पडी लंडारीये (नाम) संलणाव्यां. त्तारे श्रीगुसांघल छहे, त्रिपुरदासनी वर्षे ने वर्षे आवती ते तो संलणावी नही. त्तारे लंडारीये छहुं, महाराज ! त्रिपुरदासने द्रव्यने संकोच छे. तेथी जडावर नथी आवी. ओइ आदीतुं रंगीन धान आव्युं छे. ते लंडारमां मेतुं शूयायेतुं पडथुं छे. त्तारे श्रीगुसांघल छहे, ते रंगी त्रिपुरदासनी जदही लावो. ते लंडारी लध आव्यो. त्तारे श्रीगुसांघल दरलने छहे जदही दोरा नाभीने दुसाध (रजध) ना जेधुं इरी हे. ते दरलये दोरा नाभीने दुसाध इरी दीधी. त्तारे श्रीगुसांघलये ते दुसाध श्रीनाथलने ओढावी. त्तारे श्रीनाथलये छहुं, हवे भारी ढंड गध. गरमी

गग आसावरी ।

नवरंग ललन बिहारी मेरो कहे, जाड़ो मोहि अधिक सुहाय ।
 पहेरि कँवाइ औढ़ि लई फरगुल, तोहू सीत सतावत आय ॥ १ ॥
 अचरज भये सुनि वल्लभ—नंदन कनक अँगीठी धरी मँगाय ।
 पुनि जिय सोचि मँगाई उड़ाई, भजि गई सीत हंसे जदुराय ॥ २ ॥
 ऐसे परम कृपाल दयानिधि, बिसरत नहीं सुधि करत सहाय ।
 “त्रिपुरारी” गिरिधारी की बातें, कहा जानें कोउ देहु बताय ॥ ३ ॥

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो—मेरो भक्त तिनकी प्रीति की वस्तु होय, सो या प्रकार मैं अंगीकार करत हों । सो भक्तिभाव को अंगीकार, वस्तुको विचार कछु नहीं ।

वार्ता—प्रसंग २—और एक समय त्रिपुरदास बाहि तुरक के साथ अटक कों गये हते । सो एक दिन सवेरे रसोइया ने कही, जो—आजु श्रीनाथजी को चरणामृत महाप्रसाद नहीं है । तब त्रिपुरदास ने कही, पहले सों क्यों न कह्यो ? बढ़ाय लेते । पाछें रसोइया सों कही, रसोई करि भोग धरि कै तुम पहुँचियो । मोकों मति बुलाइयो । यह कहिकें त्रिपुरदास अपने मनमें यह निश्चय कियो, जो—जहाँलौं देह चलेगी तहाँ लौं कामकाज करूंगो । परंतु चरणामृत महाप्रसाद बिना जल न लेउंगो । यह निर्धार करि दरबार गये । तब श्रीगोवर्द्धनधर एक बरस दस को लरिका को रूप धरि तीन थेली लेकें आये ।

थध. पछी शीयाणाभां दस-पांच वार ते दुलाई अंगीकार करी लक्ष्मणशयता देखाई. ते वात त्रिपुरदासे जणुी, त्यारे गद्गद् थधने आ पद गाथुं ते पद—

‘ नवरंग बिहारी मेरो कहे जडो मोहि अधिक सुहाय ’ (उपर जुओ)

भावप्रकाश—अभां अे जणुांथुं, के सारे भक्त, तेनी प्रीतिनी वस्तु होय ते आ प्रकारे हुं अंगीकार करूं छु. ते भक्ति भावने अंगीकार, वस्तुने विचार कंठ नहीं.

वार्ता—प्रसंग २—वणी अेक समय त्रिपुरदास तेज तुरकनी साथे ‘ अटक ’ गया हुता. त्यारे अेक दिवस सवारे रसोइयाअे कथुं, के आण श्रीनाथजने चरणामृत महाप्रसाद नथी. त्यारे त्रिपुरदासे कथुं, पहुलाथी केम न कथुं ? वधारी लेता. पछी रसोइयाने कथुं, रसोइ करी, लोग धरीने तमे पहुंअे. मने न जोलावता. अेभ कहीने त्रिपुरदासे पोताना मनभां अे निश्चय कर्यो, के ज्यां सुधी देहु बालशे त्यां सुधी काम-काज करीश. परंतु चरणामृत, महाप्रसाद बिना जल नहीं लउं. अे निर्धार

एक थेली में तो श्रीनाथजी को महाप्रसाद, एक थेली में श्रीनाथजी को चरणामृत । एक थेली में श्रीआचार्यजी को चरणामृत । यह ले उह रसोइया सों कही, यह चरणामृत महाप्रसाद की थेली त्रिपुरदास ने पठाई हैं । और कहे हैं, जब तू श्रीठाकुरजी सों पहुँचे, तब मोकों बुलाइ लीजो । तब रसोइया ने उह थेली राखी । तब लरिका अंतर्धान ह्वे गयो । पाछें रसोइयाने रसोई सों पहुँचि श्रीठाकुरजी कों भोग धरयो । तब त्रिपुरदास कों बुलावन मनुष्य दरवार पठायो । सो त्रिपुरदास सों जाई कही । तब त्रिपुरदास ने कही, मैं तो कहि आयो हतो, जो-मैं न आउंगो । तुम पहुँचियो । सो जाय कहियो, जो-तुम पहुँचि मेरी बाट मति देखियो । तब उह मनुष्य फेरि आइकें त्रिपुरदास के समाचार कहे, जो-वे न आवेंगे, तुम पहुँचियो । तब उह रसोइया ने कही, तू एक बार फिरि जा । त्रिपुरदास कों कहियो, जो-तुमने लरिका हाथ चरणामृत महाप्रसाद की थेली पठाये । और कहे, मोकों बुलाइयो । अब नाहीं क्यों करत हो ? तब फेरि मनुष्य जाई यह बात कही । तब त्रिपुरदास दरवार सों घर आयकें रसोइया सों कहे मोकों क्यों बुलायो ? मैं चरणामृत महाप्रसाद बिना जलहू न लेउंगो । तब रसोइया ने कही, तुम लरिका

इरी राजद्वार गया. त्यारे श्रीजावर्द्धनधर ऐक वरस हसना पालकृतुं इय धरी त्रणु थेदीआ लधने आव्या. ऐक थेदीमां तो श्रीनाथल्लने महाप्रसाद, ऐक थेदीमां श्रीनाथल्लतुं यरणाभृत, ऐक थेदीमां श्रीआचार्यल्लतुं यरणाभृत. ऐ लध ते रसोइ-आने कहे, आ यरणाभृत महाप्रसादनी थेदी त्रिपुरदासे मोकदी छे. अने कछुं छे, के न्यारे तू श्रीठाकुरल्लथी पहांयी ले त्यारे भने पौसावी लेने. त्यारे रसोइयाअे ते थेदी राणी. पडी पालक अंतर्धान थध गयो. पडी रसोइयाअे रसोइथी पहांयी श्रीठाकुरल्लने भोग धर्या. त्यारे त्रिपुरदासने पौसावया मनुष्य राजद्वार मोकल्ये. ते त्रिपुरदासने जध कछुं, त्यारे त्रिपुरदासे कछुं, हुं तो कही आव्या लुतो, के हुं नही आवुं. तमे पहांयअे. तेथी जध कहेने, के तमे पहांयै, भारी राह न जेता. त्यारे अे मनुष्ये पाछा आवीने त्रिपुरदासना समाचार क्हा, के अे नही आवे. तमे पहांयअे. त्यारे ते रसोइयाअे कछुं, के तू अेकवार इरी ल. त्रिपुरदासने कहेने, के तमे पालकना लुथे यरणाभृत, महाप्रसादनी थेदीआ मोकदी अने कछुं, भने पौसावअे. लवे ना केम करे छे ? त्यारे इरी मनुष्ये जधने अे वात कही. त्यारे त्रिपुरदासे राजद्वारथी धर आवीने रसोइआने कछुं, भने केम पौसाव्या ? हुं यरणाभृत, महाप्रसाद बिना

हाथ चरणामृत महाप्रसाद की थेली पठाये और कहे, मोकों बुलाइयो। अब ऐसे क्यों कहत हो? यह थेली तीनों धरी हैं। तब त्रिपुरदास देखि कैं कहें, उह लरिका कहां है? तब रसोइया ने कही, लरिका थेली दे चलो गयो। मैं कहा जानों कहाँ है? तब त्रिपुरदास विचारे; मैं श्रीठाकुरजी कों बहोत श्रम करवायो। अब तैं काहू बात को हठ न करनो। बहोत मनमें खेद कियो। सो त्रिपुरदास ऐसे भगवदीय हे।

भावप्रकाश—सो श्रीठाकुरजी रसोइया कों थेली दे गये, परंतु त्रिपुरदास कों यातें नाहीं जताये, जो मोकों लरिका भेखमें देखेंगे तो बहोत क्लेश इनकों होयगो। और त्रिपुरदास कों तो अष्टप्रहर स्वरूप को अनुभव है। तातें नाहीं जताये। और रसोइया साधारन वैष्णव हतो, तातें लरिका भेख करि अपुने स्वरूप को अनुभव कराये। इनकी वार्ता में यह सिद्धांत भयो, जो—इनकों स्वरूपासक्ति हैं। सदा श्रीठाकुरजी के सन्मुख है। और चरणामृत को स्वरूप जताये, जो—चरणामृत को हू नेम निश्चय वैष्णव राखे तो श्रीठाकुरजी वापर प्रसन्न होइ। और प्रभुको श्रम जानि दुःख न होय तो मर्यादामार्गीय होइ जाय। यों जीवन के कार्य अर्थ प्रभु श्रम करें तातें पुष्टिमार्गीय प्रसन्न नाहीं। काहेतें? पुष्टिमार्गीय

जल पणु नहीं लउं? त्यारे रसोइयाये कहुं, तमे आलकना हाथे यरणाभृत महुा-प्रसादनी थेली भोकडी अने कहुं, मने आलावणे. हवे अेम केम कहुा छे? आ थेली त्रणे धरी छे. त्यारे त्रिपुरदास जेधने कहुे, अे आलक क्यां छे? त्यारे रसोइयाये कहुं, आलक थेली दधने आदयो गयो. हुं शुं जाणुं क्यां छे? त्यारे त्रिपुरदासे विचार्युं, में श्रीठाकुरजने अहु श्रम कराव्यो. हवेथी केध वातनेा लठ न करवो. मनमां अहु ज अेद कर्यो. ते त्रिपुरदास अेवा भगवदीय हुता.

भावप्रकाश—श्रीठाकुरज रसोइयाने थेली दध गया परंतु त्रिपुरदासने अेथी नहीं जणाव्युं, के मने आलक—लेपमां जेशे तो अहु ज क्लेश अेने थशे. अने त्रिपुरदासने तो अष्टप्रहर स्वरूपनेा अनुभव छे. तेथी जणाव्युं नहीं अने रसोइया साधारण वैष्णव हुतो. तेथी आलकनेा लेप करी पोताना स्वरूपनेा अनुभव कराव्यो. आमनी वार्तामां अे सिद्धांत थयो, के आमने स्वरूपासक्ति छे. सदा श्रीठाकुरजना सन्मुख छे. अने यरणाभृतनुं स्वरूप जणाव्युं, के यरणाभृतनेा पणु नेम—निश्चय वैष्णव राखे तो श्रीठाकुरज अेना उपर प्रसन्न थाय. अने प्रभुने श्रम जणुी दुःख न थाय तो मर्यादामार्गीय थधे जय. अेम तो जेवोना कार्य अर्थे

अपने सुख अर्थ कछ् चाहना प्रभु तें राखत नाहीं । दुःख हू आवे तो सरीरको भोग विचारके भोगे । तातें वंदीखाने परे तव मनमें सोच न किये । सो विष्णु-दूत उह तुरक कों दंड दे छोड़ाये । तामें भक्तवत्सलता प्रभु प्रगट करी । और वरस के वरस आछो दगला त्रिपुरदास पठावते सो मांगिके अंगीकार किये नाहीं । और विरह प्रीति सों रंगी पठाये सो प्रीति के वस होई अंगीकार किये । तव सीत गयो । यामें यह जताये, द्रव्य को संकोच वैष्णव कों होइ सोउ प्रभु अनुग्रह करन के लिये । और द्रव्य बहोत होई सो वैष्णव के संबंध करि अंगीकार करन के लिये । काहेतें ? वरस के वरस सुंदर दगला पठावते तो संकोच में ताप भयो । जो द्रव्य भये सेवा न करेगो तो ताप कहां ते होयगो ? तातें सेवा करिवे वारो दैवी जीव होई तो द्रव्य में हू बने । और संकोच हू में बने, यह जतायो । तातें त्रिपुरदास की वार्ता को पार नाहीं है । इनने भाव हृदय में राख्यो, काहू के आगे प्रकास नाहीं कियो । तातें स्वरूप-सेवा नाहीं पधराई । मनहि करि मानसी में अष्ट प्रहर मगन रहते । संयोग रस ही को अनुभव किये । लीला हू में इनको संयोग रस है । श्रीठाकुरजी संबंधिनी सखी है । वैष्णव ॥ २३ ॥

प्रभु श्रम करे, तेथी पुष्टिभागीय प्रसन्न नथी. डेभडे पुष्टिभागीय पोताना सुष व्यर्थे कंठ याहना प्रभुथी राभता नथी. दुःष पणु आवे तो शरीरने लोण विचारीने लोणवे. तेथी वंदीखाने पड्या लारे मनमां शोक न कर्यो. लारे विष्णु-दूते ते तुरकने दंड दध छोडाव्या. तेमां प्रभुजे लक्तवत्सलता प्रकट करी. अने वर्षे वर्षे त्रिपुरदास सुंदर उगलो मोकलता ते मांगीने अंगीकार कर्यो नहीं. अने विरह-प्रीतिनी रंगी मोकली ते प्रीतिना वश थध अंगीकार करी. लारे दंड गध. अेमां अे जणुव्युं, डे द्रव्यने स दाय वैष्णवने थाय ते पणु प्रभु अनुग्रह करवाने माटे ज (छे अेम जणुवुं) अने द्रव्य धणुं होय ते वैष्णवना संबंधथी अंगीकार करवाने माटे, डेभडे वर्षे वर्षे सुंदर उगलो मोकलता तेथी संदायमां ताप थयो. जे द्रव्य थये सेवा न करे तो ताप कथांथी थशे? तेथी सेवा करवावाणो दैवी जव होय तो द्रव्यमां पणु अने अने स दायमां पणु अने, अे जणुव्युं. तेथी त्रिपुर-दासनी वार्ताना पार नथी. अेमणुे लाव हृदयमां राभयो, दधनी आगण प्रकाश नहीं कर्यो. तेथी स्वरूप-सेवा नहीं पधरावी. मनथी ज मानसी करी अष्टप्रहर मगन रहेता. संयोग रसने ज अनुभव कर्यो. लीलामां पणु अेमने संयोग रस छे. श्रीठाकुरजनां संबंधी सणी छे.

वैष्णव ॥ २३ ॥

सो त्रिपुरदास की वार्ता को पार नहीं। कहां ताई कहिये ?

*
**
**
*

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, पूरनमल, जेंवल क्षत्री, अंवालय में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में ललिताजी की सखी है। इनको नाम 'चित्रलेखा' है। श्रीस्वामिनीजी की कुंज रचना, तामें नाना प्रकार के चित्र करत हैं। सो अंवालय में एक क्षत्री के घर जन्में। सो पूरनमल को पिता हथियार बांधिके चाकरी करतो। और पूरनमल कों एक जोहरि को संग भयो। सो जवाहर को कसब सीखें। सो वरस वीस के पूरनमल भये। तब माता पिता की देह छूटी। पूरनमल को ब्याह भयो सो स्त्री साधारन मिली। और पूरनमल को मन भगवान में बालपने सों। सो जहाँ तहाँ कथा वार्ता सुने। मर्यादा की रीति चलें। स्त्री को मन ठाकुरजी में न देख्यो। तब अपने घर में न्यारी जगा करि दीनी। चार रूपैया को महिना करि दियो। द्रव्य बहोत हतो, सो मनुष्य के हाथ स्त्री कों खरच पठाय देते। आपु वासों बोलते नहीं। वैराग्य हू दृढ़ हतो।
वार्ता—प्रसंग १—सो इन पूरनमल की गांठि में द्रव्य बहोत हतो।

ते त्रिपुरदासनी वार्तानो पार नहीं ते क्यां सुधी कहीअे ? वार्ता ॥२३॥

*
**
**
*

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुलना सेवक, पूरलमल, जेभल क्षत्री, अंवालयमां रहैता, तेमनी वार्तानो भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे लीलामां ललितालनी सखी छे. अेमनुं नाम 'चित्रलेखा' छे श्रीस्वामिनीलनी कुंज-रचनामां नाना प्रकारनां चित्र करे छे. ते अंवालयमां अेक क्षत्रीना धरे जन्म्या. ते पूरलमलनो पिता हथियार बांधीने चाकरी करतो. अंने पूरलमलने अेक जेवेरीनो संग थयो. ते जेवेरातनो धंधो शिष्यां. पछी वर्ष वीसना पूरलमल थया त्यारे माता-पितानो देह छुटयो. पूरलमलनुं लग्न थयुं, ते स्त्री साधारल भणी. अंने पूरलमलनुं मन भगवानमां बालपलुथी, ते ज्यां त्यां कथा-वार्ता सांभणे. मर्यादानी रीते यावे स्त्रीनु मन श्रीठाकुरलमां न जेथु. त्यारे पोताना धरमां अलग जगा करी दीधी. चार रुपैयानो महिनो करी दीयो. द्रव्य धलुं हतु तेथी मनुष्यना हथे स्त्रीने अर्थ भोक्की आपता. पोते तेनी साथे बोलता नहीं. वैराग्य पलु दृढ़ हतो.

वार्ता—प्रसंग १—अे पूरलमलनी गांठमां द्रव्य धलुं हतुं. ते अेक समय

सो एक समय रात्रि कों पूरनमल कों दैवी जीव जानि श्रीगोवर्धनघर स्वप्न में कहे, जो-ब्रज में गोवर्धन पर्वत है। तहां हम प्रगट भये हैं। सो तू आय कें हमारो मंदिर समराव। और श्रीआचार्यजी को सेवक होउ। तब पूरनमल जागिकें सवेरे भये सगरो द्रव्य भेलो करि ब्रज में गोवर्धनघर के आइ दरसन किये। पाछें रामदास भीतरिया सों पूछे, जो-मोकों श्रीनाथजी नें मंदिर सँवराइबे की आज्ञा दीनी है, सों मैं आयो हूं। तब रामदास सदू पांडे सब कहें, जो-श्रीनाथजी तो श्रीआचार्यजी के ठाकुर हैं। सो अब दोय-चारि दिनमें श्रीआचार्यजी पधारिवे वारे हैं। तब उनसों पृच्छि के उनकी आज्ञा होइ तो मंदिर सँवराऊ। पाछें श्रीआचार्यजी पधारे। तब पूरनमल ने दंडौत करि विनती करी, जो-महाराज! मोकों सेवक करिये। और श्रीनाथजी मंदिर सँवरायवे की आज्ञा करी है। सो आपु आज्ञा देउ तो मैं सँवराउ। तब श्रीआचार्यजी पूरनमल कों नाम निवेदन कराय कहे, आगरे तें कारीगर बुलावो। सो पूरनमल ने कारीगर बुलाये। तब श्रीआचार्यजी वासों कहे, मंदिर को नकसा करि ल्यावो। तब कारीगर ने मंदिर को नकसा सिखरबंद कियो। धुजा कलस सहित। तब श्रीआचार्यजी कारीगर सों कहे, हमारे ठाकुर को

रात्रिये पूरनमलने दैवी लव लणी श्रीगोवर्धनधरे स्वप्नमां कथुं, के प्रणमां गोवर्धन पर्वत छे, त्यां अमे प्रकट थया छीये, ते तूं (त्यां) आवीने अभाइं मंदिर सिद्ध करे, अने श्रीआचार्यलने सेवक था। त्यारे पूरनमले लगीने सवार थयुं त्यारे अथुं द्रव्य लेगुं करी प्रणमां गोवर्धनधरेनां आवीने दर्शन कर्यां, पछी रामदास सीतरियाने पूछयुं, के भने श्रीनाथलने मंदिर सिद्ध कराववानी आज्ञा आपी छे, तेथी हुं आव्या छुं, त्यारे रामदास, सदुपांडे अथा कहे, के श्रीनाथल तो श्रीआचार्यलना ठाकुर छे, लमणुं पे यार द्विसमां श्रीआचार्यल पधारवावाणा छे, त्यारे अनेने पूछीने अनेनी आज्ञा होय तो मंदिर सिद्ध करावो, पछी श्रीआचार्यल पधार्या, त्यारे पूरनमले दंडवत करी विनती करी, के महाराज! भने सेवक करे, अने श्रीनाथलने मंदिर सिद्ध कराववानी आज्ञा करी छे तेथी आप आज्ञा दे, तो हुं सिद्ध करावुं, त्यारे श्रीआचार्यलने पूरनमलने नाम-निवेदन करावीने कथुं, आगराथी कारीगरने भोलावो, त्यारे पूरनमले कारीगर भोलाव्या, त्यारे श्रीआचार्यल अनेने कहे, मंदिरने नकशा करी लावो, त्यारे कारीगरे मंदिरने नकशा सिखरबंद कर्यां, धुजा-कलस सहित, त्यारे श्रीआचार्यल कारीगरने कहे, के अभाइ ठाकुरलनुं मंदिर

मंदिर सिखर बंद धुजा, कलस को नहीं। नंदराइजी के घर की नाई करो। तब कारीगर ने दूसरी वेर घर की नाई कियो। तब श्रीआचार्यजी के हस्त में नकसा को कागद आयो। तब उही सिखरबंद धुजा कलस सहित। तब श्रीआचार्यजी कहें, सिखरबंद क्यों किये ? तब कारीगर ने कही, महाराज ! हम तो घर की नाई किये हते। सो अब सिखरबंद धुजा कलस भयो ताको कारन तो हम जानत नहीं। तब श्रीआचार्यजी कहें, हम बैठे हैं, हमारे आगे नकसा तैयार करो। तब कारीगर ने घरकी नाई जैसे श्रीआचार्यजी कहे ता रीति सों कियो। जब नकसा तैयार भयो तब उही सिखरबंद धुजा कलस चक्र हूँ गयो। तब श्रीआचार्यजी जाने, जो-श्रीठाकुरजी की इच्छा यह है, जो-जगत में पूजाय बहोत जीव उद्धार करेंगे। सो देवालय की रीति यहां राखनो उचित हैं। तब श्रीआचार्यजी गिरिराजजी सों पूछे, जो-प्रभु-इच्छा तुम्हारे ऊपर मंदिर बनाइवे की है। सो मंदिर बनेगो तब लौकिक रीति सों तुमको अम बहोत होयगो। तब गोवर्धनजी कहें, हमको परम सुख है। हमारे ऊपर हमारे प्रभु के लिये, जो-करें ता पर मैं प्रसन्न हों। ताते सुख तें मंदिर के लिये लौकिक रीति सब करो। मोको कछ दुःख नहीं।

शिखरबंद ध्वज कलशतुं नहीं। नंदरायलना घरनी रीते करे। तयारे कारीगरे भील वार घरनी भाइक (नकशा) कर्यो। तयारे श्रीआचार्यलना हस्तमां नकशांनो कागण आव्यो। तयारे तेज शिखरबंद ध्वज-कलश सहित। तयारे श्रीआचार्यल कछे, शिखर-बंद केम कर्यो ? तयारे कारीगरे कछुं, महाराज ! अमे तो घरनी भाइक कर्यो हुतो। ते हुवे शिखरबंद ध्वज कलश (वाणो) थयो। तेतुं डारणु तो अमे लणुता नथी। तयारे श्री-आचार्यल कछे, अमे भेडा छीअे, अमारी आगण नकशा तैयार करे। तयारे कारीगरे घरनी भाइक नेम श्रीआचार्यलअे कछुं, ते रीतिथी कर्यो। नयारे नकशा तैयार थयो तयारे तेज शिखरबंद ध्वज-कलश यकवाणो थय गयो। तयारे श्रीआचार्यलअे लणुतुं, के श्रीठाकुरलनी इच्छा अे छे, जे जगतमां पूजय घणु लयानो उद्धार करशे। तेथी देवालयनी रीति अहीं राखनी उचित छे। तयारे श्रीआचार्यल श्रीगिरिराजलने पूछे, के प्रभु-इच्छा तमारा एपर मंदिर बंधायवानी छे। ते मंदिर बनशे तयारे लौकिक रीतिथी तमने अम घणु थयो। तयारे गोवर्धनल कछे, अमने परम सुख छे। अमारा एपर अमारा प्रभुने भाटे जे करे ते एपर हुं प्रसन्न छुं। तेथी सुभथी मंदिरना भाटे लौकिक रीति अधी करे। मने कंध दुःख नथी।

भावप्रकाश—ताहीतें, पाछें श्रीगुसांईजी (हू) वैष्णव कों सेवा दरसनार्थ गोवर्द्धन पर चढ़न देते । और जहां तहां बिना सामग्री, सेवा बिना, चढ़न की आज्ञा नाहीं ।

तब श्रीआचार्यजी पूरनमल कों आज्ञा दीनी, वेगे मंदिर सँवरावो । सो मंदिर की नींव खोदी । सो नींव भरि गई, इतने में पूरनमल को द्रव्य सब निघट गयो । तब पूरनमल कमायवे कों गये ।

भावप्रकाश—सो द्रव्य घट्यो ताको अभिप्राय यह है, जो-पूरनमल के पिता को कमायो द्रव्य हतो । सो पिता के मरे पुत्रकी सत्ता होइ । तातें पूरनमल की सत्ता जानिकें श्रीनाथजी अंगीकार किये । परंतु लौकिक मनोरथ करि पिता द्रव्य कमायो हतो । तातें कार्य सिद्ध न भयो । और जो यही द्रव्य सों मंदिर बने तो वित्तजा सेवा पूरनमल की सिद्ध न होई । तातें द्रव्य घट्यो । तब पूरनमल मंदिर की सेवा निमित्त कमायवे कों गये । यामें यह जताये, वैष्णव कों व्योपार करना तो भगवद्सेवा, गुरुसेवा और वैष्णव सेवा को मनोरथ करि करना । तब ही द्रव्य ते सेवा सिद्ध होई । तब वित्तजा सेवा कहिये ।

पाछें पूरनमल गयो तब और वैष्णव राजसी कितनेन कही,

भावप्रकाश—तेथी न पछी श्रीगुसांईजी (पणु) वैष्णुवोने सेवा-दर्शनार्थ गोवर्द्धन उपर चढ़ना देता. अने जयां त्यां बिना सामग्री सेवा बिना चढ़वानी आज्ञा नथी.

त्यारे श्रीआचार्यजीये पूरनमलने आज्ञा आपी, नददी मंदिर सिद्ध कराव. पछी मंदिरनी नीम जोदी. ते नीम बराध गछ अटलाभां पूरनमलतुं द्रव्य पछुं घटी गयुं. त्यारे पूरनमल कमाववाने गया.

भावप्रकाश—द्रव्य घटयुं तेना अभिप्राय अये छे, इ पूरनमलना पितातुं कमावेछुं द्रव्य हुतुं. ते पिताना मरे पुत्रनी सत्ता थाय. तेथी पूरनमलनी सत्ता जालीने श्रीनाथजीये अंगीकार कयुं. परंतु लौकिक मनोरथ करी पिता द्रव्य कमायो हुतो तेथी कार्य सिद्ध न थयुं. अने जे आ न द्रव्यथी मंदिर अने तो पूरनमलनी वित्तज सेवा सिद्ध न थाय. तेथी द्रव्य घटयु. त्यारे पूरनमल मंदिरनी सेवा निमित्त कमाववा गया. असां अये नष्टाअयुं, वैष्णुवने वेपार करवो ते भगवद्सेवा, गुरुसेवा अने वैष्णवसेवानो मनोरथ करीने करवो. त्यारे न द्रव्यथी सेवा सिद्ध थाय. त्यारे वित्तज सेवा (थछ) कहेवाय.

पछी पूरनमल गया त्यारे पीन वैष्णव राजसी केलाक हुता (तेभछे) कछुं,

जो-आज्ञा होय तो हम मंदिर सँवरावें । तब श्रीआचार्यजी कहें,
पूरनमल आय के सँवरावेगो ।

भावप्रकाश—सो याहीतैं, जो-प्रभुने पूरनमल कां मंदिर संवराइवे की
आज्ञा दई हैं । सो पूरनमल को मनोरथ सिद्ध करावनो है ।

ता पाछें पूरनमल जवाहर को कसब करि थोड़े दिनमें बहोत
कमाय कें आयें ।

भावप्रकाश—यामें वैष्णव कों यह जताये, जो-कहू सेवा संबधी
मनोरथ करि ब्योपार करिये । और कार्य सिद्ध होनहार न होई तो ब्योपार हू
सिद्ध न होई । तब वैष्णव सब भगवद् इच्छा माने । हरख सोक न करें । प्रभुकों
जितनो करनो होइ तितनो सहज ही में सिद्ध होइ ।

सो द्रव्य लेके पूरनमल आये । मंदिर सिद्ध कराये । तब
श्रीआचार्यजी आछो मुहूरत देखि कें श्रीगोवर्धनधर कों मंदिर में
पधराये । अक्षयतृतीया के दिन । तब पूरनमल ने बहोत द्रव्य
खरच कियो । आभूषन वस्त्र सामग्री भेट आदि । तब श्रीआचा-
र्यजी प्रसन्न होइकें पूरनमल सों कहें, जो-तेरो मनोरथ होइ सो राखे
मति । सब करियो । तब पूरनमल नें श्रीआचार्यजी सों विनती करी,

के आज्ञा होय तो अपने मंदिर सिद्ध करावीअे । त्तारे श्रीआचार्यअे कहे, पूरनुमल
आवीने सिद्ध करावशे ।

भावप्रकाश—ते अेथी, ठे प्रभुअे पूरनुमलने मंदिर सिद्ध करावानी
आज्ञा दीधी छे । ते पूरनुमलने मनोरथ सिद्ध कराववे छे ।

ते पछी पूरनुमल नवेशतने धंधा करी थाडा द्विषसमां धरुं कमावीने आव्या ।

भावप्रकाश—अेमां वैष्णुवोने अे नृणांयुं, ठे कथ सेवा संंधी
मनोरथ करी वेपार करीअे अने कार्य सिद्ध होवावाणुं न होय तो वेपार पणु
सिद्ध न थाय । त्तारे वैष्णुव अंधुं लगवदिच्छा माने । हरष-शोक न करे । प्रभुने
नेटलु करवुं होय तेटलुं सहजमां न सिद्ध थाय ।

ते द्रव्य लधने पूरनुमल आव्या । मंदिर सिद्ध कराव्युं । त्तारे श्रीआचार्यअेअे
सुंदर सुहूर्त नेधने श्रीगोवर्धनधरने मंदिरमां पधराव्या । अक्षयतृतीयाने द्विषस
(होते) । त्तारे पूरनुमले अहु द्रव्य अर्या क्युं । आभूषण वस्त्र सामग्री भेट आवदि । त्तारे
श्रीआचार्यअे प्रसन्न थधने पूरनुमलने कहे, के त्तारे मनोरथ होय ते पाकी राभीश
नहीं । अंधुं करणे । त्तारे पूरनुमले श्रीआचार्यअेने विनंती करी, महाराजधिराज ।

महाराजाधिराज ! मेरो यह मनोरथ है, जो-अपने हाथ सों अति सुगंध को अरगजा श्रीअंग में समर्पौं । तब श्रीआचार्यजी कहें, सुखेन मनोरथ करो । तब पूरनमल ने अत्यंत सुगंध को अरगजा सिद्ध करिकें सर्वांग में लगाये । बहोत आनंद पाये । तब श्रीआचार्यजी श्रीअंग को प्रसादी उपरना पूरनमल कों उढाये । पाछें द्रव्य बहोत बच्यो । सो पूरनमल ने श्रीआचार्यजी की भेट कियो ।

भावप्रकाश—सो पूरनमल को मनोरथ यातें भयो, जो-पूरनमल कों लीला में 'चित्रलेखा' सखी अपने स्वरूप को ज्ञान भयो । तब श्रीआचार्यजी कों प्रसन्न जानि मनमें विचार कियो, जो-मैं मंदिर संवरायो सो सेवा तो लीला हू में मिलत हैं । कुंज संवारिवे की । परंतु श्रीआचार्यजी मुख्य श्रीस्वामिनीजी रूप हैं । तिनकी कृपा तें कछु श्रीअंग की सेवा करि लेउ, यह विचारी । अरगजा लेपन की सेवा श्रीस्वामिनीजी अपने हाथ सों प्रभु कों समर्पत हैं, संयोग समय । और विप्रयोग समय ललिताजी श्रीठाकुरजी कों समर्पत हैं । काहेतें ? अरगजा श्रीस्वामिनीजी के श्रीअंग के भाव सों है । सो श्रीस्वामिनीजी की कृपा विना यह सेवा कहां मिले ? सो श्रीआचार्यजी की प्रसन्नता सों पूरनमल को मनोरथ सिद्ध भयो । और श्रीआचार्यजी प्रसादी उपरेना अपनो उढाये । तामें सगरो सरीर पूरन-

भारे आ मनोरथ छे, के पोताना हाथथी अहु सुगंधीवाणो अरगज श्रीअंगमां समर्पुं । तारे श्रीआचार्यजी छे, सुखेथी मनोरथ करे । तारे पूरनमले अत्यंत सुगंधीना अरगज सिद्ध करिने सर्वांगमां लगाव्यो । अहु ज आनंद पाभ्या । तारे श्रीआचार्यजी अश्रीअंगना प्रसादी उपरना पूरनमलने आढाव्यो । पछी द्रव्य बचुं अथुं । ते पूरनमले श्रीआचार्यजीने लेउ कथुं ।

भावप्रकाश—ते पूरनमलने मनोरथ अथी थयो, के पूरनमलने (पोते) लीलामां चित्रलेखा सखी (छे अथे) पोताना स्वस्वपुं ज्ञान थयुं । तारे श्रीआचार्यजीने प्रसन्न जण्णिने मनमां विचार कर्यो, के में मंदिर सिद्ध कराव्यु ते सेवा तो लीलामां ये भणे छे । कुंज समहारवानी । परंतु श्रीआचार्यजी मुख्य श्रीस्वामिनीजी रूप छे । तेमनी कृपाथी कछु श्रीअंगनी सेवा करी लठे अथे विचार्युं । अरगज लेपननी सेवा, श्रीस्वामिनीजी पोताना श्रीहस्तथी प्रभुने समर्पे छे, संयोग समय । अने विप्रयोग समये ललिताजी श्रीठाकुरजीने समर्पे छे । कुमहे ? अरगज श्रीस्वामिनीजीना श्रीअंगना भावथी छे । ते श्रीस्वामिनीजीनी कृपा विना असे सेवा कथां भणे ? तेथी श्रीआचार्यजीनी कृपाथी पूरनमलने मनोरथ सिद्ध

मल को अलौकिक मानसी सेवा योग्य हे गयो । तातें पूरनमल भगवद्सेवा नाहीं पधराई । मानसी में मगन भये । मंदिर संवराये तामें वित्तजा सेवा सिद्ध भई । यामें यह जताये, जो-भाव करिकें एकहि सेवा में फल भयो । एक दिन अरगजा लगाये तन करि । धन करि मंदिर संवराये । तातें भाव विना जन्म भरि तनुजा वित्तजा सेवा करत हैं परंतु मानसी फल रूप पावत, नाहीं । सो प्रीति सों एकही वार में फल पाये । तातें प्रीति सर्वोपरि फलकों सिद्ध करत है । यह जताये ।

पाछें वरस के वरस श्रीगुसांईजी पूरनमल को प्रसादी दगला पठावते । वार्ता ॥ २४ ॥

भावप्रकाश—सो दगला श्रीगोवर्धनधर को स्वरूप है । सो पूरनमल पास आपुही पधारते । सो पूरनमल के हृदय में अगाध भाव है । अष्टप्रहर लीला में मगन रहत हैं । तातें इनकी वार्ता को भाव कहां ताई कहिये ? ऐसे भगवदीय पूरनमल है । जो-श्रीनाथजी आप ही प्रमेय बल तें घर में दरसन दे मंदिर संवरायवे की आज्ञा दिये ।

✽

✽

✽

थये अने श्रीआचार्यजीये पोतानो प्रसादी उपरणा आढाव्यो. तेमां पूरणुमलनुं अंधुं शरीर मानसी सेवा योग्य अलौकिक थध गयुं. तेथी पूरणुमले भगवद्सेवा न पधरावी. मानसीमां मगन थया. मंदिर सिद्ध कराव्युं तेमां वित्तज सेवा सिद्ध थध. जेमां जे जणाव्युं, ठे लाव करीने जेक पणु सेवा (करी ते) मां इल थयुं. जेक दिवस अरगज लगव्युं शरीरथी. धन करी मंदिर सिद्ध कराव्यु. तेथी लाव विना जन्म भर तनुज वित्तज सेवा करे छे परंतु इल इप मानसी मणती नथी. ते प्रीतिथी जेक ज वारमां इण मज्युं. तेथी प्रीति सर्वोपर इणने सिद्ध करे छे. जे जणाव्युं.

पछी वर्षना वर्ष श्रीगुसांइजी पूरणुमलने प्रसादी उगलो मोकलता.

भावप्रकाश—ते उगलो श्रीगोवर्द्धनधरनुं स्वरूप छे. ते पूरणुमल पासे आपज पधारता. ते पूरणुमलना हृदयमां अगाध लाव छे. अष्ट प्रहर लीलामां मगन रहे छे. तेथी जेमनी वार्तानो लाव कथां सुधी इह्नीजे ? जेवा भगवदीय पूरणुमल छे, (ठम) जे श्रीनाथजीये पोते ज प्रमेय बलथी धरमां दर्शन दधने मंदिर सिद्ध करवानी आज्ञा आपी. वार्ता ॥ २४ ॥

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, जादवेंद्रदास कुम्हार, महावन में रहते, तिनकी घाती को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में नंदरायजी की गाय हुती । तिनमें विजार हे । इनको नाम 'मदोन्मत्ता' सब कोऊ कहते । कोऊ विजार इनके संग आय न सकतो । श्रीठाकुरजी बहोत इनकों खवायो हैं । जमुनाजी में न्हावायो हैं । सो महावन में एक कुम्हार के प्रगटे । सो नारायनदास ब्रह्मचारी के घर मृत्तिका के पात्र ल्यावते । सो नारायनदास दैवी जानि जादवद्रदास को एक दिन महाप्रसाद लिवायो । तब जादवेंद्रदास की बुद्धि निर्मल ह्वे गई । सो नारायनदास सो कहें, मोकों श्रीआचार्यजी को सेवक करावो । तब नारायनदास ने कही, तुम्हारी ज्ञाति कुम्हार हैं । सो कुम्हार को संग तुम तें छूटे तो सेवक करावें । तब जादवेंद्रदास नें कही, यह मैं पहिले ही मन में धारन करि लियो है । जो—आजु पाछें मा—त्राप के हाथ सो न खानो, न जल लेनो । श्रीआचार्यजी के वैष्णव के हाथ को लेउंगो । परंतु अब अपुने घर को मुंह न देखोंगो । यह सुनिकें नारायनदास प्रसन्न होयके कहें, तू हमारे घर में रहियो । श्रीआचार्यजी पधारेंगे तब सेवक हुजियो । सो नारायनदास के घर ही में रहते । लकड़ी छाना ले आवते । पाछें श्रीआचार्यजी

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजना सेवक, यादवेंद्रदास कुम्हार, महावनभां रहते, तेमनी घातीना भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे लीलामां नंदरायजनी गायो हुती, तेभां आपदा छे. अेतुं नाम मदोन्मत्ता पधा कहेता. डोअ आपदा अेनी साथे आनी न शकते. श्रीठाकुरजिअे अेने अहु न पवडाअ्युं छे. श्रीजमनाजिमां न्हावायो छे. ते महावनभां अेक कुम्हारने त्यां जन्म्या. ते नारायणदास ब्रह्मचारीना धरे माटीनां पात्र लावता. तेथी नारायणदासे दैवी ज्ञाती यादवेंद्रदासने अेक दिवस महाप्रसाद लेवडाअ्यो. सारे यादवेद्रदासनी बुद्धि निर्मल थध गर्ठ. ते नारायणदासने कहे, मने श्रीआचार्यजिनो सेवक करावो. सारे नारायणदासे कहु, तमारी ज्ञाति कुम्हारनी छे. ते कुम्हारने संग तमने छूटे तो सेवक करावीअे. सारे यादवेद्रदासे कहुं, हे अे में पहेलां न मनभां धारण करी लीधुं छे, न आन पछी मा—आपना हाथतुं न आवुं, न जल लेवु. श्रीआचार्यजिना वैष्णवना हाथतुं लधश. परंतु हुने मारा धरनुं भडोडु नही जेठ. अे सांखणीने नारायणदास प्रसन्न थधने कहे, तु आमारा धरभां रहेजे. श्रीआचार्यजि पधारें सारे सेवक थजे. सारथी ते नारायणदासना धरभां न रहेता. लाकडां छाणा वीणीने लध आवता. पछी श्रीआचार्यजि महावन पधार्या,

महावन पधारें। तब नारायणदास के घर उतरे। तब नारायणदास नें विचार करिकें जादवेंद्रदास कों सेवक कराये। पाछें, आछें श्रीआचार्यजी के सेवक भये।

वार्ता-प्रसंग १—सो ये जादवेंद्रदास श्रीआचार्यजी के परम कृपापात्र भगवदीय हते। सो जब श्रीआचार्यजी महाप्रभु तथा श्रीगुसांईजी आपु परदेस कों पधारते तब ये परदेस संग रहते। तब जादवेंद्रदास इतनी वस्तु ले चलते। एक कनात, एक हडवाई, दोई चारि दिन को सीधो। एक छोटी रावटी। और मारग में वैष्णव हार चलते सो मंजिल पर जाय सगरी परचारगी करते। रात्रि कों चौकी पहरा देते। ऐसी सेवा करते।

वार्ता-प्रसंग २—और एक समय श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल हते। सो एक दिन पहर डेढ़ रात्रि गई हती। फागुन वदि ७ को दिन हतो। ता समय श्रीगुसांईजी नें श्रीमुख सों कही, जो-या समय मंदिर की नीम खोदी जाय तो भलो हद होय। ऐसो सुहूर्त है। यह कहिकें आपु तो पोढ़े।

और जादवेंद्रदास तत्काल नीम खोदी। सो दोय प्रहर में सब खोदि कें माटी को ढेर कर्यो। पाछें श्रीगुसांईजी जागे तब देखें। तब कहें, यह माटी कैसी है? तब वैष्णव नें कही, जादवेंद्रदास ने

त्यारे नारायणदासना धरे उतर्या। त्यारे नारायणदासे नियार करीने यादवेंद्रदासने सेवक कराव्या, पछी सारा श्रीआचार्यजीना सेवक थया।

वार्ता-प्रसंग १—ये यादवेंद्रदास श्रीआचार्यजीना परम कृपापात्र भगवदीय हुता। न्यारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु तथा श्रीगुसांईजी पाते परदेश पधारता त्यारे ते परदेश साथे रहता। त्यारे यादवेंद्रदास आरटी वस्तु लभ यासता। अेक कनात, अेक हडवाई, ये चार दिवसतुं सीधुं, अेक नानी रावटी। अने मार्गमां वैष्णव थाडीने यासता त्यारे मुकाम उपर नभ भधी परचारगी करता, रात्रिना चौकी पहरे देता। अेवी सेवा करता।

वार्ता-प्रसंग २—वणी अेक समय श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल हुता। ते अेक दिवस प्रहर ३० रात्रि गध हुती। द्वागुल वदी ७ ना दिवस हुतो। ते समये श्रीगुसांईजी श्रीमुख सों कहुं, के आ समय मंदिरना पाये भोघो नय तो सारे हद थाय। अेधुं सुहूर्त छे। अेभ कहीने पाते तो पोढया।

अने यादवेंद्रदासे तत्काल पाये भोघो। ते जे प्रहरमां अेधुं भोदीने भाटीना हगले क्ये। पछी श्रीगुसांईजी नग्या त्यारे अेधुं। त्यारे कहुं, आ माटी केवी छे?

सब खोदी है। तब श्रीगुसाईंजी जादवेंद्रदास सों पूछें यह तुमने खोदी है ? तब जादवेंद्रदास ने कही, जो-आप श्रीमुख सों कही, वाही समय मंदिर की नीम खोदी है। पाछें राजमजूर कारीगर ने एक महिना में नीम भरी। इतनी खोदी। ऐसे सामर्थ्यवान हते। पाछें मंदिर बन्यो, श्रीनवनीतप्रियजी आदि विराजें। श्रीगुसाईंजी जादवेंद्रदास के ऊपर बहोत प्रसन्न भये।

वार्ता-प्रसंग ३—और श्रीनाथजीद्वार जलको कलालौ जानि रुद्रकुंड के पास एक कूआ अपने हाथ सों खोदयो। ताकी माटी पकाय पक्को बांधे। परंतु जल खारी निकस्यो। तब जादवेंद्रदास गंगाजी गये। तहां जाय हाथ सों गंगाजीमें जाय तर्पन करन लागे। और बिनती कीनी, जो-ऐसो जल मिष्ट करो। सो जब जल मिष्ट भयो जाने तब निकसि आये।

वार्ता ॥२५॥

भावप्रकाश—याको कारन यह, जो-सगरे जगत में उत्तम गंगाजल निर्दोष हैं। तातें श्रीनाथजी की सेवा में निर्दोष पदार्थ विनियोग होय। तातें गंगाजी गये। सो जादवेंद्रदास श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। सो इनकी वार्ता कहां ताई कहिये।

वैष्णव ॥२५॥

✽

✽

✽

त्यारे वैष्णुवे कछु, यादवेंद्रदासे षधी भोदी छे। त्यारे श्रीगुसांभल यादवेंद्रदासने पूछे, आ तमे भोदी छे ? त्यारे यादवेंद्रदासे कछु, के आपे श्रीमुखी कछु, ते न सभये मंदिरना पायो भोद्यो छे। पछी राज, मजूर, कारीगरे अे अेक महिनामां पायो लयो। अेरदी भोदी। अेवा सामर्थ्यवाण हुता। पछी मंदिर बन्युं, श्रीनवनीतप्रियल आदि बिरान्या। श्रीगुसांभल यादवेंद्रदासना उपर अहु न प्रसन्न थया।

वार्ता-प्रसंग ३—भीनुं श्रीनाथलद्वारमां जलनी भेय नाली रुद्रकुंडनी पास अेक कुवा पोताना हाथथी भोद्यो। तेनी माटी पक्की पाके आंध्यो। परंतु जल आइं निकल्युं। त्यारे यादवेंद्रदास गंगाल गया। त्यां नभ हाथथी गंगालमां उला रही तर्पण करवा लाग्या। अने बिनती करी, के आपुं जल भीकुं करे। पछी न्यारे जल भीकुं थयुं नाल्युं त्यारे निकली आल्या।

वार्ता ॥२५॥

भावप्रकाश—अेतुं कारण अे, के अथा जगतमां उत्तम गंगाजल निर्दोष छे। तेथी श्रीनाथलनी सेवामां निर्दोष पदार्थ विनियोग थाय तेथी गंगाल गया। ते यादवेंद्रदास श्रीआचार्यलना अेवा कृपापात्र भगवदीय हुता। तेमनी वार्ता कयां सुधी कहीअे।

वैष्णव ॥२५॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, गुसाईंदास सारस्वत, मथुरा में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में गिरिराज पास गोविंदकुंड पर कदंब को वृक्ष है तहां के सूवा है। सो वेणुनाद श्रीठाकुरजी करते तब नादरस अधरामृत पान करते। सो ये गुसाईंदास पूरब में सारस्वत ब्राह्मन के घर जन्में। सो बरस चौदह के भये। तब एक ब्राह्मन के मुख तें श्रीभागवत की पारायन और भगवद्-गीता सुने। सो विरक्त होय तीरथ करन लागें। सो तीरथ करत चौबीस बरस के भये। सो मथुरा में आय निकसे। तब विश्रांत घाट पर श्रीआचार्यजी संध्यावंदन करत हते। सो दरसन करि गुसाईंदास के मन में आई, जो—मैं अकेलो तीरथ बहोत कियो। परंतु अब इनकी सरन होंउ। तब श्रीआचार्यजी सों विनती किये, महाराज ! मोकों सेवक करो। तब श्रीआचार्यजी कहे, तेरो मन तीरथ करन में है सो सेवक होइ के कहा करेगो ? तब गुसाईंदास ने कही, महाराज ! आप, जो—आज्ञा करोगे सो करूंगो। अब तीरथ करत करत हारयो। अब मथुरा में एक ठोर करिकें रहोंगो। तब श्रीआचार्यजी गुसाईंदास कों नाम निवेदन कराये। पाछें कहे, भगवद् सेवा करो। तब कहें, महाराज ! आप श्रीठाकुरजी पधराय देउ

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुना सेवक, गुसांघदास सारस्वत (प्राज्ञा) मथुराभां रहता, तेमनी वार्ताना भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे लीलाभां गिरिराज पास गोविंदकुंड (छे) त्यां कदंबनुं वृक्ष छे त्यांना पोपट छे। ते अ्यारे श्रीठाकुरजी वेणुनाद करता सारे नादरस—अधरामृतनुं पान करता। ते गुसांघदास पूर्वाभां सारस्वत प्राज्ञाणा धरे जन्म्या। ते वर्ष थैदना थया। सारे अेक प्राज्ञाणा भुअथी श्रीभागवतनुं पारायण अने भगवद्गीता सांखणी। पछी विरक्त थध तीर्थ करवा लाग्या। ते तीर्थ करतां चौबीस वर्ष थयां। पछी मथुराभां आवी निकज्या। सारे विश्रांतघाट उपरं श्रीआचार्यजी संध्यावंदन करता हुता। ते दर्शन करी गुसांघदासना मनभां आण्यु, उ में अेकडे तीर्थ धयां कर्या। परंतु हुवे अेमनी शरणे थठं। सारे श्रीआचार्यजीने विनती करी, महाराज ! मने सेवक करे। सारे श्रीआचार्यजी कहे, ताईं मन तीर्थ करवाभां छे। ते सेवक थधने शु करीश ? सारे गुसांघदासे कहु, महाराज ! आप ने आज्ञा करशे ते करीश। हुवे तीर्थ करतां करतां हार्यो। हुवे मथुराभां अेक जग्या करीने रहीश। सारे श्रीआचार्यजीअे गुसांघदासने नाम—निवेदन कगण्यु। पछी कहे, भगवद्सेवा करे। सारे कहे, महाराज ! आप श्रीठाकुरजी

तिनकी सेवा करूँ। सो एक वैरागी पास चतुर्भुज श्याम स्वरूप श्रीठाकुरजी को हतो। सो उह वैरागी श्रीआचार्यजी को स्वरूप दें द्वारिका को गयो। तब श्रीआचार्यजी पंचामृत स्नान कराय गुसाईदास के माथे पधराये।

वार्ता-प्रसंग १—सो गुसाईदास मथुरा में एक घर ले तहां सेवा करन लागे। सो श्रीठाकुरजी गुसाईदास को सानुभावता जतावन लागे। सो एक वैष्णव गुसाईदास के घर श्रीठाकुरजी को नित्य दरसन करिवे को आवें। सो मनमें श्रीठाकुरजी सो प्रार्थना करें, जो-महाराज ! मेरे माथे पधारो तो मैं सेवा करूँ। या प्रकार मनमें नित्य विनती करें। तब गुसाईदास उह वैष्णव सो कहें, जो-तुम मेरे पास रहो तो सेवा करो। तब उह वैष्णव ना कही। वाके मन में यह जो अकेलो स्वतंत्र सेवा की कहे। तातें उह वैष्णव मान्यो नाहीं। पाछें कछुक दिन में श्रीठाकुरजी गुसाईदास को प्रेरयो। तब गुसाईदास उह वैष्णव सो कहे, अब तुम श्रीठाकुरजी को पधरावो, सेवा करो। तब उह वैष्णव नें कही, तुम कहा करोगे ? तब गुसाईदास ने कही, मैं षट्ठीकाश्रम जाउंगो। तहां मेरी देह छूटेगी। तब उह वैष्णव ने कही, कदाचित् देह भगवद् इच्छा तें न छूटें, फेर आवो तब ? प्रभु की गति जानि न जाय। तब गुसाईदास नें

पधरावी हो तेमनी सेवा करूँ। ते ओक वैरागी पास चतुर्भुज श्याम स्वरूप श्रीठाकुरजी को हतो। ते वैरागी श्रीआचार्यजी ने स्वरूप आपी दारका गयो। तयारे श्रीआचार्यजी पंचामृत स्नान करावी गुसाईदासने माथे पधराव्या।

वार्ता-प्रसंग १—ते गुसाईदास मथुरा में ओक घर लख त्यां सेवा करवा लाग्या। तयारे श्रीठाकुरजी गुसाईदासने सानुभावता जताववा लाग्या। तयारे ओक वैष्णव गुसाईदासना घर श्रीठाकुरजीनां नित्य दर्शन करवाने आवे। ते मनमां श्रीठाकुरजीने प्रार्थना करे, हे महाराज ! मेरा माथे पधारे तो हुं सेवा करूँ। या प्रकारे मनमां नित्य विनती करे। तयारे गुसाईदास ते वैष्णवने कहे, हे तमे भारी पास रहे तो सेवा करे। तयारे ते वैष्णवने ना कही। तेना मनमां ये, हे अकेलो स्वतंत्र सेवाहुं कहे। तेही ते वैष्णवने मान्यो नही। पछी केला दिवसमां श्रीठाकुरजीने गुसाईदासने प्रेरणा करी। तयारे गुसाईदास ते वैष्णवने कहे, हुं तमे श्रीठाकुरजीने पधरावो, सेवा करे। तयारे ते वैष्णवने कहे, तमे शुं करे ? तयारे गुसाईदासने कहे, हुं षट्ठीकाश्रम जाउंगो। त्यां मेरी देह छूटेगी। तयारे ते वैष्णवने कहे, कदाचित् देह भगवद् इच्छा तें न छूटो, फेर आवो तब ?

कही, प्रभु ऐसी न करेंगे। और कदाचित् मैं आजंगो तो तुम्हारे द्वारें रहूंगो। श्रीठाकुरजी तो तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हैं। मैं न पधरा-जंगो। एक दरसन करि लेजंगो। तब उह वैष्णव ने श्रीठाकुरजी को पधराय भली भांति सों सेवा करन लाग्यो। और गुसाईंदास बद्रीकाश्रम गये। सो विरह करि देह छोड़ी। सो गुसाईंदास श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे।

भावप्रकाश—सो देह छोड़ि लीला में सुवा भये।

पाछें कछुक दिन में गुसाईंदास की देह छूटन के समाचार उह वैष्णव को आये। तब कह्यो, श्रीआचार्यजी के वैष्णव झूठ न बोलें, देह छोड़ी। पाछें मन लगाय कें सेवा करन लाग्यो। वार्ता ॥२६॥

भावप्रकाश—सो गुसाईंदास कछ दिन भगवद् सेवा करी। तब अपने स्वरूप को ज्ञान भयो। तब श्रीठाकुरजी जताये, जो-अब तू या वैष्णव के माथे पधराय बद्रीकाश्रम जा। तहां विरह करि देह छोड़ि लीला में पंछी होइगो। तेरो साधन सिद्ध है चुक्यो। तब गुसाईंदास गये। और उह वैष्णव श्रीचंद्रावलिजी की सखी लीला में हती। “चतुष्ट” इनको नाम हतो। सो मथुरा में एक सनोढ़िया के घर जन्म पायो। सो माता पिता स्त्री सब मरि गये। अकेलो रह्यो।

त्यारे ? प्रभुनी गति नष्टी न नथ। त्यारे गुसांछदासे कछुं, प्रभु अेषुं नहंई करे। अने कदाचित हुं आवीश तो तभारा द्वारे (पखो) रहीश। श्रीठाकुरल तो तभारा उपर प्रसन्न छे। हुं पधरावीश नहंई, अेक दर्शन करी लधश। त्यारे ते वैष्णव श्रीठाकुरलने पधरावी सारी रीतिथी सेवा करवा लाग्यो। अने गुसांछदास बद्रीकाश्रम गया। ते विरह करी देह छोड्यो। ते गुसांछदास श्रीआचार्यलना अेवा कृपापात्र लगवदीय हुता।

भावप्रकाश—ते देह छोडी लीलाभां पोपट थया।

पछी डेटलाक दिवसभां गुसांछदासनी देह छुटवाना समाचार ते वैष्णव पासे आव्या। त्यारे कछुं, श्रीआचार्यलना वैष्णव लुकुं न भोले। देह छोडी। पछी मन लगाडीने सेवा करवा लाग्यो।

वार्ता ॥२६॥

भावप्रकाश—ते गुसांछदासे डेटलाक दिवस लगवद्सेवा करी। त्यारे पोताना स्वप्नुं ज्ञान थयुं। त्यारे श्रीठाकुरलने नष्टाव्युं, डे हवे तू आ वैष्णवना माथे पधरावी बद्रीकाश्रम न। त्यां निरह करीने देह छोडी लीलाभां पक्षी थईश। ताइं साधन सिद्ध थई चूक्यु। त्यारे गुसांछदास गया। अने ते वैष्णव श्रीचंद्रावलीलनी सखी लीलाभां हुती। यतुरा अेतुं नाम हुतुं। ते मथुराभां अेक

सो श्रीआचार्यजी को सेवक हतो । सो भगवद् सेवा को ताप बहोत । सो एक दिन श्रीठाकुरजी स्वप्न में कहें, गुसाईंदास के ठाकुरजी को नित्य दरसन करियो । सो श्रीठाकुरजी तेरे माथे पधारेंगे । उह वैष्णव आय गुसाईंदास के घर नित्य दरसन करतो । सो श्रीठाकुरजी कृपा करिकें पधारे । तातें मूल में जेसो जीव होय ताही प्रकार सों साधन वनेतें फल होई । वैष्णव ॥२६॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, माधवभट्ट कास्मीरी, कास्मीर में रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये माधवभट्ट लीला में जसोदाजी की दासी है । सो परम चतुर है । श्रीठाकुरजी की सैया विछावनो, जल ले आवनो । कुमारि राधा सहचरी के संग में है । 'रत्ना' इनको नाम है ।

वार्ता-प्रसंग १—सो माधवभट्ट कास्मीर में एक ब्राह्मन के घर प्रगटे । सो प्रथम माधवभट्ट केसवभट्ट के सेवक भये । सो केसवभट्ट कास्मीर में कथा कहते । सो केसवभट्ट श्रीआचार्यजी के पास मिलन को आये । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीसुबोधिनीजी कहते ।

सनेाडियाना धरे जन्म पाये। पछी माता-पिता स्त्री पधां मरी गयां। अट्टो रहो, ते श्रीआचार्यजीनो सेवक हतो, ते लगवद्सेवानो ताप धरु। ते अेक द्विवस श्रीठाकुरजी स्वभमां कहे, गुसांघदासना ठाकुरजीनां नित्य दर्शन करत। ते श्रीठाकुरजी तारे माथे पधारसे। ते वैष्णव आवी गुसांघदासना धरे नित्य दर्शन करतो। पछी श्रीठाकुरजी कृपा करीने पधार्यां। तेथी भूणमां जेवो जव होय तेज प्रकानुं साधन अन्याथी फल थाय। वैष्णव ॥२६॥

✽

✽

✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना सेवक, माधवलट्ट कास्मीरी, कास्मीरमां रहेता, तेमनी वार्ताको भाव कहिये—

भावप्रकाश—ये माधवलट्ट लीलामां जसोदाजीनी दासी छे ते परम चतुर छे। श्रीठाकुरजीनी सैया विछावनी, जल लध आववुं। कुमारी राधा सहचरीना संगमां छे। रत्ना जेतुं नाम छे।

वार्ता-प्रसंग १—ये माधवलट्ट कास्मीरमां अेक ब्राह्मणना धरे प्रकथा। प्रथम ते माधवलट्ट केशवलट्टना सेवक थया। ते केशवलट्ट कास्मीरमां कथा कहेता। ते केशवलट्ट श्रीआचार्यजीनी पास भणवाने आव्या। तारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीसुबोधिनीजी कहेता। ते केशवलट्ट सांलणवाने आवता। तेअो विद्यामदयी उंथा आसन

सो केसवभट्ट सुनन कों आवते । सो विद्यामद तें उंचे आसन पर बैठ कै कथा सुनते । और माधवभट्ट मन लगाय दास भावसों सुनते । पाछें जब श्रीआचार्यजी कथा कहि चुकते तब माधवभट्ट श्रीआचार्यजी के वैष्णवन के पास जाय बैठते । सो वैष्णवन के मुख तें वार्ता सुनते । सो एक दिन केसवभट्ट ने माधवभट्ट सों कह्यो, जो—मैं कथा कहत हों, सो तू सुनन नाहीं आवत है । और हांसी मसखरी वार्ता क्यों सुनत है ? तब माधवभट्ट नें कही, तुम्हारी कथा तें श्रीआचार्यजी के सेवकन की हांसी मसखरी वार्ता आछी लागत है । तातें उहां जात हों । यह माधवभट्ट की बात सुनि कें केसवभट्ट मनमें विचार कियो, अब यह हमारे काम को नाहीं । तातें श्रीआचार्यजी कों भेंट करुंगो । पाछें कल्लुक दिन में केसवभट्ट घर चलन लागे । तब श्रीआचार्यजी सों कहें, मैं आपु की कथा सुनी है । तातें यह माधवभट्ट कों आपकी भेंट करत हों । यह मेरे काम को नाहीं है । सो तब माधवभट्ट श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के पास रहें । पाछें केसवभट्ट विदा होय चले गये । तब एक वैष्णव ने श्रीआचार्यजी सों प्रश्न कियो, जो—महाराज ! आपके श्रीमुख सों कथा माधवभट्ट ने हू सुनी और केसवभट्ट ने हू सुनी । सो माधवभट्ट कों बोध भयो और केसवभट्ट कों क्यों नाहीं भयो ? ताको कारन

उपर भेसीने कथा सांलणता. अने माधवलट्ट मन लगाडीने दासभावथी सांलणता. पछी न्यारे श्रीआचार्यल कथा कही यूकता त्यारे माधवलट्ट श्रीआचार्यलना वैष्णवानी पासो नध भेसता. ते वैष्णवोना भुपथी वार्ता सांलणता. पछी अेक दिवसे केशवलट्टे माधवलट्टने कहुं, के हुं कथा कहुं छुं ते तू सांलणवा नथी आवतो अने हांसी मसखरीनी वार्ता केम सांलणे छे ? त्यारे माधवलट्टे कहुं, तुम्हारी कथा करतां श्रीआचार्यलना सेवकोनी हांसी मसखरी वार्ता सारी लागे छे. तेथी त्यां नठे छुं. अे माधवलट्टनी वात सांलणीने केशवलट्टे मनमां विचार कर्यो, हुवे आ मारा डामतो नथी. तेथी श्रीआचार्यलने सेट करीश. पछी डेटलाक दिवसमां केशवलट्ट घर नवा लाग्या. त्यारे श्रीआचार्यलने कहे, में आपनी कथा सांलणी छे तेथी आ माधवलट्टने आपनी सेट करूं छुं. आ मारा डामतो नथी. त्यारे माधवलट्ट श्रीआचार्यल महाप्रभुलनी पासो रह्या. पछी केशवलट्ट विदाय थध यादया गया. त्यारे अेक वैष्णवे श्रीआचार्यलने प्रश्न कर्यो, के महाराज ! आपना श्रीभुपथी कथा माधवलट्टे पलु सांलणी अने केशवलट्टे पलु सांलणी. ते माधवलट्टने ज्ञान थयुं अने केशव-

कहा ? तब श्रीआचार्यजी कहें, जो—केसवभट्ट ने बराबर बैठिकें कथा सुनी तासों बोध न भयो । और माधवभट्ट दासभाव सों मन लगाय के सुन्यो । तातें याकों बोध भयो ।

भावप्रकाश—यामें यह जतायो, कथा श्रवण में दासभाव होय तो फल रूप होई । अहंकारी कों कहें, तोह सुने को फल न होई । यह जताये । मूल में माधवभट्ट लीला संबंधी हैं । तातें श्रीआचार्यजी की वानी फलित भई । और केसवभट्ट लीला संबंधी नहीं है । मर्यादाभागीय हैं । स्वर्ग तथा मुक्ति के अधिकारी हैं । तातें श्रीआचार्यजी की वानी फलित न भई । पाछें केसवभट्ट विदा होइकें देस कों गये ।

और माधवभट्ट कों श्रीआचार्यजी ने नाम निवेदन करायो । तब माधवभट्ट ने विनती कीनी, महाराज ! अब हमकों कहा कर्तव्य है ? तब श्रीआचार्यजी ने कही, तुम भगवद् सेवा करो । तब माधवभट्ट ने कही, महाराज ! लालाजी को स्वरूप मेरे बाप दादा सों सदा रहे है । सो स्वरूप सदा मेरे पास राखत हों । तुलसी, चंदन चढाई धूप दीप करि नैवेद्य धरि या प्रकार आह्वाहन विसर्जन पूजा मार्ग रीत सदा करी है । अब आज्ञा देहु ता प्रकार करूं । तब

लट्टने केम नहीं थयुं ? तहुं करणु शुं ? त्यारे श्रीआचार्यलुं कहे, के केशवलट्टे भराभरी भेसीने कथा सांलणी तेथी भोध न थयो. अने माधवलट्टे दासभावथी मन लगाडीने सांलथुं. तेथी तेने ज्ञान थयुं.

भावप्रकाश—अेमां अे जणुं, के कथा श्रवणुंमां दासभाव होय तो इक्ष रूपाय. अहंकारीने कहे तो पणु सांलज्यातुं इक्ष न थाय अे जणुं. भूणमां माधवलट्टे लीला संबंधी छे. तेथी श्रीआचार्यलुंनी वाणी इक्षित थई. अने केशवलट्टे लीला संबंधी नथी. मर्यादाभागीय छे. स्वर्ग तथा मुक्तिना अधिकारी छे. तेथी श्रीआचार्यलुंनी वाणी इक्षित न थई. पछी केशवलट्टे विदाय थईने देशमां गया.

अने माधवलट्टेने श्रीआचार्यलुंअे नाम-निवेदन कराव्युं. त्यारे माधवलट्टे विनंती करी, महाराज ! हुवे अमने शुं कर्तव्य छे ? त्यारे श्रीआचार्यलुंअे इक्षुं, तमे भगवद्सेवा करे. त्यारे माधवलट्टे इक्षुं, महाराज ! सांलजुं स्वरूप भारा पाप-दादाथी सदा रहे छे ते स्वरूपने सदा भारी पास राखुं छुं. तुलसी, चंदन चढावी धूप-दीप करी नैवेद्य धरी, या प्रकारे आह्वाहन-विसर्जन पूजाभागीनी रीति सदा करी छे. हुवे आज्ञा दे ते प्रकारे इक्षुं. त्यारे श्रीआचार्यलुं कहे, ज,

श्रीआचार्यजी कहे, जा स्वरूप ले आउ । तब माधवभट्ट जाइकेँ ले आये । तब श्रीआचार्यजी पंचामृत स्नान कराय माधवभट्ट के माथे पधराये । सो माधवभट्ट कछुक दिन पुष्टिमार्ग की रीति सिखि केँ आज्ञा मांगि कास्मीर अपने घर प्रीति पूर्वक सेवा करन लागे । सो कछुक दिन में श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे ।

वार्ता-प्रसंग २—और जा गाम में माधवभट्ट रहते, ता गाम में एक बड़ो गृहस्थ रहतो । सो वाको एक बेटा हतो सो मरि गयो । तब उह बहुत दुःख सों विलाप करन लाग्यो । और कह्यो, जो-याकों कोऊ जिवावे तो मैं जीउं । नार्हीं तो याके संग मैं हूं मरुंगो । या प्रकार कहे, गिरि गिरि परें, धरती पर लोटे । सो एक वैष्णव और आय निकरयो । उह गृहस्थ की दसा देखिकेँ कह्यो, जा गाम में माधवभट्ट सारिखे भगवदीय हैं तहां ऐसो दुःख क्यों होई ? सो यह बात उह गृहस्थ सुनि के माधवभट्ट पास दौरयो आयो । दंडौत करिकेँ बहोत विलाप करन लाग्यो । और कह्यो, तुम बड़े महापुरुष हो । मेरो बेटा मरि गयो । सो ताकों जिवाय देउ । नार्हीं तो मैं हूँ वाके संग मरुंगो । या प्रकार बहोत दुःखी देखि के माधवभट्ट कोँ दया आई । सो माधवभट्ट एक श्लोक करि केँ श्रीठाकुर के आगेँ धरयो । सो श्लोक—

स्वरूप लभ आव. त्यारे माधवलट्ट जेधने लभ आव्या. त्यारे श्रीआचार्यल्लये पंचामृत स्नान करावी माधवलट्टना माथे पधराव्युं. पछी माधवलट्ट डेटलाक द्विसभां पुष्टिमार्गनी रीति शीभीने आज्ञा मांगी कास्मीर पोताना धरे प्रीतिपूर्वक सेवा करवा लाग्या. ते डेटलाक द्विसभां श्रीठाकुरल्ल सानुभावता जशाववा लाग्या.

वार्ता-प्रसंग २—भीलुं, जे गामभां माधवलट्ट रहेटा. ते गामभां अेक मोटा गृहस्थ रहेटा. तेने अेक पुत्र हतो ते मरी गयो. त्यारे ते अल्लु ज दुःअथी विलाप करवा लाग्या. अने कछुं, के आने कोरुं लवाडे तो हुं ल्युं. नर्हीं तो आनी साथे हुं पल्लु मरीश. अे प्रकारे कहे. पडी पडी जय. धरती उपर आणोटि. त्यां अेक वैष्णव भीजे आवी निकल्यो. तेणे ते गृहस्थनी दशा जेधने कछुं, जे गामभां माधवलट्ट सरभा लगवदीय छे त्यां आवुं दुःअ केम होय ? ते आ वार्ता सांलणीने ते गृहस्थ माधवलट्ट पास देडी आव्यो. दंडवत करीने अल्लु विलाप करवा लाग्या अने कछुं, तमे मोटा महापुरुष छे. मारे पुत्र मरी गयो तेने लवाडी दे. नर्हीं तो हुं पल्लु अेनी साथे मरीश. अे प्रकारे अल्लु ज दुःभी जेधने माधवलट्टने दया आवी. ते माधवलट्टे अेक श्लोक करीने श्रीठाकुरल्लना आगण धर्यो. ते श्लोक—

दयालोरसमर्थस्य दुःखायैव दयालुता । विश्वोद्धारणदक्षश्च शास्त्रेष्वेकस्य शोभना ॥

भावप्रकाश—याको अर्थ यह है, जो—तुम दयालु हो । सो कैसे दयालु हो ? असमर्थ पर दयालुता तुमहि करत हो । काहेतें ? दयालुता को लक्षण यह है, जो—दुःखी पर दयालुता प्रगट होइ सोई दयालुता है । सो ऐसे एक तुम हो । और विश्वोद्धारण में चतुर एक तुमही हो । सगरे शास्त्र में तुमही कों गाये हैं । यह दयालुता तुमहि कों सोहत हैं, तातें दुःख को नास करो ।

यह श्लोक सुनिकें श्रीठाकुरजी कहें, यह कितनीक बात है ? तुमकों दया आई है तो जाय वासों कहो, तेरो वेटा जीयो । तब माघवभट्ट बाहर आयकें कहें, जो—तेरो वेटा जीयो । तब उह गृहस्थ के मनमें आइ नाहीं, (क्यों) जो—कछू औषध दिये नाहीं । सुखसों कहे दिये हैं । इतने में वा गृहस्थ के घर के मनुष्य में आय के कह्यो, तुमारो वेटा जीयो, बधाई देऊ ! तब वह दौरिकें घर में जाइ देखें तो वेटा जीयो बधाई करी । (पाछें) कह्यो, माघवभट्ट बड़े भगवदीय हैं । जिनके वचन ऐसे हैं, जो—जीयो कहत मात्र वेटा जीयो । पाछें रात्रिकों माघवभट्ट अपने मनमें विचार कियो, जो—यह कार्य मैं बहोत अनुचित कियो । संसार में अनेक दुःखी सुखी लोग

दयालोरसमर्थस्य..... (उपर लुओ)

भावप्रकाश—अने अर्थ अे छे, डे तसे दयालु छे. ते देवा दयालु छे ? असमर्थ उपर दयालुता तसे न करे छे. डेमठे दयालुतातुं लक्षण अे छे डे दुःखी उपर दयालुता प्रकट थाय तेन दयालुता छे. अेवा अेक तसे न छे अने विश्वोद्धारणमां अेवा तसे न चतुर छे. अथा शास्त्रेमां तमने न गाया छे. अा दयालुता तमने न शोभे छे. तेथी दुःखने नाश करे.

अा श्लोक सांभलीने श्रीठाकुरजी कहे, अा डेरदीक वात छे ? तमने दया आवी छे तो अने नठने कहे, तारे पुत्र लुओ. तयारे माघवभट्ट अहार आवीने कहे, डे न, तारे पुत्र लुओ. तयारे अे गृहस्थना मनमां आव्युं नही. (केम ?) ने कंठ औषधि आवी नही (मात्र) सुअधी कही दीधुं छे. अेरलामां ते गृहस्थना घरना मनुष्ये आवीने कहुं, तमारो अेठा लुओ. वधामणी आवो. तयारे ते देदीने घरमां नभ लुओ तो पुत्र लुओ छे. वधामणी करी. (पछी) कहुं, माघवभट्ट भोटा भगवदीय छे. नेनां वचन आवीं छे, डे लुओ कहेतां मात्र पुत्र लुओ. पछी रात्रिअे माघवभट्टे पोताना मनमां विचार कर्यो, डे अा काम में अहु न अनुचित क्युं. संसारमां अनेक

हैं। तातें अब या गाम में रहिवे को धर्म नाहीं है। सो अर्द्धरात्रि समय श्रीठाकुरजी कों संपुट में पधराय कें चले। सो अडेल में श्री-आचार्यजी के पाम आय रहे। तातें वैष्णव कों दयाहू विचारि कें करनो। लौकिक में माहात्म्य प्रगट करे तें गाम छोडे तो धर्म रह्यो। नाहीं तो पाछें बहोत दुःख होतो। तातें लौकिक में लौकिक की नाई रहे तो धर्म रहे। श्रीठाकुरजी कों दुःख न होई। वैष्णव कों हू दुःख न होई। माधवभट्ट सर्व सामर्थवान हते। परन्तु तोऊ भाजनो परयो। तातें वैष्णव कों विचारि के काम करनो।

वार्ता—प्रसंग ३—और माधवभट्ट कों लिखिवे को बड़ो अभ्यास हतो। सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीभागवत की टीका श्रीसुबोधिनीजी करी। सो माधवभट्ट लिखत जाय। जहां माधवभट्ट न समझते तहां लेखन छोड़ि बैठि रहतें। तब श्रीआचार्यजी माधवभट्ट कों समुझावते। तब लिखते। और माधवभट्ट श्रीआचार्यजी के आंगें ऐसे बैठते, जो-पांव न दीसे।

भावप्रकाश—काहेतें ? शास्त्र में कहे हैं बड़ेन के आगे सिद्ध आसन हू न बैठनो। और पाँव न दीसे ऐसे बैठनो। सो दासभावसों बैठते।

वार्ता—प्रसंग ४—और एक समें श्रीआचार्यजी महाप्रभु पर-

दुःखी सुखी लोके छे। तेथी हुवे आ गामभां रहवानो धर्म नथी। पछी अउधी रात्रिना समये श्रीठाकुरजीने आंपीभां पधरावीने आल्या। ते अउसभां श्रीआचार्यजीनी पासि आवी रखा। तेथी वैष्णुवे द्या पशु विचारीने करवी। लौकिकभां माहात्म्य प्रकट कर्याथी गाम छोड्युं त्यारे धर्म रह्यो। नही तो पछी धरुं न दुःख थतुं, तेथी लौकिकभां लौकिकनी माइक रह्ये तो धर्म रह्ये, श्रीठाकुरजीने दुःख न थाय। वैष्णुवने पशु दुःख न थाय। माधवभट्ट सर्व सामर्थवान हुता। परंतु तो ये लागवुं पड्युं, तेथी वैष्णुवे विचारीने काम करवुं।

वार्ता—प्रसंग ३—भीलुं, माधवभट्टने लभवानो अहु अल्यास हुतो। ते श्रीआचार्यजी महाप्रभुसे श्रीलागवतनी टीका श्रीसुबोधिनीजी करी ते माधवभट्ट लभता नय। नयां माधवभट्ट न समजता त्यां कलम छोडी भेसी रह्यो। त्यारे श्रीआचार्यजी माधवभट्टने समजवता त्यारे लभता। वणी माधवभट्ट श्रीआचार्यजीनी आगण जेवी रीते भेसता डे पग न देणाय।

भावप्रकाश—डेभडे ? शास्त्रभां कहे छे डे भोटानी आगण सिद्ध आसन पशु न भेसवुं, अने पग न देणाय जेभ भेसवुं, ते दासभावथी भेसता,

देस हते । तब माधवभट्ट संग हे । श्रीसुवोधिनी लिखते । सो एक दिन पिछली रात्रि कों माधवभट्ट लघुबाधा कों उठे । तब चोरन ने तीर मारयो । सो माधवभट्ट कों लाग्यो । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु को नाम लियो । और नाम लेतहि माधवभट्ट की देह छूटी । तब वैष्णवन में इनकी देह को संस्कार कियो । पाछें एक वैष्णव ने श्रीआचार्यजी सों बिनती करी, महाराज ! माधवभट्ट सारिखे भगवदीय कों या प्रकार मृत्यु क्यों भई ? तब श्रीआचार्यजी श्रीमुखसों कहे, माधवभट्ट के परलोक में तो कछु हानी है नाहीं । परंतु इनको एक भगवद् अपराध परयो हतो । ताको दंड पायो । तब वैष्णवन ने पूछयो, जो-महाराज ! ऐसो कहा अपराध परयो हतो ? सो तब श्रीआचार्यजी आज्ञा करें, जो-ये पहले अपने सेव्य श्रीठाकुरजी की सैया फूलन की बिछावते । सो तब एक दिन फूलन में अनजाने सुई रहि गई । सो माधवभट्ट ने जानी नाहीं । सो तब वह सुई श्रीठाकुरजी के श्रीअंग में स्पर्श भई । सो ता अपराध तें यह ऐसो भयो है । परि याकी देह सावधानता सों भगवद् नाम लेत छूटी है, तातें याकों कछु बाधक नाहीं है । ये श्रीनाथजी के चरणारविंद पाये । अब कछु कर्तव्यता रही नाहीं ।

वार्ता-प्रसंग ४—वणी अेक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु परदेश हुता त्त्यारे माधवलट्ट साथे हुता. श्रीसुवोधिनी लभता. ते अेक द्विपस पाछडी रात्रिना माधवलट्ट लघुबाधा मारे डिखा. त्त्यारे योरोअे तीर मारुं. ते माधवलट्टने लाव्युं. त्त्यारे श्रीआचार्यजी महाप्रभुल्लुं नाम दीवुं. अने नाम लेतां न माधवलट्टने देह छुट्यो. त्त्यारे वैष्णुवोअे अेभना देहने संस्कार क्यो. पडी अेक वैष्णुवे श्रीआचार्यजीने बिनती करी, महाराज ! माधवलट्ट सरंभा भगवदीयनी आ प्रकारे मृत्यु केम थड ? त्त्यारे श्रीआचार्यजी श्रीमुखसी कहे, माधवलट्टने परलोकां तो कंठ हुानी नथी. परंतु अेने अेक भगवद् अपराध पज्यो हुतो. तेनी शिक्षा भणी. त्त्यारे वैष्णुवोअे पूछ्युं, के महाराज ! अेवो शे अपराध पज्यो हुतो ? त्त्यारे श्रीआचार्यजी आज्ञा करे, के अे पहलेसां पोताना सेव्य श्रीठाकुरजीनी सैया हुलोनी बिछावता. त्त्यारे अेक द्विपस हुलोनां अजाने सुइ रही गड. ते माधवलट्टने नोप्युं नही. त्त्यारे ते सुइ श्रीठाकुरजीना श्रीअंगमां स्पर्श थड. ते अपराधथी आम थयुं छ. परंतु अेनी देह सावधानीथी भगवद् नाम लेतां छुटी छ. तेथी अेने कंठ बाधक नथी. अेले श्रीनाथजीना चरणारविंदने प्राप्त क्यो. हुवे कंठ कर्तव्यता रही नथी.

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो-पुष्टिमार्ग में सैया पर फूल विछाड़वे की रीति श्रीआचार्यजी नहीं प्रगट किये । (क्यों) जो-ये लौकिक फूल हैं । सो इनकी दांडी कठिन हैं । और एक क्षण में कुम्हलाइ जाय, वस्त्रन में फूलन के दाग परें । तातें न्यारो फूल धरघो रहे । प्रभुकों सुगंध मात्र आवे । और लीला में तो फूल स्वरूपात्मक हैं । सो परम कोमल हैं । तातें फूलन की सैया बनावत हैं । सो माधवभट्ट श्रीआचार्यजी की रीति छोड़ि लीला में फूलन की सैया को वर्णन जानि माधवभट्ट सैया भरें । सो प्रभुकों आछी न लागी । तातें सुई रहि गई । माधवभट्ट कों दंड दे सगरे वैष्णव कों शिक्षा दिये । जो-श्रीआचार्यजी (ने) यह पुष्टिमार्ग में रीति प्रगट करी हैं, और ग्रंथन में जा प्रकार आज्ञा करी हैं, ताही प्रकार सेवा करनी । और चलनो । और अपने मनतें कल्पित प्रकार करें तो श्री-गोवर्द्धनधर कों भावे नहीं । जदपि लीलामें वर्णन हू होई, तऊ अपने मारग में जितनी आज्ञा श्रीआचार्यजी श्रीगुसाईंजी की होय तितनो ही कार्य करे । तो प्रभु वेगे प्रसन्न होई । अथवा माधवभट्ट प्रथम मर्यादा रीति सों श्रीठाकुरजी की पूजा करते । सो मर्यादा में फूलन की सैया करत हे । सो तबको अपराध है । ताको दंड भयो । पाछें लीला में अंगीकार भये, यह जताये । श्रीआचार्यजी की

भावप्रकाश—अमां अ नृणांभ्युं, हे पुष्टिभागिमां शैया उपर कूल विछाववानी रीति श्रीआचार्यजी प्रकट करी नथी. (हेम?) न अ लौकिक कूल छे. तेथी अनी दांडी कठण छे. अने अक क्षणमां हरमाध अय, वस्त्रेमां कूलोना डाधा पडे, तेथी अलग कूल धरुं रहे. प्रभुने सुगंधी मात्र आवे, अने लीलामां तो कूल स्वरूपात्मक छे. ते परम कोमल छे. तेथी कूलोनी शैया अनावे छे. ते माधवभट्टे श्रीआचार्यजीनी रीति छोडी लीलामां कूलोनी शयानुं वरुंन अणुी माधवभट्टे शया करी. ते प्रभुने ठीक न लागी. तेथी सुध रह्यी गर्ध. माधवभट्टने दंड दधने अथा वैष्णवोने शिक्षा आपी हे श्रीआचार्यजी अ पुष्टिभागिमां रीति प्रकट करी छे अने ग्रंथोमां न प्रकारे आज्ञा करी छे. तेन प्रकारे सेवा करवी अने आलसुं. अने जे मनथी कल्पित प्रकार करे तो श्रीगोवर्द्धनधरने रूथे नहीं. यद्यपि लीलामां वरुंन पणु होय तोपणु पोताना भागिमां नटकी आज्ञा श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांथजीनी होय तेठलुं न कार्य करे. तो प्रभु वहेला प्रसन्न थाय. अथवा माधवभट्ट प्रथम मर्यादा रीतिथी श्रीठाकुरजीनी पूजा करता ते मर्यादामां कूलोनी शैया करता हुता सारनो अपराध छे. तेनो दंड थयो. पछी

सरनि तें जनम जनम को अपराध होई सो याही जनम में भोग लेई । पाछें वाधक न रहे । ऐसो श्रीआचार्यजी की सरनि को प्रताप है । जो-सर्व अपराध भोगि, लीला में प्राप्त होई । इहांई भोग छूटे यह सरन को प्रताप दिखाये । यह भाव है ।

सो माधवभट्ट की देह छूटी । तब श्रीआचार्यजी कहे, अब श्रीसुबोधिनीजी रही । भगवद् इच्छा इतनी प्रगट करन की हती । सो माधवभट्ट की वार्ता कहां ताई कहिये । वार्ता ॥२७॥

भावप्रकाश—यामें यह जताये, श्रीठाकुरजी कों पास बुलावने हते । सो दोय आज्ञा आगे भई, सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु न माने । तब माधवभट्ट कों यह अपराध के मिष लीला में बुलाई तीसरी आज्ञा दीनी । तब श्रीआचार्यजी “अंतःकरणप्रबोध” ग्रन्थ करि अंतर्धान लीला किये । यह कारन है ।

✽ ✽ ✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, गोपालदास, वांसवाडे के वासी, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये गोपालदास श्रीयमुनाजी की सखी हैं । ‘रसप्रकाशिका’ इनको नाम हैं । ये लीला में ऐसी वार्ता भक्तन सों करे, जो-सवन के मनमें

लीलाभां अंगीकार थया, अम नृणांयुं. श्रीआचार्यजी शरणुथी नन्म नन्मनो अपराध होय ते आ न नन्मभां लोगवी ले. पछी पाधक न रहे. अये श्रीआचार्यजी शरणुनो प्रताप छे. ते सर्व अपराध लोगवी लीलाभां प्राप्त थाय. अही न लोग छुटे अे शरणुनो प्रताप देखाइयो. अे भाव छे.

पछी माधवलक्ष्मी देह छुटी त्यारे श्रीआचार्यजी छे, हुवे श्रीसुबोधिनीजी रह्यां. लगवदृष्ट अेदी न प्रकट करवानी हती. ते माधवलक्ष्मी वार्ता कथां सुधी छहीअे? वार्ता ॥२७॥

भावप्रकाश—अेभां अे नृणांयुं, श्रीठाकुरजीने पासे भोलावना हुता ते अे आज्ञा आगण थई ते श्रीआचार्य महाप्रभुअे न मानी त्यारे माधवलक्ष्मीने आ अपराधना मिषथी लीलाभां भोलावी तीअे आज्ञा आपी. त्यारे श्रीआचार्यजीअे ‘अंतःकरणप्रबोध’ ग्रन्थ करी अंतर्धान लीला करी. अे पणु कारण छे.

✽ ✽ ✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना सेवक, गोपालदास वांसवाडाना वासी, तेमनी वार्ताना भाव छहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे गोपालदास श्रीयमुनाजी सखी छे. ‘रसप्रकाशिका’ अेमनुं नाम छे. अे लीलाभां अेवी वार्ता भक्ततोथी करे ते अंधाना मनभां रसनो

रसको प्रकाश होय जाय । सो गोपालदास बांसवाड़े में एक क्षत्री हतो वाके घर प्रगट भये । सो उह क्षत्री वैश्य वृत्ति करतो । और सराफि की दुकान हू करतो । सो दासजनन में । सो उह क्षत्री के बेटा चारि आगें भये सो मरि जाते । पांचमे गोपालदास भये । तब क्षत्री ने मानता करी, जो—यह बेटा जीवे तो तीर्थराज प्रयाग में याको मुंडन करोंगों । सो गोपालदास वरस पांच के भये । परंतु वह क्षत्री को ब्योपार में मन बहोत । सो प्रयाग जाय न सके । सो ऐसे करत गोपालदास वरस ग्यारह के भये । तब क्षत्री ने एक गाड़ी करि अपुनो गुमास्ता चाकर संग करि दिये । और कहे, गोपालदास को प्रयाग में मुंडन करि वेगि ले आवोगे तो गोपालदास को विवाह करिये । सो या प्रकार गोपालदास बांसवाड़ा तें चलें । तब प्रयाग में आय श्रीगंगाजी श्रीयमुनाजी को दरसन किये । सो दैवी हते । इनकों अलौकिक दरसन भयो । तब गोपालदास उह गुमास्ता सों कहे, मैं तो इहां वार न मुंडाऊंगो । यह तीरथ क्षेत्र तें कोस पांच बाहर जाय मुंडाऊंगो । कहा सोकों नरक में डारोगे ? यह रसरूप जल तिनके मध्य बार डारूं ? जो—गुमास्ता नें बहुतेरो समुझायो, जो—तुम्हारे पिता की मानता है । और यह प्रयाग तीर्थ में मुंड मुंडाये को बहुत फल है । तब गोपालदास ने कही पिता मूर्ख है । जो—ऐसी

प्रकाश थछ अथ. ते गोपालदास वांसवाडाभां अेक क्षत्री हुतो तेना धरे प्रकट थया. ते क्षत्री वैश्यवृत्ति करतो हुतो. अने सराईनी दुकान पाणु करतो. दासजनोभां. ते क्षत्रीने चार भेटा आगण थया ते मरी जाता. पांचमा गोपालदास थया त्यारे क्षत्रीअे मानता करी, हे आ पुत्र जेवे तो तीर्थराज प्रयागभां अेनुं मुंडन (वाण उतारवा) करीश. पछी गोपालदास वर्ष पांचना थया. परंतु ते क्षत्रीनुं मन वेपारभां धणुं. तेथी प्रयाग जध न शके. अेम करतां गोपालदास वर्ष अग्यारना थया त्यारे क्षत्रीअे अेक गाडी करी पोताना गुमास्ता आकर संग करी दीधा. अने कहे, गोपालदासने प्रयागभां मुंडन करावी जददी लथ आवे तो गोपालदासने विवाह करीअे. अे प्रकारे गोपालदास वांसवाडाथी आदया. त्यारे प्रयागभां आवी श्रीगंगाअे श्रीयमुनाअेनां दर्शन कर्यां. ते दैवी हुता. अेभने अलौकिक दर्शन थयां. त्यारे गोपालदास ते गुमास्ताने कहे, हुं तो अहीं वाण नहीं भूडावुं. आ तीर्थ क्षेत्रथी द्वास पांच अहार जध मुडावीश. शुं भने नकंभां नापवे छे ? आ रसरूप जल तेनी भहीं वाण नापुं ? पछी गुमास्ताअे अहु अहु समजव्ये, हे तमारा पितानी मानता छे. अने आ प्रयाग तीर्थभां माथुं भूडाववातु अहु ईल छे, त्यारे गोपालदासे कथुं,

मानता करी । और मोकों तो फल ऐसी नार्हा चहिये । ब्राह्मन ने तीरथ में दान लेवे के लिये ऐसे फल कहे हैं । मैं तो इहां कवहू न मुडाउंगो । सो गोपालदास प्रयाग सों पांच कोस गंगापार जाय मुंडन कराये । पाछें न्हायकें फेरि प्रयाग में आपु न्हाये । दान पुन्य किये । श्रीजमुनाजी श्रीगंगाजी की पूजा दूध अरगजा माला चंदन सों किये । पांच रात्रि रहे । सो श्रीआचार्यजी हू प्रयाग पधारे हते । सो गोपालदास नित्य पूजन त्रिवेनी को करते । सो पांचमें दिन श्रीआचार्यजी गोपालदास के पास आपहि स्नान कों पधारे । दैवी जीव जानि, कृपा करन कों । सो गोपालदास न्हात हते । तब श्रीआचार्यजी त्रिवेनी में तें एक अंजलि जल भरिके गोपालदास के ऊपर डारि दिये । सो गोपालदास कों अपुने स्वरूप को ज्ञान भयो, और श्रीआचार्यजी के स्वरूप को ज्ञान भयो । तब गोपालदास जलहि में माथो न्हावाये । दोऊ हाथ जोरिकें श्रीआचार्यजी सों विनती किये, महाराज ! मैं बड़ो पापी हों, बहोत जन्म संसार में भटक्यो । अब मो पर कृपा करिये । तब श्रीआचार्यजी दैन्यता देखि गोपालदास कों जलहि में नाम निवेदन कराये । मार्ग को सिद्धांत हृदय में स्थापन करि दिये । और गोपालदास सों कहे, तुम

हे पिता मुर्ष छे. जे अवी मानता करी. अने भने तो इल अएवुं जेधअ नही. ब्राह्मणुअ तीर्थभां दान लेवाने माटे अवां इल कछां छे. हुं तो अहीं कहीये नही भूंडावुं. पछी गोपालदासे प्रयागथी पांच ठास गंगा पार जेध भूंडन करावुं. पछी न्हाधने इरी प्रयागभां पोते न्हाया. दान पूरुय क्युं. श्रीजमुनाजी श्रीगंगाजीनी पूज दूध अरगज, माला, चंदनथी करी. पांच रात्रि रखा. तयारे श्रीआचार्यजी पण प्रयाग पधारां हुता. ते गोपालदास नित्य पूजन त्रिवेणीतुं करता. ते पांचमा दिवसे श्री-आचार्यजी गोपालदासनी पासे पोते जे स्नान माटे पधारां. दैवीजव जणी कृपा करवा माटे. ते गोपालदास न्हाता हुता. तयारे श्रीआचार्यजीअ त्रिवेणीभांथी अक अंजली (अंजली) जल भरिने गोपालदासना उपर नाभ्युं. तयारे गोपालदासने पोताना स्वरूपतुं ज्ञान थयुं. अने श्रीआचार्यजीना स्वरूपतुं ज्ञान थयुं. तयारे गोपालदासे जलभां जे माथुं नमावुं. अने हाथ जेडीने श्रीआचार्यजीने विनंती करी, महाराज ! हुं महान पापी छुं. अहु जन्म संसारभां लटायो. हुवे मारा उपर कृपा करे. तयारे श्रीआचार्यजीअ दैन्यता जेध गोपालदासने जलभां जे नाम-निवेदन करावुं. मार्गना सिद्धांत हृदयभां स्थापन करी दीयो. अने गोपालदासने कहे, तमे लगवइसेवा करे. तयारे गोपालदासे अहार आचीने वस्त्र पहैयां. अने

भगवद् सेवा करो । तब गोपालदास बाहिर आय वस्त्र पहरे । और श्रीआचार्यजी न्हाय वस्त्र अपरस के पहिरि, मध्याह्न की संघ्या करि, गोपालदास सों कहें, तू कहूँते भगवद् स्वरूप ले अडेल आईयो, यह कहि आपु तो अडेल पधारे । पाछें गोपालदास प्रयाग में न्योछावरि दे लालजी ले, अडेल में आये । तब श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजी कां पंचामृत स्नान कराय गोपालदास के माथे पधराये । पाछें पांच दिन गोपालदास अडेल में रहि पुष्टिमार्ग की रीति सब सीखे । पाछें श्रीआचार्यजी सों विदा होयकें वांसवाड़े में अपने घर आये । तब गुमास्ता ने गोपालदास के पिता सों सब समाचार कहे । जो—यह तुम्हारो लरिका प्रयाग सों पांच कोस गंगापार जाय मुंडन करायो । हम बहोत कहे, मान्यो नहीं । और वैष्णव होइ आयो है । तब गोपालदास के पिताने कही भई सो सही, बोले मति । काहेतें, गोपालदास के ऊपर माता पिता को स्नेह बहोत हतो । जो—यह कहूं घर छोड़िकें निकस जायगो । तातें गोपालदास सों कहे नहीं । पाछें मा बाप ने कही, भूखे होउगे कछु खाव । तब गोपालदास ने कही, मैं तो तुम्हारो जल न पीउंगो । तुम जाय श्रीआचार्यजी के सेवक है आवो तो मेरे तुम्हारें बनें । नहीं तो मोकों थोरी सी जगह न्यारी करि देउ । तामें मैं रहूंगो । तब पिता ने कही, तेरो व्याह

श्रीआचार्यजी न्हाय वस्त्र अपरसनां पहरे मध्याह्न की संघ्या करी गोपालदासने कहे, तू कथी भगवत्स्वरूप लई अडेल आवे, अब कही आप तो अडेल पधर्या पछी गोपालदास प्रयागमां न्योछावर दई लालजी लई अडेलमां आव्या, तारे श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजीने पंचामृत स्नान करावीने गोपालदासने माथे पधराव्या, पछी पांच दिनस गोपालदास अडेलमां रहि पुष्टिमार्गनी रीति अधी शीष्या, पछी श्रीआचार्यजी विदाय थधने वांसवाडांमां पिताना धरे आव्या, तारे गुमास्ताजे गोपालदासना पिताने अधा समाचार कहा, के आ तमारा आलके प्रयागथी पांच कोस (दश माघल) गंगा पार अब मुंडन कराव्युं (छे). अमे अहु कहुं, (पणु) मान्युं नहीं, अने वैष्णव थई आव्यो छे, तारे गोपालदासना पिताने कहुं, थयु ते अइं, पेलीश नहीं, केअके गोपालदासना उपर माता-पिताने अहु स्नेह हतो, (तेथी वियाथुं, के) आ कदाय धरे छोडीने निकणी अशे, तेथी गोपालदासने कहुं नहीं, पछी मा बापे कहुं, भूष्या हशो माटे कंध आव, तारे गोपालदासे कहुं, हुं तो तमाइं जल नहीं पीहं, तमे अब श्रीआचार्यजीना सेवक थध आवो तो मारे तमारे अने, नहीं तो मने थोडीक जगा अलग करी

करनो है, सो कैसे होइगो ? तव गोपालदास ने कही, अब या समय जगह तो करि देउ । पाछें, जो-होइगी सो सही । अबही तो व्याह नार्हीं होत है । तव पिताने घरमें जगह कर दीनी । तहां गोपालदास जगह खासा करि, श्रीठाकुरजी की रसोई करि, भोग धरि, महाप्रसाद लिये । पाछें श्रीठाकुरजी को मंदिर संवराये । प्रीतिसों सेवा करन लागे । पाछें पिताने गोपालदास की सगाई करी । सो व्याह हू भयो । परंतु सुसरारि में, घरमें, काहू के हाथ को जल न लिये । पाछें गोपालदास ने पिता सों कही, जो-तुम श्रीआचार्यजी के सेवक होउ तो आछो है । नार्हीं तो मैं स्त्री कों सेवक कराय ल्याउं । तव माता पिता ने कही, द्रव्य चाहिये सो लेहु, स्त्री कों सेवक करावो । और हमतो सेवक न होइंगे । तव गोपालदास ने स्त्री सों कही, जो-तू सेवक होउ । माता पिता को ज्ञाति को खानपान छोड़े तो मेरे तेरें बनें । तव स्त्री ने कही, मैं सेवक तो होइंगी, परंतु माता पिता को खानपान तो न छोड़ोंगी । तव गोपालदास मनमें विचारें, जो-श्रीआचार्यजी की सेवकनी तो कराउं । जो-उत्तम जीव होइगो तो आपुहि सब धर्म सिद्धि होइगो । तव गाड़ी पर स्त्री कां चढ़ाय वांसवाडा सों चले सो कलक दिन में प्रयाग आये । पाछें अड्डेल में आय श्रीआचार्यजी सों दंडौत करि विनती

हो तेमां हुं रहीश. त्यारे पिताने कहुं, ताइं लगन करवुं छे. ते डेम थशे ? त्यारे गोपालदासे कहुं, हुभयां आ समये जगा तो करी हो पछी न थशे ते अइं. हुभयां तो लक्ष नथी थतुं ? त्यारे पिताने घरमां जगा करी दीधी. त्यां गोपालदास जगा खासा करीने श्रीठाकुरजीनी रसोइ करीने भोग धरि महाप्रसाद लीधो पछी श्रीठाकुरजीनुं मंदिर सिद्ध करावुं. प्रीतिथी सेवा करवा लाग्या. पछी पिताने गोपालदासनी सगाइ करी. लगन पशु थयुं. परंतु सासरामां, घरमां, टाधना हाथनुं जल न लीधुं. पछी गोपालदासे पिताने कहुं, डे तमे श्रीआचार्यजीना सेवक थाव तो साइ छे. नहीं तो हुं श्रीने सेवक करावी लाड. त्यारे माता पिताने कहुं, द्रव्य लेधये ते दो. श्रीने सेवक करावो. अने अने तो सेवक नहीं थधये. त्यारे गोपालदासे श्रीने कहुं, डे तू सेवक था. माता पितानुं ज्ञातिनुं खानपान छोडे तो मारे तारे बने. त्यारे श्रीने कहुं, हुं सेवक तो थधश परंतु माता पितानुं खानपान तो नहीं छोडुं. त्यारे गोपालदास मनमां विचारें, डे श्रीआचार्यजीनी सेवकनी तो करावुं. जे उत्तम जव हुशे तो आपथी न भयो धर्म सिद्ध थशे. त्यारे गाडी उपर श्रीने चढ़ावी वांसवाडाथी यादया. ते डेटलाक द्विसमां प्रयाग आया. पछी अड्डेलमां आवी श्री-

किये, महाराज ! मेरे माता-पिता तो सेवक न भये, मैं बहोत कही । ये स्त्री कों संग ल्यायो हूँ । सो नाम निवेदन कराय कृपा करिये । तब श्रीआचार्यजी कहें, यह तेरी स्त्री पुष्टि जीव नहीं है । तातें निवेदन मति करावें । यासों न बनेगो । यह जहां तहां खायगी । और नाम सुनाइ देहिगें । तेरे संबंध सां तेरे माता, पिता, स्त्री को उद्धार होयगो । लीला संबंध न होइगो । तब गोपालदास ने कही, कृपा करि नाम हि सुनाइये । तब श्रीआचार्यजी ने गोपालदास की स्त्री कों नाम सुनाये । पाछें गोपालदास कछुक दिन श्रीआचार्यजी के पास रहि कै पाछें विदा होई वांसबाड़ा अपने घर आये, भगवद् सेवा करन लागे ।

वार्ता-प्रसंग १—सा गोपालदास ने अपने घर के दरवाजे पास मारग में मिलिवेचारे के लिये एक विश्रामस्थल करि राखे । जो आवे सो वहां उतरे । सो गोपालदास बिचारे, जो-गाममें तो ऐसो कोउ वैष्णव है नहीं, जासों भगवद् सेवा वार्ता करिये । तातें विश्रामस्थल होइगो तो कोई वैष्णव सों मिलाप होयगो । यह मनोरथ विचारि विश्रामस्थल किये ।

भावप्रकाश—विश्रामस्थल कों धर्मशाला नहीं कह्यो, सो यातें, जो-

आचार्यजीने दंडवत करी विनंती करी, महाराज ! मारा माता पिता तो सेवक न थया. मे अहु कछुं. आ स्त्रीने साथे लाव्यो छुं. ते नाम निवेदन करावी कृपा करे. तारे श्रीआचार्यजी कहे, आ तारी स्त्री पुष्टिव नथी. तेथी निवेदन न कराव. जेनाथी (धर्म) नहीं अने. जे जयां त्यां आशे. जेने नाम संलणावी छथु. तारा संबंधी तारा माता-पिता, स्त्रीने उद्धार थसे. लीला-संबंध नहीं थाय. तारे गोपालदासे कछुं, कृपा करी नाम न संलणावे. तारे श्रीआचार्यजी जे गोपालदासनी स्त्रीने नाम संलणाव्युं. पछी गोपालदास ठटलाक द्विस श्रीआचार्यजीनी पासे रहिने पछी विदाय थछ वांसवाडा पोताना धरे आव्या. भगवद्सेवा करना लाग्या.

वार्ता-प्रसंग २—ते गोपालदासे पोताना धरना दरवाजा पासे भागीभां भणवा वाणाने भाटे जेक विश्राम-स्थल करी राख्यो. जे आवे ते त्यां उतरे. ते गोपालदास विचारे, जे गामभां तो जेवो कोउ वैष्णव नथी जेनाथी भगवद्सेवा वार्ता करीये. तेथी विश्राम-स्थल थसे तो कोउ वैष्णवना मिलाप थसे. जे मनोरथ विचारी विश्राम-स्थल छथुं.

भावप्रकाश—विश्राम-स्थलने धर्मशाला नहीं कही, ते जेथी ठे

धर्मसाला बनाये को पुण्य बहोत कहे हैं। और पुण्य फल को मनोरथ होय तो पुष्टिमार्गीय कों यह बाधक है।

सो मारग चलिवे वारे उहां आई उतरतें। सो मांझ के उह स्थल में गोपालदास जातें। जो उतरे होइ तिनसों पूछते। तामें कोई भूखो होई, तिनकों खाइवे कों देते। और कोई वैष्णव होइ तो उनकों अपुने घर ल्याई प्रीति सों महाप्रसाद लिवावते। दोय चारि दिन रागवते। खरची न होइ ताकों खरची देते। ऐसे करत एक दिन पद्मारावल सांचोरा ब्राह्मन आय निकसे। सो गोपालदास ने उन सों पूछयो, तुम कौन हो, कहां तें आवत हो, कहां जाउगे? तब पद्मारावल ने कही, हम सांचोरा ब्राह्मन हैं। हमकों श्रीरनछोडजी के दरसन पर प्रीति हैं। सो हमारो जजमान भावजी पटेल उज्जैन में हैं। सो उनसों खरची ले द्वारिका जाय श्रीरनछोडजी के दरसन करत हों। जब खरची खूटत है तब फेर उज्जैन जाइ भावजी पटेल सों खरची ले द्वारिका जायके दरसन करत हैं। तब गोपालदास यह बचन पद्मारावल के सुजिकें दैवी जीव जानि दात चलाये। जो जैसी लगन श्रीरनछोडजी में है ऐसी श्रीआचार्यजी में होइ तो यह ब्राह्मन को काज होय जाय। यह विचारि कें गोपालदास नें पद्मारावल

धर्मशास्त्रा अनाववानु पुण्य धणुं कथुं छे. अने पुण्य इलने। मनोरथ होय तो पुष्टिमार्गीयाने ते पणु बाधक छे.

ते मार्गीयासवाणा त्यां आवी उतरता. पछी सांजना ते स्थलमां गोपालदास जाता. जे उतर्या होय तेमने पूछता. तेमां कोई लूभ्यो होय, तेमने भावानुं आपता. अने कोई वैष्णव होय तो अमने पोताना घरे लावी प्रीतिथी महाप्रसाद लेवजायता. जे-यार द्विस राभता. अर्यीं न होय तेमने अर्यीं देता. अम इरतां अइ द्विस पद्मारावल सांचोरा ब्राह्मण आवी निडल्या. त्यारे गोपालदासे तेमने पूछयुं, तमे कोणु छे? इयांथी आवो छे? इयां नयो? त्यारे पद्मारावले कथुं, अमे सांचोरा ब्राह्मण छीअे. अमने श्रीरनुछोडलनां दर्शन उपर प्रीति छे. अमारे यजमान भावणु पटेल उज्जैनमां छे. अनाथी अर्यीं लई द्वारका नठ श्रीरनुछोडलनां दर्शन इइं सुं. न्यारे अर्यीं भूइ छे त्यारे इरी उज्जैनमां नई भावणु पटेलथी अर्यीं लई द्वारका नठने दर्शन इरीअे छीअे. त्यारे गोपालदासे पद्मारावलनां अे वचन सांलणीने दैवी लव नाली वात यसावी, के जेवी प्रीति श्रीरनुछोडलनां छे अेवी श्रीआचार्यलनां थाय तो अा ब्राह्मणुं इर्यं थई नय. अे वियारीने गोपालदासे पद्मारावलने कथुं, के

सों कह्यो, जो-तुम सों श्रीरनछोडजी कबहू बोलत हैं ? बात करत हैं ? तब पद्मारावल नें गोपालदास सों कही, श्रीरनछोडजी काहू सों बोलत हैं ? बात करत हैं ? सो हम कों बतावो ? तब गोपालदास ने कह्यो, प्रयाग के पास अडेल में श्रीआचार्यजी महाप्रभु बिराजत हैं । सो श्रीरनछोडजी प्रगट भये हैं । सो बोलत बतरात हैं । तब पद्मारावल नें गोपालदास सों कही, मैं जाउं, मोकों श्रीरनछोडजी जैसे दरसन देइगें ? तब गोपालदास ने कही, जैसे श्रीरनछोडजी दरसन देत हैं तैसे ही दरसन श्रीआचार्यजी देइगें । और तुमसों बोलेंगे । तब पद्मारावल कों बड़ी आतुरता भई, जो-कब अडेल जाउं ? कब श्रीआचार्यजी श्रीरनछोडजी रूप सों मोसों बोलें ? पाछें गोपालदास अपने घर आये । रात्रि कों पद्मारावल कों नींद न आई । जो कहे, अडेल कों कब चलौं । सो प्रातःकाल उठि चले । सो कछुक दिनन में उज्जैन आये । तब मावजी पटेल ने पद्मारावल सों पूछयो, जो-रावलजी ! अब के तुम बहोत बेगि उज्जैन आये । और तुम्हारो मन उचाट दीमत है । ताको कारन कहा ? तब पद्मारावल ने कही, अडेल में श्रीरनछोडजी प्रगट भये हैं । सो सब सों बोलत बतरात हैं । सो प्रातःकाल मैं अडेल जाउंगो । तब मावजी पटेल ने

तभाराथी श्रीरञ्जुछोडलु क्यारेय भोले छे ? वात करे छे ? त्यारे पद्मारावले गोपालदासने कछुं, श्रीरञ्जुछोडलु कोषथी भोले छे ? वात करे छे ? ते अभने भतावो । त्यारे गोपालदासे कछुं, प्रयागनी पास अउलभां श्रीआचार्यलु महाप्रभुलु बिराजे छे । ते श्रीरञ्जुछोडलु प्रकथया छे । तेभोले छे । वातयित करे छे, त्यारे पद्मारावले गोपालदासने कछुं, हुं नउं ? भने श्रीरञ्जुछोडलु जेवां दर्शन थरो ? त्यारे गोपालदासे कछुं, जेवां श्रीरञ्जुछोडलु दर्शन दे छे तेवां दर्शन श्रीआचार्यलु आपरो । अने तभाराथी भोलेथी । त्यारे पद्मारावसने भहु आतुरता थरुं, के क्यारे अउल नउं ? क्यारे श्रीआचार्यलु श्रीरञ्जुछोडलु इपथी भारी साथे भोले ? पछी गोपालदास पोताना धरे आव्या । रात्रिये पद्मारावसने निद्रा न आवी । जे कहे, अउल क्यारे नउं ? पछी प्रातःकाले ठी राहया । ते केलाक द्विपसोभां उज्जैन आव्या । त्यारे भावल परेले पद्मारावसने पूछ्युं, के रावललु ! आ वभते तमे भहु नदही उज्जैन आव्या ? अने तभाइं मन उचारभां देभाय छे तेनुं कारणु शुं ? त्यारे पद्मारावले कछुं, अउलभां श्रीरञ्जुछोडलु प्रकथया छे । ते अधाथी भोले छे, वातयित करे छे । तेथी प्रातःकाल हुं अउल नउंथी । त्यारे भावल परेले कछुं, रावललु ! हुं पखु तभारी साथे छुं । श्रीरञ्जुछोडलुनां दर्शन

कही, रावलजी ! मैं हूँ तुम्हारे संग हों। श्रीरनछोडजी के दरसन को चलूंगे। तब प रावल ने कही, तुम राजसी लोग हो। हम तो पाइन चलेंगे। तुम्हारे संग भीर जाप्ता-असवारी, मो कैसे वनेगी ? तब मावजी पटेल ने कही, मैं अकेलो तुम्हारे संग पाइन चलूंगे। तब पद्मारावल कहें, तैयारी करो, प्रातः चलेंगे।

तब मावजी पटेल अपने घर आइकें विरजो स्त्री सों कहें, हम सवेरे पद्मारावल के संग अडेल जाइंगे। वहां श्रीआचार्यजी श्रीरनछोडजी रूप सों दरसन देत हैं, सबसों बोलत हैं। तब विरजो ने कही, मैं तुम्हारे संग चलोगी। तब मावजी पटेल ने कही, तुम स्त्रीजन कैसे चलोगी ? मैं तो पाइन चलौंगे। जाप्ता-असवारी नाहीं। तब विरजो ने कही, मैं तुम्हारे संग पाइन चलौंगी। तब मावजी पटेल ने पद्मारावल सों कह्यो, मेरी स्त्री संग चलन कहति है ? तब पद्मारावल ने कही, अकेले पाइन कैसे चलेगी ? तब मावजी ने कही, अकेले पाइन चलन कही है। तब पद्मारावल ने कही, तो चलो, बेगें आवो, तीनों जनें चलेंगे। तब मावजी पटेल आय घरमें तैयारी करी। रखवारो घरमें राखि विरजो को संग ले आये। सो तीनों जने अडेल को चले।

भाटे यादीश. त्यारे पद्मारावल दे ड्युं, तमे राजसी लोडे छे। अमे तो पगे यादीशुं. तभारी साथे लीड, जप्ता, अस्वारी (रहेशे) ते डेम जने ? त्यारे भावज पटेल दे ड्युं, हुं अकेलो तभारी साथे पगे यादीश. त्यारे पद्मारावल दे ड्युं, तैयारी करे, प्रातःकाल यादीशुं.

त्यारे भावज पटेल घेताना घरे आवीने विरजे स्त्री ने ड्ये, अमे सवारे पद्मारावलनी साथे अरेड जड्युं. त्यां श्रीआचार्यज श्रीरनुछोडजना इपथी दर्शन दे छे. अधाथी जेले छे. त्यारे विरजेअे ड्युं, हुं तभारी साथे यादीश. त्यारे भावज पटेल दे ड्युं, तमे स्त्री-जन केवी रीते यादशा ? हुं तो पगे यादीश. जप्ता, अस्वारी नही (रहे). त्यारे विरजेअे ड्युं, हुं तभारी सजे पगे यादीश. त्यारे भावज पटेल दे पद्मारावलने ड्युं, भारी स्त्री साथे यादवातुं ड्ये छे. त्यारे पद्मारावल दे ड्युं, अडेडी पगे डेम यादशे ? त्यारे भावजअे ड्युं, अडेडी पगे यादवातुं ड्युं छे. त्यारे पद्मारावल दे ड्युं, तो यादो नदही आवो, तरे जणुं यादीशुं. त्यारे भावज पटेल घरमां आवी तैयारी करे. रभवाणो घरमां राभी विरजेने साथे डड आव्या. पडी तरे जणु अरेड यादयां.

तब श्रीआचार्यजी ने जानी, इनको भाव श्रीरनछोड़जी में है। (यासों) जो-श्रीरनछोड़जी रूप सों दरसन देइंगे तो इनको भाव बदेगो। सो आपु श्रीरनछोड़जी रूप सों दरसन दिये। तब तीनों जने दंडवत् किये। तब पद्मारावल ने विनती करी, महाराज ! गोपालदास की कृपातें हमको दरसन भयो। तातें गोपालदास ने हमसों कही है, तुम श्रीआचार्यजी के सेवक हूजो। सो अब कृपा करिकें हम तीनों जने कों अंगीकार करिये। हम आपकी सरन हैं। तब श्रीआचार्यजी श्रीयमुनाजी में तीनों जने कों न्हावय नाम निवेदन कराये। पाछे मावजी पटेल के संग मनुष्य हते तिनकों नाम सुनाये। पाछें पद्मारावल कों अपुने मंदिर में संग ले आये। पाछें आपु भोजन कों पधारे। तब पद्मारावल के मन में यह आई, जो-श्रीरनछोड़जी कों भोग धरत हैं तैसेहि श्रीआचार्यजी कों भोजन करत दरसन होइ तो जूठन ले। तब यह पद्मारावल के मनकी श्रीआचार्यजी जानि पद्मारावल कों भीतर बुलाये। तब पद्मारावल देखें तो श्रीरनछोड़जी रूप सों भोजन करत हैं। सो बहोत मनमें प्रसन्न भये। तब श्रीआचार्यजी कहें, अब संदेह गयो ? तब पद्मारावल ने विनती करी, महाराज ! हम जीव तुच्छ बुद्धि हैं। तातें बार-बार मनमें ऐसी आई।

त्यारे श्रीआचार्यजी जे नृपुं, जेभने भाव श्रीरनुछोडभां छे (तेथी) जे श्रीरनुछोड इपथी दर्शन दधश तो जेभने भाव पधरे. तेथी आपे श्रीरनुछोड इपे दर्शन दीधां. त्यारे त्रु जने दंडवत कर्यां. त्यारे पद्मारावले विनंती करी, महाराज ! गोपालदासनी कृपाथी जेभने दर्शन थयां. तेथी गोपालदासे जेभने कहुं छे, के तमे श्रीआचार्यजना सेवक थजे. तेथी हुवे कृपा करीने जेभने त्रु जनुंने अंगीकार करे. जेभने आपनी शरु छीजे. त्यारे श्रीआचार्यजी श्रीयमुनाभां त्रु जनुंने नृपदावी नाम-निवेदन करावुं. पछी भाव पटेलना संग मनुष्य हुता तेभने नाम सलगावुं. पछी पद्मारावलेने पोताना मंदिरभां साथे लईआव्या. पछी पोते लोअने पधार्या. त्यारे पद्मारावलेना मनभां जे आवुं, के श्रीरनुछोडने भोग धरे छे तेज रीते श्रीआचार्यजनां लोअन करतां दर्शन थाय तो नूशु लधजे. त्यारे जे पद्मारावलेना मननी श्रीआचार्यजी जे नृपुं पद्मारावलेने अंदर जोलाव्या. त्यारे पद्मारावले जेभने तो श्रीरनुछोड इपथी (आप) लोअन करे छे. तेथी मनभां थहु प्रमत्त थया. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, हुवे संदेह गयो ? त्यारे पद्मारावले विनंती करी, महाराज ! जेभने जेव तुच्छ बुद्धि छीजे. तेथी बारंवार मनभां जेभ आवुं.



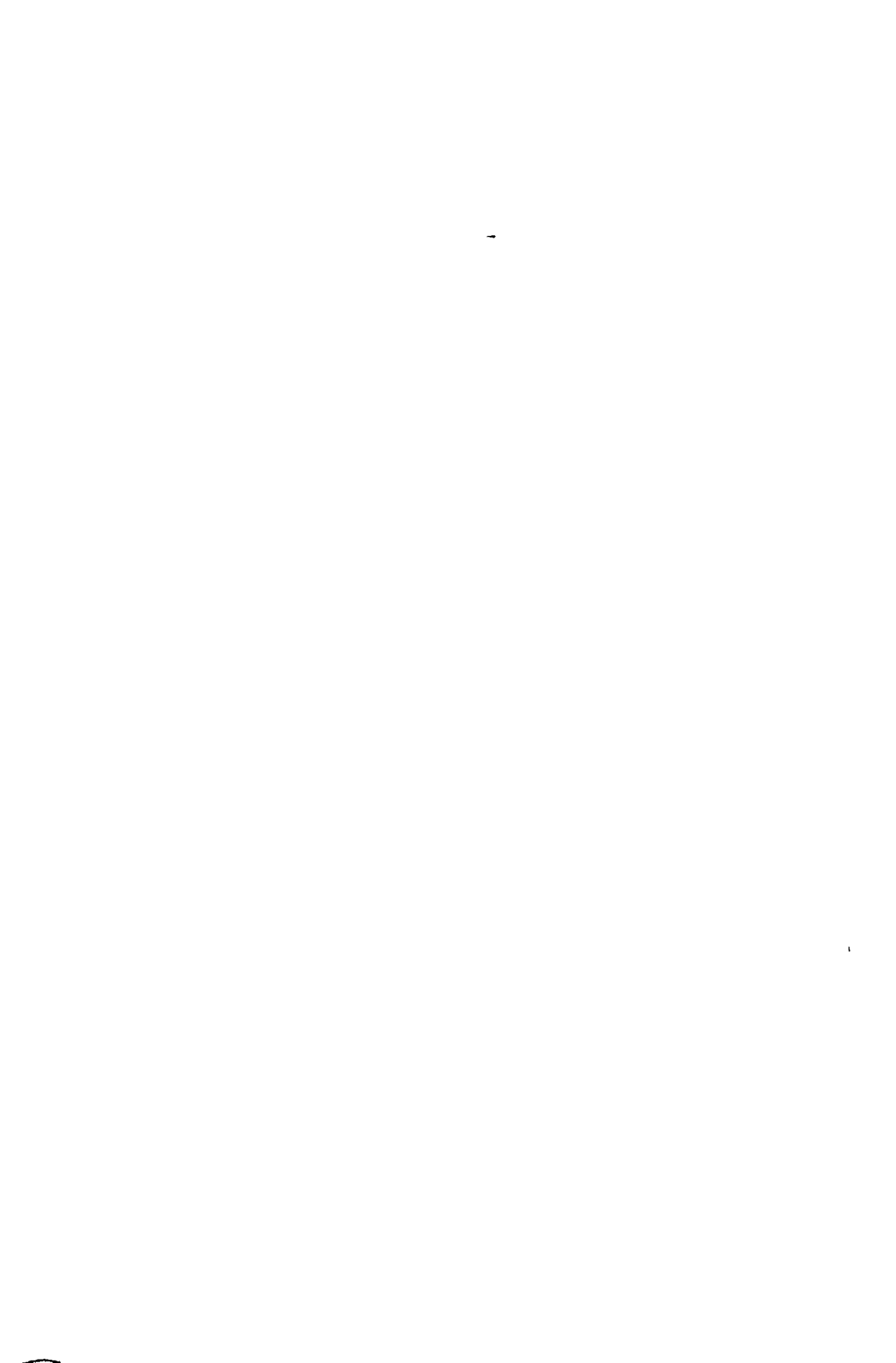
वट वृक्ष-श्रीमहाप्रभुजी की पर्णकुटी, अहेल.

प्रथम के मान सम्प. —

बाई ओर में १ श्रीगोकुलनाथजी ० श्रीद्वारिमानाथजी ३ श्रीविठ्ठलनाथजी ४ श्रीमदनमोहनजी
गोद के:—नीच में श्रीनवनीतप्रियजी । दाये श्रीबालकृष्णजी । बाये श्रीमुकुन्दरायजी ।

वैष्णवों के चित्र —

१ जागरे के पुरपोत्तमदाम । २ इनकी स्त्री । ३ भावजी पटेल । ४ एक ब्राह्मणी अटेल की ।
५ विरजो । ६ पद्मारावत । ७ रजो । ८ श्यामदाम सुतार ।



आप तो साक्षात् श्रीरनछोड़जी हो। पाछें आपु भोजन करिकें पद्मारावल कों जूठनि की पातरि धरी। मावजी पटेल, विरजो कों जूठनि धरी। तीनों जने महाप्रसाद लेकें श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के पास आये। तब पद्मारावल ने विनती करी, महाराज ! अब हमकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीआचार्यजी कहे, 'सेवा करो। तब पद्मारावल ने विनती करी, महाराज ! जैसो मन मेरो आपके दरसन में आसक्त है, जो—यही मन अष्टप्रहर रहत है, जो—श्रीरनछोड़जी कों निरख्यो करूं, ऐसो मन सेवा में लगें तो सेवा मैं करूं। नार्हीं तो न करूं। तब श्रीआचार्यजी कहें, तेरो मनोरथ श्रीठाकुरजी पूरन करेंगे।

भावप्रकाश—सो यह, जो—श्रीरनछोड़जी पास तेरी प्राप्ति होइगी द्वारका लीला में। सो श्रीठाकुरजी मनोरथ पूरन करेंगे।

और तीनों जनेन कों आज्ञा करी, हम उज्जैन पधारेंगे कछुक दिन में। तब तुम्हारे घर में श्रीठाकुरजी पधराय देहंगे। और मावजी पटेल, विरजो के साथे सेवा पधरावेंगे। सो तुम सेवा करियो। अब तुम तीनों जने घर जाव। हमहूं पाछे तें उज्जैन पधारेंगे। तब तुम्हारो मनोरथ सिद्ध होइगो। तब पद्मारावल और मावजी पटेल और विरजो तीनों जने दंडौत करि विदा होइ चले। कछुक दिन में उज्जैन

आप तो साक्षात् श्रीरनुछोड़जी छ। पछी आपे लोअन करीने पद्मारावलने लुअणी पातर धरी। भावल पटेल विरजेने लुअण धरी। तरे लुअं महाप्रसाद लधने श्रीआचार्यल महाप्रभुलनी पास आयां। तारे पद्मारावले विनंती करी, महाराज ! हुवे अमने शी आज्ञा छे ? तारे श्रीआचार्यल कहे, सेवा करे। तारे पद्मारावले विनंती करी, महाराज ! जेपुं मन भाइं आपना दर्शनमां आसक्त छे, जे अष्टप्रहर अण मन रहे छे, के श्रीरनुछोड़जीने जेया करूं, जेपुं मन सेवामां लागे तो सेवा हुं करूं। नहीं तो न करूं। तारे श्रीआचार्यल कहे, तारे मनोरथ श्रीठाकुरल पूरे करी।

भावप्रकाश—ते अे के श्रीरनुछोड़जी पास तारी प्राप्ति थरी, द्वारिका लीलामां। ते मनोरथ श्रीठाकुरल पूरा करी।

भीलुं, तरे लुअंने आज्ञा करी, के अमे उज्जैन पधारीशुं थोडा दिवसमां। तारे तभारा घरमां श्रीठाकुरल पधरावी छथुं। अने भावल पटेल विरजेना साथे (पलु) सेवा पधरावीशुं। ते तमे सेवा करजे। हुवे तमे तरे लुअं घर जाव। अमे पलु पाछणधी उज्जैन पधारीशुं। तारे तभारे मनोरथ सिद्ध थरी। तारे पद्मारावल अने भावल पटेल अने विरजे अे तरे लुअं दंडवत करी विदाय थरुं यात्यां। ते केदसाध

आये । सो गोपालदास ऐसे भगवदीय हे । जिनके रंचक संग तें पद्मारावल, मावजी, पटेल विरजो तीनों श्रीआचार्यजी की सरनि पाये । तातें गोपालदास की वार्ता कहां ताई कहिये । एक श्रीआचार्यजी को हृद विश्वास जिनकों है ।

वार्ता ॥२८॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, पद्मारावल सांचोरा ब्राह्मन उज्जैन के, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

वार्ता-प्रसंग १—ए सेवक भये । सो प्रकार तो ऊपर कहि आये, गोपालदास की वार्ता में । पाछें श्रीआचार्यजी उज्जैन पधारे । तब पद्मारावल के घर उतरे । पद्मारावल की स्त्री कों नाम निवेदन कराये । पाछें पद्मारावल सों कहे, कहूँतें भगवद् स्वरूप ले आव । सो पद्मारावल की ज्ञाति में एक सांचोरा के घर भगवद् स्वरूप हतो । अष्टभुजाजी । सो पद्मारावल कहें, ये ठाकुर हमकों देउ । तब उन कह्यो, ले जाव । हम सों बनत नहीं । दोय बेर न्हायो नहीं जात । तब पद्मारावल श्रीठाकुरजी कों ले आये । तब श्रीआचार्यजी पंचा-मृत स्नान कराय पाट बेठारि पद्मारावल के माथे पधराये । तब मावजी पटेल और विरजो ने बिनती करी, महाराज ! हमारे माथे

द्विसे उज्जैन व्याख्यां. ते गोपालदास सेवा भगवदीय हुता. जेभना रंचक संगथी पद्मारावल, मावळ पटेल, विरजो त्रैने श्रीआचार्यल्लु शरळु मळु. तेथी गोपालदासनी वार्ता कथां सुधी कहीये ? अक श्रीआचार्यल्लुना हृद विश्वास जेभने छे.

✽

✽

✽

हुये श्रीआचार्यल्लु महाप्रभुल्लुना सेवक, पद्मारावल सांचोरा ब्राह्मण उज्जैनना, तेमनी वार्ता ना भाव कहीये छीये—

वार्ता-प्रसंग १—अ सेवक थया ते प्रकार तो उपर कही व्याख्या, गोपालदासनी वार्तामां. पछी श्रीआचार्यल्लु उज्जैन पधार्या. तयारे पद्मारावलना घरे उतर्या. पद्मारावलनी स्त्रीने नाम-निवेदन कराव्युं. पछी पद्मारावलने कहे, कथांयथी भगवद् स्वरूप लळ आवो. पछी पद्मारावलनी ज्ञातिमां अक सांचोराना घर भगवद् स्वरूप हुतो, अष्टभुजल्लु. ते पद्मारावल कहे, अ ठाकुरल्लु अभने आवो. तयारे तेले कळुं, लळ लव. अभाराथी सेवा अनती नथी. जे वार नहुवातुं नथी. तयारे पद्मारावल श्रीठाकुरल्लुने लळ व्याख्या. तयारे श्रीआचार्यल्लुअ पंचामृत स्नान करावी पाट जेसाडी पद्मारावलना माथे पधराव्या. तयारे मावळ पटेल अने विरजोअ बिनती करी,

पधरावो तो हम सेवा करें। तब श्रीआचार्यजी ने कही, तुम्हारे माथे श्रीगुसांइजी सेवा पधरावेंगे।

भावप्रकाश—काहेंतें ? हम सरन तुमकों ले अपुने किये, परंतु सगरो मनोरथ श्रीगुसांइजी द्वारा सिद्ध होइगो।

तब मावजी पटेल और विरजो दंडवत् करि भेंट धरि घर गये। तब पद्मारावल ने विनती करी, महाराजाधिराज ! मैं तो मूर्ख हों। कछ् पढ्यो नाहीं। कछ् समुझत नाहीं। और इहां हमारे ज्ञाति के ब्राह्मन कर्म-जड़ स्मार्त हैं। सो भोकों दुःख देत हैं, जो-तू कहा समुझि के सेवक भयो ? तब श्रीआचार्यजी अपुने चरणारविंद को प्रसादी चंदन और चरणामृत पद्मारावल कों दिये। सो मुख में मेलत ही सगरे वेद पुरान सास्त्र को ज्ञान ह्वै गयो। सो बड़े बड़े पंडित सबन कों प्रति उत्तर देहि। माथो नीचो करि सगरे हारि के उठि जाते।

भावप्रकाश—और श्रीआचार्यजी ने प्रसादी चंदन और चरणामृत दिये सो दोऊ देवे को अभिप्राय यह है, जो-चंदन के लिये तें सगरो ज्ञान होई, उच्छलित रस ह्वै जाय तो कहुँ शरीर छूटि जाय, अथवा सबके आगे लीला की

महाराज ! अमारा माथे पधरावो तो अमे सेवा करीअे. त्पारे श्रीआचार्यजीअे अ्हुं, तमारे माथे श्रीगुसांइजी सेवा पधरावरो.

भावप्रकाश—कुभडे ? अमे तमने शरणु लई पोताना अर्था. परंतु अधे मनोरथ श्रीगुसांइजी द्वारा सिद्ध थरो.

त्पारे मावजी पटेल अने विरजो दंडवत् करी भेंट धरी घर गयां. त्पारे पद्मारावले विनती करी, महाराजधिराज ! हुं तो-मूर्ख अ्हुं. कंअ लख्यो नथी. कंअ समजतो नथी. अने अ्हुडीं अमारी ज्ञातिना आह्मणु कर्मजड स्मार्त अे. ते मने दुःख दे अे, के तू अुं समजने सेवक थयो ? त्पारे श्रीआचार्यजीअे पोताना अरणारविंदुं, प्रसादी अंदन अने अरणामृत पद्मारावलने आप्युं. ते अुभमां मेलतां न अधे वेद पुराणु शास्त्रनुं ज्ञान थई अ्युं. ते मोअ मोअ पंडितो अधेने प्रति उत्तर आये. माथुं नीअुं करी अधे हारीने उठी अता.

भावप्रकाश—अने श्रीआचार्यजीअे प्रसादी अंदन अने अरणामृत आप्यां. ते अने देवानो अविप्राय अे अे, के अंदनना देवाथी अधुं ज्ञान थाय. उच्छलित रस थई अथ तो कंअ शरीर छुटी अथ. अथवा अधानी आगण लीलानी

वार्ता करें, बिना कहें रह्यो न जाइ । तब चरणामृत तें सरीर दृढ़ है जाई, भक्ति दृढ रस उच्छलित होई बाहर न जाय, हृदय में स्थिर होय रहें । तातें प्रसादी चंदन और चरणामृत दिये ।

वार्ता—प्रसंग २—सो एक समय पद्मारावल ने सैया नई बनवाई । तब श्रीठाकुरजी पद्मारावल सों कहें, सैया छोटी है । मोसों पौढ्यो नाहीं जात । तब पद्मारावल प्रसन्न होई बड़ी सैया बनवाये । तब श्रीठाकुरजी सुखसों पौढन लागे । या प्रकार सानुभावता जनावन लागे । और एक दिन पद्मारावल की स्त्री नें खीर ताती समर्पी । पाछें भोग सराय आरती करी । ताही समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारें । तब श्रीठाकुरजीने श्रीआचार्यजी कों अपने हस्त और ओष्ठ दिखाये, जो—पद्मारावल की स्त्री नें ताती खीर समर्पी । सो मेरे हस्त और ओष्ठ आरक्त भये हैं । प्रा प्रकार श्रीआचार्यजी सों कहे । पद्मारावल की स्त्री सों न कहें ।

भावप्रकाश—काहेतें ? स्त्री साधारन वैष्णव है । सो उद्धार होयगो सरन के प्रताप तें । परंतु लीला संबंधी नाहीं है ।

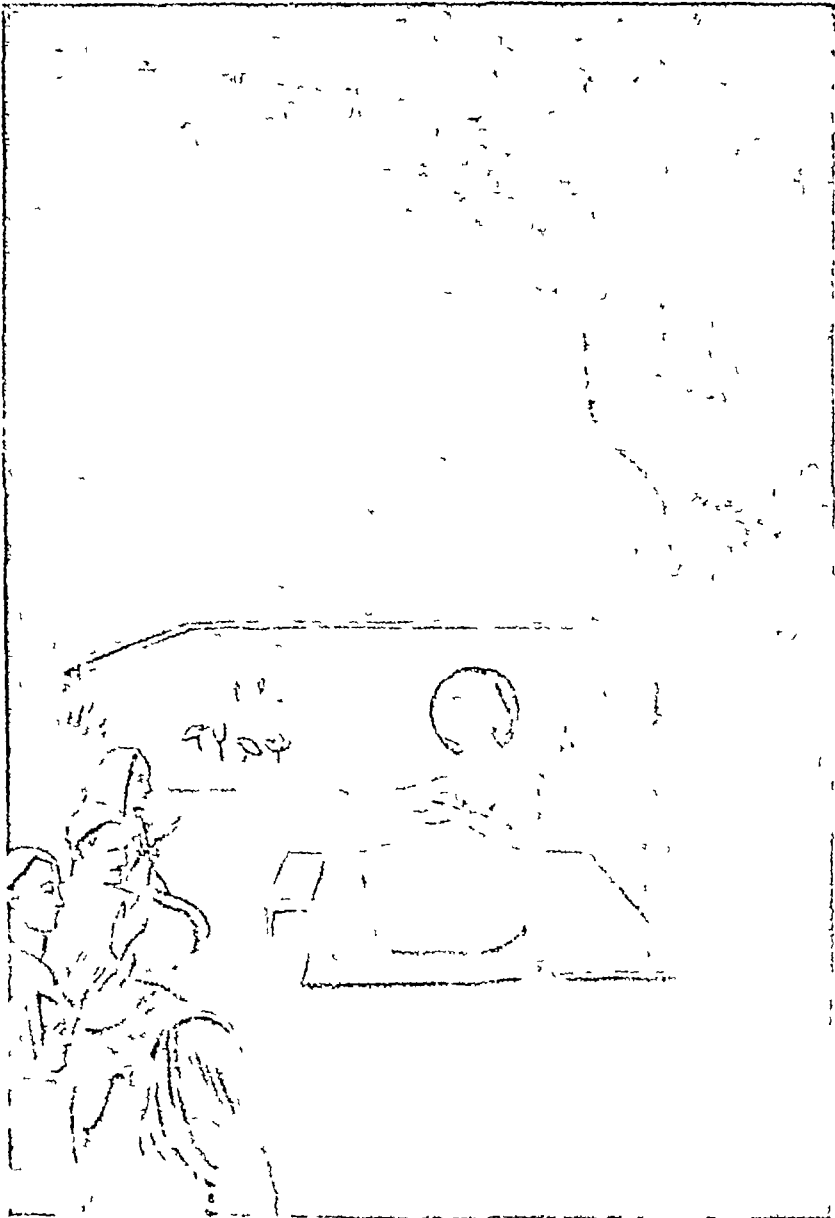
तब श्रीआचार्यजी पद्मारावल और पद्मारावल की स्त्री सों

वार्ता करे. बिना कहे रह्यो न जाय. त्पारे चरणामृतथी शरीर स्थिर थध रहे, भक्ति दृढ रस उच्छलित थध बाहर न जाय, हृदयमां स्थिर थध रहे. तेथी प्रसादी चंदन अने चरणामृत आप्यां.

वार्ता—प्रसंग २—ते अेक समय पद्मारावले सैया नवी बनावी. त्पारे श्रीठाकुरल पद्मारावलने कहे, सैया नानी छे. भाराथी पोढातुं नथी. त्पारे पद्मारावले प्रसन्न थधने मोठी सैया बनावरावी. त्पारे श्रीठाकुरल सुभथी पोढवा लाग्या. अे प्रकारे सानुभावता जलुववा लाग्या. अने अेक दिवस पद्मारावलनी स्त्रीअे भीर गरम समर्पी. पछी लोग सरावी आर्ति करी. तेज समये श्रीआचार्यल महाप्रभु पधार्या. त्पारे श्रीठाकुरलअे श्रीआचार्यलने पोताना हाथ अने होठ देखाव्या, के पद्मारावलनी स्त्रीअे गरम भीर समर्पी. तेथी मारा हाथ अने होठ लाल थया छे. आ प्रकारे श्रीआचार्यलने कलुं, पद्मारावलनी स्त्रीने न कलुं.

भावप्रकाश—ठम न ? स्त्री साधारण वैष्णव छे. तेथी उद्धार थरी. शरणुना प्रतापथी. परंतु लीला सम्बंधी नथी.

त्पारे श्रीआचार्यलअे पद्मारावल अने पद्मारावलनी स्त्रीने कलुं, तमे



श्रीमदाप्रभुजी की बैठक. उज्जैन.

बाएँ ओर डगर में —

१. पञ्जारावल की स्त्री । २. दिनकरदास । ३. सुकुन्ददास ।
 ४. सुकुन्ददास की स्त्री । ५. दिनारदास की स्त्री ।



कहें, तुम श्रीठाकुरजी कों ताती खीर क्यों समर्पें ? श्रीठाकुरजी के हस्त और ओष्ठ लाल भये हैं । खीर ताती लागी तातें । तब पद्मारावल ने कही, महाराज ! हम कहा जाने ? जो-ताती सामग्री आछी तातें समर्पें । तब श्रीआचार्यजी ने कही, और सामग्री ताती धरिये ताकी चिंता नाहीं परंतु खीर ताती न धरिये । अंगुरी डारिये । सुहाय तब भोग धरिये । तब पद्मारावल ने कही, महाराज ! खीर ताती हती तो श्रीठाकुरजी सीतल क्यों न होंन दीनी ? ताती क्यों अरोगे ? तब श्रीआचार्यजी कहें, श्रीठाकुरजी बालक हैं । सो बालक कों खीर बहुत प्रिय हैं, ताते पहिले खीर में हाथ डारे हैं । और सामग्री ताती होई तो पीछे अरोगें । खीर पहलें आरोगे, तातें खीर ताती न धरिये ।

भावप्रकाश—या प्रकार श्रीआचार्यजी पद्मारावल कों और उनकी स्त्री कों समझाये । बालक को नाम लें । परंतु भीतर को खीर को स्वरूप नाहीं कहे । काहेतें ? स्त्री लीला संबंधी नाहीं है । और पद्मारावल द्वारका की राज लीला संबंधी है । तातें पद्मारावल कों श्रीठाकुरजी अनुभव जताये । परंतु ब्रजमत्तन की लीला को अनुभव नाहीं है । तातें खीर स्वामिनीजी के भाव की सामग्री है । तातें श्रीठाकुरजी कों वहुत प्रिय हैं । सो खीर को भाव नारायणदास ब्रह्मचारी की वार्ता

श्रीठाकुरजीने गरम भीर डेम समर्पें ? श्रीठाकुरजीना हाथ अने हाड दास थया छे. भीर गरम लागी तेथी. तयारे पद्मारावले कहुं, महाराज ! अमे शुं नालीअे ? ने गरम सामग्री सारी तेथी समर्पें. तयारे श्रीआचार्यजीअे कहुं, भीअ सामग्री गरम धरिये तेनी चिंता नहूँ परंतु भीर गरम न धरिये. आंगणी नाअिये. सहन थाय तयारे लोग धरिअे. तयारे पद्मारावले कहुं, महाराज ! भीर गरम हती तो श्रीठाकुरजीअे डंडी डेम न थया दीधी ? गरम डेम आरेअ्या ? तयारे श्रीआचार्यजीअे कहे. श्रीठाकुरजी अालक छे. ते अालकने भीर अहुं न प्रिय छे. तेथी पहुलां भीरमां हाथ नाअे छे. भीअ सामग्री गरम हाय तो पछी आरेअे, भीर पहुलां आरेअे तेथी गरम न धरिअे.

भावप्रकाश—आ प्रकारे श्रीआचार्यजी पद्मारावलने अने तेमनी स्त्रीने समअव्यां, अालकनुं नाम लअने. परंतु अंदरनुं भीरनुं स्वरूप नहूँ कहुं, डेमडे ? स्त्री लीला-संबंध नथी अने पद्मारावल द्वारकानी राजलीला संबंधी छे. तेथी पद्मारावलने श्रीठाकुरजीअे अनुभव नालाअ्यो. परंतु ब्रजमत्तनी लीलाते अनुभव नथी. तेथी भीर स्वामिनीअना आवनी सामग्री छे. तेथी श्रीठाकुरजीने अहुं न प्रिय छे. भीरने आव नारायणदास ब्रह्मचारीनी वार्तामां कहुं छे. तेथी

में कहे हैं ऊपर । तातें खीर देखके श्रीठाकुरजी कों धीरज छूटि जात है । तातें खीरि सीरी करिकें धरिये । और जहां तहां खीर कों सीरी करनी लिखी है । और सामग्री कों सीरी करनो कहूं कहे नाहीं । जैसे श्रीआचार्यजी कों खीर बहोत प्रिय हैं । ऐसे श्रीगुसाईंजी कों लाडु बहोत प्रिय हैं । और श्रीआचार्यजी कों सखड़ी और खीर सीरी कोमल भाव प्रिय । तैसेई श्रीगुसाईंजी कों नाना प्रकार की अन-सखड़ी प्रिय । सो प्रभु प्रौढ भावसों आरोगत हैं । परंतु पुष्टिमारग में वैष्णव को जैसो अधिकार तेसोई अनुभव हैं ।

वार्ता—प्रसंग ३—और एक समय पद्मारावल श्रीरनछोड़जी के दरसन कों द्वारकाजी कों चले । तब श्रीरनछोड़जी नें स्वप्न में कह्यो, जो—राजनगर में एक हमारो सेवक है । सो ताके घर तुम जैयों । सो तहां पाक करियो । तब पद्मारावल कह्यो, जो—महाराज ! मैं तो वाकों जानत नाहीं और बिनु बुलाये कौन के घर जाऊं ? तब श्री-रनछोड़जी ने कह्यो, जो—वह आपुहि बुलावन आवेगो । पाछें पद्मारावल राजनगर में आये ।

भावप्रकाश—सो यातें, जो—पद्मारावल श्रीरनछोड़जी की लीला संबंधी है । तातें विचारे, जो—कहूं ब्रजलीला में मग्न होय तो मेरे हाथ सों जाय । तातें

भीर जेधने श्रीठाकुरजीनी धीरज छुटी नय छे । तेथी भीर ठडी करीने धरिये । अने न्यां सां भीरने ठडी करवी अम लभ्युं छे । भीर सामग्रीने ठडी करवी अम कथ कथुं नथी । जेभ श्रीआचार्यजीने भीर अहु प्रिय छे । अम श्रीगुसांईंजीने लाडु अहु प्रिय छे । वणी श्रीआचार्यजीने सखड़ी अने ठडी भीर कोमल भाव प्रिय छे । तेज रीते श्रीगुसांईंजीने नाना प्रकारनी अनसखड़ी प्रिय (छे), ते प्रभु प्रौढ भावथी आरोगे छे । परंतु पुष्टिमारगंमां वैष्णवने जेवो अधिकार तेवो न अनुभव छे ।

वार्ता—प्रसंग ३—वणी अम समय पद्मारावल श्रीरनुछोड़जीना दर्शने द्वारकाछ याव्या । तयारे श्रीरनुछोड़जीअे स्वप्नमां कथुं, के राजनगर (अमदावाद)मां अम अमारो सेवक छे । तेना घरे तमे जजे । त्यां सामग्री करजे । तयारे पद्मारावल कहे, के महाराज ! हुं तो अने नखतो नथी । अने विना जोलाव्या केना घर नउ ? तयारे श्रीरनुछोड़-जीअे कथुं, के ते आप न जोलाववा आवशे । पछी पद्मारावल राजनगरमां आव्या ।

भावप्रकाश—ते अथी ठे पद्मारावल श्रीरनुछोड़जीनी लीला—संबंधी छे । तेथी विचारे ठे कंई ब्रजलीलामां मग्न थाय तो मारा हाथथी नय । तेथी कहे,

कहें, हमारो सेवक है ताके घर-जैयो । सो पद्मारावल के मनकों भाई, जो-ब्रजलीला में मग्न होते तो यह कहते, तुम्हारो सेवक है, परंतु श्रीआचार्यजी को सेवक होइ तो मेरी ठीक परे । सो इनकों तो श्रीरनछोड़जी पर भर भाव बहोत है । श्रीआचार्यजी को स्वरूप श्रीरनछोड़जी को जान्यो । ब्रजलीला संबंधी नहीं जान्यो । तातें इनके घर श्रीठाकुरजी हू श्रीरनछोड़जी रूप तें सानुभावता जनावत हैं । और पद्मारावल के वेटा कृष्णभट्ट होइंगे । सो श्रीगुसांईजी के लीला संबंधी होइंगे । तब कृष्णभट्ट कों श्रीठाकुरजी अनुभव करावेंगे । यामें यह जताये, जो-जैसो जीव होइ तितनो श्रीआचार्यजी कों जानें । तितनों श्रीठाकुरजी अनुभव जनावें । जो-श्री-आचार्यजी कों साक्षात् पुरुषोत्तम जानते तो श्रीगोवर्द्धनधर अनुभव जतावते । जो-श्रीआचार्यजी कों पूर्णपुरुषोत्तम श्रीगोवर्द्धनधर तें अधिक जानते । तब ब्रजलीला को अनुभव होतो । यह सिद्धांत दिखाये ।

और श्रीरनछोड़जी रात्रि कों अपने सेवक सों कह्यो, काल्हि पद्मारावल राजनगर तें तेरे गाम में आवेंगे । सो उनकों घर लाइ कें नीकी भांति सों रसोई-पाक करवइयो । तब उह सेवक ने कह्यो, मैं पद्मारावल कों कैसे जानूंगों ? तब श्रीरनछोड़जी ने कही पद्मारावल प्रसिद्ध है, तू जानेंगो ।

अमारो सेवक छे तेना धर नर. ते पद्मारावलना मनमां गभ्युं. जे ब्रजलीलाभां मग्न होता तो जे कहता, ते तम्हारो सेवक छे परंतु श्रीआचार्यजिनो सेवक होय तो मारे ठीक परे. परंतु जेमने तो श्रीरनुछोड़जिनो उपर लरलाव धर्यो छे. श्रीआचार्यजिनो स्वरूप श्रीरनुछोड़जिनो, नश्युं. ब्रजलीला संबंधी नहीं नश्युं. तेथी जेमना धर श्रीठाकुरजिनो पश्च श्रीरनुछोड़जिनो रूपथी अनुभव नश्यवे छे. जेने पद्मारावलना वेटा कृष्णभट्ट थरते ते श्रीगुसांईजिनो लीला-संबंधी थरते. सारे कृष्णभट्टने श्रीठाकुरजिनो अनुभव करावरे. जेमां जे नश्यव्युं, ते जेवो जव होय तेदरुं श्रीआचार्यजिनो स्वरूपने नश्ये. तेदरुं श्रीठाकुरजिनो अनुभव नश्यवे. जे श्रीआचार्यजिनो साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम नश्यता तो श्रीगोवर्द्धनधर अनुभव नश्यवता. जे श्रीआचार्यजिनो पूर्ण पुरुषोत्तम श्रीगोवर्द्धनधरथी अधिक नश्यता तो ब्रजलीलानो अनुभव थतो. जे सिद्धांत देखाज्यो.

जेने श्रीरनुछोड़जिनो रात्रिजे पोताना सेवकने छहे, काल पद्मारावल राजनगरथी तारा गाममां आवथे. ते जेमने धर लावीने सारी रीतिथी रसोई सामथी करावते.

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो—तुम दोऊ मेरे संबंधी हो। सो मैं तुम्हारे दोऊ को मिलाप करगइ देऊंगो।

पाछें पद्मारावल राजनगर में बिचारे, जो—मैं श्रीरनछोड़जी के सेवक को जानत नहीं। तानें एक उपाइ करूं। तब संग में विद्यार्थी हतो, तासों कहें, जो—तू गाम में जाइ कोरे अन्न की न्यारी न्यारी भिक्षा पांच-सात ठिकाने सों मांगि लाउ। सो सब की न्यारी न्यारी राखियो। तब वह विद्यार्थी गाम में जाइ कोरी भिक्षा पांच-सात ठिकाने सों मांगि ले आयो। तब पद्मारावल ने उह विद्यार्थी सों कही, जो—जाकी भिक्षा मांगि लायो है ता—ताको अन्न फेरि आउ। तब वह विद्यार्थी अन्न फेरन गयो। तब उह श्रीरनछोड़जी के सेवक ने कही, जो—भिक्षा ले गये सो फेरन क्यों आये? तब विद्यार्थी ने कही, जो—हमारे स्वामी की जैसी आज्ञा। उन कही, ले आउ, सो ले गयो अब उन कही, भिक्षा है ताको फेरि आव। सो फेरन आयो। तब उन कही, जो—तुम्हारे स्वामी को नाम कहा? तब विद्यार्थी ने कही, जो—पद्मारावल। तब उह भिक्षा फेरि लीनी। पाछें उह विद्यार्थी के संग पद्मारावल के पास गयो। कह्यो, रावलजी! हमारे घर

त्यारे ते सेवके कछुं, हुं पद्मारावलने डेवी रीते नष्टीश? त्यारे श्रीरनछोड़जीसे कछुं, पद्मारावल प्रसिद्ध छे, तू नष्टीश।

भावप्रकाश—अमां अ नष्टीशु, उ तमे अन्ने मारा स अंधी छे। तेथी हुं तमारा अन्नेना भेणाप करावी दधश।

पछी पद्मारावले राजनगरमां विद्यार्थी, के हुं श्रीरनछोड़जीना सेवकने नष्टीना नथी। तेथी अक उपाय करूं। त्यारे साथमां विद्यार्थी हतो, तेने कछुं, के तू गाममां नष्ट डेरा अन्ननी अलग अलग भिक्षा पांच-सात ठिकानेथी मांगी लाव। ते अधानी अलग-अलग राभजे। त्यारे ते विद्यार्थी गाममां नष्ट डेरी भिक्षा पांच-सात ठिकानेथी मांगीने लभ आव्यो। त्यारे पद्मारावले ते विद्यार्थीने कछुं, के जे-जेनी भिक्षा मांगीने लाव्यो छे ते-तेने अन्न पाछुं-आपी आव। त्यारे ते विद्यार्थी अन्न पाछुं आपवा गयो। त्यारे ते श्रीरनछोड़जीना सेवके कछुं, के भिक्षा लभ गया ते पाछी आपवा केम आव्यो? त्यारे विद्यार्थीसे कछुं, के अमारा स्वामीनी जेवी आज्ञा। अमरे कछुं, लभ आवो। त्यारे लभ गयो। हुवे अमरे कछुं, भिक्षा जेनी छे तेने पाछी आपी आवो। ते पाछी आपवा आव्यो छुं। त्यारे तेले कछुं, के तमारा स्वामीनुं नाम शुं? त्यारे विद्यार्थीसे कछुं, के, पद्मारावल। त्यारे तेले भिक्षा पाछी लीधी। पछी ते विद्यार्थीना

चलो। रसोई करो। तब पद्मारावल ने कही, मैं तो काहू के घर जात नाहीं। तब उह श्रीरनछोड़जी के सेवक ने कही, जो-मोकों श्रीरनछोड़जी की आज्ञा है, जो-पद्मारावल को अपने घर रसोई पाक कराइयो। तातें मैं बुलावन आयो हूं। सो मोकों आज्ञा करी है, सो तुमहू को आज्ञा करी होइगी। तुमहू तो श्रीरनछोड़जी के कृपापात्र हो। तातें मोसों कहें। तब पद्मारावल बहुत प्रसन्न होई कें कहें, जो-मोहू को आज्ञा है श्रीरनछोड़जी की। तातें चलो। तब वाके घर आई रसोई पाक करि भोग धरि महाप्रसाद उह सेवक को हू धरे।

भावप्रकाश—वाके हाथ सों यातें नाहीं लिये, जो-वह बनिया हतो। तातें दोउ जन महाप्रसाद लिये। उह विद्यार्थी को महाप्रसाद लिवाये। पाछें रात्रि को वाई के घर रहे। श्रीरनछोड़जी की दोऊ जनें वार्ता करि प्रसन्न भये। एक भाव तें दोउ मिलें। तहां सुख उपजे।

पाछें प्रातःकाल पद्मारावल चलन लागें। तब वह सेवक नें कही, कछु दिन रहो। तब पद्मारावल कहे, मोसों रह्यो न जाई। श्रीरनछोड़जी के दरसन की बहोत आतुरता है। ऐसे कहें तब उह श्रीरनछोड़जी के सेवक ने विदा किये। सो पद्मारावल द्वारका को चले।

साथे पद्मारावलनी पासे आब्यो। कहुं, रावल! अमारा धरे यालो, रसोई करे। त्पारे पद्मारावले कहुं, हुं तो कोधना धरे नतो नथी। त्पारे श्रीरनुछोडलना सेवके कहुं, के भने श्रीरनुछोडलनी आज्ञा छे, के पद्मारावलने तारा धरे रसोई-सामग्री क्रावलने. तेथी हुं पोलाववा आब्यो कुं. तेथी भने आज्ञा करी छे. ते तभने पणुःआज्ञा करी हुशे. तभे पणु श्रीरनुछोडलना कृपापात्र छे, तेथी भने कहुं. त्पारे पद्मारावल अहु प्रसन्न थधने कहे,के भने पणु आज्ञा छे तेथी यालो. त्पारे तेना धर आवी रसोई-सामग्री श्रीरनुछोडलनी करी लोग धरी महाप्रसाद ते सेवकने पणु धर्या.

भावप्रकाश—अना हाथनुं अथी न दीधु, के ते वाणिअो हुतो. तेथी अन्ने नणु महाप्रसाद दीधो. ते विद्यार्थीने महाप्रसाद लेवडान्यो. पछी रात्रिअे तेना न धरे रखा. श्रीरनुछोडलनी अन्ने नणु वार्ता करी प्रसन्न थया. अेक भावथी अन्ने भणे त्यां सुभ उपने.

पछी प्रातःकाल पद्मारावल याववा लाग्या. त्पारे ते सेवके कहुं, घोडा द्रिवस रहो. त्पारे पद्मारावले कहुं, माराथी रहुी शक्य नही. श्रीरनुछोडलना दर्शननी अहु न आतुरता छे. अेम कहे, त्पारे ते श्रीरनुछोडलना सेवके विदाय क्यो. पछी पद्मारावल द्वारका याव्या.

सो दोउ गुजरात में न्यारे न्यारे सांचोरा के घर जन्मे । सो पुरुषोत्तम जोसी को विवाह भयो । बरस सत्रह के पुरुषोत्तम जोसी भये । तब एक समय श्रीआचार्यजी गुजरात पधारे । सो पुरुषोत्तम जोसी मध्याह्न समय एक तालाब पर संध्या करत हते । तब श्रीआचार्यजी तालाब पर पधारि के संध्यावंदन करन लागे । सो पुरुषोत्तम जोसी की ओर कृपा करिके दैवी जानि देखे । तब पुरुषोत्तम जोसी श्रीआचार्यजी पास आई नमस्कार करि यह पूछयो, महाराज ! कर्ममार्ग बढो के ज्ञानमार्ग बढो ? तब श्रीआचार्यजी कहें, जाके मन में दृढ़ जो-मार्ग आवें, जामें जाको विश्वास होय वाके भाये तो वह मार्ग बढो । और बढो तो भक्तिमार्ग हैं । जामें जीव कृतार्थ होई । और ज्ञानमार्ग कर्ममार्ग सों कृतार्थ कठिनता सों होई । सो काहूसों निर्वाह होय नाहीं । काहेतें ? कष्ट साध्य हैं, सो या काल में सरीर को कष्ट करचो न जाइ, जो-कोऊ सरीर को कष्ट सहे तो मन ठिकाने न रहें । तातें भक्तिमार्गी जीव कृतार्थ होई । और आश्रय नाहीं । तब पुरुषोत्तम जोसी ने कही, जो-महाराज ! भक्ति को स्वरूप कहा ? कृपा करिके कहिये । तब श्रीआचार्यजी कहें, भक्ति को स्वरूप वर्णन करिये तो पार आवें नाहीं । परंतु कलुक

‘गुनयुडा’ अमनुं नाम छे. अने पुरुषोत्तम जेशीनी स्त्री ‘गुनयुडा’ नी सप्पी छे. ‘दुर्वासा’ अमनुं नाम छे.

ते अन्ने गुजरातमां अलग अलग सांचोराना धरे जन्म्यां. पछी पुरुषोत्तम जेशीनुं लगन थयु. वर्ष सत्तरना पुरुषोत्तम जेशी थया. लारे अक समय श्री-आचार्यजु गुजरात पधार्या. लारे पुरुषोत्तम जेशी मध्याह्न समये अक तलाव उपर संध्या करता हुता. लारे श्रीआचार्यजु तलाव उपर पधारिने संध्यावंदन करवा लाग्या. ते पुरुषोत्तम जेशीनी तरई कृपा करिने दैवी ज्ञानिने जेयुं. लारे पुरुषोत्तम जेशीअे श्रीआचार्यजु पासे आवी नमस्कार करिने अे पूछयुं, महाराज ! कर्ममार्ग भोटो के ज्ञानमार्ग भोटो ? लारे श्रीआचार्यजु कहे, जना मनमां दंड न मार्ग आवे, जमां जने विश्वास होय तेना मनथी तो ते मार्ग भोटो. अने भोटो तो अक्तिमार्ग छे. जमां जव कृतार्थ थाय. अने ज्ञानमार्ग, कर्ममार्गथी कृतार्थ कठिणुताथी थाय. ते डोअथी निर्वाह थाय नही. डेभके कष्टसाध्य छे. तेथी आ कालमां शरीरने कष्ट आप्युं न अय. जे डोअ शरीरनुं कष्ट सहे तो मन ठेकाए न रहे. तेथी अक्तिमार्गीअे जव कृतार्थ थाय. भीजे आश्रय नथी. लारे पुरुषोत्तम जेशीअे कहुं, के महाराज ! अक्तिनुं स्वरूप थुं ? ते कृपा करिने कहीअे ?

तोकों कहत हां । तव “ भक्तिवर्द्धनी ” ग्रन्थ करि ग्यारह श्लोक पुरुषोत्तम जोसी कों सुनाये, सो यह उत्तम अधिकारी है । ताते सगरो बोध है गयो । तव श्रीआचार्यजी कों दंडवत् करि विनती किये, महाराज ! इतने दिन हम कर्ममार्ग में पचि मरे । परंतु कछू हाथ आयो नाहीं । वृथा जन्म गमाये । अब आपु हमकों सरनि लीजिये । आज्ञा करो सो हम करें । तव श्रीआचार्यजी दृढ़ प्रीति देखि कें नाम सुनाइ ब्रह्मसंबंध कराये । और माथे पर चरन धरे । हृदय पर चरन धरे । और कहे, जो-तोकों भक्तिमार्ग स्फुरेगो । दृढ़ एकांगी भक्ति को तू अधिकारी है । तव पुरुषोत्तम जोसी नें विनती करी, जो-महाराज ! मेरे घर पधारो, स्त्री कों अंगीकार करो । तव श्रीआचार्यजी पुरुषोत्तम जोसी के घर पधारि स्त्री कों नाम निवेदन कराये । पाछें आज्ञा दिये, जो-तुम भगवद् सेवा करो । तव पुरुषोत्तम जोसी ने कही, महाराज ! मेरे घर में श्रीठाकुरजी हैं । सो मर्यादा की रीति पूजा करत हतो । अब आपु जैसे आज्ञा करो तैसे सेवा करों । तव श्रीआचार्यजी लालजी कों पंचामृत स्नान कराय पाट बैठाये । पुरुषोत्तम जोसी के माथे पधराये । मा-घाप तो पहले ही देह छोड़ी हती । सो दोऊ जनें प्रीतिसों सेवा करन लागें । पाछें श्रीआचार्यजी

त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, भक्तितुं स्वरूप वर्णन करीये तो पार न आवे. परंतु दंडक तने कहुं छुं. त्यारे ‘ भक्तिवर्द्धनी ’ ग्रंथ करी अग्यार श्लोक पुरुषोत्तम जेशीने संबणायो. डेम, डे ये उत्तम अधिकारी छे. तेथी अधुं ज्ञान थध गयुं. त्यारे श्रीआचार्यजीने दंडवत् करी विनंती करी, महाराज ! आटला दिवस अमे कर्ममार्गमां परया रह्या परंतु कर्ध हाथ आव्युं नही. वृथा जन्म भ्येयो. हुवे आप अमने शरणे लो. आज्ञा करे ते अमे करीये. त्यारे श्रीआचार्यजीये दृढ़ प्रीति जेधने नाम संबणावी ब्रह्मसंबंध करायुं. अने माथा उपर यरण धर्या. हृदय उपर यरण धर्या. अने कहे, डे तने भक्तिमार्ग स्फुरे. दृढ़ एकंगी भक्तितो तू अधिकारी छे. त्यारे पुरुषोत्तम जेशीये विनंती करी, डे महाराज ! मारा धरे पधारो, स्त्रीने अंगीकार करे. त्यारे श्रीआचार्यजी पुरुषोत्तम जेशीने धरे पधारी स्त्रीने नाम-निवेदन करायुं. पछी आज्ञा आपी डे तमे लगनसेवा करे. त्यारे पुरुषोत्तम जेशीये कहुं, महाराज ! मारा धरमां श्रीठाकुरजी छे ते मर्यादानी रीतिअे पूज करतो हुतो. हुवे आप जेवी आज्ञा करे तेवी रीते सेवा करे. त्यारे श्रीआचार्यजीये संबणायो पंचामृत स्नान करायी पाट जेसाडया. पुरुषोत्तम जेशीने माथे पधराय्या. माथापे तो पहेलांथी ज देह छोडी हती. तेथी

श्रीद्वारिका पधारे । सो पुरुषोत्तम जोसी नें बहोत दिन सेवा करी । भगवद्भाव में मगन रहते, अव्यावृत्त होइ रहें । काहू के आगें अपने हृदय को भाव प्रगट न करते ।

वार्ता-प्रसंग १—एक समय पुरुषोत्तम जोसी के मन में यह आई, जो-श्रीगोकुल जाई, श्रीगुसांई को दरसन करिये । सो लोगन के आगे ज्ञाति में कहें, हम कासी है आवें । सो बनारस को नाम ले स्त्री संग एक घोरा पर श्रीठाकुरजी कों पधराय के चलें । सो कछुक दिन में उज्जैन आये । तब उज्जैन में पूछे, पद्मारावल के बेटा कहां रहत हैं ? श्रीगुसांईजी के सेवक हैं, इनसों मिलिये । तब लोगन ने कही, पद्मारावल के चारि बेटा हैं । तामें तीन बेटा भेले रहत हैं । और एक कृष्णभट्ट न्यारे रहत हैं । तब पुरुषोत्तम जोसी बिचारि किये, पहेलें तीनों बेटा के घर चलिये । सो तीनों बेटा पास आये । तब तीनों बेटा मिलि के कछुक अन्न दियो । तब पुरुषोत्तम जोसी बिचारि किये, जो-पद्मारावल के बेटा ऐसे क्यों बूझिये ? ये तो कोरे प्राह्मन जान परें । जिनमें प्रीति को एक हू लक्षण नाहीं । परंतु अन्न फेरि दीजे तो कहेंगे, थोरो जानि के फेरे । तातें इनसों बोलनो नाहीं । पाछें यह बात कृष्णभट्ट ने सुनी, जो-पुरुषोत्तम जोसी आये हैं ।

अन्ने जल्लां प्रीतिथी सेवा करवा लाग्या । पछी श्रीआचार्यल्ल श्रीद्वारिका पधार्या । पछी पुरुषोत्तम जेशीअे अहु द्विस सेवा करी, भगवद्भावमां मगन रहेता । अव्यावृत्त थधने रहे । ठाधनी आगण पोताना हृदयनो भाव प्रकट करता नहीँ ।

वार्ता-प्रसंग १—एक समय पुरुषोत्तम जेशीना मनमां अे आच्युं, के श्री-गोकुल जध श्रीगुसांईल्लनां दर्शन करीअे । तथी लोकोनी आगण ज्ञातिमां कहे, के अमने काशी जध आवीअे । पछी अनारसतुं नाम लध स्त्री साथे अेक घोडा उपर श्रीठाकुर-ल्लने पधरावीने याध्या । ते केरलाक द्विसमां उन्नैन आव्या । त्यारे उन्नैनमां पूछ्युं, पद्मारावलना भेटा इयां रहे छे ? श्रीगुसांईल्लना सेवक छे तेमने मणीअे । त्यारे लोकोअे कहुं, पद्मारावलना तार भेटा छे । तेमां त्रणु लेगा रहे छे अने अेक कृष्णलट्टे अलग रहे छे । त्यारे पुरुषोत्तम जेशीअे विचार इयै, पहेलां त्रणु भेटाना घरे यादीअे । पछी त्रणु भेटानी पास आव्या त्यारे त्रणु भेटाअे मणीने थोडुं अन्न आच्युं । त्यारे पुरुषोत्तम जेशीअे विचार इयै, के पद्मारावलना भेटा आवा डेम जाणीअे ? अे तो डेरा आहालु जल्लाध आवे छे । जेमनामां प्रीतिवुं अेक पलु लक्षणु नथी । परंतु अन्न पाछुं डेरीअे तो कहेथी थोडुं जाणीने इयुं । तथी अेमनाथी भोसवुं नहीँ । पछी आ वात कृष्णलट्टे सांभणी, के पुरुषोत्तम जेशी

ऐसी भगवद् वार्ता करी, जो-पुरुषोत्तम जोसी कों देहानुसंधान रख्यौ नाहीं। रस में मगन ह्वै गये। तब घोरा परतें उतरन लागें। तब दोऊ ओर तें इनकों थांभि लिये। पाछें ऐसे करत जब मजलि पे आय पहोंचे, तब घोड़ा ऊपर तें उतारन लागें। तब पुरुषोत्तम जोसी ने कही, अबही मोकों घोरा ऊपर तें क्यों उतारत हो ? अबही तो बैद्यो हूं। तब स्त्री ने कही, जो-मजलि आई। सवेरे सों चलत पीछलो पहर भयो है। तब पुरुषोत्तम जोसी सावधान होइ उतरे। परंतु भगवद् वार्ता को आवेस उतरयो नाहीं। पाछें कृष्णभट्ट सों वार्ता करन लागे। रात्रि दिन भगवल्लीला रस में मगन रहे। ऐसे नित्य करत श्रीगोकुल आये। तब श्रीगुसांईजी कों दंडोत् करि पुरुषोत्तम जोसी ने कही, महाराज ! कृष्णभट्ट पर ऐसी कृपा कहांते भई ? तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख सों कहे, जो-कृष्णभट्ट कों चाचा हरिवंस को संग है। तातें ऐसी कृपा है। तब पुरुषोत्तम जोसी को संदेह निवृत्त भयो। तबतें मन खोलि कें भगवद् वार्ता करन लागें। पाछें कछुक दिन श्रीगोकुल रहिकें श्रीगुसांईजी सों बिदा होइ कृष्णभट्ट के संग पुरुषोत्तम जोसी स्त्री सहित चले। सो भगवद् वार्ता करत कछुक दिन में उज्जैन आये। सो कृष्णभट्ट ने प्रीति सों चारि दिन घरमें

भगवद् वार्ता करी, के पुरुषोत्तम जेशीने देहानुसंधान न रख्यौ। रसमां मगन थड गया। त्पारे घोडा उपरथी उतरवा लाग्या। त्पारे भन्ने तरइथी जेभने रोडी लीधा। पछी जेम करतां न्यारे भजल उपर आवी पछोल्या त्पारे घोडा उपरथी उतारवा लाग्या। त्पारे पुरुषोत्तम जेशीजे कछुं, लभणुं न मन घोडा उपरथी केम उतारो छे ? लभणुं न तो भेडो छुं ? त्पारे स्त्रीजे कछुं, भजल आवी। सवारना यालता र पाछेला पहार थयो छे। त्पारे पुरुषोत्तम जेशी सावधान थड उतर्या। परंतु भगवद् वार्ताना आवेग उतर्या नही। पछी कृष्णभट्टथी वार्ता करवा लाग्या। रात्रि-दिवस भगवद्धीला रसमां मगन रह्ये, जेम नित्य करतां श्रीगोकुल आव्या। त्पारे श्रीगुसांइजने दंडवत् करी पुरुषोत्तम जेशीजे कछुं, महाराज ! कृष्णभट्ट उपर आवी कृपा क्योथी थड ? त्पारे श्रीगुसांइज श्रीमुखथी कहे, के कृष्णभट्टने याचा हरिवंसना संग छे तेथी जेवी कृपा छे। त्पारे पुरुषोत्तम जेशीना संदेह निवृत्त थयो। त्पारथी मन जोडीने भगवद् वार्ता करवा लाग्या। पछी केरसाड दिवस श्रीगोकुल रह्यीने श्रीगुसांइजथी विदाय थड कृष्णभट्टनी साथे पुरुषोत्तम जेशी स्त्री सहित याल्या। ते भगवद् वार्ता करतां केरसाड दिवसमां उज्जैन आव्या। पछी कृष्णभट्टे प्रीतिथी यार दिवस घरमां राख्या। भगवद्-

राखे। भगवद् वार्ता करि बहोत प्रमन्न भये। पाछें पुरुषोत्तम जोसी कृष्णभट्ट सौं विदा होई गुजरात अपने घर आये। भगवद् सेवा करते। और भगवद् वार्ता करते। लौकिक जानते नहीं। ऐसे भगवदीय पुरुषोत्तम जोसी स्त्री सहित है। इनकी वार्ता कहां ताई कहिये।

भावप्रकाश—इनकी वार्ता में यह सिद्धांत भयो, जो-पात्र विना भगवद् वार्ता करनी नहीं। वैष्णव ॥ ३० ॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, जगन्नाथ जोसी, खेराळ के तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये जा प्रकार सरन भये सो आर्ग इनकी माता की वार्ता में कहेंगे।

वार्ता-प्रसंग १—एक दिन जगन्नाथ जोसी श्रीठाकुरजी कों श्रृंगार करि वागो पहराय कें राजभोग को धार साजिके, श्रीठाकुरजी की आर्गे भोग धरयो। पाछें बाहिर आये। तब जगन्नाथ जोसी के मनमें यह आई, जो-ठाकुरजी वागो पहरें आरोगत हैं। सो धार छुई जायगी। यह बात श्रीठाकुरजी ने जगन्नाथ जोसी के मनकी जानी।

वार्ता कही अहु प्रसन्न थया। पछी पुरुषोत्तम जेशी कृष्णभट्टथी विदाय थई गुजरातमां पोताना धरे आव्या। भगवद्सेवा करता. अने भगवद् वार्ता करता. लौकिक नशुता नहीं. अया भगवदीय पुरुषोत्तम जेशी स्त्री सहित छे. अमनी वार्ता क्यां मुधी कहीअे ?

वार्ता ॥ ३० ॥

भावप्रकाश—अमनी वार्तामां अे सिद्धांत थये ठे पात्र विना भगवद्-वार्ता करवी नही. वैष्णव ३०

✽

✽

✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुलना सेवक, जगन्नाथ जेशी जेराणुना, तेमनी वार्तामां भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे न प्रकारे शरणे थया ते आगण अेमनी मातानी वार्तामां कहीअे.

वार्ता-प्रसंग १—अेक दिवस जगन्नाथ जेशीअे श्रीठाकुरलने श्रृंगार करी वागो पहुरावीने राजभोगना धार साअेने श्रीठाकुरलना आगण लोग धरयो. पछी अह्दार आव्या. तयारे जगन्नाथ जेशीना मनमां अे आव्युं, ठे श्रीठाकुरल वागो पहुरीने आरोगे छे ते धार छेवाअे जशे. अे बात श्रीठाकुरलअे जगन्नाथ जेशीना मननी

सो थार लात मारिकें चौकी सों नीचे डारि दिये । तब जगन्नाथ जोसी फेरि सामग्री करि, थार धोई, चौकी धोई, धरें । तब श्रीठाकुरजी लात मारिकें चौकी सों नीचे डारि दिये । तब जगन्नाथ जोसी फेरि सामग्री करि थार धोई चौकी धोई धरें । तब श्रीठाकुरजी लात मारि नीचे डारि दिये । तब फेरि सामग्री करि वैसेई धरे । तब फेरि श्रीठाकुरजी लात मारिकें डारि दिये । तब चौथी बार जगन्नाथ जोसी बहोत श्रमित भये । माथो नीचो करन लागें, जो—कहा अपराध परयो है, जो—श्रीठाकुरजी जितनी बार थार धरी तितनी बार डारि दिये । सामग्री अरोगत नाहीं । यह अपने मनमें बिचार करत बहोत आतुरता दैन्यता आई । तब श्रीठाकुरजी ने कही, जो—तू थार छूये तें डरपतु है तो मेरे आगें काहे कों धरतु है ? यह सुनत ही जगन्नाथ जोसी नाक घिसिकें बहोत बिनती करी, महाराज ! मैं चूक्यो । अब मेरो अपराध क्षमा करो । मैं तो कछु जानत नाहीं । या प्रकार बहोत मनुहार करी ।

भावप्रकाश—याको अभिप्राय यह, जो—श्रीआचार्यजी श्रीसुबोधिनी में कहे हैं श्रीठाकुरजी की लीला में श्रीठाकुरजी के स्वरूप में दोई भावना करें तब श्रीठाकुरजी अप्रसन्न होई । एक असंभावना, एक विपरीत भावना । असंभावना

जाणी. ते थार लात मारीने चोडीथी नीचे नाथी दीधी. त्तारे जगन्नाथ जेशीअे इरीथी सामथ्री इरीने थार धोई चोडी धोई (लोण) धर्यो. त्तारे श्रीठाकुरअे लात मारीने चोडीथी नीचे नाथी दीधी. त्तारे जगन्नाथ जेशी इरी सामथ्री इरी थार धोई चोडी धोई धर्यो. त्तारे श्रीठाकुरअे लात मारी नीचे नाथी दीधी. त्तारे इरीथी सामथ्री इरी तेमज धर्यो. त्तारे इरी श्रीठाकुरअे लात मारीने नाथी दीधी. त्तारे चोथी वार जगन्नाथ जेशी अहु श्रमित थया. माथुं नीचुं करवा लाग्या डे शो अपराध पज्यो छे ? डे श्रीठाकुरअे जेठली वार थार धर्यो तेठली वार नाथी दीधी. सामथ्री आरोग्या नही. अे पोताना मनमां विचार करतां अहु ज आतुरता दीनता आवी. त्तारे श्रीठाकुरअे कछुं, डे तू थार छावायाथी डरे छे तो मारी आगण शा माटे धरे छे ? अे सांलणतां ज जगन्नाथ जेशी नाक घसीने अहु ज बिनती इरी, महाराज ! हुं चूक्यो. हुवे मारे अपराध क्षमा करे. हुं तो कंई जाणतो नथी. अे प्रकारे घणी ज दासावासा धर्यो.

भावप्रकाश—अेनो असिप्राय अे छे, श्रीआचार्यअे श्रीसुबोधिनीअे मां कहे छे, श्रीठाकुरअेनी दीलाभां श्रीठाकुरअेना स्वरूपमां जे भावना करे तो

यह, जो-श्रीठाकुरजी पराये सों विहार किये । ठाकुरजी हीन जाति के घर कैसे अरोगत होइंगे ? श्रीठाकुरजी के छुये तें यह वस्तु छूड़ जायगी । अहिर जाति के विना न्हाये क्यों भोजन किये । श्रीठाकुरजी कों फलानो रोग भयो । श्रीठाकुरजी नित्य तो प्रमान अरोगत हैं, अन्नकूट में इतनी सब कैसे अरोगेंगे ? श्रीठाकुरजी अब वृद्ध भये । श्रीठाकुरजी यह लीला क्यों किये ? यह नाना प्रकार के कुतर्क प्रभु में करनो नहीं । काहे तें 'पुरुषोत्तम सहस्रनाम' में कहे हैं- 'तर्कागोचर कार्यकृत्' । ऐसो कार्य है । प्रभुको कार्य तर्क तें अगोचर है । कोई की बुद्धि में तर्क में आवे नहीं । कर्तुं अकर्तुं अन्यथा कर्तुम् सर्व सामर्थ्य युक्त हैं । यह असंभावना, और विपरीत भावना यह, जो-श्रीठाकुरजी के श्रीमुख में वास आवेगी । ताते वासन दातन, करावनो । एक ठिकाने खरचू की भावना करनी । चौरासी कोस ब्रज हैं एक दिन में सगरे कैसे फिरे ? इतनी गाई हैं सब कैसे दुहत होइंगे ? आगें ब्रज में प्रगटे अब ब्रज में कहाँ हैं ? कहुँ ब्रज में दीसत नहीं । हीन वस्तु गाजर मूरि कलिंगड़ा आदि सब ठाकुर ने प्रगट कियो है, याको भोग धरिवेमें कहा बाधक है ? श्रीठाकुरजी एक सगरी गोपिकान सों कैसे विहार करत होइंगे ? इत्यादिक

श्रीठाकुरजी अप्रसन्न थाय. ऐक असंभावना, ऐक विपरीतभावना असंभावना ऐ न श्रीठाकुरजीके अन्य साथे विहार कर्यो. श्रीठाकुरजी हीन जतिना धरे डेम आरोगता हशे ? श्रीठाकुरजीना अडयाथी आ वस्तु 'अलडाध नशे. अहीर जतिने त्यां विना न्हाये डेम लोजन क्यु' ? श्रीठाकुरजीने इलाशो रोग थयो. श्रीठाकुरजी नित्य तो प्रमाणसर आरोगे छे. अन्नकूटमां आटलुं पधु डेवी रीते आरोगता हशे ? श्रीठाकुरजी हुवे वृद्ध थया. श्रीठाकुरजीके आ लीला डेम करी ? आवा नाना प्रकारना कुतर्क प्रभुमां नही करवा. डेमके 'पुरुषोत्तम सहस्रनाम' मां कहे छे 'तर्कागोचरकार्यकृत्' अवेनुं कार्य छे. प्रभुतुं कार्य तर्कथी अगोचर छे. डाधनी बुद्धिमां-तर्कमां आवे नही. कर्तुं अकर्तुं, अन्यथा कर्तुं, सर्व सामर्थ्य युक्त छे. आ असंभावना अने विपरीत भावना ऐ, डे श्रीठाकुरजीना श्रीमुखमां वास आनशे तेथी वासन-दातणु करावतुं. ऐक डेकाशु परचूनी भावना करवी, आराशी डोस प्रज छे. ऐक दिवसमां डेवी रीते इरे ? आटली गाय छे डेवी रीते दोहता हशे ? आगण प्रजमां प्रकटया हुवे प्रजमां क्यां छे ? इंछे प्रजमां देभाता नथी. हीन वस्तु गाजर, भूणा, कलिंगड़ा आदि पधुं श्रीठाकुरजीके प्रकट क्युं छे तेने भोगधरवामां शुं बाधक छे ? इत्यादि विपरीत भावना थध. परंतु नगनाथ जेशीने तो ऐक सरण

विपरीत भावना भई । परंतु जगन्नाथ जोसी कों तो एक सरल सुभाव सों भई । तातें श्रीठाकुरजी बोलें । कहें, थार छूई जायगी मेरे आगे मति धरै । तब अपराध क्षमा कराये । अपने कों अज्ञानी मानें । या प्रकार असंभावना, विपरीत भावना तें श्रीठाकुरजी अप्रसन्न होई । यह जताये । सो न करनो ।

वार्ता—प्रसंग २—और जगन्नाथ जोसी श्रीठाकुरजी कों ताती खीर भोग धरें । तेसे श्रीठाकुरजी ताती खीर अरोगते । सो कितनेक दिनकों श्रीआचार्यजी खेरालु गाम में जगन्नाथ जोसी के घर पधारे । सो श्रीठाकुरजी के ओष्ट और जीभ बहोत राती देखे । तब श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजी सों पूछें, बाबा ! जीभ, ओष्ट बहुत राते क्यों हैं ? तब श्रीठाकुरजी ने कही, जो-जगन्नाथ जोसी ताती खीर भोग धरतु है । तातें मैं अरोगत हों । तब श्रीआचार्यजी जगन्नाथ जोसी सों कहे, जो-तू ताती खीर श्रीठाकुरजी कों भोग क्यों धरतु है ? तब जगन्नाथ जोसी कहें, महाराज ! हम यह जाने, जो-ताती सामग्री अरोगत हैं तातें समर्पत हैं । तब श्रीआचार्यजी कहे, खीर बहोत ताती न समर्पिये । अंगुरी डारि देखिये । अंगुरी सहे तब भोग धरीये । और सामग्री ताती धरिये ताकी चिंता नाहीं । तब तें जगन्नाथ जोसी सीरी करिकें खीर धरन लागें ।

स्वभावथी थध तेथी श्रीठाकुरल्ल थोल्या. कहे, थार छेवध नशे. मारी आगण न धरीश. त्यारे अपराध क्षमा कराव्ये, पेताने अज्ञानी मान्या, अे प्रकारे असंभावना विपरीत भावनाथी श्रीठाकुरल्ले अप्रसन्न थध अे नशाव्युं, के अेम न करवु:

वार्ता—प्रसंग २—भील्लुं, जगन्नाथ जेशी श्रीठाकुरल्लने गरम भीर लोग धरे तेज प्रकारे श्रीठाकुरल्ल गरम भीर आरोगता. पछी केरलाक द्विवसमां श्रीआचार्यल्ल थेरालु गाममां जगन्नाथ जेशीने धरे पधार्या. त्यारे श्रीठाकुरल्लना छेठ अने लल थहु न रातां जेयां. त्यारे श्रीआचार्यल्ले श्रीठाकुरल्लने पूछ्युं, थावा ! लल आष्ट थहु न रातां केम छे ? त्यारे श्रीठाकुरल्ले क्छुं, के जगन्नाथ जेशी गरम भीर लोग धरे छे. तेथी हुं गरम आरोगुं छुं. त्यारे श्रीआचार्यल्ल जगन्नाथ जेशीने कहे, के तूं गरम भीर श्रीठाकुरल्लने लोग केम धरे छे ? त्यारे जगन्नाथ जेशी कहे, महु-राज ! अमे अेम नशव्युं के गरम सामग्री आरोगे छे तेथी समर्पिये छीअे. त्यारे श्रीआचार्यल्ल कहे, भीर थहु गरम न समर्पिये. आंगणी नाभीने जेधअे. आंगणी सहे त्यारे लोग धरीअे. भील्ल सामग्री गरम धरीअे तेनी चिंता नही. त्यारथी जगन्नाथ जेशी ठंडी करीने भीर धरवा लाग्या.

भावप्रकाश—तहां यह संदेह होइ, जो-श्रीठाकुरजी ताती क्यों अरोगे ? जगन्नाथ जोसी सों क्यों न कहे ? तहां यह जाननो, जो-जा दिन तें जगन्नाथ जोसी के मनमें थार छुइवे की असंभावना भई ता दिन तें बहुत अनुभव न करावते । इनकी प्रीति सों अरोगते ।

वार्ता-प्रसंग ३—और एक समें जगन्नाथ जोसी श्रीआचार्यजी के दरसन कों अडेल चले । सो मारग में अन्नकूट को दिन आयो । सो एक श्रीआचार्यजी को सेवक माथुर हतो वासों कहें गाम में जाइकेँ उत्तम सामग्री, जो-मिले सो ले आवो । दारि, चोखा, घी, खांड आदि । सो उह वैष्णव गाम में गयो । सो उह गाम छोटे हतो । एक जुवारि मिलें । और कछु न मिलें । सो आइकेँ जगन्नाथ जोसी सों कह्यो, जो-या गाम में ज्वारि मिलति है । और कछु मिलत नाहीं । गाम छोटे है । तब जगन्नाथ जोसी कहें भगवद् इच्छा । ज्वारि ले आवो । तब वैष्णव ज्वारि ले आये । तब कहें, याकों वीनी, फटक ले आओ । तब वह वैष्णव ज्वारि कों आछी भांति सों वीनी फटक के ले आयो । तब जगन्नाथ जोसी ने पानी में चढायो । तब उह वैष्णव ने कही, या ज्वारि की भुसी है ताकों पानी सों बांधिकेँ ऊपर धरि देउ । तो बाफ सों ढोकला बेगि है आवेगो । तब जगन्नाथ जोसी

भावप्रकाश—त्यां ये संदेह थाय, हे श्रीठाकुरजी गरम डेस आरोग्या ? जगन्नाथ जेशीने डेस न कथुं । त्यां ये आशुवु, हे न द्विसथी जगन्नाथ जेशीना मनभां थार छेवाथ ज्वानी असंभावना थध तयारथी भहु अतुलव न जशावता. येमनी प्रीतिथी आरोगता.

वार्ता-प्रसंग ३—वणी येक समे जगन्नाथ जेशी श्रीआचार्यजीना दर्शने अउस आख्या, ते भागिभां अन्नकूटने द्विस आख्या. तयारे येक श्रीआचार्यजीने सेवक माथुर (मथुराने रहवावाणो) हुतो तेने इहे, गामभां जधने उत्तम सामग्री जे भणे ते लध आवा. दाण, चोखा, घी, आंड आदि. तयारे ते वैष्णव गामभां गयो. ते गाम नातुं हुतुं. येक ज्वार भणे. भीलुं इंध न भणे. तेथी आधीने जगन्नाथ जेशीने इधुं, हे आ गामभां ज्वार भणे छे. भीलुं इंध भणतुं नथी. गाम नातुं छे. तयारे जगन्नाथ जेशी इहे, लगवटीरुछा. ज्वार लध आवा. तयारे वैष्णव ज्वार लध आख्या. तयारे इहे अने वीणी अरडीने लध आवा. तयारे ते वैष्णव ज्वारने सारी रीते वीणी अरडीने लध आख्या. तयारे जगन्नाथ जेशीये पाणीभां चढावी. तयारे ते वैष्णवे इधुं, आ ज्वारनी लूसी छे तेने पाणीथी आंधीने धर धरी दे. ते आंधी देडगां

વાકોં વાંધિકેં ઝપર ધરેં । સો જબ ઝવારિ કો ઠોમર સ્વદુઃખદાવન લાગ્યો । તબ ઉહ ઝુસી કો ઢોકલા ઝવારિ મેં ગિરિ પરથો । સો સબ ઇકઠોરો મિલિ ગયો । સો જગન્નાથ જોસી દેશિકેં મન મેં બહોત સ્વેદ કિયો । પાછેં ભગવદ્ ઇચ્છા માનિ કેં જેસો ભયો તેસો ભોગ ધરિ મહાપ્રસાદ લિયો, પાછેં સોયે । તબ શ્રીઠાકુરજી જગન્નાથ જોસી સોં કહેં, જો-મેરે પેટ મેં ઠોમર કો ઢોકલા દુઃખત હૈ । તબ જગન્નાથ જોસી સોંઠિ, અજવાહન, લોન સમપેં । તબ શ્રીઠાકુરજી કહેં મેરે પેટ મેં ચેન બયો । તબ મન મેં જગન્નાથ જોસી બહોત પદ્મ-ત્તાપ કિયો । જો-આજુ શ્રીઠાકુરજી કોં બહોત દુઃખ બયો । અબ આછો ગામ દેશિકેં મજલ પર ઉતરેંગે । સો તા દિન તેં આછો ગામ દેશિકેં ઉતરતે ।

ભાવપ્રકાશ—યહ વાર્તા કો અભિપ્રાય યહ હૈ, જો-જગન્નાથ જોસી કો સરલ સુભાવ બહોત હૈ । તબ શ્રીઠાકુરજી પ્રસન્ન બયે । જો-પહેલેં થાર છૂઢવે કી અસંભાવના અજ્ઞાન મેં આઈ હતી તારેં ઉદાસ બયે હતે । બહોત બોલતે નહીં । સો ઇનકો સરલ ભાવ, કુતર્ક પંડિતાઈ ફરિ જ્ઞાન ફરિકેં, તરક ન હતી । સહજ મેં મનમેં આઈ, ફિરિ કછ નહી । તારેં શ્રીઠાકુરજી સરલ સુભાવ જાનિકેં પ્રસન્ન બયે ।

જલ્દી થઈ આવશે. ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ તેને બાંધીને ઉપર ધર્યાં. પછી જ્યારે જવારતું ઠોમર ખદખદવા લાગ્યું ત્યારે તે ભૂંસીનાં ઢાકળાં જવારમાં પડી ગયાં પછી બધું એકઠું મળી ગયું. ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ તે જોધને મનમાં બહુ જ ખેદ કર્યાં. પછી ભગવદીચ્છા માનીને જેવું થયું તેવું ભોગ ધરીને મહાપ્રસાદ લીધા. પછી સુખ રહ્યા. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી જગન્નાથ જોશીને કહે, કે મારા પેટમાં ઠોમરતું ઢાકળું દુખે છે. ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ સૂંઠ, અજમા, મીઠું સમખ્યું. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી કહે, મારા પેટમાં ચેન થયું. ત્યારે મનમાં જગન્નાથ જોશીએ બહુ જ પશ્ચાતાપ કર્યાં, કે આજ શ્રીઠાકુરજીને બહુ દુઃખ થયું. હવે સાડે ગામ જોધને મજલ ઉપર ઉતરીશું. તે દિવસથી સાડે ગામ જોધને ઉતરતા—

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તાનો અભિપ્રાય એ છે, કે જગન્નાથ જોશીનો સરળ સ્વભાવ ધણો છે. ત્યારે શ્રીઠાકુરજી પ્રસન્ન થયા, કે પહેલાં થાર છોવાવાની અસંભાવના અજ્ઞાનમાં આવી હતી તેથી ઉદાસ થયા હતા. બહુ ખોલતા નહીં. એમનો સરળ ભાવ (હતો) કુતર્ક પંડિતાઈ કરી, જ્ઞાન કરીને તર્ક ન હતો. સહજમાં મનમાં આવ્યું પછી કંઈ નહીં. તેથી શ્રીઠાકુરજી સરલ સ્વભાવ જાણીને

सो सनेह देखिवे के लिये जताये, जो-मेरे पेट में दुखत है। तब इनको सनेह बहुत तातें मन में दुःख पायो। सोंठि, अजवाइन, लौन भोग धरे। तब श्रीठाकुरजी इनकी ऊपर वहीत प्रसन्न भये। कहे अब मेरे पेट में चैन है। तब जगन्नाथ जोसी को दुःख मिट्यो। तातें विघाई की चतुराई, ज्ञानि होते तो कहेंतें, श्रीठाकुरजी के पेट में दुखे हैं! ए तो ईश्वर हैं। परंतु जगन्नाथ जोसी सधे निष्कपट भगवदीय हैं। तातें श्रीठाकुरजी फेरि प्रसन्न भये। यामें यह जताये, जो-जाके हृदय में स्नेह होई, सरल सुभाव होइ, तो वासों अपराध हू परे तो श्रीठाकुरजी कृपा करें। वाको विगार न होई।

वार्ता-प्रसंग ४—और एक समें जगन्नाथ जोसी अपने घर उत्थापन पाछें भोग के किंवाड़ खोलें। सो दरसन होत हते ता समें जगन्नाथ जोसी श्रीठाकुरजी कों मूँठा करत हते। ता समे एक गरासिया रजपूत दरसन कों आयो हतो। सो दरसन करत हतो। और हू दस-पांच वैष्णव दरसन करत हते। ता समें एक डोकरी ने फूल की माला लेकें दूरि तें श्रीठाकुरजी के ऊपर डारि दीनी। सो श्रीठाकुरजी के सिंघासन ऊपर आइ परी। तब जगन्नाथ जोसी कों वहीत रीस चढ़ी। सो माला लेकें वाहिर फेंकी। सो दूसरो एक रजपूत

प्रसन्न थया। ते स्नेह जेवाने भाटे जणायुं, ठे मारा पेटमां हू.पे छे. त्यारे ज्येभनो स्नेह अहु ज तेथी मनमां हू:अ पाभ्या. सूँठ, अजमे, मीडुं भोग धरे. त्यारे श्रीठाकुरजी ज्येभनी उपर अहु ज प्रसन्न थया. कहे, हुवे मारा पेटमां चैन छे. त्यारे जगन्नाथ जेशीतुं हू:अ भटयुं. तेथी विधानी चतुराई, (ठे) ज्ञानी होता तो कहेता, श्रीठाकुरजीना पेटमां हू:पे छे! ज्ये तो ईश्वर छे? परंतु जगन्नाथ जेशी सीधा निष्कपट भगवदीय छे. तेथी श्रीठाकुरजी कृपे प्रसन्न थया. ज्येमां ज्ये जणायुं, ठे जेना हृदयमां स्नेह होय (जेना) सरल स्वभाव होय तो तेनाथी अपराध पण पडे तो श्रीठाकुरजी कृपा करे, ज्येना अगाड न थाय.

वार्ता-प्रसंग ४—वर्षी ज्येक समय जगन्नाथ जेशीज्ये पोताना धरे उत्थापन पछी लोगनां कमाड जोल्यां. ते दर्शन थतां हुतां ते समये जगन्नाथ जेशी श्रीठाकुरजीने 'भूँडा' (भारद्वज) करता हुता. ते समये ज्येक गरासियो रजपूत दर्शने आओया हुतो. ते दर्शन करतो हुतो. भीज पणु दश-पांच वैष्णवो दर्शन करता हुता. ते समये ज्येक आशीज्ये कूसनी माणा सधने हरथी श्रीठाकुरजीना उपर नांभी ते श्रीठाकुरजीना सिंघासन उपर आवी पडी. त्यारे जगन्नाथ जेशीने अहु ज रीस चढ़ी. ते माणा सधने

हतो ताके गरे में जाइ परी । तब वा गरासिया ने अपने मन में कही, जो-मोकों जोसी नें माला नाहीं दीनी तो मैं सही रजपूत, जो-जगन्नाथ जोसी कों ठोर मारूं । सो तरवार लिये फिरें । परंतु दाव न पावे, जो-घात करें । सो एक दिन जगन्नाथ जोसी बहिरभूमि, दांतिन करिकें गाम बाहिर तें आवत हते । सो गरासिया रजपूत नें पाछें सों आई जगन्नाथ जोसी की उपरि तरवार चलाई । तब श्रीठाकुरजी पाछें तें हाथ वा रजपूत को ऊपर तें पकरि लियो । और कहें, याकों मारे मति । तब वह रजपूत बहोत कियो परि हाथ उपर रहि गयो । चले नाहीं । तब जगन्नाथ जोसी पाछें फिरि कें देखे तो श्रीठाकुरजी अमित ठाढ़े हैं । तब जगन्नाथ जोसी ने कही, फिटरे पापी ! यह कहा कियो ? तब वह रजपूत तरवारि डारि कें जगन्नाथ जोसी के पाइन परथो ।

भावप्रकाश—काहेतें ? रजपूत नें जानी, ये महापुरुष हैं । मेरो हाथ चल्थो नाहीं । तब तरवारि भूमिमें डारि पांवन परथो ।

पाछें कह्यो, मेरो अपराध क्षमा करो । बहोतेरो जगन्नाथ जोसी कहें, परंतु छोड़े नाहीं । कह्यो, मोकों सेवक करो । तुम भगवदीय

अहार डेडी. त्पारे भीजे अेक रजपूत हुतो तेना गणामां नथ पडी. त्पारे ते गरासियाअे पोताना मनमां डहुं, के भने जगन्नाथ जेशीअे भाणा नडी आपी तो हुं अरे रजपूत (त्पारे के अ्यारे) जगन्नाथ जेशीने डार मारूं. ते तलवार लधने डरे. परंतु दाव न भणे जे दा डरे. ते अेक दिवस जगन्नाथ जेशी अरथू, दातल पाणी डरीने गाम अहारथी आवता हुता. त्पारे ते गरासिया रजपूते पाछणथी आवी जगन्नाथ जेशीना उपर तरवार यलावी. त्पारे श्रीठाकुरअे पाछणथी (आवी) ते रजपूतने उपरथी हाथ पकडी लीधो. अने थोल्या, अने न मार. त्पारे ते रजपूते अहु न (जेर) डथुं. परंतु हाथ उपर रहि गयो. याल्यो नही. त्पारे जगन्नाथ जेशी पाछा डरीने लुअे तो श्रीठाकुरअे अमित उला छे. त्पारे जगन्नाथ जेशीअे डहुं, ड़िरे पापी ! आ शुं डथुं ? त्पारे ते रजपूत तरवार नाभीने जगन्नाथ जेशीना पगमां पड्यो.

भावप्रकाश—डेभडे रजपूते अलथुं, डे अे महापुरुष छे. मारे हाथ याल्यो नही. त्पारे तरवार भूमिमां नाभीने पगे पड्यो.

पछी डहुं, मारे अपराध क्षमा डरो. जगन्नाथ जेशीअे धलुं डहुं, परंतु छोड नही. डडे, भने सेवक डरो. तमे लगवदीय छे. हु पापी छुं. तभडारी डपाथी मारे

हो, मैं पापी हों। सो तुम्हारी कृपातें मेरो उद्धार होइगो। नाही तो मेरो ठिकानो नाही। तव जगन्नाथ जोसी कों दया आई। कहे, घर चलो। तुमकों नाम सुनावेंगे। पाछें घर आई आपु न्हाये। उह रजपूत कों न्हवाई के नाम सुनाये। पाछें श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे तव रजपूत कों श्रीगुसांईजी के पास नाम सुनवाये। सो आछो वैष्णव भयो।

भावप्रकाश—सो भगवदीय के पीछें वैर भाव सों मारन कों फिरयो सो उद्धार भयो। तो जो-प्रीति करि भगवदीय को संग करे तो वाको उद्धार होई यामें कहा कहनो ? और जगन्नाथ जोसी कों मंदिर में श्रीठाकुरजी की आगें क्रोध चढयो तातें माला बाहिर फेंकी। सो क्रोध चांडाल को रूप है। सो अपराध परयो। ताको दोष निवृत्त करन के लिये उह रजपूत द्वारा जगन्नाथ जोसी के ऊपर तरवार चलवाई। तामें अपराध दूरि भयो। उह रजपूत को उद्धार करनो। तातें वाकी बुद्धि फिरि गई। जगन्नाथ जोसी के पाइन परयो। उह रजपूत लीला संबंधी तो हतो नाही। मुक्ति को अधिकारी हतो। काहेतें ? यह वचन रासपंचाध्याई में हैं “ कामं क्रोधं भयं स्नेहमैक्यं सौहृदमेवच ”। सो क्रोध करि उह रजपूत कों मुक्ति भई। तातें जगन्नाथ जोसी श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे।

✽

✽

✽

उद्धार थयो. नहीं तो माइं ठेकाछुं नथी. त्यारे जगन्नाथ जेशीने दया आवी. डहे, घर आलो. तमने नाम सं'लणावीशुं. पछी घर आवी पोते न्हाया. ते रजपूतने न्हवडावीने नाम सं'लणाव्युं. पछी श्रीगुसांछल गुजरात पधार्या त्यारे रजपूतने श्रीगुसांछल पासें नाम सं'लणाव्युं. पछी सागे वैष्णुव थयो.

भावप्रकाश—भगवदीयनी पाछण वैरभावथी मारवाने टोडयो तो उद्धार थयो. तो जे प्रीति करी भगवदीयने संग करे तो तेने उद्धार थाय, तेमां शुं कहेवुं ? पीणु, जगन्नाथ जेशीने मंदिरमां श्रीठाकुरजीनी आगण डोव यठयो तेथी भासा अहार डे'डी. ते क्रोध यांडावनुं रुप छे. तेथी अपराध पडयो. तेने दोष निवृत्त करवाने माटे ते रजपूत द्वारा जगन्नाथ जेशीना उपर तरवार यडावरावी. तेमां अपराध दूर थयो. ते रजपूतने उद्धार करवे तेथी तेनी बुद्धि करी गध. जगन्नाथ जेशीना पगे पडयो. ते रजपूत लीला संबंधी तो हतो नहीं. मुक्तिने अधिकारी हतो. इम डे अे वचन ' रासपंचाध्याई ' मां छे. ' कामं क्रोधं भयं स्नेहमैक्यं सौहृदमेवच ' अे क्रोध करीते रजपूतनी मुक्ति थध. तेथी जगन्नाथ जेशी श्रीआचार्यजीना अेवा कृपापात्र भगवदीय हुता.

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकनी, जगन्नाथ जोसी की माता, खेरालु में रहती, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

वार्ता-प्रसंग १—ताकों दोई बेटा हते । तामें बड़ो बेटा नरहरि जोसी, छोटो जगन्नाथ जोसी ।

भावप्रकाश—सो लीला में माता तो श्रीस्वामिनीजी की सखी हैं । “छबिसिंधि” इनको नाम हैं । और छबिसिंधि की दोई सखी हैं । सो उनको नाम एक को “गंधरेखा” । एक को नाम “सौरमी” है । सो माता छबिसिंधि को स्वरूप और नरहरि जोसी गंधरेखा को प्रागट्य । और जगन्नाथ जोसी सौरमी को प्रागट्य । सो नरहरि जोसी जगन्नाथ जोसी को पिता महादुष्ट हतो । कोई साधु संत पंडित ब्राह्मन वैष्णव कों मानतो नाहीं । गाम में कोई आवे तो दुख देई । रात्रि कों चोरी करावें । लूटि लेई । तातें भगवद्धर्म को द्वेषी हतो । सो श्रीआचार्यजी अडेल तें द्वारिका पधारे । सो कलुक दिनमें गुजरात में खेरालु गाम में आये । एक बगीचा में गाम बाहिर उतरे । तहां जगन्नाथ जोसी की माता जल भरन कों आई । सो श्रीआचार्यजी श्रीसुबोधिनीजी की कथा जज्ञपति को प्रसंग कहें । सो वह वाई सुनिकें बहोत प्रसन्न भई । तब श्रीआचार्यजी सों विनती

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी सेवकनी, जगन्नाथ जेशीनी माता, खेरालुमां रहती, तेमनी वार्ताना भाव कहीअे छीअे—

वार्ता-प्रसंग १—तेने जे जेरा हुता. तेमां भेरा भेरा नरहर जेशी. नाना जगन्नाथ जेशी.

भावप्रकाश—दीलामां माता तो श्रीस्वामिनीजीनी सखी छे. ‘छबिसिंधी’ जेमनु नाम छे. छबिसिंधीनी जे सखी छे. जेमनुं जेकनुं नाम ‘गंधरेखा’ जेकनुं नाम ‘सौरमी’ छे. माता छबिसिंधीनु स्वरूप जने नरहर जेशी गंधरेखातुं प्राकट्य, जने जगन्नाथ जेशी ‘सौरमी’नु प्राकट्य. ते नरहर जेशी जगन्नाथ जेशीनो पिता महादुष्ट हुतो. डार्थ साधुसंत पंडित ब्राह्मण वैष्णवने मानतो नहीं. गाममां डार्थ आवे तो दुःख हे. रात्रिअे चोरी करावे. लूटी वे. तेथी भगवद्धर्मनो द्वेषी हुतो. जेक समये श्रीआचार्यजी अडेलथी द्वारिका पधर्या. ते डेटलाक द्विवसमां गुजरातमां जेराळु गाममां आया. गाम अहार जेक जगीयामां उतर्या. त्यां जगन्नाथ जेशीनी माता जल भरवाने आवी. ते समये श्रीआचार्यजी श्रीसुबोधिनीजीनी कथा, यज्ञपतिनो प्रसंग कहे. ते ते पार्थ सांख्यीने बहु प्रसन्न थर्थ. त्यारे श्रीआचार्यजीने विनंती करीने कछुं, हे महाराज ।

करि कही, जो-महाराज ! मोकों सेवक करिये । और इहाँ रहो मति । मेरो पति महादुष्ट है । जानेगो तो रात्रिकों चोरी करावेगो । और लूटेगो । तव श्रीआचार्यजी कहें, उह कहा लूटेगो ? वासों तू जाई कहियो, श्रीआचार्यजी बाग में आये हैं । और तू दैवी जीव है । परंतु अवहि तोकां सरन कैसे लेई ? धर्म को विरोधी पति है । सो वरस पांच में मरेगो । और तेरे दोई बेटा होइंगे । सो पति के मरे पाछें अडेल में आइयो । तोकां सेवक करेंगे । अवहि सेवक करना उचित नाहीं । तव वह बाई दंडोत करि जल भरिकें घर गई । पाछें श्रीआचार्यजी तीन रात्रि खेरालू में रहे, परंतु उह बाई को पति सुन्यो तऊ नाहीं आयो । ता पाछें आपुतो श्रीद्वारका श्रीरनछोड़जी के दरसन कों पधारें । पाछें उह बाई को गर्भ रह्यो सो वरस दिन के भीतर नरहरि जोसी भये । ताके तीसरे वरस जगन्नाथ जोसी भये । पाछें जब पांच वरस भये तव एक सन्यासी पंडित खेरालू में आयो । सगरे ब्राह्मन सों चरचा करी । पाछें रात्रिकों जगन्नाथ जोसी को पिता उह सन्यासी कों लूटन गयो । तव उह सन्यासी पास गडसा हतो, तासों मारयो । सो सन्यासी डरपिकें भाजि गयो । पाछें सवेरो भये लोगन नें जान्यो । सो ज्ञाति के ब्राह्मन नें मिलिकें वाको संस्कार कियो । तव उह बाई कों श्रीआचार्यजी के वचन सुधि

मने सेवक करे। अने अहीं रहेशो नही। भादे पति महादुष्ट छे। ज्ञातेशे तो रात्रिअे चोरी करावशे। अने लूटशे। त्पारे श्रीआचार्यअे कहे, अे शु लूटशे। तू अने जधने कहेजे, श्रीआचार्यअे आगमां आंव्या छे। अने तू दैवी अेव छे। परंतु हुभाणुं तने शअे ठेवी रीते दे ? धर्मने विरोधी पति छे। ते वर्ष पांचमां मरशे। अने तने अे अेटा थशे। ते पतिना मर्यां पछी अडेसमां आवजे। तने सेवक करीशुं। हुभाणुं सेवक करवी उचित नथी। त्पारे ते आरु दंडवत् करी जल बरीने धर गरु। पछी श्रीआचार्यअे त्रअे रात्रि भेराणुमां रखा। परंतु ते आठना पतिअे सांभअुं तोपअे आंव्यो नही। ते पछी आप तो श्रीद्वारका श्रीरअेछोडअेना दर्शने पधार्यां। पछी ते आठने गर्भ रह्यो। ते वर्ष द्विवसनी अे दर नरहरि अेशी थया। तेना तीन वर्षे जगन्नाथ अेशी थया। पछी अ्पारे पांच वर्ष थयां त्पारे अेक सन्यासी पंडित भेराणुमां आंव्यो। अधा ब्राह्मणोथी अर्या करी पछी रात्रिअे जगन्नाथ अेशीने पिता अे सन्यासीने लूटवा गयो। त्पारे ते सन्यासी पासे गडसा (धासना टूकडा करवातुं शअे) हुतो तेनाथी मर्यो। पछी सन्यासी डरीने लागी गयो। पछी सवार थये दोटाअे 'जअुं'। तेथी ज्ञातिना ब्राह्मणोअे

आये, जो-आपु श्रीमुख सों कहे हते तेरे दोई बेटा होइंगे सो भये । पति पांच वरस पाछें मरयो । अब में तीरथ को मिस करि अडेल जाइकें श्रीआचार्यजी की सेवकनी होई कृतारथ होउं । अब मेरे प्रतिबंध तो कोई है नाहीं । तब अपने मनके प्रमानिक कों घर सोंपि, दोऊ बेटान कों घर में राखे । सो द्रव्य बहोत हतो कलुक घर में राख्यो कलुक संग ले तीरथराज प्रयाग न्हाईवे को मिस करि गाड़ी भारें करि गुजरात सों चली । सो कलुक दिन में प्रयाग आई न्हाये । तहां दान पुन्य कलुक करि अडेल में आई, श्रीआचार्यजी कों दंडोत करि विनती कियो । महाराज ! आपु कहे सो सब भयो । दोऊ बेटा हू भये, पति हू मरयो । अब मेरे प्रतिबंध कछु नाहिं है । तातें आपु साक्षात पुरुषोत्तम हो । मोकों सरनि लेउ । जन्म सगरो वृथा गयो । तब श्रीआचार्यजी उह बाई कों श्रीजमुनाजीमें न्हावाय नाम निवेदन करायो । और कहे तू भगवद सेवा करि । तब श्रीआचार्यजी सों उह बाई कहें आपु सेवा पधराई देउ । मैं सेवा करों । तब श्रीआचार्यजी कहें प्रयाग में जाई भगवद् स्वरूप ले आवो । तब वह बाई प्रयाग में गई । एक कसेरे के पास श्रीठाकुरजी हते । सो न्योछावरि देकें लाई । तब श्रीआचार्यजी पंचामृत न्हावाई

भणीने तेने संस्कार क्यो, त्पारे ते पाधने श्रीआचार्यजीनां वचन याद आवां, उ पेते श्रीमुपथी कलुं हतुं, तारे ये पुत्र थये, ते थया. पति पांच वर्ष पछी मरयो. हुवे हुं तीर्थतुं अहातु करी अडेल न्हावे श्रीआचार्यजीनी सेवकनी थध कृतार्थ थावं. हुवे भारे प्रतिबंध तो काई छे नहीं. त्पारे पेताना मनना प्रभाणिक व्यक्तिते धर सोंपी अन्ने पेटाने धरमां राभ्या. ते द्रव्य धणु हतुं. थोडुंक धरमां राभ्यु, थोडुंक साथे लई तीर्थराज प्रयाग न्हावातु अहातुं करी गाडी बाडे करी गुजरातथी आदी. पछी टेटलाक द्विसमां प्रयाग आवीने न्हाध. त्यां दान-पुण्य कथक करी अडेलमां आवी. श्रीआचार्यजीने दडवत् करी विनती करी, महाराज ! आपे कलु ते अधुं थयुं. अन्ने पेटा पणु थया. पति पणु भयो. हुवे भारे प्रतिबंध काइ नथी. तेथी आप साक्षात् पुरुषोत्तम छे, मने शरणु दो. जन्म अधे वृथा गयो. त्पारे श्रीआचार्यजीने ते पाधने श्रीजमुनाजीमां न्हावडावी नाम-निवेदन कराव्यु. अन्ने कलुं तू भगवद्सेवा कर. त्पारे ते पाध श्रीआचार्यजीने कहे, आप सेवा पधरावी हो. हुं सेवा करू. त्पारे श्रीआचार्यजी कहे प्रयागमां न्हा भगवत्स्वरूप लई आवो. त्पारे ते पाध प्रयागमां गध. अक कसारानी पासे श्रीठाकुरजी हता. ते न्योछावरि हधने लध आवी. त्पारे श्रीआचार्यजीने पचा-

उह वाई के माथें पधराई दिये । पाछें कलुक दिन श्रीआचार्यजी पास रहि पुष्टि-मार्ग की रीति सब सीखिकें पाछें विदा होइ गुजरात आई । राजसेवा मंडान सों प्रीति पूर्वक (सेवा) करन लागी । कलुक दिन में सानुभावता श्रीठाकुरजी जनावन लागें ।

पाछें वाके दोऊ बेटा बड़े भये । नरहरि जोसी और जगन्नाथ जोसी । तब इनसों माता ने कही तुम श्रीआचार्यजी के सेवक अडेल जाइकें होई आवो । पाछें भगवद् सेवा करो । और एक यह मोहौर मेरी ओर की भेट करि मेरी दंडौत करियो । श्रीआचार्यजी कों साक्षात् पुरुषोत्तम जानियो । तब दोउ नरहरि जोसी जगन्नाथ जोसी गुजरात सों चलें । सो लाठी पोली हती वांस की, तामें मोहौर धरि लीनी । सो कलुक दिनमें अडेल आइकें पूछे, जो-श्रीवल्लभाचार्यजी कहां है ? तब आपु तो पुरुषोत्तमपुरी श्रीजगन्नाथजी के दरसन कों पधारे हते । तब दोई भाई मिलि कें विचार किये, जो-घर जाइंगे तो माता खीजेगी, जो-तुम सेवक भये विना क्यों आये ? तातें आपुन तो पुरुषोत्तमपुरी चलिये । सो दोऊ जने चलें सो पुरुषोत्तमपुरी आये । तब पूछें, जो-श्रीआचार्यजी इहां कौन ठौर विराजत हैं ? तब एक

मृतथी न्हवडावी ते आधने माथे पधरावी दीधा, पछी डेटलाक दिवस श्रीआचार्यजीनी पासे रहि पुष्टिमार्गनी रीति अधी शीभीने पाछी विदाय थई गुजरात आवी. राजसेवा अधारण्थी प्रीतिपूर्वक सेवा कर्ना लागी. डेटलाक दिवसमां श्रीठाकुरजी सानुभावता जणुवना लाग्या.

पछी अना भे भेटा भेटा थया. नरहरि जेशी अने जगन्नाथ जेशी. तयारे तेमने माताअे कलुं, तमे अउलमां जधने-श्रीआचार्यजीना सेवक थध आवो. पछी लगवदसेवा करो. अने अेक आ मोहोर भारी तरङ्गी भेट करी भारी दंडवत करजे. श्रीआचार्यजीने साक्षात् पुरुषोत्तम जणुजे. तयारे अन्ने नरहरि जेशी जगन्नाथ जेशी गुजरातथी याव्या. पछी लाठी पोली हती वांसनी तेमां मोहोर धरी दीधी. ते डेटलाक दिवसमां अउल आवीने पूछ्युं, के श्रीवल्लभाचार्यजी कहां छे ? तयारे आप तो पुरुषोत्तमपुरी श्रीजगन्नाथरायजीनां दर्शन पधार्या हुता. तयारे अन्ने लोडअे भणीने विचार कर्यो, के घर नदंशुं तो माता लउशे के तमे सेवक थया विना केम आव्या ? तेथी आपले तो पुरुषोत्तमपुरी यादीअे. ते अन्ने जल्ला याव्या. ते पुरुषोत्तमपुरी आव्या. तयारे पूछ्युं, के श्रीआचार्यजी अह्नी कध जगाअे भिराजे छे ? तयारे अेक

वैष्णव मिलि गयो। सो बताई दियो। तब दोउ जने आयकें श्रीआचार्यजी के दरसन किये। तब श्रीआचार्यजी दोऊन सों पूछें, जो-तुम्हारी माता आछे हैं। तब दोउ जनें आश्चर्य पायकें चक्रत होइ रहें। जो-हम सों कबहू श्रीआचार्यजी को मिलाप भयो नाहीं। सो माता नें कही, साक्षात् भगवान श्रीआचार्यजी हैं सो ठीक है। पाछे दोऊ भाई कहे, महाराज ! आपकी कृपा तें आछे हैं। तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम श्रीजगन्नाथजी के दरसन करि आये ? तब दोऊ भाई नें कही, महाराज ! अबहि तो हम दरसन नाहीं किये। सूधे आइकें आपुके पास चले आये हैं। तब श्रीआचार्यजी ने कही, जाउ दरसन करि आवो। तब दोउ भाई आइ श्रीजगन्नाथजी के दरसन किये। सो तहां श्रीआचार्यजी के श्रीजगन्नाथराइजी के पास ठाढ़े दरसन भये। तब दोऊ भाई कहें, हम तो घर दरसन करें, कदाचित दूसरो मारग होइगो ता मारग पधारे होइगो। तब उहां ते दोउ भाई दौरे, श्रीआचार्यजी के पास आई देखें, तो श्रीआचार्यजी बिराजे हैं। तब चक्रत होइ के देखन लगे। तब श्रीआचार्यजी पूछे, जो-श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन करि आये ? तब दोउजनें कहें, हां महाराज ! दोऊ जने दरसन करि आये। तब श्रीआचार्यजी कहे, तुम्हारे मन को संदेह

वैष्णव भणी गयो तेले पतावी दीधुं. त्पारे भन्ने जल्लुअे आवीने श्रीआचार्यल्लुनां दर्शन कर्यां. त्पारे श्रीआचार्यल्लुअे भन्नेने पूछ्युं, के तमारी माता सारी छे ? त्पारे भन्ने जल्लु आश्चर्य पाभीने यकित थई रह्या, के अमारथी कदीय श्रीआचार्यल्लुने मेणाप थये नथी. तेथी माताअे कहुं साक्षात् भगवान श्रीआचार्यल्लु छे ते ठीक छे. पछी भन्ने लाध कहे, महाराज ! आपनी कृपाथी सारी छे. त्पारे श्रीआचार्यल्लु कहे, तमे श्रीजगन्नाथल्लुनां दर्शन करी आव्या ? त्पारे भन्ने लाधअे कहुं, महाराज ! हुल्लु तो अमे दर्शन नथी कर्यां. सीधा आवीने आपनी पासे गाल्या आव्या छीअे. त्पारे श्रीआचार्यल्लुअे कहुं, जव, दर्शन करी आवो. त्पारे भन्ने लाधअे आवी श्रीजगन्नाथल्लुनां दर्शन कर्यां. त्पारे त्यां श्रीआचार्यल्लुनां श्रीजगन्नाथरायल्लुनी पासे उल्लेला अेवां दर्शन थयां. त्पारे भन्ने लाध कहे, अमे तो घर दर्शन कर्यां. कदाचित् पीअे मार्ग हुशे ते मार्गथी पधार्या हुशे. त्पारे त्यांथी भन्ने लाध दोहीने श्रीआचार्यल्लुनी पासे आवीने लुअे तो श्रीआचार्यल्लु बिराज्या छे. त्पारे यकित थधने जेवा लाग्या. त्पारे श्रीआचार्यल्लुअे पूछ्युं, के श्रीजगन्नाथरायल्लुनां दर्शन करी आव्या ? त्पारे भन्ने जल्ले कहुं, हां महाराज ! भन्ने जल्लु दर्शन

निवृत्त भयो ? तव दोऊन विनती करी, महाराज ! हम अज्ञानी हैं, जो-संदेह किये । आपु साक्षात् पुरुषोत्तम हो । तव श्रीआचार्यजी ने कही, हमारी भेंट तिहारी माता नें एक मोहौर पठाई है सो करो ।

भावप्रकाश—दोऊ भाई याके लिये मोहौर भेंट न करी हती, जो-ईश्वर होइगें तो मांगि लेइंगे । तव दोऊ भाई कों (और हू) विश्वास भयो ।

तव मोहौर भेंट धरिकें विनती किये, महाराज ! हमकों कृपा करिकें सेवक करिये । तव श्रीआचार्यजी दोऊ जनेन सों कहे, जो-जाउ न्हाइ आवो । सो न्हाई आये । पाछें श्रीआचार्यजी ने दोऊ जनेन कों नाम निवेदन कराये । पाछें कितनेक दिन श्रीआचार्यजी के दरसन किये । पाछें विदा होइकें दोऊ भाई चलें । सो खेरालू गाम में अपने घर आई माता सों सब प्रकार कहे । जो-हम अज्ञानी हैं । परि अपुनो माहात्म्य श्रीआचार्यजी हमकों दिखाइ हमारो संदेह निवृत्त किये । तव माताने कही मैं तुमसों पहले ही कही हती, जो-श्रीआचार्यजी पूरन पुरुषोत्तम हैं । यामें संदेह क्यों किये ?

भावप्रकाश—श्रीआचार्यजी दोऊ भाई कों माहात्म्य यातें दिखावे, जो-सरल सुभाई के मुग्ध वैष्णव हैं । सो कोई और मारग को माहात्म्य देखें तथा

करी आव्या, त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, तभारा मनने संदेह निवृत्त थयो ? त्यारे मनने विनती करी, महाराज ! अमे अज्ञानी थीअे के संदेह क्यो. आप साक्षात् पुरुषोत्तम छे. त्यारे श्रीआचार्यजीअे कहुं, अमारी लेट तमारी माताअे अेक मोहौर भेकडी छे ते करे.

भावप्रकाश—अन्ने साधने महोर अे भटे लेट न करी हती दे ईश्वर हसे तो मांगी लेशे. त्यारे अन्ने साधने (वधारे) विश्वास थयो.

त्यारे मोहौर लेट धरिने विनती करी, महाराज ! अमने कृपा करिने सेवक करीअे. त्यारे श्रीआचार्यजीअे अन्ने ज्ञाने कहे, के जय, न्हाय आवो. त्यारे न्हाई आव्या. पछी श्रीआचार्यजीअे अन्ने ज्ञाने नाम-निवेदन करावुं. पछी केरसाक द्विस पर्यंत श्रीआचार्यजीनां दर्शन क्यो. पछी विदाय थयने अन्ने साध आव्या, ते खेरालू गाममा पोताना घरे आवी माताने अघे प्रकार कयो, के अमे अज्ञानी थीअे. परंतु पोताअुं माहात्म्य श्रीआचार्यजीअे अमने देखाडी अमारे संदेह निवृत्त क्यो. त्यारे माताअे कहुं, में तमने पछेसां न कहुं हतुं के श्रीआचार्यजीअे पूरुं पुरुषोत्तम छे. अेभां संदेह केम क्यो ?

भावप्रकाश—श्रीआचार्यजीअे अन्ने साधने माहात्म्य अेथी देखाड्युं.

कछू चेतक काहू को देखें तो भटकें नाहीं। काहेतें, श्रीआचार्यजी को माहात्म्य हृदें में दृढ़ भयो। अब इनकों लौकिक वैदिक सब तुच्छ लागन लाग्यो। यह दृढ़ता के लिये इतनो माहात्म्य दिखाये।

पाछें माता की आज्ञा प्रमान सेवा करन लागें। सो माता ऐसी श्रीआचार्यजी की कृपापात्र भगवदीय हती। तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिये।

✳

✳

✳

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, नरहरि जोसी, जगन्नाथ जोसी के माई बड़े, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—इनको लीला को अलौकिक स्वरूप उपर इनकी माता की वार्ता में कहि आये हैं।

वार्ता—प्रसंग १—सो नरहरि जोसी एक समें श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन के मिस पुरुषोत्तमपुरी श्रीआचार्यजी के दरसन अर्थ चले। सो जब पटना तें आगें कों चले, सो मजलि जाइ उतरे। सो न्हाय कें सामग्री रोटी दारि किये। श्रीठाकुरजी कों भोग धरे। ता समें एक रूख परतें एक बरस दसको बालक परम सुंदर नरहरि जोसी

के सरस स्वभावना मुग्ध वैष्णवो छे, ते डोछ भीज भागंतु माहात्म्य जुअे तथा ऊछ चेटक डोछनु हेपे तो भटके नही। डेभके श्रीआचार्यजंतु माहात्म्य हृदयमां दृढ थयुं। हुवे अमने दौकिक वैदिक अंधुं तुच्छ लाग्युं। आ दहताने माटे आरुलुं माहात्म्य हेआरुयुं।

पछी मातानी आज्ञा प्रमाणे सेवा करवा लाया। तेथी माता अेवी श्रीआचार्यजनी कृपापात्र भगवदीय हती। तेथी अेमनी वार्ता क्यां सुधी कहीअे ?

✳

✳

✳

हुवे श्रीआचार्यज महाप्रभुजना सेवक, नरहरि जेशी, जगन्नाथ जेशीना भारा भाध, तेमनी वार्ताना भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अेमनु दीलानु अलौकिक स्वरूप उपर अेमनी मा नी वार्तामां कही आया छीअे।

वार्ता—प्रसंग १—ते नरहरि जेशी अेक समये श्रीजगन्नाथरायजनां दर्शनना पहलाने पुरुषोत्तमपुरी श्रीआचार्यजना दर्शन माटे आया। पछी न्यारे पटनाथी आगण आया। तयारे भजल न्ध उतर्या। पछी न्हाअने सामग्री शेटदी दाण करी। श्रीठाकुरजने भोग धर्या। ते समये अेक आउ उपरथी अेक वर्ष दशाने आणक परम-

के आगे आइ हाथ पसारि के मांग्यो । तब नरहरि जोसी आश्चर्य पाये, जो-यह कौन हैं ? पाछें भोग सराय के चुपरी दोई रोटी ऊपर दारि धरि के उह बालक के हाथ पर दिये । तब उह बालक उहि रूख पर चढ़ि गयो । सो अंतर्धान ह्वै गयो । सो फेरि नरहरि जोसी देखे तो रूख पर बालक नाहीं है । पाछें दूसरे दिन फेरि मजलि पर जाई उतरे । न्हाई के रसोई किये भोग धरें । तब फेरि रूख पर तें उह बालक उतर के नरहरि जोसी के पास आगे आइ हाथ पसारि के मांग्यो । तब नरहरि जोसी मनमें विचारि कियो, जो-कोऊ छलावा होइ तो देनो नाहीं । यह विचारि के नरहरि जोसी कछु न दियो । भोग सराई के गाई को भाग काढ़ि आपु महाप्रसाद लेन बैठे । तब श्रीठाकुरजी बालक भेखसों वैसेही उह रूख पर चढ़ि अंतर्धान होई घरमें जगन्नाथ जोसी सों कहें, मैं नरहरि जोसी पास जाई हाथ पसारि के काल्हि, आजु मांग्यो । सो काल्हि तो दोई रोटी और दारि दिये । आजु कछु नाहीं दिये । सो फिर आयो । तब जगन्नाथ जोसी वह महिना वह तिथि लिखि राख्यो, जो-नरहरि जोसी जब आवेंगे तब पूछूंगो । सो नरहरि जोसी पुरुषोत्तमपुरी जाई तहां श्रीआचार्यजी के दरसन करे । पाछें श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन

शुद्ध नरहरि जेशीना आगण आवी हाथ लांभो इरीने भागे. त्यारे नरहरि जेशी आश्चर्य पाभ्या, हे आ कोणु छे ? पछी (तेभणु) भोग सरावीने चोपउदी पे रोटदी उपर दाण धरीने ते आसकना हाथमां दीधी. त्यारे ते आसक तेज आउ उपर यदी गयो. ते अंतर्धान थध गयो. पछो इरी नरहरि जेशी जुमे तो आउ उपर आसक नथी. पछी भीज दिवसे इरी मजल उपर जध उतर्या. ग्हाकने रसोइ इरी भोग धर्या. त्यारे इरी आउ उपरधी ते आसक उतरने नरहरि जेशीनी पासो आगण आवी हाथ लांभो इरीने भागे. त्यारे नरहरि जेशीमे मनमां विचार धर्यो हे कोष छणीओ हाथ तो द्यु नहों. अम विचारने नरहरि जेशीमे कंध न आभ्युं. भोग सरावीने गायने भोग डाढी पोते प्रसाद लेवा भेस. त्यारे श्रीठाकुरज आसक चपथी तेमज ते आउ उपर यदी अंतर्धान थध घरमां जगन्नाथ जेशीने छुळे, में नरहरि जेशी पासो जध हाथ लांभो इरीने डाले, आजे मांग्युं. ते डाल तो पे रोटदी अने दाण आपी. आज कंध न आभ्युं. ते पाछो आव्यो. त्यारे जगन्नाथ जेशीमे ते महिना ते तिथि लभी राभी, हे नरहरि जेशी न्यारे आवयो त्यारे पूछींग. पछी नरहरि जेशीमे पुरुषोत्तमपुरी जध त्यां श्रीआचार्यजनां दर्शन धर्यां. पछी जगन्नाथरायजनां दर्शन

करि कछुक दिन वहां रहि उहां तें चले । सो कछुक दिनमें खेरातू अपने घर आये । तब जगन्नाथ जोसी नें श्रीआचार्यजी के सकल समाचार पूछे । सो नरहरि जोसी नें सब कहे, जो-मायावाद खंडन किये । और भली भांति सों बिराजत हैं । तब जगन्नाथ जोसी ने नरहरि जोसी सों पूछी, जो-फलाने दिन तुम्हारे पास कौन मांगन आयो सो तुम नहीं दिये ? तब नरहरि जोसी कहें, पटना के आगें चल्यो तब पहले दिन एक बरस दस को बालक आई मेरे आगें हाथ पसारि मांग्यो सो दोई रोटी दारि ऊपर धरि कें उह बालक के हाथ दियो । सो उह रूख पर चढ़ि गयो । सो फेरि न दीस्यो । पाछें दूसरी मजलि फेरि रूख पर तें उह बालक आयो । तब मैने विचार कियो, जो-उह छलावा होइ तो देनो उचित नहीं । और जो भगवद् स्वरूप होई तो महाप्रसाद कैसे देउं ? यह विचार कें मैं कछु न दियो । तब वह बालक रूख पर चढ़ि अंतर्धान है गयो । सो या प्रकार मनमें संदेह भयो तब दूसरे दिन नहीं दियो । तब जगन्नाथ जोसी ने कही, तुम बुरी करी । वे तो श्रीठाकुरजी आपु आई हाथ पसार के मांगे । तुमने नहीं दियो सो आछी नहीं करी । और हम तुम प्रथम श्रीआचार्यजी के दरसन कों श्रीजगन्नाथजी गये तब माता

इरी थोडाक दिवस त्यां रही त्यांथी आल्या. ते केइलाक दिवसमां भेराहु पोताना धरे आल्या. त्यारे जगन्नाथ जेशीअे श्रीआचार्यजना सकल समाचार पूछ्या. त्यारे नरहरि जेशीअे अंधुं कछुं, के मायावादतुं अंडन क्युं. अने सारी रीते आपु भिराजे छे. त्यारे जगन्नाथ जेशीअे नरहरि जेशीने पूछ्युं, के इलाहा दिवसे तभारा पासै कोछु मांगवा आव्युं लतुं ? ते तमे न आव्युं ? त्यारे नरहरि जेशी कहे, पटनानी आगण आल्या त्यारे पहिला दिवसे अेक वर्ष दशना आसके आपी मारी आगण हाथ लांभो करीने माग्युं ते जे रेहटी दाण उपर धरीने ते आसकना हाथमां आपी. पछी ते आउ उपर यढी गयो. ते इरी न देभायो. पछी भील मजले इरी आउ उपरथी ते आसक आव्यो. त्यारे में विचार क्यो, के ते छपीआ हाथ तो देयुं उचित नथी. अने जे भगवद स्वरूप होय तो महाप्रसाद केम दई ? अे विचारिने में कंध न दीधुं. त्यारे ते आसक आउ उपर यढी अंतर्धान थय गयो. ते आ प्रकारे मनमां संदेह थयो. त्यारे जगन्नाथ जेशीअे कछुं, तमे अराय क्युं. ते तो श्रीठाकुर-जअे पोते आपी हाथ लांभो करीने माग्युं (लतुं). तमेअे न आव्युं ते हीक न क्युं. अने अमे तमे प्रथम श्रीआचार्यजना दर्शने जगन्नाथरायल गयो त्यारे माताअे

नें एक मोहौर भेंट दीनी सो हम छिपाव राखें । यही संदेह भयो, जो-ईश्वर होइंगे तो श्रीआचार्यजी मांगि लेइंगे । सो मोहौर मांगि लीनी । और श्रीजगन्नाथरायजी के मंदिर में हू दरसन दीनो । और घरहू एक कालावच्छिन्न दरसन दे संदेह मिटाये । सो अपुने ऐसे पुरुषोत्तम श्रीआचार्यजी के सेवक हैं सो छलावा निकट आवे नाहीं । तुम छलावा को संदेह किये सो आछो न किये । श्रीआचार्यजी की कानि तें हमारे तुरुहारे पास श्रीठाकुरजी कृपा करिकें मांगि लेत हैं । तव नरहरि जोसो को संदेह गयो ।

भावप्रकाश—यह वार्ता को अविप्राय यह है, जो-जगन्नाथ जोसी पर सेवक होत ही कृपा भई । सो श्रीठाकुरजी में चित्त लागि गयो । और नरहरि जोसी के मनमें इतनी जोग्यता हती, जो-मैं बड़ो भाई हों, जगन्नाथ जोसी छोटी भाई है । यातें मैं बहोत समुझत हों । तातें नरहरि जोसी कों जदपि श्रीठाकुरजी ने अपनी स्वरूप जतायो, बालक होई रूख पर तें आई मांगे, तउ नरहरि जोसी श्रीठाकुरजी कों जाने नाहीं । तव श्रीठाकुरजी जगन्नाथ जोसी सों कहें । नरहरि जोसी सों न बोले । पाछें जब घर आवे तव जगन्नाथ जोसी ने कही, तुम संदेह क्यों कियो ? चुरी करी, जो-श्रीठाकुरजी कों न दिये । यह सुनिकें नरहरि जोसी को मान मर्दन

એક મોહોર ભેટ આપી તે આપણે છુપાવી રાખી. એ જ સંદેહ થયો કે ઈશ્વર હશે તો માંગી લેશે. અને શ્રીજગન્નાથરાયજીના મંદિરમાં પણ દર્શન આપ્યાં. અને ઘરે પણ એકી સમયે દર્શન દઈ સંદેહ મટાડ્યો. તે આપણે એવા પુરુષોત્તમ શ્રીઆચાર્યજીના સેવક છીએ તે કોઈ છળીએા નિકટ ન આવે. શ્રીઆચાર્યજીની કા'નથી અમારી તમારી પાસેથી ઠાકુરજી કૃપા કરીને માંગી લે છે. ત્યારે નરહરિ જોશીના સંદેહ ગયો.

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તાનો અવિપ્રાય એ છે, કે જગન્નાથ જોશી ઉપર સેવક થતાં જ કૃપા-યશ. તે શ્રીઠાકુરજીમાં ચિત્ત લાગી ગયું. અને નરહરિ જોશીના મનમાં એટલી યોગ્યતા હતી કે હું મોટો ભાઈ છું. જગન્નાથ જોશી નાનો ભાઈ છે. તેથી હું બહુ સમજું છું. તેથી નરહરિ જોશીને યદપિ શ્રીઠાકુરજીએ પોતાનું સ્વરૂપ જણાવ્યું. બાલક થઈ ઊપરથી આવી માંગ્યા તો પણ નરહરિ જોશીએ શ્રીઠાકુરજીને જણાવ્યા નહીં. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ જગન્નાથ જોશીને કહ્યું. નરહરિ જોશીથી ન બોલ્યા. પછી જ્યારે ઘર આવ્યા ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ કહ્યું, તમે સંદેહ કેમ કર્યો ? ખોટું કહ્યું, કે શ્રીઠાકુરજીને ન આપ્યું. એ સાંભળીને નરહરિ જોશીનું માન-મર્દન થઈ ગયું, કે મેં શ્રીઠાકુરજીને ન જણાવ્યા. જગન્નાથ જોશી

हैं गयो, जो—मैं श्रीठाकुरजी कों न जान्यो । जगन्नाथ जोसी बड़े कृपापात्र हैं । या प्रकार अपन कों हीन मानि सेवा किये । ता दिन तें जैसे जगन्नाथ जोसी सों श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावते तैसे नरहरि जोसी कों हू सानुभावता जनावन लागें । तातें वैष्णव कों छोटी जानि अपनी योग्यता जाननी नाहीं । अपने तें सगरे वैष्णव कों बड़े जानने । तब श्रीठाकुरजी कृपा करें । यह सिद्धांत प्रगट किये ।

वार्ता—प्रसंग २—और एक समय नरहरि जोसी गुजरात में अलिघाना गाम गये । तहां नरहरि जोसी के जजमान हते । उनको नाम महीधर हतो । और महीधर के एक बहनि फूलबाई हती । तिनसों नरहरि जोसी ने कह्यो, तुम श्रीगुसांईजी के सेवक होउ । वैष्णव होऊ तो हमारो तुम्हारो मिलाप रहे । तब महीधर और फूलबाई नें कही, जो—बहोत आछो, श्रीगुसांईजी कों पधरावो । हम सेवक होइंगे । तुम्हारी कृपा तें वैष्णव होइ तो जन्म सुफल होई । या प्रकार प्रसन्न भये ।

भावप्रकाश—काहेतें ? दोउ दैवी जीव हैं, लीला में श्रीचंद्रावलीजी की सखी हैं । महीधर को नाम लीला में 'कुरंगाक्षी' है । और फूलबाई को नाम 'चपलानैनी' है । सो ये सुंदर बहोत । नेत्र इनके परम सुंदर हैं । सो इनके मनमें सुंद-

भोटा कृपापात्र छे. आ प्रकारे पोताने हीन मानि सेवा करी. ते दिवसथी जम जगन्नाथ जेशीने श्रीठाकुरजी सानुभावता जणुभावता तेम नरहरि जेशीने पणु सानुभावता जणुभावता लाग्या. तेथी वैष्णुवने नानो जणु पोतानी योग्यता जणुवी नहीं. पोतानाथी अधा वैष्णुवने भोटा जणुवा. त्यारे श्रीठाकुरजी कृपा करे. जे सिद्धांत प्रकट कर्यो.

वार्ता—प्रसंग २—वणी ओक समय नरहरि जेशी गुजरातमां 'अलिघाणा' गाम गया. त्यां नरहरि जेशीना यजमान हता. तेमतुं नाम महीधर हतुं. अने महीधरनां ओक अहेन दूखपाध हतां. तेमने नरहरि जेशीजे कछुं, तमे श्रीगुसांईजीनां सेवक थाव. वैष्णुव थाव तो अमारो तमारो मिलाप रहे. त्यारे महीधर अने दूखपाधजे कछुं, के अहु साइं. श्रीगुसांईजीने पधरावो. अमे सेवक थधुं. तमारी कृपाथी वैष्णुव थाव तो जन्म सङ्ग थाव. आ प्रकारे प्रसन्न थाव.

भावप्रकाश—ठभके, अन्ने दैवी जव छे. लीलामां श्रीचंद्रावलीजीनी सखी छे. महीधरतुं नाम लीलामां 'कुरंगाक्षी' छे अने दूखपाधतुं नाम 'चपलानैनी' छे. ते जे सुंदर अहुज छे. नेत्र जेनां परम सुंदर छे. ते जेमना मनमां

रता को गर्व भयो । तातें श्रीचंद्रावलीजी के शाप तें भूमि में प्रगटे । सो पूर्व लीला को संबंध है । तातें महीधर को व्याह होत ही स्त्री मरि गई । माता-पिता हू मरि गये । एक महीधर और फूलवाई ये दोउ भेले रहते । पिता के द्रव्य बहोत हतो । सो वैष्णव होन की कही, तब दोउ भाई-बहनि बहोत प्रसन्न भये ।

पाछें कहें, श्रीगुसाईंजी कों वेगि पधरावो, तब नरहरि जोसी खेरालू में आई श्रीगुसाईंजी कों विनती पत्र लिखे । तामें लिखें, जो-तुम कृपा करिकें गुजरात पधारो तो कितनेक जीवन को कल्याण होई । तब श्रीगुसाईंजी पधारे । खेरालू में जगन्नाथ जोसी के घर उतरे । तब नरहरि जोसी अलियाना गाम में जाई महीधर और फूलवाई सों कहें, बधाई है । श्रीगुसाईंजी खेरालू गाम में जगन्नाथ जोसी के घर पधारे हैं । तब फूलवाई ने महीधर सों कही, जो-अब कहा करिये ? तब फूलवाई तें महीधर ने कही, जो-बहनि ! तू चिंता मति करै । रुपैया मोहौर की खिचरी करि श्रीगुसाईंजी कों न्यौछावरि करत अपने घर पधराजंगो ।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो-इतनी न्योछावरि करुंगो तो भेंट की कहा संदेह करति हैं ?

सुहरतानो गर्व थयो. तेथी श्रीचंद्रावलीजिना शापथी भूमिमां प्रकटयां. ते पूर्व-लीलानो संबध छे. तेथी महीधरनुं लग्न यतां न स्त्री मरी गध. मातापिता पणु मरी गयां. एक महीधर अने फूलपाध अने अन्ने लेगां रहेतां. पिताने द्रव्य धणुं छतुं. ते वैष्णव थवानुं छथुं, त्यारे अन्ने बाध-अहेन अहु प्रसन्न थयां.

पछी छहे, श्रीगुसांछलने जह्नी पधरावो. त्यारे नरहरि जेशीअे जेराणुमां आवी श्रीगुसांछलने विनतीपत्र लभ्यो. तेमां लभ्युं के, आप कृपा करीते गुजरात पधारो तो डेटलाड ल्योतुं कल्याणु थाय. त्यारे श्रीगुसांछल पधार्या. जेराणुमां जगन्नाथ जेशीना धरे उतर्या. त्यारे नरहरि जेशी अदीयाणु गाममां जठ महीधर अने फूलपाधने छहे, पधाध छे. श्रीगुसांछल जेराणु गाममां जगन्नाथ जेशीना धरे पधार्या छे. त्यारे फूलपाधअे महीधरने छथुं, के लवे गुं करिअे ? त्यारे फूलपाधने महीधरे छथुं, के अहेन ! तू चिंता न कर. रुपैया-महोरनी भीचरी करी श्रीगुसांछलने न्योछावर करतां आपणु धरे पधरावीग.

भावप्रकाश—अेमां अे जणुअ्युं, के अेटली न्योछावर करीश तो लेटनो शो संदेह करे छे ?

यह सुनिकें फूलबाई नरहरि जोसी मन में बहोत प्रसन्न भये, जो-महीधर की प्रीति तो आछी है। पाछें खेरालु में आई नरहरि जोसी, महीधर, फूलबाई दंडौत करि बिनती करिकें अलियाना गाम में पधराये। तब श्रीगुसाईजी पधारे। सो महीधर और फूलबाई रुपैया मोहौर की खिचरी करि श्रीगुसाईजी के ऊपर न्यौछावर करत लूटावत अनेक बाजिंत्र गानादिक करत घर में पधराये। पाछें महीधर और फूलबाई कों न्हवाई के नाम निवेदन करवाये। इनके घर में प्रथम श्रीठाकुरजी हते, सो मर्यादा रीति सों श्रीलालजी की पूजा करतें। सा श्रीठाकुरजी कों श्रीगुसाईजी पंचामृत स्नान कराई पाट बैठारे। महीधर और फूलबाई के माथे पधराये। महीधर और फूलबाई श्रीगुसाईजी कों बहोत भेट करिकें प्रीति सों पांच दिन घर में राखे। पुष्टिमार्ग की रीति सब सीखें। पाछें श्रीगुसाईजी द्वारका पधारे। तब महीधर फूलबाई नें नरहरि जोसी सों बहोत बिनती किये, जो-तुम्हारी कृपातें हम वैष्णव भये। अब हमारो नयो जन्म भयो। श्रीगुसाईजी कृपा किये।

भावप्रकाश—सों वैष्णव को संग ऐसो है। “आर्द्रार्द्रिं करणत्वं” भीज्यो वस्त्र सूके वस्त्र कों लगें, तो सूको हू भीज्यो होई। तेसे वैष्णव के संग तें

अे सांखणीने इलभाध नरहरि जेशी मनभा भुडु प्रसन्न थयां, के महीधरनी प्रीति तो सारी छे. पछी जेरालुमां आवी नरहरि जेशी, महीधर-इलभाध दंडवत करी बिनती करीने अदीयाणु गाममां पधराव्या. तयारे श्रीगुसांभल पधर्या. तयारे महीधर अने इलभाध रुपैया महुारनी भीयडी करी श्रीगुसांभलना उपर न्योछावर करतां करतां लूटावता अनेक वालंत्र गानादिक करतां घरमां पधराव्या. पछी महीधर अने इलभाधने न्हवडावीने नाम-निवेदन कराव्युं. अेमना घरमां प्रथम श्रीठाकुरल लुता ते मर्यादा रीतिथी श्रीलाललनी पूजा करता. ते श्रीठाकुरलने श्रीगुसांभलअे पंचामृत स्नान करावी पाट भेसाया. महीधर अने इलभाधने माथे पधराव्या. महीधर अने इलभाधअे श्रीगुसांभलने भुडु लेट करीने प्रीतिथी पांच दिन घरमां राख्या. पुष्टिमार्गनी रीति यधी शिष्यां. पछी श्रीगुसांभल द्वारिका पधर्या. तयारे महीधर इलभाधअे नरहरि जेशीने भुडु बिनती करी, के तमारी कृपाथी अमे वैष्णव थयां. हुवे अमारो नवो जन्म थयो. श्रीगुसांभलअे कृपा करी.

भावप्रकाश—ते वैष्णवने संग अेवो छे, ‘आर्द्रार्द्रिं करणत्वं’ भीज्यो वस्त्र सूका वस्त्रने लागे तो सूका पणु लीज्यो थाय. तेवी रीते वैष्णवना संगथी

वैष्णव होई । जैसे गिरिराज के संग तें पुलिंदी कों भगवद्भाव उत्पन्न भयो । तातें सर्वोपरि तादृशी वैष्णव को संग है ।

पाछें नरहरि जोसी, भाई-बहनि सों विदा होइ अपने गाम खेरालु में आये । तब जगन्नाथ जोसी सों नरहरि जोसी ने कही, जो-महीधर और फूलबाई की प्रीति न कही जाई, जो-भले वैष्णव भये । तब जगन्नाथ जोसी कहे, श्रीगुसांईजी जापर कृपा करें सो भगवदीय होइ यामें कहा कहनो ? पाछें सेवा करन लागें ।

वार्ता-प्रसंग ३—ता पाछें केतेक दिन में अलियाना गाम में आगि लागी । प्रातःकाल समें नरहरि जोसी खेरालु गाम में बाहिर जाई देह-कृत्य तलाव पर करि, नित्य-कर्म करि, फूल की डलिया में फूल-तुलसी धरि हाथ में लिये घर आवत हते । सो ता समें नरहरि जोसी नें जानी, जो-अलियाना गाम में आगि व्होत लगी है । सो मन में विचारे, जो-अवहिं महीधर, फूलबाई नये वैष्णव भये हैं । सो इनको घर जरेंगो तो कहेंगे, जो-हम वैष्णव भये तातें उपद्रव भयो । ऐसो मनमें आवेंगो तो इनको धर्म जात रहेगो । विगार होइगो । यह विचारि आछी धरती देखि तुलसी की डलियां भूमि में धरि

वैष्णव थाय. जेभ श्रीगिरिराजना संगथी पुस दीओने भगवद्भाव उत्पन्न थयो. तेथी तादृशी वैष्णवना संग सर्वोपरि छे.

पछी नरहरि जोशी साध-भलेनथी विदाय थडिचोताना गाम भेरालुमां आव्या. त्यारे जगन्नाथ जोशी आगण नरहरि जोशीअे डलुं, के महीधर अने फूलबाइनी प्रीति डळी न जाय. (अेवी) छे, अे सारा वैष्णव थया. त्यारे जगन्नाथ जोशी डळे, श्रीगुसांईज जेना उपर कृपा करे अे भगवदीय होय अेमां शुं डळेडुं ? पछी सेवा करवा लाग्या.

वार्ता-प्रसंग ३—ते पछी केतकाक दिवसमां अलियाणा गाममां आग लागी. प्रातःकाल समये नरहरि जोशी भेरालु गाममां भुहार जडि देळ-कृत्य तलाव उपर करी नित्य-कर्म करी फुलना डलियांमां फूल-तुलसी धरी, हाथमां लडि धर आवता हुता. ते समये नरहरि जोशीअे जलुं, के अदीयाणा गाममां आग भडु लागी छे. ते मनमां विचारे, के महीधर-फूलबाई लुभणां ज नवां वैष्णव थयां छे. तेथी अेभलुं घर भणशे तो डलेशे के अमे वैष्णव थयां तेथी उपद्रव थयो. अेडुं मनमां आवशे तो अेभने धर्म जता रळेशे. भगाड थशे. अेभ विचारी सारी जमीन जेथ तुलसीनी डळीया लूमिमां मूडी आरीथी जल लडि आसपास डुंआडी करी पाळी नाज्या ड्युं.

झारी सों जल ले आसपास कुंडाली करि पानि डारयो किये । जब अलियाना गाम में आगि बूझि जानें, तब महीधर को घर या प्रकार बचाई, पाछें नरहरि जोसी फूल लें, तुलसी लें अपने घर आये । पाछें कितनेक दिन पाछें अलियाना गाम में महीधर के घर नरहरि जोसी गये । तब महीधर और फूलबाई ने नरहरि जोसी सों कह्यो, जो-इहां अग्नि को उपद्रव बहोत भयो हतो । सो श्रीगुसाईंजी की कृपा तें हमारो घर बच्यो । वैष्णव भये तातें बचे, नाहीं तो कहा जानिये कहा होतो? तब नरहरि जोसी कहें, श्रीगुसाईंजी परम दयाल हैं । वैष्णव की सदा रक्षा छाया करत ही आये हैं । तातें वैष्णव को सदा कल्याण ही हैं । या प्रकार भाई-बहनि को समाधान करिकें पाछें विदा होई खेरालु अपने घर आये । तब दोऊ भाई घर में सेवा सों पहोंचिके बैठें । तब नरहरि जोसी ने जगन्नाथ जोसी सों कह्यो, जो-एक दिन अलियाना गाम में आगि लागी । तब मैं प्रातःकाल तलाव पर तें नित्य-कर्म करि आवत हुतो । सो फूल तुलसी की डलियां मेरे हाथ में हती । सो मैं अलियाना गाम में आगि लागी जानि तुलसी की डलिया भूमि में धरि, झारी सों जल लें तुलसी के आसपास पानि को कुंडाला करि तासों महीधर फूलबाई को घर बचायो । तब नरहरि

न्यारे अलियाणा गाममां आगि भुञ्जी अमि नष्टुं, त्यारे महीधरतुं घर अे प्रकारे भयावी पञ्जी नरहरिं जेशी दूख लथ, तुलसी लथ, पोताना धरे आख्या. पञ्जी केलाक द्विपस पञ्जी अदीयाणा गाममां महीधरना धरे नरहरि जेशी गया. त्यारे महीधर अने दूखभाधये नरहरि जेशीने कथुं, के अह्नी अग्निना उपद्रव धरेा थयो हुतो. ते श्रीगुसांथलनी कृपाथी अमाइं घर अय्युं. नह्नीं तो शुं नष्टीये शुं थतुं? त्यारे नरहरि जेशी कहे, श्रीगुसांथल परमदयाल छे. वैष्णवनी सदा रक्षा छाया करता न आख्या छे. तेथी वैष्णवतुं सदा कल्याण न छे. आ प्रकारे साध-जुहेनतुं समाधान करीने पञ्जी विदाय थध भेराणु पोताना धरे आख्या. त्यारे अन्ने साध घरमां सेवाथी पहोंचीने भेस. त्यारे नरहरि जेशीये जगन्नाथ जेशीने कथुं, के अेक द्विपस आलयाणा गाममां आगि लागी. त्यारे हुं प्रातःकाल तलाव उपरथी नित्यकर्म करीने आवतो हुतो, ते दूख तुलसीनी करंडी मारा हाथमां हुती. ते भे अलियाणा गाममां आगि लागी नष्टी त्यारे तुलसीनी करंडी भूमिमां धरी अारीथी नल लथ तुलसीनी आसपास पाणीतुं कुंडालुं करी तेनाथी महीधर-दूखभाधतुं घर अयाय्युं. त्यारे नरहरि जेशीने जगन्नाथ जेशीये कथुं, आरदो लः करीने श्रीगुरुजने श्रम कराव्यो

जोसी सों जगन्नाथ जोसी ने कही, इतनो हठ करिकें श्रीठाकुरजी कों
 श्रम करायो सो उचित नाहीं । यह अपुने मारग की रीति नाहीं है ।
 और आपुन कोन हैं, जो-वचावें ? श्रीठाकुरजी सर्व सामर्थ्य युक्त
 हैं । सो सब लीला करत हैं । तव नरहरि जोसी ने जगन्नाथ जोसी
 सों कही, मैं श्रीठाकुरजी सों हठ नाहीं कियो । मेरे मन में यह आई,
 जो-महीधर फुलवाई अवहि नये वैष्णव भये हैं, जो-इनके घर में
 अग्नि को उपद्रव होइ तो कहूं इनके मन में यह आवे, जो-हम अवहि
 वैष्णव भये हैं । अवहि आगि लागी । सो एतन्मार्ग में तें प्रीति घटें ।
 सो इनकों भगवद् प्राप्ति में अंतराइ होई । अब इनकों दृढ़ विश्वास
 श्रीगुसांईजी में और पुष्टिमार्ग में भयो, जो-वैष्णव भये तो वचे ।
 यह दृढ़ता के लिये मैं इतनो कियो । और सोकों कछु प्रयोजन नाहीं ।
 तव दोऊ भाई हसि कें चुप है रहे । सो प्रभु बड़े कौतुकी हैं । इनकी
 इच्छा तें सब होत हैं । सो ये नरहरि जोसी, जगन्नाथ जोसी और
 इनकी माता ये तीन्यो बड़े भगवदीय हैं । चाहे सो करें । इनके संग
 तें महीधर और फुलवाई कों श्रीठाकुरजी में दृढ़ विश्वास भयो ।
 प्रीति सों सेवा करन लागे । पाछें कछुक दिन में श्रीठाकुरजी महीधर
 फुलवाई सों सानुभावता जनावन लागें । तातें इनकी वार्ता कहाँ

ते उचित नहीं. ये आपणा मार्गनी रीति नहीं. अने आपणे कोणु ने पचावीये ?
 श्रीठाकुरजी सर्व सामर्थ्ययुक्त छे. ते पधी दीसा करे छे. तयारे नरहरि जेशीअ जग-
 नाथ जेशीने धरुं, में श्रीठाकुरजी लुं नहीं धर्यो. मारा मनमां ये आच्युं दे
 महीधर इतनाउ लुमणां न वैष्णव थयां छे. ते लुमणां न आग लागी तेथी आ
 मार्गमाथी प्रीति घटे तो ऐमने लगवद् प्राप्तिमां अंतराय थाय. लुवे ऐमने दृढ
 विश्वास श्रीगुसांईजीमां अने पुष्टिमार्गमां थयो. डेम ने वैष्णव थया तो पच्यां. आ
 दृढताने माटे में आलुं धर्युं. अने मने इंध प्रयोजन नहीं. तयारे अने लाउ दुरीने
 रूप थछ रह्या. डेम ने प्रभु मला कौतुकी छे. ऐमनी इच्छाथी पधुं थाय छे. ये नर-
 हरि जेशी, जगन्नाथ जेशी ऐमनी माता ये त्रणे लगवदीय लतां. याहे ते करे.
 ऐमना संगथी महीधर अने इतनाउने श्रीठाकुरजीमां दृढ विश्वास थयो. प्रीतिथी
 सेवा करवा लाग्या. पछी डेसाडे द्वियसमां श्रीठाकुरजी महीधर-इतनाउने सानुभावता
 ज्ञापयवा लाग्या. तेथी ऐमनी वार्ता इयां सुधी इलीये ? नरहरि जेशी, जगन्नाथ
 जेशी अने ऐमनी माता मणीने वार्ता ऐके जणुवी.

॥ वार्ता ३१ ॥



लों कहिये । नरहरि जोसी जगन्नाथ जोसी और इनकी माता मिलि के वार्ता एक जाननी । ॥ वार्ता ३१ ॥

✱

✱

✱

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, राना व्यास सांचोरा ब्राह्मन गोधरा के वासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये राना व्यास लीला में इंदुलेखा श्रीस्वामिनीजी की सखी हैं । सो वाकी सखी “नागवेलिका” इनको नाम हैं । सो वरस बारह के ये राना व्यास भये । तब एक बैरागी को इनकों संग भयो । सो बैरागी चारों धाम फिरि आयो हतो । सो बंद्रीकाश्रम की बात, श्रीजगन्नाथरायजी की बात, रंगनाथजी की बात, श्रीरनछोड़जी की बात, माहात्म्य कह्यो । सो राना व्यास अर्द्धरात्रि कों उठि चले । सो पहले बंद्रीकाश्रम गये । तहां बहोत मारग में दुःख पाये । सो बंद्रीनाथजी के दरसन किये । परंतु मन में प्रसन्न न भये, जो—इहां सीत बहोत हैं । और मारग ऐसो है, जो—प्राण जाई । पाछें श्रीजगन्नाथरायजी कों गये । तब दरसन करिकें कलुक प्रसन्न भये । पाछे रोग सों मांदे बहोत परे । सो एक महिना में आछे भये । तब मन में कहें, फेरि मांदो परुंगो तो मरुंगो । तातें उहां तें चलें । सो दक्षिण में आई श्रीरंगनाथजी के दरसन किये । तब मन में कहें, इनको दरसन कैसे करों ? चरन के करों तो मुख के न होंइ । मुख के करों तो चरन के न होंइ ?

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुलना सेवक, राणा व्यास सांचोरा ब्राह्मण गोधरा वासी, तेमनी वार्ताना भाव कहुअ छीअ—

भावप्रकाश—अ राणा व्यास लीलाभां इंदुलेखा श्रीस्वामिनीजीनी सखी छे । तेनी सखी ‘नागवेलिका’ अमनुं नाम छे । वर्ष पारना अ राणा व्यास थया । सारे अक बैरागीना अमने संग थयो । ते बैरागी सारे धाम इरी आव्ये हुतो । ते बंद्रीकाश्रमनी बात, श्रीजगन्नाथरायजीनी बात, श्रीरंगनाथजीनी बात, श्रीरनछोड़जीनी बात—महात्म्य कहुं । पछी राणा व्यास अउधी रात्रे उठीने याट्या । ते पहेलां बंद्रीकाश्रम गया । त्यां मार्गभां अहु दुःख पाग्या । त्यां बंद्रीकानाथजीनां दर्शन कर्या । परंतु मनभां प्रसन्न न थया । केम न अही ठउ धरणी छे । अने मार्ग अवेो छे, ठे प्राण अथ । पछी श्रीरंगनाथरायजी गया । त्यां दर्शन करीने कइक प्रसन्न थया । पछी रोगथी मांदा धरु पड्या । ते अक महिनाभां सारा थया । सारे मनभां कहे, इरी मांदा पडीश तो मरीश । तेथी सांथी याट्या । ते दक्षिणभां आवी रंगनाथजीनां दर्शन कर्या । सारे मनभां कहे, अमनुं दर्शन देवी रीते कइ ? चरणनां कइ तो

ए वड़े बहोत हैं । तातें अब द्वारिका चलूं । सो द्वारिका आये । सो श्रीरनछोड़जी के दरसन किये । सो चरन छूड़वे कों कहें । तब उहां पंड्या नें कही, इतनो द्रव्य खरचो तब चरन छूवों । तब राना व्यास मन में विचारे, जो-इहां ब्रह्मचारी द्रव्य के लिये चरन छूवन देत हैं । और ठाकुर को द्रव्य ले जाई । तातें इहां हू रहनो उचित नाहीं । काहेतें ? जहां चित्त में दोष उपजे उहाँ के रहें कल्याण न होई । विगार होई । यह विचारि द्वारिका सों चले । सो गुजरात में गोधरा अपने घर आये ।

सो माता-पिता बहोत वृद्ध भये हते । सो आठ बरस में राना व्यास आये । तब माता-पिता नें कही, बेटा ! तू कहां निकसि गयो ? घर में रहेतो तो तेरो व्याह करते । अजहू घर में रहो । अपनी ज्ञाति की रीति चलो तो व्याह होई । तब राना व्यास ने कही, मैं तो सदा ब्रह्मचारी रहूंगो । व्याह करिकें कहा नर्क में परों ? मैं तो इन्द्रीजीत हों । तब माता-पिता चुप होइ रहे । पाछें माता-पिता की देह छुटी । सो संस्कार करि मन में प्रसन्न भये, जो-बंधन कट्यो । अब मैं चाहूंगो सो करूंगो दस पाँच हजार रूपैया हू हैं । या प्रकार इन्द्रीजीत को अहंकार हतो । द्रव्य को अहंकार भयो । सो मारे गर्व के काहू सों बोले नाहीं, बड़े गाम में सिद्ध कहावतें ।

भुष्पनां न थाय. भुष्पनां कङ्गं तो यरणुनां न थाय ! अमे भोटा अहु छे. तेथी हुवे द्वारका आलु. ते द्वारका आल्या. त्यां श्रीरणुछोडणनां दर्शन कर्यां. ते यरणु स्पर्शितुं कळुं. त्यारे त्यांना पड्याअमे कळुं, आटलुं द्रव्य अर्थो त्यारे यरणु स्पर्श करे. त्यारे राणा व्यासे मनमां वियायुं, हे अहीं ब्रह्मचारी द्रव्यने माटे यरणु स्पर्श करवा दे छे. अने ठाकुरणुतुं द्रव्य लभ जय छे तेथी अही पणु रडेवु उचित नही. हेभडे ज्यां यित्तमां दोष उपजे त्यांना रडेवाथी कट्याणु न थाय. अगाठ थाय. अमे वियायी द्वारिकाथी आट्या. ते गुजरातमां गोधरा पोताना धरे आल्या.

त्यारे माता-पिता अहु वृद्ध थया हुता. ते आठ बरस राणा व्यास आल्या. त्यारे माता-पिताअमे कळु, बेटा ! तू ज्यां निकणी गयो हुतो ? घरमां रहेतो तो ताङ्गं लभ करतां. हुणु पणु धग्मां रहे. आपणी ज्ञातिनी रीतिअे यातो तो लभ थाय. त्यारे राणा व्यासे कळुं, हु तो सदा ब्रह्मचारी रहीश. लग्न करी शु नर्कमां पडुं ? हुं तो धन्दिणु जत छुं. त्यारे माता-पिता अय थय रधा. पछी माता-पितानी देह छुटी त्यारे संस्कार करी मनमां प्रसन्न थया, हे बंधन छुटयुं. हुवे हुं आहीश ते करीश. दश-पांच हुजर ३पीआ पणु छे. आ प्रकारे धन्दि-जतने अहंकार हुतो. द्रव्यने अहंकार थयो, ते गर्वना मारे टाठथी बोले नही.

और जगन्नाथ जोसी हू राना व्यास पास नाम पायो हतो । पाछें माता के कहें सों जगन्नाथ जोसी श्रीआचार्यजी के सेवक भये । पाछें राना व्यास पढ़े हू कछुक हते । सो मन में आई, जो-या गाम में तो सगरे मूरख हैं । कासी में चलि काहू सों वाद करों । यह अहंकार करि राना व्यास घरतें कछुक द्रव्य लें कासी में बड़े-बड़े पंडित जहां वाद करते तहां गये । तहां हारे सो लाज लागी । तब मन में विचारघो, जो-अर्द्ध रात्रि समें गंगाजी में डूवि मरुंगो । सो संझा समें भूखे ही गंगाजी के तीर हनुमान घाट है तहां जाइ बैठे, कहे, जो-रात्रि होई कोई जाने नाहीं तब गंगाजी में डूवों । तहां श्रीआचार्यजी पधारे । सो एक वैष्णव ने श्रीआचार्यजी सों पूछी, जो-महाराज ! गंगाजी में डूब मरें ताकों कछ फल गंगाजी देई ? तब श्रीआचार्यजी कहें, जो-अहंकार करिकें काहूसों लरिकें डूबे को फल नाहीं । सर्प की जोनि पावें । आत्महत्या लागें । महादुष्ट होई, जो-ऐसे मरें । रोग सों ग्रसित होई । दैन्यता पूर्वक संन्यास लेई डूबे तो कछ फल मिलें, जो-मरति बेर ठाकुर में मन रहे तो । नाहीं तो दुर्गति होई । यह बात सुनतहि राना व्यास ने जानी, जो-ये महापुरुष हैं । यों जानि आइकें श्रीआचार्यजी सों विनती करी, जो-महाराज ! भली भई,

गामभां भोटा सिद्ध कहेवडावता. जगन्नाथ जेशीये पणु राणा व्यास पासे नाम पाभ्यु हुतुं. पछी माताना कहेवाथी जगन्नाथ जेशी श्रीआचार्यजना सेवक थया. पछी राणा व्यास थोडुं लणुया पणु हुता. ते मनभां आभ्यु के आ गामभां तो पधा भूरप छे. कासीभां जध डोद्यथी वाद करे. ते अहंकार करी राणा व्यास धरथी थोडुं द्रव्य लध काशीभां भोटा भोटा पडितो ज्यां वाद करता त्यां गया. त्यां ह्यार्या. त्यारे लाज लागी. त्यारे मनभां विचार्युं के अरधी रात्रिये गंगाजभां डुणी मरीश. ते स आसमे भूष्या ज गगाजना दिनारे हनुमानघाट छे त्यां जध पेडा. कहे, ज रात्रि थाय, डोद्य जणु नही त्यारे गगाजभां पूडुं. त्यां श्रीआचार्यज पधार्या. त्यारे अेक वैष्णुवे श्रीआचार्यजने पूछयुं, के महाराज ! गंगाजभां डुणी भरे तेनु कंई इल गंगाज आपे ? त्यारे श्रीआचार्यज कहे, के अहंकार करीने, डोद्यनाथी लडीने दुषे तो इल नहीं. सर्प येनी पामे. आत्महत्या लागे. महादुष्ट थाय. जे अेम भरे. रोगथी असित थाय, दीनतापूर्वक संन्यास लई डूये तो कंई इल भणे. जे मरती समये ठाकुरभां मन रहे तो. नहीं तो दुर्गति थाय. जे वात सांभणतां ज राणा व्यासे जणुयुं, के जे महापुरुष छे. अेम जणुिने श्री-आचार्यजने विनंती करी, के महाराज ! लक्ष्मी थध जे आ वैष्णुवे वात पूछी.

जो—यह वैष्णव नें बात पूछी । मैं गंगाजी में डूबन अर्थ भूखी सवेरेसे बैठे हूं । सो अर्द्ध रात्रि जाई तब डूबूं । परंतु अब मेरो उद्धार होइ सो प्रकार बतावो । आपुकी सरनि हों । तब श्रीआचार्यजी कहें, तुमहू तो नाम देत हो ? स्वामि कहावत हो, अपने कों बहोत योग्य मानत हो । सो सेवक होन की बात क्यों कहत हो ? तब राना व्यास विनती करी, महाराज ! अहंकार तो बहोत हतो परंतु कासी में जहां जहां पंडितन सों वाद कियो तहां तहां हारघो । तातें गंगाजी में डूबन कों ठाढ़ो हों । सो मेरे भागि में कछू आछो होनहार है, जो—या समय आपुको दरसन भयो । सो मैं बहोत दीन हों, अनाथ हों । सो आपु मो पर कृपा करो । तब श्रीआचार्यजी राना व्यास सों कहें, जो, जा, गंगाजी में न्हाइ आव । तब राना व्यास गंगाजी में न्हाइ आये । तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाइ ब्रह्मसंबंध कराये । और आज्ञा दिये, अब जहां पंडितन सों हारे हो तहां तहां जाईकें सगरे वाद करिकें जीति आवोगे । पाछें रात्रि कों राना व्यास रसोइ करि भोग धरिकें महाप्रसाद लिये । मन में आनंद भयो । पाछें प्रातःकाल न्हाइ के श्रीआचार्यजी कों दंडोत कियो । तब श्रीआचार्यजी चतुःश्लोकी सिखाय कहें, जो—जा, पंडितन सों वाद करि आव । सो सगरे पंडितन कों एक ही वचन में जीते । श्रीआचार्यजी के प्रमेय बल प्रताप

हुं गंगाज्ज्मां डूबवा माटे लूभ्यो सवारथी जेठो छुं. जे अर्धरात्रि जय त्यारे डुभुं. परंतु हुवे भारो उद्धार होय ते प्रकार बतावो. आपनी शरण छुं. त्यारे श्रीआचार्यज्ज् कहे, तमे पशु नाम आपो छो. स्वामि कहेवाव छो—पोताने बहु योग्य भानो छो. पछी सेवक थनानी बात हेम करे छो ? त्यारे राणा व्यासे विनंती करी, महाराज ! अहंकार तो धणो हुतो परंतु काशीमां ज्यां ज्यां पंडितोथी वाद कर्यो त्यां त्यां हार्यो. त्यारे गंगाज्ज्मां डूबवाने उलो छु. मारा साग्यमां कछ साइं थवानुं छे ते आ समये आपनुं दर्शन थयुं. हुं बहु दीन छुं, अनाथ छुं तेथी आप मारा उपर कृपा करे. त्यारे श्रीआचार्यज्ज् राणा व्यासने कछुं, हे ज, तू गंगाज्ज्मां न्हाइ आव. त्यारे राणा व्यास गंगाज्ज्मां न्हाइ आया. त्यारे श्रीआचार्यज्ज् नाम संभवावी ब्रह्मसंबंध कराव्युं. अने आज्ञा आपी हे हुवे ज्यां—ज्यां पंडितोथी हार्यो छे त्यां—त्यां जधने अघे वाद करीने ज्ज्ती आवीश. पछी रात्रिजे राणाव्यासे रसोइ करी लोग धरीने महाप्रसाद दीयो. मनमां आनंद थयो. पछी प्रातःकाल न्हाइने श्रीआचार्यज्ज्ने दंडवत् कर्या त्यारे श्रीआचार्यज्ज् ' अतुश्लोकी ' सिखावी. पछी कछुं, हे ज, पंडितोथी वाद करी आन. त्यारे

ते। पाछें तीसरे पहर आय श्रीआचार्यजी कों दंडोत करि बिनती कियो। तब श्रीआचार्यजी कहें, पंडित तो जीते परंतु अहंकार मति करियो। अहंकार जा वस्तु को करयो सोई वस्तु को नास होइगो। तब राना व्यास ने बिनती करी, महाराज ! अब अहंकार न करुंगो, अहंकार करि बहोत दुःख पायो। अब ऐसी कृपा करो, जो—कछु भगवद् अनुग्रह होई। मेरो जनम ऐसोई बीत्यो भटकतें। तब श्रीआचार्यजी कहें, कहूँ तें भगवद् स्वरूप ले आवो। तब राना व्यास बजार में जाई एक लालजी को स्वरूप न्यौछावर दे के ले आये। तब श्रीआचार्यजी पंचामृत स्नान कराइ राना व्यास के माथें पधराई कहें, अब तू बहोत भटकयो। परंतु अब घर में जाई मन लगाई के भगवद् सेवा करो। तब राना व्यास श्रीआचार्यजी कों दंडोत करि विदा होई अपने घर आये। पाछें सेवा करन लागें।

वार्ता—प्रसंग १—सो प्रथम जगन्नाथ जोसी राना व्यास के पास नाम पाये हते। सो जब जगन्नाथ जोसी सुनें, जो—राना व्यास श्रीआचार्यजी के सेवक है आये, तब जगन्नाथ जोसी गोधरा आये। राना व्यास सों मिले। सो दोऊ जनें बहोत प्रसन्न भये। पाछें राना व्यास के पास जगन्नाथ जोसी बहोत रहते।

सधणा पंडितोने अेक न वयनमां ल्या। श्रीआचार्यलना प्रभेय—अल प्रतापथी पछी त्रीन प्रहुरे आवीने श्रीआचार्यलने दंडवत् करी बिनती करी। त्तारे श्रीआचार्यल कहे, पंडित तो ल्या परंतु अहंकार न करीश। अहंकार न वस्तुने कर्ये तेन वस्तुने नाश थशे। त्तारे राणा व्यासे बिनती करी, न महाराज ! हुवे अहंकार नही कइं। अहंकार करी अहु दुःख पाभ्यो। हुवे अेवी कृपा करो के कंध भगवद् अतुग्रह थाय। मारे नन्म अेम न भटकतां वीत्यो। त्तारे श्रीआचार्यल कहे, कर्थी भगवत्स्वरूप लध आवो। त्तारे राणाव्यासे अजरमां आवी अेक लाललनुं स्वरूप न्यौछावर दधने लर्ध आव्या, त्तारे श्रीआचार्यलअे पंचामृत स्नान करावी राणा व्यासने माथे पधरावी कल्युं, हुवे तू धल्युं भटक्यो। परंतु हुवे धरमां नध मन लगावीने भगवद्सेवा करो। त्तारे राणा व्यास श्रीआचार्यलने दंडवत् करी विदाय थर्ध पोताना धरे आव्या। पछी सेवा करवा लाग्या।

वार्ता—प्रसंग १—पहुलां जगन्नाथ जेशी राणा व्यास पासे नाम पाभ्या लता। पछी त्तारे जगन्नाथ जेशीअे सांभल्युं, के राणा व्यास श्रीआचार्यलना सेवक थर्ध आव्या। त्तारे जगन्नाथ जेशी गोधरा आव्या, राणा व्यासने भल्या। पछी अन्ने नया अहु प्रसन्न थया। पछी राणा व्यासनी पासे जगन्नाथ जेशी धल्युं रहता।

भावप्रकाश—सो राना व्यास के मनमें पंडिताई को अहंकार तो दूरि भयो । परंतु इंद्रिजीत को अहंकार हतो । सो श्रीठाकुरजी ने यह अहंकार दूरि करिवे के लिये एक कौतुक रच्यो ।

सो भगवद् इच्छा तें गोधरा की देसायनि सों राना व्यास को संग भयो । सो बात काहूने राना व्यास की दरवार में कही । सो वह हाकिम के प्यादे राना व्यास कों लैन आये । तब जगन्नाथ जोसी नें राना व्यास कों और देसायनि कों और गाभ भजाई दिये । और राना व्यास के घरमें जगन्नाथ जोसी रहे । भगवद् सेवा करि राजभोग सों पहुँचे । इतने में हाकिम के प्यादे आये । सो कहे, राना व्यास कहां हैं ? तब जगन्नाथ जोसी नें कही, कहा काम है ? तब प्यादे कहे, राना व्यास ने अन्याव कियो है सो हाकिम पास ले जाइंगे । तब जगन्नाथ जोसी ने कही, राना व्यास तो कहूं गये हैं । चलो मैं हाकिम कों उत्तर दे आजं । तब प्यादे जगन्नाथ जोसी कों लिवाइ जाय हाकिम आगें ठाढ़े किये । तब हाकिम ने कही, जो-राना व्यास कहां है, उनकों लावो ? राना व्यास ने पराई स्त्री सों अन्याव कियो है । इनकों क्यों न लाये ? ये तो जगन्नाथ जोसी हैं । इनकों तो नीके जानत हों ।

भावप्रकाश—राणा व्यासना मनमां पंडिताधने अहंकार (हुतो) ते तो दूर थयो, परंतु इंद्रियलतने अहंकार (पाडी) हुतो. तेथी श्रीठाकुरज्ये अहंकार दूर करवाने माटे एक कौतुक रच्युं

ते भगवद् इच्छाथी गोधरानी देसायन्यथी राणा व्यासना संग थयो. ते बात कोधये राणा व्यासनी राजद्वारमां कही. तेथी ते हाकेमना सिपाय्ये राणा व्यासने लेवाने आव्या. त्तारे जगन्नाथ जेशीये राणा व्यासने तथा देसायन्यने भीज गाभ भगाडी दीधां. अने राणा व्यासना घरमां जगन्नाथ जेशी रखा. भगवद्सेवा करी राजभोगथी पहुँच्यो. अतलामां हाकेमना सिपाय्ये आव्या. ते कहे, राणा व्यास इयां छे ? त्तारे जगन्नाथ जेशीये इधुं, गुं काम छे ? त्तारे सिपाय्ये कहे, राणा व्यासे अन्याय इयो छे. तेथी हाकेम पासे लध जशुं. त्तारे जगन्नाथ जेशीये इधुं, के राणा व्यास तो इध अहार गया छे. यासे, हुं हाकेमने उत्तर इध आवुं. त्तारे सिपाय्येये जगन्नाथ जेशीने लध जध हाकेम आगण उला राग्या. त्तारे हाकेमे इधुं, के राणा व्यास इयां छे ? अनेने लावो. राणा व्यासे भीजनी स्त्री साथे अन्याय इयो छे. अनेने केम न लाव्या ? आ तो जगन्नाथ जेशी छे ? अनेने तो सारी रीते जलुं छुं. जेतुं नाम जगन्नाथ जेशी ते इदीये अन्याय न इरे. तेथी

जो-जाको नाम जगन्नाथ जोसी सो कबहू अन्याव न करें। तातें राना व्यास ने अन्याव कियो है सो राना व्यास को ले आवो। तब जगन्नाथ जोसी नें कही, जो-तुम मेरी बात सुनो। राना व्यास ने अन्याव नाहीं कियो है। काहू नें झूठे ही चुगली करी है। जाको नाम राना व्यास सो कबहू अन्याव न करें। तब हाकिम ने कही, कैसे जानिये, राना व्यास अन्याव नाहीं कियो है? तब जगन्नाथ जोसी कहें, जो-कहो तैसेई करूं। तब हाकिम ने गाडी के पैया को एक पहलू मँगायो। ताको अग्नि में डारि कें तातो कियो। जब लाल भयो तब हाकिम ने कही याको उठाई कें डारो। न जरो तो राना व्यास सांचे। तब जगन्नाथ जोसी उह पहलू के पास आई ठाढ़े होइके कह्यो, जो-राना व्यास अन्याव कियो होई तो मेरो हाथ जरियो। सो यह कहत ही अग्निमय पहलू सीतल है गयो। सो जगन्नाथ जोसी हाथ में उठाइ उह पहलू गरे में पहरि लिये। घरी एक ठाढ़े रहे। तब हाकिम ने और सगरे लोगन नें कही, जगन्नाथ जोसी काढ़ि, काढ़ि। तुम सांचे हो। तब जगन्नाथ जोसी कहें, यह कौनके गरे में डारूँ? तब हाकिम नें बहोत मनुहारि करि विनति करी। पाछें भूमि पर डारें। सो भूमि जरि उठी। तब सगरे आश्चर्य पाय कें कहें, जो-जगन्नाथ जोसी तुम धन्य हो। तुम सांचे हो। पाछें हाकिम ने जगन्नाथ जोसी सों

राणा व्यासे अन्याय क्योँ छे. ते राणा व्यासने लछ आबो. त्यारे जगन्नाथ जेशीअे कछुँ, के तमे मारी वात साँलणो. राणा व्यासे अन्याय नथी क्योँ. डोअेअे नूडी ज याडी डरी छे. जेठुँ नाम राणा व्यास ते कहीय अन्याय न करे. त्यारे छेकेमे कछुँ, डेम जखिअे ? राणा व्यासे अन्याय नथी क्योँ ? त्यारे जगन्नाथ जेशी कछे, जेम डहो तेमज ड३. त्यारे छेकेमे गाडीना पैयानी लोढानी वाट भंगावी. तेने अग्निमां भूडीने गरम डरी. न्यारे लाल थरुँ त्यारे छेकेमे कछुँ, आने छेवीने नाणो. न अणो तो राणा व्यास साया. त्यारे जगन्नाथ जेशीअे ते वाटनी पासे आवी उला रहीने कछुँ, के राणा व्यासे अन्याय क्योँ छेय तो मारे छुथ अणजे. अेम कहीने जगन्नाथ जेशीअे छुथमां छेवी ते वाटने गणांमां पहुरी लीधी. घडी अेअे उला रहा. त्यारे छेकेमे अने भीज अथा लोडोअे कछुँ, जगन्नाथ जेशी कडो, कडो, तमे साया छे. त्यारे जगन्नाथ जेशी कछे, आ डेना गणांमां नाभु ? त्यारे छेकेमे अहु काला-वासा डरी विनती डरी. पछी लूमि उपर नाभी. ते लूमि अणी छी. त्यारे अथा आश्चर्य पाभीने कछे, के जगन्नाथ जेशी तमे धन्य छे. तमे साया छे. पछी छेकेमे

कही, मैं तिहारे ऊपर वहीत प्रसन्न हों तातें तुम कछ् मांगो । तव जगन्नाथ जोसी ने उह हाकिम सों कही, तिहारे पास जानैं राना व्यास की चुगली करी है तासों कछ् मति कहियो । यह मैं मांगि लेत हों । तव जगन्नाथ जोसी के ये वचन सुनिकें हाकिम और सब प्रसन्न भये । कहे तुम धन्य हो । चुगल कों हू वचाये । नाही तो मैं वाकों मरवाई डारतो । ऐसे मनुष्य घरती पर कोई एक हैं । तव जगन्नाथ जोसी अपने घर आये । पाछें राना व्यास घर आये । जगन्नाथ जोसी सों कहें तुम मेरे लिये वहीत दुःख पाये । तव जगन्नाथ जोसी कहें, जो-वैष्णव कबहू हीन कार्य न करें ।

भावप्रकाश—तव राना व्यास के मनमें इंद्रिजीत को अहंकार हतो सो छूटि गयो ।

पाछें राना व्यास भगवद् सेवा में मन लगाये । तव श्रीठा-कुरजी सानुभावता जनावन लागें ।

भावप्रकाश—यह वार्ता में यह सिद्धांत भयो, जो-अहंकार, गर्व होई तहां ताई श्रीठाकुरजी अनुभव न जतावें । और अपने भक्तन को अहंकार आपुही कृपा करिके दंड देइ छुडावत हैं । और वैष्णव सों कबहू हीन कार्य होई नाही ।

जगन्नाथ जेशीने कछुं, हुं तमारा उपर अहु प्रसन्न छुं तेथी तमे कंठ मांगो. त्यारे जगन्नाथ जेशीये ते कहेमने कछुं, तमारी पास जेणे राणा व्यासनी याही करी होय तेने कंठ कहेसा नहीं. ये हुं मांगी लउ छुं. त्यारे जगन्नाथ जेशीनां ये पयन सांलणीने कहेम अने अंधा प्रसन्न थया. कहे, तमे धन्य छो. चुगलपारने पणु अयाव्यो, नहीं तो हुं अने भरावी नागतो. आवा मनुष्य घरती उपर कोथ अक छे. त्यारे जगन्नाथ जेशी पोताना धरे आव्या. पछी राणा व्यास घर आव्या. जगन्नाथ जेशीने कहे, तमे भारा साठे अहु दुःख पाभ्या. त्यारे जगन्नाथ जेशी कहे, हे वैष्णव क्यारेय हीन कार्य न करे.

भावप्रकाश—त्यारे राणा व्यासना मनमां इंद्रिजितना अहंकार हतो ते छुटी गयो.

पछी राणा व्यासे भगवद्सेवामां मन लगाउयुं. त्यारे श्रीठाकुरजी सानुभावता ज्ञापवा लाग्या.

भावप्रकाश—आ वार्तामां ये सिद्धांत थयो, हे अहंकार गर्व होय त्यां सुधी श्रीठाकुरजी अनुभव न जणुवे. वणी पोताना लक्तोना अहंकार पोते न कृपा करीने दंड दध छोडावे छे. अने वैष्णवथी क्यारेय हीन कार्य अने नहीं.

और कदाचित् भगवदीय सों खोटो काम कछु भयो होई तो मनमें दोष बुद्धि न करनो । (क्यों जो) भगवदीय ऐसो करे नहीं । वामें भगवत्कृति जाननी । और जीवमात्र ऊपर दया राखनी । चोर होई चुगल होई ताहू कों अपने बसतें बचावनो । रक्षा करनी । यह वैष्णव को धर्म है । इत्यादि सिद्धांत प्रकट किये । और राना व्यास पहलें जब घरतें निकसे तब बद्दीनाथ, जगन्नाथ होई पाछें द्वारका में आये । तहां 'माधव सरस्वती' एक पंडित ब्राह्मण हतो ताके सेवक भये, नाम पाये हे । पाछें कासी में श्रीआचार्यजी के सेवक भये । सो तो ऊपर कहि आये हैं ।

वार्ता—प्रसंग २—सो राना व्यास गोधरा तें सिद्धपुर जाइ रहें । सो एक दिन राना व्यास और जगन्नाथ जोसी सरस्वती में न्हाइ कें बैठे संध्या वंदन करत हते । ता समें एक रजपूतानी को घनी मरि गयो । सो वह सती होन कों आई । तब जगन्नाथ जोसी ने राना व्यास सों पूछ्यो, जो—यह सती होत है तिन को कहा प्रकार है ? तब राना व्यास नें मूंड हलाय कें जगन्नाथ जोसी सों कह्यो, जो—प्रेत के संग वृथा यह मनुष्य देह जरावति है । ऐसी सुंदर देह भगवद् सेवा में लगें तो उद्धार होई जाई । प्रेत के संग जरति है । सो वृथा जन्म खोवति है । सो प्रकार मूंड हलाय कें राना व्यास कहे । ता समे उह

અને કદાચિત્ ભગવદીયથી ખોટું કામ કઈ થાય તો મનમાં દોષબુદ્ધિ ન કરવી. કેમ કે જ ભગવદીય એવું કરે નહીં. તેમાં ભગવત્કૃતિ જાણવી. અને જીવ માત્ર ઉપર દયા રાખવી. ચોર હોય ચુગલ હોય તેને પણ પોતાનું યાત્રે ત્યાં સુધી બચાવવો, રક્ષા કરવી. એ વૈષ્ણવનો ધર્મ છે. ઇત્યાદિક સિદ્ધાંત પ્રકટ કર્યો. અને રાણા વ્યાસ પહેલાં વ્યારે ધરથી નિકળ્યા ત્યારે બદ્દીનાથ, જગન્નાથ થઈ પછી દ્વારકામાં આવીયા. ત્યાં માધવ સરસ્વતી એક પંડિત બ્રાહ્મણ હુતો. તેના સેવક થયા નામ પામ્યા હતા. પછી કાશીમાં શ્રીઆચાર્યજીના સેવક થયા તે તો ઉપર કહી આવીયા છીએ.

વાર્તા—પ્રસંગ ૨—પછી રાણા વ્યાસ ગોધરાથી સિદ્ધપુર જઈ રહ્યા. તે એક દિવસ રાણા વ્યાસ અને જગન્નાથ જોશી સરસ્વતીમાં ન્હાઇને ખેડા. સંધ્યાવંદન કરતા હતા. તે સમયે એક રજપૂતાણીના ધણી મરી ગયા. તે સતી થવા આવી. ત્યારે જગન્નાથ જોશીએ રાણા વ્યાસને પૂછ્યું, કે આ સતી થાય છે તેના શો પ્રકાર છે ? ત્યારે રાણા વ્યાસે માથું હલાવીને જગન્નાથ જોશીને કહ્યું, કે પ્રેતની સાથે વૃથા આ મનુષ્ય દેહ ખાળે છે. આવી સુંદર દેહ ભગવદ્સેવામાં લાગે તો ઉદ્ધાર થઈ જાય. પ્રેતના સંગે ખાળે છે. તે વૃથા જન્મ ખાળે છે. તે પ્રકાર માથું હલાવીને રાણા વ્યાસે કહ્યો. તે

रजपूतानी की दृष्टि राना व्यास पर हती । सो मूंड हलावत देखत ही उह रजपूतानी को सत उतरि गयो । तव रजपूतानी नें साथ के लोगन सों कह्यो, जो-मैं सती न होउंगी । मेरो सत उतरि गयो । तव लोगन नें उह रजपूतानी सों कही, जो-तोकों घर में तो जान न देंगे । तोकों इहाँई जरावेंगे । तव रजपूतानी ने कही, जो-मैं घर में नहिं आऊंगी । मोकों इहां नदी के तीर झोंपरी करि दीजो, इहां रहोंगी । और मोकों जोरावरि जरावोगे तो तुम सबन को हत्या लगेगी । यह कहि सबन को सोंह दिवाई । जो-मोकों मति जरावो । तव उह मृतक को जराय सरस्वती नदी पर एक झोंपरी बनाय के सगे संबंधि अपने अपने घर गये । पाछें दूसरे दिन राना व्यास और जगन्नाथ जोसी सरस्वती न्हान को गये । तव उह रजपूतानी नें राना व्यास सों पूछी, जो-काल्हि तुम मेरी ओर देखिके मूंड कैसें हिलायो ? तव राना व्यास उह रजपूतानी सों कहे, हम तो आपुस में ऐसे ही अनेक बात करत हसत हते । या बात में तू कहा लेहगी ? तव उह रजपूतानी नें कही, अब मोसों दुराव क्यों करत हो ? तुमने मूंड हलाइ के बात कही सो मेरो सत उतरि गयो मैं जरी नाहीं । तातें मोसों यथार्थ बात होई, अब, जो-मोकों कर्तव्य होई, सो कहो ।

सभ्ये ते रजपूताणीनी दृष्टि राणा व्यास उपर हती. ते माधुं हुसावतां जेधने ते रजपूताणीतुं सत उतरी गयुं. त्यारे रजपूताणीये साथेना लोकेने धुं, डे हुं सती नहीं थई. भाइं सत उतरी गयुं. त्यारे लोकेये ते रजपूताणीने धुं, डे तने घरमां जवा नहीं धधये. तने अहीं ज आणीशुं. त्यारे रजपूताणीये धुं. डे हुं घरमां नहीं आयुं. भने अहीं नदीना दिनारे ओंपडी करी देखे, हुं अहीं रहीश. अने भने जेशवरीधी आणेशे तो तमने अधाने हुत्या लागेशे. अम धही अधाने मोगां द हीधा, डे भने न आणे. त्यारे ते मृतधने आणी सरस्वती नदी उपर अेध ओंपडी अनावीने सगां संधंधी पातपोताना धरे गयां. पछी भीज दिवसे राणा व्यास अने जगन्नाथ जेशी सरस्वती न्हावने गया. त्यारे ते रजपूताणीये राणा व्यासने पूछयुं, डे कावे तमे भारी तरइ जेधने माधुं डेम हुसाव्युं ? त्यारे राणा व्यास ते रजपूताणीने धुं, अमे तो आपसमां अेवी ज अनेध वातो करता हुसता हुता. अे वातमां तूं शुं लधश ? त्यारे ते रजपूताणीये धुं, हुवे माराधी हुपायो छे डेम ? तमे माधुं हुसावीने वात धही, तेधी भाइं सत उतरी गयुं. हुं अणीं नहीं. तेधी भने यथार्थ वात होय. हुवे जे भने कर्तव्य होय ते धुं. तेज हुं डे. तमे अग्निमां अगतां

सोई मैं करूं। तुमने अग्नि में जरत बचाई तो कृपा करि बात हूं कहि चाहिये। या प्रकार रजपूतानी ने बहोत आग्रह कीनो। तब राना व्यास नें कही, हम आपुस में यह कहत हते, जो-मनुष्य देह परम उत्तम पाइके वृथा प्रेत के संग जरत है। यह देह सों श्रीठाकुरजी को भजन स्मरण न कियो ताको धिक्कार है। उह महादुष्ट है।

भावप्रकाश—जो श्रीठाकुरजी के अर्थ यह देह आवें तो कृतार्थ होई। वा बराबरि कोई नहीं। यह बात कहत हते।

तब उह रजपूतानी नें कही अब मैं तिहारी सरनि हों। जा प्रकार मोसों कहो ताहि प्रकार मैं भजन सुमिरन करों। मेरो परलोक सुधरे। सो मोपर कृपा करो। तब राना व्यास ने कही, अबहि तो तोको सूतक हैं। सूतक उतरे पाछें आइयो। तब तोसों हम कहेंगे। तब वह रजपूतानी दंडौत करि अपनी झोंपरी में गई। सो आर्ति बहोत बढी। अरु एक एक घरी जुग सम बीते। जो-कब सूतक मिटें, कब राना व्यास मोको बतावें। तेसेई मैं श्रीठाकुरजी को सुमिरन, भक्ति करों।

भावप्रकाश—या प्रकार की आरति दैवीजीव है तातें भई। लीला में राना व्यास इंदुलेखा की सखी मधुरा और मधुरा की सखी “ नागवेलिका ” को

अथापी तो कृपा करिने वात पणु कहेपी जेधये. आ प्रकारे रजपूताणीये अहु आग्रह कर्ये. त्यारे राणा व्यासे कहुं, अमे आपसमां ये कहेता हुता, के मनुष्य देह परम उत्तम पासीने वृथा प्रेतनी साथे अणे छे. आ देहथी श्रीठाकुरजुं लजन-स्मरणु न करे तेने धिक्कार छे, अे महा दुष्ट छे.

भावप्रकाश—जे आ देह श्रीठाकुरजुना अर्थ आवे तो कृतार्थ थाय. अेना अरोपर ठाछ नहीं. अे वात कहेता हुता.

ये त्यारे अे रजपूताणीये कहुं, हुवे हुं तभारे शरणु छुं. जे प्रकार भने कहेतेन प्रकारे हुं लजन-स्मरणु करूं. भारे परलोक सुधरे अेवी भारे उपर कृपा करे. त्यारे राणा व्यासे कहुं, हुमणुं तो तने सूतक छे. सूतक उतर्या पछी आवजे. त्यारे तने अमे कहीशुं. त्यारे ते रजपूताणी दंडवत करी पोतानी जोंपडीमां गध. पछी आर्ति अहु वधी. ते अेक घडी जुग समान वीते, के क्यारे सूतक भरे ? क्यारे राणा व्यास भने अतावे तेन प्रकारे हुं श्रीठाकुरजुं स्मरणु-भक्ति करूं.

भावप्रकाश—आ प्रकारनी आर्ति दैवीजव छे तेथी थध. लीलामां राणा व्यास इंदुलेखानी सखी मधुरा अने मधुरानी सखी नागवेलिकातुं प्राकटय राणा

प्रागद्य राना व्यास को है । और नागवेलिका की सखी "रसएनी" हैं आज्ञाकारी । सो रसएनी को प्रागद्य यह रजपूतानी है । ताते लीला में हू पूर्व गना व्यास की आज्ञाकारी सखी हैं । ताते राना व्यास के उपर यह रजपूतानी को दृढ़ विश्वास भयो, जो-इन द्वारा मेरो उद्धार होयगो ।

पाछें जहां लों सूतक रच्यो तहां लों राना व्यास सरस्वती ऊपर न्हाइवे कों आवें । तब दरसन-नित्य करि, विनती दैन्यता करि जाय । जो-मेरो अंगीकार कब होइगो । ऐसे करत सूतक उतरयो । तब न्हाइ के सुद्ध होयकें नदी पर वैठि रही । तब रानाव्यास सरस्वती ऊपर न्हाइवे कों आवे । तब वह रजपूतानी रानाव्यास के सन्मुख आई । दंडोन करि विनती करी, अब मोपर कृपा करो । तब राना व्यास ने कही काल्हि सवारे आइयो । तब तोसों कहेंगे । तब उह दंडोन करि झोंपरी में गई । सो मारे दुःख के विरह तें कछु खानपान नाहीं कियो । पाछें प्रातःकाल भयो तब न्हाइ के नदी पर वैठि रहि । इनने राना व्यास आइ सरस्वती में स्नान करिकें वा रजपूतानी सों कही, फेरि न्हाइ लें । तब रानाव्यास ने रेससी वस्त्र दिये । जो-याकों पहरि ले । तब उह रजपूतानी ने पहरयो । तब रानाव्यास बैठाइ कें श्रीआ-

व्यासनु छे. अने नागवेलिकानी सखी 'रसएनी' छे, आज्ञाकारी. ते रसएनीतुं प्राकट्य आ रजपूताणी छे. तेथी लीलांमां पणु पूर्वे' राणा व्यासनी आज्ञाकारी सखी छे. तेथी राणा व्यासना उपर आ रजपूताणीना दृढ विश्वास थयो, हे एमनी द्वारा भारे उद्धार थरो.

पछी ज्यां सुधी सूतक रचुं त्यां सुधी राणा व्यास सरस्वती उपर न्हावाने आवे. त्यारे दर्शन नित्य करी विनंती दैन्यता करी जाय. हे भारे अंगीकार थ्यारे थरो? एम भरतां सूतक उतर्युं. त्यारे न्हाइने सुद्ध थने नदी उपर भेसी रली. त्यारे राणा व्यास सरस्वती उपर न्हावाने आव्या. त्यारे ते रजपूताणी राणा व्यासना सन्मुख आवी. दंडवत् करी विनंती करी, हवे भारे उपर कृपा करे. त्यारे राणा व्यासे इछुं. कास सवारे आवजे. त्यारे तने इछीयुं; त्यारे ते दंडवत् करी झोंपरीमां गई. ते दुःखना भारे विरहथी इछुं खानपान करी गरी नली. पछी प्रातःकाल थयो. त्यारे न्हाइने नदी उपर भेसी रली. अग्रतामां राणा व्यास आवी सरस्वतीमां न्हाइने ते रजपूताणीने इछे, इरी न्हाइ ले. त्यारे ये न्हाइ. त्यारे राणा व्यासे रेससी वस्त्र आप्युं. हे आने पहुरी ले. त्यारे ते रजपूताणीये पहुर्युं. त्यारे राणा व्यासे

चार्यजी को ध्यान स्मरण करिकें नाम सुनाये । सो नाम सुनत ही रजपूतानी कों भगवद्भाव उत्पन्न भयो । तब स्त्री नें रानाव्यास सों विनती करी, जो—अब मोकों टहल बताओ सो करूं । तब राना व्यास अपनी धोती बताये, जो—आछें धोई कें घरमें आइयो । और अष्टाक्षर मंत्र यह जप अष्टप्रहर सुखसों करयो करियो । पाछें औरहू सेवा देइंगे सो धोवती आछी तरह छांटी लाई । राना व्यास श्रीठाकुरजी की सेवा करि राजभोगार्ति के दरसन उह रजपूतानी कों कराये । पाछें महाप्रसाद की पातरि धरी । या प्रकार कल्लुक दिन धोती उपरेना परदनी आदि वस्त्र धोवन की सेवा दिये । सो प्रीति पूर्वक सगरे वस्त्र भाग्य मानिकें धोवें । महाप्रसाद राना व्यास के घर लेई ।

भावप्रकाश—सो वस्त्र धोवन को कारन यह, जो—ज्यों ज्यों भगवदीय के वस्त्र धोवे त्यों त्यों हृदय सुद्ध होइ । ज्यों ज्यों वस्त्र को मेल छूटयो त्यों त्यों हृदय में ते काम, क्रोध, मद, मत्सर, लोभ आदि मोहमेल सब दूर भये । तव सुद्ध भई ।

पाछें राना व्यास के घर में सगरो काम काज सीधो सामग्री समारनो आदि या प्रकार ऊपर की सब सेवा करन लागी । ऐसे

पेसाडीने श्रीआचार्यल्लुं ध्यान-स्मरण करीने नाम संलणाव्युं. ते नाम सांलणातां न रजपूताणीने भगवद्भाव उत्पन्न थयो. त्यारे स्त्रीअे राणा व्यासने विनंती करी, के लुवे भने टहल अतावे ते कइं. त्यारे राणा व्यासे पौतानी धोती अतावी के ठीक धोअने घरमां आवअे अने अष्टाक्षर मंत्र अे जप आठा प्रहर सुअथी कर्था करणे. पछी अील्ल पञ्च सेवा दधुं. ते धोती सारी रीते धोअ लावी. राणा व्यासे श्रीठाकुरणी सेवा करी राजभोग आर्तिनां दर्शन ते रजपूताणीने कराव्यां. पछी महाप्रसादनी पातर धरी. अे प्रकारे केटलाक दिवस धोती, उपरेना, परदनी आदि वस्त्र धोवानी सेवा आपी. पछी प्रीतिपूर्वक अथां वस्त्र लाग्य मानीने धुवे. महाप्रसाद राणा व्यासना घरे ले.

भावप्रकाश—ते वस्त्र धोवानुं कारण अे के, जेभ जेभ भगवदीयनां वस्त्र धुवे तेम तेम हृदय शुद्ध थाय. जेभ जेभ वस्त्रनो मेल छुटयो तेम तेम हृदयमांथी काम, क्रोध, मद, मत्सर, लोभ आदिक मोह-मेल अथा दूर थया. त्यारे शुद्ध थध.

पछी राणा व्यासना घरमां अधुं कामकाज सीधुं सामग्री सिद्ध करवुं आदि आ प्रकारे उपरेनी अधी सेवा करवा लागी. अेभ करतां केटलाक दिवस पछी श्रीआ-

करत कितनेक दिन पाछें श्रीआचार्यजी पधारे । तब राना व्यास ने श्रीआचार्यजी कों अपुने घर पधराये । और विनती करि रजपूतानी की सब बात कही । और कहे, आपु अब कृपा करिके सेवक करिये । तब श्रीआचार्यजी दैवी जीव जानिकें उह रजपूतानी कों नाम निवेदन कराये । पाछें कछुक दिन सिद्धपुर में रहिकें आपु द्वारिका पधारें । तब उह रजपूतानी रसोइ की सब परचारगी करें । सो श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागें । या प्रकार राना व्यास के संग तें उह रजपूतानी कों भगवत्प्राप्ति भई ।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो-भगवदीय को संग परम उत्तम है । भगवद् भजन स्मरण करत हू बहुत काल में कृपा होइ । परंतु भगवदीय सर्व सामर्थ्य युक्त हैं । इनके छिनक संग तें भगवान कृपा करें । यह जताये ।

सो राना व्यास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे । जिनके संग तें रजपूतानी भगवदीय भई । तातें की वार्ता कहां ताई कहिये । ॥३२॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, रामदास साँचोरा, राजनगर के वासी, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में, श्रीस्वामिनीजी की सखी इन्दुलेखा, इन्दु-

यार्थे पधार्या, त्यारे राणा व्यासे श्रीआचार्येने पोताना घरे पधराव्या अने विनती करी रजपूताणीनी अधी बात कही. अने कहे आप हुवे कृपा करीने सेवक करे. त्यारे श्रीआचार्येने दैवी एव जणीने ते रजपूताणीने नाम-निवेदन करव्युं. पछी थोडाक दिनस सिद्धपुर रहीने पोते द्वारिका पधार्या. त्यारे ते रजपूताणी रसोइनी अधी परचारगी करे. पछी श्रीठाकुरे सानुभावता जनाववा लाव्या. या प्रकारे राणा व्यासना संगथी ते रजपूताणीने भगवत्प्राप्ति थध.

भावप्रकाश—अेमां अे जणव्युं, ठे भगवदीयने संग परम उत्तम छे. भगवद्भजन-स्मरणे करतां पणु पहुकासमां कृपा थाय, परंतु भगवदीय सर्व सामर्थ्य युक्त छे. अेना क्षणैक संगथी भगवान कृपा करे, अे जणव्युं.

ते राणा व्यास अेवा कृपापात्र भगवदीय हुता, जेभना संगथी रजपूताणी भगवदीय थध. तेथी अेभनी वार्ता क्यां सुधी कहीअे ? वार्ता ॥३२॥

* * *

हुवे श्रीआचार्येने महाप्रभुएता सेवक, रामदास साँचोरा, राजनगरना वासी, तेभनी वार्ताना भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे लीलां श्रीस्वामिनीएनी सणी इन्दुलेखा, इन्दुले-

लेखा की सखी सुभगा, सो 'सुभगा' रामदास को प्रागट्य । और सुभगा की सखी 'सुभद्रा', सो रामदास की स्त्री को प्रागट्य । सो दोऊ राजनगर में साँचोरा ब्राह्मण के घर प्रगटे । सो बरस नौ के रामदास भये, और बरस आठ की यह स्त्री भई । सो मा बाप ने दोऊन को व्याह किये । परन्तु रामदास कों वैराग्य दसा बालपने तें हती । काहू सों मोह न करे, काहू को कछो न करे । सो माता पिता ने पढ़ाए बहोत, सो कछ पढ़े नहीं । सो एक समें रामदास राजनगर के तलाव पर बैठे हते, तहां तेली दस-पाँच पोहे लेके आये । सो बैलन कों पानी पिवायो, तामें एक बैल पानी पीके तलाव के उपर गिरि परयो, मरि गयो । सो वह तेली रोवन लाग्यो । तब रामदास उह तेली सों पूछे, तू क्यों रोवत है ? तब वह तेली ने कही, भेरो बैल पानी पीके अब ही मरि गयो । तब रामदास तो बरस दस के बालक, सो जाने नहीं । सो उह तेली सों कहें, याको कहा मरयो ? यह परयो है, याकों उठावो । तब तेली ने कही, अब यह कहा उठे ? याको प्राण निकरि गयो । तब रामदास ने कही, याही प्रकार सब मरि जाँइगे ? तब तेली ने कही, यही दसा हैं, दोय दिन आगे पाछें । यह सुनत ही रामदास वहां तें भाजे, सो कछुक दिन में द्वारिका आये, श्रीरनछोड़जी के दरसन किये । तहाँ श्रीआचार्यजी सुबोधिनी की कथा कहत हते ।

पानी सखी सुभगा. ते 'सुभगा' रामदासनु प्राकटय अने सुभगानी सखी 'सुभद्रा' ते रामदासनी स्त्रीनु प्राकटय. अने अन्ने राजनगरमां साँचोरा ब्राह्मणने त्यां प्रकटयां. ते वर्ष नवना रामदास थया अने वर्ष आठनी आ स्त्री थय. पछी मा-बापे अन्नेनुं लग्न क्युं. परतु रामदासने वैराग्य दशा बालपण्ठाथी हुती. डाधनाथी मोह न करे. डाधनुं क्युं न करे. माता-पिताअे लाण्ठाव्या धण्ठा परंतु कध बाण्ठा नही. पछी अेक समे रामदास राजनगरना तलाव उपर भेठा हुता. त्यां तेकी दश-पांच ठेर लधने आंव्या. ते अण्ठाने पाण्ठी पीवडाव्यु. तेमां अेक अण्ठ पाण्ठी पीने तलावना उपर ढणी पडयो, मरी गयो. तेथी ते तेकी रावा लाग्ये. त्यारे रामदास ते तेकीने पूछे, तू केम इवे छे ? त्यारे ते तेकीअे क्युं, मारे अण्ठ पाण्ठी पीने हुमण्ठां न मरी गयो. त्यारे रामदास तो दश वर्षना बालक ते अण्ठे नहीं. ते तेकीने कहे, आनुं शु मर्युं ? आ पडयो छे तेने उठाडो. त्यारे तेकीअे क्युं, हुवे अे शु उठे ? अेनो प्राण निकणी गयो. त्यारे रामदासे क्युं, आन प्रकारे अंधा मरी अशे ? त्यारे तेकीअे क्युं, आन दशा छे. ये दिवस आगण पाछण. अे सांभणतां न रामदास त्यांथी लाग्या. ते उटलाक दिवसमां द्वारका आंव्या. श्रीरण्-

सो रामदास तहां आये, कथा सुनिकें बहोत प्रसन्न भये । सो मन में यह आई, श्रीआचार्यजी के संग रहिके कलुक दिन इनकी कथा सुनियें । इनके सेवक होऊँ तो आलौ । पाछे आप कथा कहि चुके तब रामदास दंडवत् करि विनती करी, महाराज ! मोकों सरन लेउ । पास राखो तो कलुक दिन में आपुके श्रीमुख की कथा सुनों । तब श्रीआचार्यजी कहैं, तू कौन है ? कहां तें आयो ? तब रामदास ने सगरी बात कही । मैं राजनगर में रहत हों, साँचोरा को बेटा हूँ । तहां तलाव पर एक बैल तेली को मरयो, सो देखिके वैराग्य आयो है । सो उठि भाज्यो, इहां आपको दरसन भयो । तब श्रीआचार्यजी विचारे, जो-जीव तो दैवी है, परन्तु अवस्था छोटी है । जो-याकों पास न राखेंगे, तो संसार में दुःसंग हैं, कहुं खराब होई जायगो । तातें कलुक दिन संग राखि, याकों दृढ़ वैराग्य होइ तब छोड़नो । यह विचारिकें रामदास सों कहें, जा, न्हाइ आउ । सो रामदास न्हाइ आये । तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाए, निवेदन कराए, महाप्रसाद लिवाए, पास राख्यो । सो कलुक दिन रहिके श्रीआचार्यजी द्वारिका तें पृथ्वी परिक्रमा कों पधारे । सो रामदास संग चले । सगरी रसोई की परचारगी करें । और टहेल छोटी मोटी सब करें ।

छोडलनां दर्शन कर्था. त्यां श्रीआचार्यजी सुषोधिनीनी कथा कहेता हुता. ते रामदास त्यां आव्या. कथा सांबणीने बहु प्रसन्न थया. मनमां ये आव्यु श्रीआचार्यजीना संग रहीने डेटलाक दिवस येमनी कथा सांबणीये. येमना सेवक थयये तो साइं. पछी पोते कथा कही यूकथा त्यारे रामदासे दंडवत् करी विनती करी, महाराज ! मने शरणे वो. पासे राषे तो थोडाक दिवसमां आपना श्रीमुखनी कथा सांबणुं. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, तू टाणु छे ? कथांथी आव्यो ? त्यारे रामदासे अधी बात कही. हुं राजनगरमां रहु छुं. सांचोरानो गेटा छुं. त्यां तलाव उपर येक षण्ण तेलीनो भयो ते जेधने वैराग्य आव्यो छे. ते ठी लाग्यो. अहीं आपनां दर्शन थयां. त्यारे श्रीआचार्यजी विचारे, के छव तो दैवी छे परन्तु अवस्था नानी छे. जे आने पास नहीं राषीये तो संसारमां दुःसंग छे. कंध पराण थय जशे. तेथी थोडा दिवस साथे राषी येने दृढ़ वैराग्य थाय त्यारे छोडवो. ये विचारीने रामदासने कछुं, ज, न्हाय आव. त्यारे रामदास न्हाय आव्या. त्यारे श्रीआचार्यजीये नाम सांबणावी निवेदन कराव्युं. महाप्रसाद लेवडावी पासे राष्यो. पछी डेटलाक दिवस रहीने श्रीआचार्यजी द्वारिकाथी पृथ्वी परिक्रमाये पधार्या. ते रामदास संग याव्या. अधी रसोईनी परचारगी करे अने नानी मोठी

जो-श्रीआचार्यजी रामदास की परीक्षा लेन अर्थ कबहूँ थोरो धरें, कबहूँ अकेली रोटी धरें । परन्तु ए भागि मानि महाप्रसाद लेई । मनमें यह कबहूँ नाहीं लाये, जो-आज हमकों यह नाही धरें । तब श्रीआचार्यजी बहोत प्रसन्न भये, सो सगरी सामग्री धरते । और मारग में जहां कांटो आवतो तहां रामदास मारग में बेगे बेगे सँभारत जाइ । सो एक दिन रामदास के पाँव में कांटो बड़ो लग्यो । सो रामदास मनमें विचारयो, मैं अपने पाँव में कांटो काढ़न के लिये बैठि रहूँगो तो श्रीआचार्यजी मेरे लिये ठाड़े होइ रहें । सो आछो नाहीं, मेरो धर्म जाई । और यह विचारे, जो-और आगे आगे पधारेंगे तो (हू) मारग में कांटा बहुत हैं, कहूँ श्रीआचार्यजी के चरणारविंद में लागें तोऊ मेरो धर्म जाई । यह विचारिके अपने पग को कांटो न काढ़े । मारग सँभारत चले । तब थोरी सी दूरि जाय श्रीआचार्यजी ठाड़े रहे, कहैं, रामदास तू अपने पग को कांटो काढ़ि ले । और तेरे उपर मैं बहुत प्रसन्न हों, जो-चाहे सो मांगि । तब रामदास कहैं, महाराज ! आपु की सरनि मोकों मिली, अब यासों अधिक कहा है ? तातें यह मोकों कृपा करि कें दीजिये, जो-आपको आश्रय सदा दृढ़ रहै, औरको न होई । तब श्रीआचार्यजी बहुत प्रसन्न होइकें कहैं,

टहेल ँधी करे. त्तारे श्रीआचार्यजी रामदासनी परीक्षा लेवाने भाटे ड़ाछ वार थोडु धरे, ड़ाछ वार अेकली रोटी धरे. परंतु अे लाग्य मानी महाप्रसाद ले. मनमां अेम इयारेय न लाव्या ड़े आन अमने आ नथी धयुं. त्तारे श्रीआचार्यजी अहु प्रसन्न थया. ते ँधी सामग्री धरता अने मार्गमां ज्यां कांटा आवतो त्यां रामदास मार्गमां जल्दी जल्दी ठीक करता अय. ते अेक दिवस रामदासना पगमां भोटा कांटा वाग्यो. त्तारे रामदास मनमां विचारे, ड़े हु मारा पगमांथी कांटा काढवाने भाटे बेसी रडीश तो श्रीआचार्यजी मारा भाटे उभा थध रहेसे. तो ठीक नडी. मारे धर्म अय. अने अेम विचार्युं, ड़े वणी आगण आगण पधारसे तो (पणु) मार्गमां कांटा धणु छे. कंध श्रीआचार्यजीना अरणारविंदमां लागे तोपणु मारे धर्म अय. अेम विचारीने पोताना पगने कांटा न काढयो. मार्ग ठीक करता आल्या. त्तारे थोडीक दूर जर्ध श्रीआचार्यजी उभा रडीने कडे, रामदास ! तू तारा पगने कांटा काढी ले. अने तारा उपर हुं अहु प्रसन्न छुं, जे जेधअे ते मांग. त्तारे रामदास कडे, महाराज ! आपनु शरणु मने मज्यु. हुवे अेनाथी अधिक थुं छे ? तेथी मने अे कृपा करीने आपो ड़े आपने आश्रय सदा दृढ रहे. पीअनेा न थाय. त्तारे श्रीआचार्यजी अहु ज प्रसन्न थधने कडे, अेम ज थसे. तें पधुं

ऐसे ही होयगो । तू सगरो मांगे । परन्तु मैं प्रसन्न हों, तू कांटा काढ़ि ले, मैं ठाड़ो हूँ । तोकों अपराध कवहू न लागेगो । तव रामदास ने कांटा काढ़यो । या प्रकार वरस दस श्रीआचार्यजी के संग सेवा किये । परन्तु प्रीति सदा एक रस रही । ऐसे भगवदीय कृपापात्र हे । पाछें दक्षिण में श्रीआचार्यजी दूसरी पृथ्वी परिक्रमा कों पधारे । तहां एक ब्राह्मण ने एक श्रीठाकुरजी का स्वरूप भेट कियो, और कह्यो, मोंसों पूजा नाहीं होत । तव श्रीआचार्यजी उह स्वरूप पास राखे । कलुक दिन सेवा किये । पाछे दक्षिण में एक गाम के बाहिर आइ उतरे । तव कृष्णदास सों कहे, जो-जाउ, गाम में तें सीधो सामग्री ले आवो । और एक सुथार सों त्रिना खुंटी की पादुका बनवाय ले आवो । सो कृष्णदास सीधो सामग्री ले आये । तव श्रीआचार्यजी रसोई करि भोग धरि आपु अरोगि के रामदास सों कहें, महाप्रसाद ले । तव रामदास महाप्रसाद ले श्रीआचार्यजी के पास आये ।

वार्ता-प्रसंग १—सो श्रीआचार्यजी नें, उह ब्राह्मण ने ठाकुर भेट कियो हो, सो स्वरूप आप पंचामृत स्नान कराई रामदास के माथे पधराये । श्रीठाकुरजी को नाम 'नहुवा गोपालजी' धरयो । और उह पादुका के उपर चरणारविन्द धरि रामदास के माथे पधराये ।

भायुं. परंतु हुं प्रसन्न हूं. तू कांटा काढ़ि ले. हुं ठाड़ो छु. तने अपराध क्षमारेय नहीं लागे. त्पारे रामदासे कांटा काढ्यो. ओ प्रकारे वर्ष दश श्रीआचार्यजना संगे रही सेवा करी. परंतु प्रीति सदा ओकरस रही. ओवा भगवदीय कृपापात्र हुता. पछी दक्षिणमां श्रीआचार्यज भौज पृथ्वी परिक्रमा भाटे पधार्या. त्यां ओक ब्राह्मणे ओक श्रीठाकुरजनुं स्वरूप भेट कथुं अने कथु, भारथी पूजा थती नथी. त्पारे श्रीआचार्यज्जे ते स्वरूप पासे राभ्युं. डटलाक दिवस सेवा करी. पछी दक्षिणमां ओक गामनी पहार आवीने उतर्या. त्पारे कृष्णदासने कहे, ठे ल, गाममांथी सीधुं सामग्री लध आव. अने ओक सुथार पासेथी त्रिना खुंटीनी पादुका बनान-रावीने लध आवो. त्पारे कृष्णदास सीधुं सामग्री लध आव्या त्पारे श्रीआचार्यज्जे रसोइ करी भोग धरी पोते आरोगीने रामदासने कहे, महाप्रसाद ले त्पारे रामदास महाप्रसाद लध श्रीआचार्यजनी पासे आव्या.

वार्ता-प्रसंग १—त्पारे श्रीआचार्यज्जे ते ब्राह्मणे ठाकुर भेट कथी हुता ते स्वरूपने पोते पंचामृत स्नान करावी रामदासना माथे पधरायुं. श्रीठाकुरजनुं नाम 'नहुवागोपालज' राभ्युं. अने ते पादुका (चरणारविन्दी)ना उपर चरणारविन्द धरी रामदासना माथे पधरावी आवी.

भावप्रकाश—काहेंते, श्रीआचार्यजी तो पादुका पहिरेंते नहीं, नांगे पाँइन चलते । पृथ्वी पावन करिवे के लिये । पृथ्वी को मनोर्थ पूरण करणार्थ । पादुकाजी, सेवा करणार्थ कृपा करिकें देते । तातें श्रीआचार्यजी की पादुका में खूटी नहीं हैं ।

सो रामदास के माथे श्रीठाकुरजी पधराय के कहें, रामदास ! अब तुम भगवद् सेवा करो । जहां रहो तहां अब तुमको डर नहीं । भक्ति तुमको भई । तब रामदास के मनमें तो यही, जो-सदा श्री-आचार्यजी के पास रहों । परन्तु आज्ञा कैसे टारूं ? और जानें, जो-आप कहे सो करनो, याही में मेरो कल्याण है । यह विचारि कें दंड-वत करि चले । सो विरह बहोत, बार-बार फिरिकें दरसन करि स्वरूप हृदयमें धरि चले । और श्रीआचार्यजी को हृदय भरि आयो । जो-ऐसे वैष्णव सो वियोग होत है । परन्तु रामदास की स्त्री दैवी जीव, पतिव्रता है, सो घरमें दुखी है, कुटुम्ब में मा-बाप के इहां । ताके उद्धार के लिये, श्रीआचार्यजी रामदास को विदा किये । सो रामदासजी तीन दिन लों श्रीठाकुरजी की सेवा, श्रीपादुकाजी की सेवा करे । भोग धरे सो गाय को लिवाय दिये । श्रीआचार्यजी के वियोग को दुःख बहोत, सो प्रसाद लियो न गयो । सो चौथे दिन

भावप्रकाश—डेम न, श्रीआचार्यजी तो पादुका पहिरता न हुता. पुष्टा यरणी थी यासता, पृथ्वी पावन करवाने माटे, पृथ्वीने मनोर्थ पूरुं करवा माटे. पादुकाए सेवा करवा अथे कृपा करीने आपता. तेथी श्रीआचार्यजीनी पादुकांमां पुटी नथी.

ते रामदासना माथे श्रीठाकुरजी पधरावीने कहे, रामदास हुवे तमे भगवद्सेवा करे. न्यां रहो त्यां हुवे तमने डर नथी. लक्ति तमने थड. त्तारे रामदासना मनमां तो अे न के सदा श्रीआचार्यजीनी पासै रहुं. परंतु आज्ञा केम टाणुं ? अने नाले के आप कहे ते करवुं. अेमां न माडुं कल्याणुं छे अेम विचारिने दंडवत करीने यादया ते विरह अहु न. बार-बार पाछा करीने दर्शन करी स्वरूप हृदयमां धरी यादया अने श्रीआचार्यजीतुं हृदय लरी आणुं, के आवा वैष्णवथी वियोग थाय छे. परंतु रामदासनी स्त्री दैवी अ्व, पतिव्रता छे. ते घरमां दुःखी छे. कुटुम्बमां मायापने त्या. तेना उद्धारने माटे श्रीआचार्यजीअे रामदासने विदाय कर्था. अने रामदासअ त्रलु द्वियस मुधी श्रीठाकुरजीनी सेवा, श्रीपादुकाजीनी सेवा करे. भोग धरे ते गायने लेखावी देता. श्रीआचार्यजीना वियोगतुं दुःख अहु न. ते प्रसाद लअ न शक्या.

भोग धरि के पाछें सरावन लागे, तब श्रीआचार्यजी दरसन दैकें कहे, तू महाप्रसाद क्यों नहीं लेत ? मैं तो तेरें पास ही हों, तातें महाप्रसाद लीजो । तब रामदास गाय को भाग काढ़ि महाप्रसाद लियो । सो या प्रकार विरक्त दसासों कवहूं कहूं रहे, कवहूं कहूं रहे एक ठिकाने न रहे । सो पृथ्वी परिक्रमा करत करत अपने गाम में राजनगर में आइ निकसे । सो रामदास के माई-बाप तो मरि गए हते । इनकी स्त्री मा-बाप के घर हती । सो रामदास अपने घरमें आई रहै । सो रामदास के ससुर नें जानी, जो-रामदास आये । तब बेटी सों कह्यो, जो-तेरो धनी आयो है, सो फेरि कहूं जायगो, तो तू वाको न पावेगी । तातें तेरो मन होय तो धनी के साथ जा । तेरो मन होय तो हमारे घर रहि । तब बेटी ने कही, जो-मोकों मेरे धनी पास पहुँचाय आवो । और मोकों कछु नहीं चाहिये । तब ससुर बेटी कों ले रामदास के घर करि चल्यो गयो । यह रामदास के पास आइ, सो रामदास स्त्री कों अंगीकार न करे, बोले नहीं । सो रामदास दिन दोय-चारि घरमें रहे । पाछें द्वारिका कों उठि चले । तब रामदास की स्त्री रामदास के संग चली । सो रामदास संग आवन न देहि, ईदन सों मारे । परन्तु स्त्री पतिव्रता, दूरि दूरि संग चलि

त्यारे योथा द्विसे लोग धरीने पछी सराववा लाव्या त्यारे श्रीआचार्यज्ये दर्शन छने कहुं, तू महाप्रसाद केम नथी लेतो ? हुं तारी पासै न छुं तथी महाप्रसाद लेजे. त्यारे रामदासे गायने। लाग डाढी महाप्रसाद दीघो. ते ज्ये प्रकारे विरक्त दशाथी थ्यारे कंठ रहे, थ्यारे कंठ रहे. ज्येक ठेकाणे न रहे. ते पृथ्वी-परिक्रमा करतां करतां पोताना गाममां राजनगरमां आवी निकल्या. ते रामदासनां मा-बाप तो मरि गया हुतां. ज्येभनी स्त्री मा-बापना घर हती. ते रामदास पोताना घरमां आवी रह्या. रामदासना सासुराज्ये लण्युं, के रामदास आव्या त्यारे ज्येटीने कहुं, के तारे धणी आव्यो छे. ते इरी कंठ नथे. तो तू ज्येने नहुं जेणवी शडीश. तथी ताइं मन होय तो धणीनी साथे ल. ताइं मन होय तो ज्यारा धरे रहे. त्यारे ज्येटीज्ये कहुं, के भने मारा धणी पासै पहुँचाई आवो. ज्येज्युं भने कंठ ज्येधुं नथी. त्यारे सासुरे ज्येटीने लध रामदासना धरे इरीने याव्यो गयो. आ रामदासनी पासै आवी, ते रामदास स्त्रीने अंगीकार न करे. जोले नहुं. पछी रामदास जे थार द्विसे धरमां रह्या. पछी द्वारका उठी याव्या. त्यारे रामदासनी स्त्री रामदासना साथे यावी. ते रामदास साथे आववा न हे. छरोथी मारे. परन्तु स्त्री पतिव्रता हर हर संगे यावी

આવે । રામદાસ કી પાતરિ મેં જૂઠન બચે સો સ્ત્રી યાઈ, ન બચે તો ખૂલી રહિ જાઈ । એસે કરત મજલિ ચારિ ભઈ, તવ શ્રીરનછોડજી ને રામદાસ સોં કહી, તૂ સ્ત્રી કોં અંગીકાર કર્યોં નહીં કરત ? ત્યાગ કર્યોં કિયો ? તવ રામદાસ શ્રીરનછોડજી સોં કહે, જો-મૈં તો વિરક્ત વૈરાગી હૂં । મેરે સ્ત્રી કો કહા કામ હૈ ? તવ શ્રીરનછોડજી ને કહી, વિવાહ કાહે કોં કિયો ? ઓર તૂ શ્રીઆચાર્યજી કો કૃપાપાત્ર સેવક હોઈ કે એસી નિદુરતા તોકોં ન ચહિયે । ઓર તૂ શ્રીઆચાર્યજી કો કૃપાપાત્ર સેવક હૈ, તાતેં તોસોંં બહોત મૈં કહિ સકત નાહીં । તાતેં સ્ત્રી કોં અંગીકાર કરિ, યા પ્રકાર શ્રીરનછોડજી રામદાસ સોં કહે ।

ભાવપ્રકાશ—તાકો કારન યહ, જો-સ્ત્રી દૈવી હૈ । અઙ્ગીકાર કે લિયે તો અપને પાસતેં શ્રીઆચાર્યજી વિદા તુમકોં કિયે, સો તૂ કર્યોં નાહી કરત ? ઓર રામદાસ કોં દ્વારિકા મેં શ્રીઆચાર્યજી અઙ્ગીકાર કિયે હૈં । તાતેં દ્વારિકા ચલે હૈં । શ્રીરનછોડજી કે કેવલ દરસન નિમિત્ત નાહીં ચલે । શ્રીઆચાર્યજી કો સંબંધ વિચારિ રામદાસ સગરે દેસ ફિરત હૈં । તાતેં શ્રીરનછોડજી કી આજ્ઞા નાહીં, દંડ નાહીં । તાતેં શ્રીરનછોડજી કહેં, તૂ શ્રીઆચાર્યજી કો સેવક હૈ । મૈં તોસોંં કહિ નાહીં સકત । શ્રીઆચાર્યજી કહિવાય । તવ મૈંં હતનો કહ્યો તુમસોંં, સો સ્ત્રી કોં અઙ્ગીકાર કરિ ।

આવે. રામદાસની પાતરમાં બૂઠન બચે તે સ્ત્રી ખાય. ન બચે તો ભૂખી રહી બચ. એમ કરતાં મળલ ચાર થઈ. ત્યારે શ્રીરણુછોડજીએ રામદાસને કહ્યું, તૂં સ્ત્રીને કેમ અંગીકાર નથી કરતો ? ત્યાગ કેમ કર્યો ? ત્યારે રામદાસ શ્રીરણુછોડજીને કહે, જે હું તો વિરક્ત વૈરાગી છું, મારે સ્ત્રીથી શું કામ છે ? ત્યારે શ્રીરણુછોડજીએ કહ્યું, વિવાહ શા માટે કર્યો ? અને તૂ શ્રીઆચાર્યજીનો કૃપાપાત્ર સેવક થઈને આવી નિદુરતા તને ન જોઈએ ? અને તૂ શ્રીઆચાર્યજીનો કૃપાપાત્ર સેવક છે. તેથી તને બહુ હું કહી શકતો નથી. તેથી સ્ત્રીને અંગીકાર કર. એ પ્રકારે શ્રીરણુછોડજી રામદાસને કહે.

ભાવપ્રકાશ—એતું કારણ એ કે સ્ત્રી દૈવી છે. અંગીકારને માટે તે પોતાની પાસેથી શ્રીઆચાર્યજીએ તમને વિદાય કર્યાં. માટે તૂં કેમ નથી કરતો ? અને રામદાસને શ્રીઆચાર્યજીએ દ્વારકામાં અંગીકાર કર્યાં છે. તેથી દ્વારકા આટલા છે. શ્રીરણુછોડજીનાં કેવલ દર્શન નિમિત્ત નથી આવ્યાં. શ્રીઆચાર્યજીનો સબધ વિચારી રામદાસ બંધા દેશ કરે છે. તેથી શ્રીરણુછોડજીની આજ્ઞા નહીં, દંડ નહીં. તેથી શ્રીરણુછોડજી કહે, તૂ શ્રીઆચાર્યજીનો સેવક છે, હું તને કહી શકતો નથી. શ્રીઆચાર્યજીએ કહેવડાવ્યું ત્યારે મે તને આટલું કહ્યું કે, સ્ત્રીનો અંગીકાર કર.

तब मजलि जाइ उतरे । सो स्त्री कों पास बुलाय कहैं, तू गांठि देखत रहि, मैं उपरा बीनि लाजं । तब स्त्री प्रसन्न भई, जो-आजु मोपर कृपा है । तब स्त्री ने कही, मैं ही उपरा बीनि लाजं । तब रामदास ने कही यह स्त्री को काम नाहीं, मैं बीनि लाजंगो । तब उपरा लाइ रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरि, पाछे भोग सराई गाय को भाग काढ़ि एक पातर स्त्री कों धरे । एक अपनी धरे । महाप्रसाद दोऊ जने लिये । ऐसे करत द्वारिका आये, श्रीरनछोड़जी के दरसन किये । तब श्रीरनछोड़जी ने कही, तू स्त्री कों नाम देई तो जल सामग्री सिद्ध करें । रसोई की परचारगी करे । तब रामदास कहै, मैं नाम कैसे देजं ? नाम श्रीआचार्यजी देई सो ठीक है । तब श्रीरनछोड़जी ने कही, मेरी आज्ञा है तू नाम दे । पाछें श्रीआचार्यजी पधारे, तब श्रीआचार्यजी पास नाम सुनैयो । और मैं तोसों कहत हों, सो श्रीआचार्यजी की आज्ञा तें, इच्छा बिना नाहीं कहत । तब रामदास स्त्री कों नाम सुनाये । पाछें स्त्री सों जल भरावन लागे, परचारगी रसोई की करावन लागे । पाछे द्वारिका तें चले तब रामदासजी मनमें विचारे, जो-अब स्त्री कों लिये लिये फिरनो उचित नाहीं । अब एक जगे वैठिकें भगवद् भजन करनो । यह विचारि रामदास कलक दिन में राजनगर अपने घर आये, भगवद् सेवा करन लागे ।

त्यारे मनस उपर नरु उतर्या । पछी स्त्रीने पासो गोसावीने कहे, तू गांठ जेती रहेने हुं छाषां वीणी लाई । त्यारे स्त्री प्रसन्न थडके आन मारा उपर कृपा छे । त्यारे स्त्रीये कहुं, हुं न छाषां वीणी लाई ? त्यारे रामदासे कहुं, ये स्त्रीतुं काम नथी । हुं वीणी लावीश । त्यारे छाषां लावी रसोई करी श्रीठाकुरजने भोग धरी पछी भोग सरावी गायना भोग काढी एक पातर स्त्रीने धरी । एक पोतानी धरी । महाप्रसाद मनने नखांये दीघो । येम करतां द्वारका आव्यां । श्रीरनुछोडलनां दर्शन कर्यां । त्यारे श्रीरनुछोडलये कहुं, तू स्त्रीने नाम दे तो नल-सामग्री सिद्ध करे । रसोइनी परचारगी करे । त्यारे रामदास कहे, हुं नाम केम हई ? नाम श्रीआचार्यल दे ते ठीक छे । त्यारे श्रीरनुछोडलये कहुं, मारी आज्ञा छे तू नाम दे । पछी श्रीआचार्यल पधारे । त्यारे श्रीआचार्यल पासो नाम संलणावणे । अने हुं तने कहुं छुं ते श्रीआचार्यलनी आज्ञाथी, इच्छा बिना नथी कहेतो । त्यारे रामदासे स्त्रीने नाम संलणाव्युं । पछी स्त्री पासो नल लराववा लाग्या । परचारगी रसोइनी कराववा लाग्या । पछी द्वारकाथी याव्या त्यारे रामदासलये मनमां वियाथुं, दे हवे स्त्रीने लघ लघने इरुं

पाछे कितनेक दिन में श्रीआचार्यजी राजनगर पधारे । तब रामदास आगे जाई दंडवत् करि, अपने घर पधराय लाये और बिनती करी, महाराज ! स्त्री कों नाम निवेदन कराइए । तब श्रीआचार्यजी कहें, तू स्त्रीकों दियो है, फेरि अब काहे कों नाम देईवेकी कहे हैं ? तब रामदास ने कही, महाराज ! मैं तो श्रीरनछोड़जी के कहेंतें नाम दियो । और श्रीरनछोड़जी हू यह कहैं, पाछे श्रीआचार्यजी पास नाम दिवाईयो । सो आपकी इच्छा हती तातें श्रीरनछोड़जी द्वारा आप आज्ञा किये, तातें मैं नाम दियो । आपकी इच्छा न होई सो कार्य में कबहूँ न करूं । और स्त्री के अंगीकार करन के लिये तो आपु मोकों अपने पासतें बिदा किये । तातें यह स्त्री कों अंगीकार करिये । तब श्रीआचार्यजी रामदास के ऊपर प्रसन्न होइके नाम दें ब्रह्मसम्बन्ध करायो । पाछे रामदास के घर पाक सामग्री करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरे । पाछे आपु भोजन करि रामदास कों, रामदास की स्त्री कों जूठन धरी । पाछे रामदास कों आज्ञा किये, अब तू एक ठौर घर में बैठिकें दोऊ जने भगवद् सेवा करो । तब रामदास ने कही, महाराज ! यही मेरे मनमें हती, सो आपु आज्ञा दिये । पाछें श्रीआचा-

उचित नथी. हुवे ऐक जगाये भेसीने भगवद्भजन करुं. ऐभ विचारी रामदास केरलाक द्विसभां राजनगर पोताना धरे आब्या. भगवद्सेवा करवा लाब्या.

पछी केरलाक द्विसभां श्रीआचार्यजी राजनगर पधार्या. त्यारे रामदास आगण जर्ध दंडवत् करी पोताना धरे पधरावी लाब्या, अने बिनती करी, महाराज ! स्त्रीने नाम-निवेदन करावो. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, तें स्त्रीने आभ्युं छे इरी हुवे केम नाम देवानुं कहे छे ? त्यारे रामदासे कहुं, महाराज ! में तो श्रीरनुछोड़लना कहे-वाधी नाम आभ्युं. अने श्रीरनुछोड़ल पबु ऐभ कहे, पछी श्रीआचार्यजी पास नाम अपावने. ते आपनी इच्छा हती तेथी श्रीरनुछोड़ल द्वारा आपे आज्ञा करी. तेथी में नाम आभ्युं. आपनी इच्छा न होय ते कार्य हुं क्यारिये न करूं. अने स्त्रीने अंगीकार करवाने भाटे तो आपे भने पोतानी पासैथी विदाय क्यो. तेथी आ स्त्रीने अंगीकार करीये. त्यारे श्रीआचार्यजी रामदासना उपर प्रसन्न थधने नाम द्य ब्रह्मसम्बन्ध कराव्युं. पछी रामदासना धरे पाक-सामग्री करी श्रीठाकुरलने भोग धर्या. पछी भोजन करी रामदासने, रामदासनी स्त्रीने जुठल धरी. पछी रामदासने आज्ञा करी, हुये तू ऐक जगाये घरभां भेसीने अने जगुं भगवद्सेवा करे. त्यारे रामदासे कहुं, महाराज ! ऐज मारा मनमां हतुं. ते आपे आज्ञा करी. पछी श्रीआचार्यजी द्वारकां

र्यजी द्वारिका पधारे। रामदास स्त्री सहित भगवद सेवा करि, अनोसर समें भगवद वार्ता ग्रंथ को भाव स्त्री सों कहते। सो दोऊ जने भगवद सेवा में मगन रहते। सो ये रामदास स्त्री सहित ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। इनकी वार्ता कहां ताई कहिये। वार्ता ॥३३॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, गोविंद दूवे, सांचोरा, खेरालू गाम में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ए गोविंद दूवे द्वारिका लीला संबंधी हैं। सत्यभामा की सखी हैं। इनको नाम लीला में 'तन्मध्या' है। सो इनको स्वरूप सुन्दर बहोत है, कटि सिंहकीसी इनकी। सो श्रीठाकुरजी सत्यभामा के महल पधारे। तब यह सखी तन्मध्या श्रीठाकुरजी सों कहैं, मैं तुम्हारी दासी हों, कोई दिन मोसों मिलो। तब श्रीठाकुरजी मुसिकाइके कहैं, सत्यभामा के आगें कैसे बने ? सो दूरितें सत्यभामा ने यह बात सुनी। सो क्रोध करिकें शाप दिये, जो—तू हमारी बरावरि करी, तातें भूमि पर गिरो। सो ए लीलतें गिरी, अनेक जन्म पाये। सो अब सांचोरा के घर जन्में। सो बरस पंद्रह के भये। तब माता पिता सों कहैं, कोई तीर्थ करो तो आछो है। तब गोविंद दूवे के मा बाप ने कही, जो—बेटा ! तू अवही तें तीर्थ को

पधार्या। रामदास स्त्री सहित भगवदसेवा करे। अनोसर समये भगवदवार्ता-ग्रंथते। लाय स्त्रीने कहे। ते रीते यन्ने जणुं भगवदसेवाभां मगन रहेतां। ते रामदास स्त्री-सहित जेवां कृपापात्र भगवदीय हुतां। जेमनी वार्ता कथां सुधी कहीजे वार्ता ॥३३॥

* * *

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजना सेवक, गोविंद दूवे, सांचोरा, खेरालू गामभां रहेता, तेमनी वार्तानो लाय कहीजे छीजे—

भावप्रकाश—जे गोविंद दूवे द्वारिका लीला संबंधी छे, 'सत्यभामा' नी सखी छे। जेमनुं नाम लीलाभां 'तन्मध्या' छे। जेमनुं स्वरूप सुंदर बहु छे। जेमनी कटी सिंहुना जवी छे। ते श्रीठाकुरजी सत्यभामाना महलभां पधार्या त्यारे जे सखी तन्मध्या श्रीठाकुरजीने कहे, हुं तभारी दासी छुं ठोड दिवस मने भयो। त्यारे श्रीठाकुरजी हुसिने कहे, सत्यभामानी आगण डेम जने ? जे वात दूरथी सत्यभामाजे सांबणी। त्यारे क्रोध करीने शाप आये, ते तें बभारी बरा-बरी करी तेथी भूमि उपर पड। त्यारे जे लीलाभांथी पडी यनेक जन्म पासी। ते हुवे सांचोराना बरे जन्मया। ते वर्ष पंद्रना थया। त्यारे माता-पिताने कहे, ठोड तीर्थ करे तो साइं ? त्यारे गोविंद दूवेना मा-बापे कहुं, ते बेटा ! तू

मन करत है । जो—तू वैरागी होइगो ? हमारो तो मन घर छोड़िके कहुँ जाईवै को
 होत नाही । घरमें खानपान को सुख है । तब गोविंद दूबे कहै, जो—मैं तो वैरागी
 होउंगो । तातें मेरो ब्याह भूलिके मति करियो । और तुम सदा घरको काम करत
 मरोगे, यह मोकों जानि परी । सो मैंतो तीरथ जाऊंगो । तब माता पिता ने कही
 हम बृद्ध हैं, हमारे पीछे तुम्हारो मन होई तहाँ जैयो अब या समय तो हमारी टहल
 करो, रक्षा करो तो आछो । तब गोविंद दूबे ने कही, तुम यह बात कही सोतो
 साँच, परन्तु काल की कछु खबरि परत नाही । कदाचित मैं मरि जाऊं, तब मेरो
 जन्म तो विगरघो । तब तुम्हारी टहल कौन करेगो ? तातें श्रीठाकुरजी सबकी रक्षा
 करत हैं । जीवकी कहा सामर्थ्य है ? तातें मैं तो द्वारिका श्रीरनछोड़जी के दरसन
 तो करि आऊं । तब माता पिता ने कही, हम तोसों बातन में जीते नाही, तुम्हारो
 मन होइ सो करो । तब गोविन्द दूबे द्वारिका आये । श्रीरनछोड़जी के दरसन
 करि बहोत सुख मनमें पायो । सो वर्ष तीन द्वारिका में रहे । और माता पिता घरमें
 देह छोड़ी । सो खबर गोविन्द दूबे सुनके मनकों खेद कियो । जो—माता—पिता,
 कोई तीरथ न किये । पाछें गोविन्द दूबे के मनमें यह आई, जो—माता पिता को

हमशांथी तीर्थनु मन करे छे ते शुं तू वैरागी थईश ? व्यभाइ मन धर छोडीने
 कछु जवानुं थतु नथी. धरमां भावा—पीवानुं सुष्य छे. त्यारे गोविंद दूबे कहे,
 डे हुं तो वैरागी थईश. तेथी भाइं लक्ष भूलीने न करता. अने तमे सदा धरनुं
 काम करतां भरशे. अमे मने जणाय छे. तेथी हुं तो तीर्थ करवा जछश. त्यारे
 माता—पिताअे कछुं, अमे वृद्ध छीअे. अमारी पाछण तभाइ मन होय त्यां
 जळे. हुवे आ समय तो अमारी टहल करे. रक्षा करे तो साइ. त्यारे गोविंद
 दूबेअे कछुं, तमे अे वात कही. ते तो साथी परंतु कालनी कंई अपर पडे नही.
 कदाचित हुं मरी जठ त्यारे भारे जन्म तो भगड्यो त्यारे तमारी टहल डाणु
 करे ? तेथी श्रीठाकुरज अधानी रक्षा करे छे. अवनु शु सामर्थ्य छे ? तेथी हुं
 तो द्वारका श्रीरणछोडअनां दर्शन तो करी आवुं. त्यारे मातापिताअे कछुं, अमे
 तने वातोभां अतीअे नही. तभाइं मन होय ते करे. त्यारे गोविंद दूबे द्वारका
 आंव्या. श्रीरणछोडअनां दर्शन करी मनमां अहु सुष्य थयुं. ते त्रण वर्ष द्वार-
 काभां रक्षा. अने माता—पिताअे धरमां देह छोडी. ते अपर गोविंद दूबेअे सांभणी
 मनमां अेद कर्ये. हम जे माता—पिताअे डोई तीर्थ न क्युं. पछी गोविंद
 दूबेना मनमां अे आंव्युं हे माता—पितानुं गया आइ तो करी आवुं. पछी

गर्या-श्राद्ध तो करि आजुं । सो श्रीरत्नछोड़जी के दरसन करिके चले, सो गया में आइ श्राद्ध किये । पाछें घरकों चले । सो गयातें काशी आये, तव मनिकर्णिका पर स्नान करि संध्यावंदन करत हते, ता समें श्रीआचार्यजी सेठ पुरुषोत्तमदास के घर सों मनिकर्णिका स्नान कों पधारे । तव गोविन्द दूवे श्रीआचार्यजी को दरसन कियो । तव, यह जान्यो, जो-ये बड़े पंडित हैं । तव गोविन्द दूवे के मनमें यह आई, जो-मैं इनके पास कछु पढ़ूं । सो श्रीआचार्यजी स्नान करि संध्या वंदन किये । तव गोविन्द दूवे आई श्रीआचार्यजी कों चिनती करी, महाराज ! आपु बड़े पंडित हो । सो मोकों कछु पढ़ावोगे ? तव श्रीआचार्यजी ने कही, बहोत विद्या तो तुम्हारे भाग्य में नाहीं । मन लगाई के पढ़ो तो अक्षर ज्ञान होइंगो, पाछे पोथी पाठ वांचि लेऊगे । तव गोविन्द दूवे ने कही, महाराज ! पोथी पाठई सही, जितनो आवे तितनोई सही । गीता भागवत तो वांचू । तव श्रीआचार्यजी कहैं, तीसरे पहर डेरा पर आईयो । पाछें गोविन्द दूवे ने घर जाई एक व्याकरण की पोथी एक ब्राह्मण सों मांगी । जो-मैं पढ़िके तुमकों देऊंगो । तव उह ब्राह्मण ने कही, तुम ही राखो, पढ़ो । पाछे श्रीआचार्यजी सेठ पुरुषोत्तमदास के घर पधारे । सामग्री

श्रीरत्नछोड़नां दर्शन करीने याह्या, ते गयाभां आनीने श्राद्ध क्युं. पछी धरे याह्या, ते गयाथी काशी आव्या. त्यारे 'मणिकर्णिका' उपर स्नान करी संध्या-वंदन करता हुता. ते समये श्रीआचार्यशेठ श्रेष्ठ पुरुषोत्तमदासना धरेथी-मणिकर्णिका स्नान मोटे पधार्या हुता. त्यारे गोविन्द दूवेये श्रीआचार्यशेठनां दर्शन क्युं. त्यारे ये जाण्युं के मोटा पंडित छे. त्यारे गोविंद दूवेना मनभां ये आव्यु, के हुं येमनी पासे कंठ लखुं. पछी श्रीआचार्यये स्नान करी संध्या-वंदन क्युं. त्यारे गोविंद दूवेये आनीने श्रीआचार्यशेठने चिनती करी, महाराज ! आप मोटा पंडित छे. ते मने कंठ लखानशे ? त्यारे श्रीआचार्यशेठये कछु, अहु विद्या तो तंभारा भाग्यभां नथी. मन लगाडीने लखु. तो अक्षरज्ञान थरे. पछी पोथी-पाठ वांची देशे. त्यारे गोविंद दूवेये कछु, महाराज ! पोथी-पाठ न लवे. नटहुं आवडे तेठहुं न अरु. गीता-भागवत-तो वांचुं. त्यारे श्रीआचार्यशेठ कहे, तीन पहरे मुकाम उपर आवन. पछी गोविंद दूवेये धर नभ येक व्याकरणनी पोथी येक ब्राह्मण पासे मागी.-के हुं लखीने तमने आपीश त्यारे ते ब्राह्मणु कछु, तमे न राखो. लखो. पछी श्रीआचार्यशेठ पुरुषोत्तमदासना धरे पधार्या. सामग्री करी लोग धरी लोजन क्युं. अहीं गोविंद दूवे शेटली

करि भोग घरि भोजन किये । इहाँ गोविंद दूवे रोटी खाई तीसरे पंहर श्रीआचार्यजी पास व्याकरण की पोथी लैके आये । नमस्कार करि बैठे । तब गोविन्द दूवे ने व्याकरण की पुस्तक निकारि । तब श्रीआचार्यजी ने कही, व्याकरण कहाँ ताई पढ़ेगो ? तोकों गीता पढ़ाऊंगो । सो गीता के पढ़े व्याकरण आपही आइ जायगो । तब गोविन्द दूवे ने कही, महाराज ! व्याकरण पढ़े बिना गीता कैसे खुलेगी ? जगत में तो रीति है, व्याकरण पढ़े तब कल्ल अक्षर को ज्ञान हाय, तब शास्त्र देखे । तब श्रीआचार्यजी कहें, हम कहैं तैसे तू करतो सही । तब गोविन्द दूवे ने कही, महाराज ! मेरे पास तो गीता की पुस्तक नाहीं है । तब श्रीआचार्यजी पुस्तक निकारि एक श्लोक गीता को पढ़ाये । पाछे कहें, हमारी आज्ञा है, सगरी गीता पाठ करि । तब गोविन्द दूवे सगरी गीता अष्टादश अध्याय पाठ करि गये । तब श्रीआचार्यजी एक श्लोक गीता के अर्थ करि कहैं, तू हू अर्थ करि । तब दूवे एक श्लोक कौ अर्थ कियो । तब श्रीआचार्यजी कहैं, मेरी आज्ञा है, सगरी गीता को अर्थ करि जा । तब सगरी गीता को श्लोकार्थ करि गये । इतने में प्रहर रात्रि गई । तब श्रीआचार्यजी कहैं, अब तू जा, व्याकरण साधि लीजो । गीता, भाग-

प्राथ पीने त्रीन प्रहुरे श्रीआचार्यजी पास व्याकरण की पोथी लधने आया, नमस्कार करी भेठा, तयारे गोविन्द दूवे अ व्याकरण की पोथी काठी, तयारे श्रीआचार्यजी अ कहुं, व्याकरण क्या सुधी बाणीश ? तने गीता बाणीश, गीता ना बाणवाथी व्याकरण अनी भेजे आवडी जशे, तयारे गोविन्द दूवे अ कहुं, महाराज ! व्याकरण बाणवा बिना गीता केम समजशे ? जगतमां तो रीत छे व्याकरण बाणु तयारे कछ अक्षरतुं ज्ञान थाय, तयारे शास्त्र जुअे, तयारे श्रीआचार्यजी कहे, अने कहीअे तेम तू करतो अशे, तयारे गोविन्द दूवे अ कहुं, महाराज ! मारी पास तो गीतातुं पुस्तक नथी, तयारे श्रीआचार्यजी अ पुस्तक काठीने अक श्लोक गीताने बाणुअे, पछी कहुं, अमारी आज्ञा छे, आभी गीता पाठ करी अ, तयारे गोविन्द दूवे आभी गीता अठारे अध्यायने पाठ करी गया, तयारे श्रीआचार्यजी गीताना अक श्लोकने अर्थ करीने कहे, तू पणु अर्थ कर, तयारे दूवे अ अक श्लोकने अर्थ कर्यो, तयारे श्रीआचार्यजी कहे, मारी आज्ञा छे, आभी गीताने अर्थ करी अ, तयारे आभी गीताने श्लोकार्थ करी गया अटलामां प्रहुर रात्री गछ, तयारे श्रीआचार्यजी कहे, हुवे तू अ, व्याकरण साधी लेज, गीता-भागवत श्लोकार्थ तने आवडी गयो आगण तारा भाग्यमां नथी, तयारे गोविन्द दूवे ते प्राणना धरे

वत श्लोकार्थ तोकों आय चुक्यो, आंगें तेरे भाग्य में नाहीं । तब गोविन्द दूबे उह ब्राह्मन के घर आये, जासों व्याकरण लावे हते । सो व्याकरण सब लगाय लिये । पाछे अर्द्ध रात्रि कों सोये । तब गोविन्द दूबे मन में विचारी, जो-श्रीआचार्यजी ईश्वर हैं । जो-एक बार एक श्लोक गीता को पढ़ायो तामें व्याकरण हू आयो, गीता हू । श्लोकार्थ को ज्ञान भयो । सो यह जीवकी सामर्थ्य नाहीं । तातें इनको सेवक होऊँ तो आछौ ।

तब प्रातःकाल न्हाइकै, श्रीआचार्यजी कों आई दंडौत् कियो, तब विनती कीनी, जो-महाराज ! मोकों सरन लीजिये, नाम सुनाइये । तब श्रीआचार्यजी कहे, तुम हूँ तो ब्राह्मन हो, हम हूँ ब्राह्मन हैं । सो सेवक क्यों होत हो ? तब गोविन्द दूबे ने विनती कीनी, जो-महाराज ! हम तो जीव हैं । सो आपके स्वरूप कों कहा जाने ? आपु कृपा करिके जनावें तब जाने । पहलेँ तो पंडित ब्राह्मन आपकूँ जानत हते । परन्तु अब तो हम यह जानें, जो-आपु ईश्वर हो । जो-एक बार एक श्लोक गीता के पढ़ाये, तामें मोकों सगरी गीता को श्लोकार्थ ज्ञान भयो । तातें कृपा करिके सेवक करिये । हम तो अज्ञानी जीव हैं । आपु हमारे अपराध क्षमा करो । तब श्रीआचार्यजी कहैं, गंगाजी स्नान कों चलेंगे तहां तुम कों नाम सुनावेंगे । पाछें

आप्या जेनाथी व्याकरण लाव्या हुता (तेने त्यां) पछी व्याकरण अधु लगाडी दीधुं. पछी अउधी रात्रे सुध रखा. त्तारे गोविंद दूबेजे मनसां विचार्युं के श्रीआचार्यजी धश्वर छे. जे अेकवार अेक श्लोक गीतानो लख्वाव्ये तेमां व्याकरण पण आवड्युं, गीताना पण श्लोकार्थनुं ज्ञान थयुं. आ जवनी सामर्थ्य नही. तेथी जेमनो सेवक थउ तो हीडे.

त्यारे प्रातःकाल न्हाइने श्रीआचार्यजीने आवीने दंडवत कर्या. त्तारे विनंती करी, के महाराज ! मने शरणे लो. नाम संभणायो. त्तारे श्रीआचार्यजी कहे, तमे पण ब्राह्मण छे, अमे पण ब्राह्मण छीअे. ते सेवक केम थाव छे ? त्तारे गोविंद दूबेजे विनंती करी, जे महाराज ! अमे तो जव छीअे. आपना स्वपने शुं जाणीअे ? पहलें तो आपने पंडित ब्राह्मण जणुता हुता. परंतु हुवे तो अेम जाण्या, के आप धश्वर छे. जे अेक वार अेक श्लोक गीतानो लख्वाव्ये तेमां मने अधी गीताना.श्लोकार्थनुं ज्ञान थयुं. तेथी कृपा करीने सेवक करे. अमे तो अज्ञानी जव छीअे. आप अमारा अपराध क्षमा करे. त्तारे श्रीआचार्यजी कहे, गंगाज स्नान करवा आदीशुं त्यां तमने नाम संभणायीधुं. पछी पोते गंगाज पधार्या.

आप गंगाजी पधारें, गोविन्द दूवे कों गंगाजी स्नान कराई नाम निवेदन कराए । तब गोविन्द दूवे कहैं, अब मोकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीआचार्यजी ने कही, भगवद् सेवा करो । तब गोविन्द दूवे ने श्रीआचार्यजी सों चिनती करी, महाराज ! मेरे पिता के श्रीठाकुरजी हैं, सो हमारी ज्ञाति के ब्राह्मन के घर हैं । सो उनकी सेवा कैसे करों ? तब श्रीआचार्यजी ने आज्ञा दीनी, जो-अपने घर में ठाकुर कों लाई पंचामृत स्नान कराई भगवत् सेवा करियो । तब गोविन्द दूवे श्रीआचार्यजी सों विदा होय के कलुक दिन में घर आये । सो वह ब्राह्मन सों ठाकुरजी ले अपने घर पंचामृत स्नान कराई सेवा करन लागे । परन्तु भगवद् सेवा में मन लागे नहीं, चित्त में उद्वेग रहे । और श्रीआचार्यजी ने यह आज्ञा दीनी, जो-श्रीठाकुरजी कों तू पञ्चामृत न्हाई लीजो, सो यातें, जो-गोविन्द दूवे ब्रजलीला संबंधी नहीं है । द्वारिका की राजलीला संबंधी सत्यभामा की सखी है । तहां इनकी प्राप्ति है । तातें आप पञ्चामृत स्नान नहीं कराये । पाछें श्रीआचार्यजी अडेल पधारें । सो एक वैष्णव अडेल तें गुजरात गयो । गोविन्द दूवे के घर उतरयो । तब गोविन्द दूवे ने श्रीआचार्यजी के कुशल समाचारि पूछे । तब उह वैष्णव ने कही, कासी तें अडेल पधारें हैं । तहां कलुक दिन बिराजेंगे । पाछें

त्यां गोविंद दुवेने गंगा-स्नान करावी नाम-निवेदन कराव्युं. त्यारे गोविंद दुवे कडे, हुवे भने शी आज्ञा छे ? त्यारे श्रीआचार्यज्ये कछु, भगवद् सेवा करो. त्यारे गोविंद दुवेज्ये श्रीआचार्यज्ये चिनती करी, महाराज ! मेरा पिताना श्रीठाकुरज्ये छे ते अमारी ज्ञातिना ब्राह्मणना धरे छे. अमनी सेवा केम करूं ? त्यारे श्रीआचार्यज्ये आज्ञा आपी, के तारा धरमां ठाकुरने लावीने पंचामृत स्नान करावी भगवत्सेवा करन. त्यारे गोविन्द दुवे श्रीआचार्यज्ये विदाय थछ देटलाक दिवसमां धर आव्या. पछी ते ब्राह्मण पासेथी ठाकुरज्ये लछने पोताना धरे पंचामृत स्नान करावी सेवा करवा लाग्या. परतु भगवद्सेवामां मन लागे नहीं. चित्तमां उद्वेग रहे. अने श्रीआचार्यज्ये आज्ञा आपी, के श्रीठाकुरज्ये तू पंचामृत करावी लेन ते अथी, के गोविंद दुवे ब्रजलीला संबंधी नथी. द्वारिकानी राजलीला संबंधी सत्यभामानी सखी छे. त्यां अमनी प्राप्ति छे. तेथी आपे पंचामृत स्नान न कराव्युं. पछी श्रीआचार्यज्ये अडेल पधार्या. पछी अके वैष्णव अडेलथी गुजरात गयो. गोविंद दुवेना धर उतरयो. त्यारे गोविन्द दुवेज्ये श्रीआचार्यज्येना कुशल समाचार पूछ्या. त्यारे ते वैष्णवे कछुं, कासीथी अडेल पधार्या छे. त्यां थोडा दिवस बिराजथे. पछी पृथ्वी

पृथ्वी परिक्रमा कों पधारेंगे, ऐसे मैं सुनी है। सो तुम सों कह्यो। पाछें आपकी इच्छा। यह कहि उह वैष्णव दूसरे दिन द्वारिका गयो।

वार्ता-प्रसंग १—सो गोविन्द दूबे घर में सेवा करें, परन्तु मन में बहोत विग्रह रहै। सो सेवा में चित्त लागे नाहीं। तब गोविन्द दूबे एक पत्र श्रीआचार्यजी कों लिखे, महाराज ! मेरे मन में बहोत विग्रह रहत है। भगवत्सेवा में चित्त लागत नाहीं, सो मैं कहा करूं ? सो पत्र श्रीआचार्यजी पास आयो, सो आपु बांचि के 'नवरत्न' ग्रंथ करि लिखि पठाये। और लिखें, यह 'नवरत्न' ग्रंथ के पाठ किघे तैं तेरे मनकी विग्रहता मिटि जायगी। सो पत्र श्रीआचार्यजी को गोविन्द दूबे के पास आयो। तब गोविन्द दूबे प्रसन्न होइकें 'नवरत्न' ग्रंथ को पाठ करन लागे। सो पाठ करत श्रीआचार्यजी की कृपा तैं मनकी व्यग्रता चिंता सब मिटि गई। मन भगवद् सेवा करन में लागे।

भावप्रकाश—सो गोविन्द दूबे के मनमें विग्रहता भई, ताको अभिप्राय यह, जो-गोविन्द दूबे जीव तो द्वारिका लीला संबंधी, और सेवा भावना ब्रज की करे। सो मन लागे नाहीं। न राजलीला में दृढ़ता होई, न ब्रजलीला में। सो अनेक साधन में मन दौरे, जो-तीर्थ करूं, के व्रत कोई करूं, कोई जप करूं ?

परिक्रमांये पधारशे. येम भे' सांभल्युं छे ते तमने कथ्युं. पछी आपनी धरछा. येम कही ते वैष्णव भील द्विवसे द्वारका गयो.

वार्ता-प्रसंग १—गोविंद दूबे घरमां सेवा करे परन्तु मनमां अहुं न विग्रह रहे. सेवामां चित्त लागे नहीं. त्यारे गोविन्द दूबेये एक पत्र श्रीआचार्यजीने लख्यो, महाराज ! मारा मनमां अहुं न विग्रह रहे छे. भगवद्सेवामां चित्त लागतुं नथी. ते हुं शुं कइं ? ते पत्र श्रीआचार्यजी पासो आव्यो. ते पोते बांचिने 'नवरत्न' ग्रंथ करी लखी भेकल्यो. अने लख्युं, आ नवरत्न ग्रंथना पाठ करवाथी तारा मननी विग्रहता भरशे. ते पत्र श्रीआचार्यजीने गोविंद दूबेनी पासो आव्यो. त्यारे गोविन्द दूबे प्रसन्न थअने नवरत्नना पाठ करवा लाग्यो. ते पाठ करतां श्रीआचार्यजीनी कृपाथी मननी व्यग्रता चिंता अधी भटी गअ. मन भगवद्सेवा करवामां लाग्युं.

भावप्रकाश—गोविन्द दूबेना मनमां विग्रहता थअ तेना अलिप्राय ये, के गोविंद दूबे छव तो द्वारका लीला संबंधी अने सेवा भावना ब्रजनी करे. तेथी मन लागे नहीं. न राजलीलामां दृढ़ता थाय न ब्रजलीलामां. तेथी अनेक साधनोमां मन दौडे, के तीर्थ कइं, के व्रत कोइ कइं, कोइ जप कइं, धत्यादिमां मन लटके.

इत्यादि मन भटके । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु 'नवरत्न' ग्रन्थ लिखि पठाये, तू चिन्ता मति करे । चित्त की उद्वेगता है, यह प्रभु की लीला जानि, श्रीठाकुर में ते मन और ठौर जाय सोउ भगवद् इच्छा मानि, चिन्ता मति करियो । जितनी बने तितनी सेवा करियो । तब गोविन्द दूवे को मन स्थिर ह्वे गयो । जहाँ मन लौकिक वैदिक में जाइ तो भगवद् इच्छा माने । श्रीरनछोड़जी में मन बहोत जाई सो भगवद् इच्छा मानें । उहाँ की लीला में मग्न रहै । काहेतें ? शास्त्रपुराण अनेक उपाई प्रभु मिलन के कहे हैं । जीवकों मिस मात्र मार्ग दिखाये, जो-जहां को अधिकारी है वामें वाको मन स्वतः सिद्ध लागत है । तातें जैसे मनुष्य, गेल चलिवे वारे कों दस गाम के मार्ग बतावे, परन्तु जाकों जा गाम जानों होई सोई गाम जात है । तैसे ही कोई भगवदीय द्वारा, कोई गुरु द्वारा, कोई ईश्वर द्वारा, जैसे अधिकारी तैसे संग पाये, उही मार्ग में भाव वाको दृढ़ होत है । सो गोविन्द दूवे को श्रीरनछोड़जी में दृढ़ भाव भयो, जो-आगे वरनन करत हैं ।

वार्ता-प्रमंग २—एक समें श्रीआचार्यजी द्वारिका अडेल तें पधारें । तब गुजरात होइ के पधारें । सो गोविंद दूवे, जगन्नाथ जोसी आदि पांच-सात वैष्णव संग चले । सो द्वारिका में श्रीआचार्यजी

त्यारे श्रीआचार्यजी महाप्रभुये नवरत्न ग्रंथ लणी भोक्त्यो । ते तू चिन्ता न करे । चित्तनी उद्वेगता छे ते प्रभुनी लीला जणु । श्रीठाकुरजीमांथी मन नील जगाये जय ते पाणु भगवद् इच्छा मानी चिन्ता न करीश जटवी अने तेटवी सेवा करेज । त्यारे गोविंद दूवेनु मन स्थिर थध गयु । ज्यां मन लौकिक वैदिकमां जय तो भगवद् इच्छा माने । श्रीरनुछोड़जीमां मन अहु जय तेने भगवदीय माने । त्यांनी लीलामां मगन रहे । केमके शास्त्र पुराणमां प्रभुने भगवाना अनेक उपाय कइया छे । जवने कारण मात्र मार्ग देखाडया छे । जे ज्यांनो अधिकारी छे तेमां तेनुं मन स्वतः सिद्ध लागे छे । तेथी जेभ मनुष्य रस्ता यादवावाणाने दश गामना मार्ग बतावे परंतु जेने जे गाम जवु होय तेज गाम जय छे तेवी ज रीते काई भगवदीय द्वारा कांछ गुरु द्वारा कांछ ईश्वर द्वारा जेनो अधिकारी तेनो संग भये ते मार्गमां तेनो भाव दृढ़ थाय छे । ते गोविन्द दूवेनो श्रीरनुछोड़जीमां भाव दृढ़ थयो ते आगे वर्णन करे छे ।

वार्ता-प्रसंग २—एक समें श्रीआचार्यजी अडेलथी द्वारिका पधार्या । त्यारे गुजरात थकने पधार्या । त्यारे गोविंद दूवे, जगन्नाथ जोसी विगरे पांच-सात वैष्णवो साथे

आई पहोंचे । तब गोविंद दूवे ने श्रीआचार्यजी सों विनती करी, जो-महाराज ! कछू कथा को प्रसंग चलाइये, तो बहोत आछो । तब श्री-आचार्यजी महाप्रभु कहें, जो-बहोत आछो । परन्तु अब ही तो मोकों अवकास नाहीं है । अवकास होइगो तब कहूंगो ।

भावप्रकाश—ताको अर्थ यह, जो-तू ब्रजलीला संबंधी नाहीं है । तातें कोई ब्रजलीला सम्बन्धी विनती करे तो कहूं । तेरे आगे सुख न होइगो । यह अभिप्राय तें आपु कहैं, मोकों अवकास नाहीं है ।

तब गोविन्द दूवे ने कही, महाराज ! थोरी कहिये । तब श्री-आचार्यजी महाप्रभु पुस्तक खोलि कथा को आरंभ किये । इतने में श्रीरनछोड़जी आइ गोविन्द दूवे सों वार्ता करन लागें । सो गोविन्द दूवे श्रीरनछोड़जी सों वार्ता करत भगन है गये । यह न ज्ञान रह्यो, जो-श्रीआचार्यजी कथा कहत हैं । मैं वार्ता कैसे करूं ? तब श्रीआ-चार्यजी गोविन्द दूवे सों कहें, पुस्तक खुलाइ कें वार्ता कोनसों करत हो ? पाछें श्रीआचार्यजी पुस्तक परतें दृष्टी फेर कें देखें तो श्रीरन-छोड़जी सों गोविन्द दूवे वार्ता करत हैं । तब श्रीआचार्यजी पुस्तक बांधिकें आपु गोविन्द दूवे उपर अप्रसन्न होइ कें पौढ़े । सो प्रातःकाल

याख्या. पछी द्वारकाभां श्रीआचार्यजी आची पहोंच्या. त्तारे गोविन्द दूवेजे श्रीआ-चार्यजीने विनती करी, के, महाराज ! कंछ कथानो प्रसंग चलावो तो भड्डु साइं. त्तारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे, भड्डु साइं. परंतु उभयों तो मने अवकाश नथी. अवकाश हुशे त्तारे कहीश.

भावप्रकाश—तेने अर्थ जे, के तू ब्रजलीला संबंधी नथी. तेथी कछ प्रजलीला संबंधी विनती करे तो कहुं. तारा आगण सुख नही थाय. जे अभि-प्रायथी पोते कहुं, मने अवकाश नथी.

त्तारे गोविन्द दूवेजे कहुं, महाराज ! थोरी कहे. त्तारे श्रीआचार्यजी महा-प्रभुजे पुस्तक खोली कथानो आरंभ कर्यो. जेद्वारकाभां श्रीरनछोड़जी आची गोविंद दूवेथी पातो करवा लाच्या. त्तारे गोविंद दूवे वार्ता करतां श्रीरनछोड़जी भगन थय गया. जे ज्ञान न रह्युं, के श्रीआचार्यजी कथा कहे छे. हुं वार्ता कैसे करूं ? त्तारे श्री-आचार्यजी गोविन्द दूवेने कहे, पुस्तक खोलावीने वार्ता केनाथी करे छे ? पछी श्रीआचार्यजी पुस्तक उपरथी दृष्टि डेरवीने जेजे तो गोविंद दूवे श्रीरनछोड़जी वार्ता करे छे. त्तारे श्रीआचार्यजी पुस्तक बांधीने पोते गोविंद दूवे उपर अप्रसन्न थयने पोड्या. पछी प्रातःकाल उठीने पोते त्तारे रसोय करी, लोग धरी लोगन क्युं पछी

उठि कें आपु जब रसोई करि, भोग धरि भोजन किये । पाछे अपने खवास कृष्णदास मेघन सों कही, जो-आजु पाछें हमारी थार को महाप्रसाद काहू वैष्णव कों मति दीजो । दामोदरदास हरसानी और तुम लीजो । सो पहले नित्यनेम सों श्रीआचार्यजी की थार को महाप्रसाद वैष्णव ले, पाछें अपने हाथको लेते । सो खवास ने ऐसे ही कियो । दामोदरदास, जिनसों दमला कहते, सो और कृष्णदास लिये । और काहू कों न दिये । सो वा दिन सगरे वैष्णव उपवास किये, भूखे रहे । पाछे दूसरे दिन श्रीआचार्यजी श्रीरनछोड़जी के दरसन कों पधारे । तब श्रीरनछोड़जी ने कही, काल्ह आपु सगरे वैष्णवन कों महाप्रसाद नाहीं दिये, सो सगरे वैष्णव भूखे रहै । तातें जैसे कृपा करिकें आपु सब वैष्णवनकों थार को महाप्रसाद देत हते तैसेइ दियो करो ।

भावप्रकाश—याको कारन यह, जो-श्रीमुख की कथा सुनेगो तो ब्रजलीला में मगन होइ जाइगो । पाछे मेरे हाथ आयवे को नाहीं । तातें गोविन्द दूबे कों वार्ता में लगाई कथा सुनन न दिये । और जो कोई कथा वार्ता करे ता समें, जो-कोइ बात करे तो जाको मन कथा में होई वाके मन में बड़ो दुःख होई । जैसे सुन्दर, मधुर भोजन करत कंकर दांत नीचे आवें दुःख होई । तैसेई कथा में कोई

पोताना अवास कृष्णदास मेघनने कहुं, के आन पछी अमारी थाणने महाप्रसाद डोष वैष्णवने न आपीश. दामोदरदास हरसानी अने तमे लेजे. पाछेलां नित्य नियमथी श्रीआचार्यअना थाणने महाप्रसाद वैष्णव ले पछी पोताना हाथने लेता. ते अवासे अमज कथुं. दामोदरदास जेभने दमला कहेता ते अने कृष्णदासे दीधो. अने भीजने न आथो. तेथी ते दिवसे सधणा वैष्णवोअे उपवास कर्यो. लूण्या रखा. पछी भीज दिवसे श्रीआचार्यअ श्रीरञ्छोडअना दर्शने पधार्यो. त्यारे श्रीरञ्छोडअे कहुं, कावे आपे अथा वैष्णवोने महाप्रसाद नही आथो ते अथा वैष्णवो लूण्या रखा. तेथी जेभ कृपा करीने आप अथा वैष्णवोने थाणने महाप्रसाद देता उता तेभज आथो करे.

भावप्रकाश—अेतु कारण अे, हे श्रीमुखनी कथा सांखणशे तो (गोविंद दुवे) ब्रजलीलाभां मगन थध जशे. पछी मारा हाथ आवशे नही. तेथी गोविंद दुवेने वार्ताभां लगाडी कथा सांखणना न दीधी. अने जे डोष कथा-वार्ता करे ते समये डोष बात करे तो जेतुं मन कथाभां होय तेना मनभां अहु दुःख थाय जम सुन्दर, मधुर लोजन करतां कांकरे दांत नीचे आवे त्यारे दुःख थाय तेभज कथाभां

औरके बोले दुःख होई । तब श्रीआचार्यजी अप्रसन्न भये । रसाभास भयो । आपुकों रस उमड्यो हतो सो अंतर्धान है गयो । तातें आप पुस्तक बांधि पोढ़ि रहे । अथवा दूसरो अभिप्राय यह है, जो-श्रीआचार्यजी की कथा में श्रीरनछोड़जी विघन कैसे करि सकें ? सो साक्षात् पुरुषोत्तम श्रीगोवर्द्धनधर विचारे, जो-आप रस में मग्न भये हैं, सो मेरी अनेक प्रकार सों भक्तन संग लीला हैं, सो आवेस में कहेंगे । और आगे, श्रोता राजलीला को अधिकारी है । सो यह ठीक नहीं । तातें श्रीगोवर्द्धनधर श्रीरनछोड़जी कों प्रेरणा करि गोविन्द दूबे सों बात कराई । रस गोप्य करि दियो । तातें दूसरे दिन श्रीरनछोड़जी ने श्रीआचार्यजी सों कही, आपु वैष्णव पर अप्रसन्न काहै कों भये ? जो-थार को महाप्रसाद न दिये । यह सगरो काम श्रीगोवर्द्धननाथजी की इच्छा तें भयो है । मैंहूँ नहीं कियो । तातें आपु जैसे नित्य वैष्णव कों थार को महाप्रसाद देते तेसे दियो करो ।

तब श्रीआचार्यजी डेरा पर आई, सब वैष्णव सों पूछे, जो-तुम काल्हि महाप्रसाद क्यों नहीं लियो ? तब सगरे वैष्णवन ने विनती करी, महाराज ! काल्हि थार को महाप्रसाद नहीं पायो, तातें नहीं प्रसाद लियो । तब श्रीआचार्यजी कहें, थार को प्रसाद तो देतो

कह भोजना पोत्याथी दुःख थाय. त्थारे श्रीआचार्यजी अप्रसन्न थया. रसाभास थया. आपमां रस उमडयो हुतो ते अंतर्धान थय गयो. तेथी आप पुस्तक बांधी पोढी रहा. अथवा भोजे अभिप्राय अे छे, के श्रीआचार्यजीनी कथामां श्रीरनुछोडजी विघ्न डेवी रीते करी शके ? तेथी साक्षात् पुरुषोत्तम श्रीगोवर्द्धनधरे विचार्युं, के आप रसमां मग्न थया छे, तेथी मारी अनेक प्रकारथी बडतो साथेनी लीला छे ते आवेशमां कडेशे अने आगण श्रोता राजलीलाने अधिकारी छे. ते ठीक नही. तेथी श्रीगोवर्द्धनधरे श्रीरनुछोडजीने प्रेरणा करी गोविन्द दूबेथी बात करावी, रस गोप्य करी दीयो. तेथी भोज दिवसे श्रीरनुछोडजीअे श्रीआचार्यजीने कथुं, आप वैष्णव पर अप्रसन्न केम थया ! के थाणने महाप्रसाद न आप्ये ? आ अंधुं काम श्रीगोवर्द्धननाथजीनी इच्छाथी थयु छे. मे पणु नथी कथुं. तेथी आप नम नित्य वैष्णवने थाणने-प्रसाद देता तेम दीया करे.

त्थारे श्रीआचार्यजी मुकाम उपर आवी अंधा वैष्णवने पूछे, के तमे डाले महाप्रसाद केम नहीं दीयो ? त्थारे अंधा वैष्णवअे विनती करी, महाराज ! डाले थाणने महाप्रसाद न भयो तेथी प्रसाद न दीयो. त्थारे श्रीआचार्यजी कहे, थाणने

उठि कें आपु जब रसोई करि, भोग धरि भोजन किये । पाछे अपने खवास कृष्णदास मेघन सों कही, जो-आजु पाछें हमारी थार को महाप्रसाद काहू वैष्णव कों मति दीजो । दामोदरदास हरसानी और तुम लीजो । सो पहले नित्यनेम सों श्रीआचार्यजी की थार को महाप्रसाद वैष्णव ले, पाछें अपने हाथको लेते । सो खवास ने ऐसे ही कियो । दामोदरदास, जिनसों दमला कहते, सो और कृष्णदास लिये । और काहू कों न दिये । सो वा दिन सगरे वैष्णव उपवास किये, भूखे रहे । पाछे दूसरे दिन श्रीआचार्यजी श्रीरनछोड़जी के दरसन कों पधारे । तब श्रीरनछोड़जी ने कही, कालिह आपु सगरे वैष्णवन कों महाप्रसाद नाहीं दिये, सो सगरे वैष्णव भूखे रहै । तातें जैसे कृपा करिकें आपु सब वैष्णवनकों थार को महाप्रसाद देत हते तैसेइ दियो करो ।

भावप्रकाश—याको कारन यह, जो-श्रीमुख की कथा सुनेगो तो ब्रजलीला में मगन होइ जाइगो । पाछे मेरे हाथ आयवे को नाहीं । तातें गोविन्द दूवे कों वार्ता में लगाई कथा सुनन न दिये । और जो कोई कथा वार्ता करे ता समें, जो-कोइ बात करे तो जाको मन कथा में होई वाके मन में बड़ो दुःख होई । जैसे सुन्दर, मधुर भोजन करत कंकर दांत नीचे आवें दुःख होई । तैसेई कथा में कोई

पोताना अवास कृष्णदास मेघनने कछुं, के आन पछी अमारी थाणना महाप्रसाद ढोछ वैष्णवने न आपीश। दामोदरदास हरसानी अने तमे लेजे. पहुलां नित्य नियमथी श्रीआचार्यलना थाणना महाप्रसाद वैष्णव ले पछी पोताना हाथने लेता. ते अवासे अमज कथुं. दामोदरदास नेमने दमला कछुता ते अने कृष्णदासे दीधा. अने भीलने न आभ्या. तेथी ते द्विसे सघणा वैष्णवोअे उपवास कर्यो. लूभ्या रह्या. पछी भील द्विसे श्रीआचार्यल श्रीरनुछोडलना दर्शने पधार्या. त्यारे श्रीरनुछोडलअे कछुं, काले आये पधा वैष्णवोने महाप्रसाद नहा आभ्या ते पधा वैष्णवो लूभ्या रह्या तथी नेम कृपा करीने आप पधा वैष्णवोने थाणना महाप्रसाद देता हुता तेमज आभ्या करे।

भावप्रकाश—अेतु कारण अे, हे श्रीमुपनी कथा सांखणशे तो (गोविंद दूवे) ब्रजलीलाभां मगन थध जशे. पछी मारा हाथ आवशे नही. तेथी गोविंद दूवेने वार्ताभां लगाडी कथा सांखणवा न दीधी. अने जे ढोछ कथा-वार्ता करे ते समये ढोछ बात करे तो जेतुं मन कथाभां होय तेना मनभां पछु दुःख थाय जम सुन्दर, मधुर सेजन करतां कांकरे दांत नीचे आवे त्यारे दुःख थाय तेमज कथाभां

औरके बोले दुःख होई । तब श्रीआचार्यजी अप्रसन्न भये । रसाभास भयो । आपुकों रस उमढ्यो हतो सो अंतर्धान है गयो । तातें आप पुस्तक बांधि पोढ़ि रहे । अथवा दूसरो अभिप्राय यह है, जो-श्रीआचार्यजी की कथा में श्रीरनछोड़जी विघन कैसे करि सकें ? सो साक्षात् पुरुषोत्तम श्रीगोवर्द्धनधर विचारे, जो-आप रस में मग्न भये हैं, सो मेरी अनेक प्रकार सों भक्तन संग लीला हैं, सो आवेस में कहेंगे । और आगे, श्रोता राजलीला को अधिकारी है । सो यह ठीक नहीं । तातें श्रीगोवर्द्धनधर श्रीरनछोड़जी कों प्रेरणा करि गोविन्द दूबे सों वात कराई । रस गोप्य करि दियो । तातें दूसरे दिन श्रीरनछोड़जी ने श्रीआचार्यजी सों कही, आपु वैष्णव पर अप्रसन्न काहै कों भये ? जो-धार को महाप्रसाद न दिये । यह सगरो काम श्रीगोवर्द्धननाथजी की इच्छा तें भयो है । मैंहूँ नहीं कियो । तातें आपु जैसे नित्य वैष्णव कों धार को महाप्रसाद देते तेसे दियो करो ।

तब श्रीआचार्यजी डेरा पर आई, सब वैष्णव सों पूछे, जो-तुम कालिह महाप्रसाद क्यों नहीं लियो ? तब सगरे वैष्णवन ने विनती करी, महाराज ! कालिह धार को महाप्रसाद नहीं पायो, तातें नहीं प्रसाद लियो । तब श्रीआचार्यजी कहें, धार को प्रसाद तो देतो

डाढ भीजना पोढ्याथी दुःख थाय. त्पारे श्रीआचार्यजी अप्रसन्न थया. रसाभास थयो. आपमां रस उमढयो हुतो ते अंतर्धान थध गयो. तेथी आप पुस्तक बांधी पोढी रखा. अथवा भीजे अलिप्राय अे छे, के श्रीआचार्यजीनी कथामां श्रीरनुछोडल विघ्न डेवी रीते करी शडे ? तेथी साक्षात् पुरुषोत्तम श्रीगोवर्द्धनधरे विचार्युं, के आप रसमां मग्न थया छे, तेथी मारी अनेक प्रकारथी बडतो साथेनी लीला छे ते आवेशमां कडेशे अने आगण श्रोता राजलीलाने अधिकारी छे. ते ठीक नही. तेथी श्रीगोवर्द्धनधरे श्रीरनुछोडलने प्रेरणा करी गोविन्द दूबेथी वात करावी, रस गोप्य करी दीयो. तेथी भीज दिवसे श्रीरनुछोडलअे श्रीआचार्यजीने कथुं, आप वैष्णव पर अप्रसन्न डेम थया ! के थाणने महाप्रसाद न आप्ये ? आ अंधुं काम श्रीगोवर्द्धननाथजीनी धर्यार्थी थयुं छे. मे पणु नथी क्युं. तेथी आप नम नित्य वैष्णवोने थाणने-प्रसाद देता तेम दीया करे.

त्पारे श्रीआचार्यजी मुकाम उपर आवी अंधा वैष्णवोने पूछे, के तमे डाले महाप्रसाद डेम नही दीयो ? त्पारे अंधा वैष्णवोअे विनती करी, महाराज ! डाले थाणने महाप्रसाद न भयो तेथी प्रसाद न दीयो. त्पारे श्रीआचार्यजी कडे, थाणने

नाहीं, परन्तु तुम्हारी सिपारस बड़ी ठौर तें भइ, तातें देऊँगो ।

भावप्रकाश—याको अर्थ यह, जो—तुम्हारे दोष नाहीं है । यह काम सब प्रभु की ओरतें भयो, तातें महाप्रसाद देऊँगो ।

तब सगरे वैष्णवन ने बिनती करी, महाराज ! हम आपुके चरणारविंद सों लागे हैं । हमारो भलो होइगो, सो आपु करोगे । तब श्रीआचार्यजी अपने खवास कों आज्ञा दिये जैसे नित्य धार को महाप्रसाद सबकों देते तेसे दियो करियो । तब खवास ने महाप्रसाद दियो । तब सगरे वैष्णव महाप्रसाद लियो । पाछें कछुक दिन द्वारिका में रहि, पाछें श्रीरनछोड़जी सों विदा होई अड़ेल पधारे । तब सगरे वैष्णव अड़ेल ताँई संग आये । पाछें सगरे वैष्णव विदा होई अड़ेलतें श्रीआचार्यजी कों दंडौत करि अपने अपने घर आये । तब गोविन्द दूवे अपने घर खेरालू में आये ।

भावप्रकाश—सो श्रीरनछोड़जी के कहतें महाप्रसाद दिये, परन्तु गोविन्द दूवे संग रहै । तहां ताँई कोई कथा न कहै । सो अधिकारी बिना वार्ता को रस न होई । यह जताये ।

वार्ता-प्रसंग ३—और एक समें गोविन्द दूवे मीराबाई के

प्रसाद तो देतो नहीं परंतु तमारी शिफारस भोटी जगायेथी थछ तेथी दृश.

भावप्रकाश—अने अर्थ अे, ठ तमारे दोष नथी अे काम अंधु प्रभुनी तरङ्गी थयु. तेथी महाप्रसाद दृश.

त्यारे अंधा वैष्णुवाये बिनती करी, महाराज ! अमे आपना चरणारविंदथी लाग्या छीअे. अभाइं ललुं थाय तेम आप करेओ. त्यारे श्रीआचार्यअे पीताना अवासने आज्ञा आपी, के जेम नित्य थाणने महाप्रसाद अंधाने आपता तेम आप्या करे. त्यारे अवासने महाप्रसाद आप्या. त्यारे अंधा वैष्णुवाये महाप्रसाद दीधो. पछी केलाक दिवस द्वारकाभां रही पछी श्रीरनुछोडथी विदाय थछ अउल पधार्या. त्यारे अंधा वैष्णुवा अउल सुधी साथे आव्या पछी अंधा वैष्णुवा विदाय थछ अउलथी श्री-आचार्यअे दंडवत करी पीतपीताना धरे आव्या. त्यारे गोविन्द दुवे पीताना धरे भेरालुभां आव्या.

भावप्रकाश—श्रीरनुछोडथी कहेवाथी महाप्रसाद दीधो परंतु गोविन्द दुवे संग रह्या त्यां सुधी कोछ कथा न कही. ठम जे अधिकारी बिना वार्ता रस न थाय अेम जशाव्युं.

वार्ता-प्रसंग ३—वणी अेक समय गोविन्द दुवे मीराबाईना धरे गया ते मीरां-

घर गये । सो मीराबाई सों भगवद् वार्ता करत कछुक दिन उहां अटके । सो यह बात श्रीगुसाईजी नें सुनी, जो—श्रीआचार्यजी के सेवक गोविन्द दूवे मीराबाई के पास हैं, वार्ता चरचा करत हैं । तब श्रीगुसाईजी नें एक श्लोक लिखकें ब्रजवासी कों दिये । और कहें, मीराबाई के घर गोविन्द दूवे हैं, तिनकों यह कागद दे आज । तामें एक यह श्लोक लिखें—

भगवत्पदपद्मपरागयुतो न हि युक्ततरं मरणेऽपि तराम्
इतराश्रयणं गजराजगतो न हि रासभमप्युरीकुरुते ॥ १ ॥

यामें यह लिखें, जो—हाथी की असवारी करी, सो फेरि गदहा पर असवारी न करें, प्राण जाई तहां ताई । तेसे, जो—कोई भगवान के पदकमल के पराग को आखादन करिकें इतराश्रय, और को आश्रय, अन्य रसकों कबहूँ न चाखें । मरन पर्यंत दुःख सहें । परन्तु और रस ग्रहन न करें ।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो—श्रीआचार्यजी को सेवक तू होइ, और अन्यमार्गीय मीराबाई के इहां तू भगवद् वार्ता में अटक्यो ? सो या प्रकार हाथी की असवारी छोड़ि गदहा की असवारी है ।

सो यह कागद ब्रजवासी नें गोविन्द दूवे के हाथ में दियो । ता समें गोविन्द दूवे तलाब के उपर गाम बाहिर संध्यावंदन करत

प्राध्नी भगवद् वार्ता करतां थोडाक द्विस त्यां रोकाया. ओ वात श्रीगुसांछल्ये सांलणी, के श्रीआचार्यलना सेवक गोविन्द दूवे मीरांप्राधनी पासे छे. वार्ता-वर्थां धरे छे. तयारे श्रीगुसांछल्ये ओक थोडाक लभीने ब्रजवासीने आये. अने कहुं, मीरांप्राधनी धरे गोविंद दूवे छे तेभने आ कागण आपी आव. तेभां ओक आ श्लोक लभ्यो—

भगवत्पदपद्मपरागयुतो..... (उपर लुओ)

अभां ओ लभ्युं, के हाथीनी स्वारी करी ते करी गधेडा उपर स्वारी न करे प्राणु लय त्यां सुधी. तेथी ने कोष भगवानना पदकमलना परागतुं आस्वादन करीने भीजनो इतराश्रय, ने भीजनो आश्रय अन्य रसने कहीय न याये. भरलु पर्यंत दुःख सहै. परंतु भीजे रस ग्रहणु न करे

भावप्रकाश—अभां ओ लभ्युं, के श्रीआचार्यलना तू सेवक थथ अने अन्यमार्गीय मीरांप्राधने त्यां तू भगवद् वार्तामां अटक्यो ? ते आ प्रकार हाथीनी स्वारी छोडी गधेडानी स्वारी छे.

आ कागण ब्रजवासीअे गोविन्द दूवेना हाथमां आये. ते समये गोविन्द दूवे

तो तहां जैये । सूतक के दिन कटत नाहीं । तब एक ने कही, श्रीवल्लभाचार्यजी पृथ्वी-परिक्रमा करि इहां पधारे हैं, सो कथा बहोत सुन्दर कहत हैं । तहां तुम तीसरे प्रहर जैयो । तब राजा दूवे, माधो दूवे वासों कहैं, हमकों आज तुम ले चलियो, फिरि हम नित्य जायंगे । तब उनने कही, आछो । सो (वह) तीसरे प्रहर आई, राजा दूवे, माधो दूवे कों ले गयो । सो दोऊ भाई दूरितें दंडौत करि दूरि बैठें । तब श्रीआचार्यजी कहैं, आगें आवो । तब दोऊ भाई कहैं, महाराज ! हमकों सूतक हैं, तातें दूरि बैठे हैं । तब श्रीआचार्यजी कहैं, तुम दोऊ भाई सदा सुद्ध हो । सो हमारे आगे आइ बैठो । और संदेह होइ सो पूछियो ।

तब दोऊ भाई प्रसन्न होई आगें आइ बैठे । तब श्रीआचार्यजी नंदमहोत्सव को वर्णन, श्रीभागवत दशमस्कंध के पांचमें अध्याय को वर्णन किये । सो नंदालय की लीला को प्रगट अनुभव दोऊ भाईनकों कराय दिये । पाछें सब कथा होय चुकी तब दोऊ दण्डौत करिकें कहैं, महाराज ! कहा करिये ? सूतक है, नाहीं तो विनती करते । अब हमारो जन्म सुफल भयो । जो-आपके दरसन पाये । तब श्रीआचार्यजी कहैं, हम तिहारे मनकी बात जाने हैं । जो-तुम दोऊ हमारे हो, सूतक पाछें अङ्गीकार करेंगे । तहां ताई हम इहां हैं । तुमकों अङ्गीकार करि, तुम्हारे

त्यारे अडे कछु, श्रीवल्लभाचार्यजी पृथ्वी-परिक्रमा करी अहीं पधार्या छे. ते कथा पबु सुंदर कहे छे. सां तमे त्रीज प्रहुरे जणे. त्यारे राज दुवे माधो दुवेअ अने कछु, अभने आन तमे लठ यालजे. पछी अमे नित्य जधशुं. त्यारे तेणु कछु, साइ. पछी त्रीज प्रहुरे आवी राज दुवे माधो दुवेने लध गयो. पछी अन्ने बाधअ दूरथी द डवत् करीने भेठा. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, आगण आवो. त्यारे अन्ने बाध कहे, महाराज ! अभने सूतक छे तेथी दूर भेठा छीअ. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, तमे अन्ने बाध सदा शुद्ध छे. अमारी आगण आवी भेसो अने सं देह होय ते पूछे.

त्यारे अन्ने बाध प्रसन्न थध आगण आवी भेठा त्यारे श्रीआचार्यजीअ नंदमहोत्सवतुं वरुण श्रीभागवत दशमस्कंधना पांचमा अध्यायतुं वरुण कथुं. अन्ने बाधने नंदालयनी लीलानो अतुलव करानी दीधो. पछी अधी कथा थध सूकी त्यारे अन्ने बाध द डवत करीने कहे, महाराज ! शुं करिये ? सूतक छे नडी तो विनती करता. हुवे अमारे जन्म सफल थयो, दे आपनां दर्शन मज्यां, त्यारे श्री-आचार्यजी-कहे, अमे तमारा मननी बात अणुअ छीअ. तमे अन्ने अमारा छे. सूतक पछी अगीकार करीशुं. सां सुधी अमे अही छीअ. तमने अगीकार करी

सगरे मनोरथ पूर्ण करि, और ठौर जायगें । तुम चिन्ता फिकर मति करियो । अब अपने डेरा पर जाय काल्हि याही समें यहां अइयो । तब दोऊ भाई दण्डौत करि प्रसन्न होइ डेरा पे गये । सो सगरी राति नंदालय की लीला को अनुभव आवेस रह्यो । पाछें सवेरे उठिकें दोऊ भाई आपुस में बतराये, जो-अब आपुन कृतार्थ भये । श्रीआचार्यजी साक्षात् पुरुषोत्तम हैं, जो-एक दिन की कथा में लीलारस को अनुभव कराये । पाछें याही भांति सूतक के दिन नीठि नीठि विताये । ग्यारमे दिन न्हाइ के सुद्ध होई, श्रीआचार्यजी के पास बड़े सवेरे आई विनती किये, महाराज ! हमकों सरनि लीजिये । तब श्रीआचार्यजी दोऊ भाईन कों फेरि न्हाईके नाम सुनाए, ब्रह्मसंबंध कराए । पाछें श्रीआचार्यजी कहें, अब तुम भगवद् सेवा करो । तब राजा दूवे, माघो दूवे कहें महाराज ! हमारे पिता के ठाकुर हमारे पास हैं । पिता-माता पूजा मार्ग की रीति सों करते, सो इहां आय देह छोड़ी । हम पर आपकी कृपा भई, जा प्रकार आज्ञा करो, ता प्रकार सेवा करें । तब श्रीआचार्यजी कहें, जाऊ डेरातें श्रीठाकुरजी ले आवो । तब माघो दूवे जाइके ठाकुर की झांपी ले आए । सो श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजी कों पञ्चामृत स्नान कराई राजा

तमारा सधणा मनोरथ पूर्युं करी णीणुं जगाये जधशुं । तमे चिंता झिकर न करे । हुवे तमारे मुकामे जध काले आ ज समये अर्ही आवजे, त्तारे अन्ने बाध दंड-वत करी प्रसन्न थध मुकाम उपर गया । पछी पधी रात्री नंदालयनी दीलाने अनुभवने आवेश रह्यो । पछी सवारे उठीने अन्ने बाधये परस्पर वातयित करी, के हुवे आपणुे कृतार्थ थया । श्रीआचार्येण साक्षात् पुरुषोत्तम छे, के अेक दिवसनी कथाभां दीलारसने अनुभव कराव्यो । पछी अेज प्रकारे सूतकना दिवस नीठ नीठ विताव्या । अग्यारमा दिवसे न्हाईने शुद्ध थध श्रीआचार्येणनी पासे न्हेडी सवारे आवी विनंती करी, महाराज ! अमने शरणुे लो । त्तारे श्रीआचार्येणये अन्ने बाधने इरी नवडावीने नाम सलाव्युं । ब्रह्मसंबंध कराव्युं । पछी श्री-आचार्येण कहे, हुवे तमे भगवद्सेवा करे । त्तारे राज् हुवे माघो हुवे कहे, महाराज ! अमारा पिताना ठाकुर अमारी पासे छे । पिता-माता पूजामार्गनी रीतिथी करेतां ते अर्ही आवी देह छोडी । अमारा उपर आपनी कृपा थध । हुवे जे प्रकारे आज्ञा करेते प्रकारे सेवा करीये, त्तारे श्रीआचार्येण कहे, जव, मुकामेथी श्रीठाकुरेण लध आवो । त्तारे माघो हुवे जधने ठाकुरनी अंपी लध आव्या । पछी श्रीआचार्येणये श्रीठाकुरेणने पञ्चामृत स्नान करावी राज् हुवे माघो हुवेना माथे पधराव्या ।

दूवे माधो दूवे के माथे पधराए । और आज्ञा किये, सब ठोरतें मन छुटाई निरोध करि भगवद् सेवा करियो । तब राजा दूवे माधो दूवे बिनती करी, जो-महाराज ! निरोध को स्वरूप कहा है ? तब श्रीआचार्यजी कहें, निरोध दोई प्रकार को । एक साधन दसा को, एक सिद्ध दसा को । साधन दसा के निरोध के लक्षण यह, जो-संसार लौकिक वैदिक मन में सुहाय नहीं । यही मनमें रहे, जो-कब भगवद् सेवा करूं ? कब कथा वार्ता करूं ? यामें रुचि उपजे । मन कछ लौकिक में जाय तो, फेरि खेंचि सेवा में लगावे । यह जानें, जो-एक भगवान ही के आश्रय तें सब कार्य सिद्ध होत हैं । यह साधन दसा को निरोध । और फल दसा को निरोध यह, जो-मन को स्वतः ही सिद्ध यही सुभाव परे, जो-श्रीठाकुरजी के स्वरूप के ध्यान बिना और ठोर जाय नहीं । लौकिक वैदिक कार्य हू करे । परंतु मन श्रीठाकुरजी बिना और ठोर जाय नहीं । यह फल दसा को निरोध । तिनकों यह संसार को दुःख, सुख अनेक ताप हैं सो, लगे नहीं । मन श्रीठाकुरजी और उनके लीला रस में मग्न रहै । यह निरोध को प्रकार है । तब राजा दूवे माधोदूवे बिनती किये, महाराजाधिराज ! हमकों तो दोई प्रकार को निरोध दुर्लभ हैं । तातें जैसे आपु हमकों संसार समुद्र में ते डूबते बांहि पकरि

अने आज्ञा करी, अधी जगायेथी मन छोडीने निरोध करी भगवद्सेवा करणे. त्यारे राजा दुवे माधो दुवेये बिनती करी, जे महाराज ! निरोधतुं स्वरूप शुं छे ? त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, निरोध जे प्रकारना. जेक साधन दशानो. पीजे, सिद्ध दशानो. साधन दशाना निरोधतुं लक्षण जे जे संसार लौकिक वैदिक मनमां गमे नहीं. जेज मनमां रहे, ते त्यारे भगवद्सेवा कइ ? क्यारे कथा-वार्ता कइ ? जेमां इथी थाय, मन कंछ लौकिकमां जय तो इरी सेनामां जेथीने लगाडे. जे जणु, ते भगवानना जे आश्रयथी अधुं कार्य सिद्ध थाय छे. आ साधन दशानो निरोध. पीजे इल दशानो निरोध जे, ते मननो आप भेजे जे जेवो स्वभाव पडे, ते श्रीठाकुरजना स्वरूपना ध्यान बिना पीजे जगाये जय नहीं. लौकिक वैदिक कार्य पाणु करे परंतु मन श्रीठाकुरजना बिना पीजे जगाये जय नहीं. जे इल दशानो निरोध. तेने आ संसारतुं दुःख सुख अनेक ताप छे ते लागे नहीं. मन श्रीठाकुरज अने तेमनी लीला रसमां मग्न रहे. आ निरोधनो प्रकार छे. त्यारे राजा दुवे माधो दुवेये बिनती करी, महाराजाधिराज ! अमने तो अन्नेय प्रकारनो निरोध दुर्लभ छे. तेथी आपे जेअ अमने संसार समुद्रमांथी डुपतां हाथ पकडीने शरणे लीया छे. तेज प्रकारे निरोधतुं दान

के सरनि लिये हैं, याही प्रकार निरोध को दान आपु करोगे तो हमकों कछु सिद्ध होइगो। और प्रकार हमारो तो सामर्थ नहीं हैं। या प्रकार दोऊ भाई की दैन्यता, सरल स्वभाव, देखि के, दशमस्कंद (जाकों) निरोध स्कंध कहैं हैं, ताको आपु “निरोध लक्षण” ग्रंथ करि, दोऊ भाईन कों पाठ कराय कें कहैं, तुम दोऊ भाईन कों निरोध सिद्ध होइगो। यह कहि अपनो चरणामृत दोऊ भाईन कों दिये। सो तत्काल दोऊ भाई को मन अलौकिक हूँ गयो। लीला रस को अनुभव होंन लग्यो। तब श्रीआचार्यजी कहैं, अब अपने घर जाय सेवा करो। जाकों निरोध भयो वाकों, बहुत बोलनो, देस फिरनो नहीं। तातें घर जाऊं, दैवी जीव आवें निनकों नाम दीजो। तुमकों तो निरोध सिद्ध भयो। और, जो-तुम्हारो संग मन लगाय के करेगो, ताहू कों निरोध सिद्ध होयगो। तब राजा दूवें, माघोदूवें पास द्रव्य हतो सो श्रीआचार्यजी की भेट करि विदा होई, द्वारिका तें चलें। सो अपने गाम मणुंद में आए। घर में आइ दोई भाई भगवद् सेवा करन लागे। कछुक द्रव्य घर में हतो तामें निर्वाह करें। काहू सौं बहोत बोले नांही। जो-आवे ता-पर दया करि के खानपान को समाधान करें। भगवद् वार्ता करि दोऊ भाई श्रीठाकुरजी की लीला रस में मग्न रहते।

आप करेशो तो ते अमने कंठक सिद्ध थशे। पीछ प्रकारे अमाइं तो डोअ सामर्थ्य नथी। अये प्रकारे अन्ने साधनी दीनता, सरल स्वभाव जेधने दशमस्कंध (जने) निरोधस्कंध कहे छे तेनो आपे ‘निरोधलक्षण’ ग्रंथ करी तेनो अन्ने साधने पाठ करावीने कहे, तमने अन्ने साध्याने निरोध सिद्ध थशे। अये कही पोतानुं यरणामृत अन्ने साधने आयुं। त्यारे तत्काल अन्ने साधनुं मन अलौकिक थई गयुं। लीला-रसने अनुभव थवा लाग्यो। त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, हुवे तमारा धरे जेध सेवा करे। जने निरोध थयो तेने अहु भोसपु, देशोमां इरखुं नहीं। तेथी धर अव. दैवी अवे आवे तेमने नाम आपजे। तमने निरोध सिद्ध थयो। अने जे तमारे संग मन लगावीने करेशे तेने पणु निरोध सिद्ध थशे। त्यारे राजा दूवे माघो दूवेनी पारे द्रव्य हतुं। ते श्रीआचार्यजीनी भेट करी, विदाय थध द्वारकाथी याइया। ते पोताना गाम मणुदमां आव्या। धरमां आवी अन्ने साध लगवद्सेवा करवा लाग्या। कंठक द्रव्य धरमां हतुं तेमां निर्वाह करे। डोअनाथी वधारे भोले नहीं, जे आवे तेना उपर दया करीने खानपाननुं समाधान करे। लगवद् वार्ता करीने अन्ने साध श्रीठाकुरजीनी लीला-रसमां मग्न रहेता।

वार्ता-प्रसंग १—सो जा गाम में राजा दुवे, माधो दुवे रहते । ता गाम में दोई भाई सांचोरा ब्राह्मण और रहते । सो बड़े भाई को नाम रामजी और छोटे भाई को नाम हरिकृष्ण । तामें बड़ो भाई रामजी पढ्यो हतो । सो गाम में पटेल के आगे चोतरा पर बैठिके कथा कहेतो । और छोटे भाई मूरख हतो, सो बड़े भाई के खेत की रखवारी करतो । सो बड़ो भाई रामजी और गाम कार्यार्थ गयो, तब कथा रही । तब एक दिन बरसा बहोत भई । सीतकाल के दिन हते । सो छोटे भाई मांझ कों खेत पर तें आयो । तब भावज ने कह्यो, रोटी खायगो ? तब उह देवर ने कही, मोकों सीत बहोत लागत है, तू मोकों रोटी ताती करि देई तो मैं जैऊँ । तब भावज ने कह्यो, खानो होइ तो खा, नातर मैं सोइ रहोंगी । तू कहा गाम के पटेल के चोतरा पर कथा बांचेगो, के दादे को ग्रास बहोत दिन को अटक्यो है, सो फेरेगो ? जो-हों तोकों ताती रोटी करि देऊँ ? खानो होइ तो खा, नांतर सोइ रहि, मेरे आगे तें उठि जाऊ । ये बचन भावज के सुनि कें मनमें बहोत दुःख भयो । जैसे मन, हृदय में, बान लागें । सो तत्काल घर में सों बाहर निकस्यो । तब मन में विचार कियो, जो-अब देह को त्याग करनो । के कहूं यह गाम छोड़ के कोई और देस कों जानो ।

वार्ता-प्रसंग १—जे गाममां राजा दुवे माधो दुवे रहता ते गाममां पन्ने लाध सांचोरा ब्राह्मण भीज रहता. तेमांना मोटा लाधतु नाम रामल अने नाना लाधतु नाम हरिकृष्ण. तेमा मोटा लाध रामल लख्यो हुतो. ते गाममां पटेलना आगण चोतरा उपर पेसीने कथा कहता. भीजे नाना लाध मूरख हुतो. ते मोटा लाधना भेतरनी रणवादी करतो. अक समये मोटा लाध रामल भीज गाम कार्य भाटे गयो त्यारे कथा रही. त्यारे अक द्विस वर्षां घण्टी थध. शीतकालना द्विस हुता. ते नाना लाध सांजना भेतर उपरथी आव्या. त्यारे लालीअे क्छुं, रोटी भाधश ? त्यारे ते दीयरे क्छुं, मने इंड घण्टी लागे छे. तू मने रोटी गरम करी दे तो हुं जमुं. त्यारे लालीअे क्छुं, भाधुं होय तो आ नहीं तो हुं सूध रहीश. तु शुं गामना पटेलना चोतरा उपर कथा बांचेगो के दादानो कोण अहु द्विसनो अरक्यो छे ते डेरीश ? जे हुं तने गरम रोटी करी दे ? भाधुं होय तो आ, नहीं तो सूध रहे; मारी आगणथी छी ज. आवां लालीनां वयन सांजणीने मनमां घण्टुं दुःख थयुं. जेम मन, हृदयमां भाधुं लागे. ते तकास घरमांथी अहार निकष्यो त्यारे मनमां विचार क्यो, के हुवे देहना त्याग करयो के इंध आ गाम छोडीने कोण भीज देशमां जयुं. डेरी मनमां अे आव्युं, के

फेरि मन में यह आई, जो-गाम में राजा दूवे, माधो दूवे महापुरुष हैं, उनको नमस्कार करिके कहूं जाऊं। सो राजा दूवे, माधो दूवे के घर आइ, दोऊ भाईन को नमस्कार कियो, और रोवन लाग्यो। तब दोऊ भाई कहें, तू कौन है? पाछें पास आइ पहचानि कें कहें, तू तो फलाने को बेटा है, हमारी ज्ञाति हैं। तब उनने कही, मेरे दुःख को पार नहीं है, अब मैं देह त्याग करूंगो। सो तुमको नमस्कार करन आयो हूँ। तब माधो दूवे ने कही, श्रीठाकुरजी सर्व सामर्थ युक्त हैं, वे दुःख दूर करेंगे, तातें तू अपनो दुःख तो कहि। तब इन सगरे समाचार कहें। जो-मोको भावज ने ऐसे वचन कहें, सो हृदय (में) खूंचत हैं। सो मैं तिहारी सरनि हों। मेरो दुःख दूर करिये। सो तब दोऊ भाई वाको समाधान कियो, जो-श्रीठाकुरजी सब आछी करेंगे। पाछें वाको महाप्रसाद लिवाये, कह्यो, अब सोइ रहै। पाछें प्रातःकाल भयो। तब माधो दूवे वाको उठाइ के कहें, अब तू स्नान संध्या वंदन करिके यहां अइयो। तब उह देह कृत्य करि स्नान संध्या करिकें आयो। तब माधो दूवे ने राजा दूवे सों कह्यो, अब यासों कहेनो होई सो कहो। तब राजा दूवे ने कही, तुम्हारी जीभ चली है, सो कछु कहोगे। ये झार लगाए हो। अपने ऐसे काहे को करनो? अनेक संभार में दुःखी सुखी हैं। तब माधो दूवे ने राजा दूवे सों

गामभां राजा दूवे माधो दूवे महापुरुष छे. अने नमस्कार करिने क'छु नठे. पछी राजा दूवे माधो दूवेना घरे आवी अने साधने नमस्कार करि. अने सेवा लाग्यो. तारे अने साध छडे, तू कोणु छे? पछी पास आवी ओणणीने छडे, तू तो इसाणुना भेडा छे. अमारी ज्ञातिने छे. तारे तेरे कछु, मारा दुःभने पार नथी. हुवे हुं देह त्याग करीश. तेथी तमने नमस्कार करवा आव्यो छुं. तारे माधो दूवेके कछु, श्रीठाकुर सर्व सामर्थयुक्त छे. ते दुःभ दूर करेशे. तेथी तूं ताइ दुःभ तो छडे. तारे अरे अंधा समाचार कइया. ने मने सालीके आवां वचन कइयां. ते हृदयभां अंधे छे. तेथी हुं तमारा शरु छुं. माइ दुःभ दूर करे. तारे अने साधके अछुं समाधान करुं, के श्रीठाकुर अथुं लछुं करेशे. पछी अने महाप्रसाद लेवडाव्यो. कछुं, हुवे सुध रहे. पछी सवार थयुं तारे माधो दूवे अने नगाडीने छडे, हुवे तूं स्नान संध्या वंदन करिने अछीं आवने. तारे ते देह कृत्य करी स्नान संध्या करिने आव्यो. तारे माधो दूवेके राजा दूवेने कछु, हुवे अने कछुं होय ते छडे. तारे राजा दूवेके कछुं, तमारी लस यादी छे ते क'छुं कछेशे. अे आउ लगाव्युं छे. आपरे अथुं शा भटि करुं?

कह्यो, तुम श्रीआचार्यजी के सेवक हो, सो यह बहोत दुःखी है, या पर कृपा करो। तब राजा दूबे कहे, तुम कहो तब माधो दुबे कहे, यह काम तुम्हारे आगे मोकों कहनो उचित नाहीं है। तब राजा दूबे कहे, हमारी आज्ञा है कहो ?

भावप्रकाश—सो राजा दूबे कहे, झार लगायो है, ताको कारन यह, लीला संबधी दैवी नाहीं है, कृपा करि उद्धार होइगो।

तब माधो दूबे श्रीठाकुरजी के मन्दिर के द्वार आगे बेठाइके, श्रीआचार्यजी को स्मरण करि अष्टाक्षर मंत्र को उपदेश किये। नाम दे पाछें अष्टाक्षर की माला जप कराये। सो उह संस्कृत बोलन लाग्यो। तब माधो दूबे ने राजा दूबे सों कह्यो, आज्ञा होई तो याकों एक माला को जप और कराजं। तब राजा दुबे ने कही, अवश्य जप और करावो। तब माधो दुबे ने एक माला अष्टाक्षर को और जाप कराये। तब वह श्रीभागवत पुराण शास्त्र सबके अर्थ को जानन लाग्यो। तब माधो दुबे ने राजा दुबे सों कही, आज्ञा होइ तो एक जप और कराजं। तब राजा दुबे ने कही, यह इतनो ही पात्र है। आगे रस उछरेगो।

अनेक संसारमां दुःखी सुखी छे। त्यारे माधो दुबेये राजा दुबेने कछुं, तमे श्रीआचार्य-
लुना सेवक छे। मरि आ भ दुहुःखी छे अना उपर कृपा करे। त्यारे राजा दुबेये
कछुं, तमे कहे, त्यारे माधो दुबेये कछुं, आ काम तभारा आगण भने कहेषुं उचित
नथी। त्यारे राजा दुबेये कछुं, अमारी आज्ञा छे, कहे।

भावप्रकाश—राज दुबे कहे, ग्राह लगाइयो छे, तेनुं कारण अे, लीला
संबधी दैवी नथी। कृपा करी उद्धार थरे।

त्यारे माधो दुबे श्रीठाकुरलुना मन्दिरना द्वार आगण भेसाहीने श्रीआचार्य-
लुनुं स्मरण करावी अष्टाक्षर मंत्रना उपदेश कर्यो। नाम छ पछी अष्टाक्षरनी भाणा
जप करावी त्यारे ते संस्कृत भोलवा लाग्ये। त्यारे माधो दुबेये राजा दुबेने कछुं,
आज्ञा होय तो आने अेक भाणाना जप थीजे करावुं। त्यारे राजा दुबेये कछुं,
अवश्य जप थीजे करावो। त्यारे माधो दुबेये अेक भाणा अष्टाक्षरना थीजे जप
कराव्ये। त्यारे ते श्रीभागवत पुराणशास्त्र अधाना अर्थने जणुवा लाग्ये। त्यारे माधो
दुबेये राजा दुबेने कछुं, आज्ञा होय तो अेक जप थीजे करावुं। त्यारे राजा दुबेये
कछुं, आ अेकषुं पात्र छे। आगण रस उछणथे।

भावप्रकाश—नाहीं करी ताको अर्थ यह, जो-तीसरी माला जपावे तो लीलारस को अनुभव होई । परन्तु लीला संवंधी नाहीं है । इतनो ही याकों बहोत है ।

पाछें राजा दुवे ने माघो दुवे सों कही, जो-तुम अपने मन में यह मति लाइयो, जो-हमने याकों (ऐसो) कियो, तासों यह ऐसो भयो है । यह सब श्रीआचार्यजी की कृपा तें भयो है । हमारो तिहारो स्वरूप तो तुम जानत हों । तब माघो दुवे ने कही, मेरे कहा है ? कर्ता तो श्रीआचार्यजी हैं । पाछें वाकों राज-भोग आरती पाछें महाप्रसाद लिवाये । पाछें तीसरो प्रहर भयो तब माघो दुवे ने वासों कही, जाड, पटेल के चौतरा पर कथा कहो, पोथी हमसों ले जाऊ । तब वह पोथी ले दोऊ भाइन कों नमस्कार करि, पटेल के चौतरा ऊपर बैठि कथा कहन लाग्यो । सो दोय-चारि पटेल देखिकें सगरे पटेल सों जाइ कहे, जो-भट्टजी कथा कहे हैं सो वेगे चलो । तब सगरे पटेल आये । सो इनको कहनो कृपा बलको, सो बहोत सुन्दर कथा कही । तब सगरे पटेलन कही, तुम कथा तो बहोत सुन्दर कहत हो, आगें क्यों न कहै ? तब इन कही, मेरो बड़ो भाई कहतो, तातें मैं नाहीं कहतो । तब सबन नें कही, अब तुमही कथा कह्यो करो । हमारे बड़े भागि हैं, सो ऐसो ब्राह्मन मिल्यो । पाछें सगरे पटेलन मिलिकें

भावप्रकाश—ना करी तेनो अर्थ अ, डे त्रीण माणा जपावे तो लीलारसने अनुभव थाय. परंतु अ लीलारसबंधी नहीं. (अथी) आठवुं ज अने धरुं छे.

पछी राजा दुवेअे माघो दुवेने कछुं, डे तमे तभारा मनभं अेम न लावता, डे अमे आने आवो कर्थे तेथी आ आवो थयो छे. आ अछुं श्रीआचार्यजीनी कृपाथी थयुं छे. अभाइं तभाइं स्वइप तो तमे लखो छे. त्तारे माघो दुवेअे कछुं, भारे शुं छे ? कर्ता तो श्रीआचार्यजी छे. पछी अने राजसोग आर्ति पछी महाप्रसाद लेव-डाव्या. पछी त्रीजे पछार थयो त्तारे माधव दुवेअे अने कछुं, जव, पटेलना चौतरा उपर कथा कछो. पोथी अभाइी पासेथी लध जव. त्तारे ते पोथी लध अने लाधने नम-स्कार करी पटेलना चौतरा उपर जेसी कथा कछेवा लाग्यो. त्तारे जेयार पटले जेधने अंधा पटेलने जध कछुं, डे लट्टल कथा कछे छे ते जट्टी गालो. त्तारे अंधा पटेलो आंव्या. ते आठुं कछेवाठुं कृपाअसठुं ? तेथी अठु सुंदर कथा कछी. त्तारे अंधा पटेलोअे कछुं, तमे कथा तो अठुज सुंदर कछो छे ? पछेलां डेम कछेता न छेता ? त्तारे अेले कछुं, भारे भोटो लाध कछेते तेथी छुं नछेते कछेते. त्तारे अंधाअे कछुं, लवे तमेज कथा कछी करे. अभाशं महान लाग्य छे, डे आवो आक्षलु मथ्यो. पछी अंधा पटेलोअे

पाछें वस्त्र नचे दिचे । एक गाय एक भैंस आछो दूध की संग दें मनुष्य संग करि दिचे । सो लेकैं सब अपने घर आए । सो अपने घरके द्वार पर आए । भावज कों पुकारयो, जो-पटेल के चौतरा पर कथा हू कहि आयो, और दादे को ग्रास हू फेरि ले आयो हूं, अब द्वार खोलो । तब भावज ने किंवाड खोल्यो, इनकों तेज देखि कैं चक्रित ह्वै रही । पाछें बड़े भाई देखे तो इनके सुख पर भगवत तेज विराजत हैं । तब डरपि के कह्यो, भाई ! भीतर आवो । तब ये भावज कों नमस्कार करि कैं कहे, जो-तुमनें मोकों शिक्षा दीनी । सो श्रीठाकुरजी मेरो मनोरथ पूर्ण कियो । पटेल के चौतरा पर कथा हू कहि आयो, और दादे को ग्रास हू फेरि ले आयो । तब भाई, भोजाई दोऊ डरपे । जो-या पर कृपा भगवान की भई है, जो-शाप देइ तो भस्म होइ जायंगे । तब भाई भोजाई ने कही, स्नान करो, कछु खाउ ! तब इन कही, राजादूवे माधो दूवे कों नमस्कार करि आजँ तब कछु करों । तब बड़े भाई ने कही, उनके पास पहले जाइवे को कहा कारन है ? तब इन कही, तुम तो मेरे स्वरूप कों जानत हो, यह सब कृपा तो उनही की भई है । मेरे में कहा है ? तब बड़ो भाई संग चलयो, जो-मोपर कृपा करें तो आछो । सो

लावप्रकाश—डेभके प्राणानु ऋण अहु माथे यडे तारे आपी न शकाय.

पछी वस्त्र नयां आभ्यां. एक गाय, एक भैंस सुंदर दूधनी संग आपी मनुष्य साथे करी दीधां. ते अंधुं लधने पोताने घरे आव्यो. पछी पोताना घरना द्वार उपर आवी लालीने जोलावी डे, पटेलना चौतरा उपर कथा पणु कही आव्यो अने भाप-दादाने आस (डोण) पणु पाछो लध आव्यो छुं; हुवे पारणुं जोलो. तयारे लालीये डमाड जोल्युं. अणुं तेज जोधने यकत थध रही. पछी मोटा लोध जुये तो अना मुअ उपर लगवत तेज भिराजे छे. तयारे उरीने कछुं, लोध ! अंदर आवो. तयारे अे लालीने नमस्कार करीने कहे, डे तमे मने शिक्षा आपी. तेथी श्री-ठाकुरलये भारे मनोरथ पूरणुं डर्या. पटेलना चौतरा उपर कथा पणु कही आव्यो अने दादाने आस पणु डेरी आव्यो. तयारे लोध-लोणध अने उर्यां, डे आना उपर लगवाननी कृपा थध छे. तेथी शाप डेरो तो लस्म थध नधथुं. तयारे लोध-लोणधये कछुं, स्नान डेरो, डंभ आव. तयारे अेषु कछुं, राज हुवे माधो हुवेने नमस्कार करी आयुं तयारे डंभ डरं. तयारे मोटा लोधये कछुं, अेमनी पासे पहेला नवानुं थुं डारणु छे ? तयारे तेरे कछुं, तमे तो भारे स्वइपने जणो छे. आ अंधी कृपा तो अेमनी न थध

दोज भाई आइ राजा दूवे, माधो दूवे कों नमस्कार किये । तब छोटे भाई सब प्रकार कह्यो, सौ रुपया कपड़ा आगें धरें और कह्यो, सौ-मन अन्न है सो राखो । तब माधोदूवे ने कही, अन्न कों बेचि के दाम करो, यह सब श्रीआचार्यजी को है । यामें हमारो तुम्हारो कहा है ? तब राजादुवे ने माधोदुवे सों कही, जो-दुसरे भाई सों यह प्रकार मति कहियो । पाछें बड़े भाई ने विनती करी, जो-जैसे मेरे छोटे भाई पर कृपा कीनी, तैसे मोहू पर करो । मैं तुम्हारी सरनि हों, तब माधोदुवे ने राजादुवे सों कही, जो-यह विनती करत है । तब राजादुवे ने कही, जो-हम तो तुमसों पहले ही कही हती, जो-झार मति उर-झावो । तातें अब तुमकों करना होइ सो याहू कों नाम मात्र सुनाइ देउ । तब बड़े भाई कों न्हवाइ के नाम सुनाये । पाछें अन्न बेचि के दाम किए । पाछें कछुक दिन में श्रीआचार्यजी द्वारिका पधारे । सो सिद्धपुर में रानाव्यास के घर उतरे । सो खबरि राजादुवे माधोदुवे पाई । सो दोऊ भाई कों संग ले, द्रव्य सगरो ले, सिद्धपुर आये । श्री-आचार्यजी कों दण्डोत करि द्रव्य सगरो भेट करि दोऊ भाई की सगरी बात कही । पाछें विनती करी, जो-महाराज ! ये दोऊ भाईन कों आपु नाम सुनाइये । तब श्रीआचार्यजी दोऊ भाई कों नाम सु-

छे. भाराभां शुं छे ? त्यारे भोटो साध साथे गाल्यो. के भारा उपर कृपा करे तो डीक. पछी अन्ने साधये आधी राजा दुवे-माधो दुवेने नमस्कार कर्या. त्यारे नाना साधये अधो प्रकार कह्यो. सो इपीया कपडां आगण धर्या. अने छुं, सो भणु अनाज छे ते राणो. त्यारे माधो दुवेये छुं, अन्नने बेचीने पैसा करे. अे अधुं श्रीआचार्यल्लुं छे. अेभां अभाइं तभाइं शुं छे ? त्यारे राजा दुवेये माधो दुवेने छुं, के पीला साधने आ प्रकार न कहीश. पछी भोटोसाधये विनंती करी, के जेभ भारा नाना साध उपर कृपा करी तेभ भारा उपर करे. हुं तभारी शरणे छुं. त्यारे माधो दुवेये राजा दुवेने छुं, के आ विनंती करे छे. त्यारे राजा दुवेये छुं, के अमे तो तभने पहलां न छुं छुं, के आउ न उलजावता तेथी दुवे तभारे करुं होय तो आने पणु नाम मात्र संलणावी हो. त्यारे भोटोसाधने न्हवडावीने नाम संलणाव्युं. पछी अन्न बेचीने पैसा कर्या. पछी केरलाक द्विपसभां श्रीआचार्यल्लुं द्वारिका पधार्या. त्यारे सिद्धपुरभां राणा व्यासना धरे उतर्या. ते अन्ने राजा दुवे माधो दुवेने भणी, त्यारे अन्ने साधने साथे लधने द्रव्य अधुं लध सिद्धपुर आव्या. श्रीआचार्यल्लुने दंडवत करी द्रव्य अधुं भेट करी अन्ने साधनी अधी वात कही. पछी विनंती करी, के महाराज ! आ अन्ने

नाचे। पाछें आपु द्वारिका पधारे। (पाछें) राजादुवे माधोदुवे, दोऊ भाईन कों अपने संग लै घर आये। सो राजादुवे माधोदुवे के संग करि दोऊ भाई सांचोरा कृतार्थ भए। सो राजादुवे माधोदुवे ऐसे भगवदीय हे। सो इनकी वार्ता कहां ताई कहिये। वार्ता ॥३५॥

भावप्रकाश—और राजादूवे माधोदूवे के निरोध भयो। सो इनके हृदय को अलौकिक भाव है, लीला सम्बन्धी सो क्यो न जाई।

✽ ✽ ✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, उत्तमश्लोकदास सांचोरा ब्राह्मण,
तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

वार्ता-प्रसंग १—सो ये उत्तमश्लोकदास श्रीनाथजी के सेवकन की रसोई करते। सो सबन कों आपु ही परोसते प्रीति सों। सो सगरे वैष्णव महतारि कहि बोलते। ये उत्तमश्लोकदास कों सेवकन के ऊपर ममत्व बहोत हतो। तातें श्रीगुसाईजी इन पर प्रसन्न बहुत रहते।

भावप्रकाश—सो उत्तमश्लोकदास, ईश्वरदूवे लीला में श्रीचन्द्रावलीजी की सखी हैं। सो सात्विक भाव इनमें बहुत। श्रीचन्द्रावलीजी कों और सब सखीन कों प्रीति सों सामग्री अरोगावती। सो एक समें श्रीचन्द्रावली श्रीठाकुरजी और श्री-

लाभने आप नाम संभणावो। त्यारे श्रीआचार्यजीअने अन्ने लाभने नाम संभणाव्युं। पछी पोते द्वारका पधार्या। पछी राजा दुवे माधो दुवे अन्ने लाभने साथे लघ घर आव्या। ते राजा दुवे माधो दुवेना संगथी अन्ने लाभ सांचोरा कृतार्थ थया।

ते राजा दुवे माधो दुवे अवेना भगवदीय हुता। तेभनी वार्ता क्यं सुधी कहीअे।

भावप्रकाश—आ राजा दुवे माधो दुवेने निरोध थयो। ते अेभना हृदयने अलौकिक भाव छे। लीला संभधी ते क्यो न अय।

✽ ✽ ✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुअना सेवक, उत्तमश्लोकदास सांचोरा ब्राह्मण,
तेभनी वार्ताने भाव कहीअे छीअे—

वार्ता-प्रसंग १—अे उत्तमश्लोकदास श्रीनाथअना सेवकेनी रसोइ करता अने अधाने प्रीतिथी पीरसता (पणु) पोतेअे। तेथी अधा वैष्णुवो तेभने महतारी (भाता) कहीने भोलावता। ते उत्तमश्लोकदासअुं सेवकेना उपर ममत्व अहु अ हुतुं। तेथी श्री-गुसांघअे अेना उपर अहु अ प्रसन्न रहेता।

भावप्रकाश—ते उत्तमश्लोकदास, धश्वर हुवे लीलाभां श्रीय द्रावलीअनी सखी छे, अेभनाभां सात्विक भाव थणो छे। श्रीय द्रावलीअ अने अधी सखीअेने

स्वामिनीजी कों अपनी कुंज में पधराए । सो श्रीचन्द्रावलीजी अपने हाथ सों दोऊ स्वरूपन कों परोसत हती । सो ये दोऊ सखीन के मनमें यह गर्व भयो, जो-सगरी सखीन कों नित्य परोसत हैं, सो आजु दोऊ स्वरूप पधारे हैं । तिनहू कों (हम) परोसे तो आछो । सो श्रीचन्द्रावलीजी सों पूछे नाहीं । और दूसरो थार उठाई के चली । इतने में श्रीचन्द्रावलीजी आई । कहे, कहां जात हो ? तव गर्व सों कहं, कहा हम न परोसें ? श्रीठाकुरजी कों । तव श्रीचन्द्रावलीजी कहे, इहां गर्व करे ताको काम नाहीं । भूमि पर गिरो । सो ये दोऊ भूमि पर अनेक जन्म पाए । लीला में इनको नाम सुशीला, एक को नाम मेंना । सो उत्तमश्लोकदास सुशीला को प्रागद्य और ईश्वर दूवे मेंना सखी को प्रागद्य । सो अब गुजरात में गोधरा में दोऊ सांचोरा के जन्में । सो एक कायस्थ की रसोई दोऊ जने करते । सो वह कायस्थ आगरे आयो, देसाधिपति पास । तव ये दोऊ जने आवे । सो श्रीआचार्यजी आगरे पधारे हैं । सो राजघाट पर श्रीयमुनाजी के तीरे सन्ध्या-वंदन करत हते । ता समें उत्तमश्लोकदास और ईश्वर दूवे श्रीयमुनाजी स्नान कों आवे, सो न्हात हते । श्रीआचार्यजी संध्यावंदन करि के यह वचन कृष्णदास सों कहे, जो-

प्रीतिथी सामग्री आरेगावतां । ते अेक सभे श्रीयद्रावलीअे श्रीठाकुरअे तथा श्रीस्वामिनीअेने पोतानी कुंजमां पधराव्यां । त्पारे श्रीयद्रावलीअे पोताना हाथथी अन्ने स्वर्ूपोने पीरसतां हुतां । त्पारे आ अन्ने सषीअेना मनमां अे गर्व थयो, डे अधी सषीअेने नित्य पीरसीअे छीअे तो आ अन्ने स्वर्ूप पधार्यां छे तेभने पणु अ्भे पीरसीअे तो साइं । तेथी श्रीयद्रावलीअेने पूछ्युं नहीं । अ्भे नीअे थाण उठावीने आली । अेटलामां श्रीयद्रावलीअे आवी । कहे, क्यां अब छे ? त्पारे गर्वथी कहे, शुं अ्भे न पीरसीअे श्रीठाकुरअेने ? त्पारे श्रीयद्रावलीअे कहे, अहीं गर्व करे तेनु काम नथी भूमि उपर पडो । ते अन्ने भूमि उपर अनेक जन्म पाभ्या । लीलामां अेभनु नाम 'सुशीला' अेकतुं नाम 'मेंना' ते उत्तमश्लोकदास 'सुशीला' तु प्राकट्य अ्भे धश्वर हुवे 'मेंना' सषीनु प्राकट्य । ते हुवे गुजरातमां गोधरामां अन्ने सांचोराने त्यां जन्म्या । ते अेक कायस्थनी रसोइ अन्ने जणु करता । ते कायस्थ आग्रा आव्यो, देशाधिपति पासे । त्पारे अे अन्ने जणु आव्या । ते सभये श्रीआचार्यअे आग्रा पधार्यां हुता । त्यां राजघाट श्रीजमुनाअेना तीरे संध्यावदन करता हुता । ते सभये उत्तमश्लोकदास अ्भे धश्वर हुवे श्रीयमुनाअे स्नान भाटे आव्या ते न्हाता हुता । त्पारे श्रीआचार्यअे संध्यावदन करीने आ वचन कृष्णदासने कहे, डे

ब्राह्मन होइ के शूद्र की टहेल करनो उचित नाहीं है । शूद्र ब्राह्मन की टहेल करे तो ठीक है । ऐसे श्रीभागवत में कह्यो है । सो यह बात उत्तमश्लोकदास और ईश्वर दुवे मुनि कहें, महाराज ! आप कहें सो सॉच, परन्तु यह पेट के लिये हम शूद्र की चाकरी करत हैं, कहा करें और गुन तो हमारे में है नाहीं, पढ़े नाहीं है । तातें शूद्र की रसोई करि निर्वाह करत हैं । तब श्रीआचार्यजी कहें, हम तुम्हारे ऊपर नाहीं कहें । हम तो अपने सेवकन सों बतरावत हैं । और ईश्वर सबको भरन पोषन करत हैं । विश्वास ईश्वर पर चाहिये । तब दोऊ जने बिनती किये, महाराज ! आप तो शास्त्र की बात कही, परन्तु इहां तो ऐसे हम हैं । सो आप हमकों सेवक करो । हमकों बतावो सो हम करें, जा प्रकार शूद्र की टहेल छूटे । तब श्रीआचार्यजी कहें, तुमहू ब्राह्मन हो, योग्य हो । सेवक कैसे होऊगे ? तब दोऊ जने कहें महाराज ! हम ब्राह्मन काहे के हैं ? ब्राह्मन को कर्म तो हम जानत नाहीं, तातें हमपे कृपा करो, सरनि लेऊ । जो-हमारी कछु बुद्धि उत्तम होइ । तब श्रीवल्लभाचार्यजी कहें, आगे आवो । या प्रकार दोऊ जने कों बुलाई नाम निवेदन कराये । तब दोऊ भाई ने बिनती करी, अब हमकों आज्ञा करो, सो हम करें । तब

प्राज्ञायु थधने शूद्रनी टहेल करनी उचित नथी. शूद्र प्राज्ञायुनी टहेल करे ते ठीक छे. ज्येभ श्रीभागवतमां कछुं छे. ते बात उत्तमश्लोकदास ज्ये धश्वर दुवे सांखणीने कहे, महाराज ! आप कहे ते सायुं. परंतु आप पेटने माटे ज्येभे शूद्रनी चाकरी करीजे छीजे, शुं करे धीजे गुण तो ज्येभारामां छे नहीं. बलुया नथी. तेथी शूद्रनी रसोई करी निर्वाह करीजे छीजे. त्यारे श्रीआचार्यज्ज कहे, ज्येभे तजारा उपर नथी कछुं. ज्येभे तो ज्येभारा सेवकथी बातयित करीजे छीजे. ज्येभे धश्वर पधातुं बरणुपोषणु करे छे. विश्वास धश्वर उपर जेधजे. त्यारे ज्येभे नशुज्ये बिनती करी, महाराज ! आपे तो शास्त्रनी बात कही. परंतु ज्येभे तो ज्येभे ज्येभे ज्येभे छीजे. तेथी आप ज्येभे सेवक करे. ज्येभे ज्येभे ज्येभे ज्येभे छीजे. जे प्रकारे शूद्रनी टहेल छूटे. त्यारे श्रीआचार्यज्ज कहे, तजे पणु प्राज्ञायु छे. योग्य छे. सेवक जेभ थशे ? त्यारे ज्येभे नशु कहे, महाराज ! ज्येभे प्राज्ञायु शेना छीजे ? प्राज्ञायुनुं कर्म तो ज्येभे नशुता नथी. तेथी ज्येभारा उपर कृपा करे. शरणु ले. तो ज्येभारी कंध बुद्धि उत्तम थाय. त्यारे श्रीवल्लभाचार्यज्ज कहे, ज्येभे ज्येभे ज्येभे ज्येभे छीजे. त्यारे ज्येभे नशुज्ये बिनती करी, हुवे ज्येभे ज्येभे ज्येभे ज्येभे छीजे. त्यारे श्रीआचार्यज्ज कहे, तजे तजारा गाम नध,

श्रीआचार्यजी कहें, तुम अपने गाम जाइ माता-पिता सों विदा होइ, गोवर्द्धन परवत पर आइयो, तहां श्रीगोवर्द्धनधर की सेवा करियो । तव दोऊ मिलिकें उह कायस्थ सों लेखो करि, अपनो द्रव्य ले चले । तव उह कायस्थ ने व्होत राखन की कही, महिना हू बढ़ाय देवे की कही, परन्तु रहे नाहीं । तहांते चले, सो गोधरा अपने-अपने घर आये । सो माता-पिता सों कहें, हमकों आज्ञा देऊ तो ब्रज जाई । तव दोऊन के माता-पिता ने कही, कछु दिन रहो, हम हूं संग चलेंगे । सो माता-पिता के मन में यह, जो-ऐसे कहिकें पुत्र कों राखे । सो ऐसे वारह महिना बीते । तव दोऊन ने कही, माता-पिता सों, जो-तुम चलोगे ? वर्ष दिन तो भयो । तव वे कहें, अब चलेंगे । ऐसे करत पाँच वर्ष बीतें । तव उत्तमश्लोकदास तो माता-पिता कों, और कों जताए बिना गोवर्द्धन उठि आये । श्रीनाथजी को दरसन करि श्रीगुसां-ईजी कों दंडवत् करि सगरी वात अपनी कही । तव श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धनधर की रसोई की सेवा दिये । सो सगरे सेवकन कों बहुत प्रीति सों परोसते । सो उत्तमश्लोकदास कों सगरे सेवक महतारी कहिकें बुलावते । वैष्णव ॥३६॥

सो ये श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे । वार्ता ॥३६॥

✽

✽

✽

माता-पिताथी विदाय थध गोवर्द्धन परवत उपर आवजे. त्यां श्रीगोवर्द्धनधरनी सेवा करजे. त्यारे अन्नेये मणीने ते कायस्थथी हिसाण करी पोतानुं द्रव्य लध ने याट्या. त्यारे ते कायस्थे राखवाने अहु कछुं, महीना पणु वधारी आपवानुं कछुं, परंतु रक्षा नहीं. त्यांथी याट्या. ते गोधरा पोत-पोताने धरे आव्या. पछी माता-पिताने कडे, अमने आज्ञा आपो तो ब्रजमां न्धये. त्यारे अन्नेना माता-पिताये कछुं, थोडा दिवस रहे. अमे पणु साथे यादीशुं. ते माता-पिताना मनमां ये, उ अमेम कही पुत्रने राणीये. अमे आर महिना बीत्या. त्यारे अन्नेये माता-पिताने कछुं, उ तमे यालशे ? वर्ष-दिवस तो थयो ? त्यारे ते कडे, हुवे यादीशु. अमे करतां पांय वर्ष बीत्यां त्यारे उत्तमश्लोकदास तो माता-पिताने अने पीअने न्णाय्या बिना गोवर्द्धन याट्या आव्या. श्रीनाथअनां दर्शन करी श्रीगुसांअने दंडवत् करी पोतानी अधी वात कही. त्यारे श्रीगुसांअये श्रीगोवर्द्धनधरनी रसोअनी सेवा आपी. ते अधा सेवठाने अहु प्रीतिथी पीरसता. तेथी उत्तमश्लोकदासने अधा सेवडा महतारी कहीने पोलावता. वैष्णव ॥३६॥

ते श्रीआचार्यअना अये कृपापात्र भगवदीय हुता

वार्ता ॥३६॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, ईश्वर दूवे साँचोरा ब्राह्मन,
तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—इनको लीला को स्वरूप तो उपर कहे हैं । और आगरे में सेवक जा प्रकार भए हैं, सोउ उपर कहें हैं । उत्तमश्लोकदास आये, ताके छ महिना पीछे ईश्वर दूवे के माता-पिता ने देह छोड़ी । तब ईश्वर दूवे गिरिराज आइ, श्रीनाथजी को दरसन करि, श्रीगुसाँईजी कों दंडवत् करि, सगरो प्रकार कहें । जो-हम और उत्तमश्लोकदास संग सेवक भये हैं । और यही आज्ञा श्रीआचार्यजी की हैं, जो-श्रीगोवर्द्धनधर की सेवा करियो । सो अब आज्ञा करौ सो करें । तब श्रीगुसाँईजी कहें, उत्तमश्लोकदास श्रीनाथजी की रसोइ और सेवकन को परोसना करत हैं, सो तुम दोऊ बेगि मिलके सेवा करो । सो दोऊ सेवा करन लागे ।

वार्ता—प्रसंग १—पाछें कछुक दिन में उत्तमश्लोकदास की देह छूटी, तब श्रीगुसाँईजी ईश्वर दूवे को नाम उत्तमश्लोकदास राखे । सो ये उत्तमश्लोकदास श्रीगोवर्द्धनधर की रसोई करते, और सगरे सेवकन को परोसना करते । और अपनी गांठि ते घृन अधिक परोसते ।

भावप्रकाश—सो यातें, जो-सेवक अपने नेग पावें तामें मेरी कहा

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजना सेवक, धरद्वर दूवे साँचोरा ब्राह्मण, तेमनी वार्तानो भाव कहिये छीये—

भावप्रकाश—अमनुं दीवानुं स्वरूप तो उपर कह्युं छे. अने आआमांज प्रकारे सेवक थया छे ते पणुं उपर कह्युं छे. उत्तमश्लोकदास आव्या तेना छ महिना पछी धरद्वर दूवेनी माता-पिताये देह छोडी. तयारे धरद्वर दूवेये गिरिराज आवी श्रीनाथजनां दर्शन करी, श्रीगुसांइजने दंडवत करी अधा प्रकार कह्यो. हे, अमे अने उत्तमश्लोकदास संग सेवक थया छीये. अने अने आज्ञा श्रीआचार्यजनी छे, हे श्रीगोवर्द्धनधरनी सेवा करजे. तेथी हुवे जम आज्ञा करे तेम करीये. तयारे श्रीगुसांइज कहे, उत्तमश्लोकदास श्रीनाथजनी रसोइ अने सेवकाने पीरसवानी. सेवा करे छे. तेथी तमे अने नददी मणीने सेवा करे. तेथी अने सेवा करवा लाग्या.

वार्ता—प्रसंग १—पछी केदाक दिवसमां उत्तमश्लोकदासनी देह छुटी. तयारे श्रीगुसांइजये धरद्वर दूवेनुं नाम उत्तमश्लोकदास राख्युं. ते उत्तमश्लोकदास श्रीगोवर्द्धननाथजनी रसोइ करता अने अधा सेवकाने पीरसता. अने पोतानी गांठि धी भंगावी वधारे पीरसता.

भावप्रकाश—ते अथी, हे सेवक पोतानो नेक पामे तेमां भारी शी सेवा

सेवा है ? कछ अपनी गांठि तें अपनी सत्ता को परोसों तो सेवा है, या भाव सों परोसते । और सामग्री में घृत परोसते ताको कारन यह, जो-घृत तें सगरे शरीर में बल होइ तो प्रभु की सेवा भली भाँति सों करें, हारे नांही । तातें अधकी में घृत परोसते ।

तातें सगरे सेवक महतारी कहिकें बोलते । सो यह बात श्रीगुसाईंजी सों वैष्णवन ने कही । सो सुनि के श्रीगुसाईंजी उत्तम-श्लोकदास के उपर प्रसन्न होइ कें पास बुलाइ कें पूछे, तुम अपनी गांठि ते घृत मँगाइ सेवकन कों घृत (क्यो) परोसत हो ? सगरे सेवक अपने नेग तो पावत हैं ? तब उत्तमश्लोकदास ने कही, महाराज ! सेवक कों सेवा में बहोत श्रम होत हैं, परबत पर चढत हैं, उतरत हैं । तातें श्रीठाकुरजी कौ मन खेद पावे । तातें अधिक घृत लिये तें शरीर में बल होय तो सेवक भली भाँति सेवा करे । यह बात सुनि के श्रीगुसाईंजी बहोत प्रसन्न भये । जो-इनकों सेवकन में ऐसी वात्सल्यता है । तब श्रीगुसाईंजी कहें, उत्तमश्लोकदास ! तुम कछ मेरे पास मांगो । मैं तुम्हारे ऊपर बहोत प्रसन्न भयो हों । तब उत्तमश्लोकदास कहें, महाराज ! मैं तिहारे ऊपर कबहुँ अप्रसन्न न होऊँ, यह मैं माँगत हों । तब श्रीगुसाईंजी कहें, ऐसेई होइगो । तब सगरे यह सुनि के कहे, यह इनमें कहा मांग्यौ ? जीव प्रसन्न

छे ? कंध पोतानी गांठथी पोतानी सत्तातुं पीरसुं तो सेवा छे. अे भावथी पीर-सता. अने सामग्रीमां धी पीरसता तेतुं कारणु अे, डे धीथी अंधा शरीरमां अण थाय. तो प्रभुनी सेवा सखीभांतिथी करे, थोडे नहोँ. तेथी विशेषमां धी पीरसता.

तेथी अंधा सेवके भाता कहीने ओसावता. अे वात वैष्णवाअे श्रीगुसांघलने कही. ते सांखणीने श्रीगुसांघलअे उत्तमश्लोकदास उपर प्रसन्न थयनि पासे ओसावीने पूछयुं, तमे तभारी गांठथी धी मंगवी सेवकेने धी (केम) पीरसो छे ? अंधा सेव-केने पोतानो नेक तो भजे छे. त्तारे उत्तमश्लोकदासे कछुं, महाराज ! सेवकने सेवामां अहुं न श्रम थाय छे परबत पर चढे छे उतरे छे. तेथी श्रीठाकुरलुं मन अेद पावे. तेथी अधिक धी देवाधी शरीरमां अल थाय तो सेवक सारी रीतिथी सेवा करे. अे वात सांखणीने श्रीगुसांघल अहुं प्रसन्न थया, डे अाने सेवकेमां आवी वात्सल्यता छे ? त्तारे श्रीगुसांघल कहे, उत्तमश्लोकदास ! तमे कंध भारी पासे मांगो. हुं तभारा उपर अहुं प्रसन्न थयो छुं. त्तारे उत्तमश्लोकदास कहे, महाराज ! हुं तभारा उपर त्तारेथ अप्रसन्न न थाँ अे हुं मांगुं छुं. त्तारे श्रीगुसांघल कहे, अेमज थरो. त्तारे सघणा

भयो तो कहा, अप्रसन्न भयो तो कहा ? प्रभु प्रसन्न भये चाहिये । तब एक वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, महाराज ! यह उत्तमश्लोकदास ने कहा मांग्यो ? जो-मैं मदा (तिहारे ऊपर) प्रसन्न रहूँ । तब श्रीगुसांईजी कहैं, यह बात तुम उत्तमश्लोकदास सों पूछो, जो-यह कहा मांग्यो ? तब सगरे वैष्णव मिलि के उत्तमश्लोकदास सों पूछ्यो, जो-यह तुम कहा मांग्यो ? मैं प्रसन्न भयो रहूँ । तब उत्तमश्लोकदास ने कही, मैं याते मांग्यो, जो-अब या समें श्रीगुसांईजी प्रसन्न हैं, और कोई समें सेवामें अपराध परे अप्रसन्न होई, तब मेरो मन बिगरे तो ठिकानो मेरो न रहे । यातें मांग्यो, जो-आप अप्रसन्न होई तोज मेरो मन न बिगरेगो । यह बात सुनि के सगरे वैष्णव प्रसन्न भये । तब श्रीगुसांईजी सगरे वैष्णवन सों कहैं, जो-उत्तमश्लोकदास बहोत पौहोच के मांग्यो । अब याको बिगार कबहू न होइगो । सो उत्तमश्लोकदास ऐसे भगवदीय हे । सदा एक रस प्रीति श्रीठाकुरजीमें, श्रीगुसांईजीमें, सेवकनिमें, वैष्णवनमें, निबाही । तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिये । वार्ता ॥३७॥

✽

✽

✽

अब श्रीवाचार्थजी महाप्रभुन के सेवक, वासुदेव लकड़ा, नारस्वत ब्राह्मन, सिंहनंद के बासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—वासुदेवदास श्रीनंदरायजी के मुख्य खवास है । नंद-

ये सांलणीने कहे, ऐखे आ शु मांग्युं ? एव प्रसन्न थयो तो शुं (अने) अप्रसन्न थयो तो शुं ? प्रभु प्रसन्न थया जेधये । त्यारे ऐक वैष्णुवे श्रीगुसांईजीने बिनती करी, महाराज ! उत्तमश्लोकदासने आ शुं मांग्युं ? के हु सदा (तभारा उपर) प्रसन्न रहुं ? त्यारे श्रीगुसांईजी कहे, आ वात तमे उत्तमश्लोकदासने पूछो, के आ शुं मांग्युं ? त्यारे अथा वैष्णुवोअे मणीने उत्तमश्लोकदासने पूछ्युं, के तमे आ शुं मांग्युं ? के हुं प्रसन्न थयो रहुं । त्यारे उत्तमश्लोकदासने कहुं, में अथी मांग्युं, के हुवे आ समये श्रीगुसांईजी प्रसन्न छे । अने केध समये सेवामां अपराध परे, अप्रसन्न थाय त्यारे भाइं मन अगउे तो भाइं ठेकायुं न रहे । अथी मांग्युं, के आप अप्रसन्न थाय तोपणु भाइं मन न अगउे । अे वात सांलणीने अथा वैष्णुवो प्रसन्न थया त्यारे श्रीगुसांईजी अथा वैष्णुवाने कहे, के उत्तमश्लोकदासने अहु पछोयिने (उत्तमोत्तम) मांग्युं । हुवे अेना अगाउ इदीय नही थाय । ते उत्तमश्लोकदास अेवा भगवदीय हुता । सदा अेकरस प्रीति श्रीठाकुरजीमां श्रीगुसांईजीमां सेवकामां वैष्णुवोमां नलावी । तेथी अेमनी वार्ता कथां सुधी कहीअे ? वार्ता ॥३७॥

✽

✽

✽

रायजी जहाँ जाते तहाँ नन्दरायजी के वस्त्र-पात्र सब संग ले चलते । लीला में इनको नाम 'मनसुखा' है । सो वासुदेवदास सिंहनंद में एक सारस्वत ब्राह्मण के घर जनमें । सो सारस्वत के द्रव्य बहुत हतो, सो वासुदेवदास वरस तेरह के भये । सो हाकिम ने दण्ड सिंहनंद में तें सब पें तें लियो । सो वासुदेवदास के पिता पर दोई हजार को दंड कियो । तब वासुदेवदासने पिता सों कह्यो, जो-हाकिम को दंड काहेको देउ ? हाकिम सों लरेंगे । तब वासुदेवदास के पिता ने कही, जो-हाकिम सों कैसे बरि आवेंगे ? तब वासुदेवदास ने कही, या बात की मैं जानी, मोको वताइ दीजो । सो हाकिम के प्यादे चार आये । तब वासुदेवदास ने उनसों कह्यो, हम दंड कौन बात को देई ? जो-हाकिम सों कहो, जो-लरनो होइ तो लरैं । दंड तो हम न देंगे । तब वे चारों प्यादे गारीगरा दैन लागें, जो-हम तो तोको पकरि कें ले चलेंगे । तब वासुदेवदास चारों के हथियार छीन के ऐसो धक्का दिये जो-वे चारों दूरि गिरि पड़े । (पाछें) उह हाकिम पास जाइ पुकारे, वासुदेवदास ब्राह्मण हमको माग्यो, और हथियार छीन लीने । और कह्यो, हाकिम सों लरेंगे ।

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रबुजना सेवक, वासुदेवदास छकडा, सारस्वत ब्राह्मण सिंहनंदना वासी, तेमनी वार्ताना लाव कहीअे छीअे—

लावप्रकाश—वासुदेवदास श्रीनंदरायजना मुप्य अवास छे. नंदरायजना जयां जता त्यां श्रीनंदरायजनां वस्त्र-पात्र अधुं संग लधने यावता. लीलाभां अेमतुं नाम 'मनसुखा' छे. ते वासुदेवदास सिंहनंदनां अेक सारस्वत ब्राह्मणना धरे जन्म्या. ते सारस्वतने द्रव्य धरुं हतु. ते वासुदेवदास वर्ष तेरना थया. त्यारे हाडेमे सिंहुनंदनांथी अधानी पासे दंड लीधो. वासुदेवना पिताना उपर अे हंअरनेा दंड कर्यो. त्यारे वासुदेवदासे पिताने कछुं, के हाडेमने दंड शा भाटे हो ? हाडेमथी लडीशु. त्यारे वासुदेवदासना पिताने कछुं, के हाडेमथी डेम अण आवीशु ? त्यारे वासुदेवदासे कछुं, अे वातने हु समजश. मने अतावी हेजे. पछी हाडेमना सिपाध यार आन्थ. त्यारे वासुदेवदासे अेमने कछुं, अमे दंड कथ वातनेा आपीअे ? तेथी हाडेमने कहे, अे लडवु होय तो लडे. दंड तो अमे नहीं आपीअे. त्यारे ते यारे सिपाध गागो आपना लाग्या. के अमे तने पकडीने लध जधशुं. त्यारे वासुदेवदासे यारेनां हथियार अूंटीने तेमने अेवो धक्का दीधो, के ते यारे हु जध पडया. पछी ते हाडेम पासे जध पोकार्या. वासुदेवदास ब्राह्मणे अमने मार्या. अने हथियार अूंटी लीधां. अने कछु, हाडेमथी लडीशुं. त्यारे हाडेम कोथमां लरी गयो.

तब हाकिम क्रोध में भरि गयो चालीस प्यादे पठाये । और कह्यो, याहि समें वा ब्राह्मन कों बांधि लावो । सो चालीस प्यादे कों आवत देख, वासुदेवदास दौरि कें चालीसन के भीतर पैठे । काहू की पाग, काहू के हथियार ले, काहूकों मुक्की, काहू कों लात सों मारि सवन कों धरती में गिराये । (और) हथियार छीन एक एक पाग में पांच पांच दस दसकों बांधि के हथियार सबके ले घर आये । सो सगरे हाकिम पास जाई पूकारें, जो- एक बरस तेरह चौदह को बालक है, सो हमारे सबके हथियार छीन के सबकी मुस्क बांध्यो । तातें वह बालक कछु मनुष्य नाहीं है, कोऊ देवता है । तातें तुम सम्हारे रहियो । तब हाकिम ने पांचसे मनुष्य आछे अपने संग के पठाये । और मनमें हाकिम हूँ डरग्यो । सो द्वार के आगे गली में एक छकड़ा आड़े कराय मारग बंद करयो । और वह छकड़ा पर हजार मन पत्थर की सिला आड़ी दे आपु हथियार लेकें बीस मनुष्यन सों बैठयो । सो पांचसे प्यादे देखि वासुदेवदास फेंट बांधि एक बड़ो लह लियो । ताकों सगरे लोह सों मढ्यो, मन दोड़ को भारि । सो लै, दौरि के प्यादेन के बीच आइ लह फिरायो । सो एक बार फिराये में पचास साठ एक के उपर एक गिरे । या प्रकार जैसे कुंभार को चाक

यादीस सिपाही भोडल्या. अने कहुं, आ न समे ते ब्राह्मणने बांधी लावो. पछी यादीस सिपाह्याने आवता जेध वासुदेवदास दौडीने ते यादीसना अहर पेडा दौधनी पाग, दौधनुं हथियार लध दौधने मुठी दौधने लातथी मारी अधाने धरतीमां पाडी नाभ्या. अने हथियार छीणुवी अक अक पागमां पांच-पांच दस-दसने बांधीने हथियार अधाना लध धर आब्या. अटवे अघाय हडिम पासे नधने पोकार्या. क अक वर्ष तेर-चौदने आलक छे तेणे अमारा अधानां हथियार छीणुवीने अधाने मुश्कटाट बांध्या. तेथी ते आलक दौध मनुष्य नथी, दौध देवता छे. तेथी तमे सावधान रहेजे. त्यारे हडिमे पोतानी साथेनां पांचसे मनुष्य सारां जेधने भोडल्यां. अने मनमां हडिम पणु उर्यो. तेथी तेणे दरवाज आगण गलीमां अक छकडा आडो करावीने मार्ग अध कर्यो. अने ते छकडा उपर हजार मणु पत्थरनी शिला आडी दध पोते हथियार लधने बीस मनुष्योनी साथे भेठो. त्यां पांचसे सिपाहीअने जेध वासुदेवदासे डेंट बांधी अक भोटो लह लीधो. तेने अघेथी लोढाथी मढ्यो. मणु अनेो बारे थयो. ते लध दौडीने सिपाह्यानां वयमां आनी लह डेरव्यो ते अकवार डेरववामां पचास-साठ अकना उपर अक पड्या, ते अ प्रकारे नम कु बारनेो याक डरे ते प्रकारे दश-पंद्रह डेरा डेरी अघा सिपाह्याने पाड्या. पछी कोधना

फिरे ता प्रकार दस पंद्रह फेरा करि सगरे गिराये, प्यादे । पाछें क्रोध के आवेश में वासुदेवदास भरि गये । सो हाकिम जहाँ रहत हतो तहाँ दौरे । सो आड़े छकड़ा हजार मन को देखि ताकों एक हाथ को धक्का दे उठाए । सो छकड़ा और पत्थर दूरि जहाँ तहाँ जाय परे । छकड़ा टूक टूक भयो । और छकड़ा पत्थरन को सोर भयो । सो बीस प्यादेन सों हाकिम भाजि जाइ सरस्वती नदी में पेरि दूरि भाजि गयो । सो वासुदेवदास हाकिम के चोतरा तोरि गिराय पाछें अपने घर आवे । पाछें रात्रिकों हाकिम अपने घर आई सिंहनंद के भले मनुष्य दोई चारि सराफ बजाज बुलाइ कें कह्यो, तुम वासुदेवदास के घर जाय समाधान करि आवो । जो-हम चूकें, तुमसों दंड लिये । अब तुम कहो तो हाकिमी करों, कहो तो और गाम जाऊं । अब जन्म भरि तुमकों कछु न कहूंगो । तब वे हाकिम की सगरी बात कहे । तब वासुदेवदास कहे, हमारे कहा हाकिम सों वैर है ? आवो रहो । तब हाकिम रह्यो । दूसरे दिन वासुदेवदास सों मिलिकें कह्यो, तुम मनुष्य नाहीं हो, कोई देवता हो ? सो मो पर दया राखियो । काम काज होइ सो कहियो । और उह छकड़ा उठाय के डारि दियो, ता दिनतें सगरे गाम के लोग इनकों वासुदेवदास छकड़ा कहेते । सो वासुदेवदास को गर्व बहोत बढ्यो, काहू कों गाम में मन

आवेशमां वासुदेवदास बराध गया, ते हाकिम ज्यां रहेतो हुतो त्यां होडया. ते हुअरभयुने छकडे आडो जेधने तेने जेक हाथथी धकडा दध ठाव्यो, ते छकडे अपने पत्थर दुर ज्यां त्यां जध पडया. छकडे टुक टुक थध गयो, अपने छकडा पत्थरने आवान थयो ते वीस सिपाधज्यो साथे हाकिम भागी जध सरस्वती नदीमां तरी दुर लागी गयो, पछी वासुदेवदास हाकिमने योंतरे तोडी पाडी पछी पोताना धरे आव्या. पछी रात्रिये हाकिमे पोताना धरे आवी सिंहनंदना जे यार सारा साराइ कापडीआने पोलावीने कथुं, तमे वासुदेवदासना धरे जध समाधान करी आवो, ते अपने यूकया, तमारथी दंड लीधो. हुवे तमे कहे तो हाकिमी कडं, कहे तो पीज गाम जठं. हुवे जन्मभर तमने कंध नही कहुं. ते भाटे तेमथे हाकिमनी पधी वात कही. त्यारे वासुदेवदास कहे, अमारे शुं हाकिमथी वेर छे ? आवो रहे. त्यारे हाकिम रह्यो. पीज दियसे वासुदेवदासने मणीने कथुं, तमे मनुष्य नथी डोध देवता छे. ते मारा उपर दया राखजे. काम-दाज होय ते कहेजे. अपने ते छकडा ठावीने नापी दीधो. ते दियसथी पधा गामनां दोडो तेमने वासुदेवदास छकडा कहेता. पछी वासुदेवदासने गर्व बहु वधयो. होधने गाममां मनमां लावे

में लावे नाही । गारी दे, तो सब चुपके रहतें । सो एक समें श्रीआचार्यजी थाने-स्वर पधारे । सो कृष्णदास सरस्वती में न्हात हते, ता समें भागजोगतें वासुदेवदास न्हाइवे सिंहनंद सों आये । सो वासुदेवदास जल उछालतें कृष्णदास मेघन पास आये । तब कृष्णदास मेघन ने कही, तू कौन हैं ? छीटा देत आयो ? तातें रंच दूरि स्रधी रीतिसों न्हा । सबकों छीटा तेरे परत हैं । यह कृष्णदास के वचन सुनि-के वासुदेवदास कृष्णदास के मारन कों हाथ उठायो । सो कृष्णदासकों श्रीआ-चार्यजी की कृपा को बल, सो वासुदेवदास के दोऊ हाथ पकरि लिये । सो ये वासुदेवदास बहुतेरो बल किये, परन्तु हाथ छूट्यो नाहीं । तब हार मन में माने । पाछे पूछे, तुम कौन हो ? तब कृष्णदास मेघन ने कही, मैं तो श्रीवल्लभा-चार्यजी साक्षात् पुरुषोत्तम प्रगटे हैं तिनको सेवक हों । पाछे कृष्णदास मेघन ने पूछे तुम कौन हो ? तब वासुदेवदास कहै, मैं सारस्वत ब्राह्मन हों । सो मेरे मनमें बड़ो गर्व हो, जो-मो बराबरि बल काहू में नाहीं । मैं पांचसो प्यादे सहित हाकिम कों हरायो, छकड़ा हजार मन को डारि दियो । सो मेरे हाथ तुम सह-जमें पकरे मैं बहुतेरो बल कियो छूट्यो नाहीं । तातें तुम्हारो ऐसो प्रभाव है, सो तुम्हारे स्वामी कैसे होइंगे ? सो मैं तुम्हारे संग चलिके श्रीआचार्यजी के दरसन

नहीं. गाण दे तो अधा रुप थछ रहेता. पछी जेक समय श्रीआचार्यजी थानेस्वर पधार्या. त्यारे कृष्णदास सरस्वतीमां न्हाता हुता. ते समये लागनेगथी वासुदेवदास सिंहनंद न्हावा आवा. ते-वासुदेवदास जल उछालतां कृष्णदास मेघन पासे आवा. त्यारे कृष्णदास मेघने कथ्युं, तुं ठाणु छे ? छांटा देतो आवा ? तेथी रंचक दूर सीधी रीतथी न्हा. तारा छांटा अधाने उडे छे. जे कृष्णदासनां वचन सांभानीने वासुदेवदासे कृष्णदासने मारवाने हाथ उठाव्यो. ते कृष्णदासने तो श्रीआचार्यजीनी कृपानुं भल हुतु. तेथी वासुदेवदासना अनने हाथ पकडी लीधा. त्यारे वासुदेवदासे धरुय भल कथुं परंतु हाथ छुट्यो नहीं. त्यारे मनमां हार मानी. पछी पूछ्युं, तमे डाणु छे ? त्यारे कृष्णदास मेघने कथ्युं, हुं तो श्रीवल्लभाचार्यजी साक्षात् पुरुषोत्तम प्रकटया छे तेमने सेवक छु. पछी कृष्णदास मेघने पूछ्युं, तमे डाणु छे ? त्यारे वासुदेवदास कहे, हुं सारस्वत ब्राह्मणु छु, मारा मनमां अहु गर्व हुतो के मारी अराबरी भल ठाछमां नथी. भे पांचसे सिपाछ सहित हाकेमने हराव्यो. छकडो हजार भणुना नाणी दीधो, ते मारा हाथ तमे सहजमां पकडया. मे धरुय भल कथुं, छुट्यो नहीं. तेथी तमारे आवो प्रभाव छे तो तमारा

करूंगो। तब कृष्णदास हाथ छोड़ि दियो। दोऊ जने न्हाइ के श्रीआचार्यजी पास आये। तब श्रीआचार्यजी दामोदरदास सों कहै, देख, दमला! भगवदीय जाको हाथ पकरे ताकों संसार तें पार उतारे। सो कृष्णदास सहज में वासुदेवदास कों हाथ पकरे, ताके भाग की कहा है? सो वासुदेवदास आय श्रीआचार्यजी कों दण्डोत करि, पाछें विनती करी, जो—महाराज! सरनि लीजिये। तब श्रीआचार्यजी कहे, तुमकों गर्व बहोत मन में रहत है, सो सरनि हमारी आँके कहा कगेगे? हमारी सरन तें दैन्यता होत है। तब वासुदेवदास कहैं, महाराज! अब मोकों गर्व नहीं चाहिये। गर्व किये विगार है। अहंकारी कों भगवदीय खूँ नहीं। कृष्णदास को अपराध कियो-हतो। परन्तु भगवदीय मेरे हाथ पकरे, तातें गर्व गयो। अब आपु कृपा करो, जातें मेरो जन्म सुफल होई। और आपको प्रागट्य हम सारिखे अधमन के उद्धार अर्थ है। तब श्रीआचार्यजी वासुदेवदास कों नामनिवेदन कराये, और कहैं, तेरो नाम वासुदेवदास छकड़ा। आगे गर्व में छके रहतें, अब भगवद् रस में छके रहोगे, तातें छकड़ा। और पांचों इंद्रिय विषयकी छटो मन बस करेगो, तातें तेरो नाम छकड़ा और ऐश्वर्य (१) वीर्य (२) यश (३) श्री (४) ज्ञान

स्वामी देवा हुशे? तेथी हु तमारी साथे यादीने श्रीआचार्यजीनां दर्शन करीश। त्यारे कृष्णदासे हाथ छोडी दीधा। अन्ने जसु न्हाधने श्रीआचार्यजी पासे आब्या। त्यारे श्रीआचार्यजी दामोदरदासने कहे, देख दमला! भगवदीय जने हाथ पकडे तेने ससारथी पार उतारे। ते कृष्णदासे सहजमां वासुदेवदासने हाथ पकडयो तेना लाग्यनु शुं कहीये? त्यारे वासुदेवदासे आवी श्रीआचार्यजीने दंडवत करी पछी विनंती करी के, महाराज! मने शरणे लो। त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, तमने मनमां गर्व धरुओ रहे छे तेथी अमार शरणे आवीने शुं करेश? अमारा शरणुथी दीनता थाय छे। त्यारे वासुदेवदास कहे, महाराज! हुवे मने गर्व नथी अछतो। गर्व कर्याथी अगाड छे। अहंकारीने भगवदीय सूत्रता नथी। कृष्णदासने अपराध कर्यो हुतो परन्तु भगवदीये मारा हाथ पकडया तेथी गर्व गयो। हुवे आप कृपा करे। जथी मारे जन्म सकल थाय अने आपनुं प्राकट्य अमारा जेवा अधमोना उद्धार अर्थे छे। त्यारे श्रीआचार्यजीये वासुदेवदासने नाम-निवेदन कराव्युं। अने कहे, ताइ नाम वासुदेवदास छकड़ा। आगण गर्वमां छकयो रहेतो हुवे भगवद् रसमां छकया रहेशो। तेथी छकड़ा। अने पांचे इंद्रिय विषयनी छटो मन तेने बस करीश। तेथी ताइ नाम छकड़ा अने अश्वर्य (१) वीर्य (२) यश (३) श्री

(५) वैराग्य (६) छोड़ो धर्म श्रीठाकुरजी में रहत हैं, सो तेरे में रहेंगे । तातें नाम छकड़ा । या प्रकार कृपा करि आसीर्वाद दे सगरे धर्म हृदय में श्रीआचार्यजी धरि दिये । सो मानसी सेवा फल रूप में मन लागि गयो । तातें भगवद् सेवा इनके उपर नाहीं पधराये । तब वासुदेवदास ने कही, महाराज ! सिंहनन्द पधारिये, तो मेरे माता-पिता कों सरनि लीजिये । तब श्रीआचार्यजी कहैं, हमकों सरस्वती नदी उलंघनी नाहीं । तातें सिंहनन्द न जाइंगे । तातें जा, जाकी श्रद्धा सेवक होन की होय तिनकों लाइयो, और सों मति कहियो । तब वासुदेवदास श्रीआचार्यजी कों दंडौत करि, सिंहनंद आई माता-पिता सों कहे, श्रीवल्लभाचार्यजी थानेस्वर पधारे हैं । सो साक्षात् भगवान को स्वरूप हैं । तातें तुम सेवक होउ । मैं उनको सेवक ह्वै के आयो । तब मातापिता ने कही, हम काल्हि सबेरे चलेंगे । आजु तो खानपान करि चुके । यह बात कहे सो इनके परोस में सास बहू रहति हती, क्षत्रानी हती । सो सास को नाम 'गोरजा' बहू को नाम 'समराई' । सो इन यह बात सुनी, (तब) वासुदेवदास सों पूछें, तुम माता-पिता कों सबेरे कहाँ ले जाऊगे ? तब वासुदेवदास जा प्रकार सेवक भये हते, सो सब प्रकार कहैं, जो-मैं ऐसे अहंकारी दुष्ट हतो, सो मोकों अंङ्गीकार किये । तब सास-बहू

(४) ज्ञान (५) वैराग्य (६) छोड़े धर्म श्रीठाकुरजीमां रहे छे ते ताराभां रहेसे, तेथी नाम छकड़ा. या प्रकारे कृपा करी आशीर्वाद दध श्रीआचार्यजीये अधा धर्मो हृदयमां धरी दीधा, तेथी मानसी सेवा इलइपमां मन लागी गयुं. तेथी भगवद्-सेवा अमना उपर नही पधरावी. त्यारे वासुदेवदासे कहुं, महाराज ! सिंहनंद पधारे तो मारा मातापिताने शरथु लो त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, अमने सरस्वती नदी उलंघनी नथी. तेथी सिंहनंद नही गधये. तेथी न, ननी श्रद्धा सेवक थवानी होय तेने लावळ, भीजने न कहीश त्यारे वासुदेवदास श्रीआचार्यजीने दंडवत करी सिंहनंद आनी माता-पिताने कहे, श्रीवल्लभाचार्यजी थानेश्वर पधार्या छे ते साक्षात् भगवाननु स्वरूप छे. तेथी तमे सेवक थाव. हुं अमनो सेवक थध आये छु. त्यारे मातापिताये कहुं, अमे काले सवारे यादीथुं. आज तो खानपान करी चुक्या. अ वात कही. ते अमना पडोशमां सासु-बहु रहतां हुतां, क्षत्राणी हुतां. ते सासुनु नाम गोरजा, बहुनु नाम समराध. ते अमथे या वात सांभणी त्यारे वासुदेवदासने पूछयुं, तमे माता-पिताने सवारे कथां लध नशे ! त्यारे वासुदेवदासे के प्रकारे सेवक थया हुता ते अधी प्रकार कहुये उ हुं आवो अहंकारी

ने कही, सबेरे हमहू कों ले चलियो । पाछें यह बात सब सिंहनंद में लोगन ने सुनी, जो-थानेस्वर में श्रीवल्लभाचार्यजी बड़े महापुरुष पधारें हैं । जिन को सेवक वासुदेवदास छकड़ा ऐसो अहंकारी भयो । सो सगरो गाम दरसन करन कों थानेस्वर आयो । तामें कितनेक नाम पाये, कितनेक समर्पन किये । थानेस्वर गाम में हूं बहोत जने सेवक भये । सो सबेरे वासुदेवदास माता-पिता कों और सास-बहू कों सरस्वती में न्हवाई श्रीआचार्यजी के पास आय दरसन करि, दंडौत किये । पाछें वासुदेवदास ने विनती करी, महाराज ! ये माता-पिता हैं, इनकों सरनि लीजिये । और ये सिंहनंद में सास बहू रहति हैं, या बहू को धनि मरि गयो । सो ये दोऊ आपकी सरनि हैं । तब श्रीआचार्यजी सास बहू कों नाम सुनाइ निवेदन कराये । और वासुदेवदास के माता-पिता कों नाम सुनाए । तब वासुदेवदास ने श्रीआचार्यजी महाप्रभुनसों विनती करी, महाराज ! माता-पिता कों ब्रह्मसंबंध कराईये । तब श्रीआचार्यजी कहें, इनको इतनो ही अधिकार है । इनसों निवेदन न सवेगो । तेरे संबंधखैं इनको उद्धार करि दियो । तब सासने विनती करी, महाराज ! अब हमकों कहा कर्तव्य है ? सो आप कृपा करिके कहिये । तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम भगवद् सेवा करो । तब सास ने विनती करी, महाराज ! अब हमकों सेवा

हुए हुतो ते मने अंगीकार कर्यो । त्यारे सासु-बहुअे कछुं, सवारे अमने पणु लख यावले. पछी अे वात सिंहनंदना अंधां माणुसोअे सांखणी. उ थानेस्वरमां श्री-वल्लभाचार्यअे मोटा महापुरुष पधार्यां छे. जेमने सेवक वासुदेवदास छकड़ा आवे। अहंकारी हुतो ते थयो तेथी अंधु गाम दर्शन करवाने थानेस्वर आण्युं. तेमां टेटलांक नाम पाभ्यां, टेटलाडे समर्पणु कर्युं. थानेस्वर गाममां पणु धणु जणु सेवक थया. पछी सवारे वासुदेवदास मातापिताने अने सासु-बहुने सरस्वतीमां न्हवडावी श्रीआचार्यअेनी पासे आवी दर्शन कर्यां, दंडवत कर्यां. पछी वासुदेवदासे विनती करी, महाराज ! आ माता-पिता छे. अेमने शरणे दो. अने आ सिंहनंदमां सासु-बहु रहे छे. ते आ वहुनो धणी मरी गयो, ते अने आपनी शरणे छे. त्यारे सासु-बहुने नाम संखणावी निवेदन कराण्युं. अने वासुदेवदासना माता पिताने नाम संखणाव्युं. त्यारे वासुदेवदासे श्रीआचार्यअे महाप्रभुने विनती करी, महाराज ! माता-पिताने ब्रह्मसंबंध करावो. त्यारे श्रीआचार्यअे कहे, अेमने अेटदोअे अधिकार छे. अेमनाथी निवेदन नहीं संधाय. तारा संबंधथी अेमने उद्धार करी दीधो. त्यारे सासुअे विनती करी, महाराज ! हुवे अमने शुं कर्तव्य

पधराई दीजिये । तब श्रीआचार्यजी कहैं, तुम सरस्वती नदी में जाऊ, तहां तुमकों भगवद् स्वरूप प्राप्ति होइगो, सो लै आवो । तब सास सरस्वती पर आई, देखें तो जल के किनारे एक ठाकुर विराजे हैं । सो देखिके बहोत प्रसन्न अई, लाय कें श्री-आचार्यजी कों दियो । तब श्रीआचार्यजी पञ्चामृत कराई कें सास बहू के माथे पधराए । श्रीठाकुरजी को नाम 'श्रीदामोदरजी' धरे । पाछें कहे, घर जाई कें सेवा करो । तब सास बहू घर आई । सास चतुर हती, सो सेवा करें । बहू भोरी हती सो ऊपर की परचारगी करती । सो सास बहू की वार्ता आगे कहेंगे । तहां इनको लीला को स्वरूप भाव कहेंगे । पाछें वासुदेवदास सों श्रीआचार्यजी कहैं, अब तुम माता-पिता कों लेके घर जावो । तब वासुदेवदास ने कही, मेरो मन आपके संग रहिवे को है । तब श्रीआचार्यजी कहैं, अब तो तुम माता-पिता को घर ले जाइकें गाम में रहो । पाछें माता-पिता की देह कलुक दिन में छूटेगी, तब तू हमारे घर में आई रहियो । तब वासुदेवदास दंडवत् करि माता-पिता कों-सिंहनंद में ले गये । श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा कों पधारे ।

वार्ता-प्रसंग १—और एक सभमें श्रीआचार्यजी अडेल में बिरा-

छे ? ते आप कृपा करीने कहे। त्पारे श्रीआचार्यजी कहे, तमे भगवद्सेवा करो. त्पारे सासुअे विनती करी, महाराज ! हुवे अमने सेवा पधरावी आपो. त्पारे श्रीआचार्यजी कहे, तमे सरस्वती नदीमां अव त्यां तमने भगवद्स्वरूप प्राप्त थसे ते लध आवो. त्पारे सासु सरस्वती उपर आवी, जुअे तो जलना किनारे अेक ठाकुर बिराजे छे. ते जेधने अहु प्रसन्न थध. लावीने (ते स्वरूप) श्रीआचार्यजीने आप्यु. त्पारे श्रीआचार्यजीअे प्रसन्न थध तेने पञ्चामृत स्नान करावीने सासु-वहुना माथे पधराव्या. श्रीठाकुरजीनु नाम 'श्रीदामोदर' धर्यु. पछी-कहे, धर जधने सेवा करो. त्पारे सासु-वहु धर आवी. सासु यतुर हती, ते सेवा करे. वहु बोणी हुती ते उपरनी परचारगी करती. ते सासु वहुनी वार्ता आगण कहीथु. त्यां अेमनां लीलानां स्वरूप भाव कहीथु पछी वासुदेवदासने श्रीआचार्यजी कहे, हुवे तमे माता पिताने लधने धर अव. त्पारे वासुदेवदासे कथुं, माइ मन आपनी साथे रहेवानु छे त्पारे श्रीआचार्यजी कहे, लभण्यां तो तमे माता-पिताने धर लध जधने गाममां रहे। पछी माता-पितानी देह थोडा दिवसमां छटथे त्पारे तू अमारा धरमां आवी रहेज. त्पारे वासुदेवदास दंडवत् करी माता पिताने सिहनंद लध गया अने श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा माटे पधार्या.

वार्ता-प्रसंग २—अेक सभय श्रीआचार्यजी अडेलमां बिराजता हुता. त्पारे

जत होते। सो एक दिन भंडारी ने श्रीआचार्यजी से कही, महाराज! आज भंडार में सीधो सामान कछु नहीं है। तब श्रीआचार्यजी एक सोने की कटोरी श्रीठाकुरजी के मन्दिर में तें लाइ दिये। और कहें, आजु के लायक राजभोग पर्यन्त की सामग्री ले आवो, अधिकी मति लाइयो। यह बनिया के यहां कटोरी गहनें धरि आइयो। तब भंडारी सोने की कटोरी ले बनिया के इहां धरि, राजभोग की सामग्री सब लायो। पाछें सामग्री करि श्रीठाकुरजी को भोग धरि समयानुसार भोग सराय आरती करि अनोसर कराये। महाप्रसाद श्रीयमुनाजी में पधराई दियो। और बाकी गायन को खवाइ दियो। आप परिकर सगरे सेवक सहित भूखे ही बैठे रहे।

भावप्रकाश—सो यह वैष्णव को मिक्षा दिये, जो—श्रीठाकुरजी की वस्तु होई सो वैष्णव को लेनो नहीं, ठाकुर अरोगें। यह रीति सबको सिखाये।

और यहां सिंहनंद के सगरे वैष्णव मिलि के श्रीआचार्यजी की भेट की मोहौर तीस हती सो वासुदेवदास छकड़ा को दीनी। जो—ये श्रीआचार्यजी को पहाँचती होइ, तो आछो। तब वासुदेवदास वैरागी को भेष धरि, सगरी मोहौर को लाख के गोला मालिग्राम जैसे करि, चंदन चढ़ावत चले। सो सिंहनंद के चले धानेस्वर रहै, वैष्णव

अक द्विसे लंडारी अ श्रीआचार्यजीने कछु; महाराज! आज ल डारमा सीधु—सामान दंड नहीं। तारे श्रीआचार्यजीने अक सोनानी डटारी श्रीठाकुरजीना मन्दिरमांथी लावी दीधी। अने कछु, आजना लायक राजभोग पर्यंतनी सामग्री लछ आवो। विशेष न लावतो पाछियाने त्यां आ डटारी घण्टे धरी आवणे। तारे ल डारी सोनानी डटारी लछ पाछियाने त्यां धरी राजभोगनी सामग्री पथी लछ आव्यो। पछी सामग्री धरी श्रीठाकुरजीने भोग धरी समयानुसार भोग सरायी आरति धरी अनोसर कराया। महाप्रसाद श्रीयमुनाजीमां पधरावी दीधो अने पाछी गायन पवडावी दीधो। पोते, परिकर पथा सेवक सहित भूख्या न भेसी रह्या।

भावप्रकाश—आम वैष्णवने शिक्षा आपी, डे श्रीठाकुरजीनी वस्तु होय ते वैष्णवे नहीं लेवी ठाकुर आरोगे अ रीति पथाने शिष्यी।

अने अही सिंहनंदना सवणा वैष्णव भणीने श्रीआचार्यजीनी लेनी महार त्रीसालुती ते वासुदेवदास छकड़ाने आपी। (कछु) जे आ श्रीआचार्यजीने पहुंचती थाय तो हीक। तारे वासुदेवदास वैरागीना बेष धरी पथी महारने लापने गाणा शादीयाम जेम धरी अदन अदावता यादया। ते सिंहनंदना यादया धानेधर रह्या।

पधराई दीजिये । तब श्रीआचार्यजी कहैं, तुम सरस्वती नदी में जाऊ, तहां तुमकों भगवद् स्वरूप प्राप्ति होइगो, सो लै आवो । तब सास सरस्वती पर आई, देखें तो जल के किनारे एक ठाकुर विराजे हैं । सो देखिके वहीत प्रसन्न अई, लाय कें श्री-आचार्यजी कों दियो । तब श्रीआचार्यजी पञ्चामृत कराई कैं सास बहू के माथे पधराए । श्रीठाकुरजी को नाम 'श्रीदामोदरजी' धरे । पाछें कहे, घर जाई कें सेवा करो । तब सास बहू घर आई । सास चतुर हती, सो सेवा करें । बहू भोरी हती सो ऊपर की परचारगी करती । सो सास बहू की वार्ता आगे कहेंगे । तहां इनको लीला को स्वरूप भाव कहेंगे । पाछें वासुदेवदास सों श्रीआचार्यजी कहैं, अब तुम माता-पिता कों लेके घर जावो । तब वासुदेवदास ने कही, मेरो मन आपके संग रहिवे को है । तब श्रीआचार्यजी कहैं, अब तो तुम माता-पिता को घर ले जाइकें गाम में रहो । पाछें माता-पिता की देह कछुक दिन में छूटेगी, तब तू हमारे घर में आई रहियो । तब वासुदेवदास दंडवत् करि माता-पिता कों सिहनंद में ले गये । श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा कों पधारे ।

वार्ता-प्रसंग १—और एक समें श्रीआचार्यजी अडेल में विरा-

छे ? ते आप कृपा करीने छे। त्पारे श्रीआचार्यजी छे, तमे भगवद्सेवा करे। त्पारे सासुअे विनती करी, महाराज ! हुवे अमने सेवा पधरावी आपो। त्पारे श्रीआचार्यजी छे, तमे सरस्वती नदीमां अब त्यां तमने भगवद्स्वरूप प्राप्त थशे ते लध आवो। त्पारे सासु सरस्वती उपर आवी, जुअे तो जलना किनारे अेक ठाकुर बिराजे छे। ते जेधने अहु प्रसन्न थध। लावीने (ते स्वरूप) श्रीआचार्यजीने आभ्युं। त्पारे श्रीआचार्यजीअे प्रसन्न थध तेने पयाभृत स्नान करावीने सासु-वहुना माथे पधराव्या। श्रीठाकुरजीनु नाम 'श्रीदामोदरजी' थयुं। पछी-कहे, धर जधने सेवा करे। त्पारे सासु-वहु धर आवी। सासु चतुर हती ते सेवा करे। वहु बोणी हती ते उपरनी परचारगी करती। ते सासु वहुनी वार्ता आगण कहीथु। त्यां अेमनां लीलानां स्वरूप भाव कहीथु पछी वासुदेवदासने श्रीआचार्यजी छे, हुवे तमे माता पिताने लधने धर अब। त्पारे वासुदेवदासे कहुं, माइ मन आपनी साथे रहेवानु छे त्पारे श्रीआचार्यजी छे, हुमणुं तो तमे माता-पिताने धर लध जधने गाममां रहे। पछी माता-पितानी देह थोडा दिवसमां छूटथे त्पारे तू अमारा धरमां आवी रहेजे। त्पारे वासुदेवदास दंडवत् करी माता पिताने सिहनंद लध गया अने श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा मोटे पधार्या।

वार्ता-प्रसंग २—अेक समय श्रीआचार्यजी अडेलमां बिराजता छता। त्पारे

जत हते। सो एक दिन भंडारी ने श्रीआचार्यजी से कही, महाराज! आज भंडार में सीधो सामान कछु नहीं है। तब श्रीआचार्यजी एक सोने की कटोरी श्रीठाकुरजी के मन्दिर में तें लाइ दिये। और कहें, आजु के लायक राजभोग पर्यन्त की सामग्री ले आवो, अधिकी मति लाइयो। यह बनिया के यहां कटोरी गहनें धरि आइयो। तब भंडारी सोने की कटोरी ले बनिया के इहां धरि, राजभोग की सामग्री सब लायो। पाछें सामग्री करि श्रीठाकुरजी को भोग धरि समयानुसार भोग सराय आरती करि अनोसर कराये। महाप्रसाद श्रीयमुनाजी में पधराई दियो। और बाकी गायन को खवाइ दियो। आप परिकर सगरे सेवक सहित भूखे ही बैठे रहे।

भावप्रकाश—सो यह वैष्णव को शिक्षा दिये, जो—श्रीठाकुरजी की वस्तु होई सो वैष्णव को लेनो नाही, ठाकुर अरोगें। यह रीति सबको सिखाये।

और यहां सिंहनंद के मगरे वैष्णव मिलि के श्रीआचार्यजी की भेट की मोहौर तीस हती सो वासुदेवदास छकड़ा को दीनी। जो—ये श्रीआचार्यजी को पहोचती होइ, तो आछो। तब वासुदेवदास वैरागी को भेष धरि, संगरी मोहौर को लाख के गोला मालिग्राम जैसे करि, चंदन चढ़ावत चले। सो सिंहनंद के चले थानेस्वर रहै, वैष्णव

अेक दिवसे भंडारीअे श्रीआचार्यअेने कछु; महाराज! आज भंडारमां सीधु—सामान कछु नहीं. त्पारे श्रीआचार्यअेने अेक सोनानी कटोरी श्रीठाकुरअेना मंदिरमाथी लावी दीथी. अने कछु; आजना लायक राजभोग पर्यं तनी सामग्री लभ आवो. विशेष न लावतो. पाछियाने त्यां आ कटोरी धरेछे धरी आवजे. त्पारे भंडारी सोनानी कटोरी लभ पाछियाने त्यां धरी राजभोगनी सामग्री पथी लभ आव्यो. पछी सामग्री करि श्रीठाकुरअेने भोग धरी समयानुसार भोग सरावी आति करि अनोसर कराया. महाप्रसाद श्रीयमुनाअेमां पधरावी दीथो अने पाकी गायने पवडावी दीथो. येते परिकर पथा सेवको सहित भूख्या न भेसी रह्या.

भावप्रकाश—आम वैष्णवने शिक्षा आपी, के श्रीठाकुरअेनी वस्तु होय ते वैष्णुवे नहीं लेवी ठाकुर आरोगे अे रीति पथाने शिपवी.

अने अहीं सिंहनंदा सवणा वैष्णुव भणीने श्रीआचार्यअेनी भेटनी महार त्रीस हती ते वासुदेवदास छकड़ाने आपी. (कछु) के आ श्रीआचार्यअेने पहोचती थाय तो हीक. त्पारे वासुदेवदास वैरागीने वेध धरी पथी महारने लापने गोणो शासीआम जेम करी. अदन यदावता याध्या. ते सिंहनंदा याध्या थानेस्वर रह्या.

के घर महाप्रसाद लिये । थानेस्वर के चले दिल्ली रात्रि रहै । वैष्णव के घर महाप्रसाद लिये । दिल्ली के चले मथुरा रहै, वैष्णव के घर महाप्रसाद लिये । मथुरा के चले आगरे रात्रि रहै, वैष्णवन के घर महाप्रसाद लिये । मार्ग में चोर ठग मिले, सो जाने, जो-बैरागी है, सालिग्राम पूजत जात है ।

भावप्रकाश—वासुदेवदास के सरीर में बल बहोत हतो, ऐसो क्यों किये ? सो यातें, जाने जो-यह श्रीआचार्यजी को द्रव्य है, कहूं मार्ग में सोई जाइ, तब कोऊ चोरी करें । सन्मुख तो काहू को सामर्थ्य नाहीं, जो-ले सके । और गुरु की सेवार्थ, सालिग्राम की रीति करि ले गयो हो, सो भगवद् अपराध हू मन में नाहीं लाये । सो यातें, जो गुरु को कार्य करनो, कोई प्रकार सों होइ, गुरु सेवा बने । तासों भगवद् अपराध बाधक नाहीं । भगवद् सेवा में गुरु अपराध सों डरपत रहेनो, यह जताये ।

पाछें आगरे सों चले सो दोई दिन चबेना सों काम चलाये । तीसरे दिन, तीसरे प्रहर, जा दिन श्रीआचार्यजी भूखे बैठे रहैं, ता दिन अड़ेल आये । सो गाम बाहिर आई लाख को गोला फोरि, मोहौर काढ़ि आये, श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों दियो, मोहौर तीस आगे धरी । महाप्रभुन सों बिनती किये, महाराज ! सिंहनंद

वैष्णवोना धरे महाप्रसाद दीधो. थानेस्वरना यादया द्दिल्ली रात्रि रखा. वैष्णवोना धरे महाप्रसाद दीधो. दीधलीना यादया मथुरा रखा. वैष्णवोना धरे महाप्रसाद दीधो. मथुराना यादया आगरा रात्रि रखा. वैष्णवोना धरे महाप्रसाद दीधो. मार्गमां चोर-ठग भग्या ते जणु, के बैरागी छे. शादीग्राम पूजता जय छे.

भावप्रकाश—वासुदेवदासना शरीरमां जण धलुं हुतुं. पछी जेम डेम कथुं ? ते जेथी, जणु के आ श्रीआचार्यजुनुं द्रव्य छे. कंठ रस्तामां सूध जय तयारे ढाध चोरी करे. सन्मुख तो ढाधनी सामर्थ्य नथी के लध शक. जने गुरुनी सेवा माटे शादीग्रामनी रीति करीने लध गया हुता ते भगवद्-अपराध पणु मनमां न लाव्या. ते जेथी के गुरुनुं कार्य करवुं. ढाध प्रकारथी थाय गुरुसेवा जने. तेथी भगवद् अपराध बाधक नही. भगवद्सेवामां गुरु-अपराधथी डरतुं रहेवुं. जे जणु०यु.

पछी आगराथी यादया ते जे द्वियसे जणु-ज्येणुथी काम जला-जुं. त्रीज द्वियसना त्रीज प्रहरे जे द्वियसे श्रीआचार्यजु लूज्या अपराजु रखा हुता ते द्वियसे अडेस आव्या. ते गाम अहुर आनी जामने गोगो डेही भहोर ढाढी आव्या. ते

के वैष्णव की भेट हैं। तब श्रीआचार्यजी कहें, वासुदेवदास ! इतनी मोहौर तू कैसे लायो ? मार्ग में चोर ठग बहोत हैं ? तब वासुदेवदास ने कही, महाराज ! यह बात तो मैं न कहूंगो, आपु खीजोगे सुनिके। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहै, हम तेरे उपर प्रसन्न होंगे, न खीजेंगे। जैसे लायो सो कहि दे। तब वासुदेवदास ने सब प्रकार कह्यो, जो-लाख को गोला करि, चंदन चढ़ावत आयो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहै, ऐसे न करिये। भगवद् स्वरूप को आकार करि पाछें अन्यथा करनो पड़े। तब वासुदेवदास ने कही, महाराज ! कछु प्रतिष्ठा करी न हती। लाख को गोला बांध्यो हतो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें, तऊ ऐसे न करिये। पाछें भंडारी कों बुलाय तीस मोहौर श्रीआचार्यजी महाप्रभु दिये। और कहें, मंगलातें ले सेन पर्यत की सामग्री ले कटोरी छुड़ाइ ले आवो। पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु सेन पर्यत पहोंचि श्रीठाकुरजी कों अनोसर कराय आप भोजन किये। तां पाछें श्रीअक्काजी आदि सगरे परिकर भोजन किये। वासुदेवदास कों महाप्रसाद की पातर धरी, सगरे सेवक वैष्णव महाप्रसाद लिये। पाछें तीस मोहौर की पोहोंच लिखि, श्री-

श्रीआचार्यजी महाप्रभुने आपी. तीस महौर आगण धरी. महाप्रभुने विनंती करी, महाराज ! सिंहन दना वैष्णवोनी भेट छे. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, वासुदेवदास ! आरती महौर तू केवी रीते लाव्यो ? मार्गमां चोर-ठग घण्टा छे. त्यारे वासुदेवदाससे कहुं, महाराज ! ये बात तो हुं नहीं कहुं. आप सांभलीने भीजे. त्यारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे, अमे तारा उपर प्रसन्न थछशुं. नहीं भीछये. जेवी रीते लाव्यो ते कही दे. त्यारे वासुदेवदाससे अघे प्रकार कह्यो, के साभनो गोणो करी यंदन यढावतो (२) लाव्यो छुं. त्यारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे, अमे न करीअे. लगवत्स्वपना आकार करी पडी भीजे प्रकार करवो पडे. त्यारे वासुदेवदाससे कहुं, महाराज ! कछु प्रतिष्ठा करी न हती. साभनो गोणो बांध्यो हतो. त्यारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे, तो पणु अमे न करीअे. पडी भंडारीने भोसावीने तीस महौर श्रीआचार्यजी महाप्रभुअे आपी अने कहे, मंगलाथी लछ सेन पर्यतनी सामग्री लछ वाउडी छाडावीने लछ आवो. पडी श्रीआचार्यजी महाप्रभुअे सेनपर्यत पहोंची श्रीठाकुरजीने अनासर करावी पोते भोजन क्युं. ते पडी अक्काजी आदि अघे परिकरे भोजन क्युं. वासुदेवदासने महाप्रसादनी पातर धरी. अघे सेवक वैष्णवोअे महाप्रसाद लीघो. पडी तीस महौरनी पहोंच लपी आपी. श्रीआचार्यजी महाप्रभुअे भीजे द्विसे वासुदेवदासने विदाय

आचार्यजी महाप्रभु वासुदेवदास को दूसरे दिन बिदा किये। सो वासुदेवदास कलक दिन में सिंहनन्द आय पहुँचे, पत्र वैष्णवन को दिये। तब नगरे वैष्णव प्रसन्न होय, वासुदेवदास सो पूछयो, जो-तुम इतनी दूर मोहौर कैसे ले गये? राह तो निबहत ऐसी नहीं। ठग चोरन को डर है बहोत ही? तब वासुदेवदास उन वैष्णवन आगे सब प्रकार कहे। तब नगरे वैष्णव वासुदेवदास की सराहना करन लागे।

वार्ता-प्रसंग २—और एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के वड़े पुत्र श्रीगोपीनाथजी आगरे पधारे। सो श्रीगुसाईंजी की भेट सो मोहौर हती सो वैष्णव श्रीगोपीनाथजी को दीनी। इतने ही में सिंहनंद सो वासुदेवदास छकड़ा आगरे आये। ता समय श्रीगोपीनाथजी ने कही, जो-ऐसो कोई वैष्णव है? जो-ये सो मोहौर अड़ेल पहुँचावे। तब वासुदेवदास ने कही, जो-महाराज! मोको देउ, मैं पहुँचाऊँगो। तब श्रीगोपीनाथजी श्रीगुसाईंजी को पत्र लिखि दियो। और सो मोहौर वासुदेवदास छकड़ा को दीनो। तब वासुदेवदास वैसे ही लाख को गोला करि चंदन चढ़ावत वैरागी भेष सो चले। मारग में चबेनी को लेह। सो तीसरे दिन अड़ेल आई लाख में ते मोहौर निकासी। श्रीगुसाईंजी को आई दंडवत करि श्रीगोपीनाथजी

ध्या। ते वासुदेवदास डेस्राइ दिवसमां सिंहनंद आवी पहुँचाया। पत्र वैष्णवोने आध्या। त्यारे अधा वैष्णवोअे प्रसन्न थथ वासुदेवदासने पूछयुं, के तमे अेरती दूर भडोर डेवी रीते लथ गया? रस्तो तो धरे अेवो नथी। ठग चोरनो डर छे धखो न। त्यारे वासुदेवदासे ते वैष्णवो आगण अधो प्रकार कखो, त्यारे अधा वैष्णवो वासुदेवदासना पभाणु करवा लाग्या।

वार्ता-प्रसंग २—वणी अेक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभुना मोटा पुत्र श्रीगोपीनाथजी आगरे पधार्या। ते श्रीगुसांइजीने लेटनी सो भडोर हती ते वैष्णवोअे श्रीगोपीनाथजीने आपी। अेरतामा सिंहनंदथी वासुदेवदास छकड़ा आगरे आध्या ते समये श्रीगोपीनाथजीअे कखुं, के अेवो कोइ वैष्णव छे, के आ सो भडोर अउल पहुँचावे। त्यारे वासुदेवदासे कखुं, के भडोरान 'मने हो लु' पहुँचाहीग। त्यारे श्रीगोपीनाथजीअे श्रीगुसांइजीने पत्र लथी दीयो। अने सो भडोर वासुदेवदास छकडाने आपी त्यारे वासुदेवदासे तेवी न रीते लापनो गाणो डरी अंदन चढ़ावतां वैरागी बेषथी आध्या। मार्गमां यना यवेणाने ले। पथी नीज दिवसे अउल आवी लापमांथी भडोर डेवी। श्रीगुसांइजी आगण आवी दंडवत करी श्रीगोपीनाथजीने पत्र दने सो

कों पत्र देके, सौ मोहौर आगे धरी । तव श्रीगुसांईजी पत्र कों वांचि मोहौर संभारि भंडारी कों दिये । पाछें वासुदेवदास कों महाप्रसाद लिवाये । ता पाछें दूसरे दिन मोहौरन की पहुँच आप श्रीगुसांईजी लिखि वासुदेवदास कों दिये । तव वासुदेवदास श्रीगुसांईजी कों दंडवत करि अडेल तें चले । सो तीसरे दिन आगे आय श्रीगुसांईजी को पत्र श्रीगोपीनाथजी कों वासुदेवदास दिये । तव श्रीगोपीनाथजी वह पत्र वांचि के वासुदेवदास ऊपर वहीत प्रसन्न भये । पाछें पूछे, जो-इतनी मोहौर मार्ग में अकेले कैसे तुम ले गये वासुदेवदास ! सो प्रकार तो हमसों कहो ? तव वासुदेवदास सब प्रकार श्रीगोपीनाथजी सों कहें । तव श्रीगोपीनाथजी वासुदेवदास सों कहे, जो-ऐसे कबहू न करिये । तव वासुदेवदास छकड़ा चुप है रहे ।

भावप्रकास—सो यातें, जो-यह मर्यादा की आज्ञा है, जो-दोष लगे । गुरु के कार्यार्थ यामें कहा दोष है । या प्रकार वासुदेवदास एक पुष्टि कार्य सर्वोपरि जानते । तातें या प्रकार सों सेवा करी ।

वार्ता-प्रसंग ३—और एक समय श्रीगुसांईजी श्रीमथुरा में विराजते हते । सो श्रीठाकुरजी सों राजभोग सों पहुँचि आप भोजन करि बैठक में पधारे । तव आगे में रूपचन्दनन्दा श्रीगुसां-

महोर आगण धरी. त्पारे श्रीगुसांछल्ये पत्रने वांच्येने महोर गण्णने लंडारीने आपी. पछी वासुदेवदासने महाप्रसाद लेवडाव्ये. ते पछी भील द्विसे महोरानी पछोय श्रीगुसांछल्ये पोते लपी वासुदेवदासने आपी. त्पारे वासुदेवदास श्रीगुसांछल्येने दंडवत करी अउलथी आल्या. ते त्रील द्विसे आथा आपी श्रीगुसांछल्येने पत्र वासुदेवदासे श्रीगोपीनाथल्येने आप्ये. त्पारे श्रीगोपीनाथल्येने पत्रने वांच्येने वासुदेवदास उपर अहु प्रसन्न थया. पछी पूछ्युं, आरटी महोर मार्गमां अेकला देवी रीते तमे लछ गया, वासुदेवदास ! ते प्रकार तो अमने कछो ? त्पारे वासुदेवदासे अथे प्रकार श्रीगोपीनाथल्येने कछो. त्पारे श्रीगोपीनाथल्येने वासुदेवदासने कछे, के अेम अ्यारेथ न कर्युं. त्पारे वासुदेवदास छकडा चुप थछ रह्या.

भावप्रकाश—ते अेथी, के अे मर्यादानी आज्ञा छे के दोष लागे. गुडना कार्यार्थ अेमां शेो दोष छे ? अे प्रकारे वासुदेवदास अेक पुष्टि कार्य सर्वोपरि आण्युता. तेथी आ प्रकारे सेवा करी.

वार्ता-प्रसंग ३—वणी अेक समय श्रीगुसांछल्ये श्रीमथुरामां भिराजता हुता. त्पारे श्रीठाकुरल्येने राजभोगथी पछोंच्यी पोते लोअन करी भेदमां पधार्थी. त्पारे आग-

ईजी के सेवक हैं, तिनकों श्रीगुसांईजी पत्र लिखें । तामें बसंतपंचमी की सामग्री मँगाए । पाछें वासुदेवदास कों बुलाइ कें, पत्र देके श्रीगुसांईजी कहे, जो—इतनी सामग्री आगरे तें रूपचन्दनन्दा सों लेके सांझ तांइ आइ रहियो । और एक टोकरा महाप्रसाद मँगाइ, एक चादर की झोली बनाई, वासुदेवदास के गरे में डारि महाप्रसाद तामें भराये । तब वासुदेवदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो—महाराज ! जोड़ा पहेरे महाप्रसाद कैसे लेतो जाऊं ? तब श्रीगुसांईजी कहैं, तुमकों दोष नहीं, श्रीठाकुरजी की सेवार्थ जात हौ, सो जोड़ा कों पहेरे ही आनन्द सों प्रसाद लेत चले जइयो । तब वासुदेवदास प्रसाद लेते ही मथुरा तें चले । सो आगरे में जाइ के रूपचन्दनन्दा के घर गए । ता समय रूपचन्दनन्दा महाप्रसाद ले हाथ धोवत हते । सो वासुदेवदास छकड़ा कों देखि भगवत—स्मरन करि, घरमें कहै, बड़ो हांडा धरि रसोई चढ़ावो । तब वासुदेवदास ने कही, रसोई होयगी तहां तांई मैं न रहूंगो । पत्र बांचि मोकों सामग्री लिवाय देऊ, अवही मथुरा जाऊंगो । तब रूपचन्दनन्दा श्रीगुसांईजी को पत्र माथे चढ़ाई, बांचि के अपने भाई सों कहै, जो—घर में जितनो अनसखड़ी महाप्रसाद होय सो सब एक टोकरा में ले 'छारछू' दरवाजे

रामां इपयं दनंदा श्रीगुसांभ्रुता सेवक हुता. तेभने श्रीगुसांभ्रुत्ये पत्र लभ्ये. तेभां वसत पंचमीनी सामग्री मंगावी. पछी वासुदेवदासने जोलावीने पत्र आपीने श्रीगुसांभ्रु कहे, के आरती सामग्री आगराथी इपयं दनंदा पासेथी लभने सांज सुधी आवी रहेजे. अने अके छापडुं महाप्रसादसुं मंगावी अके आरती जोलावी अनावी वासुदेवदासना गणाभां नाभी महाप्रसाद तेभां लर्थे. तयारे वासुदेवदासे श्रीगुसांभ्रुने विनंती करी, के महाराज ! जेडा पहरीने महाप्रसाद केम लेता जे ? तयारे श्रीगुसांभ्रु कहे, तभने दोष नहीं. श्रीठाकुरजीनी सेवा भाटे जव छे तेथी जेडाने पहरीने जे आनन्दथी प्रसाद लेता आख्या जजे. तयारे वासुदेवदास प्रसाद लेतां लेतांज मथुराथी आख्या. ते आगराभां जधने इपयं दनंदांना धरे गया. ते समये इपयं दनंदा महाप्रसाद लभ लाथे घेता हुता. ते वासुदेवदास छकडाने जेधने लगवत्सभरणु करी घरभां कहे, भेटो हांडा धरी रसोइ चढ़ावो. तयारे वासुदेवदासे कछुं, रसोइ थरे त्यां सुधी हुं नही रहुं. पत्र बांची भने सामग्री अपावी हो. लभणुं जे मथुरा जधश. तयारे इपयं दनंदाये श्रीगुसांभ्रुता पत्र माथे चढ़ावी वांचीने पोताना लार्थने कहे, के घरभां जेडलो अनसखड़ी महाप्रसाद होय ते अघे अके टोकराभां लभ 'छारछू' दरवाजे जध असेजे. हुं

जाई बैठियो, मैं बजार में होइ आवत हों। तब रूपचन्दनन्दा वासुदेवदास को बजार में आई वसंत लायक सुन्दर वस्त्र आदि सामग्री लेके देन लागे। तब वासुदेवदास ने कही, मेरो हाथ प्रसादी है, तातें तुम मेरी पीठि सों बांधि देऊ। तब रूपचन्दनन्दा वासुदेवदास की पीठि सों सब सामग्री बांधि, पत्र लिख के दिये। वासुदेवदास के संग छारछू दरवाजे आय, भाई सों महाप्रसाद को टोकरा ले वासुदेवदास की झोली भरि दीनी, पाछें विदा करिके दोऊ भाई घर आये। और वासुदेवदास महाप्रसाद लेत आगरे सों चले, सो तीसरे पहर भये श्रीगुसांईजी पोढ़ि उठि के मुख धोइके गादी पर विराजे हते, ताही समय वासुदेवदास आय ठाढ़े भये। पाछें श्रीगुसांईजी सों विनती किये, जो-महाराज ! मेरो हाथ प्रसादी है, और सामग्री मेरी पीठि पर बांधि हैं। तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न होइ आपु उठि के वासुदेवदास की पीठि सों सामग्री खोलि लिये। पाछे रूपचन्दनन्दा को पत्र ले बांधि के श्रीगुसांईजी प्रसन्न भये। पाछे श्रीगुसांईजी वासुदेवदास सों श्रीमुखते कहें, जो-वासुदेवदास ! तेरे लिये महाप्रसाद की पातर ढांकि राखी है। सो भीतर जाई महाप्रसाद ले। तब वासुदेवदास न्हाइ के महाप्रसाद लिये। पाछें सगरी सामग्री श्रीगुसांईजी सिद्ध करि राखे। सवेरे वसन्तपंचमी हती, सो उत्सव

पञ्चमी थयने आपुं छुं. तयारे इपयं दनंदा वासुदेवदासने पञ्चमी थयने आपु वसंत लायक सुंदर वस्त्र आदि सामग्री लयने देवा लाग्या. तयारे वासुदेवदासे कछुं, भारे हाथ प्रसादी छे तथी तभे भारी पीठि थि बांधी दे. तयारे इपयं दनंदाये वासुदेवदासनी पीठि थि अथी सामग्री बांधी, पत्र लयने आपु. वासुदेवदासनी साथे छारछू दरवाजे आपु लयथी महाप्रसादने टोकरे लय वासुदेवदासनी जाली लयरी दीथी. पछी विदाय करिने पन्ने लय घर आन्या अने वासुदेवदास महाप्रसाद लेता आगराथी गय्या. ते नीजे प्रहर थयो तयारे श्रीगुसांइज थोदी उठीने मुअ थोइने गादी उपर विरान्या हुता तेज समये वासुदेवदास आपुने उला रया. पछी श्रीगुसांइजने विनंती करी, के महाराज ! भारे हाथ प्रसादी छे अने सामग्री भारी पीठि उपर बांधी छे. तयारे श्रीगुसांइज प्रसन्न थय आप उठीने वासुदेवदासनी पीठि सामग्री थोदी लीथी. पछी इपयं दनंदाने पत्र लय बांधीने श्रीगुसांइज प्रसन्न थया. पछी श्रीगुसांइज वासुदेवदासने श्रीमुखथी कले, के वासुदेवदास ! तारा भारे महाप्रसादनी पातर ढांकी राखी छे. ते अंदर नय महाप्रसाद ले. तयारे वासुदेवदासे न्हाइने महाप्रसाद लीथे. पछी अथी सामग्री श्रीगुसांइ-

ईजी के सेवक हैं, तिनकों श्रीगुसांईजी पत्र लिखें । तामें बसंतपंचमी की सामग्री मँगाए । पाछें वासुदेवदास कों बुलाइ कें, पत्र देके श्रीगुसांईजी कहे, जो-इतनी सामग्री आगरे तें रूपचन्दनन्दा सों लेके सांझ तांइ आइ रहियो । और एक टोकरा महाप्रसाद मँगाइ, एक चादर की झोली बनाई, वासुदेवदास के गरे में डारि महाप्रसाद तामें भराये । तब वासुदेवदास ने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो-महाराज ! जोड़ा पहेरे महाप्रसाद कैसे लेतो जाऊं ? तब श्रीगुसांईजी कहैं, तुमकों दोष नहीं, श्रीठाकुरजी की सेवार्थ जात हौ, सो जोड़ा कों पहेरे ही आनन्द सों प्रसाद लेत चले जइयो । तब वासुदेवदास प्रसाद लेते ही मथुरा तें चले । सो आगरे में जाइ के रूपचन्दनन्दा के घर गए । ता समय रूपचन्दनन्दा महाप्रसाद ले हाथ धोवत हते । सो वासुदेवदास छकड़ा कों देखि भगवत-स्मरण करि, घरमें कहै, बड़ो हांडा धरि रसोई चढ़ावो । तब वासुदेवदास ने कही, रसोई होयगी तहां तांई मैं न रहूंगो । पत्र बांचि मोकों सामग्री लिवाय देऊ, अबही मथुरा जाऊंगो । तब रूपचन्दनन्दा श्रीगुसांईजी को पत्र माथे चढ़ाई, बांचि के अपने भाई सों कहै, जो-घर में जितनो अनसखड़ी महाप्रसाद होय सो सब एक टोकरा में ले 'छारछू' दरवाजे

रामां इपय दनंदा श्रीगुसांइजीना सेवक हुता. तेभने श्रीगुसांइजीअ पत्र लख्ये. तेमां वसत पंचमीनी सामग्री भंगावी. पछी वासुदेवदासने भोलावीने पत्र आपीने श्रीगुसांइजी कहे, के आठदी सामग्री आगराथी इपयदंदा पासैथी लघने सांज सुधी आवी रहुजे. अने अेक छापडुं महाप्रसादहुं भंगावी अेक आदरनी ज़ादी अनावी वासुदेवदासना गणामां नाथी महाप्रसाद तेमां लर्थे. त्पारे वासुदेवदासे श्रीगुसांइजीने बिनती करी, के महाराज ! जेडा पहरेने महाप्रसाद केम लेता नउ ? त्पारे श्रीगुसांइजी कहे, तभने दोष नहीं. श्रीठाकुरजीनी सेवा भाटे जव छै तेथी जेडाने पहरेने न आनन्दी प्रसाद लेता आद्या नजे. त्पारे वासुदेवदास प्रसाद लेतां लेतांन मथुराथी आद्या. ते आगरामां जभने इपयदंदांना घरे गया. ते समये इपयदंदा महाप्रसाद लघ छैथ घेता हुता. ते वासुदेवदास छकडाने जेभने लगवत्सभरण करी घरमां कहे, मोटा हांडा धरी रसोइ चढ़ावो. त्पारे वासुदेवदासे कहुं, रसोइ थरी त्यां सुधी हुं नही रहुं. पत्र बांची भने सामग्री आपावी हो. लुभलां न मथुरा नइश. त्पारे इपयदंदाअे श्रीगुसांइजीना पत्र माथे चढ़ावी बांचीने पोताना लार्थने कहे, के घरमां जेडो अनसखड़ी महाप्रसाद होय ते अघे अेक टोकरामां लघ 'छारछू' दरवाजे नइ अेसजे. हुं

जो-अब कहाँ जाउगे ? तब वासुदेवदास ने फिरि श्रीगुसाँईजी सों विनती करि कह्यो, जो-महाराज ! ये बूरी नजरि सों आघे हैं । तब श्रीगुसाँईजी कहैं, तोसों होइ मो तू करि । तब वासुदेवदास चार पेंड़ आगे चलि, एक के पास ढाल, और गुरज हती ताकों एक थापकी मारी । सो वह थाप के लागत ही गिरि पड़्यो । तब वासुदेवदास वाकी ढाल और गुरज लेकें मनुष्य वीस-पचीस गिराय दिये । तब सगरे भाजि कें एक बड़ी हवेली के भीतर काजी सहित जाय, किंवाड़ लगाय लिये । सो वासुदेवदास ने श्रीगुसाँईजी सों कह्यो, जो-भले इकठोरे एक घर में सब धसे हैं । आपु कहो तो चारों ओर तें हवेली की भीति गिराय देऊ, सगरे दबि मरेंगे । तब श्रीगुसाँईजी कहैं, ऐसे मति करो, तेरो यह कहा बिगारे हैं ? अपने विश्रान्त चलो । तब श्रीगुसाँईजी विश्रान्त पधारि के सन्ध्यावंदन करि घर पधारे । पाछें दूसरे दिन श्रीगुसाँईजी जन्मस्थान दरसन कों पधारे । तब काजी दोघ चार मनुष्य संग ले, गले में पडुका डारि श्रीगुसाँईजी सों विनती कियो, जो-महाराज ! मेरो अपराध क्षमा करो । मोसों लोगन ने आपकी चुगली करी हती, सो अब उन सों समझोंगो, जो-मोसों कन्हैया और भीम सों लरावत हैं । सो आप साक्षात् कन्हैया हो, जो-इन सबनि कों बचाये । नाहीं तो, यह भीम

कहे, हुवे क्यां जशा ? त्यारे वासुदेवदासे इरीथी श्रीगुसाँईजीने विनती करी कहुं, महाराज ! ये अराध दृष्टिथी आव्या छे. त्यारे श्रीगुसाँईजी कहे, ताराथी थाय ते तू कर. त्यारे वासुदेवदास यार पगलां आगण यादी ऐकनी पासि ढाल अने गदा हुती तेने ऐक थप्पड भारी अटले ते थप्पडने लागतां न पडी गयो. त्यारे वासुदेवदास अनी ढाल अने गदा लभने वीस-पचीस मनुष्याने पाडी दीधा त्यारे अथा लागीने ऐक मोठी हुवेदीनी अ दर काळ सहित जठ कभाड लगाडी दीधां त्यारे वासुदेवदासे श्रीगुसाँईजीने कहुं, के लले ऐकहा ऐक घरमां अथा धस्या छे. आप कहे तो त्यारे तरइथी हुवेदीनी लीत पाडी नाभुं. अथा इभी भरशे. त्यारे श्रीगुसाँईजी कहे, ऐस न कर. ताइं ऐ शुं अगाडे छे ? आपले विश्रान्त यासो. त्यारे श्रीगुसाँईजी विश्रान्त पधारीने मध्यावंदन करी घर पधार्या पडी भील द्विसे श्रीगुसाँईजी जन्मस्थान दर्शने पधार्या. त्यारे काळये जे यार मनुष्यने साथे लठ गणांमां पटके नांभी श्रीगुसाँईजीने विनती करी के, महाराज ! भारो अपराध क्षमा करो. मने लोडोये आपनी चुगदी करी हुती. ते हुवे हुं ऐभनाथी समलश के, मने कन्हैया अने भीमथी लडावे छे. आप साक्षात्

किये । वासुदेवदास को दरसन कराये । सो वासुदेवदास सेवा में या प्रकार तत्पर रहते ।

वार्ता प्रसंग ४—और श्रीगुसांईजी सेवा तें पहाँचि खवास सों कहे, जो-आसन, झारी, संध्यावंदन को साज लेके विश्रान्त घाट पर चलियो । सो आपु दस-पांच वैष्णव वासुदेवदास छकड़ा को संग ले विश्रान्त घाट नित्य पधारते । तहां श्रीगुसांईजी संध्यावंदन करिके पाछें श्रीकेसोराईजी के दरसन को जन्म स्थान, नित्य दरसन को जाते । सो एक दिन मथुरिया चौबे मिलिकें काजी पास जाई काजी सों कहें, श्रीगुसांईजी की चुगली करी, जो-तुम इनको लागाबांधि द्वै एक दिन करो तो इनके सेवक ऐसे हैं, जो-तुमको हजारन रुपैया देंगो । तब काजी द्वैयसे मनुष्य हथियारबंध लेके संग, जन्मस्थान के आसपास ठाढ़ो हू रह्यो । सो जब श्रीगुसांईजी केसोरायजी के दरसन करिके बाहिर पधारे, तब काजी के लोग सावधान होन लागे । तब श्रीगुसांईजी सों वासुदेवदास ने विनती करी, जो-महाराज ! इनकी नजर बूरी दीसत है । तब श्रीगुसांईजी कहें, तेरो ए कहा करेंगे ? अपने इन सों कछू बैर नाहीं है, तातें चल्यो चलि । तब वासुदेवदास आगे चले । तब काजी के मनुष्य पास आइके कहें,

ॐ सिद्ध करी राणी. सवारे वसंत पंचमी हुती. ते उत्सव छ्यो. वासुदेवदासने दर्शन कराव्यां. ये वासुदेवदास सेवाभां या प्रकारे तत्पर रहेता.

वार्ता-प्रसंग ४—वर्णी श्रीगुसांईजी सेवाथी पछोंची अवासने कहे, के आसन आरी, संध्यावंदनने साज लघने विश्रान्तघाट उपर यासने. पछी आप पांच-दश वैष्णव तथा वासुदेवदास छकड़ाने साथे लघ विश्रान्तघाट नित्य पधारता. त्यां श्रीगुसांईजी संध्यावंदन करीने पछी श्रीकेशवरायणना दर्शने जन्मस्थान नित्य दर्शने जाता. ते अेक दिवस मथुरिया चौबेअे भणीने काल पासे जघ कालने कछुं, श्रीगुसांईजीनी चुगली करी, के तमे आभनी लागाबांधी ये अेक दिवस करे तो अेमना सेवका अेवा छे, के तमने हुजगे इपीआ आपसे त्यारे काल असे मनुष्य हथियार अंध संगे लघने जन्मस्थाननी आसपास आपी उलो थग रह्यो. पछी न्यारे श्रीगुसांईजी केशवरायणनां दर्शन करी अहार पधार्या त्यारे कालना मनुष्ये सावधान थवा लाग्या. त्यारे श्रीगुसांईजीने वासुदेवदासे विनती करी, के महाराज ! आभनी दृष्टि अराय अेआय छे. त्यारे श्रीगुसांईजी कहे, ताइं अे गुं करे ? आपणे अेमनाथी कंधेवर नथी तेथी यादयो यास. त्यारे वासुदेवदास आगण यादया. त्यारे कालना मनुष्य पासे आपीने

नाहीं बुलावत । तब श्रीगुसांईजी कहें, बंधान बांधो, जो-दोसौ वैष्णव बुलाववे कौ मनोरथ होय तो, सौ बुलावो, सौ में वासुदेवदास । और सौ को मनोरथ होय तो, पचास और पचास में वासुदेवदास । जो-पचास को मनोरथ होय पच्चीस और पच्चीस में वासुदेवदास । और दसको मनोरथ होय तो पांच, और पांच में वासुदेवदास । दस ताई तो इनको बुलावो । और पांच बुलावो तो इनको नाहीं । तब वैष्णव ने कही, महाराज ! ये भूखे रहे तो अपराध होई । तब श्री-गुसांईजी कहें यामें तुमको अपराध नाहीं, या प्रकार करियो । सो तब तें श्रीसिंहनंद के वैष्णव वासुदेवदासको उत्सव में बुलावन लागें ।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो-भगवदीय एकही बुलाइये तामें सब आये । भगवदीयके आये श्रीठाकुरजी वेगे प्रसन्न होय ।

वार्ता प्रसंग ६—और वासुदेवदास के जजमान आगरे में बहुत रहते । सो पितरपक्ष में वासुदेवदास आगरे जाते, सो सगरे क्षत्रीन कौ न्योता मानते । सबन के घर महाप्रसाद लेते । घोती उपरना तथा कपरा को धान, दक्षिना, सब लेके पंद्रह दिन को भेलो करि पाछें जब पितर पक्ष होइ चुके तब दक्षिना के पैसान को चामर और खांड ले श्रीगोकुल आय भंडार में देते । और कपरा सब ठौर छत्ता,

ले तो पणु लूभ्या रहे त्यारे अपराध पडे तथी नथी भोलावता । त्यारे श्रीगुसांईजी कहे, अंधारेणु अंधो । के भसो वैष्णवोने भोलाववानो मनोरथ होय तो सो ने भोलावो । सोभां वासुदेवदास अने सोनो मनोरथ होय तो पचास अने पचासभां वासुदेवदास । ने पचासनो मनोरथ होय तो पच्चीस अने पच्चीसभां वासुदेवदास । अने दशनो मनोरथ होय तो पांच अने पांचभां वासुदेवदास । दश सुधी तो अेभने भोलावो । अने पांच भोलावो तो अेभने नही । त्यारे वैष्णवोअे कहुं, महाराज अे लूभ्या रहे तो अपराध थाय । त्यारे श्रीगुसांईजी कहे, अेभां तभने अपराध नही । अे प्रकारे इरने । त्यारथी सिंहनंदा वैष्णवो वासुदेवदासने उत्सवभां भोलाववा लाग्या ।

भावप्रकाश—अेभां अे जणुअे, के भगवदीय अेक ज भोलावीअे तेभां अंधा आंया । भगवदीयना आंयाथी श्रीठाकुरजी नददी प्रसन्न थया ।

वार्ता-प्रसंग ६—वणी वासुदेवदासना यजमान आगराभां भडुण रहेता हुता । ते पितृपक्षभां वासुदेवदास आया जाता ते इरेक क्षत्रीअेअुं नोतरं मानता । अंधाना घरे महाप्रसाद लेता । घोती उपरणा तथा उपडातुं धान दक्षिणा अंधुं सधने पंद्र दिवसतुं लेणुं इरी पधी न्यारे श्राद्ध पक्ष थछ चुके त्यारे दक्षिणांना पैसाना भोभा अने

सबन को मारतो । परन्तु अब मोसों कछू टहेल आज्ञा करो । तब श्रीगुसाईंजी कछ्यो, जो-तुम सों जानै चुगली करी होइ, तासों तुम कछू मति कहियो । तब काजी बिनती करि गयो । और मन में कछ्यो, जो-देखो, दुष्टन ने इनकी चुगली करी, और ये कन्हैया ऐसे दयाल, जो बैरी पर हू दया करी । सो वासुदेवदास ऐसे कृपापात्र हते ।

वार्ता-प्रसंग ५—और सिंहनन्द में वैष्णवन के घर उत्सव में जब बड़ो उत्सव होतो, तब तो वासुदेवदास को महाप्रसाद को बुलावते । और छोटे उत्सव में दस-बीस वैष्णव बुलावते । तामें वासुदेवदास को न बुलावते । सो कछुक दिन में सिंहनन्द के सगरे वैष्णव श्रीगुसाईंजी के दरसन को श्रीगोकुल आये । तब वासुदेवदास ने श्रीगुसाईंजी सों बिनती करि कछ्यो, जो-महाराज ! ये वैष्णव उत्सव कीर्तन में मोको बुलावत नाहीं । तब श्रीगुसाईंजी उन वैष्णवन सों कहे, जो-तुम वासुदेवदास को उत्सव कीर्तन में क्यों नाहीं बुलावत हो ? श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हैं, इनको बुलाये बिना कैसे चले ? तब वैष्णवन ने श्रीगुसाईंजी सों बिनती करी, महाराज ! बड़े उत्सव में तो बुलावत हैं और छोटे उत्सव में दस-बीस वैष्णव की सामग्री एक अकेले लेई तोऊ भूखे रहै तब अपराध परे, तातें

कन्हैया छे. आये आ अधाने भयाव्या. नही तो आ लीम अधाने मारतो. परंतु लुवे भने कंध टहल आज्ञा करो. तयारे श्रीगुसांभल्ये कछुं, के तभने जेखे युगदी करी लोय तेने तमे कंध कहेता नही. तयारे काळ विनंती करीने गयो, अने मनमां कछुं, के नुब्यो दुष्टेये अेमनी युगदी करी अने आ कन्हैया अेवा दयाल के वेरी उपर पखु दया करी. अे वासुदेवदास अेवा कृपापात्र हुता.

वार्ता-प्रसंग ५—वर्णी सिंहनंदमां वैष्णुवोना घर उत्सवमां न्यारे मोटे। उत्सव थता तयारे तो वासुदेवदासने महाप्रसाद भाटे भोलायता अने नाना उत्सवमां दस-बीस वैष्णुवो भोलायता. तेमां वासुदेवदासने न भोलायता. ते केउलाइ दिवसमां सिंहनंदना अधा वैष्णुवो श्रीगुसांभलना दर्शने श्रीगोकुल आव्या. तयारे वासुदेवदासे श्रीगुसांभलने विनंती करी कछुं, के महाराज ! आ वैष्णुवो उत्सव कीर्तनमा भने भोलायता नथी. तयारे श्रीगुसांभल अे वैष्णुवोने कछुं, के तमे वासुदेवदासने उत्सव कीर्तनमां केम नथी भोलायता ? श्रीआचार्यजना कृपापात्र भगवदीय छे. अेभने भोलाव्या विना केम आवे ? तयारे वैष्णुवोअे श्रीगुसांभलने विनंती करी. महाराज ! मोटा उत्सवमा तो भोलावीअे छीअे अने नाना उत्सवमां दस-बीस वैष्णुवोनी सामग्री अेक अेकला

नाहीं बुलावत । तब श्रीगुसांईजी कहें, बंधान बांधो, जो-दोसौ वैष्णव बुलाववे कौ मनोरथ होय तो, सौ बुलावो, सौ में वासुदेवदास । और सौ को मनोरथ होय तो, पचास और पचास में वासुदेवदास । जो-पचास को मनोरथ होय पच्चीस और पच्चीस में वासुदेवदास । और दसको मनोरथ होय तो पांच, और पांच में वासुदेवदाम । दस ताई तो इनकों बुलावो । और पांच बुलावो तो इनकों नाहीं । तब वैष्णव ने कही, महाराज ! ये भूखे रहे तो अपराध होई । तब श्री-गुसांईजी कहें यामें तुमकों अपराध नाहीं, या प्रकार करियो । सो तब तें श्रीसिंहनंद के वैष्णव वासुदेवदासकों उत्सव में बुलावन लागें ।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो-भगवदीय एकही बुलाइये तामें सब आये । भगवदीयके आये श्रीठाकुरजी वेगे प्रसन्न होय ।

वार्ता प्रसंग ६—और वासुदेवदास के जजमान आगरे में बहुत रहते । सो पितरपक्ष में वासुदेवदास आगरे जाते, सो सगरे क्षत्रीन कौ न्योता मानते । सबन के घर महाप्रसाद लेते । धोती उपरना तथा कपरा को थान, दक्षिना, सब लेके पंद्रह दिन को भेलो करि पाछें जब पितर पक्ष होइ चुके तब दक्षिना के पैसान को चामर और खांड ले श्रीगोकुल आय भंडार में देते । और कपरा सब ठौर छत्रा,

ले तो पञ्च लूण्या रहूँ त्यारे अपराध पडे तथी नथी भोलावता । त्यारे श्रीगुसांईजी कहे, अंधारणु बांधो । के असो वैष्णवोने भोलाववानो मनोरथ होय तो सो ने भोलावो । सोभां वासुदेवदास अने सोनो मनोरथ होय तो पचास अने पचासभां वासुदेवदास । ने पचासनो मनोरथ होय तो पच्चीस अने पच्चीसभां वासुदेवदास । अने दशनो मनोरथ होय तो पांच अने पांचभां वासुदेवदास । दश सुधी तो अेभने भोलावो । अने पांच भोलावो तो अेभने नही । त्यारे वैष्णवोअे कहुँ, महाराज अे लूण्या रहूँ तो अपराध थाय । त्यारे श्रीगुसांईजी कहे, अेभां तभने अपराध नही । अे प्रकारे करजे । त्यारथी सिंहनंदना वैष्णवो वासुदेवदासने उत्सवभां भोलाववाना लाग्या ।

भावप्रकाश—अेभां अे जलान्यु, के भगवदीय अेक ज भोलावीअे तेभां अंधा आव्या । भगवदीयना आव्याथी श्रीठाकुरजी नददी प्रसन्न थया ।

वार्ता-प्रसंग ६—वर्णी वासुदेवदासना यजमान आगराभां भडुण रहेता हुता । ते पितृपक्षभां वासुदेवदास आया जाता ते दरेक क्षत्रीअेतुं नोतरं मानता । अंधाना धरे महाप्रसाद लेता । धोती उपरणा तथा कपडानुं थान दक्षिणा अंधुं सभने पंद्रह दिवसतुं लेणुं करी पछी न्यारे आद्ध पक्ष थछ युके त्यारे दक्षिणाना पैसाना योभा अने

सबन को मारतो । परन्तु अब मोसों कछु टहेल आज्ञा करो । तब श्रीगुसाईजी कह्यो, जो-तुम सों जानै चुगली करी होइ, तासों तुम कछु मति कहियो । तब काजी बिनती करि गयो । और मन में कह्यो, जो-देखो, दुष्टन ने इनकी चुगली करी, और ये कन्हैया ऐसे दयाल, जो बैरी पर हू दया करी । सो वासुदेवदास ऐसे कृपापात्र हते ।

वार्ता-प्रसंग ५—और सिंहनन्द में वैष्णवन के घर उत्सव में जब बड़ो उत्सव होतो, तब तो वासुदेवदास को महाप्रसाद को बुलावते । और छोटे उत्सव में दस-बीस वैष्णव बुलावते । तामें वासुदेवदास को न बुलावते । सो कछुक दिन में सिंहनन्द के सगरे वैष्णव श्रीगुसाईजी के दरसन को श्रीगोकुल आये । तब वासुदेवदास ने श्रीगुसाईजी सों बिनती करि कह्यो, जो-महाराज ! ये वैष्णव उत्सव कीर्तन में मोको बुलावत नाहीं । तब श्रीगुसाईजी उन वैष्णवन सों कहे, जो-तुम वासुदेवदास को उत्सव कीर्तन में क्यों नाहीं बुलावत हो ? श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हैं, इनको बुलाये बिना कैसे चले ? तब वैष्णवन ने श्रीगुसाईजी सों बिनती करी, महाराज ! बड़े उत्सव में तो बुलावत हैं और छोटे उत्सव में दस-बीस वैष्णव की सामग्री एक अकेले लेई तोऊ भूखे रहै तब अपराध परे, तातें

कन्हैया छे. आये आ अधाने अधाव्या. नही तो आ लीम अधाने भारतो. परंतु लवे भने कंठ टलल आज्ञा करो. त्तारे श्रीगुसांठल्ये कछुं, के तभने जेष्टे युगदी करी लोय तेने तमे कंठ कहुता नही. त्तारे काल विनंती करीने गयो, अने मनमां कछुं, के लुओ दुष्टे अेभनी युगदी करी अने आ कन्हैया अेवा दयाल के वेरी उपर पखु दया करी. अे वासुदेवदास अेवा कृपापात्र हुता.

वार्ता-प्रसंग ५—वर्षी सिंहनंदमां वैष्णवोना घर उत्सवमां न्यारे भोटा उत्सव थता त्तारे तो वासुदेवदासने महाप्रसाद भाटे भोलावता अने नाना उत्सवमां दस-बीस वैष्णवो भोलावता. तेमां वासुदेवदासने न भोलावता. ते केटलाक दिवसमां सिंहनंदना अधा वैष्णवो श्रीगुसांठलना दर्शने श्रीगोकुल आव्या. त्तारे वासुदेवदासे श्रीगुसांठलने विनंती करी कछुं, के महाराज ! आ वैष्णवो उत्सव कीर्तनमा भने भोलावता नथी. त्तारे श्रीगुसांठल अे वैष्णवोने कछुं, के तमे वासुदेवदासने उत्सव कीर्तनमा केभ नथी भोलावता ? श्रीआचार्यलना कृपापात्र भगवदीय छे. अेभने भोलाव्या विना केभ यावे ? त्तारे वैष्णवोअे श्रीगुसांठलने विनंती करी. महाराज ! भोटा उत्सवमा तो भोलावीअे छीअे अने नाना उत्सवमां दस-बीस वैष्णवोनी सामग्री अेक अेकला

नाहीं बुलावत । तब श्रीगुसांईजी कहें, बंधान बांधो, जो-दोसौ वैष्णव बुलायवे कौ मनोरथ होय तो, सौ बुलावो, सौ में वासुदेवदास । और सौ को मनोरथ होय तो, पचास और पचास में वासुदेवदास । जो-पचास को मनोरथ होय पच्चीस और पच्चीस में वासुदेवदास । और दसको मनोरथ होय तो पांच, और पांच में वासुदेवदास । दस ताई तो इनको बुलावो । और पांच बुलावो तो इनको नाहीं । तब वैष्णव ने कही, महाराज ! ये भूखे रहे तो अपराध होई । तब श्री-गुसांईजी कहें यामें तुमको अपराध नाहीं, या प्रकार करियो । सो तब तें श्रीसिंहनंद के वैष्णव वासुदेवदासको उत्सव में बुलावन लागें ।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो-भगवदीय एकही बुलाइये तामें सब आये । भगवदीयके आये श्रीठाकुरजी वेगे प्रसन्न होय ।

वार्ता प्रसंग ६—और वासुदेवदास के जजमान आगरे में बहुत रहते । सो पितरपक्ष में वासुदेवदास आगरे जाते, सो सगरे क्षत्रीन कौ न्योता मानते । सवन के घर महाप्रसाद लेते । धोती उपरना तथा कपरा को धान, दक्षिना, सब लेके पंद्रह दिन को भेलो करि पाछें जब पितर पक्ष होइ चुके तब दक्षिना के पैसान को चामर और खांड ले श्रीगोकुल आय भंडार में देते । और कपरा सब ठौर छत्रा,

ले तो पशु लूभ्या रहे त्यारे अपराध पडे तथी नथी भोलावता । त्यारे श्रीगुसांईजी कहे, अंधारणु बांधो । के असो वैष्णवोने भोलाववानो मनोरथ होय तो सो ने भोलावो । सोभां वासुदेवदास अने सोनो मनोरथ होय तो पयास अने पयासभां वासुदेवदास । ने पयासना मनोरथ होय तो पच्चीस अने पच्चीसभां वासुदेवदास । अने दशना मनोरथ होय तो पांच अने पांचभां वासुदेवदास । दश सुधी तो अने भोलावो । अने पांच भोलावो तो अने नही । त्यारे वैष्णवोअे कहुं, महाराज अे लूभ्या रहे तो अपराध थाय । त्यारे श्रीगुसांईजी कहे, अेभां तमने अपराध नही । अे प्रकारे करणे । त्यारथी सिंहनंदना वैष्णवो वासुदेवदासने उत्सवभां भोलाववा लाग्या ।

भावप्रकाश—अेभां अे लूभ्या, के भगवदीय अेक लू भोलावीअे तेभां अंधा आंभ्या । भगवदीयना आंभ्याथी श्रीठाकुरजी नददी प्रसन्न थया ।

वार्ता-प्रसंग ६—वणी वासुदेवदासना यजमान आगराभां भुजुण रहेता हुता । ते पितरपक्षभां वासुदेवदास आया जाता ते दरेक क्षत्रीअेतुं नोतई मानता । अंधाना धरे महाप्रसाद लेता । धोती उपरना तथा कपडानुं धान दक्षिणा अंधुं सधने पंद्र दिन-सतुं लेणुं करी पछी न्यारे श्राद्ध पक्ष थछ सुके त्यारे दक्षिणांना पैसाना योभा अने

मन्दिर, वस्त्र, पोंछिवे को सागघर, भंडार, पानघर, फूलघर आदि में नये वस्त्र करते। सो श्रीगुसांईजी सब ठौर नये वस्त्र देखिके पूछे, जो-सब ठौर एकही बेर नये वस्त्र कहाँते आये ? तब सगरे सेवक कह्यो, जो-महाराज ! वासुदेवदास लाये हैं, उनने किये हैं। तब श्रीगुसांईजी वासुदेवदास सों पूछे, जो-इतने नये वस्त्र तुम कहाँते लाये ? तब वासुदेवदास कहें, महाराज ! आगरे में क्षत्री मेरे यजमान रहत हैं। सो पितृपक्ष में मैं उहां जाइ पंद्रह दिन रहि उनके घर महाप्रसाद लेत हों। वे दक्षिना, और कपरा देत हैं। सो दक्षिना के चामर खाँड लाई भंडार में देत हूं, वस्त्र के छन्ना आदि करत हूं। तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न होई कहें, जो-देखो भगवदीय को कार्य, अलौकिक में लगाइ दिये हैं। पाछे वर्ष के वर्ष जब श्रीगुसांईजी सब ठौर नये छन्ना, पोतना, मंदिर वस्त्र देखते तब पूछते, जो-वासुदेवदास ने करे होंगे ? तब सब सेवक कहते, आगरे तें वासुदेवदास लाये हैं। सो श्रीगुसांईजी वासुदेवदास के उपर बहोत प्रसन्न रहते।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो-लौकिक वैदिक कार्यार्थि भगवदीय वैष्णव कों कछु दीजिये तो भगवदीय अलौकिक करि देय। आगरे के (यजमान)

भांड लघ श्रीगुसांईजी आपी लंडारमां आपता. अने कपडा अधी जगाये छन्ना मंदिर वस्त्र, हाथ पोंछवाने शाकघर, लंडार, पानघर, फूलघर आदिमां नवां वस्त्र करता. तयारे श्रीगुसांईजी अधी जगाये नवा वस्त्र ओधने पूछे, के अधी जगाये ओकण वार नवां वस्त्र क्यांथी आव्यां ! तयारे अथा सेवके कहे, के महाराज ! वासुदेवदास आव्या छे. ओमणे क्यां छे, तयारे श्रीगुसांईजी वासुदेवदासने पूछे, आव्यां नवा वस्त्रो तमे क्यांथी आव्या ? तयारे वासुदेवदास कहे, महाराज ! आव्यामां क्षत्री मारा यजमान रहे छे. ते श्राद्धपक्षमां हुं त्यां जध पंढर दिवस रहीने ओमने त्या महाप्रसाद लेउं छुं. ते दक्षिणा अने कपडा आवे छे. ते दक्षिणा ना चोआ भांड लघ लंडारमां दे छे वस्त्रनां छन्नां आदि कइं छुं. तयारे श्रीगुसांईजी प्रसन्न थधने कहे, के लुओ लगवदीयतुं कार्य, अलौकिक मां लगाडी दीधुं छे. पछी वर्षना वर्ष नयारे श्रीगुसांईजी अधी जगाये नवा छन्नां, पोतना, मंदिर वस्त्र लुओ तयारे पूछे के वासुदेवदासने क्यां लुओ ? तयारे अथा सेवक कहेता आगराथी वासुदेवदास आव्या छे. तयारे श्रीगुसांईजी वासुदेवदासना उपर अहुण प्रसन्न रहेता.

भावप्रकाश—ओमां ओ जगुओतुं, के लौकिक वैदिक कार्यार्थि भगवदीय वैष्णवने कध आवीये तो लगवदीय अलौकिक करी दे, आगराना (यजमान) श्राद्ध

श्राद्ध करिके श्राद्ध के नाम सों देते । और वासुदेवदास ले श्रीगुसांईजी के घर अंगीकार करावते । तांमें वे क्षत्री लोग हू कृतार्थ भये । और इनके पितरहू कृतार्थ होई गये । सो वासुदेवदास के हृदय में ऐसो दृढ़ भगवद् आश्रय हतो, जो-लौकिक कों कछ मनमें लावते नाही । श्राद्ध के नाम सों महाप्रसाद हू लेते । श्राद्ध संबंधी ले अलौकिक करते । परन्तु इनकों बाधक कछ न होतो । ऐसो भगवद् बल, सदा नंदालय की लीला को काम काज किये । इहां श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की टहल करे, फेरि लीला रस को अनुभव किये । परन्तु निकुंजलीला को अनुभव नाही, नन्दालय की लीला को हैं, तातें नन्दालय की लीला को अनुभव भयो । सो वासुदेवदास छकड़ा ऐसे भगवदीय हे, तातें इनके साथे श्रीठाकुरजी नाही पधराये, लीला में हू वस्तु सामग्री लाइकें श्रीयसोदाजी कों देते वैष्णव ॥३८॥

वार्ता-प्रसंग ७—और जब श्रीगुसांईजी परदेस कों पधारते, तब वासुदेवदास संग जाते । सो एक छकड़ा को भार उठाइ ले चलते । तातें सब कोऊ इनकों वासुदेवदास छकड़ा कहते । ऐसे टेक के वैष्णव हे । तातें वासुदेवदास की वार्ता कहां ताई कहिये । वार्ता २८

✽

✽

✽

इरीने श्राद्धना नामथी आपता. अने वासुदेवदास लघ श्रीगुसांईजीना धरे अंगीकार करावता. तेमां ते क्षत्री लोका पणु कृतार्थ थता. अने अमना पितृयो पणु कृतार्थ थथ जाता. अे वासुदेवदासना हृदयमां अेयो दृढ भगवदाश्रय हुतो. उ लौकिकने उध मनमां लावता नहीं. श्राद्धना नामथी महाप्रसाद पणु लेता. श्राद्ध संबंधी लघ अलौकिक करता. परंतु अमने उधं बाधक न थतुं. अेवु भगवद्बल, सदानंदालयनी लीलातुं कामकाज करे. अहीं श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीनी टहल करे. इरी लीलासनेो अनुभव कर्यो. परंतु निकुंजलीलानो अनुभव नहीं. नंदालयनी लीलानो छे. तेथी नंदालयनी लीलानो अनुभव थयो. ते वासुदेवदास छकड़ा अेवा भगवदीय हुता. तेथी अमना साथे श्रीठाकुरजी पधराव्या नहीं. लीलामां पणु वस्तु सामग्री लापीने श्रीशेशाक्षने आपता. वैष्णव ॥३८॥

वार्ता-प्रसंग ७—अने न्यारे श्रीगुसांईजी परदेश पधारता. त्यारे वासुदेवदास साथे जाता ते अेक छकडानो भार उठापी लघ यासता. तेथी अथा अमने वासुदेवदास छकड़ा कहेता. अेवा टेकना वैष्णव हुता. तेथी वासुदेवदासनी वार्ता कथां सुधी इहीअे ?

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, बाबावेनु सारस्वत ब्राह्मण, कृष्णदास
घघरी क्षत्री, और यादवेंद्रास बनिया, बाबावेनु को खवास,
ए तीनों की वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये पूरब में कासी प्रयाग के बीच में एक गांम हतो, तहां
रहते । सो बाबावेनु और कृष्णदास ये दोऊ लीला में विशाखाजी की सखी हैं ।
लीला में बाबावेनु तो 'सोरसेनी' और कृष्णदास को नाम, "कामलता" ।
और "सोरसेनी" की सखी एक "तिलकनी" सो यादवदास, बाबावेनु के खवास
भये । सो ये तीनों अनेक जन्म यातें पाये, जो-एक दिन विसाखाजी ने कही,
इनसों श्रीनंदरायजी के घर देखि आव, श्रीठाकुरजी जागे होइ तो वस्त्र मांगि ले
चलें । सो ए तीनों श्रीनंदरायजी के द्वार पर आई । ता समय श्रीठाकुरजी
तीनोंन सों पूछे, जो-विसाखाजी कहाँ है ? तब ए तीनोंन ने कही, हमको खबरि
नाहीं । हम तो तिहारे दरसन को आये हैं । सो जो-कछू विसाखाजी सों कहनो
होई, सो हमहीं सों आज्ञा करो । या प्रकार विसाखाजी की बराबरि को सौभाग्य
अपने में जान्यो । तब श्रीठाकुरजी हंसिकें चुप होई रहे । भीतर जसोदाजी के पास
पधारे । ये तीनों सखी द्वार पर बैठि रहीं, जो-श्रीठाकुरजी हंसिकें भीतर पधारे

हुये श्रीआचार्यजी महाप्रभुजना सेवक, बाबावेणु सारस्वत ब्राह्मण, कृष्ण-
दास घघरी क्षत्री अने यादवेंद्रदास बाणिया, बाबावेणुना भवास, आ त्रैलोक्यनी
वार्ताना भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे पूर्वभां काशी-प्रयागना वरये अेक गांम हुतुं त्यां
रहेता. ते बाबावेणु अने कृष्णदास अे अने लीलाभां विशाखाजीनी सखी छे.
लीलाभां बाबावेणु तो 'सोरसेनी' अने कृष्णदासनुं नाम- 'कामलता' अने सोर-
सेनीनी अेक सखी 'तिलकनी' ते यादवदास, बाबावेणुना भवास थया. अे त्रै
अनेक जन्म अेथी पाभ्या के अेक द्विसे विशाखाजीअे अेअने कथुं, के श्रीनं
दरायजीना धरे अेध आव. श्रीठाकुरजी अग्या होय तो वस्त्र मांगीने लध यादीअे.
त्यारे त्रै श्री-
नंदरायजीना द्वार उपर आवी. ते समये श्रीठाकुरजीअे त्रैलोक्यने पूछथुं,
के विशा-
खाजी कयां छे ? त्यारे अे त्रैलोक्ये कथुं, अमने अणर नथी. अमने तो तभारां दर्शन
माटे आव्यां छीअे. माटे के कध विशाखाजीने कहेकुं होय ते अमने के आज्ञा करे।
आ प्रकारे विशाखाजीना अराअरीनुं सौभाग्य पोतानाभां अण्यु. त्यारे श्रीठाकुरजी
हसिने चुप थध रखा. अंदर अशोदाजीनी पासे पधार्या. अे त्रैलोक्ये सखी द्वार उपर
बेठी रही; केअे श्रीठाकुरजी हसिने अंदर पधार्या छे ते कुरी हुअ्यां के अणर पधा-

हैं सो फेरि अवही बाहिर आवेंगे । यह जानि द्वार पर वैठी । यह बात एक सखी ने विसाखाजी सों जाय कही, सो विसाखाजी दौरे आई । आइकै देखें तो, तीनों आपुस में हँसत हैं । तब विसाखाजी ने शाप दियो, जो—भूमिमें जन्म लेऊ । यह अभिमान को फल । सो तीनों गिरी । बाबावेनु एक सारस्वत ब्राह्मण के घर जन्मे, सो बरस तेवीस—चोवीस के भये । सो बाबावेनु और कृष्णदास दोऊ आपुस में परम मित्र हते, संग ही रहते । और जादवदास के घर खानपान को संकोच हतो । सो यादवदास बाबावेनु की खवासी टहल करते । सो बाबावेनु देवी के उपासक हते, देवीकों सर्वोपरि जानते । सो एक दिन श्रीकल्याणरायजी ठाकुरजी बाबावेनु को स्वप्न में कहे, मैं कल्याणी देवी हों, या गाम के तलाव में हों । सो तू मोकों बाहर निकास, मेरी पूजा कर । तब प्रातःकाल बाबावेनु यह बात कृष्णदास अपने मित्र सों कहे, तब दोऊ जने तलाव में पेंठे । सो छाती बराबरि पानी सगरे तलाव में हतो । सो सगरे हृदय बाबावेनु के हाथ में श्रीकल्याणरायजी आये । तब बाबावेनु तलाव तें बाहिर आई, वह तलाव के ऊपर ही घर में जो द्रव्य हतो, ताको एक छोटो सो मन्दिर बनवाय देवी के भाव सों देवी की थापना करी । कल्याणी-देवी नाम धरयो । सो गाम के लोग देवी जानि मानता बहुत करै, तामें बाबावेनु

रशे. अम अण्णु द्वार उपर पेठी. अ वात अक सखीअ विशाभाअने अघने कही तेथी विशाभाअ टोडी आवी. आवीने अुअे तो त्रशे आपसमां हुसे छे. तारे विशाभाअअे शाप आयो, हे भूमिमां जन्म लो. आ अभिमानतुं इअ. ते त्रशे पड्यां. आबावेणु अेक सारस्वत ब्राह्मणना धरे जन्मया. ते वर्ष तेवीस—चोवीसना थया. अे आबावेणु अने कृष्णदास अन्ने आपसमां परम मित्र हुता. संगअ रहेता अने यादवेंद्रदासना धरे आनपानना सहाय हुतो. ते यादवेंद्रदास आबावेणुनी अवासी—टहल करता. ते आबावेणु देवीना उपासक हुता. देवीने सर्वोपर अणुता. ते अेक द्विपस श्रीकल्याणरायअ ठाकुरअे आबावेणुने स्वप्नमां कथुं, हुं कल्याणी देवी छुं. आ गामना तलावमां छुं. तू अने अहार निकाण. भारी पूज कर. तारे प्रातःकाल आबावेणुअे अे वात पोताना मित्र कृष्णदासने कही. तारे अन्ने अणु तलावमां पेठा. ते छाती बराबर पाणी तलावमां पधे हुतुं. ते पधे भोणतां आबावेणुना हाथमां श्रीकल्याणरायअ आवा. तारे आबावेणुअे तलावथी आहुर आवी ते तलावना उपर अ धरमां अे द्रव्य हुतुं तेतुं अेक नानुं सरभुं मंदिर अनावी देवीना लावथी देवीनी स्थापना करी, कल्याणी देवी नाम धरुं. पछी गामना लोडा देवी

और कृष्णदास और जादवदास को निर्वाह होइ । ऐसे करते वर्ष पांच बीते त श्रीआचार्यजी कासी तें अडेल पधारत हते । सो इह गाम में आई कल्याणरायर्ज के मन्दिर पास एक आम के वृक्ष के नीचे विराजे । तां समें बाबावेनु और कृष्ण दास, पास गाम हतो तहां गये हते । तब मन्दिरमें ते श्रीकल्याणरायजी श्रीआचार्य जी कों पुकारयो, जो-आपु भीतर पधारो । तब श्रीआचार्यजी मन्दिर के भीत जायके देखें, लेहँगा, लुगरा, पहरें हैं । तब श्रीआचार्यजी पूछे, 'देवी की नाई क्यं बैठे हो ? तब श्रीठाकुरजी ने कही, कहा करूं ? या गाम में, ठाकुरजी कूं को जानत नहीं । और बाबावेनु, कृष्णदास, यादवदास दैवी जीव हैं । तिनके उद्धार करनार्थ मैं देवी होई बाबावेनु सों पूजा कराई हैं । काहेतें, बाबावेनु देवी कं उपासक है । सो अब आपु मोकों श्रीठाकुरजी को स्वरूप करो । इहां चार घड़ आपु विराजो । बाबावेनु, कृष्णदास, यादवदास खवास कों अङ्गीकार करि पावे पधारो । तब श्रीआचार्यजी लेहँगा, लुगरा, उतारि, लेहँगा एक खूटी पर धारि दिये । और लुगरा कों फारि एक परदनी पहराई, पाग बांधि दिये । पाछें आप आम के वृक्ष के नीचे जाई विराजे । इतने ही में बाबावेनु और कृष्णदास औ

अष्टौ अहु मानता करे. तेमां आपावेष्टु अने कृष्णदास अने यादवे द्रदासने निर्वाह थाय. अम करतां पांच वर्ष वीसां. तयारे श्रीआचार्यजी काशीथी अडेल पधारत हुता. सारे ते गाममां आवी कल्याणरायजीना मन्दिर पासे एक आंभाना वृक्षनी नीचे बिराज्या. ते समये आपावेष्टु अने कृष्णदास पासे गाम हुतु त्यां गया हुता तयारे मन्दिरमांथी श्रीकल्याणरायजी अने श्रीआचार्यजीने जेरथी बोलाव्या. 'इ आप अहर पधारो. तयारे श्रीआचार्यजी मन्दिरनी अहर जधने जुअे तो धाधरो, लुगड पहेर्या छे. तयारे श्रीआचार्यजी पूछे, देवीनी तरहु डम भेठा छे ? सारे श्रीठाकुरजी अने कह्युं, थुं करं ? आ गाममां श्रीठाकुरजीने डोध जणतु नथी. अने आपावेष्टु कृष्णदास, यादवदास देवी अवे छे. तेमने उद्धार करना माटे भडे देवी थध आपा वेष्टुथी पूजा करावी छे. डभडे आपावेष्टु देवीने उपासक छे हुवे आप अने श्रीठाकुरजीनु स्वरूप करे. अहीं यार धडी आप बिराज्जे. आपावेष्टु, कृष्णदास, यादवदास अनांसने अगीकार करी पछी पधारो. सारे श्रीआचार्यजी अने धाधरा, लुगडां उतारिने धाधराने अक थुटी उपर धरी दीधो. भीज लुगडांने शडी अक परदनी पहरावीने पाग बांधी दीधी पछी पोते आंभाना वृक्षनी नीचे जध बिराज्या. अटलाभांज आपावेष्टु अने कृष्णदास अने यादवदास अनास त्रजे आव्या ते

यादवदास खवास तीनों आये। सो श्रीकल्याणरायजी के मन्दिर में जाय देखे तो पाग धोती पहरे बैठे हैं। तब बाबावेनु कही, इहां कौन आयो ? जो-मेरी देवी के कपरा उतारयो ? तब कल्याणरायजी ने कही, मोकों छुंयो मति। मैं तो कल्याणरायजी ठाकुर हूँ। तब बाबावेनु ने कही, ठाकुर कौं तो या गाम में कोऊ मानत नाहीं। और मेरो अपराध कहा, जो-छुड़वे की नाहीं करत हों ? तब श्रीकल्याणरायजी ने कही, आम के वृक्ष नीचे श्रीआचार्यजी बिराजे हैं। तिनको तू सेवक व्हे आव। और गाम के लोग ठाकुर कौं नाहीं मानत तो तेरे हमारे गाम के लोगन सँ कहा काम है ? तेरे घर में सातसँ रुपैया नीचे कोठा में गड़े हैं, सो निकासि के मेरी सेवा पूजा करियो। परन्तु अब तुम जाइ श्रीआचार्यजी के सेवक ह्वे आवो। तब तीनों जने श्रीआचार्यजी पास आयके कहें, महाराज ! हमकों सेवक करिये। तब श्रीआचार्यजी कहे, तीनों जने तलाव में न्हाई आवो। तब तीनों जने तलाव में न्हाहके श्रीआचार्यजी के पास आये। तब श्रीआचार्यजी तीनों कौं नाम सुनाय निवेदन कराये। पाछें श्रीआचार्यजी कहै, बाबावेनु सो, अब तुम एक काम करो। श्रीकल्याणरायजी कौं अपने घर ले जाई गोप्य रीति सों सेवा करो। जो कोई गाम के जाने नाहीं। और यह श्रीकल्याणरायजी के मन्दिर में कोई-

श्रीकल्याणरायजीना मन्दिरमां जध जुये तो पाग धोती पहरेने जेडा छे। त्यारे पापावेणु कहे, अहीं डोणु आण्युं ? न मारी देवीनां कपडां उतार्यां ? त्यारे श्रीकल्याणरायजीके कछुं। मने अडशा नही। हु तो श्रीकल्याणरायजी ठाकुर छुं। त्यारे पापावेणुके कछुं, ठाकुरने तो आ गाममां डोणु मानतुं नथी। अने मारे अपराध शो ? हे अडवानी ना कहे छे ? त्यारे श्रीकल्याणरायजीके कछुं, आंभाना वृक्ष नीचे श्रीआचार्यजी बिराजे छे। तेमने तू सेवक थध आव। अने गामना लोडा ठाकुरने न माने तो तारे अमारे गामना लोडाथी शु काम छे ? तारा धग्मां सातसो रुपैया नीचे कोठामां दट्या छे ते काढीने मारी सेवा पूजा करे। पर तु हुमणां तमे जधने श्रीआचार्यजीना सेवक थध आवो। त्यारे त्रणे जणु श्रीआचार्यजी पासे आवीने कहे, महाराज ! अमने सेवक करे। त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, त्रणे जणु तलावमां न्हाध आवो। त्यारे त्रणे जणु तलावमां न्हाधने श्रीआचार्यजीनी पासे आण्यो। त्यारे श्रीआचार्यजीके त्रणुयने नाम अंलगानी निवेदन कराण्युं। पछी श्रीआचार्यजी पापावेणुने कहे, हुवे तमे जेक काम करे। श्रीकल्याणरायजीने पीताना धरे लध जध गुप्त रीतिथी सेवा करे। डोणु गाममां जणु नही। अने आ

देवीकों बैठारि काहू कों राखि देऊ, सो पूजा चलावेगो । तुम कछु देवी की पूजा को मति लीजो । जो—श्रीठाकुरजी कों भोग धरियो सो तीनों जने लीजो । तब बाबावेनु ने कही, महाराज ! आपु मेरे घर पधारिके दोई दिन रहि, जैसे सेवा की रीति होय तैसे आप कृपा करि बताय देउ, या गाम में कोई जानत नाही । तब श्रीआचार्यजी कल्याणरायजी कों पधराय बाबावेनु के घर पधारे । तहां बाबावेनु के घर में नीचे के कोठा में सातसैं रूपैया निकसे । सो लायकैं श्रीआचार्यजी के आगे धरे । तब श्रीआचार्यजी कहें, यह हमारे काम के नाही, यह तुमकों दिये हैं । और तेरो हृद विश्वास ठाकुरजी में होई, तातें दिये, तुम राखो । पाछं श्रीआचार्यजी चार दिन ताई रहि, श्रीकल्याणरायजी कों पंचामृत स्नान कराई, बाबावेनु और कृष्णदास के साथे पधराय, सगरी पुष्टिमार्ग की सेवा रीति बताये । और आज्ञा दिये, श्रीठाकुरजी तुमकों आज्ञा दें सो करियो । या प्रकार समुझाय आपु अडेल पधारे । सो बाबावेनु और कृष्णदास मिलिकें सेवा करन लागे । जादव खवास सगरी उपर की टहेल करत हते । तब बाबावेनु ने एक ब्राह्मणकों दस—पांच रूपैया दे, देवी कों बैठारि तहां पूजा सोंपि दिये । सो वह ब्राह्मण प्रसन्न होई सेवा करतो, गांव की जीविका हती सो वह खातो । और

श्रीकल्याणरायणना म हिरमां डोछ देवीने येसाडी डोछने राभी हो ते पूज यदावरो. तमे छ छ देवीनी पूजनुं न लेता. श्रीठाकुरणने लोग धरने ते त्रणे नणु लेने तारे आभावेणुअे कछुं, महाराज ! आप मारा धर पधारीने ये द्विस रही नम सेवानी रीति होय तेम कृपा करीने अतावी हो. आ गाममां डोछ नणुतुं नथी. तारे श्रीआचार्यण श्रीकल्याणरायणने पधरावी आभावेणुना धरे पधार्या. त्यां आभावेणुना धरमां नीचेना डोछां सातसेा इपीआ निकल्या. ते दावीने श्रीआचार्यणनी आगण धर्या. तारे श्रीआचार्यण कहे, आ अमारा कामना नथी. आ तमने आप्या छे. अने तारे हृद विश्वास श्रीठाकुरणमां थाय तेथी दीधा. तमे राभे पछी श्रीआचार्यणअे यार द्विस त्यां रही श्रीकल्याणरायणने पंचामृत स्नान करानी आभावेणु अने कृष्णदासना साथे पधरावी पुष्टिमार्गनी अधी रीति अतावी अने आज्ञा आपी, श्रीठाकुरण तमने आज्ञा दे तेम करणे. अे प्रकारे समजवी पोते अडेल पधार्या. पछी आभावेणु अने कृष्णदास मणीने सेवा करवा लाग्या. यादव अवास अधी उपरनी टहेल करता होता. तारे आभावेणुअे अेक ब्राह्मणने दस—पांच इपीआ छ देवीने येसाडी त्यां पूज सोंपी दीधी. ते ब्राह्मण प्रसन्न थछ सेना

वावावेनु और जादव खवास के तो कोई सगो रह्यो नहीं, सब मरे। और कृष्णदास के दोय भाई हते, सो अडेल आय श्रीआचार्यजी पास नाम पाये। साधारण वैष्णव भये। या प्रकार बहुत दिन-बीते। श्रीगोवर्द्धनधर प्रगट होइ गोवर्द्धन पर विराजे, पाछे श्रीगुसाईजी सेवा करते, सो सुनिके वावावेनु और कृष्णदास, जादव खवास को मन भयो, जो-श्रीगोवर्द्धनधर के दरसन करें। सो वावावेनु हृदय के नेत्रन सँ देखते। श्रीगोवर्द्धनधर के स्वरूप को दरसन करते। और कृष्णदास कों विरह अष्टप्रहर रहतो। जो-कव लीला में प्राप्ति होयगी? सो कीरतन गाय के निर्वाह करते। और जादव खवास भगवद् इच्छा सब बात की मानि प्रसन्नता सों सेवा करते। सो एक दिन श्रीकल्याणरायजी ने तीनो जनेन कों आज्ञा दीनी जो-तुम श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों जाव। अब तिहारी तीनोन की तहां प्राप्ति होयगी। तब वावावेनु ने कही, आप अब कौन के माथे पधारोगे? तब श्रीकल्याणरायजी ने कही, कृष्णदास के दोई भाई हैं, तिनके माथे मोकों पधराय के तुम जाव। तब वावावेनु, कृष्णदास के दोऊ भाई कों बुलाय के कहै, तिहारे बडे भागि हैं। मन लगाय के श्रीठाकुरजी की सेवा करियो। यह घर वस्तू सब तिहारे हवाले हैं। हम तीनो जने ब्रज में जाइंगे। तहां तीनो जनेन की देह छूटेगी,

करतो। गामनी ज्विका हती ते आतो अने आभावेणु अने अदव अनासने तो डोछ सगो रह्यो न हतो। अथां भयां. अने कृष्णदासने ये साध हता. ते अडेल आवी श्री-आचार्यजी पास नाम पाया साधारण वैष्णव थया. आ प्रकारे अहु द्विस वीत्या. श्रीगोवर्द्धनधर प्रकट थछ गोवर्द्धन उपर अिराभ्या. पछी श्रीगुसांछ सेवा करता. ते सांखणीने आभावेणु अने कृष्णदास अदव अवासतु मन थयुं, डे श्रीगोवर्द्धनधरनां श्रीगुसांछनां दर्शन करीअे. ते आभावेणु हृदयना नेत्रोथी अेता. श्रीगोवर्द्धनधरना स्वरूपनां दर्शन करता अने कृष्णदासने विगु अष्टप्रहर रहेतो डे क्यारे लीलाभां प्राप्ति थशे. ते कीर्तन गाधने निर्वाह करता. पछी अेक द्विस श्रीकल्याणरायअे त्रणे अणाने आज्ञा आपी, डे तसे श्रीगोवर्द्धननाथअना दर्शनेअव. हुने तभारी त्रणेनी त्यां प्राप्ति थशे. तयारे आभावेणुअे कछुं, आप हुने डोना माथे पधारशा ? तयारे श्रीकल्याणरायअे कछुं, कृष्णदासना ये साधअे छे. तेमना माथे भने पधारवीने तसे अव. तयारे आभावेणु कृष्णदासना अने साधअेने येलावीने कडे, तभारां महान साग्य छे. मन लगाडीने श्रीठाकुरअनी सेवा करअे. आ घर वस्तु अधी तभारे सुप्रत छे. असे त्रणे अण प्रजभां अर्थशुं. त्यां त्रणे अणानी देह

भगवद् इच्छा ऐसी जानि परत हैं । तब दोऊ सेवा करन लागे । तब प्रसन्न होई ये तीनों जने चले । सो कछुक दिन में मथुरा आये ।

वार्ता-प्रसंग १—सो बाबावेनु हृदय के नेत्रन सों देखते । सो ये तीनों जने केसोरायजी के दरसन कों चले । सो मथुरा में आय दरसन करे । सो दरसन करत ही में कृष्णदास कों श्रीगोवर्द्धनधर के स्वरूप सुंदरसन भये । सो कृष्णदास कों श्रीगोवर्द्धनधर के स्वरूप के दरसन को अत्यन्त विरह भयो, सो यह कीर्तन कृष्णदास ने गायो ।

* राग बिलावल *
*

आली ! तू देखरी नयनन गिरवरधर ।

सहचरी कहति दुतिय सहचरी सों परम मुदित प्यारी राधावर ॥ १ ॥

भूषन भूषित भग, मोहन-बसन मोहत कनक कान्ति हरि ।

चितें चित हरत विश्व जुवतिनके सर्वसु देत कर कमल करि ॥ २ ॥

उपमा कहा देऊ को लायक, वरनों कहा किसोर वैस वर ।

सुरति अत लटकत ब्रज आवत 'कृष्णदास' बड़भाग कल्प तर ॥ ३ ॥

यह पद गावत ही कृष्णदास की देह श्रीकेसोरायजी के मन्दिर में छूटि गई । तब बाबावेनु और जादव खवास ने कृष्णदास की देह को अग्नि संस्कार करि, बाबावेनु ने जादव खवास सों कही, जो कृष्णदास कों गोह मारि गई । और हम तो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करिकें देह छोड़ेंगे ।

छुटशे. भगवदीच्छा ज्येवी जणाय छे, त्यारे ते अन्ने सेवा करवा लाग्या. त्यारे प्रसन्न थध ते त्रणु आल्या. ते डेटलाक द्विसमां मथुरा आल्या.

वार्ता-प्रसंग १—ते आभावेणु हृदयनां नेत्राथी जेता लता. जे त्रणु जणु केशो-रायणनां दर्शने आल्या ते मथुरामां आवी दर्शन कर्यां. ते दर्शन करतां ज कृष्णदासने श्रीगोवर्द्धनधरना रूपथी दर्शन थयां. त्यारे कृष्णदासने श्रीगोवर्द्धनधरना रूपथनां दर्शनते अत्यंत विगु थयो. त्यारे आ कीर्तन कृष्णदासे गाथुं—

राग भिलावल

आली तू देखरी नयनन गिरिवरधर..... (७परणुज्ये)

ते पद गातां ज कृष्णदासनी देह श्रीकेशवरायणना मंदिरमां छुटी गध. त्यारे आभावेणु अने यादव अवासे कृष्णदासनी देहते अग्नि-संस्कार करीने आभावेणुजे यादव अवासने कछुं, के कृष्णदासने गोह मारी गध. अने अमे तो श्रीगोवर्द्धननाथ-णनां दर्शन करीने देह छोडीगुं.

भावप्रकाश—याको आसय यह, जो—गोह काल रूप है। सो हमारे संगतें इनकों पहले ही लई। यह कहे। तामें काल दोई प्रकार को है, तहां काल मुख्य अधिकारी श्रीठाकुरजी को है। जब कृष्णदास कों विरह भयो, सो विरहतें इनकी देह दसा भूलि गई। लीला में मग्न होई गये। सो बाबावेनु कों सुनायकें कीर्तन किये, जो—“हे आली !” दोऊ लीला में विसाखाजी की सखी है, तातें बाबावेनु सों कहै। तू देखि, नयनन गिरवरधर। तू जहां तहां क्यों भटकत हैं ? (मैं) नेननसों गिरवरधर कों देखत हों। और ठोर नेन जात नाहीं। सो आगे खोलि दियो। सहचरी कहत दुतिय सहचरी सों, कृष्णदास सहचरी है, और बाबावेनु सहचरी है। सो कृष्णदास तिनसों कहे, परम मुदित, जो—आनंद मय प्यारी राधा तिनके वर हैं। तिनही सों अपने नेन लगे हैं। या प्रकार कीर्तन करि अपने हृदय को भाव बाबावेनु कों जताये। सो इनको विरह श्रीगोवर्द्धनधर सहि न सके। जो—काल है, सो भगवान की विभूति है, मुख्य अधिकारी है। इच्छा शक्ति रूपवान है। यातें शिक्षापत्र में कहे हैं। श्लोक—

यतः कालस्तद्विभूतिः कालः कलयतामहम् ।

मुख्याधिकार्यपि हरेरिच्छाशक्तिस्वरूपवान् ॥ १ ॥

सो काल प्रभु की इच्छा जानि तत्काल कृष्णदास कों प्रभु के पास पहों-

भावप्रकाश—अने आशय अ, ठ गोह—काल रूप छे. अमारा पासेथी अने पहेलां न लछ गछ. अम कछुं. तेमां काल अे प्रकारने छे. त्यां काल श्रीठाकुरजीने मुख्य अधिकारी छे. अ्यारे कृष्णदासने विरह थयो ते विरहथी अेमनी देहदशा भूली नवाछ. लीलामां मग्न थई गया. त्यारे आबावेणुने संलणावीने कीर्तन क्युं ठ हे अली ! अन्ने लीलामां विशाआलनी सखी छे. तेथी आबावेणुने कहे, तू नेत्रोथी गिरिवरधरने अे तू अ्यां त्यां केम बटके छे ? हुं नेत्रोथी गिरिवरधरने अेठं छुं, भील नगाअे नेत्रो अतां नथी. ते वात आगण भोली दीधी. “सहयरी कहुति दुतीय सहयरी सों” कृष्णदास सहयरी छे अने आबावेणु सहयरी छे ते कृष्णदास अेमने कहे, परम मुदित अे आनंदमय प्यारी राधा छे तेमना वर (श्रीकृष्ण) तेमनाथी मारां नेत्र लाग्यां छे. आ प्रकारे कीर्तन करी पोताना हृदयने भाव आबावेणुने नशाव्यो. अेटले अेमने विरह श्रीगोवर्द्धनधर सही न सकया. अे काल छे ते भगवाननी विभूति छे. मुख्य अधिकारी छे, इच्छाशक्तिनुं साक्षात् स्वरूप. तेथी शिक्षापत्रमां कछुं छे. श्लोक—‘ यतः कालस्तद्विभूतिः ’ अे काल प्रभुनी इच्छा

चते करि दिये । तब बाबावेनु ने कही, कृष्णदास कों गोह मारि ले गई । ताको अर्थ यह, कृष्णदास की अहंता ममतात्मक वासना रूप देह कों गोह मारि ले गई । काहेते, जहां ताई लिंग सरीर देह न गिरे । तहां ताई भगवद् प्राप्ति न होई । सो लिंग देहकों गोह मारि इनकों ले गई, यह कहैं । पाछें अपनी बात कहैं, जो—यह श्रीगोवर्द्धनधर के दरसन करि लिंग देह कों छोड़ेंगे । तामें यह जताये, हमकों कृष्णदास को सो विरह नाहीं अब ही भयो । सो श्रीगोवर्द्धनधर को दरसन करेंगे तब विरह होइगो, तब देह छोड़ेंगे । या प्रकार बाबावेनु नें दैन्यता जताई, जो-हमारे कार्य श्रीगोवर्द्धनधर करेंगे ।

पाछें बाबावेनु और जादव खवास दोऊ मथुरा तें चले, सो श्रीनाथजीद्वार आये । सो श्रीनाथजी के दरसन किये । तहां बाबावेनु ने श्रीनाथजी के आगे कीर्तन किये । तब श्रीनाथजी के कंठ तें फूल की माला गिरी । तब रामदास एक बीड़ा प्रसादी और माला ले बाबावेनु कों दीनी ।

भावप्रकाश—जाको अर्थ यह, जो—श्रीनाथजी ने तुमकों विरह दियो । और या देह सों विदा दीनी । अब लीला में प्राप्त होइंगे । और माला श्रीनाथजी

जल्दी तत्काल कृष्णदासने प्रभुनी पारसे पहोच्यता करी दीधा. तारे पापावेषुअे कछुं, कृष्णदासने गोह मारी लघ गध. तेनो अर्थ अे, कृष्णदासनी अहंता ममतात्मक वासना रुप देहने गोह मारी लघ गध. ठमके ज्यां सुधी लिंग देह न पडे त्यां सुधी भगवत्प्राप्ति न थाय. ते लिंग देहने गोह मारी अेने लघ गध अेम कछुं. पछी पोतानी बात कही, के श्रीगोवर्द्धनधरनां दर्शन करी आ लिंग-देहने छोडीशुं. तेभां अे जल्पाव्यु अमने कृष्णदासना जेवो ह्यु विरह थयो नथी. ज्यारे श्रीगोवर्द्धनधरनां दर्शन करीशुं तारे विरह थये तारे देह छोडीशुं. आ प्रकारे पापावेषुअे दीनता जल्पावी, के अमाइ कार्य श्रीगोवर्द्धनधर करशे.

पछी पापावेषु अने यादव भवास अन्ने मथुराथी आल्या. ते श्रीनाथजीद्वार आल्या. श्रीनाथजीनां दर्शन कर्यां. त्यां पापावेषुअे श्रीनाथजीनी आगण कीर्तन कर्यां. तारे श्रीनाथजीना कठ्ठी कूलनी माणा पडी. तारे रामदासे अेक बीड़ा प्रसादी तथा माला लघ पापावेषुने आपी.

भावप्रकाश—अेनो अर्थ अे के श्रीनाथजीअे तमने विरह आयो. अने आ देहथी विदाय आपी. हुवे लीलाभां प्राप्त थयो. अने माला श्रीनाथजीनां

કે કંઠ સોં વડી મઈ । સોં યહ, જો-માલા ભક્ત રૂપ હૈ । સો ભક્તન કે હાથ વિરહ હૈ । જવ વ્રજભક્ત વિરહ દેય, તવ આવે । સો માલા કે લેત હી વિરહ ભયો । ઔર વીઢા મંગલ રૂપ દેય । સો રામદાસજી વીઢા દેય યહ જતાયે, જો-તુમ પર પ્રભુ પ્રસન્ન હૈ ।

પાછે વાવાવેનુ દંડવત્ કરિ માલા વીઢા લે, પરવત તેં નીચે ઉતરિ, દેહિ છોડિ દિયે । તવ વાવાવેનુ કી દેહ કો સંસ્કાર જાદવ ખવાસ ને કિયો । પાછે શુદ્ધ હોય શ્રીગુસાંઈજી કે દરસન કોં આયો । તવ શ્રીગુસાંઈજી ને इनकुं भगवदीय जानि सेवा दीनी, सो यादवदास करन लागे, परि मनमें खेद रहतो । पाछे जादव खवास नें विचारयो, जो-अब इहां रहि के कहा करनो ? जहां वावावेनु है तहां जाइये । तो आछो ।

ભાવપ્રકાશ—કાહે તેં, લીલા મેં હૂ જાદવ ખવાસ વાવાવેનુ કી સખી હૈ, તાતેં વાવાવેનુ કોં ટહેલ કરિ પ્રસન્ન કિયે હૈ । સો અવ વાવાવેનુ કે સંગ વિના इनसों रखो न जाई । सो विरह भयो ।

તવ જાદવ ખવાસ ને વિચારયો, જો-કૃષ્ણદાસ કી દેહ કો સંસ્કાર મેં કિયો । અવ મેરી દેહ કો સંસ્કાર કોઈ વૈષ્ણવ સેવક કરેગો । તો સેવા મેં ડન કોં અંતરાય પરે, સો અપને ન કરનો । યહ વિચારિ,

કંઠથી વડી થઇ તે એ, કે માલા ભક્તરૂપ છે તે ભક્તોના હાથ વિરહ છે. ત્યારે વ્રજ-ભક્ત વિરહ કે ત્યારે આવે. તે માળાના લેતાંજ વિરહ થયો. અને ખીડુ દીધુ તે જેના ઉપર પ્રસન્ન થાય તેને ખીડું મંગલરૂપ કે. તે રામદાસજીએ ખીડુ ઈ એ જણાવ્યું, કે તમારા ઉપર પ્રભુ પ્રસન્ન છે.

પછી બાબાવેણુ દંડવત કરી માલા ખીડા લઇ પર્વતથી નીચે ઉતરી દેહ છોડી દીધી. ત્યારે બાબાવેણુની દેહનો સંસ્કાર જાદવ ખવાસે કર્યો. પછી શુદ્ધ થઇ શ્રીગુસાંઈજીના દર્શને આવ્યા. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજીએ એમને ભગવદીય જાણી સેવા આપી. તે યાદવદાસ કરવા લાગ્યા. પરંતુ મનમાં ખેદ રહેતો. પછી જાદવ ખવાસે વિચાર્યું, કે હવે અહીં રહીને શું કરવું ? ત્યાં બાબાવેણુ છે ત્યાં જઈએ તો સાઈં.

ભાવપ્રકાશ—ક્રમકે લીલામાં પણ જાદવ ખવાસ બાબાવેણુની સખી છે. તેથી બાબાવેણુની ટહેલ કરી પ્રસન્ન કરે છે. એટલે હવે બાબાવેણુના સંગ વિના એનાથી રહેવાતુ નથી તેથી વિરહ થયો.

ત્યારે યાદવ ખવાસે વિચાર્યું, કે કૃષ્ણદાસની દેહનો સંસ્કાર મેં કર્યો. હવે મારી દેહનો સંસ્કાર કોઇ વૈષ્ણવ સેવક કરશે તો સેવામાં એમને અંતરાય પર. તેવું આપણે

दरसन श्रीनाथजी के करि, अनोसर पाछें बन में जाय तहां सूखी भूमि में गिरी लकड़ी भेली नित्य करि आवे । ऐसे करत जानी, जो-अब देह के संस्कार लायक लकड़ी भई । तब श्रीनाथजी के दरसन करे । पाछे सवेरे सेवकन सों भगवद् स्मरण करि श्रीगुसांईजी सों दंडवत् करी । ता पाछें अग्नि ले के बन में आये, सो जा ओर की ब्यार हती ता ओर चिता में अग्नि धरि, फेरि श्रीनाथजी की ध्वजा कों दंडवत् करि, उह चिता पर बैठि पाछे श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजी के चरणारविन्द को स्मरण करि देह छोड़ि, लीला में प्राप्त भये । अग्नि में बरि के अपने हाथ सों सरीर को संस्कार किये । और पहले बाबावेनु ने यादवेन्द्रदास सों कह्यो हतो, जो-विलंब मति करियो, तू वेग अह्यो । सो तो श्रीगुसांईजी ने श्रीनाथजी की सेवा सोंपी तातें इतने दिन विलंब कियो । सो जादवदास ऐसे भगवदीय हे, जो-काल इन के वस में । पाछें एक वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों पूछी, जो-महाराज ! जादवदास दिन दोई तीन तें दीसे नाहीं । तब श्रीगुसांईजी कहैं, जादवदास देह छोड़ि प्रभू कों पाये । तब वैष्णवने कही, सरीर को संस्कार कहां भयो ? तब श्रीगुसांईजी कही, बन में लकड़ी भेली करि आपु ही आप ने संस्कार को उपाय किये ।

न करुं, अथ विचारी श्रीनाथलनां दर्शन करी अनोसर पछी वनमां नद्य त्यां सुकी भूमीमां परेदी लाकडीआने नित्य अकडी करी आवे, अथ करतां नश्युं, के हुवे देहना संस्कार लायक लाकडीआ थय त्यारे श्रीनाथलनां दर्शन कर्यां, पछी पथा सेवकाने भगवद् स्मरण करी श्रीगुसांईजीने दंडवत् करी ते पछी अग्नि लभने वनमां आव्या, ते जे तरङ्गनी हुवा हुती ते तरङ्ग चितामां अग्नि धरी करी श्रीनाथलनी ध्वजने दंडवत् करी ते चिता उपर जेसी पछी श्रीआचार्यल श्रीगुसांईजीना यश्वरविन्दुं स्मरण करी देह छोडी दीलामां प्राप्त थया, अग्निमां जणीने पोताना हाथथी शरीरने संस्कार कर्यां अने पहिलां आभावेछुअे यादवेन्द्रदासने कहुं हतुं, के विलम्ब न करणे, तू नहदी आवणे, ते तो श्रीगुसांईजीअे श्रीनाथलनी सेवा सोंपी हुती तेथी अरला दिवस विलम्ब थयो, अे यादवेन्द्रदास अेवा भगवदीय हुता के काल अेभना वशमां हुतो, पछी अेक वैष्णवे श्रीगुसांईजीने पूछ्यु, के महाराज ! यादवदास दिवस जे-त्रयुथी दे-भाता नथी ? त्यारे श्रीगुसांईजी कहे, यादवदास देह छोडी प्रभुने पाभ्या, त्यारे वैष्णवे हतु, गरीरने संस्कार कर्यां थयो ? त्यारे श्रीगुसांईजीअे कहुं, वनमां लाकडी अेकडी करी पोतेज पोताना संस्कारने उपाय कर्यां,

भावप्रकाश—सो यातं, जो—काह वैष्णव कों भगवद् सेवा में अन्तराय कैसे करों ? वैष्णव ॥३९॥

सो बाबावेनु, कृष्णदास, जादव खवास अलौकिक दैवी जीव हे । इनकों अलौकिक सामर्थ ही, ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे । इनकी वार्ता कहां ताई कहिये । वार्ता ॥३९॥

✽ ✽ ✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, जगतानंद, सारस्वत ब्राह्मण, थानेश्वर में रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये जगतानंद मामा सखी श्रीस्वामिनीजी की, तिनकी सखी है । लीला में इनको नाम 'माधुरी' है । सो ए थानेश्वर में एक ब्राह्मण के घर जनमें । सो वर्ष बारह के भये, तत्र कासी में जाय विद्या पढ़े । वर्ष बारह कासी में रहि विद्या श्रीभागवत पढ़ी । पाछे थानेश्वर में आई सरस्वती नदी के ऊपर श्रीभागवत की कथा कहते, तामें इनकी जीविका निर्वाह लायक चली जाती ।

वार्ता-प्रसंग १—सो एक समय थानेश्वर श्रीआचार्यजी पधारे सो प्रातःकाल की सन्ध्या किये । इतने में जगतानन्द आई सरस्वती में न्हाई श्रीभागवत की कथा कहन लागे । तब श्रीआचार्यजी मन

भावप्रकाश—ते अथी ठे डोड वैष्णवने भगवत्सेवामां अन्तराय डेम डइं ? वैष्णव ३८

ते आभावेनु, कृष्णदास, जादव खवास अलौकिक दैवी जीव हुता. अमने अलौकिक सामर्थ्य हुती. अया कृपापात्र भगवदीय हुता. अमनी वार्ता कथां सुधी कहीअे.

✽ ✽ ✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुलना सेवक, जगतानंद, सारस्वत ब्राह्मण थानेश्वरना वासी, तेमनी वार्ताना भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे जगतानंद मामा सखी श्रीस्वामिनीजी तेमनी सखी छे. लीलामां अेमनुं नाम 'माधुरी' छे. अे थानेश्वरमां अेक ब्राह्मणने धरे जनिया. ते वर्ष पारना थया तयारे कासीमां जध विद्या लागुया. वर्ष पार कासीमां रही विद्या श्रीभागवत लागुया. पछी थानेश्वरमां आनी सरस्वती नदीना उपर श्रीभागवतनी कथा कहेता. तेमां अेमनी जीविका निर्वाह लायक यादी नती.

वार्ता-प्रसंग १—अेक समय थानेश्वर श्रीआचार्यजी पधारे. तयारे प्रातःकालनी सन्ध्या करी. अेकसामां जगतानंद आनी सरस्वतीमां न्हाइ श्रीभागवतनी कथा कहेवा लाग्या. तयारे श्रीआचार्यजीअे मनमां विचार्युं, आ जगतानंद दैवी जीव अ-

में विचारे, यह जगतानन्द दैवी जीव हमारो है, याकों अंगीकार करनो। यह विचार करि, जगतानन्द के सन्मुख जाइ विराजे। तब जगतानन्द ने जान्यो, जो-कोई पंडित ब्राह्मण है। तब जगतानन्द ने एक श्लोक श्रीभागवतको यह कह्यो, वेनुगीत को। 'प्रायो बताम्ब विहगा।' यह श्लोक कहि पाछें याकों अर्थ करि, श्रीआचार्यजी सों पूछे, जो-याही भांति अर्थ है के कछु और है? तब श्रीआचार्यजी कहें, या श्लोकमें अनेक भाव है, बहोत अर्थ हैं। और आवत होय तो कहो। तब जगतानन्द ने कह्यो, महाराज! श्लोकार्थ मोकों आवत हतो, सो मैं कहो। अब आपु और कहो। तब श्रीआचार्यजी कहें, व्यास आसन तुम बैठे हो, सो व्यास आसन को अतिक्रम हम कैसे करें? तब जगतानन्द आसन सों उतर के कह्यो, आपु विराजि के कहो, मोकों सुनिवे की इच्छा है। तब श्रीआचार्यजी सुबोधिनी को अर्थ उहि श्लोक को करन लागे। सो कहत कहत सवारे तें तीसरो पहर भयो। तब श्रीआचार्यजी कहे, यह श्लोक की व्याख्या दोई तीन महिना ताई चलेगी, तातें अब तुम भूखे हो, तातें उठो। तब जगतानन्द ने जान्यो, जो-ये साक्षात् ईश्वर हैं। तब जगतानन्द दंडवत् करि विनती करि कह्यो, महाराज! आपु साक्षात् पुरुषोत्तम हो। जो चाहो तितने दिन

मारो छे. अने अंगीकार करयो. अने विचार करिने जगतानन्दनी सन्मुख जह गिराज्या. तयारे जगतानन्दे नश्युं, के कोइ पंडित ब्राह्मण छे. तयारे जगतानन्दे अने श्लोक श्रीभागवतनो आ कह्यो, वेनुगीतनो- 'प्रायो बताम्बविहगा' अने श्लोक कही पछी अनेनो अर्थ करी श्रीआचार्यजने पूछ्युं, के व्यास प्रभासे अर्थ छे के कंठ पीजे छे? तयारे श्रीआचार्यज कहे, आ श्लोकमां अनेक भावो छे. अहुन अर्थो छे. अने आव-उतो होय तो कहे. तयारे जगतानन्दे कहुं, महाराज! श्लोकार्थ मने आवउतो हुतो ते में कह्यो. हुवे आप पीनुं कहे. तयारे श्रीआचार्यज कहे, व्यास आसन ते मे पेटा छे. ते व्यास आसननो अतिक्रम करी अने केम कहीअे? तयारे जगतानन्दे आसनथी उतरिने कहुं, आप गिराजने कहे. मने सांख्यवाणी धर्या छे. तयारे श्रीआचार्यज सुबोधिनीनो अर्थ ते श्लोकनो करवा लाग्या. ते कहेतां कहेतां सवारथी त्रीजे प्रहर थयो. तयारे श्रीआचार्यज कहे, आ श्लोकनी व्याख्या मे त्रयु महीना सुधी आसरो तेथी हुवे तमे लूख्या छे तेथी उठा. तयारे जगतानन्दे नश्युं, के अने साक्षात् ईश्वर छे. तयारे जगतानन्दे दंडवत् करी विनती करिने कहुं, महाराज! आप साक्षात् पुरुषोत्तम छे. आहो तेइसा द्विस अर्थ करी शके. हुवे इया करिने मारा घरे पधारो. तयारे

अर्थ करो। अब कृपा करि मेरे घर पधारो। तब श्रीआचार्यजी कहे, हम अपुने सेवक बिना काहूके घर पधारत नाहीं। तब जगतानन्द ने बिनती करी, महाराज ! हमकों सेवक करो। तब श्रीआचार्यजी आज्ञा करें, जो-जाऊ न्हाई आउ। तब जगतानन्द सरस्वती में न्हाइ अपरस में आयो। तब श्रीआचार्यजी ने नाम सुनाय ब्रह्मसंबंध करायो। पाछें जगतानन्द के घर पधारे। तब जगतानन्द सों कहें, तुम भगवद् सेवा करो। तब जगतानन्द ने कही, महाराज ! मेरे एक ठाकुर लालजी हैं, सो सदा तुलसी में बैठे रहत हैं। तिन पर एक लोटी पानी नित्य चढ़ावत हों। तब श्रीआचार्यजी कहें, बेगे श्रीठाकुरजी कों लाव, ऐसे न करिये। तब जगतानन्द श्रीठाकुरजी कों ले आयो। तब श्रीआचार्यजी पंचामृत स्नान कराई पाट बेठाये, जगतानन्द के माथे पधराए। आपु जगतानन्द के घर पाक सामग्री करि, श्रीठाकुरजी कों भोग धरे। पाछें आप भोजन करि, जगतानन्द कों जूठन की पातर धरी। पाछें रात्रिकों श्रीआचार्यजी यह श्लोक कहे-

पठनीयं प्रयत्नेन सर्वहेतुविवर्जितम् । वृत्त्यर्थं नैव गुंजीत प्राणैः कंठगतैरपि ॥

सो जगतानन्द ने सुनत ही जल तें संकल्प कियो, जो-आजु पाछें वृत्त्यर्थ श्रीभागवत न कहूंगो, और शास्त्र कहूंगो। तब श्रीआचार्यजी कहें, श्रीभागवत कों कहि जीविका कबहू न करनो,

श्रीआचार्यजी कहे, अमे अमारा सेवक सिवाय कोइना धरे पधारता नहीं। त्पारे जगतानन्द बिनती करी, महाराज ! अमने सेवक करे। त्पारे श्रीआचार्यजी आज्ञा करे, के जल न्हाइ आवो। त्पारे जगतानन्द सरस्वतीमां न्हाइ अपरसमां आव्या। त्पारे श्रीआचार्यजी अमे नाम संलगावी ब्रह्मसंबंध कराव्युं। पछी जगतानन्दना धरे पधार्या। त्पारे जगतानन्दने कहे, तमे भगवद् सेवा करे। त्पारे जगतानन्द कहुं, महाराज ! मारा अके ठाकुर लालजी छे ते सदा तुलसीमां भेसी रहे छे। तेमनी उपर अके लोटी पाणी नित्य चढ़ावुं छुं। त्पारे श्रीआचार्यजी कहे, जल्दी ठाकुरजीने लाव, अमे न करीअे। त्पारे जगतानन्द श्रीठाकुरजीने लभ आव्या। त्पारे श्रीआचार्यजी अमे पंचामृत स्नान करावी पाट भेसाडया। जगतानन्दना माथे पधराव्या। पोते जगतानन्दना घरे पाक सामग्री करी श्रीठाकुरजीने भोग धर्या। पछी पोते भोजन करी जगतानन्दने जूठननी पातर धरी। पछी रात्रिअे श्रीआचार्यजी अा श्लोक कहे- 'पठनीयं प्रयत्नेन' (उपर लुग्या)।

ते जगतानन्दे सांलगातांज जसथी संकल्प कर्यो के आन पछी वृत्ति अर्थ श्रीभागवत नहीं कहुं। भीन शास्त्रो कहीश। त्पारे श्रीआचार्यजी कहे, श्रीभागवतने

प्राण जाई तो सुखेन जाऊ । या प्रकारं जगतानन्द के घर रहि,
पुष्टिमार्ग की रीति सेवा की सिखाई, आप पृथ्वी परिक्रमा को
पधारै । तब जगतानन्द मन लगाई के भगवद् सेवा करन लागे ।
और पुरान की कथा आदि महाभारत कहते । तासों जीविका करते ।
सो भगवद् सेवा करत कछुक दिन में श्रीठाकुरजी सानुभाव जता-
वन लागे । सो जगतानन्द बड़े भगवदीय हे । इनकी वार्ता कहां
ताई कहिये । वार्ता ॥४०॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, आनंददास विश्वंभरदास क्षत्री,
प्रयाग में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में कुमारिका की दोऊ सखी है, लीला में
आनन्ददास को नाम 'नागरी', और विश्वंभरदास को नाम 'मल्लिका' । सो ये
प्रयाग में एक क्षत्री के घर जनमें । सो इनको मन बालपने सों वैराग्य दसा में
रहे । खानपान वस्त्रादिक देह सुख कछ न करे । जैसे माता पिता देय सो खाय,
पहरें । जो—आछो माता पिता पहराय देई तो प्रयाग में त्रिवेनी की कीच में मेलो
करिके पहरे । माता—पिता खीजें, गारी देय, मारे, परन्तु बोले नहीं । जो गहना

कहीने लुपिका कहीये न करवी. प्राणु नय तो लदे नय. आ प्रकारे जगतानन्दना धरे
रही पुष्टिमार्गनी रीति सेवानी शिखावी पाते पृथ्वी परिक्रमाये पधार्या. त्यारे
जगतानन्द मन लगाडीने भगवद्सेवा करवा लाग्या. धीन पुराणनी कथा आदि महा-
भारत कहेता. तेनाथी लुपिका करता. पछी भगवद्सेवा करतां डेटलाक द्विसभां श्री-
ठाकुरल सानुभावता लुभाववा लाग्या. ते जगतानन्द महान भगवदीय हुता. तेभनी
वार्ता क्यां सुधी कहीये ? वार्ता ४०

* * *

हुये श्रीआचार्यल महाप्रभुलना सेवक, आनंददास विश्वंभरदास क्षत्री,
प्रयागमां रहेता, तेभनी वार्तानो भाव कहीये छीये—

भावप्रकाश—ये लीलामां कुमारिकानी अन्ने सप्पी छे. लीलामां आन-
न्ददासनुं नाम 'नागरी' अने विश्वंभरदासनुं नाम 'मल्लिका' छे. ये प्रयागमां
येक क्षत्रीना धरे जन्या. ते अमनुं मन आलपणुथी वैराग्य दशां रहे. आन-
पान वस्त्रादिक देह सुख कंध न करे. लुपुं माता पिता दे तेवुं आय पहरे. ले
सुंदर मातापिता पहरावी दे तो प्रयागमां त्रिवेणीना कीचमां मेलुं करीने पहरे.
माता-पिता पीळ, गाणो दे परंतु ओदे नही. ले धरेणां पहरावे तो कर्ष आलणुने,

पहरावे तो काहू ब्राह्मण कों, वैरागी कूँ दे आवे । और पिता माता सों कछू बोले नाहीं । जब तब यह कहै, जो-अपने खाये, पहरे तें कहा है ? कछू परमारथ करो तो आछो है । सो यह बात माता-पिता कों सुहाई नाहो । पाछें माता-पिता ने आनन्ददास की सगाई करी । तब आनन्ददास ने कही, मेरो विवाह मति करो, मैं तो वैरागी हों । सो माता-पिता माने नाहीं, ब्याह की तैयारी किये । तब दिन एक ब्याह को रह्यो । तब आनंददास ने छोटे भाई विश्वंभरदास सों कही, जो-माता-पिता तो मानत नाहीं । हमारो ब्याह करि पाछे तेरो ब्याह करेंगे, तब अपने बंदीखाने परेंगे । सो अब कहा उपाय है ? तब छोटे भाई विश्वंभरदास ने कही, यह गाम छोड़ि कहुँ निकसि चलो । तब आपुन बचेंगे । तब दोऊ भाई संघ्या समें नाव पर बैठि श्रीयमुनाजी की पार होइ चित्रकोट में जाय रहें । तहां पर्वतन की सोभा देखें, बनफल खाई, दिन आठ रहे । इहां माता-पिता सगरो गाम हुंदि के हार रहें । पाछे पिताने कोई सों सुन्यो, जो-दोई बालक चित्रकोट में जाय रहे हैं । तब पिता नोमें दिन चित्रकोट आयो, सो बेटान की दसा देखिकें कह्यो, जो-अब तुम घर चलो, तिहारो ब्याह न करेंगे । हम वृद्ध हैं, हमारी देह छूटे तब तिहारो मन आवे सो करियो । अब ही तुमकों बाल अवस्था में बनवास

वैरागीने दध आवे अपने माता-पिताथी कछ भोले नहीं । त्यारे त्यारे अमे कहे, ठे आपणा प्पावापहेरवाथी शुं छे ? कछ परमार्थ करे तो साइ छे । आ वात मातापिताने गमे नही । पछी मातापिताअे आनंददासनी सगाध करी । त्यारे आनंददासे कछु, मारे विवाह न करता हुं तो वैरागी छुं । ते वात मातापिता माने नही । लगननी तैयारी करी त्यारे दिवस अेक लगनने आकी रह्यो, त्यारे आनंददासे नानासाध विश्वंभरदासने कछुं, ठे मातापिता तो मानता नथी । अ-माइं लगन करे । त्यारे आपणुे अदीपानामां पडीशुं । माटे हुवे शेो उपाय छे । त्यारे नानासाध विश्वंभरदासे कछु, आ गाम छोडी कछ निकणी यावो त्यारे आपणुे अथीशुं । त्यारे अने साध संध्या समे नाव उपर भेसी श्रीयमुनाजीनी पार अछे चित्रकुटमां अछ रह्या । त्यां पर्वतानी शोभा नुवे, बनफल पाध दिवस आठ रह्या । अही माता-पिता अंधुं गाम भोणीने हारी गया । पछी पिताअे ठाधनाथी सांलज्युं के अे साध चित्रकुटमां अछ रह्या छे । त्यारे पिता नवमा दिवसे चित्रकुट आव्यो । ते पुत्रोनी दशा अेधने कहे ठे हुवे तमे घर यावो । तमाइं लगन नहीं करीअे । अमे वृद्ध छीअे । अमारी देह छुटे त्यारे तमार मनमां आवे तेम करेअे । हुमणुं तमने

उचित नहीं है। तब दोऊ भाई कहें, बनवास तो बालपने ही में ठीक है, परन्तु तुम आये ताते तिहारे संग चलेगें। परन्तु हमारे ब्याह की दोनों के ब्याह की चर्चा मति करो। और हमारे पीछे मति परो। चाहेंगे सो करेंगे। कछु चोरी अन्याव करें तो बरजियो। हमकों तो वैरागी अतीत प्रिय हैं, तिनके पास बैठेंगे। सो तुमकों भावत नहीं। तातें घर छोड़ें। तब पिताने कही, अब तुम घर चलो। तिहारे मन आवे सो करियो। हम तिहारे पीछे न परेंगे। तब दोऊ भाई पिता के संग आये। सो एक बार दोऊ भाई घर में आइ, खान पान करि जाइ। पाछें कथा वार्ता जहां तहां सुने। तहांई धरती पर परि रहे। देह को दुःख सुख मनमें गिने नहीं।

सो एक समय दोऊ भाई श्रीयमुनाजी के तीर बैठे ज्ञान की वार्ता करत हे। जो-भाई ! जन्म सगरो वीत्यो। प्रभुसों पहचान न भई। मन श्रीठाकुरजी में न लाग्यो। कथा वार्ता बहोत सुनी, परन्तु मन बस न भयो। सो अपनो मनुष्य जन्म सगरो वृथा गयो। अब फेरि चौरासी भोगेंगे, सो कहा करें ? कछु उपाय दीसत नहीं। या प्रकार परस्पर बतराये, पाछें धीरज छूटि गयो, सो श्रीयमुनाजी

आद्यावस्थाभां वनवास उचित नथी। त्यारे अन्ने बाध पोत्याः वनवास तो आल-पण्णामां न ठीक छे। परंतु तमे आल्या तेथी तमारी साथे आक्षीशुं। परंतु अ-मारा लगननी-अन्नेना लगननी अर्या न करे अने अमारी पाछण न पडो। अमे आडे तेम करीशुं। कंध येरी अन्याय करीये तो रोकजे अमने तो वैरागी अ-तीत प्रिय छे तेमनी पासे भेसीशु। ते तमने गमतु नथी तेथी धर छोड्युं। त्यारे पिताने कछुं, हुवे तमे धर आलो। तमारा मनमां आवे तेम करजे। अमे तमारी पाछण नही पडीये। त्यारे अन्ने बाध पितानी साथे आल्या। पछी अेक वार अन्ने बाध धर आवी आनपान करी अथ। पछी कथा वार्ता ज्यां त्यां सांभणे। त्यां धरती उपर पडी रहे। देहनुं दुःख सुख मनमां गणे नही।

पछी अेक समय अन्ने बाध श्रीयमुनाजाना तटे भेसीने ज्ञाननी वार्ता करता हुता। हे बाध ! जन्म अधे वीत्यो, प्रभुथी आणभाणु न थध। मन श्रीठाकुरजामां न लाग्यु। कथा वार्ता धणी सांभणी परंतु मन वश न थयुं ते आपणो मनुष्य जन्म अधे वृथा गयो। हुवे इरी येराशी भोगवीशुं शु करीये । कंध उपाय हे-आतो नथी। आ प्रकारे परस्पर वातयित करी। पछी धीरज छुटी गध त्यारे श्रीय-मुनाना किनारे पोतानुं माथुं पीटीने इहन क्युं। पछी शरीरनी सुध न रही।

के किनारे अपना मूँड पीट के रुदन किये । सो सरीर की सुधि न रही । रात्रिकों वहां दोज़ परि रहै । तब अर्द्ध रात्रि समय श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजी सों कहें, जो दोई क्षत्री के बालक श्रीयमुनाजी के वा पार रेति में परे हैं । तिनकों मेरे लिये बड़ो ताप है सो आपु पधारि के उनकों अङ्गीकार करो । नाहीं तो उनको कछु दिन में सरीर छूटि जायगो । तब श्रीआचार्यजी कृष्णदास मेघन आदि वैष्णव न कों जगाह, बाही समय श्रीयमुनाजी के तीर पधारे । सो घाट पर कोई नाहीं । नाव बंधी है । तब आप वैष्णव सहित नाव पर बैठे । और वैष्णव सों कहें, तुम नाव खेवत तो नाहीं जानत, परन्तु जैसे आवे तैसे खेवो । नाव पार जायगी मेरी इच्छा है । तब वैष्णव खेवे । सो नाव, दोज़ भाई रेति में परे हते, तहां आई लागी । तब श्रीआचार्यजी श्रीहस्त में जमुना जल ले वेद मंत्र पढ़ि दोज़ भाई के ऊपर छिड़के । सो दोज़ उठि के श्रीआचार्यजी कों दंडवत करि चिनती किये । महाराज ! हमकों अङ्गीकार करो । तब श्रीआचार्यजी कहें, सवरो होय तब नाम सुनावेंगे । तब दोज़ भाई ने कही, महाराज ! सवरे लों देह रहै, न रहै, या देह को कहा प्रमान है ? और आज दोज़ जने कछु खान पान तो कियो नाहीं, तातें आप ढील मति करो । श्रीठाकुरजी की कृपा तें आपको दरसन भयो । सवरे ताई

रात्रिमें त्यांज् अन्ने पडया रखा. त्यारे अर्ध रात्रि समये श्रीठाकुरज्ये श्रीआचार्यज्ये कछु, के अन्ने क्षत्रीना बालक श्रीयमुनाज्येनी पेसी पार रेतीमां पडया छे. तेमने मारा माटे अहु ताप छे. ते आप पधारीने तेमने अंगीकार करे. नही तो अमनुं थोडा दिवसमां शरीर छुटी जशे. त्यारे श्रीआचार्यज्ये कृष्णदास मेघन आदि वैष्णवाने जगाडीने तेज समये श्रीयमुनाज्येना तीरे पधार्या. ते घाट उपर ढाध न हुतुं. नाव बांधी छे. त्यारे आप वैष्णवाने कहे, तमे नाव यसावतां तो जशुता नथी. परतु जेम आवे तेम यसावो. नाव पार जशे मारी धरज छे. त्यारे वैष्णवे यसावी. ते नाव अन्ने साध रेतीमां पडया हुता त्यां आवी लागी. त्यारे श्रीआचार्यज्ये श्रीहस्तमां जमना जल लथे वेदमंत्र बाण्डी अन्ने साधना उपर छांटयुं. त्यारे अन्ने साधज्ये उठीने श्रीआचार्यज्येने दंडवत करी चिनती करी, महाराज ! अमने अंगीकार करे. त्यारे श्रीआचार्यज्ये कहे, सवार थरो त्यारे नाम संभावीथुं, त्यारे अन्ने साधज्ये कछुं, महाराज ! सवार सुधी देह रहे, न रहे. आ देहनुं थुं प्रमाणु छे ? अने आने अन्ने जशुअ्ये कंठ पानपान तो कथुं नथी. तेथी आप ढील न करे. श्रीठाकुरज्येनी कृपाथी आपनां दर्शन थयां. सवार सुधी

कहा जानिये कैसी बुद्धि हे जाई ? तब श्रीआचार्यजी कहें, तिहारी बुद्धि कबहू विगरे नाही, तुम उत्तम जीव हो । और तुम खान पान किये होऊ तोऊ तुम सुद्ध हो । पाछें दोऊन कों नाम सुनाइ ब्रह्मसंबन्ध पाछे करायो । नाव पर बैठाय पार आइ अपने घर ले गये । ता पाछें सवेरो भयो तब श्रीआचार्यजी स्नान करि श्रीठाकुरजी की सेवा सों पोहोंचि, दोऊ भाई सों कहें, तुम भगवद् सेवा करो । तब दोऊ भाई बिनती किये, महाराज ! हमारो मन तो सन्यास लेन को है । परन्तु और ठौर मन जात नाही । सो हमारो मन ठिकाने रहे, त्याग दसा छूटे, घरमें रह्यो जाई, तब भगवद् सेवा बने । तब श्रीआचार्यजी चरणामृत दिये, और 'सन्यास निर्णय' ग्रन्थ करि दोऊ भाईन कों सुनाये । तब रस उछलित हुतो, सो हृदय में भगवद् रस स्थिर भयो । मन को उद्वेग मिटि गयो । तब श्रीआचार्यजी वस्त्र प्रसादी श्रीनवनीतप्रियजी के दिये । और कहें, तुम इनकों पधराई सेवा करियो । घरमें जाई । तिहारो मन सदा श्रीठाकुरजी की लीला में रहेगो । लौकिक वैदिक तुमकों बाधक कछु न होइगो । तब दोऊ भाई श्रीआचार्यजी कों दण्डवत् करि विदा होई घर में आये । तब माता-पिता रोवन लागे, बेटा ! दोइ दिनतें तुम आये नाही । कहाँ खान पान कियो होयगो ? हम जहां ताई

शुं अण्णिये डेवी बुद्धि थय अय ? त्तारे श्रीआचार्यञ्चु कडे, तभारी बुद्धि कदीय अण्डशे नही. तमे उत्तम अण्णो. अने तमे पानपान कर्णु होय तोये शुद्ध छे. पछी अनेने नाम स अणावी अन्नस पंध पछी कराव्यु. नाव उपर येसाडी पार आवी पोताना धरे लध गया. ते पछी सवार थयु त्तारे श्रीआचार्यञ्चु स्नान करी श्रीठाकुरञ्चुनी सेवाथी पडोन्थी अनेने बाधने कडे, तमे भगवद्सेवा करो. त्तारे अनेने बाधये बिनती करी, महाराज ! अभाइ मन तो सन्यास लेवानु छे परंतु अण्ण अण्णये मन अंतु नथी. तो अभाइ मन ठेकाण्णे रहे त्याग दशा छुटे धरमां रही शकाय त्तारे भगवद्सेवा अने. त्तारे श्रीआचार्यञ्चुये अण्णामृत व्याप्यु. अने 'सन्यास निर्णय' अथ करीने अनेने बाधने स अणाव्यो. त्तारे रस उछलित हुतो ते हृदयमां भगवद् रस स्थिर थयो. मनने उद्वेग मटी गयो. त्तारी श्रीआचार्यञ्चुये श्रीनवनीतप्रियञ्चुनां प्रसादी वस्त्र व्याप्यां अने कर्णु, तमे अनेने पधरावी सेवा करणे, धरमां अघने. तभाइ मन सदा श्रीठाकुरञ्चुनी लीलामां रहेसे लौकिक वैदिक तमने कर्णु बाधा नही थाय. त्तारे अनेने बाध श्रीआचार्यञ्चुने दंडवत् करी विदाय थय धर आव्या. त्तारे मातापिता सेवा लाग्या भेटा ये दिवसथी तमे आव्या नही.

जीवे तहाँ ताई एक वार हमकों दिखाई दे जायो करो । तव दोऊ भाई ने कही, हमकों एक ठौर करि देऊ, तो हम घर ही में रहि जाई । तव माता-पिता ने कही, जो-यह सगरी जगह तिहारी है, जहाँ चाहो तहाँ रहो । तव दोऊ भाई ने कही, जो-नाहीं, न्यारी करि देऊ । तिहारी जगे में हम न आवें । हम रहें तहाँ तुम मति आवो, तो हम घरमें रहें । तव एक अलग जगह बताये । सो दोऊ भाई खासा करि श्रीठाकुरजी कों पधराये, मिलके रसोई करि भोग धरि महाप्रसाद लेंही । पाछें भगवद् वार्ता करें । मगन होई गये । सन्यास निर्णय को भाव लीला को भी विचार करि रात्रि दिन भगवद् रस में मगन रहें । और माता-पिता वहीत सुख पाये, जो-पुत्र घरमें है, न मिले तो कहा भयो ?

वार्ता-प्रसंग १—सो दोई भाई भगवद् वार्ता करे, तामें कवहू छोटे भाई कों निद्रा आई जाइ और बड़े भाई रस में मगन होइ कहें जाई, तव श्रीठाकुरजी हूंकारी भरत जाय । जो-छोटे भाई कों निद्रा आई है, जो-हूंकारी न भरोंगे तो यह बड़े भाई न कहेगो । तातें श्रीठाकुरजी हूंकारी भरें । पाछें जब छोटे भाई जागे तव दोऊ भाई कहें, जो मैं यहां ताई सुन्यो, आगे तो मोकों निद्रा आई । तव बड़े भाई ने कही, तुमकों निद्रा आई तव हूंकारी कौन भरयो ?

पानपान क्यां क्युं हुरे ? अमे ज्यां सुधी लुवीये त्यां सुधी अेक वार अमने देखाध जया करे, त्यारे अन्ने साधये क्युं, अमने अेक जगा करी दे. तो अमे धरमां रहीये त्यारे मातापिताये क्युं, के आ अवी जगा तमारी-छे. ज्यां याहो त्यां रहे. त्यारे अन्ने साधये क्युं, के नहीं, अलग करी दे. तमारी जगामां अमे नहीं आवीये. अमे रहीये त्यां तमे न आवो, तो अमे धरमां रहीये. त्यारे अेक अलग जगा अतावी. पछी अन्ने साधये जगा आसा करी श्रीठाकुरने पधराव्या मणीने रसोई करी लोग धरी महाप्रसाद लीधो. पछी भगवद् वार्ता करे. मगन थध गया. सन्यास निष्पथने आन लीलांतो पणु आन विचार करी रात्र-दिवस रसमां मगन रहे. अने माता-पिता अहु सुष पाभ्या, के पुत्र धरमां छे न भंगे तो शुं थयुं ?

वार्ता-प्रसंग १—ते अन्ने साध भगवद् वार्ता करे तेमां क्यारेथ नाना साधने निद्रा आवी जय अने मोठो साध रसमां मगन थध कहे जय त्यारे श्रीठाकुर अहुं करे अरे जय. ते अेधी. के नाना साधने निद्रा आवी छे. जे अहुं करे नहीं अरं तो आ. मोठो साध नहीं कहे. तेथी श्रीठाकुर अहुं करे अरे. पछी न्यारे नाना साध जगे त्यारे अन्ने साध कहे, जे में अडी सुधी सांलग्युं. आगण तो अने निद्रा आवी.

तब छोटे भाई ने कही, मैं तो सोय गयो, मोकों खबरि नाहीं । तब बड़े भाई ने कही श्रीठाकुरजी ने हूंकारी भरी होयगी । तब दोऊ भाई प्रसन्न भये, जो—श्रीआचार्यजी की कानि तें श्रीठाकुरजी सानु-भावता जनावन लागें । सो दोऊ भाई या प्रकार बालपने सों लौकिक वैदिक जाने नाहीं । संसार को ताप रंचक व्याघ्यो नाहीं । ऐसे भगवदीय आनंददास विश्वंभरदास श्रीआचार्यजी के कृपापात्र हे । सो इनकी वार्ता कहां ताई कहिये । वार्ता ॥४१॥

भावप्रकाश—इनकी वार्ता में यह सिद्धान्त भयो, जो—श्रीठाकुरजी को विरह जाकों होई, ताकों वेगेहि प्रभु कृपा करें ।

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकनी, एक ब्राह्मनी अडेल में रहती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो ब्राह्मनी लीला में ललिताजी की सखी है, इनको नाम 'शशीकला' है । सो अडेल में एक ब्राह्मन के घर प्रगटी । सो वर्ष नौ की भई, तब ब्याह अडेल में एक ब्राह्मन के घर भयो । सो रोगी रह्यो । तब यह ब्राह्मनी वर्ष पेंतालीस की भई, तब रोग को मारयो याको धनी मरयो । सो

त्यारे भोटा लाभये कछुं, तमने निंदा आवी तो हुंकारे केछे अर्थे ? त्यारे नानो लाभ कहे, हुं तो सुध गयो. भने अणर नथी. त्यारे भोटा लाभये कछुं, श्रीठाकुरलये हुंकारे अर्थे हरी. त्यारे अन्ने लाभ प्रसन्न थया. जे श्रीआचार्यलनी कानिथी श्रीठाकुरल सानुलावता जणायवा लाग्या. ते अन्ने लाभ आ प्रकारे आलपणुथी लौकिक-वैदिक जणुता नहीं. संसारनो ताप रंचके व्याघ्यो नहीं. जेवा भगवदीय आनंददास विश्वंभरदास श्रीआचार्यलना कृपापात्र हुता. जेमनी वार्ता क्यो सुधी कहीअे ?

भावप्रकाश—जेमनी वार्तामां आ सिद्धांत थयो क श्रीठाकुरलनो विरह जने होय तेने तरत ज प्रभु कृपा करे. वार्ता ॥४१॥

* * *

हुवे श्रीआचार्यल महाप्रभुलनी सेवकनी, जेक ब्राह्मणी, अडेलमां रहती तेनी वार्ताना लाप कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—जे ब्राह्मणी लीलामां ललितालनी सखी छे. जेमनुं नाम 'शशीकला' छे. ते अडेलमां जेक ब्राह्मणना धरे प्रकटी. ते वर्ष नवनी थछे तेनुं लगन अडेलमां जेक ब्राह्मणना धरे थयुं. ते रोगी रह्यो. ज्यारे जे ब्राह्मणी वर्ष पीसतालीसनी थछे त्यारे रोगनो मार्यो जेनो धणी मार्यो. ते लौकिक विषय

लौकिक विषय आदि घर को सुख यह ब्राह्मणी जाने नहीं। पाछें अकेली भई तब भगवद् इच्छा तें मन में आई, जो-अब श्रीआचार्यजी की सेवक होंऊ। सो जाइ के श्रीआचार्यजी कों दंडवत् करि विनती करी, जो-महाराज ! मोकों सरनि लीजिये। जन्म सगरो लौकिक पति की टहेल में वीत्यो, सोऊ मरि गयो। अब मैं आप की सरनि आई हों। यह कहि रोवन लागी। तब श्रीआचार्यजी कों दया आई। कहे, जा, यमुनाजी में न्हाई आव। तब वह ब्राह्मणी श्रीयमुनाजी में न्हाई आई। तब श्रीआचार्यजी श्रीनवनीतप्रियजी के आगे वैठारि नाम निवेदन कराई कहें, अब तू भगवद् सेवा करि, जासों कृतार्थ होई। तब ब्राह्मणी ने कही, मोकों सेवा पधराय दीजिये। तब श्रीआचार्यजी कहें, काल्हि तोकों सेवा देयगें, आजु यहां रहि। पाछे आपु जूठनकी पातर धरी। सो वह प्रसाद ले, तहां रही। रात्र रही, पाछे प्रातःकाल भयो। तब वह ब्राह्मणी देह कृत्य करि श्रीयमुनाजी न्हाइ कें आई। इतने में एक ब्राह्मन दक्षिन सों आयो। सो वाने श्रीआचार्यजी कों एक श्रीभागवत की पुस्तक और एक लालजी को स्वरूप देके कह्यो, मैं कासी जाय सन्यास ग्रहण करूंगो, सो यह आपु राखो।

वार्ता-प्रसंग १—सो श्रीआचार्यजी उह श्रीलालजी के स्वरूप

आदि धरतुं सुभ आ ब्राह्मणीअे जाण्युं नहीं। पछी अहेली थध सारे भगवदीअध्याथी मनमां अे आण्यु, डे हुवे श्रीआचार्यअेनी सेवक थाड। ते जधने श्रीआचार्यअेने दंडवत् करी विनती करी डे महाराज ! मने शरणे लो। जन्म पधो लौकिक पतिनी टहेलमां वीत्यो ते पणु मरी गयो। हुवे डु आपनी शरणे आवी छुं अेम कही सेवा लागी। त्तारे श्रीआचार्यअेने दया आवी। कहे ज, श्रीयमुनाअेमां न्हाध आव। सारे ते ब्राह्मणी श्रीयमुनाअेमां न्हाध आवी। त्तारे श्रीआचार्यअेने तेने श्रीनवनीतप्रियअेनी आगण पेसाडी नाम-निवेदन करावीने कछु, हुवे तू भगवद् सेवा कर, केनाथी कृतार्थ थाप। सारे ब्राह्मणीअे कछुं, मने सेवा पधरावी हो। सारे श्रीआचार्यअे कहे, काल तेने सेवा दधथु, आजु अहीं रहे। पछी पोते जुठणनी पातर धरी। अे प्रसाद लध त्यां रही। रात्रे रही पछी प्रातःकाल थयो। सारे ते ब्राह्मणी देहकृत्य करी श्रीयमुनाअे न्हाधने आवी। अेटलामां अेक ब्राह्मण दक्षिणथी आण्यो। तेसे श्रीआचार्यअेने अेक श्रीभागवततुं पुस्तक अने अेक लालअेतुं स्वरूप दधने कछुं, डुं काशी जध सन्यास ग्रहण करीश तेथी आ आप राधो।

वार्ता-प्रसंग १—श्रीआचार्यअेने ते श्रीलालअेना स्वरूपने पंचाभूत ज्ञान

कों पंचामृत स्नान कराय, वह ब्राह्मणी के माथे सेवा पधराई, श्री-वालकृष्णजी नाम धरें। तब वह ब्राह्मणी श्रीआचार्यजी कों दण्डवत् करि विदा होई श्रीवालकृष्णजी कों पधराई प्रीति सों सेवा करन लागी। श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागें। सो वह ब्राह्मणी निष्कपट भोली बहोत हती और निष्कंचन, द्रव्य नाहीं। सो माटी के कुंजा श्रीठाकुरजी आगे भरिके राखे। रसोई में हू माटी के पात्र, और घरहू निपट छोटे। वही घर में रसोई, मन्दिर, श्रीठाकुरजी कों सामग्री। आचार क्रिया हू बहोत समझे नाहीं ओर नेत्रन सों हू थोरो दीसे। सो प्रीति पूर्वक सेवा करे। तातें श्रीआचार्यजी, श्रीठाकुरजी प्रसन्न रहैं। यजमान के यहां ते कछ आवे, तामें निर्वाह करे। सो वैष्णव सब आपुस में चर्चा करन लागें। जो—यह ब्राह्मणी के माथें श्रीआचार्यजी ने भगवद् सेवा क्यों पधराई है? यह कछ आचार समुझत नाहीं, कछ द्रव्य नाहीं। सो हमारे माथे पधरावें तो हम भली भांति सेवा करें। या प्रकार आपुस में चर्चा करें। परन्तु श्रीआचार्यजी सों कहि न सके। पाछे एक दिन एक वैष्णव नें श्रीआचार्यजी सों बिनती करी, महाराज! वह ब्राह्मणी के द्रव्य को संकोच बहोत है, और आचार क्रिया में समुझत नाहीं, नेत्रन सों बहोत सूझत नाहीं। श्रीठाकुरजी काहू और वैष्णव के माथे पधराई

करावी अथवा आह्वणीना माथे सेवा पधरावी। श्रीवालकृष्णजी नाम धर्यु तयारे ते आह्वणी श्रीआचार्यजीने दंडवत् करी विदाय थंश श्रीवालकृष्णजीने पधरावी प्रीतिथी सेवा करवा लागी। श्रीठाकुरजी सानुभावता जणाववा लाग्या। ते आह्वणी निष्कपट भोली भडु ज हती। अने निष्कंचन, द्रव्य नहीं। ते माटीना कुंजे श्रीठाकुरजी आगण लरीने राभे। रसोईमां पणु माटीनां पात्र, अने घर पणु अकडम नावुं। तेज घरमां रसोई, मन्दिर, श्रीठाकुरजीनी सामग्री। आचार-क्रिया पणु धणी समजे नहीं अने नेत्रथी पणु थोड दणाय। ते प्रीतिपूर्वक सेवा करे। तेथी श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजी प्रसन्न रहुं। यजमानने त्यांथी कंश भजे तेमा निर्वाह करे। ते वैष्णव थंथा आपसमां चर्चा करवा लाग्या, के आ आह्वणीना माथे श्रीआचार्यजीने लगवद्सेवा केस पधरावी छे? आ कंश आचार तो समजती नथी। कंश द्रव्य नथी। तेथी अमारा माथे पधरावे तो अमे सारी रीते सेवा करीअे। आ प्रधारे आपसमां चर्चा करे परंतु श्रीआचार्यजीने कडी शके नहीं। पडी अेक दिवस अेक वैष्णवे श्रीआचार्यजीने बिनती करी, महाराज! ते आह्वणीने द्रव्यना सकोच बहोत छे अने आचार-क्रियामां समजती नथी। आंभोथी धणुं

देउ तो सेवा भली भांति सों होइ । तब श्रीआचार्यजी ने कही, आचार, क्रिया, द्रव्यसों, श्रीठाकुरजी प्रसन्न नाहीं, श्रीठाकुरजी में प्रीति चाहिये । सो उह ब्राह्मणी की परम प्रीति है । जैसे उह ब्राह्मणी करत है तेसेही श्रीठाकुरजी मानि लेत हैं । तब वह वैष्णव चुप होइ रह्यो । पाछे श्रीआचार्यजी श्रीयमुनाजी सों संध्यावन्दन करिकें पधारत हते । सो वह ब्राह्मणी के द्वार हे जाइ निकसे । तब वैष्णव नें कही, महाराज ! उह ब्राह्मणी को घर यही है । आपु पधारिके सेवा की रीति देखिये, बाकों दरसन दीजिये । तब श्रीआचार्यजी वह ब्राह्मणी के घर पधारे, ता समें वह ब्राह्मणी रोटी करत हती । सो श्रीआचार्यजी कों पधारे जाने नाहीं । सो रोटी करिके एक घरे, सो चुपरे, सो श्रीठाकुरजी रोटी उठाइ के आरोगें । सो वह ब्राह्मणी कों नेत्र सों दीसे नाहीं । तब रोटी हाथ सों टटोरे, सो पावे नाहीं । तब मुखसों कहै, रोटी मूसा बिलाई ले जात हैं । हाथ धरती में ठोकि फेरि रोटी करे । तब श्रीआचार्यजी उह ब्राह्मणी सों कहैं, जो-तेरी रोटी श्रीठाकुरजी आरोगति हैं । मूसा बिलाई नाहीं है । तेरे बड़े भाग्य हैं । तब वह ब्राह्मणी कही, महाराज ! आपु पधारे ? मोकों दीसे नाहीं, तातें मैं जानी नाहीं । मेरो अपराध क्षमा करिये । और मेरे द्रव्य नाहीं ।

सुखुं नथी. श्रीठाकुरजी के भ्रम पील वैष्णवना साथे पधरावी ता तो सेवा सारी रीतथी थाय. त्पारे श्रीआचार्यजी के, आचार-क्रिया-द्रव्यथी श्रीठाकुरजी प्रसन्न नथी. श्रीठाकुरजीमां प्रीति जेधये. ते आह्लाणीनी परम प्रीति छे. जेम ते आह्लाणी करे छे तेम श्रीठाकुरजी मानी ले छे. त्पारे ते वैष्णव चुप थध गये. पठी श्रीआचार्यजी श्रीयमुनाजी उपरथी संध्यावदन करीने पधारता हुता त्पारे ते आह्लाणीना द्वार आगण जध निकल्या. त्पारे वैष्णवे कहुं, महाराज ! ते आह्लाणीतुं घर आन छे. आप पधारीने सेवानी रीत जुयो. अने दर्शन आपो. त्पारे श्रीआचार्यजी ते आह्लाणीना घरे पधार्या. ते समये ते आह्लाणी रोटी करती हुती. तथी श्रीआचार्यजीने पधार्या जधया नहीं ने रोटी करीने अके घरे ने चोपउ. ते श्रीठाकुरजी रोटी उठावीने आरोगे. त्पारे ते आह्लाणीने नेत्रथी देभाय नहीं. त्पारे रोटी हाथथी भोजे ते भजे नहीं. त्पारे मुखथी के, रोटी उठरा-भिलाडी लध जय छे. हाथ धरतीमां ठाके करी रोटी करे. त्पारे श्रीआचार्यजी ते आह्लाणीने कहे, के तारी रोटी श्रीठाकुरजी आरोगे छे. उठरा-भिलाडी नथी. तारां महान लाग्य छे. त्पारे ते आह्लाणीअे कहुं, महाराज ! आप पधारे ? मने देभातुं नथी तथी में जधयुं नहीं. भारे अपराध क्षमा करे अने भारे द्रव्य नथी.

आपुकी कानि तें श्रीठाकुरजी आरोगे हैं । तब श्रीआचार्यजी कहे, तू जैसे करत है तेसेही श्रीठाकुरजी प्रसन्न होइ मानत हैं । याही प्रकार सदा करियो । या प्रकार वह ब्राह्मनी पर प्रसन्न होई, समाधान करि श्रीआचार्यजी अपने घर पधारे । पाछें सगरे वैष्णव सों कहें श्रीठाकुरजी स्नेह के सूखे हैं । उह ब्राह्मनी के ऊपर प्रसन्न हैं । तब सब वैष्णव जाने, जो-यह ब्राह्मनी पर बड़ी कृपा है । सो श्रीठाकुरजी या प्रकार सगरी रोटी नित्य हाथ में उठाई लेते । तब वह ब्राह्मनी कहती मैं सगरी रोटी करी । परन्तु जानी न परी सूसा बिलाई लिये । तब श्रीठाकुरजी अरोगि के वह ब्राह्मनी कों सब रोटी देते । सो वह ब्राह्मनी सों नित्य श्रीठाकुरजी ऐसे ख्याल करते । परन्तु उह ब्राह्मनी को सरल स्वभाव बहोत, नित्य याही प्रकार कहें । और श्रीठाकुरजी ऐसे प्रीति के बस भये, जो-बिना भोग धरे उह करत जाहीं आपु आरोगें, पाछे देइ । सो वह ब्राह्मनी ऐसी श्रीआचार्यजी की कृपापात्र हती ।

वार्ता ॥४२॥

भावप्रकाश—यह वार्ता में यह सिद्धान्त भयो, निष्कपट भाव श्रीठाकुरजी कों बहोत प्रिय है । चतुराइ तें प्रसन्न नाहीं, ऐसे प्रीति के बस हैं ।

✽

✽

✽

आपुनी कानिथी श्रीठाकुरजी आरोगे छे । त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, तू जेभ करे छे तेभज श्रीठाकुरजी प्रसन्न थछ माने छे । तेज प्रकारे सदा करजे । या प्रकारे ते ब्राह्मणी उपर प्रसन्न थछ समाधान करी श्रीआचार्यजी पोताने धरे पधार्या । पछी अधा वैष्णवोने कहे, श्रीठाकुरजी स्नेहना लूण्या छे । ते ब्राह्मणीना उपर प्रसन्न छे । त्यारे अधा वैष्णवोने जण्युं, के या ब्राह्मणी उपर महान कृपा छे । तेथी श्रीठाकुरजी या प्रकारे अधी रोटीना नित्य हाथमां उठावी ले छे । त्यारे ते ब्राह्मणी कहेती, मे अधी रोटी करी परंतु जण्युं न पड्युं । उदरा-भिसाडाये दीधी ? त्यारे श्रीठाकुरजी आरोगीने ते ब्राह्मणीने अधी रोटी आपता । ते ब्राह्मणी साथे नित्य श्रीठाकुरजी अेवी गम्भत करता । परंतु ते ब्राह्मणीना सरण स्वभाव धरुा । नित्य अे प्रकारे कहे अने श्रीठाकुरजी अेवी प्रीतिने वश थया, के विना भोग धरे ते करती जय अने आप आरोगे पछी दे तेथी ते ब्राह्मणी अेवी श्रीआचार्यजीनी कृपापात्र हती ।

वार्ता ॥४२॥

भावप्रकाश—या वार्तामां अे सिद्धान्त थयो के निष्कपट भाव श्रीठाकुरजीने धरुा प्रिय छे । चतुराइथी प्रसन्न नही । अेवी प्रीतिना वश छे । वै० ॥४२॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकनी, एक क्षत्रानी, सो प्रयाग में रहती, तिनकी घातकौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—अब जहां तहां नाम श्रीगोकुलनाथजी नहीं कहें । सो माता पिता हीन नाम राखें, काहू को फकीरा, घसीटा । सो वैष्णव सो हीन नाम श्रीगोकुलनाथजी कहते नहीं । तातें कोई वैष्णव को नाम प्रगट नहीं किये ।

यह क्षत्राणी लीला में श्रीस्वामिनीजी की सखी है । 'नीला' इनको नाम है । सो प्रयाग में एक क्षत्री के घर प्रगटी । सो क्षत्री बहोत द्रव्यवान हतो । सो काहू कों गिनतो नहीं । सो प्रयाग में एक क्षत्री के घर बेटी दिये । सो गरीब घर हतो, तहां दिये । सो एक दिन जमाई कों बुलायो, सो बाको दोय घरी की ढील भई । सो सास सुसर सवन ने अहंकार करि जैय लियो । बेटी सों बोले, तू जैय ले । तब बेटी ने कही, जमाई कों बुलाये हो वे आवें तब मैं जेऊं । तब पिता ने कही, वह न आवेगो तो हम बैठे रहेंगे ? तू जैवे तो जैय, नहीं तो और कों दे घालें । तब बेटी ने कही, मैं तो मेरे घनी के जैयें विना न जेऊंगी । तब मा-बाप क्रोध करि सब उठाई डारयो । पाछे जमाई आयो । सो सास सुसर कोई वासों

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकनी, एक क्षत्राणी ते प्रयागमां रहती, तेनी घातकी भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—हुवे ज्यां त्यां नाम श्रीगोकुलनाथजी कथां नथी । ते माता-पिता हीन नाम राखे । डाधतु इकीरा, घसीटा । तेथी वैष्णवाने हीन नामथी श्रीगोकुलनाथजी कहेंता नहीं । तेथी डाध वैष्णवतुं नाम प्रकट नथी कथुं ।

आ क्षत्राणी लीलामां श्रीस्वामिनीजीनी सखी छे । 'नीला' अेतुं नाम छे । ते प्रयागमां एक क्षत्रीने त्यां प्रकटी । ते क्षत्री बहुत न द्रव्यपात्र हुतो । ते डाधने गणुतो नहीं । तेथे प्रयागमां एक क्षत्रीना धरे बेटी आपी । ते गरीब धरे हुतुं त्यां आपी । पछी-अेक दिवस जमाईने बोलाव्यो । तेने ये घडीनी ढील थध । अेटवे सासु-ससरा अंधाअे अहंकार करीने जमी लीधुं । बेटीने कथुं, तू जमी ले । त्यारे बेटीअे कथुं, जमाईने नातर्यां छे अेटवे ते आवशे त्यारे हुं तो जमीश । त्यारे पिताअे कथुं, ते नहीं आवे तो थुं असे येसी रहीधुं । तारे जमवुं होय तो जम नहीं तो भीनने आपी दधअे । त्यारे बेटीअे कथुं, हुं तो मारा धशीना जम्या विना नहीं जमुं । त्यारे मा-बापे क्रोध करीने अंधुं वापरी नाथ्युं । पछी जमाई आव्यो । त्यारे सासु-ससरा डाध अेनाथी बोदथुं नहीं । त्यारे श्रीअे पतिने कथुं, ट

बोले नहीं। तब स्त्री ने वह पति सों कही, जो-अब इनके घर जल पीनो धरम नहीं है। सब बात पति सों कही। तब पति ने कही, तू मा-बाप के घर फेर कबहू आइवे को नाम न लेय, तो मैं तोकों घर ले चलों। तब इन कही, मोकों ले चलो, यां जन्म में तो कबहू मा-बाप को नाम न लेऊंगी। तब दोऊ अपने घर आय रसोई करि भोजन कियो। पाछे ससुर के मन में यह आई, जो-बेटी रांड होऊ तो मुखेन होऊ, परन्तु जमाई कों मारनो। सो कछु द्रव्य दे मनुष्य लगाइ राखे। सो एक दिन याके माता-पिता और बेटा, वहु मकर न्हाइवे प्रातही चले, सो मनुष्यन नें तीनों मारे। एक उह क्षत्री की बेटी कों छोड़े। पाछे यह बात हाकिम ने जानी, सो वाहू को घर लूटि लियो। पाछे वाके घर में आग लागी। तामें ये क्षत्राणी के माता-पिता कुटुम्ब सब जरे। इकली रहि गई। सो चरखा कांति के निर्वाह करे। सो एक दिन श्रीजमुनाजी न्दान गई, कार्तिक के दिन हते। सो दोय घड़ी पिछली रात्रि सों गई। तब न्हाइवे कों पेंठी, न्हाइ के कपरा पहरयो। कपरा पहरि के लोटा जल सों भरे। तब एक श्रीठाकुर लालजी को स्वरूप लोटा में आयो। सो याकों खबरि नहीं। सो न्हाय के घर आई तुलसी के लोटा को जल चढायो। तब तुलसी के पास श्रीठाकुरजी जाय बैठे, सो देखिके

हुवे आभना घरमां जल पीवानो धर्म नथा। अंधी वांत पतिने कही त्यारे पतिअे कहुं, तू मायापना धरे इरी कहीय आववानुं नाम न ले तो हुं तने धर लध आहुं। त्यारे अणु कहुं, भने लध आलो। आ जन्ममां तो-क्यारेय मा-आपनु नाम नही लठं। त्यारे अन्नेये पोताना धरे आवी रसोइ करी भोजन क्युं। पछी सासराना मनमां अे आंयु ठे बेटी रांड थाय तो बले थाव परंतु जमाधने मारवो। अेटले कंध द्रव्य आपी मारवावाणा मनुष्येने पाछण कर्यां। ते अेक द्विस अेना माता-पिता अने भेटा-वहु मकररनान भोटे सवारे आदया। ते मनुष्येअे त्रणुने मार्यां। अेक ते क्षत्रीनी भेटीने छोडी। पछी अे वात हाकिमे जाणी तेथी तेतु पाणु धर लूटी लीधु। पछी तेना धरमां आग लागी। त्यारे अे क्षत्राणीनां माता-पिता कुटुम्ब अंथां अज्यां। अेकली आ रही। ते अरआ कांतीने निर्वाह करे। ते अेक द्विस जमनाथ न्हावाने गध। कार्तिकना द्विस हुंता। ते पाछली ये घड़ी रात्रि गध त्यारे न्हावाने पेठी। न्हाधने कपडा पहरेरीने दोटाथी जल अयुं। त्यारे अेक श्रीठाकुरण लावणुं स्वरूप दोटामां आंयुं ते अेने अपर पडी नही। पछी न्हाधते धर आवी तुलसीने दोटातुं जल अढायु। त्यारे तुलसीनी पासे श्रीठाकुरण जध भेडा

चक्रत भई । जो-ए स्वरूप ! कहा इनकी इच्छा है ? यह विचार करत तुलसी के पास बैठी । सो ऊह बेरं देहकी सुधि न रही । ऐसी चिन्ता भई, जो-अब मैं कोन सों पूछों । कोई घर में है नाहीं । सो रसोई की सुधि भूलि गई । कवहं श्रीठाकुरजी कों हाथ में लेई, कवहू फेरि तुलसी में धरि देई । ऐसे विचार करत अर्द्ध रात्रि गई तब श्रीठाकुरजी कहें, तू-विचार कहा करत है ? प्रातःकाल मोकों पधराइ श्रीआचार्यजी के पास जाई सेवकनी होइ, मेरी सेवा करि । मैं तो परि कृपा करन के लिये, तेरे माथे श्रीयमुनाजी सों तेरे लोटा में आयो हूँ । तब प्रसन्न होई सगरी रात्रि भूखी तुलसी पास बैठि रही । पाछे प्रातःकाल भयो तब, श्रीठाकुरजी कों ले श्रीआचार्यजी के पास अडेल जाइ दण्डवत करि, सगरी बात कहि विनती करी, जो-मोकों सेवक करो । तब श्रीआचार्यजी कहें, तेरे बड़े भाग्य हैं, तेरे कुटुम्ब में तू दैवी है सो श्रीठाकुरजी तेरे ऊपर कृपा किये । जो बिना सेवा किये पहले ही तोसों बोलें । पाछे वह क्षत्राणी कों नाम मुनाय निवेदन कराये । पाछे श्रीठाकुरजी कों पंचामृत स्नान कराई, पाट बैठारि उह क्षत्राणी के माथे पधराये । और कहे, अब तू घर जा, मन लगाई के इनकी सेवा करियो । इनको नाम श्रीबालकृष्णजी हैं । सो बालक की नाईं सनेह राखियो । तब उह क्षत्राणी

ते जेधने यकत थध. जे-आ स्वरूप ! शुं जेनी धरछा छे ? जेम विचार करतां तुलसीनी पासे जेठी. ते समये देहनी सुधी न रही. जेनी चिन्ता थध, डे हवे हुं काने पूछुं ? कौछ धरमां छे नही. ते रसोइतुं रमरण पण भूली गध. कौछ वार श्रीठाकुरजने हाथमां ले कौछ वार डरी तुलसीमां धरी दे. जेम विचार करतां अडधी रात्रि गध. त्पारे श्रीठाकुरज कहे, तू विचार शुं करे छे ? प्रातःकाल मने पधरावी श्रीआचार्यजनी पासे जध सेवकनी थध मारी सेवा कर. हुं तारा उपर कृपा करवाने माटे तारा माथे श्रीयमुनाजमांथी तारा लोटामां आये छुं. त्पारे प्रसन्न थध अधी रात्रि भूखी तुलसी पासे जेसी रही. प्रातःकाल थयो त्पारे श्रीठाकुरजने लध श्रीआचार्यज पासे अडेल जध दंडवत करी अधी वात कही विनती करी, डे मने सेवक करे. त्पारे श्रीआचार्यज कहे, तारां मोटा भाग्य छे. तारा कुटुंभमां तू दैवी छे तेथी श्रीठाकुरजये तारा उपर कृपा करी. जेथी सेवा कर्या विना पहेलांज ताराथी भेट्या. पछी ते क्षत्राणीने नाम संभणावी निवेदन कराये. पछी श्रीठाकुरजने पंचामृत स्नान करावी पाट जेसाडी ते क्षत्राणीने माथे पधराया. अने कहे, हुवे तू घर जा. मन लगाडीने जेनी सेवा करे. जेतुं नाम श्रीबाल-

श्रीआचार्यजी कों दंडवत् करि, श्रीठाकुरजी कों पधराई के प्रयाग में अपने घर आई । सो सेवा करन लागी ।

वार्ता प्रसंग १—सो चरखा कांते, सूत बेचे, तामें तें दोई पैसा न्यारे धरें । यों करत जब कछु पैसा भेले भये, तब दिन दस बारह की बालभोग की सामग्री करि राखी । तब घी, खांड लाई मेंदा छानि के, लाडू करे । पाछे एक हांडी भरि मुंह बांधि के मन्दिर में छीका पर धरयो । मन में विचारयो, जो-दिन दस-बारह कों तो बालभोग करन सों निश्चिन्त भई । सो राजभोग सों पहोंचि अनोसरि कराइ, महाप्रसाद ले चरखा कांतन बैठी । तब श्रीआचार्यजी की कानि तें, श्रीठाकुरजी सिंघासन पर सों उठि छीका पर ते लाडू की हांडी उतारे । पाछे सिंघासन पर लेके बैठे । हांडी में ते निकासिके लाडू आरोगन लागे । सो मन्दिर में हांडी को आहट होन लागयो । तब वह क्षत्रानी ने मन में विचार कियो, जो-मंदिर में हांडी को सन्द होत हैं, सो सामग्री की हांडी में मूसा बिलाई तो न लागी होई ? यह विचारि के हरुवे सों मन्दिर के किंवाड़ खोलि, भीतर जाई देखे तो श्रीठाकुरजी हांडी सिंघासन पर लिये बैठे हैं । वामें ते लाडू अरोगत हैं । यह देखिके वह क्षत्रानी छाती कूटन लागी । कहें, यह सामग्री

कृष्णु छे. अेटले आलकनी भाइक रनेहु राभजे. त्त्यारे ते क्षत्राणी श्रीआचार्यने दंडवत केरी श्रीठाकुरने पधरावने प्रयागमां पोताना धरे आवीने सेवा करवा लागी.

वार्ता-प्रसंग १—ते चरखा कांते, सूत बेचे, तामें तें दोई पैसा न्यारे धरें. त्त्यारे थोडा पैसा लेगा थया त्त्यारे द्विस दश-भारनी आललोगनी सामग्री करी राभी. त्त्यारे घी आंड लावी मेंदा छालीने लाडू करे. पछी अेक हांडी भरि मोहुं आंधीने भदिरमां छीका उपर धरुं. मनमां विचारुं, के द्विस दश-भारनी तो आललोग करवाथी निश्चिन्त थध. पछी राजलोगथी पहोंचीने अनोसर करावी महाप्रसाद लध चरखा कांतया भेठी. त्त्यारे श्रीआचार्यने कानिथी श्रीठाकुरने सिंहासन उपरथी उठी छीका उपरथी लाडनी हांडी उतारी. पछी सिंहासन उपर लधने भेडा. हांडीमांथी कानीने लाडू आरोगवा लाग्या. त्त्यारे भदिरमां हांडीने अवाज थया लाग्यो. त्त्यारे ते क्षत्राणीने मनमां विचार क्यो, के भदिरमां हांडीने शब्द थाय छे, ते सामग्रीनी हांडीमां उदरा-भिसाडी तो लागी नहीं होय ? अेम विचारिने धीरेथी कभाड जोली लुअे तो श्रीठाकुरने हांडीने सिंहासन उपर लधने भेडा छे. त्त्यारे लाडू आरोग छे. अे लधने अे क्षत्राणी छाती कूटवा लागी. कहे, आ सामग्री तो आपना न भाटे करी हती.

तो आपुही के लिए करी हती, दिन दस-बारह की, सो आजु ही अरोंगें सब ? तब श्रीठाकुरजी कहैं, तू इकठोरी करिके सामग्री निश्चिन्त है के बैठी, दस-बारह दिन कों । सो मोकों तो नित्य नई ताजी होई सो भावत है । वासी सामग्री कौन काम की ? तब वह क्षत्राणी दंडवत् करि विनती किये, महाराज ! मैं चूकी जो ऐसी करी, अब नित्य ताजी करूंगी, आलस्य न करूंगी । तब तैं वह क्षत्राणी नित्य नई सामग्री करिकें धरन लागी ।

वार्ता ॥४३॥

भावप्रकाश—और श्रीठाकुरजी सगरी सामग्री यातें अरोगे, जो-नित्य सामग्री नई करिवे की आरति रहै । जो-निश्चिन्त रहेंगी तो मनको निरोध न होइगो । मन जहां तहां भटकेगो, तातें अरोगे सब । और यह वैष्णव कों जताए, जो-वासी सामग्री काम की नाहीं । ताजी नित्य नौतन अति प्रिय है । और वह क्षत्राणी ने छाती यातें कूटी, जो-यह पुष्टिमार्ग की मर्यादा है, जो-वैष्णव भोग धरे सो श्रीठाकुरजी अरोगे । सो ठाकुरजी ने मर्यादा छोड़ी, सामग्री आपही अपने हाथ सों अरोगें । तो कहूं मोकों न छोड़े । मर्यादा जैसे छोड़े तेसे मोकों छोड़े, तो अनर्थ होइ । और यह भाव है, जो-श्रीठाकुरजी आपु लेके आरोंगे तामें सेवा सिद्ध न भई । मोसों आज्ञा करते, मैं अपने हाथ सों धरती, तो मेरे हाथ सों फल

द्विस दश-आरनी ते आणे न भधी आरोग्या. त्पारे श्रीठाकुरज्ये कहे, तू अकडी करीने सामग्री निश्चित थधने भेठी दश-आर द्विस भाटे. ते भने तो नित्य नवी ताजु हाथ ते उचे छे. वासी सामग्री कासनी ? त्पारे ते क्षत्राणीअे इंडवत करीने विनती करी, महाराज ! हुं चूकी के अेम कथुं. हुवे नित्य ताजु करीश. आणस नही कइ. त्पारे ते क्षत्राणी नित्य नवी सामग्री करीने धरवां लागी.

वार्ता ॥४३॥

भावप्रकाश—अने श्रीठाकुरज्ये भधी सामग्री अथी आरोग्या ठे नित्य सामग्री नवी करवानी आरत रहे. जे (ते) निश्चित रहेसे तो मनने निरोध नहीं थाय. मन जयां त्यां भटकेसे. तेथी भधी आरोग्या अने वैष्णवने अे नृणाव्युं, ठे वासी सामग्री कामनी नहीं, ताजु नित्य नवीन अति प्रिय छे. अने ते क्षत्राणीअे छाती अथी कूटी, ठे आ पुष्टिमार्गनी मर्यादा छे. न वैष्णव भोग धरे. ते श्रीठाकुरज्ये आरोगे. ते श्रीठाकुरज्ये मर्यादा छोडी. सामग्री पोतेन पोताना हाथथी आरोग्या. तेथी कदाय भने-न छोडे. मर्यादा नभ छोडी तेम भने छोडे तो अनर्थ थाय. अने आ बान (पणु) छे ठे श्रीठाकुरज्ये पोते लधने आरोग्या तेमां सेवा सिद्ध न थध. भने आज्ञा करता तो हुं भारा हाथथी धरती तो भारा हाथथी इस

होतो । मेरी सेवा गई, सो सेवा के लिये छाती कूटी । काहे तें, जो सामग्री श्री-ठाकुरजी के लिये करी हती, सो श्रीठाकुरजी आरोगे । तामें तो प्रसन्न होइ । सो छाती कूटी, सेवा गई ताके लिये । और यह वार्ता में यह जताये, जो-सामग्री श्रीठाकुरजी के लिये विचार के करिये, तो श्रीठाकुरजी प्रीति सों अरोगें, जो-और मनोरथ किये, जो-लोगन को समाधान करनो है, हमकों यह वस्तु बहोत भावत हैं, इत्यादिक भाव होइ, तो दृष्टि सों अङ्गीकार करें । परन्तु प्रसन्न होई के न अरोगें । तातें श्रीठाकुरजी के भाव सों सामग्री करनी । सो वह क्षत्रानी श्रीआचार्यजी की कृपापात्र भगवदीय ही । इनकी वार्ता कहां ताई कहिये । वैष्णव ॥४३॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकनी, सास-बहू, सास को नाम गोरजा, और बहू को नाम समराई, क्षत्रानी सिंहनंदमें रहती, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ए दोऊ लीला में श्रीस्वामिनीजी की सखी चन्द्रमागा तिन की सखी हैं । इनको नाम लीला में 'नन्दा' सखी सो सास भई गोरजा । और 'वृन्दा' सखी बहू, याको नाम समराइ, सो ये सिंहनन्द में रहेती । इनकों सेवक श्रीआचार्यजी जा प्रकार किये सो वासुदेवदास छकड़ा की वार्ता में उपर कहि आये हैं ।

थतुं. मारी सेवा गइ. ते सेवाने माटे छाती कूटी, ठमके ज सामग्री श्रीठाकुरजीने माटे करी हती ते श्रीठाकुरजी आरोग्या तेभां तो प्रसन्न थछ. तेथी छाती कूटी सेवा गछ ते माटे. वणी आ वार्ताभां जे जणुआं, के सामग्री श्रीठाकुरजीने माटे विया-रीने करीजे तो श्रीठाकुरजी प्रीतिथी आरोगे अने जे भीजे मनोरथ करे, जे दोढानुं समाधान करवुं छे अमने आ वस्तु अहु भावे छे इत्यादिक भाव होय तो दाष्टथी अंगीकार करे. परंतु प्रसन्न थछने न आरोगे. तेथी श्रीठाकुरजीना भावथी सामग्री करवी. ते क्षत्राणी श्रीआचार्यजीनी कृपापात्र भगवदीय हती. तेनी वार्ता कथां सुधी कहीजे ? वैष्णव ॥४३॥

✽

✽

✽

हवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीनी सेवकनी, सासु-बहू, सासुतुं नाम गोरज, अने बहुतुं नाम समराइ, क्षत्राणी सिंहनंदमां रहेतां, तेमनी वार्ताना भाव कहीजे छीजे—

भावप्रकाश—जे अने लीलाभां श्रीस्वामिनीजीनी सखी चन्द्रमागा तेमनी सखी छे. तेमनुं नाम लीलाभां 'नन्दा' सखी, ते सासु थछ गोरज, अने 'वृन्दा' सखी बहु अनेतुं नाम समराइ. ते सिंहनंदमां रहेती. जेअने श्रीआचार्य-जीजे जे प्रकारे सेवक कथां ते वासुदेवदासनी वार्ताभां उपर कही आया छीजे.

वार्ता प्रसंग १—सो श्रीठाकुरजी की सेवा करती। सो एक समय श्रीआचार्यजी थानेस्वर पधारे। सो थानेस्वर के और सिंह-नन्द के बीच सरस्वती नदी है। सो श्रीआचार्यजी सरस्वती को उल्लंघन न करते।

भावप्रकाश—काहे तें, सरस्वती के पति हैं, स्त्रीको उल्लंघन कैसे करें ? तातें सिंहनन्द में आपु न जाते।

सो सिंहनन्द के वैष्णव थानेस्वर आइ, श्रीआचार्यजी को दरसन करते। सो श्रीआचार्यजी जब थानेस्वर पधारे, तब बधैया जाइके सिंहनन्द में सगरे वैष्णवन कों बधाई दीनी, जो-श्रीआचार्यजी थानेस्वर पधारे हैं। तब साम बहू सों कहे, जो-मैं श्रीआचार्यजी के दरसन कों थानेस्वर जात हों। तू श्रीठाकुरजी कों जगाइ पहले मंगला करि, पाछे शृंगार करियो। ता पाछे राजभोग धरिके श्रीठाकुरजी सों पहाँचियो। मैं श्रीआचार्यजी के दरसन करि आऊं, पाछे तू जइयो। तब बहू प्रसन्न भई, जो-आजु मैं श्रीठाकुरजी कों शृंगार कखंगी, भोग धरोंगी। सो मास सों कह्यो, तुम दरसन करि आवो, पाछे मैं जाऊंगी। तब सास श्रीआचार्यजी के दरसन करिवे थानेस्वर गई। (इहां) बहू बेगे न्हाइके श्रीठाकुरजी कों मंगलभोग धरि पाछे

वार्ता प्रसंग १-ते श्रीठाकुरजी की सेवा करती। पछी एक समय श्रीआचार्यजी थानेस्वर पधारे। थानेस्वर अने सिंहनन्दनी पन्थे सरस्वती नदी छे। श्रीआचार्यजी ते सरस्वती नदीनु उल्लंघन करता न हुता।

भावप्रकाश—केभडे सरस्वतीना (आप) पति छे (तेथी) श्रीनु उल्लंघन ठम करे ? तेथी सिंहनन्दां पोते न पधारता।

तेथी सिंहनन्दा वैष्णवो थानेस्वर आवीने श्रीआचार्यजीनां दर्शन करता। तेथी श्रीआचार्यजी न्यारे थानेस्वर पधारे त्यारे वधैयाअे न्धने सिंहनन्दां पधा वैष्णवोने पधामणी दीधी, के श्रीआचार्यजी थानेस्वर पधारे छे। त्यारे सासुअे वहुने कहुं, के हुं श्रीआचार्यजीना दर्शन थानेस्वर नउं छुं। तू श्रीठाकुरजीने नगाडीने पहोलां मंगला करी पछी शृंगार करजे। ते पछी राजभोग धरीने श्रीठाकुरजी पहायजे। हुं श्रीआचार्यजीनां दर्शन करीने आपुं पछी तू नजे। त्यारे वहु प्रसन्न थड के आजु हुं श्रीठाकुरजीने शृंगार करीश, भोग धरीश। पछी सासुने कहुं, तमे दर्शन करी आवां। पछी हुं न्धश। त्यारे सासु श्रीआचार्यजीना दर्शन करवा थानेस्वर गध। अहिं वहुअे नवही न्हाइने श्रीठाकुरजीने मंगल भोग धरी पछी शृंगार कर्यो। पछी पधी रसाध करी

श्रृंगार कियो । पाछे रसोई सगरी करि थार कटोरा साजिकें, श्रीठाकुरजी के आगे भोग धरयो । टेरा लगाइ बैठी । सगरे पात्र मांजि रसोई पोती, इतने समय भयो । सो भोग सराइवेकों जाइ देखे तो थार कटोरा, सगरी सामग्री सों ज्यों के त्यों भरे हैं । तब श्रीठाकुरजी सों कह्यो, महाराज ! मेरी सास तो सिंहनन्द श्रीआचार्यजी के दरसन कों गई है, मैं तो कछु जानत नाहीं । मोसों सास ने कछो ता प्रकार कियौ । और तुम आरोगे नाहीं, अब मैं कहा करूं ?

पाछे फेर बहूने जान्यो, जो-मैं कछु चूकी होऊंगी, तथा रसोई कछु छूई गई होइगी । तब फेरि पात्र सगरे मांजि, रसोई पोति, आछी भांति न्हाइ फेरि रसोई करी । फेरि थार कटोरा में सामग्री धरि श्रीठाकुरजी कों भोग धरयो । टेरा लगाई बाहर आई । रसोई के पात्र मांजि रसोई पोती सामग्री फेरि ज्यों की त्यों स्थापित देखि बहोत बिलबिलान लागी । कह्यो, महाराज मैंतो कछु जानत नाहीं, आपु क्यों नाहीं आरोगत ? सो रुदन करत जाय और मनमें कह्यो, कछु भारी अपराध परयो मोसों, सो श्रीठाकुरजी नाहीं आरोगे । पाछे फेरि तीमरी बेर अपरस काढ़ि सावधान होइ, सगरी रसोई करी । थार कटोरा में धरि श्रीठाकुरजी कों भोग धरयो । पाछे टेरा लगाई रसोई के पात्र साजि रसोई पोति के टेरा सरकाई भोग सरा-

थार कटोरा सांजने श्रीठाकुरजीनी आगण लोग धर्यो । टेरे लगाडीने जेठी । अथां पात्र भांजने रसोइ पोती । अथलाभां समय थयो त्यारे लोग सराववाने जधने जुअये तो थार कटोरा, अथी सामग्रीथी जेमने तेम लर्या छे । त्यारे श्रीठाकुरजीने कछु, महाराज ! भारी सामुते सिं'हने'द श्रीआचार्य'जनां दर्शने गध छे । हुं तो क'ध जाणुती नथी । भने सामुअये कछुं ते प्रकारे कथुं अने तमे आरोग्या नडीं । हवे हुं शुं कइं ? पछी इरी वहुअये जाणुथुं के हुं क'ध अूडी हधश तथा रसेअ क'ध छुध गध हुरे । त्यारे इरी पात्र अथां भांज रसेअ पोती सारी रीते न्हाअ इरीरसेअ करी । इरी थार कटोराभां सामग्री धरी श्रीठाकुरजीने लोग धर्यो । टेरे लगाडी अहार आवी रसेअनां पात्र भांज रसेअ पोती सामग्री इरी जेमने तेम स्थापित जेध अहुज दुःअ पाभवा लागी । कछु, महाराज ! हुं तो क'ध जाणुती नथी । आपु केम नथी आरोगता ? पछी इदन करती जय अने मनभां कछुं, माराथी क'ध मोटे अपराध पख्यो तेथी श्रीठाकुरजी नथी आरोग्या । पछी इरी तीज वार अपरस काढी सावधान थध रसेअ करी थार-कटोराभां (सामग्री) धरी श्रीठाकुरजीने लोग धर्यो । पछी टेरे लगाडी रसेअनां पात्र सांज रसेअ पोती ने

वन कों गई । सो सामग्री सब ज्यों की त्यों देखि महा दुःख भयो । जो-तीन वार मँरसोई करी, सो तीनों वार श्रीठाकुरजी अरोगे नाहीं । यह दुःखी और अमित हू वहोत भई । सो मूर्छा आई, पछार खाइ कै भूमी में गिर परी । कंठ सूखि गयो, अम के मारे । तब श्रीठाकुरजी सिंघासन सों उठि अपनी झारी सों जल वाकों पिवायो । तब सावधान भई नेत्र खोले । सो वह बहू को दुःख श्रीठाकुरजी सों सह्यो न गयो ।

भावप्रकाश—सो वह सूधी हती, छल कपट कछु जानत नाहीं ।

तातें श्रीठाकुरजी प्रसन्न होइ के बहू सों कहें, तू खेद काहे कों करत है ? तू तीन वार रसोई करी, सों मैं तीनों वार अरोग्यो हूं । तू सन्देह क्यों करत है ? तब बहू ने कही, मैं कैसे मानूं ? सामग्री तो सब ज्यों की त्यों धरी ही देखती । तब श्रीठाकुरजी कहें, जामें मेरो हस्त परे सो वस्तू घटे नाहीं । और तू नाहीं मानति तो कालिह सवारें तेरे देखत अरोगूंगो । तातें अब तू महाप्रसाद ले, मैं तीनों वार अरोग्यो । तें कछु लियो नाहीं, तातें तू सिथिल है । तब बहू उठिके सखड़ी प्रसाद सब गायन कों खवाय दियो । आपु कछू न लियो । उही श्रीठाकुरजी ने झारी सों जल पान कराये, सोई लैकें रही ।

ऐसे सरकावी लोग सराववा गछ. त्यारे षधी सामग्री जेमनी तेम जेठ महुा दुःख थयुं. जे त्रणे वार में रसोइ करी ते त्रणे वार श्रीठाकुरल्य आरोग्या नही. जे दुःखी अने अमित पण घणी थछ. ते मूर्छा आवी पछाड भाडने लूमिमां पडी गछ. अमने दीधे कंठ सुकाथ गयो. त्यारे श्रीठाकुरल्ये सिंघासनधी छडी पोतानी आरी वउ जस अने पीवडाव्युं. त्यारे सावधान थछ नेत्र ज्येस्यां. ते जे वहुतुं दुःख श्रीठाकुरल्यधी सहन न थयुं.

भावप्रकाश—केमके ते सरण हुती, छणकपट कंठ जणती नही.

तेधी श्रीठाकुरल्ये प्रसन्न थडने वहुने कछुं, तुं जेठ केम करे छे ? तें त्रणे वार रसोइ करी ते तुं त्रणे वार आरोग्यो छुं. तूं सन्देह केम करे छे ? त्यारे वहुजे कछुं, तुं केम भातुं ? सामग्री तो षधी जेमनी तेम धरी न जेती. त्यारे श्रीठाकुरल्य कछे, जेमां भारे हाथ पडे ते वस्तु घटे नही. अने तूं न माने तो काले सवारें तारा जेतां आरोगीश. तेधी हवे तु महुाप्रसाद ले. तुं त्रणे वार आरोग्यो छुं. तें कंठ दीधुं नधी तेधी तूं शिथिल छे. त्यारे वहुजे छडीने सपडी षधी गायने अवडावी दीधी. पोते कंठ न दीधुं. जेन श्रीठाकुरल्ये आरीतुं जसपान कराव्युं तेन सहने रही.

भावप्रकाश—सो यातें, जो-श्रीठाकुरजी साँच कहत हैं, के मोक योंही समाधान करत हैं ? सबेरे भोजन करते देखोंगी, तो महाप्रसाद लेजंगी ।

पाछे सबेरे की सामग्री बिनकै सिद्ध करि रात्रि कों सोइ रही । प्रातःकाल होत ही, देह कृत्य करि न्हाई कें मंगला शृंगार करि वेग ही रसोई सगरी सिद्ध करी । धार कटोरा में पधराइ, श्रीठाकुरजी के आगे भोग धरि, पाछे टेरा लगावन लागी । तब श्रीठाकुरजी कहें, अब तू टेरा काहे कों लगावत है ? पाछे तोकों विस्वास न होइगो । तातें तेरे आगे अरोगत हों । तब वह पास बैठी, श्रीठाकुरजी भली भांति सो सगरी सामग्री अरोगे । तब बहू सों हास्य विनोद करि सब रस को अनुभव करायो । पाछे श्रीदामोदरजी यह बात सगरी श्रीआचार्यजी सों कहें, जो-मोकों समराई बहोत सुख देत है । सो बात श्रीआचार्यजी ने मन में राखी, जो-समराई आवेगी दरसन कों, तब पूछेंगे । पाछे श्रीठाकुरजी जा प्रकार ममराई कछो, ताही प्रकार अरोगे । सगरी सामग्री ज्यों की त्यों भरी देखी । तब बहू के मनमें विस्वास आयो, जो-श्रीदामोदरजी काल्हि तीनों बार अरोगे, यामें संदेह नाहीं । पाछे अनोसर कराय बहू ने महाप्रसाद लियो । या प्रकार पांच दिन लों नित्य श्रीठाकुरजी कों आपुने आगे

भावप्रकाश—ते अे माटे के श्रीठाकुरजी सायु कहे छे के माइ अेम न समाधान करे छे ? सवारे भोजन करतां जेईश तयारे महाप्रसाद लईश

पछी सवारे सामग्री वीछीने सिद्ध करी रात्रिअे सुध रही. प्रातःकाल थतां न देहकृत्य करी न्हायने मंगला शृंगार करी जल्दी न रसोइ अंधी सिद्ध करी धार-कटोरा-मां पधरावी श्रीठाकुरजीनी आगण लोग धरी पछी टेरो करवा लागी. तयारे श्रीठाकुरजी कहे, हुवे तुं टेरो शा माटे लगाउ छे ? पछी तने विस्वास नही थाय. माटे तारा आगण आरोगुं छुं. तयारे ते पासे भेठी. श्रीठाकुरजी सारी रीतिथी अंधी सामग्री आरोग्या तयारे वहुथी हास्य-विनोद करी अंधा रसने अनुभव कराव्ये. पछी श्रीदामोदरजीअे अंधी वात श्रीआचार्यजीने कही के मने समराइ अहु सुअ आवे छे. ते वात श्रीआचार्यजीअे मनमा राभी के समराइ दर्शने आवशे तयारे पूछीशुं. पछी श्रीठाकुरजी समराइअे ने प्रभावे कछुं तेन प्रकारे आरोग्या. अंधी सामग्री जेमनी तेम लरी जेठ. तयारे वहुना मनमां विश्वास आव्ये. के श्रीदामोदरजी काले त्रणे वार आरोग्या अेमां स देह नही. पछी अनोसर करावी वहुअे महाप्रसाद लीयो. अे प्रकारे पांच दिवस सुधी नित्य श्रीठाकुरजीने पोतानी आगण आरोग्याव्युं. पछी सामुअे

अरोगायो । पाछे मास श्रीआचार्यजी सों विदा मांग्यो । तब श्री-
आचार्यजी कहें, बहू कों वेगि दरसन कों पठाइ दीजो । सो सास
आइ वहू सों कह्यो, जो-अब तू श्रीआचार्यजी के दरसन करि आव ।
तब वहू श्रीआचार्यजी के पास आइ दण्डवत् कियो । ता समय
श्रीआचार्यजी रसोई करत हते । तब वहू सों कह्यो, जा न्हाइ आव,
रोटी बेलि दे । तब समराई न्हाइ के आई, रोटी बेलन लागी । तब
श्रीआचार्यजी समराई सों कहें, तेरी बात श्रीठाकुरजी श्रीदामोदरजी
ने सगरी हमारे आगे कही । तोकों सब रस को अनुभव जतायो ।
तेरे बड़े भाग्य है । तब समराई ने कही, जो-श्रीठाकुरजी के पेट में
इतनी बात हू न ठहरी, तो उनसों कहा कहिए ? आखरि वालक हँ ।
यह बात सुनिकें श्रीआचार्यजी बहोत प्रसन्न भये । और कहे, ऐसे
वैष्णव कों तो घर जाई के दरसन देनो उचित है, परन्तु कहा करिये,
सरस्वती उल्लंघनि नाही । पाछें दिन दोय समराई रहि श्रीठाकुरजी
की सगरी बात श्रीआचार्यजी सों कहै । पाछें तीसरे दिन आज्ञा
मांगी । तब श्रीआचार्यजी कहें ऐसे वैष्णव कों आज्ञा क्यों दीजिये ?
सदा इनकी वार्ता सुनिये । परन्तु श्रीठाकुरजी इनसों प्रसन्न हैं, इन
बिना रहि नाही सकन, तातें विदा दिये । तब समराई दण्डवत् करि

श्रीआचार्यजी विदाय मांगी. तयारे श्रीआचार्यजी कहे, बहुने जल्दी दर्शन भेड्डी
दहे. पछी सासुअे आवीने कहुं, केहुने तू श्रीआचार्यजीनां दर्शन करी आव. तयारे
बहुअे श्रीआचार्यजीनी पास आवी हंडवत् कर्था. ते समय श्रीआचार्यजी
रसोअ करत हता. तयारे बहुने कहुं, जा न्हाअ आव. रोटी बेली दे. तयारे समराअ
न्हाअने आवी रोटी बेलवा लागी. तयारे श्रीआचार्यजी समराअने कहे, तारी
वात श्रीठाकुरजी श्रीदामोदरजीअे षधी अमारी आगण कही. तने षधा रसने
अनुभव ज्ञाव्या. तारां महान भाग्य छे. तयारे समराअअे कहुं, के श्रीठाकुरजीना
पेटमां अेड्डी वात पशु न रकी ? तो अेअने शुं कहीअे ? आअर आसक छे. अे
वात सांलणीने श्रीआचार्यजी अहु प्रसन्न थया अने कहे आवा वैष्णवने तो घर
जअने दर्शन देवां उचित छे परंतु शुं करीअे सरस्वती उलंघवी नही. पछी द्विस
अे रही समराअअे श्रीठाकुरजीनी षधी वात श्रीआचार्यजीने कही. पछी त्रीज द्विस
आज्ञा मांगी तयारे श्रीआचार्यजी कहे आवा वैष्णवने आज्ञा केम आपीअे ? सदा
अेनी वार्ता सांलणीअे. परंतु श्रीठाकुरजी अेनाथी प्रसन्न छे. अेना विनारही शकता
नथी तेथी विदाय दीधी. तयारे समराअअे हंडवत् करी विनंती करी, महाराज ! आ

भावप्रकाश—सो यातें, जो—श्रीठाकुरजी सॉच योंही समाधान करत हैं ? सबेरे भोजन करते देखोंगी, तो

पाछे सबेरे की सामग्री बिनकै सिद्ध करि प्रातःकाल होत ही, देह कृत्य करि न्हाई कें मंगर ही रसोई सगरी सिद्ध करी । थार कटोरा में प के आगे भोग धरि, पाछे टेरा लगावन लाग कहें, अब तू टेरा काहे कों लगावत है ? पा होइगो । तातें तेरे आगे अरोगत हों । तब कुरजी भली भांति सो सगरी सामग्री अरोजे विनोद करि सब रस को अनुभव करायो । बात सगरी श्रीआचार्यजी सों कहें, जो—मे देत है । सो बात श्रीआचार्यजी ने मन में रा दरसन कों, तब पूछेंगे । पाछे श्रीठाकुरजी ताही प्रकार अरोगे । सगरी सामग्री ज्यों बहू के मनमें विस्वास आयो, जो—श्रीदार अरोगे, यामें संदेह नहीं । पाछे अनोस लियो । या प्रकार पांच दिन लों नित्य

भावप्रकाश—ते जे भाटे ठे श्रीठाकुर समाधान करे छे ? सवारे भोजन करतों जेठस

पछी सवारे सामग्री वीछीने सिद्ध करी देहकृत्य करी न्हावने मंगला शृंगार करी न्हाही रामां पधरावी श्रीठाकुरलनी, आगण लोग ध कुरल कहे, हुवे तुं टेरो शा भाटे लगाउ छे ? आगण आरोग्य छुं. तयारे ते पासे जेडी. आरोग्या तयारे वहुथी हास्थ-विनोद करी । रामोदरलजे पछी वात श्रीआचार्यलने कर वात श्रीआचार्यलजे मनमां राणी के सभ ठाकुरल सभराजमे जे प्रभाषे कछुं तेज प्र लरी जेठ. तयारे वहुना मनमां विश्व आरोग्या जेमां संदेह नही. पछी अं प्रकारे पांच दिनस सुधी नित्य श्रीठाकुरलने

सास बहू ऐसे भगवदीय श्रीआचार्यजी के सेवक कृपापात्र हे ।
इनकी वार्ता कहाँ ताई कहिये ? वार्ता ॥४४॥

भावप्रकाश—या वार्ता में यह जताये, जो-निष्कपट प्रीति श्रीठाकुर-
रजी कों प्रिय है । वैष्णव ॥४४॥

✽ ✽ ✽
अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकनी, कृष्णादासी श्रीरुकमिनीजी की
खवासी करती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—यह कृष्णादासी श्रीस्वामिनीजी की अंतरंगिनी सखी
है । 'ब्रजमंगला' लीला में इनको नाम है । सो ए पूर्व में पटना तें दोइ कोस पर
एक गाम है । तहाँ गौड़ ब्राह्मन के घर जनमी । सो वर्ष पांच की भई, सो एक
दिन माता के संग गंगा-स्नान कों गई । तहां एक नाव पारतें आवत हती । सो
नाव काष्ठ को भरयो हतो, और मल्लाह हते । सो वर्षा ऋतु हती, सो नाव फाटी,
मल्लाह तरि कें पार आये । काष्ठ सगरो बहि चलयो । सो कृष्णो तीर ठाड़ी रही ।
सो कराड़ो टूटि के गिरयो गंगाजी में । सो कृष्णो और कृष्णो की माता दोऊ
गिरी । सो माता की देह छूटि गई । और कृष्णो वालक, सो काष्ठ हाथ में आई

नित्य श्रीदासोदरलने आरोग्यावती. श्रीठाकुरल सदा प्रसन्न रहैता. ते सासु वहु
अवां भगवदीय श्रीआचार्यलनां सेवक कृपापात्र हुतां. अमनी वार्ता ज्या सुधी कहीअ.

भावप्रकाश—आ वार्तामां अे अण्णायुं, ठे निष्कपट प्रीति श्रीठाकुर-
लने प्रिय छे. वैष्णव ॥४४॥

✽ ✽ ✽
हुवे श्रीआचार्यल महाप्रभुलनी सेवकनी, कृष्णादासी श्रीरुकमणीलनी भवासी
करती, तेमनी वार्ताना भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—आ कृष्णादासी श्रीस्वामिनीलनी अंतरंगिनी सखी छे.
'ब्रजमंगला' लीलामां अेमनुं नाम छे. अे पूर्वमां पटनाथी ये कोस उपर अेक
गाम छे त्यां गौड़ ब्राह्मणना धरे जन्मी. ते वर्ष पांचनी थई. पछी अेक दिवस
मातानी सगे गंगा-स्नाने गई. त्यां अेक नाव पारथी आवती हुती. ते नाव
काष्ठनी भरि हुती अने नाविक हुता. वर्षा ऋतु हुती ते नाव झटी. नाविक
तरिने पार आया. काष्ठ अधुं वही आद्युं. कृष्णा तीरे उषी हुती ते लेपट
तुटीने पडी, गंगाअमां. ते कृष्णो अने कृष्णानी माता अन्ने पडी. लारे मातानी
देह छुटी गई अने कृष्णो आवक तेना हाथमां काष्ठ आवी अयुं. ते काष्ठ पांच

बिनती किये, महाराज ! यह सब आपु की कृपातें हैं । नहीं तो कहां श्रीठाकुरजी कहां हम संसारी जीव ? आपु की का'नि तें श्री-ठाकुरजी हम सरीखी पर कृपा करत हैं । यह कहिकें चली । सो बहू की दैन्यता सुनि श्रीआचार्यजी बहोत प्रसन्न भये । जो-ऐसे वैष्णव दुर्लभ हैं । श्रीठाकुरजी जिनसों बोलें, तिनही कों ऐसी दैन्यता होइ । पाछे बहू घर आई । सास तें सब श्रीआचार्यजी के समाचार कहै । जो-बड़ी कृपा अपने ऊपर है । इतने बहू की रंच आंख लागी, नींद आई । श्रमित आइ हती । सो इतने में सास भोग धरि वासन मांजन लागी । तब बहू चोंकि परी । श्रीठाकुरजी कैसे अरोगते होंगें ? सो नहाई के मन्दिर में गई । श्रीठाकुरजी कों फेरि अपने आगे अरोगायो । तब सास सों श्रीठाकुरजी ने जताई, जो-रसोई उपर की टहेल तू करियो, और शृंगार बहू करेगी । भोगहू बहू धरेगी, बहू के हाथसों मैं भली भांति सों अरोगत हों । तब तें सास ने बहू सों कह्यो, श्रीठाकुरजी तेरे उपर बहोत प्रसन्न हैं, तातें शृंगार तू करियो, भोग हू सगरो तू धरियो । मैं रसोई करोंगी । और उपर की टहेल करोंगी ।

सो बहू नित्य नौतन शृङ्गार करती, सामग्री बैठिकें नित्य श्री-दामोदरजी कों अरोगावती । श्रीठाकुरजी सदा प्रसन्न रहते । सो

अधुं आपुनी कृपाथी छे. नहीं तो क्यं श्रीठाकुरल ? क्यं अमे संसारी लव ? आपुनी का'निथी श्रीठाकुरल अमार जेवा उपर कृपा करे छे. अमे कहीने यादी. ते वहुनी दीनता सांलणीने श्रीआचार्यल अधु प्रसन्न थया के, आवा वैष्णव दुर्लभ छे श्रीठाकुरल जेनाथी जेले तेने न आवी दीनता होय.

पछी वहु घर आवी. श्रीआचार्यलना अधा सभायार सासुने क्हा के आपुला उपर अधु कृपा छे. अटलाभां वहुनी रंच आंख लागी. निंदा आवी. श्रमित आवी हती. अटलाभां सासु भोग धरि वासल मांजवा लागी. तयारे वहु चोंकी पछी. श्रीठाकुरल केवी रीते आरोगता लसे ? पछी न्हाधने मंदिरभां गध. श्रीठाकुरलने करी पोतानी आगल आरोगाव्या. तयारे सासुने श्रीठाकुरलजे न्हाव्युं, के रसोइ उपरनी टहेल तु कर अने शृंगार वहु करसे. भोग पल वहु धरसे वहुना हाथथी हुं सारी रीतथी आरोगुं छुं. तयारे सासुजे वहुने क्हुं, श्रीठाकुरल तारा उपर अधु न प्रसन्न छे. मटे शृंगार तू करजे. भोग पल अधे तू धरजे. हुं रसोइ करीश अने उपरनी टहेल करीग. पछी वहु नित्य नौतन शृंगार करती. सामग्री (पासे) जेसीने

सास बहू ऐसे भगवदीय श्रीआचार्यजी के सेवक कृपापात्र हे ।
इनकी वार्ता कहाँ ताई कहिये ? वार्ता ॥४४॥

भावप्रकाश—या वार्ता में यह जताये, जो-निष्कपट प्रीति श्रीठाकुर-
रजी कों प्रिय है । वैष्णव ॥४४॥

✽ ✽ ✽
अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकनी, कृष्णादासी श्रीरुकमिनीजी की
खवासी करती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—यह कृष्णादासी श्रीस्वामिनीजी की अंतरंगिनी सखी
है । 'ब्रजमंगला' लीला में इनको नाम है । सो ए पूर्व में पटना तें दोइ कोस पर
एक गाम है । तहाँ गौड़ ब्राह्मन के घर जनमी । सो वर्ष पांच की भई, सो एक
दिन माता के संग गंगा-स्नान कों गई । तहां एक नाव पारतें आवत हती । सो
नाव काष्ठ को भरयो हतो, और मल्लाह हते । सो वर्षा ऋतु हती, सो नाव फाटी,
मल्लाह तरि कें पार आये । काष्ठ सगरो बहि चलयो । सो कृष्णो तीर ठाड़ी रही ।
सो कराड़ो टूटि के गिरयो गंगाजी में । सो कृष्णो और कृष्णो की माता दोऊ
गिरी । सो माता की देह छूटि गई । और कृष्णो बालक, सो काष्ठ हाथ में आई

नित्य श्रीदासोदरलने आशेगावती. श्रीठाकुरल सदा प्रसन्न रहैता. ते सासु वडु
अेवां भगवदीय श्रीआचार्यलनां सेवक कृपापात्र हुतां. अेमनी वार्ता अ्या सुधी कहुअे.

भावप्रकाश—आ वार्तामां अे जलुअ्यु, ठे निष्कपट प्रीति श्रीठाकुर-
लने प्रिय छे. वैष्णव ॥४४॥

✽ ✽ ✽
हुवे श्रीआचार्यल महाप्रभुलनी सेवकनी, कृष्णादासी श्रीरुकमणीलनी अवासी
करती, तेमनी वार्ताना भाव कहुअे छीअे—

भावप्रकाश—आ कृष्णादासी श्रीस्वामिनीलनी अंतरंगिनी सखी छे.
'ब्रजमंगला' लीलामां अेमनु' नाम छे. अे पूर्वमां पटणाथी अे डोस उपर अेक
गाम छे त्यां गौड ब्राह्मणना धरे जनमी. ते वर्ष पांचनी थई. पछी अेक दिवस
मातानी सगे गंगा-रनाने गई. त्यां अेक नाव पारथी आवती हुती ते नाव
काष्ठनी भरि हुती अने नाविक हुता. वर्षा ऋतु हुती ते नाव फाटी नाविक
तरीने पार आया. काष्ठ अधुं वही आदयुं. कृष्णा तीरे उषी हुती ते अेअड
तुटीने पडी, गंगाअमां. ते कृष्णे अने कृष्णानी माता अने पडी. तारे मातानी
देह छुटी गई अने कृष्णे बालक तेना हाथमां काष्ठ आवी गयु. ते काष्ठ पांच

बिनती किये, महाराज ! यह सब आपु की कृपातें है । नहीं तो कहां श्रीठाकुरजी कहां हम संसारी जीव ? आपु की का'नि तें श्रीठाकुरजी हम सरीखी पर कृपा करत हैं । यह कहिकें चली । सो बहू की दैन्यता सुनि श्रीआचार्यजी बहोत प्रसन्न भये । जो-ऐसे वैष्णव दुर्लभ हैं । श्रीठाकुरजी जिनसों बोलें, तिनही कों ऐसी दैन्यता होइ । पाछे बहू घर आई । सास तें सब श्रीआचार्यजी के समाचार कहै । जो-बड़ी कृपा अपने ऊपर है । इतने बहू की रंच आंख लागी, नींद आई । अमित आइ हती । सो इतने में सास भोग धरि वासन मांजन लागी । तब बहू चोंकि परी । श्रीठाकुरजी कैसे अरोगते होंगे ? सो नहाई के मन्दिर में गई । श्रीठाकुरजी कों फेरि अपने आगे अरोगायो । तब सास सों श्रीठाकुरजी ने जताई, जो-रसोई उपर की टहेल तू करियो, और शृंगार बहू करेगी । भोगहू बहू धरेगी, बहू के हाथसों मैं भली भांति सों अरोगत हों । तब तें सास ने बहू सों कह्यो, श्रीठाकुरजी तेरे उपर बहोत प्रसन्न हैं, तातें शृंगार तू करियो, भोग हू सगरो तू धरियो । मैं रसोई करोंगी । और उपर की टहेल करोंगी ।

सो बहू नित्य नौतन शृङ्गार करती, सामग्री बैठिकें नित्य श्रीदामोदरजी कों अरोगावती । श्रीठाकुरजी सदा प्रसन्न रहते । सो

पद्युं आपनी कृपाथी छे. नहीं तो क्थां श्रीठाकुरल ? क्थां अमे संसारी लव ? आपनी कानिथी श्रीठाकुरल अमारा जेव. उपर कृपा करे छे. अमे कडीने यादी. ते वहुनी दीनता सांलणीने श्रीआचार्यल पद्यु प्रसन्न थया. के, आवा वैष्णव दुर्लभ छे श्रीठाकुरल जेनाथी प्येले तेने न आवी दीनता होय.

पछी वहु घर आवी. श्रीआचार्यलना पधा सभायार सासुने कह्या के आपणु उपर पद्यु कृपा छे. अटलाभां वहुनी रंचक आंख लाग्ग. निंद्रा आवी. अमित आवी हती. अटलाभां सासु लोग धरी वासणु मांजवा लागी. त्यारे वहु चोंडी पडी. श्रीठाकुरल केवी रीते आरोगता लसे ? पछी न्हाधने मंदिरमां गध. श्रीठाकुरलने करी पोतानी आगण आरोगाव्या. त्यारे सासुने श्रीठाकुरलमे न्हाव्युं, के रसोइ उपरनी टहेल तु कर अने शृंगार वहु करेशे. लोग पणु वहु धरेशे वहुना हाथथी हुं सारी रीतश्री आरोगुं छुं. त्यारे सासुमे वहुने कलुं, श्रीठाकुरल तारा उपर पद्यु न प्रसन्न छे. माटे शृंगार तू करजे. लोग पणु पधा तू धरजे. हुं रसोइ करेश अने उपरनी टहेल करीग. पछी वहु नित्य नौतन शृंगार करती. सामग्री (पासे) प्येसीने

ગયો । સો કાષ્ઠ કોસ પાંચ જાય લગ્યો । તહાં શ્રીઆચાર્યજી સંધ્યા-ચંદન કરત હતે । તવ છોરી યહ રોઈ । તવ શ્રીઆચાર્યજી ને કહ્યો યહ કૌન વાલક હૈ ? દેલ્લો તો, યહ વહિ આઈ હૈ । સો યાકોં ગામ મેં પહોંચતી કરો । પટના ઇહાં તે પાંચ કોસ હૈ । તવ કૃષ્ણદાસ વહ છોરી કી બાંહ પઠરિ શ્રીઆચાર્યજી પાસ લે આયે । તવ શ્રીઆચાર્યજી દૈવી જીવ જાનિ નામ સુનાય નિવેદન કરાયો । પાછે કહે, કોઈ વૈષ્ણવ પાસ મહાપ્રસાદ હોય તો યાકોં યાવો । તવ કૃષ્ણદાસ ને પ્રસાદ યાવો । પાછે શ્રીઆચાર્યજી કહે, અપને પુરુષોત્તમપુરી શ્રીજગન્નાથરાયજી કે દરસન કોં પધારનો હૈ, તાતે કોઈ મનુષ્ય કરિ લાવો, યાકોં પટના પહોંચાવો । તવ કૃષ્ણદાસ એક મનુષ્ય કરિ લાયે । વાકોં એક રૂપૈયા દિયે, સો ઉહ છોરી કોં ગોદ મેં લિયો । તવ શ્રીઆચાર્યજી કૃષ્ણદાસ સોં કહે, યા છોરી કોં પટના મેં ઠિકાનો પાર તૂ અઝ્યો । તહાં તાંઈ હમ ઇહાં બેઠે હૈ । સો કૃષ્ણદાસ સંગ ચલે, સો પટના આયે । સો હરિવંસ પાઠક મિલે, કાસી રહતે । પટના મેં વ્યૌહાર કોં આવતે । તવ હરિવંસ પાઠક સોં કહે, યહ છોરી કોં ઠિકાને તુમ પારિ દીજો, શ્રીઆચાર્યજી મેરે લિયે બેઠિ રહે હૈ, તાતે મેં જાત હોં । તવ હરિવંસ પાઠક વહ છોરી કોં મહાપ્રસાદ લિવાયે । કૃષ્ણ-

દાસ દૂર જઇને લાગ્યુ. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજી સંધ્યાવદન કરતા હતા. ત્યારે આ છોકરી રોઈ. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું આ ઠાણુ બાલક છે ? જુઓ તો આ વહીને આવી છે. તેથી આને ગામમાં પહોંચતી કરો. પટણુ અહીંથી પાંચ કોસ (દસ માઇલ) છે. ત્યારે કૃષ્ણદાસ તે છોકરીની બાંહ પકડીને શ્રીઆચાર્યજી પાસે લઈ આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ દૈવી જાણીને નામ સંભળાવી નિવેદન કરાવ્યું. પછી કહે, ઠાઈ વૈષ્ણવ પાસે મહાપ્રસાદ હોય તો આને ખવડાવો. ત્યારે કૃષ્ણદાસે મહાપ્રસાદ ખવડાવ્યો. પછી શ્રીઆચાર્યજી કહે આપણે પુરુષોત્તમપુરી શ્રીજગન્નાથરાયજીના દર્શને પધારવુ છે તેથી ઠાઈ મનુષ્ય કરી લાવો આને પટણુ પહોંચાડો. ત્યારે કૃષ્ણદાસ એક મનુષ્ય કરી લાવ્યા તેને એક રૂપૈયા આપ્યો. ત્યારે તેણે તે છોકરીને ગોદીમાં લીધી. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કૃષ્ણદાસને કહે, આ છોકરીનુ પટણુમાં ઠેકાણુ પાડીને આવજો. ત્યાં સુધી અમે અહીં બેઠા છીએ. પછી કૃષ્ણદાસ સાથે ગયા તે પટણુ આવ્યા. ત્યાં હરિવંશ પાઠક મળ્યા તે કાશી રહેતા. પટણુમાં વહેવારને માટે આવતા. ત્યારે હરિવંશ પાઠકને કહ્યું, આ છોકરીનુ ઠેકાણુ તમે પાડી દેજો. શ્રીઆચાર્યજી મારા માટે બિરાજી રહ્યા છે. તેથી હુ જાઉ છું. ત્યારે હરિવંશ પાઠકે તે છોકરીને પ્રસાદ લેવડાવ્યો. કૃષ્ણદાસ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ પાસે આવ્યા.

दोस श्रीआचार्यजी महाप्रभु पास आये । पाछे आप पुरुषोत्तमपुरी कों पधारे, पाछे हरिवंस पाठक ने दिन सातलों सगरे गाम में ठिकानो पारे । तव एकने बत्तायो, फलाने गाम के ब्राह्मण की बेटी हैं, गौड़ ब्राह्मण है । तव वाके घर कहेवाये, सो पिता आयो । कह्यो, बेटी चलि, माता तेरी मरी तू कैसे बची ? तव बेटी कों नाम समर्पन भयो, दैवी जीव, सो बुद्धि निर्मल ह्वे गई । सो कह्यो, तिहारे लेखे तो मेरी मा मरी और मैं मरी । काहेंते, मैं श्रीआचार्यजी की सेवकनी भई हों, सो वैष्णव विना और के हाथ को पानी न पिऊंगी । तव पिताने हरिवंस पाठक सों कह्यो, तुम वैष्णव हो, जैसे हमारी बेटी तैसे यह तिहारी बेटी । तुम घर में राखो दोई चारि वर्ष पीछे याको ब्याह करि दीजो । हमारे हाथ को यह जल पीवन नाहीं कहत है, और हमारे पास कछु पैसा हू नाहीं हैं, सो याको ब्याह कहां तें करेगे ? तव हरिवंस पाठक कहैं, आछो, भगवद् इच्छा । श्रीआचार्यजी के सेवक कों कैसे काढ़ि दीजे ? परन्तु कासी में हमारो घर है, तहां स्त्रीन में रहेगी । तव वाके पिताने कही, आछो । यह कहिकें वह छोरी को पिता घर गयो । पाछे हरिवंस पाठक कासी आये । सो वह छोरी कूं ले आये । पीछे वर्ष दस की भई । तव सगाईं हूँदे । सो कोई ब्राह्मण करे नाहीं, जो-हम याकों क्यों ब्याहैं ? याकी जात

पछी पोते पुत्रोत्तमपुरी पधार्या । पछी हरिवंश पाठक दिवस सात सुधी आया गाभमां ठेकायुं पाठयु त्यारे अके अताव्युं के, इलाया गाभना ब्राह्मणनी भेटी छे गौड ब्राह्मण छे । त्यारे अना धरे कहेवडाव्यु । तेथी पिता आव्यो । कहुं, भेटी याव । माता तारी मरी तू ठेवी रीते अथी ? त्यारे भेटीने नाम-समर्पण थयुं (हंतु) दैवी अथ तेथी बुद्धि निर्मल थई गई अटवे कहु, तमारा मनथी तो मारी मा मरी अने हुं अे मरी, डमके हुं श्रीआचार्यअनी सेवकनी थई छुं । तेथी वैष्णव विना भीजना हाथनु पाणी नहीं पीवं । त्यारे पितामे हरिवंश पाठकने कहु, तमे वैष्णव छे । लवी अमारी भेटी तेवी आ तमारी भेटी । तमे धरमां राषो । ये यार वर्ष पछी अेतुं लक्ष करी देजे । अमारा हाथनु आ जल पीवानुं ना कहे छे अने अमारी पास कछ पैसा पणु नथी । तेथी अेतुं लक्ष क्यांथी करीशुं ? त्यारे हरिवंश पाठक कहे, भवे, भगवद् इच्छा । श्रीआचार्यअना सेवकने ठेवी रीते काढी भूकाय ? परंतु काशीमां अमाइं धर छे त्यां स्त्रीअोमां रहेशे । त्यारे अेना पितामे कहु, लवे, अेम कही ते छोकरीने पिता धर गयो । पछी हरिवंश पाठक काशी आव्यो । ते छोकरीने लई आव्यो । पछी ते वर्ष दशनी थई त्यारे सगाईं

को, खान पान को, ठिकानो नहीं । और यह छोरी सबकों पुकारि के कहति है, जो-श्रीआचार्यजी को सेवक होई ताके हाथ सों खान पान करोंगी । सो याकों कौन विवाहै ? तब हरिवंस पाठक वह छोरी सों पूछे, जो-अब हमारे घर में तेरो निर्वाह नहीं । वर्ष दोय पाछे तेरी अवस्था तरुन होयगी, तब लोग निन्दा करेंगे । जो-कुंवारी कन्या घरमें राखी है । सो तोकों अब कहा कर्तव्य है ? तब कृष्णो ने कही, मोकों अडेल में श्रीआचार्यजी के घर पठाय देउ, तहाँ मैं रहूँगी । तब हरिवंस पाठक कृष्णो कों संग ले अडेल आय श्रीगुसाईंजी कों दण्डवत करि, सगरी बात कृष्णो की कही । तब श्रीगुसाईंजी कही, कृष्णो हमारी है, सो बहूजी पास रहैगी । तब कृष्णो ने श्रीगुसाईंजी कों दण्डवत करि विनती कियो, महाराज ! मैं तो आप की दासी हों । श्रीआचार्यजी मेरो हाथ पकरे हैं । सो आपुके चरणारविंद बिना मेरो कहूँ ठिकानो नहीं । तब श्रीगुसाईंजी कृष्णो की दैन्यता देखि वहोत प्रसन्न होय के कहें, हमारे प्रागट्य तो तुम सरीखे वैष्णव के लिये है । ताते यह घर तिहारो है सुखेन रहो । तब कृष्णो श्रीरुकिमिनी बहूजी की खवासी में रही । हरिवंस पाठक श्रीगुसाईंजी सों विदा होई के कासी आये । कृष्णो सगरे

प्येणे. ते ढाई आह्वण करे नहीं, डेम के अमे अने डेम विवाहीअे ? अनी अतनुं, पान-पानतु ठेकाणुं नही. वणी आ छोकरी पधाने पुकारिने कहे छे, के श्रीआचार्यअने सेवक होय तेना हाथथी पानपान करीश. तेथी अने डाणु विवाहे ? त्तारे हरिवश पाठक ते छोकरीने पूछे, के हवे अमारा धरमां तारे निर्वाह थशे नही. ये वर्ष पछी तारी अवस्था तइणु थशे त्तारे लोक निंदा करशे के, कुंवारी कन्याने धरमां राखी छे. तेथी तने हवे शु कर्तव्य छे ? त्तारे कृष्णाअे कछु, अने अडेलमां श्रीआचार्यअना धरे भोक्ली हो. त्यां हु रहीश. त्तारे हरिवश पाठक कृष्णाने संग लई अडेल आवी श्रीगुसांथअने दडवत् करी पथी वात कृष्णानी कही. त्तारे श्रीगुसांथअे कछु, कृष्णा अमारी छे ते वहुअ पासे रहेशे. त्तारे कृष्णाअे श्रीगुसांथअने दडवत् करी विनती करी, महाराज ! हुं तो न-मथी आपनी दासी छु. श्रीआचार्यअे मारे हाथ पकडयो छे. माटे आपनां चरणारविंद बिना माइं कई ठेकाणु नथी त्तारे श्रीगुसांथअे कृष्णानी दीनता जेई अहु प्रसन्न थधने कछुं, आ माइ प्राकट्य तो तमारा सरप्या वैष्णवने माटे छे. तेथी आ धर तमाइ छे. सुपेथी रहे. त्तारे कृष्णे श्रीइकमण्णी वहुअनी पवासीमां रही. हरिवश पाठक श्रीगुसांथअथी विदाय थधने काशी आया. कृष्णा आप्या धरतु काम-टहुल करे.

घर को काम टहल करे। सो सगरो परिवार प्रीतिसों बस करि लियो। कृष्णो कहे सो होइ। श्रीगुसाईंजी हूं श्रीआचार्यजी की कृपापात्र सेवकनी जानि, कृष्णो की का'नि बहोत राखते।

वार्ता—प्रसंग १—सो कृष्णो रुकिमिनी बहूजीकी खवासी करे। सो एक समय श्रीरुकिमिनीजी बहूजीकों गर्भाधान रह्यो। तब कृष्णो ने कही, अबके बहूजीके बेटा होइगो, तीनको नाम श्रीगोकुलनाथजी धरोंगी। सो गर्भ के दिन पूरे भये तब श्रीरुकिमिनी बहूजीके पेटमें पीर उठी। तब कृष्णो जाइके एक पंडित जोतिसी सों पूछे, अब सुहूर्त कैसो है? तब जोतिसीने कही, अबही दोइ चारि दिन नीके नाहीं हैं। तब कृष्णादासी आई श्रीरुकिमिनी बहूजीके पेट पर हाथ फेरि कह्यो, महाराज! अबही मति पधारो, दोय चारि दिन आछे नाहीं हैं। तब तत्काल पीड़ा रहि गई। पाछे पांच सात दिन बीते, तब कृष्णादासी फिरि वह पंडित जोतिसीके पास जाइ पूछे, जो-अब सुहूर्त कैसो है? तब वह जोतिसीने कही, आज बहोत सुन्दर दिन है, भलो सुहूर्त आज है। तब कृष्णो आई, श्रीरुकिमिनी बहूजीके पेट पर हाथ फेरि कह्यो, महाराज! आज बहोत सुन्दर सुहूर्त है, भलो सुहूर्त आज है। अब पधारो। तब तत्काल बालक प्रगट भये। पाछे श्रीगुसाईंजी ने

ते रीते भयो परिवार प्रीतिथी वश करी दीयो। कृष्णो कहे तेज थाय. श्रीगुसाईंजी पणु श्रीआचार्यजीनी कृपापात्र सेवकनी जण्णी कृष्णानी का'नि षडु राखता.

वार्ता प्रसंग १—कृष्णो रुकमणी वहुलनी खवासी करे. ते अक समय श्रीरुकमणी वहुलने गर्भाधान रह्युं. त्यारे कृष्णोअये कहुं, हुवे वहुलने भेटा थरी तेभतुं नाम श्रीगोकुलनाथल धरीश. पछी गर्भना द्विस पूरा थया त्यारे श्रीरुकमणी वहुलना पेटमां पीडा उठी. त्यारे कृष्णो जधने अक पंडित जेषीने पूछी व्यापी के अत्यारे सुहूर्त केवुं छे? त्यारे जेशीअये कहुं, हुभणुं भे तार द्विस सारा नथी. त्यारे कृष्णादासीअये व्यापी श्रीरुकमणी वहुलना पेट उपर हाथ डेरपी ने कहुं, भडारान! हुभणुं न पधारता. भे तार द्विस सारा नथी. त्यारे तत्काल पीडा रही गध. पछी पांच सात द्विस वीत्या. त्यारे कृष्णादासीअये इरी ते पंडित जेशीनी पासे जध पूछथुं, के हुवे सुहूर्त केवुं छे. त्यारे ते जेशीअये कहुं, व्याज षडु सुंदर द्विस छे. सुंदर सुहूर्त व्याज छे. त्यारे कृष्णोअये व्यापी श्रीरुकमणी वहुलना पेट उपर हाथ डेरपी कहुं, भडारान! व्याज षडु सुंदर सुहूर्त छे. सुहूर्त व्याज साइं छे. हुवे पधारो. त्यारे तत्काल बालक प्रकट थया. पछी श्रीगुसाईंजीअये नामकरण कथुं. ते वदलल नाम धरुं. परंतु कृष्णोअये

नामकरण कियो, सो वल्लभ नाम धरयो । परन्तु कृष्णो ने पहले ही श्रीगोकुलनाथजी नाम धरयो है । तातें जगत में प्रसिद्ध श्रीगोकुलनाथजी नाम धरयो । घरमें श्रीवल्लभ कहेंतें । और जन्मपत्रिका में श्रीकृष्ण नाम हैं । सो श्रीगुसांईजी गोप्य राखे । सो कृष्णो की ऐसी का'नि राखते और जब श्रीघनश्यामजी को जन्म भयो, तब नामकरण समें श्रीवल्लभजीने कही, इनको नाम श्रीगोकुलनाथजी धरो । तब श्रीगुसांईजी कही, यह नाम तो तिहारोई है । घरमें वल्लभ कहत हैं । और सगरे जगत में तो तिहारो नाम श्रीगोकुलनाथजी है । कृष्णो भगवदीय तिहारो नाम धरयो है, सो फेरयो न जाई ।

वार्ता-प्रसंग २—और एक समय शरद ऋतु आई । तब रुक्मिणी बहूजी ने कृष्णो सों कही, कोई शरद निसा को वरनन करो । तब कृष्णो 'शरद निसा' करिकें गायो । सो श्रीगुसांईजी बहोत प्रमत्त होइकें कहैं, मानों रास में ठाड़े हूके गान कियो । सो कृष्णा कों नन्दालय की लीला, रासादिक लीला को अनुभव है । सो बहुत कीर्तन किये हैं । अष्टप्रहर भगवद् रसमें मगन रहतीं । सो कृष्णा दासी ऐसी श्रीआचार्यजी की कृपापात्र भगवदीय ही । इनकी वार्ता कहां तांई कहिये ।

वार्ता ॥४५॥

✽

✽

✽

पहेलाथी श्रीगोकुलनाथजी नाम धर्युं छे । तेथी जगतमां प्रसिद्ध श्रीगोकुलनाथजी नाम धर्युं । घरमां श्रीवल्लभ कहैता अने जन्मपत्रिकामां श्रीकृष्ण नाम छे । ते श्रीगुसांईजी गोप्य राख्युं । ते कृष्णोनी अेवी का'नि राखता । वणी न्यारे श्रीघनश्यामजीने जन्म थयो । त्यारे नामकरण समये श्रीवल्लभजीने कहुं, अेमतुं नाम श्रीगोकुलनाथजी धरो । त्यारे श्रीगुसांईजीने कहुं, अे नाम तो तमाइं न छे । घरमां वल्लभ कहै छे अने आभा जगतमां तो तमाइं नाम श्रीगोकुलनाथजी छे । कृष्णो भगवदीये तमाइं नाम धर्युं छे ते इरव्युं न जाय ।

वार्ता प्रसंग २-वणी अेक समय शरद ऋतु आवी । त्यारे रुक्मिणी बहूजीने कहुं, कोइ शरद निसा को वरनन करै । त्यारे कृष्णो अे 'शरद निसा' करीने गायुं । त्यारे श्रीगुसांईजीने बहुत प्रमत्त थयने कहुं, जखे रासमां ठाड़े हूके गान कियुं । ते कृष्णोने नन्दालयनी लीला रासादिक लीलानो अनुभव छे । ते बहुत कीर्तन किये छे । अष्ट प्रहर भगवद् रसमां मगन रहैती । ते कृष्णादासी अेवी श्रीआचार्यजीनी कृपापात्र भगवदीय हती । अेनी वार्ता कयां सुधी कहीअे ।

वार्ता ॥ ४५ ॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, बूला मिश्र पश्चिम में रहते, सो सारस्वत ब्राह्मण हते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में श्रीस्वामिनीजी की सखी विमावाजी, तिनकी सखी है । लीला में इनको नाम 'सुमन्दिरा' है । सो ए लाहौर में पश्चिम दिसा में सररस्वत ब्राह्मण के घर प्रगटे । सो वर्ष दस के भये, तब पिता ने बूला मिश्र सों कह्यो, कछु शास्त्र पढ़ो तो आछो है । नाहिं तो मेरी नाईं मूर्ख रहोगे । तब बूला मिश्र ने कही, कहूँ पंडित ठीक करि मोकों बताओ, तहाँ मैं पढ़ूँ । सो लाहौर में एक पण्डित पास बैठाये पढ़न कों । तब वह पंडित ने कही, मेरी दस पांच रुपैया सों पूजा करो तो पढ़ाऊँ । तब बूला मिश्र उठि के घर आय बैठे । तब पिता ने कही, घर में फेरि क्यों आये ? घर में वैद्यो पढ़ेगो ? तू जन्म ते घर ही में रह्यो, सो लुगाई को काम सिखेगो । बाहर निकसतें लाज लागी होयगी ? तब बूला मिश्र ने कही, इहां तो जाके पास पढ़न जइयें, सो द्रव्य मांगत है । ताते अब मैं कासी पढ़न जात हूं मोकों बोली ठोली क्यों मारत हो ? तब पिता ने कही तू घर में ते बाहिर निकसवे को मन नाहीं करत है, सो कासी कैसे जायगो ? तब बूला मिश्र उठिकें पिता कों नमस्कार कियो, जो-मैं कासी चल्योँ । तब पिता के मन

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजना सेवक, बुलामिश्र पश्चिममां रहता ते सारस्वत ब्राह्मण हुता, तेमनी वार्तानो भाव कहीअे छीअे:—

भावप्रकाश—अे लीलामां श्रीस्वामिनीजीनी सखी विशाखाअे तेमनी सखी छे. लीलामां अेमनु नाम 'सुमन्दिरा' छे अे लाहौरमां पश्चिम दिशामां सारस्वत ब्राह्मणने धरे प्रकटया. ते वर्ष दशना थया त्यारे पिताअे बुलामिश्रने कथुं, कथं शास्त्र बाणो तो साइं छे नही तो मारी माइक मूर्ख रहेशो. त्यारे बुलामिश्रने कथुं, कथं पंडित ठीक करी मने अतावे त्यां हु बाणुं. पछी लाहौरमां अेक पंडित पासे बाणवाने भेसाडया. त्यारे ते पंडिते कथुं, मारी दश-पांच रुपीआथी पूज करे तो बाणाउं. त्यारे बुलामिश्र उठीने धरे आवी भेडा. त्यारे पिताअे कथुं, घरमां इरी द्रम आन्था ? घरमां भेठ्यो बाणीश ? तू जन्मथी घरमांअ रह्यो. ते स्त्रीतुं काम शीपीश. अहाज निकणतां लाज लागी हुशे ? त्यारे बुलामिश्रने कथुं, अहीं तो जनी पासे बाणुना जैये ते द्रव्य मांगे छे. तेथी हुवे हुं काशी बाणुवा जईश. तमे मने भेठेणां डम मारे छे ? त्यारे पिताअे कथुं, तू घरमांथी अहाज निकणवानुं तो मन नथी करतो. ते काशी केनी रीते जईश ? त्यारे बुलामिश्रने उठीने पिताने नमस्कार कर्या (अने कथु ठे) हु आ काशी आदयो. त्यारे पिताना मनमां आन्थुं

में नहीं आई । जान्यो, जो-यह कहां अकेलो जायगो ? काहू गाम में बैठि रहेगो । सो पिता बोल्यो नहीं । और बूला मिश्र तो चले सो गाम में चून मांगि के अंगा-करि खाय । या प्रकार कछुक दिन में कासी आये । सो भिक्षा वृत्ति सों निर्वाह करें । और पढ़वे कों पण्डित पास जाई । सो तीन बरस लों जतन पढ़वे को बहुत किये, परन्तु रश्च हू विद्या न आई । तब पण्डित ने कही, हम अनेक विद्यार्थी कों पढ़ाये, परन्तु तेरे सरीखो मूढ़ न देख्यो । तीन बरस लों तु हू पढ़वे कों पच्यो, मैं पढ़ावत पच्यो । परन्तु अक्षर हू को ज्ञान तोकों न भयो । अब तू काहे कों पचत है ? विद्या तेरे भाग्य में नहीं है । तब बूला मिश्र के मनमें बहोत दुःख भयो, जो-विद्या पढ़न के लिये घर छोड़्यो, इतनो दुःख सह्यो, परन्तु विद्या न आई । तातें मैं अब सरस्वती के ऊपर मरूंगो । सो गंगाजी के तीर कासी सों दूरि जाइ, जहां कोई मनुष्य नहीं, तहां जल छोड़ि के बैठे । सो तीन रात तीन दिन बीते, जलहू न लिये । तब सरस्वती गंगा के भीतर होई, बूला मिश्र सों कह्यो, जो-तू मेरे उपर क्यों बैठ्यो, मरिबे ? मैं तो भगवान की दासी हूँ, सो भगवान जहां मोकों पठावे तहाँ जाऊँ । और जगत में सर्व कार्य के करता तो भगवान हैं । सो भगवान को भजन तू करि । भगवान प्रसन्न होयगे तों विद्या कहा, जो चाहेगो सो मिलेगो ।

नहीं. अण्यु डे, अये कयां अकेलो जशे ? डार्थ गाममां येसी रहेशे. तेथी पिता आयेयो नही अने पुलाभिश्र तो आयेयो. ते गाममां युन मांगीने अ गाकरी करीने आय. अ प्रकारे डेटलाक दिवसमां काशी आयेयो. भिक्षावृत्तिथी निर्वाह करे अने आणुवाने पडित पासे अय. ते त्रणु वर्ष सुधी आणुवाने यत्न अहु कथे. परतु रंयक पणु विद्या न आवी. तयारे पडिते कथुं, अमे अनेक विद्यार्थीने आणुआये परतु तारा जेयो मूढ न जेयो. त्रणु वर्ष सुधी तू पणु आणुवाने परये; हुं आणु-वतां परये परतु अक्षरतु पणु ज्ञान थयु नही. हुवे तु शा माटे पचे छे ? विद्या तारा आणुमां नथी. तयारे पुलाभिश्रना मनमां अहु अ हुःअ थयु डे, विद्या आणु-वाने माटे धर छोडयु. आटलु हुःअ सथु; परतु विद्या न आवी. तेथी हुं हुवे सरस्वती उपर मरीश. पछी गगाजना तीर काशीथी दूर जर्थ ज्यां डार्थ मनुष्य नही त्यां जल छोडीने भेठा. ते त्रणु रात अने त्रणु दिवस वीत्या जल पणु न लीधु. तयारे सरस्वतीअे ग गाना अ दर थर्थ पुलाभिश्रने कथुं, डे तू मारा उपर डम भर-वाने भेठा ? हु तो आगवाननी दासी छुं. ते आगवान ज्यां मने मोकवे त्यां जठं अने जगतमां सर्व कार्यना कर्ता तो आगवान छे. ते आगवानतुं आजन तू कर.

सो मेरे ऊपर मरिवे बैठथो सो तू सुखेन मरि। भगवान की इच्छा के बिना काहू के पास जाऊँ नहीं। और जो भगवान की इच्छा होई तो शूद्र, चाण्डाल के पास हू जाऊँ। और वह पंडित ह्वे जाई। भगवान की इच्छा न होई तो पढ्यो होई सोई मूर्ख ह्वे जाई। कैसोऊ ब्राह्मण होऊ परन्तु मैं न जाऊँ। यह मैं तोकूँ बतायो। अब तेरो मन आवे तो मरि, भावे जीऊ। परन्तु भगवान की इच्छा तोकूँ विद्या देवे की नहीं है। तव बूला मिश्र ने कही, मोसों भगवद् स्मरण भजन तो बनेगो नहीं। परन्तु अब ताई तेरे ऊपर मरत हतो सो अब भगवान के ऊपर मरूंगो। परन्तु विद्या आवे तव ही जल पान करूंगो। तव सरस्वती गई। पाछे वह भगवान को नाम विष्णु, विष्णु कहन लाग्यो, सो रात दिन कहे। तव भगवान ने सरस्वती सों कही, तू मेरे माथे मरिवे कौँ ब्राह्मण बैठायो, अब जा मेरी इच्छा है। विद्या दे, वाकौँ खान पान कराय आऊ। तव सरस्वती, स्त्री को स्वरूप करि, बूला मिश्र पास आय कह्यो, ब्राह्मण नेत्र खोलि तव वह पूछयो, तू कौन है, तव बाने कही, मैं सरस्वती हूँ, मोकों भगवान पठाये हैं सो अब मैं तेरे पास आई हूँ। सो विद्या चाहिये तितनी ले। तव बूला मिश्र ने कही, अबही काल्हि ही तो तू कहि गई,

भगवान प्रसन्न थये तो विद्या तो शुं ? न् ईच्छीश ते भणशे. पछी मारा उपर मरवा भेसे तो तू भवे भ. हुं भगवाननी ईच्छा बिना डाधनी पासे न् नही. अने जे भगवाननी ईच्छा होय तो शूद्र यांडालनी पासे पण न् अने ते पंडित थई न् य. भगवाननी ईच्छा न होय तो लण्यो होय ते पण भूण थई न् य. ठवे पण प्राह्मण होय परतु हु न् न् अ. आ मे तने अताण्युं. हुवे ताइ मन आवे तो मर याहे एव परतु भगवाननी ईच्छा तने विद्या आपवानी नथी. त्तारे पुला-मिश्रे कथ्यु, माराथी भगवद् स्मरण भजन तो अनशे नही परतु हुमणुं सुधी तारा उपर मरतो हतो ते हुवे भगवानना उपर मरीश. परतु विद्या आवे त्तारे न् न् ल-पान करीश. त्तारे सरस्वती गर्थ. परंतु ते भगवाननु नाम विष्णु विष्णु कहेवा लाण्यो. रात द्विपस कहे. त्तारे भगवाने सरस्वतीने कथ्युं, ते मारा माथे मरवाने प्राह्मणु भेसाडयो. हुवे न्, मारी ईच्छा छे विद्या हे अने पानपान करावी आव. त्तारे सरस्वती स्त्रीनु स्वरूप करी पुलामिश्र पासे आवी कहे, प्राह्मणु नेत्र भोल. त्तारे पुलामिश्र नेत्र भोलीने पूछे, तू डाणु छे ? त्तारे तेणु कथ्युं हुं सरस्वती छु. मने भगवाने भोडली छे. तेथी हुवे हुं तारी पासे आवी छुं. ते विद्या जेधअ तेडली ले. त्तारे पुला मिश्रे कथ्युं, हुमणुं कवे न् तो तू कही गर्थ हे विद्या तारा

जो-विद्या तेरे भाग्य में नहीं। आज अब विद्या देन क्यों आई है ? तब सरस्वती ने कही, भगवान की इच्छा यह भई जो तू विद्या दे, तब हों आई। तब ब्रूला मिश्र ने कही, भगवान की इच्छा अब विद्या देने की क्यों भई ? पहले तो न होती। जो-पहले होती तो तीन बरस पढ्यो, सो कछु ना आयो। सो भगवान तुमकों अब मेरे पास क्यों पठाये ? तब सरस्वती ने कही, तुम रात्रि दिन भगवद् नाम लियो सो भगवान तुम पर प्रसन्न भये। तुम्हारे पाप दूरि हो गये। ताते भगवान ने पठाई मोकों, तुम मन लगाई भगवद् नाम लियो, ताको प्रताप है। तब ब्रूला मिश्र ने कही, जो-भगवान ते भगवान को नाम श्रेष्ठ है, जाके लिये भगवान् प्रसन्न भये। तो अब मैं विद्या नहीं चाहत। विद्या ते भगवत् नाम बड़ो देख्यो, सो अब तू जा, विद्या मोकों नाही चाहिये। अब भगवान ही आवेंगे तो दरसन करूँगो। और तब ही कछु लेऊँगो ?

तब सरस्वती भगवान को जाई कह्यो, जो-महाराज ! वह तो विद्या नहीं लेत है, आपको दरसन चाहत है। तब भगवान प्रसन्न भये, जो ऐसो या काल में कौन है, जो-मोकों चाहेगो ? ताकों मैं हूँ चाहूँगो। तब भगवान गंगाजी के भीतर ते वानि द्वारा कहै, ब्राह्मण अब तू खानपान करि। पाँच दिन भये जल नहीं लियो,

लाग्यमां नथी. आण हुवे विद्या देवा ठम आवी छे ? त्यारे सरस्वतीअये कछु, भगवाननी छेअ थथे ठे तू विद्या दे. त्यारे हुं आवी त्यारे पुलाभिश्चे कछु, भगवाननी छेअहुवे विद्या देवानी केम थथे ? पहेलां तो न हुती. जे पहेलां होती तो हुं त्रण वर्षे आण्यो ते कछे न आण्यु. तेथी भगवाने हुवे तमने भारी पासे केम मोकली ? त्यारे सरस्वतीअये कछु, तमे रात्र-दिवस भगवन्नाम लीधुं तेथी भगवान तमारी उपर प्रसन्न थया. तमारां पाप दूर थथे गयां तेथी भगवाने मने मोकली. तमे मन लगाडीने भगवन्नाम लीधु तेना प्रताप छे. त्यारे पुलाभिश्चे कछु, ठे भगवानथी भगवानतु नाम श्रेष्ठ छे जेने लीधे भगवान प्रसन्न थया. तो हुवे हुं विद्या नथी आहतो. विद्याथी भगवन्नाम मोहु जेथु. तेथी हुवे तू आ. विद्या मारे न जेअये. हुवे भगवानज आवशे तो दर्शन करीश अने त्यारेज कछे लथश. त्यारे सरस्वतीअये भगवानने जथे कछु, ठे महाराज ! जे तो विद्या नथी लेतो. आपनां दर्शन आहे छे. त्यारे भगवान प्रसन्न थया, ठे जेवो आ काणमां ठाणु छे जे मने आहे ? तेने हुं पणु आडीश. त्यारे भगवान गंगाजना भीतरथी वाणी द्वारा कहे, ब्राह्मण हुवे तू खानपान कर. पांच दिवस थया जल नथी लीधुं

सो मैं प्रसन्न हूँ तिहारे ऊपर । विद्या आदि वर चाहिये सो लेऊ । तव बूलामिश्र ने कही, महाराज ! अब मेरे कुछ नहीं चाहिये, आप कृपा करिकें मोकों एक बार दरसन देऊ । तव भगवान ने कही, जो-तुम अडेल में श्रीवृद्धभाचार्यजी विराजे हैं, तहाँ जाईके उनकी सरनि होउ । तव तुम कूँ मेरो दरसन तहाँ होयगो । तव बूलामिश्र कहें, महाराज ! एक बार मोकों दरसन देऊ । जो-आपके दरसन किये मोकों माया न लागेगी । नहीं तो मैं खानपान कियो, अनेक लोगन को संग भयो, और माया लागी । पाछे मनको और बुद्धि को ठिकानो नहीं । अडेल में जावे, बीच ही में मोकों मारि डारे तो मैं कहा करूँ ? तव भगवान प्रसन्न होई, बूलामिश्र कों चतुर्भुज रूप सँ दरसन दे कहें, अब तुम अडेल जाऊ । श्रीआचार्यजी तिहारो मनोरथ पूर्ण करंगे । और तुमकों माया न लागेगी । तव बूलामिश्र दण्डवत् करि विनती करी, महाराज ! मेरो अपराध क्षमा करो, जो-मैं आपसों हठ कियो । कहाँ मैं तुच्छ जीव, कहाँ आप पुरुषोत्तम ? सो मेरो कह्यो आप साँचो कियो । परन्तु आप की माया मोकों जगत में अनेक प्रकार सों भटकाये, बहोत कलेश दियो । ताते मैं आपकों दरसन की विनती करी । तव भगवान बूलामिश्र को समाधान करि आप अन्तर्धान भये । बूलामिश्र खानपान कियो । भगवद् महात्म्य नाम

तेथी हुं प्रसन्न छुं तारा उपर. विद्या आदि वर जेधये ते दे. त्यारे पुलामिश्रें कछुं, महाराज ! हुवे मारे कंठ न जेधये. आप कृपा करी मने अेकवार दर्शन हो. त्यारे लगवाने कछुं, के तसे अडेलमां श्रीवृद्धभाचार्येण विराज छे त्यां जधने अेमनी शरणे थाव. त्यारे तमने मारां दर्शन त्यां थसे. त्यारे पुलामिश्र कहे, महाराज ! अेकवार मने दर्शन हो. आपनां दर्शन करवाथी मने माया नही लागे. नहीं तो में खानपान कर्युं अनेक दोकानेो संग थयो अने माया लागी पछी मनतुं अने पुद्धितुं ठेकाछु नही. अडेलमां जई अने वयमांज मने मारी नाथे तो हुं थु करे ? त्यारे लगवाने प्रसन्न थई पुलामिश्रने यतुर्भुज रूपथी दर्शन दधने कछुं, हुवे तसे अडेल जव. श्रीआचार्येण तमारो मनोरथ पूर्ण करसे अने तमने माया नहीं लागे. त्यारे पुलामिश्रें दंडवत् करी विनती करी, महाराज ! मारो अपराध क्षमा करे, के मे आपथी हठ कर्यो. कथां हुं तुमछ जव कथां आप पुष्पोत्तम ? मारु कछुं आपे सायुं कर्युं. परंतु आपनी मायाये मने जगतमां अनेक प्रकारथी भटकायेो बहु क्लेश दीयो. तेथी में आपनां दर्शननी विनती करी. त्यारे लगवान पुलामिश्रतुं समाधान करी पोते अंतरधान थया. पुलामिश्रें

को देखे, सो दृढ़ विश्वास भयो । सो अष्टप्रहर भगवद् नाम लेत अडेल चले । सो कछु दिन में अडेल में आय, श्रीआचार्यजी को दरसन करि दण्डवत् कियो । तब श्रीआचार्यजी ब्रूलामिश्र सों कहे, जो-तू धन्य है, जो-ऐसी धीरज धरि दृढ़ता करी । जो-यही देह सों भगवान को दरसन पायो । तब ब्रूलामिश्र ने श्रीआचार्यजी सों विनती करी, महाराज ! दरसन भये सोऊ आपकी कृपा, परन्तु भगवान के स्वरूप को आनन्द है, ताको अनुभव नहीं है । सो आप कृपा करिके सरनि लेऊ, तब होई । तब श्रीआचार्यजी कहें, अब सरन होइके कहा करोगे ? भगवद् प्राप्ति तो तुमकों होय गई । भगवान को वर हैं । तोसों बचन कहे हैं, जो-माया न लगेगी । अब तुमकों कहा कर्तव्य है ? तब ब्रूलामिश्र ने कही, भगवद् प्राप्ति जो मुक्ति है, सो तो मैं चाहत नहीं, मोकों भक्ति होउ । सो आपकी कृपा ते होइ तातें सरनि लेऊ, तब भक्ति की प्राप्ति होई । सो भगवान् ने हू आपकों बताये हैं । ताते मैं आपकी सरन आयो हूँ । तब श्रीआचार्यजी ने ब्रूलामिश्र सों कही, जो-श्रीयमुनाजी में तू न्हाइ के आव, तब ब्रूलामिश्र यमुनाजी स्नान करि अपरस में आये । तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन कराये । कृष्णाश्रय ग्रंथ करि ताको

पानपान क्युं । भगवन्नामनुं महात्म्य ज्युं तेथी दृढ विश्वास थयो । अष्ट प्रहर भगवन्नाम लेतां अडेल याट्या । पछी डेटलाक द्विसमां अडेलमां आवी श्रीआचार्यजनां दर्शन करी दंडवत् कर्था । त्यारे श्रीआचार्यज्ये पुनामिश्रने क्युं, डे तू धन्य छे डे आवी धीरज धरी दृढ़ता करी । आ देहुथी भगवाननां दर्शन पाभ्यो । त्यारे पुलामिश्रे श्रीआचार्यजने विनती करी, महाराज ! दर्शन थयां ते पणु आपनी कृपा परतु भगवानना स्वरूपने आनन्द छे तेने अनुभव नथी ते आप कृपा करीने शरणे लो त्यारे थाय । त्यारे श्रीआचार्यज कहे हुवे शरणे थछने शु करीश ? भगवत्प्राप्ति तो तमने थछि गछि । भगवाननुं वरदान छे । तने वचन क्युं छे डे माया नहीं लागे । हुवे तने शु कर्तव्य छे ? त्यारे पुलामिश्रे क्युं, भगवद् प्राप्ति न मुक्ति छे ते तो हुं छिछतो नथी । मने लक्षित थाव । ते आपनी कृपाथी थाय भाटे शरणे लो । त्यारे लक्षितनी प्राप्ति थाय । तेथी भगवाने पणु आपने पता-व्या छे । तेथी हुं आपनी शरणे आव्यो छुं । त्यारे श्रीआचार्यज्ये पुलामिश्रने क्युं, डे श्रीयमुनाजमां तू न्हाछि आव । त्यारे पुलामिश्र श्रीयमुनाजमां स्नान करी अपरसमां आव्या । त्यारे श्रीआचार्यज्ये नाम संभणावी निवेदन कराव्यु, 'कृष्णाश्रय' ग्रंथ करी तेने पाठ कराव्यो । तेथी पुलामिश्रने श्रीठाकुरजनी वीदानो अनु-

पाठ कराये । सो बूलामिश्र कों श्रीठाकुरजी की लीला को अनुभव होन लाग्यो । और सगरे शास्त्र पुरान वेद के आश्रय को ज्ञान ह्वे गयो । मानसी फल रूप सेवा को इनकों दान श्रीआचार्यजी दिये । सो मन अलौकिक होइ श्रीठाकुरजी में लाग्यो । तत्र श्रीआचार्यजी कहैं, अब तुम घर जाऊ । तत्र बूलामिश्र ने विनती करी, महाराज ! अब मोकों घर काहे कों पठावत हो ? मेरे घर सों कहा काम है ? तत्र श्रीआचार्यजी कहैं, तुमकों घर यातें पठावत हैं, जो-तिहारे संगतें कितनेक जीव कृतार्थ होइंगे । और भक्ति को विस्तार होईगो । अब तुमकों संसार दुःख तो लगेगो नाहीं । जहां रहोगे तहां हमारे पास ही हो । और जैसे भगवान सर्व सामर्थ युक्त हैं, तैसें भगवदीय हूँ सर्व सामर्थ युक्त हूँ । तातें घर जाऊ, माता पिता वृद्ध हैं । तिहारे संगते उनकी गती होइगी । और वे जानत हैं, जो-पुत्र कहूँ मरयो, के जीवत है ? तत्र बूलामिश्र दण्डवत् करि श्रीआचार्यजी सों विदा होयके चले । सो कछुक दिन में लाहोर आये । माता पिता कों वदोत सुख भयो । पाछें बूलामिश्र घर खासा करि रसोई करि, श्रीठाकुरजी कों मानसी रीति सों भोग धरे । एक पातर माता पिता कों धर दिये एक गाय की काढ़े । एक पातर आए गए वैष्णव की । कोई भूखेकों देके महाप्रसाद ले । श्रीभागवत सुबोधिनी तथा श्रीआचार्यजी के ग्रन्थ के पाठ के

भव थवा लाग्यो अने पधां शास्त्र, पुराण, वेदना आश्रयतु ज्ञान थई गयुं । श्रीआचार्यजी अने अमने मानसी इन्द्ररूप सेवानुं दान कथुं । तेथी मन अलौकिक थई श्रीठाकुरजीमां लाग्युं । त्यारे श्रीआचार्यजी कडे, हुवे तमे घर अब. त्यारे पुलामिश्रे विनती करी, महाराज ! हुवे अने घर शा माटे नोकलो छे ? भारे धरथी थुं काम छे ? त्यारे श्रीआचार्यजी कडे, तमने घर अे माटे मोकलीअे छीअे डे तमारा सगथी डेटलाक अेवो कृतार्थ थशे अने अकितने विस्तार थशे. हुवे तमने ससार दुःख तो लागशे नही. ज्यां रहेशे त्यां अमारी पासेअ छे, अने अम भगवान सर्व सामर्थ्ययुक्त छे तेम भगवदीय पणु सर्व सामर्थ्ययुक्त छे. तेथी धर अब. मातापिता वृद्ध छे. तमारा संगथी अमनी गति थशे. अने अे अणु छे डे पुत्र कई मरयो डे अेवो छे ? त्यारे पुलामिश्र दंडवत् करी श्रीआचार्यजीथी विदाय थईने आइया. ते डेटलाक दिवसमां लाहोर आव्या, मातापिताने अहु सुख थयुं. पछी पुलामिश्रे धर आसा करी रसोई करी श्रीठाकुरजीने मानसी रीतिथी भोग धर्यो. अेक पातर माता-पिताने धरी दीधी, अेक गायनी काढी. अेक पातर आव्या गया वैष्णवनी. काई भूष्याने आपीने महाप्रसाद ले.

भाव में मग्न रहते । यजमान क्षत्री बहोत हते, सो जो आवे तामें निर्वाह करे ।

वार्ता प्रसंग १—सो लाहौर में एक क्षत्री बूलाभिश्च के यजमान हतो । ताकी दो स्त्री हती, परन्तु सन्तति न हती । सो काहू ने उह क्षत्री सों कख्यो, तुम हरिवंस पुराण सुनो तो तिहारे संतति पुत्र होई । तब वह क्षत्री बूलाभिश्च पास आय बहोत विनती कियो, जो-तुम मोकों हरिवंस पुराण सुनावो तो तिहारी कृपा तें मेरे संतति होई । तब बूलाभिश्च ने कही, अब ही मोकों अवकास नाहीं । अवकास होइगो तब सुनाऊंगो ।

भावप्रकाश—याको अर्थ यह, जो-ये पुत्र अर्थ हरिवंस पुराण सुनत है । सो पुत्र होनहार होइ, भगवद् इच्छातें, तो मैं इनकों सुनाऊँ । जो-न होनहार होइ तो श्रीठाकुरजी कों श्रम काहे कों कराऊँ ? काहेतें, मेरे सुनाये श्रीठाकुरजी मेरो जस प्रगट करनार्थ पुत्र देइ, सो मेरे न करनो । तातें कहैं, अवकास होइगो तब सुनाऊँगो । या प्रकार कहि बिदा किये । तब श्रीठाकुरजी विचारें, जो-भगवदीय पास कोइ मनोर्थ करे सो खाली कैसें जाई । तातें बूलाभिश्च सों श्रीठाकुरजी ने कही वह क्षत्री कों पुत्र होइगो, तू सुनाईयो ।

श्रीभागवत, सुभोधिनी, श्रीआचार्यजना ग्रन्थना पाठना भावभां मग्न रहेता । यजमान क्षत्री धरुा हुता तेथी न आवे तेभां निर्वाह करे

वार्ता प्रसंग १—लाहौरभां एक क्षत्री बूलाभिश्चने यजमान हुतो । तेने ये स्त्री हुती, परंतु संतति न हुती । तेथी कोछये ते क्षत्रीने कहुं, तमे हरिवंस पुराण सांभणो तो तभारे संतति पुत्र थाय । त्तारे ते क्षत्रीये बूलाभिश्च पासे आवीने धरुी विनती करी, के तमे मने हरिवंस पुराण सांभणावे तो तभारी कृपाथी भारे संतति थाय । त्तारे बूलाभिश्चे कहुं, उरुणुं तो मने अवकाश नथी । अवकाश हुशे त्तारे सांभणावीश ।

भावप्रकाश—अनेो अर्थ अ, ठ अ पुत्र अर्थ हरिवंस पुराण सांभणे छे । तेथी पुत्र होनहार हुशे । भगवद् इच्छाथी तो हुं अमने स भणावुं अ न होनहार होय तो श्रीठाकुरजने श्रम शा माटे करावुं ? केमठे ? भारा स भणाव्याथी श्रीठाकुरज भारे यश प्रगट करवा माटे पुत्र दे ते भारे न करवुं । तेथी कहुं, अवकाश हुशे त्तारे स भणावीश । अ प्रकारे कही विदाय कर्या । त्तारे श्रीठाकुरजये वियार्थ, के भगवदीय पासे कोइ मनोर्थ करे ते पाटी उम अय ? तेथी बूलाभिश्चने श्रीठाकुरजये कहुं, अ क्षत्रीने पुत्र थशे । तू सांभणावअे ।

ता पाछे एक दिन अचानक बूलामिश्र यजमान क्षत्री के घर आये । तब वह क्षत्री बहोत आदर सनमान करि अपने हाथसों बूलामिश्र के चरण छुई माथे धरि, सुन्दर आसन पर बैठाये । तब बूलामिश्र नें उह क्षत्री सों कही, तुम स्त्री सहित न्हाय के नये वस्त्र पहरि बैठो । तब दोऊ स्त्री पुरुष न्हाय के नये वस्त्र पहरि के आय बैठें । तब बूलामिश्र हरिवंश पुराण को एक श्लोक पढ़े, सो श्लोक “ इदं मया ते हरिकीर्तनं महत् श्रीकृष्णमाहात्म्यं परमद्भुतम् । ” या श्लोक कहि याको अर्थ कहें, जो-यह श्रीकृष्ण कीर्ति, उपर कहे सो कृष्णकीर्ति, को महात्म्य परम अद्भुत है । जो-सुने ताके भागि को पार नाहीं, परम दुर्लभ । यह श्लोक में सब फल कों पावे । पाछे मंत्राक्षत पढ़ि कें वह बड़ी स्त्री कों गोद में दिचे । तब उह क्षत्री बूलामिश्र सों कहे, यह तुम कहा कियो ? यह बड़ी स्त्री कों तो स्त्री धर्म होत नाहीं । सो छोटी स्त्री कों क्यों नाहीं दिचे ? तब बूलामिश्र कहें, श्रीठाकुरजी पुत्र देनहार होइगे तो याही कों पुत्र देहींगे, श्री-ठाकुरजी सर्व सामर्थ्यवान हैं । यह कहि बूला मिश्र उठे, घर चलन लागें । तब यह क्षत्री ने कही मोकों कृपा करिके संपूर्ण हरिवंस पुरान सुनावो । तब बूला मिश्र कहे तिहारो मनोरथ तो पुत्र हेतु सगरो

ते पछी अेक द्विस व्ययानक बुलामिश्र यजमान क्षत्रीने घरे आव्या । त्यारे ते क्षत्री धरि आदर-सनमान करी पोताना हाथथी बुलामिश्रनां यरणने अही माथे धरी तेभने सुंदर आसन उपर भेसाया । त्यारे बुलामिश्र ते क्षत्रीने कहुं, तमे स्त्री सहित न्हायने नयां वस्त्र पहुरी भेसा । त्यारे अन्ने स्त्री-पुरुष न्हायने नयां वस्त्र पहुरीने आवी भेसां । त्यारे बुलामिश्र हरिवंश पुराणने अेक श्लोक लख्या । ते श्लोक- (उपर लुखे) अे श्लोक कही अेना अर्थ कही, के आ श्रीकृष्ण कीर्ति उपर कही ते कृष्ण कीर्तिनुं माहात्म्य परम अद्भुत छे । जे सांभणे तेना लाग्यने पार नहीं । परम दुर्लभ । अे श्लोकमां अथा इलने पामे । पछी मंत्राक्षत लखीने ते मोटी स्त्रीनी गदमां आव्या । त्यारे ते क्षत्री बुलामिश्रने कहे, आ तमे शुं क्युं ? आ मोटी स्त्रीने तो स्त्री धर्म थतो नथी । नानी स्त्रीने केम नहीं आव्या ? त्यारे बुलामिश्र कहे, श्री-ठाकुरजी पुत्र देवावाणा हसे तो आने ज पुत्र थसे । श्रीठाकुरजी सर्व सामर्थ्यवान छे । अे कही बुलामिश्र उठ्या । घर यासवा लाग्या । त्यारे अे क्षत्रीअे कहुं, भने कृपा करीने संपूर्ण हरिवंश पुराण संभणावे । त्यारे बुलामिश्र कहे, तमारो मनोरथ तो पुत्र हेतु आव्युं पुराण सांभणवांते छे तेथी पुत्र तभने थसे । अहुं पुराण सांभणवाहुं

પુરાણ સુનન કૌ હૈ, તાસૌં પુત્ર તુમકૌં હોઢગો । સગરે પુરાણ સુને કો ફલ તુમ વિચારે સો ભયો । અવ સગરે પુરાણ સુનિવે.કો પ્રયોજન કહા ?

ભાવપ્રકાશ—યહ બૂલા મિશ્ર ને યાતેં કહ્યો, જો-ઇનકૌં અવકાસ કહાં ? જો-સગરો પુરાણ સુનાવેં । યહ તો ભગવદ્ ઇચ્છા તેં કહિવે કો સંયોગ બનિ ગયો ।

યહ કહિ બૂલા મિશ્ર ઘર આયે, સો વહ વડી સ્ત્રી કૌં ગર્ભ રહ્યો । (પાછે) પુત્ર ભયો ।

ભાવપ્રકાશ—સો યહ વાર્તા મેં ભગવદીય કૌં વડી વડાઈ દી હૈ । કાહે તેં, ભગવદીય ભક્તિ મુક્તિ કે દાતા હૈ । યાહે તો તતકાલ શ્રીઠાકુરજી સૌં મિલાય દેં । યહ તો પુત્ર, તુચ્છ ફલ કહા ? તહાં અર્થ યહ હૈ, જો-પુત્ર લૌકિક નાહીં દિયે । પરમ ભગવદીય પુત્ર દિયે । સો પુત્ર શ્રીગુસાંઈજી કો સેવક હોઢ, સગરે કુલ કો આગે કલ્યાણ કરેગો । તાતેં ભગવદોય જો દેય સો અલૌકિક દેઢ, લૌકિક દેઢ તો નાહીં દિયે વરાવર હૈ । કાહે તેં પુત્ર કિન કૌં કહિયે ? જો-માતા પિતા કો ઉદ્ધાર કરે, તિનકૌં પુત્ર કહિયે । નાહીં તો જૈસે પસુ, કુચ્ચા, ગદહા કે પૂત્ર હોત હૈ । તેસે સંસારી હોય તો પસુ સમાન હૈ । તાતેં બુલામિશ્ર ને જેસો પુત્ર શાસ્ત્ર મેં સરાહે હૈં, તેસો પુત્ર દિયો ।

વૈષ્ણવ ॥૪૬॥

સો બૂલા મિશ્ર શ્રીઆચાર્યજી કે વડે કૃપાપાત્ર ભગવદીય હે ।

इस तमिे विद्यार्थुं छे ते थयुं. लुवे अधुं पुराणु सांभणवातुं प्रयोजन शुं ?

ભાવપ્રકાશ—આ બુલામિશ્ર એથી કહ્યુ કે, એમને અવકાશ ક્યાં ? હે અધું પુરાણ સભણવે ? આ તો ભગવદીચ્છાથી કહેવાનો સંયોગ બની આવ્યો. આ કહી બુલામિશ્ર ઘર આવ્યા. પછી મોટી સ્ત્રીને ગર્ભ રહ્યો. પછી પુત્ર થયો.

ભાવપ્રકાશ—આ વાર્તામાં ભગવદ્ભક્તોને મોટી વડાઈ આપી છે. કેમકે ભગવદીય ભક્તિ-મુક્તિના દાતા છે. યાહે તો તતકાલ શ્રીઠાકુરજીને મેળવી આપે. આ તો પુત્ર તુચ્છ ફલ છે. ત્યાં અર્થ એ છે કે, પુત્ર લૌકિક નથી આપ્યો. તે પરમ ભગવદીય પુત્ર આપ્યો. તે પુત્ર શ્રીગુસાંઈજીનો સેવક થઈ બધા કુળતુ આગળ કલ્યાણ કરશે. તેથી ભગવદીય જે દે તે અલૌકિક દે. લૌકિક દે તો નહીં દીધા બરાબર છે. કેમકે પુત્ર તેને કહીએ, જે માતા-પિતાનો ઉદ્ધાર કરે. તેને પુત્ર કહીએ. નહીં તો જેમ પશુ, કુચ્ચા, ગદાને પણ પુત્ર થાય છે. તેથી સંસારી હોય તો પશુ સમાન છે. જેથી બુલામિશ્રે જેવો પુત્ર શાસ્ત્રમાં વખાણ્યો છે તેવો પુત્ર આપ્યો.

તે બુલામિશ્ર શ્રીઆચાર્યજીના બહુ કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા. સદા માનસી

सदा मानसीफलरूप सेवा में भगवद् रस में मगन रहते । तातें
ब्रह्मिष्ठ की वार्ता कहां ताई कहिये । वार्ता ॥४६॥

✽ ✽ ✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, रामदास, मेवाड़ा ब्राह्मण, मीराबाई के
प्रोहित हते, मेवाड़ में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये श्रीस्वामिनीजी की सखी विसाखा तिनकी सखी
है । लीला में इनको नाम 'कन्दर्पा' है । जो सदा श्रीस्वामिनीजी के
नाम को कीरतन ये करती । रूप इनको बहोत सुन्दर हतो । सो एक दिन
कन्दर्पा अपनो शृङ्गार करती, सो श्रीस्वामिनीजी पधारी । तब कन्दर्पा शृङ्गार
करत हती, सो उठी नाहीं । तब विसाखा ने शाप दियो, जो—इतनो गर्व,
हमारी स्वामिनीजी कौं उठिके सन्मान न कियो ? जाऊ भूमि में परो । सो इहां
अनेक जन्म भये । पाछे मेवाड में एक ब्राह्मण के घर जन्में, सो वरस बाईस के भये ।
तब रामदास के पिता रामदास कौं संग ले के श्रीरणछोड़जी के दरसन कौं गये ।
तहां श्रीआचार्यजी पधारे हते । सो रामदास कौं दरसन भये । तब रामदास ने
पिता सौं कही, श्रीआचार्यजी के सेवक तुम, हम होई तो आछो । तब रामदास के पिता

इक्षुप सेवामां लखवदरसमां भग्न रहता तथा ब्रह्मिष्ठनी वार्ता क्यां सुधी
कहीये ? ॥ वार्ता ४६ ॥

✽ ✽ ✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुलना सेवक, रामदास मेवाडा ब्राह्मण, मीराबाईना
प्रोहित हुता, मेवाडमां रहता, तेमनी वार्ताना भाव कहीये छीये—

भावप्रकाश—ये श्रीस्वामिनीजीनी सखी विसाखा तेमनी सखी छे.
लीलामां येमनु नाम 'कन्दर्पा' छे. ये सदा श्रीस्वामिनीजीना नामनु कीर्तन करती.
येनु रूप बहुत सुंदर हुतु. येक दिनस कन्दर्पा पीतानो शृंगार करती. तारे श्री-
स्वामिनीजी पधारी. तारे कन्दर्पा शृंगार करती हुती ते उठी नहीं. तारे विसाखाये
श्राप आप्यो डे, आटवो गर्व ! यमारी स्वामिनीजीने उठीने सन्मान न क्यु ? न,
भूमि उपर पर ? ते अहीं अनेक जन्म थया पछी मेवाडमां येक ब्राह्मणना धरे
जन्मया. ते वरस पावीसना थया तारे रामदासना पिता रामदासने सग लधने
श्रीरणछोड़लना दर्शन गया. त्यां श्रीआचार्यजी पधार्या हुता. ते रामदासने दर्शन
थयां तारे रामदासे पिताने कहुं, श्रीआचार्यजीना सेवक तमे अमे थधये तो साइं.
तारे रामदासना पिताने कहुं, न ये ब्राह्मण छे अमे पशु ब्राह्मण छीये. अमे

ने कही, जो—ये ब्राह्मण हैं, हमहू ब्राह्मण हैं, हम सेवक कौन के होइ ? अब कही सो कही, अब कहोगे तो तुम जानोगे । तब रामदास चुप होई रहे । पाछे पिता सों छिपके श्रीआचार्यजी पास जाइ, रामदास दण्डवत करि विनती किये । महाराज ! मेरो मन आपुके सेवक हौन को बहोत है । सो मेरे पिता हू सेवक होइ तो भगवद्गर्भ घर में बने, क्लेश न होइ । सो मेरे पिता कों कछु आप अपनो महात्म दिखावो तो वह सेवक होई । काहेतें, अज्ञानी जीव है अहंकार में भरयो है । तब श्रीआचार्यजी कहैं, तू दैवी है, तेरो पिता साधारण है । सो तेरे पीछे कृतार्थ होइगो । तू, जो बात पिता सों कहेगो सो साँची होइगी, तू ही पिता कों महात्म दिखाईयो । तब रामदास दण्डवत करि पिता पास आये । सो पिता रसोई करत हतो । सो रसोई करत सगरो हाथ जरि गयो । तब पिता बहोत दुःखी भयो । तब रामदास ने कही एक बात हों कहों, जो—तुम मानो । तब पिता ने कही, कहो । तब रामदास ने कही, मैं हाथ में जल ले तिहारो आगे सोंह करत हों, जो—श्रीआचार्यजी-साक्षात् भगवान होइ तो यह जलते तिहारो हाथ आछो होइ जइयो । जो—और भांति होई तो तिहारो हाथ आछो न होइयो । सो मैं जल या प्रकार कहि तिहारो हाथ पर डारूंगो । जो—हाथ तिहारो आछो होई तो श्रीआचार्यजी के सेवक होऊ ।

सेवक डाना थद्ये ? आ इत्थुं ते कथु । हुवे कहीश तो तू अथु । त्तारे रामदास यूप थद्ये रघ्वा । पछी पितार्थी छाना श्रीआचार्यजी पासे नई रामदासे दंडवत करी विनंती करी, महाराज ! माइं मन आपना सेवक थवानुं धथुं छे । तेथी मारे पितार्थी सेवक थाय तो भगवद्गर्भ घरमां अने, क्लेश न थाय । तेथी मारे पिताने कथे आप आपनु महात्म्य देखाडो तो ते सेवक थाय । डमके अज्ञानी अथ छे अहंकारथी लथे छे । त्तारे श्रीआचार्यजी कहे, तू दैवी छे । त्तारे पितार्थी साधारण छे ते त्तारी पाछण कृतार्थ थथे । तू न वात पिताने कहीश ते साथी थथे । तू न पिताने महात्म्य देखाडने । त्तारे रामदास दंडवत करी पितार्थी पासे आन्था । त्तारे पितार्थी रसोई करतो हुतो । ते रसोई करतां अथो हाथ अणी गयो । त्तारे पितार्थी अहु दुःखी थथो । त्तारे रामदासे कथु, अेक वात हुं कहुं, अे तमे मानो तो, त्तारे पितार्थी कथु, कहे । त्तारे रामदासे कथुं, हुं हाथमां नण लई त्तमारी आगण सोगद आड छु डे श्रीआचार्यजी भगवान होय तो आ नलथी त्तमारे हाथ सारे थथे नने । न थीन प्रकारे होय तो त्तमारे हाथ सारे न थथे । तेथी हुं नल आ प्रकारे कही, त्तमारे हाथ उपर नाथीश । अे हाथ त्तमारे सारे थाय तो श्रीआचार्यजीना सेवक

ने कही, हां, हां, या प्रकार होयगो तो सेवक होऊंगो । तव रामदास जल ले कहै, श्रीआचार्यजी साक्षात् भगवान होइ तो यह जल सों पिता आछो होइ जैयो । यह कहि रामदास अपने हाथ को जल पिता के हाथ में । सो आछो ह्वै गयो । तव रामदास ने कही, चलो, अब श्रीआचार्यजी होऊ । तव पिताने कही, वेटा तू वाचरो भयो है ? यह ऐसो ही लिखयो मैं, सो मेरे पुन्यते मैं आछो भयो । रसोइ तो करूं । तव रामदास अति होई के कह्यो, जो-अब तुम इतने पर नटि गये तो दोनों आंखिन सँ अंधे होऊ । सोऊ ततकाल दोऊ आंखिन में फूली परि गई, आंधरो होई गयो । तव रामदास सों कही, यह कहा कियो ? अब मैं सेवक होऊँगो, जो तू कहे है, मेरी आंख आछी होई । तव रामदास ने कही, अब तो सेवक श्रीआचार्यजी के होऊगे तव आंख आछी होइगी, नहीं तो बहोत दुःख पावोगे । तव रामदास ने कही, चलो वेगे, पाछे दूसरो कार्य होइगो । तव रामदास पिता को हाथ श्रीआचार्यजी के पास आई दंडवत करी । (तव) पिता ने विनती कियो, रामदास ! आपको प्रताप प्रसिद्ध देख्यो । तऊ मेरे मन में न आयो ताते मैं आंधरो अब मैं आपकी सरन आयो हूँ, मेरो दुःख दूरि करो । तव श्रीआचार्यजी

पितारे पिताये कहुं, हां, हां, या प्रकारे थरो तो सेवक थधश त्यारे रामदास जल लई कहे, श्रीआचार्यजी साक्षात् भगवान होय या जलथी पिताने पितारे थध जने. जेम कही रामदासे पिताना हाथनुं जल पिताना हाथ उपर ले सारे थध गयो. त्यारे रामदासे कहुं, यातो हुवे श्रीआचार्यजीना सेवक त्यारे पिताये कहुं भेटा । तू पहावरो थयो छे ? या जेमज लभ्युं हतुं, तेथी मारा पुण्यथी हुं सारे थयो. रसोई तो कइं । त्यारे रामदासे केधवत कहुं हुवे तमे आटला उपर ना कही (इरी गया) तो अन्ने आंभोथी ना थध जव. त्यारे ततकाल अन्ने आंभोमां कूलां पडी गयां. आंधणो थध गयो. पितारे रामदासने कहुं, या शुं क्युं ? हुवे हुं सेवक थधश. तू जे कहे कइं. मारी आंभो सारी थाय तो. त्यारे रामदासे कहुं, हुवे तो श्रीआचार्य-सेवक थरो त्यारे आंभ सारी थरो. नहीं तो अहु कुःप्प पाभशो. त्यारे पिताये यातो जलदी. पछी पीनुं कार्य थरो. त्यारे रामदासे पितानो हाथ पकडी आचार्यजीनी पासे आचीने दंडवत कर्या. त्यारे पिताये विनती करी, जे महा-आपनो प्रताप प्रसिद्ध जेयो तोये मारा मनमां न आण्युं तेथी हुं आंधणो

ने रामदास सों कही, तू श्रीयमुनाजी में नहाइ आऊ, पिता कों इहां बैठ्यो रहन दे । तब रामदास श्रीयमुनाजी न्हाइ के श्रीआचार्यजी के पास आये । तब श्रीआचार्यजी रामदास कों नाम सुनाय के, ब्रह्मसंबंध करायो । पाछे रामदास के पिता कों नाम सुनाये । तब रामदास श्रीआचार्यजी को चरणामृत आपु लेइ ताके नेत्रन सों लगाइ के कहै, अब नेत्र पहले जैसे खुल जाइ । सो आंख आछी होइ गई । तब पिता ने श्रीआचार्यजी सों दंडवत् करि कह्यो, महाराज, अब मोकों कहा कर्तव्य है ? जामें मैं सुख पाऊँ, सो बात बतावो । तब श्रीआचार्यजी कहैं, तुम रामदास पुत्र के कहे में रहोगे तो सदा सुखी रहोगे, कृतार्थ होइ मुक्ति पावोगे । तब रामदास ने कही, महाराज ! मोकों भगवद् सेवा पधराइ दीजिये । तब श्रीआचार्यजी ने प्रसादी वस्त्र दिये (और) कहैं, इनकी सेवा मन लगाइ के करियो । तब रामदास दंडवत् करि पिता कों ले डेरा पर आये । पाछे पिता सों कही, अब रसोई में करुंगो, तुम परचारगी करि दीजियो । तब पिता ने कही, जो तुम कहो सो करुंगो । तब रामदास रसोई करि वस्त्र सेवा कों भोग धरें । पाछे पिता की पातर, गाय को भाग काढि, महाप्रसाद लिये । पाछे श्रीआचार्यजी अडेल कों पधारे ।

थयो. हुवे हु आपनी शरणे आयेो छुं. माइ दुःख दूर करे तयारे श्रीआचार्य-
 ल्ये रामदासने कहुं, तू श्रीयमुनालमां न्हाइ आव. पिताने अहीं भेरी रहेवा दे.
 तयारे रामदास श्रीयमुनालमां न्हाइने श्रीआचार्यल्ये पासे आयेा. तयारे श्रीआचार्य-
 ल्ये नाम संभणावी ब्रह्मसंध करायुं. पछी रामदासना पिताने नाम संभणाव्युं.
 तयारे रामदासे श्रीआचार्यल्ये चरणामृत पीते लछ तेना (पिताना) नेत्रेथा
 लगाडीने कहु, हुवे नेत्र पहेलां जेवां खुली जव. पछी आंख सारी थछ गछ. तयारे
 पिताल्ये श्रीआचार्यल्ये दंडवत् करीने कहु, महाराज ! हुवे मने शुं कर्तव्य छे ?
 जमां हु सुख पासु ते बात बतावो. तयारे श्रीआचार्यल्ये कहे तमे रामदास पुत्रना
 कहेवामां रहेशो तो सदा सुखी रहेशो. कृतार्थ थछ मुक्ति पावशो. तयारे रामदासे
 कहु, महाराज ! मने भगवत्सेवा पधरावी दे. तयारे श्रीआचार्यल्ये प्रसादी वस्त्र
 दीयां मने कहु, आनी सेवा मन लगावीने करे. तयारे रामदास दंडवत् करी
 पिताने लछ डेरा उपर आयेा. पछी पिताने कहु, हुवे हुं रसोइ करीश. तमे
 उपरनी परचागी करी देखे. तयारे पिताल्ये कहु, हे तमे कहेशो तेम करीश. पछी
 रामदास रसोई करी वस्त्र-सेवाने भोग धर्या. पछी पितानी पातर, गायने भाग
 काढी महाप्रसाद लीयो. पछी श्रीआचार्यल्ये तो अडेल पधर्या. पछी रामदास

और रामदास पिता कों ले मेवाड़ में आये, घर में रहे । सो सारे घर के रामदास की आज्ञा में रहे ।

वार्ताप्रसंग १—पाछे रामदासजी एक दिन मीराबाई के यहाँ गये । सो मीराबाई के ठाकुर आगे श्रीआचार्यजी के कीर्तन गावत हे । तब मीराबाई ने कही, कोई विष्णु पद श्रीठाकुरजी के गावो । तब रामदास कों रीस छूटी, कहें, दारी रांड ! यह कहा तेरे खसम के हैं ? जा, आज पाछे तेरो मुख न देखोंगो । सो वह गाम में ते कुटुम्ब लेके उठि चले । तब मीराबाई ने बहोत कही । इनकों दक्षिणा देन लागी, सो कछु न लिये । कुटुम्ब ले और गाम में जाइ रहै । सो रामदासजी ऐसे टेक के कृपापात्र भगवदीय हते । अपने प्रभु में ऐसे अनुरक्त हते, जो फिर मीराबाई को मुख न देख्यो । वार्ता ॥४७॥

भावप्रकाश—यह वार्ता म यह जताये, जो-पहले तो अन्य मार्गीय के पास जैये नहीं । और जैये तो अपने मारग की वार्ता न करिये । अपने मार्ग के कीर्तन न करिये, जो करिये तो क्लेश होई । ताते श्रीगुसाईजी 'चतुःश्लोकी' में कहै हैं-
विजातीयजनाक्रान्ते निजधर्मस्य गोपनम् । देशे विधाय सततं स्थेयमित्येव भावये ॥१॥

या प्रकार अपने धर्म कों गोप्य करि देशान्तर में रहनों । सो रामदास

पिताने लधने मेवाड़मां आया, धरमां रखा, ते पछी आया धरना रामदासनी आज्ञामां रहे.

वार्ता प्रसंग १-पछी ओक द्विस रामदासल मीराबाईने त्यां गया. त्यां मीरा बाईना ठाकुर आगण श्रीआचार्यलनां कीर्तन गाता लता. त्यारे मीराबाईने कछु कोछ विष्णु-पद श्रीठाकुरलतुं गावो. त्यारे रामदासने रीस आवी, कहे, दारी रांड आ शुं तारा धलीनां छे ? न, आज पछी ताइं मुअ नहीं जेउं. पछी ते गाममांथ कुटुंअ लधने उठी आख्या. त्यारे मीराबाईने वलुं कछुं, अमने दक्षिणा देवा लागी ते कर्ध न दीधुं. कुटुंअ लध भीज गाममां नछ रखा. ते रामदासल अवा टेकना कृपापात्र भगवदीय लता. पोताना प्रभुमां अवा अनुरक्त लता, जे इरी मीराबाईलुं मुअ न जेथुं. ॥ वार्ता ४७ ॥

भावप्रकाश—आ वार्तामां अ जतान्युं उ पहेलां तो अन्यमार्गीयन पासै जैये नहीं अने जैये तो पोताना मार्गनी वार्ता न करीअ. पोताना मार्गना कीर्तन न करीअ. जे करीअ तो क्लेश थाय. तेथी श्रीगुसाईल 'चतुःश्लोकी' मां कहे छे- (श्लोक उपर जुअ)

आ प्रकारे पोताना धर्मने गोप्य करी देशान्तरमां रहेकुं. ते रामदासे न

जा समय श्रीआचार्यजी के कीर्तन गाये, ता समय श्रीगोवर्द्धनधर विचारे, जो-रामदास ने श्रीआचार्यजी के कीर्तन गाये हैं, तो मार्ग की वार्ता हू कहेंगे । तातें मीराबाई द्वारा कहवाए, जो-श्रीठाकुरजी के गावो । तव रामदास को ज्ञान भयो, जो-यह मैं कहा कियो ? श्रीगोवर्द्धनधर को श्रम कराये । तव यह मनमें विचारे, जो-अब या समय गाम में जल पीवनो उचित नहीं है । काहेतें, कदाचित गाम में रहैं, मीराबाई को मुख देखनो परे । हम हैं ब्राह्मण, फिर मीराबाई के प्रोहित । सो द्रव्य की लालच या जग में ऐसी बुरी है । जो-लोभ तें धर्म जाइगो, तातें या गाम में जल न लेनो सो सब कुटुम्ब सहित और गाम जाई रहैं । तातें इनकी वार्ता कहाँ ताई कहिये ?

वैष्णव ॥४७॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, रामदास चौहान, रजपूत, बुदेखंड के वासी, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—लीला में ये ललिताजी की सखी हैं । सो इनको नाम 'मधुएनी' है । सो इनके मनमें यह रहै, जो-मैं ललिताजी की नाई दोऊ स्वरूपन को वीड़ी आरोगाऊं । तव श्रीठाकुरजी ने कही, अब यह तिहारो मनोरथ कोई काल में पूर्ण होइगो । सो यह बात, ललिताजी सुनिके मधुएनी को शाप दिये ।

सभय श्रीआचार्यजीनां कीर्तन गायां ते सभये श्रीगोवर्द्धनधरे विचार्युं, કે રામદાસે શ્રીઆચાર્યજીનાં કીર્તન ગાયાં છે તો માર્ગની વાર્તા પણ કહેશે. તેથી મીરાબાઈ દ્વારા કહેવડાવ્યું કે શ્રીઠાકુરજીનાં ગાવ. ત્યારે રામદાસને જ્ઞાન થયું, કે મેં આ શું કયું ? શ્રી ગોવર્દ્ધનધરને શ્રમ કરાવ્યો. ત્યારે એ મનમાં વિચારે, કે હવે આ ગામમાં જલ પીવું ઉચિત નથી. કેમકે, કદાચિત ગામમાં ગહીએ તો મીરાબાઈનું મુખ જોવું પડે. એમે છીએ બ્રાહ્મણ, વળી મીરાબાઈના પ્રોહિત. દ્રવ્યની લાલચ આ જગતમાં આવી ખુરી છે. માટે લોભથી ધર્મ જશે તેથી આ ગામમાં જલ ન લેવું. તેથી બધા કુટુમ્બ સહિત બીજા ગામમાં જઈ રહ્યા તેથી એમની વાર્તા ઠયાં સુધી કહીએ :

✽

✽

✽

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, રામદાસ ચૌહાણ રજપૂત, બુદેલખંડના વાસી, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ:—

ભાવપ્રકાશ—લીલામાં એ લલિતાજીની સખી છે. એમનું નામ 'મધુએની' છે. એમના મનમાં એ રહે છે કે, હું લલિતાજીની માફક બેઉ સ્વરૂપોને બીડી આરોગાઉં. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ કહ્યું, આ તારો મનોરથ કાઈ કાલમાં પૂર્ણ થશે.

जो-तू वीड़ी आरोगावेगी छिपिके, ता मैं कहा करोंगी ? जाऊ भूमिमें रहो, ऐसो गर्व कियो ? सो संसार में अनेक जन्म भये । सो अबके बुदेलखंड में एक रजपूत के घर जन्में । तहां वर्ष वारह के भये । सो रामदास को पिता बुदेलखण्ड में राजा को चाकर हतो । सो पिताने कही, एक दिन चलो, राजा सों मिलाऊँ । काहेतें, राजा तें नित्य मिलत रहों, तो तिहारी चाकरी होइ जायगी । तव रामदास ने कही, मैं राजा के पास न जाऊंगो । काहेतें, मैं राजा कों सलाम न करोंगो, और राजा की चाकरी हूँ न करोंगो । मैं तो श्रीठाकुरजी की चाकरी करूंगो, जामें जन्म सुधरे । राजा की चाकरी सों कहा काम है ? यह बात सुनि के पिता ने कही, जो-तोकोँ वैरागी मिल्यो है, भरमायो है । राजा की चाकरी न करेगो तो खायगो कहाते ? तव रामदास ने कही, कहा सगरे जगत को पालन राजा करत है ? पालन तो श्रीठाकुरजी करत हैं । तुम मूर्ख हो, तातें जानत हों, जो-हमारो पालन राजा करत हैं । यह सुनिके पिता मन में बहोत कुढ्यो । परन्तु एक वेटा प्यारो बहुत, तातें कलु बोल्यो नाहीं । घर में एक मनुष्य राख्यो, जो यहां कोई वैरागी आवन न पावें । कोई वैरागी की संगती या रामदास कों भई है, तातें यह ऐसो भयो है । सो मनुष्य

ते वात लखिताल्ये सांखणीने मधुअनीने शाप आय्यो. जे तू छानी पीडी आरोगावीशतो हुं शुं करीश ? अन, भूमिमां रहे. अवेो गर्व कर्यो ? परी संसा-रमां अनेक जन्म थया ते हमां पुदेलखण्डमां अक रजपूतना धरे जन्मया. त्यां वर्ष पारना थया. ते रामदासने पिता पुदेलखण्डना राजने आकर हुतो. ते पिताअे कलु, अक दिवस आलो राजथी मेणावु, डेभके राजथी नित्य मणता रहे तो तारी आकरी थछ जशे. तयारे रामदासे कलुं, हुं राजनी पासे जईश नही डेभके हुं राजने सलाम नहीं करूं अने राजनी आकरी हुं नही करूं. हुं श्रीठाकुरजीनी आकरी करीश. जेमां जन्म सुधरे. राजनी आकरीथी शु काम छे ? अे वात सांखणीने पिताअे कलुं, डे तने वैरागी मण्यो छे, लरमाण्यो छे. राजनी आकरी नही करे तो आईश क्याथी ? तयारे रामदासे कलुं, शुं आप्पा जगतनुं पालन राज करे छे ? पालन तो श्रीठाकुरजी करे छे. तमे मूर्ख छो, तेथी अेम जण्यो छो, डे अमाइं पालन राज करे छे. अे सांखणीने पिता मनमां अहु अण्यो. परंतु अेक वेटा न्होलेो धण्यो, तेथी कंई पोट्यो नही. धरमां अेक मनुष्य राख्यो. डे अहीं द्वाई वैरागी आववा न पासे. द्वाई वैरागीनी संगति आ रामदासने थई छे तेथी आ अवेो थयो छे. तेथी मनुष्य ठीक राख्यो. अने रामदास तो रामकृष्ण अे जप

ठीक राखे। और रामदास तो 'रामकृष्ण' यह जप करे। और न काहू सों बोले, न बात करे। सो यह बात एक रजपूत ने सुनी, सो रामदास की वार्ता सब राजा के आगे कही। तब राजाने रामदास के पिता सों कही, जो-जा, अपने बेटा कों इहां ले आऊ। इतनो बड़ो भयो। मेरे पास नहीं लायो ? तब रामदास के पिता ने उह राजा के आगे हाथ जोरि कें डरपि के कह्यो, जो-मेरे बेटा की कोई वैरागी के सग तें बुद्धि विगरी है। सो मोहू कों नहीं गिनत है। सो मैं मनुष्य रखवारी बैठारघो है, जो-कोई वैरागी सों मिलवे न पावे। सो कछु दिन में समुझे तो मैं लाऊं, अवही अज्ञान है। तब राजा ने कही समुझाय के काहि मेरे पास लाऊ, नहीं तो मैं वाकों बुलाय के बंदीखाने राखोंगो। तब कैसे भाजेगो ? और हमनें सुनि है, जो-मोको सलाम न करेगो। सो देखों, कैसे न करेगो ? तब रामदास को पिता डरपि, घर आई रामदास सों कहें, जो-अजहू कछु नहीं विगरघो, राजा पास चलि, मिलि आऊ, नहीं तो राजा बंदीखाने देइगो। तब रामदास ने कही, तुम मोकों कहा डरपावत है ? भाग्य में बंदीखानो और जो दुःख लिखयो होइगो, सो काहू पे टरेगो नहीं। मैं राजा पास आपु ते चलाई के न जाऊंगो। तब पिता समुझाय हारघो, परि रामदास ने मानी नहीं। सो दूसरो दिन भयो तब राजा ने रामदास के पिता

करे अने न ठाधथी भोले न वात करे. ते अने वात अने रजपूते सांभणी. ते रामदासनी वार्ता अधी राजनी आगण कही. तयारे राजअने रामदासना पितानी आगण कहुं, ठे ल, तारा भेटाने अही लई आव. आटलो भेटा थयो तोअने भारी पासे नही लाव्ये ? तयारे रामदासना पिताने ते राजनी आगण हाथ जेडीने उरीने कहुं, ठे, मारा भेटानी ठाई वैरागीना सगथी बुद्धि अगडी छे. ते अने पणु गणु-कारतो नथी. तेथी मे मनुष्य रणवाणी भाटे भेसाडयो छे ठे ठाध वैरागीथी भणवा न पासे. पछी थोडा दिनसमां समज तो हु लावु. हुणु अज्ञान छे. तयारे राजअने कहु, समजवीने काले भारी पासे लाव. नहीं तो हु अने भोलावीने देहपानामां राभीश तयारे देवी रीते बागशे ? वणी अने सांभणु छे ठे अने सलाम नही करे ! ते जेठ, ठम नहीं करे ? तयारे रामदासने पिता उरी, घर आवी, रामदासने कहे, जे हुणुये कई अगडुयु नथी. राज पासे आव, भणी आव, नहीं तो राज देहपानामा गणशे. तयारे रामदासे कहु, तमे अने शु उरवि छे ? साअ्यमां देहपानु अने जे हुअ्य लप्यु हुशे तो ठाधथी टणशे नहीं. हुं राज पासे आपभेणे अलावीने नहीं जठ. तयारे पिता समजवीने हारयो. पणु रामदासे मान्यु नहीं. पछी

सों कही, तू वेटा कों लायो नाहीं, तातें यह तेरो दोष है । अब तू खबरदार रहियो तोसों समुझोंगो । तव रामदास को पिता डरपि के राजा सों कह्यो, मेरे ऊपर रीस मति करो, घर में पुत्र है, चाकों बुलाय के समुझि लेऊ । मैं बहुत समुझायो, उह न मान्यो । तव राजा नें दस मनुष्य बुलाय के कह्यो, रामदास कों ले आवो । तव मनुष्य आइके रामदास सों कहैं तुमकां राजा बुलायो है ।-तव रामदास ने कही, मेरो राजा सों कहा काम है ? मैं नाहीं आऊँगो । तव मनुष्य रामदास कों हाथ पकरि बांधि राजा पास ले गये । जायके सब बात कही । जो-या प्रकार बोल्यो, जो-मेरे राजा सों कहा काम हैं ? तव हम बांधि के लाये । तव राजाने रामदास सों कही, तू मोकों सलाम न करेगो तो मैं तोकूँ मारूँगो, बंदीखाने राखूँगो । तव रामदास ने कही, तू अपने कूँ बचाव, मोकों कहा मारेगो ? तव राजा ने मनुष्यन सों कह्यो, याकों बन्दीखाने राखि, कछुक मारियो, डरपाईयो । खाइवे कों मति दीजियो । जा प्रकार सूधो होई मोकों सलाम करे सो करियो । सो रामदास कों बंदीखाने डारि अनेक दुःख दियो । रामदास कछु बोले नाहीं । यह बात राजा की रानी सुनि के राजा सों कह्यो, यह तुम कहा काम कियो ? दस बारह बरस

भीजे दिवस थये । त्तारे राज्जे रामदासना पिताने कथुं, तू भेटाने लाव्यो नहीं ? तेथी आ तासे दोष छे । हुवे तू खबरदार रहेजे तने समज्जस । त्तारे रामदासना पिताने डरीने राजने कथुं, मारा उपर रीस न करे, घरमां पुत्र छे तेने भोलावीने समज्जवी ले । मे' अहु समज्जव्यो पणु जे मान्यो नहीं । त्तारे राज्जे दस मनुष्यने भोलावीने कथुं, रामदासने लई आवो । त्तारे मनुष्येजे आवीने रामदासने कथुं, तमने राज भोलावे छे । त्तारे रामदासे कथुं, माइ राज्जथी शुं काम छे ? हुं आवीश नहीं । त्तारे मनुष्ये रामदासने हाथ पकडी बांधी राज पास ले लई गया । जधने अंधी बात कही, हे आ प्रकारे भोलेयो हे मारे राज्जथी शुं काम छे ? त्तारे अजे बांधीने लाव्या । त्तारे राज्जे रामदासने कथुं, तूं मने सलाम नहीं करे तो हुं तने मारीश । डेहभाने राभीश । त्तारे रामदासे कथुं, तू तने पिताने तो अयाव मने शुं मारीश ? त्तारे राज्जे मनुष्येने कथुं आने डेहभानामां राभो । कंईक मारजे, डरावजे । आवाने न आपता । जे प्रकारे सीधो थाय, मने सलाम करे, तेम करजे । पछी रामदासने डेहभाने नाभी अनेक दुःख दीधां । रामदास कंई भोलेया नहीं । (पछी) आ बात राज्जनी राणीजे सांसणीने राजने कथुं, आ तमे शुं काम कथुं ? दस-बार वषने छेकरे तमने सलाम न करे तो शुं थयुं ? जेने

को लरिका तुमकों न सलाम कियो तो कहा भयो ? वाकों इतनो दुःख दीनो, सो आछो नाहीं । कहा जानिये, अब वाको फल कछ बुरो होनहारो है । तातें अबहू वह बालक कों छोड़ि देऊ । या प्रकार रानी ने समुझायो । परन्तु राजा माने नाहीं । सो तीसरे दिन अर्द्ध रात्रि समय दक्षिण सों दूसरे राजा की फोज आई । सो लराई भई । उह राजा ने यह राजा कों मारयो, गाम लूट्यो । रामदास को पिता कहूँ भागि गयो । सगरे बंदीखाने तें छूटे । सो रामदास बुंदेलखण्ड तें चले, सो मथुरा आये, पाछे ब्रज सगरो देखि प्रसन्न भये । तब विचारे, जो-कहूँ मेरो पिता आई निकसे, तो मोकों ले जायगो । तातें गोवर्द्धन की कंदरा 'अपछरा कुंड' पर रहै । ताके भीतर सगरे दिन बैठते । भगवद नाम लेते । रात्रि होय तब ब्रजवासीन के घर सों मांगि के जो मिले तामें निर्वाह करते ।

वार्ता-प्रसंग १—सो जब श्रीआन्नाचार्यजी प्रथम ही श्रीनाथजी कों प्रगट किये तब कञ्चो छोटो सो मंदिर करि, तापर छानि छाड़कें श्रीनाथजी कों पाट बैठारे । तब रामदास कों श्रीठाकुरजी नें जताई, जो-श्रीआचार्यजी को सेवक तू होऊ, मेरी सेवा करियो ।

भावप्रकाश—आहेतें, जो-लीला में तू मेरे पास मांग्यो हतो, ललि-

अटलुं दु.पु दीधुं ते साइं नहीं. शुं आणुीअे, हुवे आनुं इल कंठं प्पोटु थवानुं छे. तेथी हुणुये ते आलकने छोडी हो. अे प्रकारे राणुीअे समअणुं. परंतु राजअे मानुं नहीं. पछी त्रीज दिवसे अर्द्धरात्रि समय दक्षिणुथी पीज राजनी इेज आवी. ते लडाई थई ते राजअे आ राजने मारयो. गाम लूटयुं. रामदासने पिता कंठ लागी गयो. अथा डेहपानामांथी छुट्या. पछी रामदास बुंदेलखण्डथी आह्या ते मथुरा आव्या. पछी ब्रज अंधुं जेई प्रसन्न थया. त्यारे वियायुं डे, कंठ मारे पिता आवी निकणे तो भने लछ जशे. तेथी गोवर्द्धननी कंदरा अपसरा कुंड उपर रह्या. तेना अहर आपो दिवस पेसता. भगवनाम लेता. रात्रि थाय त्यारे ब्रजवासीअेना धरथी मागीने जे भणे तेमां निर्वाह करता.

वार्ता-प्रसंग १—पछी न्यारे श्रीआचार्यअे प्रथम ज श्रीनाथअे प्रकट क्यो त्यारे धानुं नानुं मंदिर इरी तेना उपर घासनुं छापरं छावअे श्रीनाथअे पाट पेसाया. त्यारे रामदासने श्रीठाकुरअे जतायुं डे, तू श्रीआचार्यअेना सेवक थअे भारी सेवा इरजे.

भावप्रकाश—डेभडे, तें लीलाभां भारी पासे मांग्यु हुतुं (डे) ललि-

ताजी की सेवा मोकों मिले । सो मैं कही हती, जो-कोई कालमें सिद्ध होयगी, सो समय अव सिद्ध है, सो समय अव तेरो सेवा को आयो है ।

तब रामदास आइके श्रीआचार्यजी कों दण्डवत किये । तब श्रीआचार्यजी रामदास कों निकट बुलाइ नाम-निवेदन करवाई के कहें, तुम श्रीनाथजी की सेवा करो । ब्रजवासीन के घरतें जो-कछु दूध दहीं अन्न सामग्री आवे सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कों भोग धरि तुम निर्वाह करियो । पाछे श्रीआचार्यजी सद् पांडे, कुंभनदास आदि ब्रजवासी सों कहें, तुम श्रीनाथजी कों ठीक राखियो । पाछें दूध, दहीं, माखन, अन्न, सीधा, सामग्री की सोंज सब ब्रजवासी दे जाते । रामदास भोग धरि के निर्वाह करते । पाछे पूरनमलकों श्रीनाथजी नें मन्दिर समरायवे की जब आज्ञा दीनी, तब पूरनमल आये । मन्दिर समरावन लागे । तब द्रव्य निघटि गयो । फेरि कमाईके आइ मन्दिर समरायो, तब रामदास की देह छूटी । लीला में प्राप्त भये ।

.भावप्रकाश—काहेतें, इनकों मनोर्थ एकान्त सेवा को हतो । सो अकेले सेवा करि लीला में गये ।

वार्ता-प्रसंग २—अब श्रीनाथजी को मन वैभव बढ़ावन को भयो, सो नये मंदिर में विराजे । तब श्रीआचार्यजी ने सद् पांडे सों कह्यो,

ताजनी सेवा मने भणे, त्यारे मे कछु हुतुं के डोई काणमां सिद्ध थरो. ते समय हुवे सिद्ध छे. ते समय हुवे तारी सेवानो आव्यो छे.

त्यारे रामदासे आवीने श्रीआचार्यछने दंडवत कर्या. त्यारे श्रीआचार्यछ रामदासने पासे भोलापी नाम-निवेदन करावीने कहे, तमे श्रीनाथछनी सेवा करे. ब्रजवासीआना धरथी ने कछु दूध-दहीं अन्न सामग्री आवे ते श्रीगोवर्द्धननाथछने भोग धरी तमे निर्वाह करणे. पछी श्रीआचार्यछ, सद् पांडे, कुंभनदास आदि ब्रजवासीआने कहे, तमे श्रीनाथछनी (अर्थात्) संलाण राखणे. पछी दूध-दहीं, माखण, अन्न, सीधा सामग्रीनी वस्तु अर्थात् ब्रजवासी दध जाता. रामदास भोग धरीने निर्वाह करता. पछी न्यारे पुरखमलने श्रीनाथछमे मंदिर सिद्ध करवामी आज्ञा आवी त्यारे पूरखमल आव्या. मंदिर सिद्ध कराववा लाग्या त्यारे द्रव्य घटी गयुं. ईरी कमाइने आवी मंदिर सिद्ध कराव्युं. त्यारे रामदासनी देह छुटी. लीलामां प्राप्त थया.

भावप्रकाश—केभडे, अमनो मनोर्थ अर्थात् सेवानो हुतो. ते अकेला सेवा करी लीलामां गया.

वार्ता प्रसंग २-हुवे श्रीनाथछनुं मन वैभव बढ़ाववतुं थयुं. ते नया मंदिरमां विराज्या. त्यारे श्रीआचार्यछमे सद्पांडेने कछु, दश-पांच ब्रजवासी सेवा

द्रस-पांच ब्रजवासी सेवा लायक होई तो सेवा करें। तब सद् पांडे ने कही, महाराज ! ब्रजवासी सों सेवा न होई सकेगी, घरको काम है। तब श्रीआचार्यजी राधाकुंड सों बंगाली बुलाय रुद्र कुण्ड पर एक कुटी उनको कराय दीनी, और श्रीनाथजी की सेवा दीनी। पाछे कृष्णदास अधिकारी ने बंगाली निकासि, रामदास सांचोरा ब्राह्मन को मुखिया भीतरिया कीये। सो सब कृष्णदास की वार्ता में कहे हैं। सो ब्रजवासी सगरे पहले, देवदमन कहते। पाछें गोपाल नाम गाय भई तब कहन लागे। पाछे श्रीआचार्यजी ने श्रीगोवर्द्धननाथ नाम धरे। या प्रकार सों रामदास भावपूर्वक सेवा किये हैं। और मानसी सेवा में मग्न रहते। सो रामदास ऐसे टेक के कृपापात्र वैष्णव हे। तातें इनकी वार्ता कहाँ ताई कहिये।

वार्ता ॥४८॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, रामानंद पंडित, सारस्वत ब्राह्मण थानेस्वर के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये निकुंज में के तमचर हैं। सो एक समय रात्रि घरी छै पाछली रही, तब यह तमचर बोलि उच्यो। सो श्रीठाकुरजी ने जानी, सवेरो भयो, सो उठे। तब ललितादिक सखी ने कही, जो—अबही रात्रि बहोत है।

लायक होय तो सेवा करे. त्पारे सद्पांडे क्युं, महाराज ! ब्रजवासीथी सेवा नहीं थई शके, घरतुं काम छे. त्पारे श्रीआचार्यल्ये राधाकुंडथी भंगादीने पोलावी रुद्रकुंड उपर अेक भठी अेभने करावी दीधी अने श्रीनाथलनी सेवा आपी. पछी कृष्णदास अधिकारीअे भंगादीने काठया. रामदास सांचोरा ब्राह्मणने मुखिया-लीतरीया कर्था. ते अंधुं कृष्णदासनी वार्तामां क्युं छे. ते ब्रजवासी अथा पहलेलां (श्रीनाथलने) देवदमन कहुता. पछी गाये थई त्पारे गोपाल नाम कहुवा लाग्या पछी श्रीआचार्यल्ये श्रीगोवर्द्धननाथ नाम धर्युं. अे प्रकारे रामदासे भावपूर्वक सेवा करी छे अने अे मानसी सेवामां मग्न रहता. ते रामदास अेवा टेकना कृपापात्र वैष्णव हुता. तेथी अेभनी वार्ता क्यां सुधी कहीअे ?

॥ वार्ता ४८ ॥

✽

✽

✽

हवे श्रीआचार्यल्ये महाप्रभुलना सेवक, रामानंद पंडित सारस्वत ब्राह्मण थानेस्वरना तेभनी वार्ताना भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे निकुंजमांना 'तमचर' (इकडा) छे. ते अेक समय रात्रि घरी छ पाछली रही त्पारे अे तमचर बोली उच्यो. त्पारे श्रीठाकुरल्ये अे अे, सवार थयु. ते उच्यो. त्पारे ललितादिक सखीअे क्युं, हे हल रात्रि घली

तब श्रीस्वामिनीजी क्रोध करि के कहें, जो-ऐसे पक्षी को इहां कहा काम ? जो-समें विना मनकों खेद करायो । तातें याको संसार में जन्म होऊ । तब वह तम-चर संसार में अनेक जन्म पाये । सो अबके थानेस्वर में एक सारस्वत ब्राह्मण के घर जन्मे । सो थानेस्वर में व्याह भयो, वर्ष तीस के भये । तब माता पिता ने देह छोड़ी । सो स्त्री पुरुष रहत हते । श्रीभागवत आदि पुरान वाँचते, कथा कहतें । तातें इनकों सब कोई पंडित कहते । लोगन सों चर्चा करते । सो एक समें श्रीआचार्यजी थानेस्वर पधारे, तब रामानन्द चर्चा करिवे कों आयो । तब श्रीआचार्यजी के आगे वाचा बंद ह्ये गई । कहे कछु, निकसे कछु । तब श्रीआचार्यजी रामानन्द सों कहें, तुम वाद करिवे आये हो, सो ऐसे क्यों बोलत हो ? तब रामानन्द कों लाज लागी, सो घर में जाइ सरस्वती को पूजन और जप करन बैठ्यो । और कह्यो, जो-सरस्वती प्रसन्न होय तब ही जल पान करूं । रात्रि दिन ऐसे बैठे, तीन दिन बीते । तब सरस्वती प्रसन्न होई कह्यो, मैं प्रसन्न हों, तेरे मन आवे सो मांग । तब रामानन्द पंडित ने कही, मौसों कोई पंडित जीते नाहीं, मैं सबकों जीतों । यही माँगत हों । तब सरस्वती ने कही, जो-जा, ऐसेई होयगो । तब अहंकार करि फेरि श्रीआचार्यजी के पास वाद करन कों आयो ।

छे. त्तारै श्रीस्वामिनीञ्च डोध करीने कहे के आवा पक्षीनुं अहीं थुं काम ? जे समय विना मनमां भेद कराव्यो. तेथी ज्येना ससारमां जन्म थाव. त्तारै ज्ये तम-चर संसारमां अनेक जन्म पाव्या. हुवे ज्ये थानेश्वरमां जेक सारस्वत ब्राह्मणने धरे जन्म्या. पछी थानेश्वरमां लगन थयुं. वर्ष तीसना थया त्तारै माता-पिताज्ये देह छोडी. पछी स्त्री-पुरुष रहेतां हुतां. श्रीभागवत आदि पुराण वांचता, कथा कहेता, तेथी ज्येमने अंधा पंडित कहेता. लोकाथी यर्या करता. पछी जेक समय श्रीआचार्यञ्च थानेश्वर पधार्या. त्तारै रामानंद यर्या करवाने आव्यो. त्तारै श्री-आचार्यञ्च आगण वाणी अंध थध गर्ध. कहे कंठ, निकणे कंध. त्तारै श्रीआचार्यञ्च रामानंदने कहे, तमे वाद करवा आव्या छे ते आम केम थोवो छे ? त्तारै रामानंदने लाज लागी. ते धरमां जेठ सरस्वतीनुं पूजन अने जप करवा थोठो. अने कथुं, के सरस्वती प्रसन्न होय त्तारै जे जलपान करूं. रात्रि दिवस ज्येम थोठो त्रणु दिवस बीत्या. त्तारै सरस्वतीज्ये प्रसन्न थध कथुं, हुं प्रसन्न छुं. तारा मनमां आवे ते मांग. त्तारै रामानंद पंडिते कथुं, मने डोष पंडित ज्येते नहीं. हुं अधाने ज्युं. ज्ये मांथुं छुं. त्तारै सरस्वतीज्ये कथुं, के ज, ज्येमज थशे. त्तारै अहंकार

सो फेरि वैसे ही वाचा बंद भई, बोले कछु, वचन कछु कहै । तब श्रीआचार्यजी कहें, अब तू सरस्वती कों प्रसन्न करि वाद करन कों आयो, सो फेरि ऐसे क्यों बोलत हैं ? तब रामानन्द कों बहुत लाज आई । घर में जाई, वैसे ही फेरि सरस्वती आराधन कियो । तब सरस्वती फेरि प्रसन्न होई के रामानन्द सों कही, अब कहा मांगत हो ? विद्या तो तोकों दीनी है । तब रामानन्द ने कही, मोकों कहा विद्या दीनी ? मैं श्रीआचार्यजी सों वाद करिवे गयो, तहां तो कछु जुवाब नहिं निकसत । तब सरस्वती ने कही, जो—मैं तोकों पंडित जीतिवे को वरदान दियो है, कछु ईश्वर जीतिवे कों नहीं कही । श्रीआचार्यजी तो साक्षात् भगवान श्रीकृष्णचन्द्र हैं । तिनसँ तू वाद करन गयो, तो कैसे जीतेगो ? तातें अपनो भलो चाहे तो श्रीआचार्यजी की सरन जा, संसार तें छूटि कृतार्थ होउ । और उनसों तू कबहू न जीतेगो । तब रामानन्द जाई के श्रीआचार्यजी कों दण्डवत करि विनती किये, महाराज ! मैं आपको स्वरूप नहिं जान्यो । आप साक्षात् ईश्वर हो । और कही, मैं जीव हों । मो पर कृपा करि के सरनि लीजिये । मेरो अपराध क्षमा करो, जो—मैं आपसों जीव बुद्धि करि वाद करन आयो । तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम पंडित हो, हमारे सेवक

करी इरी श्रीआचार्यजीनी पासे वाद करवाने आब्यो. ते इरी अमज वाणी पंथ थई. भोले कई वचन कई कहे. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, हुवे तू सरस्वतीने प्रसन्न करी वाद करवाने आब्यो ते इरी अम डम भोले छे ? त्यारे रामानंदने पडु लाज आवी. धरमां नई तेज प्रभाषे इरी सरस्वतीनु आराधन क्युं. त्यारे सरस्वतीअे इरी प्रसन्न थइने रामानंदने कहुं, हुवे शु भांगे छे ? विद्या तो तने आपी छे. त्यारे रामानंदे कहुं, मने शी विद्या आपी ? हुं श्रीआचार्यजीथी वाद करवा गये त्हां तो कई उत्तर निकलतो नथी ! त्यारे सरस्वतीअे कहुं, डे मे तने पंडित जतवानु वरदान आयुं छे कई ईश्वर जतवानु नथी कहुं. श्रीआचार्यजी तो साक्षात् भगवान श्रीकृष्णचन्द्र छे. तेमनाथी तू वाद करवाने गये ते इरी रीते जतीश ? तेथी तू ताइं भलुं याहे तो श्रीआचार्यजीनी शरणे अ, संसारथी छुटी कृतार्थ था. अने अेमनाथी तू कवीय नही जतीश. त्यारे रामानंदे नइने श्रीआचार्यजीने दंडवत् करी विनती करी, महाराज ! में आपनां स्वइपने अणुयु नही आप साक्षात् ईश्वर छे. अने कहुं, हुं जव छुं. मारा उपर कृपा करीने (मने) शरणे लो. मारे अपराध क्षमा करे, डे हुं आपनाथी जव-बुद्धि करीने विनाद करवा आब्यो. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, तमे पंडित छे अमारा सेवक

होई कहा करोगे ? तब रामानन्द ने कही, महाराज ! अब मोकों मति भूलवो, मैं आपकी सरनी आयो हूं, मोकों अङ्गीकार करो । तब श्रीआचार्यजी कहें, जो-जा, न्हाई आऊ । तब रामानन्द पंडित सरस्वती में न्हाई के श्रीआचार्यजी पास आये । तब श्रीआचार्यजी ने नाम निवेदन करायो । तब रामानन्द विनती करी, जो-महाराज ! मेरे घर पधारिये । मेरी स्त्री कों अङ्गीकार करिये । तब श्रीआचार्यजी कहें, अब तो पृथ्वी परिक्रमा जाइवे की तैयारी हैं, तातें वेगि स्त्री कों यहाँ लाउ, नाम सुनाइ देइ । पाछे फेरि थानेस्वर पधारेंगे । तब तेरे घर उतरेंगे । तब रामानन्द घर जाई अपनी स्त्री कों लिवाय लायो । तब श्रीआचार्यजी ने रामानन्द की स्त्री कों नाम सुनायो । तब रामानन्द ने कही, महाराज ! मोकों भगवद् सेवा पधराई दीजे । तब श्रीआचार्यजी कहें, तेरे श्रीमद् भागवत की पुस्तक हैं, तिनकों तू भोग धरियो । और सेवा तुम सों होनी कठिन है । तब रामानन्द दण्डवत करि स्त्री सहित अपने घर आये । श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा कों पधारें ।

वार्ता-प्रसंग १—पाछे एक समें श्रीआचार्यजी थानेस्वर पधारें । सो रात्रि कों रामानन्द के घर रहै ।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो-रसोई पाक और वैष्णव के घर करयो ।

थध शुं करशो ? त्यारे रामानंद के कछुं महाराज ! हुवे मने भूलावो नहीं, हुं आपनी शरण्यु आव्यो छुं. मने अंगीकार करे. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, हे, ज न्हाई आव. त्यारे रामानंद पंडित सरस्वतीमां न्हाइने श्रीआचार्यजी पासे आव्या. त्यारे श्रीआचार्यजीये नाम निवेदन कराव्युं. त्यारे रामानंद विनति करी हे, महाराज ! मारा धर पधारो, मारी स्त्रीने अंगीकार करे. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, हुवे तो पृथ्वी परिक्रमा जवानी तैयारी छे. तेथी गददी स्त्रीने अही लाव. नाम संभजानी हठं. पछी श्री थानेश्वर पधारीशुं त्यारे तारा धरे उतरीशुं. त्यारे रामानंद धर जधने पोतानी स्त्रीने लाव्यो. त्यारे श्रीआचार्यजीये रामानंदनी स्त्रीने नाम संभजान्युं. त्यारे रामानंद के कछुं, महाराज ! मने भगवत्सेवा पधरावी हो. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, तारे श्रीमद्भागवततुं पुस्तक छे तेने तू भोग धरज. भीजी सेवा तभाराथी थवी कठिन छे. त्यारे रामानंद दण्डवत् करी स्त्री सहित पोताना धरे आव्या. श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमाये पधार्या.

वार्ता-प्रसंग १—पछी अक समये श्रीआचार्यजी थानेश्वर पधार्या. त्यारे रात्रिअये रामानंदना धरे रह्या.

सो पिछली रात्रि कों रामानन्द नें उठिकें स्त्री सों कही, बेगिके, गोबर सँकेलि, नांतर वैष्णव उठि के सब गोबर लें जाइगें । सो यह बात रामानन्द की श्रीआचार्यजी ने सुनी । सो आप उठिके मन में व्होत क्रोध किये । जो—या प्रकार गोबर कों कहेत है, उठाई ले जाइंगे ! तो वैष्णव को और समाधान कहा करेगो ? वैष्णव मेरे प्रानप्रिय, तिनकों यह ऐसी बात कही । तब श्रीआचार्यजी क्रोध करि हाथ में जल लेंके, वेद मन्त्र पढ़ि रामानन्द के उपर छिरकि के कहे, मैंने तेरो त्याग कियो । यह कहि वाही समें संग के वैष्णवन कों साथ ले उहां ते उठि चले । सो थानेस्वर तें तीन कोस पर एक गाम 'अमीतीर्थ' है, तहां जाई के स्नान सन्ध्या किये । और जा समें रामानन्द के घरतें श्रीआचार्यजी उठिके चलन लागें ता समें थानेस्वर के वैष्णवन ने व्होत विनती करी, महाराज ! हमारे घर पधारियें । तब श्रीआचार्यजी कहें, अब तो या समें ये गाम में जलपान न करूंगो । यह कहि पधारे, रहें नाहीं ।

भावप्रकाश—सो यातें, जो—श्रीआचार्यजी को अपराध करतो तो आप थोरो दण्ड दे क्षमा करते । वैष्णव को अपराध है, सो बेगो छूटे नाहीं, तातें या

भावप्रकाश—अभां अ नृणांयु ठे रसेध पाठ भीज वैष्णुवना धरे कथ्यो ।

ते पाछदी रात्रिअे रामान दे उठीने स्त्रीने कथुं, नद्वीथी छाणु उठाव, नहीं तो वैष्णुव उठीने अंधुं छाणु लध नशे. अे वात रामानंदनी श्रीआचार्यअे सांलणी. त्पारे आधि उठीने मनमां अहु कोध कथ्यो. के, आ प्रकारे छाणुं कहे छे, उठावीने लध नशे तो वैष्णुवतुं भीलुं समाधान शुं करशे ? वैष्णुव मारा प्राणुप्रिय तेमने आने आवी वात कही. त्पारे श्रीआचार्यअे कोध करी लुथमां नल लधने वेदमंत्र लणुनि रामानंदना उपर छाटीने कहे, में तारे त्याग कथ्यो. अेम कही ते न समये साथेना वैष्णुवोने सगे लध त्यांथी उठी गाल्या. ते थानेश्वरथी त्रणु कोस उपर अेक गाम 'अमीतीर्थ' छे त्यां नधने स्नान संध्या कथ्यो. अने न समये रामानंदना घरथी श्रीआचार्यअे उठीने गाल्या ते समये थानेश्वरना वैष्णुवोअे घणु विनती करी, महाराज ! अमारा धरे पधारीअे. त्पारे श्रीआचार्यअे कहे, लुवे तो आ समये आ गाममां नलपान नहीं कइं अेम कही पधार्या; रखा नही.

भावप्रकाश—ते अेथी नृ श्रीआचार्यअेनो अपराध करतो तो आप थोडो दंड दे क्षमा करता. वैष्णुवोअे अपराध छे ते नद्वी छूटे नहीं. तेथी आ

गाम में रहे नहीं। और जब ब्रह्मसंबंध की आज्ञा श्रीगोकुल में श्रीठाकुरजी ने श्रीआचार्यजी को दीनी। तब श्रीठाकुरजी ने कही, जाकों तुम ब्रह्मसंबंध करावोगे ताकों मैं न छोड़ूंगो। सो परीक्षा देखन अर्थ श्रीआचार्यजी अपराध को मिस पाई त्याग करें। जो यह ठीक परेगी। और श्रीआचार्यजी क्रोध बहोत यातें किये, जो—रामानन्द ने स्त्री सों यह कही, बेगि गोवर उठाई नाँतर वैष्णव ले जाइंगे। सो वैष्णव नाम लिये तातें क्रोध उपज्यो। जो—काहू वैष्णव को नाम ले कहते। (तो) एक दोई वैष्णव को अपराध होतो। इनने तो वैष्णव कह्यो। सो वैष्णव में तो मुख्य, ब्रजभक्त आदि सगरे पर बात जाइ लगी। तातें श्रीआचार्यजी को बहोत क्रोध उपज्यो। काहे तें, आप नवरत्न में कहे हैं—‘निवेदनं तु स्मर्त्तव्यं सर्वथा-तादृशैरपि।’ यह निवेदन को स्मरण तादृशी वैष्णव सों मिलिके करे तो निवेदन को फल, भाव जाने। सो वैष्णव को गोवर के लिये ऐसैं बोलत हैं? और धोल में यह कहे हैं, ‘तन मन धन समर्पन करिने वैष्णव ने अनुसरियेजी।’ और यह कीर्तन—

* राग केदारो *

हों वारी इन वल्लभीयन पर ।

मेरे तन को करों विछोना सीस घरों इनके चरनन तर ॥ १ ॥

गाममां रक्षा नही. वणी न्यारे प्रहसंबंधनी आज्ञा श्रीगोकुलमां श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजीने करी, तारे श्रीठाकुरजी कथुं (हतुं) के लेने तमे प्रहसंबंध करानशे तेने हुं नही छोड़ुं. ते परीक्षा देखवाने भाटे श्रीआचार्यजी आपे अपराधतुं षड्गतुं जेईने (तेमने) त्याग कर्यो. केम, ले आ (समये) ठीक पडशे. वणी श्रीआचार्यजीके धरुा क्रोध अथी कर्यो, के रामानं दे स्त्रीने अ कथुं, के छाणु नददी उठाव नही तो वैष्णवो लई नशे. ते वैष्णवनाम लीधुं तेथी क्रोध उपन्यो. केम ले, केई वैष्णवतु नाम लई कहेता तो अके—ये वैष्णवने अपराध थतो (पणु) अमणु तो वैष्णव कथा. ते वैष्णवमां तो मुख्य ब्रजभक्त आदि अंधा उपर बात लाणु पडी तेथी श्रीआचार्यजीने अहु क्रोध उपन्यो. केमके आप ‘नवरत्न’ मां कहे छे ‘निवेदनं तु स्मर्त्तव्यं....’ आ निवेदनतुं स्मरण तादृशी वैष्णवोथी भणीने करे तो निवेदनतुं ईस, भाव अणु. तेथी वैष्णवने छाणु भाटे आवुं पोदे छे? अने धाणमां अम कहे छे, तन, मन, धन समर्पण करीने वैष्णवने अनुसरियेजी. वणी आ कीर्तन—हां वारी इन वल्लभीयन पर (उपर नुयो) आवो साव वैष्णवमां होवो

भाव भरि देखो मेरी अँखियन मण्डल मध्य विराजत गिरिधर ।

ये तो मेरे प्रान जीवन घन दान दिये हैं श्रीवल्लभ वर ॥ २ ॥

माया वाद खंड खंडन को प्रगट भये श्रीविठ्ठल द्विजवर ।

‘रसिक’ कहैं आस इनकी करि बल्लभीयन की चरनरज अनुसर ॥ ३ ॥

यह भाव वैष्णव में होई । सो वैष्णव कों कहें, जो-गोबर उठाई ले जाइगें ।

सो वैष्णव गोबर के चोर ठहराये । ताते श्रीआचार्यजी क्रोधवंत होइ सगरे वैष्णव कों शिक्षा दिये, जो-सँभारि के बालिवो । वैष्णव पर प्रीति राखनी, यह जताये ।

वार्ता-प्रसंग २—पाछे श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा कों पधारें ।

इहां श्रीआचार्यजी के तिरस्कार सों रामानन्द विकल होइ गये । जहां

तहां बजार में खानपान करे । मर्यादा सब छूटि गई । परन्तु इतनी

मर्यादा रही, जो-कछु खानपान करे सो पहलें यह कहै, श्रीगोवर्द्धन-

नाथजी अरोगियो । या प्रकार समर्पन करिके खाई । सो एक दिन

रामानन्द बजार में चल्यो जात हतो, सो एक हलवाई जलेबी करत

हतो । सो ताजी देव के रामानन्द ने मोल ले उही बाजार में कह्यो,

श्रीगोवर्द्धननाथजी अरोगियो । या प्रकार समर्पण करि जलेबी खाई ।

सो जा समें रामानन्द नें जलेबी श्रीनाथजी कों अरोगाई, ता समें

श्रीआचार्यजी श्रीनाथजीद्वार हते । श्रीनाथजी कों राजभोग आयो

हतो । सो समें भये श्रीआचार्यजी भोग सराइवे कों मन्दिर में पधारे ।

तब आचमन मुख वस्त्र कराये । तब श्रीनाथजी के मुखारविन्द में

नेधये. ते वैष्णवने कहे ठे छाणु उठावी लठ नरे । येम वैष्णवने छाणुना यार

ठराव्या । तेथी श्रीआचार्यल कोधवत थठ भवा वैष्णवने शिक्षा आपी ठे विचारीने

गोलवु. वैष्णव पर प्रीति राखवी येम नताव्यु.

वार्ता प्रसंग २-पछी श्रीआचार्यल पृथ्वी परिक्रमाये पधार्या. अही श्रीआ-

चार्यलना तिरस्कारथी रामानंद विकल थठ गया. नयां त्यां अजरमां आन-पान करे.

भर्यादा अधी छुटी गठ; परंतु अटली भर्यादा रही ठे ने कंठ आनपान करे ते पहलां

ये छुठे, ने श्रीगोवर्द्धननाथल आरोगजे. या प्रकार समर्पण करीने आय. ते अके

दिवस रामानंद अजरमां गेल्या नता हता. ते अके क दाठ जलेपी करते हता. ते

ताल नेठने रामानंद के मोल लठ तेज अजरमां छुठुं, श्रीगोवर्द्धननाथल आरोगजे.

या प्रभाणु समर्पण करी नलेपी आधी. ते ने समये रामानंद श्रीनाथलने नलेपी

आंगोवापी ते समये श्रीआचार्यल श्रीनाथलद्वार हता. श्रीनाथलने राजभोग

आये हता. ते समय थये श्रीआचार्यल लोग सराववाने मन्दिरमा पधार्या. त्यारे

जलेबी को टूक देखि श्रीआचार्यजी श्रीनाथजी सों कहें, जो-आज कछु उत्सव तो नाहीं है। जलेबी कैसे अरोगे? तब श्रीनाथजी ने कही, जो-तिहारे सेवक में मोकों जलेबी अरोगाई हैं। सो मैं अरोग्यो हूँ। तब श्रीआचार्यजी ने कही, जो-कौन से वैष्णव ने जलेबी अरोगाई है? तब श्रीनाथजी ने कही, रामानन्द पंडित धानेस्वर गाम के ने अरोगाई है, सो मैं अरोग्यो हूँ। तब श्रीआचार्यजीने कही, जो-मैं तो वाको त्याग करयो है, तुम वाकी समर्पी कैसे अरोगे? तब श्रीनाथजी ने कही, मैं तुमको वचन दियो है, जाकों तुम ब्रह्मसंबंध करावोगे ताको मैं कबहू न छोडूंगो। तातें तुम त्याग करो परन्तु तुमने पहले मोकों समर्प्यो हो सो कैसे छोडूँ? तब श्रीआचार्यजी चुप हूँ रहे। पाछे अनोसर करिके श्रीआचार्यजी मन्दिर तें बाहिर पधारे। तब दामोदरदास हरसानी सों कहै, जो-रामानन्द पंडित के हाथ सों श्रीनाथजी जलेबी आरोगे, और कहै, मैं कैसे वाकों छोडूँ? तब दामोदरदास ने पूछी, जो-महाराज! आप याको त्याग कियो है, और श्रीनाथजी पक्ष करी है। सो वा जीव को अंगीकार कव करोगे? तब श्रीआचार्यजी ने कही, जो-अब वैष्णव को अपराध न करेगो। तो वाकों लक्ष जन्म में अङ्गीकार करौंगों। कहा भयो, जो-श्रीनाथजी

आयमन भुअवन्न कराव्युं। त्पारे श्रीनाथलना भुआरविन्दमां जलेभीना टूक लेध श्री-
आचार्यल श्रीनाथलने कहे, के आन कोउ उत्सव तो नहीं। जलेभी देवी रीते
आरोग्या? त्पारे श्रीनाथलये कहुं, के तभारा सेवके मने जलेभी आरोगावी छे। ते
हुं आरोग्युं छुं। त्पारे श्रीआचार्यलये कहुं, के क्या वैष्णुवे जलेभी आरोगावी छे?
त्पारे श्रीनाथलये कहुं, रामानंद पंडित धानेस्वर गामनाये आरोगावी छे ते हुं
आरोग्युं छुं। त्पारे श्रीआचार्यलये कहुं, के में तो तेना त्याग कर्यो छे। तमे अनेनी
समर्पी केम आरोग्या? त्पारे श्रीनाथलये कहुं, में तभने पयन आर्युं छे के जने
तमे ब्रह्मसंबंध करावशा तेने हुं कहीये नहीं छोडुं। तेथी तमे त्याग कर्यो परंतु तमे
पहुंसां मने समर्प्यो छे तेथी हुं केम छोडुं? त्पारे श्रीआचार्यल चुप थध रह्या। पछी
अनोसर करीने श्रीआचार्यल मंदिरथी आहर पधार्यो। त्पारे दामोदरदास हरसानीने
कहुं, के रामानंद पंडितना हाथथी श्रीनाथल जलेभी आरोग्या अने कहुं केहुं अने केम
छोडुं? त्पारे दामोदरदासे पूछ्युं के, महाराज! आप अनेना त्याग कर्यो छे अने श्रीनाथलये
पक्ष कर्यो तो ते लवना अंगीकार क्यारे करशा? त्पारे श्रीआचार्यलये कहुं, के हुवे
वैष्णवना अपराध नहीं करे तो अने लाभ जन्ममां अंगीकार करीश। शुं थयुं? जे

जलेबी अरोगे तो ? पाछें एक वैष्णव श्रीनाथजी के दरसन करिके थानेस्वर गयो । तब रामानन्दनें उह वैष्णव सों पूछी, जो-कबहू मेरी बात श्रीआचार्यजी के आगे चली हती ? तब उह वैष्णव ने कही, जो-तेरे हाथकी जलेबी श्रीनाथजी अरोगे । तब श्रीआचार्यजी सों दामोदरदास हरसानीनें पूछी, जो-आप रामानन्द कों कब अंगीकार करोगे ? तब श्रीआचार्यजी ने कही, जो-आज पाछे जो वैष्णव को अपराध न करेगो तो लक्ष जन्म में अंगीकार करूंगो । इतनी बात चली हती । तब रामानन्द प्रसन्न होइके कह्यो, जो-भलो, लक्ष जन्म में मेरो अंगीकार करनो तो कह्यो । ता पाछे रामानन्द की बुद्धि सुन्दर भई । वैष्णव के अपराध तें डरपन लाग्यो । पंडिताई को अहंकार हतो तातें अपराध परयो, सो दैन्यता भई । पाछे स्वप्न द्वारा लक्ष जन्म भुगताई कृपा करि श्रीआचार्यजी अंगीकार किये । सो रामानन्द श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे । तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिये ।

वार्ता ॥४९॥

भावप्रकाश—अंगीकार किये सो काहेतें, श्रीआचार्यजी वैष्णव कों दंड देत हैं । सो शिक्षा कों । निज त्याग नाहीं हैं । जैसे माता पिता पुत्र कों दंड देत हैं सो शिक्षार्थ ही । पुत्रको बुरो न करेंगे । तैसेही जाननो । जो-श्रीआ-

श्रीनाथजी जलेबी आरोग्या तो ? पछी ओइ वैष्णव श्रीनाथजीनां दर्शन करीने थाने-
स्वर गयो. त्पारे रामानंदे ते वैष्णवने पूछ्युं, के क्यारेय भारी वात श्रीआचार्यजी
आगण यादी हुती ? त्पारे ते वैष्णवे कहुं, के तारा हाथनी जलेबी श्रीनाथजी
आरोग्या. त्पारे श्रीआचार्यजीने दामोदरदास हरसानीअे पूछ्युं, के आप रामानंदने
क्यारे अंगीकार करेशे ? त्पारे श्रीआचार्यजीअे कहुं, आज पछी वैष्णवने अपराध
नहीं करे तो लाखजन्ममां अंगीकार करीश. ओइली वात यादी हुती. त्पारे रामानंदे
प्रसन्न थधने कहुं, के लले, लाखजन्ममां मारे अंगीकार करवातुं तो कहुं. ते पछी
रामानंदनी बुद्धि सुंदर थध. वैष्णवने अपराधथी उरवा लाग्या. पंडिताधने अहंकार
होतो तेथी अपराध पछ्यो. ते दैन्यता थध. पछी स्वप्न द्वारा लाख जन्म भोगवापी
कृपा करी श्रीआचार्यजीअे अंगीकार कर्यो. ते रामानंद श्रीआचार्यजीना अेवा कृपा-
पात्र भगवदीय हुता. तेथी ओमनी वार्ता क्यां सुधी कहीअे ?

॥ वार्ता ४९ ॥

भावप्रकाश—अंगीकार कर्यो ते शार्थी ? श्रीआचार्यजी वैष्णवने दंड
दे छे ते शिक्षा भाटे. स्वइपतः त्याग नथी. लभ मातापिता पुत्रने दंड दे छे ते शिक्षा-
र्थन. पुत्रनु अहित नहीं करे. तेमज जणुवुं. जे श्रीआचार्यजीना अंतःकरणथी

चार्यजी को अन्तःकरण सों त्याग होइ तो श्रीनाथजी वाके हाथ की सामग्री कवहू न अरोगें । काहेतें, श्रीआचार्यजी के सेवक हैं । तातें जैसी इच्छा श्रीआचार्यजी की होई ताही भांति श्रीनाथजी करे । काहेतें, श्रीआचार्यजी रञ्च अप्रसन्न होई तो, श्रीठाकुरजी वाकों कवहू अङ्गीकार न करें । तो श्रीआचार्यजी त्याग करें ताके हाथकी सामग्री श्रीगोवर्द्धनधर कैसे अरोगें ? तातें श्रीआचार्यजी के अन्तःकरण को त्याग नाहीं । तातें श्रीआचार्यजी वेद मन्त्र सों जल छिरकिकें त्याग याहीतें किये, जो-मर्यादा रीति सों त्याग है । सो लोगन कों दिखायवे कों, सब जाने, जो-त्याग है । परन्तु लीला सृष्टि के जाने, जो-दैवी है सो तो श्रीआचार्यजी के अंग रूप हैं । जैसे अंग को त्याग नाहीं । तैसे जीव दैवी को त्याग नाहीं । तातें श्रीनाथजी अरोगें । तातें श्रीआचार्यजी 'अन्तःकरणप्रबोध' में कहे हैं—

“ चांडाली चेद्राजपत्नी जाता राज्ञा च मानिता ।

कदाचिदपमानेऽपि मूलतः का क्षतिर्भवेत् ” ॥ १ ॥

चांडाली राजपत्नी मानवती जब भई तव अपमान हू होई । परन्तु रानी-पनो न जाई । मान अपमान तो होत ही है, और नवरत्न ग्रंथ में कहें—

“ अज्ञानादथवा ज्ञानात्कृतमात्मनिवेदनम् ।

यैः कृष्णसात् कृतप्राणैस्तेषां का परिवेदना ॥ ”

ज्ञान अज्ञान करिके जाको निवेदन भगवान में भयो, वह श्रीकृष्ण को

त्याग होय तो श्रीनाथजी ऐमना हाथनी सामग्री कहीय न आरोगे, डेमडे श्रीआचार्यजीना सेवक छे. तेथी जेवी ईच्छा श्रीआचार्यजीनी होय ते प्रमाणे श्रीनाथजी करे. डेमडे श्रीआचार्यजी रञ्चक अप्रसन्न होय तो श्रीठाकुरजी ऐने कहीय अङ्गीकार न करे. तो श्रीआचार्यजी त्याग करे तेना हाथनी सामग्री श्रीगोवर्द्धनधर डेम आरोगे ? तेथी (अर्ही) श्रीआचार्यजीना अंतःकरणेना त्याग नथी. तेथी श्रीआचार्यजीऐ वेदमंत्रथी जल छांटीने त्याग ऐ माटे कथीं डे मर्यादा रीतिथी त्याग छे. ते लोकेने डेभाडना माटे अथा जणु डे त्याग छे; परंतु लीला-सृष्टिना जणु डे दैवी छे ते तो श्रीआचार्यजीना अंगरूप छे. जेम अंगने त्याग नहीं तेम दैवी जवनो त्याग नहीं. तेथी श्रीनाथजी आरोग्या. तेथी श्रीआचार्यजी 'अंतःकरण प्रबोध'मां कहे छे:—(श्लोक उपर जुअो) यांडाली राजपत्नि मानवती ज्यारे थई त्यारे अपमान पणु थाय परंतु राणीपणु न जय. मान अपमान तो थायज छे. अने 'नवरत्न' ग्रंथमां कहे (श्लोक उपर जुअो) ज्ञान अज्ञान करीने जेतुं निवेदन भगवानमां

प्रानप्रिय भयो, वाकों परिवेदना दुःख चिन्ता काहेकी ? तातें रामानन्द द्वारा इतनो सिद्धान्त प्रगट करन अर्थ आपु मर्यादा रीति सों त्याग किये । जैसे रास-पञ्चाध्याई में भक्तन को मान देखि अन्तरधान भये, सो कहा छोड़ि गये ? भक्तन कों प्रभु छोड़े ही नहीं । बाहरतें उनके हृदय में जाई बैठे । तैसेही सबके देखत त्याग कियो । सो वैष्णव को अपराध ऐसो भारी बताये । और वैष्णव कों बोलनो संभारि के । काहेतें, आश्रय अन्याश्रय सब वचन में है । उह बाई ने संसारी मनुष्य सों प्रसन्न होई के कह्यो, तुमने मोकों जिबाई तब श्रीठाकुरजी उठि गये । और रजो क्षत्रानी तें श्रीआचार्यजी ने घृत मांग्यो सो न दियो । और रात्रि कों विनती करि सामग्री अरोगाई । तातें एक वचन अहंकार के सगरे धर्म को नास करे । एक वचन प्रसन्नता के प्रभु ततकाल प्रसन्न होई । सो वैष्णव कों संभारि के बोलनो, यह जताये । और महात्मी जीव हैं, तिनकों दृढ़ता जताये । पुष्टिमार्ग में अङ्गीकार कियो । श्रीठाकुरजी इतने पर न छोड़े, जलेबी अरोगे । समर्पनी को त्याग नाहीं । श्रीठाकुरजी के वचन दृढ़ किये । जो-ब्रह्मसंबन्ध की आज्ञा दिये । तब कहे, जिनकों तुम ब्रह्मसंबन्ध करावोगे ताकों मैं न छोड़ूंगो । सोऊ कहत हैं,

थयु ते श्रीकृष्णुने प्राणु प्रिय थयो. तेनी परिवेदना, दुःख-चिन्ता शा माटे? तेथी रामानन्द द्वारा आटलो सिद्धान्त प्रकट करवा माटे आपे मर्यादा रीतिथी त्याग कर्यो. जम रासपञ्चाध्यायीमां लकतोनुं मान जेठ अंतर्धान थया ते शु छोडी गया १ लकतोने प्रभु छोडेन नही. अहारथी अमना हृदयमां जेठ ऐसे. तेज रीते अधाना जेतां त्याग कर्यो. अमां वैष्णवोने अपराध आने मोटा छे अम अनाथुं. वणी वैष्णवोने संभाणीने भोलवुं. डभके आश्रय, अन्याश्रय अथुं वचनमां छे. ते आंछअ ससारी मनुष्यथी प्रसन्न थधने कथुं, तमे मने जवाडी. तारे श्रीठाकुरज पधारी गया अने रजे क्षत्राणी पासे श्रीआचार्यजअ धी मांग्युं ते न आप्यु अने रात्रिअ विनंती करी सामग्री आरोगावी. तेथी अेक वचन अहंकारनुं अथा धर्मोने नाश करे. अेक वचन प्रसन्नतानुं (तेथी) प्रभु प्रसन्न थाय. तेथी वैष्णवने संभाणीने भोलवुं अे जणुअथुं. वणी माहात्म्यवाणा जवे छे तेमने दृढता जणुावी. पुष्टि-मार्गमां अगीकार कर्यो. श्रीठाकुरजअ आटलु थया छतां न छोडयो. जवेभी आ-रागी. समर्पणीने त्याग नही. श्रीठाकुरजनां वचन दृढ कर्या. जे अहसंबंधनी आज्ञा आपी तारे कथुं छे, जेने तमे अहसंबंध करावशे तेने हुं नही छोडुं, ते पशु कहे छे. अर्दी वचन सायां करी देभाडयां. वणी वैष्णवोने श्रीगोवर्द्धनधरे अे जणु-

तो जोछी भात सा लामत्रा पर, ततनका पक्षप त्राए ल
जताये, यद्यपि रामानंद भ्रष्ट विकल भयो सोऊ श्रीनाथजी
करतो, इतनी मर्यादा नाही छोड़ी। और जो वैष्णव अस-
मानन्द सों हू गये बीते। त्याग उनही को जाननो। तार्ते
नों। और श्रीआचार्यजी रामानन्द को त्याग करि उहां
जो-अन्तःकरण को त्याग नाही। तार्ते आप उहाँ रहते तो
च करतो। तो इतनो सिद्धान्त कहांते प्रगट होई ? और
नीद्वार होई तवही जलेवी रामानन्द अरोगावें। ताको कारन
। रामानन्द को त्याग भयो जाने हैं, सो दिखाये त्याग
नाथजी के पास बैठे हैं। यह जताये, जो-लौकिक वैदिक
, जाको त्याग किये। अलौकिक आधिदैविक देह श्रीगोव-
सेवा करत है। इत्यादिक भाव प्रगट भये दिखाये ॥४९॥

✽

✽

ल (थधने) भने पत्नरनी जलेपी धरी ते हुं श्रीआचार्यजीनी
आरोग्यो. तो सुंदर रीतिथी सामग्री धरे तेनी धणी प्रीतिथी
जशाण्युं, यद्यपि रामानंद भ्रष्ट विकल थयो ते पणु श्रीनाथ-
मान करतो. झेटली मर्यादा न छोडी अने ज वैष्णव अस-
मानंदथी पणु गया विला. त्याग तेमनो ज जाणुवो. तेथी
देवुं वणी श्रीआचार्यजी रामानंदनो त्याग करी त्यां रखा नही.
नो त्याग नही. तेथी जे आप त्यां रहेता तो विनंती करी करी
टलो सिद्धान्त क्यांथी प्रकट थात ? अने श्रीआचार्यजी श्री-
ज जलेपी रामानंद आरोगावे तेनुं कारणे जे, हे पधा
॥ग थयो जणु छे तेथी देप्पाडयुं डे त्याग नथी. रामानंद तो
। छे. जे जशाण्युं, डे लौकिक-वैदिक देह त्यां विकल थध छे
। ठिक आधिदैविक देह श्रीगोवर्द्धनधरनी पासो ज छे. ते सेवा
प्रकट देप्पाडया.

वैष्णव ॥४९॥

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, विष्णुदास छीपा, ये आगरे के पास गाम है तहां रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ए लीला में श्रीचन्द्रावलीजी की सखी हैं। 'कमला' इनको नाम है। सो आगरे के पास के गाम में एक छीपा के घरमें प्रगटे। सो बड़े भये वर्ष बीस के तब ब्याह भयो। सो पिता वस्त्र छाप देय विष्णुदास आगरे में जाइ बेच लावें। सो ऐसे करत एक समय श्रीआचार्यजी आगरे पधारे। सो विष्णुदास सुन्दर छींट के थान ले आगरे गये। तब श्रीआचार्यजी ने कृष्णदास सों कही, यह छीपा के पास छींट आछी है, सो तू ले, जो-मांगे सो दे। तब कृष्णदास ने विष्णुदास सों कही, यह छींट के थान सगरे हमकों दे। याके दाम हैं सो तू ले। सो विष्णुदास ने चौगुनो मोल कछो। सो कृष्णदास ने सगरे रुपैया गिन दिये। और कहे, और आछे थान होई सो ले आज।

तब विष्णुदास चक्रत होई रहै। जो-एतो बड़े महापुरुष अलौकिक जीव है। जो-मोल न कियो। सगरे थान लिये, ताके दाम दिये। सो इनकों छींट देने उचित नाहीं है। इनको पैसा मेरे घर आवेगो तो सगरो घर बैरागी होई जायगो। तब विष्णुदास ने कही, ये सगरे अपने रुपैया लेऊ, मेरे छींट के थान फेरि देऊ।

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुना सेवक, विष्णुदास छीपा, ये आग्रानी पासे गाम छे त्यां रहता, तेमनी वार्ताना भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—ये लीलामां श्रीचंद्रावलीजीनी सखी छे। 'कमला' अेभनुं नाम छे। ते आग्रानी पासेना गाममां अेऊ छीपाने त्यां प्रकट्या। पछी मोटा थया वर्ष वीशना त्तारे लगन थयुं। पछी पिता वस्त्र छापी दे ते विष्णुदास आग्रामां नधने वेयी लावे। अेम करतां अेऊ समय श्रीआचार्यजी आगरे पधर्या ते विष्णुदास सुंदर छींटनां थान लई आग्रे आग्या। त्तारे श्रीआचार्यजीअे कृष्णदासने कछुं, आ छीपानी पासे छींट सारी छे ते तू ले। न मांगे ते आप। त्तारे कृष्णदासे विष्णुदासने कछु, आ छींटनां थान अमने दे। अेना पैसा छे ते तू ले। त्तारे विष्णुदासे आरगथु भूत्य कछु, त्तारे कृष्णदासे अथा इपीआ गणी दीधा। अने कछुं, भीअ सारां थान होय तो लई आव। त्तारे विष्णुदास यकीत थध रह्या। नअे, अे तो डोअ महापुरुष अलौकिक अव छे, डम न भूत्य न क्युं। आपुं थान लीधु। तेना पैसा आप्या। माटे अेमने छींट आपनी उचित नथी। अेमने पैसा मारा धरमां आवशे तो अंधुं धर बैरागी थध नशे। त्तारे विष्णुदासे कछुं, आ अथा पैसा तमारा (पाछा) ले। मारी

तब कृष्णदास ने कही, तू बड़ो मूर्ख दीसत है ? तें मोल कह्यो, सो दाम दिये । अब यह थान कबहूँ फिरे नाहीं । तेरे टोटा होई तो और हू रूपैया ले । चोगुने तो दाम लिये । तब विष्णुदास ने कही तुम महापुरुष हो, तातें तिहारो द्रव्य घर में आये सगरो घर वैरागी होइगो । याते मैं नाहीं तुमकों बेचत । जो थान देऊ नाहीं तो यह रूपैया हू राखो, और थान हू राखो । पगन्तु रूपैया तिहारो मोकों पचे नाहीं । तब कृष्णदास ने कही यह थान श्रीआचार्यजी ने श्रीमुख सों सराहना करि के कहै, लेऊ, सो तू कोटीन उपाइ करे तो (हू) यह थान फिरे नाहीं । और श्रीआचार्यजी बिना सेवक और को कछू लेत नाहीं । तातें रूपैया तेरे मन आवे सो ले जा, और थान तेरे मन आवे तो लैयो । तेरे मन आवे तो मति लैयो । तब विष्णुदास ने कही, श्रीआचार्यजी कहां हैं ? तब कृष्णदास ने कही, यह पीपर के रूख के नीचे विराजे हैं । तब विष्णुदास आई श्रीआचार्यजी को दरसन करि दण्डवत करि कहै, महाराज ! आपुके सेवक में इतनो धर्म है, तो आप तो भगवान हैं । अब मोकों सरनि लेऊ । तब श्रीआचार्यजी कहै, तुम कौं सरनि कैसे लेय ? तुम छीपन में रहत हो । आचार, क्रिया पुष्टिमागीय धर्म कैसे निबहेगो ? तब विष्णु-

छीटनां थान मने पाछां आपो. त्पारे कृष्णदासे कछुं, तू अहु मुर्ख टप्याय छे ! ते' भूख्य कछु तेटला पैसा आप्या. हुवे आ थान अ्यारेय इरे नहीं. तारे टोटा होय तो भीज पणु इपीया ले. यारगणु तो पैसा लीधा. त्पारे विष्णुदासे कछुं, तमे महापुइष छे. तेथी तमाइं द्रव्य घरमां आवे अधुं घर वैरागी थरो. तेथी हु तमने वेयतो नथी. भाटे थान आपो; नहीं तो आ इपीया पणु राभो. भीजं थान पणु राभो. परंतु' तमारा इपैया मने पचे नहीं. त्पारे कृष्णदासे कछुं, आ थान श्रीआचार्यज्ये श्रीमुखथी वण्णालु करीने कछुं, ले, ते तू कोटी उपाय करे तो पणु आ थान इरे नहीं अने श्रीआचार्यज्ये सेवक विना भीज डोअतुं लेता नथी. तेथी इपीया तारा मनमां आवे ते लई न अने भीजं थान तारा मनमां आवे तो लावळ तारा मनमां आवे तो न लावळ. त्पारे विष्णुदासे कछुं, श्रीआचार्यज्ये अ्यां छे ? त्पारे कृष्णदासे कछुं, आ पीपणना अड नीचे भिराळ छे. त्पारे विष्णुदासे आवीने श्रीआचार्यज्येनां दर्शन करी दंडवत् करीने कछुं, महाराज ! आपना सेवकमां आटवो धर्म छे तो आप तो भगवान छे. हुवे मने शरणु लो. त्पारे श्रीआचार्यज्ये कहे, तमने शरणु डेवी रीते लइअे ? तमे छीपाअोमां रहे छे. आचार-क्रिया पुष्टिमागीय धर्म डेवी रीते नलशे ? त्पारे विष्णुदासे विनंती करी, महाराज ! हुवे आपनो सेवक थयो त्पारे ज्ञाति-व्यव-

दास ने बिनती करी, महाराज ! अब आपको सेवक भयो । तब ज्ञाति व्यौहार को डर कहा है ? मा बाप मानेंगे, आपुके सेवक होंगे, तो भेले उनके रहूँगो, नहीं तो न्यारो घर करि रहूँगो । तातें कृपा करि के सरन लीजिये । तब श्रीआचार्यजी ने कही, जा, श्रीयमुनाजी में स्नान करि आऊ । तब विष्णुदास श्रीयमुनाजी में न्हाई अपरस ही में आवत हते, सो छूय गये । कोऊ को जूठो पत्ता उडिके देह सों लाग्यो । तब फेरि के न्दान कों चले । तब श्रीआचार्यजी ने कही, विष्णुदास फेरी क्यों चलें ? तब विष्णुदास ने कही, महाराज ! पत्ता उडिके देह सों लग्यो सो छुई गयो । सो फेरि न्दान जात हों । तब श्रीआचार्यजी कहै अबही तें तू छ्वाछाई में समुझत है ? तब विष्णुदास ने बिनती करी, महाराज ! मैं कहा जानो, किन सों छवो कहैत है ? यह आपकी कृपा तें जानि परी है । तब श्रीआचार्यजी कहै ठाड़ो रहि, हमहू कों श्रीयमुनाजी के तीर मध्याह्न की सन्ध्या करनी है, तातें तहां तोकों नाम सुनावेंगे । तब विष्णुदास ने बिनती करी, महाराज ! मेरे लिये यह श्रम मति करो, न्हाई के आऊँगो । आप अपनी इच्छातें पधारो तो सुखेन पधारो, मेरे लिये पधारो तो मोकों अपराध परेगो । तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होइके कहैं, तुम सरीखे वैष्णव के लिये तो लीला

हारनो उर शो छे ? मा—आप मानशे, आपना सेवक थशे तो अमना भेगो रहीश. नहीं तो अलग घर करीने रहीश. तेथी कृपा करीने भने शरणे दो. त्पारे श्रीआचार्य-
 लये कछु, न, श्रीयमुनालमां स्नान करी आव. त्पारे विष्णुदास श्रीयमुनालमां
 न्हाई अपरसमां आवता हुता ते अडकी गया. डोधनुं नुडुं पत्तुं उडीने देहथी लाग्युं.
 त्पारे इरी न्हावाने यात्या. त्पारे श्रीआचार्यलये कछु, विष्णुदास ! इरी डम यात्या ?
 त्पारे विष्णुदासे कछु, महाराज ! पत्तुं उडीने देहथी लाग्युं तेथी छोवाध (असडाध)
 गयो. तेथी इरी न्हावा नडं छुं. त्पारे श्रीआचार्यलये कहे, हुमाणांथी तूं छुवा-
 छूतमां समजे छे ? त्पारे विष्णुदासे विनंती करी, महाराज ! हुं शु न्हाइ डोने
 छुवा-छुत कहे छे ? आ आपनी कृपाथी न्हाणी पड्यु छे. त्पारे श्रीआचार्यलये कहे,
 लभो रहे. अमारे पणु श्रीयमुनालना तीरे मध्याह्नती संध्या करवी छे तेथी त्यां तने
 नाम संभणावीशुं. त्पारे विष्णुदासे विनंती करी, महाराज ! मारा माटे आप श्रम
 न करै. न्हाधने आवीश. आप आपनी धर्यथी पधारो तो सुभेथी पधारो. मारा
 माटे पधारो तो भने अपराध पडशे. त्पारे श्रीआचार्यलये प्रसन्न थधने कहे, तमारा
 सरमा वैष्णवोने माटे तो लीलाभांथी पधार्या छीअ. अने परिक्रमा करीअ छीअ.

में तें पधारै हैं । और परिक्रमा करत हैं । मायावाद खण्डन करि, भक्तिमार्ग को स्थापन करें हैं । अनेक ग्रंथ सब वैष्णव के लिये किये हैं । तातेँ यह तू काहे कौ कहत है, श्रम मति करो । तव विष्णुदास ने कही महाराज मोकूँ तो कही चहिये । सेवक को यह धर्म है । तव श्रीआचार्यजी श्रीयमुनाजी के तीर पधारि विष्णुदास कौ न्दवाह नाम सुनाये, ब्रह्म संबध कराये । तव विष्णुदास ने विनती करी, महाराज मैं मूर्ख हों, सो ऐसी कृपा करो, जो—श्रीभागवत आदि आपके ग्रंथ में कछु ज्ञान होई । आपु के मार्ग को सिद्धान्त जान्यो जाई । तव श्रीआचार्यजी 'सेवाफल' ग्रन्थ करि विष्णुदास कौ सुनाये । सो सुनिके विष्णुदास ने विनती करी, महाराज ! सेवाफल ग्रन्थ के सुनेतेँ सगरे शास्त्र पुराण को ज्ञान भयो । परन्तु सेवाफल ग्रन्थ को अभिप्राय समुझिये मैं नाहीं आयो । तव श्रीआचार्यजी कहैं, ग्रंथ सेवाफल ऐसो ही कठिन है । भली करी तू पूछ्यो । पाछे आप 'सेवाफल की टीका' करि के सुनाये । तव सगरे मार्ग को सिद्धान्त विष्णुदास के हृदयारूढ़ भयो । सो भगन होइ गए । तव कृष्णदास ने कही, यह तेरो छोट को थान है चहिये तो ले जाऊ । चाहे दाम लेह, चाहे भेट करो । तव विष्णुदास ने कृष्णदास सौं विनती करी, जो—मैं तिहारे संगतेँ श्रीआचार्यजी की सरनि पायौ । सो तुम भगवदीय होई ऐसे

मायावाद खण्डन करी लक्ष्मिमार्गनुं स्थापन करीये छीये. अनेक ग्रंथो अवा वैष्णवोने भाटे क्योँ छे. तेथी आ तूँ डेम कहे छे ? श्रम न करो. तारे विष्णुदासे कहुँ, महाराज ! मारे तो कहेवुं ओधये. सेवकनो आ धर्म छे. तारे श्रीआचार्यजी श्री-यमुनाजी तीरे पधारी विष्णुदासने न्दवाही नाम संभणाव्युं. ब्रह्मसंबध कराव्यु. तारे विष्णुदासे विनंती करी महाराज ! हुं मूर्ख छुं. तेथी अवी कृपा करो के श्री-भागवत आदि आपना ग्रंथनुं कंधक ज्ञान थाय. आपना मार्गनो सिद्धांत आव्यो अथ. तारे श्रीआचार्यजी 'सेवा-इल' ग्रंथ करी विष्णुदासने संभणाव्यो. ते सांभणीने विष्णुदासे विनंती करी महाराज ! 'सेवा-इल' ग्रंथना सांभणवाथी अवा शास्त्र-पुराणनुं ज्ञान थयुं. परंतु 'सेवा-इल' ग्रंथनो अलिप्राय समजसां न आव्यो. तारे श्रीआचार्यजी कहे, ग्रंथ 'सेवा-इल' अवेण कठण छे. साइं क्युं तेँ पूछ्युं ? पछी आपे 'सेवाइल' नी टीका करीने संभणावी. तारे मार्गनो समग्र सिद्धान्त विष्णुदासना हृदयाइठ थयो. ते भगन थई गया. तारे कृष्णदासे कहुँ, आ ताइं छोटनुं थान छे; ओधये तो लई अ. आहे पैसा ले. आहे भेट करो. तारे विष्णुदासे कृष्णदासने विनंती करी, के में तमारा संगथी श्रीआचार्यजीनुं शरण भेणव्युं. तमे भगवदीय

मोसों मति कहो । किनकी छींट कौन भेट करे ? यह सगरो प्रान सरीर जब जहां श्रीआचार्यजी कहैं तहां विनियोग कराइयो । तब कृष्णदास प्रसन्न होइ चुप करि रहै । पाछे श्रीआचार्यजी विष्णुदास सों कहैं, अब तुम अपने घर जाऊ । तब विष्णुदास ने कही, जो—महाराज ! अब मेरो घर तो आपुकी चरन कमल की रज में है । सो छोड के कहां जाऊँ ? तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होई कैं कहे, जो—सो तो साँच, परन्तु हम तो अडेल पधारत हैं । तुमहु उह गाम में रहो । पाछे श्रीगुसाईंजी श्रीगोकुल वास करें तब तुम गोकुल जाइ, श्रीगुसाईंजी पास रहियो । अब तुम कों संसार बाधा करि सकेगो नाहीं । जातें मन आवे तहां रहो । और तुम श्रीगुसाईंजी की लीला संबंधी हो । तातें तिहारो सगरो मनोरथ पूर्ण श्रीगुसाईंजी करेंगे । हम तुमकों अङ्गीकार करि अपने किये हैं । तुम सदा भगवद् सेवा में मगन रहोगे । तब विष्णुदास दंडवत् करि अपने गाम आये । श्रीआचार्यजी अडेल पधारिके विष्णुदास की छींट श्रीनवनीतप्रियाजी कों अङ्गीकार कराये । इहां विष्णुदास घर में आई मा बाप सों कह्यो मैं न्यारो रहूंगो । तब मा बाप कहैं, न्यारो रहिवे को कारन कहा ? तब विष्णुदास ने कह्यो, मेरो मन यही करत है । सो न्यारों रहौं । पाछे स्त्री आई, तब स्त्री सों कहैं, तू श्रीठाकुरजी की सेवा करे तो

थई अमे मने न कडे। डोनी छीट डोणु भेट करे ? आ अंधुं प्राणु—शरीर न्यारे न्यां श्रीआचार्यजी कडे त्यां विनियोग करावने। त्यारे कृष्णदास प्रसन्न थई यूप थई रह्या। पछी श्रीआचार्यजी विष्णुदास ने कडे। हुवे तमे तभारा धर नव। त्यारे विष्णुदासे कहु, डे महाराज । हुवे भाइं धर तो आपना यरणकमलनी रजमां छे। ते छोडीने क्यं नव ? त्यारे श्रीआचार्यजी प्रसन्न थइने कडे, डे ते तो सायुं। परंतु अमे तो अडेल पधारीअे छीअे तमे पणु ते गाभमां रहे। पछी श्रीगुसांछळ श्रीगोकुलवास करे त्यारे तमे श्रीगोकुल नई श्रीगुसांछळ पासे रहेअे। हुवे तमने संसार आधा करी शकरी नही। नथी मन आवे त्यां रहे। वणी तमे श्रीगुसांछळनी दीला—संबंधी छे। तेथी तभारे अधे मनोरथ पूर्ण श्रीगुसांछळ करशे। अमे तमने अंगीकार करी पोताना कर्था छे। तमे सदा भगवत्सेवामां मगन रहेशे। त्यारे विष्णुदास दंडवत् करी पोताना गाम आव्या। श्रीआचार्यजीअे अडेल पधारीने श्रीनवनीतप्रियाअे विष्णुदासनी छीट अंगीकार करावी। अही विष्णुदासे धरमां आवी मा—आपने कहु, हुं अलग रहीश त्यारे मा—आप कडे, अलग रहेवानुं करणु शुं छे ? त्यारे विष्णुदासे कहु, भाइं मन अमेन कडे छे डे हुं अलग रहुं। पछी स्त्री

अदेल चलि के तोकौं सेवक कराऊँ। तेरे हाथ को जल तब लेऊँगो, नहीं तो तू मेरे पास मति आवे। तब स्त्री दस बीस गारी देके उठि गई। कह्यो, तैं श्रीठाकुरजी की पूजा करन को नाम लियो सो मैं तेरो मुख न देखूंगी। वैरागिनी फकीरनी होय सो ठाकुरजी पूजे। मेरे मा बाप भाई, मैं कैसे पूजौंगी। तब विष्णुदास मन में प्रसन्न भये, जो-श्रीठाकुरजी नें बलाय काटी। भली भई, यह आपुतें छोड़ि गई। सो विष्णुदास थोरो सो कपड़ा छापें। सो आगरे बेचि आवें, जामें देह निर्वाह होई। और सगरे दिन-रात मानसी सेवा श्रीआचार्यजी के ग्रंथ श्रीसुबोधनीजी के भाव में मगन रहैं।

वार्ता प्रसंग १—सो कितनेक दिन में श्रीगुसाईंजी श्रीगोकुल वास किये। तब विष्णुदास छीपा वृद्ध भये। सो श्रीगोकुल आई श्रीगुसाईंजी कों दण्डवत करि बिनती किये, सगरो प्रकार कहैं। जो-या प्रकार श्रीआचार्यजी ने कृपा करि सरन लिये। पाछे आपको सोंपे, आपकी सरन आयो हूं। कहूं टहल में राखिये। तब श्रीगुसाईंजी विष्णुदास के उपर प्रसन्न होइ कहैं, जो-तुम श्रीआचार्यजी के कृपापात्र सेवक हो, सो कहो तहां राखें। तब विष्णुदास विचारे, जो-अब मैं वृद्ध भयो, और सेवा जन्मपर्यन्त निवहेगी नाही। तातें श्रीगुसाईंजी की पौरी पर रहूं।

आवी त्यारे स्त्रीने ऊहे, तू श्रीठाकुरजी की सेवा करे तो अडेल जधने तने सेवक करानुं। तारा छथनुं जल त्यारे लछश. नहीं तो तू भारी पासे आवीश नडी। त्यारे स्त्री दश-बीस गाणो दधने यादी गध. कथुं डे ते श्रीठाकुरजी की पूजा करवानुं नाम दीधुं ते डुं ताइ मुष् नडी जेड. वैरागनी, इकीरनी छोय ते श्रीठाकुरजी पूज. भारे मा-आप, साईं डुं डेवी रीते पूजुं ? त्यारे विष्णुदास मनमां प्रसन्न थया डे श्रीठाकुरजी के बला काटी. लखुं थयुं. जे जेनी जेणे छोडी गध. पछी विष्णुदास थोडुं क उपडुं छापे. ते आगरा वेची आवे. तेमां देह निर्वाह थाय. जने पधो दिस-रात मानसी सेवा (मां), श्रीआचार्यजीना ग्रंथ श्रीसुबोधनीजीना भावमां मगन रहे.

वार्ता प्रसंग १-पछी डेडसाक दिसमां श्रीगुसाईंजी के श्रीगोकुल वास कर्यो. त्यारे विष्णुदास छीपा वृद्ध थया अडले श्रीगोकुल आवी श्रीगुसाईंजीने दंडवत करी बिनती करी पधो प्रकार कह्यो, डे आ प्रकारे श्रीआचार्यजी के कृपा करीने शरखे दीधो. पछी आपने सोंध्यो. आपनी शरखे आब्यो छुं, डोछ डडलमां राभो. त्यारे श्रीगुसाईंजी के विष्णुदासना उपर प्रसन्न थधने कहे, डे तमे श्रीआचार्यजीना कृपापात्र सेवक छो तेथी

भावप्रकाश—काहेतें सूरदासजी गाये हैं । “ मारग रोकि परघो हठि द्वारे पतित-सिरोमनि सूर ” सो मैं पतित हों, श्रीगुसाईंजी के द्वार पर मोकों पावन श्रीगुसाईंजी आवते जाते दरसन देकें करेंगे । यह विचारि, विष्णुदास ने कही, महाराज ! आपकी पौरी पर रहन कों मेरो मन है ।

तब श्रीगुसाईंजी कहें, आछो, पौरी पर रहो, तब विष्णुदास पौरी पर रहे । सो श्रीगुसाईंजी जब पधारें, तब विष्णुदास कों पुकारें, (जो)-विष्णुदास प्रसन्न हो ? तब विष्णुदास कहें, यह चरन कमल के आश्रय तें प्रसन्न हों, या प्रकार श्रीगुसाईंजी विष्णुदास पर कृपा करते, या प्रकार पौरी पर रहते ।

वार्ता प्रसंग २—सो जहां तहां तें ब्राह्मण पंडित श्रीगुसाईंजी तें वाद करन कों आवते । सो विष्णुदास ने कही, ये पंडित श्रीगुसाईंजी सों वाद करन कों आवत हैं, सो इनकों मैं ही प्रतिउत्तर करि बिदा करि देऊँ तो श्रीगुसाईंजी कों इतनो श्रम न करनो पड़े । यह विचारि, जो-पंडित आवते, तिनसों वाद करि निरुत्तर करि देई । तब पंडित जाने, जो-जिनके पौरिया में यह मामर्थ है, जो-हमकों जुबाब न आयो, तो श्रीगुसाईंजी सों हम कहा वाद करेंगे ? यह विचारि

कहो। त्यां राणे. त्यारे विष्णुदासे विचार्युं, के लुवे लुं वृद्ध थयो छुं. पीळ सेवा न्म-
लर नलशे नही. तेथी श्रीगुसांघळनी पोण उपर रहुं.

भावप्रकाश—डेभडे सूरदासजे गायुं छे ‘मारग रोकि पर्यो लुठ द्वारे पतित शिरोमनी सूर’ ते लुं पतित छुं. श्रीगुसांघळना द्रा० उपर मने पावन श्रीगुसांघ-
ळ आवतां नतां दर्शन दधने करशे. जे विचारी विष्णुदासे कथुं, महाराज ! आपनी पोण उपर रहेवानुं माइ मन छे.

त्यारे श्रीगुसांघळ कळे, साइं, पोण उपर रहे। त्यारे विष्णुदास पोणी उपर रधा. पछी श्रीगुसांघळ न्यारे पधारें त्यारे विष्णुदासने पोडारे (डे) विष्णुदास प्रसन्न छे ? त्यारे विष्णुदास कळे, आ यरखुकमलना आश्रयथी प्रसन्न छुं. जे प्रकारे श्रीगुसांघळ विष्णुदास उपर कृपा करता. जे प्रकारे पोणी उपर रहेता.

वार्ता प्रसंग २-ते न्यां त्यांथी ब्राह्मण पंडित श्रीगुसांघळथी वाद करवाने आवता. ते विष्णुदासे कथुं, जे पंडित श्रीगुसांघळथी वाद करवाने आवे छे तो जेभने लुं न प्रतिउत्तर करी विदाय करी दडि. तो श्रीगुसांघळने आरलो श्रम न करवो पडे. जे विचारी जे पंडित आवता तेभनाथी वाद करी निरुत्तर करी देता. त्यारे पंडित नल्ले जेना पोणीआभां आवुं सामर्थ छे के अमारथी नवाथ न आव्यो तो श्रीगुसांघ-

सगरे ब्राह्मण पौरि परतें नित्य फिरि जाते । तब एक दिन श्रीगुसां-
ईजी नें वैष्णव सों कह्यो, जो-आजकल पंडित ब्राह्मण वाद करन
नाहीं आवत हैं ताको कारन कहा ? तब वैष्णव नें कही, महाराज !
पंडित तो बहोन आवत हैं, परि पौरि पर विष्णुदास उनसों वाद
करि निरुत्तर करि देत हैं, सो चले जात हैं । तब श्रीगुसांईजी ने वि-
ष्णुदास कों बुलाई कै कह्यो, तुमकों तो श्रीआचार्यजी को कृपा बल
ऐसोई है । तातें तुमकों सगरे शास्त्र में अभिनिवेश है । सो पंडित
कों निरुत्तर करत हो । परन्तु हमारे द्वारे ब्राह्मण खाली हाथ जात
हैं, सो आछो नाहीं । तातें हमारे पास पंडितन कों आवन दीजो ।
उनसों चर्चा करि उनकों कछु देके विदा करेंगें । तब विष्णुदास दण्डवत
करि कहैं, महाराज ! अब आवन देऊंगो । मैं आपके श्रम होइवे के
लिए पंडितन कों विदा करि देतो । अब आवन देऊंगो । सो विष्णु-
दास पें ऐसी कृपा हती ।

भावप्रकाश—और 'नामरत्न' ग्रन्थ श्रीरघुनाथजी-श्रीगुसांईजी के लालजी-
किये हैं तामें कहै हैं, 'विप्रदारिद्र्यदावाग्नि ।' ब्राह्मण को दरिद्र रूप जो काष्ट,
ताके दावाग्नि (सो) बुझावन हारे । तातें यह नाम प्रगट करन (अर्थ) ब्राह्मण कों
बहोत समाधान करि द्रव्यादिक दे विदा करते ।

शुभी अमे शुं वाह करीशुं ? आ विचारी अथा आह्वण पोणी उपरथी नित्य पाछ
जता । त्यारे अेक द्विसे श्रीगुसांईशुं वैष्णुवोने कछुं, डे व्याज कास पंडित आह्वण
वाह करवा नथी आवता तेतुं कारण शुं ? त्यारे वैष्णुवो अे कछुं, महाराज ! पंडित
तो अहु आवे छे परंतु पोणी उपर विष्णुदास अेमनाथी वाह करीने निरुत्तर करी दे
छे ते याव्या जय छे । त्यारे श्रीगुसांईशुं विष्णुदासने पोसावीने कछुं, तमने तो श्री-
आचार्यशुं कृपाअस अेषुं न छे, तेथी तमने अथा शास्त्रोमां अभिनिवेश छे, तेथी
पंडिताने निरुत्तर करे छे । परंतु अमारा दरवाजेथी आह्वण आली हाथ जय छे, ते
ठीक नही । तेथी अमारी पासे अेमने आववा देजे, अेमनाथी अर्था करी अेमने कंठ
अने विहाय करीशुं । त्यारे विष्णुदास दंडवत करीने कछे, महाराज ! तुवे आववा छश.
हुं आपने श्रम थाय अेम समने पंडिताने विहाय करी देतो, तुवे आववा छश.
ते विष्णुदास उपर अेवी कृपा हती ।

भावप्रकाश—अने 'नामरत्न' ग्रन्थ श्रीरघुनाथशुं श्रीगुसांईशुंना दासशुं-
अे क्यो छे तेमां कछुं छे 'विप्रदारिद्र्यदावाग्नि' आह्वणतुं दरिद्ररूप न काष्ट तेना

भावप्रकाश—काहेतें सूरदासजी गाये हैं । “ मारग रोकि परघो हठि द्वारे पतित-सिरोमनि सूर ” सो मैं पतित हों, श्रीगुसांईजी के द्वार पर मोकों पावन श्रीगुसांईजी आवते जाते दरसन देकें करेंगे । यह विचारि, विष्णुदास ने कही, महाराज ! आपकी पौरी पर रहन कों मेरो मन है ।

तब श्रीगुसांईजी कहें, आछो, पौरी पर रहो, तब विष्णुदास पौरी पर रहे । सो श्रीगुसांईजी जब पधारें, तब विष्णुदास कों पुकारें, (जो)-विष्णुदास प्रसन्न हो ? तब विष्णुदास कहें, यह चरन कमल के आश्रय तें प्रसन्न हों, या प्रकार श्रीगुसांईजी विष्णुदास पर कृपा करते, या प्रकार पौरी पर रहते ।

वार्ता प्रसंग २—सो जहां तहां तें ब्राह्मण पंडित श्रीगुसांईजी तें वाद करन कों आवते । सो विष्णुदास ने कही, ये पंडित श्रीगुसांईजी सों वाद करन कों आवत हैं, सो इनकों मैं ही प्रतिउत्तर करि विदा करि देऊँ तो श्रीगुसांईजी कों इतनो श्रम न करनो पड़े । यह विचारि, जो-पंडित आवते, तिनसों वाद करि निरुत्तर करि देई । तब पंडित जाने, जो-जिनके पौरिया में यह मामर्थ है, जो-हमकों जुबाव न आयो, तो श्रीगुसांईजी सों हम कहा वाद करेंगे ? यह विचारि

कहे। त्यां राणे. त्यारे विष्णुदासे विचार्युं, के हवे हुं वृद्ध थयो छुं. पीछ सेवा न्म-लर नक्षरे नही. तेथी श्रीगुसांईजीनी पोण उपर रहुं.

भावप्रकाश—इमके सूरदासजीये गायुं छे ‘मारग रोकि पर्यो हठ द्वारे पतित शिरोमनी सूर’ ते हुं पतित छुं. श्रीगुसांईजीना द्वार उपर मने पावन श्रीगुसांईजी आवतां जतां दर्शन दधने करे. ये विचारी विष्णुदासे कथुं, महाराज ! आपनी पोण उपर रहेवानुं माइं मन छे.

त्यारे श्रीगुसांईजी कहे, साइं, पोण उपर रहे। त्यारे विष्णुदास पोणी उपर रहे। पछी श्रीगुसांईजी न्यारे पधारें त्यारे विष्णुदासने पोकारे (के) विष्णुदास प्रसन्न छे ? त्यारे विष्णुदास कहे, या चरकमलना आश्रयथी प्रसन्न छुं. ये प्रकारे श्रीगुसांईजी विष्णुदास उपर कृपा करता. ये प्रकारे पोणी उपर रहेता.

वार्ता प्रसंग २-ते न्यां त्यांथी ब्राह्मण पंडित श्रीगुसांईजीथी वाद करवाने आवतां. ते विष्णुदासे कथुं, ये पंडित श्रीगुसांईजीथी वाद करवाने आवे छे तो येमने हुं न प्रतिउत्तर करी विदाय करी दईं. तो श्रीगुसांईजीने आरक्षो श्रम न करवो पडे. ये विचारी ने पंडित आवता तेमनाथी वाद करी निरुत्तर करी देता. त्यारे पंडित नखे नेना पोणीआमां आपुं सामर्थ छे के आसाराथी जवाप्य न आव्यो तो श्रीगुसांई-

सगरे ब्राह्मण पौरि परतें नित्य फिरि जाते । तव एक दिन श्रीगुसां-
ईजी में वैष्णव सों कह्यो, जो-आजकल पंडित ब्राह्मण वाद करन
नाहीं आवत हैं ताको कारन कहा ? तब वैष्णव में कही, महाराज !
पंडित तो वहीन आवत हैं, परि पौरि पर विष्णुदास उनसों वाद
करि निरुत्तर करि देत हैं, सो चले जात हैं । तब श्रीगुसांईजी ने वि-
ष्णुदास कों बुलाई कै कह्यो, तुमकों तो श्रीआचार्यजी को कृपा बल
ऐसोई है । तातें तुमकों सगरे शास्त्र में अभिनिवेश है । सो पंडित
कों निरुत्तर करत हो । परन्तु हमारे द्वारे ब्राह्मण खाली हाथ जात
हैं, सो आछो नाहीं । तातें हमारे पास पंडितन कों आवन दीजो ।
उनसों चर्चा करि उनकों कछू देके विदा करेंगें । तब विष्णुदास दण्डवत
करि कहैं, महाराज ! अब आवन देऊंगो । मैं आपके श्रम होइवे के
लिए पंडितन कों विदा करि देतो । अब आवन देऊंगो । सो विष्णु-
दास पें ऐसी कृपा हती ।

भावप्रकाश—और 'नामरत्न' ग्रन्थ श्रीरघुनाथजी-श्रीगुसांईजी के लालजी-
किये हैं तामें कहै हैं, 'विप्रदारिद्र्यदावाग्नि ।' ब्राह्मण को दरिद्र रूप जो काष्ट,
ताके दावाग्नि (सो) बुझावन हारे । तातें यह नाम प्रगट करन (अर्थ) ब्राह्मण कों
बहोत समाधान करि द्रव्यादिक दे विदा करते ।

एथी अने शुं वाद करीशुं ? आ विचारी अथा आह्वण पोणी उपरथी नित्य पाछ
जता । त्यारे अेक द्विसे श्रीगुसांईजी वैष्णवोने कहुं, के आन काल पंडित आह्वण
वाद करवा नथी आवता तेतुं कारण शुं ? त्यारे वैष्णवो अे कहुं, महाराज ! पंडित
तो अहु आवे छे परंतु पोणी उपर विष्णुदास अेभनाथी वाद करीने निरुत्तर करी हे
छे ते आस्था नय छे । त्यारे श्रीगुसांईजी विष्णुदासने पोसावीने कहुं, तमने तो श्री-
आचार्यजी कृपाअस अेवुं न छे । तेथी तमने अथा शास्त्रोभां अभिनिवेश छे । तेथी
पंडितोने निरुत्तर करे छे । परंतु अमारा दरवाजेथी आह्वण आदी हाथ नय छे । ते
ठीक नही । तेथी अमारी पास अेभने आववा हेजे । अेभनाथी अर्था करी अेभने कंठ
अेने विहाय करीशुं । त्यारे विष्णुदास दंडवत करीने कहे, महाराज ! हुवे आववा अश-
हुं आपने श्रम थाय अेम समथने पंडितोने विहाय करी हेतो । हुवे आववा अश-
ते विष्णुदास उपर अेवी कृपा हती ।

भावप्रकाश—अने 'नामरत्न' ग्रन्थ श्रीरघुनाथजी श्रीगुसांईजीना हाथ-
अे अर्थो छे तेभां कहुं छे 'विप्रदारिद्र्यदावाग्नि' आह्वणुं दरिद्र रूप न काष्ट तेना

वार्ता-प्रसंग ३—और एक मथुरा को भट्ट हतो। सो श्रीगुसां-ईजी सों नित्य कहतो, जो-तिहारे सगरे वैष्णवन कों मैं एक दिन जिमाऊं। तब श्रीगुसांईजी कहते, जो-तुम या बात में मति परो, घामें कहा लेऊंगे ? सो वह मानतो नहीं। नित्य कहतो। सो आपु सुनि के चुप रहते। सो वह भट्ट श्रीगुसांईजी को स्वसुर हतो। सो श्रीगुसांईजी कू न्योतो कियो। तब श्रीगुसांईजी वाके घर मथुरा भोजन कों पधारे। तब श्रीगुसांईजी विष्णुदास सों कहैं, जो-जल की झारी ले हमारे संग चलो। तब विष्णुदास जल की झारी ले श्रीगुसांईजी के संग चले। सो श्रीगुसांईजी उह भट्ट के उहां भोजन करि कें उठे। तब विष्णुदास ने श्रीगुसांईजी के हाथ धुवाई, सुद्ध आचमन करायो। तब श्रीगुसांईजी कहैं, हम श्रीगोकुल पधारत हैं, तू थाल को महाप्रसाद ले, थाल मांझि के अइयो। सो श्रीगुसांईजी तो श्रीगोकुल पधारें। विष्णुदास अपने जल सों पोतना करि पातरि धरि थाल को सगरो महाप्रसाद पातरि में करे। पाछे थाल मांझि धोईकें न्यारो धरि महाप्रसाद लेन लागे। तब वह भट्ट और सामग्री ले विष्णुदास पास आई कें कह्यो, यह जूठन क्यों खात हो ? मैं सुन्दर

दवाशि, भुजाववावाणा। तेथी आ नाम प्रकट करणार्थं ब्राह्मण्युतु अहु समाधान करी द्रव्यादिक छै विहाय करता।

वार्ता प्रसंग ३-वणी अेक मथुरानो लट्ट हतो। ते श्रीगुसांईजीने नित्य कहेतो, के तभारा अधा वैष्णवोने हुं अेक दिवस नभाडुं। त्यारे श्रीगुसांईजी कहेतो, के तभे आ वातमां न पडा। अेमां शुं देशा ? परंतु ते मानतो नहीं। नित्य कहेतो। तेथी आप सांभणीने थूप रहते। ते लट्ट श्रीगुसांईजीने सासरो हतो। पछी तेथे श्रीगुसांईजीने नोंतर्था। त्यारे श्रीगुसांईजी अेने धरे मथुरामां भोजन माटे पधार्था। त्यारे श्रीगुसांईजी विष्णुदासने कहे, के नलनी जारी लघ अमारी साथे यालो। त्यारे विष्णुदास-नलनी जारी लघ श्रीगुसांईजीनी साथे याल्या। पछी श्रीगुसांईजी ते लट्टने त्यां भोजन करीने छिया। त्यारे विष्णुदासे श्रीगुसांईजीने हाथ धोवडावी शुद्ध आचमन कराव्युं। त्यारे श्रीगुसांईजी कहे, अमे श्रीगोकुल पधारीअे छीअे। तू थाणनो महाप्रसाद लघ थाण मांछने आवणें। पछी श्रीगुसांईजी तो श्रीगोकुल पधार्था। विष्णुदास पोताना नलथी पोतवुं करी थाणनो सधणो महाप्रसाद पातणमां धर्यो। पछी थाण मांछ धोअने अलग धरी महाप्रसाद लेवा लाग्या। त्यारे ते लट्टे थोळ सामग्री लघ विष्णुदास पासे आवीने कहुं, आ नुअणु केम आव छे ? हुं सुंदर सामग्री धरुं ते दो। त्यारे विष्णुदासे

सामग्री धरों सो-लेज। तब विष्णुदास ने कही, मोकों तिहारो नाहिं चहिये। जो-मेरी पातर में डारोगे तो मेरी पातर छूड़ जायगी। तब भट्ट क्रोध करिकें चल्यो गयो। विष्णुदास महाप्रसाद ले श्रीगोकुल आये। अपनी पौरी पें बैठि रहैं। पाछें वह भट्ट श्रीगोकुल आई श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-तुम्हारो सेवक शूद्र ने मोसों ऐसो कह्यो, जो-मेरी पातर में सामग्री धरोगे तो मेरी पातर छूड़ जायगी। तब श्रीगुसांईजी कहें, तुम तो कहेत हते हम सब सेवकन कों भोजन करावेंगे। सो एक सेवक शूद्र कों जिमाई न मके तो सगरे सेवकन कों कैसे जिमावते? तब वह भट्ट सरमाई के चुप होई रह्यौ। सो विष्णुदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कहाँ ताई कहिये।

वार्ता ॥५०॥

भावप्रकाश—या वार्ता में यह जताये, जो-भट्ट के हाथ को फल न लेनो। काहेतें, भट्ट के यहां श्रीगुसांईजी को संकल्प्यो द्रव्य है, जातें न लेनो। ताहीतें श्रीगुसांईजी उह भट्ट के इहां विष्णुदास भगवदीय कों ले गये। जो-ए सगरे धर्म में निपुण हैं, न चूकेंगे। जो-साधारण वैष्णव कों ले जाई, और वह भट्ट के हाथ को खाई तो ताको धर्म जाई। और आगे वैष्णव की बुद्धि ओछी है, सो सगरे खान लगें तो वैष्णव धर्म कैसे बढ़े? तातें विष्णुदास कों ले गये। सो वि-

भने तमारुं नहुीं जेधये. जे भारी पातरमां धरशा तो भारी पातर अलडाध जशे. त्यारे ते लट्टे क्रोध करीने आल्यो गयो. विष्णुदास महाप्रसाद लध श्रीगोकुल आल्या. पोतानी पोणी उपर जेसी रखा. पछी ते लट्टे श्रीगोकुल आवीने श्रीगुसांईजीने कहुं, के तमारुं सेवक शूद्रे भने आवुं कहुं, के भारी पातरमां सामग्री धरशा तो भारी पातर अलडाध जशे. त्यारे श्रीगुसांईजी कहे, तमे तो कहेता हुता के अधा सेवकेने भोजन करावीशुं. पछुं जेके सेवक शूद्रने जभाडी न शक्या? तो अधा सेवकेने केम जभाडशा? त्यारे लट्टे शरमाधने चुप थध रह्यो. ते विष्णुदास जेवा कृपापात्र भगवदीय हुता. तेथी जेमनी वार्ता कथां सुधी कहीजे?

वार्ता ॥ ५० ॥

भावप्रकाश—या वार्तामां जे जणुव्युं के लट्टेना हाथतुं कर्ष न लेवुं. केमके लट्टेने त्यां श्रीगुसांईजीतुं संकल्पेलुं द्रव्य छे तेथी न लेवु. तेथी न श्रीगुसांईजी ते लट्टेने त्यां विष्णुदास भगवदीयने लर्ष गया, के जे अधा धर्ममां निपुण छे. युक्तशे नही. जे साधारण वैष्णवने लर्ष जत जने ते लट्टेना हाथतुं पात तो तेना धर्म जत. वणी आगण वैष्णवनी बुद्धि ओछी छे ते अधा आवा लागे तो वैष्णव-

ष्णुदास कहें, मेरी पातर छूई जाईगी। यामें भट्ट को स्वरूप जताये। जा सामग्री कों स्पर्श भट्ट करें ताकों छूई गई वस्तु जाननो। तहां यह सन्देह बड़ो है, जो—उत्तम ब्राह्मण है, श्रीगुसाईंजो के सगे सम्बन्धी, श्रीगुसाईंजी इनके हाथ को लेत हैं। तब वैष्णव को कहा दोष है? यह सन्देह है तहाँ कहत हैं, जो—शास्त्र में देह सम्बन्धी कहे हैं, और भाव सम्बन्धी कहे हैं। सो देह सम्बन्धी यादव और कंसादिक और भाव सम्बन्धी ब्रजभक्त। सो जादवन कों हू श्रीठाकुरजी पृथ्वी पर भार रूप जानें, तातें नास किये। और ब्रजभक्तन कों भाव सम्बन्ध हतो, तातें ब्रजभक्तन के प्रेम सों बस भये। यद्यपि श्रीठाकुरजी जादवन के संग रहे, परन्तु भगवद् स्वरूप को ज्ञान न भयो। और ब्रजभक्तन कों जन्म होत ही भयो। नंदरायजी के घर आय सब पांय परी। तैसे श्रीगुसाईंजी कों भट्ट सगे सम्बन्धी जानत हैं, कोऊ निन्दक हू है। द्रव्यादिक लेवे की चाह राखत है। तातें और कहाँ ताई कहिये। आसुरावेसी जानने। और भक्तन कों दास भाव है। सो दास धर्म यह, जो—स्वामी की जूठन लेनो। तातें भट्ट के हाथ को लेय तो वाकी बुद्धि सर्वथा नासही होई। और श्रीगुसाईंजी लेत हैं। सो ईश्वर है। जैसे श्रीठाकुरजी दावानल पान करि गये, और सों न होई।

धर्म देवी रीते वधे ? तेथी विष्णुदासने लई गया। वणी विष्णुदास कहे, भारी पातण अमडाशे अमां भट्टनुं स्वरूप अतांयु। न सामग्रीने स्पर्श भट्ट करे तेने अमडाई गयेदी वस्तु अणुवी। त्यां अ सं देह मोटा छे डे उत्तम ब्राह्मण छे श्रीगुसाईंजनां सगां स अंधी छे श्रीगुसाईंज अमना हाथनु ले छे त्यारे वैष्णवने शो दोष ? अ स देह छे त्यां कहे छे, डे शास्त्रमां देह स अंधी कथा छे अने भाव सं अंधी पणु (कथा) छे। ते देह सं अंधी यादव अने कंसादिक अने भाव स अंधी प्रजभक्त। ते यादवने पणु श्रीठाकुरज्ये पृथ्वी उपर भार रूप अणुया। तेथी नास कर्यो। अने प्रजभक्तोने भावस अंधे हुतो तेथी प्रजभक्तोना प्रेमथी वश थया। यद्यपि श्रीठाकुरज यादवोनी साथे रथा। परतु (तेमने) भगवद् स्वरूपनु ज्ञान न थयु अने प्रजभक्तोने जन्म थतांज ज्ञान थयुं। नंदरायजना धरे आनी अंधी पगे पडी। ते प्रकारे श्रीगुसाईंजने भट्ट सगासं अंधी अणु छे डाई निन्दक पणु छे। द्रव्यादिक लेवानी आहना रापे छे। तेथी वधु कयां सुधी कडीअे ? आसुरावेशी अणुवा अने भक्तोने दास भाव छे। ते दास धर्म अ, डे स्वामीनुं जुहुं लेवुं। तेथी भट्टना हाथनुं ले तो अनी बुद्धि सर्वथा नाशज थाय। अने श्रीगुसाईंज ले छे ते ईश्वर छे। नम श्रीठाकुरज दावानल पान करी गया। अनाथी न थाय। तेमज श्रीगुसाईंज

तैसे ही श्रीगुसांईजी ज्ञाति-व्यवहार के लिये ले । परन्तु वैष्णव कों न लेनो । और जैसे गंगाजल यमुनाजल कोई हीन जाती अपने पात्र में भरि लावे सो वैष्णव न लेई तैसे ही । महाप्रसाद तो उत्तम गंगाजल है, जैसे जल आकास तें निर्मल स्वांती की बूंद वरसत है । परन्तु पात्र भेद तें सीप में मोती होइ । बाँस में परे बंस लोचन होई । सर्प के मुख में विष होई । या प्रकार के भेद होत हैं । तातें भट्ट भये तथा अन्य मार्गीय के हाथ को सर्वथा न लेनो । तहाँ कोई कहे, जो-भट्ट नाम समर्पण करि सेवा करत हैं तिनके हाथ को कैसे ? तहाँ कहत हैं, इनकों भगवद् धर्म स्पर्श करे ही नहीं । काहे तें, नाम समर्पण श्रीगुसांईजी के बालक सों ले, फेरि ज्ञाति बुद्धि करत हैं । तब सगरे धर्म नास होत हैं । उनकी कहा सेवा और कहा समर्पण ? गुरु में ज्ञाति बुद्धि करे जूठन चरणामृत न लेई । तब हीन धर्म होई । और कोई ऐसो होई जूठन चरणामृत ले ज्ञाति बुद्धि न करें, वैष्णव की रीति चले । सोऊ जब दूसरे भट्ट के हाथ को ले तब वैसे ही होई । तातें भक्ति वैष्णव कों श्रीगुसांईजी ने दीनी है । तहाँई है । याके लिये विष्णुदास द्वारा सगरे वैष्णवन कूं शिक्षा दिये ।

वैष्णव ॥५०॥

✽

✽

✽

ज्ञाति व्यवहार भाटे ले परन्तु वैष्णव न लेवुं. वणी जेभ गंगाजल, जमुनाजल डाई हीन जति पोताना पात्रमां भरी लावे तो वैष्णव न ले तेमज महाप्रसाद तो उत्तम गंगाजल छे. जेभ आकाशथी निर्मल स्वातितुं बूंद वषे छे परन्तु पात्र लेदथी सीपमां मोती थाय वांसमां वंशदोयन थाय. सर्पना मुष्पमां विष थाय जे प्रकारे लेद थाय छे. तेथी भट्ट थाय तथा अन्यमार्गीयना हाथतुं सर्वथा न लेवुं. त्यां डाई कहे, के भट्ट नाम-समर्पण करी सेवा करे छे तेमना हाथतुं केम ? त्यां कहे छे जेभने भगवद् धर्म स्पर्श करेन नही. केभडे नाम-समर्पण श्रीगुसां-इना बालकथी ले पाछी ज्ञातिबुद्धि करे छे त्यारे अधे धर्म नाश थाय छे. जेभनी शी सेवा ? जेभने शुं समर्पण ? गुरुमां ज्ञाति बुद्धि करे, जूठणु यरणामृत न ले त्यारे हीन धर्म होय. वणी डाई जेवो होय जूठणु यरणामृत ले, ज्ञाति बुद्धि न करे, वैष्णवनी रीतिजे याले. ते पणु ज्यारे पीज भट्टना हाथतुं ले त्यारे तेवोय थाय. तेथी भक्ति वैष्णवने श्रीगुसांईज्ये आपी छे त्यां ज छे. जेभने भाटे विष्णुदास द्वारा अधे वैष्णवने शिक्षा आपी.

वैष्णव ॥५०॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, जीवनदास क्षत्री सिंहनन्द
में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ए जीवनदास लीला में श्रीयमुनाजी की सखी हैं । तहाँ
'ईश्वरी' इनको नाम है । सो सिंहनन्द में एक क्षत्री के घर जन्मे । बड़े भये बरस
बीस अठारा के । तब जीवनदास को पिता सिंहनन्द तें दिल्ली कों आयो । सो
दिल्ली में दलाली करन लाग्यो । सो जीवनदास कों राग रंग को इस्क बहोत, सो
जो-कछु कमाय सो वेश्या भवैया कों दे नाच देखे । पिता कमाइ जामें खाई ।
सो यह बात पिता ने सुनी तब जीवनदास के ऊपर बहोत खीज्यो । जो-तू आज
पाछे नाच तमासे में मत जईयो । तब जीवनदास ने कही, जो-अब न जाऊँगो ।
पाछे इनसों तो राग रंग सुने बिना रह्यो न जाई । सो पिता सों छिपाई के जाई ।
तब पिताने फेरि सुनी । तब जीवनदास पर बहोत खीज के कह्यो, तू दिल्ली ते
सिंहनन्द जा । सहर में तेरो काम नहीं है । तब दोई रुपैया जीवनदास कों पिताने
दिये । और कहे, कछुक दिन सिंहनन्द में रहि अपने घरमें । पाछे मेरे पास अईयो ।
तब जीवनदास दोई रुपैया ले सिंहनन्द चले । सो मार्ग में विचार किये, मोकों
राग रंग बिना तो रह्यो न जाइगो । और सिंहनन्द में सगरे लोग पहिचानि के,

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुना सेवक, जवनदास क्षत्री, सिंहनन्दमां रहता,
तेमनी वार्ताने भाव कहीअये छीअये—

भावप्रकाश—अये जवनदास लीलामां श्रीयमुनाजीनी सखी छे. त्यां
'ईश्वरी' अेतुं नाम छे. ते सिंहनन्दमां अेक क्षत्रीना धरे जन्म्या. मोटा थया वर्ष
२०-१८ ना. त्यारे जवनदासने पिता सिंहनन्दनथी दिल्ही आव्यो. ते दिल्हीमां
दलाली करवा लाग्यो. ते जवनदासने राग रंगने ईशक धर्यो. ते जे कंई कमाय ते
वेश्या भवैयाने ईई नाच जुअये. पिता कमाय तेमां भाय. अये वात पिताअये सांभणी
त्यारे जवनदासना उपर धर्युं भीअये, डे तू आज पछी नाच तमाशांमां जईश
नहीं. त्यारे जवनदासे कछुं, डे हुवे नहीं जउ. पछी अेनाथी तो राग रंग सांभज्या
बिना रह्यो अय नहीं. तेथी पिताथी छाना जाता. त्यारे पिताअये इरी सांभज्यु.
त्यारे जवनदास उपर अहु भीअने कछु, तू दिल्हीथी सिंहनन्द ज. शहरमां तार
काम नथी. पछी पिताअये जवनदासने अये इपीआ आप्या अने कछु, थोडा दिवस
सिंहनन्दमां आपणा धरमां रही पछी मारी पासे आवजे. त्यारे जवनदास अये
इपीआ लई सिंहनन्द आट्या. पछी मार्गमां विचार कुर्यो अने राग-रंग बिना
तो रह्यो नहीं अय. वणी सिंहनन्दमां अया मनुअये आणभाजना. तेथी त्यां सांभज्युं

ताते वहाँ मुन्यो देख्यो न जाई । और पिता घर पठायो । यह विचार करत मार्ग में ठाड़े हे रह्यो । मो दोई घरी वीति गई ठाड़े ही । इतने एक भवैया को संघ आयो । सो आगरे जात हतो । सो वह संघ देखिके जीवनदास ने पूछी तुम कौन हो, कहाँ ते आये हो, कहाँ जाओगे ? तव उनने कही, हम भवैया हैं, पश्चिम तें आये हैं, आगरे में जायंगे । तव जीवनदास ने विचारी, आगरा बड़ो सहर बतावत हैं, सो देखों, घर जाय कहाँ करूँगे ? सो जीवनदास उन भवैया के संग आगरे आये । आगरे में कपरा की दलाली करें, तामें खानपान करें । जो अधकी कमाई तामें राग रंग मुनि आवें । या प्रकार बरस तीन रहे । सो पिता ने जानी, जो-पुत्र कहूँ मार्ग में मारयो गयो । के कोई और देस निकरि गयो । राग रंग को इस्क बुरो होत है सो गयो । यह विचारि, रोय के बैठि रह्यो ।

यहाँ आगरे में एक समय ठग आछे कपरा पहिर कें आये । सो जीवनदास मों कही, जो-हमकों आछे आछे कपरा लेने हैं । सो जीवनदास एक वजाज की हाट तें रुपैया सौ को माल लायो । तव वा ठग वातन में लगाई, सांझ पारी । जीवनदास सों कह्यो, जो-सबेरे तुमकों जो राखेंगे ताके दाम देहंगे । सो तुम भोर ही आई जैयो । सो जीवनदास वा ठग को ऊपर को वैभव गेहना कपरा देखि

नेथुं न नथ अने पिताअे घर भेकट्ये। अेभ विचार करतां मार्गमां उभा थर रह्यो। अेभ उभा उभा भे धडी वीती गर्ध। अेटलाभां अेक भवैयानो संघ आव्यो। ते आगरा नतो हुतो। ते संघ अेधने अुवणुदासे पूछ्युं तमे ठाणु छे ? क्यांथी आव्या छे ? क्यां नशे ? त्यारे अेभणुे कथुं, अेभे भवैया छीअे, पश्चिमथी आव्या छीअे आत्राभां नधयुं, त्यारे अुवणुदासे विचार्युं, आत्रा भोटुं शहर कहे छे। ते अेधअे। धर नरु शु करीश ? पछी अुवणुदास अे भवैयानी साथे आत्रा आव्या। आत्राभां कपडानी दलादी करे तेभां पान-पान करे। न अधिकभां कमाय तेभां राग-रंग सांभणी आवे। अे प्रकारे वर्ष त्रणु रह्यो। पिताअे नअुथुं, के पुत्र कंठ मार्गमां भरी गथे के कोरु भीन देश निकणी गथे। रागरंगनो धरक भोटो डाय छे ते गथे। अे विचारी रोधने भेसी रह्यो। अह्नीं आत्राभां अेक समय ठग सारां कपडां पहेरीने आव्या। ते अुवणुदासने कथुं, के अमने सारां सारां कपडां लेवां छे। त्यारे अुवणुदास अेक कपेडावाणानी दुकानथी रूपीआ सोनो माल लाव्या। त्यारे ते ठगोअे वातमां लगाडी सांभ पाडी। अुवणुदासने कथुं, के सवारे तमने न राभीयुं तेना पैसा आपीयुं। तेथी तमे न्हेदी सवारे आवी न्जे। ते अुवणुदास ठगोनो

जाने, जो-ये भले मनुष्य हैं। सो जीवनदास रात्रि कों राग रंग सुनवे गये। यहाँ ठग सगरे कपरा ले चले गये। सो भोर भये आयके देखें तो कोई नहीं। लोगन छँ पूछे। तब लोगन ने कहीं, ऊह तो ठग हते। दस पाँच को सीधो सामग्री हू ले गये। तब जीवनदास वह बजाज पास जाई कछो, तिहारो माल या प्रकार सगरो गयो। तब वह बजाज ने जीवनदास कों बन्दीखाने दिये। सो तीन दिन बीते, अन्न जल विना। तब जीवनदास ने उह बजाज छँ कछो, अब मेरे प्रान तो निश्चय जायेंगे। तातें एक काम तुम करो। मेरे पिता दिल्ली में दलाली करत हैं, बाकों में लिखूंगो। और सिंहनन्द में मेरो घर है, तहाँ लिखूंगो। सो तिहारे सौ रूपैया उपाय करि भरि देऊंगो। तातें तुम मोकों यमुना-स्नान करावो। काहे तें, हमारे गाम में श्रीवल्लभाचार्यजी के सेवक सब वैष्णव आपुस में बात करत हते, जो-श्रीयमुनाजी में नाहेतें, पान कियेतें, सगरो दुःख जात हैं। नौतम देह होत हैं। तातें वैष्णव झूठ न बोले। सो तुम मोकों जमुनाजी नाहवे देऊ, तो तिहारे रूपैया को विचार कछु करूं। तब वह बजाज के मन में दया आई, सो कछो, हम घर में न्हवाई दे जमुना जल सों। तातें खान पान करो। तब जीवनदास ने कही, जो-

उपरनो वैसन धरेणुं कपडां जेठ, जणु ठे जे बला मनुष्य छे. पछी जवणुदास रात्रिजे राग-रग सांखणवा गया. अहीं ठग अधां कपडां लठ याटया गया. पछी सवार थये आवीने जुजे तो डांठ नहीं. डोडाने पूछ्यु त्यारे डोडोजे कछु, ते तो ठग हुता. दश-पांयनु सीधु-सामग्री पणु लठ गया. त्यारे जवणुदासे ते कपडांना वेपारीनी पास जेधने कछु, तमारो माल आ प्रकार अधे गयो. त्यारे ते वेपारीजे जवणुदासने देखापानां भूझ्या. त्रणु दिवस वीत्या अन्न जल विना त्यारे जवणुदासे ते वेपारिने कछुं, छेवे मारा प्राणु निश्चय जशे. तेथी जेक काम तमे करे. मारा पिता दिल्लीमां दलाली करे छे जेमने हु लभीश. अने सिंहनंदां मारे धर छे त्यां लभीश. ते तमारा से इपीआ उपाय करी मरी दधश. तेथी तमे मने यमुना-स्नान करावो. डेभके अमारा गाममां श्रीवल्लभाचार्यजना सेवक अधे वैष्णु-वे आपसमां बात करता हुता दे श्रीयमुनाजमां न्हावाथी पान करवाथी अधु दुःख जय छे. नवीन देहु थाय छे. तेथी वैष्णुवे जुहुं जेवे नहीं. तमे मने श्रीयमुना-जमां न्हावा दे. तो तमारा इपीआने विचार कंठ करे. त्यारे ते वेपारीना मनमां दया आवी. ते कछुं, अमे धरमां जमनाजलथी न्हावावी दधजे. तेथी पानपान करे. त्यारे जवणुदासे कछुं, दे मोटुं पुण्य तो धारामां न्हावानुं छे. तेथी मने श्री-

बड़ो पुन्य धारा न्हाये को है । सो जो-मोको जमनाजी न्दान देऊगे तो आछो है । नाहिं तो मैं जल हूँ न लेऊँगो । मेरो कण्ठ सूखत है, सो आजकल मैं प्राण जाईगै । तब हत्या तिहारे ऊपर लगेगी । तब वह बजाज चार मनुष्य संग दिये, जो-इनको हाथि बांधिके जमना न्हाई लाओ । कहूँ यह हूवि न मरे । तातें गाढ़ो पकरे रहीयो । तब चारों मनुष्य दो हाथि बाँधि के श्रीयमुनाजी के तीर ले गये, जीवनदास को न्हाये । तहाँ श्रीआचार्यजी संध्यावन्दन करत हते । वैष्णव दस वीस गावत हते । ता समय श्रीआचार्यजी की दृष्टि जीवनदास पर परी । तब श्रीआचार्यजी जीवनदास को देखि कहें, यह कौन है ? याको हाथ बाँधे चार मनुष्य पकरे हैं, यहाँ लावो । तब सगरे वैष्णव जाय उन चारों मनुष्यन को समुझाये । सो जीवनदास को पकरे मनुष्य, श्रीआचार्यजी के पास आये । तब श्रीआचार्यजी कहे, जीवनदास राग रंग और देखे, सुनेगो ? तब जीवनदास ने कही, महाराज ! यह राग रंग को फल भोगत हों, पिता को कह्यो न मान्यो सो भोगनो (परचो) । तब श्रीआचार्यजी कृष्णदास को कहे यह जीवनदास को सौ रुपैया कहूँ सौ दिवाय, हमारे नाम लिखके याको छुड़ाय लाऊ । यह सुनत ही गाँव के दस वीस वैष्णव विनती करी, महाराज ! इतने के लिये कृष्णदास को आप काहे को पठावत हों ?

यमुनाञ्च न्हावा हो तो साइ. नहीं तो हुं जल पशु नहीं लव. भारे कंठ सूझाय छे. तेथी आनकालमां प्राणु जशे. तयारे हत्या तभारा उपर लागशे. तयारे ते वेपारीञ्च यार मनुष्य साथे आयां, के जेने हाथ बांधीने जमनामां न्हुवडावी लावे. कंठ जे डुभी न मरे. तेथी मजपूत पकडी रहेजे. तयारे यारे मनुष्य जे हाथ बांधीने श्रीयमुनाञ्च तीरे लई गया. जवणदासने न्हुवडाव्या. त्यां श्रीआचार्यञ्च संध्यावन्दन करता हुता. वैष्णव दश-वीस गाता हुता. ते समये श्रीआचार्यञ्चनी दृष्टि जवणदास उपर पडी. तयारे श्रीआचार्यञ्च जवणदासने जेधने कहे, आ डाणु छे ? आने हाथ बांधी यार मनुष्येञ्च पकडयोछे. अही लावे. तयारे यथा वैष्णवोञ्च जई ते यारे मनुष्येने समजव्या. पछी जवणदासने पकडीने मनुष्य श्रीआचार्यञ्च पासे आव्या. तयारे श्रीआचार्यञ्च कहे, जवणदास राग रंग भीजे जेधश, सांखणीश ? तयारे जवणदासे कछुं, महाराज ! आ राग-र गतुं इव लोगवु छुं. पितातुं कछु न सांखयुं ते लोगववु पडयुं. तयारे श्रीआचार्यञ्च कृष्णदासने कहे, आ जवणदासने सो इपीया कंठथी अपावी अभारा पाते लपावी जेने छोडावी हो. जे सांखणतां ज गामना दश-वीस वैष्णवोञ्च विनती करी, महाराज ! जेट-

हम छुड़ाय लावेंगे । तब श्रीआचार्यजी कहे, बेगे याकों छुड़ाय के लाओ । तब वैष्णव जीवनदास कों संग लाई वह बजाज कों कहे, जीवनदास कों छोड़ि देऊ, रुपैया सौ हम सों लेऊ । (पाछे) सो रुपैया दे जीवनदास कूँ श्रीआचार्यजी पास लाये । तब श्रीआचार्यजी कों दण्डवत करि, जीवनदास ने विनती करी, महाराज ! यह लौकिक बंदीखाने तें आप छुड़ाये । तो आप यह संसार रुपी बंदीखाने में ते मोकों छुड़ाओ । और धन्य श्रीयमुनाजी हैं, और धन्य तिहारे वैष्णव हैं । सो सिंहनंद में एक दिन अपने घर के कार्य हों वैष्णवन के पास गयो हतो । सो वैष्णव आपस में कहत हते । जो यमुनाजी के न्हाये सब दुःख जाय, नौतन शरीर होय । सो सत्य कहे । मैं अब ही न्हायो, यह लौकिक दुःख गयो । और संसार को दुःख हू आपकी कृपा तें जायगो । आप सेवक करोगे तब नौतन शरीर हू होई जायगो । तातें तिहारे वैष्णव धन्य हैं । एक क्षण में संग कियो ताकें फल को पार नहीं है । तब श्रीआचार्यजी कहे, श्रीयमुनाजी न्हाय आव । तब जीवनदास श्रीयमुनाजी न्हाय के श्रीआचार्यजी के पास आये । तब श्रीआचार्यजी जीवनदास कों नाम मुनाय, ब्रह्मसंबंध कराये । पाछे आप कहे, तू

दाने भाटे कृष्णदासने आप सा भाटे भोक्खो छे । अमे छोडावी लावीशुं । तारे श्री-
 व्याचार्यछ कहे नद्वी अने छोडावी लावो । तारे वैष्णव अवणुदासने संगे लई ते
 वेपारीने कहे, अवणुदासने छोडी हो । इपीया सो अमारी पासेथी हो । पछी सो
 इपीया छ अवणुदासने श्रीव्याचार्यछ पासे लाव्या । तारे अवणुदासे श्रीव्याचा-
 र्यछने दंडवत् करी, विनती करी, महाराज आ दौकिक अंदीपानेथी आपे छोडाव्यो
 तो हुवे आ ससार इपी अंदीपानामांथी (पणु) अने छोडावो । अने धन्य श्रीयमुनाछ
 अने धन्य तमारा वैष्णव छे । डभड अेक द्विसे सिंहनंदमां पोताना धरना कार्य भाटे
 हुं वैष्णवोनी पासे गयो हुतो ते वैष्णवो आपसमां कहेता हुता, डे श्रीयमुनाछ-
 ना न्हावाथी अधुं दुःख नय । नूतन शरीर थाय ते सत्य कछुं । हुं हभणुं न
 न्हायो । आ दौकिक दुःख गयुं । अने ससारतुं दुःख पणु आपनी कृपाथी नशे ।
 आप सेवक करशे तारे नूतन शरीर पणु थई नशे । तेथी तमारा वैष्णवो धन्य छे
 अेक क्षणमां संग कर्यो तेना इलनो पार नथी तारे श्रीव्याचार्यछ कहे श्रीयमु-
 नाछ न्हाई आव । तारे अवणुदास श्रीयमुनाछ न्हावने श्रीव्याचार्यछनी पासे
 आव्या । तारे श्रीव्याचार्यछवे अवणुदासने नाम सखणावी ब्रह्मसंबंध कराव्युं ।
 पछी आप कहे तू अमारा संग आल । अमे सिंहनंद तने पहांयाडीशुं । अहीं

हमारे संग चलि, हम सिंहनन्द तोकों पहाँचावेंगे । यहां रहेगो तो कछु दुःसंग लगे तो फिर विगरेगो । पाछे श्रीआचार्यजी वैष्णवन के घर पधारे, रसोई करि भोगि धरे । पाछे भोजन करि जूठन की पातर जीवनदास कों धरे । जीवनदास चोथे दिन महाप्रसाद लिये, सो देह उत्तम होय गई । पाछे श्रीआचार्यजी आगरे छँ जीवनदास कों संग ले पधारे, सो थानेस्वर आये । तव एक वैष्णव कों सिंह-नन्द पठाये, और कहे, जीवनदास के घर कहियो, जो-जीवनदास आयो है । तव वह वैष्णव सिंहनन्द जाई जीवनदास के पिता छँ कह्यो । तिहारो पुत्र श्रीआचार्य-जी के संग थानेस्वर आयो है । तव जीवनदास को पिता प्रसन्न होई के सिंहनन्द तें दोरघो आयो, सो जीवनदास कों थानेस्वर में मिल्यो । सो रोइ के छाती सों ल-गायो, और कह्यो-पुत्र तू कहां गयो हतो, हम तो जान्यो कहुँ मरि गयो । तव जीवनदास ने सगरी बात कही । या प्रकार श्रीआचार्यजी मोकों बन्दीखाने सों छुड़ाइ संग लियो, कृपा करी । परन्तु अब तुम घर में जाई मेरी स्त्री, माता सबकों इहां ले आवो । तुम सगरे श्रीआचार्यजी के सेवक होऊ, तो मैं घर में आऊँ । 'नाहीं तो मैं घर में न रहूंगो । तव पिताने कही, मैं सबकों लिवाइ लाऊँगो, तू कहेगो सो करूंगो । तव जीवनदास को पिता सिंहनन्द में जाई सबकों थानेश्वर ले

रहीश तो पाछे दुःसंग लागशे तो इरी भगडीश. पछी श्रीआचार्यजी वैष्णवोना धरे पधार्या. रसोई करी भोग धरे पछी भोजन करी जुठननी पातर अवशुदासने धरे. अवशुदासे योथा दिवसे महाप्रसाद दीधो. ते देहु उत्तम थर्य गध. पछी श्री-आचार्यजी आग्रथी अवशुदासने साथे लध पधार्या ते थानेश्वर आव्या. त्यारे अेक वैष्णवने सिंहनन्द मोकह्यो अने कहुं, अवशुदासना धरे कहेले के अवशुदास आव्यो छे. त्यारे ते वैष्णुवे सिंहनन्द जर्ध अवशुदासना पिताने कहुं, तभारे पुत्र श्रीआचार्यजी साथे थानेश्वर आव्यो छे. त्यारे अवशुदासने पित प्रसन्न थधने सिंहनन्दथी होडी आव्यो. ते अवशुदासने थानेश्वरमां भज्यो. पछी रोधने छातीथी लगाड्यो अने कहुं, पुत्र तू कथां गयो हुतो ? अमे तो आव्युं कंध मरी गयो. त्यारे अवशुदासे अधी बात कही, के आ प्रकारे श्रीआचार्यजी अे मने अं दीपानेथी छोटावीने साथे दीधो, कृपा करी. परंतु हवे तमे धरमां जर्ध मारी स्त्री, माता अधाने अर्ही लध आवो. तमे अधा श्रीआचार्यजीना सेवक थाव. तो हुं धरमां आवु; नहीं तो हुं धरमां नही रहुं. त्यारे पिताने कहुं, हु अधाने थोलावी लावीश. तू कहीश अे करीश. पछी अवशुदासने पित सिंहनन्दमां जध अधाने थानेश्वर

आयो । श्रीआचार्यजी सों विनती करी, महाराज ! जीवनदास के प्राण राखे । यह हम पर बड़ो उपकार किये । अब हम सगरे आपकी सरन हैं । नाम सुनाईये । तब श्रीआचार्यजी ने नाम सुनायो । तब जीवनदास ने श्रीआचार्यजी सँ विनती करी, महाराज ! सबनकों ब्रह्मसंबंध होई तो आछो । तब श्रीआचार्यजी कहैं, ये ब्रह्मसंबंध के अधिकारी नाहीं । इनकों नाम ही ते उद्धार होईगो । पाछे जीवनदास ने कही, महाराज ! अब मोकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीआचार्यजी ने श्रीनवनीत-प्रियजी के प्रसादी वस्त्र जीवनदास के माथे सेवार्थ पधराई कहैं, अब तुम घर में रहि भगवद् सेवा करो । तब जीवनदास पिता माता स्त्री सहित श्रीआचार्यजी कों दंडवत करि, विदा होई सिंहनंद में आये । तब जीवनदास ने माता पिता के आगे कही, जो-रूपैया आपु दे बंदीखाने तें मोकों छुड़ाये ऐसे दयाल श्रीआचार्यजी है । तब माता पिता ने कही, गुरुको ऋण माथे नहीं राखनो । सो सगरे गहने कपड़ा बेचे, सो एक सौ दस रूपैया आये । तब पिता ने जीवनदास सों कह्यो, यह रूपैया सगरे जीवनदास श्रीआचार्यजी कों दे आज्ञ । गुरु को ऋण माथे आछो नाहीं । तब जीवनदास एक सौ दस रूपैया ले श्रीआचार्यजी के आगे जाई धरे । तब श्री-

लघ आंव्यो. श्रीआचार्यजीने विनती करी, महाराज ! जवणुदासना प्राण राख्या. जे अमारा उपर मोटा उपकार क्यो, हुवे अमे अथा आपनी शरणे छीजे. नाम सलगावो. त्यारे श्रीआचार्यजीजे नाम संभगाव्यु. त्यारे जवणुदासे श्रीआचार्यजीने विनती करी, महाराज ! अथाने ब्रह्मसंबंध होय तो भाइ. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, आ ब्रह्मसंबंधना अधिकारी नथी. अमेना नामथीज उद्धार थसे. पछी जवणुदासे कथुं महाराज ! हुवे मने शी आज्ञा छे ? त्यारे श्रीआचार्यजीजे श्रीनवनीतप्रियजनां प्रसादी वस्त्र जवणुदासना माथे सेवा भाटे पधरावीने कथुं, हुवे तमे घरमां रही सेवा करे. त्यारे जवणुदास माता-पिता स्त्री सहित श्रीआचार्यजीने दंडवत करी विदाय थध सिंहुनदमां आंव्या. त्यारे जवणुदासे माता-पितानी आगण कथुं, ठे सो इपीआ आपी आपे मने डेहपानाभांथी छोडाव्यो जेवा दयालु श्रीआचार्यजी छे. त्यारे माता-पिताजे कथुं, गुरुतु ऋण माथे न राखवुं. तेथी अथां धरेणां कपडां वेच्यां तेना अकसे दश इपीआ आंव्या. त्यारे पिताजे जवणुदासने कथुं, जवणुदास ! आ अथा इपैया श्रीआचार्यजीने आपी आव. माथे गुरुतु ऋण साइ नहीं. त्यारे जवणुदासे अकसे दश इपैया लई श्रीआचार्यजीनी आगण जधने धर्या. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, आ तमे अटवो सं-

आचार्यजी कहें, यह तुम इतनो संकोच काहे कों कियो ? तुम तो हमारे हो । हम प्रसन्न हैं ताते तुमकों कछु बाधक न हतो । तब जीवनदास ने कही, महाराज ! हम कहा लायक हैं । आप जो उपकार कियो है, सो रोम रोम सब आपके देन हार हैं । आप जहाँ बेचोगे तहाँ बिकेंगे । विना मोल के गुलाम हैं । संसार रूप नर्क भोगत हैं । सो आप छुड़ाये । ये विनती दैन्यता सुनि बहोत प्रसन्न होइ श्रीआचार्यजी कहें, जीवनदास ! अब तुमकों संसार के दुःख सुख कछु बाधा न करेंगे । और जो तुम मनमें धारोगे सो मनोरथ तिहारे सगरे पूरण होंइगे । अब घर जाई भगवत् सेवा करो । तब जीवनदास दण्डवत करि घर आये । पाछे श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा कों पधारे । सो जीवनदास प्रीति सों सेवा करते । वैष्णव को स्नेह पूर्वक नित्य सत्संग करते । सो श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे ।

वार्ता-प्रसंग १—सो एक समें सिंहनन्द के वैष्णव सब मिलकें अड़ेल श्रीआचार्यजी के दरसन कों आवत हे । तामें जीवनदास हू हते । सो एक दिन मार्ग में मजल उतरि अपनो अपनो चौका दे सगरे वैष्णव रसोई करत हते, ता समें मेह चढ़ि आयो । चारों ओर तें घटा आई । सो बूंद बरसन लागी । तब सगरे वैष्णव कहें, मेह

डाय शा भाटे क्यो ? तमे तो अमारा छे. अमे प्रसन्न छीअे तेथी तमने कंई बाधक न हतु. त्तारे अणुदासे कथुं, महाराज ! अमे शुं लायक छीअे ? आपे ने उपकार क्यो छे तेनां आ अधां शोभशोभ आपनां देवादार छे. आप अयां वेयशो त्यां वेयाधशुं. विना मोलनां गुलाम छीअे. संसार रूपी नर्क भोगवता हता ते आपे छोडाव्या. आवी विनती दैन्यता सांझणी अहु प्रसन्न थई श्रीआचार्यअे कथुं, अणुदास ! हवे तमने संसारतु सुअुदुःख बाधा नहीं करे. वणी ने तमे मनमां धारशो ते अधां मनोरथ तमारो पूरुं थशे. हवे धर अछ भगवत्सेवा करे. त्तारे अणुदास दंडवत् करी धर आव्या. पछी श्रीआचार्यअे पृथ्वी परिक्रमाअे पधार्या. अणुदास प्रीतिथी सेवा करता. वैष्णवनां स्नेहपूर्वक नित्य सत्संग करता. श्रीठाकुरअे सानुभाव अणुभावना लाग्या.

वार्ता प्रसंग १—अेक समय सिंहनन्दना वैष्णव अधा भणीने अउल श्रीआचार्यअेनां दर्शने आवता हता तेमां अणुदास पणु हता. ते अेक दिवस मार्गमां मुकामे उतरी पोतपोतानो चोको छ अंधा वैष्णवो रसोई करता हता. ते समये मेह यही आव्या. त्तारे तरुथी घटा आवी. बूंद बरसवा लागी. त्तारे अधा वैष्णवो कहे,

आयो । श्रीआचार्यजी सों विनती करी, महाराज ! जीवनदास के प्राण राखे । यह हम पर बड़ो उपकार किये । अब हम सगरे आपकी सरन हैं । नाम सुनाईये । तब श्रीआचार्यजी ने नाम सुनायो । तब जीवनदास ने श्रीआचार्यजी सँ विनती करी, महाराज ! सवनकों ब्रह्मसंबंध होई तो आछो । तब श्रीआचार्यजी कहैं, ये ब्रह्मसंबंध के अधिकारी नाहीं । इनकों नाम ही ते उद्धार होईगो । पाछे जीवनदास ने कही, महाराज ! अब मोकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीआचार्यजी ने श्रीनवनीत-प्रियजी के प्रसादी वस्त्र जीवनदास के माथे सेवार्थ पधराई कहैं, अब तुम घर में रहि भगवद् सेवा करो । तब जीवनदास पिता माता स्त्री सहित श्रीआचार्यजी कों दंडवत करि, विदा होई सिंहनंद में आये । तब जीवनदास ने माता पिता के आगे कही, जो-रूपैया आपु दे बंदीखाने तें मोकों छुड़ाये ऐसे दयाल श्रीआचार्यजी है । तब माता पिता ने कही, गुरुको ऋण माथे नहीं राखनो । सो सगरे गहने कपड़ा बेचे, सो एक सौ दस रूपैया आये । तब पिता ने जीवनदास सों कह्यो, यह रूपैया सगरे जीवनदास श्रीआचार्यजी कों दे आज । गुरु को ऋण माथे आछो नाहीं । तब जीवनदास एक सौ दस रूपैया ले श्रीआचार्यजी के आगे जाई घरे । तब श्री-

लक्ष आब्यो. श्रीआचार्यजीने विनती करी, महाराज ! जवणदासना प्राण राख्या. जे अमारा उपर भोटो उपकार क्यो, हुवे अमे अधा आपनी शरणे छीजे. नाम सखणावो. त्यारे श्रीआचार्यजीने नाम संभणायु. त्यारे जवणदासे श्रीआचार्यजीने विनती करी, महाराज ! अधाने ब्रह्मसंबंध होय तो साइ. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, आ ब्रह्मसंबंधना अधिकारी नथी. अमेनो नामथीज उद्धार थसे. पछी जवणदासे कह्युं महाराज ! हुवे मने शी आज्ञा छे ? त्यारे श्रीआचार्यजीने श्रीनवनीतप्रियजीनां प्रसादी वस्त्र जवणदासना माथे सेवा भोटो पधरावीने कह्यु, हुवे तमे घरमां रही सेवा करे. त्यारे जवणदास माता-पिता स्त्री सहित श्रीआचार्यजीने दंडवत करी विदाय थध सिंहनंदमां आव्या. त्यारे जवणदासे माता-पितानी आगण कह्युं, ठे सो इपीआ आपी आपे मने उदध्यानामाथी छोटाव्यो जेवा दयालु श्रीआचार्यजी छे. त्यारे माता-पिताजे कह्यु, गुरुतु ऋण माथे न राखवुं. तेथी अधां धरैणुं कपडां वेच्यां तेना अकसे दश इपीआ आव्या. त्यारे पिताजे जवणदासने कह्युं, जवणदास ! आ अधा इपैया श्रीआचार्यजीने आपी आव. माथे गुरुतु ऋण साइ नहीं. त्यारे जवणदासे अकसे दश इपैया लई श्रीआचार्यजीनी आगण जधने धर्या, त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, आ तमे अटलो सं-

कृपापात्र हे । अपनी आन क्यों न दिवाई ? श्रीआचार्यजी की क्यों दिवाई ? तहाँ कहत हैं, जो-जीवनदास अपनी आन देते तोऊ ना वरसतो । परन्तु जीवनदास कों अपना महात्म्य प्रकट करनो भावत नाही । सो यातें, जो-ब्रहोत महात्म्य बड़े, सो क्वहूँ अहंकार आवे । सो विगार ही होई । तातें श्रीआचार्यजी अप्रसन्न होई । जो-तुच्छ कार्य में श्रीठाकुरजी कूँ श्रम कराये । तातें जीवनदास हृदय में पुष्टिमार्ग की रीति जानत हैं । तातें श्रीआचार्यजी को महात्म्य वैष्णव कों दिखाये । वै. ॥५१॥

✽ ✽ ✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, भगवानदास सारस्वत ब्राह्मण हाजीपुर के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में विसाखाजी की सखी हैं । लीला में इनको नाम 'सुगंधिनी' है । सो हाजीपुर में एक सारस्वत ब्राह्मण के घर जन्मे । सो पटना में एक यजमान के घर गये । तहां कलुक दिन रहे । ता समय भगवानदास वर्ष सतरह के हते । सो उह यजमान की बहोत टहल करि पाछे चलन लागे तब यह यजमान पावली के टका देन लाग्यो । तब भगवानदास क्रोध करके कहैं, मोकों नाहीं चहिये । तू लखपति होय के मोकों इतने दिन राखि के यह दक्षणा दियो ? मेरे

पात्र हुता. पोतानी आणु डेम न दीधी ? श्रीआचार्यजीनी डेम दीधी ? त्यां कडे छे, डे अणुदास पोतानी आणु देता तो पणु न वरसतो. परंतु अणुदासने पोतानुं माहात्म्य प्रकट करवुं इयतुं नथी. ते अथी, डे धणुं माहात्म्य वधे तो क्यारेय अहंकार आवे. तेथी अनिष्टज थाय. तेथी श्रीआचार्यजी अप्रसन्न थाय, डे तुअ छे कार्यमां श्रीठाकुरजीने श्रम कराव्यो. तेथी अणुदास हृदयमां पुष्टिमार्गनी रीति लणुे छे. तेथी श्रीआचार्यजीनुं माहात्म्य वैष्णवोने देखाडयुं. वै. ॥५१॥

✽ ✽ ✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना सेवक भगवानदास, सारस्वत ब्राह्मण, हाजीपुरना, तेमनी वार्ताना भाव कहीअे छीअे:—

भावप्रकाश—ये लीलामां विसाखाजीनी सखी छे. लीलामां अेमनुं नाम 'सुगंधिनी' छे. ते हाजीपुरमां अेक सारस्वत ब्राह्मणना घरमां जन्म्या. पछी पटनामां अेक यजमानना घरे गया त्यां डेटलाक दिवस रद्या. ते समय भगवानदास वर्ष सतरहना हुता. ते यजमाननी अहु टहल करी पछी जवा लाग्या. त्यारे अे यजमान पावलीना पैसा देवा लाग्यो. त्यारे भगवानदास क्रोध करीने कडे, अने न लखपति थधने अने आटना दिवस राभीने आ दक्षणा आपी ?

आयो, आजु रसोई होनी कठिन है। तब जीवनदास सगरे वैष्णव सों कहे, तुम चिन्ता मति करो। तब जीवनदास मेघ की ओर देखिके कहें, तोकू श्रीआचार्यजी की आन है, जो अबही मति बरसे। सो मेह रहि गयो। पाछे सगरे वैष्णव रसोई करि, श्रीठाकुरजी कों भोग धरि महाप्रसाद ले, अपने ठिकाने जाइ सोये। तब जीवनदाम ने कही अब आन छुटी। तेरे मन आवे तितनो बरसियो, तब बरस्यो। तब सगरे वैष्णव चक्रत होइ रहै, जो-जीवनदास में भगवद् सामर्थ्य है। पाछे सगरे वैष्णव अङ्गल में आइके श्रीआचार्यजी के दरसन करि दण्डवत किये। श्रीआचार्यजी सबको समाधान किये। तब एक वैष्णव नें श्रीआचार्यजी सों कही, महाराज! मार्ग में एक दिन रसोई करत मेह आयो, सो जीवनदास ने आपुकी आन दिवाई। सो तत्काल मेह रहि गयो। तब श्रीआचार्यजी जीवनदास सों कहे, तू मेरी आन दिवायो हतो और मेह बरसतो तो तू कहा करतो? तब जीवनदास ने कही, महाराज! ऐसो ऊह कौन है, जो-आपकी आन दिवाए पाछे बरसे? इन्द्र सहित धरती पर डारि देऊ। आपके प्रताप तें। तब श्रीआचार्यजी चुप होइ रहे। सो जीवनदाम ऐसे टेक के कृपापात्र भगवदीय है। इनकी वार्ता कहाँ ताई कहिये। वार्ता ॥५१॥

भावप्रकाश—तहाँ यह सन्देह होई, जो-जीवनदास तो भगवदीय

मेहु आये। आन रसोई थवी कठिण छे। तारे लवणदास यथा वैष्णवोने कहे, तमे चिन्ता न करे। तारे लवणदास मेघनी तरङ्ग जेधने कहे, तने श्रीआचार्यजीनी आणु छे, जेहु भणुं न वर्षीशे। ते मेहु रह्यो गयो। पछी यथा वैष्णवो रसोई करी श्रीठाकुरजीने भोग धरी, महाप्रसाद लध, पीताने ठेकाणु जध सोया। तारे लवणदासे कहुं, हुवे आणु छुटी। तारा मनमां आवे तेदो बरसजे तारे वर्षी। तारे यथा वैष्णवो चक्रत थध रह्या। पछी यथा वैष्णवोअने अउलमां आवीने श्रीआचार्यजीनां दर्शन करी दंडवत कर्या। श्रीआचार्यजीअने यथांतुं समाधान कर्युं। तारे अेक वैष्णवे श्रीआचार्यजीने कहुं, महाराज! मार्गमां अेक द्विपस रसोई करतां मेहु यदी आये ते लवणदासे आपनी आणु दीधी ते तत्काल मेहु रह्यो गयो। तारे श्रीआचार्यजी लवणदासने कहे, ते मारी आणु दीधी हती अने मेहु बरसतो तो तू शुं करतो? तारे लवणदासे कहुं, महाराज! अेवो ते काणु छे के आपनी आणु दीधा पछी बरसे? इन्द्र सहित धरती उपर नाभी दंड, आपना प्रतापथी। तारे श्रीआचार्यजी चुप थध रह्या। ते लवणदास अेवा टेकना कृपापात्र भगवदीय हुता। तेमनी वार्ता क्या सुधी कहीअे? वार्ता ॥५१॥

भावप्रकाश—त्यां अे स देहु थाय के लवणदास तो भगवदीय कृपा-

पानी लाऊँ, वासन मांजों। तब कृष्णदास कहें, तुम श्रीआचार्यजी के सेवक नहीं हो तातें तिहारे हाथ को पानी काम न आवे। और पात्रहूँ छुवायो न जाय। तब भगवानदास श्रीआचार्यजी सों पूछे, महाराज ! आपको जल शूद्र लावत है, वासन मांझत है, सो मैं ब्राह्मण हूँ मोसों क्यों न करावत ? तब श्रीआचार्यजी कहें, हमारे मत में भगवान कों जो कोई न जाने सो शूद्र तैं हू गयो वीत्यो। और भगवान कों जो जाने, सोई सर्वोपरि ब्राह्मण, इतनो भेद है। तातें और छैं नहीं करावत। तब भगवानदास ने कही, महाराज ! यह कैसे जानिये, वैष्णव भगवान् कों जानत हैं ? तब श्रीआचार्यजी कहें, श्रीठाकुरजी कृपा करें तब जान्यो जाय। तब भगवानदास ने कही कृपा कौन प्रकार करें ? तब श्रीआचार्यजी कहें, गुरु प्रसन्न होय तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न भये जानिये। तब भगवानदास ने कही, मेरे तो गुरु कोई नहीं है। आपही मोकों सेवक करो। तब श्रीआचार्यजी कहें, सेवक होनो वहीत कठिन है। तुम ब्राह्मण अपनो महात्म मानो। और सेवक भये तो दास होनो पड़े, ताते सेवक मति होऊ। तब भगवानदास कहें, अब तो हों दास होऊंगो। स्वामी पद वहीत दिन कियो, तामें दुःख ही पायो। सो अब मोकों सेवक करो। तब

आपुं. तयारे योथा द्विसे कृष्णदासने कहे, मने कंठ काम-टहुल पतावे। पाणी लाठं, वासणु मांजुं. तयारे कृष्णदास कहे, तमे श्रीआचार्यजना सेवक नथी तेथी तभारा हाथनुं पाणी काम न आवे. वणी पात्र पणु अडाडयुं न जय. तयारे भगवानदासे श्रीआचार्यजने पूछयुं, महाराज ! आपनुं जल शूद्र लावे छे, वासणु मांजे छे; तो हुं ब्राह्मण छुं. भारथी डेम (सेवा) नथी करावता? तयारे श्रीआचार्यज कहे, अभारा मतमां भगवानने जे डाध न जणु ते शूद्रथी पणु गयो वीत्यो. अने भगवानने जे जणु तेज सर्वोपरी ब्राह्मण अटलो भेद छे. तेथी भीजथी (सेवा) नथी करावता. तयारे भगवानदासे कछुं, महाराज अे डेम जणुअे ? वैष्णव भगवानने जणु छे ? तयारे श्रीआचार्यज कहे, श्रीठाकुरज कृपा करे तयारे जणु शकय. तयारे भगवानदासे कछुं, कृपा कया प्रकारे करे ? तयारे श्रीआचार्यज कहे, गुरु प्रसन्न थाय तयारे श्रीठाकुरज प्रसन्न थया जणुअे. तयारे भगवानदासे कछुं, मारे तो गुरु डाध नथी. आपज मने सेवक करे। तयारे श्रीआचार्यज कहे, सेवक थवुं अहु कठणु छे. तमे ब्राह्मण पीतानुं माहात्म्य मानो अने सेवक थये तो दास थवुं पडे. तेथी सेवक न थाव. तयारे भगवानदास कहे, हुवे तो हुं दास थधश. स्वामी पद धणुा द्विस कथुं. तमां दुःख ज मजुं. हुवे मने सेवक करे. तयारे श्रीआचार्यजअे

कछु न चहिये । सो पावली छोड़ि घर कों चले आये । पिता के आगे रुदन कियो, जो—हम ऐसे ब्राह्मण ठाकुर ने क्यों किये ? दो पैसा के लिये राजसी लोगन की चाकरी करें, मुख देखें । यह बड़े पाप को फल है । तब पिता ने कही, मैं परदेस जात हूँ । सो पूरब तें कमाय के आऊँगो । सो भगवानदास ने कही, तुम वृद्ध हो मति जाओ, मैं जाऊँगो । सो भगवानदास पटना के आगे चले । सो श्रीआचार्यजी कासी तें पुरुषोत्तम क्षेत्र पधारत हते । सो मारग में भगवानदास कों दरसन भयो । तब भगवानदास ने कही, भलो, मोकों पंडित ब्राह्मण को मार्ग में संग तो आछो भयो । सो आचार्यजी श्रीमुख की वार्ता वैष्णवन सों कहैं, सो पाछे सुनत जाय । पाछे मजलि पर उतरे तब श्रीआचार्यजी भगवानदास सों कहैं, जाउ, कृष्णदास सों चहिये सो सीधो लेउ । और कृष्णदास सों कहैं, जो—अपनो नित्य को सीधो लहें, पाछे ब्राह्मण जो मांगे सो दीजो । सो कृष्णदास भगवानदास कों संग ले गये । अपनो सीधा सामग्री ले कहैं, तुमकों चहिये सो लेऊ । तब भगवानदास कहैं, सेर खांड सेर घी और दो सेर चून । सो लोभ के मारे दिन दोय तीन को सीधो ले आये । थोरो सो किये और पास राखे । या प्रकार तीन दिन लों मांगे, सो कृष्णदास ने दियो । तब चौथे दिन कृष्णदास सों कहे, मोकों कछु काम टहल बताओ ।

भारे कंई न जेधये. ते पावली छोडीने धरे याकी आया. पितानी आगण इदन क्युं, के अपने ठाकुरे जेवा ब्राह्मण केम क्युं ? जे पैसाने भटे राजसी लोकानी चाकरी करे, मुख जुये ? आ भोटा पापनुं इद छे. त्तारे पिताने कहुं, हुं परदेश जठं छुं ने पूर्वथी कमाईने आवीश. त्तारे भगवानदासे कहुं, तमे वृद्ध छे न जव. हुं जईश. पछी भगवानदास पटनानी आगण आया. त्तारे श्रीआचार्यज कशीथी पुरुषोत्तमक्षेत्र पधारता हुता. ते मार्गमां भगवानदासने दर्शन थयां. त्तारे भगवानदासे कहुं, भलो, मने पंडित ब्राह्मणने। मार्गमां संग तो सारे थये. त्तारे श्रीआचार्यज श्रीमुखनी वार्ता वैष्णवने कहे, ते पाछणथी सांभणता जय. पछी मुकाम उपर उतरे त्तारे श्रीआचार्यज भगवानदासने कहे, ज, कृष्णदासथी जेधये ते सीधुं ले अपने कृष्णदासने कहुं, के आपणु नित्यनुं सीधुं दीधा पछी ब्राह्मण ज मांगे ते आपज. त्तारे कृष्णदास भगवानदासने स ग लई गया पोतानुं सीधु सामग्री लई कहे, त्तारे जेधये ते दो, त्तारे भगवानदास कहे, शेर पांड, शेर धी, अपने भशेर लोट. ते दोसना भारे दिवस जे त्रयनु सीधु लई आया. थोडु (पर्या) क्युं, भीनु पासे राण्यु. जे प्रकारे दिवस त्रय सुधी मांग्युं. ते कृष्णदासे

पानी लाऊँ, वासन मांजों । तब कृष्णदास कहें, तुम श्रीआचार्यजी के सेवक नहीं हो तातें तिहारे हाथ को पानी काम न आवे । और पात्रहूँ छुवायो न जाय । तब भगवानदास श्रीआचार्यजी सों पूछे, महाराज ! आपको जल शूद्र लावत है, वासन मांझत है, सो मैं ब्राह्मण हूँ मोसों क्यों न करावत ? तब श्रीआचार्यजी कहें, हमारे मत में भगवान कों जो कोई न जाने सो शूद्र तें हूँ गयो वीत्यो । और भगवान कों जो जाने, सोई सर्वोपरि ब्राह्मण, इतनो भेद है । तातें और छँ नहीं करावत । तब भगवानदास ने कही, महाराज ! यह कैसे जानिये, वैष्णव भगवान् कों जानत हैं ? तब श्रीआचार्यजी कहें, श्रीठाकुरजी कृपा करें तब जान्यो जाय । तब भगवानदास ने कही कृपा कौन प्रकार करें ? तब श्रीआचार्यजी कहें, गुरु प्रसन्न होय तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न भये जानिये । तब भगवानदास ने कही, मेरे तो गुरु कोई नहीं है । आपही मोकों सेवक करो । तब श्रीआचार्यजी कहें, सेवक होनो बहोत कठिन है । तुम ब्राह्मण अपनो महात्म मानो । और सेवक भये तो दास होनो पड़े, ताते सेवक मति होऊ । तब भगवानदास कहें, अब तो हों दास होऊंगो । स्वामी पद बहोत दिन कियो, तामें दुःख ही पायो । सो अब मोकों सेवक करो । तब

आप्युं. त्पारे योथा द्विवसे कृष्णदासने कहे, मने क'ई काम-टहुल पतावे। पाणी लाठं, वासणु मांजुं. त्पारे कृष्णदास कहे, तमे श्रीआचार्यजना सेवक नथी तेथी तभारा हाथनुं पाणी काम न आवे. वणी पात्र पणु अडाडयुं न जय. त्पारे भगवानदासे श्रीआचार्यजने पूछयुं, महाराज ! आपनुं जल शूद्र लावे छे, वासणु मांजु छे; तो हु प्राज्ञणु छुं. भारथी डेम (सेवा) नथी करावता? त्पारे श्रीआचार्यज कहे, अमारा मतमां भगवानने जे डाध न जणु ते शूद्रथी पणु गयो वीत्यो. अने भगवानने जे जणु तेज सर्वोपरी प्राज्ञणु अटवी भेद छे. तेथी प्नीअथी (सेवा) नथी करावता. त्पारे भगवानदासे कछुं, महाराज अे डेम जणुअे ? वैष्णव भगवानने जणु छे ? त्पारे श्रीआचार्यज कहे, श्रीठाकुरज कृपा करे त्पारे जणु शकय. त्पारे भगवानदासे कछुं, कृपा कया प्रकारे करे ? त्पारे श्रीआचार्यज कहे, गुरु प्रसन्न थाय त्पारे श्रीठाकुरज प्रसन्न थया जणुअे. त्पारे भगवानदासे कछुं, मारे तो गुरु डाध नथी. आपज मने सेवक करे। त्पारे श्रीआचार्यज कहे, सेवक थवुं पहु कठणु छे. तमे प्राज्ञणु पोतानुं माहात्म्य मानो अने सेवक थये तो दास थवुं पडे. तेथी सेवक न थाव. त्पारे भगवानदास कहे, हुवे तो हुं दास थधश. स्वामी पद धणुा द्विवस कथुं. तेमां दुःख ज मणुं. हुवे मने सेवक करे। त्पारे श्रीआचार्यजअे

श्रीआचार्यजी नाम मुनाय, पानी भराये, पात्र मँजाये, चौका दिवाये । पाछे जूठन की पातर धरे । सो महाप्रसाद भगवानदास लिये । तब बुद्धि फिरी । जो-मैं इनको सीधा तीन दिन लोभ करि के खायो, सो बहोत बुरी करी । पाछे गाँठि में पाँच रुपैया हते, सो श्रीआचार्यजी की भेट धरि विनती किये, महाराज ! हम आपको सीधो सामग्री खायो लोभ करिके, सो आछी न करी । परन्तु हम अज्ञानी हैं । आपको स्वरूप नहीं जान्यो, सो अपराध क्षमा करिये । आप साक्षात् ईश्वर हैं । अब मोकों ब्रह्मसंबंध करावो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कहैं, काल्हि तुम कों समरपण करावेंगे । और ये रुपैया पांच तू अपने पास राखि, खरच के, तेरे काम आवेंगे । तब भगवानदास ने विनती करी, जो-महाराज ! यह आपकी भेट करि चुक्यो । अब मैं कैसे राखूँ ? तब श्रीआचार्यजी राखें । पाछे दूसरे दिन ब्रह्मसंबंध करायो ।

पाछे भगवानदास एक वर्ष श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के संग रहि टहल करी । उष्णकाल में पंखा बड़ो बनाय मारग में छाया करते । जहां आप पोढ़ते तहां सुन्दर बिछौना धरती सूधी करि बिछावते, रसोई की परचारगी करते । सो श्रीआचार्यजी प्रसन्न होय के अपनी पादुका की सेवा दीनी । और कहैं, तुम इनकी

नाम संलणावी पाणी बराव्युं, पात्र मंजव्यां, चौका देवडाव्यो । पछी नूठणुनी पातर धरी । ते महाप्रसाद भगवानदासे दीधी । तारे बुद्धि करी, ते मे अभनु सीधु तणु द्विस दोस करीने पाधुं ते अहु भोटुं क्युं । पछी गाँठमां पांच रुपैया हुता ते श्रीआचार्यजीने भेट करी विनंती करी, महाराज ! अमे आपनुं सीधुं-सामग्री दोस करीने पाधुं ते ठीक न क्युं । परतु अमे अज्ञानी छीअे । आपना स्वइपने नहीं आव्यु । तेथी अपराध क्षमा करे । आप साक्षात् ईश्वर छे । हुवे ब्रह्मसंबंध करावो । तारे श्रीमहाप्रभुअ आप कहे, कते तमने समरपण करावीथुं । वणी अे रुपैया पांच तू तारी पासे राख । अर्याना, तारे काम आवशे । तारे भगवानदासे विनंती करी, ते महाराज ! आ आपनी भेट करी चूक्यो । हुवे हु डम राधुं ? तारे श्रीआचार्यअे राध्या । पछी भीनू द्विससे ब्रह्मसंबंध कराव्युं । पछी भगवानदासे अेक वर्ष श्रीआचार्यअे महाप्रभुनी संगे रही टहल करी । उष्णकालमां भेटा पभे अनावी मार्गमां छाया करता । अ्यां आप पोढता त्यां धरती सीधी करी सुंदर बिछातु भीछावता । रसोईनी परचारगी करता तारे श्रीआचार्यअे प्रसन्न थधने पोतानी पादुकानी सेवा दीधी । अने क्युं, तमे अनी सेवा सुंदर

सेवा नीकी भांति हूँ करियो । अब तुम घर जाऊ । तब भगवानदासने कही, मेरे घर पधारो तो आप कुटुम्ब कों सरन लीजिये । तब श्रीआचार्यजी कहें, तेरे कुटुम्बी दैवी जीव नाही है, सो सरनि न होंयगे । और सेवा तू ही करेगो । तब भगवानदास दण्डवत करि विनती करि विदा होई, हाजीपुर अपने गाम में आये । सो न्यारी ठौर घर में करि सेवा मन लगाय करन लागे । सो कछुक दिन में श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे ।

वार्ता—प्रमंग १—पाछे कछु दिन में श्रीआचार्यजी महाप्रभु भगवानदास के घर पधारे, पाक मामग्री करि भोजन किये । भगवानदास कों जूठनि की पातर धरी । भगवानदास के मा-बाप कों, स्त्री कों नाम सुनायो । पाछे आप अडेल कों पधारे । सो जा ठिकानें श्रीआचार्यजी महाप्रभु बिराजत हते, तहां भगवानदास चौतरी करि नित्य पोतना करते । नित्य सवेरे न्हाय के दंडवत करते । यह भाव जानते (जो)—यहां साक्षात श्रीआचार्यजी विराजे हैं । सो भगवानदास कों दरसन देते, वार्ता करते । सो भगवानदाम ऐसे श्रीआचार्यजी के कृपापात्र हते । तिनकी वार्ता कहां ताई कहिये । वार्ता ॥५२॥

✽

✽

✽

रीतिथी करेने । हुवे तमे धर जब । त्यारे भगवानदासे कहुं, मारा धरे पधारो तो आप कुटुम्बने शरणे दो । त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, तारा कुटुम्बी दैवीजिव नथी । तेथी शरणे नहीं थाय । अने तू न सेवा करेने । त्यारे भगवानदास विनती करी विदाय थध हाजपुर पोताना गाममां आग्या । ते अलग जगा धरमां करी सेवा मन लगाडी करवा लाग्या । ते डेटसाक द्विवसमां श्रीठाकुरजी सानुभावता जशानवा लाग्या ।

वार्ता प्रसंग १—पछी डेटसाक द्विवसमां श्रीआचार्यजी महाप्रभु भगवानदासना धरे पधार्या । पाक-सामग्री करी भोजन क्युं । भगवानदासने नूठणुनी पातर धरी । भगवानदासना मा-आपने स्त्रीने नाम संलणाव्युं । पछी पोते अउस पधार्या । ते न्हे डेटाणे श्रीआचार्यजी महाप्रभु बिराजता हुता त्यां भगवानदास चौतरी करी नित्य पोततुं करता । नित्य सवारे न्हायने दंडवत करता । अे जणुता के साक्षात श्रीआचार्यजी बिराजे छे । पछी भगवानदासने दर्शन देता, वार्ता करता । ते भगवानदास अेवा श्रीआचार्यजीना कृपापात्र हुता । तेमनी वार्ता कयां सुधी कहीअे ? वार्ता ॥५२॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक. भगवानदास साँचोरा ब्राह्मण,
तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में भगवानदास ललिताजी की सखी है । इनको नाम लीला में 'सुन्दरी' है । सो गुजरात में राजनगर के पास एक गांव है । तहां एक साँचोरा के घर जन्में । सो वर्ष आठ के भये । तब राजनगर में एक पंडित पास पढ़न जाते । सो वर्ष १० में विद्या पढ़े । तब वह पंडित श्रीरणछोड़जी के दरसन कों आयो । ताके संग भगवानदास आप श्रीरणछोड़जी के दरसन कों आये । तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप पधारें । तब वह पंडित श्रीआचार्यजी सँ वाद करन आयो, सो वाद करन में वह पंडित हारयो । सो आपुने डेरा गयो । पाछे भगवानदास सों वह पंडित ने कही, मैं कासी जाय फेरि और पढ़ि के वाद श्री-आचार्यजी सों करूंगो । तू मेरे संग चलि । तब भगवानदास ने वह पंडित सों कह्यो, मोकों तो श्रीरणछोड़जी के दरसन करने हैं । अबहि काहि आयो, आजु कैसे चल् ? एक महिना तो दरसन करूं । तब पंडित ने कही, मैं तो जात हों फेरि कवहूँ मिलेंगे । सो पंडित तो कासी कों आयो । भगवानदास श्रीआचार्यजी के पास आय दंडवत् करि विनती किये । जो—महाराज ! वह पंडित वाद करत में

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुना सेवक, भगवानदास साँचोरा ब्राह्मण,
तेमनी वार्तानो भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—ये भगवानदास लीलाभां ललिताजीनी सखी छे. अभनुं नाम लीलाभां 'सुंदरी' छे. ये गुजरातभां राजनगरना पासे अेक गांभ छे त्यां अेक साँचोराना धरे जन्म्या. ये वर्ष आठना थया त्यारे राजनगरभां अेक पंडित पासे लणुवा जता. ते वर्ष दशभां विद्या लणुया त्यारे ते पंडित श्रीरणछोड़जीना दर्शने आव्यो. तेनी साथे भगवानदास पोते श्रीरणछोड़जीना दर्शने आव्या. त्यां श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप पधार्या. त्यारे ते पंडित श्रीआचार्यजी साथे वाद करवा आव्यो. ते वाद करवाभां ते पंडित हार्यो. ते पोताना मुकामे गयो. पछी भगवानदासने अे पंडिते कहु, हुं काशी जई इरी वधारे लणुनि श्रीआचार्यजीथी वाद करीश. तू मारी साथे याल. त्यारे भगवानदासे ते पंडितने कहु, मारे तो श्रीरणछोड़जीनां दर्शन करवां छे. हुनु कालेज आव्यो. याने डेम यालु ? अेक महीनो तो दर्शन करूं ? त्यारे पंडिते कहु, हु तो जठ छु इरी क्यारेक भणीशुं पछी पंडित काशीअे आव्यो. भगवानदासे श्रीआचार्यजी पासे आवी दंडवत् करीने विनती करी, डे महाराज ।

निरुत्तर भयो । सो लाज पाय के कासी उठि गयो । मैं बाके पास पढ़त हो । सो अब आप मोकों पढ़ावोगे ? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कहें, तुम बहोत पढ़िकें कहा करोगे ? तब भगवानदास ने कही, महाराज ! बहोत पढ्यो होऊ तों बहोत कमाऊं द्रव्य । जहां तहां पंडितन की सभा में आदर होय । जो कोई चर्चा शास्त्र की करें तासों वाद करूं, संसार में पूजा होय । तब श्रीआचार्यजी कहें, विद्या पढ़िके दोय फल होत हैं । विद्या पढ़े शास्त्र वांचे । तब शास्त्र हैं सो सीतल जल रूप दोऊ सुन्दर भीतर के नेत्र हैं, सो खुले सब वस्तु को ज्ञान होई । परन्तु सत पुरुष कों ज्ञान होई । सीतल जलवत्, शान्त चित्त होय जाय । दुःख सुख कों भगवद् इच्छा जानें । जगत में जीव मात्र में भगवद् बुद्धि होय । सो दैन्यता संतोष निर्मलता क्रोधादिक रहित होय । भगवान के आश्रित होय तो बाक्यो पढ़नो सुफल है, याहू लोक में और परलोक में सुख पावे । और ओछो पात्र विद्या पढ़े, तब वह विद्या बाकों अग्नि रूप होय । एक तो काम, क्रोध, मद, मात्सर्य में लपट्यो हतो ता पर विद्या पढे को मद और बढ़े । सो काहू कों जगत में गिने नाहीं । रात्र दिन अहंकार रूपी अग्नि में जरघो करे । सो यह लोक में जीव दुःखी रहे, परलोक में नर्क कों पावे । यातें तुम बहोत शास्त्र पढ़ो मति ।

ये पंडित वाद करवाभां निरुत्तर थयो. ते लाज पायीने काशी यादी निकुण्यो. हुं येनी पासे लाण्यो छुं. हवे आप भने लाणावशो ? तयारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप कडे, तमे धणु लाणीने शुं करशो ? तयारे भगवानदासे कथुं, महाराज ! धणुं लाण्यो होठं तो धणुं द्रव्य कमाठं. ज्यां त्यां पंडितोनी सभाभां आदर होय. न द्राघ शास्त्रनी यर्या करे तेनाथी वाद करूं. ससारभां पूज थाय. तयारे श्रीआचार्यजी कडे, विद्या लाणीने येइल थाय छे. विद्या लाणी शास्त्र वांचे. तयारे शास्त्र छे ते शीतल जलरूप अन्ने सुंदर अंदरना नेत्र छे ते भूले. यधी वस्तुनु ज्ञान थाय. परंतु सत्पुरुषने ज्ञान थाय. शीतल जलवत् शांत चित्त होई जय. दुःख सुखने भगवदीअणु जाणु. जगतभां लवभात्रभां भगवद्बुद्धि थाय. दीनता, संतोष, निर्मलता क्रोधादिक रहित थाय. भगवाननो आश्रित थाय तो तेनुं लाणुं सकल छे. आ लोकभां अने परलोकभां सुख पाभे. अने आणुं पात्र विद्या लाणु तयारे ते विद्या तेने अशिरूप थाय. अके तो काम, क्रोध, मद, मात्सर्यभां लपट्यो हतो ते उपर विद्या लाणुानो मद करी अडे तेथी डोघने जगतभां गणुे नहीं. रात्र-दिवस अहंकार रूपी अग्निभां अण्यो करे. आ लोकभां लव दुःखी रहे; परलोकभां नर्कने पाभे. अथी तमे अहु शास्त्र

जो पढ़े सोई बहोत है । और द्रव्यादिक है सो भाग्य तें मिलत है । पंडित बड़े बड़े राजसी मूर्खन की चाकरी करत हैं । तातें संतोष दया राखें । काम, क्रोध, लोभादिक मोह कों छोड़ि, श्रीठाकुरजी को भजन करो । जीविका भगवान विचारे है, सो भगवद् इच्छातें भागि प्रमाण मिली रहेगी । यां प्रकार सिद्धान्त रूप श्रीआचार्यजी के बचन सुनिके भगवानदास के हृदय में भगवतधर्म प्रवेश भयो । सो श्रीआचार्यजी कों दंडवत् करि विनती किये, महाराज ! अब मेरे मन को संदेह सगरो दूरि ह्वे गयो । सब में भगवद् भजन श्रेष्ठ हैं । तातें अब मोकों कृपा करिके सरन लेहू । जा प्रकार आप बतावो ता प्रकार भगवद् भजन करूं । तब श्रीआचार्यजी कहैं, जा न्हाय आव । तब भगवानदास न्हायके श्रीआचार्यजी के पास आये । तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन करवायो । तब भगवानदास ने कही, महाराज ! मेरो मन आपके पास रहि के आपकी सेवा करन को है । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहैं, हमारे पास तुमसों रखो न जायगो । अनेक अपराध जीव सों होत है । सो कबहू अपसन्नता होय तो तोकों भगवद् प्राप्ति में अंतराय होय । और ये वैष्णव हैं, सो हमारे स्वभाव कों जानि रहे हैं । ये हमारे पास रहिवे लायक है । तातें तुम घर जाव । वैष्णवको संग कछुक दिन करो । पाछें गोवर्द्धन परवत पर

भाष्यो नहीं. न् बाणुया ते न् धाणुं छे. अने द्रव्यादिक छे ते बाण्यथी भणे छे मोटा मोटा पंडित राजसी मूर्खोनी चाकरी करे छे. तेथी संतोष दया राखे. काम, क्रोध, लोभादिक मोहने छोडी श्रीठाकुरजनु भजन करे. जीविका भगवाने विचारी हसे ते भगवद् विचार्यथी बाण्य प्रमाणे भणी रहेसे. ये प्रकारे सिद्धान्त रूप श्रीआचार्यजनां वचन सांभलीने भगवानदासना हृदयमां भगवत्धर्म प्रवेश थयो. पछी श्रीआचार्यजने दंडवत् करी विनती करी, महाराज ! हवे मारा मनने संदेह अधे दूर थई गयो. अधामां भगवद्भजन श्रेष्ठ छे. तेथी हवे मने कृपा करीने शरणु ले. न् प्रकारे आप बतावो ते प्रकारे भगवद्भजन करे. तारे श्रीआचार्यज कहे, न् न्हाय आव. तारे भगवानदास न्हायने श्रीआचार्यजनी पासे आव्या. तारे श्रीआचार्यजने नाम सभलावीने निवेदन कराव्यु. तारे भगवानदासे कछु, महाराज ! मार मन आपनी पासे रहिने आपनी सेवा करवानुं छे. तारे श्रीआचार्यज महाप्रभु कहे, अमारी पासे तमाराथी रही नहीं शक्य. जीवथी अनेक अपराध थाय छे तो अथारेक अपसन्नता थाय तो तने भगवद्प्राप्तिमां अंतराय थाय. अने आ वैष्णवो छे ते अमारा स्वभावने जाणी रखा छे. ये अमारी पासे रहेवा लायक छे. तेथी तमे घर आव. थोडा

श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रगट होयंगे । सो तुम तहां जाय श्रीगुसांईजी की आज्ञा प्रमान सेवा करियो । तिहारो सगरो मनोरथ श्रीगुसांईजी पूर्ण करेंगे । पाछे आप ब्रह्म-सम्बन्ध को श्लोक, अष्टाक्षर लिखिके दिये, और कहे रसोई करि, इनकों भोग धरि निर्वाह करियो । तब भगवानदास ने विनती करी, महाराज ! आप जहां तांई विराजो यहां, तहां तांई तो आपकी सेवा करूं । तब श्रीआचार्यजी कहे सुखेन करो । सो भगवानदास जल लावते, रसोई की सगरी परचारगी करते । श्रीआचार्यजी कथा कहते, तब पाछे ठाड़े होय चँवर करते । सो श्रीआचार्यजी भगवानदास के उपर बहोत प्रसन्न होयके “चतुःश्लोकी ” आप किये हे सो भगवानदास कों पढ़ाये । और कहें, पहले तेरो मन पढ़िये मैं रह्यो सो अब तोकों वेद पुरान भागवत सबको अर्थ फुरेगो । मैं प्रसन्न भयो, अब तुम घर कों जाऊ । तब भगवानदास दंडवत करि घरकों चले । श्रीआचार्यजी परिक्रमा कों पधारें । सो भगवानदास बहोत दिनलों घर में रहै । पाछे कछुक दिन पाछे भगवानदास की स्त्री की देह छूटी । तब भगवानदास मन में प्रसन्न भये । जो-अब घर को बंधन छूट्यो, अब ब्रज जाऊंगो । सो कछुक दिन में वैष्णव के मुखसों सुनी, जो-गिरिराज पर श्रीगोवर्द्धनधर विराजे हैं । श्रीगुसांईजी सेवा शृंगार करत है । तब भगवानदास घर की वस्तु सब बेचि घर

दिवस वैष्णवोना सग करे। पछी गोवर्द्धन पर्वत उपर श्रीगोवर्द्धननाथल प्रकट थरे त्तारे त्यां न्छ श्रीगुसांछलनी आज्ञा प्रमाण सेवा करजे। त्तारो अधो मनोरथ श्री-गुसांछल पूर्ण करे। पछी आपे ब्रह्मसंबन्धनो श्लोक अष्टाक्षर लखी दीयो अने कछु, रसोई करी आने भोग धरी निर्वाह करजे। त्तारे भगवानदासे विनंती करी, महाराज ! आप अहीं न्यां सुधी भिराजे त्यां सुधी तो आपनी सेवा कइं ? त्तारे श्रीआचार्यल कहे, सुधेथी करे। पछी भगवानदास नल लावता, रसोईनी अधी परचारगी करता। श्रीआचार्यल कथा कहेता त्तारे पाछण उला रहीने यमर करता। त्तारे श्री-आचार्यल अहे बहु प्रसन्न थधने पोते ‘ चतुःश्लोकी ’ करी हती ते भगवानदासने लखी। अने कछु, पहेलां ताइं मन लखीवामां रह्यु ते हवे तने वेद, पुराण, भागवत अधानो अर्थ रहुरे। हुं प्रसन्न थयो हवे तमे धरे नव। त्तारे भगवानदास दंडवत करीने धरे आत्था। श्रीआचार्यल परिक्रमा अहे पधार्यां। पछी भगवानदास धणु दिवस सुधी घरमां रखा। डेटलाक दिवस पछी भगवानदासनी स्त्रीनी देह छुटी। त्तारे भगवानदास मनमां प्रसन्न थया, डे हवे धरतुं बंधन छुटयुं। हवे प्रण न्छश। पछी थोडाक दिवसमां वैष्णवोना सुधेथी सांलख्यु, डे गिरिराज उपर श्रीगोवर्द्धनधर भिराजे छे।

जो पढ़े सोई बहोत है । और द्रव्यादिक है सो भाग्य तें मिलत है । पंडित बड़े बड़े राजसी मूर्खन की चाकरी करत हैं । तातें संतोष दया राखें । काम, क्रोध, लोभादिक मोह कों छोड़ि, श्रीठाकुरजी को भजन करो । जीविका भगवान विचारे है, सो भगवद् इच्छातें भागि प्रमाण मिली रहेगी । यां प्रकार सिद्धान्त रूप श्रीआचार्यजी के बचन सुनिके भगवानदास के हृदय में भगवतधर्म प्रवेश भयो । सो श्रीआचार्यजी कों दंडवत् करि विनती किये, महाराज ? अब मेरे मन को संदेह सगरो दूरि ह्वे गयो । सत्र में भगवद् भजन श्रेष्ठ हैं । तातें अब मोकों कृपा करिके सरन लेहू । जा प्रकार आप बतावो ता प्रकार भगवद् भजन करूं । तब श्रीआचार्यजी कहैं, जा न्हाय आव । तब भगवानदास न्हायके श्रीआचार्यजी के पास आये । तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन करवायो । तब भगवानदास ने कही, महाराज ! मेरो मन आपके पास रहि के आपकी सेवा करन को है । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहैं, हमारे पास तुमसों रखो न जायगो । अनेक अपराध जीव सों होत है । सो कबहु अप्रसन्नता होय तो तोकों भगवद् प्राप्ति में अंतराय होय । और ये वैष्णव हैं, सो हमारे स्वभाव कों जानि रहे हैं । ये हमारे पास रहिवे लायक है । तातें तुम घर जाव । वैष्णवको संग कलुक दिन करो । पाछें गोवर्द्धन परवत पर

बसो नही. न्हाय ते न्हायुं छे. अने द्रव्यादिक छे ते लायथी भणे छे. मोटा मोटा पंडित राजसी मूर्खनी चाकरी करे छे. तेथी संतोष दया राखे. काम, क्रोध, लोभादिक मोहने छोडी श्रीठाकुरनुं भजन करे. जीविका भगवाने विचारी हसे ते भगवद् विचारी लाय प्रमाण भणी रहेशे अे प्रकारे सिद्धान्त रूप श्रीआचार्यनुं वचन सांभलीने भगवानदासना हृदयमां भगवतधर्म प्रवेश थयो. पछी श्रीआचार्यनुं दंडवत् करी विनती करी, महाराज ! हवे मारा मनने संदेह यधो दूर थई गयो. यधामां भगवद् भजन श्रेष्ठ छे. तेथी हवे मने कृपा करीने शरणु लो. न्हाय प्रकारे आप बतावो ते प्रकारे भगवद् भजन करूं. तारे श्रीआचार्यनुं कहे, न्हाय आव. तारे भगवानदास न्हायने श्रीआचार्यनुं पासि आव्या. तारे श्रीआचार्यनुं नाम सांभलीने निवेदन कराव्यु. तारे भगवानदासे कहु, महाराज ! मार मन आपनी पासि रहने आपनी सेवा करवानुं छे. तारे श्रीआचार्यनुं महाप्रभु कहे, अमारी पासि तमारथी रही नहीं शकय. जीवथी अनेक अपराध थाय छे तो अारेक अप्रसन्नता थाय तो तने भगवद् प्राप्तिमां अंतराय थाय. अने आ वैष्णवो छे ते अमारा स्वभावने जानि रखा छे. अे अमारी पासि रहेवा लायक छे. तेथी तने घर आव. थोडा

श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रगट होयंगे । सो तुम तहां जाय श्रीगुसाईंजी की आज्ञा प्रमान सेवा करियो । तिहारो सगरो मनोरथ श्रीगुसाईंजी पूर्ण करेगे । पाछे आप ब्रह्म-सम्बन्ध को श्लोक, अष्टाक्षर लिखिके दिये, और कहे रसोई करि, इनकों भोग धरि निर्वाह करियो । तब भगवानदास ने विनती करी, महाराज ! आप जहां ताईं विराजो यहां, तहां ताईं तो आपकी सेवा करूं । तब श्रीआचार्यजी कहे सुखेन करो । सो भगवानदास जल लावते, रसोई की सगरी परचारगी करते । श्रीआचार्यजी कथा कहते, तब पाछे ठाढ़े होय चँवर करते । सो श्रीआचार्यजी भगवानदास के उपर बहोत प्रसन्न होयके “ चतुःश्लोकी ” आप किये हे सो भगवानदास कों पढ़ाये । और कहैं, पहले तेरो मन पढ़िये में रह्यो सो अब तोकों वेद पुरान भागवत सबको अर्थ फुरेगो । मैं प्रसन्न भयो, अब तुम घर कों जाऊ । तब भगवानदास दंडवत करि घरकों चले । श्रीआचार्यजी परिक्रमा कों पधारें । सो भगवानदास बहोत दिनलों घर में रहै । पाछे कलुक दिन पाछे भगवानदास की स्त्री की देह छूटी । तब भगवानदास मन में प्रसन्न भये । जो-अब घर को बंधन छूट्यो, अब ब्रज जाऊंगो । सो कलुक दिन में वैष्णव के मुखसों सुनी, जो-गिरिराज पर श्रीगोवर्द्धनधर विराजे हैं । श्रीगुसाईंजी सेवा श्रृंगार करत है । तब भगवानदास घर की वस्तू सब बेचि घर

द्विस वैष्णवोना सग करे। पछी गोवर्द्धन पर्वत उपर श्रीगोवर्द्धननाथ७ प्रकट थरे त्तारे त्यां न्छ श्रीगुसांछ७नी आज्ञा प्रमाण सेवा करेले। तभारे अधो मनोरथ श्री-गुसांछ७ पूर्ण करे। पछी आपे प्रहसंअंधनो श्लोक अष्टाक्षर लणी द्वीधो अने कछुं, रसोई करी आने भोग धरी निर्वाह करेले। त्तारे भगवानदासे विनंती करी, महाराज ! आप अर्ही न्यां सुधी भिराजे त्यां सुधी तो आपनी सेवा करूं ? त्तारे श्रीआचार्य७ कहे, सुभेथी करे। पछी भगवानदास नल लावता, रसोईनी अधी परचारगी करता। श्रीआचार्य७ कथा कहेता त्तारे पाछण उभा रहिने यमर करता। त्तारे श्री-आचार्य७अे अहु प्रसन्न थधने पोते ‘ चतुःश्लोकी ’ करी हुती ते भगवानदासने लणुवी। अने कछुं, पहेलां ताईं मन लणुवामां रह्यु ते हुवे तने वेद, पुराण, भागवत अधानो अर्थ स्फुरे। हुं प्रसन्न थयो हुवे तसे धरे अव. त्तारे भगवानदास दंडवत् करीने धरे आल्या। श्रीआचार्य७ परिक्रमाअे पधार्या। पछी भगवानदास धणु द्विस सुधी धरमां रखा। डेटलाक द्विस पछी भगवानदासनी स्त्रीनी देह छुटी। त्तारे भगवानदास मनमां प्रसन्न थया, डे हुवे धरतुं अंधन छुटयु. हुवे व्रज न्छश. पछी थोडाक द्विसमां वैष्णवोना सुभेथी सांलण्यु, डे गिरिराज उपर श्रीगोवर्द्धनधर भिराजे छे.

एक ज्ञाति को ब्राह्मण हतो तार्को दिये । मा आप संग तो कोई हतो नहीं । पाछे चले सो कलुक दिन में गिरिराज पर आई, श्रीनाथजी को दरसन कियो । पाछे श्रीगुसाईंजी के दरसन करि, दण्डवत करि, विनती किये, महाराज ! या प्रकार मोकों श्रीआचार्यजी सरन लिये । यह आज्ञा हती, सो आप पास जैयो । सो मैं तिहारे पास आयो हूँ । घर को कलू बन्धन मोकों है नहीं । सो मोकों सेवा कृपा करिके बताईयो । तब श्रीगुसाईंजी प्रसन्न होयके कहैं, तुम श्रीनाथजी के भीतरिया होऊ, रसोई बालभोग की सेवा करो । तब भगवानदास सुन्दर सामग्री करते ।

वार्ता—प्रसंग १—सो एक दिन भगवानदास ने सामग्री करी सो दाञ्जी, सो बिगरी भोग धरे । सो जब श्रीगुसाईंजी भोग सरायवे पधारे तब बिगरी सामग्री देखि भगवानदास के उपर बहोत खीजे । सो सेवा तें बाहिर किये । तब भगवानदास एक कौने में बैठि रुदन करन लागे । जो—मैं अब कहा करूं ?

भावप्रकाश—सो श्रीगुसाईंजी यातें खीजे, जो—सामग्री बिगरि गई तो दूसरी करते । बिगरी वस्तु प्रभु को क्यों भोग धरे ? करिवे को आलस्य कियो । हमसों कहतो तो हम करते । और भीतरियातें कराय लेते । यह विचारि के भगवानदास पर खीजे ।

श्रीगुसाईंजी सेवा—शृंगार करे छे । तारे भगवानदासे धरनी वस्तु भधी वेचीने धर अेक ज्ञातिने ब्राह्मण हतो तेने आयुं । मा—आप संग तो डोर्ठ हतुं नही । पछी आदया ते डेटदाक द्विवसमां गिरिराज उपर आवी श्रीनाथजीनां दर्शन कर्या । पछी श्रीगुसाईंजीनां दंडवत् करी विनंती करी, महाराज ! या प्रकारे मने श्रीआचार्यजी अे शरणु दीधि । अे आज्ञा करी हती, डे आपनी पासे जज । तेथी हुं तमारी पासे आव्ये छु । धरनु कर्ठ बंधन मने छे नही । तेथी मने सेवा कृपा करीने पतावे । तारे श्रीगुसाईंजीअे प्रसन्न थधने कथुं, तमे श्रीनाथजीना भीतरिया थाव रसोई बालभोगनी सेवा करे । तारे भगवानदास सुंदर सामग्री करता ।

वार्ता—प्रसंग १—अेक द्विवस भगवानदासे सामग्री करी ते दाञ्जी । ते भगडी भोग धरी । पछी न्यारे श्रीगुसाईंजी भोग सरायवा पधार्या तारे भगडेदी सामग्री जेध भगवानदास उपर भहु पीन्या । ते सेवाथी भहार कर्या । तारे भगवानदास अेक भुष्ठाभां पेरती रुदन करवा लाग्या, डे हुं लवे शुं करं ?

भावप्रकाश—श्रीगुसाईंजी अेथी पीन्या, डे सामग्री भगडी गर्ठ तो पीछे करता । भगडी वस्तु प्रभुने डेम भोग धरे ? करवानुं आयस कथुं । अमने

पाछें भगवानदास गोविंदकुण्ड ऊपर अच्युतदास पास आयें । सब समाचार कहे, जो-अब मैं कहा करूं ? मोकों सेवा तें वाहिर किये । तब अच्युतदास ने कही, सामग्री सावधानी सों करिये । अब तुम चिंता मति करो, श्रीगुसाईंजी परम दयाल हैं । फेरि तुमकों सेवा देइंगे । सो गोविंदकुण्ड पै जाय बैठो । पाछे श्रीगुसाईंजी गोविन्दकुण्ड पर मध्यान्ह की सन्ध्या करन नित्य पधारते । और अच्युतदास वृद्ध हते । मानसी सेवा में भग्न रहत हते, तिनकों नित्य दरसन देवेकूं पधारते । सो गोविन्द कुण्डपे सन्ध्या करि अच्युतदास के पास श्रीगुसाईंजी पधारे सो अच्युतदास के नेत्रन सों जल बहोत बहत है । सो देखिके श्रीगुसाईंजी अच्युतदास सों कहैं, तुमकूं ऐसो बड़ो दुःख कहा है ? तब अच्युतदास ने श्रीगुसाईंजी सों कही, महाराज ! श्रीआचार्यजी नें जीवन कों तुमकों सोंपे हैं । सो आपको बहोत जीव अङ्गीकार करनो है । जीव तो दोष सों भरे हैं । सो आप अभी तें जीवको दोष देखन लागे, सो जीवको उद्धार अब कैसे होयगो ? और जब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों ब्रह्मसम्बन्ध की आज्ञा दीने, तब कहैं, जाकों तुम ब्रह्मसम्बन्ध करावोगे ताके सकल दोष दूरि होइंगे । आप दोष देखन लागे, सो मोकों बड़ो दुःख

कहेतो तो करता. भीज भीतरियाथी करानी देता येम विचारीने भगवानदास उपर भीज्या.

पछी भगवानदास गोविंदकुंड उपर अच्युतदास पास आव्या-अधा समाचार कथा, के हवे हुं शुं कइं ? मने सेवाथी आहुर कर्यो. त्त्यारे अच्युतदासे कहुं, सामग्री सावधानीथी करीये. हवे तमे चिंता न करे. श्रीगुसाईंजी परम दयाल छे. इरी तमने सेवा देशे. तेथी गोविंदकुंड उपर नईयेसो. पछी श्रीगुसाईंजी गोविंदकुंड उपर मध्याह्नी संध्या करवा नित्य पधारता. वणी अच्युतदास वृद्ध हुता. मानसी सेवाभां भग्न रहेता हुता. तेमने नित्य दर्शन देवाने पधारता. ते गोविंदकुंड संध्या करी अच्युतदासनी पास श्रीगुसाईंजी पधार्यो. त्त्यारे अच्युतदासना नेत्रमांथी नल भहु न पड़े छे. ते नेधने श्रीगुसाईंजी अच्युतदासने कहे, तमने येपुं मोटुं शुं दुःख छे ? त्त्यारे अच्युतदासे श्रीगुसाईंजीने कहुं, महाराज ! श्रीआचार्यजीये एवने तमने सोंध्या छे. तेथी आपने धर्या एवो अंगीकार करवा छे. तो आप हमलांथी एवने दोष जेवा लाग्या ते एवने उद्धार हवे केम थशे ? वणी न्यारे श्रीगोवर्द्धननाथजीये ब्रह्मसंभंधनी आज्ञा आपी त्त्यारे कहुं छे जेने तमे ब्रह्मसंभंध करावशे तेना सकल दोष हर थशे.

है। जो अब जीवको कौन प्रकार उद्धार होइगो ? तब श्रीगुसांईजी अच्युतदास सों कहैं, तुम चिन्ता मति करो। मैं भगवानदास कों सिक्षा दीनी है। और यह बात तुम द्वारा श्रीआचार्यजी ने मोसों कही है। तातें आज पाछें कोई वैष्णव पर न खीजोंगो। तब अच्युतदास प्रसन्न भये। तब श्रीगुसांईजी गोविन्दकुण्ड तें भगवानदास की बांह पकरि के श्रीनाथजी के मन्दिर में ले गये। कहे सेवा सामग्री सावधानी तें करियो। तब भगवानदास प्रसन्न होयके यह कीर्तन गायो—

“ श्रीविद्वलेश चरन कमल पावन त्रैलोक्य करन दरस परस सुन्दर वर वार वार वंदे । समरथ गिरिराज धरन लीला निज प्रगट करन संतन हित मानुष तन वृन्दावन चन्दे ॥ १ ॥ चरणोदक लेत प्रेत ततछन तें मुक्त भये करुणामय नाथ सदा आनंद निधि कन्दे । वारने ‘ भगवानदास ’ विहरत सदा रसिक रास जै जै जसु बोलि बोलि गावत श्रुति छन्दे ॥ २ ॥

यह कीर्तन सुनिके श्रीगुसांईजी प्रसन्न भये। ता पाछे भगवानदास सेवा में मन लगाय के भयसंयुक्त सेवा करन लागे। सो कल्लुक दिन में श्रीनाथजी सानुभावता जनावन लागे। सो भगवानदास ऐसे श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हे। तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिये।

वार्ता ॥५३॥

✽ ✽ ✽
अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, अच्युतदास सनाढिया ब्राह्मण,
मथुरा के वासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

आप होष हेभवा लाग्या। ते भने मोहुं दुःख छे, के लुवे लवनेा क्या प्रकारथी उद्धार थशे ? त्यारे श्रीगुसांईछि अच्युतदासने कहे, तमे चिंता न करे। में भगवानदासने शिक्षा दीधी छे। वणी आ वात तभारा द्वारा श्रीआचार्यछि भने कही छे। तेथी आन पछी कोष वैष्णव उपर नहीं भीलुं। त्यारे अच्युतदास प्रसन्न थया। त्यारे श्रीगुसांईछि गोविंदकुंडथी भगवानदासनेो हाथ पकडीने श्रीनाथलना मंदिरमां लधगया। कहे सेवा सामग्री सावधानीथी करजे। त्यारे भगवानदासे प्रसन्न थधने आ कीर्तन गायुं- (कीर्तन उपर लुओ) अ कीर्तन सांभणीने श्रीगुसांईछि प्रसन्न थया। ते पछी भगवानदास सेवामां मन लगाडीने लयस युक्त सेवा करवा लाग्या। ते केइलाक दिवसमां श्रीनाथल सानुभावता जशाववा लाग्या। ते भगवानदास श्रीआचार्यलना अेषा कृपापात्र भगवदीय लुता। तेथी अमनी वार्ता क्यां सुधी कहीअे ? वार्ता ॥५३॥

✽ ✽ ✽
हुवे श्रीआचार्यल महाप्रभुलना सेवक, अच्युतदास सनाढिया ब्राह्मण,
मथुराना वासी, तेमनी वार्ताना भाव कहीअे छीअे :—

भावप्रकाश—ये अच्युतदास लीला में ललिताजी की सखी हैं। 'मधुरा' इनको नाम लीला में है। ए ऐसो वचन बोलत हैं, मानो अमृत श्रयो। सबकों प्रिय है। सो अच्युदास मधुरा में एक सनोढ़िया ब्राह्मण के घर जन्में। सो वर्ष नौके भये तब पिता माता के सङ्ग दिवारी में गोवर्द्धन की परिक्रमा करन आये। सो अच्युतदास को गिरिराज की सोभा देखि मन लागि गयो। तब मा बाप सों कहे। मैतो गोवर्द्धन में रहोंगो। तब पिताने कह्यो, क्यों बेटा वैरागी होन को मन है? तब अच्युतदास ने कही, मैं तो वैरागी हूँ। मेरो व्याह तो भयो ही नाहीं। परन्तु मेरे सगे सम्बन्धी आन्योर में हैं, तहाँ कलुक दिन रहूँगो। गोवर्द्धन की दमवीस परिक्रमा दे मन होयगो तब आऊँगो। तब मा बाप सगे सम्बन्धी कों सौपी के मथुगजी में आये।

वार्ता-प्रसंग १—सो अच्युतदास आन्योर में रहते। कबहूँ परासोली, कबहूँ श्रीकुण्ड, कबहूँ श्रीगोवर्द्धन, या प्रकार सों रहते। पाछे श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धन की तरहटी पधारे। तब आन्योर में सद् पांडे कों घर सहित सेवक किये, श्रीगोवर्द्धनघर कों परवत के भीतर तें बाहिर पधराये। तब अच्युतदास कों दैवी जीव जानि नाम निवेदन कराय कहेँ, तुम श्रीगोवर्द्धनघर की सेवा करो। तब अच्युत-

भावप्रकाश—ये अच्युतदास लीलाમાં ललिताञ्जनी सखी छे. 'मधुरा' अमृतुं नाम छे. ये अच्युत वचन बोले छे, मानो अमृत श्रयुं. अधाने प्रिय छे. ते अच्युतदास मधुराમાં अक सनाढ्य ब्राह्मणना घरे जन्म्या. ते वर्ष नवना थया त्तारे माता-पिताना सगे दीवारीअ गोवर्द्धननी परिक्रमा करवा आव्या. ते अच्युतदासतुं मन गोवर्द्धननी शोभा लेई लागी गयुं. त्तारे मा-बापने कहे, हु तो गोवर्द्धनमां रहीश. त्तारे पिताने कहुं, ठम बेटा! वैरागी थवानु मन छे? त्तारे अच्युतदासे कहुं, हु तो वैरागी छु. माइं लभ तो थयुं नथी. परंतु मां सगांस अंधी आन्योरमां छे त्यां थोडाक दिनस रहीश. गोवर्द्धननी दश-वीश परिक्रमा दई मन हुशे त्तारे आवीश. त्तारे मा-बाप सगांस अंधीने सोंपीने मथुराञ्जनां आव्या.

वार्ता प्रसंग १—अच्युतदास आन्योरमां रहता. क्यारेक परासोली, क्यारेक श्रीकुंड, क्यारेक श्रीगोवर्द्धन अे प्रकार रहता. पछी श्रीआचार्यञ्ज गोवर्द्धननी तरहटीमां पधार्या. त्तारे आन्योरमां सद्पांडेने घर सहित सेवक कर्या. श्रीनाथञ्जने पर्वतना अदरथी अहार पधराव्या. त्तारे अच्युतदासने दैवी अच्युत जानि नाम निवेदन करवा कहुं, तमे श्रीनाथञ्जनी सेवा करे. त्तारे अच्युतदासे श्रीआचार्यञ्जने दंडवत

दास श्रीआचार्यजी को दण्डवत करि विनती कियो, महाराज ! मोपर ऐसी कृपा करो, जो—एकान्त बैठिके मानसी सेवा में मन लागे । तब श्रीआचार्यजी अपना चरणामृत दिये । सो अच्युतदास पान करि, हाथ नेत्रन सों लगाय, मस्तक पर लगाय, हृदय सों लगायो । तब अच्युतदास के नेत्र अलौकिक हैं गये । लीला को दरसन करन लागे । मस्तक पर धरे ।

भावप्रकाश—सो जैसे मर्यादा मार्ग में गंगाजी मस्तक पर महादेवजी धरि भक्त राज भये । तैसे अच्युतदास माथे पर श्रीआचार्यजी को चरणोदक धरि, ताकी छायामें सदा रहे । हृदय के लगाये सगरी लीला, मार्ग को सिद्धान्त, हृदया-रूढ़ भयो । तब श्रीआचार्यजी ने 'सिद्धान्तमुक्तावली' करि पढ़ाये । ताकरि मानसी सेवा में मग्न भये । सो सदा गोविन्दकुण्ड के पास गुफा में रहते । नेत्र प्रेम रस सों भरे रहते । सो श्रीगुसांईजी नित्य दरसन देवे पधारते, ऊपर यह भाव मर्यादा राखन अर्थ । परन्तु श्रीगुसांईजी दरसन करवे आवते । सो यातें, श्रीगुसांईजी को श्रीआचार्यजी को अनुभव होतो, अच्युतदास के नेत्रन में महाप्रभुजी झलकते । तातें श्रीगुसांईजी मार्ग की रीति सांति श्रीगोवर्द्धनधर की लीला को भाव पूछिके बहोत प्रसन्न होते । सो अच्युतदास परमार्थी हूँ ऐसे जो भगवानदास को श्रीगुसां-

करी विनती करी, महाराज ! मारा उपर अेवी कृपा करे के अेकान्त अेसीने मानसी सेवाभां मन लागे. त्पारे श्रीआचार्यजीने पोतातुं अरणाभृत आर्युं. तेतुं अर्युत-दासे पान करी हाथ नेत्राथी लगाडी, मस्तक उपर लगाडी, हृदयथी लगाया. त्पारे अर्युतदासनां नेत्र अलौकिक थईगयां. लीलानां दर्शन करवा लाग्या. मस्तक उपर धर्या.

भावप्रकाश—जेम मर्यादा मार्गभां महादेवजी गंगाजीने मस्तक उपर धरी भक्त राज थया, तेम अर्युतदास श्रीआचार्यजीनां अरणादक माथे धरीने तेनी छायाभां सदा रखा. हृदये लगाडयुं अेटले अधी लीला, मार्गना सिद्धान्त, हृदयाइठ थयो. त्पारे श्रीआचार्यजीने 'सिद्धान्त मुक्तावली' ग्रन्थ करीने बाणाव्यो. तेथी मानसी सेवाभां मग्न थया. ते सदा गोविन्दकुंडनी पासे गुफाभां रहेता. नेत्र प्रेम रसथी अर्या रहेता. श्रीगुसांईजी नित्य दर्शन देवा पधारता. उपर आ भाव मर्यादा राखवा माटे. परंतु श्रीगुसांईजी दर्शन करवा पधारता. ते डेम श्रीगुसांईजीने श्री-आचार्यजीने अनुभव थतो. अर्युतदासना नेत्रभां श्रीमहाप्रभुजी अलकता. तेथी श्रीगुसांईजी मार्गनी रीति सांति श्रीनाथजीनी लीलानो भाव पूछीने अहु प्रसन्न थता.

ईजी ने सेवा तें काढ़े, सो फेरि विनती करि भगवानदास कों सेवा में अङ्गीकार कराये । जो सामग्री श्रीगुसाईंजी श्रीगोवर्द्धनधर कों धरते, सो अच्युतदास गोविन्द-कुण्ड पर बैठे ही सब अनुभव करते । सो श्रोगुसाईंजी सों सब कहते, आजु यह सामग्री सुन्दर भई । या प्रकार अङ्गीकार किये । यातें श्रीगुसाईंजी अच्युतदास पास राजभोग धरिके नित्य पधारते । सो अच्युतदास की वार्ता को वहीत प्रकास नहीं किये, सो याते, जो-इनकों विप्रयोग है । रस सम्बन्धी वार्ता लोगन में प्रकास करनो नहीं । तातें इनको वरनन किये नहीं ।

सो अच्युतदास ऐसे भगवदीय हे, इनकी वार्ता कहां ताई कहिये । वार्ता ॥५४॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, अच्युतदास गौड़ ब्राह्मण, महावन के वासी, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में विसाखाजी की सखी अंतर्गृहगता में है, तहां इनकी प्राप्ति । लीला में इनको नाम 'मोहनी' है । जब श्रीठाकुरजी कों देखे तब मोहि जाय, शरीर की सुधि न रहै । सो महावन में एक गौड़ ब्राह्मण के घर जन्में । सो जब नारायणदास ब्रह्मचारी के घर श्रीआचार्यजी पधारे तब अच्यु-

ते अच्युतदास परमाथी पशु अेवा, ठे भगवानदासने श्रीगुसाईंजीसे सेवामांथी काठ्या, ते कुरी विनती करी भगवानदासने सेवामां अंगीकार कराव्या. जे सामग्री श्रीगुसाईंजी श्रीनाथजीने धरता, तेना अच्युतदास गोविन्दकुंड उपर पेठेन अधो अनुभव करता. ते श्रीगुसाईंजीने अधुं कहेता. आन आ सामग्री सुंदर थई, आ प्रकारे अंगीकार करी. अेथी श्रीगुसाईंजी अच्युतदास पासे राजभोग धरीने नित्य पधारता. ते अच्युतदासनी वार्ताने अधु प्रकाश नथी कर्यो, ठेभठे अेमने विप्रयोग छे. रस सअंधी वार्ता लोकमां प्रकाश करवी नछी. तेथी अेतुं वशुंन क्युं नथी. ते अच्युतदास अेवा भगवदीय हुता. अेमनी वार्ता क्यां सुधी कहीअे? वा. ॥५४॥

✽

✽

✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजना सेवक अच्युतदास गौड़ ब्राह्मण, महावनवासी, तेमनी वार्ताने भाव कहीअे छीअे:—

भावप्रकाश—अे लीलामां विशाखाजीनी सखी अंतर्गृहगतामां छे. त्यां अेमनी प्राप्ति. लीलामां अेमनुं नाम 'मोहनी' छे. अ्यारे श्रीठाकुरजीने अुअे त्यारे मोही अय. शरीरनी सुध न रहे. ते महावनमां अेक गौड़ ब्राह्मणना धरे जन्म्या. पछी अ्यारे नारायणदास ब्रह्मचारीना धरे श्रीआचार्यजी पधार्यो त्यारे

तदास कों नाम दिये । सो वर्ष सात आठ के हते । सो नारायणदास ब्रह्मचारी पास आवते जावते । सो जब वर्ष बीस के भये तब नारायणदास सों पूछे । हमकों नाम सुनाये, सेवक किये, सो कहां हैं ? कहा उनको नाम हैं ? तब तो मैं बालक हतो, कछु समुझत न हतो । अब दरसन करूं तो समर्पण करूं । तब नारायणदास ने कही, श्रीआचार्यजी उनको नाम है, और तीर्थराज प्रयाग के पास अडेल गाम में विराजत हैं । तब अच्युतदास ने कही, गिरिराज की परिक्रमा दे अडेल जाऊंगो । सो अच्युतदास कों गिरिराज की परिक्रमा में बड़ो प्रेम हतो । महीना में दोइ चारि देते जाय । सो अच्युतदास गिरिराज की परिक्रमा दे अडेल कों चले, सो कछुक दिन में जाय पहोंचे । श्रीआचार्यजी कों दण्डवत करि ठाड़े रहे । तब श्रीआचार्यजी कहें, अच्युतदास तुम कहां तें आये ? तब अच्युतदास ने कही, जो-महाराज ! ब्रज सों आयो । तब श्रीआचार्यजी कहें, ब्रज में तुम कहा करते ? तब अच्युतदास ने कही, दोय चारि परिक्रमा महिना में गिरिराज की करतो । और नारायणदास ब्रह्मचारि आपके वैष्णव है महावन में, तिनको संग करतो । सो मोकों आप बालपने में नाम सुनाये हते । सो मैं आपको नाम जानत न हतो । सो नारायणदास ने सगरो प्रकार बतायो । अब मोकों समर्पण कराईये । तब श्रीआचार्यजी

अच्युतदासने नाम आभ्युं । ते वर्ष सात आठना हुता । नारायणदास ब्रह्मचारी पासे आवता जाता । त्यारे वर्ष बीसना थया त्यारे नारायणदासने पूछे, अमने नाम संभणान्यु, सेवक कर्था ते ज्ञ्यां छे ? अमनुं नाम शु छे ? त्यारे तो हुं बालक हुतो कंध समजतो न हुतो । हुने दर्शन करूं तो समर्पण करूं । त्यारे नारायणदासे कछुं, श्रीआचार्यजी अमनुं नाम छे । अने तीर्थराज प्रयागनी पासे अडेल गाममां बिराजे छे । त्यारे अच्युतदासे कछुं, गिरिराजनी परिक्रमा दई अडेल जईश अच्युतदासने गिरिराजनी परिक्रामां अहु प्रेम हुतो । महीनामां ये यार दई आवे । पछी अच्युतदास गिरिराजनी परिक्रमा दई अडेल यात्या । ते डटलाक द्विसमां जई पहोंच्या । श्रीआचार्यजीने दंडवत् करी उला रझा । त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, अच्युतदास ! तमे ज्ञ्यांथी आव्या ? त्यारे अच्युतदासे कछुं, महाराज ! प्रजथी आव्यो । त्यारे श्रीआचार्यजी कहे प्रजमां तमे शुं करता ? त्यारे अच्युतदासे कछुं, ये यार परिक्रमा महिनामां श्रीगिरिराजनी करतो । अने नारायणदास ब्रह्मचारी आपना वैष्णव छे महावनमां, तेमने संग करतो । अने आपे बालपणुमां नाम संभणान्यु हुतु । तेथी हुं आपनु नाम जणुतो न हुतो । नारायणदासे अथो प्रकार

कहें, जो-जाऊ, श्रीयमुनाजी में स्नान करि आऊ । तव अच्युतदास श्रीयमुनाजी में न्हायके श्रीआचार्यजी के पास आये । तव श्रीआचार्यजी नाम मुनाय ब्रह्मसंबंध कराए । पाछे अच्युतदास सों कहे, तू गिरिराज की परिक्रमा बहोत दियो, परन्तु कछु चमत्कार देखे ? तव अच्युतदास ने कही, महाराज ! मैं तो कछु चमत्कार देख्यो नाहीं । तव श्रीआचार्यजी कहें, गिरिराज की तीनि परिक्रमा लगती करेगो तो कछु देखेगो । तव अच्युतदास श्रीआचार्यजी कों दण्डवत करि विदा मांगि चले । जो-ऊव गोवर्द्धन जाय कव तीन परिक्रमा लगती करों ? या प्रकार हूँ अति आतुर भये । सो कछुक दिन में आय नारायणदास सों सगरो प्रकार कहें, जो-श्रीआचार्यजी ने ब्रह्मसम्बन्ध कृपा करिके कराये । अब तीन लगती गोवर्द्धन की परिक्रमा की आज्ञा करी है, सो गोवर्द्धन जात हों । सो गोवर्द्धन आय रात्र सोय रहै । तव रात्रि प्रहर एक पाछली रही तव उठि, देह कृत्य करि, मानसी गंगा न्हाय परिक्रमा उठाई । सो प्रहर डेढ़ दिन चढ़े एक पूरी करी । दूसरी उठाई, सो घड़ी छे दिन पाछलो रह्यो तव पूरी करी । तीसरी उठाई, सो जब अपछराकुण्ड के पास आये सो हारि गये । भूखे, रात्र घरी एक गई । तव ग्वारिया अच्युतदास

पताव्यो. हुवे मने समर्पण करावो. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, अब, श्रीयमुनाजीमां स्नान करी आवो. त्यारे अच्युतदास श्रीयमुनाजीमां स्नान करीने श्रीआचार्यजीनी पासे आव्या. त्यारे श्रीआचार्यजीके नाम सलषणावी ब्रह्मसंबंध कराव्युं. पछी अच्युतदासने कहे, ते गिरिराजनी परिक्रमा धण्डी करी. परंतु कंठ चमत्कार जेयो ? त्यारे अच्युतदासे कथुं, महाराज ! में तो कंठ चमत्कार जेयो नहीं. त्यारे श्री-आचार्यजी कहे, गिरिराजजीनी त्रणु परिक्रमा जेक साथे करीश तो कंठ जेईश. त्यारे अच्युतदास श्रीआचार्यजीने दंडवत् करी विदाय मांगी यादया. ठे ज्यारे गो-वर्द्धन जई क्यारे त्रणु परिक्रमा जेक सामटी करे. जे प्रकारथी अति आतुर यथा. ते थोडा दिनसमां आव्या. नारायणदासने जधो प्रकार कथ्यो, ठे श्रीआचार्यजीके कृपा करीने ब्रह्मसंबंध कराव्यु. हुवे त्रणु सामटी गोवर्द्धननी परिक्रमानी आज्ञा करी छे ते हुं गोवर्द्धन जई छुं. पछी गोवर्द्धन आवीने रात्रे सूई रह्या. त्यारे रात्रिप्रहर जेक पाछवी रही त्यारे उठी देह कृत्य करी मानसी गंगामां न्हाई परि-क्रमा उठावी. ते दोढप्रहर दिनस यठे जेक पूरी करी. भीज उठाध ते घड़ी छ दिनस पाछवो रह्यो त्यारे पूरी करी. तीज उठावी ते ज्यारे अप्पराकुंडनी पासे आव्या त्यारे हारी गया भूपथी, रात्रि घड़ी जेक गई. त्यारे गोवादीयाके अच्युतदास पासे

पास आय कह्यो, वैरागी तू कहां आगे जात है, सिंह वैख्यो है। सो पाछे फिर। तब अच्युतदास ने कही, पाछे कैसे फिरूं? श्रीआचार्यजी के वचन है, जो-लगतती तीनि परिक्रमा करियो। सो पाछे न फिरोंगो। तब ग्वारिया अन्तरधान ह्ये गयो। तब अच्युतदास आगे चले। सो देखें तो मार्ग के बीचों बीच नाहर ठाड़ो है। तब विचार किये, जो-परिक्रमा तो छोड़नी नाहीं। नाहर खाय तो खाउ। सो धीरज धरि सिंह के पास जात ही देखे तो सुन्दर गाय ठाड़ी हैं। तब गाय की परिक्रमा पूंछ माथे चढ़ाय पाछे आगे चलें। प्रहर एक रात्र गये परिक्रमा पूरी करी। पाछे महावन में आयके नारायणदास सों कहे, जो-ग्वारिया, सिंह, गाय देख्यो, याको कारण कहा? तब नारायणदास ने कही, जो-यह अभिप्राय तो श्रीआचार्यजी जाने। तब अच्युतदास अडेल फेरि चले। सो कछुक दिन पाछे श्रीआचार्यजी के दरसन आय किये। तब श्रीआचार्यजी पूछे, तीन लगतती परिक्रमा गिरिराज की करी, सो कछु देख्यो? तब अच्युतदास ने कह्यो ग्वारिया देख्यो, पाछें सिंह देख्यो, सो सिंह सों गाय के दरसन भये। सो मैं समुझो नाहीं। तब श्रीआचार्यजी कहें, ग्वारिया तो श्रीठाकुरजी आप हते। सो तेरो धीरज देखन अर्थ डरपाये। पाछे सिंह गिरिराजजी हते। सो तू पास गयो तब गाय रूप ह्ये दरसन दिये।

आवीने कहुं, वैरागी तू आगण कथां जय छे? सिंह भेठो छे. पाछो इर. त्पारे अच्युतदासे कहुं, पाछो डेम इर ' श्रीआचार्यजनुं वचन छे, डे सामटी त्रण परिक्रमा करन. तेथी पाछो नही इर. त्पारे गोवालियो अंतर्धान थर गयो. त्पारे अच्युतदास आगण आट्या. जुअे तो भार्गनी वर्येवय वाध भेठो छे. त्पारे विचार कर्यो, डे परिक्रमा तो छोडवी नहीं. वाध आय तो प्पान. पछी धीरज धरी सिंहनी पास जतां ज जुअे तो सुंदर गाय उषी छे. त्पारे गायनी परिक्रमा (करी) पूंछ माथे चढावी पछी आगण आट्या प्रहर अेक रात्रि गये परिक्रमा पुरी करी. पछी महावनमां आवीने नारायणदासने कहे, डे गोवालियो, सिंह, गाय जेयां अेतुं करणु शु ' त्पारे नारायणदासे कहुं, डे अे अभिप्राय तो श्रीआचार्यजुं जणै. त्पारे अच्युतदास अडेल इरी आट्या. थोडाक दिवस पछी श्रीआचार्यजुं दर्शन आवीने कर्या त्पारे श्रीआचार्यजुं पुछ्युं, त्रण सामटी परिक्रमा गिरिराजनी करी, ते कथं जेयु. त्पारे अच्युतदासे कहुं, गोवाणीआने जेयो पछी सिंह जेयो ते सिंहनां गायथी दर्शन थयां, हुं कथं समज्यो नहीं. त्पारे श्रीआचार्यजुं कहे, गोवाणीआ तो श्रीठाकुरजुं पोते हुता. तारी धीरज जेवा माटे उराव्यो. सिंह

तेरे बड़े भाग्य हैं। परन्तु कच्ची दसा है, अब ही तोकों प्रेम नहीं है। तातें लीला सहित दरसन नहीं दिये। तब अच्युतदास दरसन करि, दंडवत करि श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों विनती करी, महाराज ! प्रेम को दान आप कृपा करिके करो। आप बतावो सो मैं करूं। जा प्रकार मोकों लीला को अनुभव होय। तब श्रीआचार्यजी कहै, तुम भगवद् सेवा करो तो प्रेम होय। तब अच्युतदास ने कही, महाराज ! सेवा पधराय देउ। जा प्रकार बतावो ता प्रकार मैं करूं। तब श्रीआचार्यजी कहैं, अब हम ब्रज चले हैं, हमारे संग तू चलि। तहां सगरो मनोरथ पूर्ण होयगो। तब श्रीआचार्यजी के संग अच्युतदास चले। सो अडेल ते पांच मजलि पर एक गास आयो, छोटो सो। ताके उपर एक तलाव। वगीची सघन, तलाव सुन्दर ठिकानो देखि श्रीआचार्यजी कहैं, आज यहां पाक सामग्री करेंगे। तब अच्युतदास सों कही, तू न्हाय के आव, जल भरि ल्याव। सो अच्युतदास तलाव में न्हायके निकसे। सो निकसिके देखें तो तलाव के किनारे एक छोटोसो पीपरि को वृक्ष हैं। ताके नीचे हरी घास पर एक श्रीठाकुरजी विराजत हैं। तब अच्युतदास दोरिके श्रीआचार्यजी सों कहै, महाराज ! तलाव के किनारे पीपरि नीचे हरी घास पर

गिरिराज छुता। तू पासै गयो त्यारे गाय इप थई दर्शन दीधां। तारां मोटां लाग्य छे। परंतु दशा कायी छे। हुणु तने प्रेम नथी। तेथी लीला सहित दर्शन न दीधां। त्यारे अच्युतदास दर्शन करी, दंडवत् करी, श्रीआचार्यजी महाप्रभुने विनती करी, महाराज ! प्रेमनुं दान आप कृपा करीने करे। आप बतावो ते हु करूं। जे प्रकारे मने लीलानो अनुभव थाय। त्यारे श्रीआचार्यजी कहे तमे भगवद्सेवा करे तो प्रेम थाय। त्यारे अच्युतदास कहे, महाराज ! सेवा पधरावी हो। जे प्रकारे बतावो ते प्रकारे करूं। जे प्रकारे मने लीलानो अनुभव थाय। त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, हुवे अमे प्रज यादीअे छीअे अमारी साथे तू यास। त्यां भयो मनोरथ पूर्ण थरो। त्यारे श्रीआचार्यजीनी साथे अच्युतदास यास्या। पछी अडेसथी पांच मजल उपर अेक नातुं गास आव्युं। तेना उपर अेक तलाव, वगीचीसघन तलाव सुंदर गगा जेध श्रीआचार्यजी कहे, आज अहीं पाक-सामग्री करीशुं। त्यारे अच्युतदासने कछु, तू न्हायने आव। जल भरि लाव। पछी अच्युतदास तलावमां न्हायने निक-ज्या। ते निकषीने जुअे तो तलावना किनारे अेक नातुं सरथुं पीपरिनुं वृक्ष छे। तेनी नीचे लीली घास उपर अेक श्रीठाकुरजी विराज छे। त्यारे अच्युतदासे होडीने श्रीआचार्यजीने कछु, महाराज ! तलावना किनारे पीपरि नीचे लीली घास उपर

एक श्रीठाकुरजी को स्वरूप है। तब श्रीआचार्यजी पधारि हाथ में पधराय अपने उपरना तें रज पोंछि, अच्युतदास कों दिये। कहें, तू रसोई करि भोग इनकों धरि। पाछे ब्रज में चलियो। तेरे घर में पधगवेंगे। सो अच्युतदास सुन्दर स्वरूप देखि बहोत प्रसन्न भये। श्रीआचार्यजी के श्रीहस्त को स्पर्स तो हे चुकयो है। सो रसोई करि भोग धरयो। पाछे अच्युतदास नित्य ऐसे करत श्रीआचार्यजी के संग महावन आये तब अच्युतदास अपने घर में श्रीआचार्यजी कों पधराये तब श्रीआचार्यजी श्रीठाकुरजी कों पंचामृत स्नान कराय पाट बैठारे। श्रीमदनमोहनजी नाम धरे। अच्युतदास के माथे पधराये। आप तीन दिन अच्युतदास के घर रहि पुष्टिमार्ग की सगरी रीति बताई। पाछे आप नारायणदास ब्रह्मचारी के घर एक रात्र रहि पाछे गिरिराज व्हे आप द्वारिका पधारे।

वार्ता-प्रसंग १—सो अच्युतदास श्रीमदनमोहनजी की सेवा भली भांति सों करते। सो श्रीमदनमोहनजी कछुक दिन में अच्युतदास कों सानुभावता जनावन लागे। लीला रस को अनुभव कराए। बातें करते, जो चाहिये सो मांगि लेते। पाछे जब श्रीगुसांईजी के पास अच्युतदास आवते। तब श्रीगुसांईजी अच्युतदास कों दंडवत न करन देते। और कहते, तिहारे हृदय में श्रीआचार्यजी बिराजत हैं।

एक श्रीठाकुरजी स्वरूप छे। त्पारे श्रीआचार्यजी पधारी हाथमां पधरावी पोताना उपरणाथी रज पोंछी अच्युतदासने आभ्यु। कथ्युं, तू रसोई करी अमने भोग धरज। पछी प्रजमां यावज। तारा धरमां पधरावीशुं। अच्युतदास सुहर स्वरूप जेधने अहु प्रसन्न थया। श्रीआचार्यजीना श्रीहस्तनो स्पर्स तो थई चुकयो छे। रसोई करी भोग धर्यो। पछी अच्युतदास नित्य अम करतां श्रीआचार्यजीनी साथे महावन आव्या। त्पारे अच्युतदासे पोताना धरमां श्रीआचार्यजीने पधराव्या। त्पारे श्रीआचार्यजी अश्रीठाकुरजीने पचामृत स्नान करावी पाट बेसाड्या। श्रीमदनमोहनजी नाम धर्युं। अच्युतदासना साथे पधराव्या। आपे त्रण द्विस अच्युतदासना धरमां रही पुष्टिमार्गनी अधी रीति बतावी। पछी पोते नारायणदास ब्रह्मचारीना धर एक रात्र रही पछी गिरिराज थई पोते द्वारिका पधार्या।

वार्ता-प्रसंग १-ते अच्युतदास श्रीमदनमोहनजीनी सेवा लदीलातिथी करता। पछी थोडाक द्विसमां श्रीमदनमोहनजी अच्युतदासने सानुभावता ज्ञाववा लाग्या। दीदारसने अतुलव करावे। वाते करता जे जेधये ते मांगी लेता। पछी ज्यारे श्रीगुसांईजीनी पास आवता त्पारे श्रीगुसांईजी अच्युतदासने दंडवत करवा न देता।

सो अच्युतदास ऐसे भगवदीय हे । बहोत दिन लों श्रीमदनमोहनजी की सेवा मन लगाय के करी । पाछे जब श्रीआचार्यजी आसुर व्यामोह लीला करी तब अच्युतदास ने श्रीमदनमोहनजी पधराये । पाछे विरह बहोत, सो रह्यो न जाय । तब बद्दीकाश्रम जाय अन्न जल छोड़ि देह त्याग करे । सो अन्तरर्गृहगता की प्राप्ति भई । श्री-ठाकुरजी के श्रीमुख में प्रवेश किये । पाछे श्रीमदनमोहनजी कों श्रीगोपीनाथजी के पास पधराए । सो ये अच्युतदास ऐसे श्रीआचार्यजी महाप्रभु के कृपापात्र भगवदीय हे । जो-श्रीआचार्यजी को विरह सहि न सके तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिये । वार्ता ॥५९॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, अच्युतदास सारस्वत ब्राह्मण, सो कड़ामें रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहन हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में श्रीयमुनाजी की सखी हैं । लीला में इनको नाम 'रसात्मिका' है । सदा संयोग में मगन रहती । सो अच्युतदास कड़ा में एक ब्राह्मण सारस्वत के घर प्रगटे । सो वर्ष ग्यारह के भये । तब व्याह भयो । तब वर्ष चारि पाछे वह स्त्री मरि गई । सो अच्युतदास कों बहोत दुःख भयो । सो दिन चारि लों खाये नाहीं । बहोत दुःख भयो, सो एक दिन माता पिता ने

अने दहेता तभारा हृदयमां श्रीआचार्यल भिराजे छे. अच्युतदास अेवा भगवदीय हुता. धष्ठा द्विस सुधी श्रीमदनमोहनजी सेवा मन लगावीने करी. पछी न्यारे श्रीआचार्यल अे आसुर व्यामोह दीदा करी त्यारे अच्युतदासे श्रीमदनमोहनल पधराव्या. पछी विरह धष्ठा ते रह्यो न जाय. त्यारे अद्रीकाश्रम नथ अन्न-जल छोडी देह त्याग कर्यो. अंतर्गृहगतानी प्राप्ति थथ. श्रीठाकुरलना श्रीमुखमां प्रवेश कर्यो. पछी श्रीमदनमोहनलने श्रीगोपीनाथलनी पास पधराव्या. अे अच्युतदास श्रीआचार्यल महाप्रभुलना अेवा कृपापात्र भगवदीय हुता. श्रीआचार्यलना विरह सहन न करी शक्या. तेथी अेमनी वार्ता क्यां सुधी कडीअे ? वार्ता ॥५५॥

✽

✽

✽

हुवे श्रीआचार्यल महाप्रभुलना सेवक, अच्युतदास सारस्वत ब्राह्मण, कडाभां रहेता, तेभनी वार्ताना लाय कडीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे दीक्षामां श्रीयमुनालनी सप्पी छे अेनु नाम 'रसात्मिका' छे. सदा संयोगमां मगन रहेती. ते अच्युतदास कडाभां अेक ब्राह्मण सारस्वतने धरे प्रकट्या, ते वर्ष अगियारना थया. त्यारे लगन थयुं. पछी यार वर्षे श्री भरी गथ. त्यारे अच्युतदासने धष्ठां दुःख थयुं. यार द्विस सुधी पाधुं नही.

बहोत कही, परि माने नाहीं । कहे मैं वैराग्य लेउंगो । तब पिताने कही, जो—तू कहे तो तेरे दोय विवाह करि देऊं । यह कहि के समझायो, खवायो । पाछे दिन दस पीछे पिता मरि गयो । तब अच्युतदास और हू दुःख क्रिये । पाछे चारि दिन में माता मरि गई । तब अच्युतदास घरतें निकसे । सो बट्टीनाथ होय, जगन्नाथ-रायजी गये । तहाँ श्रीआचार्यजी पधारे । सो कथा कहत हैं । सो अच्युतदास बैठे, सो कथा सुने । परन्तु दुःख के मारे कछु समझे नांहो । पाछे कथा करि चुके । तब श्रीआचार्यजी कहें, अच्युतदास तू ऐसी उदास क्यों है ? तब अच्युतदास रोवन लागे, कहें, महाराज ! मेरे दुःख को पार नाहीं है । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे, तू अपनो दुःख कहे तो बाको उपाय होय । तब अच्युतदास ने कही, महाराज ! स्त्री मा बाप सब मरि गये । मैं कबहूँ दुःख देख्यो नाहीं, सो मैं कहा करूँ ? कछु उपाय समझत नाहीं । तब श्रीआचार्यजी कहें जा न्हाय आउ, तेरो दुःख सब दूरि श्रीठाकुरजी करेंगे । तब अच्युतदास स्नान करि आये । तब श्री-आचार्यजी नाम सुनाय निवेदन कराये । पाछे वेदमंत्र सों पढ़ि एक अंजुलि जल छिड़क्यो । तब अच्युतदास के हृदय में विवेक, धैर्य, भगवान को आश्रय दद होय

अहु दुःखी थया. त्तारे अेक दिवसे माता-पिताअे धष्टुं कष्टु, परंतु मान्युं नही. कष्टुं हुं वैराग्य लईश ? त्तारे पिताअे कष्टुं, उ तू कहे तो तारा अे लगन करी दठ अेम कहीने समज्जये, अवाये. पछी दस दिवस पछी पिता मरी गये. त्तारे अच्युतदासने विशेष दुःख थयुं. पछी त्तार दिवसमां माता मरी गध त्तारे अच्यु-तदास धरथी नीकण्या. ते अट्टीनाथ थध जगन्नाथअे गया. त्तयां श्रीआचार्यअे पधार्या. कथा कहे अे त्तयां अच्युतदास अेठा. कथा सांभणी. परंतु दुःखना भार्या कध समजे नही. पछी कथा करी सुक्या त्तारे श्रीआचार्यअे कहे, अच्युतदास तू आवे। उदास क्ठम अे ? त्तारे अच्युतदास शैवा लाग्या, कहे, महाराज ! मारा दुःखनो पार नथी. त्तारे श्रीआचार्यअे महप्रभु कहे, तू त्तारं दुःख कहे तो तेनो उपाय थय. त्तारे अच्युतदासे कष्टु, महाराज ! स्त्री, मा-बाप अथां मरी गयां. में क्यारेय दुःख ज्ये नथी. तेथी हु शुं कइ ? कंठ उपाय समजतो नथी. त्तारे श्रीआचार्यअे कहे, ज न्हाय आव. त्तारं अधुं दुःख श्रीठाकुरअे दूर करशे. त्तारे अच्युतदास स्नान करीने आन्या. त्तारे श्रीआचार्यअे नाम सांभणात्री निवेदन करान्युं. पछी वेद-मंत्रथी बाणी अेक अंजुली जल छांटयुं. त्तारे अच्युतदासना हृदयमां विवेक, धैर्य, भगवाननो आश्रय दद थध गये. त्तारे श्रीआचार्यअेने दंडवत् करीने अ-

गयो । तव श्रीआचार्यजी कौं दण्डवत करि अच्युतदास ने कही, महाराज ! मैं इतनो दुःख योंही पायो । कौन की स्त्री कौन माता पिता, यह सरीर मेरो नाहीं, तो सरीर के सम्बन्धी को योंही दुःख कियो । मैं भगवान को दास होय के भगवान कौं भूल्यो । तातें दुःख पायो । अब मैं आपकी सरनि होय परम सुख पायो । अब मोकों आप टहल बतावो, सो मैं करूं । तव श्रीआचार्यजी कहे, तू हमारे संग रहि । जो टहल होय, तोसों वने सो करियो । तव अच्युतदास श्रीआचार्यजी के संग रहे । सो एक पृथ्वी परिक्रमा में श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की भली टहल तन मन लगाय के कियो । सो श्रीआचार्यजी प्रसन्न होयके अडेल पधारे, तव अच्युतदास सों कहे, अब तुम घर जायके सेवा करो । तव अच्युतदास के नेत्रन में जल भरि आयो । कहे, महाराज ! आपके वचनामृत सुने बिना, दरसन बिना, मोकों एक दिन रह्यो न जायगो । लौकिक दुःख सब आप दूरि किये । आप विदा करो तो यह दुःख दूरि करिवे को कौन सामर्थवान है ? तव श्रीआचार्यजी प्रसन्न होय अपनी पादुकाजी की सेवा दीनी । और कहे, मैं तोपर बहोत प्रसन्न हों । सो जहाँ तू रहेगो तहाँ मैं तुमकों दरसन देऊंगो । तुमकों जो संदेह होय सो पूछियो । तिहारो संदेह दूरि करोंगो । तातें अब घर जाय भगवद् सेवा करो । तव अच्युतदास

अच्युतदासे कथ्युं, महाराज ! में आठकुं दुःख पृथाज कथ्युं. ठानी स्त्री, ठाना माता-पिता. आ शरीर भाइं नही, तो शरीरना संभधीतुं पृथाज दुःख कथ्युं. हुं भगवानने दास थधने भगवानने भूइयो. तेथी दुःख पाभ्यो. हुवे हुं आपना शरथे थर्थ परम सुख पाभ्यो. हुवे मने आप टहल बतावो, ते हुं करूं. तारे श्रीआचार्यजी कहे, तू अमारी संग रहे. जे टहल होय, ताराथी भने ते करज. तारे अच्युतदास श्रीआचार्यजीनी साथे रखा. पछी जेक पृथिव-परिक्रमां श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीनी सुहर टहल तनमन लगाडीने करी. पछी श्रीआचार्यजी प्रसन्न थधने अडेल पधारा तारे अच्युतदासने कहे, हुवे तमे घर नधने सेवा करे. तारे अच्युतदासना नेत्रमां जल भरि आयु. कहे, महाराज ! आपना वचनामृत सांखत्या बिना दर्शन बिना माराथी जेक दिनस (पणु) नही रहेवाय. लौकिक दुःख आपे दूर कथ्युं. (हुवे) आप विदाय करे तो जे दुःख दूर करवाने डाणु सामर्थवान छे ? तारे श्रीआचार्यजीजे प्रसन्न थर्थ पादुकाजीनी सेवा दीधी. अपने कथ्युं, हुं तारा उपर थणु प्रसन्न छु. ज्यां तुं रहीश त्यां हुं तने दर्शन दधश. तने जे स-देह होय ते पूछजे. तारे संदेह दूर करीश. तेथी हुवे घर नध भगवद्सेवा करे.

बहोत कही, परि माने नाहीं । कहे मैं वैराग्य लेउँगो । तब पिताने कही, जो—तू कहे तो तेरे दोय विवाह करि देऊं । यह कहि के समुझायो, खवायो । पाछे दिन दस पीछे पिता मरि गयो । तब अच्युतदास और हू दुःख क्रिये । पाछे चारि दिन में माता मरि गई । तब अच्युतदास घरतें निकसे । सो बद्रीनाथ होय, जगन्नाथ-रायजी गये । तहाँ श्रीआचार्यजी पधारे । सो कथा कहत हैं । सो अच्युतदास बैठे, सो कथा सुने । परन्तु दुःख के मारे कछु समुझे नांहो । पाछे कथा करि चुके । तब श्रीआचार्यजी कहें, अच्युतदास तू ऐसो उदास क्यों है ? तब अच्युतदास रोवन लागे, कहें, महाराज ! मेरे दुःख को पार नाहीं है । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे, तू अपना दुःख कहे तो वाको उपाय होय । तब अच्युतदास ने कही, महाराज ! स्त्री मा बाप सब मरि गये । मैं कबहुँ दुःख देखयो नाहीं, सो मैं कहा करूँ ? कछु उपाय समुझत नाहीं । तब श्रीआचार्यजी कहें जा न्हाय आउ, तेरो दुःख सब दूरि श्रीठाकुरजी करेंगे । तब अच्युतदास स्नान करि आये । तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन कराये । पाछे वेदमंत्र सों पढ़ि एक अंजुलि जल छिड़क्यो । तब अच्युतदास के हृदय में विवेक, धैर्य, भगवान को आश्रय दृढ़ होय

अहु दुःभी थया. तारे अेक दिवसे माता-पिताअे धलुं कहु, परंतु मान्युं नहीं. कहुं हुं वैराग्य लर्षश ? तारे पिताअे कहुं, के तू कहे तो तारा अे लगन करी हउं अेम कहीने समज्जये, अवाये. पछी हस दिवस पछी पिता मरी गयो. तारे अच्युतदासने विशेष दुःअ थयुं. पछी तार दिवसमां माता मरी गध तारे अच्युतदास धरथी नीकज्या. ते अद्रीनाथ थध जगन्नाथअ गया. त्यां श्रीआचार्यअ पधार्या. कथा कहे छे त्यां अच्युतदास अेठा, कथा सांभणी. परंतु दुःअना मार्या कंअ समजे नहीं. पछी कथा करी युक्या तारे श्रीआचार्यअ कहे, अच्युतदास तू आवे। उदास हेम छे ? तारे अच्युतदास रेवा लाग्या, कहे, महाराज ! मारा दुःअने पार नथी. तारे श्रीआचार्यअ महाप्रभु कहे, तू तार् दुःअ कहे तो तेने उपाय थाय. तारे अच्युतदासे कहु, महाराज ! स्त्री, मा-आप अधां मरी गयां. में क्यारेय दुःअ ज्ये नथी. तेथी हुं थुं कइं ? कंअ उपाय समज्जतो नथी. तारे श्रीआचार्यअ कहे, ज न्हाय आव. तार् अधुं दुःअ श्रीठाकुरअ दूर करशे. तारे अच्युतदास स्नान करीने आन्वा. तारे श्रीआचार्यअ नाम सांभणावी निवेदन कराअ्युं. पछी वेदमंत्रथी भएणी अेक अंजली जल छांटयुं. तारे अच्युतदासना हृदयमां विवेक, धैर्य, भगवानने आश्रय दृढ़ थध गयो. तारे श्रीआचार्यअने दंडवत् करीने अ-

गयो । तब श्रीआचार्यजी कों दण्डवत करि अच्युतदास ने कही, महाराज ! मैं इतनो दुःख योंही पायो । कौन की स्त्री कौन माता पिता, यह सरीर मेरो नाहीं, तो सरीर के सम्बन्धी को योंही दुःख कियो । मैं भगवान को दास होय के भगवान कों भूल्यो । तातें दुःख पायो । अब मैं आपकी सरनि होय परम सुख पायो । अब मोकों आप टहल बतावो, सो मैं करूं । तब श्रीआचार्यजी कहे, तू हमारे संग रहि । जो टहल होय, तोसों बने सो करियो । तब अच्युतदास श्रीआचार्यजी के संग रहे । सो एक पृथ्वी परिक्रमा में श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की भली टहल तन मन लगाय के कियो । सो श्रीआचार्यजी प्रसन्न होयके अडेल पधारे, तब अच्युतदास सों कहे, अब तुम घर जायके सेवा करो । तब अच्युतदास के नेत्रन में जल भरि आयो । कहे, महाराज ! आपके वचनामृत सुने विना, दरसन विना, मोकों एक दिन रह्यो न जायगो । लौकिक दुःख सब आप दूरि किये । आप विदा करो तो यह दुःख दूरि करिवे को कौन सामर्थवान है ? तब श्रीआचार्यजी प्रसन्न होय अपनी पादुकाजी की सेवा दीनी । और कहे, मैं तोपर बहोत प्रसन्न हों । सो जहाँ तू रहेगो तहाँ मैं तुमकों दरसन देखूंगो । तुमकों जो संदेह होय सो पूछियो । तिहारो संदेह दूरि करोंगो । तातें अब घर जाय भगवद् सेवा करो । तब अच्युतदास

अच्युतदासे कथुं, महाराज ! में आटलुं दुःख वृथाज कथुं । ठानी स्त्री, ठाना माता-पिता । आ शरीर माइं नही, तो शरीरना स अधीनुं वृथाज दुःख कथुं । हुं भगवानतो दास थधने भगवानने भूद्यो । तेथी दुःख पाभ्यो । हुवे हुं आपना शरणे थध परम सुख पाभ्यो । हुवे भने आप टहल बतावो, ते हुं करूं । तारे श्रीआचार्यजी कहे, तू अमारी संग रहे । जे टहल होय, ताराथी भने ते करज । तारे अच्युतदास श्रीआचार्यजीनी साथे रह्या । पछी जेक पृथिव-परिक्रमामां श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीनी सुंदर टहल तनमन लगाडीने करी । पछी श्रीआचार्यजी प्रसन्न थधने अडेल पधार्या तारे अच्युतदासने कहे, हुवे तमे घर जधने सेवा करे । तारे अच्युतदासना नेत्रमां जल भरि आव्यु । कहे, महाराज ! आपना वचनामृत सांभल्या विना दर्शन विना माराथी जेक द्विष (पणु) नही रहेवाय । लौकिक दुःख आपे दूर कथुं । (हुवे) आप विदाय करे तो जे दुःख दूर करवाने जाणु सामर्थवान छे ? तारे श्रीआचार्यजीप्रसन्न थध पादुकाजीनी सेवा दीधी । अने कथुं, हुं तारा उपर धणो प्रसन्न छु । ज्यां तुं रहीश त्यां हुं तने दर्शन दधश । तने जे स-देह होय ते पूछजे । तारे संदेह दूर करीश । तेथी हुवे घर जध भगवद्सेवा करे ।

श्रीआचार्यजी कों दण्डवत् करि श्रीआचार्यजी की पादुकाजी माथे पधराय विदा होय कड़ामें घर आवे ।

वार्ता-प्रसंग १—सो अच्युतदास भली भांति सों श्रीआचार्यजी की पादुकाजी की सेवा करते । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु अच्युतदास कूँ नित्य दरसन देते, वार्ता करते । पुष्टिमार्ग की रीति, लीला को भाव कहते । सो अच्युतदास ऐसे भगवदीय हे, कृपापात्र हते । पाछे कछुक दिनमें श्रीआचार्यजी महाप्रभु सन्यास ग्रहण करि कासी पधारे । सो डेढ़ महीना सन्यास राखे पाछे आसुर व्यामोह लीला करी । सो संग एक वैष्णव हतो । सो वाकों बहोत विरह दुःख भयो । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु पहले उह वैष्णव कों कहे, जो-तू कड़ा में अच्युतदास पास जैयो । वे तेरो संदेह दुःख सब दूर करेंगे । सो जब श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी लौकिक आसुर व्यामोह लीला करी तब वह वैष्णव विरह सों दुःखी होय, कड़ा में अच्युतदास पास आयके, श्रीआचार्यजी के सन्यास ग्रहण की आसुर व्यामोह लीला की बात कही । तब अच्युतदास ने कही श्रीआचार्यजी ऐसी कबहू न करें । तोकों मोह भयो होयगो । महाप्रभुजी कबहू ऐसी करेंही नाहीं । तोकों भ्रम भयो है । तब वह वैष्णव ने कही, मैं कासी में श्रीआचार्यजी के संग हतो, सो देखिके आयो हों । तब अच्युतदास कहें,

त्यारे अच्युतदास श्रीआचार्यजीने दंडवत् करी श्रीआचार्यजीनी पादुकाजी माथे पधरायी विदाय थई कड़ाभां धर आव्या ।

वार्ता-प्रसंग १-ते अच्युतदास लदी प्रकारथी श्रीआचार्यजीनी पादुकाजीनी सेवा करता. श्रीआचार्यजी महाप्रभु अच्युतदासने नित्य दर्शन देता. वार्ता करता. पुष्टिमार्गनी रीति (तथा) लीलानो भाव कहते. ते अच्युतदास जेवा भगवदीय कृपापात्र हुता. पछी डेढ़मास दिनसमां श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीसे सन्यास ग्रहण करी पछी आसुर व्यामोह लीला करी. त्यारे संग एक वैष्णव हुतो. तेने अहु विरह दुःख थयुं. श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीसे पहुलां ते वैष्णवने कछुं (हउं) के तू कड़ाभां अच्युतदास पास जे. जे तारे स हेतु अधो करे. पछी न्यारे श्रीआचार्यजी महाप्रभुसे लौकिक आसुर व्यामोह लीला करी त्यारे ते वैष्णव विरहथी दुःखी थई कड़ाभां अच्युतदास पास आवीने श्रीआचार्यजीना सन्यास ग्रहणनी आसुर व्यामोह लीलानी बात कही. त्यारे अच्युतदाससे कछुं, श्रीआचार्यजी जेपुं कदीय न करे. तने मोह थयो हुशे. महाप्रभुजी क्यारेय जेपुं करे नही. तने भ्रम थयो छे. त्यारे ते वैष्णव कछुं, हुं

उत्थापन को समय अव दोय घड़ी में होयगो, तब तेरो संदेह दूर होय जायगो । तब वह वैष्णव बैठि रह्यो । पाछे उत्थापन को समय भयो । तब अच्युतदास न्हाय के मन्दिर के किंवाड खोलि उह वैष्णव को बुलाय, श्रीआचार्यजी के दरसन कराये । उह वैष्णव देखे तो श्रीआचार्यजी विराजे पोथी देखत हैं । तब वह वैष्णव दण्डवत करि, चक्रत होय रह्यो । तब श्रीआचार्यजी उह वैष्णव सों कहें, जो-तू संदेह मति करे, कासी में लौकिक लीला देखि के । मैं अपने भक्तन के घर सदा विराजत हों । अब लौकिक लोगन को दरसन नाहीं, भगवदीयन को नित्य दरसन है । तब वह वैष्णव को संदेह गयो । सो अच्युतदास सदा संयोग रस में मगन रहते । ऐसे श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हे, तातें इनकी वार्ता कहाँ ताई कहिये ।

वार्ता ॥ ५६ ॥

भावप्रकाश—सो ये श्रीयमुनाजी की सखी हैं । तातें इनकी संयोगी लीला सम्बन्धी वार्ता अनेक हैं, सो प्रगट करी न जाय ।

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, नारायणदास कायस्थ, अम्बालय के वासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में कुमारिका की सखी हैं । लीला में इनको

काशीमां श्रीआचार्यजीनी साथे हुतो ते जेठने आये छुं । तारे अच्युतदास डहे, उत्थापनना समय हुवे जे घड़ीमां थरो तारे तारे संदेह दूर थरो । तारे ते वैष्णव जेसी रह्यो । पछी उत्थापनना समय थयो । तारे अच्युतदासे न्हायने मन्दिरनां कमाड जोडी जे वैष्णवने जोलावीने श्रीआचार्यजीनां दर्शन कराय्यां । ते वैष्णव जुझे तो श्रीआचार्यजी गिराए पोथी जुझे छे । तारे ते वैष्णव दण्डवत करी चक्रत थरि रह्यो । तारे श्रीआचार्यजी ते वैष्णवने डहे, के काशीमां लौकिक लीला जेठने संदेह न करीश । हुं मारा सकतोने धरे सदा गिराजुं छुं । हुवे लौकिक लोडोने दर्शन नही । भगवदीयाने नित्य दर्शन छे । तारे ते वैष्णवना संदेह गयो । ते अच्युतदास सदा संयोगरसमां भक्त रहता । ते जेवा श्रीआचार्यजीना कृपापात्र भगवदीय हुता, तेथी जेमनी वार्ता क्यां सुधी डहीजे ?

वार्ता ॥ ५७ ॥

भावप्रकाश—जे श्रीयमुनाजीनी सखी छे, तेथी जेमनी संयोगी लीला सम्बन्धी वार्ता अनेक छे ते प्रकट करी न जाय ।

✽

✽

✽

नाम 'ब्रज बिलासिनी' हैं। सो अम्बालय में एक कायस्थ के घर जनमे। सो नारायणदास बड़े भये वर्ष बीस के। तब नारायणदास हू पिता के संग जाते। उह देसाधिपति को काम करतो। सो नारायणदास कौ जूवा खेलवे को व्यसन बहुत हतो। पिता बहुतेरो मारे, समुझावे। परन्तु जूवा खेले विना न रहे। सो नारायणदास एक दिन जूवा खेलत में हजार रूपैया हारे। सो नारायणदास के पिता पास मनुष्य मांगन आये। कहें, नारायणदास जूआ में हारघो है, सो वाकों घेरे हैं, तुम देऊ। तब नारायणदास के पिता ने कही, वही नारायणदास देईगो। सो बड़ो रगड़ो भयो। पाछे नारायणदास के पिता ने हजार रूपैया दिये। और वह देसाधिपति सौं कहि के नारायणदास कौं देस तें बाहिर निकारि दियो। सो नारायणदास दक्षिण देस गये। तहां एक ब्राह्मण पास रहिके कलुक विद्या पढ़े। सो पोथी वांचन लागे, जूआ को व्यसन छूटि गयो। पाछे दस पांच लरिका पढ़ावें, तामें जीविका करें सो एक दिन बजार में एक हाट पर लरिकान कौं पढ़ावत हते। सो एक लरिका सौं कछ भूल परी तब मारत हते। सो कृष्णदास बजार में श्रीआचार्यजी के लिये

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजना सेवक, नारायणदास कायस्थ अम्बालयना, तेमनी वार्ताना भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे दीवामां कुमारिकानी सभ्नी छे. दीवामां अेमनु नाम 'ब्रजबिलासिनी' छे. ते अम्बालयमां अेक कायस्थना धरे जन्म्या. पछी नारायणदास मोटा थया वर्ष बीसना. त्तारे नारायणदास पाशु पितानी साथे जाता. ते (पिता) देशाधिपतिनु काम करतो. नारायणदासने जुगार रमवानु अहु व्यसन हुतुं पिता अहुज मारे समजवे. परतु जुगार रम्या विना न रहे. पछी नारायणदास अेक द्विवस जुगार रमतांमां अेक हुजर इपीया हार्या. त्तारे नारायणदासना पिता पासे मनुष्ये मांगवा आव्या कहे, नारायणदास जुगारमां हार्यो छे ते अेने घेर्यो छे तमे दो. त्तारे नारायणदासना पिताअे कछु, अेज नारायणदास देशे ते अहु भेयताशु थर्य. पछी नारायणदासना पिताअे हुजर इपीया आव्या अेने ते देशाधिपतिने कहीने नारायणदासने देशथी अहार कटावी दीयो. त्तारे नारायणदास दक्षिण देश गया त्यां अेक ब्राह्मण पासे रहिने कथक विद्या लाग्या. पछी पोथी वांचवा लाग्या. जुगारनु व्यसन छुटी गयु. पछी दश-पांच छोकराने लशावे तेमां लविका करे. त्तारे अेक द्विवस अजरमां अेक दुकान उपर छोकराअेने लशावता हुता. ते अेक छोकराथी कंठ लूस पडी त्तारे भारत हुता त्तारे कृष्णदास अजरमां श्रीआचार्यजीने भाटे सीधु सामान देवा आव्या हुता.

सीधो सामान लेन आवे हते, सो कृष्णदास नारायणदास कों दैवी जीव देखिके कहैं । नारायणदास ! ऐसे लरिकन कों न मारिये, दया राखिये । तव नारायणदास कहे, तुम अपने काम जाव, तिहारे कहा काम है ? हमारो तो यही काम है । तव कृष्णदास ने कही, या भांति मारत है, सो जूवा के पाछे अम्बालय तें भाज्यो, ऐसे अब जो कोई बालक मरि जायगो तो हत्या लगेगी, और अब भाजिके कहां जायगो ? तव नारायणदास ने कही, तुम अम्बालय की बात कहा जानो, तुमकों कबहू देख्यो नहीं । तव कृष्णदास ने कही, मैं श्रीआचार्यजी की कृपातें तेरी बात सर्व जानत हों । मैं हूँ तोकों नहीं देख्यो, परन्तु तू उत्तम दैवी जीव है, तातें तोसों कह्यो । यह लरिका पढ़ायवे की जीविका छोड़ि दे । तव नारायणदास ने कही, मैं खाऊँ कहां ते ? तव कृष्णदास ने कही, तू कायस्थ है, काहू की चाकरी करि खा । तव नारायणदास ने कही, अब तेरो कह्यो करुं तो खराब होऊँ, मेरे यही ठीक है । तव कृष्णदास कहैं, तू जाने, दुःख पावेगो । यह कहि कृष्णदास सीधो सामग्री ले श्रीआचार्यजी के पास आवे, श्रीआचार्यजी सों सब बात कहे । महाराज ! नारायणदास कायस्थ एक अम्बालय को यहां है । दैवी जीव है । बाकों मैं समुझायो सो मान्यो नहीं । बालकन कों पढ़ावत है । तव श्रीआचार्यजी कहैं, न मान्यो तो कहा भयो ? तुमने बाकों समुझायो । तुमकों दृढत अब ही

त्यारे कृष्णदासे नारायणदासने दैवीलव जेधने कहु, नारायणदास । आम छेकराओने न मारिये, दया राखिये । त्यारे नारायणदास कहे, तमे तभारे कामे अब. तभारे शुं काम छे २ अभारं तो आब काम छे. त्यारे कृष्णदासे कहु, आ रीते मारे छे तो जुगा-रनी पाछण अंभासयथी साओये जेम हुवे जे डोष बाणक मरी जशे तो हत्या लागशे अने हुवे सागीने कयां जधश । त्यारे नारायणदासे कहु, तमे अंभासयनी बात शुं जशे ? तमने क्यारेय जेया नथी. त्यारे कृष्णदासे कहु, हुं श्रीआचार्यलनी कृपाथी तारी बंधी बात जखुं छुं. मे पाशु तने नथी जेयो परतु तु उत्तम दैवीलव छे. तेथी तने कहुं, आ बासक साशाववानी लविका छोडी दे. त्यारे नारायणदासे कहु, हुं भाठ कयांथी ? त्यारे कृष्णदासे कहु, तू कायस्थ छे डोषनी आकरी करी आ. त्यारे नारायणदासे कहु, हुवे ताइं कहु कइं तो भराब थाठ. मारे आब हीक छे. त्यारे कृष्णदास कहे, तू जशे, दुःख पाभीश. जेम कही कृष्णदास सीधुं सामग्री लध श्रीआचार्यलनी पासे आव्या. श्रीआचार्यलने बंधी बात कही. महाराज ! नारायणदास कायस्थ जेक अंभासयनो अहीं छे दैवीलव छे. जेने में समजओये ते मान्यो नही. बासकाने

आवेगो । पाछे श्रीआचार्यजी रसोई करि, भोग धरि भोजन करे, गाम बाहिर वगीची हती तहां पोढ़े । सो तीसरे प्रहर नारायणदास बाकों पाटी खेंचिके मारी । सो वह लरिका मूर्छा खायके गिरयो । तब नारायणदास डरपि के वह लरिका कों कोठा में ले जाय, नाक मुख बहुतेरो मूँघो, परन्तु जाग्यो नाहीं । तब नारायणदास कों सुधि आई, जो-दोय प्रहरके उह महापुरुषके वचन साँचे भये । ताते उन कही, जो-मैं तो श्रीआचार्यजी की कृपा तें जानत हों । सो कोई श्रीआचार्यजी के संग होइगो । तब कोठाकों तारो मारि, गांव में सबसों पूछत चले । जो-प्रदेशतें कोई श्रीआचार्यजी आये हैं ? तब एक पंडित ब्राह्मण ने कही, जो-श्रीआचार्यजी पधारे हैं, सो मायावाद खंडन किये हैं । भक्तिमार्ग स्थापन किये हैं । सो गाम के बाहिर वगीची में उतरे हैं । सो सुनिके नारायणदास दोरे । वह वगीची के द्वारे आये । सो कृष्णदास कों देखिके नारायणदास ने कही, तुम बात कही, जो-सब साँच भई । उह लरिका कों मैं फेरि मारयो सो मूर्छित भयो । ऐसे कहि कृष्णदासके पाइन परि रोवन लाग्यो । और कह्यो, जो-तुम मेरो अपराध क्षमा करो मैं तिहारो कह्यो न मान्यो । तब कृष्णदास ने कही, तू रोवे मति अब श्रीआचार्यजी को

बलायुवे छे. त्पारे श्रीआचार्यजी कडे न मान्यो तो शुं थयु. तमे अने समअन्थो तमने अे भोगतो हभलांन आवरो. पछी श्रीआचार्यजी रसोइ करी भोग धरी भोजन करी गाम अहार अगीची हती त्यां पोढ्या पछी तीन् प्रहर नारायणदासे ते छोकराने अेरथी पाटी भेअीने मारी त्पारे ते छोकरे मूर्छा आधने पड्यो. त्पारे नारायणदास डरीने ते छोकराने अोरडामां अर्ध अर्ध नाक मडोडु धायुं भूइयुं परंतु अग्यो नही. त्पारे नारायणदासने याद आव्युं, के अे प्रहर पडेलांना ते महापुरुषनां धयन सायां थयां. तेथी अेषुे कथु, के हुं श्रीआचार्यजीनी कृपाथी अेषुं छु माटे अे श्रीआचार्यजीनी संग हरो. त्पारे अोरडाने ताणुं मारी गाममां अधाने पूछतो आत्यो के परदेशथी डार्थ श्रीआचार्यजी आव्या छे ? त्पारे अेक पंडित ब्राह्मणुे कथुं, के श्रीआचार्यजी पधारां छे. मायावाद अंडन कर्यो छे. भक्तिमार्ग स्थापन कर्यो छे. अे गामनी अहार अगीचामां अतर्यां छे. अे सांअणीने नारायणदास दोड्या. ते अगीचाना दरवाज आव्या. पछी कृष्णदासने अेधने नारायणदासे कथुं, तमे वात कडी ते अधी साअी थर्थ. ते छोकराने मे इरी मार्यो ते मूर्छित थयो अेम कडी कृष्णदासना पगे पडी शेवा लाग्यो. अने कथु, के तमे मारे अपराध क्षमा करे. मे तमाइ कथु न मान्यु. त्पारे कृष्णदास कडे, तू रोइश नही. श्रीआचार्यजीनां दर्शन कर. अेमनी

दरसन करि, उनकी कृपातें सब आछो होयगो । तब नारायणदास ने कही, मैं श्रीआचार्यजी कों जानत नाहीं । तुम कृपा करिके ले चलो । तब कृष्णदास नारायणदास कों ले आये । श्रीआचार्यजी पोढ़ि उठे हते । तब नारायणदास ने दण्डवत विनती कीनी, महाराज ! मैं इनको कह्यो न मान्यो, सो दुःख पायो । अब मैं आपकी सरनि आयो हूँ । मेरे माथेको कलंक छुड़ावो । वह गृहस्थ को लरिका मूर्छित भयो । सो मैं कोठरी में डारि तारो लगाय के आयो हूँ । तब श्रीआचार्यजी कहै, वह लरिका तो आछो होहि जायगो. परन्तु पाछे तू फेरि उही काम करेगो ? तब नारायणदास ने कही, महाराज ! मैं आपको दास, गुलाम होय आपके पास रहूँगो । आप आज्ञा देऊगे, सो मैं करूँगो । तब श्रीआचार्यजी द्वाराी तें जल ले वेद-मंत्र सों पढ़ि एक दोना में दिये । और कहे, यह जल लरिका ऊपर छिरकियो, लरिका उठेगो । तब नारायणदास जल लेके आये । कोठरी को तारो खोलि, वह लरिका मूर्छित परधो हतो तापर छिरके । सो वह लरिका उठ्यो । पाछे उह लरिका कों विदा करि घर, श्रीआचार्यजी के पास आय दण्डवत करि विनती किये । महाराज ! मैं आपकी सरनि हौं, मोकों सेवक करिये । मेरे माथे तें आप हत्या टारी हैं । तब श्रीआचार्यजी कहै, जा, स्नान करि आऊ । तब नारायणदास

कृपाथी अंधु साइ थरो. त्पारे नारायणदासे कथुं, हुं श्रीआचार्यलने नथी आशुता. तमे कृपा करीने लथ यावो. त्पारे कृष्णदास नारायणदासने लथ आव्या. श्रीआचार्यल पोढीने उठ्या हुता. त्पारे नारायणदासे दंडवत् विनती करी, महाराज ! मे अमनुं कथुं न मान्युं ते दुःख पाभ्यो. हवे हुं आपनी शरणे आव्यो छुं. मारा माथानुं कलंक छोडावो. ते गृहस्थनो छोकरो मूर्छित थयो. हुं तेने आरडीमां नाथी ताणुं लगावीने आव्यो छु. त्पारे श्रीआचार्यल कहे, ते छोकरो तो सारे थर्थ नथे परंतु तूं करी अेव काम करीश ? त्पारे नारायणदासे कथुं, महाराज ! हुं आपनो दास छुं. गुलाम थर्थ आपनी पासे रहीश. आप आज्ञा करेशो ते हुं करीश. त्पारे श्रीआचार्यल आरीथी नल लथ वेदम तथी लणुी (तेने) अेक पडीयामां आप्युं अने कथुं, आ नल छोकरा उपर छांटने, छोकरो उठरो त्पारे नारायणदास नल लधने आव्या. आरडीनुं ताणुं पोढी ते छोकरो मूर्छित थयो हुतो तेना उपर छांटयुं के ते छोकरो उठ्यो. पछी ते छोकराने घर विदाय करी श्रीआचार्यलनी पासे आवी विनती करी, महाराज ! हुं आपनी शरणे आव्यो छु. मने सेवक करे. मारा माथेथी आपे हत्या टाणी छे. त्पारे श्रीआचार्यल कहे, न स्नान करी आव. त्पारे नारायणदास

न्हाय के अपरस में श्रीआचार्यजी के पास आये । तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय ब्रह्मसम्बन्ध कराये । पाछे कहै, अब तू अपनी वस्तु होय सो लेके हमारे पास आय रहो । कहुँ और ठोर जाय गहेगो तो फेर दुःसंग में परेगो । तब नारायणदास गाम जाय सगरे लरिकान कों उनके मा बाप कों सोंपे । अपनी वस्तु लेके श्रीआचार्यजी के पास आय रहै । सो श्रीमुख की वार्ता सुने महाप्रसाद लिये, चित्त में आनन्द पायें । पाछे आप द्वारिका कों पधारें तहां ताई नारायणदास श्रीआचार्यजी के संग रहै । पाछे श्रीआचार्यजी ने कही, नारायणदास ! तू अपने घर जा । तब नारायणदास ने विनती करी, महाराज ! मोकों पिता जुवारी जानि देस तें निकासि दीनो । सो अब घर में कैसे राखेगो ? तब श्रीआचार्यजी कहें, अब राखेगो, चिन्ता मति करे । तब नारायणदास ने कही, महाराज ! माता पिता सेवक नाहीं है, सो मेरो धर्म कैसे निबहेगो ? उह प्रतिबंध करे तो मोकूँ कठिनता परे । तब श्रीआचार्यजी कहें, तोसों स्वरूप-सेवा निबहेगी नाहीं । पराई चाकरी करनी, घर में कोऊ सेवक नाहीं, तातें हस्ताक्षर लिख देत हों, सामग्री जो बने सो भोग धरिके महाप्रसाद लीजियो । तब ब्रह्मसम्बन्ध को गद्य को श्लोक अष्टाक्षर लिखिके नारायणदास कूँ दिये । तब नारायणदास दण्डवत् करि विनती किये, महाराज ! इतने दिन

न्हाधने अपरसमां श्रीआचार्यजी पासे आव्या । तारे श्रीआचार्यजी नाम संलग्नावी ब्रह्मसम्बन्ध कराव्युं । पछी कडे, हुवे तू तारी वस्तु होय ते लधने अमारी पासे रहे कछ भी नग्राये रह्यो तो इरी दुःसंगमां पडीश । तारे नारायणदास गाममां नथ अथा छोकरायेने अमना मा-आपने सोंप्या । पोतानी वस्तु लधने श्रीआचार्यजी पासे आवी रखा । पछी श्रीआचार्यजीना मुपथी वार्ता सांलग्ने महाप्रसाद ले । चित्तमां आनन्द पाभ्या । पछी आप द्वारका पधार्या । त्यां सुधी नारायणदास श्रीआचार्यजीनी साथे रखा । पछी श्रीआचार्यजीये कहुँ, नारायणदास ! तू तारा घर न । तारे नारायणदासे विनती करी, महाराज ! मने पिताये जुगारी नालीने देशथी कठी भूकथो छे । हुवे धरमां डेवी रीते राभशे ? तारे श्रीआचार्यजी कडे, हुवे राभशे । यि ता न करीश । तारे नारायणदासे कहुँ, महाराज ! माता-पिता सेवक नथी । तेथी माशे धर्म डम नलशे ? ते प्रतिबंध करे तो मने कठिणता पडे । तारे श्रीआचार्यजी कडे, ताराथी स्वइपसेवा तो नलशे नही । नीजनी याकरी करवी, धरमां डोअ सेवक नथी । तेथी हस्ताक्षर लभी दड छुं । तेने सामग्री न अने ते भोग धरीने महाप्रसाद लेज । तारे ब्रह्मसम्बन्धको गद्यको श्लोक अष्टाक्षर लभीने नारायणदासने आव्यो । तारे नारायण-

आपके पास रहो, परंतु मेरे अन्तःकरण में बोध न भयो । सो ऐसी कृपा करो जो संसार को दुःख सुख कछु मोकों वाधा न करे, चित्त श्रीठाकुरजी के चरणारविंद में लग्यो रहै । तत्र श्रीआचार्यजी ने अपना चरणामृत दीनो । और 'बालबोध' ग्रन्थ पढ़ाये । तत्र नारायणदास श्रीआचार्यजी कों दण्डवत करि द्वारिका तें चले । सो चारि वर्ष पाछे घर में आये । तत्र माता पिता प्रसन्न होय के कहैं, बहोत दिन में पुत्र आयो । कछु भोजन करो, जल पीवो । तत्र नारायणदास ने कही, मैं श्री-आचार्यजी को सेवक भयो, सो अपने हाथ कों लेत हों । यह श्रीआचार्यजी की कृपा है । तुम तो मोकों जानत हों, मैं जुवारी हतो । सो सगरो व्यसन श्रीआचार्यजी छुड़ाये । अब थोरी सी मौकों न्यारी ठौर देख तहां बैठों, भगवद् नाम लेहूं । तुम काम काज कही सो करूं । तत्र पिता बहोत प्रसन्न भयो, जो जुवा को व्यसन तो छूट्यो । पाछे घर में न्यारो कोठा दिये तहां खासा करि नारायणदास रहै । सो बहोत काहू सों बोले नाहीं । माता पिता कहैं सो काम करें । अपनी रसोई करि भोग धरि महाप्रसाद ले, नाम लेय । पिता प्रसन्न भयो । जो-मेरे वृद्ध समय नारायणदास आयो, अब याकी बुद्धि (हू) सुन्दर भई । सो पिता नारायणदास कों ले के राजद्वार में गयो । सो बादशाह को काम सब नारायणदास सों करावन

दासे दंडवत् करी विनती करी, महाराज । आटका द्विजस आपनी पासे रह्यो. परंतु मारा अंतःकरणमां बोध न थयो. माटे अेवी कृपा करे के संसारनुं दुःखसुख कंध भने पाधा न करे. चित्त श्रीठाकुरजीना चरणारविंदमां लाग्युं रहे. त्तारे श्रीआचार्य-ल्ले पोतानुं चरणामृत आभ्युं. अने 'बालबोध' ग्रंथ लाग्यो. त्तारे नारायणदास श्रीआचार्यल्लेने दंडवत् करी द्वारकाथी आल्या. ते चार वर्ष पछी घरमां आव्या. त्तारे माता-पिता प्रसन्न थधने कहे, धया द्विजसे पुत्र आव्यो. कंध लोअन करे. जल पीयो. त्तारे नारायणदासे कछु, हुं श्रीआचार्यल्लेने सेवक थयो अेटले मारा हाथथी लई छुं. आ श्रीआचार्यल्लेनी कृपा छे तमे तो भने नाशो छो हुं जुगारी हतो. अंधुं व्यसन श्रीआचार्यल्ले छोडाअ्युं. हवे भने थोडी अलग जगा हो त्यां भेसुं. लग-वन्नाम लई. तमे कामकाज कहे ते कइं. त्तारे पिता अहु प्रसन्न थयो, के जुगारनुं व्यसन तो छुट्यु. पछी घरमां अलग अोरडो आय्यो त्यां भासा करी नारायणदास रह्या. अहु डाधथी भेले नही. माता-पिता कहे ते काम करे. पोतानी रसोई करी भोग धरी महाप्रसाद ले. नाम ले. पिता प्रसन्न थयो, के मारा वृद्ध समये नारायणदास आव्यो. हवे अेनी बुद्धि सुंदर थई. पिता नारायणदासने लधने राजद्वारमां गयो.

न्हाय के अपरस में श्रीआचार्यजी के पास आये । तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय ब्रह्मसम्बन्ध कराये । पाछे कहै, अब तू अपनी वस्तु होय सो लेके हमारे पास आय रहो । कहूँ और ठोर जाय रहेगो तो फेर दुःसंग में परेगो । तब नारायणदास गाम जाय सगरे लरिकान कों उनके मा बाप कों सोंपे । अपनी वस्तु लेके श्रीआचार्यजी के पास आय रहै । सो श्रीमुख की वार्ता सुने महाप्रसाद लिये, चित्त में आनन्द पायें । पाछे आप द्वारिका कों पधारें तहां ताई नारायणदास श्रीआचार्यजी के संग रहै । पाछे श्रीआचार्यजी ने कही, नारायणदास ! तू अपने घर जा । तब नारायणदास ने विनती करी, महाराज ! मोकों पिता जुवारी जानि देस तें निकसि दीनो । सो अब घर में कैसे राखेगो ? तब श्रीआचार्यजी कहैं, अब राखेगो, चिन्ता मति करे । तब नारायणदास ने कही, महाराज ! माता पिता सेवक नाहीं है, सो मेरो धर्म कैसे निबहेगो ? उह प्रतिबंध करे तो मोकूँ कठिनता परे । तब श्रीआचार्यजी कहैं, तोसों स्वरूप-सेवा निबहेगी नाहीं । पराई चाकरी करनी, घर में कोऊ सेवक नाहीं, तातें हस्ताक्षर लिख देत हों, सामग्री जो बने सो भोग धरिके महाप्रसाद लीजियो । तब ब्रह्मसम्बन्ध को गद्य को श्लोक अष्टाक्षर लिखिके नारायणदास कूँ दिये । तब नारायणदास दण्डवत् करि विनती किये, महाराज ! इतने दिन

न्हाधने अपरसमां श्रीआचार्यजी पासे आव्या. त्पारे श्रीआचार्यजी नाम सलगावी ब्रह्मसंभध कराव्यु. पछी कहे, हुवे तूं तारी वस्तु होय ते लधने अमारी पासे रहे. कछ भी नगाव्ये रडीश तो ड़री दुःसगमां पडीश. त्पारे नारायणदास गाममां नरुध अंधा छोकराव्योने अमना मा-आपने सोंप्या. पोतानी वस्तु लधने श्रीआचार्यजी पासे आवी रखा. पछी श्रीआचार्यजीना मुपथी वार्ता सांभणे महाप्रसाद ले. यित्तमां आनन्द पाभ्या. पछी आप द्वारका पधार्या. त्यां सुधी नारायणदास श्रीआचार्यजीनी साथे रखा. पछी श्रीआचार्यजीके कहुँ, नारायणदास ! तू तारा घर न. त्पारे नारायणदासे विनती करी, महाराज ! मने पिताके जुगारी जगुनि देशथी कठी भूकथे छे हुवे घरमां डेवी रीते राभशे ? त्पारे श्रीआचार्यजी कहे, हुवे राभशे. यिता न करीश. त्पारे नारायणदासे कहुँ, महाराज ! माता-पिता सेवक नथी. तेथी भारे धर्म डेम नभशे ? ते प्रतिबंध करे तो मने कठिणता पडे. त्पारे श्रीआचार्यजी कहे, ताराथी स्वइपसेवा तो नभशे नही. भीननी याकरी करवी, घरमां कोऊ सेवक नथी. तेथी हस्ताक्षर लभी हउ छुं. तेने सामग्री न अने ते भोग धरीने महाप्रसाद लेन. त्पारे लसंभधने गधने श्लोक अष्टाक्षर लभीने नारायणदासने आव्यो. त्पारे नारायण-

आपके पास रह्यो, परंतु मेरे अन्तःकरण में बोध न भयो । सो ऐसी कृपा करो जो संसार को दुःख सुख कछु मोकों बाधा न करे, चित्त श्रीठाकुरजी के चरणारविंद में लग्यो रहै । तब श्रीआचार्यजी ने अपनो चरणामृत दीनो । और 'बालबोध' ग्रन्थ पढ़ाये । तब नारायणदास श्रीआचार्यजी कों दण्डवत करि द्वारिका तें चले । सो चारि वर्ष पाछे घर में आये । तब माता पिता प्रसन्न होय के कहैं, बहोत दिन में पुत्र आयो । कछु भोजन करो, जल पीवो । तब नारायणदास ने कही, मैं श्री-आचार्यजी को सेवक भयो, सो अपने हाथ कों लेत हों । यह श्रीआचार्यजी की कृपा है । तुम तो मोकों जानत हों, मैं जुवारी हतो । सो सगरो व्यसन श्रीआचार्यजी छुड़ाये । अब थोरी सी मौकों न्यारी ठौर देऊ तहां बैठों, भगवद् नाम लेहूं । तुम काम काज कहो सो करूं । तब पिता बहोत प्रसन्न भयो, जो जुवा को व्यसन तो छुट्यो । पाछे घर में न्यारो कोठा दिये तहां खासा करि नारायणदास रहै । सो बहोत काहू सों बोले नाहीं । माता पिता कहैं सो काम करें । अपनी रसोई करि भोग धरि महाप्रसाद ले, नाम लेय । पिता प्रसन्न भयो । जो-मेरे वृद्ध समय नारायणदास आयो, अब याकी बुद्धि (हू) सुन्दर भई । सो पिता नारायणदास कों ले के राजद्वार में गयो । सो बादशाह को काम सब नारायणदास सों करावन

दासे दंडवत् करी विनती करी, महाराज ! आटका द्विस आपनी पासे रह्यो. परंतु मारा अंतःकरणमां बोध न थयो. माटे ज्येवी कृपा करे के संसारनुं दुःखसुख कंठ मने बाधा न करे. चित्त श्रीठाकुरजीना चरणारविंदमां लाग्युं रहे. त्यारे श्रीआचार्य-लज्ये पोतानुं चरणामृत आभ्युं. अने 'बालबोध' ग्रंथ लणायो. त्यारे नारायणदास श्रीआचार्यलने दंडवत् करी द्वारकाथी आट्या. ते चार वर्ष पछी घरमां आव्या. त्यारे माता-पिता प्रसन्न थधने कहे, धण्डा द्विसे पुत्र आव्यो. कंठ भोजन करे. जल पीज्यो. त्यारे नारायणदासे कछु, हुं श्रीआचार्यलनो सेवक थयो ज्येठले मारा हाथथी लहं छु. आ श्रीआचार्यलनी कृपा छे तमे तो मने जणो छो हुं जुगारी हतो. अहुं व्यसन श्रीआचार्यलज्ये छोडाव्यु. हवे मने थोडी अलग जगा हो त्यां पेसुं. भगवन्नाम लह. तमे कामकाज कहेो ते करे. त्यारे पिता अहु प्रसन्न थयो, के जुगारनुं व्यसन तो छुट्युं. पछी घरमां अलग आरठो आभ्यो त्यां भासा करी नारायणदास रह्यो. अहु डाधथी भोले नही. माता-पिता कहे ते काम करे. पोतानी रसोई करी भोग धरी महाप्रसाद ले. नाम ले. पिता प्रसन्न थयो, के मारा वृद्ध समये नारायणदास आव्यो. हवे ज्येनी बुद्धि सुंदर थध. पिता नारायणदासने लधने राजद्वारमां गयो.

लाग्यो । पाछे कलुक दिन में पिता ने देह छोड़ी ।

वार्ता-प्रसंग १—सो नारायणदास हाकिम होय काम करन लाग्यो । सो काम बहोत, छूटि सके नार्हीं । श्रीगोकुल आयवे को मन बहोत, श्रीआचार्यजी के दरसन को मन बहोत । तब नारायणदास ने एक मनुष्य चाकर राख्यो । और वाकों महिना रुपैया चारि को कर दियो । और वासों कहैं, तेरो यही काम, जो-मोकोँ घरी घरी में यह कहियो । भैयाजी ! श्रीगोकुल श्रीआचार्यजी के दरसन कोँ कब चलोगे ? यही कह्यो करियो । सो वह चाकर नारायणदास के संग रहे । घरी घरी में यह कहे, भैयाजी ! श्रीगोकुल श्रीआचार्यजी के दरसन कोँ कब चलोगे ? तब नारायणदास कहते, हाँ, अब चलूंगो । नेत्रन में जल भरि लीला-रसमें मगन होय जाते । फेरि काम काज करते । फेरि वह चाकर कहतो । फेरि मगन होय जाते । और वर्ष के वर्ष श्रीआचार्यजी कोँ भेट पठावते । सो जन्म भरि या प्रकार श्रीगोकुल को स्मरण करि श्रीआचार्यजी में मन लगाय मगन रहे । सो नारायणदास ऐसे भगवदीय भये । इनकी वार्ता कहां ताँई कहिये । वार्ता ॥५७॥

*

*

*

प्रादशाहतुं काम पधुं नारायणदासथी कराववा लाग्यो. पछी डेटलाऊ दिवसमां पिताये देह छोडी.

वार्ता-प्रसंग १-ते नारायणदास हाकिम थधने काम करवा लाग्यो. ते काम धलुं छुटी शके नही. श्रीगोकुल आववातुं मन धलुं. त्यारे नारायणदासे अेक मनुष्य याकर राख्यो. अने अने बार इपीआना भडिना करी दीधो. अने अने कहे, ताई अेअ काम के भने धडीधडीमां अेअ कहेले, के लैयाल ! श्रीगोकुल श्रीआचार्यलना दर्शने क्यारे यादशो ? अेअ कहा करजे. पछी अे याकर नारायणदासना संगे रहे. धडीधडीमां अे कहे, लैयाल ! श्रीगोकुल श्रीआचार्यलना दर्शने क्यारे यादशो. त्यारे नारायणदास कहेता, हां ! हमलां यादीशुं. नेत्रामां जल भरि लीला रसमां मग्न थध जाता. इरी कामकाज करता. इरी अे याकर कहे तो इरी मग्न थध जाता. अने वर्ष ने वर्ष श्रीआचार्यलनी भेट भेकलता. ते जन्मभर या प्रभाणे श्रीगोकुललतुं स्मरण करी श्रीआचार्यलमां मन लगाडीने मग्न रह्या. ते नारायणदास अेवा भगवदीय हता. अेमनी वार्ता क्यो सुधी कहीअे.

वार्ता ॥५७॥

*

*

*

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, नारायणदास भाट,
मथुरा में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये नारायणदास लीला में श्री गोकुल के वानर हैं । सो मथुरा में एक भाट के घर जन्में । सो बड़े भये । परन्तु कवित्त दोहा कछ आवे नहीं, विश्रान्ति पर बैठे रहैं । जो—कोऊ कछ दे जाय ताही में निर्वाह करें । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे, विश्रान्त घाट पर सन्ध्या वन्दन मध्यान्ह समय करत हे । तब नारायणदास भाट ने श्रीआचार्यजी का दरसन कियो । तब मन में यह आई, जो—ये महापुरुष हैं, इनसों कछ मैं अपने भाग की पूछों तो सही । जो—मेरे भाग में कहा है ? यह विचारि नारायणदास श्रीआचार्यजी कों दण्डवत करि पूछे, महाराज ! हम ऐसे मूर्ख क्यों भये, भाट होय के । न कवित्त आवे न दोहा आवे । आछे बोलतें हू नहीं आवें । और जवते जन्म्यों तब ते मांगते खाते बीते दिन । कवहू मोकों द्रव्य मिलेगो ? मेरे भाग्य में है के नहीं ? सो मेरो हाथ तो आप कृपा करि देखो । तब श्रीआचार्यजी कहैं, जो—मली मई, जो—कवित्त दोहा नहीं आवत । जो—आवते तो, राजसी लोगन के आगे पढ़त डोलतो । आछी मई, जो—न पढ्यो । और ओछे पात्र कों प्रभु द्रव्य नहीं देत । सोऊ कृपा करत हैं । द्रव्य पाये,

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजना सेवक, नारायणदास भाट, मथुरामां रहता, तेमनी वार्ताना भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे नारायणदास लीलामां श्रीगोकुलना वांहरा छे. ते मथुरामां अेक भाटने त्यां जन्म्या. पछी भेटा थया. परंतु कवित्त दोहा कंछ आवडे नही. विश्रान्त उपर बेसी रहे. जे कंछ डोह आपी अथ तेमांज निर्वाह करे. पछी श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधार्या. विश्रान्त घाट उपर संध्यावन्दन मध्याह्न समय करता हुता. त्यारे नारायणदास भाटे श्रीआचार्यजनां दर्शन कर्या. त्यारे मनमां अे आंथुं के अे महापुरुष छे. अेमने हु कंछ मारा आंथुं पूछुं तो परे, के मारा आंथुंमां शु छे ? अेम विचारी नारायणदासे श्रीआचार्यजने दंडवत् करी पूछुं, महाराज ! अमे अेवा मुष् ठम थया भाट थधने ? न कवित्त आवडे न दोहा आवडे. साइं पोलवुं पथु न आवड्युं ? वणी न्यारथी जन्म्ये त्यारथी मागतां भातां द्विवसेा चीत्या. क्यारेय मने द्रव्य मणशे ? मारा आंथुंमां छे के नही ? ते मारे हाथ तो कृपा करी जुअे. त्यारे श्रीआचार्यजी कहें, के भवुं थयुं के कवित्त दोहा नथी आवडता. जे आवडता तो राजसी लोढाना आगण आथुतो इरते. साइं थयुं के न आथुयो. वणी आछा पात्रने प्रभु द्रव्य नथी आपता. ते पथु कृपा

દ્રવ્ય-મદસોં અનેક જીવન કો ચુરો કરે । વિપય આદિ પાપ કરે । ઔર ખૂલો તો કવહૂ રહ્યો નાहीं । તાતેં દ્રવ્ય તેરે ભાગ્ય મેં નાहीं હૈ । પરન્તુ ઓછો પાત્ર જાનિ પ્રશ્ન દ્રવ્ય નાहीं દેત હૈ । તૂ રાત્રિકોં ધ્રુવઘાટ જૈયો । તહાં દ્રવ્ય દેલેગો પરિ લીજો મતિ । તવ નારાયણદાસ ઉઠિકે ઘર આયે સો રાત્ર મરૂં । તવ નારાયણદાસ ઉઠિ કે ધ્રુવઘાટ પર ગયે । સો દેલે તો સોના રૂપા કે ઢેર પડે હૈ । સો લોભ કરિ લેન લાગે । તવ શ્રીયમુનાજી કે મીતર તેં દોય મનુષ્ય આય નારાયણદાસ કોં મારે । જો-તોકોં શ્રીઆચાર્યજી લેન કી કહી હૈ ? જો-લેન આયો ? તોકોં શ્રીઆચાર્યજી કે વચન સોંચે માનિવે કે લિયે દ્રવ્ય દિલ્લાયો હૈ । સો શ્રીઆચાર્યજી કી આજ્ઞા લાઝ, તવ લે જૈયો । તવ નારાયણદાસ ઘર આય સોય રહે । પાછે સવેરે વિશ્રાન્ત ઘાટ પર નારાયણદાસ આય વૈઠિ રહ્યો । સો શ્રીઆચાર્યજી પ્રાતઃકાલ કી સંઘ્યા-વંદન કરન કોં વિશ્રાન્ત પધારે । તવ નારાયણદાસ ને દણ્ડવત કિયો । તવ શ્રીઆચાર્યજી કહે, આલ્ખરિ પશુ તો સહી, વિશ્વાસ નાहीं । તવ નારાયણદાસ ને વિનતી કરી, મહારાજ ! આપકે વચન સવ સોંચે હૈ । ધ્રુવ ઘાટ પર દ્રવ્ય દેલ્લ્યો, સો લોભ કરિ લેન લાગ્યો । તવ દોય મનુષ્ય જલ્લેં નિકસિ મારન લાગે । ઔર કહે, શ્રીઆચાર્યજી કી આજ્ઞા હોય તો લે જા । સો મહારાજ !

કરે છે. દ્રવ્ય મળે દ્રવ્યમદથી અનેક જીવોનું અહિત કરે. વિષય આદિ પાપ કરે. વળી ખૂબ્યો તો ક્યારેય રહ્યો નથી. તેથી દ્રવ્ય તારા ભાગ્યમાં નથી. પરંતુ ઓછો પાત્ર બણી પ્રશ્ન દ્રવ્ય નથી આપતા. રાત્રે ધ્રુવઘાટ જલે. ત્યાં દ્રવ્ય જોઈશ પરંતુ લઈશ નહીં, ત્યારે નારાયણદાસ ઉઠીને ઘર આવ્યા. તે રાત્રિ થઈ ત્યારે નારાયણદાસ ઉઠીને ધ્રુવઘાટ ગયા. ત્યાં જુએ તો સોના રૂપાના ઢગલા પડ્યા છે. તે લોભ કરી લેવા લાગ્યા. ત્યારે શ્રીયમુનાજીના અંદરથી બે મનુષ્ય આવી નારાયણદાસને માર્યા, કે તને શ્રીઆચાર્યજીએ લેવાનું કહ્યું છે તે લેવા આવ્યો ? તને શ્રીઆચાર્યજીનાં વચન સાચાં માનવાને માટે દ્રવ્ય દેખાડ્યું છે. શ્રીઆચાર્યજીની આજ્ઞા લાવ ત્યારે લઈ જલે. ત્યારે નારાયણદાસ ઘર આવીને સૂઈ રહ્યા. પછી સવારે વિશ્રાન્ત ઘાટ ઉપર નારાયણદાસ આવી બેસી રહ્યો. પછી શ્રીઆચાર્યજી પ્રાતઃકાલની સધ્યાવદન કરવાને વિશ્રાન્ત પધાર્યા. ત્યારે નારાયણદાસે દંડવત્ કર્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, આખર પશુ તો ખરો. વિશ્વાસ નહીં. ત્યારે નારાયણદાસે વિનતી કરી, મહારાજ ! આપનાં વચન બધાં સાચાં છે. ધ્રુવઘાટ ઉપર દ્રવ્ય જોયું. તે લોભ કરીને લેવા લાગ્યો. ત્યારે બે મનુષ્ય જલથી નીકળીને મારવા લાગ્યા. અને કહે, શ્રીઆચાર્યજીની આજ્ઞા હોય તો લઈ જા. તે મહારાજ ! એ બે મનુષ્ય ઢાણ હતા ? અને આપે

वे दोगे जने कौन हे ? और आप मोकों पशु कहें, ताको कारन कहा ? सो कृपा करि के कहिये । तब श्रीआचार्यजी कहें, वे दोगे वरुण के दूत हे, सो तोकों लेन न दिये । और तू लेतो तो तेरो जनम विगारि जातो । और तू लीला में वानर श्रीगोकुल को है, सो असमर्पित खाय के संसार में परधो दुःख भोगत हैं । तब नारायणदास दण्डवत करि विनती किये, महाराज ! मोकों या संसार दुःख सों छुड़ाईये । अब मोकों द्रव्य की चाह नहीं हैं । तब श्रीआचार्यजी नारायणदास कों श्रीयमुनाजी में स्नान कराय के नाम निवेदन कराये । तब नारायणदास ने कही, महाराज ! मोकों भगवद् सेवा पधराय दीजिये ! तब श्रीआचार्यजी कहें, पशु सों कहूँ पुष्टिमार्ग की सेवा बनी है ? तातें तू अष्टाक्षर मंत्र कों रात्र दिन कछो करियो । तोकों याही तें भगवद् प्राप्ति होयगी । और आजु पाछे श्रीयमुनाजी के तीर काहु सों कछु लीजो मति । तू घर में रहियो, तोकों घर में ही सब कछु आय रहेगो । विश्वास दढ़ राखियो । यह कहि आप सन्ध्या वन्दन करि महावन पधारे । नारायणदास घर में आय बैठि रहे । अष्टाक्षर मंत्र मुख सों कहन लागे । सो वाही दिन एक जनो रूपैया दस घर में दे गयो । तातें नारायणदास को विश्वास बढ्यो । पाछे घर में रह्यो करते, श्रीआचार्यजी को आश्रय करि अष्टाक्षर जप्यो करते ।

पशु कह्यो तेनुं कारणु शुं ? ते कृपा करीने कहीये. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, जे जे वरुणना दूत हुता. जेने तने लेवा न दीधो जेने तू लेतो तो तारे जन्म जगदी जतो. जेने तू लीलाभां श्रीगोकुलनो वांढरे छे. ते असमर्पित खाधने संसारभां पड्यो दुःख भोगवे छे. त्यारे नारायणदासे विनंती करी, महाराज ! मने ज्यो संसार दुःखी छोडानो. हुवे मने द्रव्यनी चाहना नथी. त्यारे श्रीआचार्यजीजे नारायणदासने श्रीयमुनाजीभां स्नान करावीने नाम-निवेदन कराव्युं. त्यारे नारायणदासे कह्युं, महाराज ! मने भगवद्सेवा पधरावी आपो. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, पशुथी कंठ पुष्टिमार्गनी सेवा बनी छे ? तेथी तू अष्टाक्षर मंत्रने रात दिवस कछो कर. तने जेनाथी ज भगवद्प्राप्ति थसे. जेने ज्यो पछी श्रीयमुनाजीना किनारे डोर्धथी कंठ लथि नही. तू घरभां रहेजे. तने घरभां ज सर्व कंठ आवी रहेसे. विश्वास दढ़ राखजे. जेम कही आप संध्यावन्दन करी महावन पधार्या. नारायणदास घरभां आवीने जेसी रखा. अष्टाक्षर मंत्र मुजथी कहेवा लाग्या. ते तेज दिवसे जेक जणो रूपैया दस घरभां दध गयो. तेथी नारायणदासने विश्वास बढ्यो. पछी घरभां रखा आवता. श्रीआचार्यजीनो आश्रय करी अष्टाक्षर जप्या करता.

वार्ता प्रसंग १—सो नारायणदास भाटकों श्रीमदनमोहनजी ने आज्ञा दीनी । जो-मैं वृन्दावन में राधाबाग में हो । सो तू मोकों घरती खोदि के बाहिर पधराऊ । तब नारायणदास वृन्दावन में जाय राधाबाग में खोदि के श्रीमदनमोहनजी कों पधराय, मथुरा आवे । सो कोइक दिन में अड़ेल तें श्रीगोपीनाथजी मथुरा पधारे । तब नारायणदास ने श्रीगोपीनाथजी सों सगरे समाचार कहे । तब श्रीगोपीनाथजी ने मदनमोहनजी कों पंचामृत स्नान कराय पाट बैठारे । सो कल्लुक दिनलों नारायणदास ने सेवा कीनी । पाछे नारायणदास ने देह छोडी ता पाछे नारायणदास के सगे संबंधी कुटुंबी कोई न हतो । ताते वैष्णव ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, महाराज ! नारायणदास की देह छूटी । अब श्रीमदनमोहनजी कों कहाँ पधरावें । तब बंगाली कल्लुक दिन श्रीनाथजी की सेवा करी हती, सो बंगाली कों श्रीमदनमोहनजी दिये ।

वार्ता ॥५८॥

भावप्रकाश—ताको कारन यह है, जो-श्रीगोपीनाथजी के पाट बैठारे हते । सो गोपीनाथजी बलदेवजी को रूप है । तिनके सेव्य मर्यादा मार्गीय ठाकुर हे । ताते श्रीगुसांईजी बंगालीन कों मर्यादा मार्गीय पूजा करन कों दिये । पुष्टि-मार्गीय वैष्णव कों नाहीं दिये, न आप राखें । जो-श्रीआचार्यजी के सेव्य होते

वार्ता-प्रसंग १-ते नारायणदास लाटने श्रीमदनमोहनजीके आज्ञा दीधी के हुं वृंदावनमां राधाबागमां छुं. त्यांथी तू भने धरती भेदीने पहराव. त्यारे नारायणदास वृंदावनमां जे राधाबागमां भेदीने श्रीमदनमोहनजीने पधरावी मथुरा आया. पछी केरला द्विसमां अउलथी श्रीगोपीनाथजी मथुरा पधारां त्यारे नारायणदासे श्रीगोपीनाथजीने पधा समायार कथा. त्यारे श्रीगोपीनाथजीके मदनमोहनजीने पंचामृत स्नान करावी पाट भेसाया. ते केरलाक द्विस सुधी नारायणदासे सेवा करी. पछी नारायणदासनी देह छुटी. तेभने सगु संभंधी काठ न हतुं, तेथी वैष्णवे श्रीगुसांईजीने कथुं, महाराज ! नारायणदासनी देह छुटी. हुवे श्रीमदनमोहनजीने क्यां पधरावीके ? त्यारे पंगालीके केरलाक द्विस श्रीनाथजीनी सेवा करी हती. ते पंगालीने श्रीमदनमोहनजी दीधा.

वार्ता ॥ ५८ ॥

भावप्रकाश—तेनुं कारण्ये के श्रीगोपीनाथजीना पाट भेसाडेला हता. ते श्रीगोपीनाथजीके पददेवजीनुं स्वरूप छे. तेभना सेव्य मर्यादा मार्गीय ठाकुर हता तेथी श्रीगुसांईजीके पंगालीकेने मर्यादा मार्गीय पूजा करवाने आया. पुष्टि-मार्गीय वैष्णवने नही आया. न पोते राया. श्रीआचार्यजीना सेव्य होता तो

तो आप राखते । श्रीगोपीनाथजी पाट वैठारे हते तातें श्रीवल्लभकुल वैष्णव दर-
सन कूं जात हैं । सो नारायणदास ऐसे भगवदीय हे । वैष्णव ॥५८॥

✽ ✽ ✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, नारायणदास लुहाणा, ठढा के
वासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो नारायणदास लीला में विसाखाजी की सखी हैं ।
लीला में इनको नाम 'केतकी' है । सो ठढा गाम में एक लुहाणा के घर प्रगटे ।
सो लुहाणा गाम में एक बड़ो सेठ हतो । सो बडी बधाई करी । पाछे नारायणदास
पांच वर्ष के भये । सो नारायणदास के सगरे देह पर फोड़ा भये । सो पिताने
देस देसतें गुनी बुलाय औषध कियो । परन्तु काहू सों आछे न भये । तब नारा-
यणदास के पिताने सबत सों कही, जो—नारायणदास कों कोऊ आछो करे तो लाख
रुपैया उनकों देय । सो पांच वर्ष बीति गये, परन्तु फोरा न गये । सो नारायणदास
सूकि गये । पाछे पृथ्वी परिक्रमा करत श्रीआचार्यजी ठढे पधारे । सो काहू नें
नारायणदास के पिता सों कही, श्रीवल्लभाचार्यजी पधारे हैं, मायावाद खंडन किये
हैं । सो उनकी कृपा होय तो नारायणदास अब आछे होय जाय । तब नारायणदास

पोते राखता. श्रीगोपीनाथजीके पाट भेसाडया तेथी श्रीवल्लभकुल वैष्णव दर्शन
करवा जय छे. ते नारायणदास जेवा भगवदीय हुता. वैष्णव ॥५८॥

✽ ✽ ✽

हुवे श्रीआचार्यजीके महाप्रभुजना सेवक, नारायणदास लुहाणा, ठढाना
वासी, तेमनी वार्ताना भाव कहीजे छीजे:—

भावप्रकाश—ते नारायणदास लीलाમાં विशाखाजीनी सखी छे. लीलाમાં
अमनु' नाम 'केतकी' छे. ते ठढा गामમાં अेक लुवाणा धरे प्रकट्या. ते लुवाणा
गामમાં अेक भोटो शेठ हुतो. तेणे भोटो बधाई करी. पछी नारायणदास पांच
वर्षना थया. त्तारे नारायणदासना अधा देहे गुमडां थयां त्तारे पित्तजे देस देसथी
गुणी भोलावी औषध क्युं. परतु डाधनाथी सारा न थया. त्तारे नारायणदासना
पित्तजे अधाने कछुं, ते नारायणदासने सारे करे तो लाग्ग इपीया अेने हडं. ते
पांच वर्ष बीती गयां परंतु कैडा न गया. नारायणदास सुकाध गया, पछी पृथ्वी
परिक्रमा करतां श्रीआचार्यजीके हडे पधार्या. ते डाधजे नारायणदासना पित्ताने कछुं,
श्रीवल्लभाचार्यजीके पधार्या छे. मायावाद खंडन कर्यो छे. अमनी कृपा थाय तो नारा-
यणदास हुमणूं सारा थई जय. त्तारे नारायणदासना पिता नारायणदासने डोलीमां

को पिता नारायणदास कू डोली में बैठारि हजार रुपैया भेट ले आयो । पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों दण्डवत कियो, हजार रुपैया आगे धरयो । तव श्रीआचार्यजी खीज के कहैं, कहा हम वैद्य हैं, जो-फोरा आछे करें ? हमारे तो, जो-कोई हमारो सेवक है तिनको लेत हैं, उनकों भगवद् नाम सुनावत हैं । श्रीठाकुरजी को नाम हमतें सुनि जा, और यह द्रव्य ले जा । हमकों नाहीं चाहिये । तव नारायणदास के पिता ने पाग श्रीआचार्यजी के आगे धरी । ओर चरन पकरि दण्डवत करि परयो रह्यो, कह्यो आप ईश्वर हो । यह पुत्र अपनी ओर तें मोकों देत हों । मैं आपकी सरनि हों । मोपर कृपा करोगे तव मैं घर कों जाऊंगो । तव श्रीआचार्यजी कहैं, अब तू अपने बेटा कों ले घर जा । हम तेरे घर पधारि के आछो करि देंगें, तव जगत जानेगो नाहीं । अब जो-आछो करे तो सगरो जगत अनेक दुःख सों लपटे हैं सो हमारे पीछे पड़े । तव नारायणदास के पिता ने कही, महाराज ! मैं घर जाऊँ । (और) आप (अन्यत्र) पधारो तो मैं फिर आपके चरन कहाँ पाऊँ ? तातें मेरे माथे हाथ धरो, जो हम तेरे घर आवेंगे । तथा चरन धरो तो मोकों विश्वास होय । या प्रकार बचन देहो तो मैं जाऊँ । तव श्रीआचार्यजी कहैं, तेरे माथे तो चरन हाथ कछु नाहि धरूं, तू दैवी नाहीं । अपने स्वार्थ के लिये

पेसाडी हुनर इपीया भेट लधने आये। पछी श्रीआचार्यजी महाप्रभुने दण्डवत करियां, हुनर इपीया आगण धरियां। तारे श्रीआचार्यजीके पीछेने कछुं, शुं अपने वैद्य छीये जथी झेडा सारा करीये ? अमारे तो जे डोई अमारे सेवक छे तेतुं लधने छीये। अने लखननाम संभणानीये छीये। श्रीठाकुरजितुं नाम अमारथी सांभणी जे अने आ द्रव्य लध जे। अमारे नथी जेधतुं। तारे नारायणदासना पिताये श्रीआचार्यजिना आगण पाग धरी अने यरण पकडी दण्डवत करीने पडी रह्यो। कछुं, आप ईश्वर छे। आ पुत्र आपना तरइथी मने हो छे। हु आपनी शरण छुं। मारा उपर कृपा करी। तारे हुं धरे जधश। तारे श्रीआचार्यजी कछे, हुवे तू तारा भेटाने लध घर जे। अने तारा धर पधारीने सारे करी दधशुं। तारे जगत जणुशे नही। हुमणुं जे सारे करीये तो अधुं जगत जे अनेक दुःखेथी लपटयुं छे ते अमारी पाछण पडे। तारे नारायणदासना पिताये कछुं, महाराज ! हुं धर जेठं अने आप अन्यत्र पधारो तो हुं करी आपना यरणरविंद कयां भेणवुं ? तेथी मारा माथे हाथ धरो छे अने तारा धर आवीशुं। तथा यरण धरो तो मने विश्वास थाय। आ प्रकार वचन हो तो हुं जेठं। तारे श्रीआचार्यजी कछे,

दैन्यता करत है। तेरे कछ् प्रीति नाहीं है। नारायणदास दैवी जीव है, याकों सरनि लेनो है। सो याके माथे हाथ धरुंगो। तव नारायणदास के पिता ने कही, महाराज ! मै इतनी विनती या पुत्र के लिये ही करत हों, और मोय कछ् नाहीं चाहिये। याही के माथे हाथ धरो। तव श्रीआचार्यजी नारायणदास के पास डोली में जाय देखें तो परघो है। सो दोऊ चरन माथे पर छाती पर धरि परदा डारि दिये। कहे, अब घर ले जा। तव नारायणदास को पिता घर ले जाय नारायणदास को देखें तो कहूं फोड़ा को नाम नहीं, सुन्दर देही है। तव पुत्र को गोद लेन लाग्यो। तव नारायणदास ने कही, मोकों आछो कियो सो कहां है ? तव नारायणदास के पिता ने कही, गाम बाहिर तलाव पर हैं। तव नारायणदास ने कही, एक मनुष्य मेरे साथ करि देऊ, तहाँ मैं जाऊंगो। तव पिता ने कही असवारी पर बैठि के जाऊ, घोड़ा है पालकी है। तव नारायणदास ने कही, तू सुख है। भगवान के दरसन को पायन जैये। तव नारायणदास संग मनुष्य ले श्रीआचार्यजी के पास आय दण्डवत करिके विनती करी, मोकों कृपा करिके सरनि लीजिये। और मोकों आप आछो कियो, मेरे मस्तक पर छाती पर चरन धरे परन्तु मोकों

तारा माथे तो यरणु-हाथ कछ् नहीं धरूं. तू दैवी नहीं. तारा स्वार्थना भाटे दीनता करे छे. ताराभां कछ् प्रीति नहीं. नारायणदास दैवी छत्र छे अने शरणे देवे छे तेथी अने माथे हाथ धरीश. तारे नारायणदासना पिताअये कछुं, महाराज ! हुं आटकी विनती आ पुत्रने भाटे न कछुं छुं. पीनुं मने कछ् न जेधअये अनाज माथे हाथ धरो. तारे श्रीआचार्यजी नारायणदासने पासे डोलीभां जेध अुअये तो पडयो छे. तारे अन्ने यरणु माथा उपर छाती उपर धरी पडयो नापी दीधा. कहे, हुवे धर लछ् न. तारे नारायणदासने पिता धरे लछ् जेध नारायणदासने अुअये तो कछ् शुभदानुं नाम नहीं. सुहर देह छे. तारे पुत्रने गोद लेना लाग्यो. तारे नारायणदाससे कछुं, मने सारे कर्यो ते क्यां छे ? तारे नारायणदासना पिताअये कछुं, गाम बाहिर तलाव उपर छे. तारे नारायणदाससे कछुं, अेक मनुष्य मारी साथे करी द्या त्यां हुं जेधश. तारे पिताअये कछुं, असवारी उपर बेसीने न. घोडा छे पालकी छे. तारे नारायणदाससे कछुं, तू सुख छे. भगवानना दर्शने पगे जेधअये. तारे नारायणदास साथे मनुष्य लछ् श्रीआचार्यजीनी पासे आवी दंडवत् करी विनती करी, मने कृपा करीने शरणे देा. अने मने आप सारे कर्यो. मारा मस्तक उपर छाती उपर यरणु धर्या परंतु मने दर्शन दीधां नहीं तेनुं शुं करणु ? तारे श्री-

दरसन दिये नहीं ताको कहा कारण ? तब श्रीआचार्यजी तलाव में नारायणदास को न्हावय के नाम सुनाये । तब नारायणदास ने कही, महाराज ! मैं महा अनाथ हतो सरीर हूँ करि, और बड़े घर में जन्म भयो दुःसंग सों घिरघो अष्ट प्रहर । ऐसो मैं महादुष्ट पापी तापर आप इतनी कृपा करी, सो आप ही सों वने । अब मोकों जो आज्ञा आप देऊ सो मैं करूँ, जामें मेरो उद्धार होय । विवेक, धैर्य, कबहू छूटे नहीं. आपके चरन में मन लग्यो ही रहूँ । तब श्रीआचार्यजी कहें, यह तो तोकूँ जब माथे पर, हृदय पर चरन धरघो तब ही सगरो धर्म धरि दियो । अब तोकों भगवत सेवा देत हों, तिनकी सेवा करियो । सो कुंकुम मँगाय दोऊ चरणारविन्द में लगाय एक वस्त्र पर छाप के चरणारविन्द की सेवा दीनी । और कहें, अब तुम घर जाऊ । तुमकों दृढ़ भक्ति दीनी है । और यह पिता हजार रुपैया डारि गयो है सो पिता को दीज्यो । तब नारायणदास ने कही, महाराज ! यह मेरी ओर तें भेट राखो । तब श्रीआचार्यजी कहै, तेरी ओर की बहुतेरी भेट राखेंगे । पिता तो थोरे दिनन में मरेगो । तब राखेंगे । यह दैवी द्रव्य नहीं है । तब श्रीआचार्यजी कहें, तेरो नाम नारायणदास ! आगे सब कोऊ नरिया कहते । तब नारायणदास दंडवत करि श्रीआचार्यजी सों विदा होय घर आये । पिता को

आचार्यजी तलावमां नारायणदासने न्हावडावीने नाम संभणायुं. त्तारे नारायणदासे क्खु, महाराज ! हु महा अनाथ हतो शरीरे करीने, अने मोटा घरमां जन्म थयो. ते दुःसंगथी अष्टप्रहर घेर्यो. अवे हुं महा दुष्ट पापी तेना उपर आपे आटवी कृपा करी. ते आपथी न अने. हुवे मने न आज्ञा आप दे ते हु कइं. नमां मारे उद्धार थाय. विवेक धैर्य करीय छूटे नहीं. आपना अरण्यमां मन लायुं न रहे. त्तारे श्रीआचार्यजी कहे, अ ते तने अतारे माथा उपर हृदय उपर अरण्य धर्या त्तारे न अथा धर्म धरी दीधो. हुवे तने भगवत्सेवा दठं छुं तेनी सेवा करे. पछी कुंकु मंगायी अने अरण्यारविन्दमां लगाडी अक वस्त्र उपर छापिने आपना अरण्यारविन्दनी सेवा दीधी अने क्खुं, हुवे तमे घर अव. तमने दठ भक्ति दीधी छे. वणी आ हुअर रुपैया (तारे) पिता नापी गयो छे ते तेने आपने. त्तारे नारायणदासे क्खु, महाराज ! आ मारी तरङ्गी भेट राप्पो. त्तारे श्रीआचार्यजी कहे, तारी तरङ्गी धणी भेट राप्पीशुं. पिता तो थोडा दिवसोमां मरशे त्तारे राप्पीशुं. आ दैवी द्रव्य नथी. पछी श्रीआचार्यजी कहे, तार नाम नारायणदास, पहेलां अथा नरिया कहेता. त्तारे नारायणदास दंडवत् करी श्रीआचार्यजी विदाय थध धरे

हजार रूपैया दिये । तब पिताने कही, यह तो मैं श्रीआचार्यजी के भेट करचो हतो, तू क्यों ले आयो ? उह मेरे उपर बड़ो उपकार किये हैं । जो-तोकों आछो कियो । और अधिक लेवे को मन होय तो दस पाँच हजार ले जा । तब नारायणदास ने कही, उनकों कल्ल नहीं चाहिये । वे तो केवल परमार्थ करन के लिये प्रगटे हैं । तब पिता चुप होय रह्यो । तब नारायणदास एक हवेली न्यारी लेके रहे । तहाँ सेवा श्रीआचार्यजी के चरणारविन्दकी करन लागे । पाछे श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा करन कों पधारे । यहां नारायणदास सबके हाथ को जल छोड़ि दिये । कोई वैष्णव आवे तो भरे, के आप भरे । सो पिता सुनिके नारायणदास पर खीज्यो । जो तू कहा मजूर है ? जो जल भरत हैं । ताते यह किनने तोकों सिखायो है ? तब नारायणदास ने कही, तू मोसों मति बोले । मेरे मन में आवेगी सो मैं करूंगो । तू कौन मैं कोन ? यह बात सुनिके पिता क्रोध करिके कह्यो, मेरे द्रव्य सों बैठो खात है, खर्च करत है । और मोसों डेढ़ो बोलत है ? तब नारायणदास ने गहना, कपड़ा, वासन जो द्रव्य हतो सो सब पिता के घर पठाय दियो । तब पिता रूठि गयो । सो यह सगरी बात बादशाहने सुनी । सो बादशाह ने नारायणदास कों कुलदीवानगीरी दीनी । सो वह देसाधिपति के यहां नारायण-

आव्या. पिताने हुअर रूपीआ आव्या. सारे पितामे कल्लुं, आतो मे श्रीआचार्यजने भेट कर्या हुता. तू ठेम लठ आव्यो. अमणे मारा उपर भेटा उपकार कर्यो छे, जे तने सारे कर्यो. भीज वधु लेवानी छिछा होय तो दस पांच हुअर लठ ज. सारे नारायणदासे कल्लुं, अमने कठ नथी जेधतु. अे तो ठेवण परमार्थ करवाने भाटे प्रकट्या छे. सारे पिता रूप थध रह्यो. सारे नारायणदास अेक हवेली अलग लधने रखा. त्यां श्रीआचार्यजना अरणारविन्दनी सेवा करवा लाग्या. पछी श्रीआचार्यज पृथ्वी परिक्रमा करवाने पधार्या. अहीं नारायणदासे अधाना हाथनुं जल छोडी दीधुं. डाँठ वैष्णव आवे तो बरे ठे पोते बरे. सारे पिता सांभणीने नारायणदास उपर भीज्यो., ठे तू शुं मजूर छे ? ठे पाणी बरे छे ? तेथी तने आ डाँठे शिअवाडयुं छे ? सारे नारायणदासे कल्लुं, तूं माराथी न भोडीश. मारा मनमां आवशे ते हुं करीश. तू डाँठु हुं डाँठु ? अे वात सांभणीने पिता डाँध करीने कडे, मारा द्रव्यथी जेठ्यो पाय छे. अर्य करे छे. हुवे माराथी वांडुं भोले छे ? सारे नारायणदासे धरेणां कपडां वासणु जे द्रव्य हुतुं ते अधुं पिताना धरे भोडडी दीधुं. सारे पिता रिसायो. आ अधी वात आदशाडे सांभणी. ते आदशाडे नारायणदासने कुदल

दास कों सो होय । तहां बहोत द्रव्य कमायो । श्रीआचार्यजी कों बहोत भेट पठाये । वैष्णव जो आवे तिनकों मन मान्यो द्रव्य दे, प्रसन्न करि विदा करे । ऐसे करत बहोत दिन वीते ।

वार्ता-प्रसंग १—सो एक समय नारायणदास के उपर वह बादशाह कोप्यो । सो नारायणदास कों बंदीखाने में दीनो । पांच लाख रुपैया को दण्ड कियो । ताको बंधान बांध्यो, जो-पांच हजार रुपैया नित्य भरे । जा दिन रुपैया पांच हजार न भरे ता दिन पांचसे कोरड़ा मारनें । सो अडेल में दोय ब्राह्मण वैष्णव श्रीआचार्यजी के सेवक हते । तिनके एक बेटी सयानी भई । सो व्याह करिवे कों कछु द्रव्य हतो नाहीं तब दोऊ विचार किये, जो-ठट्टा कों चालिये । नारायणदास के पास तें कछु द्रव्य लाय के कन्या को विवाह करिये । यह विचार के दोऊ भाई ब्राह्मण अडेल तें चले, सो ठट्टा में आये । तब यह सुने, जो नारायणदास मिलने नाहीं, सो प्रातःकाल उठि चलेंगे । सो एक मनुष्य ने नारायणदास सों जाय के कही जो-दोय ब्राह्मण श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक आये हैं, सो तुमकों बंदीखाने सुनिके प्रातःकाल उठि जायगें । तब नारायणदास ने उन दोय वैष्णवन के पास अपनो मनुष्य पठायो, और कह्यो, जो-

द्विवानगीरी सोपी. ते दशाधिपतिने त्यां नारायणदास करे ते थाय. त्यां द्रव्य षडु कमाया श्रीआचार्यजीने षडुज लेट भोक्ली. वैष्णव जे आवे तेमने मन मान्यु द्रव्य दे. प्रसन्न करी विदाय करे. येम कृतां धरुा द्विस वीत्या

वार्ता-प्रसंग १—येक समय नारायणदासना उपर ते बादशाह कोप्यो. तेथी नारायणदासने भंटीभानाभां भूक्या. पांच लाख रुपैयाना दंड कर्यो. तेनुं भंधायुं के पांच हजार नित्य भरे. जे द्विस रुपैया पांच हजार न भरे ते द्विस पांचसे कोरडा मारवा. पछी अडेलभां ये आह्मण वैष्णव श्रीआचार्यजीना सेवक हुता तेमनी एक बेटी उभर लायक थछ. त्यारे लगन करवाने कंठ द्रव्य हुतुं नही. तेथी भन्नेये विचार कर्यो, के क्छा नछये. नारायणदासनी पासैथी कंठ द्रव्य लापीने कन्याको विवाह करीये. ये विचारिने भन्ने लछ आह्मण अडेलथी यादया ते क्छाभां आव्या. त्यारे ये सांभरुं के नारायणदास भणशे नही. अटले प्रातःकाल उठीने यादीशुं. त्यारे एक मनुष्ये नारायणदासने नछने क्छुं, के ये आह्मण श्रीआचार्यजी महाप्रभुना सेवक आव्या छे. ते तमने भंटीभाने सांभणीने प्रातःकाल यादया नशे. त्यारे नारायणदासे ते भन्ने वैष्णवोनी पासै योतानो भाणुस भोक्ल्यो भने क्छुं,

मोकोँ तुम प्रातःकाल ही दरसन देकें कहूँ को जैया । मेरे बड़े भाग्य हैं, जो-तुम या समय मोकोँ दरसन दियो । तब वा मनुष्य दोउ ब्राह्मण वैष्णव सों कह्यो, जो-नारायणदास सँ मिलिके कहूँ को जियो । तब प्रातःकाल उठि बे दोऊ देहकृत्य करि स्नान किये । पाछे श्रीआचार्यजी को, श्रीनाथजी को, चरणामृत महाप्रसाद की थेली ले नारायणदास के पास आये । सो नारायणदास उठि कें मिले, प्रीति सों निकट बैठाये । तब दोऊ वैष्णव नें श्रीआचार्यजी को चरणामृत, श्रीनाथजी को चरणामृत, महाप्रसाद की थेली दिये । तब नारायणदास उठिके माथे चढ़ाय लिये । तब नारायणदास श्रीआचार्यजी के कुसल समाचार पूछि के पाछे कहें, मेरो बड़ो भाग्य है, जो-वैष्णव मोकोँ बंदीखाने में दरसन दिये । तातें आज मेरी बंदी पूरी होयगी । अब मैं जान्यो, जो-भोपर श्रीआचार्यजी की श्रीठाकुरजी की कृपा है । जो-या ठोरहू या समय मोकोँ वैष्णव दरसन दिये । या प्रकार वार्ता करत हैं । इतने में पांच हजार की पांच थेली नारायणदास के घर तें आई, सो द्वारपाल ने उन पांचों थेलीन पर मोहर छाप करिके नारायणदास के पास पठवाई । सो नारायणदास ने यह थेलीन के लिये वैष्णवन कों बातन में लगाय राखे । सो थेली आई तब उह मनुष्य कों विदा करि वैष्णव सों कहें, यह तुम लेकें वेगे

के भने तमे प्रातःकाल दर्शन हने भील जगे जगे, भासं महान भाग्य छे के तमे आ समय भने दर्शन दीधां. त्पारे ते मनुष्ये अन्ने आह्वान वैष्णवने क्युं के नारायणदासने भणीने भील जगे जगे. त्पारे प्रातःकाल उठीने अन्ने देहकृत्य करी स्नान क्युं. पछी श्रीआचार्यजीना श्रीनाथजीना चरणामृत महाप्रसादनी थेली लभ नारायणदासनी पासै आल्या त्पारे नारायणदास उठीने भल्या. प्रीतिथी पासै भेसाआ. त्पारे अन्ने वैष्णवे श्रीआचार्यजीतुं चरणामृत, श्रीनाथजीतुं चरणामृत, महाप्रसादनी थेली आपी. त्पारे नारायणदासे उठीने माथे चढावी दीधी. पछी नारायणदास श्रीआचार्यजीना कुशण समाचार पूछीने पछी कडे, भाइं मोटुं भाग्य छे. के वैष्णवे भने अदीभानाभां दर्शन दीधां तेथी आज भारी केह पुरी थछ जशे. हुवे में जल्युं के भारा उपर श्रीआचार्यजीनी श्रीठाकुरजीनी कृपा छे, के आ जगे पणु आ समय भने वैष्णवे दर्शन दीधां. आ प्रकारे वार्ता करे छे अटलाभां पांच हजरनी पांच थेली नारायणदासना घरथी आपी. ते द्वार पासै पांचे थेलीआ उपर मोहार छाप करीने नारायणदासनी पासै भेकसी. ते नारायणदासे अे थेलीआने भाइ वैष्णवोने पातोभां

जाउ । के तो और गाम चले जैयो, के यहां कहुं प्रगट मति हूजो, द्वे चार दिन में जैयो । अबतो इतनो ही बने, तुम आये कछु टहल बनी नाहीं । ऐसे कहि वैष्णव कों दण्डवत करि बिदा किये । कहें, श्री-आचार्यजी कों मेरी ओर तें दण्डवत करियो । और इनसों कन्या को विवाह करि दीजियो । सो वैष्णव पांचों हजार ले घरकों आये । इतने ही में उह बादशाह दीवानखाने में आयके बैठयो । तब दीवान सों कह्यो, नारायणदास की पांचों थेली आई ? तब दीवान ने कही, थेली आई द्वारपाल सों मोहर कराय नारायणदास पास पठाई हैं । तब खजानचीसों पूछयो, जो नारायणदासके पांचों हचार रुपैया आये ? तब खजानची ने कह्यो, मेरे पास तो नाहीं आये । तब वह क्रोध करि कह्यो, नारायणदास कों बंदीखाने ते लाओ ।

सो मनुष्य नारायणदास कों लाय देसाधिपति के आगे ठाड़ो कियो । तब देसाधिपति ने कही, नारायणदास आजु थेली क्यों नाहीं आई ? तब नारायणदास नें कही, आजु थेली न आय सकी । तब बादशाह ने कोरड़ा वारेनकों बुलाय कह्यो, डरपैयो, मारियो मति । तब कोरड़ा वारे नारायणदास के दोउ ओर ठाड़े होय डरपावन लागे । तब बादशाह ने कही, अब तेरी खाल देह की उडि जायगी,

लगाडी राज्या. पछी थेली आवी त्यारे ते मनुष्यने विहाय करी वैष्णवने कहे, आ तमे लधने जहदी जव. के तो भीज गाम यादया जमे के अही कही प्रकट न थता. ये यार दिवसमां जमे. लुमलां तो यादलुं ज थने छे. तमे आव्या कंघ टहुल थनी नहीं अम कही वैष्णवने दंडवत करी विहाय कर्या. कहे, श्रीआचार्यजने भारी तरङ्गी दंडवत करजे अने आ (द्रव्य) थी कन्याना विवाह करी देजे. पछी वैष्णव पांचे लुजर लध घरे आव्या. अटलाभांज ते बादशाह दीवानभानामां आवीने जेठा. त्यारे दीवानने कहुं, नारायणदासनी पांचे थेली आवी ? त्यारे दीवाने कहुं, थेली आवी द्वारपालथी महोर करायी नारायणदास पास भेकसी छे. त्यारे अजानथीने पूछुं, के नारायणदासना पांचे लुजर रूपीआ आव्या ? त्यारे अजानथीअे कहुं भारी पासे तो नथी आव्या. त्यारे तेहे कोध करीने कहुं, नारायणदासने अंहीभानाथी लावो. पछी मनुष्ये नारायणदासने लावी देसाधिपतिना आगण उला कर्या. त्यारे देसाधिपतिअे कहुं, नारायणदास आज थेली केम नहीं आवी ? त्यारे नारायणदासे कहुं, आज थेली न आवी शकी. त्यारे बादशाह केरडावाणाने भेलावी कहुं, उरावने भारीश नहीं. त्यारे केरडावाणा नारायणदासनी अने तरङ्ग उला रही उरावना

नाहीं तो सांच कहियो, घर तें थेली तेरे पास आई। तें कहां छिपाई है। सो सांच कहि दे। तब नारायणदास ने कही, मेरे गुरु भाई ब्राह्मण आये हते, उनके कन्या के विवाह में कछु न हतो। सो दूरितें मेरी आमा करि के आये हते सो पांचो थेली उनकों दीनी। मन में विचारयो, जो-आज पांचसे कोरड़ा खाय रहंगो। इनको तो काम होय। सो मैं उनकों दीनी हूँ। अब तिहारे मन में आवे सो करो। यह नारायणदास की बात सुनते ही बादशाह घरी एक चुप रह्यो। मन में विचारयो, जो-या भूमि पर ऐसे परमार्थी लोग हैं। तातें यह धर्म तें भूमि ठाड़ी है। तब देसाधिपति ने कही, नारायणदास तोंकों स्यावास है। मैं तेरे उपर बहोत प्रसन्न भयो। तू गुरु के धर्म में ऐसो सांचो है? पाछे घोड़ा, सिरोपाव मंगाय नारायणदास को कह्यो, आगे जैसे काम काज करते तैसे ही करो। दंड सब माफ कियो। तब नारायणदास को सिरोपाव पहराय घोड़ा पै चढ़ाय घर पठाये। सो दोऊ ब्राह्मण वैष्णव सुने, जो-नारायणदास बंदीखाने सूं छूटे। सिरोपाव पहरि घोड़ा चढ़ि घर आये। तब प्रसन्न होय नारायणदास सों मिलन आये। तब नारायणदास उठिके मिळे। कहें, तिहारे दरसन तें मैं छूट्यो। पाछे हजार मोहौर की थेली श्रीआचार्यजी के

लाग्या। त्पारे आदशाहुअये कछुं, हुवे तारी आल देहथी उडी जशे. नहीं तो सायुं कलने, धरथी थेली तारी पासे आपी ते क्यां संताडी छे? ते सायुं कही हे. त्पारे नारायणदासे कल्युं, मारा गुरुलाभ आहणु आण्यो हुता. अमनी कन्याना विवाहमां कंध हुतुं नहीं. ते हरथी मारी आशा करीने आण्यो हुता. ते पांचे थेली अमने आपी मनमां विचार्युं के आणे पांचसो कोरडा आध रह्यीश अमनुं तो काम थाय! तेथी भे अमने आपी छे. हुवे तमारा मनमां आवे ते करे. आ नारायणदासनी वात सांलगतांन आदशाहु घडी अेक युप रह्यो. मनमां विचार्युं के आ भूमि उपर आवा परमार्थी लोक छे तेथी आ धर्मथी भूमि उली छे. त्पारे देशाधिपतिअये कछुं, नारायणदास तने शाआश छे. हुं तारा उपर वखो प्रसन्न थयो छुं. तुं गुरुना धर्ममां आवो साय्यो छे? पछी घोडा, सरपाव मंगायी नारायणदासने कछुं, आगण नेम कामकाज करता तेमज करे, दंड अघो माइ कर्यो. त्पारे नारायणदासने सरपाव पहरायी, घोडा उपर चढायी घर मोकल्या. ते अन्ने आहणु वैष्णुवे सांलग्युं, के नारायणदास अंटीआनाथी छुट्या. सरपाव पहरी घोडे यही घर आण्यो. त्पारे प्रसन्न थध नारायणदासने भणया आण्यो. त्पारे नारायणदास उठीने भण्यो. कहे, तमारा दर्शनथी

भेट उन वैष्णव के हाथ दीनी । और उन वैष्णव कों कछू दे, कहैं, मेरी दण्डवत श्रीआचार्यजी आगे करियो । तब दोऊ भाई नारायणदास सों विदा होय के चले सो कछुक दिन में श्रीगोकुल आये । तहां श्रीआचार्यजी पधारे हते । सो नारायणदास की दण्डवत करि हजार मोहौर भेट धरे । सगरे समाचार नारायणदास के कहै । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहैं, वैष्णव पर ऐसी प्रीति चाहिये । ऐसो धर्म जाके हृदय में होय ताको सदा कल्याण ही होय । पाछे दोऊ ब्राह्मण वैष्णव श्रीआचार्यजी सों विदा होय अडेल में आय भली भांति कन्या को विवाह करि दिये । सो नारायणदास ऐसे श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हते । इनको नाम पहले नरिया हतो । सो श्रीआचार्यजी के सेवक भये तब श्रीआचार्यजी इनको नाम नारायणदास धरे ।

वार्ता ॥५९॥

भावप्रकाश—और दोऊ भाई ब्राह्मण वैष्णव साधारण नाम धारी हते । सो पुष्टि लीला सम्बन्धी तो हते नाहीं, तातें इनकी वार्ता नाहीं कहै । श्रीआचार्यजी सरनि लिये । सो सरनि के प्रताप तें संसार दुःख तें छुटि के मुक्ति के अधिकारी होय गये । तातें नारायणदास बड़े भगवदीय हते । इनकी वार्ता कहां ताई कहिये ॥५९॥

✽

✽

✽

हुं छुट्यो. पछी हुणर भहोरनी थेली श्रीआचार्यजीने भेट (करवा) अये वैष्णवोना हाथमां आपी. भीलुं अये वैष्णवोने कंध आपी कहे, भारी दंडवत श्रीआचार्यजी आगण करजे. त्यारे अन्ने साध नारायणदासथी विदाय थधने आल्या. ते डेटसाक द्वि-समां श्रीगोकुल आल्या. त्यां आचार्यजी पधार्यां हुता. ते नारायणदासना दंडवत कडी हुणर भहोर भेट धरी. अधा समाचार नारायणदासना कथा. त्यारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे, वैष्णव पर आवी प्रीति जेअये. अयो धर्म जेना हृदयमां होय तेहुं सदा कल्याणुण थाय. पछी अन्ने ब्राह्मण वैष्णवोअये श्रीआचार्यजीथी विदाय थध अडेलमां आवी सारी रीतिथी कन्याना विवाह करी दीधो. ते नारायणदास अया श्रीआचार्यजीना कृपापात्र भगवदीय हुता. अमहुं नाम पहेलां ' नरिया ' हुतुं ते श्रीआचार्यजीना सेवक थया त्यारे श्रीआचार्यजीअये अमहुं नाम नारायणदास थयुं.

भावप्रकाश—वणी अन्ने साध ब्राह्मण वैष्णव साधारण नामधारी हुता. ते पुष्टिलीला सम्बन्धी तो हुता नही. तेथी अमनी वार्ता नही कही. श्रीआचार्यजीअये शरणे दीधा ते शरणना प्रतापथी संसार-दुःखथी छुटीने मुक्तिना अधिकारी थध गया. तेथी नारायणदास भेटा भगवदीय हुता. अमनी वार्ता ज्यां सुधी कहीअे.

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकनी, एक क्षत्राणी, सो वह अकेली सिंहनंद में रहती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में नवनन्द में बड़े उपनन्द हैं, तिनकी वह कौ नाम 'सुनन्दा' है, सो यह क्षत्राणी को प्रागट्य है। तातें इनकों बालभाव है। सो सिंहनन्द में एक क्षत्री के घर जन्म पायो। सो वर्ष ग्यारह की भई तब व्याह भयो। सो व्याह के महिना पाछे याको वर हतो ताके सीतला निकसी, सो मरि गयो। यह मा वाप के घर में रहै। सगरो काम काज करें। पाछे वर्ष तीस की भई तब मा वाप हू मरि गये। एक भाई हतो सो वह भाई सौं प्रीति बहोत। परन्तु भाई की स्त्री, भोजाई सौं बने नाहीं। तब यह क्षत्राणी ने दूसरो घर लियो। तब भाई ने कही, तू न्यारी क्यों भई ? तब वहनि ने कही, नित्य को क्लेश आछो नाहीं। न्यारी भई तो कहा भयो, मैं तिहारी आज्ञा में हों, काम काज कहियो। तब भाई सौं रुपैया लेके वहनि सौं कह्यो, तू खरचकों राखि। तब वहनि ने कही, मेरे तो अब ही खरची है। न होय तब दीजो। तब भाई ने कही, अब ही मेरो हाथ व्यौहार में चलत है, सो देऊ सो ले लियो करि। पाछे कहा जानिये कहा है ? तब वह राखी। सो सास बहू सिंहनन्द में श्रीआचार्यजी की

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुनी सेवकनी एक क्षत्राणी, ते सिंहनंदमां एकडी रहती, तेनी वार्ताना भाव कह्यो छी—

भावप्रकाश—ये लीलामां नवनंदमां भोटा उपनंद छे। तेमनी बहुतुं नाम 'सुनंद' छे। ते आ क्षत्राणीतुं प्राकट्य छे। तेथी अने आलभाव छे। ते सिंहनंदमां एक क्षत्रीने धरे जन्मी। पछी वर्ष अग्यारनी थध त्यारे लग्न थयुं। पछी लग्नना एक महिना पछी अनेो वर हुतो तेने शीतला नीकणी ते मरी गयो। अ मा-आपना धरमां रहे अथुं कामकाज करे। पछी वर्ष तीसनी थध त्यारे मा-आप पणु मरी गयां। एक साध हुतो तेनाथी प्रीति धणी। परंतु साधनी स्त्री, भोजधथी न अने। त्यारे आ क्षत्राणीअे पीणुं धर दीधुं। त्यारे साधअे कह्युं, तू अलग दम थध ? त्यारे अहेने कह्युं द नित्यने क्लेश सारे नहीं। अलग थध तो शुं थयुं ? हुं तारी आज्ञामां छुं। काम काज कहेने, त्यारे साधअे सो इपीआ लधने अहेनने कह्युं, तू अर्थ माटे राख। त्यारे अहेने कह्युं, मारे तो हुमणां भरथी छे। न होय त्यारे आपने। त्यारे साधअे कह्युं, हुमणां मारे हाथ वहेवारमां यावे छे। न आपुं ते दीधा करे। पछी शुं अणिये शुं छे ? त्यारे तेणु राख्या, पछी सासु-बहु सिंहनंदमां श्रीआचार्यजी सेवकनी

सेवकनी हती, तहां नित्य जान लागी । तब एक दिन कह्यो कछु काम काज श्री-
ठाकुरजी की सेवा मोसों करावो । तब सास बहू ने कही, तू श्रीआचार्यजी की
सेवकनी होती तो कछु सेवा करावती । तब इन कह्यो, अब श्रीआचार्यजी पधारें
तब मोकों सेवकनी करैयो । पाछे सास बहू के श्रीठाकुरजी ने कही, जो—यह
क्षत्राणी बूटी भली काढ़ि जानें है सो मेरे बागे में बूटी कढ़ाय मोकों पहराव । तब
बहू ने श्रीठाकुरजी सों कह्यो । उह श्रीआचार्यजी की सेवकनी नाहीं हैं । और
बूटि काढ़ि, (कछु) लेइगी नाहीं सो मैं कैसे कढाऊँ ? तब श्रीठाकुरजी वह बहू सों
कहें, उह क्षत्राणी दैवी जीव है, तातें तू बूटि कढाऊ । कछुक दिनन में श्रीआचा-
र्यजी पधारेंगे, तब वह सेवकनी हूँ होयगी । कृपापात्र भगवदीय होयगी । तातें
तू बूटि कढाउ, मेरी आज्ञा हैं । तोकों बाधक नाहीं । तब बहू ने एक सुफेद वागा
उह क्षत्राणी कों दियो । कह्यो, यामें छोटी छोटी बूटी काढ़ि दे । तब वह प्रसन्न
होय भाग मानिकें अपुने घर ले जाय अपरस में बूटि काढ़े प्रीति सों । जदपि कोरे
वस्त्र की चिन्ता नाहीं । तोहू श्रीठाकुरजी को जानि अपरस में काढ़ि कें बहू कों
दियो । सो बहू ने श्रीठाकुरजी को अंगीकार करायो । पाछें जब रात्रि भई तबश्री-
ठाकुरजी नें उह क्षत्राणी कों सपने में कही, मैं तेरी बूटी काढी, प्रीति सों अङ्गीकार

हुतां त्यां नित्य जवा लागी. त्यारे अेक द्विवस कथ्युं, कथ काम-काज श्रीठाकुरजीनी
सेवा माराथी करावो. त्यारे सासु-वहुअे कथ्युं, तू श्रीआचार्यजीनी सेवकनी होती
तो कंठ सेवा करावती. त्यारे अेथे कथ्युं, हुवे श्रीआचार्यजी पधारे त्यारे मने सेव-
कनी करावजे. पछी सासु-वहुना श्रीठाकुरजीअे कथ्युं के आ क्षत्राणी वेस-भुटी
सारी काढी जथे छे. तो मारा वागोमां भुटी कढावी मने पड़ेराव. त्यारे वहुअे
श्रीठाकुरजीने कथ्युं, अे श्रीआचार्यजीनी सेवकनी नथी अने भुटी काढीने कथ वेशे
नहीं. अेथी हुं डेवी रीते कढावु ? त्यारे श्रीठाकुरजी ते वहुने कडे, ते क्षत्राणी दैवी-
जव छे. तेथी तू भुटी कढाव. थोडाक द्विवसमां श्रीआचार्यजी पधारसे त्यारे ते
सेवकनी पणु थसे. कृपापात्र भगवदीय थसे. तेथी तू भुटी कढाव मारी आज्ञा छे.
तने बाधक नहीं. त्यारे वहुअे अेक संश्लेह वागो ते क्षत्राणीने आथे. कथ्युं, आमां
नानी नानी भुटी काढी हे. त्यारे ते प्रसन्न थई भाग्य मानीने पोताना धरे लई
जई अपरसमां भुटी काढी प्रीतिथी, यद्यपि द्वारा वस्त्रनी चिंता नहीं तो पणु श्री-
ठाकुरजीनी जणु अपरसमां काढी वहुने आथी. ते वहुअे श्रीठाकुरजीने अगीकार
कराव्ये. पछी अ्यारे रात्रि थई त्यारे श्रीठाकुरजीअे ते क्षत्राणीने स्वप्नमां कथ्युं,

कियो । अब श्रीआचार्यजी दिन दौय में पधारेंगे । सो तेरे भाई के घर ठाकुर हैं, सो भाई सों मांगि कें अपने घर ले आव । तिनकी तू सेवा करियो । पाछें वह क्षत्राणी की नींद खुली । सो कहे, जो-कब सवेरो होय, कब मैं उह भाई पास जाऊँ ? सो सवेरो भयो तब क्षत्राणी भाई पास गई । सो उहां भाई भोजाई दौय दिन तें लरे हते । कलेश करि रसोई न किये हते । तब भाई नें कही, वहनि ! आजु तुम कैसे आई ? तब इन कह्यो, मेरो मन अकेलें कहुँ नाहीं लागत, सो तुम अपने श्रीठाकुरजी मोकों देऊ तो मैं पूजा करों । तब भाई प्रसन्न होइकें कह्यो, वहनि ! यह भली बात कही । ठाकुर दौय दिन तें भूखे बैठे हैं, मेरी बहू नित्य कलेश करति है, सो तू ले जा । तब कह्यो, तुम अपने हाथ तें देऊ, मैं ले जाऊँ तो कदाचित् तिहारी बहू मोसों लरे । तब भाई नहाय कें श्रीठाकुरजी कों दिये । सो प्रसन्न होय घर लाई । रसोई करि भोग धरि महाप्रसाद लिये ।

पाछें श्रीआचार्यजी थानेश्वर पधारे तब बहू ने कही, जो-श्रीआचार्यजी पधारे हैं, मैं दरसन कों जात हों, तू चलेगी ? तब वह क्षत्राणी नें कही, मैं भाई के यहाँ तें श्रीठाकुरजी ले आई हों सो घर तें ले आऊँ । तब बहू ने कही, बेगे ले आव । तब वह क्षत्राणी श्रीठाकुरजी कों ले आई । बहू के संग थानेश्वर आई ।

में तारी कठेदी पुटीने प्रीतिथी अंगीकार करी छे. हुवे श्रीआचार्यजी ये द्विवसमां पधारेशे त्यारे तारा बाधना धरे श्रीठाकुरजी छे. ते बाधथी मांगीने तारा धर लई आव. तेनी तू सेवा करबे. पछी ते क्षत्राणीनी नींद खुली. ते कहे, क्यारे सवार थाय क्यारे हुं ते बाध पासे नठं ? पछी सवार थयु त्यारे क्षत्राणी बाध पासे गई. त्यां बाध-भोजन ये द्विवसथी लडयां हुतां क्लेश करी रसोअ न करी हुती. त्यारे बाधये कहुं, अहेन आन तमे ठम आव्यां ? त्यारे अणु कहुं, माइं मन अडलुं कंध लागतु नथी तो तमे तमारा श्रीठाकुरजी मने हो तो हुं पूज कइं ? त्यारे बाधये प्रसन्न थधने कहुं, अहेन ! आ लदी वात कही. ठाकुर ये द्विवसथी भूभ्या येडा छे. मारी वहु नित्य क्लेश करे छे तेथी तू लई न. त्यारे अणु कहुं, तमे तमारा हाथथी हो. हुं लई नठं तो कदाचित् तमारी वहु मने लडे. त्यारे बाधये नहाधने श्रीठाकुरजीने आभ्या. ते प्रसन्न थई धर लावी. रसोई करी भोग धरी महा-प्रसाद दीधो. पछी श्रीआचार्यजी थानेश्वर पधार्या त्यारे वहुये कहुं, ठ श्रीआ-चार्यजी पधार्या छे. हुं दर्शने नठं छुं. तूं यादीश ? त्यारे ते क्षत्राणीये कहुं, हुं बाधने त्यांथी श्रीठाकुरजी लध आवी छुं ते धरथी लध आवं. त्यारे वहुये कहुं,

श्रीआचार्यजी कों दंडोत कियो । तब बहूनें वह क्षत्राणी के सब समाचार कहे । पाछे विनती करी, जो—महाराज ! अब इनकों कृपा करि सरन लीजिये । तब श्री-आचार्यजी कहे, मैं जानत हों । याकी ऊपर श्रीठाकुरजी पहलें ही कृपा करी हैं । पाछें वह क्षत्राणी सों कहे, जा, तू स्नान करि आऊ । तब वह क्षत्राणी सरस्वती में न्हाय कें श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के पास आई । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु नाम सुनाय ब्रह्मसंबंध कराये । पाछें श्रीठाकुरजी कों पंचामृत सों न्हावाय 'श्रीनवनीतप्रियजी' नाम धरे, उह क्षत्राणी के माथे पधराये । कहे, मन लगाय के सेवा करियो । तब क्षत्राणी और बहू श्रीआचार्यजी कों दंडोत करि विदा होय सिंहनंद में आय सेवा करन लागी । सो चौथे दिनतें उह क्षत्राणी की प्रीति देखि श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागें ।

वार्ता—प्रसंग १—सो वह क्षत्राणी को द्रव्य सब निवरि गयो, अकिंचन हती । सो सेवा सों पहुँचि कें सूत कांतती । तामें सेवा करि निर्वाह करती । सो घरके द्वारे काछिनी तरकारी फल मेवा आदि बेचन कों आवे तब श्रीठाकुरजी कहे, अरी मा ! तरकारी वारी आई है, तू ले । तब वह क्षत्राणी दमरि दमरि की सब प्रकार की थोरि

जल्दी लई आव. तारे ते क्षत्राणी श्रीठाकुरजीने लई आवी. वहुना साथे थानेश्वर आवी. श्रीआचार्यजीने दंडवत् कर्या तारे वहुजे ते क्षत्राणीना पधा समाचार कइया. पछी विनंती करी, के महाराज ! हुवे जेने कृपा करीने शरणु ले. तारे श्रीआचार्यजी कहे, हुं जलु छुं ज्ञाना उपर श्रीठाकुरजीजे पहेलां ज कृपा करी छे. पछी क्षत्राणीने कहे, ज, तू स्नान करी आव. तारे ते क्षत्राणी सरस्वतीमां न्हाधने श्रीआचार्यजी महाप्रभु पासे आवी. तारे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजे नाम संलगावी प्रहससंबंध करावुं. पछी श्रीठाकुरजीने पंचामृतथी स्नान करावी 'श्रीनवनीतप्रियजी' नाम धरुं. ते क्षत्राणीने माथे पधराव्या. कहे, मन लगाडीने सेवा करजे. तारे क्षत्राणी जेने वहु श्रीआचार्यजीने दंडवत् करी विदाय थध सिंहनंदमां आवी सेवा करवा लाग्यां. पछी योथा द्विसे ते क्षत्राणीनी प्रीति जेध श्रीठाकुरजी सानुभावता जलुववा लाग्या.

वार्ता—प्रसंग १—ते क्षत्राणीतुं द्रव्य पधुं थध रहुं. अकिंचन हती. ते सेवाथी पछेथीने सूत कांतती. तेमां सेवा करी निर्वाह करती. ते घरना दरवाजे काछणु शाक, इल, मेवा आदि बेचवाने आवे तारे श्रीठाकुरजी थेकारिने कहे, अरी मा ! शाकवारी आवी छे तू ले. तारे जे क्षत्राणी दमडी दमडीतुं पधी प्रकारतुं थोडुं थोडुं ले. मेवावाणी

थोरि लेय । मेवा वारी फल वारी जब आवे तब श्रीठाकुरजी पुकारि-
कै कहें, अरी मा ! मेवा, फल बिकान आये हैं । तब एक पैसा में सब
भांति के लेय । सो वह काछिनी यह जाने, जो-याको वेटा घर में
प्यारो बहोत है, सो बाहिर नजरि लागन के लिये नाहीं काढ़ति ।
सो यह क्षत्राणी कों पहलें दे जाय । सो गाम में कमाई बहोत होय,
ताके लिये पहलें दोय चारि बेर द्वार पर बोलि, या बाई कों सब
भांति की दे जाय । सो यह क्षत्राणी देय सो ले जाय । सो वह
क्षत्राणी कितनी ककडि आदि कच्ची समर्पे । कितनी तलिकें समर्पे ।
कितनी भुजेना करि, साग, या प्रकार रंच रंच सब प्रकार सों प्रीति
पूर्वक करि भोग धरे । और कोई दिन तरकारीवारी दूरि निकसि जाती;
तब श्रीठाकुरजी द्वार पर जाय दौरिकें उह काछिनी कों पुकारे । बेगी
आऊ, मेरी मा लेयगी । तब वह शब्द सुन्दर सुनि दौरि आवती, श्री-
ठाकुरजी पुकारि के भीतर भाजि आवतें । तब काछिनी कोऊ देखती
नाहीं । तब वह क्षत्राणी कहती, लाला ! बाहिर न जैयें, नजरि लागि
जाय । तब श्रीठाकुरजी कहतें, तरकारीवारी चली जाती तो तू कहां
ते लेती ? कहा भोग धरती ? तब वह क्षत्राणी कहती, लाला ! और
काछिनी बहोतेरी आवेगी, परन्तु तुम मंदिर तें बाहिर मति जाऊ ।
गाम के बुरे लोगन की दृष्टि लागेगी और कबहू तरकारी वारी पुकारि

इसवाणी न्यारे आवे त्यारे श्रीठाकुरजी पोकारिने कहे, अरी मा ! मेवा-इस बेचावां
आव्यां छे, त्यारे अके पैसाभां अधी तरेहुनां ले. ते काछु अे नखे के आना पेटा
घरभां अहु न्हालो छे ते अहार लोकोनी नजर लागे ते माटे काढती नथी तेथी आ
क्षत्राणीने पहलें आवी नय. तेथी गामभां कमाई घण्टी थाय. अने माटे पहलें अे
चार वार द्वार उपर पोदी आ आधने अधी तरहुतुं दध नय. आ क्षत्राणी हे ते लध
नय. पछी अे क्षत्राणी केदीक काकडी आदि काची समर्पे केदीक तणीने समर्पे.
केलाकनां लजियां करे, शाक करे अे प्रकारे रंचकरंचक अधा प्रकार्थी प्रीतिपूर्वक करी
भोग धरे. वणी केअ वपत शाकवाणी हर नीकणी नती. त्यारे श्रीठाकुरजी द्वार उपर
नध होडीने अे काछुने पोकारे. नसही आव मारी मा लेशे. त्यारे अे शब्द सुंदर
सांलणी होडी आवती. श्रीठाकुरजी पोकारिने अंदर लागी आवता त्यारे काछु के-
धने नैती नही. त्यारे ते क्षत्राणी कहेती, लाला ! आहार न जैअे. नजर लागी नय.
त्यारे श्रीठाकुरजी कहेता शाकवादी यादी नती तो तू क्यांथी लेती ? शुं भोग
धरती ? त्यारे ते क्षत्राणी कहेती, लाला ! भीख काछु घण्टीय आवशे. परंतु तसे
भदिरथी अहार न नय. गामना अराप्य लोकोनी दृष्टि लागेशे. वणी केअवार शाक-

के चली जाय, वह बाई सेवा टहल में न सुने, तब श्रीठाकुरजी लौकिक बालक की नाई आय झगरा करे। जो-तरकारी वारी चली गई। अब तू कहाँते लावेगी? कहा भोग धरेगी? साग-तरकारी बिना मैं तो नहीं अरोगूंगो। तब वह क्षत्राणी कहती, लाला! मैं तो और काछिनी आवेगी तासों लेउंगी। और जो न आवेगी तो मैं बजार तें लाय सब प्रकार की करोंगी। तुम आरि मति करो, प्रसन्न रहो। तब श्रीठाकुरजी बालक की नाई कांधे पर चढिकें कहते, कब लावेगी। या प्रकार कृपा करते। और जा दिन पैसा बालभोग की सामग्री करन कों न होय, ता दिन रोटी चुपरि कें ढांकि धरे। सो श्रीठाकुरजी कबहूँ प्रहर रात्रि गये, कबहूँ आधि रात्रि जागि कें कहते। जो मा! मोकों भूख लागी है। तब वह बाई कहती, लालजी! आजु तो पकवान कछू नहीं है। रोटी है। तब श्रीठाकुरजी कहतें, मोकों तुनई करि दे। तब वह बाई रोटी में घी सगरे लगाय बुरा रंच रंच भुरकाय, हाथ सों बढिकें श्रीठाकुरजी के हाथ में देती। सो श्रीठाकुरजी दांत सों कुतरि कुतरि कें आरोगते, बालक की नाई। पाछें जल आरोगि, बीरी आरोगि पौढते। तब वह बाई के मन में बहोत खेद होतो। जो आजु लाला कों कछू पकवान न बनि आयो। सो पैसा नहीं हैं। कहूँ तें उधारो लाय पकवान करि राखूं। रात्रि कों सूकी रोटी आरोगें। सो

वाणी धाकुरीने यादी जय, ते आर्ध सेवा-रुल्लभां न सांभणे. त्यारे श्रीठाकुररु लौकिक आलकनी भाङ्क आवी अधडा कर, के शाकवाणी यादी गर्ध. लुवे तू क्यांथां लावीश? शुं लोग धरीश? शाकलाण विना हुं तो नहीं आरेशुं. त्यारे ते क्षत्राणी कहेती लाला! हुं तो भील काळु आवशे तेनाथी लधश अने जे नहीं आवे तो हुं अजरथी लावी अर्धी प्रकारतुं करीश. तमे अड न करे प्रसन्न रहे। त्यारे श्रीठाकुररु आलकनी भाङ्क कांधा उपर चढीने कहेता, क्यारे लावीश? आ प्रकारे कृपा करता. वणी जे दिवसे पैसा आललोगनी सामग्री करवाने न होय ते दिवसे रोटी चोपडीने ढांकी धर. पछी श्रीठाकुररु क्यारेय प्रहुर रात्रि गये, क्यारेय, आधीरात्रिये, जगिने कहेता, के मा! मने लुभ लागी छे. त्यारे ते आध कहेती, लालण आज तो पकवान कंठ नथी रोटी छे. त्यारे श्रीठाकुररु कहेता, मने 'तोतरी' करी हे. त्यारे ते आर्ध रोटीभां घी अघे लगाडी आंड थोडी थोडी ललरावी हाथथी वरुणीने श्रीठाकुररुना हाथभां देती. ते श्रीठाकुररु दांतथी तोडी तोडीने आरोगता. आलकनी भाङ्क. पछी जल आरोगी, भीडी आरोगी पाढता. त्यारे ते आधना मनभां अहुं जेद थतो, के आज लालाने माटे कंठ पकवान न अनी आव्युं. पैसा नथी. माटे

एक दिन प्रातःकाल उठि पावली को घी, खांडउ धारो लाय, घर मेंदा छानि दोय चारि भांति को पकवान करि कें धरि राखयो । पाछें जब अर्द्धरात्रि भई तब श्रीठाकुरजी जागे, कहे, मा ! मोकों भूख लागी है । तब वह क्षत्राणी उठिकें पकवान आगें धरयो । सो श्रीठाकुरजी अरोगि के उह क्षत्राणी सों कहे, जो—आजु रोटी क्यों नहीं धरी ? तेरे पास तो पैसा न हते । पकवान कहां ते कियो ? तब वह क्षत्राणी नें कही, कहा करूँ लाला ! मेरे कोई कमायवे वारो नहीं । मेरे पास पैसा नहीं । सूकी रोटी सबेरे की धरी आरोगो । सो मेरे मनमें दुःख होतो । तातें पावली उधार करि पकवान किये हैं । सो दोय तीन दिन में सूत बेचि के देऊंगी । तब श्रीठाकुरजी कहें, मा ! उधारो करज करि पकवान क्यों कियो ? मोकों तो चुपरी रोटी बहोत भावत हैं । करज माथे चढ़ि जाय तो दियो न जाय । जब वह मांगें तब क्लेश होय सो न करिये । आजु पाछें उधारो मति करियो । मोकों रोटी रुचत हैं, तातें रोटी घी सों चुपरि कें धरि राखियो । तब वह बाई वैसेही करती । सूत के पैसा बढ़ते तामें पकवान करती । जो पैसा न होय तो रोटी चुपरि के धरती ।

वार्ता ॥६०॥

भावप्रकाश—जो श्रीठाकुरजी उधार काढिबे कों यातें बरजे, जो—

कंधथी उधार लावीने पकवान करी राखुं. रात्रिये सूकी रोटी आरोग्या. पछी ओक द्विस प्रातःकाल उठी पावलीनुं घी, खांड उधार लावी घरमां मेंदा छाणी भे यार तरहुनां पकवान करीने धरी राख्यां. पछी न्यारे अर्द्धरात्रि गद्य त्यारे श्रीठाकुरजी जन्म्या. कहे, मा ! मने भूख लागी छे. त्यारे ते क्षत्राणी उठीने पकवान आगण धर्या. ते श्रीठाकुरजी आरोगीने ते क्षत्राणीने कहे, आजु रोटी केम नहीं धरी ? तारी पासो तो पैसा न हुता पकवान क्यांथी क्यां ? त्यारे ते क्षत्राणीये कहुं, शुं करे लासा ! मारे केछ कमायवावाजो नथी. मारी पासो पैसा नथी. सूकी रोटी सवारनी धरी आरोगो ते मारा मनमां दुःख थतुं. तेथी पावली उधार करी पकवान क्यां छे. ते भे त्रणु द्विसमां सुत बेचीने दधश. त्यारे श्रीठाकुरजी कहे, मा ! उधार करज करी पकवान केम क्यां ? मने तो चोपडी रोटी गहु लावे छे. करज माथे चढी जय तो दैध न शक्य. न्यारे ते मांगे त्यारे क्लेश थाय तेथो न करीये. आजु पछी उधार न करजे. मने रोटी इये छे तेथी रोटी घीथी चोपडीने धरी राखजे. त्यारे ते पाछ तेमज करती. सूतरना पैसा बढता तेमां पकवान करती. जे पैसा न होय तो रोटी चोपडीने धरती.

वार्ता ॥ ६० ॥

ઋણ હૈ સો હત્યા હૈ । શ્રીઠાકુરજી કે સુમિરન મેં મન હૈ, સો કરજવારેન મેં જાય । ઔર જહાં તાંદૈ કરજ ન તુકાવેં તહાં તાંદૈ બાકી સેવા કો ફલ વાકે પાસ નાહીં । જહાં તેં કરજ લિયો તાકે પાસ હૈ । તાતેં શ્રીઠાકુરજી વહ બાઈ કોં કરજ કરિવે કી નાહીં કરી । તહાં યહ સંદેહ હોય, જો-વહ બાઈ કોં શ્રીઠાકુરજી યા પ્રકાર બાલક કી નાંદૈ કૃપા કરિ માંગિ કેં આરોગતે । તવ લક્ષ્મી તો શ્રીઠાકુરજી કી દાસી હૈં સો વહ બાઈ કોં દ્રવ્ય ક્યોં નાહીં દિણ ? જો-રોટી ધરતી । બાલભોગ કરિવે કો એસો સંકોચ ક્યોં ભયો ? કાહેતેં, બ્રજ મેં શ્રીઠાકુરજી પધારેં તવ લક્ષ્મીજી બ્રજમેં આય રહીં ! બ્રજ કો આશ્રય કિયે । સો આપુ પંચાધ્યાયી મેં કહે હૈં, ગોપિકાગીત કે અધ્યાય મેં । “ જયતિ તેઽધિકં જન્મના બ્રજ શ્રયત ઇન્દિરા શશ્વદ્વ્રહિ । ” સો યહ બાઈ એસી નિષ્કંચન ક્યોં રહી ? યહ સંદેહ હોય તહાં કહત હૈં, લક્ષ્મી હૈં સો શ્રીઠાકુરજી કી દાસી હૈં । શ્રીઠાકુરજી કી ઇચ્છા પ્રમાન કારજ કરત હૈં । સો યા બાઈ કોં શ્રીઠાકુરજી દ્રવ્ય યાતેં નાહીં દિયે જો દ્રવ્ય હોય તો યા બાઈ કે મનકો નિરોધ ન હોય । તવ ભક્તન કી આરતી કેસે વઢે ? દ્રવ્ય વિના ચરખા કાંતે, તામેં શ્રીઠાકુરજી કે લિયે મન લાગ્યો રહે । અબ ઇતનો હોય તો મેં ફલાની સામગ્રી કરું । મેરો લાલા

ભાવપ્રકાશ—શ્રીઠાકુરજીએ ઉધાર કરવાને એથી રોકી કે કહ્યું છે તે હલ્યા છે. શ્રીઠાકુરજીના સ્મરણમાં રહેલું મન કરજવાળામાં બધે અને જ્યાં સુધી કરજ ન ચુકાવે ત્યાં સુધી એની સેવાનું ફલ એની પાસે નહીં. જ્યાંથી કરજ લીધું તેની પાસે છે. તેથી શ્રીઠાકુરજીએ તે બાંધને કરજ કરવાની ના કહી. ત્યાં એ સંદેહ થાય કે એ બાંધની પાસે શ્રીઠાકુરજી આ પ્રકારે બાલકની માફક કૃપા કરી માંગીને આરોગતા ત્યારે લક્ષ્મી તો શ્રીઠાકુરજીની દાસી છે. તો એ બાંધને દ્રવ્ય કેમ નહીં આપ્યું ? કે રોટી ધરતી. બાલભોગ (અનસપ્પટી) કરવાનો એવો સંકાચ કેમ થયો ? કેમકે વ્રજમાં શ્રીઠાકુરજી પધાર્યા ત્યારે લક્ષ્મીજી વ્રજમાં આવી રહી વ્રજનો આશ્રય કર્યો. તે આપ ‘પંચાધ્યાયી’ માં કહે છે, ગોપિકાગીતના અધ્યાયમાં ‘જયતિતેધિકં . . ’ તેથી એ બાંધ એવી નિષ્કંચન કેમ રહી ? આ સંદેહ થાય ત્યાં કહે છે, લક્ષ્મી છે તે શ્રીઠાકુરજીની દાસી છે. શ્રીઠાકુરજીની ઈચ્છા પ્રમાણે કાર્ય કરે છે. તેથી આ બાંધને શ્રીઠાકુરજીએ એ માટે દ્રવ્ય નહીં આપ્યું કે જે દ્રવ્ય હોય તો આ બાંધના મનનો નિરોધ ન હોય. ત્યારે ભક્તોની આર્તિ કેવી રીતે વધે ? દ્રવ્ય વિના રંટિયો કાંતે તેમાં શ્રીઠાકુરજીને માટે મન લાગ્યું રહે. હવે આટલું થશે તો હું ફલાણી સામગ્રી કરીશ. મારો લાલા રોટી

रोटी आरोगत हैं। आछो, आछो, कछू जतन करि आरोगाऊँ। या प्रकार मन वह वाई को अपने में लगायवे के लिये बहोत द्रव्य नहीं दिये। उतनो ही दिये जामें नित्य को निर्वाह होय। धनको मद न होय। तातें लक्ष्मी भगवद् ईच्छा आधीन है। सो कैसे धन होय ? या वाई को याही प्रकार प्रभु निरोध किये। जहां जैसी प्रभु की ईच्छा है तहां तैसी लीला करत हैं। और यह सन्देह होय, जो-अर्द्ध रात्रि को श्रीठाकुरजी उह वाई तें माँगते। तब नहायवे की अपरस, ताको नित्य कैसे विचार ? और तरकारी वारी पुकारि कें चली जाती तब श्रीठाकुरजी वह वाई के कन्ये पर चढ़ि के झगरा करते, तब अपरसता कहां ? सो मंदिर में हू अपरस को विचार कैसे हैं। यह संदेह होय तहां कहत हैं, श्रीआचार्यजी के पृष्टिमार्ग में श्रीठाकुरजी मर्यादापुष्टि रीति सों विराजत हैं। सगरे पुष्टि पुरुषोत्तम के भाव सों सगरी सामग्री आरोगत हैं। सगरी वस्तु वस्त्र आभूषण कें अंगीकार करत हैं। और दरसन देवे में मर्यादा रीति सों विराजत हैं, बोलत नहीं। सो भगवद् स्वरूप में दोय प्रकार को स्वरूप है। एक भक्तोद्धारक, एक सर्वोद्धारक; जामें मर्यादापुष्टि रीति सों सबको दरसन। भक्तोद्धारक स्वरूप के भीतर वह सबको दरसन नहीं। सो जहां ताई वैष्णव को प्रेम न होय तहां ताई मर्यादापुष्टि रीति सों अङ्गीकार, दरसन हैं। भक्तोद्धारक स्वरूप, सर्वोद्धारक स्वरूप में तें बाहर प्रगट

आशेगे छे तेथी साइं साइं कंधं जतन करी आशेगाउं। या प्रकारे ते आछतुं मन पोतामां लगाउवाने माटे अहु द्रव्य न आभ्युं। अछतुं न आभ्युं। जमां नित्यनो निर्वाह थाय। धननो मद न थाय। तेथी लक्ष्मी भगवद् ईच्छा आधीन छे। तेथी डेवी रीते धन थाय ? या आछने आन प्रकारे प्रभुअे निरोध कर्यो। ज्यां नवी प्रभुनी ईच्छा त्यां तेवी लीला करे छे। वणी अे संदेह थाय डे अर्धरात्रिअे श्रीठाकुरअे अे आछथी मांगता लारे न्हावानी अपरस तेनो नित्य डेवो विचार ? वणी शाकवाणी पोकारिने आली नती लारे श्रीठाकुरअे ते आछना कथा उपर यहीने अधेडा करता लारे अपरस ज्यां ? मंदिरमां पणु अपरसनेो विचार डम छे ? या संदेह होय त्यां कहे छे, श्रीः आचार्यअेना पुष्टिमार्गमां श्रीठाकुरअे मर्यादा पुष्टिरीतिथी भिराअे छे। अथे-पुष्टि पुरुषोत्तमना लावथी अधी सामग्री आशेगे छे। अधी वस्तु, वस्त्र आभरणने अंगीकार करे छे। अने दर्शन देवामां मर्यादारीतिथी भिराअे छे। भोलता नथी, ते भगवद् स्वरूपमां अे प्रकारनां स्वरूप छे। अेक अस्तोद्धारक, अीअुं सर्वोद्धारक जमां मर्यादा पुष्टिरीतिथी अधाने दर्शन। अस्तोद्धारक स्वरूपना विषे अधाने ते दर्शन नही। तेथी ज्यां सुधी वैष्णवने प्रेम न होय त्यां सुधी मर्यादा-पुष्टिरीतिथी अंगीकार दर्शन छे। अस्तोद्धारक

होय । सो जहां जेसो कार्य होय, बालक होय, तरुन होय, वृद्ध होय, गाय आदि जेसो कार्य करनो होय । ता प्रकार को स्वरूप करि उह भक्त सों बोलें, अनुभव करावें । तथा मर्यादापुष्टिस्वरूप है उनही के मुख द्वारा बोलें, अनुभव जतावें । सो यह क्षत्राणी मन्दिर में सगरी मर्यादा, सेवा, अपरस और काम काज करती । श्रीठाकुरजी पधारें, तथा अर्द्ध रात्रि कों श्रीठाकुरजी पास आय मांगे, तहां भक्तो-द्वारक स्वरूप में अपरस नाहीं, उहां केवल प्रेम ही सर्वोपरि धर्म है । पूर्णब्रह्म पुरुषोत्तम आनंद रूप भक्तन के संग लीला करें । हूँसे, बोले अनुभव जनावें । तहां अपरस की मर्यादा की संभावना नाहीं । तहां केवल स्नेह, जो-सर्वोपरि प्रेम है । सोई कारन है । या प्रकार सों भक्तन के घर पुष्टिमार्ग में श्रीठाकुरजी विराजत हैं । तातें वैष्णव कों भक्तोद्वारक स्वरूप कछु अनुभव जतावत हैं, ता करि जानिकें अपरस न राखें तो अपराध परें । मंदिर में श्रीठाकुरजी की सेवा में पुष्टिमार्ग की मर्यादा सहित सेवा करें । और प्रेम में कछु मर्यादा कों अनुसंधान न रहें, तामें जो-कार्य बने सो सब श्रीठाकुरजी कों प्रिय है । तामें कछु छूई न जाय । जानि कें करें, जो-श्रीठाकुरजी प्रेम के भूखे हैं, मर्यादा को कहा काम है ? या प्रकार कल्पित ज्ञान करि मर्यादा छोडे तो उनकों अपराधी भ्रष्ट ज्ञाननो । या प्रकार को भेद जानिये ।

स्वर्प सर्वोद्धारक स्वर्पमाथी अहार प्रगट थाय. ते ज्यां जेवुं कार्य होय, आलक होय, तर्णु होय, वृद्ध होय, गाय आदि जेवुं कार्य करवुं होय ते प्रकारनु स्वर्प करी ते लक्ष्मी भोले अनुभव करावे. तथा मर्यादा पुष्टि स्वर्प छे तेमना न मुष्प द्वारा भोले अनुभव जणावे. ते आ क्षत्राणी मंदिरमां यधी मर्यादा सेवा अपरस अने कामकाज करती. श्रीठाकुरल पधारें तथा अर्धरात्रिये श्रीठाकुरल पासे आवीने मांगे त्यां लक्ष्मी-द्वारक स्वर्पमां अपरस नही. त्यां डेवण प्रेम न सर्वोपरी धर्म छे. पूर्ण ब्रह्म पुरुषोत्तम आनंदस्वर्प लक्ष्मीना संगें दीक्षा करे, हूँसे, भोले अनुभव जणावे त्यां अपरसनी मर्यादानी संभवन नही. त्यां डेवण स्नेह न सर्वोपरी प्रेम छे तेज कारणु छे. आ प्रकारथी लक्ष्मीना घर पुष्टिमार्गमां श्रीठाकुरल विराज छे. तेथी वैष्णवने लक्ष्मी-द्वारक स्वर्प कंठ अनुभव जणावे छे तेवुं जणावने अपरस न राखे तो अपराध पडे. मंदिरमां श्रीठाकुरलनी सेवामां पुष्टिमार्गनी मर्यादा सहित सेवा करे अने प्रेममां कंठ मर्यादानु अनुसंधान न रहे तेमां न कार्य अने ते अर्धुं श्रीठाकुरलने प्रिय छे. तेमां कंठ अलक्ष्मी न जय. जणावने करे डे श्रीठाकुरल तो प्रेमना भूष्या छे मर्यादानुं शुं काम छे ? ये प्रकारे कल्पित ज्ञानथी मर्यादा छोडे तो अने अपराधी भ्रष्ट जणावे. आ प्रकारनो भेद जणावे. ते क्षत्राणी अनी श्रीआचार्यलनी

सो उह क्षत्राणी ऐसी श्रीआचार्यजी की कृपापात्र, जासों बालक की नाई श्रीठाकुरजी अनुभव करावते । लीला में हूं उपनंद गोप की बहू तहां हू पुत्र भाव यहां हू पुत्र भाव दृढ हूं । तातें उह क्षत्राणी बाई की वार्ता कहां ताई कहिये ।

✽ ✽ ✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सेवकनी, दामोदरदास कायस्थ की माता, बाको नाम वीरबाई सो सेरगढ़ में रहती, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—लीला में यह पुलिंदी हैं । तहां ये 'वनदेवी' इनको नाम । सो गिरिराज के संग तें इनको दृढ़ भक्ति भई हैं । सो श्रीआचार्यजी प्रगटे, श्री-गोवर्द्धनधर प्रगटे, ताते भूमि पर सगरो भगवदीय परिकर प्रगट्यो है ।

सो सेरगढ़ में एक कायस्थ द्रव्यपात्र बहोत, सो कासी गयो । तहां कासी में एक कायस्थ के घर वीरबाई प्रगटी हती । सो सेरगढ़ वारे कायस्थ सो सगाई भई । पाछे ब्याह भयो । सो वीरबाई के एक बेटा सेरगढ़ में भयो । ताको नाम दामोदरदास धरयो । सो दामोदरदास वर्ष नौ के भये । तब सेरगढ़ में एक नयो हाकिम आयो सो बहोत खोटो आयो । जाके पास द्रव्य देखे ताको कछ कलंक लगाय द्रव्य सब ले लेय । चोरन सो चोरी करावें । तब वीरबाई के पति

कृपापात्र जेने पादकनी तरई श्रीठाकुरजी अनुभव करावे दीवामां पणु उपनंदगोपनी वहु त्यां पणु पुत्र भाव अछीं पणु पुत्र भाव दृढ छे. तेथी ते क्षत्राणी पाधनी वार्ता क्यां सुधी कहीअे ? वैष्णव ॥६०॥

✽ ✽ ✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी सेवकनी, दामोदरदास कायस्थनी माता अेमनु नाम वीरबाई, ते सेरगढमां रहेती, तेनी वार्ताना भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—दीवामां अे पुलिंदी छे. त्यां अे 'वनदेवी' अेमनु नाम. श्री गिरिराजना संगथी अेने दृढ भक्ति थछ छे. श्रीआचार्यजी प्रकट्या, श्रीगोवर्द्धनधर प्रकट्या. तेथी भूमि पर अधे भगवदीय परिकर प्रकटयो छे. सेरगढमां अेक कायस्थ द्रव्यपात्र धरयो ते कासी गयो. त्यां कासीमां अेक कायस्थना धरे वीरबाई प्रकटी हुती. तेनी सेरगढवाणा कायस्थथी सगाई थछ. पछी सभ थयुं. ते वीरबाईने अेक पुत्र सेरगढमां थयो. तेनु नाम दामोदरदास धरयो. ते दामोदरदास वर्ष टना थया. त्तारे सेरगढमां अेक नयो हाकिम आयो ते अहुं अपराध आयो. जेनी पासे द्रव्य अुअे तेने कंछ कलंक लगाडी द्रव्य अधुं सछ ले. चोरथी चोरी करावे. त्तारे वीरबाईना पतिअे कहुं, हुवे थुं करीअे ? हाकिम अधुं द्रव्य देखे.

ने कही अब कैसे करें ? हाकिम सगरो द्रव्य लेयगो । तब वा स्त्री ने कही, सगरो द्रव्य भेलो करि मोकौ सोंपि देहू । मैं कासी अपने मा-बाप के घर जाय रहूँ । जब दूसरो आछो हाकिम आवे तब आऊंगी । जो-यही हाकीम रहे तो पाछे तुम हूँ कासी चले आइयो । तब वीरवाई के पति ने कही, भली कही । तब कायस्थ सगरो द्रव्य भेलो करि दस पांच दिन में मोहौर कराय वीरवाई स्त्री कौ सोंपी । दामोदरदास वेटा दोय वेटी सबकौ कासी पठाई दियो । सो वीरवाई कासी आय रही । तब महिना चारि पाछें उह हाकिम नें एक ब्राह्मण कौ कलंक लगाय सगरो द्रव्य घर छूटि लियो । वाके घर गौर स्वरूप के ठाकुर बड़े और एक लालजी तिनहूँ को गहना, कपरा, वासन हाकिम नें छूटि लियो । तब वह ब्राह्मण की स्त्री रोवन लागी । तब वह ब्राह्मण नें कही तू रोवे मति । देखि, अब कहा काम होत हैं । सो हाकिम बजार में घोरा पर चढ्यो चलयो जात हतो, तब यह ब्राह्मण ने तरवारि लें वह हाकिम कें मारी, सो घोरा तें गिरयो तब छाति पर चढि कटारी पेट पर मारी, सो मरि गयो । वह हाकिम के मनुष्य ने उह ब्राह्मण कौ मारयो । या प्रकार दोऊ मरे । यह बात राजा मुनि कें दूसरो हाकिम सेरगढ़ पठायो । सो वह भलो मनुष्य आयो, सबकौ सुख दियो । वह ब्राह्मण मरयो वाकी

त्यारे ते स्त्रीअे कछु, अधुं द्रव्य लेगुं करी मने सोंपी हो, हुं काशी मारा मा-बापने धरे न्हं रहुं. न्यारे भीजे सारे हुडिम आवशे त्यारे आवीश. जे आ न्हं हुडिम रहे तो पछीथी तने पणु काशी आट्या आवजे. त्यारे वीरबाधना पतिअे कछु, ते साइं कछुं. त्यारे ते कायस्थ अधु द्रव्य लेगुं करि दश-पांच दिवसमां महार करायी वीरबाध स्त्रीने सोंपी. पछी दामोदरदास वेटा, जे वेटी अधाने काशी भोक्ली दीधां. ते वीरबाध काशी आवी रही. त्यारे महिना चार पछी ते हुडिमे जेक ब्राह्मणने कलंक लगाडी अधु द्रव्य घर छूटी वीधुं. जेना गौर स्वरूपना श्रीठाकुरण भोटा अने जेक लालण तेमनां पणु धरेणुं, कपडां, वासणु हुडिम छूटी लई गयो. त्यारे ते ब्राह्मणनी स्त्री रोवा लागी. त्यारे ते ब्राह्मणु कछुं, तू रोवश नही. हेभ, हुवे शुं काम थाय छे ? पछी हुडिम अजरमां घोडा उपर चढीने जतो हुतो त्यारे जे ब्राह्मणु तलवार लध ते हुडिमने मारी. ते घोडाथी पडयो त्यारे छाती उपर चढी कटारी पेट उपर मारी ते मरी गयो. पछी ते हुडिमना मनुष्योअे ते ब्राह्मणुने मार्यो. या प्रकारे अने मर्या. जे वात राजअे सांबणी पछी भीजे हुडिम सेरगढ भोक्ल्यो. ते अहु भलो मनुष्य आव्यो. अधाने सुभ दीधुं. ते ब्राह्मणु

स्त्री कों दोग रुपैया को महिना करि दियो । सेरगढ़ में चैन भयो । सो लोग जहां तहां भाजि गये हते सो सगरे-सेरगढ़ आये । तब वह ब्राह्मणी जाको ब्राह्मण मारयो गयो सो वीरबाई के पति सों कह्यो, जो-मोसों अकेलें श्रीठाकुरजी की पूजा नाहीं वनत, मेरे द्रव्य नाहीं है । तब वह कायस्थ नें कही, मेरी स्त्री वेटा, वेटी कासी हैं । अब गाम में चैन भयो है सो यहाँ बुलावत हों । उनकें आयेतें ठाकुर हम राखेंगे । तब वह ब्राह्मणी ने कही वहीत आछो । सो वे ठाकुर सेरगढ़ की नदी है तहां उह ब्राह्मण आयो हतो तहां ते प्राप्त भये हते । पाछे वह कायस्थ वीरबाई के बुलावये कों चार मनुष्य आछे प्रमाणिक गांव के तिनकों कासी पठाये । सो मनुष्य आयकें वीरबाई सों कहें, अब सेरगढ़ में दूसरो हाकिम आयो है, सो भलौ मनुष्य है । तातें अब तुम सेरगढ़ चलो । तिहारे धनीने बुलाये हों । तब वीरबाई नें सगरे धन की पेटी ले वेटा दामोदरदास कों, दोऊ वेटी सहित कासी सों चले । सो मजलि पांच आयकें छोटो सो गाम हतो तहां उतरे । सो चोर पाछें लगे । जब रात्रि पहर पिछली रहि गई तब मनुष्यन कों नींद आई । सो चोर ने पेटी लीनी । सवेरो होतो जानि गाम के बाहिर रेति धूरि में गाड़ि कें उहां गाम में चोर आय बैठे । सो सवेरो होत ही वीरबाई ने कही, पेटी गई अब कैसे करूं ? मेरो तो सगरे घर

भर्यो तेनी स्त्रीने ये ३पीया मडिनेा करी आये। सेरगढमां येन थयु . पछी दोठो न्यां त्यां भागी गया हुता ते अथा सेरगढ आव्या . त्यारे ये ब्राह्मणीये जनेा ब्राह्मण भार्यो गयेो हुतो . तेखे वीरबाधना पतिने कहुं, उ मारा अठेलाथी श्रीठाकु- रजनी पूज नथी अनती मारी पासे द्रव्य नथी . त्यारे ते कायस्थे कहुं मारी स्त्री, वेटा, वेटी काशी छे . हुवे गाममां येन थयुं छे ते अहीं बोलावुं छुं . अमना आव्याथी ठाकुर अमे राभीशुं . त्यारे ते ब्राह्मणीये कहुं, अहुं सारं . ये ठाकुर सेरगढनी नदी छे त्यां ते ब्राह्मण गयेो हुतो त्यांथी प्राप्त थया हुता . पछी ये कायस्थे वीरबाधने बोलाववाने गामना प्रामाणिक यार सारा मनुष्य हुता तेमने काशी भोक्तया . ते मनुष्य आवीने वीरबाधने कहे, हुवे सेरगढमां पीले हाडम आव्यो छे ते बवो मनुष्य छे, तेथी हुवे तमे सेरगढ यावो . तमारा धणीये बोलाव्यां छे . त्यारे वीरबाध अथा धननी पेटी लई वेटा दामोदरदास ने अन्ने पेटी सहित काशीथी यावो . ते मजल पांच आवीने नातुं सरभुं गाम हुतुं त्यां उतरी . ते यार पाछण लाव्या . त्यारे रात्रि प्रहर पाछडी रही त्यारे मनुष्येने उंध आवी . त्यारे यारे पेटी लीथी . सवार थतुं अणी गामनी अहार पेटी धूणमां हाटीने त्यां गाममां यार

को द्रव्य वामें हैं। पाछें वा गाम के लोगन सों पूछें, वे कहें, हम कहा जाने ? तब वीरबाई तलाव पर बैठी रुदन करन लागी। सो श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा करत उह तलाव पर पधारे, प्रातःकाल की संध्या कियें।। तब बाई रुदन करत ही ताकों देखे। जो—ये दैवी जीव ऐसी दुःखी क्यों हैं ? तब वासों पूछे, ऐसो तोकों कहा दुःख परचो है ? तब वीरबाई ने कही, महाराज ! मोकों महादुःख परचो हैं। कुटुम्ब तो बहोत और द्रव्य हूँ बहोत हतो, सो पेटी रात्रि कों चोरी गई। अब मेरो यहां कोई नहीं। किनसों अपनो दुःख कहूं ? पाछे जा प्रकार कासी सों आई सो सब कह्यो। तब श्रीआचार्यजी कों दया आई। कहें, रोवे मति श्रीठाकुरजी सब आछी करेंगे। तब वीरबाई दंडोत करि कह्यो, महाराज ! यह द्रव्य मिलें तो आधो आपु लेऊ, और हमारे सगरे कुटुम्ब आदि आपुकी कृपा तें जीवें। और मैं आपुकी दासी होय जन्म भर यह गुन आपुको न भूलोंगी। तब श्रीआचार्यजी कहें। तू दैवी जीव है सो हमारी है। हमकों द्रव्य तेरो नहीं चाहिये। पाछे कृष्णदास मेघनसों श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने कही, चोरन नें धूरि में पेटी गाड़ी हैं। सो जायकें याकों बताय आऊ। तब कृष्णदास वह वीरबाई के संग जाय बताये। सो वह धूरि डारि पेटी ले श्रीआचार्यजी पास आय आगे धरि

आवीने भेठा। पछी सवार थतां न वीरबाईके कथुं, पेटी गठ हवे शुं कइं ? माइं तो सधुं धरतुं द्रव्य अमां न हतुं। पछी गामना लोठाने पुछ्युं, ते कहे अमे शुं अशुिके ? त्यारे वीरबाई तलाव उपर भेसी रुदन करवा लागी। त्यारे श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा करता ते तलाव उपर पधायीं, प्रातःकालनी संध्या करी। त्यारे ते आध रुदन करती हती तेने जेठ। ठे आ दैवीजव आवी दुःखी ठेभ छे ? त्यारे तेने पूछ्युं, आवुं तने शुं दुःख पड्युं छे। त्यारे वीरबाईके कथुं, महाराज ! मने महान दुःख पड्युं छे, कुटुंभ तो धरु अने द्रव्य पणु धरुं हतुं ते पेटी रात्रिके चोरि गठ, हवे माइं अहीं ठाठ नथी, ठाने माइं दुःख कहुं ? पछी जे प्रकारे काशीथी आवी ते अघुं कथुं। त्यारे श्रीआचार्यजीने दया आवी, कहे शैश नही। श्रीठाकुरजी अघुं साइं करशे। त्यारे वीरबाईके दंडवत् करीने कथुं, महाराज ! आ द्रव्य मणे तो अडधुं आप लो। अने अमाइं सधुं कुटुंभ आदि आपनी कृपाथी जवे, अने हुं आपनी दासी थठे नभर आ गुणु आपनो नहीं भूलुं। त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, तू दैवीजव छे ते अमारी छे। अमारे ताइं द्रव्य जेठतु नथी। पछी कृष्णदास मेघनने श्रीआचार्यजी महाप्रभुके

दिये । (और कहे) महाराज ! आपु आधो मोकों दीजिये । आधो आपुको हैं । यह आपुको दियो मोकों मिल्यो है, मोकों सेवक कीजिये । तब श्रीआचार्यजी कहें, अब ही तू मार्ग में हैं । सो हमारे पुष्टिमार्ग को धर्म बनेगो नहीं । तू कछु समुझति नहीं । तातें द्रव्य ले सेरगढ़ जा, हम सेरगढ़ पधारेंगे तब तोकों सेवक करेंगे । तू कहेगी सो करेंगे । तब वाई विनती करिकें कहें, महाराज ! आपु तो साक्षात् ईश्वर हों, मैं द्रव्य देति हों सो नहीं लेत तो सेरगढ़ काहे कों पधारेंगे ? आपुको दरसन परम दुर्लभ हैं । तातें श्रीठाकुरजी ने मोपर बड़ी कृपा करी, जो— आपु दरसन दिये, तातें मोकों नाम सुनावो, द्रव्य आधो लेऊ । तब श्रीआचार्यजी कहें तेरे गाम आयकें तोकों सेवक करनो हैं । उह ब्राह्मण मारचो गयो ताकी स्त्री पास श्रीठाकुरजी हैं, सो तेरे माथे पधरावने हैं । तातें हम सेरगढ़ निश्चय पधारेंगे । तब तेरो कार्य होयगो । तब वीरवाई ने कही, महाराज ! शरीर को निश्चय नहीं हैं । और आपुके साम्हें मोकों बहोत बोलनो अपराध हैं । तातें मेरे माथे चरन धरि आपु कहो, जो—सेरगढ़ पधारेंगे । सो आपुके चरन धरे तैं मेरो मन सुद्ध रहेगो । तब श्रीआचार्यजी वीरवाई की प्रीति देखि बहोत प्रसन्न भये । अपने चरणा-

कथुं, योरोअ्ये धूणभां पेटी दापी छे ते जधने आने अतावी आप. त्यारे कृष्णुदासे ते वीरपाधनी साथे जर्ध अताव्युं. ते धूण नापी, पेटी लर्ध श्रीआचार्यअ पासे आवी आगण धरी दीधी. अने कहे, महाराज ! आप अडधुं मने आपो. अडधुं आपनुं छे. आ आपनुं आपेकुं मने मज्युं छे. मने सेवक करे. त्यारे श्रीआचार्यअ कहे, हुमणुं तो तू मार्गभां छे तेथी अमारा पुष्टिमार्गनेा धर्म अनशे नही. तू कंर्ध समजती नथी. तेथी द्रव्य लर्ध शेरगढ ज. अमे शेरगढ पधारीथुं त्यारे तने सेवक करीथुं. तू कडीश ते करीथुं. त्यारे पाधअ्ये विनंती करीने कथुं, महाराज ! आप तो साक्षात् ईश्वर छे. हुं द्रव्य आपुं छुं ते देता नथी तो शेरगढ शा माटे पधारशे ? आपनां दर्शन परम दुर्लभ छे. तेथी श्रीठाकुरअ्ये मारा उपर अहु कृपा करी ते आपे दर्शन दीधां तेथी मने नाम संभणावेो द्रव्य अडधुं देो. त्यारे श्रीआचार्यअ कहे तारे गाम आवी तने सेवक करवी छे. ते ब्राह्मणु भायेां गयेो तेनी स्त्री पासे श्रीठाकुरअ छे ते तारा माथे पधराववा छे. तेथी अमे शेरगढ निश्चय पधारीथुं. त्यारे ताइं कार्य थशे. त्यारे वीरपाधअ्ये कथुं, महाराज ! शरीरनेा निश्चय नही अने आपनी पासे मने वधारे षोखवुं अपराध छे. तेथी मारा माथे अरणु धरी आप कहेो ज शेरगढ पधारीथुं. आपना अरणु धरवाथी माइं मन शुद्ध रहेशे.

को द्रव्य वामें हैं । पाछे वा गाम के लोगन सों पूछें, वे कहें, हम कहा जाने ? तब वीरबाई तलाव पर बैठी रुदन करन लागी । सो श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा करत उह तलाव पर पधारे, प्रातःकाल की संध्या किये । । तब बाई रुदन करत ही ताकों देखे । जो—ये दैवी जीव ऐसी दुःखी क्यों हैं ? तब वासों पूछे, ऐसो तोकों कहा दुःख परधो है ? तब वीरबाई ने कही, महाराज ! मोकों महादुःख परधो हैं । कुटुम्ब तो बहोत और द्रव्य हूँ बहोत हतो, सो पेटी रात्रि कों चोरी गई । अब मेरो यहां कोई नहीं । किनसों अपनो दुःख कहुं ? पाछे जा प्रकार कासी सों आई सो सब कह्यो । तब श्रीआचार्यजी कों दया आई । कहें, रोवे मति श्रीठाकुरजी सब आछी करेंगे । तब वीरबाई दंडोत करि कह्यो, महाराज ! यह द्रव्य मिलें तो आधो आपु लेऊ, और हमारे सगरे कुटुम्ब आदि आपुकी कृपा तें जीवें । और मैं आपुकी दासी होय जन्म भर यह गुन आपुको न भूलोंगी । तब श्रीआचार्यजी कहें । तू दैवी जीव है सो हमारी है । हमकों द्रव्य तेरो नहीं चाहिये । पाछे कृष्णदास भेघनसों श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने कही, चोरन नें धूरि में पेटी गाड़ी हैं । सो जायकें याकों बताय आऊ । तब कृष्णदास वह वीरबाई के संग जाय बताये । सो वह धूरि डारि पेटी ले श्रीआचार्यजी पास आय आगे धरि

आवीने भेडा. पछी सवार यतां न वीरबाईये कहुं, पेटी गर्थ हुवे थुं कइ ? माइ तो सधणुं धरतुं द्रव्य जेमां न हतुं. पछी गामना लोढाने पुछथुं, ते कहे ज्यमे थुं नशिज्ये ? त्यारे वीरबाई तलाव उपर जेसी रुदन करवा लागी. त्यारे श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा करता ते तलाव उपर पधार्या. प्रातःकालनी संध्या करी. त्यारे ते पाछ रुदन करती हुती तेने जेठ. के आ दैवीजव आवी दुःखी केम छे ? त्यारे तेने पूछथु, आवु तने थुं दुःख पडथुं छे. त्यारे वीरबाईये कहुं, महाराज ! मने महान दुःख पडथुं छे. कुटुंभ तो धरु ज्यने द्रव्य पशु धरुं हतुं ते पेटी रात्रिजे चोरार्थ गर्थ. हुवे माइ ज्यही ठाठ नथी. केने माइ दुःख कहुं ? पछी न प्रकारे काशीथी आवी ते पधु कहुं. त्यारे श्रीआचार्यजीने दया आवी, कहे रोठश नही. श्रीठाकुरजी पधुं साइं करशे. त्यारे वीरबाईये दंडवत् करीने कहुं, महाराज ! आ द्रव्य मणे तो अडधुं आप लो. ज्यने अमाइं सधणु कुटुंभ आदि आपनी कृपाथी जवे. ज्यने हुं आपनी दासी थठ नमबर आ गुणु आपनो नहीं भूलुं. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, तू दैवीजव छे ते अमारी छे. अमारें ताइं द्रव्य जेठेतु नथी. पछी कृष्णदास भेघनने श्रीआचार्यजी महाप्रभुजे

दिये । (और कहे) महाराज ! आपु आधो मोकों दीजिये । आधो आपुको हैं । यह आपुको दियो मोकों मिल्यो है, मोकों सेवक कीजिये । तब श्रीआचार्यजी कहें, अब ही तू मार्ग में हैं । सो हमारे पुष्टिमार्ग को धर्म बनेगो नहीं । तू कछ समुझति नहीं । तातें द्रव्य ले सेरगढ़ जा, हम सेरगढ़ पधारेंगे तब तोकों सेवक करेंगे । तू कहेगी सो करेंगे । तब वाई विनती करिकें कहें, महाराज ! आपु तो साक्षात् ईश्वर हों, मैं द्रव्य देति हों सो नहीं लेत तो सेरगढ़ काहे को पधारोगे ? आपुको दरसन परम दुर्लभ हैं । तातें श्रीठाकुरजी ने मोपर बड़ी कृपा करी, जो—आपु दरसन दिये, तातें मोकों नाम सुनावो, द्रव्य आधो लेऊ । तब श्रीआचार्यजी कहें तेरे गाम आयकें तोकों सेवक करना हैं । उह ब्राह्मण मारयो गयो ताकी स्त्री पास श्रीठाकुरजी हैं, सो तेरे माथे पधरावने हैं । तातें हम सेरगढ़ निश्चय पधारेंगे । तब तेरो कार्य होयगो । तब वीरवाई ने कही, महाराज ! सरीर को निश्चय नहीं हैं । और आपुके साम्हें मोकों वहोत बोलनो अपराध हैं । तातें मेरे माथे चरन धरि आपु कहो, जो—सेरगढ़ पधारेंगे । सो आपुके चरन धरे तैं मेरो मन सुद्ध रहेगो । तब श्रीआचार्यजी वीरवाई की प्रीति देखि वहोत प्रसन्न भये । अपने चरणा-

कथुं, योशेअ्ये धूणमां पेटी दापी छे ते जधने आने अतावी आव. त्यारे कृष्णुदासे ते वीरपाधनी साथे जध अताव्युं. ते धूण नापी, पेटी लध श्रीआचार्यज्ये पासे आवी आगण धरी दीधी. अने कहे, महाराज ! आप अउधुं मने आपो. अउधुं आपनुं छे. आ आपनुं आपेदुं मने मज्युं छे. मने सेवक करे. त्यारे श्रीआचार्यज्ये कहे, हुमलां तो तू मार्गमां छे तेथी अमारा पुष्टिमार्गने धर्म अनशे नही. तू कंध समजती नथी. तेथी द्रव्य लध शेरगढ ज. असे शेरगढ पधारीशुं त्यारे तने सेवक करीशु. तू कहीश ते करीशुं. त्यारे पाधअ्ये विनती करीने कथुं, महाराज ! आप तो साक्षात् ईश्वर छे. हुं द्रव्य आपुं छुं ते देता नथी तो शेरगढ शा माटे पधारशे ? आपनां दर्शन परम दुर्लभ छे. तेथी श्रीठाकुरज्ये मारा उपर अहु कृपा करी ते आपे दर्शन दीधां तेथी मने नाम संभणवो द्रव्य अउधुं लो. त्यारे श्रीआचार्यज्ये कहे तारे गाम आवी तने सेवक करवी छे. ते ब्राह्मणु मर्यो गयो तेनी स्त्री पासे श्रीठाकुरज्ये छे ते तारा माथे पधराववा छे. तेथी असे शेरगढ निश्चे पधारीशुं. त्यारे ताइं कार्य थशे. त्यारे वीरपाधअ्ये कथुं, महाराज ! शरीरने निश्चय नही अने आपनी पासे मने वधारे बोलवुं अपराध छे. तेथी मारा माथे चरणु धरी आप कहे ज शेरगढ पधारीशुं. आपना चरणु धरवाथी माइं मन शुद्ध रहेशे.

रविन्द वीरबाई के माथे धरि के वचन दिये। जो हम सेरगढ़ पधारिकें तेरो अङ्गीकार करेंगे। तब वीरबाई दंडवत करिकें बेटा, बेटी कों लेकें सेरगढ़ कों चली। कलुक दिन में सेरगढ़ आई। अपने पतिसों सगरी श्रीआचार्यजी की बात कही। जो या प्रकार कृपा करी हैं। और श्रीआचार्यजी नें एक ब्राह्मणी के यहां ठाकुर बताये, गौर स्वरूप कहें, सो तेरे घर पधरावेंगे, सो वह ब्राह्मणी कौन है? तब वीरबाई के पति नें कही, वह ब्राह्मणी अकेली रही, वाको पति तो मारघो गयो। सो नित्य कहत है, मेरे ठाकुर पधरावो। तब वीरबाई ने पति सों कही, ढील मति करो, उह ठाकुर अपने घर लाय राखो। श्रीआचार्यजी दोय चारि दिन में निश्चय पधारेंगे। ता समय वह ब्राह्मणी ठाकुर देय न देय, सो श्रीठाकुरजी बचन करिकें लीजो। फेरि देयंगे नाहीं। तब बाई को पति उह ब्राह्मणी पास जाय कह्यो, जो—अब हमारी स्त्री, बेटा, बेटी, सब कासी सों आये हैं। तातें श्रीठाकुरजी देने होय तो देऊ, नाहीं तो हम और ठाकुर पधरावेंगे। तब ब्राह्मणी नें कही, मैं तो तुमसों पहले ही कही मोसों पूजा नाहीं होत। तुम अबही ले जाव। तब इन कही, कदाचित् फेरि तुम कबहूँ श्रीठाकुरजी कों मांगों, तो मैं न पधराऊंगो। तब वह ब्राह्मणी ने

त्यारे श्रीआचार्यजी वीरभाधनी प्रीति जेधने जेहु प्रसन्न थया। पोताना यरगुरविंद वीरभाधना माथे धरीने वचन व्याप्युं, के अमे सेरगढ पधारीने तारे अ गीकार करीशु। त्यारे वीरभाध दंडवत् करीने भेटा भेटीने लई सेरगढ यादी, पछी डेटलाक द्विवसमां सेरगढ आवी। पोताना पतिने अधी वात कही, के आ प्रकारे कृपा करी छे। अने श्रीआचार्यजी अये अके ब्राह्मणीने त्यां ठाकुर अताव्या, गौर स्वरूप कथुं, ने तारा धर पधरावीशुं ते ब्राह्मणी डोणु छे। त्यारे वीरभाधना पतिअये कथुं, ते ब्राह्मणी अठली रही तेने पति तो मार्यो गयो। ते नित्य कहे छे मारा ठाकुर पधरावो। त्यारे वीरभाधअये पतिने कथुं, ढील न करे। ते ठाकुर आपणा धरे लावी राभो। श्रीआचार्यजी अये यार द्विवसमां निश्चे पधारसे। ते समये ते ब्राह्मणी ठाकुर दे के न दे। श्रीठाकुरजी वचन करीने लेजे। इरी दधुं नही। त्यारे भाधना पतिअये ते ब्राह्मणी पासे जधने कथुं, के हुवे अमारी स्त्री भेटा-भेटी अधां काशीथी आव्यां छे। तेथी तेथी श्रीठाकुरजी देवा होय तो दे नही तो अमे भीज ठाकुरजी पधरावीशु। त्यारे ब्राह्मणीअये कथुं, में तो तमने पहेलां ज कथुं हतुं, के मारथी पूज थती नथी। ते हुमशां ज लई जव। त्यारे आने कथुं कदाचित् इरी तमे क्यारेय श्रीठाकुरजीने मांगो तो पधरावी नहि आपुं ? त्यारे ते ब्राह्मणीअये कथुं, हुवे शु पधरावुं,

कही, मैं अब कहा पधराऊँगी ? द्रव्य नहीं, मनुष्य मेरे घर नहीं । तब इन कही, एक ठाकुर मैं लेहू, एक तुम लेऊ । मेरे घर पधराय आवो । तब वह ब्राह्मणी लालाजी लियो, बड़े गौर स्वरूप कों उह कायस्थ ले आयो । दोनों स्वरूप कों अपुने घर पधरायो । पाछे चारि दिनमें श्रीआचार्यजी सेरगढ़ पधारे । सो नदी के तीर एक बाग में उतरे । तब कृष्णदास सों कही, उह वीरवाई कों खबरि हमारी जताईयो, लाईयो मति । वाको मन प्रसन्न होय तो आवे । तब कृष्णदास गाम में गये, और वाके वेटा दामोदरदास कों देखिके कहे, तू घर जाय, अपनी माता सों कहियो, जो—नदी के तीर बगीची है, तहां श्रीआचार्यजी पधारे हैं । यह कहि कृष्णदास श्रीआचार्यजी पास आय कहें, जो—वीरवाई को वेटा दामोदरदास मिल्यो तासों कहि आयो । जो श्रीआचार्यजी पधारे हैं । तब दामोदरदास ने अपनी माता सों जायके कह्यो, श्रीआचार्यजी पधारे हैं सो मोसों उनको एक सेवक कहि गयो है, सो मैं तोसों कह्यो । यह सुनत ही वीरवाई दौरि आई । बगीची में आय श्रीआचार्यजी कों दंडोत करि विनती करी, जो—महाराज ! घरमें पधारिये । सगरे कुटुम्ब कों सरनि लीजिये । श्रीठाकुरजी आप कहे हते सो घरमें लाय राखे हैं, सो मेरे माथे पधराइये । तब श्रीआचार्यजी कहें, तू दैवी जीव है, तोसों भगवद् सेवा

द्रव्य नथी, मनुष्य मारा धरे नथी. त्यारे आने कछु, के अके ठाकुर हुं लठि अके तमे लो. मारा धरे पधरावी आवे। त्यारे ते ब्राह्मणीअे लालण लीधा, मोहुं गौर स्वरूप ते कायस्थ लठि आण्ये। अन्ने स्वरूपने पोताने धरे पधराव्यां. पछी चार दिवसमां श्रीआचार्यण शेरगढ पधार्यां. ते नदीना तीरे अके भागमां उतर्यां. त्यारे कृष्णदासने कहे, ते वीरबाधने अमारी अजर कहावण. लावीश नखीं. अणुं मन प्रसन्न होय तो आवे. त्यारे कृष्णदास गाममां गया. अने अना पुत्र दामोदरदासने जेधने कहे, तू घर जेठ तारी माताने कहेण के नदीना तीर बगीची छे त्यां श्रीआचार्यण पधार्यां छे. अम कही कृष्णदास श्रीआचार्यण पासे आवी कहे, के वीरबाधने वेटा दामोदरदास अण्ये तेने कही आण्ये, के श्रीआचार्यण पधार्यां छे. त्यारे दामोदरदासे पोतानी माताने जेधने कछुं, श्रीआचार्यण पधार्यां छे. मने अमनो अके सेवक कही गयो छे. ते मे तने कछुं. अे सांभणतां ज वीरबाध होडी आवी. बगीचीमां आवी श्रीआचार्यणने दंडवत् करी विनंती करी, के महाराज ! घरमां पधारे. अंधा कुटुम्बने शरणे लो. श्रीठाकुरण आपे कहा हता ते घरमां लावी राख्या छे ते मारा माथे पधरावो. त्यारे श्रीआचार्यण कहे, तू दैवी अणव छे. ताराथी भगवद्सेवा

बनेगी । तातें तोकों नाम और ब्रह्मसंबंध दोऊ करावने हैं । और तेरे कुटुम्ब साधारण जीव हैं, तिनकों नाम सुनावेंगे । तेरे संग तें सबको उद्धार होयगो । तातें तू नदी में नहाय आव । तब वीरबाई नदी में नहाय आई । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु वाकों नाम सुनाय ब्रह्मसंबंध कराय कहें, अब तू घर जा, तेरे पति कों पठाइयो । तब हम तेरे घर पधारेंगे । तब वीरबाई घर जाय पति सों कही, नदी तीर बगीची में श्रीआचार्यजी पधारें हैं, सो विनती करिके पधरावो । सेवक सगरे होऊ, कृतार्थ होऊ । तब वह पति कह्यो, तू हू संग चलि । पाछे स्त्री पुरुष दोऊ आय श्रीआचार्यजी सों विनती करि घर पधराये । सबकों श्रीआचार्यजी नाम सुनाये । पाछे श्रीठाकुरजी कों पंचामृत स्नान कराय पाट बैठाये । वीरबाई के माथे पधराये । बड़े गौर स्वरूप हते । तिनको नाम 'श्रीकपूररायजी' धरे । लालाजी हते तिनको नाम 'श्रीनवनीतप्रियजी' धरे । और आगें किये, हिंडोरा, पालना सों श्रीनवनीतप्रियजी कों झुलाये । पाछे वीरबाई नें श्रीआचार्यजी सों विनती करिके पांच दिन घरमें राखे । पुष्टिमार्ग की सेवा की रीति सब सीखी । पाछे आधो द्रव्य श्रीआचार्यजी को धरि राख्यो हतो सो भेट कियो । पाछे श्रीआचार्यजी पृथ्वी परिक्रमा कों पधारें ।

अनशे. तेथी तने नाम अने ब्रह्मसंबंध अन्ने करावनां छे. अने तारु कुटुम्ब साधारणु छव छे तेमने नाम सखणात्रीशुं. तारा संगथी अधानो उद्धार थशे. तेथी तू नदीमां न्हाई आव. त्यारे वीरबाई नदीमां न्हाई आवी. त्यारे श्रीआचार्युं महाप्रभु अने नाम सखणात्री ब्रह्मसंबंध करावी कहे, हुवे तू घर अ तारा पतिने भेकलअ. त्यारे अने तारा धरे पधारीशु. त्यारे वीरबाईअे धर आवी पतिने कहु, नदी तीर अगीचीमां श्रीआचार्युं पधार्यां छे. ते विनंती करीने पधरावो. सेवक अधा थाव. त्यारे ते पति कहे तू पाशु आस. पछी स्त्री पुरुष अन्ने आवी श्रीआचार्युंने विनती करी धर पधराव्या अधाने श्रीआचार्युंअे नाम सखणाव्युं. पछी श्रीठाकुरुंने पंचामृत स्नान करावी पाट भेसाइया. वीरबाईने माथे पधराव्या. भोटु गौर स्वरूप हतु. तेमनुं नाम श्रीकपूररायुं धर्युं. लालुं हता तेमनुं नाम श्रीनवनीतप्रियुं धर्युं. अने आगणना करेसा हिंडोरा पालनाथी श्रीनवनीतप्रियुंने सुलाव्या. पछी वीरबाईअे श्रीआचार्युंने विनंती करीने पांच दिवस धरमां राभ्या. पुष्टिमार्गनी सेवानी रीति अधी शीषी. पछी अडधुं द्रव्य श्रीआचार्युंनु धरी राभ्यु हतु ते भेट क्युं. पछी श्रीआचार्युं पृथ्वी परिक्रमाअे पधार्यां.

वार्ता-प्रसंग १—सो वीरबाई श्रीठाकुरजी की सेवा बहोत प्रीति सों करन लागी । कछुक दिनन में श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे । पाछे वीरबाई के गर्भ रह्यो । तब घरी दोय रात्रि पिछली रही तब वेटा भयो, सो लोग सगरे वेटा की बधाई, ज्ञाति व्यवहार में लागे । श्रीठाकुरजी कों चारि घरी दिन चढ़ि गयो । तब वीरबाई बहोत ही दुःख करन लागी, जो—मेरे श्रीठाकुरजी कों अवेर भई । सबसों कहें, जो—श्रीठाकुरजी कों कोऊ जगावो । सो कोऊ जगावे नाहीं । ऐसे करत प्रहर दिन चढ़यो । तब तो वीरबाई मनमें महा ताप करिकें रोवन लागी । जो—यह पुत्र पापी कहाँ ते याही समय भयो ? जो मेरे ठाकुर काल्हिके पौढ़े हैं कोई जगावत नाहीं, अब मैं कहा करूँ ? या प्रकार अत्यंत विरह भयो । तब श्रीठाकुरजी सज्या में ते बोले, जो—तू रुदन काहे कों करत है ? कोऊ नाहीं जगावत, तो तू ही मोकों जगाव । तब वीरबाई ने कही, महाराज ! मैं यह अघोर नर्क में परी हों । कैसें तुमकों छूवों ? तब श्रीठाकुरजी कहें, गोबर लगाय स्नान करि, काछ बांधि कें मोकों तू ही जगाव । मैं और तें सेवा न कराऊंगो । मेरी आज्ञा है, तोकों यामें अपराध नाहीं । तब वीरबाई उठिके गोबर लगाय, आछे नहाय काछ मारिकें श्रीठाकुरजी कों जगाये । पाछे मंगला करिकें शृंगार करि, रसोई करि, भोग धरि प्रसाद ले पड़ी रही ।

वार्ता-प्रसंग १—ते वीरबाई श्रीठाकुरजी की सेवा बहुत प्रीति से करा लागी । केवल दिवसेमां श्रीठाकुरजी साधुभावता ज्ञावना लाग्या । पछी वीरबाईने गर्भ रह्यो । तयारे धडी ये रात्रि पाछली रही तयारे पुत्र थयो । ते लोक अधा पेटानी वधाध ज्ञाति व्यवहारमां लाय्या । श्रीठाकुरजीने तयारे धडी दिन यडी गयो तयारे वीरबाई धलीज दुःख करवा लागी के मारा श्रीठाकुरजीने भाडुं थयुं अधाने कहे, के श्रीठाकुरजीने कोध जगाडे पछु कोध जगाडे नहीं । अम करतां प्रहर दिन यठयो तयारे तो वीरबाई मनमां महा ताप करीने रोवा लागी, के आ पुत्र पापी क्यांथी आ समय थयो ? के मारा ठाकुर कालना पोढ्या छे कोध जगाडतुं नहीं । हुवे हुं शुं करे ? आ प्रकारे अत्यंत विरह थयो तयारे श्रीठाकुरजी शैयामांथी पोढ्या के तू रुदन शा माटे करे छे ? कोध न जगावे तो तूज मने जगाड । तयारे वीरबाईये कहुं, महाराज ! हुं आ अधार नर्कमां पडी कुं केवी रीते तमने अडुं ? तयारे श्रीठाकुरजी कहे, छाणु लावी स्नान करी कञ्च धांधीने मने तूज जगाड । हुं भीजथी सेवा नहीं करावुं । मारी आज्ञा छे तने अमां अपराध नहीं । तयारे वीरबाईये उठीने छाणु लगाडी सारी रीते न्हाध कञ्च मारीने

या प्रकार सों तेरह दिन पाछें अपरस काढ़ी । पाछें चालीस दिन भये तब सगरे वस्त्र पात्र काढ़ि अपरस नई करी । श्रीठाकुरजी कों पंचामृत सों न्हावय सुद्ध होय पुष्टिमार्ग की रीति सों सेवा करन लागी । तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होय वीरबाई सों कहें । तू मेरी हू आज्ञा मानी जो सूतक में सेवा करी । पाछे मारग की रीति सों अपरस हू काढ़ी । तातें मैं तो पर बहोत प्रसन्न हों । या प्रकार वीरबाई के उपर श्रीठाकुरजी प्रसन्न होय पिंडरू में हू सेवा कराई । परन्तु और सों न कराई । सो वीरबाई ऐसी श्रीआचार्यजी की कृपापात्र भगवदीय हती । इनकी वार्ता कहां तांई कहिये ।

वार्ता ॥६१॥

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो-बहोत सुद्ध होय, उत्तम होय, तोऊ प्रीति बिना श्रीठाकुरजी सेवा न करावे । और करे तोऊ प्रीति बिना सेवा मानें नाहीं । और कैसेहू अपवित्र, हीन, नीच, होय ताकों प्रीति होय तो ताहिसों भगवद् सेवा करावे, याहि प्रकार सूतक, पिंडरू तथा महिना के महिना अटकाव मेंहू वीरबाई सेवा किये, परन्तु घरमें कुटुम्ब परिवार बहोत हतो तासों सेवा न कराई । और वाकी वार्ता अनिर्वचनीय हैं । जैसे पुलिन्दी कों कुंकुम चरणारविंद को, ताहि द्वारा सब रस को अनुभव करायें । सोई पति भावसों, इहां हू सगरे रस

श्रीठाकुरजीने जगाव्या. पछी भंगला करीने शृंगार करी रसोद्य करी लोग धरी प्रसाद लभ पडी रही. आ प्रकारे तेर दिवस पछी अपरस काढी पछी चादीस दिवस थया तयारे. अथा वस्त्र पात्र काढी अपरस नवी करी. श्रीठाकुरजीने पंचामृतथी स्नान करावी शुद्ध थय पुष्टिमार्गनी रीतिथी सेवा करवा लागी. तयारे श्रीठाकुरजी प्रसन्न थय वीरबाईने कहे, ते भारी पणु आज्ञा मानी जे सूतक (पिंडरू) मां सेवा करी. पछी मार्गनी अपरस पणु काढी. तेथी हुं तारा उपर धणो प्रसन्न छुं. आ प्रकारे वीरबाईना उपर प्रसन्न थय पिंडरूमां पणु सेवा करावी. परंतु भीजथी न करावी. ते वीरबाई अेवी श्रीआचार्यजीनी कृपापात्र भगवदीय हती. अेनी वार्ता क्यां सुधी कहीअे ? ॥६१॥

भावप्रकाश—आमां अे जणुअु के, अहु शुद्ध होय उत्तम होय, तो पणु प्रीति बिना श्रीठाकुरजी सेवा न करावे अने करे तो पणु प्रीति बिना सेवा माने नहीं. अने डेवोय अपवित्र हीन नीच होय तेने प्रीति होय तो तेनाथी भगवत्सेवा करावे. अेज प्रकारे सूतक, पिंडरू तथा महिने महिने अटकावमां पणु वीरबाईअे सेवा करी. परंतु घरमां कुटुम्ब परिवार धणो हतो तेनाथी सेवा न करावी. वणी अेनी वार्ता अनिर्वचनीय छे. जम पुलिन्दीने चरणारविंदनुं कुंकुम तेनी द्वारा अथा

को अनुभव कराये । सो वार्ता कही न जाय । तातें इतनी हू लोक वेद विरुद्ध वार्ता कही है । सो प्रेम की रीति अटपटी है । भगवदीय यह भेद जानें, तिनहू के सुनन जोग हैं । और कों ऐसी वार्ता पर विश्वास न उपजें । सो वीरवाई सदा श्रीठाकुरजी की लीला रसमें मगन रहती । प्रथम गिरिराजजी परम भगवदीय हरि-दासराई तिनको संग हैं । तातें इनको भाव अनिर्वचनीय हैं । वैष्णव ॥६१॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, दोऊ स्त्री पुरुष, क्षत्री सिंढनंद के वासी, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में दोऊ विसाखाजी की सखी हैं । पुरुष को नाम 'रंगा' स्त्री को नाम 'हंसा' सखी । सो ये दोऊ श्रीयमुनाजी स्नान कों गई, तहाँ इनकों श्रीठाकुरजी मिले । सो नाना प्रकार की विहार लीला में मगन होय गई । पाछें जल विहार करन लागी । तब श्रीस्वामिनीजी और विसाखाजी श्रीयमुनाजी नहायवे कों पधारी । तब श्रीठाकुरजी श्रीयमुनाजी तें निकसि वृक्षन की आड़ में ठाड़े भये । और ये दोऊ सखी चक्रत होय जल में ठाड़ी रहीं । तब श्रीस्वामिनीजी पुकारि के कहें, रंगा, हंसा, हमारे पास आवो । सो इनको मन

रसनो अनुभव कराव्यो ते वार्ता कही न जाय. तेज पतिभावथी अही पण व्यथा रसनो अनुभव कराव्यो ते वार्ता कही न जाय. तेथी आटपटी पण दोऊ-वेद विरुद्ध वार्ता कही छे ते प्रेमनी रीति अटपटी छे. भगवदीय अे वेद जाणु तेमनेज सांखणवा योज्य छे. भीजने आवी वार्ता उपर विश्वास न आवे. ते वीरपाध सदा श्रीठाकुर-जनी लीला-रसमां मगन रहेती. प्रथम गिरिराजज परम भगवदीय हरिदासराय तेमने संग छे. तेथी तेने भाव अनिर्वचनीय छे. वै. ॥६१॥

✽

✽

✽

हुवे श्रीआचार्यज महाप्रभुजना सेवक, जेठ स्त्री-पुरुष क्षत्री सिंढनंदनां वासी, तेमनी वार्ताना भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे लीलामां जेठ विशाखाजनी सखी छे. पुरुषनुं नाम 'रंगा' स्त्रीनुं नाम 'हंसा' सखी. अे जेठ श्रीयमुनाज स्नान भाटे गछ त्यां अेमने श्रीठाकुरज मल्या. ते नाना प्रकारनी विहार-लीलामां मगन थछ गछ. पछी जल विहार करवा लागी. त्पारे श्रीस्वामिनीज अने विशाखाज श्रीयमुनाज न्हावाने पधारी त्पारे श्रीठाकुरज श्रीयमुनाजथी निकणी वृक्षनी आडमां जला रखा अने आ यन्ने सखी अंकित थछ जलमां जली रही. त्पारे श्रीस्वामिनीज पोकारिने कहे 'रंगा' 'हंसा'

श्रीठाकुरजी में लग्यो, जो-कब फिर आवें ? तातें ये मुने नहीं । तब श्रीस्वामिनीजी ने कही, विसाखा ! ये दोऊ तेरी सखी बहोत ढीट हैं । मैं बुलाई सो आई नहीं । तब विसाखाजी नें पुकारघो, रंगा हंसा यहाँ आवो । तऊ न आई । तब विसाखाजी कहें, ऐसो मान गर्व भयो, जो-इतनो बुलायो जुवाब नहीं दियो । भूमि में गिरो, तब दोऊ गिरीं । सो सिंहनंद में दोग क्षत्री के घर हते, तहां दोऊ प्रगटें । समय पाय वरष दसके भये । तब दोऊन को विवाह भयो । तब दोऊन के मन में वैराग्य आयो । सो दोऊ अपने मन में आपुस में बतराये जो विषय आदि सुख तो पशु, पंछी में हू हैं, । तातें श्रीठाकुरजी ने मनुष्य देह दियो तो व्रतादिक करि देह इन्द्रिकों दमन करिये । तब दोऊन नें व्रत साध्यो, भूमि पर सोवें । नित्य फलाहार लेय, कबहूँ दूध कबहूँ जलादि, एकादशी निर्जल करें । कार्तिक में एक दिन फलाहार, एक दिन निर्जल । या प्रकार व्रत करि शरीर दोऊन नें सुखाय डारघो । तब दोऊन के मा बाप खीजन लागे । जो तुम अब ही तें ऐसो कष्ट करत हो, सो काहे के लिये ? अब ही तो तिहारे खायवे पहरिवे के दिन हैं । आछे भोग भोगो, श्रीठाकुरजी चारि पैसा दियो हैं सो संसार के सुख करो । तब दोऊ जनें कहें, संसार के सुख कुत्ता, गदहा होय सो करें । हम तो

अमारी पासे आवो. पशु अमनुं मन श्रीठाकुरजीमां लाज्युं डे क्यारे इरी पंधारे तेथी अ सांभणे नही. त्यारे श्रीस्वामिनीज्ये कछु, विशाभा । आ अन्ने तारी सभ्नी अहु नईट छे. में भोलावी ते आवी नहीं. त्यारे विशाभाज्ये भोलाव्यां. रंगा हंसा अहीं आवो. तोय न आवी. त्यारे विशाभाज्ये कहे, अंनुं मान-गर्व थयो डे आटली भोलावी (पशु) जवाब न आथ्यो । भूमिमां पडो. त्यारे अन्ने पडी. ते सिंहनंदमां ये क्षत्रीनां घर हतां त्यां अन्ने प्रकट्यां. समय थये वरस दशनां थयां त्यारे अन्नेने विवाह थयो. त्यारे अन्नेना मनमां वैराग्य आव्यो. अन्ने पोताना मनमां आपसमां कहे डे, विषय आदि सुख तो पशु पंथीमां पशु छे भाटे श्रीठाकुरजीज्ये मनुष्य देह दीधो तो व्रतादि करी देह इन्द्रियनुं दमन करीअे. त्यारे अन्नेज्ये व्रत साध्यां. भूमि उपर सुवे. नित्य फलाहार ले. क्यारेक दूध, क्यारेक जल आदि अेकादशी निर्जल करे. कार्तिकमां अेकदिन फलाहार. अेक दिन निर्जल. आ प्रकारे व्रत करी शरीर अन्नेज्ये सुकावी नाभ्यां त्यारे अन्नेनां मा-बाप अिजवाह गयां डे तसे हमाणांथी आवुं कष्ट करे छे ते शाने भाटे ! हनु तो तभारा भावा पहेरवाना दिवस छे. सुंदर भोग भोगो. श्रीठाकुरजीज्ये चार पैसा आथ्या छे तेथी संसारनुं सुख करे.

व्रत करेंगे । तब वे चुप होय रहे । पाछे एक दिन दोऊ माघ महिना नहात हते, सरस्वती में । ता समें श्रीआचार्यजी महाप्रभु थानेस्वर पधारे । सो सरस्वती पर संध्यावन्दन कों पधारे । तब दोऊ कों जल में ठाड़े देखिकें थानेस्वर के वैष्णव सों पूछें, ये दोऊ स्त्री पुरुष कौन हैं ? ऐसैं सीत में जल में ठाड़े हैं, महा दुर्बल । तब वैष्णव नें कही, महाराज ! ये दोऊ क्षत्री के बेटा, बेटा हैं, स्त्री-पुरुष । ये लौकिक संसार को सुख नाहीं जान्यो । व्रत सदा करत हैं, अन्न की वस्तु लेत नाहीं । महा कष्ट करि देह सुखाय डारे हैं । मा बाप काहू को कछो मानत नाहीं । तब श्रीआचार्यजी कहें । इनकों हमारे पास लावो, कोई उपाय करि । तब वैष्णव पार जाय दोऊन सों कहें, तुम पार चलो तो श्रीआचार्यजी बुलावे हैं । तुम कों व्रत को जो फल चाहिये सो मिलेगो । तब दोऊ छुनिकें प्रसन्न भये, वैष्णव के संग पार आये । तब श्रीआचार्यजी कों दंडौत करि ठाड़े रहे । तब श्रीआचार्यजी नें कही, तुम ऐसो कष्ट सहि कें व्रत करत हो, सो मनोरथ कहा है ? जो तुम कों फल चाहिये सो लेहु । तब दोऊ नें कही, महाराज ! फल तो बहोत बड़ो चाहत हैं, और साधन तुच्छ करत हैं । सो फल कैसे मिलेगो ? तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम कहो तो सही । तब दोऊ नें कही, हम कों यह मनोरथ हैं, जो-या जन्म में

त्यारे अन्ने जणु कडे, संसारनु सुख कुत्ता गधेडा होय ते करे अन्ने तो व्रत करीशु. त्यारे ते युप थई रखां. पछी अेक दिवस माह महिना न्हातां हुतां सरस्वतीमां, ते समये श्रीआचार्यजी महाप्रभु थानेस्वर पधार्या. ते सरस्वती उपर संध्यावन्दन माटे पधार्या. त्यारे अन्नेने जलमां उषां जेधने थानेस्वरना वैष्णुवोने पूछ्युं डे आ जेठ स्त्री पुरुष कोणु छे ? आवी ठंडीमां जलमां उषा छे महा दुर्बल, त्यारे वैष्णुवे कथुं, महाराज ! अे अन्ने क्षत्रीना जेठा-जेठी छे स्त्री, पुरुष. अेमणु लौकिक संसारनुं सुख जाणुं नथी. व्रत सदा करे छे. अन्ननी वस्तु लेतां नथी. महाकष्ट करी देह सुष्वावी नापे छे. मा-पाप कोठनुं कथुं मानतां नथी. त्यारे श्रीआचार्यजी कडे, अेमने अमारी पासे लावो कोठ उपाय करीने. त्यारे वैष्णुवो पार जई अन्नेने कडे तमे पार यावो तो श्रीआचार्यजी जोसावे छे. तमने व्रतनुं जे इल जेधअे ते भणशे. त्यारे अन्ने सांखणीने प्रसन्न थई वैष्णुवना संगे-पार आण्यां. त्यारे श्रीआचार्यजीने दंडवत् करी उषां रखां. त्यारे श्रीआचार्यजीअे कथुं, तमे आवुं कष्ट करीने व्रत करे छे ते मनोरथ शे छे ? तमने इल जेधअे ते लो. त्यारे जेठ कडे, महाराज ! इल तो अहु मोटुं धिअथीअे छीअे. अने साधन तुच्छ करीअे छीअे. ते इल इम भलशे ?

याही सरीर सों श्रीठाकुरजी हम सों बोले, कृपा करें । सो श्रीठाकुरजी तीर्थ, व्रत किये, साधन सों कैसे मिलेंगे ? तातें हम कहा करे ? हारिकें व्रतादिक करि सरीर छोड़ेंगे । और उपाय कछु जानत नाहीं । तब श्रीआचार्यजी कहें, इतनो कष्ट व्रत करि सरीर कों देत हों । सो श्रीठाकुरजी के सेवा सुमिरन में सरीर, मन लगावो, तो याहि जन्म में प्रभु कृपा करें । तब स्त्री-पुरुष दोऊन नें कह्यो, महाराज ! श्रीठाकुरजी की सेवा कैसे बनें ? हमने तो कछु नाहीं पास राख्यो । यह दोग कपरा मेले पहरे हैं । और मा बाप के पास द्रव्य है सो संसार सुख के लिये जो मांगे सो देई । परन्तु परमार्थ के अर्थ श्रीठाकुरजी के नाम पर एक कोड़ी न देइंगे । हम सों द्वेष करत हैं । सो भगवद् सेवा बिना द्रव्य कहां ते होय ? तब श्रीआचार्यजी कहें, जो-वे द्वेष करें तामें तो तुम कों आछो है । बहिर्मुख सों बोलनो मिट्यो । और सेवा लायक तुम दोग चारि आठ घरी कछु उद्यम करोगे तो वाही में तुमकों निर्वाह जोग मिलेगो, ताहि में निर्वाह करियो । सेवा अर्थ सरीर कों कष्ट होय तब धीरज धरि दुःख सहो तो श्रीठाकुरजी सों सहो न जाय । तुमकों अनुभव जतावेंगे । तातें हम थानेस्वर के वैष्णव सों कहि देइंगे, तुमकों उधारो देइंगे । व्योपार हू सिद्धि करि देइंगे । परन्तु तिहारो मन भगवद् सेवा करन में

त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, तमे कहे तो परां. तारे भेउये कछु, अमने अे मनोरथ छे के आ जन्ममां आन शरीरथी श्रीठाकुरजी अमारथी-भोले, कृपा करे. ते श्रीठाकुरजी तीर्थ व्रत कर्ये, साधनथी डेवी रीते भणशे ? तेथी अमे शुं करीये. थाकीने प्रतादि करीने शरीर छोडीशुं. भीजे उपाय तो कंठ आणुता नथी. तारे श्रीआचार्यजी कहे, आठलुं कष्ट व्रत करीने शरीरने दो छे ते श्रीठाकुरजीनी सेवा-स्मरणमां शरीर मन लगाडो तो आं ज जन्ममां प्रभु कृपा करे. तारे स्त्री-पुरुष अन्नेये कछु, महाराज ! श्रीठाकुरजीनी सेवा डेवी रीते अने ? अमे पासे तो कंठ राभ्युं नथी. 'आ भे कपडां मेलां पहेर्यां छे. अने मा-आपनी पासे द्रव्य छे ते संसार सुअने माटे ज मागे ते हे. परंतु परमार्थने माटे श्रीठाकुरजीना नाम उपर डाडी नही हे. अमारथी द्वेष करे छे. तेथी भगवद्सेवा बिना द्रव्य डम थाय ? तारे श्रीआचार्यजी कहे, के अे द्वेष करे तेमां तो तमने साइं छे. बहिर्मुखथी भोलवुं भट्युं. वणी सेवा लायक तमे भे तार आठ घडी कंठ उद्यम करेशो तो तेमां ज तमने निर्वाह लायक भणशे. तेमां निर्वाह करजे. सेवा अर्थ शरीरने कष्ट होय तारे धीरज धरी दुःख सहो तो श्रीठाकुरजी सहुं न अय. तमने अनुभव जतावशे. तेथी अमे थानेश्वरना वैष्णवने कही

होय तो उपाय श्रीठाकुरजी सब करेंगे। जो मन न होय तो तिहारी तुम जानो। तब दोऊन ने कही, महाराज ! हमारो मन तो बहोत हैं। माँ बाप के प्रतिबंध सों डरपत हैं। तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम माँबाप के प्रतिबंध सों मति डरपो। हम कहें तेसो करो। तिहारो सगरो मनोरथ पूरण होयगो। तब दोऊ प्रसन्न होय कहें, महाराज ! हम आपकी सरनि हैं। जा प्रकार हमारो भलो होय सो करो। तब श्रीआचार्यजी कहें, स्नान करि आये, अपरस में तो तुम हों, आगे आवो। तब दोऊ आगे आये। तब नाम निवेदन करायो। पाछे श्रीआचार्यजी थानेस्वर के वैष्णव सों कहे। अब इनके लिये श्रीठाकुरजी को स्वरूप ठीक करो। तब एक नामधारी वैष्णव थानेस्वर को हतो, बाने कह्यो, महाराज ! मेरे दोय स्वरूप हैं, सो एक लालजी मैं देऊंगो। तब श्रीआचार्यजी कहें यहां बेगे लाऊ। तब वह नामधारी वैष्णव स्वरूप ले आयो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु पञ्चामृत सों स्नान कराय स्त्री-पुरुष के साथे पधराये। पाछे सिंहनन्द के वैष्णव श्रीआचार्यजी के दरसन को आये हते तिनसों कहें, ये दोऊ स्त्री-पुरुष हमारे हैं। ताते इन दोऊ, कोई प्रकार सों दुःख न पावें, सो करियो। तब वैष्णव कहें, महाराज ! हम मान

दृश्युं तमने उवार व्यापशे. वेपार पशु सिद्ध करी देशे. परंतु तमाइ मन लगवद्-
सेवा करवानुं होय तो उपाय श्रीठाकुरजी अधा करेशे. जे मन न होय तो तमारी तमे
नशे. तारे अन्नेये कथुं, महाराज ! अमाइ मन तो बहु छे. मा-बापना प्रतिबंधी
उरीये छीये. तारे श्रीआचार्यजी कहे, तमे मा-बापना प्रतिबंधी न डरे. अमे
कहीये तेम करे. तमारो अधा मनोरथ पूरुं थरे. तारे अन्ने प्रसन्न थछ कहे,
महाराज ! अमे आपनी शरणे छीये. जे प्रकारे अमाइ बहुत थाय ते करे. तारे
श्रीआचार्यजी कहे, स्नान करी आव्या अपरसमां तो तमे छे आगण आव्या. तारे
अन्ने आगण आव्यां तारे नाम-निवेदन कराव्युं. पछी श्रीआचार्यजी थानेश्वरना
वैष्णवाने कहे, हने आमने भाटे श्रीठाकुरजी स्वरूप ठीक करे. तारे अक नामधारी
वैष्णव थानेश्वरना हतो. तेषु कथुं, महाराज ! मारे ये स्वरूप छे. तेथी अक लाल
हुं आपीश. तारे श्रीआचार्यजी कहे, अही जल्दी लाव. तारे ते नामधारी वैष्णव
स्वरूप लछ आव्यो. तारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु पञ्चामृतथी स्नान करावी स्त्री-पुरुषना
साथे पधराव्या. पछी सिंहनंदमां वैष्णव श्रीआचार्यजीनां दर्शने आव्यां हतां तमने
कहे, आ अन्ने स्त्री-पुरुष अमारो छे भाटे आ अन्ने काछे प्रकारथी दुःख न पावे
तेम करजे. तारे वैष्णव कहे, महाराज ! अमे प्राणुनी माइके अमने जे जेधरे ते

की नाई इनकों जो चाहिये सो सिद्ध करि देंगें । ता समय सास बहू दरसन करन कों आई हती । सो कही, मेरे घर में जगह बहोत हैं, सो मैं इनकों देऊँगी । सेवा संबंधी सब सिद्ध करि देऊँगी, सिंघासन, सिज्या, आदि । तब श्रीआचार्यजी स्त्री पुरुष सों कहें । तुम बहू के संग जाव । तुम पर प्रभु वेगें कृपा करेंगे । और जहां तुम रहोगे तहां सुख पावोगे । जामें पुष्टिमार्ग धर्म सिद्ध होय सो कार्य करियो । तब स्त्री-पुरुष श्रीआचार्यजी कों दण्डोत करि वह बहू के घर आये । तब न्यारी जगह करि तहां श्रीठाकुरजी कों पधराये । एक वैष्णव सों रूपैया २२) मांगि लाये उधारे, सो सामग्री लाये । रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरि महाप्रसाद लिये । साधन व्रतादिक सब छोडि दिये, विष्णुपञ्चक व्रत करे । जयन्ती, और एकादशी राखे, इनकों विष्णुपञ्चक कहे हैं । जो ये पांचों व्रत, चार जयन्ती, एकादशी विष्णुसंबंधी हैं । सो वैष्णव कूँ अवस्य करने, और व्रत नाहीं करने । पाछें सेवा सों पहोंचिकें पुरुष बजार में गयो । सो वैष्णव बहोत सन्मान करिकें कहें, तुम दुकान करो तो द्रव्य लेऊ । चाकरी करो तो महिना लेऊ । जामें तिहारो मन प्रसन्न होय सो करो । तब इन कही मेरो मन दलाली करिवे में हैं, तब दलाली करें । सो वैष्णव प्रीति करि रूपैया दोय रूपैया नित्य इनकों पैदा कराय देई । सो

सिद्ध करी दधुं. ते समये सासु-वहु दर्शन करवाने आव्यां हुतां तेमणु कथुं, भारा धरमां जगा धणी छे. ते हुं. अमने आपीश. सेवा संबंधी अधुं सिद्ध करी दधुं. सिंघासन शय्या आदि. त्पारे श्रीआचार्यजी स्त्री-पुत्रने कहे, तमे वहुनी साथे जव. तभारा उपर प्रभु जददी कृपा करशे. अने ज्यां तमे रहेशे। त्यां सुभ पाभशे। जमां पुष्टिमार्ग धर्म सिद्ध होय ते कार्य करजे. त्पारे स्त्री-पुत्र आचार्यजीने दंडवत् करी ते वहुना धरे आव्यां. त्पारे अलग जग्या करी त्यां श्रीठाकुरजीने पधारोव्या. अक वैष्णवथी इपीया २२) उधार मांगी लाव्या. तेनी सामग्री लाव्यां. रसोई करी श्रीठाकुरजीने भोग धरी महाप्रसाद लीयो. साधन-व्रतादि अधुं छोडी दीधुं. विष्णुपञ्चक व्रत करे. जयन्ति अने एकादशी व्रत राभे अने विष्णुपञ्चक कहे छे. अ पांचे व्रत यार जयति, एकादशी विष्णु संबंधी छे. ते वैष्णवे अवस्थ करवां भीजं व्रत नहीं करवां. पछी सेवाथी पहोंची पुत्र पनरमां गयो. त्पारे वैष्णव अहु सन्मान करीने कहे, तमे दुकान करे तो द्रव्य लो. चाकरी करे तो महिना लो, जमां तभारं मन प्रसन्न होय ते करे. त्पारे आभने कथुं, माइ मन दलादी करवामां छे. त्पारे दलादी करे. ते वैष्णव प्रीति करी इपीया अ इपीया

बाइस रूपैया करज हू दे डारे । और भगवद् सेवा करन लागे । तब स्त्री पुरुष दोऊन के मा बाप इनकी निन्दा करन लागे । जो पहलें तो दोऊ बड़े त्यागी हते । अब वैष्णव सों भीख मांगिकें निर्वाह करत हैं । पराये घर में जाय रहे । सो हमकों लाज लगावत हैं । ऐसोई करनो हतो तो कोई और गाम में जाय रहते । ठाकुर ले बड़े भक्त भये हैं, लोगन कों ठगिबे कों । यह बात सब सों कहें । सो एक ने यह पुरुष सों कही । तब पुरुष के मन में बुरी लागी । तब स्त्री सों आय कही । जो-तेरे मा बाप, हमारे मा बाप या प्रकार जहां तहां निंदा करत हैं । तब स्त्री ने कही, जो-तुमारे, हमारे, मा बाप सांचे हैं । अपने पास कहा हतो, एक कोड़ी न हती । सो सब वैष्णव ने श्रीआचार्यजी के सेवक जानिकें करि दियो हैं । सो अब अपने सुखी हैं । परन्तु या प्रकार श्रीठाकुरजी सेवा मानेंगे नहीं । अपुना धर्म नास भयो । वैष्णव सों पूजाय के धन ले निर्वाह अपुने किये । सो अपने कों धिक्कार हैं । ताते ऐसे ठिकाने चलो जहां अपुने कोऊ वैष्णव जाने नहीं । तहां जो कमाय के लावो, सो भोग धरि निर्वाह करेंगे । तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होयगें । ताते अपने मा बाप सांचे निंदा करत हैं । अपुने निन्दा ही जोग हैं । काहेतें, श्रीठाकुरजी प्रसन्न करिवे के लिये श्रीआचार्यजी की सरनि आये, सेवा पधराये । कछु वैष्णव सों पूजायवे के

नित्य अपने पैदा करावी दे. पछी २२७ रुपैया करनना आपी दीधा अपने भगवद्सेवा करवा लाग्या. तयारे स्त्री पुरुष अपनेनां मा-बाप अपने निंदा करवा लाग्यां. जे पहेले तो मोटां त्यागी हुतां. हुवे वैष्णवथी बीभ मांगीने निर्वाह करे छे. भीजना धरमां रहे छे ते अपने लाज लगाडे छे. अबुं करवुं हुतुं तो डोई भीज गाममां जई रहेतां. ठाकुर लई मोटा भक्त थया छे. डोडाने हगवाने या वात अधाने कहे. ते अठे या पुरुषने कछुं. तयारे पुरुषना मनमां पोटुं लाग्युं. तयारे स्त्रीने यावी कछुं, ते तारां मा-बाप अमारां मा-बाप या प्रमाणे ज्यां त्यां निंदा करे छे. तयारे स्त्रीअे कछुं ते, तमारां अमारां मा-बाप सायां छे. आपणुी पासे शुं हुतुं ? अेक डोडी न हुती. अधुं वैष्णवअे श्रीआचार्यजना सेवक जणुी करी आप्युं छे. ते हुवे आपणुे सुभी छीअे. परंतु या प्रकारे श्रीठाकुरज सेवा मानशे नही. आपणुे धर्म नाश थयो. वैष्णवथी पूजधने धन लई आपणुे निर्वाह कर्यो ते आपणुने धिक्कार छे. तेथी अेवी जगाअे यावे ज्यां आपणुने डोई वैष्णव जणुे नही. सां जे कमाधने लावे तमां भोग धरीने निर्वाह करीशुं. तयारे श्रीठाकुरज प्रसन्न थशे. तेथी आपणुं मा-बाप सायां निंदा करे छे. आपणुे निंदाने

लिये, अपुनी बड़ाई के लिये वैष्णव नहीं भये। तातें अपना धर्म राख्यो चहिये। होंय तो श्रीठाकुरजी कों ले, या गाम ते ओर ठौर कछुक दूर निकसि चले। यह बात स्त्री की मुनिकें पुरुष नें कही, तू धन्य, तू धन्य, जो-ऐसी बात शिक्षा की कही। पाछें सब तयारी करि सास बहू सों कहें, अब हम जात हैं, तिहारी वस्तु सब संभारि लेहु। तब सास ने कही, हमारो कछु अपराध होय तो कहो। तब बहू ने कही अपराध नहीं। अब इन पर श्रीआचार्यजी की कृपा भई, पूरन भई। तब सास बहू सों सीख ले श्रीठाकुरजी कों पधराय स्त्री पुरुष निकसि चले। काहू वैष्णव कों, मा बाप कों जताये नहीं।

वार्ता-प्रसंग १—सो वे दोऊ कछुक दिनमें आगरे आय रहें। सो एक कोठा भाड़े लियो। जगह निपट छोटी। सो एक-आला में श्रीठाकुरजी पधराये। आला के आगें लकरी माटी सों मेंरा बांधि बढ़ाये। तापर सज्या रहती। एक ओर रसोई, एक ओर सीधा सामग्री धरें। रात्रि कों स्त्री-पुरुष कोठरी के द्वार पर सोय रहें। द्वार पर मारग हतो, सो सीतकाल, उष्णकाल तो या प्रकार सों चितायो। पाछे वर्षा ऋतु आई। सो रात्रि कों मेह बरसे कोठा के द्वार दोऊ बैठे भीजें।

योग्य छीये, केमठ श्रीठाकुरजीने प्रसन्न करवाने भाटे श्रीआचार्यजीनी शरणे आख्यां सेवा पधरावी। कछ वैष्णव थध, पूजवाने पोतानी अडाधने भाटे वैष्णव नथी थयां। तेथी आपणे धर्म राखवे जेधये, अने तो श्रीठाकुरजीने लधने आ गामथी भीज जगाये कंठक दूर नीकणी जधये, आ वात स्त्रीनी सांभगीने पुरुषे कथुं, तू धन्य! तू धन्य! जे आवी शिक्षानी वात कही, पछी अधी तैयारी करी सासु-बहुने कडे, हुवे असे जधये छीये, तमारी वस्तु, अधी संभाणी दो, त्यारे सासुये कथुं; अमारो कछ अपराध होय तो कडो, त्यारे बहुये कथुं, अपराध नही, हुवे अमना उपर श्रीआचार्यजीनी कृपा थध, पूण थध, त्यारे सासु-बहुथी, विदाय लध श्री-ठाकुरजीने पधरावी स्त्री पुरुष निकणी यादयां: कोई वैष्णवने सा-आपने जणाव्यु नही।

वार्ता-प्रसंग १—ये जेठे केलाक दिवसे आगरा आवी रह्या, ते अके कोठा लाउ दीधो जग्या भीलकुल नानी, ते अके गोअलाभां श्रीठाकुरजीने पधराव्या, गोअलानी आगण लाकही माटीथी मुजोदी आंधी पधार्यो, तेना उपर शैया रहती, अके तरङ्ग रसोई अके तरङ्ग सीधो-सामग्री धरे, रात्रिये स्त्री-पुरुष कोठरीना दरवाज उपर मुध रह्ये, दरवाज उपर मार्ग हुतो, ते शीतकाल उष्णकाल तो आ प्रकारे चिताव्यो, पछी वर्षा ऋतु आवी, ते रात्रिये मेह वर्षे, आरजाना द्वारे अने जेठां लीजे, अम करतां

ऐसैं करत अर्द्ध रात्रि भीजते वीती । तब श्रीठाकुरजी भीतर मंदिरमें ते बोले, वैष्णव ! तुम क्यों भीजत हो ? बाहर ते भीतर आवो । तब स्त्री-पुरुष ने कही, महाराज ! कोठो निपट छोडो है । हमारी मल सूत्र की देह, हम आपुके पास कैसे सोवें ? मर्यादा रहे नाहीं । तब श्री-ठाकुरजी कहें हमतो ऊपर चौबारे में हैं, तुम नीचे आवो । तुम भीजत हो सो हमको बहोत दुःख है । तुम भीतर आवो तो हमको सुख होय । तब दोऊ स्त्री-पुरुष भीतर आय धरती पर सोये । सो सगरी रात्रि डरपत रहे । जो-छींक, खांसी, वायु सरेगो तो अपराध परेगो । यह भय करत रहे । पाछें सवेरो भयो तब श्रीठाकुरजी सों पहुँचि कें स्त्री-पुरुष मनमें विचार किये, जो-वर्षाकृतु आई । अपुने भीतर सोवनो नाहीं । बाहर सोवें तो भीजें, श्रीठाकुरजी दुःख पावें । तातें एक छोडोसो छपरा द्वार बनावनों । तब एक छपरा द्वार पर बनवाय दोऊ स्त्री-पुरुष बाहिर आय सोये । तब श्रीठाकुरजी नें कही, भीतर क्यों न सोये ? हमारी आज्ञा हती । तब दोऊ जनेन कही, महाराज ! हम लौकिक जीव हैं, सो अनोसर में पास आछो नाहीं आवनो, आपुकी आज्ञा करें, भीजत नाहीं, छपरा नीचे हैं । तब श्रीठाकुरजी सुद्ध भाव देखि अनुभव जनावन लागें । मांगि मांगि के अरोगते । सो स्त्री-पुरुष

अर्द्धरात्रि लीनतां वीती त्वारे श्रीठाकुरज्य अंदर मंदिरमांथी भोक्ष्या, वैष्णव ! तमे केम लीजे छे ? अहारथी अंदर आवो. त्वारे स्त्री पुत्र्ये कछु, महाराज ! आरडा भिलकुल नातो छे. अमारी मलसूत्रनी देह अमे आपनी पास केम सूत्र्ये ? मर्यादा रहे नही. त्वारे श्रीठाकुरज्य कहे, अमे तो चोरामां छीजे तमे नीचे आवो. तमे लीजे छे ते अमने अहु दुःख छे. तमे अंदर आवो तो अमने सुख थाय. त्वारे अन्ने स्त्री पुत्र्ये अंदर आवी धरती उपर सोयां. ते आभी रात्रि उरतां रखां, जे छींक, आंसी, वायु सरे तो अपराध परेशे. आम लय करतां रखां. पछी सवार थ्युं. त्वारे श्रीठाकुर-ज्ये पढोयिते स्त्री-पुत्र्ये मनमां विचार क्यो के, वर्षा-कृतु आंथ. आपले अंदर सुपुं नथी. अहारे सोवे तो लीजे, श्रीठाकुरज्य दुःख पावे. तथी अेक नांथुं सरथुं छापड् दारे अनावपुं. त्वारे अेक छापड् दार उपर अनावी अन्ने स्त्री-पुत्र्ये अहार आवी सोयां. त्वारे श्रीठाकुरज्ये कछु, अंदर-केम न सोयां ? अमारी आज्ञा हती. त्वारे अन्ने ज्ञाये कछु, महाराज ! अमे लौकिक ज्य छीजे. ते अनोसरमां पास आवपुं ठीक नही. आपनी आज्ञा करी लीनतां नथी. छापरा नीचे छीजे. त्वारे श्रीठाकुरज्य शुद्ध भाव जेधने अतुल्य ज्ञायायां लाग्या. मांगी मांगीते आरोगतां.

ऐसे श्रीआचार्यजी के कृपापात्र हते । बड़े भगवदीय हते । तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिये । वार्ता ॥ ६२ ॥

भावप्रकाश—इनकी वार्ता में यह सिद्धान्त भयो, जो—श्रीठाकुरजी सों डरपत रहनों । अपराध परे तो बाधक होय । दास को यह धर्म है, जो—स्वामी को भय राखें । प्रीति सों सेवा करे, और अपनो धर्म गोप्य राखे, तो श्रीठाकुरजी प्रसन्न होय । सो स्त्री पुरुष की ऐसी प्रीति हती । वैष्णव ॥६२॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कौ सेवक, एक सूतार, खातीघरको काम करतो, सो अड़ेल में रहतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—यह लीला में श्रीठाकुरजी के अंतरंगी 'श्रीदामा' सखा को प्रागद्य है । श्रीस्वामिनीजी, श्रीदामोदरजी जो लीला करें, ताको अनुभव करे । सो श्रीस्वामिनीजी को श्रीदामा भाई लागे । श्रीठाकुरजी को अंतरंगी सखा है । तातें लीलाको सहायक हैं । सो श्रीस्वामिनीजी सगरी बात श्रीदामा सों पूछती । सो एक दिन श्रीदामा श्रीठाकुरजी के कांधे पर खेल में चढ्यो, यह बात श्रीस्वामिनीजी सुनिकें अप्रसन्न भई । जदपि श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी कों

ते स्त्री-पुरुष जेवां श्रीआचार्यजीनां कृपापात्र हुतां । भइल भगवदीय हुतां तेथी जेमनी वार्ता कयां सुधी कहीजे ? वार्ता ॥६२॥

भावप्रकाश—जेमनी वार्तामां जे सिद्धान्त थयो है, श्रीठाकुरजी उरतां रहेवुं । अपराध पडे तो बाधक थाय । दासने जे धर्म छे है, स्वामीने भय राखे, प्रीतिथी सेवा करे । जने पोताने धर्म गोप्य राखे तो श्रीठाकुरजी प्रसन्न होय । ते स्त्री-पुरुषनी जेवी प्रीति हती । वैष्णव ॥६२॥

✽

✽

✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजने सेवक, एक सुतार भिस्त्रीपण्डितुं काम करतो, ते अउलमां रहतो, तेनी वार्ताने भाव कहीजे छीजे—

भावप्रकाश—जे लीलामां श्रीठाकुरजीना अंतरंगी 'श्रीदामा' सखानु प्राकृत्य छे । श्रीस्वामिनीजी, श्रीदामोदरजी जे लीला करे तेने अनुभव करे । ते श्रीदामा श्रीस्वामिनीजीने साथ थाय । श्रीठाकुरजीने अंतरंगी सखा छे । तेथी लीलाने सहायक छे । श्रीस्वामिनीजी जधी बात श्रीदामाथी पूछता । ते जेक द्विज श्रीदामा श्रीठाकुरजीना कंधा उपर रमतमां चढ्यो । जे बात श्रीस्वामिनीजी सांभलीने अप्रसन्न थई, यद्यपि श्रीठाकुरजी जे श्रीस्वामिनीजीने समज्ज्या । श्रीसुयोधिनीजीमां

समुझायो । श्रीसुवोधिनीजी में कहे हैं । श्रीदामा मालाकार माला रूप हैं । तातें श्रीठाकुरजी काँधे पर धरे । यह कहें, तऊ श्रीस्वामिनीजी कों आछो न लग्यो । सो शाप दियें, जा भूमि में गिरि । तब श्रीदामा सूतार के घर अड्डेल में जन्मे सो जब सुतार वर्ष तेईस को भयो । तब श्रीआचार्यजी को दरसन करत ही मन आसक्त होय गयो । तब दंडोत करिकें विनती कियो, महाराज ! मोकों सरनि लीजिये । तब श्रीआचार्यजी कहें, तुमसों पुष्टिमागींय धर्म कैसे निबहेगो ? ज्ञाति में खानपान । तब सुतार ने विनती करी, महाराज ! मोकों घर सों कहा काम है ? मैं तो आपुके पास बैच्यो आपुके दरसन करूंगो । आपु विना एक क्षण मोसों रह्यो नाहीं जात है । तब श्रीआचार्यजी कहें, जा, श्रीयमुनाजी स्नान करि आऊ । तब वह सुतार नहाय कें श्रीआचार्यजी पास आयो । तब श्रीआचार्यजी वाकों नाम निवेदन करवायो ।

वार्ता-प्रसंग १—सो सुतार श्रीआचार्यजी के स्वरूप पर आसक्त होय गयो । सो श्रीआचार्यजी के पास बैच्यो दरसन करे, सो उह सूतार के घर के सब भूखन मरन लागे । तब वह सूतार के कुटुम्बी, माता, स्त्री, श्रीआचार्यजी के माताजी पास आय एलमागारुजी सों कही । यह सुतार रात्रि दिन श्रीआचार्यजी के पास रहत

कहे छे, श्रीदामा मालाकार रूप छे । तेथी श्रीठाकुरजीके कंधा उपर धर्यां । ओम कह्युं । तो पणु श्रीस्वामिनीजीने डीक न लाग्युं । ते शाप दीयो । न, भूमिमां पड, त्यारे श्रीदामा सुथारना धरे अडेलमां जन्म्या । पछी ज्यारे ते सुथार वर्ष २३ ना थया त्यारे श्रीआचार्यजीनां दर्शन करतां न मन आसक्त थई गयुं । त्यारे दंडवत् करीने विनंती करी, महाराज ! भने शरथे लो । त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, तमारथी पुष्टिमागींने धर्म केम नबशे ? ज्ञातिमां पान-पान । त्यारे सुथारे विनंती करी, महाराज ! मारे धरथी शुं काम छे ? हुं तो आपनी पासै येसी आपनां दर्शन करीश । आपना विना ओक क्षण मारथी रही शकतु नथी । त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, न, श्रीयमुनाजीमां स्नान करी आव । त्यारे ते सुथार नहाधने श्रीआचार्यजी पासै आव्यो । त्यारे श्रीआचार्यजीके अपने नाम संभणायुं ।

वार्ता-प्रसंग १—ओ सुथार श्रीआचार्यजीना स्वरूप उपर आसक्त थई गयो । श्रीआचार्यजीनी पासै येसीने दर्शन करे तेथी सुथारना धरनां पधां लूये भरवा लाग्या । त्यारे ते सुथारना कुटुम्बी, माता, स्त्री, श्रीआचार्यजीनी माता पासै आवी

है, सुतार को काम कइ करत नाहीं । हम खान पान कहां तें करें ? तातें तुम श्रीआचार्यजी सों कहियो । तब माता एलंमागारुजी ने श्री-आचार्यजी सों कही, तुम सुतार के पास क्यों बैठत हो ? वाके घरके भूखे मरत हैं । तातें याकों घर बिदा करो तो अपने काम कों जाय । तब श्रीआचार्यजी वह सुतार सों कहे, तुम अपने घर जाव, काम काज करो । तब सुतार ने कही, महाराज ! आपुके दरसन बिना मोसों रह्यो नाहीं जात । तब श्रीआचार्यजी कहें, हमारी माताजी खीजत हैं, तातें तुम घर जाव, काम काज करो अपनों । हम तेरे पास आवेंगे । तब वह सुतार दंडोत करि घर में आय काम काज करे । परन्तु मन श्रीआचार्यजी में, जो-कब पधारेंगे ? कब मोकों दरसन होयगो ?

सो वह सुतार की आरति प्रीति जानि आपु वाके पास पधारें । तब काम काज छोडि श्रीआचार्यजी सों वार्ता करन लाग्यो । सो नित्य ऐसैं करे । तब वह सुतार के घर के फेरि एलंमागारु माताजी सों आय कहें, जो-श्रीआचार्यजी सुतार पास जाय बैठत हैं । तब वह काम काज छोडि के वार्ता करत है । तातें तुम श्रीआचार्यजी सों कहियो । तब एलंमाजी ने कही, तुम सुतार के घर क्यों जात हो ? या बात में आछो नाहीं । सुतार पास मति बैठो । तब श्रीआचार्यजी कहें, ऐसैं

धलभभागाइलने कहुं. आ सुथार रात्रि द्विस श्रीआचार्यलनी पासै रहै छे. सुथार-रतुं काम कंठ करतो नथी. अमे भानपान क्यांथी करीअे ? तेथी तमे श्रीआचार्य-लने कहुंजे त्पारे माता धलभभागाइलअे श्रीआचार्यलने कहुं, तमे सुथारने पासै केम भेसाडा छे ? अेना घरनां लूपे भरे छे तेथी अेने घर विदाय क्यो तो पौताने कामे जय. त्पारे श्रीआचार्यल ते सुथारने कहुं, तमे तभारा घर जय, कामकाज करे, त्पारे सुथारे कहुं, महाराज ! आपना दर्शन बिना माराथी रही शकतुं नथी त्पारे श्रीआचार्यल कहुं. अमारी माता भीजे छे तेथी तमे घर जय अमे त्यां आवी तभने दर्शन, आवीशुं त्पारे ते सुथार इवत् करी घरमां आवी कामकाज करे. परंतु मन श्रीआचार्यलमां के क्यारे पधारशे क्यारे भने दर्शन थशे ? पछी ते सुथारनी आरति प्रीति जलषी पौते तेनी पासै पधार्या. त्पारे कामकाज छोडी श्रीआचार्यलथी वार्ता करवा लाग्या. ते नित्य अेम करे. त्पारे ते सुतारना घरनां करी धलभभागाइ मातालथी आवी कहुं, के श्रीआचार्यल सुतार पासै जध भेसे छे त्पारे ते कामकाज छोडीने वार्ता करे छे. तेथी तमे श्रीआचार्यलने कहुंजे त्पारे धलभभाअअे कहुं, तमे सुथारना घरे केम जय छे ? अे वातमां साइं नहीं. सुथार पासै न भेसो त्पारे

ही करेंगे । तउ वाकी प्रीति ऐसी, जो—श्रीआचार्यजी एक बार उह सुतार को दरसन दे आवते । घरी दोय घरी वार्ता चर्चा करि आवते । ऐसी कृपा करते ।

भावप्रकाश—यामें अभिप्राय यह, पहलें वाकों सरनि लियें, पास बैठारि वार्ता करि वाको मन स्वरूप में लगायो । परन्तु विरह बिना रस हृदयारूढ होय नहीं । तातें वाके कुटुम्ब के मिस करि, वाकों घर पठाय विरह करायें । सो विरह दुःख सह्यो न जाय । तातें आपु पधारते उहां बैठते । फेरि वाके कुटुम्ब के मिस एक घरी दोय घरी बैठते । पाछे आपुकों पृथ्वी परिक्रमा पधारनो हैं । वाकों ऐसे ही छोड़ि जाय तो विरह दुःख करि व्याकुल होय । तातें अपुने आगें ही विरह कराय वाकों ऐसो करि दियो, जो—हृदय में श्रीआचार्यजी को दरसन अष्ट-प्रहर होय, या प्रकार वाकों दरसन दिये । जैसे ब्रज में श्रीठाकुरजी प्रगटे, तब ब्रजभक्तन को दरसन दे प्रेम बढ़ाये । सो ऐसो प्रेम बढ़्यो जो पलक की ओट जुग वीते । पाछे विरह बढ़ायवे के लियें गोचारन लीला कियें । तामें सगरो दिन वेनुगीत, जुगलगीत, गायकें निर्वाह करें । संध्या समय की आशा लगाय रहें । पाछे मथुरा पधारिवे के मिस रात्रि दिन को विरह दियें । परन्तु इतनो संतोष जो मथुरा पास हैं, अब

श्रीआचार्यजी कहे अमल करीशुं. तोपहु अनी प्रीति अवी के श्रीआचार्यजी अक-
वार ते सुधारने दर्शन छ्द आवता. अवी कृपा करता.

भावप्रकाश—अमां अभिप्राय आ, पहलां अने शरणु दीधो. पासे भेसाडी वार्ता करी अंतुं मन स्वरूपमां लगाडयुं, परंतु विरह बिना रसे हृदया इठ थाय नहीं. तेथी अना कुटुम्बना भिषे अने घर भोक्की विरह कराव्यो. ते विरह दुःख सह्युं न जाय. तेथी आप पधारता, त्यां भेसता. इरी अना कुटुम्बना भिषे अक धडी भे धडी भेसता. पछी आपने पृथ्वी परिक्रमा पधारतुं छे. अने अमल छोडी जाय तो विरह दुःख करी व्याकुल होय. तेथी पोतानी आगणन विरह करावी अने अवेो करी दीधो के हृदयमां श्रीआचार्यजीनां दर्शन अष्टप्रहर थाय. आ प्रकारे, अने दर्शन आप्यां. लभ ब्रजमां श्रीठाकुरजी प्रकट्या तयारे ब्रजभक्तोने दर्शन छ्द प्रेम वधार्यो. ते अवेो प्रेम वध्यो के पलकनी ओट युग वीते. पछी विरह पधारवाने मोटे गोचारणु दीला करी. तेमां पधो द्विवस वेनुगीत, युगल गीत, गाधने निर्वाह करे. संध्या समयनी आशा लगावी रहे. पछी मथुरा पधारवाना पहाने रात्रि-दिवसनो विरह आप्यो परंतु अटलो संतोष के मथुरा

आवें। तब द्वारिका पधारिवे के मिस पूर्ण विरह कराय रात्रि दिन सगरे ब्रजभक्तन कों स्वरूपानंद को अनुभव जनायो। तेसेई कृपा करि उह सुतार कों पूरन विरह कराय हृदय में स्वरूपानंद को अनुभव कराये। तब वह सुतार की बाहिर दृष्टि हती सो भीतर की दृष्टि सों घर में मगन रह्यो। पाछें आपु पृथ्वी परिक्रमा कों पधारें।
वैष्णव ॥६३॥

सो वह सुतार एसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें वाकी वार्ता अनिवर्चनीय है। सो प्रकाम नाहीं किये। वार्ता ॥ ६३ ॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, एक क्षत्री हतो, सो पूर्व में रहतो पटनाके चारि मजलि आगे, ता क्षत्रिकों एक अन्यमार्गीय सों संग हतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहन हैं—

भावप्रकाश—लीला में उह क्षत्री है सो कुमारिका के जूथ में हैं। लीला में इनको नाम 'मोहिनी' हैं। और उह अन्य मार्गीय मोहनी की सखी 'लक्ष्मि' वाकी नाम हैं। सो उह यहाँ पूर्व में एक ब्राह्मण गौड़ के घर जन्म्यो। 'मोहनी' एक क्षत्री के घर जन्मे। सो दोऊ वरस आठ के भये, सो एक पण्ड्या के घर पढ़िबे कों जाते। सो दोऊन कों पूर्व लीला में संबंध हैं, तातें प्रीति यहां बहोत बढ़ी।

पासे छे लुभाणां आवशे. त्यारे द्वारका पधारवाना अहाने पूष्णु विरह करानी रात्रि द्विस प्रबलकतोने स्वरूपानंदने अनुभव जण्णायो. तेवीज कृपा करी सुथारने पूष्णु विरह करानी हृदयमां स्वरूपानंदने अनुभव कगण्यो. त्यारे ते सुथारनी आहुर दृष्टि हती ते अंदरनी दृष्टिथी धरमां मगन रह्यो पछी पृथ्वी परिक्रमाये पधार्या.
वैष्णव ॥ ६३ ॥

ते सुथार अवे कृपापात्र भगवदीय हतो. तेथी तेनी वार्ता अनिवर्चनीय छे तेथी प्रकाश नथी कर्या. वार्ता ॥६३॥

✽

✽

✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुलुने सेवक, एक क्षत्री हतो ते पूर्वमां रहतो, पटनाथी चार मुकाम आगण, ते क्षत्रीने एक अन्यमार्गीयने संग हतो, तेनी वार्ताने भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—लीलामां अे क्षत्री कुमारिकाना यूथमां छे. लीलामां अेभनुं नाम 'मोहनी' छे. अने ते अन्यमार्गीय मोहनीनी सखी 'लक्ष्मि' अेतुं नाम छे. ते अहीं पूर्वमां अेक गौड़ ब्राह्मणने त्यां जन्म्यो. 'मोहनी' अेक क्षत्रीना धरे जन्मी. ते अेठ वरस आठना थया. ते अेक पण्डयाना धरे बसुवाने जाता. ते

सो वरष पन्द्रह के दोऊ भये । तव एक समय श्रीआचार्यजी श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन कौ पधारें, सो उह गाम में उतरे । तव वह क्षत्री को पिता कह्यो, जो—इनके संग श्रीजगन्नाथरायजी को दरसन करिये । सो पुत्र कौ ले श्रीआचार्यजी के संग चलयो । उह अन्य मार्गीय घर रह्यो । सो कलुक दिन में श्रीआचार्यजी श्रीजगन्नाथरायजी पधारे । तहां मायावादी भेले भये हते । तिनसों वाद करि मायावाद खंडन किये । तव वह क्षत्री ने पिता सों कही, श्रीआचार्यजी के सेवक होय तो आछो । तव पिता ने कही, मेरे तो श्रीजगन्नाथरायजी के रथके नीचे मरनो हैं । पाछे तेरो मन आवे सो करियो । तव पुत्र ने कही, तुम ऐसी हत्या क्यों करो ? श्रीआचार्यजी के सेवक होय, श्रीठाकुरजी की सेवा स्मरण करो । तव पिता ने कही मैं वृद्ध भयो । मोसों अब कलू वनै नाहीं । और मैं यही मनोरथ करि आयो हों । तव पुत्र चुप होय रह्यो । सो दिन दस पाछे रथयात्रा आई । तव श्रीजगन्नाथरायजी रथ पर चढ़ि बाहिर पधारे । सो उह पिता रथ के पैया नीचे मरयो । तव उह पुत्र श्रीआचार्यजी के पास आय के पिता की बात कही, महाराज ! रथ के नीचे मेरो पिता मरयो, ताको कहा फल ? तव श्रीआचार्यजी कहैं मरिवे को कहा

अनेनेनो पूरे लीलानो संभध छे. तेथी प्रीति अछी धरणी वधी. पछी वर्ष पंढरना अने थया, लारे अेक समय श्रीआचार्यजी श्रीजगन्नाथजीना दर्शने पधार्या. लारे ते गाममां उतर्या. लारे ते क्षत्रीना पिताअे कलु, ठे आभनी साथे श्रीजगन्नाथरायजीनां दर्शन करीअे. ते पुत्रने लघ श्रीआचार्यजीना संगे आल्यो. ते अन्यमार्गीय घर रह्यो. पछी डेटलाक दिवसमां श्रीआचार्यजी श्रीजगन्नाथरायजी पधार्या. लां मायावादी बेगा थया हुता. तेमनाथी वाद करी मायावाद खंडन कर्यो. लारे ते क्षत्रीअे पिताने कलु, श्रीआचार्यजीनां सेवक थर्यअे तो साइं. लारे पिताअे कलु, मारे तो श्रीजगन्नाथरायजीना रथ नीचे मरवुं छे. पछी तारा मनमां आवे ते करे. लारे पुत्रे कलु, तमे अेवी हत्या केम करे छे ? श्रीआचार्यजीना सेवक थाव. श्रीठाकुरजीनी सेवा—स्मरण करे. लारे पिताअे कलु, हुं वृद्ध थयो छुं माराथी हुवे कंध अने नडीं. अने हुं आ ज मनोरथ करीने आव्यो छु. लारे पुत्र चुप थर्य रह्यो. पछी दश दिवस पछी रथयात्रा आवी. लारे श्रीजगन्नाथरायजी रथ उपर चढ़ी बाहर पधार्या. लारे ते पिता रथना पैया नीचे मर्यो. लारे ते पुत्रे श्रीआचार्यजीनी पासे आवीने पितानी बात कही. महाराज ! रथनी नीचे मारे पिता मर्यो. तेतुं शुं इक्ष ? लारे श्रीआचार्यजी कहे, मरवानुं शुं इक्ष ?

आवें। तब द्वारिका पधारिवे के मिस पूर्ण विरह कराय रात्रि दिन सगरे ब्रजभक्तन कों स्वरूपानंद को अनुभव जनायो। तेसेई कृपा करि उह सुतार कों पूरन विरह कराय हृदय में स्वरूपानंद को अनुभव कराये। तब वह सुतार की बाहिर दृष्टि हती सो भीतर की दृष्टि सों, घर में मगन रह्यो। पाछे आपु पृथ्वी परिक्रमा कों पधारें। वैष्णव ॥६३॥

सो वह सुतार एसो कृपापात्र भगवदीय हतो। तातें वाकी वार्ता अनिवर्चनीय है। सो प्रकाम नाहीं किये। वार्ता ॥ ६३ ॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, एक क्षत्री हतो, सो पूर्व में रहतो पटनाके चारि मजलि आगे, ता क्षत्रिकों एक अन्यमार्गीय सों संग हतो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—लीला में उह क्षत्री है सो कुमारिका के जूथ में हैं। लीला में इनको नाम 'मोहिनी' हैं। और उह अन्य मार्गीय मोहनी की सखी 'लक्ष्मि' वाको नाम हैं। सो उह यहाँ पूर्व में एक ब्राह्मण गौड़ के घर जन्मयो। 'मोहनी' एक क्षत्री के घर जन्मे। सो दोऊ वरस आठ के भये, सो एक पण्ड्या के घर पढ़िबे कों जाते। सो दोऊन कों पूर्व लीला में संबंध हैं, तातें प्रीति यहां बहोत बढ़ी।

पासे छे लभणुं आवशे. त्यारे द्वारका पधारवाना अहाने पूरुं विरह करावी रात्रि द्विस प्रबलक्तोने स्वरूपानंदनो अनुभव जणायो. तेवीज कृपा करी सुथारने पूरुं विरह करावी हृदयमां स्वरूपानंदनो अनुभव करायो. त्यारे ते सुथारनी आहुर दृष्टि हती ते अंदरनी दृष्टिथी धरमां मगन रह्यो पछी पृथ्वी परिक्रमाये पधार्या. वैष्णव ॥ ६३ ॥

ते सुथार अवे कृपापात्र भगवदीय हतो. तेथी तेनी वार्ता अनिवर्चनीय छे तेथी प्रकाश नथी कर्यो. वार्ता ॥६३॥

* * *

हवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुनो सेवक, एक क्षत्री हतो ते पूर्वमां रहतो, पटनाथी चार मुकाम आगण, ते क्षत्रीने एक अन्यमार्गीयनो संग हतो, तेनी वार्तानो भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—लीलामां अे क्षत्री कुमारिकाना यूथमां छे. लीलामां अेभतु नाम 'मोहनी' छे. अने ते अन्यमार्गीय मोहनीनी सखी 'लक्ष्मि' अेतु नाम छे. ते अहीं पूर्वमां एक गौड़ ब्राह्मणने त्यां जन्मयो. 'मोहनी' अेक क्षत्रीना धरे जन्मी. ते अेठ वरस आठना थया. ते अेक पण्ड्याना धरे लणवाने जाता. ते

सो वरष पन्द्रह के दौऊ भये । तव एक समय श्रीआचार्यजी श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन कों पधारें, सो उह गाम में उतरे । तव वह क्षत्री को पिता कह्यो, जो—इनके संग श्रीजगन्नाथरायजी को दरसन करिये । सो पुत्र कों ले श्रीआचार्यजी के संग चलयो । उह अन्य मार्गीय घर रह्यो । सो कछुक दिन में श्रीआचार्यजी श्रीजगन्नाथरायजी पधारे । तहां मायावादी मेले भये हते । तिनसों वाद करि मायावाद खंडन किये । तव वह क्षत्री ने पिता सों कही, श्रीआचार्यजी के सेवक होय तो आछो । तव पिता ने कही, मेरे तो श्रीजगन्नाथरायजी के रथके नीचे मरनो हैं । पाछे तेरो मन आवे सो करियो । तव पुत्र ने कही, तुम ऐसी हत्या क्यों करो ? श्रीआचार्यजी के सेवक होय, श्रीठाकुरजी की सेवा स्मरन करो । तव पिता ने कही मैं वृद्ध भयो । मोसों अब कछु वनें नाहीं । और मैं यही मनोरथ करि आयो हों । तव पुत्र चुप होय रह्यो । सो दिन दस पाछे रथयात्रा आई । तव श्रीजगन्नाथरायजी रथ पर चढ़ि बाहिर पधारे । सो उह पिता रथ के पैया नीचे मरघो । तव उह पुत्र श्रीआचार्यजी के पास आय के पिता की बात कही, महाराज ! रथ के नीचे मेरो पिता मरघो, ताको कहा फल ? तव श्रीआचार्यजी कहैं मरिवे को कहा

अनेनो पूवे लीलानो स भध छे. तेथी प्रीति अही धरणी वधी. पछी वर्ष पंढरना अने थया, तारे अके समय श्रीआचार्यजी श्रीजगन्नाथरायजी दर्शने पधार्या. तारे ते गाममां उतर्या. तारे ते क्षत्रीना पिताम्मे कछुं, के आमनी साथे श्रीजगन्नाथरायजीनां दर्शन करीये. ते पुत्रने लध श्रीआचार्यजीना संगे यादयो. ते अन्यमार्गीय घर रह्यो. पछी डेटलाक दिवसमां श्रीआचार्यजी श्रीजगन्नाथरायजी पधार्या. त्यां मायावादी बेगा थया हुता. तेमनाथी वाद करी मायावाद अंडन कर्यो. तारे ते क्षत्रीये पिताने कछुं, श्रीआचार्यजीना सेवक थर्थये तो साइ. तारे पिताम्मे कछुं, मारे तो श्रीजगन्नाथरायजीना रथ नीचे मरवुं छे. पछी तारा मनमां आवे ते करे. तारे पुत्रे कछुं, तमे अेवी हत्या केम करे छे ? श्रीआचार्यजीना सेवक थाव. श्रीठाकुरजीनी सेवा—स्मरणु करे. तारे पिताम्मे कछुं, हुं वृद्ध थयो छुं माराथी हुवे कंध अने नहीं. अने हुं आ ज मनोरथ करीने आव्यो छु. तारे पुत्र चुप थर्थ रह्यो. पछी दश दिवस पछी रथयात्रा आवी. तारे श्रीजगन्नाथरायजी रथ उपर चढ़ी बाहर पधार्या. तारे ते पिता रथना पैया नीचे भर्यो. तारे ते पुत्रे श्रीआचार्यजीनी पासे आवीने पितानी बात कही. महाराज ! रथनी नीचे मारे पिता भर्यो. तेनुं शुं इल ! तारे श्रीआचार्यजी कहे, मरवानुं शुं इल !

फल ? भगवान की प्राप्ति भये बिना कहा फल ? मरती बेर जहां मन होय तहां जाय । परन्तु याकों सुख की कामना हती, तातें स्वर्ग कों गयो । कछुक दिन भोग करि गिरेगो । परन्तु तू दैवी जीव है । तेरे संबंध करि वाकी मुक्ति होयगी । तब वह क्षत्री नें श्रीआचार्यजी सों विनती करी, महाराज ! मेरो सेवा को मनोरथ है । तब श्रीआचार्यजी कहे, अब ही तो तोकों सूतक हैं । सूतक उतरे सेवक करेंगे । पाछे सूतक उतरघो, तब वह क्षत्री आयो । दंडवत करि विनती करी, महाराज ! मेरो अङ्गीकार करिये । तब श्रीआचार्यजी कहें, नहाय आऊ । तब वह नहाई आयो । तब श्रीआचार्यजी नें नाम सुनाय ब्रह्मसंबंध करवायो । तब वह क्षत्री एक लालाजी को स्वरूप सुन्दर देखिकें न्योछावरि देकें ले आयो । तब श्रीआचार्यजी पञ्चामृत सों स्नान कराय उह क्षत्री के माथे पधराये । पाछे दोय दिन उह क्षत्री श्रीआचार्यजी के पास रहि मार्ग की रीति सीखि, आज्ञा मांगी । तब श्रीआचार्यजी कहें, जा, घर में सेवा मन लगायकें करियो । तब वह क्षत्री दंडोत करि विदा होय, घर में आय सेवा भली भांति सों करन लाग्यो । कछुक दिन में श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे । और वह अन्यमार्गीय ब्राह्मण मर्यादामार्ग की रीति सों श्रीठाकुरजी की पूजा करतो । तासों स्नेह बहोत हतो, सो यह क्षत्री कों तो यह

भगवाननी प्राप्ति तथा बिना शुं इल ! मरती समय ज्यां मन होय त्यां ज्य. परंतु ज्येने सुखनी कामना हती तेथी स्वर्गमां गयो. थोडा दिनस भोग करी पडरो. परंतु तू दैवी जिव छे. तारा संबंधथी ज्येनी मुक्ति थरो. त्यारे ते क्षत्रीज्ये श्रीआचार्यज्येने विनंती करी, महाराज ! मेरो (सेवानो) धरुो मनोरथ छे (मने सेवक करे). त्यारे श्रीआचार्यज्ये कहे, हुमाथां तो तने सूतक छे. सूतक उतरे सेवक करीशुं. पछी सूतक उतर्युं त्यारे ते क्षत्री ज्ये. दंडवत् करी विनंती करी, महाराज ! मेरो अङ्गीकार करे. त्यारे श्रीआचार्यज्ये नाम सलणावी ब्रह्मसंबंध कराव्युं. पछी ज्ये क्षत्री ज्येक लालाज्येनुं सुंदर स्वरूप जेधने न्योछावरि दधने लई ज्ये. त्यारे श्रीआचार्यज्ये पञ्चामृतथी स्नान करावी ते क्षत्रीने माथे पधराव्युं: पछी ज्ये दिनस ते क्षत्रीज्ये श्रीआचार्यज्येनी पासि रहि मार्गनी रीति सीखी आज्ञा मांगी. त्यारे श्रीआचार्यज्ये कहे, जा, घरमां सेवा मन लगाडीने करे. त्यारे ते क्षत्री दंडवत् करी विदाय थई घरमां ज्ये सेवा सारी रीतिथी करवा लाग्ये. छटलाक दिनसमां श्रीठाकुरज्ये सानुभावता ज्येवना लाग्या. पेदा अन्यमार्गीय ब्राह्मण मर्यादामार्गनी रीतिथी श्रीठाकुरज्येनी पूजा करतो. तेनाथी स्नेह धरुो हतो. ज्ये क्षत्रीने तो ज्ये

ज्ञान श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सरनि सों भयो । जो यह अन्यमार्गीय ब्राह्मण दैवी है । कोई प्रकार वंष्णव होय तो आछो । तव एक दिन वह क्षत्री उह अन्य-मार्गीय ब्राह्मण सों कहे, जो—तुम श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक होऊ तो आछो । तव वह ब्राह्मण नें कही, अब तो मैं और मारग को सेवक हे चुक्यो । अब वैष्णव कैसें होऊ ? तव वह क्षत्री वैष्णव बोल्यो नहीं । मन में दुःख पायो । जो दैवी जीव है, परन्तु वैष्णव न भयो कहा करूं ? यह चिंता करत घर आयो । श्रीठाकुरजी के उत्थापन कराये । तव श्रीठाकुरजी कहें, चिंता मति करे, वह अन्यमार्गीय सेवक होय कृपापात्र भगवदीय होइगो । तव यह क्षत्री नें कछो महागज ! उह कौन प्रकार होयगो ? मैं वासों वैष्णव होन की कही, सो वह नहीं कही । वाको मन तो नहीं हैं । तव श्रीठाकुरजी कहें, मेरी इच्छा वाकों अंगीकार करन की है । सो एक क्षण में मैं वाको मन फेरि देऊंगो । तातें तू एक काम करियो । कवहूँ वह अन्यमार्गीय तुमसों रसोई करन की कहें, तो तू वाके घर सामग्री करि भोग वाकें ठाकुर कों धरिके महाप्रसाद लीजो । तव यह क्षत्री नें कही, उह अन्यमार्गीय कें ठाकुर आगें भोग कैसे धरूं ? प्रसाद कैसें लेहू ? श्री-आचार्यजी के मार्ग की रीति नहीं हैं । तव श्रीठाकुरजी कहें मेरी आज्ञा तें

ज्ञान श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीनी शरणाधी थयुं हे, अन्यमार्गीय ब्राह्मण दैवी छे । काई प्रकार वैष्णव थाय तो साइं । तारे अेक दिवसे अे क्षत्रीअे ते अन्यमार्गीय ब्राह्मणने कछुं, हे तमे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना सेवक थाय तो साइं । तारे ते ब्राह्मणने कछुं, हे हुवे तो हुं भीज भागने सेवक थई चूक्यो छुं । हुवे वैष्णव देवी रीते थडं ? तारे ते क्षत्री वैष्णव बोदयो नहीं । मनमां दुःख पाव्यो हे दैवीअव छे परन्तु वैष्णव न थयो तो शुं कइं । अेम चिंता करतां धर आव्यो । श्रीठाकुरजीने उत्थापन करान्या । तारे श्रीठाकुरजी कहे, चिंता न करीश ते अन्यमार्गीय सेवक थई कृपापात्र भगवदीय थरो । तारे अे क्षत्रीअे कछुं, महाराज ! ते क्या प्रकार थरो ? मे अेने वैष्णव थवानुं कछुं ते अेणे ना कही । अेनुं मन तो नथी । तारे श्रीठाकुरजी कहे, भारी इच्छा अेने अंगीकार करवानी छे । ते अेक क्षत्रीमां हुं अेनुं मन इरवी दईश । तेथी तू अेक काम करजे । तयारेय अे अन्यमार्गीय तने रसोई करवानुं कहे, तो तू अेना धर सामग्री करी अेना ठाकुरने लोग धरिने महाप्रसाद लेजे । तारे आ क्षत्रीअे कछुं, अे अन्यमार्गीयना ठाकुर आगण भोग देवी रीते धरें, प्रसाद केम लडं ? श्रीआचार्यजीना मार्गनी रीति नथी । तारे

फल ? भगवान की प्राप्ति भये बिना कहा फल ? मरती बेर जहां मन होय तहां जाय । परन्तु याकों सुख की कामना हती, तातें स्वर्ग कों गयो । कलुक दिन भोग करि गिरेगो । परन्तु तू दैवी जीव है । तेरे संबंध करि वाकी मुक्ति होयगी । तब वह क्षत्री नें श्रीआचार्यजी सों विनती करी, महाराज ! मेरो सेवा को मनोरथ है । तब श्रीआचार्यजी कहे, अब ही तो तोकों सूतक हैं । सूतक उतरे सेवक करेंगे । पाछे सूतक उतरयो, तब वह क्षत्री आयो । दंडवत करि विनती करी, महाराज ! मेरो अङ्गीकार करिये । तब श्रीआचार्यजी कहें, नहाय आज । तब वह नहाई आयो । तब श्रीआचार्यजी नें नाम सुनाय ब्रह्मसंबंध करवायो । तब वह क्षत्री एक लालाजी को स्वरूप सुन्दर देखिकें न्योछावरि देकें ले आयो । तब श्रीआचार्यजी पञ्चामृत सों स्नान कराय उह क्षत्री के माथे पधराये । पाछे दोय दिन उह क्षत्री श्रीआचार्यजी के पास रहि मार्ग की रीति सीखि, आज्ञा मांगी । तब श्रीआचार्यजी कहें, जा, घर में सेवा मन लगायकें करियो । तब वह क्षत्री दंडोत करि विदा होय, घर में आय सेवा भली भांति सों करन लाग्यो । कलुक दिन में श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे । और वह अन्यमार्गीय ब्राह्मण मर्यादामार्ग की रीति सों श्रीठाकुरजी की पूजा करतो । तासों स्नेह बहोत हतो, सो यह क्षत्री कों तो यह

भगवाननी प्राप्ति थया बिना शु ईक्ष ! मरती समय ज्यां मन होय त्यां जय. परंतु जेने सुष्मनी कामना हती तेथी स्वर्गमां गयो. थोडा द्विस भोग करी पडशे. परंतु तू दैवी जिव छे. तारा संबंधथी जेनी मुक्ति थशे. त्यारे ते क्षत्रीजे श्रीआचार्यजने विनंती करी, महाराज ! मारे (सेवाने) धरु मनेरथ छे (मने सेवक करे). त्यारे श्रीआचार्यज कहे, हुमशां तो तने सूतक छे. सूतक उतरे सेवक करीशुं. पछी सूतक उतरुं त्यारे ते क्षत्री आये. दंडवत् करी विनंती करी, महाराज ! मारे अङ्गीकार करे. त्यारे श्रीआचार्यजजे नाम सलगावी ब्रह्मसंयध कराव्युं. पछी जे क्षत्री जेक लालाजनुं सुंदर स्वरूप जेधने न्योछावर दधने लई आये. त्यारे श्रीआचार्यजजे पञ्चामृतथी स्नान करावी ते क्षत्रीने माथे पधराव्युं. पछी जे द्विस ते क्षत्रीजे श्रीआचार्यजनी पासे रही मार्गनी रीति सीखी आज्ञा मांगी. त्यारे श्रीआचार्यज कहे, ज, घरमां सेवा मन लगाडीने करे. त्यारे ते क्षत्री दंडवत् करी विदाय थई घरमां आवी सेवा सारी रीतिथी करवा लाग्ये. छेटाक द्विसमां श्रीठाकुरज सानुभावता जेषाववा लाग्या. पेदो अन्यमार्गीय ब्राह्मण मर्यादामार्गनी रीतिथी श्रीठाकुरजनी पूजा करतो. तेनाथी स्नेह धरु होतो. आ क्षत्रीने तो जे

ज्ञान श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की सरनि सों भयो । जो यह अन्यमार्गीय ब्राह्मण
 दैवी है । कोई प्रकार वंष्णव होय तो आछो । तब एक दिन वह क्षत्री उह अन्य-
 मार्गीय ब्राह्मण सों कहे, जो—तुम श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक होऊ तो
 आछो । तब वह ब्राह्मण नें कही, अब तो मैं और मारग को सेवक ह्वे चुक्यो ।
 अब वैष्णव कैसें होऊ ? तब वह क्षत्री वैष्णव बोल्यो नाहीं । मन में दुःख पायो ।
 जो दैवी जीव है, परन्तु वैष्णव न भयो कहा करूं ? यह चिंता करत घर आयो ।
 श्रीठाकुरजी के उत्थापन कराये । तब श्रीठाकुरजी कहें, चिंता मति करे, वह
 अन्यमार्गीय सेवक होय कृपापात्र भगवदीय होइगो । तब यह क्षत्री नें कह्यो
 महाराज ! उह कौन प्रकार होयगो ? मैं वासों वैष्णव होन की कही, सो वह नाहीं
 कही । वाको मन तो नाहीं हैं । तब श्रीठाकुरजी कहें, मेरी इच्छा वाकों अंगीकार
 करन की है । सो एक क्षण में मैं वाको मन फेरि देऊंगो । तातें तू एक काम
 करियो । कबहूँ वह अन्यमार्गीय तुमसों रसोई करन की कहें, तो तू वाके घर
 सामग्री करि भोग वाकें ठाकुर कों धरिके महाप्रसाद लीजो । तब यह क्षत्री नें
 कही, उह अन्यमार्गीय के ठाकुर आगें भोग कैसें धरूं ? प्रसाद कैसें लेहू ? श्री-
 आचार्यजी के मार्ग की रीति नाहीं हैं । तब श्रीठाकुरजी कहें मेरी आज्ञा तें

ज्ञान श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी की शरण्यी थयुं हे, अन्यमार्गीय ब्राह्मण दैवी
 छे । कौन प्रकारे वैष्णव थाय तो साइं । तारे अक दिनसे अे क्षत्रीअे ते अन्यमा-
 र्गीय ब्राह्मणने कल्युं, हे तमे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना सेवक थाय तो साइं ।
 तारे ते ब्राह्मणने कल्युं, हे हवे तो हुं पीन मार्गने सेवक थई चुक्यो छुं । हवे
 वैष्णव देवी रीते थडं ? तारे ते क्षत्री वैष्णव बोळ्यो नहीं । मनमां दुःख पाभ्यो
 हे देवी अेव छे परंतु वैष्णव न थयो तो थुं कइं ? अेम चिंता करतां धर आभ्यो ।
 श्रीठाकुरजीने उत्थापन कराभ्यो । तारे श्रीठाकुरजी कहे, चिंता न करीश ते अन्य-
 मार्गीय सेवक थई कृपापात्र भगवदीय थशे । तारे अे क्षत्रीअे कल्युं, महाराज । ते
 क्या प्रकारे थशे ? मे अेने वैष्णव थवानुं कल्युं ते अेषु ना कहीं । अेतुं मन तो
 नथी । तारे श्रीठाकुरजी कहे, मारी ईच्छा अेने अंगीकार करवानी छे । ते अेक
 क्षत्रीमां हुं अेतुं मन फेरवी दईश । तेथी तू अेक काम करजे । क्यारेय अे अन्य-
 मार्गीय तने रसोई करवानुं कहे, तो तू अेना धर सामग्री करी अेना ठाकुरने लोग
 धरिने महाप्रसाद लेजे । तारे आ क्षत्रीअे कल्युं, अे अन्यमार्गीयना ठाकुर आगण
 लोग देवी रीते धरूं, प्रसाद केम लडं ? श्रीआचार्यजीना मार्गनी रीति नथी । तारे

करियो, तोकौं बाधक नाहीं। और तेरो भोग धरघो सो मैं उहां आयकें आरोगुंगो। तार्त तू महाप्रसाद लीजियो। तब वह वैष्णव होयगो।

वार्ता-प्रसंग १—सो एक दिन सीतकाल के दिन हते, सो क्षत्री वैष्णव एक पहर पाछली रात्रितें उठिकें घरी एक दिन चढ्यो। तब राजभोग आरती करि अनोसर करायो। पाछे वह अन्यमार्गीय के घर गयो। तब वह अन्यमार्गीय वैष्णव नें बहोत आग्रह कियो। जो-आजु पाक सामग्री यहां करो।

भावप्रकाश—तब वह वैष्णव मन में बहोत प्रसन्न भयो। जो-अब यह वैष्णव होयगो। श्रीठाकुरजी की आज्ञा विचारि, पाक सामग्री अनसखड़ी तऊ करी। जदपि श्रीठाकुरजी की आज्ञा हती, जो-सखड़ी करते तो बाधक नाहीं। परन्तु इतनी अपने मार्ग की का'नि राखी।

तब वाने अनसखड़ी करि वाके श्रीठाकुरजी आगें भोग धरयो, श्रीआचार्यजी की का'नि कही, श्रीगोवर्द्धनधर सों विनती करि कह्यो, महाराज ! सामग्री हू आरोगो, और या दैवी जीव कों अंगीकार हू करो। तब श्रीगोवर्द्धनधर तत्काल पधारि सामग्री आरोगिकें (पाछे) पधारें। पाछें वह अन्यमार्गीय वैष्णव ब्राह्मण कों हू महाप्रसाद धरें।

श्रीठाकुरजी ठहे, भारी आज्ञाथी करे। तने बाधक नाहीं। वणी तारे भोग धर्यो हुं त्यां आवीने आरोगीश. तेथी तूं महाप्रसाद देवे। तारे ते वैष्णुव थरो

वार्ता-प्रसंग १-पछी अेक समय शीतकालना द्विपस हुता. तारे ते क्षत्री वैष्णुव अेक प्रहुर पाछदी राते उठीने घडी अेक द्विपस बढयो तारे राजभोग आरती करी अनोसर कराव्यो. पछी ते अन्यमार्गीयना धरे गयो. तारे ते अन्यमार्गीय वैष्णुवे वल्लो आग्रह कर्यो, के आजु पाक-सामग्री अहलीं करे।

भावप्रकाश—तारे अे वैष्णुव मनमां धरुं प्रसन्न थयो, के हुवे आ वैष्णुव थरो. श्रीठाकुरजीनी आज्ञा विचारी पाक-सामग्री अनसखड़ी तो पणु करी. अे के श्रीठाकुरजीनी आज्ञा हुती. सखड़ी करता तो बाधक नहोतुं परतु अेटली स्वमार्गनी भर्यादा राणी.

तारे अेने अनसखडी करी अेना श्रीठाकुरजी आज्ञा लोग धर्यो. श्रीआचार्यजीनी का'न कही श्रीगोवर्द्धनधरने विनती करी कहुं, महाराज ! सामग्रीअे आरोगे अेने आ दैवीजीवने अंगीकार पणु करे. तारे श्रीगोवर्द्धनधर तत्काल पधारि सामग्री आरोगीने (पाछा) पधार्या पछी ते अन्यमार्गी वैष्णुव ब्राह्मणने पणु

वैष्णव क्षत्री हू महाप्रसाद ले अपुने घर आयो । तब तीसरो प्रहर भये तब न्हाय के उत्थापन करायो । और वह अन्यमार्गीय महाप्रसाद ले सोयो । तब वाके ठाकुरजी, नित्य आवाहन विसर्जन करतो सो विभूति, श्रीठाकुरजी द्वारा, वा अन्यमार्गीय ब्राह्मण सों कह्यो । जो-आजु हम भूखे हैं । तब वह अन्यमार्गीय नें कह्यो, भूखे क्यों हो ? श्रीआचार्यजी के सेवक क्षत्री ने भोग धरयो, सो तुम क्यों न अरोगे । तब वह विभूति नें कही, उह वैष्णव नें श्रीगोवर्द्धननाथजी को स्मरण कियो, सो वे आयके अरोगे । हम तो पुरुषोत्तम की विभूति हैं । सो पुरुषोत्तम पधारिकें अरोगें तहां हमारी गति नाहीं । हम तो मंत्र को आवाहन करें, तब वह भगवत प्रतिमा में प्रवेश करि अरोगें । विसर्जन करे तब चलि जाय । यह रीति हमारी हैं । और पुरुषोत्तम मंत्र के आधीन नाहीं है, एक प्रेम के आधीन हैं । तातें वह क्षत्री के ऐसो प्रेम है, जो-पुरुषोत्तम आरोगिवे पधारत हैं । (जहां) पुरुषोत्तम पधारिकें अरोगत हैं, तहां हमारी न चले । तब वह अन्यमार्गीय धूप दीप करि नैवेद्य धरि, पाछे वैष्णव क्षत्री पास आयो । आयकें कही, तुमनें हमकों पहले श्रीआचार्यजी के सेवक होन कों कही, सो हम न माने, सो बुरी करी । अब हमकों सेवक

प्रसाद धर्यो । वैष्णव क्षत्री पणु प्रसाद लध घेताते धरे गयो । पछी त्रीजे प्रहर थयो । त्यारे न्हाधने उथापन कराव्या । अने ते अन्यमार्गीय महाप्रसाद लध सोयो । त्यारे तेना ठाकुरजीने नित्य आवाहन विसर्जन करतो । पछी ते विभूतिमे श्रीठाकुरजी द्वारा ते अन्यमार्गीय ब्राह्मणने कहुं, के आज अमे लूण्या छीये । त्यारे ते अन्यशागीय कहुं, लूण्या केम छे ? श्रीआचार्यजीना सेवक क्षत्रीमे लोग धर्यो न तमे केम न आरोग्या ? त्यारे ते विभूतिमे कहुं, ते वैष्णवे श्रीगोवर्द्धननाथजीतुं स्मरण क्युं । तेथी ते आधीन आरोग्या । अमे तो पुरुषोत्तमनी विभूत छीये । तेथी पुरुषोत्तम पधारिने आरोगे त्यां अमारी गति नलीं । अमे तो मंत्रतुं आवाहन करे त्यारे ते भगवत प्रतिमाभां प्रवेश करी आरोगीये । विसर्जन करे त्यारे आद्या न्दये । ये रीत अमारी छे । अने पुरुषोत्तम मंत्रने आधीन नथी । अक प्रेमने आधीन छे तेथी ते क्षत्रीने एवो प्रेम छे के पुरुषोत्तम आरोगवा पधारि छे । न्यां पुरुषोत्तम पधारिने आरोगे छे त्यां अमारी न आले । त्यारे ते अन्यमार्गीय धूप-दीप करी नैवेद्य धरी पछी वैष्णव क्षत्री पासे आव्या । आधीने कहुं, तमे अमने पछेलां श्रीआचार्यजीना सेवक थवातुं कहुं छतुं ते अमे न मान्युं ते जोडुं क्युं । छेवे अमने सेवक

कराय वैष्णव करो। आज तुम मेरे घर रसोई करी, सो मेरे घर आज पुरुषोत्तम पधारिके आरोगे। ताते तुमारो वैष्णव घर्म सबते बड़ो है। तब क्षत्री वैष्णव ने कही, श्रीआचार्यजी महाप्रभु कासी ते श्रीजगन्नाथरायजी को पधारत हैं। सो दिन पांच सात में यहां पधारेंगे। तब सेवक होय वैष्णव झुजियो। मैं तो तुम सों पहले ही कही हती। तब तुमने मानी नहीं। अब श्रीठाकुरजी ने तुम पर कृपा करी।

भावप्रकाश—यामें यह जताये जो वैष्णव जाकों अंगीकार करनो विचारें ताकों श्रीठाकुरजी निश्चय कृपा करें। और जाके यहां वैष्णव एक दिन हू आयके कछु अङ्गीकार करें सो श्रीठाकुरजी की बड़ी कृपा जाननी। भगवदीय अङ्गीकार किये सो श्रीठाकुरजी ने किये जानने। ताते भगवदीय को संग कृतार्थ सब करें। यह सिद्धान्त प्रगट किये।

पाछे श्रीआचार्यजी पधारे सो वह क्षत्री वैष्णव के घर उतरे। तब वह क्षत्री वैष्णव उह अन्यमार्गीय ब्राह्मण सों कहें। श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे हैं। तब वह अन्यमार्गीय श्रीआचार्यजी पास आय दंडोत करि विनती कियो, महाराज ! मोको सरनि लिजिये। कृपा करि मेरे घर पधारो। तब श्रीआचार्यजी वाके घर पधारि वह ब्राह्मण को नाम निवेदन कराये। वाके सगरे कुटुंब को नाम सुनाये।

इरावी वैष्णुव करे आन तमे भारा धरे रसोई करी। ते भारा धरे आन पुरुषोत्तम पधारीने आरोग्या। तेथी तभारे वैष्णुव धर्म सौधी उत्तम छे। त्यारे क्षत्री वैष्णुवे कछु, श्रीआचार्यल महाप्रभु काशीथी श्रीजगन्नाथरायल पधारे छे ते पांच सात द्विसभां अही पधारसे। त्यारे सेवक थछ वैष्णुव थजे। हुवे श्रीठाकुरलमे तभारा उपर कृपा करी।

भावप्रकाश—अमां अे नृणांयुं षे वैष्णुव जेनो अंगीकार करवातुं विचारें तेने श्रीठाकुरल निश्चय कृपा करे। वणी जेने त्यां वैष्णुव अेक द्विस पाणु आवीने कंछ अंगीकार करे तो श्रीठाकुरलनी मोठी कृपा अणुवी। भगवदीय अंगीकार करे तो श्रीठाकुरलमे क्युं अणुवु। तेथी भगवदीयनो संग कृतार्थ सर्वने करे। आ सिद्धांत प्रकट कर्यो।

पछी श्रीआचार्यल पधार्या त्यारे ते क्षत्री वैष्णुवना धरे उतर्या। त्यारे ते क्षत्री वैष्णुव ते अन्यमार्गीय ब्राह्मणने कछे, श्रीआचार्यल महाप्रभु पधार्या छे। त्यारे ते अन्यमार्गीये श्रीआचार्यल पास आवी दंडवत करी विनती करी, महाराज ! मने शरखे दो। कृपा करी भारा धरे पधारो। त्यारे श्रीआचार्यल तेना धरे पधारी ते

पाछें वाके श्रीठाकुरजी कों पंचामृत स्नान कराय पाट वेठारे । सामग्री करि भोग धरि आपु आरोगें । वा ब्राह्मण कों जूठन धरें । पाछें आपु जगन्नाथरायजी के दरसन कों पुरुषोत्तम क्षेत्र पधारे । सो वह अन्य-मार्गीय, वह क्षत्री वैष्णव के संग तें भलो वैष्णव भयो । तातें क्षत्री वैष्णव श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये । इनकी वार्ता कहां ताई कहिये । वार्ता ॥६४॥

भावप्रकाश—ताते सत्संग बड़ो पदार्थ है, सत्संग पूर्ण कृपातें मिलें । ॥६४॥

✽ ✽ ✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, लघु पुरुषोत्तमदास क्षत्री कवी हते, सो कासी में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में श्रीनंदरायजी के घर के भाट हैं । इनको नाम लीला में उमाशंकर, सो कासी में एक क्षत्री के घर में जन्में । सो आठ वरष के भये । तब ही तें कवित्त-दोहा करते । सो राजा के, धन पात्र के, सेठ के, ऐसैं करते कवित्त । सो श्रीआचार्यजी कासी पधारे, सो मणिकर्णिका घाट ऊपर संध्यावंदन करत हते । कृष्णदास, सेठ पुरुषोत्तमदास आदि सगरे ठाड़े हे । तहां लघु पुरुषोत्तमदास कवि आये । तब सेठ पुरुषोत्तमदास डरपे, जो-यह धनपात्रन

ब्राह्मणने नाम-निवेदन कराव्युं. अना अथा कटुंअने नाम संलग्नाव्युं. पछी अना श्रीठाकुरलने पंचामृत स्नान करावी पाट जेसाखा. सामग्री करी भोग धरी आप आरोग्या. ते ब्राह्मणने नूठन धरी. पछी आप जगन्नाथरायलना दर्शन पुरुषोत्तम क्षेत्र पधार्या. पछी ते अन्यमार्गीय ते क्षत्री वैष्णवना संगथी सारे वैष्णव थयो. तेथी क्षत्री वैष्णव श्रीआचार्यलना अवे कृपापात्र भगवदीय हुतो. तेमनी वार्ता क्यां सुधी कहीअे ? वार्ता ॥६४॥

भावप्रकाश—तेथी सत्संग भोटो पदार्थ छे. सत्संग पूर्ण कृपाथी भणे. ॥६४॥

✽ ✽ ✽

हुवे श्रीआचार्यल महाप्रभुलना सेवक, लघु (नाना) पुरुषोत्तम क्षत्री कवि हुता ते काशीमां रहता, तेमनी वार्ताना भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे लीलामां श्रीनंदरायलना धरना भाट छे. अेमनु नाम लीलामां उमाशंकर. ते काशीमां अेक क्षत्रीना धरमां जन्म्या. पछी आठ वर्षना थया. त्यारथी ते कवित्त-दोहा करता. ते राजना धनपात्रना सेठना अेवानां कवित्त करता. पछी श्रीआचार्यल काशी पधार्या ते मणिकर्णिका घाट उपर संध्यावंदन करता हुता. कृष्णदास, सेठ पुरुषोत्तमदास अथा उला हुता. त्यां लघु

के कवित्त करत हैं, सो मेरो जस कहूं गावे तो श्रीआचार्यजी के आगें ठीक नहीं । तब सेठ पुरुषोत्तमदास लघु पुरुषोत्तमदास के पास आयकें कह्यो, जो—या समय मेरो कवित्त दोहा मति करियो । तब लघु पुरुषोत्तमदास ने कही, फेर तुमसों हमसों मिलाप कहां होय ? मैं तो तिहारो कवित्त करन को यहां आयो हों, सो करुंगो । तिहारे मन आवे तो कछु दीजो, मन आवे मति दीजो । पैसा देनो परे ताके लिये वरजत हो, जो—कवित्त मति करे । तब सेठ पुरुषोत्तमदास नें रूपैया पांच देकें कह्यो, घर आइयो, और कछु देइगें । परन्तु या समय श्रीआचार्यजी हमारे गुरु संध्यावंदन करत हैं । तिनके आगें मेरो जस भूलिकें मति कहियो । तब लघु पुरुषोत्तमदास प्रसन्न होयके कहें, मैं और राजा के कवित्त श्रीआचार्यजी के आगें कहोंगो । तिहारो न कहूंगो । तब पुरुषोत्तमदास सेठ ने कही । मेरे कवित्त मति करियो, ओर को तो तुम जानों । तब लघु पुरुषोत्तमदास कवि श्रीआचार्यजी के पास जाय अनेक राजान के दस पांच कवित्त कहें । तब श्रीआचार्यजी दैवी जीव जानि लघु पुरुषोत्तमदासकी ओर कृपा—दृष्टि करि कहें, लघु पुरुषोत्तमदास ! तू श्रीनंदरायजी के घर को भाट, चारन होय, श्रीठाकुरजी को जस छोड़ि राजसी

पुत्रोत्तमदास कवि आव्या. त्तारे शेठ पुत्रोत्तमदास उर्या, के आ धनपात्रोनां कवित्त करे छे. ते भारे यश ले गाशे तो श्रीआचार्यजी आवगण ठीक नहीं. त्तारे शेठ पुत्रोत्तमदासे लघु पुत्रोत्तमदास पासे आवीने कछु, के आ समये भाइं कवित्त के होहा न करता. त्तारे लघु पुत्रोत्तमदासे कछुं, ईरी तभारे—अभारे मिलाप क्यां थाय ? हु तो तभारं कवित्त करवाने अहीं आव्यो छुं. तभारा मनमां आवे तो कंठ आवले. मनमां आवे तो न आवले. पैसा देवा पडे ते भाटे रोडे छे के कवित्त न कर. त्तारे शेठ पुत्रोत्तमदासे रूपैया पांच आवीने कछु, धर आवले. भीलुं पणु कंठ छथु. परतु आ वभते श्रीआचार्यजी अभारा गुत्र संध्यावंदन करे छे तेमनी आवगण भारे यश भूलीने पणु न कहेले. त्तारे लघु पुत्रोत्तमदास प्रसन्न थधने कहे, हु भील राजनां कवित्त श्रीआचार्य-जनी आवगण कहीश. तभारां नहीं कहु. त्तारे पुत्रोत्तमदास, शेठे कछु, भारां कवित्त न करले. भीलनां तभे जणु. त्तारे लघु पुत्रोत्तमदास कविये श्रीआचार्य-जनी पासे जंठ अनेक राजज्योनां दश-पांच कवित्त कछां त्तारे श्रीआचार्य-ज्ये दैवी जव जणुने लघु पुत्रोत्तमदासनी तरइ कृपा दृष्टि करीने कछुं, लघु पुत्रोत्तमदास ! तू श्रीनंदरायजोना भाट थधने आवणु थध श्रीठाकुरजोना यश

लोगन को जस गावत हैं, सो आछो नहीं । तू कवि है, चतुर है, राजान को एसो जस तू कह्यो सो कछु गुन इन राजान में हैं ? अनेक रोग दुःख सों भरे हैं । मृतकवत् पापी, तिनको जस गाय मिथ्या भाषन किये सो आछो नहीं । गायवे लायक एक श्रीठाकुरजी को जस है ।

यह सुनत ही लघु पुरुषोत्तमदास कुं ज्ञान भयो । तब श्रीआचार्यजी कों दंडवत करि विनती करी । महाराज ! सगरो जन्म योंही मिथ्या भाषन करि गमायो । अब मैं आपकी सरनि हों, सो ऐसी कृपा करो जो सदा श्रीठाकुरजी को जस गाऊँ । मोकों श्रीठाकुरजी के जस को ज्ञान नहीं । तातें राजसी लोगन को जस गायो । तब श्रीआचार्यजी कहें, गंगाजी में नहाय ले, हम तोकों समुझावें । तब लघु पुरुषोत्तमदास गंगाजी में स्नान करिकें श्रीआचार्यजी के पास आयो, तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय समर्पण करायो, अपनों चरणामृत दीनों । तब लघु पुरुषोत्तमदास कों श्रीठाकुरजी की लीला को ज्ञान भयो । श्रीआचार्यजी के स्वरूप को ज्ञान भयो ।

वार्ता-प्रसंग १—सो वे श्रीगोवर्धननाथजी के कवित्त और श्री-आचार्यजी के कवित्त एक सार करते । या प्रकार श्रीआचार्यजी कों

छोटी राजसी दोहानो यश गाय छे ? ते ठीक नहीं. तू कवि छे चतुर छे. राज-आनो आवो यश ते कछो ते अे राजआमां अेवा कछ गुणु छे ? अनेक रोग दुःखोथी भरेला छे मृतकवत् पापी तेभनो यश गाछ मिथ्या भाषणु क्युं ते ठीक नहीं. गावा लायक अेक श्रीठाकुरज्जो यश छे. अे सांखणतांज लघु पुरुषोत्तमदासने ज्ञान थयुं. त्यारे श्रीआचार्यज्जो दंडवत करी विनती करी, महाराज ! भयो जन्म अेभज मिथ्या भाषणु करी भयो. हुवे हुं आपनी शरणे छु. तो अेवी कृपा करे के सदा श्रीठाकुरज्जो यश गाडं. भने श्रीठाकुरज्जोना यशनुं ज्ञान नथी. तेथी राजसी दोहानो यश गायो. त्यारे श्रीआचार्यज्जो कहे गंगाज्जोमां नहाय ले. अमे तने समझवीथुं. त्यारे लघु पुरुषोत्तमदास गंगामां स्नान करीने श्रीआचार्यज्जोनी पासे आव्यो. त्यारे श्रीआचार्यज्जो नाम संखणावी समर्पणु कराव्युं. पोतानुं यरणाभृत आव्युं. त्यारे लघु पुरुषोत्तमदासने श्रीठाकुरज्जोनी लीलातुं ज्ञान थयु. श्रीआचार्यज्जोना स्वरूपतुं ज्ञान थयु.

वार्ता-प्रसंग १—ते श्रीगोवर्धननाथज्जोनां कवित्त अने श्रीआचार्यज्जोनां कवित्त अेक सारमां करता. अे प्रकारे श्रीआचार्यज्जोने साक्षात् पुरुषोत्तम जणुवा लाव्या.

साक्षात् पुरुषोत्तम जानन लागे । ता दिन तें राजा आदि धनपात्र के यहाँ जानो, उनके कवित्त कहनो सब, छोड़ि दियो । सो कछुक दिन में श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे । सदा भगवान की लीला रस में मग्न रहतें । सो या प्रकार श्रीआचार्यजी नें लघु पुरुषोत्तमदास पर कृपा करी । तातें लघु पुरुषोत्तमदास बड़े भगवदीय हे । इनकी वार्ता कहां ताई कहिये । वार्ता ॥६५॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, कविराज भाट, सनोदिया ब्राह्मण, मथुरा में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—लीला में कविराज शांडिल्य मुनि, श्रोमंदरायजी के पुरोहित हैं । सो मथुरा में एक पुरोहित के घर जनमें । सो तीन भाई हते, तामें दोय भाई तो मूर्ख हते । कविराज देवी देवतान के कवित्त, राजान के कवित्त पढ़ि निर्वाह करते । तातें सब कोई इनकों कविराज भाट कहतें । सो मथुरा में विश्रान्त घाट पर कवित्त ये कहते ।

वार्ता-प्रसंग १—सो एक दिन वे विश्रान्त पें भूतेश्वर महादेव के कवित्त करिकें कहत हे, ता समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु महावन तें मथुरा पधारे । सो विश्रान्त घाट पर संध्यावंदन करत हे, ता समय कविराज भाट कों श्रीआचार्यजी के दरसन भये । तब कविराज भाट

ते द्विसथी राज आदि धनपात्रने त्यां नपुं, अमनां कवित्त कहेवा षधुं छाडी दीधुं । पञ्चि केरलाक द्विसभां श्रीठाकुरल सानुभावता नखाववा लाग्या । सदा भगवद्दीला रसभां मगन रहेता । अ प्रकारे श्रीआचार्यलअ लघु पुरुषोत्तमदास उपर कृपा करी । तेथी लघु पुरुषोत्तमदास महान भगवदीय हुता तेभनी वार्ता क्यांसुधी कहिये वा ॥६५॥

✽

✽

✽

हुवे श्रीआचार्यल महाप्रभुना सेवक, कविराज भाट, सनोदिया ब्राह्मण, मथुराभां रहेता, तेभनी वार्ताना लाव कहीअ छीअ—

भावप्रकाश—दीलाभां कविराज शांडिल्यमुनि श्रीमंदरायलना पुरोहित छे । ते मथुराभां अक पुरोहितना धरे नन्ध्या । ते त्रलु लार्थ हुता । तेभां अे लार्थ तो भूर्भ हुता । कविराज देवी, देवतानां कवित्त राजानां कवित्त लण्णी निर्वाह करता । तेथी सहु डार्थ अेभने कविराज भाट कहेता । ते मथुराभां विश्रान्त घाट उपर अे कवित्त कहेता ।

वार्ता-प्रसंग १—अक द्विस ते विश्रान्त उपर भूतेश्वर महादेवनां कवित्त करीने कहेता हुता । ते समय श्रीआचार्यल महाप्रभु महावनथी मथुरा पधार्या । त्यारे विश्रान्त घाट उपर संध्यावंदन करता हुता ते समये कविराज भाटने श्रीआचार्यलनां

नें जानी, जो-ये बड़े पंडित से दीसत हैं । तातें इनसों कछु पूछों । तब कविराज भाट श्रीआचार्यजीके पाम आय दंडवत करि एक प्रश्न कियो, महाराज ! देवी बड़ी के महादेव बड़े ? तब श्रीआचार्यजी कहे, शास्त्र रीति सों श्रीठाकुरजी बड़े, और जाके मन, में जो निश्चय बड़ो मान्यो ताकों सोई बड़ो । तब कविराज भाट नें कही, महाराज ! श्रीठाकुरजी में और महादेवजी में कहा भेद है ? ईश्वर दोऊ कहावत हैं । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें, श्रीभागवत में कहे हैं, जो-जब भगवान् मोहिनी रूप धरे, तब महादेव मोहित भये । और महादेव कोई रूप धरे परन्तु श्रीठाकुरजी कों मोहित न करे । तातें भगवान् के आधीन महादेव हैं । महादेव के आधीन भगवान् नाहीं हैं, इतनो तारतम्य है ।

या प्रकार बचन श्रीआचार्यजीने श्रीमुखसों कहे सो सुने । सो कविराज भाट की बुद्धि निर्मल है गई । तब कविराज दंडवत करि विनती कियो, महाराज ! मोकों सरनि लीजिये । काहे तें, एक क्षण आपुके पास बैठे तें, वतराघेतें श्रीठाकुरजी में मन लाग्यो, सो आपुको सेवक होय कछुक दिन आपको संग करूंगो तो निश्चय श्रीठाकुरजी मोपर प्रसन्न होंयगे । तातें मोकों सेवक करो । तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम कविराज हो, कवित्त करत हो, सो सेवक होय कहा करोगे ?

दर्शन थयां त्यारे कविराज लाटे नष्टुं, के आ भोटा पंडित जेवा देभाय छे तेथी अमनाथी कंध पूछुं. त्यारे कविराज लाटे श्रीआचार्यजीनी पास आवी दंडवत करी अेक प्रश्न कर्यो, महाराज ! देवी भोटी के महादेव भोटा ? त्यारे श्रीआचार्यजी छहे, शास्त्र रीतिथी श्रीठाकुरजी भोटा अने जेना मनमां जे निश्चय जेने भोटा मान्या तेने भाटे ते भोटा. त्यारे कविराज लाटे कछुं, महाराज ! श्रीठाकुरजीमां अने श्रीमहादेव-जीमां शो सेह छे ? धरैर अने कहेवाय छे. त्यारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु छहे, श्रीभागवतमां छहे छे, के न्यारे लगवाने मोहनीरूप धर्युं त्यारे महादेवजी मोहित थया अने महादेवजी कोधरूप धरे परंतु श्रीठाकुरजीने मोहित न करी शके. तेथी लगवाने आधीन महादेव छे. महादेवने आधीन लगवान नथी अेटहुं तारतम्य छे.

आ प्रकारनां वचन श्रीआचार्यजीअे श्रीमुखथी कहां ते सांलप्यां. तेथी कविराज लाटनी बुद्धि निर्मल थय गय, त्यारे कविराजे दंडवत करीने विनती करी, महाराज ! मने शरणे लो. केमके अेक क्षण आपनी पास अेसवाथी वातो करवाथी श्रीठाकुरजीमां मन लाग्युं. तो आपने सेवक थय केलाके द्विस आपने संग करीश तो निश्चय श्रीठाकुरजी मारा उपर प्रसन्न थये. तेथी मने सेवक करे त्यारे श्रीआचार्यजी छहे,

तब कविराज नें कही, महाराज ! आपुके संग बिना योंही भटकत हतो, कछु ज्ञान तो हतो नहीं । तातें अनेक देवतान के गुन, श्रीठाकुरजी के छोड़ि कें, गावत हतो । अब सोपर आपु कृपा करो, जो-सदा श्रीठाकुरजी के गुन गाऊँ । तब श्रीआचार्यजी कहें, अब तो हम अडेल पधारत हैं, तहां तीनों भाई सहित अइयो, सो तहां सेवक करेंगे । यह कहि श्रीआचार्यजी अडेल पधारे ।

भावप्रकाश—सो यातें जो याकी पूर्व प्रीति सेवक होयवे की होयगी, जब तो आयकें सेवक होयगो । प्रीति बिना अंगीकार न होय । तातें श्रीआचार्यजी अडेल आयवे की कही । सो आपु तो अडेल पधारे ।

तब कविराज अपने दोऊ भाईन सों कह्यो, अडेल चलि श्रीआचार्यजी के सेवक हूँ आवें । तब तीनों भाई अडेल चले । सो कलुक दिन में जाय पहुँचे । तब श्रीआचार्यजी कहे, नहाय आवो । तब तीनों जने नहाय आये । तब श्रीआचार्यजी कविराज भाट कों नाम निवेदन कराये । और दोऊ भाईन कों नाम सुनायो । तब कविराज भाट जें श्रीआचार्यजी सों बिनती करी, महाराज ! हम आगें पूर्व जन्म में कौन हे, सो ऐसे यहां श्रीठाकुरजी कों भूलि संसार में भटकें ? तब

तब कविराज छे कविता करे छे। ते सेवक थधने शुं करशा ? त्यारे कविराजे कछुं, महाराज ! आपना संग बिना अेभज लटकतो हुतो। कंछ ज्ञान तो हुतुं नहीं। श्रीठाकुरलने छोडीने तेथी अनेक देवताअेना गुणु गातो हुतो। हुव मारा उपर आप कृपा करी के सदा श्रीठाकुरलना गुणु गाउं। त्यारे श्रीआचार्यल कहे, हुवे तो अमे अडेल पधारीअे छीअे। त्यां तमे त्रणु साध साथे आवजे। पछी त्यां सेवक करीशुं। अेभ कही श्रीआचार्यल अडेल पधार्या।

भावप्रकाश—ते अे माटे, के अे अेनी प्रीति सेवक थवानी हुशे तो तो आवीने सेवक थशे प्रीति बिना अंगीकार नहीं। तेथी श्रीआचार्यलअे अडेल आववाने कछुं। पछी आप तो अडेल पधार्या।

त्यारे कविराजे पोताना अने साधअेने कछुं के, अडेल यादी श्रीआचार्यलना सेवक थध आवीअे। त्यारे त्रणु साध अडेल याद्या। ते केतसाक द्विषमां नध पछुअ्या। त्यारे श्रीआचार्यल कहे, नहाय आवो। त्यारे त्रणु नहाधने आव्या। त्यारे श्रीआचार्यलअे कविराज साधने नाम-निवेदन कराव्युं अने अने साधअेने नाम सलगाव्युं। पछी कविराज साठे श्रीआचार्यलने बिनती करी, महाराज ! अमे आगण पूर्वजन्ममां कोणु हुता ? ते आम श्रीठाकुरलने लूदीने संसारमां

श्रीआचार्यजी कहें, तुम श्रीनंदरायजी के मुख्य पुरोहित हो, भक्ति सूत्र तो तुमही प्रगट किये हो। यह भक्तिमारग द्रढ़ तो तिहारो किये सूत्र की साखितें जगत में प्रसिद्ध है। सो तुम सगरे मुनीन में श्रेष्ठ हो। सो एक समय तुमको अहंकार भयो, जो-भक्तिमारग को मैं बहोत जानत हों। तब विश्वामित्र शाप दियो। जो-भूमि पर गिरो, मूर्ख होऊ। तातें तिहारो जन्म भूमि में भयो। अब देह छोड़ि फेरि शांडिल्य मुनि होंजगे। तब कविराज दंडवत करि विदा होयके फेरि मथुरा आये। सो सरनि आय गोवर्द्धन पर जाय श्रीनाथजी के दरसन करि सन्मुख कवित्त किये। पाछें आचार्यजी के, श्रीगोवर्द्धन-नाथजी के कवित्त बहोत किये। सो लीला रस में मग्न भये। सो कविराज भाट ऐसे भगवदीय भये। श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र हे। इनके संगतें उन दोऊ भाईन को उद्धार भयो। तातें कविराज की वार्ता कहां ताई कहिये।

वार्ता ॥६६॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को सेवक, गोपालदास इंटोडा क्षत्री, सो ये पच्छिम में पंजाब में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—लीला में ये ललिताजी की सखी हैं। 'नृत्य-कला'

ललक्या ? त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, तमे श्रीनंदरायजीना मुख्य पुरोहित छे। ललक्या-सूत्र तो तमे प्रकट कर्था छे। आ ललक्यामाग दृढ तो तमारो कहेसां सूत्रनी साक्षीथी जगतमां प्रसिद्ध छे। तेथी तमे अधा मुनिआमां श्रेष्ठ छे। पछी अक समय तमने अहंकार थयोके ललक्यामागने हुं अहुं ललक्यां पुं। त्यारे विश्वामित्रे आप आध्या के भूमि उपर पडा। मूर्ख थाव। त्यारे तमारो जन्म भूमि उपर थयो। हुवे देह छोडी इरी शांडिल्य-मुनि थयो। त्यारे कविराज दंडवत करी विदाय थयने इरी मथुराल व्याव्या। पछी शरणे व्यापी शिवर्द्धन उपर जय श्रीनाथजीनां दर्शन करी सन्मुख कवित्त कर्थां। पछी श्रीआचार्यजीनां श्रीगोवर्द्धननाथजीनां कवित्त वण्णां कर्थां। ते लीला-रसमां मग्न थया। अ कविराज साट अयो भगवदीय थया। श्रीआचार्यजीना अयो कृपापात्र हुता। अमना संगथी अमनाये ललक्याना उद्धार थयो। तेथी कविराजनी वार्ता क्थां मुधी कलिये।

वार्ता ॥ ६६ ॥

✽

✽

✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना सेवक गोपालदास इंटोडा क्षत्री, ते पच्छिममां पंजाबमां रहता, तेमनी वार्ताना भाव कहीये छीये—

भावप्रकाश—लीलामां अ ललिताजीनी सखी छे। 'नृत्य-कला' अतुं

इनको नाम है लीला में । सो इनकों एक समय मद भयो । जो संगीत को गान मोकों आवत हैं । ऐसो काहू सखीकों ललिताजी कों हूँ नहीं आवत हैं । यह मन में आवत ही ललिताजी ने कही । जा मूर्ख भूमि में जन्म । ता अपराध तें पच्छिम में एक क्षत्री के जनमें । पाछे बड़े भये । तब मन में आई, जो-ब्रज की जात्रा और पिता की गया हू करि आवें । यह विचारि पच्छिम तें चले सो ब्रज में आये । सो मथुरा न्हाय कासी कों चले । सो कासी जाय गया-में पिता श्राद्ध करि पाछे कासी आये । सो कासी तें मथुरा कों चले । तब मार्ग में श्रीआचार्यजी को संग भयो । सो एक मजलि में छोटी गाम हतो तहां उतरे । सो रात्रि कों डाको तहां परघो । गोपालदास के हाथ में रंच तीर लग्यो । वस्तु भाव सब लूटि गई । पाछे श्रीआचार्यजी सबेरे कहें, गोपालदास कहा खबरि है, तब वाने कही, महाराज ! खरची, वासन, वस्तु सगरी गई, ताकी तो चिन्ता नहीं । आगरे ते हंडी कर घर सों मंगाय लेऊंगो । परन्तु दोय चारि दिनमें आगरे खरची बिना कैसे पहो-चोंगो, यह चिन्ता है । और हाथ में रंच लागी है सो आछो होय जायगो । तब श्रीआचार्यजी ने कही, प्रारब्ध भोग मिट्यो, अब चिन्ता मति करो । खरची चाहिये सो कृष्णदास सों लीजो । तब गोपालदास ने कही, महाराज ! प्रारब्ध भाग

नाम छे, लीलाभां । जेने जेक समय मद थयो छे, भने संगीतनुं ज्ञान व्यानडे छे जेवुं छैठ सभ्नीने, ललिताजने पणु नथी व्यावडतुं । आ मनभां व्यावतां न ललिताज्जे कछु, न भूष् ! भूमिभां जन्म. ते अपराधथी पश्चिमभां जेक क्षत्रीना धरे जन्म्या. पछी भोटा थया त्तारे मनभां व्याव्युं छे, व्रजनी यात्रा जने पितानी गया पणु करी व्यावुं. जेम विचारी पश्चिमथी यादया ते व्रजभां व्याव्या. पछी मथुरा न्हाई काशीज्जे यादया. पछी काशीथी गया जेठ पितानु श्राद्ध करी पाछा काशी व्याव्या. ते काशीथी मथुरा यादया. त्तारे मार्गभां श्रीआचार्यज्जे संग थयो. त्यां जेक मुकामे नानु गाम हतुं त्यां उतर्यां. त्यां रात्रिज्जे धाड पडी. तेथी गोपालदासना हाथभां रचक तीर लाग्युं. वस्तु भाव अंधी लुटाई गई. त्तारे श्रीआचार्यज्जे सवारे कछुं, गोपालदास ! शी अथर छे २ त्तारे तेजे कछुं, महाराज ! अथी, वासन, वस्तु अंधी गई. तेनी तो चिन्ता नथी. आगराथी हुंडी करी धरथी मगावी लईश. परंतु जे त्तार दिवसभां आत्रा अथी विना ठवी रीते पछोन्नीश जे चिन्ता छे. वणी हाथभां रचक लाग्युं छे ते साइं थई जशे. त्तारे श्रीआचार्यज्जे कछुं, प्रारब्ध भोग मिट्यो. हुवे चिन्ता न करे. अथी जेधजे

कैसे ? तब श्रीआचार्यजी कहें, वरस दस याही बात कों भये । तू रात्रि कों एक गाम जात हतो । सो मार्ग में और चोर और ठोर तें चोरी करि जात हते । सो तू उनकों पकरि केँ बहोत मारघो, उन की वस्तू छीनि लीनी ताको पलटो भयो । तेरी वस्तू गई, और चोट तोकों लागी । तोकों सुधि हैं ? तब गोपालदास कहें, महाराज ! ठीक हैं । या बात कों दस वरष भये । पाछें कृष्णदास सों रुपैया ५) ले चले । तब गोपालदास अपने मन में विचारें, जो-श्रीआचार्यजी साक्षात् ईश्वर हैं । दस वरस की बात मेरे देस की सब बताय दीनी । तातें इनको मैं सेवक होऊँ तो कृतार्थता होय ! यह विचार करि श्रीआचार्यजी सों विनती कियें, महाराज ! मोकों कृपा करि सरनि लीजिये । और मेरो संसार-दुःख छूटे, ऐसो अनुग्रह करो । तब श्रीआचार्यजी कहें, आगरे में चलो । तहां तुमकों नाम सुनावेंगे । तब गोपालदास नें विनती करी, महाराज ! मोकों विश्वास नाहीं हैं । एरु क्षण में देह छूटि जाय तो मैं आपुकों कहाँ पाऊँ ? फेरि सरनि कब मिलें ? तब श्रीआचार्यजी कहें, स्नान करि आऊँ । तब गोपालदास न्हाय आयें । तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय ब्रह्मसंबंध कराये । तब गोपालदास नें विनती करी, महाराज ! मैं महामूर्ख हूँ । कछ

ते कृष्णदासथी लेखे । तारे गोपालदासे कथुं, महाराज ! प्रारब्ध भोग क्ये ? तारे श्रीआचार्यथी कथुं, या वातने दश वर्ष थयां । तू रात्रिमे एक गाम जतो हुतो अने मार्गमां भीजे यार भीजे जगाथी यारी करी जतो हुतो । ते अने पकडीने अहु भार्यो । अनी वस्तु अंडपी लीधी तेना अद्वो मय्यो । तारी वस्तु गध अने चोट तने लागी । तने याद छे ? तारे गोपालदास कहे, महाराज ! अरोअर छे । अ वातने दश वर्ष थयां । पछी कृष्णदासथी पांच रूपीया लधने यादया । तारे गोपालदास पोताना मनमां विचारे, के श्रीआचार्यथी साक्षात् ईश्वर छे । दश वर्षनी वात मारा देशनी अधी अतावी दीधी । तेथी अमनो हुं सेवक थउं तो कृतार्थता थाय । अम विचार करीने श्रीआचार्यथी विनंती करी, महाराज ! मने कृपा करी शरण्ये ले अने माइ संसार-दुःख छुटे अवे । अनुग्रह करे । तारे श्रीआचार्यथी कहे, आआमां यादो, त्यां तमने नाम संभणापीथु । तारे गोपालदासे विनंती करी, महाराज ! मने विश्वास नथी । एक क्षणमां देह छुटी जय तो हुं आपने क्यांथी भेणवुं ? इरी शरण्ये क्यारे भणे ? तारे श्रीआचार्यथी कहे, स्नान करी आवो । तारे गोपालदास न्हाई आव्या । पछी श्रीआचार्यथी नाम संभणापी ब्रह्मसंबंध कराव्युं । तारे गोपालदासे विनंती करी, महाराज ! हुं महा भूषं छुं । कंई आपना

आपको प्रकार मार्ग को जानत नहीं। सो मोकों ऐसी कृपा करो, जो—पुष्टिमार्ग को सिद्धान्त हृदयारूढ़ होय। और आपुके स्वरूप को कछु ज्ञान होय। तव श्री-आचार्यजी अपने चरणारविंद को चरणामृत दीनो। और “सिद्धान्त रहस्य” ग्रन्थ पढ़ायें। तव गोपालदास के हृदय में पुष्टिमार्ग के सिद्धान्त को भाव हृदयारूढ़ भयो। श्रीआचार्यजी के स्वरूप को ज्ञान भयो। तव गोपालदास दंडवत करि चोखरा छंद बहोत वरनन कियें। तव श्रीआचार्यजी कहैं। गोपालदास तुम पर श्री-ठाकुरजी की कृपा भई। तव गोपालदास दंडवत करि कहैं, मैं तो श्रीठाकुरजी को नाम हूं कबहूँ नहीं लियो। सो श्रीठाकुरजी मोकों कहा जानें? यह सब आपु की कृपा हैं। जो मो सारिखे अधमन कों सरनि ले एसो दान दिये। तव श्री-आचार्यजी गोपालदास की दैन्यता देखि प्रसन्न भये। जो या प्रकार वैष्णव कों दैन्यता चाहियें। श्रीआचार्यजी के संग गोपालदास आगरे आये। पाछे ब्रज में संग रहैं। श्रीगोवर्द्धनधरके दरसन करि श्रीआचार्यजी सों विदा होय पंजाव गये। सो चोखरा गान करि मगन रहतें।

वार्ता—प्रसंग १—और एक समय गोपालदास श्रीआचार्यजी के दरसन कों अडेल आये। सो श्रीआचार्यजी को जनम दिन आयो। सो केसर सों नहाय मार्कण्डेय पूजा करन कों बिराजें। ता समय

मार्गने प्रकार जणुतो नथी, तेथी मने ज्येवी कृपा करे डे पुष्टिमार्गने सिद्धांत हृदयारूढ़ थाय ज्येने आपना स्वरूपतु कंठ ज्ञान थाय, त्यारे श्रीआचार्यज्ये पोताना यरणारविंदतुं यरणामृत आर्युं, ज्येने ‘सिद्धान्तरहस्य’ ग्रंथ लणुव्यो, त्यारे गोपालदासना हृदयमां पुष्टिमार्गना सिद्धांतने भाव हृदयारूढ़ थयो, श्रीआचार्यज्येना स्वरूपतु ज्ञान थयु, त्यारे गोपालदासे दंडवत् करीने ज्योभरा—छंद पद धरा वरुन क्यो, त्यारे श्रीआचार्यज्ये कहे, गोपालदास ! तभारा उपर श्रीठाकुरज्येनी कृपा थई, त्यारे गोपालदास दंडवत् करीने कहे, में तो श्रीठाकुरज्येनु नाम क्यारेय लीधु नथी, तेथी श्रीठाकुरज्ये मने शुं जणु ? ज्ये ज्येनी आपनी कृपा छे, डे मारा सरया अध-मने शरज्ये लई आपुं दान क्युं, त्यारे श्रीआचार्यज्ये गोपालदासनी दीनता जेई प्रसन्न थया, डे ज्ये प्रकारे वैष्णुवेने दीनता जेईज्ये, पछी श्रीआचार्यज्येना सगे गोपालदास ज्येना ज्येना, पछी प्रजमां सगे रह्या, श्रीगोवर्द्धनधरनां दर्शन करी श्रीआचार्यज्येनी विदाय थई पजणु गया, ते ज्योभरा—गान करीने मज्ज रहेता,

वार्ता—प्रसंग २—वणी ज्येक समय गोपालदास श्रीआचार्यजीना दर्शन अडेल

गोपालदास यह चोखरा, छंद विलावल राग में गाये—

“ माधव मासें भरि वैसाखे, श्रीवल्लभ हरि जनम लियो । ”

छंद-प्रगटिया जिन भक्तिमारग बंध जीव छुड़ाईयां । संसार ते जे मुक्त कीने शरन जो जन आइयां ॥ अभयदान निशान मेले चित्त जिन हरिकों दिया । गोपालदास अनंतलीला प्रगट श्रीवल्लभ भया ॥ १ ॥ दाता मुक्ता और न दूजा, साँचा त्रिभुवनराय वहां । विरह निवारणा भवजल तारणा देखत उपजे चाव जहां ॥ छंद-देखत हरिकों चाव उपजे सकल दुःख निवार ही । जाकौ नाम सुमरे जरे पातक कर जोर निगम पुकार ही ॥ पनितपावन विरद जाकौ शील माघौ फर मया । ‘ गोपालदास ’ अनंतलीला प्रगट श्रीवल्लभ भया ॥ २ ॥ ये ब्रजबालियाँ गोप गुवालियाँ ये गोकुल के लोग उहाँ । ये वन फ्रीडा, हरिमुख ब्रोडा हरि सेवा रस भोग वहां । ॥ छंद ॥ रसभोग और संयोग मिलि यों दिये अंतर रम रह्या । तुव बालचरित्र अनंतलीला दान दे सब गुन कह्या ॥ तेरी मली मूरति देखि सूरति राधिका अंचल गह्या । ‘ गोपालदास ’ अनंतलीला प्रगट श्रीवल्लभ भया ॥ ३ ॥ पूरनब्रह्म सनातन माघो कलि केशव अवतार वहां । जिन जैसा देखा तिन तैना पेखा भक्तन प्रान आधार वहां ॥ छंद-भक्तन प्रान आधार श्रीवल्लभ दिये अंतर राखिया । गमकृष्ण मुकुंद माघो सदा जिह्वा भाखिया । गोपीनाथ अनाथ बधु वेद में करुणामया । ‘ गोपालदास ’ अनंतलीला प्रगट श्रीवल्लभ भया ॥ ४ ॥

यह चोखरा सुनिकें श्रीआचार्यजी गोपालदास के ऊपर बहोत प्रसन्न भये । सो गोपालदास ऐसे भगवदीय श्रीआचार्यजी के कृपापात्र हे । इनकी वार्ता कहां ताई कहिये । वार्ता ॥६७॥

✽ ✽ ✽
अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, जनार्दनदास चोपड़ा क्षत्री थानेस्वर के वासी, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये जनार्दनदास लीला में कुमारिका के जूथ में हैं । लीला में इनको नाम ‘ कृष्णावती ’ हैं । सो थानेस्वर में एक क्षत्री के घर जनमें ।

आप्या. त्यारे श्रीआचार्यजीना जन्मदिन हुतो. ते देशरथी न्होर्ध भाईउथ पूज करवा भाटे भिरान्या. ते समये गोपालदासे आ योभरे-छंद विलावल रागमां गाये- ‘ माधव मासें भरि वैसाखे ’ (उपर नुओ) ये योभरे सांलणीने श्रीआचार्यजी गोपालदासना उपर भडु प्रसन्न थया. ते गोपालदास श्रीआचार्यजीना कृपापात्र येवा भगवदीय हुता. तेमनी वार्ता क्यां सुधी कहीअे ? वार्ता ॥६७॥

✽ ✽ ✽
हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना सेवक, जनार्दनदास चोपड़ा क्षत्री थानेस्वरना वासी, तेमनी वार्ताना भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—ये जनार्दनदास लीलामां कुमारिकाना यूथमां छे लीलामां

सो इनको पिता शस्त्र बांधिकें थानेस्वर के हाकिम पास चाकरी करतो । सो वह हाकिम एक दूसरे हाकिम पास लरन कों चढ्यो । ता समय जनार्दनदास को पिता शस्त्र लेके चढ्यो । सो जनार्दनदास को पिता कायर बहोत हतो । सो जब लराई होन लागी, तब जनार्दनदास को पिता डरपिकें भाज्यो । सो घर में आय जनार्दनदास वर्ष सोरह के हते, तिनसों कह्यो, मैं युद्ध में ते भाजि आयो, सो हाकिम आयकें मोकों मारेगो । तब जनार्दनदास नें पिता सों कही । जो तुमनें बुरी करी, क्षत्री होय रण सों भाजें ? परन्तु अब या देस में रहनों कठिन हैं । तब जनार्दनदास के पिता नें कही । मैं पूर्व कासी कों निकसि जात हों । यह कहिकें जनार्दनदास को पिता निकस्यो । सो पूर्व होय दक्षिण कों निकसि गयो । यहां जनार्दनदास के पिता के भाजें फोज भाजी, सो हाकिम हूँ भाज्यो । पाछे मामला तै करिकें थानेस्वर में आयो । तब सगरे सिपाईन सों पूछ्यो, जो-पहिलें कोन भाज्यो ? तब सबन ने कही, जो-जनार्दनदास को पिता भाज्यो । तब उह हाकिम नें कही, जो-वाकों मेरे आगें पकरि लावो । तब प्यादे घर आयें । सो जनार्दनदास कों ले गये । तब हाकिम नें कही । तेरे पिता कों बताव, कहां हैं । उह रन में ते भाज्यो सो मेरी सगरी फोज बिचरि आई । तातें वाकों मारुंगो । पिता कूं न बतावेगो

अमृतुं नाम ' कुण्डलावती ' छे । ते थानेश्वरमां अेक क्षत्रीना धरे जन्म्या । तेमना पिता शस्त्र बांधीने थानेश्वरना हाकिम पास चाकरी करतो । ते हाकिम अेक भीम हाकिम पासे लडवाने यढ्यो । ते समय जनार्दनदासने पिता शस्त्र लधने यढ्यो पथु जनार्दनदासने पिता कायर धर्यो हुतो । ते ज्यारे लडाध थवा लागी त्यारे जनार्दनदासने पिता उरीने भाज्यो । तेथे धरमां आवी सौण वर्षना जनार्दनदास हुता तेमने कहुं, हुं युद्धमांथी भागी आव्यो छु । तेथी हाकिम आवीने मने मारशे । त्यारे जनार्दनदासे पिताने कहुं, ' के तमे प्रोटुं कथुं ' । क्षत्री थर्ष रणमांथी भाग्या । परंतु हुवे आ देशमां रहेतु कठिण छे । त्यारे जनार्दनदासना पिताने कहुं, हुं पूर्व (तरङ्) काशीअे निकणी जठं छु । अेम कहीने जनार्दनदासने पिता निकस्यो । ते पूर्व थर्ष दक्षिण तरङ् निकणी गयो । अही जनार्दनदासना पिताना भागवाथी शैव भागी तेथी हाकिम पणु भाग्यो । पछी मामला थाणे पाडी थानेश्वरमां आव्यो । त्यारे अंधा सिपाधअेने पूछ्युं, ' के पहेतु डालु भाग्यु ? त्यारे अंधाअे कहुं, ' के जनार्दनदासने पिता भाग्यो । त्यारे ते हाकिमे कहुं, ' के अेने भारी आगण पकडी लावो, पछी सिपाधअे धर आव्या । ते जनार्दनदासने लर्ष गया, त्यारे हाकिमे कहुं, ' तारा पिताने अताव कथां छे ? अे रणमांथी भाग्यो तेथी भारी अंधी शैव

तो तोकूँ मारूंगो । तब जनार्दनदास नें कही, जो-मेरो पिता भाजिकें घर आयो । सो तुम्हारो भय करि पूर्व कासी को नाम लेकें भाजि गयो । और मैं तुम्हारें आगे हों, चाहो सो करो । तब हाकिम नें कही झूठो है । पिता को कहूँ छिपाइ राख्यो हैं । तब जनार्दनदास नें कही मैं छिपायो होय तो या बात को मुचरका लिखौं । मैं झूठ नाहीं कहत । तब वह हाकिम नें इनकों बंदीखाने दीनों । सो बंदीखाने में डारत ही संध्या समय हाकिम के घर में आगि लागि । वह हाकिम को बेटा, वह, सगरो कुटुम्ब जरि मरयो, अब अकेलो रह्यो । तब वह हाकिम के मन में आई, जो-मैं बुरी करी । जो जनार्दनदास कों बंदीखाने में डारयो । याकों बिना दोष मैं दंड दियो, ताको फल पायो । तब हाकिम जनार्दनदास कों बुलायो, कह्यो, मैं तोकों बिना दोष दंड दियो । तेरो पिता भाज्यो, तामें तू कहा करें ? सो मेरो कुटुम्ब सब नास भयो । अब तू अपने पिता कों बुलाव । मैं कछु न कहूंगो । होनहार हती सो भई । और तोकूँ विश्वास न आवे तो गाम के दस भले मनुष्यन के आर्ग लिखि देऊ । पाछे गाम के प्रमानिक सेठ बुलाय हाकिम नें लिखि दीनों, जनार्दनदास को पिता घर में आवें । मोसों कछु दावो नाहीं । कछु कहूँ तो पंचन में

राघुमांथी विभरार्थ गर्ध. तेथी अने भारीश. पिताने नहीं अतावे तो तने भारीश. त्तारे जनार्दनदासे कछुं, के भारे पिता भागीने धर आव्यो. ते तभारथी बय करीने पूर्व काशीनुं नाम लई भागी गयो छे अने हुं तभारी आगण छुं. इवे ते करे. त्तारे हाकिमे कछुं, तू झूठो छुं. पिताने कंई संताडी राख्यो छे. त्तारे जनार्दनदासे कछुं, मे संताडी राख्यो होय तो आ वातने ' भुयरेडा ' (अदालती प्रतिज्ञापत्र) लखुं. हुं नुहुं नथी कहेतो. त्तारे ते हाकिमे जनार्दनदासने अंठीपानामां भूक्या. पछी अंठीपानामां भूकतां न हाकिमना धरमां आग लागी. तेथी हाकिमना पुत्र, वह, अधुं कुटुंअ अणी गयुं. हाकिम अकेलो रह्यो. त्तारे हाकिमना मनमां आव्युं, के में पोटुं क्युं, न जनार्दनदासने अंठीपाने नाख्यो. अने बिना दोष में दंड आव्यो. तेतुं इल मज्युं. त्तारे हाकिमे जनार्दनदासने ओलाव्यो, कछुं, में तने बिना दोष दंड दीयो. त्तारे पिता भाज्यो, तेमां तू शुं करे ? तेथी माइं कुटुंअ अधुं नाश थयुं. इवे तू तारा पिताने ओलाव. हुं कंई नहीं कहुं. थवा काण हतुं ते थयुं अने तने विश्वास न आवे तो गामना दस भला भासुसोनी आगण लपी हई. पछी गामना प्रामाणिक शेठने ओलावी हाकिमे लपी दीधुं. जनार्दनदासने पिता धरमां आवे तो भारे अने कंई दावो नहीं. कंई कहुं तो पांचमां नुठो. पछी

झूठो । पाछे जनार्दनदास के पिता की चाकरी के पैसा बहोत दिनके बाकी हते सो जनार्दनदास को दिये । जनार्दनदास घर आय विचारें, अब पिताको घर लावनों, कहा उपाय करूं ? पाछे यह विचारे जो-कासी के आसपास होयगो, मैं जायके लियाय लाऊँ । नाहीं तो वह कबहूँ न आवेंगो । यह विचारि जनार्दनदास थानेखर सो चले । सो आगरे आये । पाछे आगरे तें चले, तब मार्ग में दोय मोहौर परी पाये । सो लेके मन में प्रसन्न भये । मोकूँ सगुन तो आछो भयो, जो-सुवर्ण पायो । पाछे उहां ते दोय मजलि चले आगे, तब वासुदेवदास छकड़ा मिले । तिनसो जनार्दनदास पूछे, जो-मेरे पिता कहूँ देखे ? तब वासुदेवदास छकड़ा ने कही जो-मैं तेरो पिता नाहीं देखयो । परन्तु एक बात तोसो कहूँ, जो-तू माने तो । तू दैवी जीव है, ताते कहत हूँ । तब जानार्दनदास ने कही तुम बड़े हो, मेरे पुरोहित हो । मैं तुम्हारे जिजमान, बालक बराबर हों । तुम कहो सो करूं । तब वासुदेवदास ने कही, तू घरतें निकस्यो है तो श्रीगोकुल मथुरा जैयो । तहां श्रीआचार्यजी के दरसन तोको होयगो । तिनकी तू सरनि जैयो । संसार में बहुत दुःख भोग्यो । अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को सेवक होय तो तू कृतार्थ होय । और कासी को काहे को भटकें ? तेरो पिता तो दक्षिण गयो है । सो महीना एक में तहां मरेगो ।

जनार्दनदासना पितानी चाकरीना पैसा धरुा दिवसना पाकी हुता ते जनार्दनदासने आया, जनार्दनदासे धर आवी वियायुं, ठे हुवे पिताने धर लाववे (पण) शे उपाय कइ ? पछी अे वियायुं ठे काशीना आसपास हसे. हु अघने पोलानी लाहं. नहीं तो ते क्यारेय नहीं आवे. अे वियारी जनार्दनदास थानेश्वरथी यादया ते आगरा आव्या. पछी आआथी यादया तयारे मार्गमां अे मोहोर पडेवी भणी ते लघने मनमां प्रसन्न थया. मने शुक्न तो सारा थया, ठे सेतुं भयुं. पछी त्यांथी अे मुकाम आगण यादया. तयारे वासुदेवदास छकडा भया. तेमने जनार्दनदासे पूछयुं, ठे मारा पिताने कइ अेया ? तयारे वासुदेवदास छकडाअे कथु, ठे अे तारा पिताने अेया नहीं. परंतु अेक वात तने कहुं अे तूं माने तो, तू दैवी अण अे. तेथी कहुं अु. तयारे जनार्दनदासे कथुं, तमे मोटा अे मारा पुरोहित अे. हु तमारे अणमान आलक अराअर अुं. तमे कहे ते कइ. तयारे वासुदेवदासे कथुं, तू धरथी निकय्ये अे तो श्रीगोकुल-मथुरा अण. त्यां श्रीआचार्यअेनां दर्शन तने थसे. तेमनी तूं शरणे अण. स सारमां अहु दुःख लोगव्यु. हुवे श्रीआचार्यअेने सेवक थाय तो तू कृतार्थ थाय अने काशीअे शा भाटे लटके अे ? तारे पिता तो

तातें मैं कही सो करि । तव जनार्दनदास ने कही । तुम कैसें जाने जो दक्षिण मेरो पिता गयो है । तहां सहिना एक में मरेगो ? काल कोई जानत हैं ? तव वासुदेवदास नें कही, जो—मैं श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की कृपातें काल की वात जानत हों । तू दोय मार्ग में मोहौर पायकें प्रसन्न भयो । सो यह मोहौर तोकों बहुत दुःख देंयगी । तातें काहू ब्राह्मण कूँ दे डारियो । जैसे मैं मोहौर की वात जानी तैसें तेरे पिता की मृत्यु बताई । अब तेरो मन होय सो करियो । तव जनार्दनदास कों दृढ़ विश्वास भयो । जो वासुदेवदास कहें सो सांची वात हैं । तव वासुदेवदास कों दंडवत करि कह्यो, जो—अब मैं श्रीआचार्यजी को सेवक निश्चय होऊँगो ।

वार्ता—प्रसंग १—सो जनार्दनदास मथुरा होय श्रीगोकुल आये । तहां श्रीआचार्यजी को दरसन करि, दंडवत करी । सो मनमें यह कहें, जो—उह जो दोय मोहौर पाई हैं, सो और ब्राह्मण कहां हूँदोगे, श्रीआचार्यजी की भेट करि देऊं । तव दोऊ मोहौर निकारि श्रीआचार्यजी की भेट कियो । तव श्रीआचार्यजी कहें, तू बड़ो मूर्ख है, मार्ग में परी पाई मोहौर हमारी भेट करयो । सो हमकों नाहीं चाहियें । तव जनार्दनदास फेरि दंडवत करि विनतीकियो, जो—महाराज ! आपु पूर्ण

दक्षिण गयो छे. ते भडिना अेकभां त्यां भरशे. तेथी भे' कछुं ते कर. त्यारे जनार्दनदासे कछु, तमे ठेभ जणुयुं के दक्षिण भारे पिता गयो छे ? त्यां भडिना अेकभां भरशे ? काणने डोअ जणु छे ? त्यारे वासुदेवदासे कछुं, के श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी की कृपाथी काणनी वात जणुं छु. तू मार्गभां ये मोहोर भेजनीने प्रसन्न थयो, पणु आ मोहोर तने जहु दुःख देशे. तेथी डोअ ब्राह्मणने आपी देन. जेभ भे' मोहोरनी वात जणुी तेभ तारा पितातु मृत्यु अताव्यु. हुवे ताइं मन होय ते कर. त्यारे जनार्दनदासने दृढ विश्वास थयो, के वासुदेवदासे कछुं ते साची वात छे. त्यारे वासुदेवदासने दंडवत करी कछुं, के हुवे हुं श्रीआचार्यजीने सेवक निश्चय थयश.

वार्ता—प्रसंग १—ते जनार्दनदास मथुरा थय श्रीगोकुल आव्या. त्यां श्रीआचार्यजीनां दर्शन करी दंडवत कर्यां. मनभां अे कहे, के पेदी जे ये मोहोर भणी छे अे थीज ब्राह्मणने कयां भोणीश श्रीआचार्यजीने भेट करी दउं. त्यारे अन्ते मोहोर कादी श्रीआचार्यजीने भेट करी. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, तू जहु मूर्ख छे. मार्गभां पउदी मोहोर अमारी भेट करी ? ते अमने नथी जेधती. त्यारे जनार्दनदासे करी

पुरुषोत्तम हो । वासुदेवदाम मोकों मार्ग में कह्यो, जो-श्रीआचार्यजी साक्षात् भगवान हैं तिनकी तू सरनि जैयो । और ये मोहौर तेरे काम की नाहीं हैं । दुःख रूप हैं । तातें आप कृपा करिकें सरन लीजिये । और ये मोहौर जाकों देनी होय ताकों दीजिये । तब श्रीआचार्यजी कहें, मोहौर तू उठाय ले । मथुरा में चौबे ब्राह्मण बहोत हैं तिनकों दीजो । और श्रीगोवर्द्धननाथ के दरसन कों संग चलो, तहां तुमकुं सेवक करेंगे । तब जनार्दनदास मोहौर दोऊ ले आचार्यजी के संग गोवर्द्धन आये । पाछें आन्योर में जब आये तब श्रीआचार्यजी नें कही, जनार्दनदास ! स्नान करिकें श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों चलि । तब जनार्दनदास स्नान करिकें श्रीआचार्यजी के संग श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करें । तब श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धनधर के सन्मुख बैठाय नाम निवेदन कराये । पाछे कहे, जो-अब तू भागवद् सेवा करि । तब जनार्दनदास नें कही, जो-आप जा प्रकार बतावो ता प्रकार करूं । तब श्रीआचार्यजी श्रीनाथजी की पाग जनार्दनदास कों सेवा करिवे कों दिये । सो दिन दस जनार्दनदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के संग आन्योर में रहि, एतनमार्ग की रीति सीख्यो । तब श्रीआचार्यजी नें जनार्दनदास सों कही । जो-अब हम पृथ्वी परिक्रमा कों जायंगे ।

दंडवत करी विनती करी के महाराज ! आप पूरुं पुरघातम छे. वासुदेवदासे भने भागिंभां कछुं छे के श्रीआचार्यल साक्षात भगवान छे तेभनी तू शरखे जने. वणी आ महौर तारा कामनी नथी. दुःखरूप छे. तेथी आप कृपा करीने शरखे लेा अने आ महौराे जेने देवी होय तेने देजे. तयारे श्रीआचार्यल कहे, महौर तू उठावी ले. मथुराभां योभा-ब्राह्मणु घण्टा छे तेने देजे अने श्रीगोवर्द्धननाथलना दर्शने साथे याल. त्यां तने सेवक करीशुं. तयारे जनार्दनदास भने महौर लछ श्रीआचार्यलनी साथे गोवर्द्धन आल्या पछां आन्योरभां न्यारे आल्या तयारे श्रीआचार्यलये कछुं, जनार्दनदास स्नान करीने श्रीगोवर्द्धननाथलना दर्शने याल. तयारे जनार्दनदासे स्नान करीने श्रीआचार्यलनी साथे श्रीगोवर्द्धननाथलनां दर्शन कर्यां. तयारे श्री आचार्यलये श्रीगोवर्द्धनधरना सन्मुख भेसाडी नाम निवेदन कराव्युं. पछी कहे, के हवे तू भगवद्सेवा कर. तयारे जनार्दनदासे कछुं, आप जे प्रकारे बतावो ते प्रकारे कइं. तयारे श्रीआचार्यलये श्रीनाथलनी पाग जनार्दनदासने सेवा करवा भाटे आपी. पछी द्विपस दश जनार्दनदास श्रीआचार्यल महोप्रभुलनी साथे आन्योरभां रही अतनमार्गनी रीती शिष्या. तयारे श्रीआचार्यलये जनार्दनदासने कछुं,

तू घर जाय भगवद् सेवा मन लगाय कें करियो । तब जनार्दनदास श्री-
गोवर्द्धननाथजी के दरसन करि श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों दंडवत
करि विदा होय थानेश्वर अपुने घर आयो । पाछें पिता के देह छूटे के
समाचार दक्षिण तें आये । तब जनार्दनदास मन में कहें, जो-वासु-
देवदास बड़े भगवदीय हैं । उनको कछो सब सांच है । पाछें मन
लगाय भगवद् सेवा करन लागें । सो कछुक दिन में श्रीठाकुरजी
सानुभावता जनावन लागे । और सिंहनंदते वासुदेवदास थानेश्वर
आवते । तब जनार्दनदास वासुदेवदास कों अपने घर प्रीतिसों राखते ।
कहतें, मैं तुम्हारी कृपा तें श्रीआचार्यजी की सरन पाई हूँ । तातें तुम
जब थानेश्वर आवो तब यह घर सब तुम्हारो है, यहां उतरयो क-
रियो । सो एक क्षण वैष्णव के संग तें जनार्दनदास भगवदीय भये ।
तातें सत्संग भगवदीय को करनों । सो जनार्दनदास ऐसे भगवदीय
श्रीआचार्यजी के कृपापात्र हे । इनकी वार्ता कहां ताई कहिये । ॥६८॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, गङ्गा स्वामी सनोदिया ब्राह्मण,
श्रीवृन्दावन में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में श्रीनंदरायजी के घरकी दासी हैं । 'बंदी'

के हुवे अमे पृथ्वी परिक्रमाये जग्गु । तू घर जग्गु भगवद्सेवा मन लगाडीने करजे.
त्यारे जनार्दनदास श्रीगोवर्द्धननाथजीना दर्शन करी, श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीने
दंडवत करे विदाय थय थानेश्वर पीताना घरे आब्या । पछी पीताना देह छुट्याना
समाचार दक्षिणथी आब्या त्यारे जनार्दनदास मनमां कहे, के वासुदेवदास महान
भगवदीय छे । अमनुं कहेवुं थुं सासुं छे । पछी मन लगाडी भगवद्सेवा करवा
लाग्या । ते केरलाक द्विषमां श्रीठाकुरजी सानुभावता ज्ञापवा लाग्या । वणी सिंहनंदथी
वासुदेवदास थानेश्वर आवता त्यारे जनार्दनदास वासुदेवदासने पीताना घरे प्रीतिथी
राखता । कहेता, मैं तमारी कृपाथी श्रीआचार्यजीनुं शरण भेणव्युं छे । तेथी तमे
न्यारे थानेश्वर आवो त्यारे आ घर थुं तमाइं छे । अहीं उतर्या करे । आभ अके
क्षय वैष्णवना संगथी जनार्दनदास भगवदीय थया तेथी सत्संग भगवदीयना
करवा । ते जनार्दनदास अवा भगवदीय श्रीआचार्यजीना कृपापात्र हुता । अमनी
वार्ता कयां सुधी कहीअे ।

* * *

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना सेवक, गङ्गा स्वामी सनोदिया ब्राह्मण,
श्रीवृन्दावनमां रहेता तेमनी वार्तानां भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—ये लीलामां श्रीनंदरायजीना घरनी दासी छे । 'बंदी'

इनको नाम हैं। सो जसोदाजी जब दामोदर लीला में श्रीठाकुरजी को बांधन लागी, तब एक दाम बंदी ने दियो, जसोदाजी को। सो रोहिणीजी सुनि के शाप दियो। जो तू दासी हे के अपनो दाम बाँधिवे को श्रीजसोदाजी को क्यों दियो ? ताते भूमि में गिरि। तब बंदी मथुरा में एक सनोढ़िया के जन्में। सो जब ये आठ वर्ष के भये। तबही तें वैराग दिसा हती। सो मथुरा छोड़ि वृन्दावन में अकेले आय रहें। मथुरा तें सीधो सामान दस पांच दिना को लाय, वृन्दावन में केशीघाट पर बैठे विचार करते। जो मोकों कब कृपा करेंगे। और ब्रजवासी आदि जो आय कहते, हमको सेवक करो, तिनको सेवक करते। तिनसों यही कहते, श्रीठाकुरजी को नाम सदा मुखसों कहियो।

वार्ता-प्रसंग १—सो एक दिन रात्रि को गडू स्वामी को विरह बहोत भयो। जो जन्म सगरो वीत्यो। यह मनुष्य देह वृथा गई, ताते जीवनो वृथा है। यह कहि नेत्रन तें अश्रुपात बहें। तब गडू स्वामी को रंच नींद आई। तब श्रीठाकुरजी ने कही, जो-सवेरे श्री-वल्लभाचार्यजी तेरे पास केशीघाट ऊपर स्नान करन को पधारेंगे तिनकी सरन तू जैयो। तब तोपर कृपा होयगी। तब गडू स्वामी की आंख खुली, सो कहन लागे। जो कब सवेरो होय, कब मैं श्री-

अमनु नाम छे। श्रीजशोदाजी ज्यारे दामोदरलीलाभां श्रीठाकुरजीने बांधवा लागी त्यारे अक दोरदु अदीअे आभ्युं, जशोदाजीने अे रोहिणीजीअे सांभज्युं त्यारे शाप आभ्यो, के तू दासी थधने ताइं दोरदुं बांधवाने श्रीजशोदाजीने केम आभ्युं १ तेथी भूमिभां पड. त्यारे अदी मथुराभां अक सनोदीयाने त्यां जन्मे. ते वर्ष आठना थया त्यारथी वैराग्य दशा छती. तेथी मथुरा छोडी वृद्धावनभां अकला आवी रह्या. मथुराथी सीधुसामान दस-पांच दिवसतुं लावी वृद्धावनभां केशी घाट ऊपर बेसीने विचार करता के मने क्यारे कृपा करशे १ वणी ब्रजवासीअे अथा आवीने कहेता, अमने सेवक करे. तेमने सेवक करता. तेमने अेज कहेता, श्रीठाकुरजीतुं नाम सदा मुअथी कहे.

वार्ता-प्रसंग १-पछी अक दिवस रात्रिना गडू स्वामीने विरह बहो थयो जे जन्म अथो वीत्यो. आ मनुष्य देह वृथा गई तेथी अणवुं वृथा छे. अेम कडी नेत्र-भांथी अश्रुपात बहेतो. त्यारे गडू स्वामीने रंच नींद आवी. त्यारे श्रीठाकुरजीअे कथुं, के सवारे श्रीवल्लभाचार्यजी तारी पास केशीघाट ऊपर स्नान करवाने पधारशे. तेमनी तू शरणे जजे त्यारे तारा ऊपर कृपा थशे. त्यारे गडू स्वामीनी आंख खुली. ते कहेवा लाग्या, के क्यारे सवार थाय क्यारे हुं श्रीआचार्यजीनी शरणे जउ. अेटलाभां

आचार्यजी की सरनि-जाऊं। इतने में सवेरो-भयो। गिरिराज सों रात्रि कों श्रीआचार्यजी चले सो प्रातःकाल केशीघाट पंधारि श्री-यमुनाजी स्नान करि संध्यावंदन करत हे। तब गढ़ स्वामी ने पूछी जो ये कोन हैं। तब कृष्णदास मेघन नें कही, जो-श्रीवल्लभाचार्यजी गिरिराज सों पधारे हैं। तब गढ़ स्वामी नें दंडवत करि श्रीआचार्यजी सों विनती करी, जो-महाराज ! मोकों कृपा करिकें सेवक करिये। तब श्रीआचार्यजी कहें। जो तुम तो स्वामी कहावत हों। तुम हू सेवक करो हो। सो तुम सेवक होंन की क्यों कहत हो ? तब गढ़ स्वामी नें कही, महाराज ! मोकों भगवद आज्ञा भई। जो-तू श्रीआचार्यजी को सेवक हूजियो, तब तोपर कृपा होयगी तातें मोकों सेवक करिये। तब श्रीआचार्यजी गढ़ स्वामी कों कहे, जो-स्नान करि ले। तब गढ़ स्वामी स्नान करिके श्रीआचार्यजी के पास आयो। तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन कराये। पाछे गढ़ स्वामी ने अपुने जो सेवक किये हते। तिन सबन कों श्रीआचार्यजी के पास नाम सुनाये।

भावप्रकाश—पाछे गढ़ स्वामी नें श्रीआचार्यजी सों विनती करी, महाराज ! मेरे माता पिता तो बहिरमुख हैं, सो मथुरा में हैं। तातें उनकों छोड़ि मैं यहाँ आयो हूँ। ब्याह तो मेरो भयो नहीं। बालपने तें वैराग दसा में रह्यो।

सवार थयुं. त्यारे गिरिराजथी रात्रिअे श्रीआचार्यल आल्या ते प्रातःकाल केशीघाट पधारी श्रीयमुनाल स्नान करी संध्यावंदन करता हुता त्यारे गढ़ स्वामीअे पूछयुं, के आ कोणु छे ? त्यारे कृष्णदास मेघने कछु, के श्रीवल्लभाचार्यल गिरिराजथी पधार्या छे. त्यारे गढ़ स्वामीअे दंडवत करी श्रीआचार्यलने विनंती करी, के महाराज ! मने कृपा करीने सेवक करे. त्यारे श्रीआचार्यल कहे, के तमे तो स्वामी कहेवाव छे तमे पाणु सेवक करे छे. तेथी तमे सेवक थयावुं कम कहे छे ? त्यारे गढ़ स्वामीअे कछुं, महाराज ! मने भगवदाज्ञा थई के तू श्रीआचार्यलने सेवक थजे. त्यारे तारा उपर कृपा थसे. तेथी मने सेवक करे. त्यारे श्रीआचार्यल गढ़ स्वामीने कहे, के स्नान करी ले. त्यारे गढ़ स्वामी स्नान करीने श्रीआचार्यलनी पासे आव्या. त्यारे श्रीआचार्यलने नाम संलणावी निवेदन कराव्युं. पछी गढ़ स्वामीअे पाताना ने सेवक हुता ते पधाने श्रीआचार्यलनी पासे नाम संलणाव्युं.

भावप्रकाश—पछी गढ़ स्वामीअे श्रीआचार्यलने विनंती करी, महाराज ! मारा माता-पिता तो बहिरमुख छे ते मथुरामां छे. तेथी अे मने छोडीने हुं अहीं आव्यो छुं. लगन तो मारं थयुं नथी. बालपणुथी वैराग्य दशामां

सो अब ऐसी कृपा करो, जो-मेरो मन श्रीठाकुरजी की लीला तें अनत न भटके । तब श्रीआचार्यजी अपुनो चरणामृत दे 'त्रिविध नामावली' रचि, ताको पाठ करायें । तब गडू स्वामी कों श्रीठाकुरजी की लीला को अनुभव होन लाग्यो । सो मानसी सेवा में मगन ह्ये गये ।

सो गडू स्वामी श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे, ताते इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है । मानसी को प्रकार कह्यो न जाय । तातें गडू स्वामी की वार्ता को विस्तार नहीं किये । वार्ता ॥६९॥

*

*

*

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, कन्हैयाशाल क्षत्री, आगरे में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये कन्हैया शाल लीला में ललिताजी की सखी हैं । तहां उनको नाम 'कमोदिनी' हैं । सो आगरे में एक 'शाल' क्षत्री के घर जन्में । सो द्रव्य को संकोच पहलें बहोत हतो । सो जा दिना कन्हैया शाल जन्में ताही दिन पिता माता के घर में द्रव्य धरती सों निकस्यो । तब पिता माता नें कही, यह पुत्र बड़ो भाग्यवान है, जो-जनमत ही लक्ष्मी आई । तातें या बालक को नाम कन्हैया शाल । या प्रकार सों माता पिता कन्हैया शाल सों प्रीति बहोत करी ।

रह्यो. हुये ज्येवी कृपा करो ठे भाइं मन श्रीठाकुरजी की लीलाथी अन्यत्र न भटके. त्पारे श्रीआचार्यजी ज्ये पीतानुं यरणामृत आपी 'त्रिविधनामावली' रच्ये तेनो पाठ कराव्यो. त्पारे गडू स्वामीने श्रीठाकुरजी की लीलानो अनुभव थवा लाग्यो. ज्ये मानसी सेवामां मगन थई गया.

ज्ये गडू स्वामी श्रीआचार्यजीना ज्येवां कृपापात्र भगवदीय हुता. तेथी ज्येभनी वार्ता अनिर्वचनीय छे. मानसीनो प्रकार कही न शक्य, तेथी गडू स्वामीनी वार्तानो विस्तार नथी क्यो. वार्ता ॥६९॥

*

*

*

हुये श्रीआचार्यजी महाप्रभुना सेवक, कन्हैयाशाल क्षत्री, आगरामां रहता, तेभनी वार्तानो भाव कही छीज्ये—

भावप्रकाश—ज्ये कन्हैयाशाल लीलामां ललिताजी की सखी छे. त्यां ज्येभनुं नाम 'कमोदिनी' छे. ते आग्रामां ज्येक क्षत्रीना धरे जन्म्या. त्यां द्रव्यनो संकोच पहलाथी धर्यो हुतो. पण् जे द्विसे कन्हैयाशाल जन्म्या तेज द्विसे पिता-माताना धरमां धरतीमांथी द्रव्य निकस्यु. तेज्जन्मतां जे लक्ष्मी आवी. तेथी आ-पालकनु नाम कन्हैयाशाल (राज्यु) ज्ये प्रकारथी माता-पिताज्ये कन्हैयाशालथी प्रीति

बड़े भये परन्तु घरके बाहर जान न देय । सो जब तेरह वर्ष के भये । तब पिता की देह छूटी । पाछे कन्हैया शाल ने माता सों कही, अब मोकों बाहर जान दे, मैं बड़ो भयो, मथुरा बड़ो धाम है । सो कवहूँ दरसन नहीं कियो । तब माता ने कही, जो-बेटा तू मेरे नेत्रन तें कहुँ न्यारो मति जाय । तब कन्हैया शाल चुप ह्वे रहे । पाछे कन्हैया शाल के एक मामा हतो, सो मथुरा चलयो । तब कन्हैया शाल ने माता सों कही, जो-अब मामा के संग मथुरा मोकों न्हायवे कों जान दे । नाही तो मैं अकेलो भाजि जाऊंगो । तब माता डरपि कें अपने भाई सों कियो । मेरे बेटा कों बहोत दरसन मति कराईयो, फिराईयो मति, मथुरा में न्हाय के वेगि लाईयो । तुमकों ब्रज में जात्रा करनी होय, फिरनो होय, तो मेरे बेटा कों मेरे पास घर पहुँचाय फिरियो । तब कन्हैया शाल मथुरा आय विश्रान्ति न्हाये । तब कन्हैया शाल ने मामा सों कही, मोकों सगरे ब्रज के दरसन करावो । तब मामा ने कही । तुम्हारी माताने तो नहीं करी है । तब कन्हैया शाल ने कही, जो-मोपर मा को मोह बहोत है । परन्तु मैं फेरि कव आऊंगो ? ताते चलो, ब्रज के दरसन करों, सो बन परिक्रमा कों निकसे । सो पांच दिन में श्रीगोवर्द्धन पहुँचे । सो गिरिराज कों देखि कन्हैया शाल बावरे ह्वे गये । न बुलाये बोलें, न उठाये

धरणी करी. मोटा थया पशु धरनी अहार जवा न दे. पछी तेर वर्षना थया त्यारे पितानी देह छूटी. पछी कन्हैयाशाले माता ने कहुँ, हुवे मने अहार जवा दे. हुं मोटा थयो. मथुरा मोटुं धाम छे. अ्यारेय दर्शन नथी कर्या. त्यारे माताअ्ये कहुँ, के बेटा । तूं भारी आंभथी कंई दूर न ज. त्यारे कन्हैयाशाल रूप थई रह्या. पछी कन्हैयाशालने अ्येक मामा हतो. ते मथुरा आल्यो. त्यारे कन्हैयाशाले माताने कहुँ, के हुवे मामानी साथे मथुरा मने न्हावाने जवा दे. नही तो हुं अ्येकदो बागी नईश. त्यारे माताअ्ये डरीने पोताना बाधने कहुँ, मारा बेटाने धरणां दर्शन न करवीश. ईरवीश नहीं. मथुरामां न्हुवडावीने जल्दी लावज. तमारे ब्रजमां यात्रा करवी होय, इरवुं होय, तो मारा बेटाने भारी पास धर पहांआडीने इरज. त्यारे कन्हैयाशाल मथुरा आवी विश्रान्त न्हाया. त्यारे कन्हैयाशाले मामाने कहुँ, मने अंधा ब्रजनां दर्शन करावो. त्यारे मामाअ्ये कहुँ, तमारी माताअ्ये तो ना पाडी छे. त्यारे कन्हैयाशाले कहुँ, के मारा उपर मा ने मोह धरयो छे. परंतु हुं इरी अ्यारे आवीश ? तेथी आलो, ब्रजनां दर्शन करूं. पछी वन-परिक्रमाअ्ये निकज्या. ते पांच दिवसमां गोवर्द्धन पहांआया. त्यां श्रीगिरिराजअ्ये ने अ्येधने कन्हैयाशाल अ्हावरा थई गया. न

ઉઠે । જાકોં દેખે તાકી ઓર હૈસે । કોઝુ મુખ મેં ઢારિ દેઈ તો ખાય । પહિરાવે જો વસ્ત્ર પહિરેં । યા પ્રકાર સરીર કી સુધિ મૂલિ ગયે । તવ મામા કોં મહા ચિન્તા મઈ । જો યા દસા સોં ઘર લે જાય તો યાકી માતા રોવેગી । તાતેં ગોવર્દન મેં કન્હૈયા શાલ કોં લેકેં વહ મામા રહ્યો । વૈરાગી, અતીત, વૈદ્ય સવ સોં કહેં, જો-કન્હૈયા શાલ કોં કોઝુ આછો કરે તો વહ જો માંગે સો મેં દેહું । સો વહોતેરી ઔષધિ લોગન નેં કરી । અનેક જંત્ર મંત્ર કિયે । પરન્તુ કન્હૈયા શાલ આછે ન મયે ।

એસે કરત એક મહિના વીત્યો । તવ ઘરમેં માતા નેં વહોત ચિન્તા કરી । જો પુત્ર કી કહ્ણુ ખબરિ હૂં નાહીં આઈ । મેરો માઈ પાંચ દિન કો નામ લે ગયો હો, સો મહિના એક મયો । કહ્ણુ કારન દીસત હૈ । તવ એક મનુષ્ય બુલાય કે કહ્યો, જો-તૂ મથુરા જા, વ્રજ મેં મેરો માઈ, પુત્ર ગયો હૈ સો દેખિ આઝ કહાં હૈ ? કહા કરત હૈં ? કેસે હૈં ? સવ સમાચાર લે આઝ । उनकों मति जताईयो । मोकों सव समाचार आय कहेगो तो तोकों रुपैया दस देहूंगी । तव वह मनुष्य चलयो । सो मथुरा में खबरि पाई, जो-गोवर्द्धन में हूँ । तव गोवर्द्धन में आय दोऊन को देखि आगरे आयो । सो कन्हैया शाल की माता सों कही, जो-तेरो बेटा तो बावरो हूँ गयो हूँ । सरिर की सुधि नहीं हूँ, तेरो माई जंत्र मंत्र अनेक करत हूँ,

બોલાવ્યા બોલે ન ઉઠાયા ઉઠે જને જુએ તેની તરફ હુસે. ઠાઈ મહોડામાં નાખી જય તો ખાય. પહેરાવે તો વસ્ત્ર પહેરે. આ પ્રકારે શરીરની સુધિ ભૂકી ગયા. ત્યારે મામાને મહા ચિંતા થઈ, કે આ દશાથી ધર લઈ જય તો એની માતા રોશે તેથી ગોવર્દનમાં કન્હૈયાશાલને લઈને તે મામા રહ્યો. વૈરાગી, અતીથી, વૈદ્ય બધાને કહે, કે કન્હૈયાશાલને ઠાઈ સારો કરે તો તે જ માંગે તે હુ દઉં. પછી ધણીય ઔષધી લોઠાએ કરી, અનેક યત્રમત્ર કર્યાં. પરતુ કન્હૈયાશાલ સારા ન થયા. એમ કરતાં એક મહીનો વીત્યો. ત્યારે ઘરમાં માતાએ ધણી ચિંતા કરી, કે પુત્રની કંઈ ખબર પણ ન આવી. મારો ભાઈ પાંચ દિવસનું નામ લઈને ગયો છે. તે મહીનો એક થયો. ઠાઈ કારણ જણાય છે. ત્યારે એક મનુષ્યને બોલાવીને કહ્યું, કે તૂ મથુરા જ. વ્રજમાં મારો ભાઈ, પુત્ર ગયો છે તેને જોઈ આવ, ક્યાં છે ? શું કરે છે, કેમ છે ? બધા સમાચાર લઈ આવ. એમને ન જણાવીશ. મને બધા સમાચાર આવીને કહીશ તો તને રૂપીઆ દશ આપીશ. ત્યારે તે મનુષ્ય આવ્યો. તેને મથુરામાં ખબર મળી કે ગોવર્દનમાં છે. ત્યારે ગોવર્દનમાં આવી બંનેને જોઈ આગ્રા આવ્યો. તેણે કન્હૈયાશાલની માતાને કહ્યું, કે તારો બેટા તો બહાવરો થઈ ગયો છે. શરીરની

औषध करत हैं । तब माता कौं बहोत दुःख भयो, जो—मैं याहिके लिये पुत्र कां बाहिर नाहीं निकासती । अब मैं कहा करों ? पाछे वा मनुष्य सों कही, जो—एक डोली भाड़े करि लाओ, तुम मेरे संग चलो, तुमको दस रुपैया और देऊंगी । मोको मेरे पुत्र पास पहुँचाय देहु । तब वह डोली भाड़े करि लायो । तब वह माता हजार रुपैया ले डोली पर चली । सो गोवर्द्धन आय, पुत्र के पास जाय, पुत्र को हृदय सों लगाय रुदन कियो । पाछे भाई को खीझि के निकारि दियो । जो—तू मेरे पुत्र को बावरो कियो । पाछे अनेक गुनी उह माता ने बुलाये, परन्तु कन्हैया शाल आछे न भये । तब गोवर्द्धन के सगरे ब्रजवासिन सों पूछ्यो, कोई ऐसो महापुरुष बतावो, जो—मेरे पुत्र को आछो करे । तिनकी मैं दासी ह्वे के रहूँ । ता समय सद् पांडे गोवर्द्धन आये हे, आन्योर तें । तिनसों डोकरी ने पूछ्यो । तब सद् पांडे ने कही, हमारे गाम में श्रीआचार्यजी पधारे हैं । सो कितने ब्रजवासिन को परचो दे सरन लिये हैं । गोवर्द्धन पर्वत तें श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रगट किये हैं । सो श्रीआचार्यजी साक्षात् भगवान हैं । उनके मन में आवे तो यह कितनीक बात है । परन्तु हमारो नाम श्रीआचार्यजी महाप्रभु के आगे मति लीजों । तब वह डोकरी ने कही । तुम मोको अपने गाम में ले चलो, मैं विनती करि

सुध नथी. तारे बाध जत्र-मंत्र अनेक करे छे. औषध करे छे. तारे माताने बहु दुःख थयुं, के हुं आ माटे ज पुत्रने पहार नहोती काढती. हुवे हुं शु कइं ? पछी ते मनुष्यने कथुं, के अके डोली बाडे करी लावो. तमे भारी साथे यावो. तमने दश रुपैया पीअ आपीश. मने भारा पुत्र पासे पहांयावी हो. तारे ते डोली बाडे करी लाव्यो. तारे ते माता हुअर रुपैया लई डोली उपर यादी. ते गोवर्द्धन आवी पुत्रनी पासे जई पुत्रने हृदयथी लगाडी रुदन कथुं. पछी बाधने पीअने काढी भूक्यो, के ते भारा पुत्रने पहारो कर्यो. पछी अनेक गुणीने ते माताअे थोलाव्या, परंतु कन्हैयाशाल सारा न थया. तारे गोवर्द्धननाथ पधा ब्रजवासीअाने पूछ्युं, काई अवेो महापुरुष बतावो, के भारा पुत्रने सारे करे. तेमनी हुं दासी थधने रहूँ. ते समय सद् पांडे गोवर्द्धन आव्या हुता, आन्योरथी. तेमने डोकरीअे पूछ्युं. तारे सद् पांडेअे कथुं, अमारा गाममां श्रीआचार्यअे पधार्या छे अने डेटलाय ब्रजवासीअाने परचो दध शरणु दीधा छे. गोवर्द्धन पर्वतमांथी श्रीगोवर्द्धननाथअे प्रकट कर्या छे. तेथी श्रीआचार्यअे साक्षात् भगवान छे. अमना मनमां आवे तो आ ते थी वात छे ? परंतु अमाइं नाम श्रीआचार्यअे

लेंहुगी । तब सद् पांडे कहें, मेरे संग चलो । मैं अपुनें गाम जात हों । तब सात कन्हैया शाल कों डोली पर बैठारि आन्यौर आई । एक घर ब्रजवासी को ले ता कन्हैया शाल कों बैठारि द्वार को तारो लगायो । पाछे आयकें श्रीआचार्यजी क दंडवत करी । तब श्रीआचार्यजी कहें, जो-हम जान्यो डोकरी जाके लिये तू आ है । तातें अपुनें वेटा कों यहां बेगि लाउ, हम आछो करि देई । बहोत बात म करे । तब डोकरी कन्हैया शाल कों ले श्रीआचार्यजी के पास आई । तब श्रीआचार्यजी झारी में ते जल हाथ में ले वेद-मंत्र पढ़ि कन्हैया शाल के ऊपर छिरके सो कन्हैया शाल सावधान है गये । तब श्रीआचार्यजी कों दंडवत करि बिनती कीनी, महाराज ! मैं तो बहोत सुखी हतो, ब्रजकी गोवर्द्धन की, लीला में मगन हतो । तहाँ तें मोकों बाहिर आप क्यों निकासे ? आप तो अधिक दान देन अ प्रगटे हो । सो यह कहा कियो ? तब श्रीआचार्यजी कहें, उछलित रस, ऊपर क प्रेम एक दिन बहि जाय । तातें तोकों सावधान कियो । मीतर स्थिर प्रेम होय लीला रस को अनुभव होय, जगत में कोई जानें नाहीं । सो प्रेम को कबहूँ ना न होय । तब कन्हैया शाल ने बिनती करी, महाराज ! कृपा करि स्थिर प्रेम को

महाप्रभु आगण लईश नही. त्पारे ते डोशीअे कहुं, तमने मने तमारा गामम लध यालो. हुं विनंती करी लईश. तमारे नाम नही लई. त्पारे सद्पांडे कडे मारी संगे यालो. हुं मारा गाम जई छु. त्पारे माता कन्हैयाशालने डोली उपर येसाडी आन्यौर आवी. पछी अेक घर ब्रजवासीतुं लई तेमां कन्हैयाशालने येसाडी द्वारे ताहुं भायुं. पछी आवीने श्रीआचार्यअेने दंडवत् करी. त्पारे श्री आचार्यअे कडे, के अमे जलुयुं डोशी तू जने माटे आवी छे ते तारा पुत्रने अहीं लई आव. अमे सारे करी दधअे. पधारे वात न कर. त्पारे डोशी कन्हैयाशालने लधने श्रीआचार्यअे पासे आवी. त्पारे श्रीआचार्यअे अारीमांथी जल लध वेद-मंत्र लएणी कन्हैयाशाल उपर छांटयुं. अेटले कन्हैयाशाल सावधान थध गया. त्पारे श्रीआचार्यअेने दंडवत् करी विनती करी, महाराज ! हुं तो धये सुखी हुतो. ब्रजनी, गोवर्द्धननी, लीलामां मगन हुतो. त्यांथी मने अहार आपे केम काह्यो ? आप तो अधिक दान देवा माटे प्रकट्या छे. तेथी आ थुं क्युं ? त्पारे श्रीआचार्यअे कडे, उछलित रस उपरने प्रेम अेक दिवस वही जय. तेथी तने सावधान कर्यो, अदर स्थिर प्रेम होय, लीलासरसने अनुभव होय, तो जगतमां केई जणे नही. ते प्रेमने करी नाश थाय नही. त्पारे कन्हैयाशावे विनंती करी

दान करिये । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कन्हैया शाल कों न्हाय, श्रीगोवर्द्धन-
नाथजी के सन्मुख बैठाय, नाम निवेदन कराये । साक्षात् श्रीठाकुरजी की लीला
रस को अनुभव कराय दिये । पाछे कन्हैया शाल की माता कों नाम सुनाये । सो
श्रीआचार्यजी जितने छोटे ग्रंथ किये हते सो सब कन्हैया शाल कों पढ़ाये । पाछे
कन्हैया शाल सों कहें, अब तुम घर में जाय रस को अनुभव करो । अब तुमकों
संसार, लौकिक, वैदिक बाधा न करेगो । तब कन्हैया शाल की माता नें हजार
रूपैया मेट धरि विनती करी, जो-महाराज ! मोपर बड़ी कृपा करी । आप साक्षात्
पुरुषोत्तम हो । तुम विना मेरे पुत्र कों कौन आछो करें ? तब श्रीआचार्यजी कहें,
अब तू पुत्र कों लेके अपुने घर जा । तब कन्हैया शाल की माता नें श्रीआचार्यजी
सों विनती करी, महाराज ! एक वार आगरे मेरे घर पधारो तो आपकी बहोत
मेट हैं । सो अङ्गीकार करि गृह पावन करिये । तब श्रीआचार्यजी कहें, हम अडेल
पधारेंगे तब तुम्हारे घर आवेंगे । अब तुम घर जाऊ । तब कन्हैया शाल और
डोकरी दंडवत् करि, श्रीआचार्यजी सों विदा होय आगरे आये । सो कन्हैया
शाल तो लीला में मगन रहें । और डोकरी सगरो काम घर को करें । पाछे श्री-
आचार्यजी महाप्रभु आगरे पधारे तब कन्हैया शाल के घर उतरें । सगरे ग्रन्थ के

महाराज ! कृपा करीने स्थिर प्रेमनुं दान करे। त्पारे श्रीआचार्यजी महामुख्ये
कन्हैयाशालने नहुवडावी श्रीगोवर्द्धननाथजीना सन्मुख्ये साडी नाम-निवेदन कराव्युं.
साक्षात् श्रीठाकुरजीनी लीला रसने अनुभव करावी दीधे। पछी कन्हैयाशालनी
माताने नाम संखणव्युं। पछी श्रीआचार्यजीने जेटला नाना ग्रंथे कर्था हता ते
पधा कन्हैयाशालने बाणव्या। पछी कन्हैयाशालने कछुं, हुवे तमे धरमां जर्ध
रसने अनुभव करे। हुवे तमने संसार, लौकिक वैदिक पाधा नहीं करे। त्पारे
कन्हैयाशालनी माताये हुअर रुपैया मेट धरी विनती करी के, महाराज ! मारा
उपर मोटी कृपा करी। आप साक्षात् पुरुषोत्तम छे। तमारा विना मारा पुत्रने ठाणु
सारे करे ? त्पारे श्रीआचार्यजी कहे, हुवे तू पुत्रने लधने तारा धरे ज। त्पारे कन्है-
याशालनी माताये श्रीआचार्यजीने विनती करी, महाराज ! जेक वार आया मारा
धरे पधारो तो आपनी धणी मेट छे ते अंगीकार करी घर पावन करीजे। त्पारे
श्रीआचार्यजी कहे, अमे अडेल पधारीशुं। त्पारे तमारा धरे आवीशुं। हुवे तमे
धर जव। त्पारे कन्हैयाशाल अने डोशी दंडवत् करी श्रीआचार्यजी विदाय थर्ध
आगरामां आव्यां। त्यां कन्हैयाशाल लीलामां मगन रहेता अने डोशी धरनुं पधुं

भाव, लीला के भाव, पुष्टिमार्ग को सिद्धान्त कन्हैया शाल के हृदय में स्थापन किये । पांच रात्रि रहे । तब डोकरी नें बहुत भेट कियो, सो लेके अडेल पधारे ।

वार्ता प्रसंग १—सो श्रीगुसांईजी श्रीअक्काजी सों पूछयो, जो-मार्ग की वार्ता तो दामोदरदास द्वारा जानें । परन्तु श्रीआचार्यजी के ग्रन्थ कहां मिलें ? तब श्रीअक्काजी नें कही, आगरे में कन्हैयाशाल क्षत्री के पास ग्रन्थ हैं, तहां ते लेहु । तब श्रीगुसांईजी कन्हैयाशाल क्षत्री के घर पधारे । तब कन्हैयाशाल परम प्रीति सों श्रीगुसांईजी कों पधराये । पाछें श्रीगुसांईजी कन्हैयाशाल पास श्रीआचार्यजी के सारे ग्रन्थ पढ़े । पाछे श्रीगुसांईजी ग्रन्थन की टीका करि कन्हैयाशाल कों कृपा करि पढ़ाये ! पाछे श्रीगुसांईजी आपुनें ग्रन्थ, दान लीला, हुल्लास, ब्रतचर्या आदि रहस्य ग्रन्थ किये हते, सो कन्हैयाशाल कों पढ़ाये । और कन्हैयाशाल कों श्रीगुसांईजी दंडवत न करन देते । कहेते, तुम्हारे हृदय में श्रीआचार्यजी विराजत हैं । या प्रकार श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी की अत्यंत कृपाते कन्हैयाशाल संयोग रस विप्रयोग रस दोऊ लीला के रस में मगन रहते । पाछें श्रीगुसांईजी अडेल पधारे ।

काम करे. पछी श्रीआचार्यजी महाप्रभु आगरा पधार्या. त्यारे कन्हैयाशासन धरे उतर्या. पधा अथने भाव, लीलाने भाव, पुष्टिमार्गने सिद्धान्त, कन्हैयाशासन हृदयमां स्थापन कर्या. पांच रात्रि रह्या त्यारे डोशीअ धर्या भेट करी ते लघने अडेल पधार्या.

वार्ता-प्रसंग १-पछी श्रीगुसांईजी श्रीअक्काजी पूछ्युं, के मार्गनी वार्ता तो दामोदरदास द्वारा जानी, परंतु श्रीआचार्यजीना अथ क्यां भणे ? त्यारे श्रीअक्काजीअ कहुं, आगरामां कन्हैयाशास क्षत्रीनी पास अथ छे त्यांथी ते ले. त्यारे श्रीगुसांईजी कन्हैयाशास क्षत्रीने धरे पधार्या. त्यारे कन्हैयाशास परम प्रीतिथी श्रीगुसांईजीने पधराव्या पछी श्रीगुसांईजी कन्हैयाशास पास श्रीआचार्यजीना पधा अथ लख्या. पछी श्रीगुसांईजीअ अथानी टीका करी कन्हैयाशासने कृपा करी लख्या. पछी श्रीगुसांईजीअ पोताना अथ दानलीला हुल्लास, ब्रतचर्या आदि रहस्यअथ कर्या हुता ते कन्हैयाशासने लख्या. पछी कन्हैयाशासने श्रीगुसांईजी अंडवत करवा न देता. कहेता, तमारा हृदयमां श्रीआचार्यजी विराजे छे. या प्रकार श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीअ अत्यंत कृपाथी कन्हैयाशास संयोगरस विप्रयोगरस अने लीलाना रसमां मगन रहेता. पछी श्रीगुसांईजी अडेल पधार्या.

भावप्रकाश—पाछे कन्हैया शाल की माता की देह छूटी । तब कन्हैया शाल कहें, यहू प्रतिबंध मिट्यो । छिन छिन में खानपान को प्रतिबंध करती । तबते कन्हैयाशाल कों सरीरकी सुधि होय तब खान पान करें । नाहीं तो वैसे ही बैठे रहें ।

वार्ताप्रसंग २—पाछें एक समय श्रीगुसाईंजी अडेल तें आगरे पधारे सो कन्हैया शाल के घर उतरे । तब कन्हैया शाल सों कहें हम द्वारिका पधारेंगे । तब कन्हैया शाल नें कही, मैं हू पाछें ते आय कें आपके दरसन करूंगो । तब श्रीगुसाईंजी कहें, तुम कौन भांति आवोगे ? वैष्णव विना तो और सों बोलत नाहीं, मार्ग दूरि हैं । तब कन्हैया शाल नें कही, मेरे और सों काहे कों बोलनो परेगो ? मैं आपके पाछे आऊंगो । तब श्रीगुसाईंजी कहें । तुम्हें कृपा को बल है । जो-चाहो सो करो । पाछे श्रीआचार्यजी के ग्रन्थन की वार्ता कन्हैया शाल पास दोय दिन श्रीगुसाईंजी करें । पाछें आप तो द्वारिका पधारे । सो एक दिन कन्हैया शाल के मनमें आई, जो-द्वारिका जैये, श्रीगुसाईंजी सों मिलियें । सो निकसि चले, सो मार्ग की ठीक नाहीं । काहू सों बोले नाहीं । सो तीनि दिन चले गये । सो एक वन में जाय निकसैं । तहां सघन वन, जल नाहीं । तब विचारे, जो-देह छूटेगी । तब श्रीआचार्यजी के ग्रन्थ एक रूख के नीचें बैठिकें पाठ करन लागें ।

भावप्रकाश—पछी कन्हैयाशालनी मातानी देह छुटी. तारे कन्हैयाशाल कहे, या पणु प्रतिबंध मट्यो. क्षण क्षणमां खानपाननो प्रतिबंध करती. तारथी कन्हैयाशालने शरीरनी सुध होय तारे खान पान करे, नहीं तो जैसे ही बैठे रहे.

वार्ता-प्रसंग २—पछी एक समय श्रीगुसाईंजी अडेलथी आया पधार्या. त्यां कन्हैयाशालना घरे उतर्या. तारे कन्हैयाशालने कहे, अमे द्वारिका पधारीशुं. तारे कन्हैयाशाले कहुं, हुं पणु पाछणथी आवीने आपनां दर्शन करीश. तारे श्रीगुसाईंजी कहे, तमे कथरीते आवशा? वैष्णव विना तो कोठथी भोसता नथी. मार्ग लागे छे. तारे कन्हैयाशाले कहुं, मारे भीजथी शा माटे भोसतुं पडशे? हुं तो आपनी पाछण आवीश. तारे श्रीगुसाईंजी कहे, तमने कृपातुं भल छे. जे आहो ते करे. पछी श्रीआचार्यजीना ग्रन्थनी वार्ता कन्हैयाशाल पास जे दिवस श्रीगुसाईंजीये करी. पछी आप तो द्वारका पधार्या. पछी एक दिवस कन्हैयाशालना मनमां आव्युं, के द्वारका जैये, श्रीगुसाईंजीने भणीये. ते निकणी आल्या पणु मार्गतुं ज्ञान नही. कोठथी भोसते नही. ते तणु दिवस आल्या गया. ते एक वनमां जठ निकल्या, त्यां सघन वन जल नहीं. तारे विचारुं के देह छूशे. तारे श्रीआचार्यजीना ग्रन्थना

इतने में एक ग्वारिया आयकें कह्यो, जो-यहां तू क्यों बैठ्यो है। यहां स्याप, नाहर को डर है। तब कन्हैयाशाल नें कही, मैं श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को सेवक हों। सो स्याप, नाहर तो मेरे पास कोई आवें नाहीं। तब ग्वारिया नें कही, तलाब तेरे पाछें हैं, जल तो पी। तब पीछे देखे तो जल भरयो है। सो जल पीवन लागे। तब दूसरो ग्वारिया महाप्रसाद श्रीनाथजी को सखड़ी, अनसखड़ी ले आय कह्यो, यह महाप्रसाद तू ले। तब कन्हैयाशाल नें कही, महाप्रसाद कहां को है? मैं तो घर को लेहूं के श्रीगुसांईजी के यहां को लेहूं। और को महाप्रसाद तो लेत नाहीं। तब ग्वारिया नें कही, यह श्रीनाथजी को महाप्रसाद है। तू कहा श्रीरणछोडजी के ऊपर हत्या देवें कों निकस्यो है? इतनो हठ करत है? तब महाप्रसाद देखें, सो श्रीनाथजी को जानि महाप्रसाद कों दंडवत करि, लियो। पाछे तीसरो ग्वारिया आय कह्यो यहां आय बैठ्यो कहा करत हैं? श्रीरणछोडजी के दरसन कों जा। तब पाछें फिरिकें देखे तो श्रीरणछोडजी को मंदिर दीमत है। तब कन्हैया शाल नें कही, उहां श्रीगुसांईजी पधारे होंहि तो जाऊ। तब ग्वारिया नें कही, मोकों श्रीगुसांईजी नें पठायो है, तोकों संदेसो कहन कों। सो तू बेगि जा। तब कन्हैया शाल श्रीरण-

अक वृक्ष नीचे भेसीने पाठ करवा लाग्या। अरलाभां अक गोवाणीयो आवीने कहे, अहीं तू केम भेडा छे? अहीं साप, वाघ, ना डर छे। त्यारे कन्हैयाशाले कहुं, हु श्रीआचार्यल महाप्रभुलना सेवक छुं। साप, वाघ, भारी पास केध आवे नहीं। त्यारे गोवाणीये कहुं, तलाव तारी पाछण छे जल तो पी। त्यारे पाछण लुये तो जल लरुं छे। जल पीवा लाग्या। त्यारे भीजे गोवाणीयो श्रीनाथलना सखड़ी, अनसखड़ी महाप्रसाद लधने आव्यो। कहुं, आ महाप्रसाद तू ले। त्यारे कन्हैयाशाले कहुं, महाप्रसाद क्यांनो छे? हुं तो घरनो लठ के श्रीगुसांईलने त्यांनो लठ। भीजनो महाप्रसाद लेतो नथी। त्यारे गोवाणीये कहुं, आ श्रीनाथलना महाप्रसाद छे। तू शुं श्रीरणछोडल उपर हत्या दवाने निकलयो छे? आरली लठ करे छे? त्यारे महाप्रसाद लुये तो श्रीनाथलना जाली महाप्रसादने दंडवत करी, दीघो। पछी त्रीजे गोवाणीयो आव्यो ने कहुं, अहीं आवीने भेसीने शुं करे छे? श्री रणछोडलना दर्शन ज। त्यारे पाछण इरीने लुये तो रणछोडलनुं मंदिर देवाय छे। त्यारे कन्हैयाशाले कहुं, त्यां श्रीगुसांईल पधार्या होय तो लठ। त्यारे गोवाणीये कहुं, मने श्रीगुसांईलये मोकदयो छे। तने संदेशो कहेवाने तेथी तू जहदी ज। त्यारे कन्है-

छोड़जी के मन्दिर में गये, श्रीगुसाईंजी पास । तब श्रीगुसाईंजी आप कहें, कन्हैया शाल आये ? मार्ग में काहू सों बोले कें नाहीं ? तब कन्हैया शाल कहें, महाराज ! मेरे और सों बोलिवे को कहा काम है ? तब श्रीगुसाईंजी कहें, तुम तीन ग्वारिघान सों बोले, (ताते) एसें क्यों कहत हो ? तब कन्हैया शाल नें कही, महाराज ! मेरी बानी आप बिना और काहू सों निकसें ही नाहीं । तीनों ग्वारिघान को स्वरूप, आप बिना मोंकों वन में सखड़ी अनसखड़ी महाप्रसाद कौन धरे ? और के हाथ को मैं लेऊँ कैसें ? यह सब आप की कृपा है । तब श्रीगुसाईंजी कन्हैया शाल को हाथ पकरि कें श्रीरणछोड़जी के दरसन कराये । सो कन्हैया शाल कों श्रीगोवर्द्धनधर के दरसन भये । तब कन्हैयाशाल सों श्रीगुसाईंजी कहें । जो-श्रीरणछोड़जी के दरसन किये । तब कन्हैयाशाल नें कही, आपकी कृपा तें श्रीगोवर्द्धनधर नैनन लागि रहे हैं । सो श्रीगोवर्द्धनधर के दरसन भये ।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो-कन्हैया शाल कों ब्रजलीला विना और में मन जाय ही नाहीं ।

तब श्रीगुसाईंजी कन्हैयाशाल कों अपने डेरा पर लाय कहें, अब तुम हमारे संग आगरे चलियो । तब कन्हैयाशाल ने कही, म-

याशाल श्रीरञ्जुछोड़लना मन्दिरमां गया, श्रीगुसांछल पास. त्पारे श्रीगुसांछल आप कहे, कन्हैयाशाल आप्या ? मार्गमां कोधथी पोदया के नहीं ? त्पारे कन्हैयाशाल कहे, महाराज ! मारे भीजथी पोदवानुं शुं काम छे ? त्पारे श्रीगुसांछल कहे, तमे त्रञ्जु गोवाणीआओधी पोदया तेथी ओम केम कहे छे ? त्पारे कन्हैयाशाले कहुं, महाराज ! मारी वाणी आपना विना भीज कोध आगण निकेज नहीं. त्रञ्जु गोवाणीआना स्वये आपना विना मने वनमां सभडी, अनसभडी, कोषु धरे ? भीजना हाथनुं हुं केवी रीते लउ ? आ ओधी आपनी कृपा छे. त्पारे श्रीगुसांछलओ कन्हैयाशालने हाथ पकडीने श्रीरञ्जुछोड़लनां दर्शन कराव्यां. ते कन्हैयाशालने श्रीगोवर्द्धनधरनां दर्शन थयां. त्पारे कन्हैयाशालने श्रीगुसांछल कहे, के श्रीरञ्जुछोड़लनां दर्शन कर्यां ? त्पारे कन्हैयाशाले कहुं, आपनी कृपाथी श्रीगोवर्द्धनधर नेत्रोमां लागी रखा छे. ते श्रीगोवर्द्धनधरनां दर्शन थयां.

भावप्रकाश—ओमां ओ जणायुं, के कन्हैयाशालनुं मणलीला विना भीजमां मन जय नही.

वार्ता-प्रसंग १-त्पारे श्रीगुसांछल कन्हैयाशालने पोताना मुदामे लावीने कहे,

હારાજ ! આપતો દેવી જીવન કોં અંગીકાર કરન કોં પધારે હો, સો આપુકોં ઢીલ લાગેગી । ઐર મોકોં અકેલે બહોત સુહાત હૈં । તાતેં આપકી કૃપા તેં આગરે જાય પહોંચોંગો । તબ શ્રીગુસાંઈજી કહેં, જો-તુમકોં શ્રીઆચાર્યજી કી કૃપા કો બલ હૈ । જો કરોગે સોઈ તુમકોં ઠીક હૈ । પાછે કનહૈયાશાલ શ્રીગુસાંઈજી સોં આજ્ઞા માંગી આગરે કોં ચલે । સો ભગવદાવેસ મેં દોય દિન ચલે ગયે । સો આગેં છાઢી સઘન આઈ, તહાં માર્ગ ન પાવેં । તહાં એક રૂઝ કે નીચે બેઠિ ગયે । તહાં શ્રીઆચાર્યજી કે ગ્રન્થ શ્રીગુસાંઈજી કૃત ટીકા તથા રહસ્ય ગ્રન્થ દેખન લાગે । તબ એક ગ્વારિયા આય કહ્યો । તૂ યહાં ક્યોં બેઠ્યો હૈ । શ્રીયમુનાજી મેં સ્નાન કરનો હોય, જલપાન કરનો હોય, તો કરિકેં અપુને ઘર જા । તબ કનહૈયાશાલ કી દૃષ્ટિ પોથી પર હી, સો ઝૂંચી દ્રષ્ટિ કરિકેં દેખેં તો શ્રીયમુનાજી ઐર આગરો સહેર હૈ । તબ શ્રીયમુનાજી મેં સ્નાન કરિ, જલપાન કરિ, પાઠ પૂજન કરિ ઘર આયે । પાછે શ્રીગુસાંઈજી દ્વારિકા તેં કહ્યુક દિનમેં આપ આગરે પધારે । તબ કનહૈયાશાલ સોં પૂછે, તુમ આગરે કૈ દિન મેં ઐર કૈસે આયે ? તબ કનહૈયાશાલ ને કહી, મોકોં તો ખબરિ નાહીં । આપહી મોકોં દ્વારિકા લે ગયે ઐર આપહી આગરે પહુંચાયે, ઇતનો મેં જાનત હોં । તબ શ્રીગુ-

હવે તમે અમારી સાથે આપ્યા ચાલો. ત્યારે કનહૈયાશાલે કહ્યું, મહારાજ ! આપ તો દેવી જીવનને અંગીકાર કરવા પધાર્યા છો. તેથી આપને વાર લાગશે. વળી મને અકેલામાં ઘણું ગમે છે. તેથી આપની કૃપાથી આપ્યા જઈ પહોંચીશ. ત્યારે શ્રીગુસાંઈજી કહે, કે તમને શ્રીઆચાર્યજીની કૃપાતું ખત છે. જે કરશો તેજ તમને ઠીક છે, પણ કનહૈયાશાલ શ્રીગુસાંઈજીથી આજ્ઞા માંગી આગરાએ ચાલ્યા. તે ભગવદાવેશમાં જે દિવસ ચાલ્યા ગયા આગળ ઝાઢી સઘન આવી ત્યાં માર્ગ ન મળે, ત્યાં એક વૃક્ષ નીચે ખેસી ગયા. ત્યાં શ્રીઆચાર્યજીના ગ્રન્થ શ્રીગુસાંઈજીકૃત ટીકા તથા રહસ્ય ગ્રન્થ દેખવા લાગ્યા. ત્યારે એક ગોવાળીએ આવી કહ્યું, તૂ અહીં કેમ ખેઠા છો ? શ્રીયમુનાજીમાં સ્નાન કરવું હોય, જલપાન કરવું હોય તો કરીને તારે ઘરે જા, ત્યારે કનહૈયાશાલની દૃષ્ટિ પોથી ઉપરહુતી તે ઉંચી દૃષ્ટ કરીને જુએ તો શ્રીયમુનાજી અને આપ્યા શહર છે. ત્યારે શ્રીયમુનાજીમાં સ્નાન કરી જલપાન કરી પાઠપૂજન કરી ઘર આવ્યા. પણ શ્રીગુસાંઈજી દ્વારિકાથી થોડા દિવસમાં આપ આપ્યા પધાર્યા. ત્યારે કનહૈયાશાલને પૂછ્યું, તમે આપ્યા કેટલા દિવસમાં અને કેવી રીતે આવ્યા ? ત્યારે કનહૈયાશાલે કહ્યું, મને તો ખબર નથી. આપજ મને દ્વારિકા લઈ ગયા અને આપેજ આપ્યા પહોંચાડ્યો એટલું

साईंजी प्रसन्न होयकें तीन दिन कन्हैयाशाल के घर रहे । भगवद वार्ता करि बहोत प्रसन्न भये । पाछें श्रीगुसाईंजी अडेल पधारे । कन्हैयाशाल कों लौकिक वैदिक जब सरीर की सुधि होय तब करे । परन्तु पाछें कछु सुधि न रहें । लीला रस में मगन रहते । सो कन्हैयाशाल की ऐसी लोक वेद विरुद्ध बात हैं । सो कही न जाय ।

भावप्रकाश—काहेतें, कहिये तो लोगन कों श्रीठाकुरजी की लीला के भाव की खबरि नाही है, तातें उनकों विश्वास न होय । तातें प्रकास नाही किये । प्रेम की रीति अटपटी हैं । सो सूरदासजी नें गायो है—

राग सारंग—ब्रज लीला कोऊ पार न पायो ।

ब्रह्मा, शेष, महेश, नारायण मति ही भुलायो ॥१॥

वेद स्मृति सुनि हरि ही मिलन बहु मारग घतायो ।

गोपीजन निज मारग “सूर” न्यारो दिखरायो ॥२॥

तातें कन्हैयाशाल ऐसे श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हे । इनकी वार्ता कहां ताई कहिये । वार्ता ॥७०॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को सेवक, नरहरदास गोडिया ब्राह्मण, वंगाला के, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो नरहरदास वंगाला में प्रगटे । लीला में ये कुमारिका

हुं लखुं छुं. त्यारे श्रीगुसांभल प्रसन्न थधने त्रलु द्विपस कन्हैयाशालना घरमां रह्या. भगवद्वार्ता करी अहुन प्रसन्न थया. पछी श्रीगुसांभल अरुस पधार्या. कन्हैयाशालने लौकिक वैदिक न्यारे शरीरनी सुधि होय त्यारे करे. ते कन्हैयाशालनी अेवी लोक-वेद विरुद्ध बात छे ते कही न जाय.

भावप्रकाश—कभंके, कहीअे तो लोकाने श्रीठाकुरलनी लीलाना लावनी अप्पर नथी तेथी अेमने विश्वास न थाय. तेथी प्रकाश नथी कर्यो. प्रेमनी रीत अटपटी छे, ते सूरदासलअे गायुं छे— ‘ब्रजलीला कोऊ पार न पायो’ (उपर लुअे).

वार्ता-प्रसंग १-तेथी कन्हैयाशाल अेवा श्रीआचार्यलना कृपापात्र भगवदीय हुता. अेमनी वार्ता क्यां सुधी कहीअे ? वार्ता ॥ ७० ॥

✽

✽

✽

हुवे श्रीआचार्यल महाप्रभुलना सेवक नरहरदास गोडीया ब्राह्मण अंगालाना तेमनी वार्ताना लाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे नरहरदास अंगालामां प्रकट्या. लीलाभां अे कुमारिकाना

કે જૂથ મેં હૈં । તહાં ઇનકો નામ 'સુગંધરા' હૈં । સો પૂર્વ મેં જવ વડે ભયે તવ નરહર-
 દાસ કી પ્રીતિ શ્રીજગન્નાથરાયજી મેં લગી । સો ઇક સમય વર્ષ દિન જગન્નાથ-
 રાયજી મેં લગે રહે, પાછે ઘર ગયે । તવ પિતાને કહી, ઘેટા ! મૈં તો અવ વૃદ્ધ ભયો ।
 તૂ જિજમાન પાસ જાત નાહીં । મેરે મરે પાછે કહાંતે સ્વાયગો ? તૂ વેર વેર શ્રીજગ-
 ન્નાથરાયજી કે દરસન કૌં જાત હૈં । કહ્લ જગન્નાથરાયજી દેત હૈં ? તવ નરહરદાસ
 નેં કહી, જગન્નાથરાયજી સગરે જગત કૌં દેત હૈં, સો મોહૂં કૌં દેત હૈં । આજુ પાછે
 તૂ મોકોં કહ્લ મતિ દીજો, દેરવોં જગન્નાથરાયજી મેરો પાલન કરત હૈં કે નાહીં ।
 તવ નરહરદાસ કે પિતા ને કહી, જો-જગન્નાથરાયજી સવકોં દેત હૈં તો મેટ પૂજા
 ક્યોં લેત હૈં ? સવ લેવે વારે હૈં । દેવે વારો કોઈ ઠાકુર નાહીં હૈં । જવ મૈં તોકોં
 સ્વરચી દેત હોં, તવ તૂ જાય શ્રીજગન્નાથરાયજી કો દરસન કરત હૈં । જો મૈં ન
 દેઝંગો તો મીસ માંગેગો । તવ નરહરદાસ કૌં બહોત ક્રોધ ચઢ્યો । સો પિતા સોં
 કહી, તૂ ભગવાન કો નિંદક હૈં । તારેં આજુ પાછેં તેરો કહ્લ લેહુંગો નાહીં । ઔર
 તેરે ઘરમેં ન રહુંગો । તેરો મુખ દેરવનો ઁચિત નાહીં હૈં । તૂ ઁસી વાત કહ્યો, જો-
 મ્લેચ્છ હૂ ઁસી વાત ન કહેં । યહ કહિ ઘરસોં ઁઠિ ચલે । તવ પિતા નેં બહોત
 સમુદ્ધાયો, બિનતી હૂ કરી, જો-મૈં ચૂક્યો । પરન્તુ નરહરદાસ દૈવી જીવ હૈં । સો

યૂથમાં છે. સાં એમનું નામ 'સુગંધરા' છે. એ પૂર્વમાં જ્યારે મોટા થયા ત્યારે
 નરહરદાસની પ્રીતિ શ્રીજગન્નાથરાયજીમાં લાગી. પછી એક સમય વર્ષ દિન જગ-
 ન્નાથરાયજીમાં લગાતાર રહ્યા. તે પછી ઘર આવ્યા. ત્યારે પિતાએ કહ્યું, ઘેટા !
 હું તો હવે વૃદ્ધ થયો. તૂ યજમાનો પાસે જતો નથી તો મારા મર્યા પછી ક્યાંથી
 આઈશ ? તૂ વારે વારે જગન્નાથરાયજીનાં દર્શને જાય છે, કંઈ જગન્નાથરાયજી આપે
 છે ? ત્યારે નરહરદાસે કહ્યું, જગન્નાથરાયજી બધા જગતને આપે છે, તે મને પણ
 આપે છે. આજ પછી તૂ મને કંઈ આપીશ નહીં. જો જગન્નાથરાયજી મારૂ પાલન
 કરે છે કે નહીં ? ત્યારે નરહરદાસના પિતાએ કહ્યું, કે જગન્નાથરાયજી બધાને આપે
 છે તો ભેટ પૂજા કેમ લે છે ? બધા લેવાવાળા છે આપવાવાળો કોઈ ઠાકુર નથી.
 જ્યારે હું તને ખર્ચી આપું છું ત્યારે તૂ જઈને શ્રીજગન્નાથરાયજીનાં દર્શન કરે છે.
 જો હું ન આપું તો ભીખ માગીશ. ત્યારે નરહરદાસને બહુ ક્રોધ ચઢ્યો તેથી પિતાને
 કહ્યું, તૂ ભગવાનનો નિંદક છે તેથી આજ પછી તારું કંઈ લઈશ નહીં અને તારા
 ઘરમાં નહીં રહું. તારૂ મુખ એવું ઉચિત નથી. તે એવી વાત, કહી ? જ મ્લેચ્છ
 પણ એવી વાત ન કહે. એમ કહી ઘરથી ઉઠી ચાલ્યા ત્યારે પિતાએ ઘણો સમજાવ્યો.

श्रीठाकुरजी की निन्दा सुनी न गई । सो जगन्नाथरायजी के दरसन आय करे । परन्तु कछु पास नाहीं । तव समुद्र के तीर जाय बैठे । मनमें विचारयो, जो-अब काहुसों मांगनों नाहीं । मांगि कें निर्वाह करूंगो तो मेरो पिता कवहूँ आवे, तथा घरही में सुने तो कहेगो, जो-मैं कही सो भई । तातें, जो-जगन्नाथरायजी देयंगे तो खाऊंगो । नाहीं तो होनहार होयगी सो सही । पाछे रात्रि भई तव श्रीजगन्नाथरायजी महाप्रसाद लें एक बालक वर्ष सोरह को भेख करि आय कहें, ब्राह्मण ! महाप्रसाद ले । तव नरहरदास ने कही, मैं महाप्रसाद की अबज्ञा कैसे करूँ, दे जाऊ । परन्तु मोकों तो श्रीजगन्नाथरायजी देहीगे तव ही लेहुँगो । यह मन में निर्द्धार कियो हँ । तव (उन) कहे, श्रीजगन्नाथरायजी देत हँ । और कौन देत हँ ? उनकी इच्छा विना कौन तोकों यहां देन आवेगो ? तव प्रसन्न होय महाप्रसाद लियो । आप तो पधारे । पाछे नरहरदास सोयो । तव श्रीजगन्नाथरायजी ने कही, तू प्रातःकाल श्रीआचार्यजी के पास जाय सेवक होउ । सो तेरो सगरो मनोरथ पूर्ण होयगो । तव नरहरदास ने कही, मैं तो श्रीआचार्यजी कों पहिचानत नाहीं, कहां जाऊँ ? तव श्रीजगन्नाथरायजी कहें, श्रीवल्लभाचार्यजी प्रसिद्ध हँ । जासों

विनती पणु करी, के हुं यूँयो. परंतु नरहरदास देवी एव छे. तेथी श्रीठाकुरजीनी निंदा सांभणी न गर्ध. पछी श्रीजगन्नाथरायनां आवीने दर्शन कर्यां, परंतु कंध पासे न हतुं. तेथी समुद्रना किनारे नर्ध पेडा. मनमां वियायुं, के हुवे टाधथी मांगवुं नहीं. मांगीने निर्वाह करीश तो भारे पिता क्यारेक आवे तथा घरमां सांभणे तो कहेरी के में कछुं ते थयुं. तेथी जे जगन्नाथरायए देशे तो पार्धश. नहीं तो थवा काण हुशे ते अइं. पछी रात्रि थर्ध त्यारे श्रीजगन्नाथरायए महाप्रसाद लर्ध अेक सोण वर्षना पाणकनुं इप धरी आवी कहे, ब्राह्मण ! महाप्रसाद ले. त्यारे नरहरदासे कछुं, हुं महाप्रसादनी अबज्ञा केम कइं ? के अब. परंतु मने तो श्रीजगन्नाथरायए देशे त्यारे न लर्धश अेवो मनमां निश्चय कर्यां छे. त्यारे (तेणु) कछुं, श्रीजगन्नाथरायए के छे, पीजे टाणु के छे ? अेमनी इच्छा विना टाणु तने अहीं देवा आवे ? त्यारे प्रसन्न थर्ध प्रसाद लीधो. (पछी) आप तो पधार्यां. पछी नरहरदास सोया. त्यारे जगन्नाथरायए अे कछुं, तू प्रातःकाल श्रीआचार्य-एनी पासे नर्ध सेवक थन. तारे अधो मनोरथ पूणु थरी. त्यारे नरहरदासे कछुं, हुं तो श्रीआचार्यएने अेणअतो नथी. क्यां नर्ध ? त्यारे श्रीजगन्नाथरायए कहे, श्रीवल्लभाचार्यए प्रसिद्ध छे नने पूछीश ते तने अतावरी. अे माइं. स्वइप आ-

पूछेगो सोई तोकों बतावेगो । सो मेरो स्वरूप श्रीआचार्यजी कों जानियो । तब प्रातःकाल नरहरदास उठिकें पूछत पूछत जाय श्रीआचार्यजी पास दंडवत् किये । तब श्रीआचार्यजी कहैं आज, नरहरदास ! तोकों ऐसी ही टेक चाहिये । जो-पिता कों तिरस्कार करि आयो । आगे प्रहलादजी हूँ पिता कों कह्यो नाहीं किये । ताते तेरो नाम अब नरहरदास ठीक भयो । परन्तु तू पुष्टिमार्गीय दैवी जीव परम उत्तम हैं । तब नरहरदास जानें, जो-ये साक्षात् ईश्वर हैं । मेरे पिता की सगरी बात कहि दीनी । तब नरहरदास ने विनती करी, जो-महाराज ! मोकों सेवक करिये । तब श्रीआचार्यजी कहैं, जो-अबही तेरो चित्त द्रव्य में हैं । तातें भगवद् नाम अब ही तोकों फलेगो नाहीं । तातें तू जायके समुद्र के तीर बैठि, समुद्र की लहरि में तोकों द्रव्य मिलेगो । ता द्रव्य तें जो मनोरथ श्रीजगन्नाथरायजी को विचारयो है सो पूर्ण करो । पाछे सरनि लेंयगे, तू हमारो है । तातें अब तोकों संसार दुःख बाधा न करेगो । तब नरहरदास ने कही, महाराज ! द्रव्य में मेरो मन बहोत है, सो जस करिवे कों । जो-मन मान्यो खरचूं, पिता हूं सुनिकें लाज पावें । जो जगन्नाथरायजी ऐसे ठाकुर हैं । तब श्रीआचार्यजी कहैं, जो-जा, समुद्र किनारें तेरो मनोरथ पूरन होयगो । तब नरहरदास जहां कोई न हतो । तहां जाय समुद्र के किनारे बैठें ।

आर्यजुने आर्यजु. तारे प्रातःकाल नरहरदास उठीने पूछता पूछता अर्थ आचार्यजु पासे दंडवत् कर्या. तारे श्रीआचार्यजु कहे, आवो नरहरदास ! तने अवी अ टेक अर्थ अ पिताने तिरस्कार करी आव्यो. आगण प्रह्लादजु पशु पितातु कहुं न्होतुं मान्यु. तेथी ताइ नाम हुवे नरहरदास अइ थयुं. परंतु तू पुष्टिमार्गीय दैवी अ परम उत्तम अ. तारे नरहरदासे आर्यजु, के आ साक्षात् ईश्वर अ. मारा पितानी अधी वात कही दीधी. तारे नरहरदासे विनंती करी, के महाराज ! मने सेवक करे. तारे श्रीआचार्यजु कहे, के अणु ताइ चित्त द्रव्यमां अ. तेथी हमणां तने भगवद् नाम इलसे नहीं. तेथी तू अघने समुद्रना किनारे असे. समुद्रनी लहे-रमां तने द्रव्य मणसे. ते द्रव्यथी अ मनोरथ श्रीजगन्नाथरायजुने विचार्यो अ ते पूर्ण करे. पछी शरणु लर्थुं ? तू अमारो अ. तेथी हुवे तने संसार दुःख बाधा नहीं करे. तारे नरहरदासे कहुं, महाराज ! द्रव्यमां माइ मन अहु अ. ते अश करवाने, के मन-मान्युं अर्युं. पिता पशु सांभणीने लल्ल पासे, के जगन्नाथ-रायजु आवा ठाकुर अ. तारे श्रीआचार्यजु कहे, के अ, समुद्र किनारे तारे मनो-रथ पूर्ण थसे. तारे नरहरदास अयां काई न हतो त्यां अर्थ समुद्रना किनारे अहा.

लहरि में सोना, रूपा, हीरा, मोती आदि नरहरदास के आगें ढेर भयो । सो पोट वांधि मन में प्रसन्न होय श्रीआचार्यजी पास आय, दिखाय कह्यो, जो-महाराज ! आपुकी कृपा तें द्रव्य तो बहोत मिलौ । तब श्रीआचार्यजी कहें, जो-जाऊ, श्रीजगन्नाथरायजी को मनोरथ करो । तब नरहरदास नें कही, महाराज ! मैं द्रव्य ले जाय खरचों तो, मोकों गरीब सब जानत हैं, सो राजा दंड दे तो मैं कहा करूँ ? तब श्रीआचार्यजी कहें, हमारो नाम लीजो, कोई न दंडेगो । तब नरहरदास नें कही, महाराज ! यामें तें कछु आप राखो । तब श्रीआचार्यजी कहें, यह श्रीजगन्नाथरायजी को द्रव्य है, सो श्रीजगन्नाथरायजी को मनोरथ करो । यह हमारे काम न आवे । हमारे तो जो कोई हमारो सेवक होय, खरी मजूरी को द्रव्य होय सो हम अंगीकार करत हैं । तब नरहरदास एक जगा ले, तहां सुनार, दरजी वजाज बुलायें । अनेक वागा, वस्त्र, आभूषण, रसोई की सामग्री श्रीजगन्नाथरायजी कों क्रियो । गाम में कोई भूखो न रहें । पंडान कों दीनों । सो सगरे चक्रत ह्ये गये । जो आगे तो नरहरदास गरीब हतो । अब ऐसो द्रव्य कहां ते ले आयो ? जो पूछे तिनसों नरहरदास कहें, श्रीआचार्यजी ने दियो हैं, मनोरथ करन कों । पाछे राजा सुनिके आयो, सो कह्यो, जो-तें इतनो द्रव्य कहां पायो ? तब नरहरदास नें कही,

पछी तरंगमां सोना, रूपा, हीरा, मोती आदिनो नरहरदास आगण ढगयो थयो. ते गांठ बांधी मनमां प्रसन्न थई श्रीआचार्यजी पासे आवी देखाडी कछुं, ठ महाराज ! आपनी कृपाथी द्रव्य धरुं भयुं. त्पारे श्रीआचार्यजी कहे, ठ अब श्रीजगन्नाथरायजीनो मनोरथ करे. त्पारे नरहरदासे कछुं, महाराज ! हुं द्रव्य लई भरयुं तो भने पधा गरीब नखे छे तेथी राज दंड दे तो हुं थुं कइं ? त्पारे श्रीआचार्यजी कहे, अभाइ नाम लेज. ठाई नडीं दंडे. त्पारे नरहरदासे कछुं, महाराज ! अभांथी दंड आप राखो. त्पारे श्रीआचार्यजी कहे, आ श्रीजगन्नाथरायजीनुं द्रव्य छे. तेथी श्रीजगन्नाथरायजीनो मनोरथ करे. आ अभारे काम न आवे. अभारे तो न ठाई अभारे सेवक होय, पारी मजूरीनुं द्रव्य होय तेने अमे अंगीकार करीअे छीअे. त्पारे नरहरदासे अक जगा लई त्यां सोनी, दरज, काप-डीअाने पोखान्या अने वागा, वस्त्र, आभूषण, रसोईनी सामग्री, श्रीजगन्नाथरायजीनी करी गाममां ठाई भूषयो न रहे. पंडाअाने आयुं. पधा अकित थई रखा, ठ आगण तो नरहरदास गरीब हतो. हुवे आठवुं द्रव्य अ्यांथी लाअयो ? न पूछे तेने नरहरदास कहे, श्रीआचार्यजीअे आयुं छे मनोरथ करवाने. पछी राज

श्रीआचार्यजी मनोरथ करन कों दिये हैं । पाछे राजा श्रीआचार्यजी के पास आय पूछ्यो । तब श्रीआचार्यजी नें कही जो हम कह्यो हैं । जो श्रीठाकुरजी को मनोरथ करो । सो राजा श्रीआचार्यजी के भेद की बात तो समझ्यो नाहीं । यह जान्यो जो आपु दिये होयेंगे । पाछे राजा घर गयो । पाछें पिता ने सुनी, जो-नरहरदास हजारन के मनोरथ करत हैं । तब नरहरदास को पिता नरहरदास के पास आयो । तब नरहरदास पिता की ओर पीठि करि कहे, जो-तू श्रीठाकुरजी को निंदक है, तातें तेरो मुख न देखोंगो । तू देखि, श्रीजगन्नाथरायजी नें कितनों द्रव्य मोकों दियो ? सो जाकों दृढ़ विश्वास ठाकुर पर हैं ताकों सब कछु सिद्धि हैं । जाकों श्रीठाकुरजी में विश्वास नाहीं हैं । सो याहू जन्म में दुःखी है, और परलोक में भ्रष्ट होय । परन्तु तू पिता है, श्रीजगन्नाथरायजी की न्योछावरि तू हूं कछु ले जा । सो हजार रुपैया को माल दे कहें, आजु पाछें मोकों मुख मति दिखावो । तब पिता द्रव्य लेकें घर गयो । पाछें कछुक दिन में द्रव्य हूँ निघड्यो । और मन को मनोरथ हू पूर्ण करि नरहरदास श्रीआचार्यजी के पास आय दंडोत करि, विनती करी, जो-महाराज ! मोकों कृपा करिकें सरनि लीजिये । अब मेरो मन काहू बात में नाहीं है । आपकी सरनि होन में है । तब श्रीआचार्यजी कहें, जा, स्नान करि

सांभलीने आये। कछुं, के तें आठलुं द्रव्य ज्यांथी भेण्युं ? त्यारे नरहरदासे कछुं, श्रीआचार्यज्ये मनोरथ करवाने दीधुं छे. पछी राज्ये श्रीआचार्यजनी पासे आवीने पुछ्युं. त्यारे श्रीआचार्यज्ये कछुं, अमे कछुं छे के श्रीठाकुरजने मनोरथ करे. ते रज श्रीआचार्यजना लेदनी बात तो समज्यो नहीं. जे आर्युं के आपे दीधुं हुशे. पछी राज वरे गयो. पछी पिताज्ये सांभल्युं, के नरहरदास हुजरोना मनोरथो करे छे. त्यारे नरहरदासने पिता नरहरदासनी पासे आये. त्यारे नरहरदासे पितानी तरङ् पीठ करीने कछुं, के तू श्रीठाकुरजने निंदक छे. तेथी ताइं मुष्प नहीं जेठं. तू जे, श्रीजगन्नाथरायज्ये केठलुं द्रव्य मने आर्युं छे ? जेने श्रीठाकुरजमां विश्वास नथी ते आ जन्ममां पणु दुःखी छे अने परलोकमां भ्रष्ट थाय छे. परंतु तु पिता छे. श्रीजगन्नाथरायजनी न्योछावर तू पणु कंठि लई ज. पछी हुजर इपीआने माल दधने कछुं, आज पछी मने मुष्प न देखाडीश. त्यारे पिता द्रव्य लधने धर गयो. पछी केठलाक दिवसमां द्रव्य पणु धर्युं, अने मनने मनोरथ पणु पूर्ण करी नरहरदासे श्रीआचार्यजनी पासे दंडवत् करी विनती करी के, महाराज ! मने कृपा करीने शरणे दो. हुवे माइं मन केई बातमां नथी.

आऊ। तब नरहरदास न्हाय कें श्रीआचार्यजी पास आये। तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन कराये। तब नरहरदास के हृदय में पुष्टिमार्ग को ज्ञान भयो। तब श्रीआचार्यजी कों दंडोत करि विनती किये, महाराज ! मैं बहोत बुरो काम कियो हूँ। जो श्रीठाकुरजी कों श्रम कराय द्रव्य लें अपुनो जस प्रगट कियो हूँ। मैं महादुष्ट, सो मेरो जस कहा, उलटो मन होय, परलोक विगरेँ। तातें मोकों धिकार हूँ। ठाकुर को द्रव्य ले ठाकुर कों करघो। तामें बड़ो स्वार्थ, अज्ञान करिकें मान्यो। अब मैं आपकी सरनि हों मेरो परलोक सुधरेँ, श्रीठाकुरजी कृपा करें, सो प्रकार मोकों कहो। तब नरहरदास सों श्रीआचार्यजी कहें। तुम श्रीठाकुरजी की सेवा करो। तब नरहरदास नें विनती करी, महाराज ! मोकों श्रीठाकुरजी पधराय दीजें। तब श्रीआचार्यजी कहें। तुम समुद्र के किनारे फेरि जाऊ। तहां भगवद् स्वरूप तुमकों मिलेगे सो ले आवो। तब नरहरदास फेरि वाही ठिकानें समुद्र पास जाय बैठे। सो समुद्र की लहरि मैं दोऊ जुगल स्वरूप आयें। नरहरदास के आगें लहरि धरि चली गई। तब नरहरदास जुगल स्वरूप कों ले श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के पास आये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु जुगल स्वरूप कों पंचामृत सों स्नान कराय पाछें श्रीमदनमोहनजी नाम धरि नरहरदास के माथे पधराये। तब नरहरदास

आपनी शरणु थवाभां छे। त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, ज स्नान करी आव। त्यारे नरहरदास न्हाधने श्रीआचार्यजी पासै आंव्या त्यारे श्रीआचार्यजीअये नाम संभ-
णावी निवेदन कराव्युं। त्यारे नरहरदासना हृदयभां पुष्टिमार्गनुं ज्ञान थयुं। त्यारे श्रीआचार्यजीने दंडवत् करी विनंती करी, महाराज ! में अहु प्योढुं काम क्युं छे। श्रीठाकुरजीने श्रम करावी द्रव्य लई पोतानो यश प्रकट कर्यो छे। हुं महादुष्ट तेथी मारो जश डेवो ? उलटुं मन थई परलोक अगडे। तेथी मने धिःकार छे। ठाकुरनुं द्रव्य लई ठाकुरने क्युं। तेमां मोटा स्वार्थ अज्ञान करी में मान्यो। हुवे हुं आपनी शरणु छुं। मारो परलोक सुधरे, श्रीठाकुरजी कृपा करे ते प्रकार मने कहे। त्यारे नरहरदासने श्रीआचार्यजी कहे, तमे श्रीठाकुरजीनी सेवा करे। त्यारे नरहरदासे विनंती करी, महाराज ! मने श्रीठाकुरजी पधरावी दे। त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, तमे समुद्रना किनारे इरी जव। त्यां भगवद्स्वरूप तमने मणशे ते लई आवो। त्यारे नरहरदास इरी ते ठेकाणु समुद्र पासै जई भेडा। ते समुद्रनी छेणभां अन्ने युगल स्वरूप आंव्यां। नरहरदासनी आगण छेण धरी यादी गई। त्यारे नरहरदास युगल स्वरूपने लधने श्रीआचार्यजी महाप्रभु पासै आंव्या। त्यारे श्रीआचार्यजी महाप्रभुअये

नें श्रीआचार्यजी सों विनती कीनी, महाराज ! मेरे घरमें पिता बहिर्मुख हैं, सो मोपें घर गयो न जाय । और यहां मेरो लौकिक में जस भयो । सो यहां मांगिकें सेवा करी न जाय । सो मेरे जिजमान बङ्गाली कासी में बहोत हैं । तहां आप कहो तो जायकें भगवद् सेवा करूं । तब श्रीआचार्यजी कहें, जहां भगवद् सेवा भली भांति सों बने बाकों वही देस उत्तम हैं । और हम हूँ कों यहां बहोत दिन भये हैं । तातें हम दक्षिण होय कासी आवेंगे । तू सूधो कासी कों जा । पाछे श्रीआचार्यजी तो दक्षिण पधारे । और नरहरदास कासी में आय श्रीमदनमोहनजी की सेवा मन लगायकें करन लागें । सो कछुक दिन में श्रीमदनमोहनजी सानुभावता जनावन लागें ।

वार्ता-प्रसंग १—सो नरहरदास ने श्रीमदनमोहनजी की सेवा बहोत वर्ष लों भली भांतिसों करी । पाछें सरীর थकयो वृद्ध भये । सो सेवा हे न सकें । तब श्रीमदनमोहनजी कों पधरायकें श्रीगोकुल आये, श्रीगुसांईजी कों दंडवत करि श्रीमदनमोहनजी कों श्रीगुसांईजी के घर पधराये । पाछें श्रीगुसांईजी नें गोकुलचन्द्रमाजी के पास बैठाये । सो श्रीगोकुलचन्द्रमाजी के पास जुदे सिंघासन पर बैठे हैं ।

युगल स्वयंपने पंचामृतथी स्नान करावी पछी श्रीमदनमोहनजी नाम धरी नरहरदासना माथे पधराव्या । तयारे नरहरदासे श्रीआचार्यजीने विनंती करी, महाराज ! मारा घरमां पिता बहिर्मुख छे तेथी माराथी घर न जवाय. अने अहीं मारे लौकिकमां यश थये तेथी अहीं मांगीने सेवा करी न जाय. तेथी मारा यजमान अंगादी काशीमां धर्या छे. त्यां आप कहो तो जधने भगवद्सेवा करूं. तयारे श्रीआचार्यजी कहे, ज्यां भगवद्सेवा सारी रीतथी अने तेने मोटे तेज देश उत्तम छे. वणी अमने पणु अहीं धर्या द्विवस थया छे. तेथी अमे दक्षिणु थर्य काशी आवीशुं. तू काशीअे सीधो ज. पछी श्रीआचार्यजी तो दक्षिणु पधार्या. अने नरहरदास काशीमां आवी श्रीमदनमोहनजीने सेवा मन लगावीने करवा लाग्या. पछी डेटलाक द्विवसमां श्रीमदनमोहनजी सानुभावता जणाववा लाग्या.

वार्ता-प्रसंग १—अे नरहरदासे श्रीमदनमोहनजीने सेवा धर्या वर्ष सुधी सारी रीते करी. पछी शरीर थकयो वृद्ध थया. तेथी सेवा धध न शडी. तयारे श्रीमदनमोहनजीने पधरावीने श्रीगोकुल आव्या, श्रीगुसांईजीने दंडवत करी श्रीमदनमोहनजीने श्रीगुसांईजीना धरे पधराव्या. पछी श्रीगुसांईजीअे श्रीगोकुलचन्द्रमाजीने पास भेसाव्या. ते श्रीगोकुलचन्द्रमाजीने पास जुदे सिंघासन उपर भेडा छे. पछी नरहर-

सो नरहरदास पाछें ब्रज में जन्म भरि भावना करि मानसी सेवा
सों निर्वाह किये । सो नरहरदास ऐसे श्रीआचार्यजी के कृपापात्र
भगवदीय है । इनकी वार्ता कहां ताई कहियें । वार्ता ॥७१॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, नरहर सन्यासी गौड़ ब्राह्मण, आगरे तें
गुजरात जाय कें इनको पिता रह्यो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—नरहर सन्यासी लीला में श्रुतिरूपा हैं, मनसुखा गोप
की बेटी, इनको नाम लीला में “ गुलाबी ” और गुलाबी की एक सखी हती ।
तिनको नाम ‘ पोंडरि ’ । सो वेणी कोठारी गुजरात में भये । सो एक समय आगरे
में दुष्काल भयो तब नरहर सन्यासी को पिता आगरो छोड़ि गुजरात कुटुम्ब सहित
जाय रह्यो । तहां नरहर सन्यासी जन्में । और वर्ष पन्द्रह के भये तब नरहर कों
एक सन्यासी को संग भयो । सो नरहर, सन्यासी भये । सो वर्ष दिन लों तपस्या
करी । उष्णकाल में पंचाग्नि तापें । वर्षायत में जलकी धारा माथे लिये । शीतकाल
में प्रातःकाल जलमें बैठते । सो नरहर सन्यासी की मानता गुजरात में बहोत भई ।
सेवक हू बहोत लोगन कों किये । तब वेणी कोठारी हू नरहर सन्यासी को सेवक
भयो । सो नरहर सन्यासी स्त्री कूं देखें तब मुख पर कपरा डारि लेय । ऐसी त्याग

दासे जन्मभर प्रजभां लावना करी मानसी सेवाथी निर्वाह कर्यो. ते नरहरदास
श्रीआचार्यजना जेवा कृपापात्र भगवदीय हुता. जेभनी वार्ता कथां सुधी कहीजे.

✽

✽

✽

हुवे श्रीआचार्यज महाप्रभुजना सेवक, नरहर सन्यासी गौड़ ब्राह्मण आग-
राथी गुजरात जन्में जेभनी पिता रह्यो, तेभनी वार्तानो लाव कहीजे छीजे—

भावप्रकाश—नरहर सन्यासी लीलाभां श्रुतिरूपा छे. मनसुखा गोपनी
बेटी. जेतुं नाम ‘ गुलाबी ’ जने गुलाबीनी जेक सखी हुती ‘ पोंडरी ’ जे वेणी
कोठारी गुजरातभां थया. पछी जेक समय आगराभां दुष्काल थयो तयारे नरहर
सन्यासीनो पिता आआ छोडी गुजरात कुटुम्ब सहित जई रह्यो. त्यां नरहर सन्यासी
जन्मया. पछी वर्ष पंद्रना थया तयारे नरहरने जेक सन्यासीनो संग थयो. ते
नरहर सन्यासी थया. ते वर्ष दिनस सुधी तपस्या करी. उष्णकालभां पंचाग्नि तापे.
वर्षाऋतुभां जलनी धारा माथे ले. शीतकालभां प्रातःकाल जलभां भेसता. ते नर-
हर सन्यासीनी मानता गुजरातभां धरणी थई. सेवक पण धरणां दोडाने कर्या. तयारे
वेणी कोठारी पण नरहर सन्यासीनो सेवक थयो. ते नरहर सन्यासी स्त्रीने जेजे

दसा में रहें। सो मही नदी के किनारे एकान्त में, जहाँ पास गाम नाहीं, तहाँ स्थल बनाय कें रहे। तहाँ तें कोस दोय पर गाम। तहाँ एक तेली के सन्तान न हती। सो उह तेली की स्त्री नें विचारी, जो-नरहर सन्यासी बड़े महापुरुष हैं। वह कछु औषध देइ तो मेरे पुत्र होय। परन्तु वे काहू को मुख देखत नाहीं। पाछें एक दिन सीरा पूरी करि संध्या समय उह तेलिन आई। तब नरहर सन्यासी के पास आई। तब तेलिन नें अपने मुख पर कपरा डारि नरहर सन्यासी कों पुकारयो। तब नरहर सन्यासी पास आय पूछें, तू कौन है? तब इन कही मैं तेलिन हूँ। सो तुम्हारे लिये सीरा पूरी लाई हों। तुम स्त्री को मुख नाहीं देखत ताते मैं अपने मुख पर कपरा डारयो। तब नरहर सन्यासी ने कही, मैं हूँ द्वै दिन को भूखो हों। परन्तु तेरी प्रीति बड़ी है, जो-दोय कोस तें मेरे लिये ले आई। तब नरहर सन्यासी लियो। तब तेलिन प्रसन्न भई। जो ये लिये तो सही। पाछे दूसरे दिन फेरि संध्या समय सीरा पूरी लाई। तब नरहर सन्यासी ने कही, अब तो यहां कोई है नाहीं, तातें तू मुख खोलि। तब उह तेलिन नें मुख खोलयो। सीरा पूरी दे आई। पाछें नित्य संध्या समय जाय। ऐसे करत दिन दस बारह भये। सो एक दिन

त्यारे मुष् उपर कपडुं नाप्पी हे. जेवी त्याग दशामां रहे. ते मही नदीना किनारे एकान्तमां ज्यां पासे द्वाध गाम नहीं त्यां स्थल बनावीने रहे. त्यांथी द्वास जे उपर गाम. त्यां जेक धांयिने संतान न हतुं. तेथी ते धांयिनी स्त्रीजे वियार्थुं, हे नरहर सन्यासी मोटा महापुरुष छे ते कंठ औषध हे तो मारे पुत्र थाय. परंतु जे द्वाधतुं मुष् जेता नथी. पछी जेक दिवस शीरे पुरी करी संध्या समय ते धांयणु आवी. त्यारे नरहर सन्यासीनी पासे आवी. त्यारे धांयणु पोताना मुष् उपर कपडुं नाप्पी नरहर सन्यासीने पुकार्या. त्यारे नरहर सन्यासी पासे आवीने पूछे, तू द्वाणु छे? त्यारे जेणु कथुं, हुं धांयणु छुं. तमारा माटे शीरे पुरी लावी छुं. तमे स्त्रीतुं मुष् नथी जेता तेथी मारा मुष् उपर वस्त्र नाप्युं छे. त्यारे नरहर सन्यासीजे कथुं, हुं पणु जे दिवसनो भूष्ये छुं परंतु तारी प्रीति वधारे छे हे जे द्वासथी मारा माटे लठ आवी. त्यारे नरहर सन्यासीजे लीधुं. त्यारे धांयणु प्रसन्न थर्य, हे जे लीधुं तो अइं. पछी जीज दिवसे करी संध्या समय शीरे पुरी लावी. त्यारे नरहर सन्यासीजे कथुं, हुवे तो अहीं द्वाध छे नहीं. तेथी तू मुष् जेता. त्यारे ते धांयणु मुष् जेता. शीरा पुरी द्वाध आवी. पछी नित्य संध्या समय जाय. जेम करतां दिवस दश-बार थाय. पछी जेक दिवस शीरे पुरी लधने नरहर

सीरा पूरी लेकर नरहर सन्यासी के कोठा भीतर गई। इतने में गुजरात को हाकिम नरहर सन्यासी की बड़ाई सुनिकें मिलिवे कों आयो। तब वह तेलिन नरहर सन्यासी के घरमें छिप रही। सो उह हाकिम रात्रि कों नरहर सन्यासी के पास रह्यो। सो सबेरो होत ही वह तेलिन नरहर सन्यासी पास आय कह्यो, मेरी बहू काल्हि सांझ की तुमकों सीरा पूरी देन आई, सो फिर घर नाहीं आई। रात्रि कों तुम क्यों राखे ? तुम तो स्त्री को मुख नाहीं देखत। तब नरहर सन्यासी ने कही यहां तो नाहीं आई। तब तेली नें कही, तुम्हारे घर में निकसे तो ! पाछे तेली नें नरहर सन्यासी को घर ढूंढ्यो। तब भीतर तें पकरि कें काढ़ी। सो देखिकें हाकिम बहोत कोप्यो। तब नरहर सन्यासी को घर गिराय कह्यो, यहां तें और देस निकसि जा। तब नरहर सन्यासी ब्रज में आये। मनमें कहें स्त्री को संग ऐसोई है, बुरो है। जो संग होतो तो परलोक विगर्ततो। प्रभू नें मोकों दंड दिवायो। यह विचारि ब्रज में फिरें। पाछें बेनी कोठारी ने सुनी, जो-नरहर सन्यासी ब्रज में हैं। तब मनमें विचारी जो बहोत दिन भये हैं। मेरे गुरु नरहर सन्यासी हैं, सो ब्रज में हे आऊँ। नरहर सन्यासी सों मिलि आऊँ। तब बेनी कोठारी गुजरात तें ब्रज में आये। सो वृन्दावन में नरहर सन्यासी कों मिले। वार्ता करत हते। सो एक दिन

सन्यासीना अरडा अंदर गथे। अटलाभां गुजराततो हाकिम नरहर सन्यासीनी बडाई सांभणीने भणवाने आव्यो। त्यारे ते धांयणु नरहर सन्यासीना घरमां छुपाई रह्यो। पछी ते हाकिम रात्रिये नरहर सन्यासीना पासे रह्यो, पछी सवार थतां न ते धांय्ये नरहर सन्यासी पासे आवी कहुं, भारी बहू काव सांभनी तभने शीरे पुरी देवा आवी ते इरी धर नथी आवी। रात्रिये तमे डेम राभी ? तमे तो स्त्रीतुं मुष् जेता नथी। त्यारे नरहर सन्यासीये कहुं, अहीं तो नथी आवी। त्यारे धांय्ये कहुं, तभारा धरमां निकणे तो ? पछी धांय्ये नरहर सन्यासीतुं धर भोज्युं। त्यारे अंदरथी पकडीने काढी। ते जेधने हाकिम बहु न टाप्यो। त्यारे नरहर सन्यासीतुं धर पाडीने कहुं, अहींथी पीन देशमां नीकणी न। त्यारे नरहर सन्यासी ब्रजमां आव्यो। मनमां कहे, स्त्रीना संग आवो न छे। भोटो छे। जे संग थतो तो परलोक भगडतो, प्रभुये मने दंड आप्यो। जे विचारी ब्रजमां इरे। पछी वेणी कोठारीये सांभण्युं हे नरहर सन्यासी ब्रजमां छे त्यारे मनमां विचार्युं हे वणु दिवस थया छे। भारा गुरु नरहर सन्यासी छे। तेथी ब्रजमां नथे आवे। नरहर सन्यासीने भणी आवे। त्यारे वेणी कोठारी गुजरातथी ब्रजमां आव्यो। पछी

वृन्दावन श्रीआचार्यजी पधारें । तब नरहर सन्यासी कों दरसन भये । तब नरहर सन्यासी ने बेनी कोठारी सों कही, देखो ! कैसे तेजस्वी पुरुष आये हैं ? तब बेनी कोठारी ने कही, इनको संग कलुक दिन करिये । तब इनके स्वरूप की ठीक परे । तब नरहर सन्यासी ने कही, चलो, दोऊ जने इनको संग करिये । या प्रकार दोऊ बतराय श्रीआचार्यजी पास आय दंडोत करि बिनती किये, जो-महाराज ! हमारो मन आपको संग चारि रात्रि करवे को है । जो आप प्रसन्न होय आज्ञा देऊ तो हम संग रहें । तब श्रीआचार्यजी कहें, हम द्वारिका कों जाइवे को विचार किये हैं, तुम्हारो मन होय तो तुमहूं चलो । तब नरहर सन्यासी और बेनी कोठारी हू संग चले । तब मार्ग में नरहर सन्यासी नें श्रीआचार्यजी सों प्रश्न कियो, जो-हमारे मनमें एक सन्देह है । जो-महाराज ! सन्यास धर्म बड़ो कै वैष्णव धर्म बड़ो ? तब श्रीआचार्यजी कहें, इनको प्रकार सब न्यारो है । सन्यास धर्म कलियुग में सिद्ध होनो कठिन है । सन्यास लिये पाछे जहां तक जीवे तहां ताई नारायण बिना कहुँ चित्त जाय, तब सगरे जन्म को सन्यास धर्म नास होय । और भक्तिमार्ग में, दुःसंगतें भ्रष्ट हू होय जाय, परन्तु भक्ति-बीज जाय नाहीं । कबहू

वृन्दावनमां नरहर सन्यासीने भल्या. वार्ता करता हुता. ते अेक दिवस वृन्दावन श्रीआचार्यजी पधार्या त्यारे नरहर सन्यासीने दर्शन थयां. त्यारे नरहर सन्यासीअे वेणी कोठारीने कहुं, लुअे, केवा तेजस्वी पुरुष आंया छे ? त्यारे वेणी कोठारीअे कहुं, अेमनो थोडाक दिवस संग करीअे त्यारे अेमना स्वप्नुं ज्ञान थाय. त्यारे नरहर सन्यासीअे कहुं, यादो अंने जणु अेमनो संग करीअे. अे प्रकार अंने वातचित्त करी श्रीआचार्यजी पासे आवी दंडवत् करी बिनती करी, के महाराज ! अमाइं मन यार रात्रि आपनो संग करवानुं छे. अे आप प्रसन्न थई आज्ञा आपो तो अमे साथे रहिअे. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, अमे द्वारिका जवानो विचार कर्यो छे. तमाइं मन होय तो तमे पणु यादो. त्यारे नरहर सन्यासी अने वेणी कोठारी पणु संगे यादया. त्यारे मार्गमां नरहर सन्यासीअे आचार्यजीने प्रश्न पुछयो, के अमारा मनमां अेक संदेह छे, के महाराज ! सन्यास धर्म मोटा के वैष्णव धर्म मोटा ? त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, अेनो प्रकार अघो बिन छे. सन्यास धर्म कलियुगमां सिद्ध थयो कठणु छे. सन्यास दीधा पछी जयां सुधी अेवे त्यां सुधी नारायण बिना अ्यांय चित्त अय त्यारे अघा जंमनो, सन्यास धर्म नाश थाय अने भक्तिमार्गमां दुःसंगथी भ्रष्ट पणु थाय परंतु भक्ति-बीज अय नही. अ्यारेक

सत्संग पाय फेरि वढें । सो श्रोभागवत में कहे हैं । जडभरत कों मृग के संग तें तीन जन्म को अन्तराय भयो । पाछें कृतार्थ भयो । चित्रकेतु पार्वती के शाप करि वृत्रासुर भयो, असुर जोनि में, तोहू भक्ति वढी । इतनो तारतम्य है । और या कलियुग में भगवत नाम ही तें चाण्डाल पर्यंत पवित्र होय, उद्धार होय, । सो तुमही मनमें विचारो । तें तपस्या हू करी, सन्यास के धर्म हू साध्यो । परन्तु कछु सिद्धि भयो ? तव नरहर सन्यासी दंडवत करि विनती करी, महाराज ! अब जा प्रकार उद्धार होय सो करो । मैं सगरे धर्म में दुःख ही पायो । परन्तु मन निर्मल न भयो । तव श्रीआचार्यजी कहें, तुम सन्यासी हो, जगत में पूज्य हो । सेवक हूँ करत हों । सो सेवक होयकें तो दास हों पुरै । सो तुम स्वामी पद में हो, दास भाव कैसे होयगो ? तातें स्वामी पद कों छोडो तव सरनि होऊ । तव वैष्णव धर्म बढे । तव नरहर सन्यासी नें विनती करी, महाराज ! मैं अब स्वामी पद छोड्यो । अब तो मैं आपको दास हों । जो आज्ञा करो सोई मैं करों । तव श्रीआचार्यजी कहें । यह डाढी मुंडाय कें भगवा वस्त्र पलटि ऊजरे वस्त्र पहिर के आवो, तो सेवक होऊ । तव नरहर सन्यासी जटा डाढी मुंडाय नये ऊजरे वस्त्र पहिर कें आवे । तव श्रीआचार्यजी कहें, आजु व्रत करो । सगरी इंद्रो सुद्ध होय । काल्हि तुमकों

सत्संग भणे इरी (लक्ष्मि) वधे. ते श्रीभागवतमां कहे छे डे, जडभरतने भृगना संगथी त्रणु जन्मनो अंतराय थयो पछी कृतार्थ थयो. चित्रकेतु पार्वतीना शापथी वृत्रासुर थयो, असुर योनिमां. तो पणु लक्ष्मि वधी, अटलुं तारतम्य छे. वणी आ कलियुगमां भगवद्नामथी ज यण्डाल पर्यंत पवित्र थाय उद्धार थाय. हुवे तमेज मनमां विचारो. तें तपस्या पणु करी. सन्यासनो धर्म पणु साध्यो परंतु कंछ सिद्ध थयुं ? त्यारे नरहर सन्यासीअे दंडवत करी विनंती करी, महाराज ! हुवे ज प्रकारे उद्धार थाय तेम करे. हुं यथा धर्ममां दुःख ज पाभ्यो परंतु मन निर्मल न थयुं. त्यारे श्रीआचार्यअे कहे, तमे सन्यासी छे. जगतमां पूज्य छे. सेवक पणु करे छे. ते सेवक थधने तो दास थयुं पडे. तमे स्वामी पदमां छे ते दासभाव ठेक थरे ? तेथी स्वामी पदने छोडे त्यारे शरणे थाव. त्यारे वैष्णव धर्म वधे. त्यारे नरहर सन्यासीअे विनंती करी, महाराज ! में हुवे स्वामी पद छोड्युं. हुवे तो हुं आपनो दास छुं. ज आज्ञा करे तेज हुं करे. त्यारे श्रीआचार्यअे कहे, आ जटा दाढी कटावीने भगवा वस्त्र पहरीने उजणां वस्त्र पहरीने आवो तो सेवक थाव. त्यारे नरहर सन्यासी जटा, दाढी कटावी नवा उजणां वस्त्र पडे-

नाम सुनावेंगे । तब नरहर सन्यासी व्रत किये । पाछें दूसरे दिन श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन करायें ।

वार्ता-प्रसंग १—सो नरहर सन्यासीने श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों विनती करी, महाराज ! बेनी कोठारी कों नाम सुनाइये । तब बेनी कोठारी कों न्हवाय के नाम निवेदन कराये । तब नरहर सन्यासीने श्रीआचार्यजी सों कही, महाराज ! मोकों व्रत कराये, बेनी कोठारी कों व्रत नाहीं कराये, ताको कारन कहा ? तब श्रीआचार्यजी कहें, तुम स्वामी पद में हते, और अनेक कर्म-धर्म किये । सो तुम्हारे मन अनेक ठिकाने फैलि गयो । और यह गृहस्थाश्रम को दुःख जाने, और धर्म कर्म नाहीं जानें । तातें याकों व्रत नाहीं कराये ।

भावप्रकाश—यामें यह जताये, जो-अन्य मारग में परिकें बहोत शास्त्र पढ़ें, बहोत जोग साधन करें । वाकों भक्ति बेगि न होय । और सूधे निष्कपट कों भक्ति बेगि सत्संग तें होय ।

तब नरहर सन्यासी बड़ो भगवदीय कृपापात्र भयो । और बेनी कोठारी हू बड़े भगवदीय भये । सदा मानसी में मग्न रहें । पाछे द्वारिका होय श्रीआचार्यजी तो पृथ्वी परिक्रमा कों पधारे । बेनी

रीने आया. त्पारे श्रीआचार्यजी कहे, आन व्रत करे. अधी ईंद्रियो शुद्ध थाय. काळ तमने नाम संलणावीशुं. त्पारे नरहर सन्यासीजे 'व्रत क्युं'. पछी पीन द्विसे श्रीआचार्यजीजे नाम संलणावी निवेदन कराव्युं.

वार्ता-प्रसंग १-पछी नरहर सन्यासीजे श्रीआचार्यजी महाप्रभुने विनती करी, महाराज ! बेनी कोठारीने नाम संलणावीजे. त्पारे बेनी कोठारीने न्हवायने नाम-निवेदन कराव्युं. त्पारे नरहर सन्यासीजे श्रीआचार्यजीने कहुं, महाराज ! मने व्रत कराव्युं अने बेनी कोठारीने व्रत नाहीं कराव्युं तेंतुं कारणु शुं ? त्पारे श्रीआचार्यजी कहे, तमे स्वामीपदमां लता अने अनेक कर्म-धर्म कर्थां. तेथी तमाइं मन अनेक ठेकाणे ट्रेदी गयुं. अने आ गृहस्थाश्रमतुं दुःख जाणु छे. कर्म, धर्म नथी जाणुतो तेथी अने व्रत नथी कराव्युं.

भावप्रकाश—जेमां जे जाणव्युं, ते अन्यमार्गमां पडीने अहु शास्त्र जाणु, अहु योग साधन करे, अने भक्ति नददी न थाय. अने सीधा निष्कपटने भक्ति नददी सत्संगथी थाय.

पछी नरहर सन्यासी मोटा भगवदीय कृपापात्र थया अने बेनी कोठारी पणु मोटा भगवदीय थया. सदा मानसीमां मगन रहे. पछी द्वारिका थई श्रीआचार्यजी

कोठारी द्वारिका में नरहरदास पास कलक दिन रहि, पाछे गुजरात अपने घर आये। नरहर सन्यासी सदा फिरयो करते।

वार्ता-प्रसंग २—सो एक समय नरहर सन्यासी वद्विकाश्रम फिरते फिरते आये। तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे। सो नरहर सन्यासी को दरसन भये। तब नरहर सन्यासी श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों विनती कियो, महाराज ! मैं पहिलें सन्यास ग्रहण कियो हतो। पाछें आपकी कृपातें भक्तिमारग में आयो। सो सन्यास को प्रकार है, सो तो मैं जानत हों और भक्तिमारग को कहा प्रकार हे सो मैं जानत नाहीं। सो मोकों कृपा करि कहिये। तब श्रीआचार्यजी कहें। तोसों भक्तिमारग के सन्यास को प्रकार कहत हों। तब श्रीआचार्यजी 'सन्यास निर्णय' ग्रन्थ करि नरहर सन्यासी को पदाय भाव कहि सुनाये। तब नरहर सन्यासी के हृदय में पुष्टिमारग को सिद्धान्त स्थित भयो। तब श्रीठाकुरजी की लीला को अनुभव भयो, सो मग्न होय गये। पाछें श्रीआचार्यजी आगें पधारे। नरहर सन्यासी स्वरूपानंद में मग्न होय फिरियो करते। सो नरहर सन्यासी ऐसे श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगदीय हे। इनकी वार्ता कहां ताई कहिये।

॥ वार्ता ७२ ॥

✽

✽

✽

तो पृथ्वी परिक्भाये पधार्या। वेणी डेहारी द्वारिकाभां नरहर पासै डेटसाइ द्विस रही पछी गुजरात पोताना घरे आव्या। नरहर सन्यासी सदा इर्या करता।

वार्ता-प्रसंग २—एक समय नरहर सन्यासी पद्विकाश्रम करता करता आव्या। त्यां श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधार्या त्तारे नरहर सन्यासीने दर्शन थयां। त्तारे नरहर सन्यासीये श्रीआचार्यजी महाप्रभुने विनती करी, महाराज ! में पहिलां सन्यास ग्रहण कर्यो हतो पछी आपनी कृपाथी लक्तिभागिभां आव्या। ते सन्यासना प्रकार तो हुं नाछुं छुं परंतु लक्तिभागिना शेा प्रकार छे ते हुं नाछुते नथी। भाटे भने कृपा करीने कहे। त्तारे श्रीआचार्यजी कहे, तने लक्तिभागिना सन्यासना प्रकार कहुं छुं। त्तारे श्रीआचार्यजीये 'सन्यास निर्णय' ग्रंथ करी नरहर सन्यासीने लक्षापी लाव कही संलगाव्यो त्तारे नरहर सन्यासीना हृदयभां पुष्टिभागिना सिद्धान्त स्थित थयो। त्तारे श्रीठाकुरजी लीलाते अनुभव थयो। ते मग्न थई गया। पछी श्रीआचार्यजी आगण पधार्या। नरहर सन्यासी स्वरूपानंदभां मग्न थई इर्या करता। ते नरहर सन्यासी येवा श्रीआचार्यजीना कृपापात्र भगवदीय हता। येमनी वार्ता क्यां सुधी कहीये ?

वार्ता ॥७२॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, सद्दू पांडे, सद्दू पांडे की वहू भवानी, और सद्दू पांडे की बेटी नरो, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो ये श्रीगिरिराज के नीचे आन्योर में रहते । लीला में सद्दू पांडे वृषभानजी के भाई 'चन्द्रभान' गोप, नरो और भवानी 'रामदे' 'श्यामदे' जसोदाजी की ननद हैं, तिनको प्रागट्य हैं ।

वार्ता-प्रसंग १—श्रीआचार्यजी महाप्रभु जब पृथ्वी परिक्रमा करत दक्षिण झारखंड में पधारे । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी झारखंड में श्रीआचार्यजी कों दरसन देकें कहैं, जो—तुम मेरी सेवा जगत में प्रगट करो तो दैवी जीव बेगि सरनि आवें । हम ब्रज में गोवर्द्धन पर्वत पर तीनि दमन सों प्रगटे हैं । देव दमन सो मैं हों । मेरे आस-पास दोग दमन हैं ।

भावप्रकाश—ताको भाव कहत हैं । नागदमन तो श्रीठाकुरजी के वाम भाग हैं । और इन्द्र दमन सो दक्षिण भाग हैं । सो वाम भाग नागदमन श्रीयमुनाजी के स्वरूप तैं । काहे तैं, काल सर्प की दमन कर्ता । यमदंड, कालदंड श्रीयमुना पान तैं न होय । और श्रीठाकुरजी की प्रिया हैं नित्यसिद्धा । तातैं वाम भाग विराजि सेवा करत हैं । और दक्षिण दिस इन्द्रदमन हैं । सो गिरिराजजी स्वरूप

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजना सेवक सद्दूपांडे, सद्दूपांडेनी वहू भवानी, अने सद्दूपांडेनी बेटी नरो, तेमनी वार्तानो भाव कह्यो छीये—

भावप्रकाश—ये श्रीगिरिराजजी नीचे आन्योरमां रहेता । लीलामां सद्दूपांडे वृषभानजीना भाई 'चन्द्रभान' गोप, नरो अने भवानी 'रामदे' 'श्यामदे' जसोदाजीनी ननद छे तेमनुं प्राकट्य छे ।

वार्ता-प्रसंग १—श्रीआचार्यजी महाप्रभु ज्यारे पृथ्वी परिक्रमा करतां दक्षिण झारखंडमां पधार्या त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथजीअे झारखंडमां श्रीआचार्यजीने दर्शन दहने कथुं, के तमे भारी सेवा जगतमां प्रकट करे तो दैवीअे वदही शरणे आवे । अमे ब्रजमां गोवर्द्धन पर्वत उपर त्रण दमनथी प्रकट्या छीये । देवदमन, नागदमन, इन्द्रदमन । तेमनामां मध्य देवदमन ते हुं छुं । भारी आसपास ये दमन छे ।

भावप्रकाश—अनेो भाव कहे छे । नागदमन तो श्रीठाकुरजीना वाम भागमां छे अने इन्द्रदमन दक्षिण भागमां छे । ते वामभाग नागदमन श्रीयमुनाजीना स्वरूपथी, यमदंड काल-सर्प-नी दमन कर्ता । यमदंड, कालदंड, श्रीयमुनाजीनी न थाय । वणी श्रीठाकुरजीनी प्रिया छे नित्यसिद्धा । तेथी वाम भाग विराजि सेवा करे

करि सेवा में तत्पर हैं। काहे तें, हरिदासराय हैं। भक्तन के सिरोमनि हैं। सो इन्द्र कोप के समय प्रभु की इच्छा जानि आपुहि छत्राकार होय सगरे ब्रज की रक्षा किये। और इन्द्र कों दंड दिये। और जस प्रभु कों प्रगट किये। सो यातें, भगवदी अपुनों जस प्रगट नाहीं करत हैं। तातें श्रीठाकुरजी को जस प्रगट कियो। और मध्य में देवदमन, सो यातें, जितने औतार हैं श्रीजगन्नाथदेव, नारायणदेव आदि, तिनकें मान मर्दन कर्ता श्रीगोवर्द्धनधर हैं। तातें श्रीभागवत में कहें—“एते चांश-कला पुंसः कृष्णस्तुभगवानस्वयं” तातें देवदमन मेरो नाम हैं। सो मोकों प्रगट करो।

तब श्रीआचार्यजी दक्षिण के झारखंड सों पृथ्वी परिक्रमा छोडि ब्रज पधारे। सो श्रीगोवर्द्धन आये। ता समय पांच सेवक संग श्रीआचार्यजी के हैं। दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, बड़े रामदास, माधवदास, और नारायणदास। सो संध्या समय श्रीआचार्यजी सद्गु पांडे के द्वार चौतरा पर तहां विराजे। तब सद्गु आय दंडोत करि कहें, स्वामी कछु खाऊगे? तब कृष्णदास मेघन ने कही, ये श्रीआचार्यजी काहू के घर को छेत नाहीं। आप सेवक करत हैं, सो सेवक होय, जो देत हैं, तिनको छेत हैं। या प्रकार वार्ता

छे अने दक्षिण दिशाये ईंद्रदमन छे ते गिरिशाल स्वर्गपथी सेवामां तत्पर छे। इमडे हरिदासराय छे। लकताना शिरोमणी छे। ते ईन्द्रकोपना समये प्रभुनी ईच्छा जानी आपुनि छत्राकार थई अधा प्रभुनी रक्षा करी अने ईंद्रने दंड दीयो। अने यश प्रभुनो प्रकट कर्यो। ते अथी डे भगवदीय पोतानो यश प्रकट करता नथी। तेथी श्रीठाकुरनो यश प्रकट कर्यो अने मध्यमां देवदमन। ते अथी डे नटला अवतार छे श्रीजगन्नाथदेव, नारायणदेव, आदि तेमना मान-मर्दन कर्ता श्रीगोवर्द्धनधर छे। तेथी श्रीभागवतमां कछुं छे— ‘एतेचांश....’ तेथी देवदमन माइं नाम छे ते मने प्रकट करे।

त्यारे श्रीआचार्यनो दक्षिणना आरंभउथी पृथिव-परिक्रमा छोडी प्रभु पधार्या। श्रीगोवर्द्धन आग्या। ते समय पांच सेवक श्रीआचार्यनो साथे छता। दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, मोटा रामदास, माधवदास अने नारायणदास। पथी संध्या समय श्रीआचार्यनो सद्गु पांडेना द्वार चौतरा उपर त्यां पिरा-ज्या। त्यारे सद्गु आवी दंडोत करीने कछुं, स्वामी कछुं खाशा? त्यारे कृष्णदास मेघने कछुं, आप-श्रीआचार्यनो कोठना घरहुं लेता नथी। आप सेवक करे छे। सेवक थई ने दे छे तेहुं ले छे। या प्रकारे वार्ता करता छता। अटलाभां पर्यंत उपरधी

करत हते । इतने में पर्वत पर तें श्रीगोवर्द्धनधर बोले । सद्दू पांडे का बेटी सों कहें, नरो ! मेरे नेग को दूध लाऊ । तब नरो ने कही, अहो, वारी जाऊँ लाल ! ल्याई, मेरे पाहुँनें आये हैं । तिनकों समाधान करि लेऊ तो दूध लाऊं । तब श्रीगोवर्द्धनधर कहें । पाहुँनें आये तो भले आये परन्तु मोकों अवार होति हैं । तब नरो दूध को कटोरा भरि पर्वत पर जाय श्रीगोवर्द्धनधर को प्यायो, कछू बच्यो सो लेकें नरो नीचे आई । तब श्रीआचार्यजी कहें, तू कहां गई हती ? तब नरो ने कही, पर्वत को देवता देवदमन हैं तिनकों दूध प्याइ आई । तब श्रीआचार्यजी कहें, या कटोरा में दूध बच्यो होय सों हमकों देऊ । तब नरो ने दियो । सो श्रीआचार्यजी पान किये । तब सद्दू पांडे नरो भवानी के मन में यह आई, जो ये काहू के घर को लेत नाहीं । देवदमन को आरोग्यो लिये । तातें इनकी, देवदमन की, बड़ी प्रीति जानि परत हैं । तब सद्दू पांडे ने पूछी, महाराज ! यहां आप पधारे हो, ब्रज के तीर्थ करिवे कों, के कछू और मनोरथ हैं ? तब श्रीआचार्यजी कहें, हमकों दक्षिण में झारखंड में देवदमन ने कही, जो-मोकों प्रगट करो । मैं श्रीगोवर्द्धन पर हों । इन्द्रदमन, नागदमन, मध्य में देवदमन हों । ताके लिये हम यहां पधारे । सो देवदमन तुम्हारे ऊपर बड़ी कृपा करत हैं । तब सद्दू पांडे, नरो, भवानी विनती करी,

श्रीगोवर्द्धनधर भोव्या, सद्दूपांडेनी भेटीने कहे, नरो ! भाइं नेगतुं दूध लाव. त्यारे नरोअ्ये कछुं, अहो वारी जाऊँ लाल ! लाऊ. मारे परेण्णा आव्या छे. तेभतुं समाधान करी लउं त्यारे दूध लाऊँ. त्यारे श्रीगोवर्द्धनधर कहे परेण्णा आव्या तो लले आव्या परंतु मने वार लागे छे. त्यारे नरो दूधना कटोरो लरी पर्वत उपर जध श्रीगोवर्द्धनधरने (ते) पायुं. कंध अन्धुं लतुं ते लधने नरो नीअे आवी त्यारे श्रीआचार्यअे कहे तू कयां गध लती ? त्यारे नरोअ्ये कछुं, पर्वतना देवता देवदमन छे तेमने दूध पाध आवी. त्यारे श्रीआचार्यअे कहे, या कटोरामां दूध अन्धुं होय ते अमने द. त्यारे नरोअ्ये दीधु. ते श्रीआचार्यअे पान क्युं. त्यारे सद्दूपांडे, नरो, भवानीना मनमां अे आव्युं, के अे कंधना घरतुं लेता नथी. देवदमनतुं आरोअ्युं दीधु. तेथी अेमनी, ने देवदमननी महान प्रीति जाणी पउ छे. त्यारे सद्दूपांडेअ्ये पुअ्युं, महाराज ! अहीं आप पधारां छे ते प्रजनां तीर्थ करवाने के कंधं भीअे मनोरथ छे ? त्यारे श्रीआचार्यअे कहे, अमने दक्षिणमां अरअंअमां देवदमने कछुं लतुं के मने प्रकट करे, लुं श्रीगोवर्द्धन पर्वत उपर छुं. तेने भाटे अहीं पधारां छीअे. ते देवदमन तभारा उपर

महाराज ! तुम जीते, हम हारे, हमको सेवक करो ।

भावप्रकाश—याको अर्थ यह, जो—हमारे ब्रज में गोवर्द्धन में आवे सो दही, दूध, रोटी, सीधो सामग्री जो मांगे सो हम देंहि । और आप तो सेवक विना काहू को लेत नहीं । ताते हम हारे । आप सेवक करो । हम ब्रजवासी जगत के पूज्य, आप हमारे पूज्य ।

तब श्रीआचार्यजी कहें, कालिह सबेरे तुमको नाम सुनावेंगे । पाछें प्रातःकाल भयो तब सद्दू पांडे नरो, भवानी तीन्योन कों न्हवाय कें बैठारे । पाछे नाम सुनाय निवेदन कराये । पाछें श्रीआचार्यजी ने कही, तुम देवदमन की सेवा करो । तब सद्दू पांडे ने कही, महाराज ! हम ब्रजवासी गँवार है । आचार विचार जानत नहीं । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें । तुम्हारो प्रेम देवदमन में है सोई सबके ऊपर हैं । तुम निष्कपट सुद्ध भक्त हो । ताते जैसो तुमते बने सो करियो । पाछे सद्दू पांडे ने सीधो, सामग्री, दूध, दही, घृत, खांड सब दियो । तब श्रीआचार्यजी रसोई करि भोग धरि भोजन किये । पाछें सद्दू पांडे के चौतरा पर वैष्णवन सहित आय विराजें । तब सद्दू पांडेको भाई मानिकचंद्र, सो सद्दू पांडे सौन्यारो रहतो । सो रात्रि परी तब आयो ।

महान कृपा करे छे त्यारे सद्दूपांडे, नरो, भवानीये विनंती करी, महाराज ! तमे लया अमे हार्यां, अमने सेवक करे ।

भावप्रकाश—अने अर्थ अे छे अमारा ब्रजभां गोवर्द्धनभां आवे ते दही, दूध, रोटी, सीधु-सामग्री; जे मागे ते अमे आपीअे, अने आप तो सेवक विना काहनुं लेता नथी, तेथी अमे हार्यां, आप सेवक करे । अमे ब्रजवासी जगतनां पूज्य, आप अमारा पूज्य ।

त्यारे श्रीआचार्यल्ले कहे, काल सवारे तमने नाम संभणावीशुं । पछी सवार थयुं त्यारे सद्दूपांडे, नरो, भवानी, ब्रह्मेयने न्हवडावीने भेसाखा, पछी नाम संभणावीने निवेदन कराय्युं । पछी श्रीआचार्यल्ले कहुं, तमे देवदमननी सेवा करे । त्यारे सद्दूपांडेअे कहुं, महाराज ! अमे ब्रजवासी गमार छीअे । आचार विचार जणुता नथी । त्यारे श्रीआचार्यल्ले महाप्रभु कहे, तमारो प्रेम देवदमनभां छे ते जे सद्दुथी उपर छे । तमे निष्कपट सुद्ध भक्त छे । तेथी जेभ तमाराथी अने तेभ कर्ये । पछी सद्दूपांडेअे सीधुं, सामग्री, दूध, दही, घी, खांड, अथुं आय्युं । त्यारे श्रीआचार्यल्ले रसोई करी भोग धरि भोजन क्युं । पछी सद्दूपांडेना चौतरा उपर वैष्णवो

भावप्रकाश—सो 'मधुमंगल' सखा को प्रागट्य मानिकचंद को है।

पाछे सद् पांडे रात्रि कों सब ब्रजवासीन सों कहें, जो-मेरे घर बड़े महापुरुष पधारे हैं। सो सवेरे देवदमन को प्रागट्य करेंगे। तातें तुम सगरे दरसन कों आइयो। तब बड़े बड़े वृद्ध ब्रजवासी प्रमाणिक सब आये। मानिकचंद, सद् पांडे आदि। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें, जो-श्रीगोवर्द्धन पर्वत पर देवदमन कौन प्रकार प्रगट भये हैं? सो कहो। तब सद् पांडे ने कही, 'महाराज! हमारे एक ग्वाल हतो। सो गाम की सगरी गाय चरायवे कों जातो। सो एक ब्राह्मण की बड़ी गाय हती, सो दूध बहोत देती। सो वह ब्राह्मण दुहिवे कों बैठ्यो, सो गाय कछु दूध न दियो। पाछें फेरि सवेरे दुहन बैठ्यो, तब हू दूध न दियो। ऐसे दोय दिन दूध न दियो, तब तीसरे दिन वह ग्वारिया पर ब्राह्मण खीज्यो। जो-मेरी गाय बहोत दूध देती। सो तू गाय मेरी दुहि लेत हैं। या प्रकार ग्वाल कों बहोत डरपायो। तब वह ग्वाल नें कही, मैं तो तेरी गाय दुहत नाहीं। आजु तेरी गाय की ठीक पारुंगो। पाछे वह ग्वारिया, गाय सगरी बन में ले गयो। उह गाय कों नजरि में राखी। तब उह गाय

सहित आपीने पिराव्या। त्पारे सद् पांडेना लार्ध माणिक्यंद, जे सद् पांडेथी अलग रहेता हुता ते, रात्रि थर्ध त्पारे आव्या।

भावप्रकाश—'मधुमंगल' सखातुं प्राकट्य माणिक्यंदतुं छे।

पछी सद्पांडे रात्रिमे अधा प्रजवासीने कहे, के भारा घर मोटा महापुरुष पधार्या छे। ते सवारे देवदमनतुं प्राकट्य करेशे। तेथी तमे अधा दर्शने आवजे। त्पारे मोटा मोटा वृद्ध प्रजवासी प्रमाणिक अधा आव्या। माणिक्यंद, सद् पांडे आदि। त्पारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे, के श्रीगोवर्द्धन पर्वत उपर देवदमन क्या प्रकारे प्रगट थया छे ते कहे। त्पारे सद् पांडेमे कछुं, महाराज! अमारे अक गोवाणीआ हुतो ते गामनी अधी गायने चरायवा जतो। तेमां अक ब्राह्मणनी मोठी गाय हुती, ते दूध अहुण देती। ते गायने ते ब्राह्मण होहवाने भेडा। त्पारे तेखे कंभ दूध न आर्युं। पछी इरी सवारे दूध होहवा भेडा। त्पारे पखु दूध न दीधुं। अम भे द्विर्स दूध न आर्युं। त्पारे त्रीण द्विसे ते गोवाणीआ उपर ब्राह्मण भोज्यो, के भारी गाय धखुं दूध देती। भारी गायने तू होहो ले छे। आ प्रकारे गोवाणीआने धखो इरव्या। त्पारे ते गोवाणीआमे कछुं, हुं तो तारी गाय होहते नथी। आण तारी गायनी अयर राभीश। पछी ते गोवाणीआ अधी गायने वनमां लर्ध गयो। ते गायने नजरमां राभी। त्पारे ते गाय पर्वत

पर्वत ऊपर चढ़ी। तब ग्वारिया पीछे छिपि कें गयो। सो उह गाय जाय गोवर्द्धन पर्वत पर एक सिला में छेद हतो, तहां आपही तें सगरो दूध श्रव दियो। तब ग्वारिया देखिकें फिरि बैठि रह्यो। पाछे घरी चारि दिन पिछलो रह्यो। तब फेरि वह गाय पर्वत पर चढ़ि उह छेद में दूध श्रव दियो। सो ग्वारिया, सब गाय घर लायकें उह ब्राह्मण सों कही। तेरी गाय, गोवर्द्धन पर्वत हैं तापर एक छेद में, सगरो दूध श्रवत हैं। तें मोकों झूठेई चोरी लगाई। तेरे विश्वास न होय तो सवेरे मेरे संग चलियो। तब वह ब्राह्मण नें कही। मैं सवेरे चलूंगो। तब सवेरे दूध दुहन बैठ्यो। सो गाय दूध सब ऊपर चढाय गई, रंच हू न दियो। तब वह ब्राह्मण ग्वारिया के संग गयो। सो गाय पर्वत पर जाय, दूध छेद में करि दियो। पाछें सांझ, याहि प्रकार गाय दूध करि, घर आई। तब उह ब्राह्मण (ने) रात्रि कों ब्रजवासी भेले करि यह बात गाय की कही। तब एक वृद्ध ब्रजवासी ने कही। के तो छेद के नीचे कछु द्रव्य है, के कोई श्रीठाकुरजी को स्वरूप है। ये दोग्य वस्तु होय तहां गाय श्रवे। पाछें दस पांच ब्रजवासी मिलि, छेद के नीचे देखिवे को विचार कियो। सो प्रातःकाल भयो तब दस पन्द्रह वृद्ध वृद्ध ब्रजवासी मिलि उह गाय कें पीछें

उपर यही, त्पारे गोवाणीआ पाछणथी संताधने गयो. ते गाय न्ह गोवर्द्धन पर्वत
 उपर अेक शीलासां छेद हतो त्यां व्याप भणे न अधुं ह्ध श्रवी दीधुं. त्पारे गोवा-
 णीआ नेधने इरी भेसी रह्यो. पछी घडी त्पार ह्विस पाछयो रह्यो. त्पारे इरी ते गाय
 पर्वत उपर यही ते छेदसां ह्ध श्रवी दीधुं. पछी गोवाणीआ अधी गायेने घर लावीने
 ते आह्मणुने कहे, तारी गाय गोवर्द्धन पर्वत छे. तेना उपर अेक छेदसां अधुं
 ह्ध श्रवे छे. तें भने लुठी न चोरी लगाडी. तने विश्वास न होय तो सवारे भारी
 साथे यासने. त्पारे ते आह्मणु कहुं, हुं सवारे यादीश. त्पारे सवारे ह्ध होहवाने
 भेठ्यो. त्पारे गाय अधुं ह्ध उपर यडावी गधरंय पणुन आशुं. त्पारे ते आह्मणु गोवा-
 णीआनी साथे गयो. पछी ते गाये पर्वत उपर न्ह ह्ध छेदसां इरी दीधुं. पाछी सांजे
 पंथु व्यान प्रकारे गाय ह्ध इरी घर आवी. त्पारे ते आह्मणु रात्रिना ब्रजवासीआने
 लेगा इरी गायनी आ वात कही. त्पारे अेक वृद्ध ब्रजवासीआ कहुं, के तो छेदना
 नीचे कध द्रव्य छे के केध श्रीठाकुरजुं स्वरूप छे. अे भे वस्तू होय त्यां गाय श्रवे.
 पछी दश पांच ब्रजवासीआआ भणी छेदनी नीचे जेवाने विचार कर्यो. पछी प्रा-
 तःकाल थयो त्पारे दश-पंहर वृद्ध ब्रजवासी भणी ते गायनी पाछण गया. त्पारे गाय

गये। सो गाय उह छेद में दूध करि पर्वत तें नीचे उतरी। तब हमनें जो सिला में छेद हतो सो सिला खोदि कें उठाई। तब नीचे बरस सात को बालक निकस्यो। तब मैं पूछ्यो जो-तू कौन हैं? तब उन कही, मैं पर्वत को देवता हों। देवदमन मेरो नाम है। सो मोकों दूध दहीं बहोत प्रिय हैं। तेरी बेटी नरो हैं, ताके हाथ पठाय दीजो, सांज सवारे। और अब सिला ऊपर मति धरो। तब उह समय सगरे ब्रजवासी अपने अपने घर आये। सवेरे दूध, दहीं, माखन देवदमन को अरोगाय आवते। सांज को दूध अरोगावतें। और भूख लागत हैं, तब, आप ही देवदमन आय मांगि ले जात हैं। या प्रकार ब्रजवासी सबन को देवदमन ने बहोत सुख दियो हैं। ब्रजवासी जो मानता करत हैं, सो देवदमन पूरन करत हैं। अब आपकी जैसी इच्छा होय, सो मनोरथ करो। हम तो जा प्रकार देवदमन प्रगटें सो सब प्रकार कह्यो। तब मानिकचंद्र, सद्दू पांडे के भाई ने कही, मोकों देवदमन जब प्रगटे तब जतायो, जो-मैं गिरिराज ऊपर प्रगट्यो हों, सो मोकों माखन नित्य दीजों। सो मैं माखन नित्य सवेरे देवदमन को अरोगाय आवत हों। तब श्रीआचार्यजी कहें, काल्ह सवेरे पर्वत चलि दरसन करेंगे। पाछे प्रातःकाल श्रीआचार्यजी महाप्रभु स्नान करि वैष्णव सहित पर्वत पर जायवें को विचार किये। तब सद्दू पांडे

ते छेदमां दूध करी पर्वतथी नीचे उतरी। तयारे अपने ले शिलामां छेद हुतो ते शिला ने जोहीने उठावी। तयारे नीचे सात वर्षना आसक निकल्यो। तयारे में पूछ्युं के तू कोण छे? तयारे तेणे कहुं, हुं पर्वतना देवता छुं। देवदमन मां नाम छे। मने दूध-दहीं अहु प्रिय छे। तारी बेटी नरो छे तेना हाथे मोकरी आपणे सांज-सवारे। अपने हुवे शिला उपर न धरो। तयारे ते समय अथा ब्रजवासी पौत-पौताना धरे आल्या। सवारे दूध-दहीं माणण देवदमनने आरोगावी आवता। सांजे दूध आरोगावता अपने लूप लागे छे तयारे आपण देवदमन आवी मांगी लई जाय छे। आ प्रकारे अथा ब्रजवासीआने देवदमने अहु सुअ आण्युं छे। ब्रजवासी ले मानता करे छे ते देवदमन पूरी करे छे। हुवे आपनी नेवी धिया होय तेयो मनोरथ करो। अपने तो ले प्रकारे देवदमन प्रकट्या ते अथा प्रकार कियो। तयारे माणिकचंद्र सद्दूपांडेना साथे कहुं, मने देवदमन नयारे प्रकट्या तयारे जणायुं के हुं गिरिराज उपर प्रकट्यो छुं ते मने माणण नित्य आपणे। तेथी हुं माणण नित्य सवारे देवदमनने आरोगावी आवुं छुं। तयारे श्री-आचार्यजी कहे, काले सवारे पर्वत उपर यादी दर्शन करीशुं। पछी प्रातःकाल



ऊपर : श्रीनाथजी का प्राकट्य । श्रीनाथजी महाप्रभु मिलाप ।

शिखर पर : सद् माणिकचंद्र ।

नीचे दाई ओर : श्रीगिरिराज पास : नरो, भवानी, सद्-माणिकचंद्र

बाई ओर : १. रामदास । २. त्रिपुरदास । ३. नारायणदास ।

४. कन्हैयालाल । ५. वासुदेवदास ।

कों बुलाये । तब सद् पांडे मानिकचंद दोज आए । तब मानिकचंद ने कही, महाराज ! मोकों सरनि लीजिये । तब श्रीआचार्यजी मानिकचंद कों न्हवाय नाम निवेदन कराये । पाछे सद् पांडे, मानिकचंद, आपुने संग के वैष्णव ले, पर्वत ऊपर पधारे । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी उठिके श्रीआचार्यजी के साम्हें आये । तब श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धनधर कों गोद में ले दोज कपोल परसि कहें, बाबा ! अब तुम्हारी कहा इच्छा है । तब श्रीगोवर्द्धनधर कहें, मेरी सेवा प्रगट करो । तब गोवर्द्धन पर्वत पर छोटे सो मंदिर करि अपछरा कुंड पर रामदास चोहान रजपूत गुफा में रहते तिनकों सेवक करि श्रीनाथजी की सेवा करन कों कही । पाग परदनी को सिंगार करि ऊपर चन्द्रका मेंसों जोरि सुकुट सारिखो करि धराये । गुंजा की माला पहिराये । और दूध, दही, माखन सद् पांडे लाये सो भोग धरे । पाछें सद् पांडे कों कही, तुम सामग्री वस्तु चाहिये सो रामदास कों दीजो । तब जमुनावतामें कुंभनदासजी गोरवा रहत हते, सो आय सेवक भये । तब कुंभनदास कों कीर्तन गायवे की सेवा दीनी । तब तहां ब्रजवासी गिरिराज के आसपास के बहोत श्रीआचार्यजी के सेवक भये । या प्रकार कलुक दिन सेवा भई । पाछे मंदिर समरायवे की आज्ञा

श्रीआचार्यजी महाप्रलुब्धे मनान करी वैष्णव सहित पर्वत उपर जवाने विचार कर्थे । त्यारे सद् पांडेने प्योलाव्या । त्यारे सद् पांडे भाणुक्यंद पांडे अन्ने आव्या । त्यारे भाणुक्यंदे कहुं, महाराज ! भने शरखे दो । त्यारे श्रीआचार्यजीभाणुक्यंदेने न्हवडावी नाम-निवेदन कराव्युं । पछी सद् पांडेने, भाणुक्यंदेने तथा प्योतानी साथेना वैष्णवेने लडने पर्वत उपर पधार्था । त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथजी उठीने श्रीआचार्यजीनी सामे पधार्था । त्यारे श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धनधरने गोदमां लड अन्ने क्योस स्पर्शी कहे, प्यावा ! हुवे तभारी शी धंछा छे ? त्यारे श्रीगोवर्द्धनधर कहे, भारी सेवा प्रकट करे । त्यारे गोवर्द्धन पर्वत उपर नाकुं सरखुं मंदिर करी अपछरा कुंड उपर रामदास चोहाण रजपूत गुफामां रहेता तेभने सेवक करी श्रीनाथजीनी सेवा करवाने कहुं, पाग-परदनीना सिंगार करी उपर अद्रिडा मीजुथी जोडी सुकुट सरखो करी धराव्यो । गुंजनी माला पहरावी, अने दूध, दही, माखण सद् पांडे लाव्या ते लोग धर्यो । पछी सद् पांडेने कहुं, तमे सामग्री वस्तु जोडमे ते रामदासने आपजे । त्यारे जमुनावतामां कुंभनदासजी गोरवा रहेता हुता ते आवी सेवक थया । त्यारे कुंभनदासने कीर्तन गायानी सेवा आपी । त्यारे त्यां ब्रजवासी गिरिराजजीनी आसपासना धरुा श्रीआ-

पूरनमल्ल को करी। जब मंदिर सँवरयो, तब रामदास चोहान रजपूत की देह छूटी। तब श्रीआचार्यजी सद् पांडे सों कहें, तुम सेवा करो। तब सद् पांडे ने कही, महाराज! हम ब्रजवासी कछू सेवा पूजा की रीति जानत नहीं। और अनेक घर के काम खेती, सो हमसों न बनेगी। सामग्री वस्तु जो चाहियेगी सो पहाँचावेंगे। तब श्रीआचार्यजी सद् पांडे सों कहें, और कोऊ विचारो। तब सद् पांडे नें कही, राधा-कुंड कृष्णकुंड पर बंगाली हैं, कहो तो बुलाऊं। तब श्रीआचार्यजी कहें बुलावो। तब बंगाली बुलाय रुद्र कुंड पर झोंपरी बंगालीन कों बनाय दिये। और कृष्णदास शूद्र कों सेवक करि अधिकारी किये हैं। जो बंगालीन कों चाहिये सो मथुरा आगरे तें लाय दीजो। पाछें कृष्णदास ने बंगालीन कों काढि वैष्णव राखें। सो कृष्णदास की वार्ता में कहेंगे। या प्रकार सद् पांडे, नरो, भवानी, मानिकचंद आदि सेवक करि श्रीगोवर्द्धननाथजी कों बाहिर पधराय सेवा करायें।

वार्ता-प्रसंग २—एक समय श्रीगोवर्द्धनधर कहें, मोकों गाय बहोत प्रिय हैं। तब श्रीआचार्यजी सद् पांडे कों बुलाय वेद-कर्म करिवे की पवित्री हती, सो दे कहें, याके दाम करि श्रीगोवर्द्धननाथजी कों गाय लाय देहु! तब सद् पांडे नें कही, महाराज! हमारे घर

आचार्यजीना सेवक थया। अे प्रकारे डेहसाक द्विस सेवा थय। पछी मंदिर सिद्ध कराववानी आज्ञा पूरणमलने करी। न्यारे मंदिर सिद्ध थयुं। त्यारे रामदास चोहान रजपूतनी देह छुटी। त्यारे श्रीआचार्यजी सद् पांडेने कहे, तमे सेवा करो। त्यारे सद् पांडेअे कछुं, महाराज! अमे ब्रजवासी कंध सेवा-पूजनी रीति जानता नथी। पणी घरनां अनेक काम जेती तेथी अमाराथी नहीं अने। सामग्री वस्तू जे जेधरे ते पहाँचाडीशुं। त्यारे श्रीआचार्यजी सद् पांडेने कहे, भीजे डेध विचारो। त्यारे सद् पांडेअे कछुं, राधाकुंड, कृष्णकुंड, उपर अंगादी छे। कहे तो जोलावुं। त्यारे श्रीआचार्यजी कहे जोलावो। त्यारे अंगादी जोलावी रुद्र कुंड उपर झुंपडी अंगादीअेने अनावी दीधी। अने कृष्णदास शूद्रने सेवक करी अधिकारी कयां। कछुं, अंगादीने जे जेधअे ते मथुरा आगरे लावी देजे। पछी कृष्णदासे अंगादीने काढी वैष्णव राख्या। ते आगण कृष्णदासनी वार्तामां कहीशुं। आ प्रकारे सद् पांडे, नरो, भवानी, मानिकचंद आदिने सेवक करीने श्रीगोवर्द्धननाथजीने अहार पधरावी सेवा करावी।

वार्ता-प्रसंग २—अेक समय श्रीगोवर्द्धनधर कहे, अने गाय अहुज प्रिय छे। त्यारे श्रीआचार्यजीअे सद् पांडेने जोलावी वेदकर्म करवानी पवित्री हती ते छे कहे, अना पैसा करी श्रीगोवर्द्धननाथजीने गाय लावी दे। त्यारे सद् पांडेअे कछुं, महाराज!

गाय भेंसि हैं सो सब श्रीगोवर्द्धननाथजी की हैं। तब श्रीआचार्यजी कहें, हम कहें तैसैं करो। या सोनों वेचि गाय हमारी ओर की श्रीनाथजी की भेट करति हैं। और तुम ब्रजवासी सगरे मिलिकें एक एक दोय दोय गाय न्यारी भेट करो। तब सदू पांडे उह पवित्रि वेचि दोय गाय लाये। सो श्रीआचार्यजी नें श्रीनाथजी की भेट करी। और सदू पांडे ब्रजवासी आदि काहू नें एक गाय भेट करी, काहू नें दोय गाय भेट करी। काहू नें चारि गाय भेट करी। सो हजारन गाय भेट भई। तब गायन के रहिवे के लिये गोपालपुर गाम मंदिर पास बसायें। 'गोपाल' नाम श्रीठाकुरजी को धरे। ता दिन तें श्रीनाथजी के गाय बहोत बढी। सो गाय श्रीठाकुरजी कों बहोत प्रिय हैं। सो छीतस्वामी गाथे हैं—

राग गौरी—

आगें गाय, पाछें गाय, इत गाय उत गाय, गोविंदा कों गायन में बसिवोई भावें। गायन के संग धावें, गायन में सजुपावें, गायन की खुररेनु अंग सों लगावें ॥१॥ गायन सों ब्रज छायो, वैकुण्ठ हु विमगायो, गायन के हेतु, गिरि कर लें उडावें। 'छीतस्वामी' गिरिधारि, विठ्ठलेस वपु धारि, ग्वालिया को मेव किये, गायन में आवें ॥२॥

या प्रकार सदू पांडे आदि ब्रजवासी सवन कों श्रीगोवर्द्धननाथजी सुख दिये।

वार्ता-प्रसंग ३—और एक दिन सदू पांडे के घर श्री गोवर्द्धननाथजी सौने की कटोरी ले कें मंदिर तें आये। सो नरो सों कहें, यामें,

अभारा धरे गाय-बेंस छे ते अधी श्रीगोवर्द्धननाथजी छे। त्यारे श्रीआचार्यजी छे, अमे कहीअये तेम करे। आ सोतुं वेची गाय अमारी तरुंधी श्रीनाथजीने लेट करीअये छीअये। अने तमे अथा ब्रजवासी मणीने अेक-अेक अणये गाय लुटी लेट करे। त्यारे सहू पांडे ते पवित्री वेची अे गाय लाव्या, ते श्रीआचार्यजीअये श्रीनाथजीने लेट करी। अने सहू पांडे ब्रजवासी आदि डोअये अेक गाय लेट करी, डोअये अे गाय लेट करी, डोअये अार गाय लेट करी। अेम लुअरे गाय लेट थअ। त्यारे गाथाने रहेवा भाटे गोपालपुर गाम बसाव्युं। 'गोपाल' नाम श्रीठाकुरजीतुं धर्युं। ते द्विसथी श्रीनाथजीने गाय बणी वधी। तेथी गाय श्रीठाकुरजीने अहुन प्रिय छे। ते छीतस्वामीअये गाथुं छे— राग गौरी। 'आगें गाय पाछे गाय...' (अपर लुअये) अे प्रकारे सहू पांडे आदि ब्रजवासी अधाने श्रीगोवर्द्धननाथजीअये सुअ आभ्युं।

वार्ता-प्रसंग ३-वणी अेक द्विस सहू पांडेना धरे श्रीगोवर्द्धननाथजी सोनानी कटोरी अधने मंदिरथी पधार्या। त्यारे नरेने कहे आभां भने हूध करी हे। त्यारे नरेअये

मोकों दूध करि दे । तब नरो नें कही, यह कटोरी तो छोटी है, यामें कहा दूध समायगो ? तब श्रीनाथजी कहें, तू यामें करि-करि दे मैं पान करूं । सो नरो दूध कटोरी में करति जाय और श्रीगोवर्द्धनधर पान करत जाय । या प्रकार दूध पीके कटोरी नरोके उहांई डारिके रात्रि कों पाछे आय मंदिर में पौढि रहे । पाछें सबेरे भये घर की टहल, दूध तातो करि, दहीं बिलोय, पाछें दूध, दहीं, माखन नित्य के नेग को ले, सोने की कटोरी ले, मंदिर में आय कह्यो । रात्रि कों देवदमन कटोरी सोने की ले के आयो, सो दूध पी के कटोरी मेरे घर डारि आयो । आखरि लरिका तो सही । सो यह सोने की कटोरी लेहु । तब भगरे भीतरिया सेवक चक्रत हे रहें । जो-नरो पर ऐसी कृपा है । सो या प्रकार सद् पांडे के घर एक वार नित्य पधारतें ।

वार्ता-प्रसंग ४—सो सद् पांडे के परोस में सद् पांडे को छोटे भाई मानिकचंद ब्रजवासी रहत हतो । ताके घर गाय भेंसि बहोत । सो मानिकचंद की मा, सद् पांडेकी मा, ये वृद्ध बहोत हती । सो डोकरी मानिकचन्द के घर रहें । सो जब सबेरे दहीं को बिलोवनो होय चुकें तब माखन रोटी दहीं उह डोकरी के आगें सगरे घरके लोग धरि दे । सगरे बालकन कों कलेऊ बांढिवें को उह डोकरी को नेम

कहुं. आ कटोरी तो नानी छे. अमां शुं दूध भ्लाशे? त्यारे श्रीनाथ७ कहे, तू आमां करती न७ हुं पान कइं. त्यारे नरो दूध कटोरीमां करती नय अने श्रीगोवर्द्धनधर पान करता नय. आ प्रकारे दूध पीने कटोरी नरोने त्यां न भूझीने रात्रिअे पाछा आवी मंदिरमां पोढी रह्या. पछी सवार थये घरनी टहल, दूध गरम करी दहीं वलोवी पछी दूध, दहीं, माखणु नित्यना नेगने लई सोनानी कटोरी मंदिरमां लई आवी कहुं, रात्रिअे देवदमन सोनानी कटोरी लई आव्यो हुतो ते दूध पीने कटोरी मारा धरे नाभी आव्यो. आभर आलक तो भरो. आ सोनानी कटोरी ले. त्यारे अथा लीतरिया, सेवक यकित थई रह्या, के नरो उपर आवी कृपा छे. आ प्रकारे सद् पांडेना धरे अेक वार नित्य पधारता.

वार्ता-प्रसंग ४-वणी सद् पांडेनी पांडाशमां सद् पांडेना नानो लार्थ माणुक्यंद प्रजवासी रहतेो हुतो. अेना धरे गाय लेस धणी. ते माणुक्यंदनी मा, सद् पांडेनी मा, अे वृद्ध धणी हुती. ते डोशी माणुक्यंदना धरे रहे. ते न्यारे सवारे दहींनुं वलोवणुं थई युके त्यारे माखणु, रोटी, दहीं, ते डोशीनी आगण अथा धरना लोको धरी देता. अथा आलकेने कलेउ पांडवानो ते डोकीनी नेम हुतो. पछी अथा

हतो । सो सगरे बालक आन्योर के भेले होय द्वार पर बैठि रहें । जब वह डोकरी पुकारै, अरे सगरे लरिका ! अपनो अपनो कलेज ले जाउ । तव सगरे बालक पास आवें । तामें श्रीगोवर्द्धनधर हू बरष सात के बालक हू के आवें । सो वह डोकरी एक बालक को हाथ पकरि नाम पूछि हाथ पर रोटी माखन दहीं धरे । या प्रकार सब कों देई । पाछें जब श्रीनाथजी को हाथ पकरें तव पूछे तेरो कहा नाम है ? तव श्रीनाथजी कहें, मेरो नाम देवदमन ! तव डोकरी कहै, पर्वत को देवता देवदमन ? तव श्रीनाथजी कहें, हां, हां, वारि जाऊं, नित्य कलेज याहि समय लै जैयो । तव श्रीनाथजी पधारें । या प्रकार सदू पांडे आदि ब्रजवासिन पर श्रीगोवर्द्धनधर कृपा करते । बालक की नाई मांगि कें लेते । सो सदू पांडे, मानिकचंद, नरो, भवानी, सदू पांडे मानिकचंद की माता डोकरी, ये बड़े श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हे । इनकी वार्ता कहां ताई कहिये । वार्ता ॥ ७३ ॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, गोपालदास, जटाधारी गौड़ ब्राह्मण प्रयाग के तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये गोपालदास लीला में ललिताजी की सखी हैं । ‘रस-

आसक आन्योरना लेगा थरु द्वार उपर जेसी रहे, न्यारे ते डोकरी पोकारे, अरे अधा छोडराओ ! पैतपैतानुं कलेउ (नास्तो) लरु नव. त्यारे अधा आसके पासे आवे. तेमां श्रीगोवर्द्धनधर पखु वर्ष सातना आसक थरुने आवे. पछी ते डोशी जेक-जेक आसकना हाथ पकडी नाम पूछी हाथ पर रोटी, माणखु दहीं धरे. आ प्रकारे अधाने आवे. पछी न्यारे श्रीनाथजना हाथ पकडे त्यारे पूछे ताईं शुं नाम छे ? त्यारे श्रीनाथजु कहे, माईं नाम देवदमन. त्यारे डोकरी कहे, पर्वतना देवता देवदमन ? त्यारे श्रीनाथजु कहे, हां हां, त्यारे रोटी उपर दहीं, माणखु धरी हाथमां दे, कहे, हुं वारी नउं. नित्य कलेउ आ न समये लरु नरे. त्यारे श्रीनाथजु पधारै. आ प्रकारे सह पांडे आदि ब्रजवासीजो उपर श्रीगोवर्द्धनधर कृपा करता. आसकनी माकुक मांगीने लेता. ते सह पांडे, माणिकचंद, नरो, भवानी सह पांडे, माणिकचंद पांडेनी माता डोशी जे श्रीआचार्यजना महान कृपापात्र भगवदीय हुतां. जेभनी वार्ता कथां सुधी कहीजे ? वार्ता ॥७३॥

* * *

हुवे श्रीआचार्यजु महाप्रभुजना सेवक, गोपालदास जटाधारी, गौड़ ब्राह्मण प्रयागना, तेभनी वार्ताना भाव कहीजे छीजे—

भावप्रकाश—ये गोपालदास लीलामां ललिताजनी सखी छे. ‘रससद्रा’

દ્રા' લીલા મેં ઇનકો નામ હૈ । સો પ્રયાગ મેં એક ગૌડ બ્રાહ્મણ કે ઘર પ્રગટે । વરષ છૈ કે ભયે । તવ કાસી મેં નાગા વૈરાગી વહોત આયે । સો કાસી મેં કહુ ઇન રહિ પ્રયાગ મેં મકર-સ્નાન કોં સઘ આયે । સો ગોપાલદાસ પિતા કે સંગ મકર-સ્નાન કોં ગયે । સો મીડ મેં પિતા સોં વિહુટિ ગયે । તવ રોવન લાગે । તવ એક ગા નેં કહી, મૈં તોકોં તેરે પિતા પાસ લે ચલંગો । યોં કહિ અપુને ડેરા જાય તહોં તે પુની વસ્તુભાવ લે ગોપાલદાસ કોં લે ભાજ્યો । સો દક્ષિણ મેં જાય અપુનો ચેલા કરિ રાખ્યો । પાછે ગોપાલદાસ ઉહ નાગાકી જમાતિ મેં રહે । સો વરષ તીસકે ભયે । તવ ઉહ નાગા મર્યો તવ ગોપાલદાસ કે મનમેં યહ આઈ, જો-તીર્થ કરિયે । તવ, તે પચાસ નાગા વૈરાગી કો સંગ કરિ દ્વારિકા ગયો । પાછે દ્વારિકા તેં વહી સંગ મથુરા કોં ચલ્યો । સો મથુરા આયો । તામેં ગોપાલદાસ હુ આયો । સો તા સમય ત્રિશ્રાંતિ પર શ્રીઆચાર્યજી સંધ્યા વંદન કરત હે । સો ગોપાલદાસ કોં શ્રીઆચાર્યજી કે દરસન ભયે । સો શ્રીઆચાર્યજી કે પાસ ઠાઢે હૈ રહેં । તવ કૃષ્ણદાસ વન નેં કહી । તૂ યહાં ક્યોં ઠાઢો હોય રહ્યો હૈ । તેરો સંગ નાગા વૈરાગી કો તો યો । તવ ગોપાલદાસ નેં કહી મેરો સંગ વહોત જન્મ તેં વિહુરયો હૈ । સો અવ તેઆચાર્યજી મોપર કૃપા કરેં । સો ફેરિ મોકોં ભગવદીય, ભગવાન કો સંગ

ભલામાં એમનું નામ છે. એ પ્રયાગમાં એક ગૌડ બ્રાહ્મણના ઘરે પ્રકટ્યા. પછી ૪૦ છ ના થયા. ત્યારે કાશીમાં નાગા વૈરાગી ઘણા આવ્યા. તે કાશીમાં થોડા વસ રહી પ્રયાગમાં મકર સ્નાન માટે બધા આવ્યા. ગોપાલદાસ પણ પિતાના સંગે મકર સ્નાન માટે ગયા. તે ભીડમાં પિતાથી વિખુટા પડી ગયા. ત્યારે રેના લાગ્યા. ત્યારે એક નાગાએ કહ્યું, હું તને તારા પિતા પાસે લઈ ચાલીશ. એમ કહી પોતાના પુકામે જઈ ત્યાંથી પોતાની વસ્તુ ભાવ લઈ ગોપાલદાસને લઈને આવ્યો. પછી દક્ષિણમાં જઈ પોતાનો ચેલા કરીને રાખ્યો. પછી ગોપાલદાસ તે નાગાઓની જમાતમાં રહ્યા. તે વર્ષ ત્રીસના થયા. ત્યારે એ નાગો મર્યો. ત્યારે ગોપાલદાસના મનમાં એ માન્યું કે તીર્થ કરીયે. ત્યારે સો-પચાસ નાગા વૈરાગીને સંગ કરી દ્વારિકા ગયો. પછી દ્વારિકાથી તે જ સંગ મથુરાએ આવ્યો. તે મથુરા આવ્યો તેમાં ગોપાલદાસ પણ આવ્યા. તે સમયે ત્રિશ્રાંતિ પર શ્રીઆચાર્યજી સંધ્યા-વંદન કરતા હતા. ત્યારે ગોપાલદાસને શ્રીઆચાર્યજીનાં દર્શન થયાં. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી પાસે ઉભા થઈ રહ્યા. ત્યારે કૃષ્ણદાસ મેધને કહ્યું, તૂ આહીં કેમ ઉભો રહ્યો છે. તારો સંગ નાગા વૈરાગીનો તો ગયો. ત્યારે ગોપાલદાસે કહ્યું, મારો સંગ ઘણા જન્મથી વિહરયો છે.

मिले । तब श्रीआचार्यजी संध्या वंदन करि कहें, गोपालदास ! आयो ? तब गोपालदास दण्डवत् करि कह्यो, महाराज ! आपकी कृपा मई तो आयो । परन्तु महाराज मैं बहोत भटक्यो । अनेक मार्ग में दुःसंग में सगरे पापाचरन करि महा दुष्ट मैं हूँ गयो । सो आपकी कृपातें या संसार समुद्र तरुंगो । और तो मेरो बल कछु नाहीं हैं । तातें कृपा करि मोकों अपनी सरन राखो । तब श्रीआचार्यजी कहें, जटा माथे की मुंडाय के न्हाय आवो, तब तुमहूँ नाम सुनावेंगे । तब गोपालदास जटा मुंडाय कूप में न्हाय पाछें श्रीयमुनाजी में न्हाय श्रीआचार्यजी के पास आवे । तब श्रीआचार्यजी नाम सुनाय निवेदन कराये । तब गोपालदास नैं विनती करी, महाराज ! अब मोकों कहा आज्ञा हैं ? जो सेवा बतावो सो करूं । तब श्रीआचार्यजी कहें, हमारे संग गोवर्द्धन चलो । तहां श्रीगोवर्द्धनधर के वाग की सेवा करो । पाछें श्रीआचार्यजी मथुरा तें श्रीगोवर्द्धन पधारे । तब तहां श्रीनाथजी के मंदिर में पधारे । तब गोपालदास कूँ श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कराये । पाछें श्रीनाथजी के वाग की सेवा दीने । सो सेवा ऐसी करें, एक एक फूल फल सब नजरि में राखे, सगरे वृक्षन की चौकसी राखें । वाग में कहूँ कूड़ा घास न रहें । सगरे वृक्ष जल सों हरे राखें ।

तेथी हुवे श्रीआचार्यजी मारा उपर कृपा करे तो इरी मने लगवदीय लगवाननो संग भणे. त्यारे श्रीआचार्यजी संध्यावन्दन करीने कहे, गोपालदास आव्यो ? त्यारे गोपालदासे दण्डवत् करीने कहुं, महाराज ! आपनी कृपा थई तो आव्यो. परंतु महाराज हुं धलुं लटक्यो. अनेक मार्गमां दुःसंगमां अधां पापाचरण करी हुं महादुष्ट थई गयो. आपनी कृपाथी आ संसार समुद्रमांथी तरीश. भीनुं तो माइं अल कंठ नथी. तेथी कृपा करी मने आपनी शरणे राभे. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, जटा माथानी मुडावीने न्हाय आवो त्यारे तमने नाम संलणावीशुं. त्यारे गोपालदास जटा मुडावी कुवा उपर न्हाई पछी श्रीयमुनाजीमां न्हाय श्रीआचार्यजीनी पासे आव्या. त्यारे श्रीआचार्यजीये नाम संलणावी निवेदन कराव्युं. त्यारे गोपालदासे विनंती करी, महाराज ! हुवे मने शी आज्ञा छे ? जे सेवा बतावो ते इइं. त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, अमारी साथे गोवर्द्धन यावो. त्यां श्रीगोवर्द्धनधरना आगती सेवा करे. पछी श्रीआचार्यजी मथुराथी श्रीगोवर्द्धन पधार्या. त्यारे त्यां श्रीनाथजीना मंदिरमां पधार्या. त्यारे गोपालदासने श्रीनाथजीनां दर्शन कराव्यां. पछी श्रीनाथजीना आगती सेवा आपी. ते सेवा अवी करे के अक अक कूल, इल, अधां नजरमां राभे. अधां वृक्षानी चौकसाई राभे. आगमां कंठ कूड़ा-घास न रहे.

यह भाव विचारे जो, यहां श्रीठाकुरजी खेलन कों पधारत हैं । तातें उत्तम जगह रहें तो आछो । या प्रकार कछुक दिन सेवा करी, सो एक वैष्णव को लरिका अपुने श्रीठाकुरजी के लिये नित्य दस पांच फूल चुराय ले जाय । सो गोपालदास व्होतेरो जतन कियो जो-कोन फूल ले जात हैं । परन्तु जानि न परी । तब एक दिन गोपालदास उह बाग में छिप रहें । सो उह वैष्णव को लरिका वर्ष ग्यारह को, सो चारों ओर गोपालदास कों देखयो । जान्यो, जो-अब ये नाहीं हैं । तब पांच फूल तोरघो । तब गोपालदास दौरिकें आयो, सो उह लरिका कों पकरि के मारघो । तब वह लरिका छुड़ाय के भाज्यो । सो गोपालदास क्रोध करिकें उह लरिका के पाछें दौरे । तब वह लरिका छुड़ायके भाज्यो, सो श्रीनाथजी के मंदिर में छिप्यो । तहां भोग के किवाड़ खुले हते । तहां आइ वह लरिका दरसन में छिप्यो । सो गोपालदास रीस के मारे चले आये । सो क्रोध में मंदिर को ज्ञान न रह्यो । उह बालक कों एक धोल मारी । तब सबन नें छुड़ाय दियो । सो श्रीनाथजी कों व्होत बुरी लागी, जो-गोपालदास मेरी हू कानि न करी ? मंदिर में मारघो । पाछें भूलि हू गये । और उह बालक कों यातें इतनो दंड भयो, जो-श्रीनाथजी के फूल, घरके ठाकुर कों धरनो नाहीं । यह शिक्षा किये । पाछें पानघर

अधां वृक्ष जलथी हर्यां राभे. अे साव विचारे डे अहीं श्रीठाकुरजी खेलवा माटे पधारे छे. तेथी उत्तम जगह रहे तो साइं. या प्रकारे डेटलाक दिनस सेवा करी. पछी अेक वैष्णवने आलक पोताना श्रीठाकुरजीने माटे नित्य दश-पांच फूल चुरीने लई जय. गोपालदासे धरुणाय यत्न कर्यो डे डेअु फूल लई जय छे ! परंतु अप्पर न पडी. त्यारे अेक दिनस गोपालदास अे आगमां संताई रह्या त्यारे ते वैष्णवने आलक वर्ष अग्यारने हुतो तेणु त्यारे तरङ्ग गोपालदासने जेया. (पछी) जेणुं डे हुवे अे नथी. त्यारे पांच फूल तोड्यां. त्यारे गोपालदास डोडीने आव्या. पछी ते आलकने पकडीने मार्यो. त्यारे ते आलक छोडावीने साज्यो. पछी गोपालदास डोव करीने ते आलकनी पाछग डोडया. त्यारे ते आलक छोडावीने साज्यो ते श्रीनाथ-जना मंदिरमां संतायो. त्यां भोगनां कमाड भुटयां हुतां त्यां आवी ते आलक दर्शनमां संतायो. ते गोपालदास रीसना मार्या याट्या आव्या. ते डोवमां मंदिरनुं ज्ञान रह्युं नहीं. ते आलकने अेक धोल मारी त्यारे अधाज्ये छोडावी दीधो. त्यारे श्रीनाथजने धरुणुं भोटू लाग्युं, डे गोपालदासे मारी पणु कानि न करी ! मंदिरमां मार्यो ? पछी भूडी पणु गया. वणी ते आलकने अेथी आटवो दंड थयो डे श्रीनाथ-

की सेवा में कोई न हतो ! तब श्रीआचार्यजी गोपालदाम जटाधारी कों पान-
घरकी सेवा दीनी । सो पान की सेवा भली भांति सों करन लागे । सो आपाढ़ के
दिन गरमी ऊमस व्होत परे, तब गोपालदास पान छात्र पर विछाय ऊपर आलो
कपरा ढाँकि सगरी रात्रि पंखा करे । सो श्रीआचार्यजी को यह नियम हतो, जो-
रात्रि में दोय तीन बेर उठि सगरे सेवकन कों देखि जाय । जो कोई सेवक लौकिक
वार्ता, काहू की निंदा न करन पावे । सो अर्द्ध रात्रि समय एक दिवस श्रीआचा-
र्यजी पधारे । सो दूरितें देखे तो कोई सेवक कीर्तन गावत है । कोई सेवक धोल
गावत है, कोई सेवक पंचाध्यायी को पाठ करत है । कोई भगवद् वार्ता करत है ।
सो देखिके प्रसन्न भये । जो कोई लौकिक बात काहू की निंदा नहीं करत है ।
पाछे गोपालदास कों आय देखें तो नींद को झोका आयो है, परन्तु पानन कों
पंखा करत हैं । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु गोपालदास के ऊपर व्होत प्रसन्न भये ।
जो यह सबतें श्रेष्ठ है । जो नींद हू आवत में भगवद सेवा करत हैं ।

वार्ता-प्रसंग १—सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें, जो-गोपा-
लदास सवेरे तुम न्हाइ के श्रीनाथजी के मंदिर भीतर जाई श्रीनाथजी
के निकट जाई, पंखा श्रीनाथजी कों करियो ।

जनां कुल ढाकुरने धरनां नही. आ शिक्षा करी. पछी पानघरनी सेवामां डोर्छ न
हुतुं. त्यारे श्रीआचार्यज्ये गोपालदास जटाधारीने पानघरनी सेवा आपी. ते
पाननी सेवा सुंदर रीतिथी करवा लाग्या. पछी अषाढना दिवस (आव्या) गरमी
ऊमस अहु पडे. त्यारे गोपालदास पान छात्र उपर भीछावी उपर भीतुं कपडुं ढाँकी
अधी रात्रि पंखा करे. त्यारे श्रीआचार्यज्येने ज्ये नियम हुतो ते रात्रिमां ज्ये-त्रण
वार उठी अथा सेवकाने जेठे अथ, ते डोर्छ सेवक लौकिक वार्ता, डोर्छनी निंदा न
करवा पासे. पछी अर्द्ध रात्रि समय अके दिवस श्रीआचार्यज्ये पधार्या, ते दूरथी
ज्ये तो डोर्छ सेवक कीर्तन गाय छे, डोर्छ सेवक धोल गाय छे, डोर्छ सेवक पंचा-
ध्यायीना पाठ करे छे. ते जेधने प्रसन्न थया, ते डोर्छ लौकिक बात डोर्छनी निंदा
नथी करता. पछी गोपालदासने आपीने ज्ये तो निंदानुं ओकु आव्युं छे. परंतु
पान ने पंखा करे छे. त्यारे श्रीआचार्यज्ये महाप्रभु गोपालदासना उपर अहु प्रसन्न
थया, ते आ सहुथी श्रेष्ठ छे. तेम जे निंदामां पणु संगतसेवा करे छे.

वार्ता-प्रसंग १-पछी श्रीआचार्यज्ये महाप्रभु डहे, ते गोपालदास ! सवारे तमे
न्हाधने श्रीनाथज्येना मंदिर अंदर जेठे श्रीनाथज्येने पंखा करजे.

भावप्रकाश—काहे तें, पहलें खिचेमा पंखा हतो नाहीं ।

तब गोपालदास सवेरे न्हाइ कें श्रीनाथजी के मंदिर में श्रीनाथजी के निकट जाई पंखा श्रीनाथजी कों करन लागें । सो प्रेम में भगन हूँ गये सो अनोसर में हूँ श्रीआचार्यजी की आज्ञा तें पंखा करते । श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें, जो—गोपालदास ! अनोसर में आंखि मीचि के पंखा करियो । नेत्र मति खोलियो । सो रात्रि में हूँ आंखि मीचि कें पंखा करते । सो ऐसे भगवदीय गोपालदास भये । जो सरीर को अध्यास लंघी आदि रात्रि कों बाधा न होती । पाछे रात्रि कों एक दिन श्रीनाथजी कहें, जो—गोपालदास ! नेत्र खोलि, मेरे दरसन करि । तब गोपालदास कहें, महाराज ! मोकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की आज्ञा नाहीं है । जातें नेत्र न खोलूंगो, तब श्रीनाथजी गोपालदास के मुख में महाप्रसाद हूँ खवाय देते, परन्तु गोपालदास नेत्र न खोलते । ऐसे आज्ञा श्रीआचार्यजी की पालन करते, जो—श्रीनाथजी के कहतें हूँ न खोलते । श्रीस्वामिनीजी पधारते, श्रीगोवर्द्धनधर सों वार्ता करती, सो सब सुनते । या प्रकार की कृपा गोपालदास पर हती ।

वार्ता—प्रसंग २—पाछें एक दिन श्रीनाथजी के मन में यह आई,

भावप्रकाश—कैमडे पहेलां भेंयवानो पंभो न हुतो.

त्यारे गोपालदास सवारे न्हाइने श्रीनाथजीना मंदिरमां श्रीनाथजीनी निकट जई श्रीनाथजीने पंभो करवा लाग्या. ते प्रेममां भगन थई गया. पछी अनोसरमां पञ्च श्रीआचार्यजीनी आज्ञाथी पंभो करता. श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे, के गोपालदास ! अनोसरमां आंखि मीचिने पंभो करजे. नेत्र भोलीश नही. पछी रात्रिमां पञ्च आंखि मीचिने पंभो करता. जेवा भगवदीय गोपालदास थया के शरीरना अध्यास लंघी आदि रात्रिजे कंठ बाधा न थतुं. पछी रात्रिजे एक दिवस श्रीनाथजी कहे, के गोपालदास ! नेत्र भोल. मारां दर्शन कर. त्यारे गोपालदास कहे, महाराज ! मने श्रीआचार्यजी महाप्रभुनी आज्ञा नथी. तेथी नेत्र नहीं भोलुं. त्यारे श्रीनाथजी गोपालदासना मुखमां महाप्रसाद पञ्च भवदायी देता. परंतु गोपालदास नेत्र न भोलता. जे रीते श्रीआचार्यजीनी आज्ञा पालन करता. जे श्रीनाथजीना कहेवाथी पञ्च (आंखि) न भोलता. श्रीस्वामिनीजी पधारतां. श्रीगोवर्द्धनधरथी वार्तां करतां ते पञ्च सांख्यतां. आ प्रकाशनी कृपा गोपालदास उपर हुती.

वार्ता—प्रसंग २—पछी जेक दिवस श्रीनाथजीना मनमां जे आव्युं के आ जे ज

वैष्णव को वेटा श्रीनाथजी के बाग के फूल चुरावतो ताकों ये गोपालदास श्रीनाथजी के मंदिर में मारे । ता अपराध को दंड प्रभु दिये हैं । सो यह आगे जाय न सकेगो । विरह ताप सो देह छोडि लीला में प्राप्त होइगो । गोपालदास के परलोक में बाधक नाही ।

भावप्रकाश—यामें यह जताये,—पाप पुण्य को भोग इहां करि चुके तव भगवद प्राप्ति होई ।

तब सब वैष्णवन को संदेह निवृत्त भयो । पाछें गोपालदास जब मजलि द्वै गये । तब श्रीनाथजी के स्वरूपानंद की सुधि आई । तब विरह तें व्याकुल होई गिरे । हाय, हाय, मो बराबर दुष्ट कौन ? यह श्रीनाथजी की सेवा स्वरूपानंद को अनुभव, वैष्णव को संग, सो सब छोडि कें मैं पृथ्वी परिक्रमा कों चलयो ? धिक्कार मोकों, धिक्कार मेरी बुद्धि कों, जो—यह मनमें आई । या प्रकार कहत विरह तें सूछा आई । सो श्रीगोवर्द्धनधर के स्वरूप को ध्यान धरि देह छोडि लीला में प्राप्त भये ।

भावप्रकाश—या वार्ता में यह जताये, जो—अपराध काहू को न करनो । अपराध है सो उत्तम भगवद धर्म में आई वाधा करे । तब धर्म छूटि जाई । तातें

वाने आल्या ? त्तारे श्रीआत्थार्थेण कहे, के अनेक अक भोटा अपराध छे. अक वैष्णवना आसक श्रीनाथलना आगमां दूख चोरावतो तेने आ गोपालदासे श्रीनाथलना मंदिरमां मार्यो. ते अपराधने दंड प्रभु आये छे. पणु आ आगण नई नई शके. विरह तापथी देह छोडी लीलामां प्राप्त थये. गोपालदासने परलोकमां बाधक नथी.

भावप्रकाश—अमां अे नृणांयुं, पाप—पुण्यने भोग अहीं करी यूके त्तारे भगवत्प्राप्ति थाय.

त्तारे अथा वैष्णवने संदेह निवृत्त थयो. पछी गोपालदास जे भजल गया त्तारे श्रीनाथलना स्वरूपानंदनी सुध आवी. त्तारे विरहथी व्याकुल थधने पड्या. हाय ! हाय ! मारा बराबर दुष्ट कोणु ? आ श्रीनाथलनी सेवा, स्वरूपानंदने अनुभव, वैष्णवने संग अे अथुं छोडीने हुं पृथ्वी परिक्रमाअे आल्या ? धिःकार भने; धिःकार मारी बुद्धिने ने आवुं मनमां आवुं. पछी श्रीगोवर्द्धनधरनां स्वरूपतुं ध्यान धरी देह छोडी लीलामां प्राप्त थया.

भावप्रकाश—आ वार्तामां अे नृणांयुं; के कोधने अपराध न करेवो. अपराध छे ते उत्तम भगवद्धर्ममां आवीने बाधा करे, त्तारे धर्म छुटी अय.

अपराध तें सदा भय राखनो । और श्रीआचार्यजी की आज्ञा को दृढ़ विश्वास राखनों । जो श्रीठाकुरजी हूं कहें, नेत्र खोलि, परन्तु श्रीआचार्यजी की आज्ञा नहीं, तातें न खोले । तब श्रीनाथजी प्रसन्न भये । और यह पुष्टिमार्ग में सगरे अपराध दूर करिवे कों एक श्रीठाकुरजी को विरह मुख्य कारन है । विरह करि प्रभु की प्राप्ति होई, यह सिद्धान्त जताये । वैष्णव ॥ ७४ ॥

सो गोपालदास ऐसे श्रीआचार्यजी के टेक के कृपापात्र भगवदीय हैं । इनकी वार्ता कहां ताई कहिये । ॥ वार्ता ७४ ॥

* * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, कृष्णदास और कृष्णदास की स्त्री, गुजराती ब्राह्मण, सो गुजरात में वाड चोइला गाम, सो वाड में रहतें, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये लीला में श्रुतिरूपान में हैं । मदन गोप की दोऊ बेटी । सो श्रीचंद्रावलीजी कों श्रीठाकुरजी संकेत में मिलें सो बात, ये मदनगोप की बेटी दोऊ 'नंदा' 'शुभदा' इनको नाम, सो नंदा, शुभदा नें कीरतिजी सों सब कही । जो श्रीचंद्रावलीजी और श्रीकृष्ण संकेत में एकान्त बात करत हते । तब कीरति खीझि कहें, ऐसी बात काहू की करिये नहीं । सो बात सुनिके चंद्रा-

तेथी अपराधथी सदा भय राखनो. वणी श्रीआचार्यजीनी आज्ञानो दृढ विश्वास राखनो. जे श्रीठाकुरजीये पणु कहुं नेत्र खोल परंतु आचार्यजीनी आज्ञा नहीं तेथी न खोलयां. तारे श्रीनाथजी प्रसन्न थया अने आ पुष्टिमार्गमां अथा अपराधाने दूर करवाने अक श्रीठाकुरजीने विरह मुख्य कारणु छे. विरहथी प्रभुनी प्राप्ति थाय अे सिद्धान्त जताव्यो. वै. ॥ ७४ ॥

अे गोपालदास अेवा श्रीआचार्यजीना टेकना कृपापात्र भगवदीय हुता. तेमनी वार्ता कयां सुधी कहीअे ? वार्ता ॥७४॥

* * *

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना सेवक, कृष्णदास अने कृष्णदासनी स्त्री गुजराती ब्राह्मण, ते गुजरातमां वाड चोइला गाम छे त्यां वाडमां रहता, तेमनी वार्तानो भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे लीलामां श्रुतिरूपानामां छे. मदनगोपनी अने बेटी श्रीचंद्रावलीजीने श्रीठाकुरजी संकेतमां मज्या ते बात अे मदनगोपनी अने बेटी 'नंदा' 'शुभदा' अेअनु नाम, ते नंदा शुभदाअे कीर्तिजीने अधी कही, हे चंद्रावलीअे अने श्रीकृष्ण संकेतमां अेकान्तमां बात करता हुता तारे कीर्तिअे भीअने

वलीजी नें शाप दियो, जो-भूमि पर तुम प्रगटो । तब नंदा तो कृष्णदास भये । और शुभदा सो इनकी स्त्री भई । 'वाड' में कृष्णदास भये । 'चोइला' में एक ब्राह्मण के घर स्त्री प्रगटी । सो बड़े भये । तब कृष्णदास को ब्याह भयो । सो वालपने सों इनकी दोऊन की यह रीति जो वैरागी, साधु, संत आवे सो इनके घर सों खाली न जाई । सो एक दिन कृष्णदास की स्त्री माटी लेंन गाम की दस पांच स्त्रीन के संग गई । सो माटी खोदत में ऊपरते बड़ो टीवो टूटि परचो सो सब स्त्री दबी । तहां श्रीआचार्यजी आय निकसे । सो टीवो टूटत देखे । तब सब वैष्णवन सों कहें, वेगे माटी टारो, यहां स्त्री दबी हैं । ता समें गुजरात के वैष्णव संग बहोत हते । सो हाथों हाथ सगरी माटी टारि, सगरी स्त्रीन कों निकासें । तामें द्वै चार तो अधमरी भई । तब श्रीआचार्यजी वेद मन्त्र पढिकें सब स्त्रीन पर जल छिरके । तब सब सावधान भई । इतने (में) गाम के लोग आये । सो अपने अपने घर की स्त्रीन कों ले गये । तब कृष्णदास की स्त्री श्रीआचार्यजी कों दंडोत करि बिनती करी, जो-महाराज ! आप कौन हो ? जो-हम सगरीन कों दबीन कों, मरीन कों जिवाये । ऐसी आप दया करी । सो भगवान विना या समय और कौन सहाय

कहे, जेवी वात टाईनी करीजे नही. जे वात सांखणीने श्रीयंद्रावलीजे शाप आये, ते भूमि उपर प्रगटे. तारे नंदा तो कृष्णदास तथा अने शुभदा तेमनी स्त्री थई. 'वाड'मां कृष्णदास तथा. 'चोइला'मां जेक ब्राह्मणने धरे स्त्री प्रकटी. पछी मोटां तथां तारे कृष्णदासनुं लगन थयुं. ते आलपणुथी आ अन्नेनी जेवी रीती ते वैरागी, साधु, संत आवे ते जेमना धरथी आली न जय. पछी जेक दिवस कृष्णदासनी स्त्री माटी लेवा गामनी दश-पांच स्त्रीज्याने साथे लधने गध. त्यां माटी पोदतांमां उपरथी मोटी टेपण टूटी पडी तारे अधी स्त्री दबी. त्यां श्रीआचार्यजे आवी निकल्या. ते टेपण टूटतां जेध तारे अधा वैष्णवने कलुं, जदही माटी हुटावो. अहीं स्त्रीजे दपार्थ छे. ते समये गुजरातना वैष्णव धरुा साथे हुता. ने हाथेहाथ अधी माटी हुटावी अधी स्त्रीज्याने काढी. तेमां जेयार तो अधमरी थई तारे श्रीआचार्यजे वेदमंत्र पणुने अधी स्त्रीजे उपर जल छांटयुं. तारे अधी सावधान थई. जेटलांमां गामना लोडो आया. पछी पोतपोताना धरनी स्त्रीज्याने लध गया. तारे कृष्णदासनी स्त्रीजे श्रीआचार्यजे दंडवत् करीने बिनती करी ते, महाराज ! आप टाणु छे ? ते अजे अधी दपार्थेकीज्याने भरेकीज्याने जवाडी जेवी आपे दया करी. मोटे लगवान विना आ समय पीजे टाणु सहाय

करें ! तब श्रीआचार्यजी कहें, तू दैवी जीव हैं, भगवदीय है । सो भगवदीय के पाछें सगरी स्त्रीन के प्रान वचे । तब कृष्णदास को स्त्री नें विनती करी, जो-महाराज ! आप कृपा करिकें मेरे घर पधारिये । मेरी सत्ता अङ्गीकार करिये । तब कृष्णदास मेघन नें कही, ये श्रीआचार्यजी महाप्रभु अपुनैं सेवक को लेत हैं । और काहू को कछु लेत नाहीं । या प्रकार वार्ता करत हे इतने में, गाम में कृष्णदास नें सुनी, जो-स्त्री माटी में दबी, सो, दौरे आये । तब स्त्रीनैं कही, श्रीआचार्यजी महाप्रभु ये साक्षात् ईश्वर हैं । सो हम सगरी स्त्रीन कों निकारि कें जल छांटिकें जिवाये । परन्तु ये अपुनैं सेवक को लेत हैं । और काहू को कछु लेत नाहीं । तब कृष्णदास श्रीआचार्यजी कों दंडोत करि विनती किये, जो-महाराज ! हमारे घर पधारि हमकों, स्त्री कों सेवक करियें । तब श्रीआचार्यजी कृष्णदास के घर पधारि कृष्णदास कों स्त्री सहित न्हवाई नाम निवेदन कराये । पाछे तें उन दोउन ने विनती करी, जो-महाराज ! हमकों सेवा पधराय दीजिये । तब श्रीआचार्यजी कहें, तुमकों वैष्णव सेवा दीनी है, सो आये गये वैष्णव की सेवा करियो और श्रीनवनीतप्रियजी के वस्त्र की सेवा दीनी । तीन रात्रि श्रीआचार्यजी कृष्णदास के घर रहि मार्ग की सब रीति बताये । पाछें आपु द्वारिका पधारे । कृष्णदास स्त्री सहित सेवा करे ।

करे ? त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, तू दैवी जीव छे, भगवदीय छे । तेथी भगवदीयनी पाछण अधी स्त्रीआना प्राणु अर्या । त्यारे कृष्णदासनी स्त्रीअे विनंती करी, ठे महाराज ! आप कृपा करीने मारा धरे पधारे, मारी सत्ता अंगीकार करे । त्यारे कृष्णदास मेघने कछु, अे श्रीआचार्यजी महाप्रभु पोताना सेवकानुं ले छे भीज डोधनुं कंध लेता नथी । अे प्रकारे वार्ता करता हुता अेटलाभां कृष्णदासे सांभज्युं ठे स्त्री माटीभां दबी तेथी द्वाडया आंया । त्यारे स्त्रीअे कछुं, आ श्रीआचार्यजी महाप्रभु साक्षात् ईश्वर छे । तेथी अमने अधी स्त्रीअेने काठीने जल छांटीने जवाडी । परंतु अे पोताना सेवकानुं ले छे । भीज डोधनुं लेता नथी । त्यारे कृष्णदासे श्रीआचार्यजीने दंडवत् करी विनंती करी ठे महाराज ! अमारा धरे पधारी अमने, स्त्रीने सेवक करे । त्यारे श्रीआचार्यजी कृष्णदासना धरे पधारी कृष्णदास ने स्त्री सहित नवडावी नाम निवेदन कराव्युं । पछीथी अे अन्नेअे विनंती करी ठे, महाराज ! अमने सेवा पधरावी हो । त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, तमने वैष्णव-सेवा दीधी । तेथी आंया गया वैष्णवनी सेवा करजे । अने श्रीनवनीतप्रियजीना वस्त्रनी सेवा आपी रात्रि श्रीआचार्यजी कृष्णदासना धरे रहि पोते मार्गनी अधी रीति अतावी ।

आये गये वैष्णव को समाधान करे। पाछें श्रीआचार्यजी श्रीद्वारिका तें पाछे पधारे। तब एक रात्रि कृष्णदास के घर रहि अडेल कूं पधारे।

वार्ता प्रसंग १—सो एक समे दस पंद्रह वैष्णव भेले होई अडेल श्रीआचार्यजी के दरसन कों चले। सो कृष्णदास के घर आइ उतरे। ता दिन कृष्णदास के घर कछू सीधो सामग्री न हती। और कृष्णदास घर न हते। तब स्त्री नें सगरे वैष्णवन कों दंडौत करि घर में उतारि दिये। पाछें विचार कियो, जो-घर में तो कछू है नाहीं। और आप घर नाहीं। वैष्णव भूखे होइंगे, तातें अब मैं कहा उपाय करूं? सो वह गाम में एक बनिया हतो, सो या स्त्री कों सुन्दर देखिके वह बनिया कबहूं कबहूं या स्त्री सों टोक करे। जो-तू मेरे घर एक रात्रि आवे तो तू चाहे सो ले जा, तब वा स्त्री नें विचारी, जो-वा बनियाँ के पास जाऊँ। सो वा बनिया की हाट पर आई वासों कही, जो-एक रात्रि आजंगी, सीधो सामग्री चाहिये। तब वह बनिया प्रसन्न होइ के जो इन माँग्यो सो दियो। तब वह स्त्री सामग्री घर लाई। स्नान करि, रसोई करि, श्रीठाकुरजी कों भोग धरि, सब वैष्णवन कों महाप्रसाद लिवायो। बच्चो सो गायन कूं खवाय दियो। आप वामें ते कछू न लियो। पाछें सीधो सामग्री लेके सांज कूं कृष्णदास

पछी आप द्वारका पधार्या। कृष्णदास स्त्री सहित सेना करे. आन्या गया वैष्णवोतु संभाधान करे पछी श्रीआचार्यजी द्वारिकाथी प्राधा पधार्या त्यारे अक रात्रि कृष्णदासना धरे रही अडेल पधार्या.

वार्ता-प्रसंग १-पछी अक समय दश-पंद्र वैष्णव लेगा थर्ध अडेल श्रीआचार्यजीना दर्शन आल्या. ते कृष्णदासना धरे आवी उतर्या. ते द्वियसे कृष्णदासना धरे सीधु-सामग्री कंघ न हतु. अने कृष्णदास धर न हता. त्यारे स्त्रीअये अथा वैष्णवोने हंडवत करी धरमां उतारी दीधा. पछी विचार कर्यो के धरमां तो कंघ छे नही. अने कृष्णदास धर नथी. वैष्णव लूण्या लुशे. तेथी हुवे हुं शुं उपाय कड? पछी ते गाममां अक वाणियो हतो. ते आ स्त्रीने सुंदर जेधने अे वाणियो कोष कोष वार आ स्त्रीने टोक करे. के तू मारा धर अक रात्रि आवे तो तू ने जेधअे ते लध न. त्यारे ते स्त्रीअे विचार्यो के अे वाणियानी पासो नउ. पछी ते वाणियानी हकान उपर आवी. अने कथुं के अक रात्रि आवीश सीधु-सामग्री जेधअे. त्यारे ते वाणियाअे प्रसन्न थधने ने माण्युं ते आण्युं. त्यारे ते स्त्री सामग्री धर लावी. स्नान करी. रसोई करी श्रीठाकुरजने लोग धरी अथा वैष्णवोने महाप्रसाद देवडायो. अथ्यो ते गायने अथडावी

घर आये। सो वैष्णवन कों देखिकें प्रसन्न होइके सबसों मिलें। पाछें पूछे कब के आये? तब वैष्णवन ने कही, जो-मध्याह्न के समें आये। तब कृष्णदास ने स्त्री सों कही, वैष्णव भूखे होंगे, सीधा ले रसोई बेगि करि। तब स्त्री ने कही, सो तो महाप्रसाद ले चुके, चिंता मति करो। तब कृष्णदास कहें, वैष्णव कहाँ तें लिये होंगे, घरमें तो कछू हतो नाहीं। तब स्त्री ने जा प्रकार करयो सो कह्यो। तब स्त्री कों दंडौत करि कहे, तू धन्य है, जो-मेरो धर्म राख्यो। पाछें फेरि रात्रि कों रसोई करि भोग धरि वैष्णवन कों लिवाइ स्त्री पुरुष महाप्रसाद लिये। रात्रि कों वैष्णवन सों मिलि कीर्तन वार्ता किये। पाछे सबेरे वैष्णव चलन लागे तब बिनती करि कहें, मेरे घरते भूखे मति जाउ। पाछें स्त्री सहित कृष्णदास बेगि रसोई करि, भोग धरि महाप्रसाद लिवाई, वैष्णवन कों प्रीति सहित विदा करि थोरीसी दूरि लों कृष्णदास पहुचावन गये। पाछें जब घर आये तब स्त्री सहित महाप्रसाद लिये। पाछें संध्या भई, तब कृष्णदास स्त्री सों कहें, तू वा बनिया सों कालिह कोल करि आई है। सो वह बनिया तेरो मारग देखत होइगो। बाकी सामग्री ते आपुनो मनोरथ सिद्ध भयो, आपुनो धर्म रह्यो, तातें बाको मनोरथ हू सिद्ध करयो चाहिये। तू न्हाइ के सिंगार

दीधो पोते अेभांथी इंध न दीधुं, पछी सीधुं सामग्री लधने कृष्णदास सांजे घर आव्या। पछी वैष्णवोने जेधने प्रसन्न थधने षधाने भग्या। पछी पुछ्युं क्यारे आव्या? त्यारे वैष्णवोअे इधुं, के मध्याह्ननी सभे आव्या। त्यारे कृष्णदासे स्त्रीने इधुं, वैष्णव लूभ्या लुशे सीधुं लध रसोई जलदी करे। त्यारे स्त्रीअे इधुं, के अे महाप्रसाद लध चूक्या चिंता न करे। त्यारे कृष्णदासे इधुं, वैष्णव क्यंथी दीधुं लुशे घरमां तो इंध लुठुं नडी। त्यारे स्त्रीअे जे प्रकार क्यो ते षधे इधो। त्यारे स्त्रीने दंडवत करी इधे, तू धन्य छे के मारे धर्म राभ्ये। पछी इरी रात्रिना रसोई करी लोग धरी वैष्णवोने लेवडावी स्त्री-पुरुषे महाप्रसाद दीधो। रात्रिना वैष्णवोने भणी कीर्तन-वार्ता करी। पछी सवारे वैष्णव यासवा लाग्या त्यारे बिनती करी इधुं, मारा घरथी वैष्णव लूभ्या न जव। पछी स्त्री सहित कृष्णदासे जलदी रसोई करी लोग धरी महाप्रसाद लेवडावी वैष्णवोने प्रीति सहित विदाय करी थोडी दूर मुधी कृष्णदास पहांयाउवा गया। पछी न्यारे घरे आव्या त्यारे स्त्री सहित महाप्रसाद दीधो। पछी संध्या थध त्यारे कृष्णदासे स्त्रीने इधुं, तू ते वाखियाने डाले डाल करीने आवी छे ते वाखियो तारे मारग जेतो लुशे। अेनी सामग्रीथी आपणो मनोरथ सिद्ध थयो, आपणो धर्म रह्यो, तेथी तेनो मनो-

करि ले । तब स्त्री उवटना लगाइ न्हाइ कें काजर बेंदी सिंदूर लगाइ पावन में महावर दियो । इतनें चलन लागी । सो वर्षा के दिन हते, सो मेह बरसन लाग्यो । अँधेरी होई आई । तब कृष्णदास नें कही, मार्ग में कीच भई है सो तेरे पांव कीच सों भरेंगे । और पावन की महावरि छूटि जाइ तो आछो नहीं । उह बनिया को मन बिगरेगो । ताते तू मेरे कांधे पर चढ़ि ले । मैं बाकी हाट पर तोकों उतारि आउँ । तब स्त्री कों कांधे पर चढ़ाइ लेके बाकी हाट पर पहुँचाई, आप कृष्णदास घर आये । तब स्त्री नें बनिया कों पुकारयो, जो-किवाड़ खोलि । तब वह बनिया मनमें प्रसन्न होइ पानी को लोटा संग लिये आयो । कह्यो, कीच के पांव धोइ ले । तब या स्त्री नें कही, मेरे पांव सूखे, आछे, कोरे हैं । तब बनिया नें कही, मारग में कीच बहोत है । तेरे पांव कोरे कैसें रहे ? तब स्त्री नें कही मेरे पांव कोरे हैं, तेरे या बात पूछिवे को कहा काम है ? तेरो काम है सो तू करि । तब बनिया नें कही, तू यह बात सांच बताइ दे, तेरे पांव ऐसे मेह में कोरे क्यों रहे ! तब स्त्री नें कही, मेरो पति अपने कांधे पर बैठाइ मोकों तेरी हाट पर उतारि गयो है । तब बनिया नें कही, यह बात तू सब सांची कही ? तेरो पति मेरे इहाँ क्यों लायो ? और तु कबहूँ मोसों

रथ पणु सिद्ध करवो जेधये. तू न्हाइने शृंगार करी ले. त्यारे ते स्त्रीये उवटना लगाडी न्हाइने काजण, भेँदी, सिंदूर लगाडी पगमां महावर लगाइयुं. पछी यासवा लागी. त्यारे वर्षांना दिवस उता. ते मेह वर्षावा लाग्यो. अंधाई थध आव्युं. त्यारे कृष्णदासे कछुं, मार्गमां कीच थध छे. तेथी तारा पग कीचथी लराशे. अने पगनी भेँदी धोवाध जय तो डीक नही. ते वाणियातुं मन अगउ तेथी तू मारा कंधा उपर चढी ज. हुं तने तेनी दुकान उपर उतारी आवुं. पछी स्त्रीने कंधा उपर चढावी लधने अनी दुकान उपर पहुँचाडी कृष्णदास पोते घर आव्या. त्यारे स्त्रीये वाणियाते पोकार्ये के कमाड जेस. त्यारे ते वाणियाते मनमां प्रसन्न थधने पाणुनि लोटा साथे लधने आव्यो. कछुं, कीचउना पग धोइ ले. त्यारे या स्त्रीये कछुं, मारा पग सूका, मारा, कोरा छे. त्यारे वाणियाये कछुं, मार्गमां कीच थधे छे. तारा पग कोरा केवी रीते रखा ? त्यारे स्त्रीये कछुं, मारा पग कोरा छे. तारे या वात पूछने शुं काम छे ? ताई काम छे ते तू कर. त्यारे वाणियाते कछुं, तू या वात साची अतावी दे. तारा पग यावा वरसा-दमां कोरा केम रखा ? त्यारे स्त्रीये कछुं, मारा पति पोताना कंधा उपर जेसाडीने मने तारी दुकान उपर उतारी गयो छे. त्यारे वाणियाये कछुं, ते या वात अधी साची कही ? तारे पति मारे त्यां केम लाग्यो ? अने तू कोथ दिवस माराथी जेसती नही

बोलत नहीं। सो आप अपुनें सुख कही, मैं एक रात्रि आऊँगी। ऐसे कहि सीधो सामग्री लियो। कछु द्रव्यादि नहीं मांग्यो। सो यह सब कारन मोसों कहि। तब स्त्री नें कही मेरे घर वैष्णव, मेरे गुरु भाई दस पांच आये सो घर में कछु हतो नहीं। सो मैं विचारी, जो-यह देह कहा काम आवेगी। वैष्णव तो भूखे हैं सो भली नहीं। ताते उनके लिये सीधो मैं ले गई। सो मेरो पति तेरे ऊपर प्रसन्न होई तेरी हाट पर उतारि गयो है। ताते तू अपने मन में डरपै मति। यह सुनि बनिया अपने जन्म कों धिकार करन लाग्यो। और कह्यो, तुम स्त्री पुरुष धन्य हो। पाछें दंडोत करि कह्यो, तू मेरी धरम की बहनि है, मेरो अपराध क्षमा करो। पाछें एक नई साड़ी पहराई कृष्णदास के घर लिवाइ चलयो। तहां जाई कृष्णदास कों दंडोत कही, जो-मैं महापापी हों मेरो अपराध क्षमा करो। धन्य, तुम्हारो सांचो धरम हैं। और अब भोको कृपा करिके सरन लेहु। यह मेरी धरम की बहिन है। और तुम मेरे बहनोई हो, मेरे पूज्य हो। परन्तु अब तुम भोको अपनी सरनि लेके यह संसार दुःख तें छुटावो। तब कृष्णदास कहें, हमतो काहू कों सेवक करत नहीं। हमहू श्रीआचार्यजी के सेवक हैं। तुम हू श्रीआचार्यजी के सेवक होई कृतार्थ होउ। अब कछुक

अने ते तारा भुषथी कछु, हुं अक रात्रि आवीश. अम इही सीधुं-सामग्री दीधां क'ध द्रव्य आदि नही मांग्युं. तेथी आ भधुं कारणु मने कहे. त्यारे स्त्रीअे कछु, मारा धरे वैष्णव मारा गुरुभाध दश पांच आव्या त्यारे धरमां क'ध हतुं नही. तेथी मे विचार्युं के आ देह शा काममां आवरी. वैष्णवो तो लूभ्या छे ते साइं नही. तेथी अमने भाटे सीधुं हुं लध गध. तेथी मारे पति तारा उपर प्रसन्न थध तारी दुकाने डितारी गयो छे. तेथी तू तारा मनमां डरीश नही. अे सांलणी वाणुअो पीताना जन्मने धिःकार करवा लाग्यो अने कछु, तमे स्त्री-पुत्रध धन्य छे. पछी द'उवत करी कछु, तू मारी धर्मनी अहेन छे. मारे अपराध क्षमा कर. पछी अेक नवी साडी पहरे रावी कृष्णदासना धरे लध आदयो. त्यां जध कृष्णदासने द'उवत करी विन'ती करी, के हुं महु पापी छुं. मारे अपराध क्षमा करे. धन्य, तमारे साचो धर्म छे अने हुवे मने कृपा करीने शरणे लो. आ मारी धर्मनी अहेन छे अने तमे मारा अनेवी छे. मारा पूज्य छे. परन्तु हुवे मने तमारी शरणे लधने आ संसार दुःअथी छोडावो. त्यारे कृष्णदास कहे, अमे तो डेअने सेवक करता नथी. अमे पणु श्रीआचार्यअना सेवक छीअे. तमे पणु श्रीआचार्यअना सेवक थध कृतार्थ थाव. हुवे थोडा दिवसमां श्रीआ-

करि ले । तब स्त्री उवटना लगाइ तब इहाँ पधारेंगे । तब पावन में महावर दियो । इतने चतुर्दश घरे घर आयो । पाछें नित्य सो मेह बरसन लाग्यो । अंधेरी को सो कछुक दिन में श्रीआचार्यजी में कीच भई है सो तेरे पाँव कोरके घर उतरे । तब कृष्णमहावरि छूटि जाइ तो आछो श्रीआचार्यजी आगे कह्यो । बनिया तातें तू मेरे कांधे पर चढ़ि ले । तब श्रीआचार्यजी कृष्णदास तब स्त्री को कांधे पर चढ़ाये । तब कृष्णदास बनिया सो जाइ कृष्णदास घर आये । तब इहाँ पधारे हैं । तब वह बनिया कृष्णदास खोलि । तब वह बनिया को दंडोत करि बिनती कियो, जो-महा-आयो । कह्यो, कीच के कोरे पर कृपा करिये । तब श्रीआचार्यजी सूखे, आछे, कोरे हैं । तब सुनाय ब्रह्मसंबंध कराइ 'ज्ञानचन्द' तेरे पाँव कोरे कैलें । तब वह बनिया सो कहें, जो-कृष्णदास के संग बात पूछिवे को कह्यो । तातें तू कृष्णदास को संग करियो । ताकरि नें कही, त यह कोरामी । पाछें कृष्णदास के घर श्रीआचार्यजी

ताते तुम समान और कोई नहीं। यह कहि आप पधारे, और कृष्णदास घर आये। ऐसे भगवदीय कृष्णदास स्त्री सहित श्रीआचार्यजी के कृपापात्र हते। जिनके संगतें बनिया भलो वैष्णव भयो। तातें कृष्णदास स्त्री पुरुष की वार्ता कहां ताई कहिये। वार्ता ॥७५॥

भावप्रकाश—सो उह बनिया लीला में गोप है। 'पेली' याको नाम है, मूल में दैवी जीव है। सो कृष्णदास के संग तें नाम निवेदन भयो। पाछें भलो कृपापात्र भयो। यह कृष्णदास की वार्ता अनिर्वचनीय हैं। जा वैष्णव कों दृढ धर्म होइ सो यह वार्ता कों कहें सुनें। और कच्ची दसा वारे वैष्णव ऐसो सुनिकें क्रिया करिवे को मन हू करे तो भ्रष्ट होई। काहेतें, कृष्णदास स्त्री पुरुष तो श्री-आचार्यजी के अंगीकृत हैं। हृदय में इनके में श्रीआचार्यजी विराजत हैं। तातें अग्निरूप है। इन पर कोई लौकिक दृष्टि करे तो भस्म होई जाई। यह तो बनिया कों कृपा करन के लिये याहि प्रकार किये। और वैष्णव सेवा अत्यंत दुर्लभ दिखाई। ठाकुरजी को, गुरु को दास होई सेवा करे। परन्तु वैष्णव को दास वैष्णव की सेवा होनी बहोत कठिन है। यह सिद्धान्त दिखाये। वैष्णव ॥७५॥

✽

✽

✽

तने कही लुती. तेवी न ते वैष्णवनी सेवा तन, मन, धनथी करी. तेथी तारा समान भीष्णु' कोई नथी. जेभ कही आप पधार्थां जने कृष्णदास घर आया. जेवा भगव-दीय कृष्णदास-स्त्री सहित श्रीआचार्यजना कृपापात्र हुता. जेभना संगथी वाणिया ललो वैष्णव थयो. तेथी कृष्णदास-स्त्री पुरुषनी वात क्यां सुधी कहिजे? वार्ता ॥७५॥

भावप्रकाश—ते वाणिया लीलाभां गोप छे, 'पेली' जेतुं नाम छे, मूलभां दैवीजव छे. तेथी कृष्णदासना संगथी नाम-निवेदन थयुं. पछी सारे कृपापात्र थयो. ते कृष्णदासनी वार्ता अनिर्वचनीय छे. जे वैष्णवमां दृढ धर्म होय तो आ वार्ताने कहे, सांभणे जने काथी दशावाणा वैष्णव आपुं सांभणीने किया करवानुं मन पणु करे तो भ्रष्ट थाय. डेभके कृष्णदास स्त्री-पुरुष तो श्रीआचार्यजनां अंगी-कृत छे. जेभना हृदयभां श्रीआचार्यज भिराज छे तेथी अग्निरूप छे. जेभना उपर कोइ लौकिक दृष्टि करे तो भस्म थय जय. आ तो वाणियाने कृपा करवा माटे न आ प्रकार कर्यो जने वैष्णवसेवा अत्यंत दुर्लभ देखाडी. श्रीठाकुरजना, गुर्जनो दास थथे सेवा करे परंतु वैष्णवतो दास वैष्णवनी सेवा थवी जहु कठणु छे जे सिद्धान्त देखाडयो. वैष्णव ॥७५॥

✽

✽

✽

दिन में श्रीआचार्यजी द्वारिका को पधारेंगे, तब इहां पधारेंगे। तब तुम सेवक होइयो। तब वह बनिया अपुने घर आयो। पाछें नित्य सबेरे कृष्णदास को दंडोत करि जाई। सो कछुक दिन में श्रीआचार्यजी उह गाम में पधारे। तब कृष्णदास के घर उतरे। तब कृष्णदास ने सर्व प्रकार वा बनिया को श्रीआचार्यजी आगे कह्यो। बनिया को आर्ति सेवक होन की बहोत है। तब श्रीआचार्यजी कृष्णदास सों कहें, उह बनिया को बुलाओ। तब कृष्णदास बनिया सों जाइ कहे, जो-श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे हैं। तब वह बनिया कृष्णदास के संग आय श्रीआचार्यजी को दंडोत करि बिनती कियो, जो-महाराज ! मैं महा अधम हों, मो पर कृपा करिये। तब श्रीआचार्यजी उह बनिया को न्हुवाय नाम सुनाय ब्रह्मसंबंध कराइ 'ज्ञानचन्द' नाम धरयो। पाछें आप उह बनिया सों कहें, जो-कृष्णदास के संग तें तोको ज्ञान भयो है। तातें तू कृष्णदास को संग करियो। ताकरि तोको भगवद प्राप्ति होइगी। पाछें कृष्णदास के घर श्रीआचार्यजी रसोई पाक करि भोग धरि भोजन करि पोढे। पाछे प्रातःकाल पधारे। तब कृष्णदास थोरीसी दूर पहाँचावन को गयो। तब श्रीआचार्यजी कहें, जो-कृष्णदास ! तू धन्य है, जो-हम वैष्णव सेवा की तोसों कही हती तैसे ही वैष्णव की सेवा तेंने तन मन धन सों करी।

आर्य० द्वारकाये पधारसे तारे तमे सेवक थजे. तारे ते वाञ्छिया पोताना धरे आये. पछी नित्य सबारे ते वाञ्छिया कृष्णदासने दंडोत करी जाय. पछी केरलाक दिवसमां श्रीआचार्य० ते गाममां पधार्या. तारे कृष्णदासना धरे उतर्या. तारे कृष्णदासे अघो प्रकार ते वाञ्छियानो श्रीआचार्य० आगण कियो. वाञ्छियाने सेवक थवांनी आर्ति धर्यो छ. तारे श्रीआचार्य० कृष्णदासने कहे, ते वाञ्छियाने भोलावा. तारे कृष्णदास वाञ्छियाने जधने कहे, श्रीआचार्य० महाप्रभु पधार्या छ. तारे तेवाञ्छियो कृष्णदासनी साथे आपी श्रीआचार्य०ने दंडोत करी बिनती करी, के महाराज ! तुं महा अधम छुं. मारा उपर कृपा करे. तारे श्रीआचार्य०ने ते वाञ्छियाने न्हुवावा नाम संभणावी ब्रह्म संबंध कराव्युं. ज्ञानचंद नाम धर्युं. पछी पोते तेवाञ्छियाने कहे, के कृष्णदासना संगथी तने ज्ञान थर्युं छ तेथी तू कृष्णदासने संग करणे. ते वउ तने भगवत्प्राप्ति थरो. पछी कृष्णदासना धरे श्रीआचार्य० रसोई पाक करी भोग धरि भोजन करी पोडया. पछी प्रातःकाल पधार्या. तारे कृष्णदास थोरीसी दूर पहाँचावन उवा गया. तारे श्रीआचार्य० कहे, कृष्णदास ! तू धन्य छ के अमे वैष्णव-सेवानी

ताते तुम समान और कोई नहीं। यह कहि आप पधारो, और कृष्णदास घर आये। ऐसे भगवदीय कृष्णदास स्त्री सहित श्रीआचार्यजी के कृपापात्र हते। जिनके संगतें बनिया भलो वैष्णव भयो। तातें कृष्णदास स्त्री पुरुष की वार्ता कहां ताई कहिये। वार्ता ॥७५॥

भावप्रकाश—सो उह बनिया लीला में गोप है। 'पैली' याको नाम है, मूल में दैवी जीव है। सो कृष्णदास के संग तें नाम निवेदन भयो। पाछें भलो कृपापात्र भयो। यह कृष्णदास की वार्ता अनिर्वचनीय हैं। जा वैष्णव कों दृढ धर्म होइ सो यह वार्ता कों कहें सुनें। और कच्ची दसा वारे वैष्णव ऐसो सुनिकें क्रिया करिवे को मन हू करे तो भ्रष्ट होई। काहेतें, कृष्णदास स्त्री पुरुष तो श्रीआचार्यजी के अंगीकृत हैं। हृदय में इनके में श्रीआचार्यजी विराजत हैं। तातें अग्निरूप है। इन पर कोई लौकिक दृष्टि करे तो भस्म होई जाई। यह तो बनिया कों कृपा करन के लिये याहि प्रकार किये। और वैष्णव सेवा अत्यंत दुर्लभ दिखाई। ठाकुरजी को, गुरु को दास होई सेवा करे। परन्तु वैष्णव को दास वैष्णव की सेवा होनी बहोत कठिन है। यह सिद्धान्त दिखाये। वैष्णव ॥७५॥

✽

✽

✽

तने कड़ी छती। तेथी न तें वैष्णवनी सेवा तन, मन, धनथी करी। तेथी तारा समान भीष्णु डोई नथी। ऐम कड़ी आप पधार्या अपने कृष्णदास घर आया। ऐवा भगवदीय कृष्णदास-स्त्री सहित श्रीआचार्यजीना कृपापात्र छता। जेमना संगथी वाणिया भलो वैष्णव थयो। तेथी कृष्णदास-स्त्री पुरुषनी वात क्यां सुधी कछिये? वार्ता ॥७५॥

भावप्रकाश—ते वाणिया लीलाभां गोप छे, 'पैली' ऐनुं नाम छे, मूलभां दैवी छे। तेथी कृष्णदासना संगथी नाम-निवेदन थयुं। पछी सारे कृपापात्र थयो। ते कृष्णदासनी वार्ता अनिर्वचनीय छे। जे वैष्णवभां दृढ धर्म होय तो आ वार्ताने कहे, सांख्ये अपने कायी दशावाणा वैष्णव आपुं सांख्यीने क्रिया करवानुं मन पणु करे तो भ्रष्ट थाय। डेभके कृष्णदास स्त्री-पुरुष तो श्रीआचार्यजीना अंगीकृत छे। जेमना हृदयभां श्रीआचार्यजी विराज छे तेथी अग्निरूप छे। जेमना उपर डोई लौकिक दृष्टि करे तो भस्म थय अय। आ तो वाणियाने कृपा करवा भाटे न आ प्रकार कर्यो अपने वैष्णवसेवा अत्यंत दुर्लभ देखाडी। श्रीठाकुरजीने, गुर्जेना दास थय सेवा करे परंतु वैष्णवने दास वैष्णवनी सेवा थवी पडु कछिये छे जे सिद्धान्त देखाडयो। वैष्णव ॥७५॥

✽

✽

✽

दिन में श्रीआचार्यजी द्वारिका कों पधारेंगे, तब इहां पधारेंगे । तब तुम सेवक होइयो । तब वह बनिया अपुने घर आयो । पाछें नित्य सवेरे कृष्णदास कों दंडौत करि जाई । सो कछुक दिन में श्रीआचार्यजी उह गाम में पधारे । तब कृष्णदास के घर उतरे । तब कृष्णदास नें सर्वप्रकार वा बनिया को श्रीआचार्यजी आगें कह्यो । बनिया कों आर्ति सेवक होन की बहोत है । तब श्रीआचार्यजी कृष्णदास सों कहें, उह बनिया कों बुलाओ । तब कृष्णदास बनिया सों जाइ कहे, जो—श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारे हैं । तब वह बनिया कृष्णदास के संग आय श्रीआचार्यजी कों दंडौत करि बिनती कियो, जो—महाराज ! मैं महा अधम हों, मो पर कृपा करिये । तब श्रीआचार्यजी उह बनिया कों न्हवाय माम सुनाय ब्रह्मसंबंध कराइ 'ज्ञानचन्द' नाम धरयो । पाछें आप उह बनिया सों कहें, जो—कृष्णदास के संग तें तोकों ज्ञान भयो है । तातें तू कृष्णदास को संग करियो । ताकरि तोकों भगवद प्राप्ति होइगी । पाछें कृष्णदास के घर श्रीआचार्यजी रसोई पाक करि भोग धरि भोजन करि पोढे । पाछे प्रातःकाल पधारे । तब कृष्णदास थोरीसी दूर पहाँचावन कों गयो । तब श्रीआचार्यजी कहें, जो—कृष्णदास ! तू धन्य है, जो—हम वैष्णव सेवा की तोसों कही हती तैसे ही वैष्णव की सेवा तेंने तन मन धन सों करी ।

चार्यजी द्वारिकाये पधारेशे त्यारे तमे सेवक थजे । त्यारे ते वाखिये पोताना धरे आये । पछी नित्य सवारे ते वाखियो कृष्णदासने दंडवत करी जय । पछी केरलाक द्विसमां श्रीआचार्यजी ते गाममां पधार्या । त्यारे कृष्णदासना धरे उतर्या । त्यारे कृष्णदासे षष्ठी प्रकार ते वाखियाने श्रीआचार्यजी आगण क्यो । वाखियाने सेवक थवांनी आर्ति धर्यो छे । त्यारे श्रीआचार्यजी कृष्णदासने कहे, ते वाखियाने पोलावे । त्यारे कृष्णदास वाखियाने जधने कहे, श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधार्या छे । त्यारे तेवाखियो कृष्णदासनी साथे आवी श्रीआचार्यजीने दंडवत करी विनती करी, के महाराज ! हुं महा अधम छुं । मारा उपर कृपा करो । त्यारे श्रीआचार्यजीने ते वाखियाने न्हवावां नाम संलगावी ब्रह्म संबंध करायुं । ज्ञानचंद नाम धर्युं । पछी पोते तेवाखियाने कहे, के कृष्णदासना संगथी तने ज्ञान थयुं छे तेथी तू कृष्णदासना संग करजे । ते वडे तने भगवत्प्राप्ति थरो । पछी कृष्णदासना धरे श्रीआचार्यजी रसोई पाक करी भोग धरि भोजन करी पोढया । पछी प्रातःकाल पधार्या । त्यारे कृष्णदास थोडीक दूर पहाँचावना गया । त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, कृष्णदास ! तू धन्य छे के अमे वैष्णव-सेवानी

ताते तुम समान और कोई नहीं। यह कहि आप पधारे, और कृष्णदास घर आये। ऐसे भगवदीय कृष्णदास स्त्री सहित श्रीआचार्यजी के कृपापात्र हते। जिनके संगतें बनिया भलो वैष्णव भयो। तातें कृष्णदास स्त्री पुरुष की वार्ता कहां ताई कहिये। वार्ता ॥७५॥

भावप्रकाश—सो उह बनिया लीला में गोप है। 'पेली' याको नाम है, मूल में दैवी जीव है। सो कृष्णदास के संग तें नाम निवेदन भयो। पाछे भलो कृपापात्र भयो। यह कृष्णदास की वार्ता अनिर्वचनीय हैं। जा वैष्णव कों हृद धर्म होइ सो यह वार्ता कों कहें सुनें। और कच्ची दसा वारे वैष्णव ऐसो सुनिकें क्रिया करिवे को मन हू करे तो भ्रष्ट होई। काहेतें, कृष्णदास स्त्री पुरुष तो श्री-आचार्यजी के अंगीकृत हैं। हृदय में इनके में श्रीआचार्यजी विराजत हैं। तातें अग्निरूप है। इन पर कोई लौकिक दृष्टि करे तो भस्म होई जाई। यह तो बनिया कों कृपा करन के लिये याहि प्रकार किये। और वैष्णव सेवा अत्यंत दुर्लभ दिखाई। ठाकुरजी को, गुरु को दास होई सेवा करे। परन्तु वैष्णव को दास वैष्णव की सेवा होनी बहोत कठिन है। यह सिद्धान्त दिखाये। वैष्णव ॥७५॥

✽

✽

✽

तने कड़ी लुती. तेवी न ते वैष्णवनी सेवा तन, मन, धनथी करी. तेथी तारा समान थीलुं डोछ नथी. એમ કહી આપ પધાર્યા અને કૃષ્ણદાસ ઘર આવ્યા. એવા ભગવદીય કૃષ્ણદાસ-સ્ત્રી સહિત શ્રીઆચાર્યજીના કૃપાપાત્ર હતા. જેમના સંગથી વાણિઓ ભલો વૈષ્ણવ થયો. તેથી કૃષ્ણદાસ-સ્ત્રી પુરુષની વાત ક્યાં સુધી કહિએ? વાર્તા ॥૭૫॥

ભાવપ્રકાશ—તે વાણિઓ લીલામાં ગોપ છે, 'પેલી' એનું નામ છે, મૂલમાં દેવીજીવ છે. તેથી કૃષ્ણદાસના સંગથી નામ-નિવેદન થયું. પછી સારો કૃપાપાત્ર થયો. તે કૃષ્ણદાસની વાર્તા અનિર્વચનીય છે. જે વૈષ્ણવમાં દૃઢ ધર્મ હોય તો આ વાર્તાને કહે, સાંભળે અને કાચી દશાવાળા વૈષ્ણવ આવું સાંભળીને ક્રિયા કરવાનું મન પણ કરે તો ભ્રષ્ટ થાય. કેમકે કૃષ્ણદાસ સ્ત્રી-પુરુષ તો શ્રીઆચાર્યજીના અંગીકૃત છે. એમના હૃદયમાં શ્રીઆચાર્યજી વિરાજે છે તેથી અગ્નિરૂપ છે. એમના ઉપર કોઈ લૌકિક દૃષ્ટિ કરે તો ભસ્મ થઈ જાય. આ તો વાણિયાને કૃપા કરવા માટે જ આ પ્રકાર કર્યો અને વૈષ્ણવસેવા અત્યંત દુર્લભ દેખાડી. શ્રીઠાકુરજીનો, ગુરૂનો દાસ થઈ સેવા કરે પરંતુ વૈષ્ણવનો દાસ વૈષ્ણવની સેવા થવી બહુ કઠણ છે એ સિદ્ધાન્ત દેખાડયો. વૈષ્ણવ ॥૭૫॥

✽

✽

✽

અવ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુન કે સેવક, સંતદાસ ચોપડા ક્ષત્રી, આગરે મેં સેઝુ કે વજાર પાસ ઘર હતો તહાં રહતે, તિનકી વાર્તા કૌ ભાવ કહત હૈ—

ભાવપ્રકાશ—વે લીલા મેં ચંદ્રાવલી કી સઘી હૈ । ‘ચંદ્રિકા’ ઇનકો નામ હૈ । સો એક દિન ચંદ્રાવલીજી કે સંગ શ્રીયમુનાજી ન્હાન કૂં દોઝુ જની ગઈ । સો ન્હાઈ ચુકી તવ ચંદ્રાવલીજી કહે, શ્રીઠાકુરજી અજ હૂ લૌં શ્રીયમુનાજી કે તીર નાहीं પધારે । સો તૂ જાઝકે ઠીક તો પારિ આઝ, જસોદાજી કે ઘર । તવ ચન્દ્રિકા ચલી, સો શ્રીનન્દરાયજી કે દ્વાર પર શ્રીસ્વામિનીજી મિલી । તવ શ્રીસ્વામિનીજી ને પૂછી, જો ચંદ્રિકા તૂ કહાં ચલી ? ઓર ચન્દ્રાવલીજી કહાં હૈ ? તવ ચન્દ્રિકા ને કહી મેં નાहीं જાનત કહાં હૈ, તવ સ્વામિનીજી ને કહી, તુમ ઝૂંઠ કયોં બોલત હો । શ્રીઠાકુરજી કૂં લેન આઈ હોઝગી । તુમહૂં યા વાત મેં બહોત ચતુર હો । તવ ચન્દ્રિકા ને કહી, યા વાત મેં તો તુમ ચતુર હો, કે ચંદ્રાવલીજી હૈ । મેં તો કહૂ જાનત નાहीं । મેં તો શ્રીયમુનાજી ન્હાઈ આઈ હૌં । અવ અપને ઘર જાતિ હૌં । યા ચતુરાઈ મેં કહા હૈ । વ્રજ કે લોગ સવ ચર્ચા કરત હૈ । યા પ્રકાર અભિમાન પૂર્વક કહે । તવ શ્રીસ્વામિનીજી કહે, એસો મદ ભયો તો ભૂમિ પર પ્રગટો । મદ જાઈ તવ યહાં આઝ્યો । તવ ચન્દ્રિકા સઘી આગરે મેં એક ચોપડા ક્ષત્રી વડો ધનાઢ્ય

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, સંતદાસ ચોપડા ક્ષત્રી, આચાર્યામાં ‘સેઝી’ ના બજાર પાસે રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં ચંદ્રાવલીની સઘી છે. ‘ચંદ્રિકા’ એમનું નામ છે. તે એક સમય ચંદ્રાવલીજીની સાથે શ્રીયમુનાજી ન્હાવાને બંને જણી ગઇ. તે ન્હાઈ ચૂકી ત્યારે ચંદ્રાવલીજી કહે, શ્રીઠાકુરજી હજી સુધી શ્રીયમુનાજીના તીરે પધાર્યા નહીં. તેથી તૂ જઇને બજાર કાઢી આવ. જશેદાજીના ઘરે. ત્યારે ‘ચન્દ્રિકા’ ચાલી. ત્યાં શ્રીનન્દરાયજીના દ્વાર ઉપર શ્રીસ્વામિનીજી મળ્યાં. ત્યારે શ્રીસ્વામિનીજીએ પૂછ્યું, કે ચંદ્રિકા તૂ ક્યાં ચાલી અને શ્રીચંદ્રાવલીજી ક્યાં છે ? ત્યારે ચન્દ્રિકાએ કહ્યું હું નથી જાણતી. ક્યાં છે ? ત્યારે સ્વામિનીજીએ કહ્યું, તમે જુઠું કેમ બોલો છો ? શ્રીઠાકુરજીને લેના માટે આવ્યાં હશે. તમે પણ આ વાતમાં બહુ ચતુર છો. ત્યારે ચન્દ્રિકાએ કહ્યું, આ વાતમાં તમે ચતુર છો કે શ્રીચંદ્રાવલીજી છે. હું તો કંઈ જાણતી નથી. હું તો શ્રીયમુનાજી ન્હાઈ આવી છું હવે મારા ઘરે જઈ છું. આ ચતુરાઇમાં શું છે ? વ્રજના લોકો બધી ચર્ચા કરે છે. આ પ્રકારે અભિમાનપૂર્વક કહ્યું. ત્યારે શ્રીસ્વામિનીજી કહે, એવો મદ થયો તો ભૂમિ ઉપર

हतो ताके घर प्रगटे । सो उह संतदास के पिता कों कोऊ संतति न हुती । तातें वैरागी, संतजन कों पुत्र निमित्त सीधो सामान देई । और सब सों विनती करे, मेरे संतति नाहीं हैं तुम्हारी कृपा तें होई । तब एक वैरागी नें कही, पुत्र तो महादेव प्रसन्न होइ तब देई । तब उह क्षत्री महादेव की पूजा व्रत ऐसो कियो सो सरीर सगरो सूकि गयो । तब स्वप्न में महादेव ने कही तुम कूं कहा चाहिये सो कहो । तब उह क्षत्री नें कही आछो हरि भक्त वेटा मेरे होई, तब महादेव नें कही, मेरे दिये वेटा जितने हैं सो भगवान सों बहिर्मुख हैं । और तू हरिभक्त पुत्र मांग्यो सो मैं कहां ते देऊँ ? हरि भक्तन को संग तो मैं ही सदा चाहत हों । परन्तु याको जुवाव मैं काल्हि देऊँगो । तब महादेव भगवान पास जाइके पूछे, महाराज ! एक क्षत्री कूं मैं वर देन गयो, सो उह हरि भक्त पुत्र मांग्यो । सो वाके भाग्य में कछु पुत्र है के नाहीं । तब भगवान कहें, वासों जाय कहियो जो तेरे घर हरिभक्त पुत्र होइगो । सो सगरे कुटुम्ब को उद्धार करेगो । ऐसो भगवदीय लीला संबंधी जीव मेरे बराबर को प्रगटेगो । तब महादेव उह क्षत्री सों दूसरे दिन स्वप्न में कहें, जो-तेरे बड़े भाग्य हैं, तेरे घर पुत्र ऐसो हरिभक्त होइगो जो तेरो सगरो कुल पवित्र

प्रकटो. मह जय त्तारे अहिं आनजे. त्तारे अन्द्रिका सणी आगरामां अेक योपडा क्षत्री भोटो धनाढ्य हुतो तेना धरे जन्मी. ते संतदासना पिताने काँ संतती न हुती. तेथी वैरागी संतजनाने पुत्र निमित्त सीधुं सामान दे. वणी अधाने विनती करे, मारे संतती नथी. तमारी कृपाथी थशे. त्तारे अेक वैरागीअे क्खुं, पुत्र तो महादेव प्रसन्न होय त्तारे दे. त्तारे ते क्षत्रीअे महादेवनी पूजा-व्रत अेवुं क्थुं, ते अधुं शरीर सुकाँ गयुं. त्तारे स्वप्नमां महादेवे क्खुं, त्तारे शु अेधअे छे ते क्खो. त्तारे ते क्षत्रीअे क्खुं, सुंदर हरिभक्त पुत्र मारे थाय. त्तारे महादेवे क्खुं, मारा आपेला जटला पुत्रो छे ते भगवानथी अहिर्मुख छे अने ते हरिभक्त पुत्र मांग्यो ते हु क्वाथी दू ? हरिभक्तानो संग तो हु ये सदा याहुं छुं. परंतु आनो जवाप हुं कावे आपीश. त्तारे महादेवे भगवान पासे जधने पूछ्युं, महाराज ! अेक क्षत्रीने हु वर देवा गयो. तेणे हरि-भक्त पुत्र मांग्यो. तेथी अेना भाग्यमां कँ पुत्र छे के नही ? त्तारे भगवाने क्खुं, तेने जँ क्खेजे के तारा धरे हरिभक्त पुत्र थशे. ते अधा कुटुम्बने उद्धार करशे. अेवो भगवदीय लीला-संबंधी जव मारी परापरने प्रकटशे. त्तारे महादेवे अे क्षत्रीने अीज दिवसे स्वप्नमां क्खुं, के तारां महान भाग्य छे. तारा धरे अेवो हरिभक्त पुत्र थशे के तारिं सधुं कुल

करेगो। पाछें महादेव घर गये। उह क्षत्री स्वप्न देखि प्रसन्न भयो। परंतु मन में यों आई जो कछु नाहीं भयो, जो—स्वप्न की बात है, जब सांची होई तब जानिये। पाछें वाकी स्त्री कों गर्भ रखो। समय पाय पुत्र भयो, और द्रव्य हू बढ़यो। सो पुत्र बड़ो भयो। तब पिताने संतदास वाको नाम धरयो। पाछे संतदास को विवाह भयो। पाछें संतदास को पिता मरयो। तब सूतक के दिन वीते नाहीं। तब ज्ञाति के क्षत्री सों संतदास कहें। मेरे दिन वीतत नाहीं। सो कहूँ कथा वार्ता होत होई तो सुनों। तब वा क्षत्री नें कही, इहां श्रीआचार्यजी कन्हैयाशाल क्षत्री के घर पधारें हैं। तिनकी कथा तुम सुनो तो मगन है जाउ। तब संतदास कहें तुम जब जाउ तब मोकों ले जैयो। पीछे तीसरे ग्रहर उह क्षत्री के संग संतदास आये। तब श्रीआचार्यजी कों दंडोत करि, बैठिकें कथा सुनी। सो हृदय में यह ज्ञान उपज्यो, जो—श्रीआचार्यजी पूर्ण पुरुषोत्तम हैं। पाछे संतदास नें श्रीआचार्यजी सों विनती करी, जो—महाराज ! कृपा करि मोकों सरनि लीजिये। तब श्रीआचार्यजी कहें, अभी तो तुमकों सूतक है, सूतक पाछे तुमकूं सेवक करेंगे। तब दंडोत करि संतदास घर आये। पाछे सूतक लों नित्य कथा सुनिवे आवते। श्रीआचार्यजी को दरसन करि आवते, तब खानपान करते। सो जब शुद्ध भये, तब न्हायकें श्री-

पवित्र थये। पछी महादेव घर गया। ते क्षत्री स्वप्न जेई प्रसन्न थये। परंतु मनमां जेम जाण्युं के कंई नथी थयुं। जे स्वप्ननी बात छे ज्यारे भरी थाय त्यारे ज्ञानिये। पछी जेनी स्त्रीने गर्भ रखो। समय थये पुत्र थयो जेने द्रव्य पाणु वद्ध्युं। पछी पुत्र मोटा थयो त्यारे पिताने संतदास जेनुं नाम धर्युं। पछी संतदासने विवाह थयो। पछी संतदासने पिता मर्यो। त्यारे सूतकना हिस वीते नहीं। त्यारे ज्ञातिना जेक क्षत्रीने संतदास कहे, मारा हिस वीतता नथी तेथी कंई कथा-वार्ता थती होय तो सांभळुं। त्यारे ते क्षत्रीजे कळुं, ज्यहीं श्रीआचार्यजि कन्हैयाशाल क्षत्रीने धरे पधार्या छे। तेमनी कथा सांभणो तो तमे मगन थई जव। त्यारे संतदास कहे, तमे ज्यारे जव त्यारे मने लई जजे। पछी त्रीज ग्रहर ते क्षत्रीनी साथे संतदास आण्यो। त्यारे श्रीआचार्यजिने दंडवत् करी त्यां जेसीने कथा सांभणी। पछी हृदयमां जे ज्ञान थयुं के श्रीआचार्यजि पूर्ण पुरुषोत्तम छे। पछी संतदासे श्रीआचार्यजिने विनंती करी, के महाराज ! कृपा करी मने शरणे दो। त्यारे श्रीआचार्यजि कहे, हुमणां तो तमने सूतक छे, सूतक पछी तमने सेवक करीथुं। त्यारे दंडवत् करी संतदास धरे आण्यो। पछी सूतक सुधी नित्य कथा सांभणवा

आचार्यजी पास आई दंडोत करि विनती करी, जो—महाराज ! कृपा करि मेरे घर पधारिये, मेरे कुटुम्ब कों, मोकों पावन करिये । तब श्रीआचार्यजी संतदास के घर पधारि संतदास कों न्हवाई नाम निवेदन कराये । तब संतदास ने विनती करी, जो—महाराज ! स्त्री कों सरनि लीजे । तब श्रीआचार्यजी कहें स्त्री कों नाम सुनावेंगे, दैवी तो है नाहीं । परन्तु तेरे संगतें कृतार्थ होयगी । पाछे स्त्री कों नाम सुनाये । तब संतदास ने विनती करी, जो—महाराज ! अब मोकों भगवद् सेवा पधराय दीजिये । तब श्रीआचार्यजी श्रीनवनीतप्रियजी के प्रसादी वस्त्र सेवा कों पधराय दिये । पाछें खासा करि संतदास के घर पाक सामग्री करि, भोग धरि, भोजन करि, संतदास स्त्री पुरुष कों जूठन की पातरि आप प्रभु धरें । सो महाप्रसाद स्त्री पुरुष लिये । पाछें श्रीआचार्यजी एकान्त में अकेले बैठे हते, तहां संतदास जाई दंडोत करि विनती किये, जो—महाराज ! मोपर ऐसी कृपा करिये जो या देह सों श्रीठाकुरजी अनुभव जनावें । और संसार को दुःख सुख बाधा न करें । आपुको स्वरूप हृदयारूढ होई । पुष्टिमागीय फल को अनुभव होई । तब श्रीआचार्यजी संतदास कों 'पुरुषोत्तम-सहस्रनाम' पढ़ाये । और आपुने ग्रन्थ किये हते सो पोथी संतदास कों देकें कहें,

आवता. श्रीआचार्यजीना दर्शन करी आन्धा पछी आनपान करता. पछी आरै शुद्ध थया त्यारै नहाधने श्रीआचार्यजी पासे आवी दंडवत् करी विनंती करी, के महाराज ! कृपा करी मारा धरे पधारो. मारा कुटुम्बने, मने पावन करो. त्यारै श्री-आचार्यजीसे संतदासना धरे पधारी संतदासने नडवडावी नाम-निवेदन कराव्युं. त्यारै संतदासे विनंती करी, के महाराज ! स्त्रीने शरणे लेा, त्यारै श्रीआचार्यजीसे कह्युं, स्त्रीने नाम संभणावीथुं. दैवी नथी. परंतु तारा संगथी कृतार्थ थशे. पछी स्त्रीने नाम संभणाव्युं. त्यारै संतदासे विनंती करी, महाराज ! हवे मने भगव-त्सेवा पधरावी हो. त्यारै श्रीआचार्यजीसे श्रीनवनीतप्रियजीना प्रसादी वस्त्र सेवा भाटे पधरावी आथ्यां. पछी आसा करी संतदासना धरे पाक-सामग्री करी भोग धरी, भोजन करी, संतदास स्त्री-पुरुषने जुठणुनी पातर आप प्रभुसे धरी. पछी स्त्री-पुरुषे महाप्रसाद लीधा. पछी श्रीआचार्यजी सेकान्तमां सेकला पेठा हुता त्यां संतदासे जई दंडवत् करी विनंती करी, के महाराज ! मारा उपर आवी कृपा करो. के आ देहथी श्रीठाकुरजी अनुभव जणुवे अने संसारतुं दुःख सुख बाधा न करे. आपतुं स्वरूप हृदयारूढ थाय. पुष्टिमागीय इलने अनुभव थाय. त्यारै श्रीआचा-र्यजीसे संतदासने 'पुरुषोत्तम सहस्रनाम' लण्णाव्युं अने पोते ग्रंथ कर्था हुता

तुमकों यह ग्रन्थ द्वारा सब मनोरथ पूर्ण होइगो । और, कछू दिन में तेरो सगरो द्रव्य नाश होइगो । जो द्रव्य श्रीठाकुरजी में लगावेगो सो रहेगो । परन्तु श्रीठाकुरजी को वैभव बढ़ाये (पाछे) जब द्रव्य न होई तब वामे तें खान पान करे सो बहिर्मुख होई । सो तू विवेक धैर्याश्रय राखि धीरज धारियो, तू दैवी है । सो तोसों धर्म निबहेगो । और सों कठिन हैं । मैं तेरे ऊपर प्रसन्न हों, तातें तोकों लौकिक बाधा न करेगो । या प्रकार संतदास पर कृपा करि आप ब्रज में पधारे । तब संतदास ने सोने रूपे के वासन आभूषन अनेक श्रीठाकुरजी के बनवायकें कितने घर में राखें, कितने श्रीनाथजी के यहां पठाये । कितने श्रीगुसाईजी के यहां पठाये ।

वार्ता-प्रसंग १—सो संतदास बहोत संपन्न हुने । लक्ष रुपैया को व्योपार हतो, सो व्योपार में द्रव्य सब खोये । कछू चोरन नें लियो, कछू राजा दंड लियो । पाछें निष्किञ्चन भये । परन्तु मनमें आनंद भयो, जो-श्रीआचार्यजी कहे सो भयो । पाछें चोबीस टका की पूंजी रही, ताकों ले कौडी सेऊ के बजार में बेचन लागे । सो कौड़िन की ढेरी पैसा पैसा की न्यारी न्यारी करिकें धरते । आप काहू तें बोलते नहीं । लोग पैसा धरिकें कोड़ी की ढेरी ले जाते । सो अढाई

ते पोथी संतदासने आपीने कछु, तमने आ ग्रंथ द्वारा अधो मनोरथ पूर्ण थशे. अने डेटलाक दिवसमां ताइं अधुं द्रव्य नाश थशे. जे द्रव्य श्रीठाकुरजीमां लगाडीश ते रहेशे. परंतु श्रीठाकुरजीनो वैसन वधार्या पछी न्यारे द्रव्य न डोय त्यारे तेमां-थी पानपान करे तो अहिर्मुख थाय. आटे तू विवेक धैर्याश्रय राखी धीरज धरजे. तू दैवी छे तेथी ताराथी धर्म नलशे. पीअथी कठाय छे. हुं तारा उपर प्रसन्न छुं. तेथी तने लाकिक बाधा नहीं करे. आ प्रकारे संतदास उपर कृपा करे आप प्रजमां पधार्या त्यारे संतदासे सोना रुपानां वासण आभूषण अनेक श्रीठाकुरजीने पनानरावी डेटलांक धरमां राख्यां, डेटलांक श्रीनाथजीने त्यां भोक्त्यां, डेटलांक श्रीगुसांथजीने त्यां भोक्त्यां.

वार्ता-प्रसंग १-अये संतदास अहुज संपन्न हुता. आप रुपैयानो बहुपार हुतो. ते वेपारमां द्रव्य अधुं पोथुं थोडुं थोरोअये लीधुं. थोडुं-राज्यां दंडमां लीधुं पछी निष्कञ्चन थया. परन्तु मनमां आनन्द थया. के श्रीआचार्यजीअये कछुं ते थयुं. पछी चापीस टकानी पूंछ रहडी तेने लधने सेउना पणरमां डोडी वेचवा लाग्या. ते पैसा पैसानो डोडीअनी ठगडीअो अलग अलग करीने धरता. तांते कोथी पोसता नही.

पैसा नित्य कमाते । आप बैठे पोथी देखते । और आधे पैसा की चबेनी, उष्णकाल में दारि भिजोई धरते, सीनकाल में भूजे चना धरते, एक टका में राजभोग धरते, सो महाप्रसाद लेते । आधे पैसा की चबेनी रात्रिकों, इनके घर वैष्णव मंडली होती सो कीर्तन, वार्ता, भये उपरान्त बांटते । या प्रकार निर्वाह करते । ऐसे करत गौड देस के नागयनदास श्रीगुसांईजी के सेवक नें सुनी, जो-संतदाम कों द्रव्य को संकोच बहोत है । तब नागयनदास जें संतदास कों एक पत्र लिख्यौ । तामें सौ मोहौर की हुंडी पठाई । ता पत्र ऊपर टका कासद कूं लिख्यौ । सो उह पत्र आगरे आयो । सो संतदाम बांचिकें अढाई पैसा कमात हते तामें टका कासद कों दियो, और आप रसोई की नागा किये । हुंडी निकसी सो श्रीगुसांईजी कूं श्रीगोकुल पठाये । और नारायनदास कूं पत्र लिख्यो तामें यह लिख्यो, जो-या तुम्हारी प्रभुता में एक दिन राजभोग को नागा भयो, अब कबहूं ऐसी कृपा मति कीजो । और हुंडी तुम्हारी श्रीगुसांईजी कों पठाई है । सो हुंडी श्रीगोकुल चांपाभाई, संकरभाई, भंडारी पास आई । तब चांपाभाई संकरभाई श्रीगुसांईजी कों बांचि सुनाये । कहें, महाराज ! नारायनदास गौड देस के ने संतदास कों हुंडी पठाई हुती, सो संत-

लोके पैसा धरीने डेडीनी ढगदी लई जता. ऐम षडी पैसा नित्य कमाता. पोते पेसीने पुस्तक वांचता. पछी अउधा पैसानी यवेणी, उष्णकालमां दान लींजवीने धरता. शीतकालमां शेकेदा यणु धरता. ऐक टकामां राजभोग धरता. ते महाप्रसाद लेता. अउधा पैसानी यवेणी रात्रिमे, ऐमना घरे वैष्णव मंडली थती ते कीर्तन-वार्ता थया उपरान्त वांटता. या प्रकारे निर्वाह करता. ऐम करतां गौड देशना नारायणदास श्रीगुसांईजीना सेवके सांलण्युं, के संतदासने द्रव्यना वणु सडोय छे. त्यारे नारायणदासे संतदासने ऐक पत्र लण्यो. तेमां सो मोहारेनी हुंडी मोकली ते पत्र उपर टका टपाडीने लण्यो. पछी ते पत्र आया आव्यो. त्यारे संतदासे वांचिने अंटी पैसा कमाता हुता तेमांथी टको टपाडीने आभ्यो. अने पोते ते द्विसे रसोई न करी. हुंडी निकणी ते श्रीगुसांईजीने श्रीगोकुल मोकली. अने नारायणदासने पत्र लण्यो, तेमां अे लण्युं के या तमारी प्रभुतामां ऐक द्विस राजभोग न धरायो. हुवे क्यारेय आवी कृपा न करता. अने हुंडी तमारी श्रीगुसांईजीने मोकली छे. पछी हुंडी श्रीगोकुल चांपाभाई, संकरभाई, भंडारी पास आवी. त्यारे चांपाभाई संकरभाई श्रीगुसांईजीने वांचि सांलणावी. कहूं, महाराज ! गौड देशना नारायणदासे संतदासने हुंडी

दास में आपको पठाई हैं। तब श्रीगुसाईंजी श्रीमुख तें कहें, जो-संतदास बड़े भगवदीय श्रीआचार्यजी के कृपापात्र सेवक हैं। सो वैष्णव को द्रव्य कैसें राखें। तातें इहां पठाये।

भावप्रकाश—यह वार्ता में संदेह है, जो-चोबीस टका की पूंजी में अढ़ाई पैसा कमाते। तामे ते टका कासद कों दिये। और लिखे जो राजभोग को नागा परयो। सो पूंजी मे ते एक टका को क्यों न राजभोग धरें। इनकों तो भगवदाश्रय हैं। चोबीस टका पूंजी को आश्रय नाहीं हैं, जो-कालिह कैसें कमाईगें? सहज मे जाको मन भगवान मे लागें। सो श्रीठाकुरजी कों नागा पूंजी राखिकें न करें, तो संतदास चोबीस टका की पूंजी राखिकें राजभोग में नागा क्यों किये? एक यह सन्देह, और आगरे सहर में स्त्री सहित रहें सो अढ़ाई पैसा में निर्वाह कौन प्रकार करें? घरमें अनेक खर्च, लकड़ी, तेल, घी, नौन, सागादि। उत्सव, पवित्रा, श्रीआचार्यजी को जन्म दिन, यह सन्देह। तहां यह भाव जाननो, जब संतदास को सगरो द्रव्य गयो, तब श्रीठाकुरजी की सेवा में मंडान श्रीठाकुरजी के द्रव्य सों राखें। और श्रीठाकुरजी के द्रव्य में तें चोबीस टका पूंजी करि कोड़ी बेचते। सो श्रीठाकुरजी की पूंजी में तें तो कासिद कों दियो न जाई। सो कमाई

भोक्सी हुती ते संतदासे आपने भोक्सी छे। तयारे श्रीगुसांछु श्रीमुखथी कहे के संतदास महान् भगवदीय श्रीआचार्यजीना कृपापात्र सेवक छे। ते वैष्णवतुं द्रव्य केम राखे? तेथी अही भोक्खुं।

भावप्रकाश—आ वार्तामां संदेह छे के चोबीस टकानी पुंछमां अढी पैसा कमाता। तेमांथी टका टपाहीने आप्ये अने लभ्युं के राजभोग न धराये। तो पुंछमांथी अक टकानो राजभोग केम न धर्यो? अमने तो भगवदाश्रय छे। चोबीस टका पुंछनो आश्रय नथी। के काले केम कमाइथुं? जमतुं मन सहजमां भगवानमां लागे ते श्रीठाकुरजने पुंछ राणीने राजभोग अंध न राखे। तो संतदासे चोबीस टकानी पुंछ राणीने राजभोग केम न धर्यो। अक आ संदेह, वणी आत्रा शहरमां स्त्री सहित रखा। ने अढी पैसामां निर्वाह कया प्रकारे करे? घरमां अनेक अंध, लाकडां, तेल, घी, मीठुं, शाक आदि। उत्सव पवित्रा, श्रीआचार्यजीनो जन्मदिवस (पीजे) आ संदेह। त्यां आ भाव लखुवे। तयारे संतदासतुं अंधुं द्रव्य गयुं तयारे श्रीठाकुरजनी सेनातुं मंडालु श्रीठाकुरजता द्रव्यथी राख्युं वणी श्रीठाकुरजना द्रव्यमांथी चोबीस टका पुंछ करी, टाडी बेचता तेथी श्रीठाकुरजनी

को टका दिये । तब इनकी मजूरी को राजभोग न भयो । सो महाप्रसाद हू न लियो । टका के चून को न्यारो भोग धरते । सो राजभोग जानते, महाप्रसाद लेते । और नित्य को नेग बहोत श्रीठाकुरजी के द्रव्य सों होतो । तातें अपुनी सेवा सिद्ध राजभोग की न भई । कासिद कों दिये । सो नारायनदास कों लिखे, जो-तुम्हारी प्रभुता तें एक दिन राजभोग को नागा परघो, जो-मेरी सत्ता को भोग न धरघो । या प्रकार संतदास विवेकधैर्याश्रय को रूप दिखाये । विवेक यह, जो-श्रीगुसांईजी कों हुँडी पठाई, अपुनी सेवा न भई, राजभोग को नागा जानें । धैर्य यह, जो-श्रीठाकुरजी के द्रव्य को खानपान न किये । आश्रय यह, जो-मनमें आनंद पाये । दुःख क्लेश न पाये ।

या प्रकार संतदास श्रीआचार्यजी के ग्रन्थ के अनुसार सेवा किये । और रस में मगन रहते । तातें इन संतदास की वार्ता कहां ताँई कहिये ।

वार्ता-प्रसंग २—और संतदासजी के घर वैष्णव मंडली होई । सो चौक में सगरे वैष्णव बैठें । तब महादेवजी छिपि के घर के द्वार के पास नित्य भगवद् वार्ता सुनिवे कूं आवें, सो कोई जानें नाहीं । सो आगरे में एक सेठ श्रीगुसांईजी को सेवक हतो । सो राजसी बहोत हतो ।

पुंछमांथी तो टपादीने आप्युं न जय. तेथी कमाधने टका आप्यो. त्पारे अमनी मजुरीना राजभोग न थयो. तेथी महाप्रसाद न दीधो. टकानो दोट तो अलग लोग धरता ते राजभोग जणुता. महाप्रसाद लेता. अने नित्यनो नेक धणो श्रीठाकुरजना द्रव्यथी थतो. तेथी पोतानी राजभोगनी सेवा सिद्ध न थई. (कहेवाय) (तेथी) टपादीने टका आप्यो (अने) नारायणदासने लप्युं ठे तमारी प्रभुतामां अक दिनस राजभोग न धर्यो. ठम जे मारी सत्तानो लोग न धर्यो. अे प्रमाणे संतदासे विवेक धैर्य आप्यतुं ३५ देखाड्युं. विवेक अे ठे श्रीगुसांइजने हुंडी भोक्ली, पोतानी सेवा न थई, राजभोग अंध जणुयो. धैर्य अे ठे श्रीठाकुरजना द्रव्यथी खानपान न क्युं. आश्रय अे ठे मनमां आनंद पाभ्या दुःख क्लेश न पाभ्या.

आ प्रकारे संतदासे श्रीआचार्यजना ग्रन्थने अनुसार सेवा करी अने रसमां मगन रहता. तेथी अे संतदासनी वार्ता क्या सुधी कहीअे.

वार्ता-प्रसंग २-संतदासना घरे वैष्णव मंडली थाय त्पारे आकमां अंधा वैष्णव अेअे. त्पारे महादेवज संतदासने धरना द्वार पासे नित्य भगवद् वार्ता सांलगवा आपता. ते कोई जणु नही. वणी आआमां अेक शेठ श्रीगुसांइजना सेवक हुतो. ते

वानें सुनी, जो-संतदास के घर रात्रि कों वैष्णव मंडली भेली होई हैं। तहां भगवद् वार्ता होत है। सो बहोत सुख होत हैं। तब वा सेठ नें कही, महाप्रसाद हू कछु बांटत हैं ? तब एक वैष्णव नें कही, चना चबेनी बांटत हैं। तब वा सेठ ने कही, मैं अपने घर वैष्णव मंडली भेली करि ठोर लाडू बांटूंगो। पाछें वा सेठ ने लाडू ठोर करि सांझ कों सगरे वैष्णवन सों कहवाये। जो-सेठ के घर वैष्णव मंडली भेली होत हैं। तहां ठोर लाडू बांटत हैं। पाछें रसिकजन कथा वार्ता के लोभी तो सब संतदास के घर आवें। और खान पान के लोभी सेठ की खुसामद करिवेवारे सेठ के घर द्वै चारि आवें। या प्रकार दस पन्द्रह दिन बीते। तब सेठ ने कही, मैं ठोर लाडू बांटत हूँ तो हूँ सगरे वैष्णव मेरे घर नाहीं आवत। संतदास के उहां चना की चबेनी बटत है तहां सगरे जात हैं। तब एक नें कही, संतदास के उहां भगवद् वार्ता कीर्तन को सुख बहोत परत हैं। तातें सब वैष्णव तहां जात हैं। तब सेठ ने कही, अपुनें एक दिन संतदास के उहां चलिकें देखें, कैसो रस आवत है। ताहि प्रकार अपनें घर करेंगे। सो द्वै चार अपने संग के वैष्णव लें सेठ संतदास के घर आयो। सो भगवद् वार्ता भई सो सेठ कछु समुझ्यो नाहीं। पाछे नींद आइ गई, पाछे कीर्तन वार्ता है

राजसी धरुा हतो। येले सांभल्युं के संतदासना धरे रात्रिये वैष्णव मंडली भेगी थाय छे। त्यां भगवद् वार्ता थाय छे ते धरुं सुभ थाय छे। त्यारे ते शेठे कछुं, महा-प्रसाद पणु कंठ वांटे छे ? त्यारे अेक वैष्णुवे कछुं, यणुा, यवेणुी वांटे छे। त्यारे ते शेठे कछुं, हुं मारा धरे वैष्णुव मंडली भेगी करी ठार लाडु वांटीश। पछी ते शेठे लाडु ठार करी सांजे अथा वैष्णुवोने कछेवडाव्युं, के शेठना धरे वैष्णुव मंडली भेगी थाय छे त्यां ठार लाडु वांटे छे। पछी रसिकजन कथा वार्ताना लोभी तो अथा संतदासना धरे आण्यो। अने आनपानना लोभी शेठनी पुशामद करवावाणा शेठना धरे अे-यार आण्यो। आ प्रकारे दश-पंदर दिवस वीत्या। त्यारे शेठे कछुं, हुं ठार-लाडु वांटुं छुं तो पणु अथा वैष्णुव मारा धरे नथी आवता। संतदासने त्यां यणुानी यवेणुी वंराय छे त्यां अथा जय छे। त्यारे अेके कछुं, संतदासना त्यां भगवद् वार्ता कीर्तननुं सुभ धरुं थाय छे। तेथी अथा वैष्णुव त्यां जय छे। त्यारे शेठे कछुं, आपणुे अेक दिवस संतदासने त्यां यादीने अेधअे केवो रस आवे छे ? तेज प्रकारे आपणुा धरे करीशुं, पछी अे यार पोताना संगना वैष्णुवोने लथ शेठ संतदासना धरे आण्यो। त्यां भगवद् वार्ता थरुं ते शेठे कंठ समज्यो नही। पछी उंघ आवी गध। पछी कीर्तन वार्ता थरुं युडी त्यारे यणुा

चुकी । तब चना बँटे । सो सेठ कों हू जगाई के चना दिये । सो सेठ नें हाथ में लिये, परन्तु लाज पाई, सुख में न डारयो । हाथ में लिये उख्यो सो जोड़ा पहिरिवे लाग्यो । तहां चना डारि दिये । तब महादेव-जी चना बीनन लागे । सो वैष्णवन कही, यह कौन हैं ? सो चोर चोर कहि पकरे । तब संतदास आय वैष्णवन सों कहें, ऐसे मति कहो, भगवद् वार्ता में चोर काहे कों आवेंगे ? तब महादेव सों संतदाम पूछे, जो-तुम कौन हो सांच कहो । तब कहें, तुम भगवदीय हो तातें कहत हों । इन सबन कों जान देहू । तब सगरे वैष्णव गये, तब कह्यो, मैं महादेव हों, सो छिपिकें भगवद् वार्ता कीर्तन सुनत हों । सो आज वा राजसी सेठ नें महाप्रसाद धरती पर डारि दियो सो मैं बीनिकें खायो । महाप्रसाद कहूं पांव नीचे आवे तो महा अनर्थ होई । तब संतदास नें कह्यो, तुम द्वार के पास क्यों बैठत हो ? भीतर आयो करो । तब महादेव नें कही, तुम पुष्टिमार्गीय भक्तन के बीच में अर्थादा-मार्गीय को अधिकार नहीं हैं । और तुम रस में मगन होई श्रीठाकुर-जी की अनेक लीला की वार्ता करत हो । सो सुनिवे को हमारो अधिकार नहीं हैं । तातें जितनो मेरो अधिकार है तितनो सुनत हों । तासों इतनी दूर बैठिवो मोकों ठीक है । तब संतदासजी

पांठ्या. ते शेठने पणु जगाडीने यणु आप्या. शेठे हाथमां दीधा परंतु लाजना भायां सुभमां न नाभ्या. हाथमां लघ उख्यो पणु जेडा पहरेवा लाग्यो त्यां यणु नाभी दीधा. त्यारे महादेवळ यणु विणुवा लाग्या. त्यारे वैष्णुवाये कळुं, आ कोणु छे ? चोर चोर कंडी पकड्या. त्यारे संतदासे आवी वैष्णुवाने कळुं, अम न कडो, भगवद् वार्तामां चोर शा भाटे आवे ? त्यारे महादेवने संतदासे पूछ्युं, तमे कोणु छे सायुं कडो. त्यारे कडे, तमे भगवदीय छे तेथी कळुं छुं. आ पंधाने जया हो. त्यारे पंधा वैष्णुव गया. त्यारे कळुं, हुं महादेव छुं. संतांठने भगवद् वार्ता कीर्तन सांभणुं छुं. आजे पेसा राजसी शेठे महाप्रसाद धरती उपर नाभी दीधो ते में वीणीने जाधो. महाप्रसाद कोधना पण नीचे आवे तो महुं अनर्थ थाय. त्यारे संतदासे कळुं, तमे द्वारनी पासे केस पेसो छे, अंदर आव्यां करो. त्यारे महादेवे कळुं, तमे पुष्टिमार्गीय लडतोना पयमां अर्थादामार्गीयने अधिकार नथी वणी तमे रसमां मगन थय श्री-ठाकुरजीने अनेक प्रकारनी वार्तां करो छे ते सांभणवाने अमारो अधिकार नथी. तेथी जेटेला भारो अधिकार छे तेथुं सांभणुं छुं. तेथी आरळुं दर पेसपुं मने ठीक छे. त्यारे संतदासळथी विहाय थय महादेवळ अंतर्धान थाया. त्यारे कमाड लागी.

सों विदा होई महादेवजी अंतरधान भये । तब किवाड़ लगाय संतदासजी घर में आये । ता दिन तें संतदास नें यह रीति करी । जब अपुने मंडली के सब वैष्णव आई चुके तब द्वार के किवाड़ लगाई कें भगवद् वार्ता करें । जो-कोई लौकिक जीव आवे तो आछो नहीं । सो संतदास ऐसे भगवदीय हे ।

वार्ता-प्रसंग ३—और जब श्रीगुसांईजी को जन्म दिन आवतो, तब संतदाम वर्ष के वर्ष श्रीगुसांईजी के दरसन कों श्रीगोकुल आवते । श्रीगुसांईजी संतदाम कों श्रीआचार्यजी के कृपापात्र सेवक जानि, बहोत कृपा करते । पाछें कितनेक दिन में संतदास को सरीर थक्यो, वृद्ध भये । तब श्रीगोकुलजी ते चांपाभाई, संकरभाई बुलाये, श्रीगुसांईजी कों विनती पत्र लिखिकें । तब श्रीगुसांईजी चांपाभाई भंडारी सों कहे, जो-तुम आगरे जाउ, संतदास वैष्णव के घर । अब वे देह छोड़ेंगे, सो चरणामृत महाप्रसाद ले जाउ । तब चांपाभाई श्रीगुसांईजी को चरणामृत ले महाप्रसाद ले आगरे संतदास पास आये । तब संतदास प्रीति पूर्वक चांपाभाई भंडारी कों भेटे । तब चांपा भाई संतदास कों चरणामृत महाप्रसाद दिये । सो लेकें संतदास नें चांपा भाई सों कही, जो घर में बासन पात्र जो कछु है सो सब श्रीगुसांईजी को है । पाछें श्रीठाकुरजी और श्रीठाकुरजी को जो द्रव्य हतो,

संतदासल घरमां आव्या. ते द्विसथी संतदासे ये रीति करी के न्यारे पोतानी भंडारीना अधा वैष्णव आवी चुके त्यारे द्वारनां कभाउ लगाडीने लगवद् वार्ता करे. केम ने, केम लौकिक लव आवे तो डीक नही. ते संतदास येवा भगवदीय हुता.

वार्ता-प्रसंग ३-वणी न्यारे श्रीगुसांईजीने जन्म द्विस आवतो त्यारे संतदास प्रति वर्ष श्रीगुसांईजीने दर्शने श्रीगोकुल आवता. श्रीगुसांईजी संतदास उपर श्री-आचार्यजीने कृपापात्र सेवक जणुी अहुन कृपा करता. पछी केरसाक द्विसमां संतदासलुत शरीर थाक्युं वृद्ध थया. त्यारे श्रीगोकुलथी चांपालाभ, संकरलाभने भोलाव्या श्रीगुसांईजीने विनती पत्र लखीने. त्यारे श्रीगुसांईजी चांपालाभ भंडारीने कहे, के तमे आथा जव संतदास वैष्णवना धरे. हुवे ये देह छोडशे. तेथी चरणामृत महा-प्रसाद लई जव. त्यारे चांपालाभ श्रीगुसांईजीतुं चरणामृत लई महाप्रसाद लई आथा संतदासल पास आव्या. त्यारे संतदास प्रीतिपूर्वक चांपालाभ भंडारीने लेखा. त्यारे चांपालाभये संतदासने चरणामृत महाप्रसाद आव्या. ते लघने संतदासे चांपालाभने कछु, आ घरमां वासल पात्र ने कछु छे ते अहुं श्रीगुसांईजीतुं छे. पछी

घर को खतपत्र, सब चांपाभाई कों दे कहें, जो-चाहो तो कोईक दिन स्त्रीजन कों घर में रहन देउ । चाहो अबही बेचिकें दाम लेउ । या प्रकार सब चांपाभाई कों सोपे । सो चांपाभाई घर के खतपत्र और सगरे वासन द्रव्य लेकें श्रीगोकुल आय सब समाचार श्रीगुसांईजी सों कहे । तब श्रीगुसांईजी कहें, संतदास श्रीआचार्यजी के सेवक हैं । इनको विवेक, धैर्य, आश्रय, इनहीं सों बने । पाछें संतदास की देह बहोत असक्त भई । सो भूमि-सयन किये । तब आगरे के सब वैष्णव आइ जुरें । सो संतदास सों कहें, जो-तुम कहो तो तुमकों रेनुका तीर्थ ले चलें । और कहो तो, मथुरा बड़ो क्षेत्र है तहां ले चलें । तब संतदास कहें, रेनुका, मथुरा, मोकों कहा कृतार्थ करेगी ? जन्म भरि श्रीआचार्यजी को आश्रय कियो । अब या समय तीर्थ को आश्रय मैं कहा करूं ? और करूं तो महा बाधक है । तब सब वैष्णवन ने कही, जो-तुम कहो तो, श्रीगोकुल ले जाई तुमकों । तब संतदास कहें, अब हों श्रीगोकुल जाइ कहा राख उड़ाऊं ? श्रीगोकुल की सेवा तो मोसों कछू बनी नाहीं आई । तातें अब तुम सब कोऊ भगवद् नाम लेउ । तब सब वैष्णव भगवद् नाम लेन लागें । सो कोई तो पंचाध्यायी को पाठ करन लागें, कोई कीर्तन गावन लागें । पाछें

श्रीगोकुल अने श्रीगोकुलुं के कंठ द्रव्य लुं, धरुं अतपत्र अंधुं चांपासाधने आपीने कहुं, के याहो तो थोडाक दिवस स्त्रीजनने घरमां रहेवा हेजे, याहो तो हम-सांन वेचीने पैसा लो. आ प्रकारे अंधुं चांपासाधने सोंधुं. पछी चांपासाधने धरुं अतपत्र तथा अंधां वासणु द्रव्य लधने श्रीगोकुल आपीने अंधा समाचार श्रीगुसांंधलने कही. त्तारे श्रीगुसांंधल कहे, संतदास श्रीआचार्यलना सेवक छे. अनेमने विवेक, धैर्य, आश्रय, अनेमनाथी न अने. पछी संतदासनी देह धणुन अशक्त थध. भूमि-सयन कर्तुं. त्तारे आधाना अंधा वैष्णव लेगा थया. पछी संतदासने कहे, के तमे कहे तो तमने रेणुका तीर्थ लध यादीअे. अने कहे तो मथुरा मोटुं क्षेत्र छे त्यां लध यादीअे. त्तारे संतदास कहे, रेणुका, मथुरा मने शुं कृतार्थ करेशे ? न-मलर श्रीआचार्यलनो आश्रय कर्तुं. हुवे आ समय तीर्थना आश्रय हुं शुं कइं ? अने कइं तो महु आधक छे. त्तारे अंधा वैष्णवोअे कहुं, के तमे कहे तो तमने श्रीगोकुल लध नधअे. त्तारे संतदास कहे, हुवे हुं श्रीगोकुल नध शुं राअ उठावुं ? श्रीगोकुलनी सेवा तो माराथी कंठ अनी नथी आधी. तेथी हुवे तमे अंधा लगवद्नाम लो. त्तारे अंधा वैष्णव लगवद्नाम लेवा लाग्या. ते कोध तो पंचाध्यायनो पाठ करवा लाग्या. कोध कीर्तन गावा लाग्या. पछी

जब देह छोड़िवे को समें भयो । तब संतदास वैष्णवन सों कहें, अब तुम सब चुप होइकें मेरी बात सुनों । तब सब वैष्णव चुप हूँ गये । तब संतदास कहे, जो-एक समें श्रीगुसांईजी को जन्म दिन हतो । ता दिन मैं श्रीगोकुल गयो । सो श्रीगुसांईजी केसरि स्नान करि केसरि धोती पहरि केसरी उपरना झटकिकें ओढ़त हते । तब मैं जाय दंडोत कियो । तब श्रीगुसांईजी कहें, संतदास अब आये ? तब मैं कही, हां महाराज ! अबही आयो । तब मोकों पाछे आयो जानि जल मंगाई प्रभु चरणोदक दिये । यह ध्यान वा समें को करि देह छोड़ि लीला में प्राप्त भये ।

भावप्रकाश—सो संतदास ऐसे टेक के कृपापात्र भगवदीय हे, कोई तीर्थ को आश्रय न किये । एक श्रीआचार्यजी को दृढ़ आश्रय राखे । श्रीगोकुल आइवे की नाही कहे, जो-अब कहा राख उड़ाऊँ । सो यह भाव, जो लीला-स्थल में लौकिक देह कहा डारूं ? अलौकिक देह सँ जो सेवा बनें श्रीगोकुल की, श्रीठाकुरजी की, सोई आछो है । ओर देह की कहा हे ? भगवद् आश्रय सर्वोपरी पदार्थ हैं । देह कहूं परी, यह जताये । वैष्णव ॥७६॥

पाछें वैष्णवन नें संतदास की देह को संस्कार कियो । पाछें

ज्यारे देह छोड़वानो समय थयो त्यारे संतदासे वैष्णवोने क्युं, हुवे तमे षष्ठा रूप थधने भारी अेक वात सांभणो. त्यारे षष्ठा वैष्णव चुप थध गया. त्यारे संतदास कहे, के अेक समय श्रीगुसांछलनो जन्मदिन हुतो ते द्विसे हुं श्रीगोकुल गयो. त्यारे श्रीगुसांछल केसर स्नान करी केसरी धोती पहरी केसरी उपरणा अटकीने ओढता हुता. त्यारे में जधने दंडवत कर्या. त्यारे श्रीगुसांछल कहे, संतदास ! हुमणुं आव्या ? त्यारे में क्युं, हां महाराज ! हुमणुं न आव्यो. त्यारे भने पाछणथी आव्यो नखी नल भंगावी प्रभुअे अरखोदक आव्युं. आ ध्यान ते समयतुं करी देह छोडी लीलाभां प्राप्त थया.

भावप्रकाश—अे संतदास अेवा टेकना कृपापात्र भगवदीय हुता. (ठे) ढाई तीर्थनो आश्रय न कर्यो. अेक श्रीआचार्यलनो दृढ आश्रय राख्यो. श्रीगोकुल आववानी ना कही, के हुवे थुं राष उडावुं. ते आ भावथी ठे लीला-स्थलभां लौकिक देह थुं पाडुं ? अलौकिक देहथी न सेवा अने श्रीगोकुलनी, श्रीठाकुरलनी, तेन सारी छे अने देहतुं थुं ? भगवदाश्रय सर्वोपरी पदार्थ छे. देह गमे त्यां पडे अे नखाल्युं.

वैष्णव ॥७६॥

पछी वैष्णवोअे संतदासनी देहनो संस्कार कर्यो. पछी संतदासनी आ षष्ठी

संतदास की यह सब बात एक वैष्णव ने श्रीगोकुल आचर्यके श्रीगुसां-
ईजीके आगे कही। तब श्रीगुसांईजी को रोमांच हो आये। कहे, संत-
दास बड़े भगवदीय हे, ऐसो आश्रय वैष्णव को करनो, जैसे संतदास
ने किया। या प्रकार संतदास की बहोत सराहना किये। सो संतदास
ऐसे श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हते। इनकी वार्ता कहां
ताई कहिये। वार्ता ॥७६॥

✱

✱

✱

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, सुंदरदास, माधोदास, गंगापुत्र ब्राह्मण
हते, सो श्रीजगन्नाथरायजी सो कोस दस उरे एक गाम में रहते, ता गाम को
नाम पीपरी है, तहां रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—लीला में सुन्दरदास, माधोदास, दोऊ कुमारिका के
जूथ में राधा सहचरी की सखी हैं। तहां सुन्दरदास को नाम 'शीला', माधोदास
को नाम 'लीला'। ये दोऊ पूर्व में पीपरी गाम में, (तहां) सुन्दरदास तो गंगापुत्र
ब्राह्मण के घर जन्में। और माधोदास सारस्वत ब्राह्मण के घर जन्में। सो माधोदास
को पिता, एक महजति में पीर हतो। ताहि को आश्रय करे। म्लेच्छ जैसे करें,
ताही प्रकार सो माला बतासा नित्य चढावे। वाके पुत्र न हतो, सो पीर की मानता
करी। तब पुत्र भयो। (तब) वा सारस्वत ब्राह्मण को पीर में दृढ़ विश्वास भयो।

वात अेक वैष्णुवे श्रीगोकुल आचर्यने श्रीगुसांईजीना आगण कही। त्पारे श्रीगुसांईजीने
रोमांच थर्य आव्यां। कहे, संतदास भहान भगवदीय हुता। अेयो आश्रय वैष्णुवे
करयो जेयो संतदासे कर्यो। आ प्रकारे संतदासनी अहु न प्रशंसा करी। ते संतदास
श्रीआचार्यजीना कृपापात्र भगवदीय हुता। अेमनी वार्ता कयां सुधी कहीअे? वा. ॥७६॥

✱

✱

✱

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना सेवक, सुंदरदास माधोदास गंगापुत्र
ब्राह्मण हुता, ते श्रीजगन्नाथरायजी कोस दस आ तरई अेक गाममां रहेता, ते
गामनुं नाम पीपरी छे त्यां रहेता, तेमनी वार्तानो भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—लीलामां सुंदरदास माधोदास, अन्ने कुमारिकाना यूथमां
राधा सहचरीनी सखी छे त्यां सुंदरदासनुं नाम 'शीला' माधोदासनुं नाम 'लीला'
अे अन्ने पूर्वमां पीपरी गाममां (त्यां) सुंदरदास तो गंगापुत्र ब्राह्मणना धरे
जन्म्या। अन्ने माधोदास सारस्वत ब्राह्मणना धरे जन्म्या। ते माधोदासनेो पिता
अेक महजतिमां पीर हुतो तेनो न आश्रय करे। म्लेच्छ जस करे तेन प्रकारथी
माला पतासां नित्य चढावे। अेने पुत्र न हुतो। तेथी पीरनी मानता करी। त्पारे पुत्र

सो उह पीर उह सारस्वत सों बोलतो, बातें करतो । सो बात वह सारस्वत ब्राह्मण हिन्दू है कें प्रगट करे तो निन्दा होई । तातें बेटा को नाम माधोदास धर्यो । कृष्णचैतन्य गौड देस में भये । तिनको सेवक माधोदास कों करायो । परन्तु मनमें दृढ़ता माधोदास के पिता की और माधोदास की पीर में, ऊपर तें एक ठाकुर ले राखे । सो लोगन के दिखाइवे कों पूजें । जब ठाकुर आगें भोग धरे, तब पीर को नाम लेकें बुलावें, सो पीर खाई जाई । और वाही गाम में सुन्दरदास गंगापुत्र ब्राह्मण रहे । सो इनकी रीत यह, जो-कोई संत महन्त महापुरुष आवें, तिनकी टहल सगरो दिन करें । पांच दाबें, पानी, सीधा सब ल्याइ देई । द्वै कोस लों पहुंचावे । या प्रकार सों रहें । सो एक समय श्रीआचार्यजी श्रीजगन्नाथरायजी कों पधारें । सो पीपरी गाम के पास तलाव पर उतरे । सो सुन्दरदास आय कृष्णदास कों दंडौत करि कहे, मैं आपके चरन दाबूं, पानी ले आऊँ । सीधा सामग्री जो कछु कहो सो ले आऊँ । मैं या गाम में रहत हों । सो जो कोउ संत महन्त महापुरुष आवत हैं तिनकी मैं टहल करत हों । मैं गंगापुत्र ब्राह्मण गृहस्थ हों । तातें जो कछु टहल आप सोसों कहो सो मैं करूं । तब कृष्णदास कहे, जो-तू हमारी वस्तु, भाव सों न्यारो रहियो, जो-तू कछु छूवेगो सो छूइ जायगो । तातें तू अपने

थयो. त्पारे ते सारस्वत ब्राह्मणने पीरमां विश्वास थयो. पछी ते पीर अे सारस्वतथी भेलातो, वातो करतो. ते वात अे सारस्वत ब्राह्मणु हिन्दु थधने प्रकट करे तो निंदा थाय तेथी भेटानुं नाम माधवदास धर्युं. कृष्णचैतन्य गौड देशना थया माधवदासने तेमना सेवक कराया. परतु मनमां दृढता माधवदासना पितानी अने माधवदासनी पीरमां उपरथी अेक ठाकुर लई राખ्या. ते दोडाने दृष्टाडवाने पूजे. अ्यारे ठाकुर आगण लोग धरे त्पारे पीरनुं नाम लधने भेलावे ते पीर आर्थ अय. वणी ते न गाममां सुंदरदास गंगापुत्र ब्राह्मणु रहे. अेनी अे रीति, डे डोई संत-महंत महापुरुष आवे तेमनी टहल आप्णे दिवस करे. पग दाबे, पाणी सीधुं अधुं लावी हे. भे डोश सुधी पहोंयाई आवे. आ प्रकारे रहे. पछी अेक समय श्रीअभयार्युं श्रीजगन्नाथरायुंअे पधार्या. त्पारे पीपरी गामनी पासे तलाव उपर उतर्या. त्पारे सुंदरदासे आवी दंडवत् करीने कछुं, हुं आपना अरणु दापूं. पाणी लई आवुं. सीधुं सामग्री न कंई कहे ते लई आवुं. हुं आ गाममां रहुं छुं अने न कंई संत-महंत महापुरुष आवे छे तेमनी हुं टहल करूं छुं. हुं गंगापुत्र ब्राह्मणु गृहस्थ छुं. तेथी न कंई टहल आप अने कहे ते हुं करूं. त्पारे कृष्णदास कहे,

काम जा, हमारे कुछ काम नहीं हैं। देखि, काहू सों छुड़यो मति। तब सुन्दरदास नें कह्यो, मेरो कहा अपराध है? जो कुछ टहल नहीं बतावत। मैं तो जो वैष्णव आवत हैं तिन सबन की टहल करत हों। और तुम कहे कुछ छूवे मति। ताको कारन कहा? मैं तो ब्राह्मण हों। तब कृष्णदास ने कही, जो-तू ब्राह्मण है तो अपने घरको है। यहाँ तो श्रीआचार्यजी के सेवक होई ताही सों टहल करावत हैं। ताही कों सब छुवावत हैं। और की छूई वस्तु कुछ काम न आवे। तब सुन्दरदास नेक दूरि ठाड़े रहे। सो वैष्णवन ने रंच रंच सब जगह खोदि के, जल ल्याई, छिरकि के आसन विछायो। ता ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभु विराजे। सो श्रीआचार्यजी को स्वरूप देखि के सुन्दरदास मोहित होइ गये। पाछे कृष्णदास गाम में जाय, सीधो सामग्री ले आये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु न्हाइ रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरि, आप भोजन करे। पाछे सुन्दरदास कों दैवी जीव जानि महाप्रसाद दिये। सो महाप्रसाद लेत ही सुन्दरदास की बुद्धि निर्मल है गई। तब सुन्दरदास ने श्रीआचार्यजी सों विनती करी, महाराज! आप साक्षात् ईश्वर हो। सो मेरो कहा अपराध है, जो-मोसों कुछ टहल न कराई। तब श्री-

ठे तू अमारी वस्तु आवथी अलग रहेजे. जे तू कंठ अडीश तो अलडाई नशे. तेथी तू तारा कामे ज, अमारे कंठ काम नथी. हेय ! ठाधने अडतो नहीं. त्यारे सुंदरदासे कछुं, भारे शो अपराध छे, ठे कंठ टहल नथी अतावता? हुं तो ज वैष्णव आवे छे ते अधानी टहल कइं छुं अने तमे कडो छे कंठ अडीश नहीं. तेनुं कारण थुं ? हुं तो प्राणु छुं. त्यारे कृष्णदासे कछुं, ठे तू प्राणु छे तो तारा धरने छे. अहीं तो श्रीआचार्यजने सेवक होय तेनी पासे टहल करावीअ छीअ. अने ज अधे अडकाडीअ छे पीजनी अडेकी वस्तु कंठ काम न आवे. त्यारे सुंदरदास जरा दूर उभा रखा. पछी वैष्णवोअ थोडी थोडी अधी जगा प्रोदीने जल लावीने छांटीने आसन पिछाव्युं. ते उपर श्रीआचार्यज महाप्रभु विराज्या. पछी श्रीआचार्यजनुं स्वरूप जेधने सुंदरदास मोहित थई गया. पछी कृष्णदास गाममां जई-सीधुं-सामग्री लाव्या त्यारे श्रीआचार्यज महाप्रभुअ न्हाई रसोई करी श्रीठाकुरजने भोग धरी पोते भोजन क्युं. पछी सुंदरदासने दैवी जव जणुी महाप्रसाद आयो. लारे महाप्रसाद लेतां ज सुंदरदासनी बुद्धि निर्मल थई गई. त्यारे सुंदरदासे श्रीआचार्यजने विनती करी, महाराज ! आप साक्षात् ईश्वर छे. भारे शो अपराध छे ठे माराथी कंठ टहल न करावी. त्यारे श्रीआचार्यज महाप्रभु कडे,

आचार्यजी महाप्रभु कहे, जो—हमारे संग वैष्णव हैं सो सब हमारी रीति मर्यादा जानत हैं । तुमकों अवही हमारी रीति मर्यादा की खबरि नाहीं है । तातें तुमपै टहल कराये नाहीं । तब सुन्दरदास कहे, महाराज ! मोकों सरन ले, जा प्रकार मोंसों बतावो ता प्रकार कछू टहल मैं आपकी करूं । तब मेरे मनमें सुख होय । तातें मोकों चरन तो छुवाओ ? तब श्रीआचार्यजी सुन्दरदास की दैन्यता देखि सुन्दरदास कों नाम सुनाय चरन छुवाये । पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु पौढे । तब सुन्दरदास सगरी रात्रि परम प्रीति सों चरन सेवा कियो करे । श्रीआचार्यजी महाप्रभु दौय चार बार रात्रि कों कहैं, जो—सुन्दरदास अब तुम सोई रहो । तब सुन्दरदास ने विनती करी, जो—महाराज ! सोवनो तो नित्य है, परन्तु यह सेवा आपकी मोकों कब मिलेगी ? पाछे प्रातःकाल भयो तब सुन्दरदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों दंडवत् करि विनती किये, जो—महाराज ! आप कृपा करिके मेरे घर पधारिये । और मेरी स्त्री कों अंगीकार करिये । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु सुन्दरदास के घर पधारि, आप स्नान करि रसोइ करि पाछे सुन्दरदास सों कहे, जो—सुन्दरदास स्त्री सहित न्हाई के आउ । तब श्रीआचार्यजी सुन्दरदास कों ब्रह्मसंबंध कराय स्त्री कों नाम सुनाय निवेदन कराये । पाछे सुन्दरदास के घर लालाजी ठाकुर

डे अमारा साथे वैष्णव छे ते अथा अमारी रीत मर्यादा ज्ञे छे. तमने हनु अमारी रीति मर्यादानी अजर नथी. तेथी तमारी पासै टहल करावी नही. त्तारे सुंदरदास कडे, महाराज ! मने शरणे दो. जे प्रकार मने पतावे ते प्रकारे हुं कंठ आपनी टहल कइं. त्तारे मारा मनमां सुख थाय. तेथी मने अरणेना तो स्पर्श करावे. त्तारे श्रीआचार्यज् सुंदरदासनी दीनता जेधने सुंदरदासने नाम संलणावी अरणेना स्पर्श कराव्ये. पछी श्रीआचार्यज् महाप्रभु पौढ्या. त्तारे सुंदरदासे आपी रात्रि परम प्रीतिथी अरणे-सेवा कर्या करी. श्रीआचार्यज् महाप्रभु जे वार रात्रिये कडे, डे सुंदरदास । हुवे तमे सुध रहे. त्तारे सुंदरदासे विनंती करी, डे महाराज ! सुवातुं तो नित्य छे परंतु आ सेवा आपनी क्यारे भणशे ? पछी प्रातःकाल थयुं त्तारे सुंदरदासे श्रीआचार्यज् महाप्रभुने दंडवत् करी विनंती करी, डे महाराज ! आप कृपा करीने मारा धरे पधारो अने मारी स्त्रीने अंगीकार करे. त्तारे श्रीआचार्यज् महाप्रभु सुंदरदासना धरे पधारी, आप स्नान करी, रसोई करी, पछी सुंदरदासने कडे, डे सुंदरदास । स्त्री सहित न्हाई आवे. त्तारे श्रीआचार्यज् सुंदरदासने अहसंबंध करावी स्त्रीने नाम संलणावी निवेदन कराव्युं.

हते । तिनकों पञ्चामृत सों न्हाय आप भोग धरें । पाछे आप भोजन करि सुन्दरदास कों स्त्री सहित जूठन महाप्रसाद दिये । पाछे दोई दिन सुन्दरदास के घर रहि पुष्टिमार्ग की सब रीति बताय, आपतो श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन कों पधारे । सुन्दरदास सेवा करन लागे ।

वार्ता-प्रसंग १—सो सुन्दरदास को माधोदास सूं स्नेह बहोत हतो । सो सुन्दरदास नें मनमें विचारी, जो-यह माधोदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को सेवक होइ तो कृतार्थ होई । याको सब अन्याश्रय छूटे । तब सुन्दरदास नें माधोदास आगे श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की बहोत बड़ाई करी । और माधोदास सों कह्यो, जो-तुम श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक होउ तो याही जन्म में कृतार्थ होउ । श्रीआचार्यजी महाप्रभु साक्षात् भगवान् हैं । तब माधोदास नें कह्यो, जो-मेरे तो जो कछु हैं सो कृष्णचैतन्य है । तब सुन्दरदास चुप करि रहै । परन्तु दोई जने में स्नेह बहोत ।

भावप्रकाश—काहेते, लीला को सम्बन्ध दृढ़ है, तातें इहां दृढ़ स्नेह भयो । और सुन्दरदास ने माधोदास को कल्याण याही जन्म में विचारयो । सो श्रीठाकुरजी अङ्गीकार करेंगे । भगवदीय जो विचारे सोई होय ।

पछी सुन्दरदासना धरे लालाछु ठाकुर हुता, तेमने पंचामृतथी न्हुवडावी आपे लोग धर्यो । पछी आपे लोअन करी सुन्दरदासने स्त्री सहित जूठन महाप्रसाद आप्यो । पछी ये दिवस सुन्दरदासना धरे रही पुष्टिमार्गनी पधी रीति अतावी आप तो श्रीजगन्नाथरायछुना दर्शने पधार्यो । सुन्दरदास सेवा करना लाग्या ।

वार्ता-प्रसंग १-ये सुन्दरदासने माधवदासथी स्नेह धर्यो हुतो । ऐथी सुन्दरदासे मनमां वियायुं, के आ माधवदास श्रीआचार्यछु महाप्रभुना सेवक थाय तो कृतार्थ थाय अने पधो अन्याश्रय छुटे । त्यारे सुन्दरदासे माधवदास आगण श्रीआचार्यछु महाप्रभुनी धर्यो वडाछ करी अने माधवदासने कछुं, के तमे श्रीआचार्यछु महाप्रभुना सेवक थाय तो आ न न्ममां कृतार्थ थाय । श्रीआचार्यछु महाप्रभु साक्षात् भगवान छे । त्यारे माधवदासे कछुं, मारे तो न् कछु छे ते कृष्णचैतन्य छे । त्यारे सुन्दरदास चूप करी रह्या । परन्तु अन्नेमां स्नेह धर्यो ।

भावप्रकाश—केमके लीलानो संबंध दृढ़ छे तेथी अछीं दृढ़ स्नेह थयो अने सुन्दरदासे माधवदासतुं कल्याण आ न न्ममां वियायुं तेथी श्रीठाकुरछु अङ्गीकार करे । भगवदीय न् वियारे ते थाय ।

पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीजगन्नाथरायजी के दरसन करि कछुक दिन तहां रहिके पाछे पुरुषोत्तमपुरी सों पधारे । तब सुन्दरदास के घर उतरि स्नान करि पाक सामग्री करे । पाछे श्रीठाकुरजी कों भोग धरे । ता सभें माधोदास, सुन्दरदास के घर आई सुन्दरदास के पास बैठे । इतने में समय भयो तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु भोग सराये । सो माधोदास ने महाप्रसाद को थार भरयो देखयो । पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप भोजन करि पौहें तब माधोदास ने सुन्दरदास सों कही, जो—तेरे गुरु श्रीआचार्यजी के हाथ श्रीठाकुरजी अरोगत है नाहीं । मैं महाप्रसाद को भरयो थार देखयो । और मेरे घर मैं, जो श्रीठाकुरजी कों धरत हूं, तामें ते एक ग्रास हू रहत नाहीं । ठाकुर मेरे सब खाय जात है । तब सुन्दरदास ने कही, कछु नाहीं रहत है, तो तुम कहा खात हो ? तब माधोदास ने कही, हाँ अपने घर लायक न्यारो धरि राखत हों । ठाकुर कों अधिक होई तितनों धरत हों । तामें ते कछु खावत नाहीं । तब सुन्दरदास ने कही, या बात को उत्तर तुम पिछले पहर अइयो तब तुमसों कहूंगो । तब माधोदास घर गये । और सुन्दरदास स्त्री सहित महाप्रसाद लिये । पाछे श्रीआचार्यजी पोढिके उठे । तब सुन्दरदास श्रीआचार्यजी महाप्रभु सों कहै, जो—महाराज ! एक माधोदास

पछी श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीजगन्नाथरायजीनां दर्शन करी केरदास द्विपसं त्यां रहिने पछी पुरुषोत्तमपुरीथी पधार्या । त्पारे सुंदरदासना धरे उतरी स्नान करी पाक-सामग्री करी । पछी श्रीठाकुरजीने भोग धर्या । ते सभये माधवदास, सुंदरदासना धरे आवी सुंदरदासनी पास भेडा । ओरदासां समय थये त्पारे श्रीआचार्यजी महाप्रभुये भोग सरान्ये । त्पारे माधवदासे महाप्रसादना थाण लर्या जेये । पछी श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप भोजन करी पोढया । त्पारे माधवदासे सुंदरदासने कछु, के तारा गुरु श्रीआचार्यजीना हाथे श्रीठाकुरजी आरोगता नथी । में महाप्रसादना थाण लर्या जेये अने मारा धरमां हुं जे श्रीठाकुरजीने धरं छुं तेमांथी अेक ग्रास पणु रहेतो नथी । मारा ठाकुर पधुं पाठ नथ छे । त्पारे सुंदरदासे कछुं, कंठ नथी रहेतुं तो तमे शुं आव छो ? त्पारे माधवदासे कछुं, अमारा धर लायक अलग धरी राधुं छुं । ठाकुरने विशेष होय ओरहुं धरं छुं । अेमांथी कंठ पातो नथी । त्पारे सुंदरदासे कछुं, आ वातना उत्तर तमे पाछला पहारे आवजे त्पारे तमने कहीश । त्पारे माधवदास गया अने सुंदरदासे स्त्री सहित महाप्रसाद लीघे । पछी श्रीआचार्यजीपोढीने उठ्या । त्पारे सुंदरदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुने कछे, जे महाराज ! अेक माधवदास

सारस्वत ब्राह्मण है, सो कहत है, मैं ठाकुर के आगे धरत हूँ सो सब मेरे ठाकुर खाई जात हैं। बाकी थार में कछ रहत नहीं। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहैं, वह सूख है। बाके घर भूत खाय जात है। श्रीठाकुरजी को हस्त लगे सो वस्तु कबहू घटे नहीं। सो वह माधोदास देवी है, और तुम्हारे मन में बाको उद्धार करन को आयो है, ताते अब बाको सरनि लेके वैष्णव अवश्य करनो है। तब सुन्दरदास प्रसन्न भये। पाछे माधोदास आये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु माधोदास को निकट बुलाई के कहै, माधोदास ! तेरे घर ठाकुरजी सगरी सामग्री खाई जात हैं? तब माधोदास ने कही, हां, हां, कछ रहत नहीं, थार में ते सब खाई जात है। ऐसे मेरे ठाकुर हैं। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे, जो-कालिह जब तू भोग धरे तब हमको पहले खबरि करियो, हमहू देखें। तब माधोदास ने कही कालिह सबेरे तुमको खबरि करूंगो। पाछे माधोदास घर गये। सबेरे उठि रसोई करि, आंय, श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सौं कछो, महाराज ! पधारिये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु तहां मंदिर के द्वार पर जाय रहें। तब माधोदास थार में सगरी सामग्री धरि श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को दिखाय कछो, जो-अब मैं भोग धरत हूँ। तब श्रीआचार्यजी महा-

सारस्वत ब्राह्मण छे ते कहे छे, हुं ठाकुरना आगण धरं छुं ते अछुं मारा ठाकुर आठ जय छे. येनी थाणीसां क'ध रहेतुं नथी. त्त्यारे श्रीआचार्य'ल महाप्रभु कहे. ये भू'र्ष' छे. येना घर लूत आठ जय छे. श्रीठाकुर'नो हाथ लागे ते वस्तु क्यारेय घटे नही. पछु ते माधवदास देवी छे वणी तमारा मनमां येनो उद्धार करवातुं आ'व्युं छे. तेथी हुवे येने शरणे लधने वैष्णव अवश्य करवो छे. त्त्यारे सुंदरदास प्रसन्न थया. पछी माधवदास आ'व्या त्त्यारे श्रीआचार्य'ल महाप्रभु माधवदासने पासे पोसावीने कहे, माधवदास ! तारा धरे ठाकुर'ल अधी सामग्री आठ जय छे ? त्त्यारे माधवदासे कछुं, हां, हां, क'ध रहेतुं नथी. थाणसांथी अछुं आठ जय छे येवा मारा ठाकुर छे. त्त्यारे श्रीआचार्य'ल महाप्रभु कहे, के काले त्त्यारे तू लोग धरे त्त्यारे अमने पहेलां अण्णर करणे अमे पछु जेअये. त्त्यारे माधवदासे कछुं, कास सवारि तमने अण्णर करीश: पछी माधवदास धरे गया. सवारि उठी रसोइ करी आवी श्रीआचार्य'ल महाप्रभुने कछुं, महाराज ! पधारो. त्त्यारे श्रीआचार्य'ल महाप्रभु त्त्यां मंदिरना द्वार उपर जय पोसा. त्त्यारे माधवदास थाणसां अधी सामग्री धरी श्रीआचार्य'लने देखाडीने कछुं, के हुवे हुं. लोग धरं छुं. त्त्यारे श्रीआचार्य'ल महाप्रभु कहे, के धरो. पछी

प्रभु कहे जो-धरो । सो वह माधोदास ठाकुर के आगे धरि कें पीर को सुमिरन क्रियो । सो वह पीर भूत हतो सो आयो, तब मन्दिर के पास आवत ही श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों देखि अग्नि तें जरन लाग्यो । और श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों कह्यो, जो-आजु मैं भूखो मरयो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु भूत सों कहे, जो-आज ताई तू खायो, सो तो खायो । आज पीछे तू कबहू मति अइयो, फेरि इहां आवेगो तो भस्म हे जायगो । तातें बेगि जा । तब वह पीर रोवत भाजि गयो । पाछे समय भयो तब माधोदास भोग सरावन कों मंदिर में गयो । सो तहां जाई देखे तो थार में सगरी सामग्री ज्यों की त्यां भरी है । तब माधोदास ने श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों कह्यो, जो-आज तुम इहां आये । सो मेरे ठाकुर आरोगे नाहीं, भूखे रहे । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु माधोदास सूं कछु कहे नाहीं । आप चुपचाप सुन्दरदास के घर पधारे । तहां रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरि महाप्रसाद ले आप पोढ़ें । पाछे सगरे वैष्णव, सुन्दरदास, महाप्रसाद लियो । पाछे रात्रि भई तब माधोदास सोये । ऐसेमें अर्द्ध रात्रि गई तब श्रीठाकुरजी के अलुचर आय माधोदास कों खाटतें ओंघो डारि के मारन लागे । तब माधोदास हाहा खाय के कहै, जो-तुम मोकों

ते माधवदासे ढाकुरना आगण धरीने पीरतुं स्मरण क्युं । ते पीर भूत हुतो ते आव्यो । त्यारे मंदिरनी पास आवतांन श्रीआचार्यं महाप्रभुने जेधने अग्निथी पणवा लाग्यो अने श्रीआचार्यं महाप्रभुने क्युं, के आन हुं लूष्यो रह्यो । त्यारे श्रीआचार्यं महाप्रभु लूतने कहे, के आनसुधी ते पाधुं ते तो पाधुं, आन पछी तू क्यारेय आवीश नहीं । इरी अहीं आवीश तो लस्म थध नधश. तेथी नददी न. त्यारे ते पीर रोतांरोतां लागी गयो. पछी समय थयो त्यारे ते माधवदास भोग सरावाने मंदिरमां गयो. त्यां नध जुये तो थाणमां पधी सामग्री जेमनी तेम लरी छे. त्यारे माधवदासे श्रीआचार्यं महाप्रभुने क्युं, आन तमे अहीं आव्या अथी भारो ढाकुर आवोग्या नहीं, लूष्यो रह्या. त्यारे श्रीआचार्यं महाप्रभुने माधवदासने कंध क्युं नहीं. पोते चुपचाप सुंदरदासना घरे पधार्या. त्यां रसोइ करी श्री-ढाकुरने भोग धरी महाप्रसाद लध आप पोढया. पछी पधा वैष्णव (तथा) सुंदरदासे महाप्रसाद दीधो. पछी रात्रि थध त्यारे माधवदास सूध रह्या. अथामां अर्द्ध-रात्रि गध त्यारे श्रीढाकुरने अनुचरने आवीने माधवदासने पाटथी उंधो नापीने भारवा लग्या. त्यारे माधवदासे नाक रगडीने क्युं, तमे मने शा माटे भारो छे ?

काहे कौं मारत हो ? तब अनुचरन ने कही, श्रीआचार्यजी तो भगवत्स्वरूप है। तिनसौं तू कह्यो, जो-तुम्हारे आए मेरे ठाकुर भूखे रहै। ताते तोकों मारत हैं। तेरे घर जो भूत खाई जात है, जा पीर को तू आश्रय कियो है, नित्य बुलावत है। सो आज श्रीआचार्यजी बैठे हते, ताते वह प्रेत अग्नि सौं जरन लाग्यो सो भाजि गयो। तेरे ठाकुर तो इतने दिन में आज ही अरोगे हैं। तब माधोदास ने कही, मैं श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को स्वरूप जान्यो नाहीं, तातें कह्यो। अब सवारे अपराध क्षमा कराव सेवक होऊंगो। अब तुम मोकों मति मारो। तब श्रीठाकुरजी के अनुचर कहे, जो-सवारे अपराध क्षमा न करावेगो तो, (और) सेवक उनको न होईगो तो, काल्ह रात्रि कौं हम तोकों मारि डारि चूर्ण करेंगे। यह कहिके श्रीठाकुरजी के अनुचर गये। पाछे सवारो भयो तब माधोदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुन पास आई दंडवत विनती कियो। जो महाराज ! मैं आपको अपराध बहोतसो कियो, मैं अज्ञानी जीव हूं, आपको स्वरूप कहा जानूं ? आप तो साक्षात् भगवान हो। अब मेरो अपराध क्षमा करो। मेरो पिता मरयो, सो मोसों कह्यो, जो-तू या पीर को माने जैयो। सो उपर दिखाववे कूं ठाकुर राखो हतो। तातें आप अब कृपा करि मेरे घर पधारो, मोकों सरन लेहू। जा प्रकार आप बतावो

त्यारे अनुचरोअे कहुं, श्रीआचार्यलता भगवत्स्वरूप छे। तेभने ते' कहुं, के तभारा व्याप्यथी मारा ठाकुर लूण्या रह्या ? जे पीरने ते' आश्रय क्यो' छे। नित्य योसावे छे ते व्याज श्रीआचार्यलता भेदा हुता त्यारे ते प्रेत अग्निथी यणवा लाग्यो ते लागी गयो। तारा ठाकुरते आटसा द्विसमां आणेज आरोग्या छे। त्यारे माधवदासे कहुं, में श्रीआचार्यलता स्वरूपने जण्युं नहीं तेथी कहुं। हुवे सवारे अपराध क्षमा करावी सेवक थर्श। हुवे तमे भने न मारो। त्यारे श्रीठाकुरलता अनुचर कहे, के सवारे अपराध क्षमा करावीश नहीं तो, अने अेभने सेवक थर्श नहीं तो डाल रात्रिअे अमे तने मारी नाभी युरणु करीशुं। अेभ कहीने श्रीठाकुरलता अनुचर गया। पछी सवार थयुं त्यारे माधवदासे श्रीआचार्यलता महाप्रभु पास आवी दंडवत विनती करी, के महाराज ! में आपने अपराध घण्ण क्यो'। हुं अज्ञानी लव छुं। आपतुं स्वरूप शुं जण्युं ? आपने साक्षात् भगवान छे। हुवे मारे अपराध क्षमा करे। मारे पिता पीरने अहुज मानते पछी मारे पिता मर्यो त्यारे भने कहुं, के तू या पीरने माने जजे। उपर द्खाववाने ठाकुर राख्या हुता। तेथी आप हुवे कृपा करी

ता प्रकार मैं भगवद सेवा करूं। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु माधोदास की दैन्यता देखिके माधोदास के उपर प्रसन्न होई, माधोदास के घर कृपा करि, फेरि पधारे। तहां स्नान कराई नाम सुनाई ब्रह्मसंबन्ध कराये। पाछे श्रीठाकुरजी कों पंचाश्रुत स्नान कराई, पाट बैठाय, माधोदास के माथे पधराये। पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप रसोई करि श्रीठाकुरजी कों भोग धरिकें आप भोजन किये। पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभुन ने माधोदास लूँ कह्यो, जो-माधोदास! या गाम में जितने वैष्णव होई तिन सबन कों महाप्रसाद लेंन कों बुलाई लयाऊ। तब माधोदास ने श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों कह्यो, जो-महाराज! महाप्रसाद तो थोरो है। और या गाम में वैष्णव तो बहोत हैं। सो सबकों कैसे पहुँचेंगे? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें, जो-तू सूर्ख है, महाप्रसाद कबहूँ निघट्यो है? जा सब वैष्णव कों बुलाई लाव। तब माधोदास वैष्णवन सों कहै, जो-श्रीआचार्यजी महाप्रभु वेगे बुलावत हैं, सो चलो। सो सुनत ही सगरे वैष्णव सब काम काज छोड़िके दौरे आये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु सबन के आगे महाप्रसाद की पातरि धरि के सबन कों महाप्रसाद लिवाय दियो। और महाप्रसाद को थार भरयो को भरयो ही रह्यो। तब

भारा धरे पधारे भने शरणु लो जे प्रकार अतावे ते प्रकारे हुं भगवद सेवा करूं। तयारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु माधवदासनी दीनताने जेधने माधवदासना उपर प्रसन्न थया। माधवदासना धरे कृपा करीने करी पधारा। त्यां स्नान करी श्रीआचार्यजी महाप्रभु माधवदासने स्नान करावी नाम संलणावी ब्रह्मसंबंध कराव्युं। पछी श्रीठाकुरजीने पंचाश्रुत स्नान करावी पाट भेसाडी, माधवदासना माथे पधराव्या। पछी श्रीआचार्यजी महाप्रभुये पोते रसोई करी श्रीठाकुरजीने लोग धरीने पोते लोअन क्युं। पछी श्रीआचार्यजी महाप्रभुये माधवदासने कहुं, के माधवदास! या गाममां जेटदा वैष्णव होय ते अधाने महाप्रसाद लेवाने भोलावी लाव। तयारे माधोदासे श्रीआचार्यजी महाप्रभुने कहुं, के महाराज! महाप्रसाद तो थोडा छे। अने या गाममां वैष्णव तो बणा छे। ते अधाने केम पहुँचये? तयारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे, के तू भूर्ख छे। महाप्रसाद कयारेय बटे छे? न, अधा वैष्णवनने भोलावी लाव। तयारे माधवदास वैष्णवाने कहे, के श्रीआचार्यजी महाप्रभु नहदी भोलावे छे। भाटे यालो। ते संलणतां अधा वैष्णवो अधुं डामकाज छोडीने दोडी आव्या तयारे श्रीआचार्यजी महाप्रभुये अधानी आगण महाप्रसादनी पातण धरीने अधाने महा-

श्रीआचार्यजी महाप्रभु ने माधोदास सँ कह्यो, जो-माधोदास ! देखि वैष्णव कौ दृढ़ विश्वास चाहिये । महाप्रसाद कबहूँ न घटे । या प्रकार कौ महात्म्य श्रीआचार्यजी महाप्रभुन ने माधोदास कौ वा समय वा ठौर दिखायो ।

भावप्रकाश—इयों, जो-इन कौ अत्र ही दृढ़ विश्वास नांही है, नये वैष्णव हैं । कछु महात्म्य देखें तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कौ दृढ़ आश्रय होय । आश्रय विना भगवद्-प्राप्ति फल सिद्धि न होई । ताते महात्म्य दिखायो ।

तब माधोदास कौ विश्वास दृढ़ भयो । पाछें श्रीआचार्यजी वहां रहि, माधोदास कौ सगरी रीति आंति पुष्टिमार्ग की बताय, आप कासी पधारे ।

भावप्रकाश—यह वार्ता में यह सिद्धान्त भयो, जो-भगवदीय के संग तें कैसोउ दुष्ट होई परन्तु वाको उद्धार होई । और माधोदास ठाकुर के आगे भोग धरे सो भूत खाई, यह बात संभव नाहीं । काहे तें, जहां श्रीठाकुरजी को नाम होई, तहां भूत आदि को प्रवेश न होई । तो श्रीठाकुरजी के आगे भोग धरे सो भूत कैसे खाय ? तातें ऊपर कहि आये, जो-माधोदास कौ, पिता के संग तें प्रेत को आश्रय (सिद्ध) भयो हतो । तातें भूत खाई जातो । यातें यह जताये, जो-

प्रसाद लेवजावी दीघो. अने महाप्रसादना थाण लयेने लयेने रह्यो. त्तारे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजे माधवदासने कछु, हे माधवदास ! जे, वैष्णवने दृढ विश्वास जेधजे. महाप्रसाद ध्यारेय न घटे. आ प्रकारतुं महात्म्य श्रीआचार्यजी महाप्रभुजे माधवदासने ते समय ते जगाजे देखाड्युं.

भावप्रकाश—डेभ, जे अने हनु विश्वास नथी. नना वैष्णव छे. कछे माहात्म्य जुजे तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुजेने दृढ विश्वास होय. आश्रय विना भगवत्प्राप्ति इस सिद्धि न होय तेथी माहात्म्य देखाड्युं.

त्तारे माधवदासने दृढ विश्वास थयो. पछी श्रीआचार्यजी त्तयां रूढी माधवदासने षष्ठी रीतिलांति पुष्टिमार्गनी जतावी. पछी आप कासी पधार्यो.

भावप्रकाश—आ वार्तामां जे सिद्धान्त थयो, हे भगवदीयना संगथी डेवो पणु दृष्ट होय परंतु जेने उद्धार थाय. वगी माधवदास ठाकुरना आगण लोग धरे अने ते भूत आय जे वात संभव नही. डेभडे, ज्यां श्रीठाकुरजेने नाम होय त्यां भूत आदिने प्रवेश न होय तो श्रीठाकुरजेनी आगण लोग धरे ते भूत डभ आय ? तेथी उपर कही आंया हे माधवदासने पिताना संगथी प्रेतने आश्रय

खोटे मनुष्य को संग किये दुःख होई, सतसंग किये कृतार्थ होई । वैष्णव ॥७७॥

सो सुन्दरदास के संग ते माधोदास बड़े भगवदीय भये ।
श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावते । तातें सुन्दरदास श्रीआचार्यजी
महाप्रभुन के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे । सो इनकी वार्ता कहां
ताई कहिये । वार्ता ॥ ७७ ॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, मावजी पटेल और इनकी स्त्री विरजो,
ये उज्जैन में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—और मावजी पटेल और विरजो, जा प्रकार श्रीआचा-
र्यजी महाप्रभुन के सेवक भये, सो सब पद्मारावल सहित गोपालदास की वार्ता
में ऊपर कहि आये हैं । तातें इहां नाहीं कहे । लीला में ये श्रीचन्द्रावलीजी की
सखी हैं । इन मावजी पटेल को नाम 'रूपा' है । और 'हरखा' विरजो को नाम
है । सो उज्जैन में जन्में । सो मावजी पटेल के पास द्रव्य बहोत हतो । सो एक
वार विरजो श्रीगोकुल आई, तब श्रीगुसाईंजी सों विनती करी, जो—महाराज ! सोकों
भगवद् सेवा पधराइ दीजें । मैं श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों विनती करी हती,

सिद्ध थयो हुतो. तेथी लूत पाध जतो. जेभां जे ज्ञानुव्युं के पोटा मनुष्यने। संग
करे दुःख थाय, सतसंग करवाथी कृतार्थ थाय. वैष्णव ॥७७॥

ते सुंदरदासना संगथी माधवदास मोटा भगवदीय थया. श्रीठाकुरजी सानु-
भावता ज्ञावता. तेथी सुंदरदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुना जेवा कृपापात्र भग-
वदीय हुता. जेमनी वार्ता क्यां सुधी कहिये ? वार्ता ॥ ७७ ॥

✽

✽

✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुना सेवक, मावजी पटेल जने जेमनी स्त्री
वीरजे जे उज्जैनभां रहता, तेमनी वार्ताना लाव कहिये छीजे—

भावप्रकाश—मावजी पटेल जने वीरजे जे प्रकारे श्रीआचार्यजीना सेवक
थयां ते अधुं पद्मारावल सहित गोपालदासनी वार्तामां उपर कहि आया छीजे
तेथी अही नथी कह्युं. लीलाभां जे श्रीचन्द्रावलीजीनी सखी छे जे मावजी पटे-
लनुं नाम 'रूपा' छे जने 'हरखा' विरजेतुं नाम छे. ते उज्जैनभां जन्म्यां.
जे मावजी पटेल पासे द्रव्य धरुं हुतुं. पछी जेक वार वीरजे श्रीगोकुल आवी.
त्यारे श्रीगुसाईंजीनी विनती करी, के महाराज ! जने भगवद् सेवा पधरावी आपो.
मे श्रीआचार्यजी महाप्रभुने विनती करी हुती त्यारे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजे

तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें, जो-तुम्हारो मनोरथ श्रीगुसांईजी पूर्ण करेंगे । तातें आप अब सोपे कृपा करिये । तब श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी के खेलवे के ठाकुर में ते एक लालजी विरजो के साथे पधराय दिये । तब विरजो ने श्रीगुसांईजी सों विनती करी, जो-महाराज ! श्रीठाकुरजी वेगि कृपा करि अनुभव जतावें, सो उपाय आप कृपा करिके कहिये । तब श्रीगुसांईजी कहें, जैसे भाव हमारे ऊपर राखत हो तेसो भाव पुष्टिमागीय वैष्णवधन में राखियो । तुम्हारो सगरो मनोरथ श्रीठाकुरजी पूर्ण करेंगे । तब विरजो श्रीगुसांईजी सों बिदा होई श्रीठाकुरजी हूँ घर में पधराय के बड़ो उत्सव कियो । गाम गाम के वैष्णव बुलाई महाप्रसाद, खरची आदि वस्त्र सों सबको समाधान कियो । उज्जैन में पद्मारावल के बेटा कृष्णभट्ट के संग ते अलौकिक बुद्धि भई । श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे ।

वार्ता-प्रसंग १—और विरजो वर्ष दिन में दोय बार ब्रज में श्रीगोकुल, श्रीगुसांईजी के दरसन कों, (तथा) श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आवती । सो एक गाड़ा शुद्ध को, एक घी को, भरि के संग ले आवती । सो पन्द्रह दिन श्रीनाथजीद्वार में रहती । और पन्द्रह दिन श्रीगोकुल में रहती । तब श्रीगोवर्द्धनधर के सामग्री करावती ।

कथुं, हे तमारे मनोरथ श्रीगुसांईजी पूर्ण करशे. तेथी आप हुवे मारा उपर कृपा करे. त्यारे श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीने भेलवाना ठाकुरभांथी अके लालजी वीरजेने साथे पधरावी आया. त्यारे वीरजेने श्रीगुसांईजीने विनती करी, हे महाराज ! श्रीठाकुरजी नददी कृपा करी अनुभव जथावे जेवो उपाय आप कृपा करीने कहे. त्यारे श्रीगुसांईजी कहे, जेवो साव अमारा उपर राभो हो तेवो साव पुष्टिमागीय वैष्णवोमां राभजे. तमारे पधे मनोरथ श्रीठाकुरजी पूर्ण करशे. त्यारे विरजेने श्रीगुसांईजी विदाय थई श्रीठाकुरजीने घरमां पधरावीने मोटा उत्सव कर्यो. गाम गामना वैष्णवोने भेलावीने महाप्रसाद, पची आदि वस्त्रथी पंधानुं समाधान कथुं. उज्जैनना पद्मारावलना भेटा कृष्णभट्टना संगथी अलौकिक बुद्धि थई. श्रीठाकुरजी सानुभावता जथावना लाग्या.

वार्ता-प्रसंग १-वणी वीरजे वर्ष दिवसमां जे बार ब्रजमां श्रीगोकुल श्रीगुसांईजीने दर्शने (तथा) श्रीगोवर्द्धननाथजीने दर्शने आवती. त्यारे अके गाड़ुं गोणतुं, अके घीतुं लरीने साथे लभ आवती. त्यारे पंहर दिवस तो श्रीनाथजीद्वारमां रहती अने पंहर दिवस श्रीगोकुलमां रहती. त्यारे श्रीगोवर्द्धनधरने सामग्री करावती, महा-

महाप्रसाद आवतो सो ढांकि राखती। सो ग्वाल गाय चराय के आवते तब सगरो महाप्रसाद लिवाय गायन के खिड़क में आवती, ग्वालन कों, गायन कों महाप्रसाद लिवावती। गेहूंन की थूली करि गायन कों खवावती। सगरे सेवकन कों पहरावनी करती। सबन कों सेवगी देती। श्रीनाथजी कों नित्य नये मनोरथ, आभूषण, वस्त्र करती। सो सगरे सेवक प्रसन्न रहते। और श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी की भेंट पधरावनी, सगरे बालक बहू बेटीन कों पहिरावनी नित्य नये मनोरथ करती।

वार्ता-प्रसंग २—और एक समय उत्सव के दिन वैष्णव महा-प्रसाद लेत हते। बिरजो अनसखड़ी परोसत हती। तब बिरजो के मन में यह मनोरथ भयो, जो-सगरे वैष्णव की मण्डली बैठी होई, और मैं सखड़ी महाप्रसाद परोसों। पाछें बिरजो नें कृष्णभट्ट सों कही, मेरे मन में यह मनोरथ भयो है, जो-सगरे गाम गाम के वैष्णव बुलाई सखड़ी महाप्रसाद मैं अपने हाथ सों सगरे वैष्णवन कों प-रोसों। तब कृष्णभट्ट कहें, यह मनोरथ श्रीगुसांईजी आज्ञा करें तो भक्ति भाव सों सिद्ध होई। सो सगरे वैष्णव के समाज सहित श्री-गुसांईजी पास श्रीगोकुल जाये। तब आप कहें सो होय। परन्तु यह मनोरथ द्रव्य साध्य है। तब बिरजो आइ मावजी पटेल सों कही,

प्रसाद आवतो ते ढांकी राखती। पछी अधा ग्वाल गाय चरावीने आवता त्तारे अधा महाप्रसाद लेवडावी गाथेनी भीरुकां आवती। गाथेने, ग्वालने महाप्रसाद लेवडावती। घउंनी शुद्धी करीने गाथेने भवडावती। अधा सेवकेने पहरेमण्ठी करती। अधाने सेवकी देती। श्रीनाथजीने नित्य नया मनोर्थ, आभूषण, वस्त्र करती, तेथी अधा सेवके प्रसन्न रहता। वणी श्रीगोकुलमां श्रीगुसांईजीने लेट पधरा-मण्ठी अधा भासके, बहु-भेटीआने पहरेमण्ठी नित्य नया मनोर्थ करती।

वार्ता-प्रसंग २-वणी अेक समय उत्सवना दिवसे वैष्णव महाप्रसाद लेता हुता, बिरजे अनसखड़ी पीरसती हुती त्तारे वीरजेना मनमां अे मनोर्थ थयो, के अधा वैष्णवोनी मंडली भेठी हुथ अने हुं सखड़ी महाप्रसाद पीरसुं। पछी वीरजेअे कृष्णभट्टने कथुं, मारा मनमां आवो मनोर्थ थयो छे के अधा गाम-गामना वैष्णवोने भासावी सखड़ी महाप्रसाद हुं मारा हुथथी अधा वैष्णवोने पीरसुं। त्तारे कृष्णभट्ट कहे, अे मनोर्थ श्रीगुसांईजी आज्ञा करे तो लडित-लावथी सिद्ध थाय। मारे अधा वैष्णवोना समाज सहित श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल जाये। त्तारे आप कहे तेम थाय।

जो-मेरो यह मनोरथ है, सो तुम पूरण करो। सगरे वैष्णवन कों महा-प्रसाद लिवाजं, अपने हाथ सों। सो मैं कृष्णभट्ट सों पूछी। तब कृष्ण भट्ट कहें, द्रव्य साध्य है। वैष्णवन कों श्रीगोकुल ले जैये। तब मावजी पटेल नें कही, सो पास लक्ष मोहौर हैं। जो-इतने में काम होई तो सुखेन कृष्णभट्ट सों पूछिके मनोरथ करो। तब बिरजो कृष्णभट्ट पास आइ कही, लक्ष मोहौर हैं, इतने में मनोरथ पूरण होई तो। तब कृष्णभट्ट नें कह्यो, अवश्य, तुम्हारे मनोरथ प्रभु पूरण करेंगे। तब बिरजो आइ मावजी पटेल सों कही, कृष्णभट्ट नें कही है, इतने में मनोरथ पूरण होइगो। तब मावजी द्रव्य भेलो करि लक्ष मोहौर बिरजो कों दियो। तब बिरजो लक्ष मोहौर कृष्णभट्ट के आगे धरि बिनती करी, अब तुम्हारे हाथ है, मेरो मनोरथ पूरण करो। तब कृष्ण भट्ट गाम गाम के वैष्णवन कों पत्र लिखि के असवार गाड़ी, खरची पठाई। प्रीति पूर्वक सगरे वैष्णव गुजरात, हालार के भेले करि सबन कों न्यारो न्यारो डेरा, खर्ची दिये। पाछें उजैन तें सगरे वैष्णव सहित कृष्णभट्ट, बिरजो श्रीगोकुल कों चले। सो श्रीनाथजीद्वार आयके समाज सहित श्रीनाथजी के दरसन करे। श्रीनाथजी कों सामग्री, वागा, वस्त्र, आभूषण को मनोरथ करि श्रीगोकुल आये। श्रीनवनीत-

परंतु आ मनोर्थ द्रव्य साध्य छे। त्यारे वीरजेमे आवी भावल पटेलने कछुं, भारे आ मनोर्थ छे ते तमे पूरणु करे। अथा वैष्णुवोने महा प्रसाद लेवउठिं भारे हाथथी। में कृष्णभट्टने पूछथुं त्यारे कृष्णभट्टे कछुं अे द्रव्य साध्य छे। वैष्णुवोने श्रीगोकुल लक्ष नछये। त्यारे भावल पटेले कछुं भारी पास लागे मोहौर छे। जे अेटलाभां काम थाय तो सुभेथी कृष्णभट्टने पूछीने मनोर्थ करे। त्यारे बिरजेमे कृष्णभट्ट पास आवीने कछुं, लागे मोहौर छे अेटलाभां मनोर्थ पूरणु होय तो। त्यारे कृष्णभट्टे कछुं, अवश्य तभारे मनोर्थ प्रभु पूरणु करे। त्यारे वीरजेमे आवी भावल पटेलने कछुं, कृष्णभट्टे कछुं छे अेटलाभां मनोर्थ पूरणु थये। त्यारे भावलमे द्रव्य लेगुं करी लक्ष मोहौर वीरजेने आवी। त्यारे वीरजेमे लक्ष मोहौर कृष्णभट्टनी आगण धरी बिनती करी, हुवे तभारे हाथ छे। भारे मनोरथ पूरणु करे। त्यारे कृष्णभट्टे गाम-गामना वैष्णुवोने पत्र लेगीने असवार गाडी, अर्यीं सोकडी। प्रीतिपूर्वक अथा वैष्णुवो गुजरात, हालारनाने लेगा करी अथाने असग-असग उरा अर्यीं आव्यां। पछो उनैनेथी कृष्णभट्ट, बिरजे अथा वैष्णुवो सहित श्रीगोकुल आव्यां। ते श्रीनाथजीद्वार आवीने समाज सहित श्रीनाथजीनां दर्शन कर्यां। श्रीनाथजीने सामग्री, वागा, वस्त्र, आभूषणनां मनोरथे

महाप्रसाद आवतो सो ढांकि राखती । सो ग्वाल गाय चराय के आवते तब सगरो महाप्रसाद लिवाय गायन के खिड़क में आवती, ग्वालन कों, गायन कों महाप्रसाद लिवावती । गेहूंन की थूली करि गायन कों खवावती । सगरे सेवकन कों पहरावनी करती । सबन कों सेवगी देती । श्रीनाथजी कों नित्य नये मनोरथ, आभूषण, वस्त्र करती । सो सगरे सेवक प्रसन्न रहते । और श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी की भेंट पधरावनी, सगरे बालक बहू बेटीन कों पहिरावनी नित्य नये मनोरथ करती ।

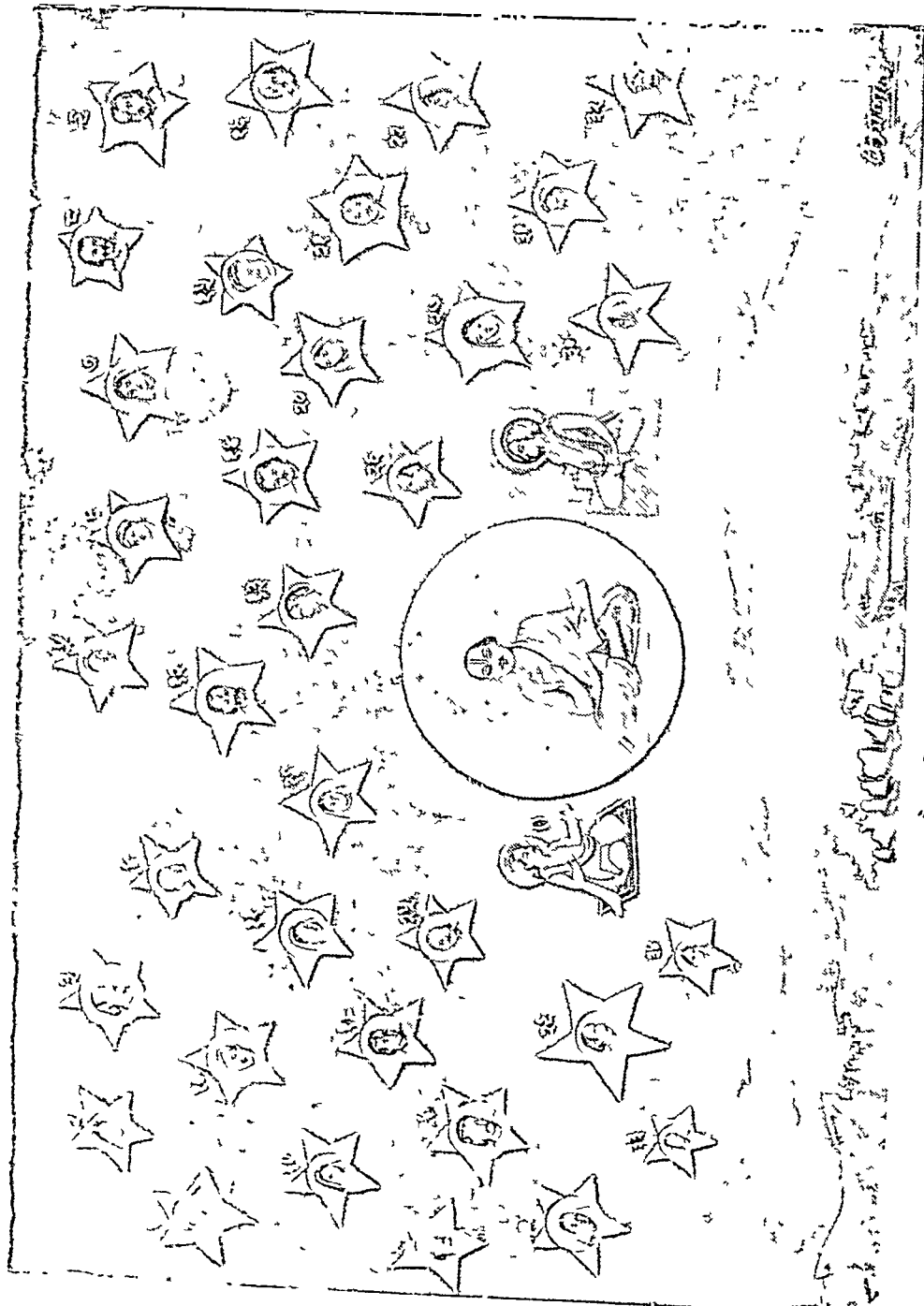
वार्ता-प्रसंग २—और एक समय उत्सव के दिन वैष्णव महाप्रसाद लेत हते । बिरजो अनसखड़ी परोसत हती । तब बिरजो के मन में यह मनोरथ भयो, जो—सगरे वैष्णव की मण्डली बैठी होई, और मैं सखड़ी महाप्रसाद परोसों । पाछें बिरजो नें कृष्णभट्ट सों कही, मेरे मन में यह मनोरथ भयो है, जो—सगरे गाम गाम के वैष्णव बुलाई सखड़ी महाप्रसाद मैं अपने हाथ सों सगरे वैष्णवन कों परोसों । तब कृष्णभट्ट कहें, यह मनोरथ श्रीगुसांईजी आज्ञा करें तो भक्ति भाव सों सिद्ध होई । सो सगरे वैष्णव के ससाज सहित श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल जाये । तब आप कहें सो होय । परन्तु यह मनोरथ द्रव्य साध्य है । तब बिरजो आइ मावजी पटेल सों कही,

प्रसाद आवतो ते ढांकी राखती. पछी अधा ग्वाल गाय चरावीने आवता त्तारे अधा महाप्रसाद लेववावी गाथोनी भीउकभां आवती. गाथोने, ग्वालाने महाप्रसाद लेववावती. घडोनी शुद्धी करीने गाथोने भववावती. अधा सेवकोने पडेरामणी करती. अधाने सेवकी देती. श्रीनाथजीने नित्य नवा मनोर्थ, आभूषण, वस्त्र करती, तेथी अधा सेवको प्रसन्न रहेता. वणी श्रीगोकुलभां श्रीगुसांईजीने लेट पधरावणी अधा आलको, बहु-पेटीआने पडेरामणी नित्य नवा मनोर्थ करती.

वार्ता-प्रसंग २-वणी ओक समय उत्सवना दिवसे वैष्णव महाप्रसाद लेता हुता, बिरजे अनसखड़ी पीरसती हुती त्तारे वीरजेना मनभां ओ मनोर्थ थयो, के अधा वैष्णवोनी भंडली पेठी होय अने हुं सखड़ी महाप्रसाद पीरसुं. पछी वीरजेओ कृष्णभट्टने कहुं, मारा मनभां आवो मनोर्थ थयो छे के अधा गाम-गामना वैष्णवोने आलावी सखड़ी महाप्रसाद हुं मारा हाथथी अधा वैष्णवोने पीरसुं. त्तारे कृष्णभट्ट कहे, ओ मनोर्थ श्रीगुसांईजी आज्ञा करे तो लडित-लावथी सिद्ध थाय. माटे अधा वैष्णवोना सभाज सहित श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल जाये. त्तारे आप कहे तेम थाय.

प्रियजी के दरसन करि, श्रीगुसांईजी के दरसन किये । तब श्रीगुसांईजी सों कृष्णभट्ट नें बिनती करी, जो-महाराज ! बिरजो को यह मनोरथ भयो है । जो-सगरे वैष्णवन को सखड़ी महाप्रसाद हों अपने हाथ सों परोसों । ताके लिये सगरे वैष्णवन के समाज सहित आपके पास आये हैं । सो आप आज्ञा देहु तब यह मनोरथ पूरण होय । तब श्रीगुसांईजी मनमें विचारे, जो-बिरजो के बड़े भारय है, जो ऐसो मनोरथ उठ्यो । परन्तु अब हम आज्ञा देंह तो या समय तो बाधा नहीं । यह मनोरथ जगत में प्रसिद्ध होवे । परन्तु श्रीआचार्यजी नें वेद-मर्यादा राखी है, जो-हमते लोग सगरे यह कहेंगे, जो-श्रीगुसांईजी वेद-मर्यादा के पालन हारे, सगरे ब्राह्मणन को पटेल के हाथ सों सखड़ी महाप्रसाद लिवाये । या प्रकार दोष बुद्धि करि अनेक जीव को बिगार होई । और वैष्णव को मनोरथ पूरण न करिये तो पुष्टि-भक्ति को विरोध होय । ताते भक्तन के मनोरथ को तो अवश्य पूरण करयो चाहिये । पाछें यह विचारयो, जो-जामें मर्यादा रहे, भक्तन को मनोरथ पूरण होई, सगरे वैष्णव प्रसन्न होई, सो करनो । तब श्रीगुसांईजी नें कही, जो-यह मनोरथ तो श्रीजगन्नाथरायजी पुरुषोत्तमपुरी में सिद्ध होई । तामें पूरव के वैष्णव हू सगरे आवेंगे ।

करी श्रीगोकुल आष्या. श्रीनवनीतप्रियलतां दर्शन करी श्रीगुसांईलतां दर्शन कर्यां. त्यारे श्रीगुसांईलते कृष्णभट्टे विनती करी के महाराज ! वीरजेतो आ मनोर्थ थयो छे के अथा वैष्णवोते सखड़ी महाप्रसाद हुं मारा हाथे पीरसुं. ते भाटे अथा वैष्णवोना समाज सहित आपनी पासे आष्या छीये. आप आज्ञा दे तो आ मनोर्थ पूर्ण थाय. त्यारे श्रीगुसांईलये मनमां विचार्युं के वीरजेतुं मोहुं लाय छे के आवो मनोर्थ उठयो. परंतु लभलां अमे आज्ञा छये तो आ समय तो अथा नथी. आ मनोर्थ जगतमां प्रसिद्ध थाय. परंतु श्रीआचार्यलये वेद-मर्यादा राखी छे तेथी अ-भने अथा लोको अम कहेशे के श्रीगुसांईल वेदमर्यादाना पालन करवावाणा, अथा ब्राह्मणेते पटेलना हाथथी सखड़ी महाप्रसाद लेवडाव्ये ! ! आ प्रकार दोष-बुद्धि करी अनेक लवने अगाड थाय. वणी वैष्णवोते मनोर्थ पूर्ण न करीये तो पुष्टि-भक्तितो विरोध थाय. तेथी लकताना मनोरथते तो अवश्य पुरो करवो जेअये. पछी अम विचार्युं के जेमां मर्यादा रहे, लकताना मनोरथ पूरण थाय, अथा वैष्णवो प्रसन्न थाय तेम करतुं. त्यारे श्रीगुसांईलये कलुं, के आ मनोर्थ तो श्रीजगन्नाथरायल पुरुषोत्तमपुरीमां सिद्ध थाय. तेमां पूरवना वैष्णवो पलु अथा आवशे. त्यारे कृष्णभट्टे वीर-



वैष्णवों का सामूहिक चित्र
नीच में : १. श्रीमहाप्रभुजी । चमनी कोर : २. श्रीगोपीनाथजी । बाई ओर : ३. श्रीगुसाईजी

तब कृष्णभट्ट ने विरजो सों कही, जो-यह मनोरथ श्रीजगन्नाथजी चलिये, तहां पुरुषोत्तमपुरी में सिद्ध होइगो । तहां पुरो मनोरथ है, सो सिद्ध होइगो । तब विरजो ने कही, बहोत आछो, पुरुषोत्तमपुरी चलिये । श्रीगुसाईंजी हू कृपा करि पधारे तो बहोत सुख होय । तब कृष्णभट्ट ने श्रीगुसाईंजी सों विनती करी, जो-महाराज ! आपहू कृपा करिके पुरुषोत्तमपुरी पधारो तो बहोत सुख होई । तब श्रीगुसाईंजी कहे, हमहू पधारेंगे, वैष्णव प्रसन्न होई सो करनों । पाछें श्रीनन्द, पच्छिम के, वैष्णव बुलाये । मथुरा के वैष्णव संग ले श्रीगुसाईंजी सहित आगरे आये । आगरे के वैष्णव संग ले समाज सहित कासी आय कासी के वैष्णव सगरे संग लिये । या प्रकार गाम गाम के वैष्णव संग लिये । सो जाही गाम सें उतरे तहां नित्य नई सामग्री के मनोरथ गाम गाम के वैष्णव के डेरा न्यारे न्यारे ठाड़े होई । तहां न्यारे न्यारे कीरतन-वार्ता श्रीगुसाईंजी कों नित्य नये मनोरथ । व्यौपारी अपुने गाड़ी सीधा सामानके लिये संग चले । सो सगरे वैष्णव के हृदय में आनंद । नित्य श्रीगुसाईंजी को दरसन । नित्य नये उत्सव । जैसे श्रीकृष्ण की असवारी द्वारिका में निकसे, या प्रकार को । वैष्णव बूढे आदि कों असवारी, भांति भांति की । जा गाम में उतरे ता

जेते कछु, के आ मनोरथ श्रीजगन्नाथरायण आदीये त्यां पुरुषोत्तमपुरीमां सिद्ध थरो. त्यां पुरो मनोरथ सिद्ध थरो. त्यारे वीरजेये कछु, अहु साइं पुरुषोत्तमपुरी आलो. श्रीगुसांथल पणु कृपा करीने पधारे तो अहु सुख थाय. त्यारे कृष्णभट्टे श्रीगुसांथलने विनती करी, के महाराज ! आप पणु कृपा करीने पुरुषोत्तमपुरी पधारे तो अहु सुख थाय. त्यारे श्रीगुसांथल कहे, अमे पणु पधारीशु. वैष्णुव प्रसन्न थाय तेम करयुं. पछी श्रीनंद (सिंहनंद) पश्चिमना वैष्णुवाने भोलाव्या. मथुरानां वैष्णुवाने संग लछ श्रीगुसांथल सहित आगरा आव्या. आगराना वैष्णुवाने संग लछ समाज सहित काशी आवी काशीना अथा वैष्णुवाने संग लीधा. आ प्रधारे गाम-गामना वैष्णुवाने संग लीधा. पछी जे गाममां उतरे त्यां नित्य नवा सामग्रीना मनोरथां. (तेमज) गाम-गामना वैष्णुवाना तंणु अलग अलग उला थाय. त्यां अलग अलग कीर्तन, वार्ता, श्रीगुसांथलने त्या नित्य नवा मनोरथ. वेपारी पोतानी गाड़ी सीधा-सामग्रीने लछने संग आले. अथा वैष्णुवाना हृदयमां आनंद. नित्य श्रीगुसांथलना दर्शन, नित्य नवा उत्सव, जेभ श्रीकृष्णनी सवारी द्वारिकामां निकसे अे प्रधारे वैष्णुव वृद्ध विजरेने सवारी तरल तरलनी. जे गाममां उतर्यां ते गामना लोके अनेक सुभी थया, इत्यादि-

गाम के लोग अनेक सुखी भये, द्रव्यादिक सों। या प्रकार गाम गाम के वैष्णव संग ले श्रीपुरुषोत्तमपुरी आये। श्रीजगन्नाथजी के दरसन किये। नाना प्रकार की सखड़ी अनसखड़ी सामग्री कराई। पाछें विरजो ने श्रीगुसांईजी कों अपने हाथ सों सखड़ी, अनसखड़ी को थार साजि के भोजन करायो। पाछें सगरे वैष्णव कों विरजो परोसि के प्रेम में मगन हूँ गई। आनन्द के आँसू नेत्रन में भरे। देह सगरी में पुलकावली भई। मन में कही, धन्य श्रीगुसांईजी हैं, और कृष्णभट्ट सरीखे भगवदीय हैं। जो-भोकों या सुख को अनुभव कराये। पाछें कछुक दिन पुरुषोत्तमपुरी में रहिके नित्य नये मनोरथ नाना प्रकार की सामग्री के, जा वैष्णव कों जो रुचे सो लिवाए। पाछें पुरुषोत्तमपुरी सों सब समाज सहित चले, सो वाही प्रकार प्रति दिन नित्य नई। ऐसे करत श्रीगोकुल आये। कछुक दिन गोकुल श्रीनाथजीद्वार रहि नाना प्रकार के मनोरथ किये। पाछें द्रव्य बच्यो सो विरजो ने श्रीगुसांईजी की भेट कियो। तब श्रीगुसांईजी विरजो के ऊपर बहोत प्रसन्न भये, जो-अलौकिक, वैष्णव को मनोरथ कियो। पाछें विरजो श्रीगुसांईजी सों विदा होई के समाज सहित उज्जैन आई। सगरे वैष्णव कों प्रीतिपूर्वक महाप्रसाद लिवाइ, खरची न हली तिनकों खरची, बख्त पात्र दे, सबन कों प्रसन्न करि

कथी. या प्रकारे गामे गामना वैष्णवोने साथे लघ श्रीपुरुषोत्तमपुरी आया. श्रीजग-
न्नाथरायणनां दर्शन कयां. नाना प्रकारनी सपडी, अनसपडी सामग्री करावी. पछी
वीरजेमे श्रीगुसांईजीने पोताना हाथथी सपडी, अनसपडीना थाण सांठने लोअन
करायु. पछी अथां वैष्णवोने वीरजे पीरसीने प्रेममगन थध गध. आनन्दनां आंसु
नेत्रोमां सरायां. पछी देहमां पुलकावली थध. मनमां कछु धन्य श्रीगुसांईजी छे
अने कृष्णभट्ट सरभा भगवदीय छे के मने या सुअने अनुभव करायो. पछी डेटलाक
दिवस पुरुषोत्तमपुरीमां रहिने नित्य नवा मनोर्थ नाना प्रकारनी सामग्रीना, जे वै-
ष्णवोने जे श्ये ते लेवडाये. पछी पुरुषोत्तमपुरीथी अथा समाज सहित यादया. ते
अेज प्रकारे प्रतिदिने नित्य नवी (सामग्री) अेम करतां श्रीगोकुल आया. थोडा
दिवस श्रीगोकुल श्रीनाथजीद्वारे रहि नाना प्रकारना मनोर्थ कयां. पछी द्रव्य अन्धुं
ते वीरजेमे श्रीगुसांईजीने भेट क्युं. तयारे श्रीगुसांईजी वीरजेना उपर अहु प्रसन्न
थया के अलौकिक, वैष्णवोना मनोरथ कयां. पछी वीरजे श्रीगुसांईजीथी विदाय थध स-
माज सहित उज्जैन आ.वी. अथा वैष्णवोने प्रीतिपूर्वक महाप्रसाद लेवडावी अयीं

विदा क्रिये । सो विरजो कृष्णभट्ट के संग तें भली वैष्णव भई ।
सगरे वैष्णव और श्रीगुसाईंजी उनसों प्रसन्न रहते । श्रीठाकुरजी
सानुभावता जनावते । सो भावजी पटेल और विरजो ऐसे श्रीआ-
चार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हते । तातें इनकी वार्ता कहां ताई
कहिये ।

वार्ता ॥ ७८ ॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, गोपालदास क्षत्री, पश्चिम भें रहते,
तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये गोपालदास लीला में श्रीनन्दरायजी के मुख्य खवास
हैं । तहां 'जसवन्त' इनको नाम है । सो जसवन्त, नंदरायजी कों वरुन पकरि
ले गयो ता दिन श्रीनन्दरायजी कों घाट पर बैठारि आप अपने घर अपने कार्य
कों गयो । पाछे श्री नन्दरायजी अकेले हते । सो वरुन ने पकरे । सो श्रीठाकुरजी
सुनि के वरुनलोकतें श्रीनन्दरायजी कों ले आये । तब श्रीवलदेवजी श्रीनं-
रायजी के खवास जसवन्त सों कहे, जो—श्रीनन्दरायजी कों वरुण ले गयो तब
तू कहां रह्यो ? तब जसवन्त ने कही, मैं अपने घर कछू काम आयो हतो । तब
श्रीवलदेवजी शाप दिये । जो—जाऊ, भूमि पर परो । इतनो श्रम श्रीनन्दरायजी

न हुती तेमने अर्थी वस्त्र, पात्र द्य अर्धाने प्रसन्न करी विहाय क्यार्। ते वीरजे कृष्ण-
सदना संगथी लदी वैष्णव थर्ध। अधा वैष्णव अने श्रीगुसांठेण्येभनाथी प्रसन्न
रहेता। श्रीठाकुरेण्ये सानुभावता जनावता। ते भावण पटेल अने वीरजे अयेवां श्रीआ-
चार्येण्येनां कृपापात्र भगवदीय हुतां। तेथी अेभनी वार्ता क्यार् सुधी कहीअे। वा। ॥७८॥

✽

✽

✽

हवे श्रीआचार्येण्ये महाप्रभुण्येना सेवक, गोपालदास क्षत्री पश्चिमभां रहेता,
नरोडाना वासी, तेमनी वार्ताना भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—ये गोपालदास लीलाभां श्रीनंदरायण्येना मुफ्य अवास
छे। स्यां 'जसवन्त' अेभनुं नाम छे। ते जसवन्त नंदरायण्येने वरुण पकडी लर्ध
गये। ते दिवसे श्रीनंदरायण्येने घाट उपर पेसाडी पोते पोताना घर पोताना कार्य
भाटे गये। पछी श्रीनंदरायण्ये अेकला हुता तेथी वरुण पकड्या। ते श्रीठाकुरेण्ये
सांखणीने वरुण लोकथी श्रीनंदरायण्येने लर्ध आख्या। त्यारे श्रीवलदेवण्ये श्रीनंदरा-
यण्येना अवास जसवन्तने कहे, के श्रीनंदरायण्येने वरुण लर्ध गये त्यारे तू क्यार् रह्यो ?
त्यारे जसवन्ते क्युं, हुं मारा धरे कर्ध कामे आण्ये हुतो। त्यारे श्रीवलदेवण्ये
शाप आये, के न भूमिभां पडो। अेटलो श्रम श्रीनंदरायण्येने करण्ये। अवास थध

गाम के लोग अनेक सुखी भये, द्रव्यादिक सों। या प्रकार गाम गाम के वैष्णव संग ले श्रीपुरुषोत्तमपुरी आये। श्रीजगन्नाथजी के दरसन किये। नाना प्रकार की सखड़ी अनसखड़ी सामग्री कराई। पाछें विरजो ने श्रीगुसांईजी कों अपने हाथ सों सखड़ी, अनसखड़ी को थार साजि के भोजन करायो। पाछें सगरे वैष्णवन कों विरजो परोसि के प्रेम में लगन है गई। आनन्द के आँसू नेत्रन में भरे। देह सगरी में पुलकावली भई। मन में कही, धन्य श्रीगुसांईजी हैं, और कृष्णभट्ट सरीखे भगवदीय हैं। जो-भोकों या सुख को अनुभव कराये। पाछें कछुक दिन पुरुषोत्तमपुरी में रहिके नित्य नये मनोरथ नाना प्रकार की सामग्री के, जा वैष्णव कों जो रुचे सो लिवाए। पाछें पुरुषोत्तमपुरी सों सब समाज सहित चले, सो वाही प्रकार प्रति दिन नित्य नई। ऐसे करत श्रीगोकुल आये। कछुक दिन गोकुल श्रीनाथजीद्वार रहि नाना प्रकार के मनोरथ किये। पाछें द्रव्य बच्यो सो विरजो ने श्रीगुसांईजी की सेट कियो। तब श्रीगुसांईजी विरजो के ऊपर बहोत प्रसन्न भये, जो-अलौकिक, वैष्णव को मनोरथ कियो। पाछें विरजो श्रीगुसांईजी सों विदा होई के समाज सहित उज्जैन आई। सगरे वैष्णव कों प्रीतिपूर्वक महाप्रसाद लिवाइ, खरची न हती तिनकों खरची, वस्त्र पात्र दे, सबन कों प्रसन्न करि

कथी. या प्रकारे गंगेगामना वैष्णवाने साथे लघ श्रीपुरुषोत्तमपुरी आया. श्रीजगन्नाथरायलनां दर्शन कर्था. नाना प्रकारनी सखड़ी, अनसखड़ी सामग्री करावी. पछी वीरजेये श्रीगुसांईजीने पोताना हाथथी सखड़ी, अनसखड़ीना थाणें सालने लोखन कराव्युं. पछी अथां पणुवाने वीरजे पीरसीने प्रेमभग्न थछ गछ. आनन्दनां आंसु नेत्रोमां सरायां. अधी देहमां पुलकावली थछ. मनमां कछु धन्य श्रीगुसांईजी छे अने कृष्णभट्ट सरूपी भगवदीय छे के मने आ सुखना अनुभव करव्यो. पछी डेटलाक द्विस पुरुषोत्तमपुरीमां रहिने नित्य नया मनोर्थ नाना प्रकारनी सामग्रीना, ले वैष्णवाने ले इये तें लेवडावे. पछी पुरुषोत्तमपुरीथी अथा समाज सहित याव्या. ते येज प्रकारे प्रतिदिन नित्य नवी (सामग्री) येम करतां श्रीगोकुल आया. थोडा द्विस श्रीगोकुल श्रीनाथजीद्वारे रहि नाना प्रकारना मनोर्थ कर्था. पछी द्रव्य अन्धुं ते वीरजेये श्रीगुसांईजीने सेट कर्था. तारे श्रीगुसांईजी वीरजेना उपर अहु प्रसन्न थया के अलौकिक, वैष्णवना मनोरथ कर्था. पछी वीरजे श्रीगुसांईजी विदाय थछ समाज सहित उज्जैन अ.वी. अथा वैष्णवाने प्रीतिपूर्वक महाप्रसाद लेवडावी अर्था

विदा किये । सो विरजो कृष्णभट्ट के संग तें भली वैष्णव भई । सगरे वैष्णव और श्रीगुसांईजी उनसों प्रसन्न रहते । श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावते । सो मावजी पटेल और विरजो ऐसे श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हते । तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये ।

वार्ता ॥ ७८ ॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, गोपालदास क्षत्री, पश्चिम में रहते, तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—ये गोपालदास लीला में श्रीनन्दरायजी के मुख्य खवास हैं । तहां 'जसवन्त' इनको नाम है । सो जसवन्त, नंदरायजी कों वरुन पकरि ले गयो ता दिन श्रीनन्दरायजी कों घाट पर बैठारि आप अपने घर अपने कार्य कों गयो । पाछे श्री नन्दरायजी अकेले हते । सो वरुन ने पकरे । सो श्रीठाकुरजी सुनि के वरुनलोकतें श्रीनन्दरायजी कों ले आये । तब श्रीवलदेवजी श्रीनन्दरायजी के खवास जसवन्त सों कहे, जो—श्रीनन्दरायजी कों वरुण ले गयो तब तू कहां रह्यो ? तब जसवन्त ने कही, मैं अपने घर कछु काम आयो हतो । तब श्रीवलदेवजी शाप दिये । जो—जाऊ, भूमि पर परो । इतनो श्रम श्रीनन्दरायजी

न हुती तेमने अर्था वस्तु, पात्र छि अधाने प्रसन्न करी विहाय कर्था. ते वीरजे कृष्ण-
लटना संगथी लदी वैष्णव थध. अधा वैष्णव अने श्रीगुसांईजी अमनाथी प्रसन्न
रहेता. श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावता. ते मावजी पटेल अने वीरजे अथा श्रीआ-
चार्यजीनां कृपापात्र भगवदीय हुतां. तेथी अमनी वार्ता कथां सुधी कहीअ. वा. ॥७८॥

✽

✽

✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना सेवक, गोपालदास क्षत्री पश्चिमभां रहेता, नरोड़ाना वासी, तेमनी वार्ताना भाव कहीअ छीअ—

भावप्रकाश—अ गोपालदास लीलामां श्रीनंदरायजीना मुपय अवास छे. सां 'जसवन्त' अमनुं नाम छे. ते जसवन्त नंदरायजीने वरुण पकडी लई गयो ते द्विसे श्रीनंदरायजीने घाट उपर भेसाडी पोते पोताना घर पोताना कार्य माटे गयो. पछी श्रीनंदरायजी अकेला हुता तेथी वरुण पकड्या. ते श्रीठाकुरजी अ सांलणीने वरुण लोकथी श्रीनंदरायजीने लई आब्या. तयारे श्रीवलदेवजी श्रीनंदरायजीना अवास जसवन्तने कहे, के श्रीनंदरायजीने वरुण लई गयो तयारे तू कथां रह्यो ? तयारे जसवन्ते कछुं, हुं मारा धरे कंठ कामे आब्यो हुतो. तयारे श्रीवलदेवजी अ शाप आब्यो, के अ भूमिमां पडो. अटलो श्रम श्रीनंदरायजीने कराब्यो. अवास थध

कों करायो । खवास होई रात्रि कों संग न रह्यो । सो पश्चिम में गोपालदास नरोड़ा में एक क्षत्री के घर प्रगटे । सो सात वर्ष के भये तब विद्या बहोत पढ़े । और द्रव्य बहोत हतो । और राजसी स्वभाव बहोत हतो । दस पांच आदमी आगे पाछे चलते । सो काहू कों बदते नहीं । जो कोई भले मनुष्य होई तिनकूं एक दोय दोष लगावते । पाछे पश्चिम में एक दूसरो गाम हतो । तहां गोपालदास को विवाह भयो । सो ब्याह करि स्त्री कों ले गोपालदास आवत हते । सो मार्ग में एक बड़ो पंडित मिल्यो, तासों वाद करन लागे । सो तीन दिन मार्ग में डेरा करि रहै । परन्तु उह पंडित सों जीते नहीं । पाछे लराई भई । तब गोपालदास को पिता छुड़ावन गयो । सो पंडित के मनुष्यन ने तीर मारयो । सो गोपालदास को पिता मरयो, तब गोपालदास हथियार ले दोरे । सो पंडित अपने मनुष्यन सहित भाजि गयो । गोपालदास बहोत डूढे, परन्तु कहुं पाये नहीं । तब पिता की देह को संस्कार करि घर आये । पाछे गोपालदास द्वारिका श्रीरणछोडजी के दरसन कों गये । तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधारै हते । तब गोपालदास ने सुनी, जो—श्रीआचार्यजी बड़े पंडित हैं, मायामत खंडन किये हैं । तब गोपालदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों वाद करन कों आये । सो ततकाल चरचा में हारे ।

रात्रिअे संग न रह्यो. पछी पश्चिमभां गोपालदास नरोडाभां अेक क्षत्रीना धरे प्रकट्या. ते सात वर्षना थया. पछी विद्या धरणी लएया अने द्रव्य अहुअ हतुं. अने राजसी स्वभाव धरणी हुतो. दश-पांच मनुष्य आगण पाछण आलता. ते ढोअने गणुकारता नही. अे ढोअ लवो मनुष्य होय तेने अेक अे ढोअ लगाडता. पछी पश्चिमभां अेक भीलुं गाम हतुं त्यां गोपालदासने विवाह थयो. पछी विवाह करी स्त्रीने लई गोपालदास पिता सहित आवता हुता त्यारे गामभां अेक भोटो पंडित भयो तेनाथी वाद करवा लाग्या. त्यां त्रणु द्विस मार्गभां मुकाम करी रखा परंतु पंडितथी अते नही. पछी लडाई थई त्यारे गोपालदासने पिता छोडाववा गयो. त्यारे पंडितेना मनुष्येअे तीर मारुं. अेटले गोपालदासने पिता भयो. त्यारे गोपालदास हथियार लई ढोअ्या. त्यारे ते पंडित अेना मनुष्ये सहित लागी गयो. गोपालदासे अहु भोअयो परंतु कंई भयो नही. पछी पितानी देहने संस्कार करी धर आव्या. पछी गोपालदास द्वारिकाअे श्रीरणछोडणना दर्शने गया. त्यां श्रीआचार्यअे पधार्या हुता. त्यारे गोपालदासे सांभल्युं, ढे श्रीआचार्यअे महाप्रभु भोटो पंडित छे. मायावाद अंडन क्यो छे. त्यारे गोपालदास श्रीआचार्यअे महाप्रभुथी

तब गोपालदास ने श्रीआचार्य महाप्रभुन सों कह्यो, जो-वैष्णव धर्म में कहा-है ? ठाकुरजी तो सब के घट में विराजत हैं । सगरो जगत कृष्णरूप आपहू कहें । तब वैष्णव कुत्ता आदि सों छुई क्यों जात हैं ? सब भगवद् रूप भयो तहां छुई कसो जाई ? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें । हमारो तो वेद मार्ग है । सो वेद शास्त्र यह कहत हैं, जो-जगत भगवद् रूप और इतने हीनते छुई जाई । इतने उत्तम । दया सबके उपर करनो । यह कहे सो वेद रीति, वैष्णव कहत हैं । और तू निर्गुण व्यापक कहत हैं, संसार सब ब्रह्म रूप है । सो तू सब में दोष बुद्धि करि जाकी ताकी निन्दा क्यों करत है ? कपरा क्यों पहरे हैं ? ब्रह्म कों तो कछु करनो नाहीं । साक्षीवत् हे रहे । अब तू सोच । या प्रकार सुनि के गोपालदास कों ज्ञान भयो । तब गोपालदास ने कही, अब मैं आपकी सरन हों । जन्म सगरो कुटिलता करत मोकों वीत्यो । अब मोकों सरन लेके कृतार्थ करो । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु गोपालदास कों न्हाय के नाम सुनाई ब्रह्मसंबंध कराये । तब गोपालदास ने कही, कृपा करि आप मेरे घर पधारिये । तब गोपालदास के घर नरोड़ा में श्री-आचार्यजी महाप्रभु पधारे । तब गोपालदास को बेटा वर्ष चार को हतो । ताकों

वाढ करवाने आया. ते तत्काल अर्थात् हार्या त्पारे गोपालदासे श्रीआचार्यजी महाप्रभुने कहुं, हे वैष्णव धर्ममां शुं छे ? ठाकुरजी तो अधाना हृदयमां पिराळ छे. अधुं जगत कृष्णरूप आप पणु कहे. त्पारे वैष्णव कुत्ता आदिथी अलडाई डेम जय छे ? अधुं सगनद्रूप थयुं त्यां अलडाई जवुं ठेवुं ? त्पारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे, अमारो तो वेद मार्ग छे. ते वेदशास्त्र अेम कहे छे हे जगत सग-वद्रूप अने आटला हीनथी अलडाई जय. आटलां उत्तम. दया अधा उपर करवी. अे कहुं ते वेद रीति, वैष्णव कहे छे अने तू निर्गुण व्यापक कहे छे. संसार अधा अलरूप छे. तो तू अधामां दोष बुद्धि करी जेनी तेनी निंदा डेम करे छे ? कपडा डेम पहरे छे ! अलने तो कंध करवानुं नथी. साक्षीवत् थरि रहे. हवे तू विचार. आ प्रकार सांभणीने गोपालदासने ज्ञान थयुं. त्पारे गोपालदासे कहुं, हवे हुं आपनी शरणे छुं. मारो अधा जन्म कुटिलता करतां वीत्यो. हवे मने शरणे लधने कृतार्थ करे. त्पारे श्रीआचार्यजी महाप्रभुअे गोपालदासने न्हावडावी नाम संभ-णावी अलसंबंध कराथुं. त्पारे गोपालदासे कहुं, कृपा करी आप मारो धरे पधारो. त्पारे गोपालदासना धर नरोडांमां श्रीआचार्यजी महाप्रभु पधार्या. त्पारे गोपाल-दासनेो बेटा त्पार वर्षनीो हुतो. तेने नाम संभणावी गोपालदासनी श्रीने नाम

नाम सुनाय गोपालदास की स्त्री कों नाम सुनाये । तब गोपालदास ने श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सों विनती करी, जो—महाराज ! अब हमकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु गोपालदास सों कहें, तुमते भगवद् सेवा तो बनेगी नहीं । काहे तें, स्त्री पुत्र दैवी नांही हैं । तुम दैवी हो, सो तुमकों विरह बहोत है । विरह वारे कों हृदय में अनुभव बहोत होई । बाहर की क्रिया न बने । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु गद्य—श्लोक और पंचाक्षर—मंत्र लिखके गोपालदास कों दिये । और कहे, इनकों भोग धरि खान—पान करियो । और हमारी आज्ञा है, जो जीव आवे तिनकों तुम नाम सुनैयो । जन्म तें स्वामी पद में रहै । तर्ति स्वामी पद तुम कों दिये हैं । जो वादी आवे तिन सों वाद करियो । तुमसों कोई न जीतेगो । यह गोपालदास सों कहि श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप अडेल पधारे । सो गोपालदास नाम सुनावते । बड़े टेक के वैष्णव भये । वादी सों वाद करे, जो मुख सों वात निकसे सोई करि दिखावे, श्रीआचार्य महाप्रभुन के बल सों इनको यश पश्चिम में फेल्यो ।

वार्ता—प्रसंग १— पाछे एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीद्वारकाजी पधारे, तब मार्ग में नरोड़ा गाम आयो । तब तहां श्रीआचार्यजी महाप्रभु गोपालदास के घर पधारे । सो गोपालदास

संखणाव्युं. त्तारे गोपालदासे श्रीआचार्यजी महाप्रभुने विनंती करी, डे महाराज ! हुवे अभने शी आज्ञा छे ? त्तारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु गोपालदासने कहे, तभाराथी भगवद्सेवा तो अनशे नहीं डेभके स्त्री—पुत्र दैवी नहीं. तभे दैवी छे तेथी तभने विरह धणो छे. विरहवाणाने हृदयमां अनुभव धणो थाय. अहारनी डिया न अने. त्तारे श्रीआचार्यजी महाप्रभुअे गद्यश्लोक अने पंचाक्षर मंत्र लभीने गोपालदासने आभ्यां अने कहे, अभने भोग धरी आनपान करे. वणी अमारी आज्ञा छे डे जे अव आवे तेने तभे नाम संखणावने. जन्मथी स्वांमीपदमां रक्षा तेथी स्वांमीपद तभने आभ्युं छे. जे वादी आवे तेनाथी वाद करे. तभने कौई नहीं जते. अभ गोपालदासने कही श्रीआचार्यजी महाप्रभु पोते अडेल पधार्यां. पछी गोपालदास नाम संखणावतां. मोटा टेकना वैष्णव थया. वादीथी वाद करे. मुपेथी वात निकणे तेज करी देभाडे. श्रीआचार्यजी महाप्रभुना अलथी अभने यश पश्चिममां डेत्यो.

वार्ता—प्रसंग १—पछी एक समय श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीद्वारकाजी पधार्यां. त्तारे मार्गमां नरोड़ा गाम आयुं. त्तारे त्यां श्रीआचार्यजी महाप्रभु गोपाल-

तो घर न हते । गोपालदास को बेटा वर्ष चौदह को हतो । सो गोपालदास के बेटा सों श्रीआचार्यजी महाप्रभु पूछे, जो-गोपालदास कहाँ गये हैं ? तब गोपालदास के बेटा ने कही, जो-महाराज ! श्रीठाकुरजी की सेवा कों गये हैं । यह वचन सुनि श्रीआचार्यजी महाप्रभु गोपालदास के बेटा पर बहोत अपसन्न भये । कहे, जो-गोपालदास को बेटा ऐसो अनुचित क्यों बोल्यो ? अब इहाँ रहनो उचित नहीं । पाछे श्रीआचार्यजी महाप्रभु मनमें विचारे, जो-गोपालदास कूं आवन दीजे, देखिये, गोपालदास की बुद्धि कैसी है ? उह कैसो बोलत है ? इतने में गोपालदास आय श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों दण्डवत् क्रियो । तब श्रीआचार्यजी कहें, जो-गोपालदास ! तू कहाँ गयो हतो ? तब गोपालदास ने कही, महाराज ! पेट लाग्यो है । सो कछु व्यावृत्ति कों गयो हतो । यह वचन सुनि गोपालदास ऊपर श्रीआचार्यजी महाप्रभु बहोत प्रसन्न भये । कहे, वैष्णव कों ऐसो बोलनो उचित है । ऐसे बोलनो नहीं, जो-व्यावृत्ति लौकिक कों जाई, तहां श्रीठाकुरजी की सेवा को नाम लेई ।

भावप्रकाश—पुष्टिमार्गी की यह रीति है, जो-सेवा में जाई तऊ लौकिक को नाम लेई । भगवद् धर्म प्रकास न करे, सो भगवदीय । अछे जीव

दासना घरे पधार्या । त्यारे गोपालदास घर न हुता । गोपालदासना पुत्र वर्ष चौदहो हुतो । त्यारे गोपालदासना भेटाने श्रीआचार्यजी महाप्रभु पूछे, के गोपालदास क्यां गया छे ? त्यारे गोपालदासना भेटाये कछु, महाराज ! श्रीठाकुरजीनी सेवा भाटे गया छे । ये वचन सांसणी श्रीआचार्यजी महाप्रभु गोपालदासना भेटा उपर थहुन अपसन्न थया । कहे, के गोपालदासना पुत्र व्यापुं अनुचित केम भोलेयो ? हुवे अही रहवुं उचित नथी । पछी श्रीआचार्यजी महाप्रभुमे मनमां विचार्युं, के गोपालदासने आववा दा, जेधमे गोपालदासनी बुद्धि केवी छे ? ये केवुं भोले छे ? अरदाभां गोपालदासे आवी श्रीआचार्यजी महाप्रभुने दंडवत् क्रियां । त्यारे श्रीआचार्यजी कहे, के गोपालदास ! तू क्यां गया हुतो ? त्यारे गोपालदासे कछु, महाराज ! पेट लाग्युं छे ते कंठ व्यावृत्तिमे गयो हुता । ये वचन सांसणी गोपालदास उपर श्रीआचार्यजी महाप्रभु घणा प्रसन्न थया । कहे, वैष्णवने अपुं भोलेपुं उचित छे । अपुं भोलेपुं नाही के व्यावृत्ति लौकिकमां जय त्यां श्रीठाकुरजीनी सेवावुं नाम दे ।

भावप्रकाश—पुष्टिमार्गीयोनी आ रीत छे, के सेनामां जय तो पणु लौकिकनुं नाम दे । भगवद् धर्म प्रकाश न करे ते भगवदीय । सारे जेव न होय

सों कहें, जो-गोपालदास ! तुम रात्रि कों जल कहां तें पियो । तब गोपालदास कहें, मोकों तो ज्वर चढ्यो, और तृषा बहोत लगी । कंठ सूख्यो, सो व्याकुल भयो हतो । तातें मोकों कछु खबरि नाहीं जो-किन जलपान करायो । तब रामदासजी ने गोपालदास सों कह्यो, जो-तुमकों श्रीगोवर्द्धनधर जलपान कराई झारी इहाँ ही धरि गये, सो हम झारी लेन आये हैं । तातें तिहारे बड़े भाग्य हैं । तब गोपालदास कहें, प्रभुन कों इतनो श्रम करनो पड्यो ? अपने मनुष्य पर खीजे, तू पानी मेरे पास क्यों न राख्यो ? और तू सोई गयो ? मोकों प्यास बहोत लगी, सो श्रीठाकुरजी कों श्रम करनो पड्यो । सो वुरी भई । पाछे रामदासजी गोपालदास को समाधान करि झारी ले मन्दिर में आये । पाछे गोपालदास आछे भये । श्रीनाथजी को दरसन करि अपने घर आये । परन्तु श्रीगोवर्द्धनधर को विरह अष्ट प्रहर इनकों रहे ।

वार्ता-प्रसंग ३—और एक दिन विरह बहोत भयो । सो विरह को चोखरा करिके गाये ।

“ केकी सिखंडी श्याम घन कंठ मनोहर द्वार ।

घन्य ते दिन देखिशुं नैनन नन्दकुमार ॥ ”

वार्ता-प्रसंग ४—और एक समय श्रीगुसांईजी श्रीद्वारिका कों

गोपालदासने कहुं, के गोपालदास तमे रात्रे जल क्यांथी पीवुं ? त्यारे गोपालदास कहे, भने तो ज्वर चढ्यो अने तृषा घणी लागी कंठ सुक्यो-ते व्याकुल थयो हुतो तेथी भने इंध अण्पर नथी के डोले जलपान कराव्युं ? त्यारे रामदासलये गोपालदासने कहुं, के तभने श्रीगोवर्द्धनधर जलपान करावी जारी आई धरी गया ते अमे जारी लेवा आव्या छीअे तेथी तभारां भोटां लाग्य छे । त्यारे गोपालदास कहे, प्रभुने आठले श्रम करवो पड्यो ? पोताना भाणुस उपर भीज्या, तें पाणी भारी पासे केम न राख्युं ? अने तू सूख गयो ? भने तरस थहु लागी तेथी श्रीठाकुरलने श्रम करवो पड्यो ते अण्पर थयुं । पछी रामदासल गोपालदासतुं समाधान करी जारी लई मन्दिरमां आव्या । पछी गोपालदास सारा थया । श्रीनाथलनां दर्शन करी पोताने धरे आव्या परंतु श्रीगोवर्द्धनधरनो विरह अष्ट-प्रहर अेभने रहे ।

वार्ता-प्रसंग ३-वणी अेक दिवस विरह धल्यो थयो । तेथी विरहना आणरो करीने गायो-‘केकी शिखंडी श्याम घन’- (उपर लुग्यो)

वार्ता-प्रसंग ४-वणी अेक समय श्रीगुसांइल श्रीद्वारिकाले श्रीरखुछाडलना

श्रीरणछोड़जी के दरसन कों पधारै । तब मार्ग में नरोड़ा गाम में आये । सो गाम के बाहर डेरा करि उतरे । सो उत्थापन के समय गोपालदास श्रीगुसांईजी के दरसन कों चले । तब दोय जने गोपालदास के संग चले । सो श्रीगुसांईजी के दरसन तहां जाई किये । तब दोऊ जने गोपालदास सों कहें, हमकों श्रीगुसांईजी पास नाम दिवावो । तब गोपालदास ने कही, हमहूँ नाम देन हैं । सो हम घर चलेंगे तब तुम हमारे घर आईयो, हम तुमकों नाम सुनावेंगे । या प्रकार दोऊ जने तीन बार गोपालदास सों कहै, जो-हमारो मनोरथ यह है, जो-हमकों श्रीगुसांईजी नाम सुनावें । सो तीनों बार गोपालदास ने कही, हमारे घर आइयो, हम तुमकों नाम सुनावेंगे । यह बात सब श्रीगुसांईजी ने सुनी । तब श्रीगुसांईजी उन दोऊ जनेन सों पूछे, जो-तुम गोपालदास सों कहा कहत हो ? तब उनने कही, जो-महराज ! हमारो मनोरथ यह है, जो-हमकों कृपा करिके आप नाम सुनावो । तब श्रीगुसांईजी दोऊन कों नाम सुनाय कृतार्थ किये । पाछें श्रीगुसांईजी ने गोपालदास सों कही, जो-तुमकों तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु अङ्गीकार किये हैं, सो तो दृढ़ है । प्रभु तुमकों कबहू न छोड़ेंगे । परन्तु जितने सेवक तुम नाम सुनाय के किये हो, सो सब हमारे

दर्शन पधार्या त्यारे मार्गमां नरोड़ा गाममां आल्या. त्यां गाम अहार मुकाम करीने उतर्या. पडी उत्थापनना समये गोपालदास श्रीगुसांईजीनां दर्शन आल्या. त्यारे जे जे गोपालदासनी साथे उता. पडी श्रीगुसांईजीनां दर्शन त्यां जेठने कर्था. त्यारे अन्ते जे गोपालदासने कहे, अमने श्रीगुसांईजी पासे नाम अपावो. त्यारे गोपालदासे कहुं, अमे पणु नाम आपीये छीये. ते अमे घर चादीये त्यारे तमे अमारा घरे आवजे. अमे तमने नाम संलणावीशु. आ प्रभारे अन्ते जे त्रणुवार गोपालदासने कहुं, के अमारे मनोरथ अे छे के अमने श्रीगुसांईजी नाम संलणावे. त्यारे त्रणुवार गोपालदासे कहुं, अमारा घरे आवजे. अमे तमने नाम संलणावीशु. अे वात अधी श्रीगुसांईजीसे सांलणी. त्यारे श्रीगुसांईजी अे अन्तेने पूछे, के तमे गोपालदासने शुं कहे छे ? त्यारे अे मणे कहुं, महाराज ! अमारे मनोरथ अे छे के अमने कृपा करीने आप नाम संलणावो. त्यारे श्रीगुसांईजीसे अन्तेने नाम संलणावी कृतार्थ कर्था. पडी श्रीगुसांईजीसे गोपालदासने कहुं, के तमने तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुसे अङ्गीकार कर्था छे. ते तो दृढ़ छे. प्रभु तमने कही नहीं छोडे. परंतु जेदना सेवक तमे नाम संलणावीने कर्था छे ते अथा अमारा नहीं थाय. पुष्टिमार्गथी अहि-

न होइंगे । पुष्टिमार्ग तें बहिर्मुख होइंगे । सो यह बात सगरे वैष्णव सुनिके श्रीगुसांईजी के सेवक होई कृतार्थ भये । और जो कोई रहि गये सो पुष्टिमार्ग तें भ्रष्ट भये । तिनको श्रीगुसांईजी 'गंगोज' कहते । सो गोपालदास सदा विरह दसा में भगन रहते । ताते इनकी वार्ता कहां तांई कहिये ।

वार्ता ॥७९॥

भावप्रकाश—जैसे श्रीगंगाजी की धारा सों जल छूटि न्यारों जल रहै । सो सगरे मनुष्यन कों पाप रूप है । ताके छूवे तें दोष लागे, तद्वत् भये । यामें यह जताये, जो-गोपालदास कों स्वामी पद आयेतें जीवन को विगार भयो । तातें दैन्यता बड़ो पदार्थ है । सब फल कों सिद्ध करे । और अहंकार महाबाधक है यह दिखाये । तातें गोपालदास तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे । जिनको श्रीगोवर्द्धनधर अनुभव जनावते । जल पान अपनी झारी तें पिवाये ।

वैष्णव ॥७९॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, बादरायनदास, पुष्करना ब्राह्मण स्त्री पुरुष, सो मोरबी में रहते, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो ये लीला में श्रीललिताजी की सखी हैं । इनको नाम 'श्रुतिरूपा' है । और इनकी स्त्री को नाम 'गंगा' है ।

भुंभ थश. એ વાત બધા વૈષ્ણવોએ સાંભળીને શ્રીગુસાંઇજીના સેવક થઈ કૃતાર્થ થયા. અને જે કોઈ રહી ગયા તે પુષ્ટિમાર્ગથી ભ્રષ્ટ થયા. તેમને શ્રીગુસાંઇજી 'ગંગોજ' કહેતા તે ગોપાલદાસ સદા વિરહ દશામાં ભગન રહેતા. તેથી એમની વાર્તા ક્યાં સુધી કહીએ.

ભાવપ્રકાશ—જેમ ગંગાજીની ધારાથી જલ છૂટી અલગ જલ રહે તે બધા મનુષ્યોને પાપ રૂપ છે. એને અડવાથી દોષ લાગે તદ્વત્ થયા. એમાં એ જતાબુંદે ગોપાલદાસને સ્વામી પદ આપવાથી જીવોનો બગાડ થયો. તેથી દીનતા મોટા પદાર્થ છે. બધા ક્ષણે સિદ્ધ કરે અને અહંકાર મહાબાધક છે એ દેખાડયું. તેથી ગોપાલદાસ તો શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુના એવા કૃપાપાત્ર ભગવદીય હતા જેમને શ્રીગોવર્દ્ધનધર અનુભવ જણાવતા. જલપાન પોતાની ઝારીથી કરાવ્યું. ॥ વૈ. ૭૯ ॥

✽

✽

✽

હવે શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીના સેવક, બાદરાયણદાસ પુષ્કરણ બ્રાહ્મણ સ્ત્રી-પુરૂષ તે મોરબીમાં રહેતા, તેમની વાર્તાનો ભાવ કહીએ છીએ—

ભાવપ્રકાશ—એ લીલામાં લલિતાજીની સખી છે. એમનું નામ 'શ્રુતિ-રૂપા' છે અને એમની સ્ત્રીનું નામ 'ગંગા' છે.

वार्ता प्रसंग १—सो मोरवी में एक पुष्करना ब्राह्मण के घर जन्में । तब माता पिता नें इनको नाम बादा धरयो । पाछें जब श्री-आचार्यजी महाप्रभुन के सेवक भये, तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु इनको नाम बादरायणदास धरे । सो बादा बरस तेरह के भये । तब इनको गाम ही में व्याह भयो । सो मोरवी में रहते । और एक वाछव भट्ट (वत्सा भट्ट) गुजराती ब्राह्मण हते, सो गुजरात में रहते । श्रीभागवत की कथा कहि निर्वाह करते । सो वाछव भट्ट श्रीद्वारिका श्रीरणछोड़जी के दरसन कों चले । तब मारग में मोरवी गाम आयो, तहां गये । तब बादराइन ने वाछव भट्ट कों राखे, अपने घरमें । सो वाछवभट्ट के सेवक होई नाम पायो । पाछें घरमें भट्ट पास श्रीभागवत बादराइनदास ने संपूर्ण सुन्यो । पाछें वाछवभट्ट तो श्रीद्वारिका कों गये । पाछें कछुक दिन में श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीद्वारिका कों पधारे । सो मोरवी गाम के बाहर एक बगीची में उतरे । तब मोरवी के सगरे वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के दरसन कूं आये । तामें बादा हू आये । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु वा समय श्रीसुबोधिनीजी की कथा कहे । सो 'भँवर गीत' को प्रसंग ऐसो कहे, जो-बादा कों मूर्छा आइ गई । सो एक पहर में सावधान भये । तब

वार्ता प्रसंग १-ये मोरवीमां एक पुष्करना ब्राह्मणने धरे जन्म्या तयारे मात - पिताये येभतुं नाम 'वादा' धर्युं'. पछी ज्यारे श्रीआचार्यल महाप्रभुना सेवक थया तयारे श्रीआचार्यल महाप्रभुये येभतुं नाम बादरायणदास धर्युं'. पछी वादा वरस तेरना थया. तयारे येभनो गाममांज विवाह थयो. ते मोरवीमां रहेता. पछी एक वाछव भट्ट (वत्सा भट्ट) गुजराती ब्राह्मण हता. ते गुजरातमां रहेता. श्रीभागवतनी कथा कही निर्वाह करता. ते वाछव भट्ट श्रीद्वारिका श्रीरणछोड़ना दर्शने यादया. तयारे मार्गमां मोरवी गाम आव्युं त्यां गया. तयारे बादरायण वाछव भट्टने राख्या, पीताना घरमां. पछी वाछवभट्टना सेवक थय नाम पाभ्या. पछी घरमां भट्ट पास श्रीभागवत बादरायणदाससे संपूर्ण सुन्युं. पछी वाछवभट्ट तो श्रीद्वारिकाये गया. पछी डेढसाक दिनसमां श्रीआचार्यल महाप्रभु श्रीद्वारिकाये पधार्या. तयारे मोरवी गामनी अहार एक बगीचामां उतर्या. तयारे मोरवीना अधा वैष्णव श्रीआचार्यल महाप्रभुनां दर्शने आव्या. तेमां वादा पणु आव्या. तयारे श्रीआचार्यल महाप्रभुये ते समय श्रीसुबोधिनीजीनी कथा कही, ते भ्रमरगीतना प्रसंग येवो कही डे वादाने मूर्छा आवी गध. पछी एक प्रहरमां सावधान थया. तयारे वादा मनमां कहे, डे वाछ-

वादा मनमें कहे, जो-बाछव भट्ट पास गये, श्रीभागवत सुन्यो, परन्तु ऐसो आनन्द नहीं आयो। तब वादा ने श्रीआचार्यजी महाप्रभुन को दण्डवत् करि बिनती करी, जो-महाराज ! आप कृपा करि मोको सेवक करिये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहें, जो-तू बाछव भट्ट को सेवक तो होई चुक्यो है। अब सेवक क्यों होत हैं ? हम तो तुमको फेरि सेवक न करेंगे। तब वादा श्रीआचार्यजी महाप्रभुन सो बिनती करि, अपने घर आई, स्त्री सो कह्यो, जो-श्रीवल्लभाचार्यजी पधारे हैं, सो तो साक्षात् भगवान ही हैं। भँवर गीत को प्रसंग कथा ऐसी कहे सो मोको सूछा आई। पाछें मैं सेवक होन की बिनती करी, सो आपने नहीं करी। जो तू तो बाछव भट्ट को सेवक है, अब सेवक तोको न करेंगे। सो अब कैसे करिये ? जो-श्रीआचार्यजी महाप्रभु सेवक करें तो कृतार्थ याही जन्म में होई। तब स्त्री ने कही, तुमको बिनती करतें आई नहीं। मोको ले चलो, तो मैं बिनती करूँ। तब वादा ने कही चलो। सो वादा और वादा की स्त्री श्रीआचार्यजी महाप्रभुन पास आये। तब वादा की स्त्री ने दण्डवत् करिके कह्यो, जो-महाराज ! मेरो पति सेवक होनकी बिनती आपुसों कियो। सो आप नहीं कियो। सो आप तो, पतित, अधम हम सरीखे संसार में पड़े हैं, तिनके उद्धार करनार्थ पधारे हो। सो सरन लीजे। तब श्रीआचा-

वल्लभ पास गया श्रीभागवत सांख्य परन्तु आवे आनन्द नहीं आव्यो। तारे वादाये श्रीआचार्यजी महाप्रभुने दण्डवत् करी बिनती करी के, महाराज ! आप कृपा करी भने सेवक करे। तारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु कहे, के तु पाछवल्लभना सेवक तो थय चुक्यो छे। हुवे सेवक केम थाय छे ? अबे तो तने करी सेवक नहीं करीये। तारे वादाये श्रीआचार्यजी महाप्रभुने बिनती करी पोताना धरे आवी स्त्रीने कहुं, के श्रीवल्लभाचार्यजी पधारे छे। ते तो साक्षात् भगवान छे। भ्रमरगीतना प्रसंग कथा खेवी कही, के भने सूछा आवी। पछी में सेवक थयानी बिनती करी तारे आवे ना कही। के तु तो पाछवल्लभना सेवक छे। हुवे सेवक तने नहीं करीये। माटे हुवे शु करीये ? जे श्रीआचार्यजी महाप्रभु सेवक करे तो कृतार्थ आन जन्ममां थयये। तारे स्त्रीये कहुं, तभने बिनती करतां आवडी नहीं। भने लभ आवे। पछी वादा भने वादानी श्री श्रीआचार्यजी महाप्रभु पासे आव्यां। तारे वादानी स्त्रीये दण्डवत् करीने कहुं, के महाराज ! मारा पतिये आपने सेवक करवानी बिनती करी ते आवे ना कही। ते आप तो पतित, अधम अमारा सरना जे संसारमां पया छे तेभने उद्धार कर-

र्यजी महाप्रभु कहें, जो हम तो यातें यों नहीं करी, जो-वाछव भट्ट के सेवक हूँ चुके हो। फेरि क्यों सेवक होत हो? तब स्त्री ने कही, जो-महाराज! वाछव भट्ट के सेवक भये तातें हमारो तो कछु अर्थ सरथो नहीं। ऐसे ब्राह्मण जीविका के लिये ठोर ठोर श्रीभागवत की कथा कहेत डोलत हैं। सो हमारो उद्धार कहा करेंगे? तातें आप सरन ले हमारो उद्धार करो। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी कहें, जो-आज तो सांझ भई है, सवेरे तुमको सेवक करेंगे। अब तो तुम घर जाव। तब स्त्री पुरुष दोऊ जने श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों दण्डवत् करि घर आये। पाछें प्रातःकाल दोऊ जने आइ, श्रीआचार्यजी महाप्रभुन कों दंडवत् करि विनती किये, जो-महाराज! कृपा करि हमारे घर पधारि रसोई करिये। तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु वादा के घर पधारि, स्त्री पुरुष दोऊ जनकों न्हवाय के नाम सुनाये, ब्रह्ममस्वन्ध कराये। पाछें आप रसोई पाक सामग्री करि भोग धरि भोजन किये। वादा को नाम बादराईनदास धरि, श्रीनवनीतप्रियजी के प्रसादी वस्त्र भगवद् सेवा दे, दोय दिन बादरायनदास के घर रहे। पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी श्रीद्वारिका कों पांड धारे। तब स्त्री पुरुष दोऊ जने श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के संग द्वारिका कों

वाने पधार्या छे। तेथी शरणे लो। त्तारे श्रीआचार्यल महाप्रभु छे, अमे तो अने अमे ना कही के वाछवलटना सेवक थथ युक्या छे, इरी केम सेवक थाव छे? त्तारे स्त्रीअे कछु, के महाराज! वाछवलटना सेवक थया तेथी अमारो तो कांछ अर्थ सरथो नहीं, अेवा आह्मणु लविकाने माटे जगे जगे श्रीभागवतनी कथा कहेता इरे छे ते अमारो उद्धार शुं करे? तेथी आप शरणे लछ अमारो उद्धार करे। त्तारे श्रीआचार्यल महाप्रभु छे, के आज तो सांज थछ छे, सवारे तमने सेवक करीशुं, हुवे तो तमे घर जव, त्तारे स्त्रीपुरुष अन्ने जणुा श्रीआचार्यल महाप्रभुने दंडवत् करी घरे आण्यां पछी प्रातःकाल अन्ने जणुाअे आवीने श्रीआचार्यल महाप्रभुने दंडवत् करी विनती करी, के महाराज! कृपा करी अमारा घरे पधारी रसेाछ करे। त्तारे श्रीआचार्यल महाप्रभु वादाना घरे पधारी स्त्री-पुरुष अन्ने जणुने न्हवडावीने नाम संलणावी अहंस'अ'ध कराण्युं' पछी पोते रसेाछ पाक-सामग्री करी लोण धरी लोणन क्युं' वादातुं नाम बादरायणदास धरी श्रीनवनीतप्रियलनां प्रसादी वस्त्र भगवद् सेवा छथे द्वियस बादरायणना घरे रखा। पछी श्रीआचार्यल महाप्रभु द्वारका पधार्या। त्तारे स्त्रीपुरुष अन्ने जणु श्रीआचार्यलना संगे द्वारिकां गयां। त्तारे श्रीद्वारका-

गये । सो श्रीद्वारिकाजी में श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी एक वरस १ महिना ताई रहे । तब बादरायनदास और बादरायनदास की स्त्री सगरी सेवा किये । जल त्यावनो, रसोई की परचारगी, धोवती उपरेना श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के नित्य धोवते । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी प्रसन्न होई बादरायनदास सों कहे, तुम जाइ स्त्री सहित घर में भगवद् सेवा करो । पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी आप पृथ्वी परिक्रमा कों पधारे । और बादरायनदास स्त्री पुरुष दोऊ जने मोरबी में अपने घर आय बह्व सेवा प्रीति पूर्वक करन लागे । तब श्रीनवनीतप्रियजी सानुभावता जनावन लागे । सो बादरायनदास स्त्री पुरुष दोऊ जने श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे । तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिये ?

वार्ता ॥८०॥

✽

✽

✽

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, सूरदासजी सारस्वत ब्राह्मण, दिल्ली के पास सीहीं गाम है तहां रहते, तिनकी वार्ता की भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो ये सूरदासजी लीला में श्रीठाकुरजी के अष्टसखा हैं, सो तिन में ये 'कृष्णसखा' को प्राकृत्य हैं । तहाँ यह सन्देह होय जो—निकुंज लीला में तो सखीजन कों अनुभव है, जो सखा तहां नाहीं है । सो सूरदासजी ने रहस्य-

७०॥ श्रीआचार्यजी महाप्रभु एक वर्ष एक महिना सुधी रहा । तयारे बादरायणदास अने बादरायणदासनी स्त्रीअे अधी सेवा करी । जण लावतुं, रसोइनी परचारगी, धोवतीउपरना श्रीआचार्यजी महाप्रभुअना नित्य धुअे । तयारे श्रीआचार्यजी महाप्रभु प्रसन्न थअने बादरायणदासने कहे, तमे जध स्त्री सहित घरमां भगवद्सेवा करे । पछ श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप पृथ्वीपरिक्रमाअे पधार्या अने बादरायणदास, स्त्री-पुरुष अने जणु मोरबीमां घेताना घरे आपी वस्त्र-सेवा प्रीतिपूर्वक करवा लाग्यां । तयारे श्रीनवनीतप्रियअे सानुभावता जणुअववा लाग्या ते बादरायणदास स्त्री-पुरुष अने जणु श्रीआचार्यजी महाप्रभुअनां अेवां कृपापात्र भगवदीय अतां तेथी अेअनी वार्ता कयां सुधी कहीअे ?

वार्ता ॥८०॥

✽

✽

✽

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुअना सेवक, सूरदासअे सारस्वत ब्राह्मण दिल्लीनी पास सिंही गाम अे त्यां रहेता, तेअनी वार्तानी भाव कहीअे छीअे—

भावप्रकाश—अे सूरदासअे लीलामां श्रीठाकुरअना अष्टसखा अे तेमां अे 'कृष्ण सखा'तुं प्राकृत्य अे । त्यां अे सन्देह थाय अे, निकुंज लीलामां तो सखीजनोने अनुभव अे । सखा त्यां नथी । तो सूरदासअे रहस्य लीला विना अनुभव केवी रीते

लीला, बिना अनुभव कैसे गाई ? तहां कहत हैं, जो श्रीभागवत में कहे हैं, जो—जब श्रीठाकुरजी आप वन में गौचारन लीला में सखान के संग पधारत हैं, सो सगरी गोपीजन लीला को अनुभव करत हैं । सो घर में सगरी लीला वन की गान करत हैं । ता पाछें जब श्रीठाकुरजी संध्या समय वन तें घरकूं आवत हैं, ता पाछें रात्रि कों गोपीजन सों निकुंज में लीला करत हैं । सो तब अंतरंगी सखान कों विरह होत है, तब वे निकुंजलीला को गान करत हैं, अनुभव करत हैं । सो काहेंते ? कुंज में सखीजन हैं सो तिनके दोग्य स्वरूप हैं सो कहत हैं—पुंभाव के सखा और स्त्री भाव की सखी । सो दिन में सखा द्वारा अनुभव और रात्रि कों सखी द्वारा अनुभव है । सो काहेंते ? जो वेद की ऋचा हैं सो गोपी हैं । और वेद के जो मंत्र है सो सखा हैं । परंतु गोपीजन देखिवे मात्र स्त्री हैं, सो इनके पति हैं, परंतु ये स्त्री नहीं हैं । सो ऐसे—(जैसे) भुज्यो अन्न होय सो धरती में बीज नहीं ऊगे । तेसे ही इनकों लौकिक विषय नहीं है । सो यहां तो रसरूपलीला सदा सर्वदा एक रस हैं । सो तेसे ही अंतरंगी सखा श्रीठाकुरजी के अंगरूप हैं । सो सखी रूप, सखा रूप, दोग्य रूप सों रात्रिदिन लीलारस करत हैं । सो तासों सूरदास 'कृष्णसखा' को प्राकट्य हैं और कृष्णसखा को दूसरो स्वरूप सखी है, सो लीला कुंज में हैं तिनको नाम "चंपकलता" है । सो तासों सूरदास कों सगरी लीलाको

गाथ ? त्यां कडे छे जे श्रीभागवतमां कडे छे, के न्यारे श्रीठाकुरजी आप वनमां गौआर-
रषु लीलामां सधीओनी साथे पधारे छे त्यारे सधणी गोपीजन लीलानो अनुभव करे
छे ते घरमां गधी लीला वननी गान करे छे. ते पछी न्यारे श्रीठाकुरजी संध्या समय
वनथी धरे आवे छे ते पछी रात्रिओ गोपीजन साथे निकुंजमां लीला करे छे त्यारे
अंतरंगी सधाओने विरह थाय छे. त्यारे ते निकुंज लीलानुं गान करे छे अनुभव
करे छे. ते शाथी ? कुंजमां सधीजनो छे तेमनां जे स्वरूप छे ते कहीओ छीओ—पुंला-
वना सधा अने स्त्रीलावनी सधी. दिवसमां सधाद्वारा अनुभव अने रात्रिओ सधी
द्वारा अनुभव छे ते शाथी ? के वेदनी ऋचा छे ते गोपी छे. अने वेदना जे मंत्र छे ते
सधा छे. परंतु गोपीजन देवता मात्रनां स्त्री छे येमना पति छे परंतु ये स्त्री नथी.
ते जेम के जेम शेकेलुं अन्न डोय तेनुं धरतीमां भीज न उगे तेमज आमने लौकिक
विषय नथी. अहीतो रसरूप लीला सदासर्वदा अकरस छे. ते अंतरंगी सधा श्रीठाकुर-
रजीना अंगरूप छे ते सधीरूप सधा रूप गन्ने रूपोथी रात्रि दिवस लीला करे छे.
तेथी सूरदास 'कृष्ण सधा'नुं प्राकट्य छे अने कृष्ण सधा'नुं भीजुं स्वरूप सधी छे ते
लीला कुंजमां छे तेमनुं नाम "चंपकलता" छे. तेथी सूरदासने गधी लीलानो अनुभव

અનુભવ શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુ કી કૃપાતેં હોયગો । સો પ્રકાર કહત હૈં । તહાં
 યહ સંદેહ હોય જો લીલા સંબંધી હૈં સો પહેલે તેં અનુભવ ક્યોં નાહીં ભયો । સો
 इनकों मोह क्योँ भयो ? तहां कहत हँ, जो—श्रीठाकुरजी भूमि के ऊपर प्रगट होय
 कैं लौकिक कौं नाई लीला करत हँ, सो जस प्रकट करनार्थ । सो लीला गाइ ज-
 गत में लौकिक जीव कृतार्थ होत हँ । तैसेई श्रीठाकुरजी के भक्त हू जगत में लौकिक
 लीला करि अलौकिक दिखावत हँ । जैसे श्रीरुक्मिणीजी साक्षात् श्रीलक्ष्मीजीको
 स्वरूप हँ, परंतु जब जन्मी तब देवी पूजिकैं वर मांग्यो । फेरि श्रीठाकुरजी के पास
 ब्राह्मण व्याह के लिये पठायो । सो यह जगत में लीला प्रगट करनार्थ । जैसे कालिं-
 दीजी सूर्य द्वारा प्रगट होय कैं श्रीयमुनाजी में मंदिर करि तपस्या करि, अर्जुन
 सों कही, जो मैं श्रीठाकुरजी कों वरूंगी । तब श्रीठाकुरजी आपु विवाह कियो ।
 सो ये लीलामात्र, (क्यों जो) ये सदा श्रीठाकुरजी की प्रिया हँ । सो ब्रज में
 श्रीस्वामिनीजी और श्रीठाकुरजी आपु ये दोउ एक रूप हँ, परंतु ब्रजलीला प्रगट
 करिवे के लिये श्रीठाकुरजी श्रीनंदरायजी के घर प्रगटे और स्वामिनीजी श्रीवृष-
 भानजी के घर प्रगट होय कैं अनेक उपाय मिलिवे कों रात्रदिन किये । सो यह
 लीला (केवल) जगत में प्रगट करिवे के लिये (ही) । (नाँतरु) ये तो सदा एक
 रस लीला करत हँ । सो तैसेई सूरदास श्रीआचार्यजी के सेवक होय कैं भगवल्लीला

શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુજીની કૃપાથી થશે તે પ્રકાર કહે છે. ત્યાં આ સદેહ થાય કે
 લીલા સંબંધી છે તે પહેલાંથી અનુભવ કેમ ન થયો ? એમને મોહ કેમ થયો ? ત્યાં
 કહે છે શ્રીઠાકુરજી ભૂમિ ઉપર પ્રગટ થઈને લોકિકની માફક લીલા કરે છે તે યશ પ્રકટ
 કરવાને માટે. તે લીલા ગાઈ જગતમાં લૌકિક જીવ કૃતાર્થ થાય છે. તેવીજ રીતે શ્રીઠા-
 કુરજીના ભક્ત પણ જગતમાં લોકિક લીલા કરી અલૌકિક બતાવે છે. જેમ શ્રીરુકમ-
 ણીજી સાક્ષાત્ શ્રીલક્ષ્મીજીનું સ્વરૂપ છે પરંતુ જ્યારે જન્મી ત્યારે દેવી પૂજીને વર
 માગ્યો. પછી શ્રીઠાકુરજીની પાસે બ્રાહ્મણ લગનને માટે મોકલ્યો. તે આ જગતમાં લીલા
 પ્રકટ કરવા માટે. જેમ કાલિંદીજી સૂર્યદ્વારા પ્રકટ થઈને શ્રીયમુનાજીમાં મંદિર કરી
 તપસ્યા કરી અર્જુનને કહ્યું, કે હું શ્રીઠાકુરજીને વરીશ. ત્યારે શ્રીઠાકુરજીએ પોતે વિવાહ
 કર્યો. એ લીલા માત્ર. કેમ જે એ સદા શ્રીઠાકુરજીની પ્રિયા છે. વળી બ્રજમાં શ્રીસ્વામિનીજી
 અને શ્રીઠાકુરજી આપ એ બંને એકરૂપ છે. પરંતુ બ્રજલીલા પ્રકટ કરવાને માટે શ્રી-
 ઠાકુરજી શ્રીનંદરાયજીના ઘરે પ્રકટ્યા અને સ્વામિનીજી શ્રીવૃષભાનજીના ઘરે પ્રગટ
 થઈને અનેક ઉપાય મળવાના રાત્ર દિવસ કર્યા. એ લીલા કેવલ જગતમાં પ્રકટ કરવાને
 માટેજ હતી. નહિં તે એ તો સદા એકરસ લીલા કરે છે તેમજ સૂરદાસે શ્રીઆચાર્ય-

गाये । सो यामें स्वामी को जस बढै । सो जिनके सेवक सूरदास ऐसे भगवदीय, तिनके स्वामी श्रीआचार्यजी आपु तिन की सरन जैये । सो या प्रकार जगत में लीला करि जस प्रगट किये, सो आगे लौकिक जीव कों गान करि भगवत्प्राप्ति होय ।

सो सूरदासजी जगत पर अव ही प्रगटे, परंतु लीलाको ज्ञान नहीं है । सो सूरदासजी दिह्ली पास चारि कोस उरें में एक सीहीं गाम है, जहां राजा परीक्षित के बेटा जन्मेजय ने सर्प-यज्ञ कियो है । सो ता गाम में एक सारस्वत ब्राह्मण के यहां प्रगटे । सो सूरदासजीके जन्मत ही सो नेत्र नहीं हैं । और नेत्रन को आकार गटेला कछु नहीं; ऊपर भोंह मात्र है । सो या भांति सो सूरदासजी को स्वरूप है । सो तीन बेटा या सारस्वत ब्राह्मण के आगे के हते, और घर में बहोत निष्कंचन हतो । वा सारस्वत ब्राह्मण के घर चौथे सूरदासजी प्रगटे । सो तब इनके नेत्र न देखे, आकार (हू) नहीं । सो या प्रकार देख के वा ब्राह्मण ने अपने मन में बहोत सोच कियो, और दुःख पायो । जो देखो—एक तो विधाता ने हमकों निष्कंचन कियो, और दूसरे घर में ऐसे पुत्र जन्म्यों । जो अब याकी कौन तो टहल करेगो ? और कौन याकी लाठी पकरेगो ? सो या प्रकार ब्राह्मण ने अपने मन में बहोत दुःख पायो । सो काहेतें जो-जन्में पाछे नेत्र जांय तिनकों

एना सेवक थधने लगवददीदा गाध अयेमां स्वामीना यश वधे. नेमना सेवक सूरदास अेवा लगवदीय तेमना स्वामी श्रीआचार्यए आप तेमनी शरणे नधअे आ प्रकारे. जगतमां दीदा करी यश प्रकट कर्ये. केम ने आगण लौकिक एवोने गान करी लगव-त्प्राप्ति थाय.

अे सूरदासए जगत उपर हुमण्णां प्रकथ्या परंतु दीदातुं ज्ञान नथी. सूरदासए दिह्ली पासे चार कोस आ तरङ्ग अेक सींहीं गाम छे, जयां राजा परीक्षितना भेटा जन्मेजये सर्पयज्ञ कर्ये छे ते गाममां अेक सारस्वत ब्राह्मणने त्यां प्रकथ्या. ते सूरदासएने जन्मथीन नेत्र नथी अने नेत्रोने आकार उपसेदा लाग कंठ नथी. उपर लभर मात्र छे. अे रीतितुं सूरदासएतुं स्वइय छे वणी त्रणु भेटा आ सारस्वत ब्राह्मणने आगण हुता अने घरमां भहु निष्कंचन हुतो. ते सारस्वत ब्राह्मणने धरे योथा सूरदासए प्रकथ्या त्यारे अेसनां नेत्र न जेयां आकार पणु नही. आ प्रकारे नेधने अे ब्राह्मणे पोताना मनमां भहु शोच्य कर्ये अने दुःख पाभ्ये. के लुअे अेकतो विधा-ताअे अमने निष्कंचन कर्या अने णीणुं घरमां आवे पुत्र जन्म्ये. हुवे आनी कोणु तो ट-हुल करशे. अने कोणु अेनी लाठी पकडशे ? आ प्रभाणे ब्राह्मणु पोताना मनमां भहु दुःख पाभ्ये. केमके जन्म्या पछी नेत्र नधतेने आंधणो कडिअे, सूर न कडिअे अने आतो

आंधरा कहिये, सूर न कहिये। और ये तो सूर हैं, सो माता-पिता घर के सब कोई इनसों प्रीति करें नाहीं। जानें, जो नेत्र विना को पुत्र कहा ? तासों इनसों कोई बोलतो नाहीं। सो ऐसे करत सूरदासजी बरस छह के भये। तब पिता कों वा गाम के एक द्रव्यपात्र क्षत्री जजमान ने दोग मोहौर दान में दीनी। तब यह ब्राह्मण उन मोहौरन कों ले के अपने घर आयो, और अपने मन में बहोत प्रसन्न भयो, और स्त्री तथा घर में देह संबंधी बेटा बेटी हते सो तिन सबन सों कही जो-भगवान ने दोग मोहौर दीनी हैं सो काल्ह इनकों बटाय के सीधो सामान लाऊंगो। तातें अपने घर में दोग चार महीना को काम चलेगो। सो या प्रकार सबन कों वे दोग मोहोर दिखाई। ता पाछें रात्रि कों एक कपड़ा में बांधि के ताक में धरि के सोयो। तब रात्रि कों दोग मोहौरन कों सूसा ले गये। सो घर की छांतिन में भिल्ले में धरि दीनी। तब सवारे उठि के देखे तो मोहौर नाहीं है। सो तब तो सूरदास के मातापिता छाती कूटन लागे, और रोवन लागे, और अपने मन में अति कलेश करन लागे। सो वा दिन खानपान नाहीं कियो। सो या भांति सों बनो विलाप करन लागे। सो देखिके सूरदासजी मातापिता सों बोले, जो-तुम एसो दुःख विलाप क्यों करत हो ? जो-भगवान को भजन सुमिरन करो तासों सब भलो होय। सो या भांति सूरदास उनसों बोले। तब माता-

सूर छे. तेथी मातापिता घरना सर्व कोष ऐमनाथी प्रीति न करे. जखे के नेत्र विनाने पुत्र शा कामने ? तेथी ऐमनाथी कोष जेलातु नडी. ऐम करतां सूरदासल वर्ष छ ना थया. त्यारे पिताने ते गामना ऐक द्रव्यपात्र क्षत्री जजमाने जे मोहोर दानमां दीधी. त्यारे आ ब्राह्मणु जे मोहोराने लधने पोताना धरे आये. अने पोताना मनमां गहु प्रसन्न थये अने स्त्री तथा घरमां हेहु संधी जेटा-जेटी हुतां तेमने अधाने कहुं, के लगवाने जे मोहोर दीधी छे. ते काले अने वटावीने सीधुं सामान लावीश. त्यारे आपणा घरमां जे चार महीनानुं काम आलेशे. आ प्रकारे अधाने जे मोहोर देभाडी. त्यार पछी रात्रिजे ऐक कपडामां बांधीने (तेने) ताकमां धरीने सुध रह्यो. त्यारे रात्रिजे जे मोहोराने उदर लध गया ने घरनी छतना दरमां धरी दीधी. त्यारे सवारे उठिने जे ते मोहोर नडी. त्यारे सूरदासना मातापिता छाती कुटवा लाग्या अने रोवा लाग्या अने पोताना मनमां अति कलेश करवा लाग्या. ते दिवसे खानपान न क्युं. जे रीते घणु विलाप करवा लाग्या. जे जेधने सूरदासल मातापिताथी जेला के तमे आवे दुःख विलाप केम करे छे, लगवाननुं लजन स्मरणु करे. तेथी अधुं लधुं थये. आ प्रभाजे सूरदासल ऐमनाथी जेला. त्यारे मातापिताजे सूरदासने

पिता ने सूरदास सों कही जो-तू, एसी घडी को सूर जनम्यो है, सो हमको वाही दिन सों दुःख ही मे जनम वीतत है । जो हमकों काहूँ दिन सुख नाही भयो, और हमकों भर पेट अन्नहूँ नाही मिलत है । जो श्रीभगवान ने हमकों दौय मोहौर दीनी हती सोहू योंही गई । तव सूरदासजी बोले, जो-तुम मोकों घरमें न राखो तो मैं अबही तिहारी मोहौर बताय देउ । परि पाछे मोकों घर में राखियो मति, और तुम मेरे पीछे मति परियो । तव यह सुनि के मातापिता ने सूरदास सों कह्यो जो-और हमकों कहा चाहियत है ? जो-तू हमकों मोहौर बताय देउ, और हमारी मोहौर पावे फेरि तेरे मन में आवे तहां तू जइयो । हम तोकों वरजेंगे नाही । तव सूरदास बोले जो-छांति में भिल्लो है सो भिल्ले के मोहोडे पर धरी हैं । तव यह ब्राह्मण खोदि के मोहोर पायो । तव सूरदासजी घरतें चलन लागे । सो माता-पिता कों मोह उत्पन्न भयो । जो देखो या सूरदास को सगुन बहोत आछो भयो । याके कहे प्रमान मोकों तुरत ही मोहौर मिली हैं । सो यह विचारि के मातापिता ने सूरदासजी सों कह्यो-जो सूरदास ! अब तुम घरतें क्यों जात हो ? अब तो यह मोहौर पाय गई हैं, तातें जहां ताई यहू मोहौरन को अनाज रहे तहां ताई तुमहू खावो, पाछें जहां जानो होय तहां तुम जैयो । तव सूरदास बोले जो-मोकों अब तुम घर में मति राखो, जो मोकों घर में राखोगे तो तिहारी मोहौर फेरि जायगी,

कहुं, के तू ऐवी घडीने सूर जनम्यो छे के अमने तेज दिवसथा दुःखमांज जनम वीते छे. अमने केछ दिवस सुभ न थयुं अने अमने पेट लरीने अन्न पणु नथी भणतुं. लगवाने अमने जे मोडोर आपी हुती ते पणु अमज गछ. त्यारे सूरदासज ओल्या, के जे तमे मने घरमां न राषो तो हुं हुमणुंज तभारी भडोर भतावी दड'. पणु पछी मने घरमां राषता नछी. अने तमे भारी पाछण न पडता. त्यारे अे सांल-णीने मातापिताअे सूरदासने कहुं, के भीनुं अमने शुं लोछअे छे ? तु अमने भडोरो भतावी दे अने अभारी भडोर भणे पछी तारा मनमां आवे त्यां तू जजे. अमे तने रोकीशु नछीं. त्यारे सूरदास ओल्या, के छतमां दर छे ते दरना मोडडा उपर धरी छे त्यारे आ भ्राह्मणे ओहीने मोडोर भेणवी त्यारे सूरदासज धरथी आलवा लाग्या. त्यारे मातापिताने मोड उत्पन्न थयो. जे देषो, आ सूरदासने शुकन भहु सारे थयो. अेना कुडेवा प्रमाणे मने तरतज मोडोर भणी छे. तेथी अे विचारीने मातापिताअे सूरदासजने कहुं, के सूरदास ! हुवे तमे धरथी केम जव छे ? हुवे तो आ भडोर भणी गछ छे तेथी जथां सुधी आ भडोरनुं अनाज रहे त्यां सुधी तमे पणु भाव. पछी जथां जवुं डोय त्यां जजे. त्यारे सूरदास ओल्या, के मने हुवे तभारा घरमां न राषो.

और तुम दुःख पावोगे । यह सुनि के मातापिता कलु बोले नहीं, और सूरदासजी तो हाथ में एक लाठि लेकर घर सों निकले । सो सीहीं ते चले, सो चार कोस ऊपर एक गाम हतो, तहां एक तलाव गाम बाहिर हतो । सो वहां एक पीपर के वृक्ष नीचे सूरदासजी आय बैठे, और वा तलाव को जल पियो । तहां दोय चार घडी दिन पाछिलो रह्यो हतो, तब ता गाम को ब्राह्मण जमींदार तहां आयके सूरदासजी कौं पहिचानके कहन लाग्यो जो-मेरी १० गाय तीन दिनतें मिलत नहीं, कोई बत्तावे तो दो गाय चाकौं देऊं । तब सूरदासजी ने कही जो-मोकौं तेरी गाय कहा करनी हैं ? परंतु तू पूछत है तब कहत हूं जो-यहां सों कोस ऊपर एक गाम है । सो वा गाम के जमींदार के मनुष्य रात्रि कौं आयके तेरी १० गाय ले गये हैं । वा जमींदार के घर के भीतर एक दूसरो घर है, सो तहां जमींदार के घोड़ा बंधे है, सो उन घोड़ान के पास तेरी गाय बंधी हैं । तब वे जमींदार दस आदमी संग ले जाइ देखे तो गाय सब बंधी हैं, सो ले आय के सूरदासजी सों कह्यो, जो-सूरदास ! तिहारे कहे प्रमान मेरी दस गाय पाय गई हैं, सो ये दोय तुम राखो । तब सूरदासजी ने कही, जो-मैं अपनों ही घर छोडि के श्रीठाकुरजी को आश्रय करिके बैठो हूं, सो मैं तेरी गाय काहे कौं लेऊं ? तब वह जमींदार सूरदास कौं

जे भने घरमां राभशे। तो तभारी भडोर इरी जशे अने तमे दुःख पाभशे। आ सांभणीने मातापिता कंठ भेदया नही अने सूरदासल तो हाथमां लाठी लध घरथी निकज्या। ते सिद्धीथी यदया ते चार कोस उपर एक गाम हुतुं त्यां एक तलाव गाम पडार हुतुं त्यां एक पीपजना वृक्ष नीचे सूरदासल आवीने भेठा अने ते तलावतुं जल पीधुं। त्यां भेचारे घडी दिवस पाछेला रह्यो हुतो त्यारे ते गामने आह्वण जमीनदार त्यां आवीने सूरदासलने ओणणीने कडेवा लाग्ये, के मारी दश गाय त्रय दिवसथी भजती नथी। केध भतावे तो जे गाय अने आपुं। त्यारे सूरदासलये कहुं। के मारे तभारी गाय शुं करवी छे ? परंतु तू पूछे छे त्यारे कहुं छुं के अहीथी कोस उपर एक गाम छे ते गामना जमीनदारना मनुष्ये रात्रिये आवीने तारी दश गाय लध गया छे। ते जमीनदारना घरना अंदर एक पीपुं घर छे त्यां जमीनदार घोडा बांध्या छे। ये घोडाओनी पासे तारी गाये बांधी छे। त्यारे ते जमीनदार दस आदमीने साथे लधने लुये तो गाय अधी बांधी छे ते लध आवीने सूरदासलने कहुं। के सूरदास ! तभारा कडेवा प्रभावे मारी दश गाय भणी गध छे तेथी आ जे गाय तमे राच्ये। त्यारे सूरदासलये कहुं, के हुं पोतातुं ज घर छोडीने श्रीठाकुरलने आश्रय करीने भेठा छुं तारी गाय शा माटे लड ? त्यारे ते जमीनदार सूरदासने गालक नाणीने

बालक जानि कैं शिक्षा की बात करन लाग्यो, जो अरे ! तू फलाने सारस्वत को वेटा है, और नेत्र तेरे हैं नाहीं, और कोऊ मनुष्य हू तेरे पास नाहीं है, सो तू अपने घर कों छोडि के रूठि के यहाँ क्यों बैठ्यो है ? नेत्र हैं नाहीं, कैसे दिन कटेंगे ? तब सूरदास ने कह्यो जो-मैं तेरे ऊपर तो घर छोड्यो नाहीं । मैं तो नारायण के ऊपर घर छोड्यो है, सो वे सगरे जगत को पालन करत हैं सो मेरो हू करेंगे । और जो होनहार होयगी सो होयगी । तब जमींदार ने कही, मैं हू ब्राह्मण हों, दारि रोटी मेरे घर भई हैं, कहे तो लाउं । तब सूरदास ने कही, जो-मैं तो गैलकी चली रोटी नाहीं खात । तब वह जमींदार अपने घर जाइ पूरी कराय और दूध ले जाइ, सूरदास कों जल भरि दे के कह्यो, जो-सूरदास ! तुम कोई बात को दुःख मति पाइयो । जो जहां ताई भगवान मोकों खायवे कों देयगो, तहांताई यहां मैं तुमकों लाऊंगो । और सवेरे या तलाव पर तथा गाम में जहां कहोगे तहां छापरा डार देऊंगो । पाछे सवेरो भयो, तब यह जमींदार ने आय के कह्यो जो-तिहारो मन कहां रहेवो को है ? तब सूरदास ने कही, जो-अब तो याही तलाव पर पीपरा नीचे कलुक दिन रहवे को मन है । तब वा जमींदार ने वहां एक झोंपडी छवाय दीनी और टहल करिवेकुं एक चांकर राखि दियो । ता पाछे वा जमींदार ने दसपांच जने के आगे बात करी, जो-फलाने को वेटा सूरदास बड़ो

शिक्षानी बात करवा लाग्यो के अरे ! तू इलाहा सारस्वतनो भेटो छे अने नेत्र तारे छे नही अने कोअ मनुष्य पणु तारी पास नथी ते तू ताइं घर छोडीने रीसाधने अही केम भेटो छे ? नेत्र छे नही दिवस केम जशे ? त्यारे सूरदासे कहुं, के मे' तारा उंभर तो घर छोड्यु' नथी ! मे' तो नारायणना उपर घर छोड्यु' छे ते अथां जगततु' पालन करे छे ते भाइ' पणु करशे अने जे डोनहार हशे ते थशे. त्यारे जमीनदार कहुं, हुं' पणु ब्राह्मण छुं, दाण-रोटली भासं घर थछ छे कहे तो दावुं. त्यारे सूरदासे कहुं, हुं' तो रस्तामां आलीने लावेली रोटली नथी आतो त्यारे ते जमीनदार पोताना धरे जछ पुरी करानी अने दूध लछ जछ सूरदासने जल भरि दधने कहुं, के सूरदास ! तमे कोअ वाततुं दुःख न पामता. न्यां सुधी भगवान मने आवातुं आपशे त्यां सुधी अही हुं' तमने लावीश अने सवारि आ तलाव उपर तथा गाममां न्यां कडेशो त्यां छापड़' नाभी आपीश. पछी सवार' थयु' त्यारे ते जमीनदार आलीने कहुं, के ताइं मन कयां रहेवातुं छे ? त्यारे सूरदासे कहुं, के हुमणुं तो आ ज तलाव उपर पीपणा नीचे थोडाक दिवस रहेवातुं मन छे. त्यारे ते जमीनदार त्यां अेक जोंपडु छवाछ दीधु' अने टहल करवाने अेक चांकर रांभी दीधो. त्यार पछी अे' जमीनदार-दश-पांच जणुनी

ज्ञानी है। हमारी गाय खोय गइ हती सो बताय दीनी। सो वह सगुन में आछो जाने है। सो मैं वाकों तलाव के ऊपर पीपर के नीचे झोंपरी छावाय, वाके पास एक चाकर राखि दियो है। और नित्य पूरी, दही, दूध, पठावत हूं। सो तासों काहू कों सगुन पूछनो होय तो वाकूं जाय के पूछि आइयो। यह सुनि के सब लोग गाम के आवन लागे। सो जो कोइ पूछे तिनकों सगुन बतावे सो हाई। तब सूरदास की बड़ी पूजा चली, भीर लगी रहै। खानपान भली भांति सों आवन लाग्यो। सो तब कछुक दिन में सूरदास कों रहिवे के लिये एक बड़ो घर तलाव पर बनाय दियो, और वह झोंपरी हू दूरि कीनी। और वस्त्र, द्रव्य, बहौत वैभव भेलो भयो। सो सूरदास स्वाधी कहवाये, बहोत मनुष्य इनके सेवक भये। जाके कंठी बांधनी होय सो सूरदासको सेवक होय। सो सूरदास विरह के पद सेवक कों सुनावते। सो सब गायवे के बाजे को सरंजाम सब भेलो होय गयो। या प्रकार सूरदास तलाव पे पीपर के वृक्ष नीचे बरस अठारे के भये। सो एक दिन, रात्रि कों सोवत हते, ता समय सूरदास कों वैराग्य आयो तब सूरदासजी अपने मन में विचारे जो-देखो, मैं श्रीभगवान के मिलन अर्थ वैराग्य करि के घरसों निकस्यो हतो, सो यहां माया ने ग्रसि लियो। मोकूं अपनो जस काहे कों बढ़ावनो हतो ? जो मैं श्रीप्रभु को जस बढ़ावतो तो आछो। और यामें मेरो विगार भयो, तासों

आगण वात करी, के इलाखुनो ओटो सूरदास अहु ज्ञानी छे. अमारी गाय पोवाछ हती ते अतावी दीधी. ते शुक्रनमां साइं नखे छे. में अने तलावना उपर पीपणाना नीचे ओंपडी अनावी तेना पासे अेक आकर राभी दीधो छे. अने नित्य पुरी दही दूध मोकलुं छुं. तेथी अने शुक्रन पूछवे डोय ते तेनी पासे अंछने पूछी आवजे. अे सांलणीने अघा लोके गामना आववा लाग्या ने केछ पूछे तेने शुक्रन अतावे ते थाय. त्पारे सूरदासनी अहु पूज आली. लीड लागी रहे. आवापीवातुं सारी रीते आववा लाग्युं. त्पारे डेटलाक द्विवसमां सूरदासने रहेवाने भाटे अेक 'भोटुं' घर तलाव उपर अनावी दीधुं अने ते ओंपडी हर करी अने वस्त्र, द्रव्य अणो वैभव लेगो थयो. सूरदास स्वाधी कहेवाया. अणो मनुष्यो अेमना सेवक थया. अेने कंठी बांधवी डोय ते सूरदासने सेवक थाय. सूरदास विरहनां पद सेवकाने संलणावता तेथी गावानां वाणानो अघो साज लेगो थथ गयो. अे प्रकारे सूरदास पीपणाना वृक्ष नीचे अठार वर्षना थया त्पारे अेक द्विवसे रात्रियो सूता हुता ते समथे सूरदासने वैराग्य आव्यो. त्पारे सूरदासअे पोताना मनमां विचार्युं, के अुओ, हुं लगवाने भणवा भाटे वराग्य करीने नीकथो हुतो ते अही आवीने इसाध गयो. मारे पोतानो यश शा भाटे वधरवानो हुतो ? हुं

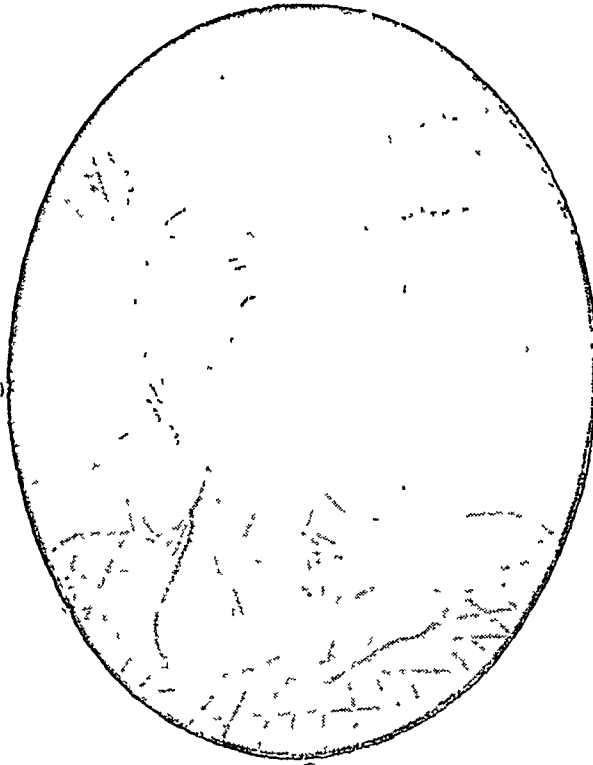
अब कब सवारो होय और मैं यहां सों कूंच करूं । सो ऐसे करत सवारो भयो । तब एक सेवक कों पठाय मातापिता कों बुलाय सब घर उनकों सोंपि दियो । पाछें सूरदास एक वस्त्र पहिर के लाठी ले के उहां ते कूंच किये । सो तब जो सेवक माया के जंजाल में हते, सो संसार में लपटे और उहांई रहे । और कितनेक सेवक जो संसार सों रहित हते, सो सूरदास के संग ही चले । सो सूरदास मनमें विचारे जो-त्रज है सो श्रीभगवान को धाम है, सो उहां चलिये । तब सूरदास उहां तें चले, सो मथुराजी में आये । तहां विश्रांत घाट पै रहिके सूरदास ने विचार कियो, जो-मैं मथुराजी में रहूंगो तो यहां हू मेरो माहात्म्य बढ़ेगो और यह श्रीकृष्ण की पुरी है, सो यहां मोकों अपनो माहात्म्य प्रगट करनो नाहीं । और संसार में अनेक लोग सुख दुःख पावें हैं सो सब पूछिबे आवेंगे । और यहां मथुरिया चौबे हैं सो यहां माहात्म्य बढ़ेगो तो ये दुख पावेंगे । तासों यहां रहनो ठीक नाहीं । सो यह विचारि के सूरदास मथुरा के और आगरे के बीचों बीच गऊघाट है तहां आयके श्रीयमुनाजी के तीर स्थल बनाय के रहें । सूरदास को कंठ बहोत सुन्दर हतो । सो गान विद्या में चतुर, और सगुन बतायबे में चतुर । सो उहां हू बहोत लोग सूरदासजी के पास आवते । उहां हूं सेवक बहोत भये । सो सूरदास जगत में प्रसिद्ध भये ।

श्रीप्रभुनो यश वधारतो तो साइं अने आमां भाइं अहित थयुं । तेथी हुवे क्यारे सवार थाय अने अर्द्धीथी हुं क्यू कइं । ऐम करतां सवार थयुं त्यारे ऐक सेवकने मोकली मातापिताने जोलापी अयुं घर ऐमने सोंपी दीधुं पछी सूरदासे ऐक वस्त्र पडेरीने लाई लधने त्यांथी क्यू करी । त्यारे जे सेवक मायाना जंजलमां हुता ते संसारमां लपटाया अने त्यांज रह्या अने केटलाक सेवक जे संसारथी रहित हुता ते सूरदासनी साथे आल्या । पछी सूरदासे मनमां विचार्युं के प्रज छे ते श्रीभगवाननुं धाम छे त्यां आदिये । त्यारे सूरदासं त्यांथी अल्या ते मथुरालमां आव्या । त्यां विश्राम घाट उपर रहीने विचार कर्ये, के हुं मथुरालमां रहीश तो अर्द्धी पणु भाइं महात्म्य वधशे अने आ श्रीकृष्णनी पुरी छे तेथी अर्द्धी मारे भाइं महात्म्य प्रकट करवुं नर्द्धी अने आ संसारमां अनेक लोक सुअहुंभ पामे छे ते जधा पूछवां आवशे अने अर्द्धी मथुरिया जोजे छे ते अर्द्धी महात्म्य वधशे तो ऐ हुंभ पामशे तेथी अर्द्धी रहेवुं ठीक नर्द्धी । ऐम विचारिने सूरदास मथुरा अने आगरानी वर्यो वर्य गऊघाट छे त्यां आवीने श्रीयमुनालना तीरे स्थल अनावीने रह्या । सूरदासने कंठ गहु सुंदर हुतो ते गान विद्यामां चतुर अने शुकन अताववामां चतुर तेथी त्यां पणु धला लोके सूरदासलनी पासे आवता । त्यां पणु सेवक धला थया ने सूरदास जगतमां प्रसिद्ध थया ।

वार्ता-प्रसंग १—सो गऊघाट ऊपर सूरदास रहते, तब कितनेक दिन पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आपु अडेल तें व्रज कू पधारत हते । सो कछुक दिनमें श्रीआचार्यजी आप गऊघाट पधारे । ता समय श्रीआचार्यजी के संग सेवकन को बहोत समाज हतो । सो सब वैष्णव सहित श्रीआचार्यजी आपु श्रीयमुनाजी में स्नान किये । ता पाछें संध्यावंदन करि पाक करन कों पधारे । और सेवक हू सब अपनी अपनी रसोइ करन लगे । ता समय एक सेवक सूरदास को तहाँ आयो । सो वाने जायके सूरदास कों खबरि करी, जो—सूरदासजी ! आज यहां श्रीवल्लभाचार्यजी पधारे हैं । जो जिनने कासी में तथा दक्षिण में मायावाद खंडन कियो है, और भक्तिमार्ग स्थापन कियो है । तब यह खुनि के सूरदास ने अपने सेवक सों कह्यो, जो—जब श्रीवल्लभाचार्यजी भोजन करिकें निश्चितता सों गादी तक्रियान के ऊपर बिराजें ता समय तू हमकों खबरि करियो । जो—मैं श्रीवल्लभाचार्यजी के दरसन कों चलूंगौ । तब वह सेवक दूरि आय के बैठि रह्यो । सो जब श्रीआचार्यजी आपु भोजन करिके गादी तक्रियान पै बिराजे, और सेवक हू सब आसपास आय बैठे, तब वा सेवक ने जाय के खबरि करी । तब सूरदास वाही समय अपने संग सगरे सेवकन कों

वार्ता-प्रसंग १-गऊघाट ऊपर सूरदास रहता. त्पारे डेटलाड द्विस पछी श्रीआचार्यल महाप्रभु पोते अउलथी प्रनमां पधारता हुता. ते डेटलाड द्विसमां श्रीआचार्यल आप गऊघाट पधार्या. ते समये श्रीआचार्यलना संगे सेवकेना भोटो समाज हुतो. ते अथा वैष्णुवा सहित श्रीआचार्यलमे पोते श्रीयमुनालमां स्नान क्युं. त्पार पछी संध्यावंदन करी पाक करवाने पधार्या. अने सेवके पलु अथा पोतपोतानी रसोइ करवा लाग्या. ते समये अक सेवक सूरदासने त्यां अ.व्यो. तेने नधने सूरदासने अणर करी, के सूरदासल ! आण अहूँ श्रीवल्लभाचार्यल पधार्या छे, के नेभले काशीमां तथा दक्षिणमां मायावाद अंडन क्यो छे अने भक्तिमार्ग स्थापन क्यो छे. त्पारे अे सांखणी सूरदासे पोताना सेवकने कहुं, के न्यारे श्रीवल्लभाचार्यल लोअन करीने निश्चितताथी गादी तक्रिया उपर बिराजे ते समये तू अभने अणर करणे. हुं श्रीवल्लभाचार्यलना दर्शने यादीश. त्पारे ते सेवक हूर आवीने पेसी रह्यो. पछी न्यारे श्रीआचार्यल आप लोअन करीने गादीतक्रिया उपर बिराज्या अने सेवके पलु अथा आसपास आवी पेठा त्पारे ते सेवके नधने अणर करी. त्पारे सूरदास तेज समये पोतानी संगे अथा सेवकेने लधने श्रीआचार्यलनां दर्शने आव्या. त्पारे

चौरासी वैष्णवन की वार्ता



सूरदास

जन्म सं० १५३५ : देहावसान सं० १६४०



लेकें श्रीआचार्यजी के दरसन कों आये । सो तब आर्यके श्रीआचार्यजी कों साष्टांग दंडवत करी । तब श्रीआचार्यजी श्रीसुख सों कहे, जो-सूर ! कछु भगवत् जस वर्णन करो । तब सूरदास ने श्रीआचार्यजी कों दंडवत् करि कह्यो, जो-महाराज ! जो आज्ञा । ता पाछें सूरदास ने यह पद श्रीआचार्यजी आगे गायो । सो पद :—

राग धनाश्री—हों हरि सब पतितन कौ नायक । को करि सके बराबरि मेरी हृते मानकौ लायक ॥१॥ जो तुम अजामिल सों कीनी सो पाती लिख पाऊं । होय विश्वास भलो जिय अपने और पतित बुलाऊं ॥२॥ सिमिट जहां तहां तें सब कोऊ आइ जूरे इकठोर । अबके इतने और मिलाऊं बेर दूसरी और ॥३॥ होडा होडी मन हुलास करि करे पाप भरि पेट । सबकों ले पायन तरि पारों यही हमारी भेट । ऐसी कितिक वनाउं प्रानपति सुमिरन व्है भयो आइ । अबकी बेर निबेर लेउ प्रभु 'सूर' पतित को टाँडो ।

फेरि दूसरो पद गायो, सो पद :—

राग धनाश्री—प्रभु हों सब पतितनकौ टीको । और पतित सब घोस चारि के हों तो जन्मत ही कौ ॥ अधिक-अजामिल गनिका तारी और पूनना ही कों । मोहि छांडि तुम और उधारे मिटे सूल क्यों जी कौ ॥ कोऊ न समरथ सुद्ध करन को खेंचि कहत हों लीको । मरियत लाज 'सूर' पतितन में कहन सबै मोहि नीकौ ।

सो सुनिके श्रीआचार्यजी आपु सूरदास सों कहे, जो-सूर है कैं ऐसो विधियात काहे कों है ? सो तासों कछु भगवल्लीला वर्णन करि ।

भावप्रकाश—ताको आसय यह है, जो-जीव श्रीभगवान सों विलुख्यो, सो तत्र पतित तो भयो । सो ताकों वहीत कहा कहनो ? तासों भगवल्लीला गावो, जासों शुद्ध होय ।

आधीन श्रीआचार्यजीने साष्टांग दंडवत् कर्यां । त्यारे श्रीआचार्यजी श्रीसुखशी कहे, के सूर ! कंभु भगवद्दश वर्णन करे । त्यारे सूरदासे श्रीआचार्यजीने दंडवत् करी कछुं, भूराज ! नेवी आज्ञा । ते पछी सूरदासे आ पद श्रीआचार्यजीनी आज्ञा गायुं । ते पद :—हों हरि सभ पतितन को टीको— (उपर लुख्यो)

पछी भीलुं पद गायुं :—प्रभु हों सभ पतितन को टीको— (उपर लुख्यो)

ये सांलणीने श्रीआचार्यजी पोते सूरदासने कहे, के सूर थधने आवो गणगणो केस थाय छे ? तेथी कंभु भगवद्दीला वर्णन करे ।

भावप्रकाश—येना आशय ये के लुव भगवानथो विधयेी त्यारे पतित तो थयो तेने भहु शुं कहेवु ? तेथी भगवद्दीला गाव नेथी शुद्ध थाय ।

तब सूरदास ने श्रीआचार्यजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! मैं कछ भगवल्लीला समुझत नाहीं हूँ । तब श्रीआचार्यजी श्रीमुख तें कहे, जो-सूर ! श्रीयसुनाजी में स्नान करि आवो, जो हम तुमकों समुझाय देंगे । तब सूरदास प्रसन्न होय कें श्रीयसुनाजी में स्नान करिके अपरस ही में श्रीआचार्यजी पास आवे । तब श्रीआचार्यजी ने कृपा करि कें सूरदास कों नाम सुनायो, ता पाछें मर्मर्पण करवायो । पाछें आप दसमस्कन्ध की अनुक्रमणिका करी हती सो सूरदास कों सुनाये ।

भावप्रकाश—अष्टाक्षर मंत्र सुनायो तासों सूरदास के सगरे जनम के दोष मिटाये, और सात भक्ति भई । पाछें ब्रह्मसंबंध करवायो, तासों सात भक्ति और नवधा भक्ति की सिद्धि भई । सो रही प्रेमलक्षणा, सो दसमस्कन्ध की अनुक्रमणिका सुनाये । तब संपूर्ण पुरुषोत्तम की लीला सूरदास के हृदय में स्थापन भई, सो प्रेमलक्षणा भक्ति सिद्ध भई ।

सो मगरी श्रीसुबोधिनीजी को ज्ञान श्रीआचार्यजी ने सूरदास के हृदय में स्थापन कियो । तब भगवल्लीला जस वर्णन करिबे को सामर्थ्य भयो । तब अनुक्रमणिका तें सगरी लीला हृदय में स्फुरी । सो कैसे जानिये ? जो श्रीआचार्यजी आप दसमस्कन्ध की सुबो-

त्यारे सूरदासे श्रीआचार्यजीने बिनती करी, के महाराज ! हुं कंछ भगवल्लीला (मां) समजतो नथी. त्यारे श्रीआचार्यजी श्रीमुखी कहे के सूर ! श्रीयसुनाजीमां स्नान करी आवो. अमे तमने समजवी दधुं. त्यारे सूरदास प्रसन्न थधने श्रीयसुनाजीमां स्नान करीने अपरसमां न श्रीआचार्यजी पासे आव्या. त्यारे श्रीआचार्यजीमे कृपा करीने सूरदासने नाम संलणाव्युं. ते पछी समर्थीषु कराव्युं पछी आवे दशमस्कंधनी अनुक्रमणिका करीने सूरदासने संलणावी.

भावप्रकाश—अष्टाक्षर मंत्र संलणाव्यो तेनाथी सूरदासना सधणा जन्मोने दोष मटाव्यो अने सात भक्ति थध. पछी ब्रह्मसंबंध कराव्युं तेनाथी सात भक्ति अने नवधा भक्तिनी सिद्धि थध. रही प्रेमलक्षणा ते दशमस्कंधनी अनुक्रमणिका संलणावी त्यारे संपूर्ण पुरुषोत्तमनी लीला सूरदासना हृदयमां स्थापन थध, तेथी प्रेमलक्षणा भक्ति सिद्ध थध.

तेथी सधणी श्रीसुबोधिनीजीजुं ज्ञान श्रीआचार्यजीमे सूरदासना हृदयमां स्थापन क्युं. त्यारे भगवल्लीला यश वर्णन करवातुं सामर्थ्य थयुं. त्यारे अनुक्रमणिकाथी पछी लीला हृदयमां स्फुरी. ते केम ज्ञानिये ? त्यां कहे छे के श्रीआचार्यजी

धिनीजी में मंगलाचरण की प्रथम कारिका किये हैं, सो कारिका कहत हैं। श्लोक :—

“ नमामि हृदये शेषे लीलाक्षीराब्धि-शायिनं ।
लक्ष्मीसहस्र-लीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम् ॥ ”

सो या मंगलाचरण के अनुमार सूरदास ने श्रीआचार्यजी के आगे यह पद करिके गायो। सो पद :—

राग विलावल—चकईरी चलि चरन सरोवर जहां नहीं प्रेम बियोग। जहां भ्रमनिशा होति नहीं कबहू सो सायर सुख योग ॥ सनकसे हंस मीनसे मुनिगन नख रवि-प्रभा प्रकास। प्रफुल्लित कमल निमिष नहीं ससि डर गुंजत निगम सुवास ॥ जिहि सर सुभग मुक्ति मुक्ताफल सुकृत विमल जल पीजे। सो सर छांडि कुबुद्धि विहंगम यहां रहि कहा कीजे ॥ जहां श्रीसहस्र सहित नित क्रीडत सोमित 'सूरदास'। अब न सुहाय विषयरस छिल्लर वा समुद्र की आस ॥

सो यह पद दसमस्कन्ध की कारिका के अनुसार किये हैं।

श्लोक—' लक्ष्मीसहस्रलीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम् । '

जैसे श्लोक में कहा है, तैसेही सूरदास ने या पद में कही, जो—

“ जहां श्रीसहस्र सहित नित क्रीडत सोमित सूरदास । ”

सो यामें कहे। तामें जानि परी, जो—सूरदास को सगरी लीला श्रीसुबोधिनीजी की स्फुरी। सो सुनिके श्रीआचार्यजी बहोत प्रसन्न भये। और जाने, जो—अब लीला को अभ्यास भयो। सो तब श्री-आचार्यजी आप श्रीमुख तें सूरदास सों आज्ञा किये, जो—सूर! कछू नंदालय की लीला गावो। तब सूरदास नें नंद महोत्सव को कीर्तन वर्णन करिके गायो। पद :—

देवगंधार—ब्रज भयो महरिके पूत जब यह वात सुनी। सुनि जानंदे सब लोग गोकुल गनित गुनी ॥ ब्रज पूरव पूरे पून्य रूपी कुल सुथिर थुनी। ग्रह लग्न

आप दशमस्कन्धनी सुषोधिनीलभां मंगलाचरणनी प्रथम कारिका करी छे ते कारिका कहीअे थीअे, श्लोक—(उपर प्रभाए) आ मंगलाचरण प्रभाए सूरदासे श्रीआचार्यलनी आगत आ पद करीने गाथुं। ते पद (उपर लुअे)

आ पद दशमस्कन्धनी कारिकाने अनुसार कथुं छे, जेस श्लोकमां कछुं छे तेमज सूरदासे आ पदमां कछुं छे, जे, जहां श्रीसहस्र सहित नित्य क्रीडत सोमित 'सूर-दास' आमां कछुं, तेमां समलय छे के सूरदासने भधी लीला श्रीसुषोधिनीलनी स्फुरी, अे सांखणीने श्रीआचार्यल भहु प्रसन्न थया, लएथुं, के लुवे लीलाने अभ्यास थयो, तयारे श्रीआचार्यलअे आपे श्रीमुखी सूरदासने आज्ञा करी के सूर!

नक्षत्र बलि सोधि कीनी वेदधुनी ॥१॥ सुनि घाईं सवे ब्रजनारि सहज सिंगार
 किये । तन पहरे नौतन चीर काजर नैन दिये ॥ कसि कंचुकि तिलक लिलाट
 सोमित हार हिये । कर कंकन कंचन थार मंगल साज लिये ॥२॥ वे अपने अपने
 मेल निकसी भांति भली । मानो लाल मुनिनकी पांति पिंजरन चूर चली ॥ वे गावे
 मंगल गीत मिलि दश पांच अली । मानो भोर भयो रवि देखि फूली कनककली
 ॥३॥ उर अंचल उडन न जान्यो सारी सुरंग सुही । मुख मांडयो रोरीरंग सेंदुर मांग
 छुही । श्रम श्रवणन तरल तरौना बेनी सिथिल गुहीं । सिर बरखत कुसुम सुदेस
 मानो मेघ फुहीं ॥४॥ पिय पहेलें पहाँची जाय अति आनंद भरी । लईं भीनर भवन
 बुलाय सब सिंसु पांय परी ॥ एक वदन उघारि निहारति देति असीस खरी ।
 चिरजीयो यसोदानंद पूरन काम करी ॥५॥ धनि धनि दिवस धनि राति धनि यह
 पहर घरी । धनि धनि महरिजु की कुखि भाग-सुहाग भरी ॥ जिन जायो एसो पूत
 सब सुख फलन फरी । थिर थाप्यो सब परिवार मनकी सूल हरी ॥६॥ सुनि ग्वालन
 गाय बहोरि बालक बोलि लये । गुहि गुंजा घसि वन-घातु अंग अंग चित्र ठये ॥
 सिर दधि माखन के माट गावत गीत नये । डफ झांझ मृदंग बजावत सब नंद भवन
 गये ॥७॥ एक नाचत करत कोलाहल छिरकत हरद दहीं । मानों बरखत भादों
 मास नदी घृत दूध बही ॥ जाको जहीं जहीं चित्त जाय कौतुक तहीं तहीं । रस
 आनंद मगन गुवाल काहू वदत नहीं ॥८॥ एकु घाइ नंदजू पे जाइ पुनि पुनि पांय
 परे । एक आपु आपु हि मांझ हँसि हँसि अंक भरे ॥ एक अंबर सबहि उतारि देत
 निशंक खरे । एक दयि रोचन और दूध सबन के सीस घरे ॥९॥ तब नंद न्हाय भये
 ठाडे अरु कुश हाथ धरे । घसि चंदन चारु मंगाय विप्रन तिलक करे ॥ नंदी मुख
 पितर पुजाय अंतर सोच हरे । वर गुरुजन द्विजन पहराय सबन के पांय परे ॥१०॥
 गन गैया गिनी न जाय तरुन सुबच्छ वहीं । नित चरे जमुना के फाल दूने दूध
 चढी ॥ खुर रूपे तांबे पीठ सोने सींग महीं । ते दीनी द्विजन अनेक हरखि अशीष
 पढी ॥११॥ सब अपने मित्र सु वंधु हँसि हँसि बोलि लिये । मथि मृगमद मलय-
 कपूर माथे तिलक किये ॥ उर मनिमाला पहराय वसन विचित्र दिये । मानों
 बरखत मास अषाढ दादुर मोर जिये ॥१२॥ वर बंदी मागध सूत आंगन भवन
 भरे । ते बोले लेले नाम हित कोउ ना विसरे ॥ जिन जो जाच्यो सो दीनो
 रस नंदराय ढरे । अति दान मान परधान पूरन काम करे ॥१३॥ तब रोहिनी अंबर
 मंगाइ सारी सुरंग घनी । ते दीनी वधुन बुलाय जेसी जाय बनी । वे अति आनंदित
 बहोरि निज ग्रह गोपघनी । मिलि निकसी देति असीस रुचि अपनी अपनी ॥१४॥
 तब घरघर भेरि मृदंग पटह निसान वजे । वर वांधी वंदनमाल अरु ध्वज कलस
 सजे ॥ तब ता दिन तैं वे लोग सुखसंपति ना तजे । सुनि 'सूर' सबनकी यह गति
 जिन हरि चरन भजे ॥

३० नंदासयनी दीसा गांव. त्यारे सूरदासे नंदमहोत्सवतुं डीर्तन वर्णन करीने गाथुं.
 ते पदः—राग देवगंधार 'प्रण लयो महुरि डे पूत' (उपर लुग्या)

सो यह बड़ी बधाई गई। सो श्रीजंदरायजी के घरको वर्णन किये, तहां ताई तो श्रीआचार्यजी आप सुने। ता पाछें गोपीजन के घर को वर्णन करन लागे तब श्रीआचार्यजी आपु श्रीमुख तें सूरदास सों कहे जो—

‘ सुन सूर सवन की यह गति जो हरि-चरन भजे । ’

सो या भोग की तुक आपु कहि कें सूरदास कों चुप करि दिये ।

भावप्रकाश—सो यातें जो—ब्रजभक्तन को आनंद है सो भगवदीयन के हृदय में अनुभव योग्य है। सो वाहिर प्रकास होय तासों सूरदास को थांभि दिये। और सूरदासजी के हृदय में यह भी आयो हतो, जो—मैंने सेवक किये हैं तिनकी कहा गति होयगी ? तब श्रीआचार्यजी ने कही :—‘ सुन सूर ! सवन की यह गति जिन हरिचरन भजे । ’

तब श्रीआचार्यजी आप प्रसन्न होय के कहे, जो—मानों सूर नंदालय की लीला में निकट ही ठाड़े हैं। सो ऐसौ कीर्तन गायो। ता पाछें श्रीआचार्यजी ने सूरदास कूं ‘ पुरुषोत्तम सहस्रनाम ’ सुनायो। तब सगरे श्रीभागवत की लीला सूरदास के हृदय में स्फुरी। सो सूरदास ने प्रथम स्कंध श्रीभागवत सों द्वादश स्कंध पर्यंत कीर्तन वर्णन किये। तामें अनेक दानलीला, मानलीला आदि वर्णन किये हैं। ता पाछें गऊघाट ऊपर श्रीआचार्यजी आप तीन दिन रहे। सो तब

ये भोटी वधाध गाध. तेमां श्रीनंहरायलना धरतुं वलुन कथुं त्यां सुधी तो श्री आचार्यल आपे सांललथुं. त्पारपडी गोपीजनना धरतुं वलुन करवा लाग्या त्पारे श्रीआचार्यल आपे श्रीसुभथी सूरदासने कलुं, के “ सुन ‘ सूर ’ सगनडी यह गति जे हरि चरण लने, आ लागनी तुक पोते कडुनि सूरदासने थूप करी दीधा.

भावप्रकाश—ते ये भाटे के ब्रजभक्ततोना आनंद छे ते भगवदीयाना हृदयमां अनुभव (करवा) योग्य छे. अहार प्रकाश थाय तेथी सूरदासने रोकी दीधा. वणी सूरदासना हृदयमां ये यणु आण्युं हतुं के मे सेवक कथां छे तेनी शी गति थशे. त्पारे श्रीआचार्यलये कलुं, ‘ सुन सूर सगनडी यह गति जिन हरि चरण लने ’

त्पारे श्रीआचार्यल आप प्रसन्न थधने कहे, के जल्लो, सूर नंदालयनी दीलानी पासे न उला छे. येवुं कीर्तन गाथुं. ते पडी श्रीआचार्यलये सूरदासने ‘ पुरुषोत्तमसहस्रनाम ’ संलणायुं. त्पारे थधी श्रीभागवतनी दीला सूरदासना हृदयमां स्फुरी. तेथी सूरदासने भागवतना प्रथम स्कंधथी द्वादश स्कंध पर्यंतनां कीर्तन वलुन कथां. ते पडी गौघाट उपर श्रीआचार्यल आप त्रणु दिवस रथ्या. त्पारे

सूरदासने जितने सेवक किये हते, सो सबकों श्रीआचार्यजी के सेवक कराये । ता पाछें श्रीआचार्यजी आप ब्रज में पधारे । तब सूरदास हू श्रीआचार्यजी के संग ब्रज में आये । सो प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप गोकुल पधारे । तब श्रीआचार्यजी ने श्रीमुख साँ कह्यो जो-सूर ! श्रीगोकुल को दरसन करो । तब सूरदासजी ने श्रीगोकुल को साष्टांग दंडवत किये । सो दंडवत करत ही श्रीगोकुल की लीला सूरदास के हृदय में स्फुरी । तब सूरदासजी अपने मन में विचारे, जो-श्रीगोकुल की लीला मैं बरनन कैसें करौं ? सो काहे तें, जो-श्री-आचार्यजी को मन श्रीनवनीतप्रियजी के स्वरूप के ऊपर आसक्त है, सो श्रीनवनीतप्रियजी को कीर्तन श्रीगोकुल की बाललीला को बरनन, ऐसो पद सूरदासजी ने गायो । सो पद—

राग बिलावल—सोभित कर नवनीत लिए ॥ घुटुरुवन चलन रेनु तनु मंडित मुख दधि लेप किए ॥१॥ चारु कपोल लोल लोचन छवि गोरुचन कौ तिलक दिए । लट लटकनि मानो मत्त मधुपगन मादक मधुहिं पिये ॥२॥ कटुला कंठ वज्र केहरि-नख राजत हैं सखि रुचिर हिए । धन्य 'सूर' एको पल यह सुख कहा भयो सतकल्प जिए ॥३॥

सो यह पद सुनिके श्रीआचार्यजी आप सूरदास के ऊपर बहोत प्रसन्न भये । सो ता पाछें सूरदास ने और हू पद बाललीला के श्रीआचार्यजी को सुनाये । ता पाछें श्रीआचार्यजीने विचारयो-जो श्रीगोवर्द्धननाथजी को मंदिर तो समरायो, और सेवा हू को

सूरदासे जेहला सेवक कर्था हुता ते अधाने श्रीआचार्यलना सेवक कराव्या, ते पछी श्रीआचार्यल पाते प्रजभां पधार्था. त्यारे सूरदास पणु श्रीआचार्यलना संजे प्रजभां आव्या. ते प्रथम श्रीआचार्यल महाप्रभु आप गोकुल पधार्था. त्यारे श्रीआचार्यलये श्रीमुखी कहुं, के सूर श्रीगोकुलनां दर्शन करे. त्यारे सूरदासलये श्रीगोकुलने साष्टांग दंडवत कर्था. त्यारे दंडवत करतान् श्रीगोकुलनी लीला सूरदासना हृदयमा स्फुरी. त्यारे सूरदासे पाताना मनमां विचार्युं के श्रीगोकुलनी-लीला हुं वणुन केवी रीते करूं ? केभके श्रीआचार्यलनुं मन श्रीनवनीतप्रियलना स्वरूपे उपर आसक्त छे तेथी श्रीनवनीतप्रियलनुं कीर्तन श्रीगोकुलनी बाललीलातुं वणुन येथुं पद सूरदासलये गाथुं ते पद-शोभित कर नवनीत सिधे. (उपर लुभ्ये) आ पद सांलणीने श्रीआचार्यल आप सूरदासना उपर वणुन प्रसन्न थया. ते पछी सूरदासे भीज पणु पद बाललीलानां श्रीआचार्यलने संलणाव्यां. पछी श्रीआचार्यलये विचार्युं के श्रीगोवर्द्धननाथलनुं मंदिर तो सिद्ध कराव्युं अने सेवातुं पणु अधाणु थयुं.

मंडान भयो । तातें सूरदास कूं श्रीनाथजी के पास राखिये । तब समे समे के सगरे कीरतन को मंडान ओर भयो चाहिये । सो आगे वैष्णवजन सूरदास के पद गाय के कृतार्थ बहोत होंगये । तब यह विचारिके सूरदास कूं संग लेके श्रीआचार्यजी आप श्रीगोवर्द्धन पधारे, सो ऊपर पधारके श्रीनाथजी के दरसन किये । तब श्रीआचार्यजी आप श्रीमुख सों सूरदास सों कहे, जो—सूर ! श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करो और कीर्तन गावो । ’ तब सूरदासजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये । ता पाछें सूरदासजी ने प्रथम विज्ञप्ति को पद दैन्यता सहित गायो । सो पद—

राग धनाश्री—अब हौं नाच्यो बहुत गोपाल । काम क्रोध को पहरि चोलना कंठ विषय की माल ॥ १ ॥ महा मोह के नूपुर बाजे निंदा सब्द रसाल । भरम भरयो मन भयो पखावज उपर हंस-गति चाल ॥ २ ॥ तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधि के नाल । माया को कटि फेंटा बांध्यो लोभ तिलक दियो भाल ॥ ३ ॥ कोटिक कला कालि दिखराई जल थल सुधि नाहिं काल । ‘सूरदास.’ की सबै अविद्या दूरि करहु नंदलाल ॥ ४ ॥

सो यह पद सूरदासजी ने श्रीनाथजी कों सुनायो । सो सुनि के श्रीआचार्यजी आप सूरदास सों कहे, जो—सूरदास ! अब तो तिहारे मन में कछू अविद्या रही नाहीं, जो—तिहारी अविद्या तो प्रथम ही श्रीनाथजी ने दूरि कीनी है । तासों अब तुम भगवल्लीला गावो जामें माहात्म्य पूर्वक स्नेह होय ।

भावप्रकाश—परंतु भगवदीय जितने हैं सो तितनेन की यही बोली

तेथी सूरदासने श्रीनाथजी पास राखिये । त्तारे समय समयना पधा कीर्तनातुं अंधाणु पणु थणु जेधये । तेथी आगण अहु वैष्णुयो सूरदासनां पद गाधने कृतार्थ थरो, येम पियारीने सूरदासने साथे लधने श्रीआचार्यजी आप श्रीगोवर्द्धन पधार्या । त्यां उपर पधारिने श्रीनाथजीनां दर्शन कर्यां, त्तारे श्रीआचार्यजी आप श्रीमुखी सूरदासने कहे, के सूर ! श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन करो अपने कीर्तन गाव । त्तारे सूरदासजीये श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन कर्यां ते पछी सूरदासजीये प्रथम विज्ञप्ति पद दैन्यता सहित गावुं ते पद—अपणुं नाच्यो अहुत गोपाल (उपर लुग्यो) । आ पद सूरदासजीये श्रीनाथजीने संभणान्युं, ये संभणीने श्रीआचार्यजी आप सूरदासने कहे, के सूरदास ! हवे तो तभारा मनमां कंठ अविद्या रही नथी, तभारी अविद्या तो प्रथम न श्रीनाथजीये दूर करी छे तेथी हवे तमे भगवल्लीला गावो जेमां माहात्म्य पूर्वक स्नेह होय ।

सूरदामने जितने सेवक किये होते, सो सबकों श्रीआचार्यजी के सेवक कराये । ता पाछें श्रीआचार्यजी आप ब्रज में पधारे । तब सूरदाम हू श्रीआचार्यजी के संग ब्रज में आये । सो प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप गोकुल पधारे । तब श्रीआचार्यजी ने श्रीमुख सों कह्यो जो-सूर ! श्रीगोकुल को दरभन करो । तब सूरदासजी ने श्रीगोकुल कों साष्टांग दंडवत किये । सो दंडवन करत ही श्रीगोकुल की लीला सूरदास के हृदय में स्फुरी । तब सूरदासजी अपने मन में विचारे, जो-श्रीगोकुल की लीला मैं बरनन कैसें करौं ? सो काहे तैं, जो-श्री-आचार्यजी को मन श्रीनवनीतप्रियजी के स्वरूप के ऊपर आसक्त है, सो श्रीनवनीतप्रियजी को कीर्तन श्रीगोकुल की बाललीला को बरनन, ऐसो पद सूरदासजी ने गायो । सो पद—

राग बिलावल—सोभित कर नवनीत लिए ॥ घुट्टुहवन चलत रेनु तनु मंडित
मुखं दधि लेप किए ॥२॥ चारु कपोल लोल लोचन छवि गोरुचन कौ तिलक दिए ।
लट लटकनि मानों मत्त मधुपगन मादक मधुहिं पिए ॥२॥ कठुला कंठ वज्र केहरि-
नख राजत हैं सखि रुचिर हिए । घन्य 'सूर' एको पल यह सुख कदा भयो
सतकल्प जिए ॥३॥

सो यह पद सुनिके श्रीआचार्यजी आप सूरदास के ऊपर बहोत प्रसन्न भये । सो ता पाछें सूरदास ने और हू पद बाललीला के श्रीआचार्यजी कों सुनाये । ता पाछें श्रीआचार्यजीने विचारयो-जो श्रीगोवर्द्धननाथजी को मंदिर तो सभरायो, और सेवा हू को

सूरदासे जेहना सेवक कर्था उता ते अधाने श्रीआचार्यलना सेवक कराव्या, ते पछी श्रीआचार्यल पाते प्रजभां पधार्था, त्यारे सूरदास पणु श्रीआचार्यलना संगे प्रजभां व्याव्या, ते प्रथम श्रीआचार्यल महुप्रभु आप गोकुल पधार्था, त्यारे श्रीआचार्यलये श्रीमुखी कहुं, के सूर श्रीगोकुलनां दर्शन करे। त्यारे सूरदासलये श्रीगोकुलने साष्टांग दंडवत कर्था, त्यारे दंडवत करतां श्रीगोकुलनी लीला सूरदासना हृदयमा स्फुरी, त्यारे सूरदासे पाताना मनमां विचार्युं के श्रीगोकुलनी-लीला हुं वलुंन केवी रीते कर्? केभके श्रीआचार्यलनुं, मन श्रीनवनीतप्रियलना स्वरूपे उपर आसक्त छे तेथी श्रीनवनीतप्रियलनुं कीर्तन श्रीगोकुलनी आलदीलातुं वलुंन अयुं पद सूरदासलये गायुं ते पद-शोभित कर नवनीत सिधे, (उपर लुंयो) व्या पद सांभलीने श्रीआचार्यल आप सूरदासना उपर अहुं प्रसन्न थया, ते पछी सूरदासे भीज पणु पद आलदीलानां श्रीआचार्यलने संभजाव्यां, पछी श्रीआचार्यलये विचार्युं के श्रीगोवर्द्धननाथलनुं मंदिर तो सिद्ध कराव्युं अने सेवातुं पणु अधाणु थयुं.

मंडान भयो । तातें सूरदास कूं श्रीनाथजी के पास राखिये । तब समे समे के सगरे कीरतन को मंडान ओर भयो चाहिये । सो आगे वैष्णवजन सूरदास के पद गाय के कृतार्थ बहोत होंगो । तब यह विचारिके सूरदास कूं संग लेके श्रीआचार्यजी आप श्रीगोवर्द्धन पधारे, सो ऊपर पधारके श्रीनाथजी के दरमन किये । तब श्रीआचार्यजी आप श्रीसुख सों सूरदास सों कहे, जो—सूर ! श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करो और कीर्तन गावो ।’ तब सूरदासजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरमन किये । ता पाछें सूरदासजी ने प्रथम विज्ञप्ति को पद दैन्यता सहित गायो । सो पद—

राग धनार्थ—अब हौं नाच्यो बहुत गोपाल । काम क्रोध कौ पहरि चोलना कंठ विषय की माल ॥ १ ॥ महा मोह के नूपुर बाजे निदा सब्द रसाल । भरम भग्यो मन भयो पखावज उपर हंस-गति चाल ॥ २ ॥ तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधि के ताल । माया कौ कटि फेंटा बांध्यो लोभ तिलक दियो भाल ॥ ३ ॥ कोटिक कला काछि दिखराई जल थल सुधि नाहिं काल । ‘सूरदास.’ की सबै अविद्या दूरि करहु नंदलाल ॥ ४ ॥

सो यह पद सूरदासजी ने श्रीनाथजी कों सुनायो । सो सुनि के श्रीआचार्यजी आप सूरदास सों कहे, जो—सूरदास ! अब तो तिहारे मन में कछू अविद्या रही नाहीं, जो—तिहारी अविद्या तो प्रथम ही श्रीनाथजी ने दूरि कीनी है । तासों अब तुम भगवल्लीला गावो जामें माहात्म्य पूर्वक स्नेह होय ।

भावप्रकाश—परंतु भगवदीय जितने हैं सो तितनेन की यही बोली

तेथी सूरदासने श्रीनाथल पास राखिये । त्तारे समय समयना पधरा कीर्तनानुं अंधालु पलु थपुं जेधये । तेथी आगण अहु वैष्णवो सूरदासनां पद गाधने कृतार्थ थरो । येम विचारिने सूरदासने साथे लधने श्रीआचार्यल आप श्रीगोवर्द्धन पधार्या । त्यां उपर पधारिने श्रीनाथलनां दर्शन कर्या । त्तारे श्रीआचार्यल आप श्रीसुभथी सूरदासने छे, के सूर ! श्रीगोवर्द्धननाथलनां दर्शन करे । अने कीर्तन गाव । त्तारे सूरदासलये श्रीगोवर्द्धननाथलनां दर्शन कर्या ते पछी सूरदासलये प्रथम विज्ञप्तिनुं पद दैन्यता सहित गायुं ते पद—अअहो नान्धो अहुत गोपाल (उपर लुओ) । आ पद सूरदासलये श्रीनाथलने संलगाव्युं, ये सांलणीने श्रीआचार्यल आप सूरदासने छे, के सूरदास ! हुवे तो त्तमारा मनमां कंध अविद्या रहुी नथी । त्तमारी अविद्या तो प्रथम न श्रीनाथलये दूर करी छे तेथी हुवे त्तमे लगवल्लीला गावो जेमां माहात्म्य पूर्वक स्नेह होय ।

है जो अपने को हीन कहत हैं । सो यह भगवदीयन को लक्षण है । और जो कोई अपने को आछो कहै और आपुनी बड़ाई करे, सो भगवान तें सदा बहिर्मुख है ।

तब श्रीआचार्यजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी के आगे सूरदासजी ने माहात्म्य स्नेह युक्त कीर्तन किये । सो पद—

राग गौरी—कौन सुकृत इन ब्रजवासिन कौ बदत विरंचि सिव सेष । श्रीहरि, जिनके हेत प्रगटे मानुष-वैस ॥ ध्रुव ॥ ज्योति रूप जग-घाम जगतगुरु जगत-पिता जगदीस । जोग जग्य जप तप व्रत दुर्लभ सो गृह गोकुल-इस ॥१॥ जाके उदर लोक त्रय, जल थल पंच तत्त्व चोखान । बालक है झूलत ब्रज पलना जसुमति भवन-निधान ॥ २ ॥ इकइक रोम कृप विराट सम आनंद कोटि ब्रह्मांड । लिए उछंग ताहि मात यसोदा अपने भरि भुज-दंड ॥ ३ ॥ रवि-ससि कोटि कला सम लोचन त्रिविध तिमिर भजि जात । अंजन देत हेत सुत के चख लेकर काजर मात ॥ ४ ॥ क्षिति मिति त्रिपद करी करुनामय बलि छलि दियो है पतार । देहरी उलंघि सकत नहीं सो प्रभु खेलत नंद के द्वार ॥ ५ ॥ अनुदिन खवत सुधारस पंचम चिंतामनि सी धेनु । सो त्यजि जसुमति कौ पय पीवत भक्तन कौ सुख देनु ॥ ६ ॥ वेद वेदान्त उपनिषद् पटरस अरपे भुगते नाहिं । सो हरि ग्वाल-बाल मंडल में हँसि हँसि जूठनि खाहिं ॥ ७ ॥ कमलानायक वैकुंठ दायक सुख दुख जिनके हाथ । कांध कमरिया हाथ लकुटिया नग्न पद, विहरत वन बच्छ साथ ॥ ८ ॥ करन हरन प्रभुदाता भुका विश्वंभर जग जानि । ताहि लगाइ माखन की चोरी बांध्यौ नंदजू की रानि ॥ ९ ॥ बकी बकासुर सकट तृणावर्त अघ धेनुक वृषभास । कंस कैसी कौ यह गति दीनी राखे चरन निवास ॥१०॥ भक्त बछल हरि पतित उद्धारन रहे सकल भरिपूर । मारग रोकि परयो हरि-द्वारे पतित सिरोमनि 'सूर' ॥११॥

सो यह पद सुनिकें श्रीआचार्यजी आप बहोत प्रसन्न भये ।

भावप्रकाश—क्यों जो-जैसो श्रीआचार्यजी आपु पुष्टिमार्ग प्रगट किये, ताही अनुसार सूरदासजी ने यह कीर्तन गायो । सो श्रीआचार्यजी के मारग को कहा स्वरूप है ? जो माहात्म्य ज्ञान पूर्वक दृढ़ स्नेह सो सर्वोपरि है, सो

भावप्रकाश—परंतु भगवदीय नेटवा छे ते अधानी ओज पोली छे डे पोताने हीन डडे छे. ते भगवदीयोनुं लक्षण छे. अने जे डोछ पोताने सारे डडे अने पोतानी वडाछ करे ते भगवानथी सदा अहिर्भु छे.

त्यारे श्रीआचार्यजी अने श्रीगोवर्द्धननाथजीना आगण सूरदासे माहात्म्य स्नेह युक्त कीर्तन कर्यां. ते पद-कौन सुकृत इन अजपासिन डे. (उपर लुआ) ओ सांलणीने श्रीआचार्यजी आप अहु प्रसन्न थया.

भावप्रकाश—डेभ जे, जेवे श्रीआचार्यजीये पोते पुष्टिमार्ग प्रकट कर्यो तेज अनुसार सूरदासजीये आ कीर्तन गाथुं. श्रीआचार्यजीना मार्गनुं शुं स्वरूप छे ?

ठाकुरजी कों बहोत प्रिय हैं । परन्तु जीव माहात्म्य राखे । सो काहेतें ? जो-
माहात्म्य विना अपराध को भय मिट जाय । तासों प्रथम दसा में माहात्म्य युक्त
स्नेह आवश्यक चाहिये । और ब्रजभक्तन को स्नेह है सो सर्वोपरि है । तासों
भक्तन के स्नेह के आगे श्रीठाकुरजी को माहात्म्य रहत नाही । सो ठाकुरजी स्नेह
के बस होय भक्तन के पाछें २ डोलत हैं । सो जहां ताई एसो स्नेह नाही होय
तहां ताई माहात्म्य राखनो । सो जब स्नेह को नाम ले के माहात्म्य छोड़े और
श्रीठाकुरजी के आगे बैठे, बात करे और पीठि देय तो भ्रष्ट होय जाय । तासों
माहात्म्य विचारे और अपराध सों डरपे, तो कृपा होय । और जब (सर्वोपरि)
स्नेह होयगो तब आपही तें स्नेह एसो पदार्थ है, जो-माहात्म्य कूं छुड़ाय
देयगो । सो दसम स्कंध में वरनन है, जो-श्रीभगवानने बारवार माहात्म्य ब्रजभक्तन
कों और श्रीयसोदाजी कों दिखायो । सो पूतना बध करि, सकट तृनावर्त करि,
यमलार्जुन करि, बकासुर, धेनुक, कालीदमन करिकें लीला में माहात्म्य दिखायो ।
परंतु ब्रजभक्तन को स्नेह परम अद्भुत अनिर्वचनीय है । तासों माहात्म्य तथा
ईश्वरभाव न भयो । सो एसो स्नेह प्रभु कृपा करि दान करें ताकों आपही तें
माहात्म्य छूटि जायगो । और जाको स्नेह पति, पुत्र, स्त्री, कुटुंब में तथा द्रव्य में
है, और अपने देह सुख में है सो भगवान को माहात्म्य छोड़ि लौकिक रीति करे

जे माहात्म्य ज्ञानपूर्वक दृढ स्नेह सर्वोपरि छे ते श्रीठाकुरजीने बहुत प्रिय छे परंतु एव
माहात्म्य राखे । केमडे ? माहात्म्य विना अपराधनो भय भटी नय । तेथी प्रथम दशमां
माहात्म्ययुक्त स्नेह आवश्यक जेधये । अने ब्रजभक्तनो स्नेह छे ते सर्वोपरि छे । तेथी
भक्तनो स्नेहनी आगण श्रीठाकुरजीनुं माहात्म्य रहेंतुं नथी । श्रीठाकुरजी स्नेहने वश
थछ भक्तनो पाछण पाछण इरे छे । तेथी ज्यां सुधी जेवो स्नेह न थाय त्यां सुधीं
माहात्म्य राखवुं । जे स्नेहनुं नाम लधने माहात्म्य छोडे अने श्रीठाकुरजीनी आगण
जेसे, बात करे अने पीठि दे तो भ्रष्ट थछ नय । तेथी माहात्म्य विचारे अने अपराधनी
उरे तो कृपा थाय । अने एव ने सर्वोपरि स्नेह थशे त्यारे आपमेणे ज स्नेह जेवो
पदार्थ छे के माहात्म्यने छोडानी हेसे । दशमस्कंधमां वर्णन छे के श्रीभगवाने बारवार
माहात्म्य ब्रजभक्तनो अने श्रीयसोदाजीने हेभाउथुं । पूतना बध करीने, सकट तृणावर्त
बध करीने, यमलार्जुननो (उद्धार) करीने, बकासुर, धेनुक, कालीदमन (लीला) करीने
लीलां माहात्म्य हेभाउथुं । परंतु ब्रजभक्तनो स्नेह परम अद्भुत अनिर्वचनीय छे
तेथी माहात्म्य तथा ईश्वरभाव न थयो । जेवो स्नेह प्रभु कृपा करीने दान करेतेने
आपमेणे ज माहात्म्य छुटीं नशे । अने जेनो स्नेह पति, पुत्र, स्त्री, कुटुंबमां तथा

है जो अपने को हीन कहत हैं। सो यह भगवदीयन को लक्षण है। और जो कोई अपने को आछो कहै और आपुनी बड़ाई करे, सो भगवान तें सदा बहिर्मुख है।

तब श्रीआचार्यजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी के आगे सूरदासजी ने माहात्म्य स्नेह युक्त कीर्तन किये। सो पद—

राग गौरी—कौन सुकृत इन ब्रजवासिन को वदत विरंचि सिव सेष। श्रीहरि जिनके हेत प्रगटे मानुष-वेष ॥ ध्रुव ॥ ज्योति रूप जग-धाम जगतगुरु जगत-पिता जगदीस। जोग जग्य जप तप व्रत दुर्लभ सो गृह गोकुल-इस ॥१॥ जाके उदर लोक त्रय, जल थल पंच तत्त्व चोखान। बालक है झूलत ब्रज पलना जसुमति भवन-निधान ॥ २ ॥ इकइक रोम कूप विराट सम आनंद कोटि ब्रह्मांड। लिए उलंग ताहि मात यसोदा अपने भरि भुज-दंड ॥ ३ ॥ रवि-ससि कोटि कला सम लोचन त्रिविध तिमिर भजि जात। अंजन देत हेत सुत के चख लेकर काजर मात ॥ ४ ॥ क्षिति मिति त्रिपद करी करुनामय बलि छलि दियो है पतार। देहरी उलंघि सकत नहीं सो प्रभु खेलत नंद के द्वार ॥ ५ ॥ अनुदिन खवत सुधारस पंचम चिंतामनि सी धेनु। सो त्यजि जसुमति को पय पीवत भक्तन को सुख देनु ॥ ६ ॥ वेद वेदान्त उपनिषद् षट्तरस अरपे भुगते नाहिं। सो हरि ग्वाल-बाल मंडल में हंसि हंसि जूठनि खाहिं ॥ ७ ॥ कमलानायक वैकुण्ठ दायक सुख दुख जिनके हाथ। कांध कमरिया हाथ लकुटिया नग्न पद, बिहरत बन वच्छ साथ ॥ ८ ॥ करन हरन प्रभुदाता भुक्ता विश्वंभर जग जानि। ताहि लगाइ माखन की चोरी बांध्यो नंदजू की रानि ॥ ९ ॥ बकी वकासुर सकट तृणावर्त अघ धेनुक वृषभास। कंस केसी को यह गति दीनी राखे चरन निवास ॥१०॥ भक्त बछल हरि पतित उद्धारन रहे सकल भरिपूर। मारग रोकि परयो हरि-द्वारे पतित सिरोमनि 'सूर' ॥११॥

सो यह पद सुनिकें श्रीआचार्यजी आप बहोत प्रसन्न भये।

भावप्रकाश—क्यों जो-जैसो श्रीआचार्यजी आपु पुष्टिमार्ग प्रगट किये, ताही अनुसार सूरदासजी ने यह कीर्तन गायो। सो श्रीआचार्यजी के मारग को कहा स्वरूप है? जो माहात्म्य ज्ञान पूर्वक दृढ़ स्नेह सो सर्वोपरि है, सो

भावप्रकाश—परंतु भगवदीय नेटला छे ते अधानी अेन जोली छे डे पोताने हीन कडे छे. ते भगवदीयानु' लक्षण छे. अने जे कोछ पोताने सारे कडे अने पोतानी वडाछ करे ते भगवानथी सदा षड्भुंछ छे.

त्यारे श्रीआचार्यजी अने श्रीगोवर्द्धननाथजीना आगण सूरदासे माहात्म्य स्नेह युक्त कीर्तन कर्था. ते पद-कौन सुकृत धन अणभासिन के. (उपर लुब्धे) अे सांभलीने श्रीआचार्यजी आप आहु प्रसन्न थया.

भावप्रकाश—डेभ जे, जेवे श्रीआचार्यजी अे पोते पुष्टिमार्ग प्रकट कर्था तेन अनुसार सूरदासजी अे आ कीर्तन गायु. श्रीआचार्यजीना मार्गनु' शु' स्वरूप छे ?

ठाकुरजी कों बहोत प्रिय हैं । परन्तु जीव माहात्म्य राखे । सो काहेतें ? जो-
माहात्म्य विना अपराध को भय मिट जाय । तासों प्रथम दसा में माहात्म्य युक्त
स्नेह आवश्यक चाहिये । और ब्रजभक्तन को स्नेह है सो सर्वोपरि है । तासों
भक्तन के स्नेह के आगे श्रीठाकुरजी को माहात्म्य रहत नाहीं । सो ठाकुरजी स्नेह
के बस होय भक्तन के पाछें २ डोलत हैं । सो जहां ताई एसो स्नेह नाहीं होय
तहां ताई माहात्म्य राखनो । सो जब स्नेह को नाम ले के माहात्म्य छोड़े और
श्रीठाकुरजी के आगे बैठे, बात करे और पीठि देय तो अष्ट होय जाय । तासों
माहात्म्य विचारे और अपराध सों डरपे, तो, कृपा होय । और जब (सर्वोपरि)
स्नेह होयगो तब आपही तें स्नेह एसो पदार्थ है, जो-माहात्म्य कूं छुड़ाय
देयगो । सो दसम स्कंध में वरनन है, जो-श्रीभगवानने वारवार माहात्म्य ब्रजभक्तन
कों और श्रीयसोदाजी कों दिखायो । सो पूतना वध करि, सकट तृणावर्त करि,
यमलार्जुन करि, बकासुर, धेनुक, कालीदमन करिकें लीला में माहात्म्य दिखायो ।
परन्तु ब्रजभक्तन को स्नेह परम अद्भुत अनिर्वचनीय है । तासों माहात्म्य तथा
ईश्वरभाव न भयो । सो एसो स्नेह प्रभु कृपा करि दान करें ताकों आपही तें
माहात्म्य छुटि जायगो । और जाको स्नेह पति, पुत्र, स्त्री, कुटुंब में तथा द्रव्य में
है, और अपने देह सुख में है सो भगवान को माहात्म्य छोड़ि लौकिक रीति करे

जे माहात्म्य ज्ञानपूर्वक दृढ स्नेह सर्वोपरि छे ते श्रीठाकुरजीने बहुत प्रिय छे परन्तु एव
माहात्म्य राखे । केमके ? माहात्म्य विना अपराधनो लय मटी नय । तेथी प्रथम दशामां
माहात्म्ययुक्त स्नेह आवश्यक लेधये । अने ब्रजभक्तनो स्नेह छे ते सर्वोपरी छे । तेथी
भक्तनो स्नेहनी आगण श्रीठाकुरजीतुं माहात्म्य रहेंतुं नथी । श्रीठाकुरजी स्नेहने वश
थध भक्तनो पाछण पाछण इरे छे । तेथी ज्यां सुधी जेवो स्नेह न थाय त्यां सुधी
माहात्म्य राखतुं । जे स्नेहतुं नाम लधने माहात्म्य छोडे अने श्रीठाकुरजीनी आगण
जैसे, बात करे अने पीठि दे तो अष्ट थध नय । तेथी माहात्म्य विचारे अने अपराधथी
उरे तो कृपा थाय । अने एव ने सर्वोपरी स्नेह थशे त्यारे आपमेणे न स्नेह जेवो
पदार्थ छे के माहात्म्यने छोडावी दशे । दशमस्कंधमां वर्णन छे के श्रीभगवाने वारंवार
माहात्म्य ब्रजभक्तनो अने श्रीयसोदाजीने देखाड्युं । पूतना वध करीने, सकट तृणावर्त
वध करीने, यमलार्जुननो (उदार) करीने, बकासुर, धेनुक, कालीदमन (लीला) करीने
लीलामां माहात्म्य देखाड्युं । परन्तु ब्रजभक्तनो स्नेह परम अद्भुत अनिर्वचनीय छे
तेथी माहात्म्य तथा ईश्वरभाव न थयो । जेवो स्नेह प्रभु कृपा करीने दान करेतेने
आपमेणे न माहात्म्य छुटी नशे । अने जेते स्नेह पति, पुत्र, स्त्री, कुटुंबमां तथा

तो श्रीभगवान को अपराधी होय । तासों वेद मर्यादा सहित श्रीठाकुरजी के भय सहित सेवा करे, और सावधान रहे । सो यह श्रीआचार्यजी महाप्रभु के मारग की रीति है । तासों माहात्म्य पूर्वक स्नेह करिये । और माहात्म्य पूर्वक स्नेह यह, जो—समय समय ऋतु अनुसार सेवा में सावधान रहै, ताको नाम माहात्म्य पूर्वक स्नेह कहिये ।

पाछें श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो—सूर ! तुमकों पुष्टिमारग को सिद्धांत फलित भयो है, तासों तुम श्रीगोवर्द्धनधर के यहां समय समय के कीर्तन करो । ता समय सेन भोग सरि चुक्यो हतो, सो तब मान के कीर्तन सूरदास ने गाये । सो पद—

राग विहागरो—बोलति काहे न नागरि वैनं। तोहि मिलनकों बहुत करत हैं गिरिधरलाल कमलदल नैनं ॥ १ ॥ जब तैं दृष्टि परी मोहन की विसरयो गृह—सुख सेनं। रटत 'सूर' राधे राधे कहि कहुं बनमाल कहुं उपरेनं ॥ २ ॥

राग विहागरो—सुखद सेज में पोढ़े रसिकवर रसमय अंग संग जाय रेन जागे हैं । सिधिल बसन भूषन अलक छवि सोहे सुख सुखसों लपट उर लागे हैं ॥ १ ॥ झुकझुक आवैं नयन आलस झलक रह्यो लटपटी बात कहत अति अनुरागे हैं । 'सूरदास' नंदसुवन तुम्हारो यस जानो प्रानप्रिया सुख ही में रस पागे हैं ॥ २ ॥

राग विहागरो—पोढ़े लाल राधिका उर लाय । नवकुसुम अरु नवल सिज्या नव चतुर दोऊ राय ॥ १ ॥ गान करत सहचरी द्वारें सरस राग जमाय । 'सूर' प्रभु गिरिधरन संग सुख रह्यो उर लपटाय ॥ २ ॥

सो पाछें या प्रकार सों कीर्तन सूरदासजी नें नित्य प्रातःकाल के जगायवे तैं लेके सेन पर्यंत के हजारन किये ।

द्रव्यमां छे अने पोताना द्देषसुभमां छे ते भगवानना माहात्म्यने छोडी लौकिक रीति करे तो अपराधी थाय. तेथी वेद मर्यादा सहित श्रीठाकुरजीना भय सहित सेवा करे अने सावधान रहे. आ श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना मार्गनी रीति छे. तेथी माहात्म्यपूर्वक स्नेह करीये. वणी माहात्म्यपूर्वक स्नेह अे के समय समय ऋतु अनुसार सेवामां सावधान रहे. तेतुं नाम माहात्म्यपूर्वक स्नेह कहिये.

पछी श्रीआचार्यजी आपु कहे, के सूर ! तभने पुष्टिमारगना सिद्धांत इक्षित थयो छे. तेथी एवे तसे श्रीगोवर्द्धनधरने त्यां समय—समयनां कीर्तन करे. ते समय सेनभोग सरि चुक्यो हुतो. त्यारे माननां कीर्तन सूरदासजीये गायां. पद-१ 'पोतत काहे न नागरि वैनं' २ 'सुखद सेजमें पोढ़े रसिक वर' ३ 'पोढ़े लाल राधिका उर लाय, (उपर लुओ) पछी सूरदासजीये, आ प्रकारनां कीर्तन नित्य प्रातःकाली जगायवानां लक्षने सेन पर्यंतनां हुनरो कर्थां.

वार्ता-प्रसंग २—और एक समय सूरदासजी पांच सात वैष्णवन के संग मारग में चले जात हते। सो तहां दस पांच जने चोपड खेलत हते। सो चोपड के खेल में एसे लीन भये हते सो मारग में गैल में काहू आवते जाते मनुष्य की कछू खबरि नाहीं। सो या प्रकार उनकों भगन देखिकें सूरदासजी ने अपने संग के वैष्णवन के आगे एक पद गायो। और उन वैष्णवन सों सूरदासजी ने कह्यो, जो-देखो, यह प्राणी मनुष्यजन्म वृथा खोवत है। जो-श्रीभगवान ने मनुष्य-देह अपने भजन करिवे के लिये दीनी है। सो या देह सों यह प्राणी वृथा हाड कूटत है। सो यामें लौकिक में तो निंदा है, जो-यह जुवारी है। और अलौकिक में भगवान सों बहिर्मुखता है। तासों भगवानने तो एसी जिनकों मनुष्य-देह दीनी है, तिनकों एसी चोपड खेलि चाहिये। सो ता समय सूरदासजी ने यह पद करि के संग के वैष्णव हते, तिनकों सुनायो। सो पद—

राग केदारो—मन ! तू समझ सोच विचार । भक्ति बिना भगवान दुर्लभ कहत निगम पुकार ॥ साधु संगति डार पासा फेरि रसना सार । दाव अबके पर्यो पूरो, उनरि पेळी पार ॥ छांडि सत्रह सुन अठारे, पंच ही कों मार । दूरि तैं तजि तीन काने चमक चौक विचार ॥ काम क्रोध मद लोभ भूल्यो ढग्यो ढगिनी नारि । 'सूर' हरि के पद भजन विन चल्यो दोड कर झारि ॥

सो सुनिके उन वैष्णवननें सूरदास सों कह्यो, जो-सूरदासजी ! या पद में समझ नाहीं परी है। तासों हमकों अर्थ करिके समझावो,

वार्ता-प्रसंग-२—वणी एक समय सूरदासजी पांच-सात वैष्णवानी साथे भागिभां ग्याद्या जाता हुता। त्यां दश पांच जल्लु चोपड रमतता हुता। ते चोपडनी रमतमां जेवा तहदीन थया हुता के भागिभां रस्तामां कोध आवता जाता मनुष्यनी कंध भभर न रहे। आ प्रकारे जेभने भगन जेधने सूरदासजीजे पोतानी संग ना वैष्णवानी आगण जेक पद गावुं। पछी जे वैष्णवाने सूरदासजीजे कछुं, के लुओ, आ प्राणी मनुष्यजन्म वृथा भोवे छे लगवाने मनुष्य देह पोतावुं लजन करवा भाटे आपी छे छतां आ देहथी आ प्राणी वृथा हुड कूटे छे। जेमां लौकिकमां तो निंदा छे, कहे आ जुवारी छे जेने अलौकिकमां लगवानथी अहिर्भुभता छे तेथी लगवाने तो जेने जेवी मनुष्य देह दीधी छे तेने आपी चोपड रमवी जेधजे नहि। ते समये सूरदासे आ पद कही ने संग ना वैष्णवो हुता तेभने संलणाव्युं। ते पद 'मन तू समज शाय पियार' (उपर लुओ)। जे सांलणीने जे वैष्णवोजे सूरदासने कछुं,

सो तब समझ्यो जाय । तब सूरदासजी उन वैष्णवन सों कहे । जो—

तीन वस्तु चोपड़ में चाहियें, समुझ सोच और विचार । सो ये तीन्यो वस्तु भगवान के भजन में हू चाहिये (क्यों ?) जो—जैसे पहले समुझै तब चोपड़ खेलेगो, सो तैसे ही भगवान कों जानेगो तो भजन करेगो । और चोपड़ में सोच होय, जो—एसो फांसा परे तो मैं जीतूं । सो तैसे ही या जीव कों काल को सोच होय, तब यह जीव प्रभु की सरन जाय । और (तीसरी वस्तु जो) विचार, सो यह जो—विचार के गोट कों, फांसा के दावकूं चले, जो—यहां नाहीं मारी जायगी इत्यादि । सो तैसेही विचार वैष्णव कों होय, जो—यह कार्य मैं करत हूं सो आछो है, के बुरो है ? तब यह जीव बुरो काम छोड़िकें भगवत धरम की चाल में चले । और चोपड़ में फांसा के दाव परें तब दोऊ ओर के मनुष्य पुकारत हैं । सो तेसे ही जगत में निगम जो वेद पुराण सो पुकारि के कहत हैं, जो—भक्ति विना भगवान दुर्लभ हैं, सो तासों कोटि साधन करो । और चोपड़ में दूसरो संग मिले तब चोपड़ खेली जाय, सो तैसे ही भगवान की भक्ति में भगवदीय वैष्णव की संगति होय तब भक्ति बढ़े । और चोपड़ खेलिवेवारे के मन में (जैसे) अपने दाव को सुमिरन रहत है, जो—यह दाव परे तो मैं जीतूं, सो तैसे ही रसना सों यह जीव भगवद् वार्ता में मन लगाय के सब रस को सार रूप (एसो भगवन्नाम) कहाँ

के सूरदास ! आ पदमां समज पडी नथी. तेथी अभने अर्थ करिने समजवो त्यारे समजय. त्यारे सूरदास ! ते वैष्णवोने कहुं, के—

त्रय वस्तु चोपडमां लेधये, समज, शोच, अने विचार. ये त्रये वस्तु भगवान ना लजनमां पणु लेधये. (केम) जे ज्यारे पडेलां समजे त्यारे चोपड जेदशे. तेज रीते भगवानने लणुशे तो लजन करशे. अने चोपडमां शोच डोय के आवो पासा पडे तो हुं लतुं. तेवीज रीते आ लवने डालने शोच डोय त्यारे आ लव प्रभुनी शरणे लय. अने (त्रील वस्तु जे) विचार ते जे के विचारिने गोटने, पासाना दावने यादे के अही मारी नहीं लय धत्यादि. तेवोज विचार वैष्णवने डोय के आ कार्य हुं कइं छुं ते साइं छे के जोटुं ? त्यारे आ लव जोटुं काम छोडीने भगवद् धर्मनी यादमां यादे. वणी चोपडमां पासानो दाव पडे त्यारे अने तरइना मनुष्यो जोटारे छे तेवीज रीते जगतमां निगम जे वेद पुराण ते जोटारी ने कडे छे, के लक्ति विना भगवान दुर्लभ छे. तेथी कोटी साधन करे। वणी चोपडमां पीजे साथ भजे त्यारे चोपड रमाय. तेवीज रीते भगवाननी लक्तिमां भगवदीय वैष्णवनी संगत डोय त्यारे लक्ति वधे अने चोपड रमनारना मनमां जेम दावतुं स्मरणु रहे छे के आ दाव पडे तो हुं लतुं. तेवीज रीते रसनाथी आ लव भगवद् वार्तामां मन लगाडीने पधा

करे । और (जैसे) चोपड़ में सुंदर पूरो दाव परे तब गोट पार जाय, और तब उतरि के घर में आवे, और मरिवे को भय मिटे । सो तैसे ही मनुष्य देह संसार सों पार उतरिवेकों पूरो दाव बड़ी पुन्याई सों मिले है, सो तो या देह सों भगवदाश्रय करि संसारतें पार उतरि जाय । ' राखि सत्रे सुनि अठारे ' चोपड़ में सत्रे अठारे बड़े दाव है । सो तैसे ही जगत में सब पुगण हैं, सो तिनही कों राखि, सुनि अठारे जो—श्रीभागवत सुनन कों (और) पुराण हू कों धरि राख । और पांचों जो इन्द्रिय; पंचपर्वा अविद्या है, सो इनकूं मार । सो काहे तें ? जो शास्त्र के वचन है जो—

पतंग-मातंग-कुरंग-भृंग-मीना हताः पङ्चभिरेव पङ्च ।

एकः प्रमादी स कथं न हन्यते यः सेवते पङ्चभिरेव पङ्च ॥ १ ॥

१ पतंग-नेत्र विषय तें दीपक में परे । २ हाथी-स्पर्श विषय करि मरे । ३ कुरंग-श्रवन विषय तें मरे । ४ भृंग-गंध नासिका विषय तें मरे, ५ मीन-जिभ्या विषय तें मरे । सो एक एक विषय तें मरि परै, तो मनुष्य तो पांचन को सेवन करत है, सो निश्चय काल इनको भक्षण करे । तासों नाद पांचो मारि । सो जैसे चोपड़ में गोट मारत हैं । और चोपड़ में सब तें छोटी दाव तीनि काने हैं, सो कोऊ नाहीं चाहत है । तैसे ही तू तीन-तामस, राजस, सात्त्विक यह माया के गुण हैं, सो सगरो संसार सोइ चोक है, सो यामें चतुराई सों डार । चतुराई

रस ना सार रूप (अणुं) लगवनाम) कथा करे. अने जेभ योपडमां सुंदर पूरो दाव पडे त्यारे गोटी पार जय अने त्यारे उतरिने घरमां आवे अने भरवानो लय भटे तेवीज रीते मनुष्य-देह संसारथी पार उतरवाने पूरो दाव गहु. पुन्याधथी भणे छे. ते तो आ देहथी लगवदाश्रय करी संसारथी पार उतरि जय छे. ' राखि सत्रे सुनि अठारे ' योपडमां सत्तर अठार मोटा दाव छे तेवीज रीते जगतमां जधां पुराण छे तेने पणु राषीने अठारसुं (पुराण) जे श्रीभागवत ते सांलग. श्रीभागवत सांलगवाने णीजं पुराणोने पणु धरी राभ. वणी पांचे धंद्रियो, पंचपर्वा अविद्या छे तेने मार. केभके शास्त्रनां वचन छे जे ' पतंग, मातंग ' (लुब्धो उपर) १ पतंग-नेत्र विषयथी दीवामां पडे. २ हाथी-स्पर्श विषयथी मरे. ३ कुरंग-श्रवण-विषयथी मरे. ४ लभरे. -गंधनासिका विषयथी मरे. ५ माछकुं-लुब्धना विषयथी मरे. आ जेक जेक विषयथी मरी पडे तो मनुष्य तो पांचियतुं सेवन करे छे तेथी काल निश्चय अणुं लक्षण करे. तेथी पांचे नाहने मार. ते जेभ योपडमां गोटी मारे छे. वणी योपडमां जधाथी नानो दाव त्रणु कथ्यां छे ते केछ धरुणु. नथी ते जे रीते ते त्रणु-तामस, राजस, सात्त्विक अे माया-

यह, जो-इनकों डारे पाछे इनकी ओर देखे मति । सो जैसे चोपड़ में सब की सुध बुध भूलि जात हैं, सो सब ठग्यो गयो । सो तेसे काम क्रोधादि जंजाल है, और स्त्री रूप भगवद् माया है । सो यह सगरे जगत कों ठगेगी । सो जैसे चोपड़ खेलि के हारिकें सब दोऊ हाथ झारि के उठें, सो तैसे ही श्रीठाकुरजी के पदकमल के भजन बिना दोऊ हाथ झारिके या मनुष्य ने देह खोई । जो कछु भलो परोपकार संग नहीं कियो । सो या प्रकार वैष्णव मुनि के सूरदास के ऊपर वहीत प्रसन्न भये ।

वार्ता-प्रसंग ३—और सूरदास कों जब श्रीआचार्यजी देखते तब कहते, जो-आवो सूरसागर ! सो ताको आसय यह है, जो-समुद्र में सगरो पदार्थ होत है । तैसे ही सूरदास ने सहस्रावधि पद किये हैं । तामें ज्ञान वैराग्य के, न्यारे न्यारे भक्ति भेद के, अनेक भगवद् अवतार, सो तिन भवन की लीला को वरनन कियो है । पाछें उनके पद जहां तहां लोग सीखि के गावन लागे । सो तब (एक समय) तानसेन ने एक पद सूरदास को सीखि के अकबर बादशाह के आगे गायो । सो पद :—

राग नट—यह सब जानो भक्त के लच्छन । कोऊ निंदो कोऊ वंदो कोऊ मारि लेहु धन गच्छन ॥ १ ॥ कोऊक आनि लगावत चंदन डारि धूरि कोऊ देत है भच्छन । कोऊ कहे मूरख महा अधर्मी कोऊ कहे यह बडो विचच्छन ॥ २ ॥ भली बुरी मनमें नहीं आवे कृष्ण चरन रति टरे न एक छिन । 'सूर' सुख दुःख जिनकों नहीं व्यापे तिनकों गिरिधर मिले ततछिन ॥ ३ ॥

ना शुषु छे (अने) अधे संसार ते थोके छे अेमां अतुराधथी नाथ. अतुराध अे के अेने नांभ्या पछी अेनी सामे जेधश नही अने थोपडमां अधा शुध बुध भूली न्य छे ते अधा ठगाया छे तेभ काम-क्रोधादि ज'नल छे. वणी स्त्रीरूपी लगवद् माया छे. ते आ अधा जगतने ठगशे. जेभ थोपड थेदीने हारीने अधा जन्ने हुथ थ'पेरी ने ठे तेज रीते श्रीठाकुरजना अरखुकमलना लजन बिना जन्ने हुथ थ'पेरीने आ मनुष्ये देह थोध. क'ध सारे परोपकार साथे नही कर्ये. आ प्रकारे वैष्णव सांखणीने सूरदासना उपर बहु प्रसन्न थया.

वार्ता प्रसंग ३-वणी सूरदासने न्यारे श्रीआचार्यजो जेता त्यारे कहेता के आवो 'सूरसागर' ! अेना आशय अे छे के समुद्रमां अधे पदार्थ होय छे. तेज रीते सूरदासे सहस्रावधि पद कर्ये छे तेमां ज्ञान-वैराग्यनां, अलग अलग लक्षि-लेदनां अनेक लगवद् अवतारनां, (तेभज) अे अधानी लीलातुं वखुन कर्ये छे. पछी अेभनां

यह सुनि देसाधिपति अकबर ने कह्यो, जो-ऐसे लक्षन वारे भक्तन सों मिलाप होय तो कहा कहिये ? सो तानसेन ने कही, जो-जिनने यह कीर्तन कियो है सो ब्रज में रहत हैं । और सूरदासजी उनको नाम है । यह सुनि देसाधिपति के मन में आई, जो कोई उपाय करिके सूरदास सों मिलिये । पाछें देसाधिपति दिल्ली तें आगरा आयो । तब अपने हलकारान सों कह्यो, जो-ब्रज में सूरदासजी श्रीनाथजी के पद गावत हैं, सो तिनकी ठीक पारिके मोकों श्रीमथुराजी में खबरि दीजियो, और (जो) यह बात सूरदास जानें नाहीं । तब उन हलकारान ने श्रीनाथजीद्वार आयके खबरि काढ़ी । तब सुनी, जो-सूरदासजी तो मथुरा गये हैं । सो तब वे हलकारा श्रीमथुरा में आयके सूरदास कों नजरि में राखे, जो-या समय यहाँ बैठे हैं । तब उन हलकारान ने देसाधिपति कों खबरि करी, जो-अजी साहब ! सूरदासजी तो मथुराजी में हैं । तब सूरदास कूं अकबर बादशाह ने दस पांच मनुष्य बुलायवे कों पठाये । सो सूरदासजी देसाधिपति के पास आये । तब देसाधिपति ने उनको बहोत आदर सन्मान कियो । पाछें सूरदासजी सों देसाधिपति ने कह्यो, जो-सूरदासजी !

पद ज्यां त्यां लोडो शिषीने गावा लाव्या. त्यारे अेक समय तानसेने अेक पद शिषीने अकबर बादशाहनी आगण गाथुं. ते पद- 'यह सभ जनो लक्षके लक्षु' (उपर लुयो) अे सांलणी देशाधिपति अकबर के कहुं, अेवा लक्षणवाणा लक्षोथी भेषाप थाय तो शुं कहीअे ? त्यारे तानसेने कहुं, के लेभले आ कीर्तन कथुं छे ते ब्रजभां रहे छे अने सूरदासल अेमनुं नाम छे ! अे सांलणी देशाधिपतिना मनभां आव्युं के केछ उपाय करीने सूरदासने भणीअे. पछी देशाधिपति दिहलीथी आथा आव्यो. त्यारे पैताना ललकाराअेने कहुं, ब्रजभां सूरदासल श्रीनाथलना पद गाथ छे तेमनी ठीक पाडीने मने मथुरालभां अपर आपजे अने आ वात सूरदासल लले नहीं. त्यारे ते ललकाराअे श्रीनाथलद्वारभां आवीने अपर काढी. त्यारे सांल-लुके सूरदासल तो मथुराल गया छे. त्यारे ते ललकाराअे श्रीमथुरालभां आवीने सूरदासलने नजरभां राभ्या के आ समय अहीं भेडा छे. पछी अे ललकाराअेअे देशाधिपतिने अपर करी के साहब ! सूरदासल तो मथुरालभां छे. त्यारे सूरदासलने अकबर बादशाह दस पांच मनुष्य भेलापवाने भेकल्या. त्यारे सूरदासल देशाधिपतिनी पास आव्यो. त्यारे देशाधिपतिअे अेमनुं अहुं आदर सन्मान कथुं. पछी सूरदासलने देशाधिपतिअे कहुं, के सूरदासल ! तमे विष्णु पद धरुं कथुं छे तेथी मने

यह, जो-इनको डारे पाछे इनकी ओर देखे मति । सो जैसे चोपड़ में सब की सुध बुध भूलि जात हैं, सो सब ठगयो गयो । सो तेसे काम क्रोधादि जंजाल है, और स्त्री रूप भगवद् माया है । सो यह सगरे जगत कों ठगेगी । सो जैसे चोपड़ खेलि के हारिकें सब दोऊ हाथ झारिके उठें, सो तैसे ही श्रीठाकुरजी के पदकमल के भजन बिना दोऊ हाथ झारिके या मनुष्य ने देह खोई । जो कछु भलो परोपकार संग नाहीं कियो । सो या प्रकार वैष्णव मुनि के सूरदास के ऊपर बहोत प्रसन्न भये ।

वार्ता-प्रसंग ३—और सूरदास कों जब श्रीआचार्यजी देखते तब कहते, जो-आवो सूरसागर ! सो ताको आसय यह है, जो-समुद्र में सगरो पदार्थ होत है । तैसे ही सूरदास ने सहस्रावधि पद किये हैं । तासैं ज्ञान वैराग्य के, न्यारे न्यारे भक्ति भेद के, अनेक भगवद् अवतार, सो तिन भवन की लीला को वरनन कियो है । पाछें उनके पद जहां तहां लोग सीखि के गावन लागे । सो तब (एक समय) तानसेन ने एक पद सूरदास को सीखि के अकबर बादशाह के आगे गायो । सो पद :—

राग नट—यह सब जानो भक्त के लच्छन । कोऊ निंदो कोऊ बंदो कोऊ मारि लेहु धन गच्छन ॥१॥ कोऊक आनि लगावत चंदन डारि धूरि कोऊ देत है भच्छन । कोऊ कहे मूरख महा अधर्मी कोऊ कहे यह बडो विचच्छन ॥ २ ॥ भली बुरी मनमें नहीं आवे कृष्ण चरन रति टरे न एक छिन । 'सूर' सुख दुःख जिनकों नहिं व्यापे तिनकों गिरिधर मिले ततछिन ॥ ३ ॥

ना शुष्ण छे (अने) अधो संसार ते थोके छे अनेमां यतुराधथी नाथ. यतुराध अे के अने नाथ्या पछी अनी सामे लेश नही अने थोपडमां अधा शुध पुध लूडी लय छे ते अधा ठगाया छे तेम काम-क्रोधादि जलल छे. वणी स्त्रीरूपी लगवद् माया छे. ते आ अधा जगतने ठगशे. जेम थोपड जेदीने हारीने अधा अन्ने हाथ थ'पेरी ने ठे तेज रीते श्रीठाकुरजीना यरणकमलना लजन बिना अन्ने हाथ थ'पेरीने आ मनुष्ये देहु भोध. क'ध सारे परोपकार साथे नही कर्ये. आ प्रकारे वैष्णव सांलणीने सूरदासना उपर अहु प्रसन्न थया.

वार्ता प्रसंग ४—वणी सूरदासने न्यारे श्रीआचार्यजी जेता त्यारे इहेता के आवे 'सूरसागर' ! अने आशय अे के समुद्रमां अधा पदार्थ होय छे. तेज रीते सूरदासे सहस्रावधि पद कर्ये छे तेमां ज्ञान-वैराग्यनां, अलग अलग लक्षित-लेखनां अनेक लगवद् अवतारनां, (तेमज) अे अधानी दीसालु वलुन क्युं छे. पछी अेभनां

यह सुनि देसाधिपति अकबर ने कह्यो, जो-ऐसे लक्षन चारे भक्तन सों मिलाप होय तो कहा कहिये ? सो तानसेन ने कही, जो-जिनने यह कीर्तन कियो है सो ब्रज में रहन हैं । और सूरदासजी उनको नाम है । यह सुनि देसाधिपति के मन में आई, जो कोई उपाय करिके सूरदास सों मिलिये । पाछें देसाधिपति दिल्ली तें आगरा आयो । तब अपने हलकारान सों कह्यो, जो-ब्रज में सूरदासजी श्रीनाथजी के पद गावत हैं, सो तिनकी ठीक पारिके मोकों श्रीमथुराजी में खबरि दीजियों, और (जो) यह बात सूरदास जानें नाहीं । तब उन हलकारान ने श्रीनाथजीद्वार आयके खबरि काढ़ी । तब सुनी, जो-सूरदासजी तो मथुरा गये हैं । सो तब वे हलकारा श्रीमथुरा में आयके सूरदास कों नजरि में राखे, जो-या समय यहाँ बैठे हैं । तब उन हलकारान ने देसाधिपति कों खबरि करी, जो-अजी साहब ! सूरदासजी तो मथुराजी में हैं । तब सूरदास कूं अकबर बादशाह ने दस पांच मनुष्य बुलायवे कों पठाये । सो सूरदासजी देसाधिपति के पास आये । तब देसाधिपति ने उनको बहोत आदर सन्मान कियो । पाछें सूरदासजी सों देसाधिपति ने कह्यो, जो-सूरदासजी !

पद जयां त्यां लोके शिषीने गावा लाव्या. त्यारे अक सभय तानसेने अक पद शिषीने अकपर आदशाहनी आगण गाथुं. ते पद- 'यह सभ जना लक्षके लक्षणु' (उपर लुओ) अ सांसणी देशाधिपति अकपर कहुं, अवा लक्षणवाणा लक्षोथी भेजाप थाय तो शुं कहीअ ? त्यारे तानसेने कहुं, 'के नेभले आ कीर्तन कथुं' छे ते प्रजभां रहे छे अने सूरदासल अमनु' नाम छे ! अ सांसणी देशाधिपतिना मनभां आव्युं के केअ उपाय करीने सूरदासने मणीअ. पही देशाधिपति दिहड़ीथी आआ आव्या. त्यारे पोताना ललकाराअने कहुं, प्रजभां सूरदासल श्रीनाथलना पद गाय छे तेमनी ठीक पाडीने मने मथुरालभां अपर आपने अने आ वात सूरदासल जले नहीं. त्यारे ते ललकाराअने श्रीनाथलद्वारभां आवीने अपर काढी. त्यारे सांसणुंके सूरदासल तो मथुराल गया छे. त्यारे ते ललकाराअने श्रीमथुरालभां आवीने सूरदासलने नजरभां राख्या के आ समय अहीं पेडा छे. पही अ ललकाराअने देशाधिपतिने अपर करी के साहब ! सूरदासल तो मथुरालभां छे. त्यारे सूरदासलने अकपर आदशाहे दश पांच मनुष्य भोलाववाने भोकाव्या. त्यारे सूरदासल देशाधिपतिनी पास आव्या. त्यारे देशाधिपतिअने अमनुं अहुं आदर सन्मान कथुं. पही सूरदासलने देशाधिपतिअने कहुं, के सूरदासल ! तमे विणु पद घलां कथीं छे तेथी मने

यह, जो-इनकों डारे पाछे इनकी ओर देखे मति । सो जैसे चोपड़ में सब की सुध बुध भूलि जात हैं, सो सब ठग्यो गयो । सो तेसे काम क्रोधादि जंजाल है, और स्त्री रूप भगवद् माया है । सो यह सगरे जगत कों ठगेगी । सो जैसे चोपड़ खेलि के हारिकें सब दोऊ हाथ झारिके उठें, सो तैसे ही श्रीठाकुरजी के पदकमल के भजन बिना दोऊ हाथ झारिके या मनुष्य ने देह खोई । जो कछु भलो परोपकार संग नहीं कियो । सो या प्रकार वैष्णव सुनि के सूरदास के ऊपर बहोत प्रसन्न भये ।

वार्ता-प्रसंग ३—और सूरदास कों जब श्रीआचार्यजी देखते तब कहते, जो-आवो सूरसागर ! सो ताको आसय यह है, जो-समुद्र में सगरो पदार्थ होत है । तैसे ही सूरदास ने सहस्रावधि पद किये हैं । तासैं ज्ञान वैराग्य के, न्यारे न्यारे भक्ति भेद के, अनेक भगवद् अवतार, सो तिन भवन की लीला को वरनन कियो है । पाछें उनके पद जहां तहां लोग सीखि के गावन लागे । सो तब (एक समय) तानसेन ने एक पद सूरदास को सीखि के अकबर बादशाह के आगे गायो । सो पद :—

राग नट—यह सब जानो भक्त के लच्छन । कोऊ निंदो कोऊ वंदो कोऊ मारि लेहु धन गच्छन ॥१॥ कोऊक आनि लगावत चंदन डारि धूरि कोऊ देत है भच्छन । कोऊ कहे मूरख महा अधर्मी कोऊ कहे यह बडो विचच्छन ॥ २ ॥ भली बुरी मनमें नहीं आवे कृष्ण चरन रति टरे न एक छिन । 'सूर' सुख दुःख जिनकों नहिं व्यापे तिनकों गिरिधर मिले ततछिन ॥ ३ ॥

ना गुणु छे (अने) अघो संसार ते योऊ छे अेमां यतुराधधी नाअ. यतुराध अे के अेने नाअया पछी अेनी सामे जेधश नडी' अने योपडमां अघा शुध युध भूली नय छे ते अघा ठगाया छे तेम काम-क्रोधादि ज'नल छे. वणी स्त्रीरूपी लगवद् भाया छे. ते आ अघा जगतने ठगशे. जेम योपड जेडीने डारीने अघा जन्ने हाथ अ'पेरी ने ठठे तेज रीते श्रीठाकुरजना यरलुकमलना लजन बिना जन्ने हाथ अ'पेरीने आ मनुष्ये देहु जोध. क'ध सारे परोपकार साथे नडी' कथे. आ प्रकारे वैष्णव सांलजीने सूरदासना उपर अहु प्रसन्न थया.

वार्ता प्रसंग ३-वणी सूरदासने न्यारे श्रीआचार्य'ज जेता त्यारे कहेता के आवो 'सूरसागर' ! अेना आशय अे छे के समुद्रमां अघो पदार्थ होय छे. तेज रीते सूरदासे सहस्रावधि पद कथी' छे तेमां ज्ञान-वैराग्यनां, असंग असंग लक्षित-लेखनां अनेक लगवद् अवतारनां, (तेमज) अे अघानी दीलाव' वलन कथु' छे. पछी अेमनां

भावप्रकाश—सो यह पद कैसो है, जो-या पद को सुमिरन रहै तव भगवत् अनुग्रह होय, और मनकूँ बोध होय । और संसार सों वैराग्य होय, और श्रीभगवान के चरणारविंद में मन लगे । तव दुःसंग सों भय होय, सत्संग में मन लगे । सो देहादिक में ते स्नेह घटे, और लौकिक आसक्ति छुटे । जो भगवान को प्रेम है, सो अलौकिक है । सो ताके ऊपर प्रीति बढ़े ।

यह सुनि देसाधिपति बहोत प्रसन्न भयो । पाछे देसाधिपति के मनमें यह आई, जो-सूरदासजी की परीक्षा देखूं । सो भगवान को आश्रय होयगो, तो ये मेरो जस गावेगो नाहीं । सो यह विचार के देसाधिपति ने सूरदास सों कही, जो-श्रीभगवान ने सोकों राज्य दियो है, सो सगरे गुनीजन मेरो जस गावत हैं, सो तिनकों मैं अनेक द्रव्यादिक देत हौं । तासों तुमहू गुनी हो, सो तुमहू मेरो कछु जस गावो । सो तिहारे मन में जो इच्छा होय सो माँगी लेहू । सो यह देसाधिपति ने कह्यो । तब सूरदासजी ने यह पद गायो—

राग केदारो—नाहिन रह्यो मन में डौर । नंदनंदन अछत कैसे आनिप उर और ॥ १ ॥ चलत चितवत दिवस जागत सुपन सोवत राति । हृदय तें वह मदन मूरति छिन न इत उत जाति ॥ २ ॥ कहत कथा अनेक उधो लाख लोभ दिखाय । कहा करों चित प्रेम पूरन घट न सिंधु समाय ॥ ३ ॥ स्याम गात सरोज आनन ललित गति मृदु हास । 'सूर' ऐसे दरस कों ये सरत लोचन प्यास ॥ ४ ॥

कंठ सांभलायो, त्यारे सूरदासे अकथर आदशाह आगण अक पद गाथुं, ते पद 'मनारे तू कर भाधों सों प्रीत' (उपर लुओ)

भावप्रकाश—आ पद डेपुं छे ? के आ पदनुं रभरणु रडे त्यारे भगवदनुग्रह होय, अने भगवानना चरणारविंदमां मन लागे, त्यारे दुःसंगना भय होय, सत्संगमां मन लागे, देहादिकमां स्नेह घटे अने लौकिक आसक्ति छुटे, भगवानना प्रेम छे ते अलौकिक छे, तेना उपर प्रीति बढ़े.

आ पद सांभली देसाधिपति अहुन प्रसन्न थयो, थली देसाधिपतिना मनमां आण्युं के सूरदासजी परीक्षा लई, भगवानना आश्रय हुशे तो अे मारे यश गाशे नही, अे विचारीने देसाधिपतिअे सूरदासने कहुं, के श्रीभगवानने अने राज्य आण्युं छे तेथी अधा गुणीजन मारे यश गाथ छे तेमने हुं द्रव्यादिक आण्युं छुं, तेथी तमे पखु गुणी छे, तेथी तमे पखु मारे कंठक यश गाथ अने तमारे मनमां जे इच्छा होय ते मांगी लेा, आ देसाधिपतिअे कहुं, त्यारे सूरदासअे आ पद गाथुं :- 'नाहिन रह्यो मनमें डौर' (उपर लुओ.) अे पद सांभलीने देसाधिपतिअे योताना मनमां

तुमने विष्णुपद बहोत किये हैं, सो तुम मोकों कछु सुनावो । तब सूरदास नें अकबर बादशाह आगे यह पद गायो । सो पद—

राग बिलावल—मनारे ! तू करि माधौं सौं प्रीति । काम क्रोध मद लोभ मोह तू छांडि सकल विपरीति । भौरा भोगी बन भ्रमेरे मोद न माने माप । सब कुसुमन कौं नीरस करे रे कमल बंधावे आप ॥ १ ॥ सुनि परमित पिय-प्रेमकी रे चातक-चित्तवे वारि । घन आसा सब दुःख सहैरे अनत न जाचे द्वारि ॥ २ ॥ देखह करनी कमलकी रे कीनो रविसौं हेत । प्रान तजे प्रेम ना तजे रे सूक्यो सर ही समेत ॥ ३ ॥ दीपक पीर न जान ही रे पावक परे पतंग । तन तो तिहिं ज्वाला जरयो रे चित न भयो रस भंग ॥ ४ ॥ मीन वियोग न सहि सकैरे, नीर न पूछे बात । देखि जू तू ताकी गति रे रति न घटे तन जात ॥ ५ ॥ परन परेवा प्रेमकी रे चित ले चढन अकास । तहां चढि ताहि जू देखि ही रे भू पर लेत उसास ॥ ६ ॥ सुमिर सनेह कुरंग कौ रे भवननि राच्यो राग । धरि न सक्यो पग पिछमनो रे सर सन्मुख उर लाग ॥ ७ ॥ देखि करनी जड नारिकी रे जरत प्रेत के संग । चिता न चित फीको भयो रे राची पियके संग ॥ ८ ॥ लोक वेद बरजे सबेरे नैनन देखे त्रास । चोर न जिय चोरी तजे रे सब तन सहत विनास ॥ ९ ॥ सब रस कौ रस प्रेम है रे विषई खेले सार । तन-मन-घन जोवन खस्यो रे तोऊ न माने द्वार ॥ १० ॥ तें रतन पायो भलो रे जान्यो साधन साध । प्रेमकथा अनुदिन सुनी रे तोउ न उपनी लाज ॥ ११ ॥ सदा संगती आपुनो रे जियके जीवन प्रान । सो विसरयो तू सहज ही रे हरि ईश्वर भगवान ॥ १२ ॥ वेद पुरान सुमरे सबे रे सुर तरु सेवत जाहि । महा मोह अज्ञान में रे क्यो न सस्यारे ताहि ॥ १३ ॥ खग मृग मीन पतंग लों रे मैं सोधे सब ठौर । जलथल जीव जिते किते रे कहां कहां लागि और ॥ १४ ॥ प्रभु पूरन पावन सखा रे प्राननहू के नाथ । परम दयाल कृपाल कृपानिधि जीवन जाके हाथ ॥ १५ ॥ गर्भवास अति त्रास में रे जहां न एको अंग । सुनि सठ तेरे प्रानपति रे तहां हु न छांड्यो संग ॥ १६ ॥ दिन रात पोषत रहे रे जैसे चोली पान । वा दुःख तें तोहि काढि के रे गहे दीनो पयपान ॥ १७ ॥ जिहिं जड तें चेतन कियो रे रचि गुन तत्त्व निधान । चरन चिकुर कर नख दिये रे नैन नासिका कान ॥ १८ ॥ असन बसन बहु विधि दिए रे औसर औसर आन । मात-पिता भैया मिले रे नइ रुचि नइ पहचान ॥ १९ ॥ सज्जन कुटुंब परिकर बढ्यो रे सुतदारा धन घाम । महा मोह विषयी भयो रे चित्त आकर्ष्यो काम ॥ २० ॥ खानपान परिधान में रे जोवन गयो सब चीत । ज्यों चिट परतिय संग वस्यो रे भोर भये भयभीत ॥ २१ ॥ जैसे सुख ही घन बढ्यो रे तैसे तन हि अनंग । धूम बढ्यो लोचन खस्यो रे सखा न सूझ्यो संग ॥ २२ ॥ जब जान्यो सब जग मूओ रे वाढ्यो अयस अपार । बीच न काहू तत्र कियो रे जमदूतन दीनी मार ॥ २३ ॥ को जाने के वार मूओरे एसो कुमति कुमीच । हरिसौं हेत विसारिकै सुख चाहत है नीच ॥ २४ ॥ जो पै जिय लज्जा नहीं रे कहा कहां सौ धार । एको अंग तेन हरि भज्यो रे सुनि सठ 'सूर' गंमार ॥ २५ ॥

भावप्रकाश—सो यह पद कैसो है, जो-या पद को सुमिरन रहै तव भगवत् अनुग्रह होय, और मनकूं बोध होय । और संसार सों वैराग्य होय, और श्रीभगवान के चरणारविंद में मन लगे । तब दुःसंग सों भय होय, सत्संग में मन लगे । सो देहादिक में ते स्नेह घटे, और लौकिक आसक्ति छुटे । जो भगवान को प्रेम है, सो अलौकिक है । सो ताके ऊपर प्रीति बढ़े ।

यह सुनि देसाधिपति बहोत प्रसन्न भयो । पाछे देसाधिपति के मनमें यह आई, जो-सूरदासजी की परीक्षा देखूं । सो भगवान् को आश्रय होयगो, तो ये मेरो जस गावेगो नाहीं । सो यह विचार के देसाधिपति नैं सूरदास सों कही, जो-श्रीभगवान ने सोकों राज्य दियो है, सो सगरे गुनीजन मेरो जस गावत हैं, सो तिनकों मैं अनेक द्रव्यादिक देत हौं । तासों तुमहू गुनी हो, सो तुमहू मेरो कछु जस गावो । सो तिहारे मन में जो इच्छा होय सो माँगि लेहू । सो यह देसाधिपति ने कथ्यो । तब सूरदासजी ने यह पद गायो—

राग केदारो—नाहिन रह्यो मन में डोर । नंदनंदन अछत कैसे आनिप उर और ॥ १ ॥ चलत चितचत दिवस जागत सुपन सोवत राति । हृदय तैं वह मदन मूरति छिन न इत उत जाति ॥ २ ॥ कहत कथा अनेक उघो लाख लोभ दिखाय । कहा करों चित्त प्रेम पूरन घट न सिंधु संमाय ॥ ३ ॥ स्वाम गात सरोज आनन ललित गति मृदु हास । 'सूर' ऐसे दरस को ये मरत लोचन प्यास ॥ ४ ॥

क'ध सांखणावो. त्यारे सूरदासे अकपर आदशाहु आगण अक पद गाथुं. ते पद 'भनारे तू करि भाषीं सों प्रीत' (७पर लुआ.)

भावप्रकाश—आ पद डेवुं छे ? के आ पदनुं रभरलु रहे त्यारे भगवदंतुग्रह होय, अने भगवानना अरण्यारविंदमां मन लागे. त्यारे दुःसंगने भय होय, सत्संगमां मन लागे. देहादिकमां स्नेह घटे अने लौकिक आसक्ति छुटे. भगवानना प्रेम छे ते अलौकिक छे. तेना ७पर प्रीति बढ़े.

आ पद सांखणी देशाधिपति अहुण प्रसन्न थयो. पछी देशाधिपतिना मनमां आधुं. के सूरदासजी की परीक्षा लई. भगवानना आश्रय लुसे तो अे भारे यश गाये नही. अे विचारीने देशाधिपतिअे सूरदासने कथुं, के श्रीभगवान भने राज्य आधिपुं छे तथी अथा गुनीजन भारे यश गाथ छे तेभने हुं द्रव्यादिक आधिपुं छुं. तथी तभे पलु गुणी छे, तथी तभे पलु भारे क'धक यश गाव अने तभारा मनमां ने इच्छा होय ते मांगी लो. आ देशाधिपतिअे कथुं. त्यारे सूरदासजीअे आ पद गाथुं:- 'नाहिन रह्यो मनमें डोर' (७पर लुआ.) अे पद सांखणीने देशाधिपतिअे योताना मनमां

सो यह पद सुनिके देसाधिपति ने अपने मनमें विचारयो, जो-ये मेरो जस काहे को गावेंगे ? जो इनको कछु लेवे को लालच होय तो ये मेरो जस गावें। ये तो परमेश्वर के जन हैं, सो ये तो ईश्वर को जस गावेंगे। सो सूरदासजी या कीर्तन में पिछले चरन में कहे हैं जो-

‘सूर ! ऐसे दरस को ये भरत लोचन प्यास ।’

सो देसाधिपति ने सूरदास सो कह्यो, जो-सूरदास ! तुम्हारे तो नेत्र हैं नहीं, सो प्यासे कैसे भरत हैं ? सो यह तुम कहा कहे ? तब सूरदासजी ने कही, जो या-बात की तुमको कहा खबरि है ? जो ये लोचन तो सबके हैं, परन्तु भगवान के दरसन की प्यास काहू को है ? जो श्रीभगवान के दरसन के जे प्यासे नेत्र हैं, सो तो सदा भगवान के पास ही रहत हैं। सो स्वरूपानंद को रसपान छिन छिन में करत हैं, और सदा प्यासे भरत हैं। यह सुनि अकबर बादशाह ने कही, जो-इनके नेत्र तो परमेश्वर के पास हैं, सो परमेश्वर को देखत हैं, और को देखत नहीं। तब बादशाह ने सूरदास के समाधान की ईच्छा कीनी। दोय चारि गाम तथा द्रव्य बहोत देन लाग्यो, सो सूरदास ने कछु नहीं लियो। तब अकबर बादशाह सूरदासजी सो कहे, जो-बाबा साहिब ! कछु तो सोको आज्ञा करिये। तब सूरदासजी ने कही, जो-आज पाछें हमको कबहू फेरि मति बुलाइयो और सोसों कबहू मिलियो मति ।

विचार्युं, के ये भारे यश शा भाटे गाय ? येभने क'ध लेवानी लालच होय तो ये भारे यश गाय ये तो परमेश्वरना जन छे तेथी ये तो धरना यश गाशे. ते सूरदासलये आ कीर्तनमां पाछदा चरणमां कछुं छे के- 'सूर जैसे दरस डों ये भरत लोचन प्यास' तेथी देसाधिपतिये सूरदासने कछुं, के सूरदास ! तभारे तो नेत्र छे नहीं तो तरस्यां डेम भरे छे ? तेथी तमे आपुं शुं कछुं ? त्तारे सूरदासल ये कछुं, के आ पातनी तभने शी अप्पर छे ? आ नेत्र तो अधाने छे; परंतु लगवानना दर्शननी तरस डेधने छे ? श्रीलगवानना दर्शननां तरस्यां जे नेत्र छे ते तो सदा लगवाननी पासेन रहे छे ते स्वपान'दना रसपुं पान क्षण क्षणमां करे छे, अने सदा तरस्यां भरे छे. ये सांलणी आदशाह अकपर कछुं, के येभना नेत्र तो परमेश्वरनी पासे छे ते परमेश्वरने लुये छे भीजने जेतां नथी. त्तारे आदशाह सूरदासना समाधाननी इच्छा करी. जे-चार गाम तथा द्रव्य धलुं आपवा लाग्ये. ते सूरदासे क'ध दीधुं नहीं. त्तारे अकपर आदशाह सूरदासलने कहे, के आवा साहभ ! क'धक तो भने

भावप्रकाश—सो अकबर बादशाह विवेकी हतो । सो काहेतें ? जो ये योगभ्रष्ट तें म्लेच्छ भयो है । सो पहले जन्म में ये बालमुकुन्द ब्रह्मचारी हतो । सो एक दिन ये बिना छाने दूध पान कियो, तामें एक गाय को गेम पेट में गयो । सो ता अपराध तें यह म्लेच्छ भयो है ।

सो सूरदास कों दंडवत करिके विदा किये ।

वार्ता-प्रसंग ४—ता पाछे सूरदास श्रीनाथजीद्वारा आये । पाछे देसाधिपति ने आगरे में आयके सूरदास के पदन की तलास कीनी । जो कोऊ सूरदासजी के पद लावे तिनकूं रुपैया और सोहौर देय । सो वे पद फारसी में लिखाय के बांचे । सो सोहौर के लालच सो पंडित कवीश्वर हू सूरदास के पद बनाय के लाये । तब अकबर पातसाह ने उनसों कछो, जो—यह पद सूरदासजी को नाहीं । सो ये पैसा के लिये पद की चोरी करत हैं । तब पंडित कवीश्वरन ने कही, जो—तुम कैसे जाने जो वह सूरदास को पद नाहीं ? जो यह तो सूरदास को ही पद है । तब पातसाह ने अपने पास सो सूरदास को पद अपने कागद के ऊपर लिखायो । और वे पंडित कवीश्वर सूरदासको भोग (छाप) को बनाय के लाये सो दोऊ कागद जल में धरिके कछो, जो—ईश्वर मांचे होय तो या बात को न्याय करि दीजो । सो यह कहि

आज्ञा करे। त्तारे सूरदासलये कछुं, के आन पछी अपने इयारेय इरी जोलावता नही अपने मने इयारेय भगता नही।

भावप्रकाश—ते अकबर बादशाह विवेकी हुतो, केम के ते योगभ्रष्टी म्लेच्छ थयो छे, पहिला जन्ममां ये बालमुकुन्द ब्रह्मचारी हुतो, ते एक दिवस येले गाल्या बिना दूधपान क्युं तेमां गायने एक वाण पेटमां गयो, ते अपराधथी ये म्लेच्छ थयो छे,

पछी सूरदासने दंडवत करिने समाधान करिने विदाय क्यो।

वार्ता-प्रसंग ४-ते पछी सूरदासल श्रीनाथलद्वारा आव्या, पछी देसाधिपतिले आथामां आवीने सूरदासना पढानी जोण करी, के कोछ सूरदासलनां पद लावे तेने रुपीआ अपने भहोर आवे, ते पद फारसीमां लभावीने वांचे, पछी भहोरनी लासयथी पंडित कविश्वर पखु सूरदासनां पद बनावीने लाव्या, त्तारे अकबर बादशाहले अपने कछुं, के आ पद सूरदासलनुं नथी, ये पैसाने माटे पढनी चोरी करे छे, त्तारे पंडित कविश्वर कछुं, के तमे केम लख्युं के आ सूरदासलनुं पद नथी ? आ तो सूरदासलनुं पद छे, त्तारे बादशाहले पैतानी पासथी सूरदासलनुं पद पैताना कागण उपर लभाव्युं अपने ये पंडित कविश्वर सूरदासनी छापनुं बनावीने लाव्या ते अपने कागणने लसमां

सो यह पद सुनिके देसाधिपति ने अपने मनमें विचारयो, जो-ये मेरो जस काहे कों गावेंगे ? जो इनकों कछु लेवे को लालच होय तो ये मेरो जस गावें । ये तो परमेश्वर के जन हैं, सो ये तो ईश्वर को जस गावेंगे । सो सूरदासजी या कीर्तन में पिछले चरन में कहे हैं जो-

‘सूर ! ऐसे दरस कों ये मरत लोचन प्यास ।’

सो देसाधिपति ने सूरदास सों कह्यो, जो-सूरदास ! तुम्हारे तो नेत्र हैं नाहीं, सो प्यासे कैसे मरत हैं ? सो यह तुम कहा कहे ? तब सूरदासजी ने कही, जो या-बात की तुमकों कहा खबरि है ? जो ये लोचन तो सबके हैं, परन्तु भगवान के दरसन की प्यास काहू कों है ? जो श्रीभगवान के दरसन के जे प्यासे नेत्र हैं, सो तो सदा भगवान के पास ही रहत हैं । सो स्वरूपानंद को रसपान छिन छिन में करत हैं, और सदा प्यासे मरत हैं । यह सुनि अकबर बादशाह ने कही, जो-इनके नेत्र तो परमेश्वर के पास हैं, सो परमेश्वर कों देखत हैं, और कों देखत नाहीं । तब बादशाह ने सूरदास के समाधान की ईच्छा कीनी । दोय चारि गाम तथा द्रव्य बहोत देन लाग्यो, सो सूरदास ने कछु नाहीं लियो । तब अकबर बादशाह सूरदासजी सों कहे, जो-बाबा साहिब ! कछु तो मोकों आज्ञा करिये । तब सूरदासजी ने कही, जो-आज पाछें हमकों कबहू फेरि मति बुलाइयो और मोसों कबहू मिलियो मति ।

वियार्थुं, के अे भारे यश शा भाटे गाय ? अेमने क'ध देवानी लालच होय तो अे भारे यश गाय अे तो परमेश्वरना जन छे तेथी अे तो ध'धरना यश गाशे. ते सूरदासलुअे आ कीर्तनभां पाछला व्यरुणुभां कलुं छे के- 'सूर अैसे दरस केां अे मरत लोचन प्यास' तेथी देसाधिपतिअे सूरदासने कलुं, के सूरदास ! तभारे तो नेत्र छे नलीं तो तरस्यां केभ भरे छे ? तेथी तभे आपुं शुं कलुं ? त्यारे सूरदासलु अे कलुं, के आ वातनी तभने शी अ्पर छे ? आ नेत्र तो अधाने छे; परंतु लगवानना दर्शननी तरस डेअने छे ? श्रीलगवानना दर्शननां तरस्यां जे नेत्र छे ते तो सदा लगवाननी पासेज रहे छे ते स्वरूपानंदना रसतुं पान क्षण क्षणुभां करे छे. अने सदा तरस्यां भरे छे. अे सांलगनी-आदशाह अकअरे कलुं, के अेमना नेत्र तो परमेश्वरनी पासे छे ते परमेश्वरने लुअे छे भीजने जेतां नथी. त्यारे आदशाहे सूरदासना समाधाननी इच्छा करी. जे-चार गाम तथा द्रव्य धणुं आपवा लाग्ये. ते सूरदासे क'ध दीधुं नलीं. त्यारे अकअर आदशाह सूरदासलुने कहे, के आवा साहअ ! क'धक तो भने

राग रामकली—प्रेङ्ख पर्यङ्क शयनं । चिर विरह-तापहरमतिरुचिरमीक्षणं प्रकटय प्रेमायनं । ध्रु० । तनुतर द्विजपंक्तिमतिललितानि हसितानि तव वीक्ष्य गायकीनाम् । यदवधि परमेतदाशयासमभवज्जीवितं तावकीनाम् ॥ १ ॥ तोकता वपुषि तव राजते दृशि तु मदमानिनीमानहरणम् । अग्रिमे वयसिकिमुभावि कामेऽपि निजगोपिका भावकरणम् ॥ २ ॥ ब्रजयुवति हृद्यकनकाचलानारोदुमुत्सुकं तव चरण-युगलम् । तत्तुमुहुरुन्नमनकाभ्यासमिव नाथ ! सपदि कुर्वते मृदुल मृदुलम् ॥ ३ ॥ अधिगोरोचनातिलकमलकोद्ग्रथितविविधमणिसुक्ताफलविरचितम् । भूषणं राजते सुगधताऽमृतभरस्यंदि वदनेन्दुरसितम् ॥ ४ ॥ श्रूतटे मातृ-रचिताऽञ्जनविंदुरतिशयितशोभया दृग्दोषऽमपनयन् । स्मर धनुषि मधु पिवन्नलिराज इव राजते प्रणयिसुखमुपनयन् ॥ ५ ॥ वचनरचनोदारहाससहजस्मितामृतचयैरार्त्ति भारमपनयनं । पालय सदाऽस्मानस्मदीय श्रीविट्टले निजदाह्यमुपनयन् ॥ ६ ॥

सा यह पद सूरदास ने श्रीनवनीतप्रियजी के आगे गायो ।

पाछे या पद के अनुसार सूरदासजीने बहोत पद करिके गाये । सो पद—

राग रामकली—प्रेङ्ख पर्यंक गिरिधरन सोहे । प्रेम आनंदभरी गोपिका कर धरि देति झोटा तहां काम को है ॥ १ ॥ मदनमोहन हसत दंत कांति हि लसत वज्रत नूपुर मधुर रुणनकारी । भाल मसि विट्टु केसर तिलक तहां लसे नैन अंजन मनसि चान मारी ॥ २ ॥ अलक राजत मुख ही भुज पंसारत सुख ही हरत गोपांगना मान तिहिं समै तहां । देत सुखसिंधु सब गोपिका मननकुं 'सूर' शोभा निरखि वारत तन मन जहां ॥ ३ ॥

सो यह पलना को कीर्तन सूरदासजी ने गायो । पाछे बाललीला

के पद बहोत गाये । सो पद—

राग बिलावल—देखि सखी एक अद्भुत रूप । एक अंबुज मधि देखियत वीस दधिसुत जूप ॥ १ ॥ एक अवली दौय जलचर उभय अर्क अनूप । पंच वारिजं टिंग हि देखियत कहो कहा स्वरूप ॥ २ ॥ सिसुगति में भई सोभा करो कोऊ विचार । 'सूर' श्रीगोपाल की छवि राखिए उर धार ॥ ३ ॥

सोभा आजु भली बनि आई । जलसुत उपर हंस विराजत ता पर ईंद्र-घधू दरसाई ॥ १ ॥ दधिसुत लियो दियो दधि सुतकों यह छवि देखि नंद मुसिकयाई । नीरज सुत वाहन कौ भच्छन 'सूरस्याम' लेकीर चुगाई ॥ २ ॥

सूरदासजीने श्रीगुसांठल कृत आ पलतुं गाथुं. ओ पद :— राग रामकली— 'प्रे'अ पर्य'क शयनम्' ('उपर लुओ) ओ पद सूरदासजीने श्रीनवनीतप्रियजीना आगण गाथुं. पछी ओ पदने अनुसार सूरदासजीने वलुं पद करीने गायां ते पद 'प्रे'अ पर्य'क गिरिधरन सोहे' ओ पलनातुं कीर्तन सूरदासजीने गाथुं. पछी बाललीलानां पद वलुं गायां. ते पद :— राग बिलावल—१ द्रुअ सभी छि अद्भुत रूप २ 'सोभा आजु भली बनी आई.' ('उपर लुओ) छत्यादि पद सूरदासजीने श्रीनवनीतप्रियजीना

जल में डारि दिये । सो उन पंडित जोतसीन को पद बनायो हतो सो कागद जल में भीजि गयो; और सूरदास को पद हतो सो कागद जल में नाहीं भीज्यो ।

भावप्रकाश—सो या भांति सों, जो-जिन भगवदीयन कों भगवान मिले हैं, उनके पद जो गायगो सो संसार सों तरेगो । और चतुराई करि लौकिक मनुष्य के काव्य के कीर्तन कवित्त जो गावेगो, सो या प्रकार सों संसार में डूवेगो ।

तब सगरे पंडित कवीश्वर लज्जा पायके नीचो माथो करके अपने घरकों गये । सो वे सूरदासजी श्रीआचार्यजी के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते ।

वार्ता-प्रसंग ५—सो इन सूरदासजी नें श्रीनाथजी के कीर्तन की सेवा बहोत दिन ताई करी । सो बीच बीच में जब कुंभनदासजी, परमानंददासजी के कीर्तन के ओसरा आवते, तब सूरदासजी श्रीगोकुल में श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन कूं आवते । सो एक दिन सूरदासजी श्रीगोकुल आये हते, सो बाललीला के पद बहोत गाये । सो सुनिकें श्रीगुसांईजी आप बहोत प्रसन्न भये । तब श्रीगुसांईजी आप एक पलना को कीर्तन करिकें संस्कृत में सूरदास कों सिखायो । सो ता समय श्रीनवनीतप्रियजी पालने में बिराजे, तब सूरदास ने श्रीगुसांईजी कृत यह पलना गायो । सो पद—

धरिने कहुं, के भ्रश्वर साया होय तो आ वातना न्याय करी देजे। येभ कहुी जलमां नाभी दीधा। त्यारे ते पंडित जोतसीनुं अनावेहुं पद हतुं ते कागण जलमां लींजध गयो अने सूरदासनुं पद हतुं ते कागण जलमां न लींज्या।

भावप्रकाश—ये आ रीति के वे भगवदीयेने भगवान भान्या छे। येभनां पद वे गाशे ते स मारथी तरशे अने चतुराई करी लौकिक मनुष्यनां काव्य के कीर्तन कवित्त वे गाशे ते आ प्रकारथी संसारमां डूभशे।

पछी पंडित कविश्वर लज्जा पाभीने नीशुं माथुं करिने पोताना धरे गया। ये सूरदासल श्रीआचार्यलना येवा परम कृपापात्र भगवदीय हुता।

वार्ता-प्रसंग ५—ये सूरदासलये श्रीनाथलनां कीर्तननी सेवा घण्टा द्विस सुधी करी। पय-पयमां कुंभनदासल, परमानंददासलना कीर्तनना वारा व्यापता त्यारे सूरदासल श्रीगोकुलमां श्रीनवनीतप्रियलना दर्शने व्यापता। येक द्विस सूरदासल श्रीगोकुल आव्या हुता। त्यां पालदीलानां पद अहु गायं। ये सांलणीने श्रीगुसांइल पोते घण्टा प्रसन्न थया। त्यारे श्रीगुसांइलये पोते येक पलनानुं कीर्तन करिने संस्कृतमां सूरदासलने 'शीअवाइशुं' ते समये श्रीनवनीतप्रियल पालनामां बिराज्या। त्यारे

बालकनने श्रीगिरिधरजी सों कही, जो-हमारो मन है, सो यामें कछु बाधा नाही है । तब श्रीगिरिधरजी कहे, जो-सवारे श्रीनवनीतप्रियजी को सिंगार करुंगे सो अद्भुत सिंगार करुंगे । ता पाछे नवारे श्रीगिरिधरजी तीनों बालकन सहित श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर में पधारे और सेवा में न्हाये । पाछे श्रीनवनीतप्रियजी कों जगाये, ता पाछे भोग धर्यो । फेरि न्हाय के सिंगार धरावन लागे । सो आषाढ़ के दिन हते तातें गरमी बहोत । सो नवनीतप्रियजी कों कछु बस्त्र नाही धराए । सो मोतीन की दो लर मस्तक पर, मोती के बाजू एहोंची, कटि-किंकनी लुपूर, हार, सब मोतिनके, तिलक, नकवेसर, करनफूल, और कछु नाही । सो सूरदासजी जगमोहन में बैठे हते, सो इनके हृदयमें अनुभव भयो । तब सूरदासजी अपने मन में विचारे जो-आजु तो श्रीनवनीतप्रियजी को अद्भुत सिंगार कियो है । ऐसो सिंगार तो मैंने कबहू देख्यो नाही, और सुन्योहू नाही, जो केवल मोती धराए हैं, और वस्त्र तो कछु धराए हैं नाही । तानों आज माँकों कीर्तन हू अद्भुत गायो चाहिये । सो जब सिंगार के दरसन खुले, तब श्रीगिरिधरजी ने सूरदासजी कों बुलाये और कह्यो, जो-सूरदासजी ! दरसन करो, और कीर्तन गाओ । तब सूरदासजी ने बिलावल में यह कीर्तन करिके श्रीनवनीतप्रियजी कों सुनायो । सो पद—

त्यारे ते त्रणे आसकेअे श्रीगिरिधरएने कछुं, के अमारुं मन छे अेमां कंध आधा नही. त्यारे श्रीगिरिधरए कहे, के सवारे श्रीनवनीतप्रियएने शृंगार करीशुं. ते अद्भुत करीशुं. ते पडी सवारे श्रीगिरिधरए त्रणे आसके सहित श्रीनवनीतप्रियएना मंदि-रमां पधार्यां अने सेवामां न्हाया. पडी श्रीनवनीतप्रियएने जगाव्या. ते पडी भोग धर्यो. करी न्हाएने शृंगार धराववा लाग्या. ते अघाठना दिवस होता. तेथी गरमी घली. तेथी श्रीनवनीतप्रियएने कंध वस्त्र नहीं धराव्यां. मोतीनी पे सउ मस्तक उपर तिसक, नकवेसर, करणफूल पीछुं कंध नहीं. त्यारे सूरदासए जगमोहनमां पेडा होता. त्यां अेमना हृदयमां अनुभव थयो. त्यारे सूरदासए पौताना मनमां वियायुं के आज तो श्रीनवनीतप्रियएने अद्भुत शृंगार कर्यो छे. अेवो शृंगार तो में कही जेथो नहीं अने सांलएयो ये नहीं. जे केवण मोती धराव्यां छे अने वस्त्र तो कंध धराव्यां नथी. तेथी आज मांरे कीर्तन पछु अद्भुत गावां जेअे. पडी न्यारे शृंगारनां दर्शन पुदयां त्यारे श्रीगिरिधरएने सूरदासएने पौसाव्या. अने कछुं, के सूरदासए दर्शन करे अने कीर्तन गाव. त्यारे सूरदासए विलावलमां आ कीर्तन

इत्यादिक पद सूरदासजीने श्रीनवनीतप्रियजी के आगे गाये । तब श्रीगुसांईजी और श्रीगिरधरजी आदि सब बालक कहन लागे जो-हम जा प्रकार श्रीनवनीतप्रियजी को सिंगार करत हैं, सो ताही प्रकार के कीर्तन सूरदासजी गावत हैं । तातें इन सूरदास के ऊपर बहोत ही कृपा है ।

वार्ता-प्रसंग ६—तापाछें श्रीगुसांईजी आप तो श्रीनाथजीद्वार पधारे । सो सूरदासजीने हू श्रीनाथजीद्वार जाइवेको विचार कियो । तब श्रीगिरधरजी आदि सब बालकने कह्यो, जो-सूरदासजी ! दोय दिन श्रीनवनीतप्रियजी को और हू कीर्तन सुनावो, पाछे तुम जइयो । तब सूरदासजी श्रीगोकुल में रहे । सो तब श्रीगिरधरजी सों श्रीगोविंदगायजी, श्रीबालकृष्णजी और श्रीगोकुलनाथजी ये तीनों भाई कहें, जो-ये सूरदासजी, जेसो सिंगार श्रीनवनीतप्रियजी को होत है, तेसेही वस्त्र आभूषण वरणन करत हैं । सो एक दिन अद्भुत अनोखो सिंगार करो, और सूरदासजी को जनावो मति, सो देखें ये कीर्तन कैसे करत हैं ? तब गिरधरजी ने कह्यो जो-ये सूरदासजी भगवदीय है, सो इनके हृदय में स्वरूपानंद को अनुभव है । तासों जेसो तुम सिंगार करोगे, सो तेसो ही पद सूरदासजी वरणन करिके गावेंगे । तासों भगवदीय की परीक्षा नाहीं करनी । तब उन तीनों

आगण गायो । त्पारे श्रीगुसांईजी अने श्रीगिरधरजी आदि अधा पालक कहेवा लाग्यो, के अमे ने प्रकारे श्रीनवनीतप्रियजीने शृंगार करीये छीये तेन प्रकारनां कीर्तन सूरदासजी गाय छे । तेथी आ सूरदासजीना उपर धरणी न कृपा छे ।

वार्ता-प्रसंग ६—त्यारे पछी श्रीगुसांईजी आप तो श्रीनाथजीद्वार पधार्थो । त्पारे सूरदासजीये पछे श्रीनाथजीद्वार जवानो विचार कर्यो । त्पारे श्रीगिरधरजी आदि अधा पालकजीये कहुं, के सूरदासजी ! जे द्विस श्रीनवनीतप्रियजीने भीज पछे कीर्तन सं-लगावो । पछी तमे जणे । त्पारे सूरदासजी श्रीगोकुलमां रखा । ते पछी श्रीगिरधरजीने श्रीगोविंदगायजी, श्रीबालकृष्णजी, अने श्रीगोकुलनाथजीये त्रखे लाधज्योये कहुं, के आ सूरदासजी जेयो शृंगार श्रीनवनीतप्रियजीने थाय छे तेवांन वस्त्र, आभूषणतुं वस्त्र-न करे छे । तेथी अेक द्विस अद्भुत अनोखो शृंगार करे । अने सूरदासजीने जणावो नडी । जेअये, अे कीर्तन केवुं करे छे ? त्पारे गिरधरजीये कहुं, के सूरदासजी भगवदीय छे । तेमना हृदयमां स्वरूपानंदने अनुभव छे । तेथी जेयो तमे शृंगार करेयो तेवुं न पद सूरदासजी वस्त्रन करीने गाथे । तेथी भगवदीयनी परीक्षा करी नडी ।

वार्ता-प्रसंग ७—और सुरदासजी के पास एक ब्रजवासी को लरिका हतो, सो सब कामकाज सुरदासजी को करतो । ताको नाम गोपाल हतो । सो एक दिन सुरदासजी महाप्रसाद लेन कों बैठे, तब वा गोपालसों सुरदासजी कहे, जो-मोकूँ तू लोटीमें जल भरि दीजों । तब गोपाल ब्रजवासी ने कह्यो, जो-तुम महाप्रसाद लेन कों बैठो जो मैं जल भरि देजंगो । सो यह कहिके गोपाल तो गोबर लेवेकॉ गयो । सो तहां दोय चारि वैष्णव हते सो तिनसों बात करन लाग्यो, तब सुरदास कों जल देनो भूलि गयो । और सुरदासजी ता महाप्रसाद लेन बैठे, सो गरे में कौर अटकयो । तब बांये हाथ सों लोटा इत उत देखन लागे, सो पायो नाहीं । तब गरे में कौर अटकयो सो बोल्यो न जाय । तब सुरदास व्याकुल भये । सो इनने में श्रीनाथजी सुरदासजी के पास आयके अपनी झारी धरि आए । तब सुरदासजीने झारी में ते जल पियो । तब गोपाल ब्रजवासी कों सुधि आई, जो-सुरदासजी कों मैं जल नाहीं भरि आयो हूं । सो दोरयो आयो । इतने में सुरदास महाप्रसाद लेके आये । तब गोपाल ब्रजवासीने आयके सुरदास सों कह्यो, जो-सुरदासजी ! तुम महाप्रसाद ले उठे, सो तुमने जल कहां ते पियो ? जो-मैं तो गोबर लेन गयो हतो,

वार्ता-प्रसंग ७-वर्णी सुरदासजीनी पासि एक ब्रजवासीना पासक हुतो. ते सुरदासजीनुं अंधुं कामकाज करतो. अंधुं नाम गोपाल हुतुं. ते एक दिवस सुरदासजी महाप्रसाद लेवा भेदा. तयारे आ गोपालने सुरदासजीअे कछुं, के भने तूं लोटीमां जल भरि देजे. तयारे गोपाल ब्रजवासीअे कछुं, के तमे महाप्रसाद लेवाने भेसा हुं जल भरि दधश. अेम कहीने गोपाल तो छाणु लेवाने गयो. त्यां भे चार वैष्णव हुता तेभनाथी वात करवा लाग्यो. अेरले सुरदासजीने जल देवुं लूटी गयो अने सुरदासजी तो महाप्रसाद लेवा भेदा. ते गणामां कौणीअे अटक्यो तयारे आप्या हाथथी लोटा आम-तेभ जेवा लाग्या. ते मठयो नहीं. तयारे गणामां कौणिअे अटक्यो हुतो ते भेलायुं नही. तयारे सुरदासजी व्याकुल थया. अेरतामां श्रीनाथजी सुरदासजीनी पासि आपीने योतानी झारी धरी गया. तयारे सुरदासजीअे झारीमांथी जल दीधुं. तयारे गोपाल ब्रजवासीने याद आव्युं के सुरदासजीने हुं जल नथी भरि आव्यो तेथी हाउयो आव्यो. अेरतामां सुरदासजी महाप्रसाद लधने आव्या. तयारे गोपाल ब्रजवासीअे आपीने सुरदासने कछुं, के सुरदासजी ! तमे महाप्रसाद लध उठ्या ते तमे जल कयांथी थीधुं ? हुं तो छाणु लेवा गयो हुतो, ते वैष्णवोना संगे वातो करवामां लूटी गयो.

राग विलावल—देखे री हरि नंगमनंगा । जलसुत भूषन अंग विराजत वसन
हीन छवि उठत तरंगा ॥ १ ॥ अंग अंग प्रति अमित माधुरी निरखि लज्जित रति
कोटि अनंगा । किलकत दधिसुत मुख लेपन करि 'सूर' हसत व्रज युवतिन संग ॥ २ ॥

सो सुनिके श्रीगिरधरजी आदि सगरे बालक अपने मनमें
बहोत प्रसन्न भये । और सूरदास सों कहन लागे, जो सूरदासजी !
यह तुम कहा गाये ? तब सूरदासजीने बिनती किनी, जो—महाराज !
जैसे आपने अद्भुत सिंगार कियो, तैसे ही मैंने अद्भुत कीर्तन
गायो है । तब सगरे बालक यह सुनिके सूरदासजी के ऊपर बहोत-
प्रसन्न भये । सो ए सूरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभु के एसे
परम कृपा पात्र भगवदीय हे, सो इनकों श्रीठाकुरजी नित्य हृदय
में अनुभव करावते । ता पाछे श्रीगिरधरजी आप सूरदासजी कों
संग लेके श्रीनाथजीद्वार आये । तब श्रीगिरधरजी ने सब समा-
चार श्रीगुसाईजी सों कहे, जो—या प्रकार अद्भुत सिंगार श्रीनव-
नीतप्रियजी को सगरे बालकन के मनोरथ सों कियो । सो सूरदास
जी ने एसो ही कीर्तन कियो । सो इनके हृदय में अनुभव है । तब
श्रीगुसाईजी आपु श्रीगिरधरजीसों कहे, जो—सूरदासजीकी कहा बात
है ? जो—ये पुष्टिमार्ग के जहाज है । सो भगवल्लीला को अनुभव
इनकों अष्ट प्रहर हैं । सो ये सूरदासजी श्रीआचार्यजीके एसे कृपा
पात्र भगवदीय हते ।

गायने श्रीनवनीतप्रियलने सांलणाव्युं. ते पदः— 'दृषे री हरि नंगमनंगा'
(उपर लुब्धे) अे सांलणीने श्रीगिरधरल आदि षधा षालक पोताना मनमां
षडुण प्रसन्न थया अने सरदासलने कडेवा लाग्या के सरदासल ! आ तमे शुं गायुं ?
त्यारे सरदासलअे बिनती करी, के महाराज ! जेवा आये अद्भुत शृंगार क्ये तेपुं
में अद्भुत कीर्तन गायुं छे. त्यारे सधणा षालक अे सांलणीने सरदासल उपर षडु
प्रसन्न थया. अेथी अे सरदासल श्रीआचार्यल महाप्रभुलना अेवा परम कृपापात्र
लगवदीय हुता. अेमने श्रीठाकुरल नित्य हृदयमां अनुभव करावता. ते पछी श्रीगि-
रिधरल आप सरदासलने संग लधने श्रीनाथलद्वार आव्या. त्यारे श्रीगिरिधरलअे
षधा समान्यार श्रीगुसांघलने कही, के आ प्रकार अद्भुत शृंगार श्रीनवनीतप्रियलने
षधा षालकेना मनोरथथी क्ये अने सरदासलअे अेषुं कीर्तन गायुं अेमना
हृदयमां अनुभव छे. त्यारे श्रीगुसांघल आप श्रीगिरिधरलने कहे, के सरदासलनी
शी वात छे ? अे पुष्टिभागना जहाज छे. अेमने लगवदीलाना अनुभव अष्टप्रहर
छे, अे सरदासल श्रीआचार्यलना अेवा कृपापात्र लगवदीय हुता.

वार्ता-प्रसंग ७—और सूरदासजी के पास एक ब्रजवासी को लरिका हतो, सो सब कामकाज सूरदासजी को करतो । ताको नाम गोपाल हतो । सो एक दिन सूरदासजी महाप्रसाद लेन कों बैठे, तब वा गोपालसों सूरदासजी कहे, जो-मोकूं तू लोटी में जल भरि दीजों । तब गोपाल ब्रजवासी ने कह्यो, जो-तुम महाप्रसाद लेन कों बैठो जो मैं जल भरि देऊंगो । सो यह कहिके गोपाल तो गोबर लेवेकों गयो । सो तहां दोय चारि वैष्णव हते सो तिनसों बात करन लाग्यो, तब सूरदास कों जल देनो भूलि गयो । और सूरदासजी ता महाप्रसाद लेन बैठे, सो गरे में कौर अटक्यो । तब बांये हाथ सों लोटा इत उत देखन लागे, मो पायो नाहीं । तब गरे में कौर अटक्यो सो बोल्यो न जाय । तब सूरदास व्याकुल भये । सो इनने में श्रीनाथजी सूरदासजी के पास आयके अपनी झारी धरि आए । तब सूरदासजीने झारी में ते जल पियो । तब गोपाल ब्रजवासी कों सुधि आई, जो-सूरदासजी कों मैं जल नाहीं भरि आयो हूं । सो दोरयो आयो । इतने में सूरदास महाप्रसाद लेके आये । तब गोपाल ब्रजवासीने आयके सूरदास सों कह्यो, जो-सूरदासजी ! तुम महाप्रसाद ले उठे, सो तुमने जल कहाँ ते पियो ? जो-मैं तो गोबर लेन गयो हतो,

वार्ता-प्रसंग ७-वणी सूरदासलुनी पासै एक ब्रजवासीना प्यासक हुतो. ते सूरदासलुनुं अंधुं कामकाज करतो. अंतुं नाम गोपाल लुनुं. ते एक दिवस सूरदासलु महाप्रसाद लेवा भेदा त्यारे आ गोपालने सूरदासलुअे कछुं, के मने तूं लोटीमां नल लरी हने. त्यारे गोपाल ब्रजवासीअे कछुं, के तमे महाप्रसाद लेवाने भेसा हुं नल लरी दधश. अेम कहीने गोपाल तो छाणु लेवाने गयो. त्यां भे यारे वैष्णुव हुता तेमनाथी वात करवा लाग्या. अेरले सूरदासलुने नल दधुं लूदी गयो अने सूरदासलु तो महाप्रसाद लेवा भेदा. ते गणांमां डोणीअे अटक्यो त्यारे छाया हाथथी लोटा आम-तेम भेवा लाग्या. ते मल्यो नही. त्यारे गणांमां डोणिअे अटक्यो हुतो ते भेलायुं नही. त्यारे सूरदासलु व्याकुल थया. अेरलांमां श्रीनाथलु सूरदासलुनी पासै आवीने घातानी आरी धरी गया. त्यारे सूरदासलुअे आरीमांथी नल लीधुं. त्यारे गोपाल ब्रजवासीने याद आव्युं के सूरदासलुने हुं नल नथी लरी आव्या तेथी हाड्यो आव्या. अेरलांमां सूरदासलु महाप्रसाद लधने आव्या. त्यारे गोपाल ब्रजवासीअे आवीने सूरदासने कछुं, के सूरदासलु ! तमे महाप्रसाद लध उठ्या ते तमे नल क्योथी पीधुं ? हुं तो छाणु लेवा गयो हुतो, ते वैष्णुवोना सगे वातो करवांमां लूदी गयो.

सो वैष्णव के संग बात करत में भूलि गयो। तासों अब मैं दोरयो आयो हूं। तब सूरदासने ब्रजवासी सों कह्यो, जो-तेनें गोपाल नाम काहे कों धरायो ? जो गोपाल तो एक श्रीनाथजी हैं। तासों आज मेरी रक्षा करी। नाँतर गरे में ऐसो कोर अटक्यो हतो सो जल बिना बोल निकसे नाही। तब मैं व्याकुल भयो, तब हाथ में जल की झारी आई सो मैं जल पान कियो। तासों मैंने जान्यो जो तेने धरयो होयगो। और अब तू कहत है, जो मैं नाहीं हतो। सो ताते मंदिरवारो गोपाल होयगो। जो देखि तो झारी कैसी है। तब गोपाल ब्रजवासी जहां सूरदामजी महाप्रसाद लिये हते तहाँ आय के देखे तो सोने की झारी है। सो उठाय के गोपाल सूरदामजी के पास आय के कह्यो, जो-ये झारी तो मंदिर की है। सो तब सूरदास ने वा गोपाल ब्रजवासी सों कह्यो, जो-तेने बहोत बुरो काम कियो, जो ठाकुरजी कों इतनो श्रम करवायो। जो मेरे लिये झारी लेके श्रीठाकुरजी कों आनो परयो। सो या प्रकार सूरदामजी ने गोपालदास सों कह्यो, जो-ये झारी तू जनन सों राखियो। और जब श्रीगुसाईजी आपु पौढि के उठे तब उनकों सोपि आइयो। तब गोपालदास ने झारी लेके श्रीगुसाईजी के पास आय, दंडवन करि आगे राखी। तब श्रीगुसाईजी आपु कहे, ये झारी तेरे पाम कैसे आई ?

तेथी हवे हुं दौडीने आव्यो छुं। त्पारे सरदासलये प्रजवासीने कहुं, के ते गोपाल नाम शा भाटे धराव्युं ? गोपाल तो अेक श्रीनाथल छे। तेथी आव भारी रक्षा करी। नही तो गणामां अेवो कौणिलो अटक्यो हुतो के जल विना पोल न निकणे। त्पारे हुं व्याकुण थयो। त्पारे हाथमां जलनी आरी आवी ते में जलपान क्युं। तेथी में लख्युं के ते धर्युं हसे अने हवे तू कहे छे के हुं नहते। तेथी मंदिरवाणे गोपाल हसे। जे तो, आरी केवी छे ? त्पारे गोपाल प्रजवासी न्यां सरदासल महाप्रसाद लेता हुता त्यां आवीने लुअे तो सोनानी आरी छे ते उठावीने गोपाले सरदासलनी पासे आवीने कहुं, के आ आरी तो मंदिरनी छे। त्पारे सरदासलये आ गोपाल प्रजवासीने कहुं, के ते धर्युं भोटुं काम क्युं। श्रीठाकुरलने आरलो श्रम कराव्यो ? के भारे भाटे आरी लधने श्रीठाकुरलने आववुं पड्युं। अे प्रकारे सरदासलये गोपालदासने कहुं, (पथी कहुं) के आरी तू सायवीने राषणे अने न्यारे श्रीगुसांघल आप लगीने छे त्पारे अेभने सोपी आवणे। त्पारे गोपालदासे आरी लधने श्रीगुसांघल पासे आवी दंडवत करी आगण धरी। त्पारे श्रीगुसांघल आप कहे, अे आरी तारी पासे

जो-ये झारी तो श्रीगोवर्द्धनधर की है। तब गोपालदास ने श्रीगुसाईंजी सों विनती कीनी, जो-महाराज ! यह अपराध मोसों परयो है। पाछे सब बात कही। तब यह बात सुनिके श्रीगुसाईंजी आप तत्काल स्नान करिकें झारी कों मँजवाय, दूसरो वस्त्र लपेटिकें मंदिर में बेगि ही झारी लेके पधारे। पाछे श्रीगोवर्द्धनधर कूं जलपान कराइ के कहे, जो आज-तो सूरदास की बड़ी रक्षा कीनी। सो तुम विन कौन वैष्णवकी रक्षा करे ? तब श्रीनाथजी ने कही, जो-सूरदास के गरे में कौर अटकयो सो व्याकुल भये, तासों झारी धरि आयो।

भावप्रकाश—सो काहेते ? जो सूरदास व्याकुल भये, सो मैं ही व्याकुल भयो। जो भगवदीय है सो मेरो स्वरूप है।

ता पाछे उत्थापन के किंवाड़ खोले। सो सूरदासजी आइ के उत्थापन के दरसन किये। सो उत्थापन समे को भोग श्रीगुसाईंजी श्रीनाथजी कों धरि सूरदास के पास आईके कहे, जो-आज गोपाल ने तिहारे ऊपर बड़ी कृपा करी है। तब सूरदासजी ने कह्यो, जो-महाराज ! यह सब आपकी कृपा है। नाहिं तो श्रीनाथजी मो सरीखे पतितन कों कहा जावें ? जो सब श्रीआचार्यजी की का'नि तें अंगीकार करत हैं। तब श्रीगुसाईंजी आपु कहे, जो-तुम बड़े भगवदीय

डेवी रीते आवी ? ओ आरी तो श्रीगोवर्द्धनधरनी छे। त्पारे गोपालदासे श्रीगुसांठलने विनती करी के, महाराज ! आ अपराध माराथी पडयो छे। पछी अधी वात कही। त्पारे आ वात सांलणीने श्रीगुसांठल आपे तत्काल स्नान करीने आरीने मंजवी भीलुं वस्त्र लपेटिने मंदिरमां जल्दी ज आरी लधने पधार्या। पछी श्रीगोवर्द्धनधरने जलपान करावीने कहे, के आज तो सूरदासनी भूष रक्षा करी। तमारा विना वैष्णवनी रक्षा कोणु करे ? त्पारे श्रीनाथलओ कहुं, के सूरदासलना गणामां कोणियो अटकयो ते व्याकुल थया। तेथी आरी धरी आव्यो।

भावप्रकाश—ते शाथी ? ने सूरदास व्याकुल थया ते हुंन व्याकुल थयो। केम, ने भगवदीय छे ते माइं स्वरूप छे।

ते पछी उत्थापननां कमाड जोएयां त्पारे सूरदासलओ आवीने उत्थापननां दर्शन कर्यां। पछी उत्थापन समयने भोग श्रीगुसांठलओ श्रीनाथलने धरी सूरदासलनी पासे आवीने कहुं, के आज गोपाले तमारा उपर महान कृपा करी छे। त्पारे सूरदासलओ कहुं, के महाराज ! आ अधी आपनी कृपा छे। नहीं तो श्रीनाथल मारा जेवा पतिताने शुंनलओ ? अधुं श्रीआचार्यलनी का'निथी अंगीकार करे छे। त्पारे

हो । जो भगवदीय विना ऐसी दैन्यता कहाँ मिले ? सो सूरदासजी श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगदीय हते ।

वार्ता-प्रसंग ८—श्रीनाथजी के मंदिर के नीचे गोपालपुर गास है । सो तहां एक बनिया रहतो । सो ऐसो गृहकार्य में और लोभ में आसक्त हतो, जो-कबहुं श्रीनाथजी को दरसन नहीं कियो । और श्रीगुसांईजी की सरन हू नहीं आयो । सो गोपालपुर में परवत के नीचे बाकी दुकान हती । सो वह बनिया गोपालपुर में दुकान खोलतो सो पहले जो कोई वैष्णव श्रीनाथजी के दरसन करि के परवत के ऊपर सों आवतो ताकों बुलाय के पहले पूछतो, जो-आज श्रीनाथजीकौ कहा सिंगार है ? सो वैष्णव याकों बतावतो । सो ताही प्रकार बनिया सब वैष्णवन के आगे श्रीनाथजी के दरसन की बड़ाई करतो, जो-देखो, आज श्रीनाथजी को कैसो सिंगार भयो है । कैसो अलौकिक दरसन भयो है । या भांति सों सबतें कहतो, आप दरसन कों कबहू नहीं आवतो, और वैष्णवन कों दिखाइवे के लिये माला पहारि लेतो, और आछो तिलक, आछो छापा लगावतो । और वैष्णव आगे प्रेम की वार्ता करतो । सो वे वैष्णव प्रसन्न होय के बाकों वैष्णव जानिके सीधो सांसगी लेते । सो या प्रकार पाखंड करि वि-

श्रीगुसांईजी आप छे, के तमे महान भगवदीय छे । भगवदीय विना आवी दैन्यता क्यां भजे ? ते सरदासजी श्रीआचार्यजीना जेवा कृपापात्र भगवदीय छे ।

वार्ता-प्रसंग ८—श्रीनाथजीना मंदिरना नीचे गोपालपुर गास छे । त्यां जेक वाणियो रहते छे । ते गृहकार्य अने दोलभां जेवा आसक्त छे । के कोछ द्विसे श्रीनाथजीना दर्शन क्यां नहतां अने श्रीगुसांईजीनी शरणे पणु आव्यो नहते । तेनी दुकान गोपालपुरभां परवत नीचे छती । ते वाणियो गोपालपुरभां दुकान ओसते ते पहेंसां जे कोछ वैष्णव श्रीनाथजीना दर्शन करी परवत उपरथी आवते । तेने ओलावीने पहेंसां पूछते के आज श्रीनाथजीना सिंगार शे छे ? तयारे जे वैष्णव जेने अतावते । पछी तेज प्रकारे ते वाणियो अथा वैष्णवोनी आगण श्रीनाथजीना दर्शननी वडाइ करतो । के लुआ, आज श्रीनाथजीना जेवा सुंदर सिंगार थयो छे । जेवां अलौकिक दर्शन थयां छे । जे प्रकारे अथाने छहते । ते पोते दर्शन कहीय न आवते । वणी वैष्णवोने दृष्टावयाने भाटे भासा पहेंरी लेते अने सुंदर तिलक, सुंदर छापा लगावते । वणी वैष्णवो आगण प्रेमनी वार्ता करतो । तेथी ते वैष्णवो प्रसन्न थयने अने वैष्णव जाणुने सीधुं सांसगी लेता । जे प्रकारे पाखंड करी चिन्दास दह-दहने अथा वैष्णवोने छे । तेजे

इवांस दे देके सब वैष्णवन कों ठगे। सो द्रव्य वहोत भेलो कियो,
परन्तु कोडी एक मरचे नाहीं। सो ऐसे करत साठ बरस को भयो।
तब एक दिन सूरदासजी सों वा बनिया ने कही, जो-सूरदासजी!
आज तुम देखो, कैसो सुन्दर सिंगार भयो है। और तुम तो कोई
दिन मेरी हाट सों सीधो मामान लेत नाहीं हो, और कोई दिन मेरी
हाट ऊपर तुम आवत नाहीं हो। सो तुम ऐसे वैष्णव गुनी हो सो
मेरो अपराध कहा, जो मेरी हाट तें सोदा लेत नाहीं? ओर यह हाट
तिहारी है। मैं तो तुम वैष्णवन को दास हूँ तासों ओ पर कृपा
करो। या भांति बनिया के बचन सुनि सूरदास अपने मनमें विचारी
जो देखो, बनिया कैसो सुंदर बोलत है, जो ऊपर सों लोभ सों कपट
करत है, तासों अब याको कपट छुड़ावनी। और बनियाने कोई दिन
श्रीनाथजी के दरसन किये नाहीं सो याकों दरसन हूँ करावनी और
याकों वैष्णव हूँ कराय देनी। तब यह विचारि के सूरदास ने वा बनिया
सों कही, जो-तें जनम भर में कोई दिन दरसन नाहीं कियो है, सो मैं
तोको जानत हों। और तू वैष्णव है नाहीं, सो तासों मैं तेरी हाट
पर नाहीं आवत हों। तू सांची कहि दे, जो-तेंने जनम भर में कोई
दिन श्रीनाथजी के दरसन किये हैं। तब यह बचन सुनिके बनिया
अपने मन में बहोत ही खिस्यानो होय गयो, और वह बनिया सूरदास

द्रव्य पणु घणुं लेणुं क्युं. परंतु कोडी एक अरथे नहीं. अम करतां साठ वर्षना
थयो. त्तारे एक दिवस सूरदासणुने अे वाणुआअे क्युं, के सूरदासणु! आअे तमे
लुआे देवे सुंदर शृंगार थयो छे? वणी तमे तो कोछ दिवस भारी दुकानेथी सीधुं
साभान लेता नथी अने कोछ दिवस भारी दुकाने उपर तमे आवता नथी. तमे आवा
वैष्णव गुणी छे ते भारे अपराध शे, के भारी दुकानेथी तमे सोदा लेता नथी? अने
आ दुकान तो तभारी छे. हुं तो तभारा वैष्णवोना दास छुं तेथी भारे उपर कृपा करे.
अे प्रकारे वाणुआनां वयन सांभणीने सूरदासणुअे पोताना मनसां विचार्ये के लुआे,
वाणुथे केपुं सुंदर भोले छे. के उपरथी लोअथी कपट करे छे तेथी हुवे तनुं कपट
छाडायवुं. वणी वाणुआअे कोछ दिवस श्रीनाथणुनां दर्शन क्यो नथी तेथी अने
दर्शन पणु करायवां अने अने वैष्णव पणु करायवो. अेम विचारीने सूरदासणुअे ते
वाणुआने क्युं, के ते नमभर कोछ दिवस दर्शन क्यो नथी ते हुं तने वाणुं छुं.
वणी तू वैष्णव नथी तेथी हुं त्तारी दुकाने उपर आवतो नथी. तू साथे कही दे के ते
नमभरमां कोछ दिवस श्रीनाथणुनां दर्शन क्यो छे? अे वयन सांभणीने वाणुथे

सों बोल्यो, जो-सूरदासजी ! तुम यह बात और काहू के आगे मति कहियो । जो-मैं यासों दरसन कों नहिं आवत हों, जो हाट छोड़ि दरसन कों जाऊं तो यहां वैष्णव सोदा कों फिरि जाय, जो और की हाट सों लेन लागें, तब मैं खाऊं कहां ते ? और कोऊ मेरे पास ऐसो मनुष्य नाहिं है, जो-जा समय दरसन के किंवाड़ खुलें ता समय मोकों आय के खबर करे, जातें मैं बेगि ही दौरिके दरसन करि आऊं । तब वा बनिया तें सूरदास ने कही, जो-मैं जा समय आईकें खबरि करूं सो ता समय तू चलेगो ? तब बनिया ने कही, जो-तुम आइके खबरि करियो, जो-मैं चलूंगो । जो मेरे मन में दरसन की बहोत है । तब सूरदासजी कहे, जो मैं उत्थापन के समय आऊंगो । सो यह कहिके सूरदासजी तो गये । पाछे जब उत्थापन को समय भयो तब शंखनाद भये, तब सूरदासजी ने आइके वा बनिया सों कही, जो-अब शंखनाद भये हैं तासों दरसन को समय है, सो अब चलो । तब वा बनिया ने सूरदासजी सों कह्यो, जो-या समय गाँव के लोग सौदा लेन आवत हैं, सो भोग के किंवाड़ खुलें ता समय तुम मोकों खबरि करियो । तब सूरदासजी ने पर्वत ऊपर आइके श्रीनाथजी के दरसन किये, और कीर्तन किये । ता पाछे श्रीनाथजी के भोग के

घोताना मनभां भहु बोड़ा पडी गयो अने ते वाण्डियाये सरदासने कहुं, के सरदासल ! तमे आ वात भीजनी आगण न कहेता. हुं अथी दर्शने नथी आवतो के दुकान छोडी दर्शने जठे तो अहो वैष्णवो सोदाने माटे पाछा जय अने भीजनी दुकानेथी लेवा लागे. त्यारे हुं आठे शुं ? अने कोछ भारी पासे अवेो मनुष्य नथी के जे समये दर्शननां कमाड भुले ते समये मने आवीने अण्णर करे जेथी हुं जदही दोडीने दर्शन करी आवुं. त्यारे अे वाण्डियाने सरदासे कहुं, के हुं जे समये आवीने अण्णर करे ते समये तू यादीश ? त्यारे वाण्डियाये कहुं, के तमे आवीने अण्णर करजे, हुं यादीश. केम जे भारा मनभां दर्शननी (लाससा) भहु छे. त्यारे सरदासल कहे, के हुं उत्थापनना समये आवीश. अेभ कहीने सरदासल तो गया. पछी न्यारे उत्थापनना समये थयो त्यारे शंखनाद थया. त्यारे सरदासलये आवीने अे वाण्डियाये कहुं, के लुवे शंखनाद थया छे तेथी दर्शनना समये छे लुवे यालो. त्यारे अे वाण्डियाये सरदासलने कहुं, के आ समये गाभना लोको सोदा लेवा आवे छे अथी लोगनां कमाड भुले ते समये तमे मने अण्णर करजे. त्यारे सरदासलये पर्वत उपर आवीने श्रीनाथलनां दर्शन कर्यां अने कीर्तन कर्यां. ते पछी श्रीनाथलना

दरसन को समय भयो, तब सूरदासजी परवत सों नीचे उतरि के वा बनिया सों कहे, जो-दरसन को समय है, तासों अब तो दरसन कों चलि ! तब वा बनिया ने सूरदास सों कह्यो, जो-सूरदासजी ! अब तो बनतें गाय आइवे को समय भयो है, तासों मंदिर में चलूं तो गाय आइके मेरो सगरो अनाज खाय जाँय । तासों अब तुम सेन आरती के समय जताइयो सो तहां ताई गाय सब अपने अपने घर जाँयगी । तब सूरदासजी फेरि भोग के समय जायके दरसन किये ता पाछें संध्या के दरसन किये । पाछें सेन आरती के दरसन को समय भयो तब सूरदासजी ने आइके बनिया कों खबरि कीनी, जो-चलि अब सेन आरती के दरसन को समय है । तब वा बनिया ने सूरदास सों कही, जो-सूरदासजी ! आज तुमकों बहोन अस भयो है । परन्तु अब दीया बारिवे को समय है, सो काहेतें, जो-अब या समय लक्ष्मी आवत है, तासों दीया न होय तो लक्ष्मी पाछी फिरि जाय । और कोई मेरी हाटतें अन्न चुराय लेय तो म कहा करूं ? तासों अब मैं सवारे प्रातःकाल दरसन करि ता पाछें हाट खोलूंगो । तासों मोकों मंगला के समय आइके खबरि करियो । आज मैंने तुमसों बहोन फेरा खवाये । तब सूरदासजी मंदिर में आइके श्री-

लोगना दर्शनना समय थयो. त्यारे सुरदासलये पर्वतथी नीचे उतरिने ते वाण्डिया-
ने कहुं, के दर्शनना समय छे तेथी हुवे तो दर्शन यादो. त्यारे ते वाण्डियाये सुरदा-
सलने कहुं, के सुरदासल ! हुवे तो वनभांथी गायो आववानो समय थयो छे तेथी
मंदिरमां याहुं तो गाय आवीने भाइं अंधुं अनाज आइ जय, तेथी हुवे तमे सेन
आरतीना समये जलुवये. त्यां सुधी गाय अंधी पोतपोताने धरे जशे. त्यारे सुरदा-
सलये इरी लोगना समये जठने दर्शन कर्यां. ते पछी संध्यानां दर्शन कर्यां. पछी
सेन-आरतीना दर्शनना समय थयो त्यारे सुरदासलये आवीने वाण्डियाने अण्डर
करी के यास हुवे सेन-आरतीना दर्शनना समय छे. त्यारे ते वाण्डियाये सुरदासने
कहुं, के सुरदासल ! आज तमने अहु श्रम थयो छे. परंतु हुवे दीवो आणवानो समय
छे. केभके हुवे आ समये लक्ष्मी आवे छे. तेथी दीवो न होय तो लक्ष्मी पाछी इरी
जय. अने केभ मारी दुकानेथी अन्न चोरी ले तो हुं शुं करं ? तेथी हुवे हुं सवारे
प्रातःकाल दर्शन करी ते पछी दुकान जोदीश. तेथी मने मंगलाना समये आवीने
अण्डर करये. आणे में तमने अहु इश अण्डाव्या. त्यारे सुरदासलये मंदिरमां
आवीने श्रीनाथलनां दर्शन कर्यां. ते पछी सेन समये कीर्तन गायां, पछी प्रातःकाल

नाथजी के दरसन किये । ता पाछें सेन समय कीर्तन गाये । पाछें प्रातःकाल भयो, तब न्हाय के सूरदासजी ने आहूके वा बनिया सों कही, जो-मंगला को समय है, सो अब तो चलि ! तब वा बनिया ने कही, जो-सूरदासजी ! अब ही तो हाट बुहारि के मांडनी है । तासों बोहनी के समय कोई गाहूक फिरि जाय तो सगरो दिन खाली जाय । तासों हाट लगाय के सिंगार के दरसन कों चलूंगो । तासों सिंगार के समय कहियो । तब सूरदासजी ने मंगला आरती के दरसन किये । पाछें सूरदासजी सिंगार के समय फेरि आये । तब वा बनिया ने कही, जो-अब ही मैं आछी काहू की बोहनी कीनी नाहीं है, और गाय डोलत हैं । तासों अब राजभोग के दरसन अवश्य करूंगो । सो देखो तुम कालिह तें मेरे लिये बहोत फिरत हो, जो-तुम बड़े भगवदीय हो । सो सूरदासजी फेरि श्रीनाथजी के दरसन कों परवत पर आये । तब श्रीनाथजी के सिंगार के दरसन किये कीर्तन किये । ता पाछें राजभोग आरती को समय भयो, तब सूरदासजी ने वा बनिया सों कह्यो, जो-अब चलोगे ? तब वा बनियाने कह्यो, जो-या समय मैं कैसे चलें ? जो अब वैष्णव राजभोग के दरसन करि के नीचे आवेंगे । सो सब या समय सीधा सामग्री लेत हैं । जो मैं बूढो, कब आजँ परवत सों उतरि कें, कैसे बेगि आयो जाय ? और याही

थयुं त्यारे न्हायने सूरदासलये आवीने ते वाखियाने कछुं, के मंगलानो समय छे तेथी हुवे तो यास. त्यारे ते वाखियाये कछुं, के सूरदासल ! हुवे तो दुकान आडीने मांडवी छे तेथी भोण्णीना समये केछ धराक पाछुं जय तो व्याभो द्विस आडी जय. तेथो दुकान मांडीने शृंगारना दर्शने यादीश. तेथी शृंगारना समये कहेजे. त्यारे सूरदासलये मंगला आरतीनां दर्शने कर्यां. पछी सूरदासल शृंगारना समये इरी आव्या. त्यारे ते वाखियाये कछुं, के हुनु तो में केछनी सारी भोण्णी करी नथी अने गाय लटके छे. तेथी हुवे राजभोगनां दर्शने अयश्य इरीश. लुअो तमे डालथी मारा माटे थहु इरे छे ते तमे मोटा लजवदीय छे. त्यारे सूरदासल इरी श्रीनाथलना दर्शने परवत उपर आव्या. त्यारे श्रीनाथलना शृंगारनां दर्शने कर्यां, कीर्तन कर्यां. ते पछी राजभोग आरतिना समय थयो त्यारे सूरदासलये ते वाखियाने कछुं, के हुवे यासशा ? त्यारे ते वाखियाये कछुं, के आ समये हुं डेवी रीते आवुं ? हुवे वैष्णवो राजभोगनां दर्शने करीने नीचे आवशे. ते थधा आ समये सीधुं सामथी ले छे. हुं वृद्ध थ्यारे आवुं ? परवत उपरथी उतरिने डेवी रीते नददी आवी शक्य.

बखत विक्री को समय है । जो याही समय कछु मिले सो मिले । तासों उत्थापन के समय दरसन करुंगो । या प्रकार सूरदासजी वा बनिया के साथ तीन दिन नाई रहे । परंतु वह बनिया ऐसी लोभी सो दरसन कों नाहीं गयो । ता पाछे चौथे दिन नहाय के सूरदासजी प्रातःकाल मंगला के दरसन कों चले । तब सूरदासजी अपने मन में बिचारे, जो-देखो, या बनिया कों तीन दिन भये, परंतु दरसन कों नाहीं गयो । तासों आज जो यह न चले तो याकों भय दिखावनी, और दरसन करावनी । यह विचारिके सूरदासजी वा बनिया की पास आय के कह्यो, जो-तीन दिन बीति चुके मोकों फिरते, परि तू दरसन कों नाहीं चल्यो । जो आज तो चलि । तब वा बनियानें कह्यो, जो-कछु बोहनी करि सिंगार के दरसन करुंगो । तब सूरदासजी वह बनिया सों कही, जो-अब तो मैं तेरी बात सगरे वैष्णवन में प्रगट करुंगो । जो यह बनिया झूठो बहोन है, सो कबहू याने श्रीनाथजी को दरसन नाहीं कियो । और यह वैष्णव हू नाहीं है । अब तेरे पास कोई वैष्णव सोदा लैन आवेगो तो मैं तेरे दोहा, चौपाई, पद, कुटिलता के करिके वैष्णवन कों सुनाऊंगो । सो या भाँति कहिके भैरव राग में एक पद गायो-

वणी आ वषत वेयवानो छे . आ समय ले भणे ते भणे . तथी उत्थापनना समये दर्शन करीश . अे प्रकारे सूरदासजी अे वाण्डियानी साथे त्रयु द्विवस सुधी रह्या . परंतु अे वाण्डियो अेवो दोली के दर्शने न गयो . ते पछी चौथा द्विवसे नहायने सूरदासजी प्रातःकाल मंगलाना दर्शने याह्या . तयारे सूरदासजीअे पोताना मनमां विचार्युं , के लुअो , आ वाण्डियाने त्रयु द्विवस थया परंतु दर्शने नह्यो गयो तेथी आज तो आ न यादे तो अेने लय हयाउवो अने दर्शन करावयां . अेम विचारीने सूरदासजीअे अे वाण्डियानी पासो आवीने कछुं , के त्रयु द्विवस वीती चुक्या मने इरतां परंतु तू दर्शने न याह्यो भारे आज तो याल . तयारे ते वाण्डियाअे कछुं , के कंठ घोणी करी शृंगारनां दर्शन करीश . तयारे सूरदासजीअे वाण्डियाने कछुं ; के लुवे तो हुं तारी वात पथा वैष्णुवोमां प्रकट करीश , के आ वाण्डियो लूठा धर्या छे . अेले क्यारेय श्रीनाथजीनां दर्शन नथी क्यारं अने आ वैष्णुव पणु नथी . लुवे तारी पासो केअ वैष्णुव सोदा लेवा आवशे तो हुं तारा दोहा , चौपाई , पद कुटिलतानां करीने वैष्णुवोने संलणावीश . अेम कहीने लैरव रागमां अेक पद गाथुं :- राग लैरव—' आज काम काल काम '

राग भैरव—आज काम काहिद काम परसों काम करना । पहेले दिन वोहोत काम विमुख भए चरना ॥ २ ॥ जागत काम सोवत काम काम ही में पचि मरना । छांढि काम सुमरि स्याम 'सूर' पकरि सरना ॥ २ ॥

सो यह पद सूरदासजी ने वा बनिया कों वाही समय करिके सुनायो । सो तब तो वा बनिया अपने मन में डरप्यो । पाछे, सूरदासजी के पाँवन परि वा बनिया ने बिनती कीनी, जो—तुम मेरे दोहा कवित्त कछु बरनन मति करो, और मेरी बात कोई सों प्रगट मति करो । जो मैं अबही तिहारे संग चलूंगो । पाछे वह बनिया सूरदासजी के संग आयो । तब भंगला के किंवाड़ खुले, तब सूरदासजी ने श्रीनाथजी सों कह्यो, जो—महाराज ! यह बनिया दैवी जीव है, सो तासों अब याके मन कों आकर्षन करिके याको उद्धार करो । सो काहेतें ? जो यह तिहारी ध्वजा के नीचे रहत है । तब श्रीनाथजी कहें, जो—मेरे पास रहत है, सो कहा मोकों जानत है ? तुम सब भगवदीयन की कृपा होय सो तबही मोकों पावे ।

भावप्रकाश—सो काहेते ? जो गंगा यमुना में अनेक जीव हैं सो कहा कृतार्थ हैं ? जो माखी मच्छर चेंटी आदि श्रीप्रभु के बहोत जीव हैं, सो कहा कृतार्थ हैं ? जो भगवदीयन को संग होय तब ही कृतार्थ होय । सो तब ही श्रीप्रभुन कों पावे । भगवदीयन के संग सों दासभाव होय तब ही कृपा होय ।

पाछे श्रीनाथजी ने वा बनिया कों ऐसो दरमन दियो, सो

(उपर लुब्धो) अये पद सूरदासजी अये वाखियाने तेज समये करीने संलगाव्युं, त्यारे ते वाखियो पोताना मनमां उर्थो. पछी सूरदासजीना पगे पडी ते वाखियाअये विनंती करी के तमे भारा होहा, कवित्त कंठ पणुंन न करे अने भारी वात कोषनी आगण न करता. हुं लुभ्यां न तमारी साथे आदीश. पछी अये वाखियो सूरदासजीना संगे आव्यो. त्यारे भंगलानां कभाउ पुल्यां. त्यारे सूरदासजी अये श्रीनाथजीने कछुं, के महु-राज ! आ वाखियो दैवी जीव छे. तेथी लुवे अयेना मननुं आकर्षण करीने अयेना उद्धार करे. केमके अये तमारी ध्वजानी नीचे रहले छे. त्यारे श्रीनाथजी कहे, के भारी पासे रहले छे ते शुं भने लखे छे ? तमारा अथा भगवदीयानी कृपा थाय त्यारे न भने पासे.

भावप्रकाश—केमके गंगा-यमुनामां अनेक जीव छे ते शुं कृतार्थ छे ? माखी, मच्छर, कीडी आदि श्रीप्रभुना धजा लुवे छे ते शुं कृतार्थ छे ? भगवदीयनो संगे होय त्यारे न कृतार्थ थाय, त्यारे न श्रीप्रभुने पासे. भगवदीयनो संगे होय त्यारे कृपा थाय.

वाको मन हरि लीनो । सो जब मंगला के दरसन होय चुके तब वा बनियाने सूरदासजी के चरन पकारि के बिनती कीनी, जो-महाराज ! मेरो जनम सगरो वृथा गयो, द्रव्य जोरबेमें । मेरे पास द्रव्य बहोत हैं, सो अब तुम चाहौ तहां या द्रव्य कौ खरच करो । और मोकों श्रीगुसाईजी को सेवक कराय के वैष्णव करो । तब सूरदासजी ने या बनिया सों कह्यो, जो-तू न्हाय के काहू कौ छुड़यो मति, यहां आय बैठियो । सो इतने में श्रीगुसाईजी आप सिंगार करि चुके, तब सूरदासजी नें श्रीगुसाईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! या बनिया कौ सरन लीजिये । तब श्रीगुसाईजी आप श्रीमुख सों सूरदासजी सों कहे, जो-सूरदासजी ! तुमने भलो साठि बरस को बूढो बेल नाथ्यो । तुम विना या बनिया को सगरो जनम यौही जातो । पाछे श्रीगुसाईजी आप वा बनिया कौ बुलाय कें श्रीनाथजी के सन्निधान बैठाय के नाम-ब्रह्मसंबंध करवायो । सो वा बनिया की बुद्धि निरमल होय गई । सो तब सगरे दरसन नित्य नेम सों करन लाग्यो । और वा बनिया नें श्रीगुसाईजी कौ बहोत भेट करी । और श्रीनाथजी के वागा वस्त्र सामग्री कराय आभूषण कराये, और अंगीकार कराये । ता पाछे एक दिन वा बनिया ने सूरदासजी सों कही, जो-सूरदासजी ! तिहारी

पछी श्रीनाथलये ये वाखियाने येवां दर्शन दीधां के येहुं मन हरी दीधुं । पछी न्यारे मंगलानां दर्शन थध यूक्यां त्यारे ते वाखियाने सूरदासलना चरलु पछीने विनंती करी के महाराज ! भारे जन्म सधणे वृथा गयो, द्रव्य जेठवामां । भारे पास द्रव्य धलुं छे । हुवे तमे याहो त्यां ये द्रव्यने भयेां अने मने श्रीगुसांछलने सेवक करावीने वैष्णव करे । त्यारे सूरदासलये ते वाखियाने कलुं, के तू न्हाधने कोधने अदीश नहीं । अहीं आवी भेसने । येठलांमां श्रीगुसांछल पोते शृंगार करी यूक्या । त्यारे सूरदासलये श्रीगुसांछलने विनंती करी, के महाराज ! या वाखियाने शरलु ले । त्यारे श्रीगुसांछल आप श्रीमुखी सूरदासलने कहे, के सूरदासल ! तमे लसो साधठ वर्षानो वृद्ध अणठ नाथ्यो । तभारा विना या वाखियानो अधो जन्म वृथा जतो । पछी श्रीगुसांछलये पोते ते वाखियाने जोदावीने श्रीनाथलना सन्निधान भेसाडीने नाम-ब्रह्मसंबंध कराव्युं । त्यारे ते वाखियानी बुद्धि निर्मल थध गध । त्यार पछी अधां दर्शन नित्य नेमथी करया लाग्यो । पछी ते वाखियाने श्रीगुसांछलने अहु लेट करी अने श्रीनाथलना वागा वस्त्र सामग्री करावी आभूषण कराव्यां अने अंगीकार कराव्यां । ते पछी अेक दिवसे ते वाखियाने सूरदासलने कलुं, के सूरदासल !

कृपातें मैं श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरमन पायो, और वैष्णव भयो । तासों अब ऐसी कृपा करो, जो-याही जनम में मेरो अंगीकार प्रभु करें, और मोकों संसार को दुःख सुख बाधा न करे । तब सरदासजी ने एक पद करिके वा बनिया कों सिखायो ।

राग त्रिलावल—कृष्ण सुमिर तन पावन कीजे । जौलों जग सुपना सों जीजे ॥ १ ॥ अवधि उसाम गिने सब तेरे । सो वीतत भय आवत नेरे ॥ २ ॥ जो यह सपनो नाहिं विचारे । कबहू न जनम विषय लगि हारे ॥ ३ ॥ गहे विवेक बीज ले वोवे । कबहू न जठर अग्नि में सोवे ॥ ४ ॥ बार बार तोकों समुझावे । जो छिन जाय सो वोहोरि नहीं आवे ॥ ५ ॥ ठगिनी विषय ठगोरी लाई । घटिका घटन छिन ही छिन जाई ॥ ६ ॥ गिनत ही गिनत अवधि नियरानी । छांडि चलयो निधि भई विरानी ॥ ७ ॥ होत कहा अब के पछताने । तरुवर-पत्र न मिले पुराने ॥ ८ ॥ पवन उडे सो बहुरि न आवे । कर्ता और अनेक बनावे ॥ ९ ॥ जल थल पसु पंछी सुकर क्रमि । मानुष तन पायो सब जुग अमि ॥ १० ॥ सो तन खोवे रति विस मनि । काच गह्यो विमरी चिंतामनि ॥ ११ ॥ कबहू नीके नाथ न गायो । एक मन दसहू दिस धायो ॥ १२ ॥ मन हि मन माया अवगाहत । नायक भयो जिहिं पुर चाहत ॥ १३ ॥ स्वर्ग रसातल भुव रजधानी । तोऊ तृपन भयो न अभिमानी ॥ १४ ॥ ऐसे ही करत अवधि सब बीती । गह्यो न ज्ञान रह्यो यह रीति ॥ १५ ॥ कबहू सज्जन मिलि करत बडाई कबहूक ललना ललित लजाई ॥ १६ ॥ कबहूक हय हाथी रथ आसन । कबहूक पलका सुखद सुवासन ॥ १७ ॥ कबहूक चँवर छत्र सिर हारे । कबहू सुभट पसुन चढि मारे ॥ १८ ॥ कबहू तोरन छत्र बनावे । कबहू मद गज जूथ लरावे ॥ १९ ॥ जोवन द्वार दूती सब ठाढी । त्यो त्यो तृष्णा सतगुनी बाढी ॥ २० ॥ दिव्य बसन फलफूल सुवासी । नव जोवन अबला सुखरासी ॥ २१ ॥ द्वार कपाट सहस एक लागे । सुभट पहरुवा चहुं दिस जागे ॥ २२ ॥ रमनी रमत न रजनी जानी । माया मद पियो अभिमानी ॥ २३ ॥ सुत वित बनित हेत लगायो । तब चेत्यो जब काल चेतायो ॥ २४ ॥ झूठो नाटक संग न साथी । नोवत द्वार हय गज हाथी ॥ २५ ॥ भूप छिनक में भयो भिखारी । क्यों हृदै सूल न सहै विकारी ॥ २६ ॥ भयो अनाथ सनाथ न बांध्यो । तिर्यक सूर-सर सन्मुख साध्यो ॥ २७ ॥ मनुष्य देह घरि कर्म कमायो । ते तिरछे दुःख द्वारे पायो ॥ २८ ॥ जिहिं तन काज जीव बध कीने । रसना-रस अमि पट-रस लोने ॥ २९ ॥ सो तन छुटत प्रेत करि डारयो । प्रेत प्रेत कहि नगर निकारयो ॥ ३० ॥ हिंसा करि पालन करी जाकी । विष्टा करम भस्म भई ताकी ॥ ३१ ॥ भोग अष्ट अरु बीस भयानक । हरिपद विमुख विषयरस पावक ॥ ३२ ॥ जागि जागि रे यहां को

तमारी कृपाथी में श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन कर्यां अपने दुः वैष्णव थयो, तेथी दुःखे अपी कृपा करे के आ न नन्मभां प्रभु भारे अंगीकार करे अपने भने संसारदुः दुःखसुख बाधा न करे, त्यारे सरदासजीये एक पद करीने ते वाञ्छिआने शिष्यावापुः

तेरो । माया सुपन कहत सन मेरो ॥३३॥ कृष्ण विना तोहि कौन लुडावे । सो करुणामय विरद बुलावे ॥३४॥ आन देव कौ नहीं भरोसो । वातन खटरस लाख पंगोसो ॥३५॥ जीवन गयो तृपित की नाई । सृग-तृष्णा कवहू न अघाई ॥३६॥ ऐसे आन देव सुखदायक । हरि विनु कौन लुडावन लायक ॥३७॥ धर्मराज कहि सुनि कृतहारी । तू विषयन-रति सूरति विसारी ॥३८॥ गर्भ अग्नि रक्षा जिहि कीनी । संकट मेदि अभयता दीनी ॥३९॥ हस्त चरन लोचन नासा मुख । रुधिर वृद्धते लह्यो ऐसो सुख ॥४०॥ सो सुख तू सपने नहीं जान्यो । प्राननाथ कहि निकट न आन्यो ॥४१॥ कित ये सूल सहे अपराधी । निगम सिख एको नहीं नाधी ॥४२॥ कोटिन बार मनुष्य तन पायो । हरि-पथ छांड अपथ कौ धायो ॥४३॥ समय गए असमय पछिनैये । मानुष जन्म गहुरि नहीं पैये ॥४४॥ सूझन स्वामी पीठ दे आगे । पुनि पुरुषाग्र्य काहे लागे ॥४५॥ पारस पाइ जलधि में बोरे । पुनि गुन सुनत कपार हि फोरे ॥४६॥ चिंतामणि कोडी लगी दीनी । सुनि परसिन करुणा अति कीनी ॥४७॥ पाइ बल्पतरु मूल खनावे । सो तरु पुनि कैसें सो पावे ॥४८॥ मधु भाजन पूरन विधि दीनो । सो तू छांडि हलाहल कीनो ॥४९॥ कामधेनु तजि अज हि विसाहे । गज-बल छांडि स्याल-शल चाहे ॥५०॥ यह नर-देह स्याम विनु खोई । कपि कोनिक लौ वांधि विगोई ॥५१॥ काहे न करम क्रियो तू ऐसो । सुक सन सनक सनंदन जैसे ॥५२॥ सुर नर मुनि असुर पुनि देवक । हरिपद भजि सब तेरे सेवक ॥५३॥ पर-दक्षणा दे सीस नैवावे । मनसिज तोइ न परसन पावे ॥५४॥ जाको भजत ऐसो सुख पैये । सुनि सठ सो कैसे विसरैये ॥५५॥ अगनित पतित नाम-निस्तारी । जनम करम संताप निवारी ॥५६॥ निरभय होइ भक्ति निधि पाई । कवहू काल व्याल नहीं खाई ॥५७॥ सर्वसु जीवन कृष्ण नाम पद । भवजल व्याधि उपाधि परम गद ॥५८॥ श्रीभागवत परम हिनकारी । द्वारे रटत हरि 'सूर' भिखारी ॥५९॥ परम पतित सरनाई लीजे । पदरज दान अभयता दीजे ॥६०॥

तब वा बनिया कों हई भक्ति भई । लौकिक की वासना सब दूरि भई । सो ज्ञान वैराग्य सर्वोपरि भक्ति भई । सो श्रीनाथजी के चरण कमल में हृद आंलक्ति और स्वरूपानंद को अनुभव भयो । तब रस में मगन होय गयो । सो या प्रकार सूरदासजी के संगतें ऐसो लोभी बनिया हू कृतार्थ भयो । सो वे सूरदासजी ऐसे भगवदीय हते ।

राग षड्जावस—'कृष्ण सुभर तन पावन कीजे' (उपर लुओ) तयारे ये वाल्मिआने दृढ लक्ष्मि थछ. लौकिकनी वासना षधी हर थछ. ज्ञान-वराग्य सर्वोपर लक्ष्मि थछ. श्रीनाथलनां यरलु कभसमां दृढ आसक्ति अने स्वरूपानंदनो अनुलप थयो. तयारे रसमां मगन थछ गयो. आ भदारे सुरदासलना संगधी अयो लोली वाल्मियो थलु कृतार्थ थयो. ते सुरदासल अयो भगवदीय लता.

कृपातें मैं श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन पायो, और वैष्णव भयो । तासों अब ऐसी कृपा करो, जो-याही जनम में मेरो अंगीकार प्रसु करें, और मोकों संसार को दुःख सुख बाधा न करे । तब सरदासजी ने एक पद करिके वा बलिया कों सिखायो ।

राग बिलावल—कृष्ण सुमिर तन पावन कीजे । जोंलों जग सुपना सों जीजे ॥ १ ॥ अवधि उसाम गिने सब तेरे । सो वीतत भय आवत मेरे ॥ २ ॥ जो यह सपनो नाहिं विचारे । कबहू न जनम विषय लागि हारे ॥ ३ ॥ गहे विवेक बीज ले वोवे । कबहू न जठर अग्नि में सोवे ॥ ४ ॥ बार बार तोकों समुझावे । जो छिन जाय सो वोहोरि नहीं आवे ॥ ५ ॥ ठगिनी विषय ठगोरी लाई । घटिका घटन छिन ही छिन जाई ॥ ६ ॥ गिनत ही गिनत अवधि नियरानी । छांडि चलयो निधि भई विरानी ॥ ७ ॥ होत कहा अब के पछताने । तरुवर-पत्र न मिले पुराने ॥ ८ ॥ पवन उडे सो बहुरि न आवे । कर्ता और अनेक बनावे ॥ ९ ॥ जल थल पसु पंछी सुकर क्रमि । मानुष तन पायो सब जुग भ्रमि ॥ १० ॥ सो तन खोवे रति वित्त मनि । काच गह्यो विमरी चिंतामनि ॥ ११ ॥ कबहू नीके नाथ न मायो । एक मन दसहू दिस घायो ॥ १२ ॥ मन हि मन माया अवगाहन । नायक भयो तिहिं पुर चाहत ॥ १३ ॥ स्वर्ग रसातल भुव रजधानी । तोऊ तृपन भयो न अभिमानी ॥ १४ ॥ ऐसे ही करत अवधि सब बीती । गह्यो न ज्ञान रह्यो यह रीति ॥ १५ ॥ कबहू सज्जन मिलि करत बडाई कबहूक ललना ललित लजाई ॥ १६ ॥ कबहूक हय हाथी रथ आसन । कबहूक पलका सुखद सुवासन ॥ १७ ॥ कबहूक चँवर छत्र सिर हारे । कबहू सुभट पसुन चढि मारे ॥ १८ ॥ कबहू तोरन छत्र बनावे । कबहू मद गज जूथ लगावे ॥ १९ ॥ जोवन द्वारं दूती सब ठाढी । त्यो त्यों तृष्णा सतगुनी वाढी ॥ २० ॥ दिव्य बसन फलफूल सुवासी । नव जोवन अवला सुखरासी ॥ २१ ॥ द्वार कपाट सहस एक लागे । सुभट पहरुवा चहुं दिस जागे ॥ २२ ॥ रमनी रमत न रजनी जानी । माया मद पियो अभिमानी ॥ २३ ॥ सुत वित वनिता हेत लगायो । तब चेत्यो जइ काल चेतयो ॥ २४ ॥ झूठो नाटक संग न साथी । नोवत द्वार हय गज हाथी ॥ २५ ॥ भूष छिनक में भयो भिखारी । क्यों हृदै सूख न सहे विकारी ॥ २६ ॥ भयो अनाथ सनाथ न बांध्यो । तिर्यक सूर-सर सन्मुख साध्यो ॥ २७ ॥ मनुष्य देह घरि कर्म कमायो । ते तिरछे दुःख द्वारे पायो ॥ २८ ॥ जिहिं तन काज जीव बध कीने । रसना-रस अमि षट-रस लीने ॥ २९ ॥ सो तन छुटत प्रेत करि डारयो । प्रेत प्रेत कहि नगर निकारयो ॥ ३० ॥ हिंसा करि पालन करी जाकी । विष्टा करम भस्म भई ताकी ॥ ३१ ॥ भोग अष्ट अरु बीस भयानक । हरिपद विमुख विषयरस पावक ॥ ३२ ॥ जागि जागि रे यहां को

तभारी कृपाथी में श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन कर्यां अपने हुं वैष्णव थयो, तथी हुं ऐसी कृपा करो के आ न नभमां प्रसु भारे अंगीकार करे अपने भते संसारहुं दुःखसुख बाधा न करे, तयारे सरदासजीने एक पद दर्शने ते वाञ्छिआने शिष्यावाङ्मुः

तेरो । माया सुपन कहत सग मेरो ॥३३॥ कृष्ण विना तोहि कौन छुडावे । सो करुणामय विरद बुलावे ॥३४॥ आन देव कौ नहीं भरोसो । वातन खटरस लाख पंगोसो ॥३५॥ जीवन गयो तृपित की नाई । मृग-तृष्णा कवहू न अघाई ॥३६॥ ऐसे आन देव सुखदायक । हरि विनु कौन छुडावन लायक ॥३७॥ धर्मराज कहि सुनि कृतहारी । तू विषयन-रति सूरति विसारी ॥३८॥ गर्भ अग्नि रक्षा जिहि कीनी । संकट मेदि अभयता दीनी ॥३९॥ हस्त चरन लोचन नासा मुख । रुधिर बूदते लह्यो ऐसो सुख ॥४०॥ सो सुख तू सपने नहीं जान्यो । प्राननाथ कहि निकट न आन्यो ॥४१॥ कित ये सूल सहे अपराधी । निगम सिख एको नहीं माधी ॥४२॥ कोटिन वार मनुष्य तन पायो । हरि-पथ छांड अपथ कों धायो ॥४३॥ समय गए असमय पछिनैये । मानुष जन्म बहुरि नहीं पैये ॥४४॥ सूझन स्वामी पीठ दे आगे । पुनि पुरुषार्थ काहे लागे ॥४५॥ पारस पाइ जलधि में बोरे । पुनि गुन सुनत कपार हि फोरे ॥४६॥ चिंतामणि कोडी लगि दीनी । सुनि परसिन करुणा अति कीनी ॥४७॥ पाइ कल्पतरु सूल खनावे । सो तरु पुनि कैसें सो पावे ॥४८॥ मधु भाजन पूरन विधि दीनो । सो तू छांडि हलाहल कीनो ॥४९॥ कामधेनु तजि अज हि विसाहे । गज-बल छांडि स्याल-श्ल चाहे ॥५०॥ यह नर-देह स्याम विनु छोई । कपि कोनिक लों बांधि विगोई ॥५१॥ काहे न करम कियो तू ऐसो । सुक सन सनक सनंदन जैसे ॥५२॥ सुर नर-मुनि असुर पुनि देवक । हरिपद भजि सब तेरे सेवक ॥५३॥ पर-दक्षणा दे सीस नवावे । मनसिज तोइ न परसन पावे ॥५४॥ जाकों भजत ऐसो सुख पैये । सुनि सठ सो कैसे विसरैये ॥५५॥ अगनित पतिन नाम-निस्तारी । जनम करम संताप निवारी ॥५६॥ निरभय होइ भक्ति निधि पाई । कवहू काल व्याधि नहीं खाई ॥५७॥ सर्वसु जीवन कृष्ण नाम पद । भवजल व्याधि उपाधि परम गद ॥५८॥ श्रीभागवत परम हितकारी । द्वारे रटत हरि 'सूर' भिखारी ॥५९॥ परम पतित सरनाई लीजे । पदरज दान अभयता दीजे ॥६०॥

तब वा बनिया कों हृद भक्ति भई । लौकिक की वासना सब दूरि भई । सो ज्ञान वैराग्य सर्वोपरि भक्ति भई । सो श्रीनाथजी के चरण कमल में हृद आसक्ति और स्वरूपानंद को अनुभव भयो । तब रस में मगन होय गयो । सो या प्रकार सूरदासजी के संगतें ऐसो लोभी बनिया हू कृतार्थ भयो । सो वे सूरदासजी ऐसे भगवदीय हते ।

राग भिखावल—'शृणु सुभर-तन पावन-धीजे' (७पर लुआ) त्पारे ये वाल्मिआने दृढ लक्ष्मि थध. लौकिकनी वासना षधी हूर थध. ज्ञान-वराग्य सर्वोपरि लक्ष्मि थध. श्रीनाथलनां यरलु कभसभां दृढ आसक्ति अने स्वरूपानंदनो अनुभव थयो. त्पारे रसभां मगन थध गयो. आ प्रकारे सुरदासलना संगथी येवा लेली वाल्मिथो पलु कृतार्थ थयो. ते सुरदासल येवा भगवदीय हुता.

भावप्रकाश—सो काहे तें ? जो मूल में दैवी जीव है । सो श्रीललि-
ताजी की सखी है । सो लीला में याको नाम 'विरजा' है । सो सूरदास को संग
पायके लीला को अनुभव भयो । तातें भगवदीयन को संग सर्वोपरि है ।

वार्ता-प्रसंग ९—और एक समय श्रीगोकुल तें परमानंद आदि
सब वैष्णव दस पंद्रह सूरदासजी सों मिलवे कों और श्रीगोवर्द्धन-
नाथजी के दरसन कों आये । सो सेनआरती के दरसन करि सूरदास-
जी के पास आये । तब सूरदासजी ने सगरे वैष्णवन को बहोत आदर
सन्मान कियो, और ताही समय कीर्तन गाये ।

राग कान्हरो—हरिजन संग छिनक जो होई । कोटि स्वर्गसुख कोटि मुक्ति-
सुख ता सम लहे न कोई ॥१॥ पूरे भाग्य पुन्य संचित फल कृष्ण कृपा व्है जाके ।
'सूरदास' हरिजन पदमहिमा कहैत भागवत ताके ॥२॥

राग कान्हरो—प्रभुजन पर प्रसन्न जब होई । तब वैष्णवजन दर्शन पावे पाप
रहे नहीं कोई ॥१॥ हरि-लीला आवेस होइ मन सकल बासना नासे । 'सूर'यह
निश्चै विचार करि हरिस्वरूप जब भासे ॥२॥

राग कान्हरो—हरि के जनकी अति ठकुराई । महाराज ऋषिराज देवमुनि
देखत रहे लजाई ॥१॥ दृढ विश्वास कियो सिंहासन ता पर बैठे भूप । हरि-जस
विमल छत्र सिर सोभित राजन परम अनूप ॥२॥ दृढ विश्वास राज ताहिको ताकी
लोग बडो उच्छाह । काम क्रोध मद मोह लोभ मिलि भये चोर तें साह ॥३॥ हरि
पद पंकज पियो प्रेमरस ताहि के रंग राते । मंत्री ज्ञान औसर नही पावत कहत बात
संकाते ॥४॥ अर्थ काम दोऊ रहे दुरि दुरि धर्म मोक्ष सिर नावे ॥ विनय विवेक
विचित्र पौरिया समय न कबहू पावे ॥५॥ अष्ट महासिद्धि द्वारे ठाढी कर जोरे उर
लीने । छडिदार वैराग्य विनोदी झिरकी बाहिर कीने ॥६॥ माया काल कळू नहीं
व्यापे जो रस-रीति यह जाने । 'सूरदास' नर तन पाए गुरु प्रसाद पहिचाने ॥७॥

राग हमीर—जा दिन संत पाहुने आवत । तीरथ कोटि स्नान करन फल
दरसन ही तें पावत ॥१॥ प्रफुल्लित वदन रहत निसदिन प्रति चरनकमल चित्त
लावत । मनकर्मवचन और नहीं जानत सुमिरत और सुमिरावत ॥२॥ मिथ्यावाद
उपाधि रहित व्है विमल विमल जस गावत । 'सूरदास' प्रीति करि उनसों जो
हरि सूरत करावत ॥३॥

भावप्रकाश—केम ने ? मूलमां दैवी लव छे. श्रीललितालुनी सखी छे.
लीलामां अने नाम 'वीरजा' छे. अने सूरदासने संग पाभीने लीलाने अनुभव
थये. तेथी भगवदीयने संग सर्वोपरी छे.

वार्ता-प्रसंग ९-१०वीं अंक समय श्रीगोकुलथी परमानंददास आदि अथा वैष्णुने
दस-पंद्रह सूरदासने भगवाने अने श्रीगोवर्द्धननाथलतां दर्शन करवाने आया.

सो या प्रकार सूरदासजी ने अनेक पद वैष्णवन कों सुनाये । तब सब वैष्णव बंहोन प्रमन्न भये । पाछें सूरदासजी ने उन वैष्णवन सों कह्यो, जो-कछू मो पर कृपा करिके आज्ञा करिये । तब सब वैष्णवन ने सूरदासजी सों कह्यो, जो-ज्ञान, योग, परमतत्त्व और श्रीठाकुरजी को प्रेम, स्नेह को स्वरूप सुनाओ । तब सूरदासजी ने यह कीर्तन सुनायो । सो पद—

राग विहागरो—जोग सों कोऊ नहीं हरि पाए । निज आज्ञा तप कियो विधाता कब रसरास खिलाए ॥ १ ॥ जोग जुगति संकर आराधन परमतत्त्व चित्त लाए । भुज धरि ग्रीव कबहि नंदनंदन हिलमिल कल सुरं गाए ॥ २ ॥ बगदावल महारिपि कबहु तन छाया न कराए । बरखत बरखत दुखी जानि नंदनंदन कब गिरिवर कर छाए ॥ ३ ॥ अति तपपुज विप्र दुर्वाला दुर्वा तन नित खाए । चक्र सुदर्शन तपत महामुनि कब मुख अनल समाए ॥ ४ ॥ बहुत तप कियो माकंडे मुनि आय सिंधु भरमाये । सत कल्प वीतत भये तब हरि बहन फांस मुकराए ॥ ५ ॥ भक्त विरह कातर कहनामय वेद निरंतर गावे । को है जोग सुनत यहां उधो 'सूर' स्याम मन भावे ॥ ६ ॥

सो या भांति अनेक कीर्तन करि वैष्णवन कों समुझाये । तब सगरे वैष्णव प्रसन्न होयकें कहे, जो सूरदासजी के ऊपर बड़ी भगवत् कृपा है । ता पाछे सवार भये सगरे वैष्णव ने श्रीनाथजी के दरसन किये । ता पाछे सूरदासजी सों विदा होय के गोकुल आये । सो ये सूरदासजी श्रीआचार्यजीके एसे परम कृपापात्र भगवदीय हते ।

ते सेन आरतिनां दर्शन करी सूरदासलनी यासे आख्या. त्यारे सूरदासलये षष्ठा वैष्णुवोतुं षडु आदर-सन्मान क्युं अने तेन समये कीर्तन गायां:—१ 'हरिनन संग छिनक जे होय' २ 'प्रसन्न पर प्रसन्न जय होय' ३ 'हरि के जनकी अति कुराव' ४ 'ज दिन संत पाहुने आवे' (उपर लुयो) आ प्रकारे सूरदासलये अनेक पद वैष्णुवोने संलगाव्यां. त्यारे षष्ठा वैष्णुवो षडु प्रसन्न थया. पछी सूरदासलये ते वैष्णुवोने कछुं, के कंभ भारा उपर कृपा करीने आज्ञा करे. त्यारे षष्ठा वैष्णुवोये सूरदासलने कछुं, के ज्ञान, योग, परमतत्त्व अने श्रीठाकुरलना प्रेमस्नेहलुं स्वश्य संलगावो. त्यारे सूरदासलये आ कीर्तन संलगाव्युं. ये पद:—' जोग सों कौ नाली हरि पाये ' (उपर लुयो) आ प्रकारे अनेक कीर्तन करी वैष्णुवोने समजया. त्यारे षष्ठा वैष्णुवो प्रसन्न थयने कहे, के सूरदासलना उपर महान भगवत् कृपा छे. ते पछी सवार थये षष्ठा वैष्णुवोये श्रीनाथलनां दर्शन क्युं. ते पछी सूरदासलथी विदाय थयने गोकुल आख्या. ये सूरदासल श्रीआचार्यलना येवा परम कृपापात्र भगवदीय हुता.

भावप्रकाश—सो काहे तें ? जो मूल में दैवी जीव है । सो श्रीललि-
ताजी की सखी है । सो लीला में याको नाम 'विरजा' है । सो सूरदास को संग
पायके लीला को अनुभव भयो । तातें भगवदीयन को संग सर्वोपरि है ।

वार्ता—प्रसंग ९—और एक समय श्रीगोकुल तें परमानंद आदि
सब वैष्णव दस पंद्रह सूरदासजी सों मिलवे कों और श्रीगोवर्द्धन-
नाथजी के दरसन कों आये । सो सेनआरती के दरसन करि सूरदास-
जी के पास आये । तब सूरदासजी ने सगरे वैष्णवन को बहोत आदर
सन्मान कियो, और ताही समय कीर्तन गाये ।

राग कान्हरो—हरिजन संग छिनक जो होई । कोटि स्वर्गसुख कोटि मुक्ति-
सुख ता सम लहे न कोई ॥१॥ पूरे भाग्य पुन्य संचित फल कृष्ण कृपा वहे जाके ।
'सूरदास' हरिजन पदमहिमा कहेत भागवत ताके ॥२॥

राग कान्हरो—प्रभुजन पर प्रसन्न जब होई । तब वैष्णवजन दर्शन पावे पाप
रहे नहीं कोई ॥१॥ हरि-लीला आवेस होइ मन सकल बासना नासे । 'सूर' यह
निश्चै विचार करि हरिस्वरूप जब भासे ॥२॥

राग कान्हरो—हरि के जनकी अति ठकुराई । महाराज ऋषिराज देवमुनि
देखत रहे लजाई ॥१॥ दृढ विश्वास कियो सिंहासन ता पर बैठे भूप । हरि-जस
विमल छत्र सिर सोभित राजन परम अनूप ॥२॥ दृढ विश्वास राज ताहिको ताकी
लोग बडो उच्छाह । काम क्रोध मद मोह लोभ मिलि भये चोर तें साह ॥३॥ हरि
पद पंकज पियो प्रेमरस ताहि के रंग राते । मंत्री ज्ञान औसर नही पावत कहत बात
संकाते ॥४॥ अर्थ काम दोऊ रहे दुरि दुरि घर्म मोक्ष सिर नावे ॥ विनय विवेक
विचित्र पौरिया समय न कबहू पावे ॥५॥ अष्ट महासिद्धि द्वारे ठाढ़ी कर जोरे उर
लीने । छडिदार वैराग्य विनोदी झिरकी बाहिर कीने ॥६॥ माया काल कछु नहीं
व्यापे जो रस-रीति यह जाने । 'सूरदास' नर तन पाए गुरु प्रसाद पहिचाने ॥७॥

राग हमीर—जा दिन संत पाहुने आवत । तीरथ कोटि स्नान करन फल
दरसन ही तें पावत ॥१॥ प्रफुल्लित वदन रहत निसदिन प्रति चरनकमल चित्त
लावत । मनक्रमवचन और नहीं जानत सुमिरत और सुमिरावत ॥२॥ मिथ्यावाद
उपाधि रहित वहे विमल विमल जस गावत । 'सूरदास' प्रीति करि उनसों जो
हरि सूरत करावत ॥३॥

भावप्रकाश—केम ने ? मूलमें दैवी जीव है, श्रीललिताजी की सखी है,
लीलाओं में याको नाम 'विरजा' है, येने सूरदासने संग पाभीने लीलाओं अनुभव
थये, तेथी भगवदीयने संग सर्वोपरि है,

वार्ता—प्रसंग ९—वर्षी अके समय श्रीगोकुलथी परमानंददास आदि अथा वैष्णवों
दस-पंद्रह सूरदासने भगवाने अने श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन करवाने आण्यो,

सो या प्रकार सूरदासजी ने अनेक पद वैष्णवन कों सुनाये । तब सब वैष्णव बहोन प्रसन्न भये । पाछें सूरदासजी ने उन वैष्णवन नों कह्यो, जो-कछू मो पर कृपा करिके आज्ञा करिये । तब सब वैष्णवन ने सूरदासजी सों कह्यो, जो-ज्ञान, योग, परमतत्त्व और श्रीठाकुरजी को प्रेम, स्नेह को स्वरूप सुनाओ । तब सूरदासजी ने यह कीर्तन सुनायो । सो पद—

राम विहागरो—जोग सों कोऊ नहीं हरि पाए । निज आज्ञा तप कियो विधाता कब रसरास खिलाए ॥ १ ॥ जोग जुगति संकर आराधन परमतत्व चित्त लाए । भुज धरि ग्रीव कबहि नंदनंदन हिलमिल कल सुर गाए ॥ २ ॥ बगदावल महारिपि कबहु तन छाया न कराए । बरखत बरखत दुखी जानि नंदनंदन कब गिरिवर कर छाए ॥ ३ ॥ अति तपपुज विप्र दुर्वाला दुर्वा तन नित खाए । चक्र सुदर्शन तपत महामुनि कब मुख अनल समाए ॥ ४ ॥ बहुन तप कियो मार्कंडे मुनि आय सिंधु भरमाये । सत कल्प वीतत भये तब हरि बरुन फांस मुकराए ॥ ५ ॥ भक्त विरह कातर करुनामय वेद निरंतर गावे । को है जोग सुनत यहां उधो 'सूर' स्याम मन भावे ॥ ६ ॥

सो या भांति अनेक कीर्तन करि वैष्णवन कों समुझाये । तब सगरे वैष्णव प्रसन्न होयकें कहे, जो सूरदासजी के ऊपर बड़ी भगवत् कृपा है । ता पाछे सवारे भये सगरे वैष्णव ने श्रीनाथजी के दरसन किये । ता पाछे सूरदासजी सों विदा होय के गोकुल आवे । सो ये सूरदासजी श्रीआचार्यजीके एसे परम कृपापात्र भगवदीय हते ।

ते सेन आरतिनां दर्शन करी सरदासलता पासे आव्या । त्यारे सरदासलताये ष्ठा वैष्णवोत्तुं षडु आदर-सन्मान क्युं अने तेज समये कीर्तन गायां:—१ 'हरिजन संग छिनक जो होय' २ 'प्रसन्न पर प्रसन्न नय होय' ३ 'हरि के जननी अति कुराव' ४ 'ज दिन संत पाहुने आवे' (उपर लुग्यो) आ प्रकारे सरदासलताये अनेक पद वैष्णवोत्तुं संलगाव्यां । त्यारे ष्ठा वैष्णवोत्तुं षडु प्रसन्न थया । पछी सरदासलताये ते वैष्णवोत्तुं क्युं, के कंठ भार उपर कृपा करीने आज्ञा करे । त्यारे ष्ठा वैष्णवोत्तुं सरदासलताये क्युं, के ज्ञान, योग, परमतत्व अने श्रीठाकुरलता प्रेमरनेहलतुं स्वयं संलगावो । त्यारे सरदासलताये आ कीर्तन संलगाव्युं । अ पद:—' जोग सों केउ नाहीं हरि पाये ' (उपर लुग्यो) आ प्रकारे अनेक कीर्तन करी वैष्णवोत्तुं समलया । त्यारे ष्ठा वैष्णवोत्तुं प्रसन्न थयने कहे, के सरदासलता उपर महान लगव-कृपा छे । ते पछी सवार थये ष्ठा वैष्णवोत्तुं श्रीनाथलतां दर्शन क्युं । ते पछी सरदासलती विदाय थयने गोकुल आव्या । अ सरदासल श्रीआचार्यलता अया परम कृपापात्र भगवदीय हुता ।

भावप्रकाश—सो काहे तें ? जो मूल में दैवी जीव है । सो श्रीललि-
ताजी की सखी है । सो लीला में याको नाम 'विरजा' है । सो सूरदास को संग
पायके लीला को अनुभव भयो । तातें भगवदीयन को संग सर्वोपरि है ।

वार्ता—प्रसंग ९—और एक समय श्रीगोकुल तें परमानंद आदि
सब वैष्णव दस पंद्रह सूरदासजी सों मिलवे कों और श्रीगोवर्द्धन-
नाथजी के दरसन कों आये । सो सेनआरती के दरसन करि सूरदास-
जी के पास आये । तब सूरदासजी ने सगरे वैष्णवन को बहोत आदर
स्नमान कियो, और ताही समय कीर्तन गाये ।

राग कान्हरो—हरिजन संग छिनक जो होई । कोटि स्वर्गसुख कोटि मुक्ति-
सुख ता सम लहे न कोई ॥१॥ पूरे भाग्य पुन्य संचित फल कृष्ण कृपा व्है जाके ।
'सूरदास' हरिजन पदमहिमा कहैत भागवत ताके ॥२॥

राग कान्हरो—प्रभुजन पर प्रसन्न जब होई । तब वैष्णवजन दर्शन पावे पाप
रहे नहीं कोई ॥१॥ हरि-लीला आवेस होइ मन सकल बासना नासे । 'सूर' यह
निश्चै बिचार करि हरिस्वरूप जब भासे ॥२॥

राग कान्हरो—हरि के जनकी अति ठकुराई । महाराज ऋषिराज देवमुनि
देखत रहे लजाई ॥१॥ दृढ विश्वास कियो सिंहासन ता पर बैठे भूप । हरि-जस
विमल छत्र सिर सोभित राजन परम अनूप ॥२॥ दृढ विश्वास राज ताहिको ताकौ
लोग बडो उच्छाह । काम क्रोध मद मोह लोभ मिलि भये चोर तें साह ॥३॥ हरि
पद पंकज पियो प्रेमरस ताहि के रंग राते । मंत्री ज्ञान औसर नही पावत कहत बात
संकाते ॥४॥ अर्थ काम दोऊ रहे दुरि दुरि घर्म मोक्ष सिर नावे ॥ विनय विवेक
विचित्र पौरिया समय न कबहू पावे ॥५॥ अष्ट महासिद्धि द्वारे ठाढ़ी कर जोरे उर
लीने । छडिदार वैराग्य विनोदी शिरकी बाहिर कीने ॥६॥ माया काल कलू नहीं
व्यापे जो रस-रीति यह जाने । 'सूरदास' नर तन पाप गुरु प्रसाद पहिचाने ॥७॥

राग हमीर—जा दिन संत पाहुने आवत । तीरथ कोटि स्नान करन फल
दरसन ही तें पावत ॥१॥ प्रफुल्लित वदन रहत निसदिन प्रति चरनकमल चित्त
लावत । मनकमवचन और नहीं जानत सुमिरत और सुमिरावत ॥२॥ मिथ्यावाद
उपाधि रहित व्है विमल विमल जस गावत । 'सूरदास' प्रीति करि उनसों जो
हरि सुरत करावत ॥३॥

भावप्रकाश—केम ने ? मूलमां दैवी जीव छे, श्रीललिताजीनी सखी छे,
लीलामां अेतुं नाम 'वीरजा' छे, अेने सूरदासने संग पाभीने लीलाने अनुभव
थये, तेथी भगवदीयने संग सर्वोपरी छे,

वार्ता—प्रसंग ९—वणी अेक समय श्रीगोकुलथी परमानंददास आदि पंधा वैष्णुवे।
दस-पंढर सूरदासजीने भणवाने अने श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन करवाने आख्या,

सो तब सुरदासजी मन में विचारे, जो-मैं तो अपने मन में सवा लाख कीर्तन प्रकट करिवे को संकल्प कियो है, सो तामें लाख कीर्तन तो प्रकट भये हैं। सो भगवद् इच्छा तें पचीस हजार कीर्तन और प्रकट करने। ता पाछे यह देह छोड़िके अंतर्धान होय जानो। सो या प्रकार सुरदासजी अपने मनमें विचार करत हते। वाही समय श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु प्रकट होयके दरसन दे के कह्यो, जो-सुरदासजी ! तुमने जो सवा लाख कीर्तन को मन में मनोरथ कियो है, सो तो पूरन होय चुक्यो है, जो-पचीस हजार कीर्तन मैंने पूरन करि दिये हैं। तासों तुम अपने कीर्तनन के चोपडा देखो। तब सुरदासजी ने एक वैष्णव सां कह्यो जो-तुम मेरे कीर्तनके चोपडा देखो। सो तब वह वैष्णव देखे तो सुरदासजी के कीर्तन के बीच बीच में 'सुरश्याम' को भोग (छाप) है। सो एसे कीर्तन सगरी लीला में हैं। सो पचीस हजार हैं। सो बात वा वैष्णव ने सुरदास सां कही जो-कालिह तक तो 'सुरश्याम' के कीर्तन हते नाहीं, और आज सगरी लीला की बीच में हैं। तब सुरदासजी श्रीनाथजी कां दंडवत करिके कहे, जो-अब मेरो मनोरथ आपकी कृपा तें पूरन भयो। तासों अब आपु आज्ञा देऊ सो करों। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे जो-अब तुम

हे तमे शुभरात लव. ये प्रकारे शुभरात भोक्तरी अंतर्धान लीला करी. ऐथी सुरदास-
लने नित्य लीलासां भोक्तवानी इच्छा श्रीगोवर्द्धनधरनी छे.

त्यारे सुरदासलने मनसां विचारुं के में तो भारी मनसां सवा लाख कीर्तन प्रकट करवाने संकल्प कर्यो छे तेमांथी लाख कीर्तन तो प्रकट थयां छे. भगवदीच्छांथी पचीस हजार कीर्तन पीलां प्रकट करवां. ते पछी आ देह छोडीने अंतर्धान थय लवुं. आ प्रकारे सुरदासलने पोताना मनसां विचार करता हुता. तेज समये श्रीगोवर्द्धननाथलने पोते प्रकट थयने दर्शन दधने कलुं, के सुरदासल ! तमे ते सवालाख कीर्तनाने मनसां मनोरथ कर्यो छे ते तो पूरलु थय चुक्यो छे. पचीस हजार कीर्तन में पूरां करी दीधां छे तथी तमे तभारां कीर्तनाना चोपडा लुओ. त्यारे सुरदासलने ऐक वैष्णवने कलुं, के तमे भारी कीर्तनाना चोपडा लुओ. त्यारे ते वैष्णव लुओ तो सुरदासलना कीर्तनाना वच्ये वच्ये 'सुरश्याम'नी छाप छे ऐवां कीर्तन पधी लीलासां छे ते पचीस हजार छे ऐ वात ते वैष्णवे सुरदासने कडी, के कास सुधी तो 'सुरश्याम' नां कीर्तन हुतां नही अने आज पधी लीलासां वच्यमां छे. त्यारे सुरदासलने श्री-नाथलने दंडवत करीने कलुं, के हुवे भारी मनोरथ आपनी कृपाथी पूरुं थयो. तथी

वार्ता—प्रसंग १०—सो या प्रकार सूरदासजीने बहोन दिन ताई भगवद् सेवा कीनी । ता पाछें जानें, जो—भगवद् इच्छा मोकों बुलायवे की है ।

भावप्रकाश—सो काहेते ? जो प्रभुन की यह रीति है, जो जब वैकुंठ सों भूमि पर प्रकट होयवे की इच्छा करत हैं, तब वैकुंठवासी जो भक्त हैं, सो उनकों पहले भूमि पर प्रकट करत हैं । ता पाछें आपु श्रीभगवान प्रकट होय भक्तन के संग लीला करत हैं । पाछें अपुने भक्तन कों या जगत सों तिरोधान कराय ता पाछें वैकुंठ में लीला करत हैं । सो जैसे नंद, जसोदा, गोपीजन, सखा, वसुदेव, देवकी, यादव, सब प्रकट पहले ही किये । ता पाछे आप प्रकट होयकें लीला भूमि पर करिकै पाछे जादवनकूं सूसल द्वारा अंतर्धान करि लौकिक लीला किये । सो श्रीनंदरायजी, श्रीजसोदाजी, गोपीजन कों अंतर्धान लौकिक लीला नाहीं दिखाये । सो तैसेही श्रीआचार्यजी, श्रीगुसाईजी श्रीपूर्णपुरुषोत्तम को प्राकट्य है । सो लीला-संबंधी वैष्णव प्रकट किये । अब श्रीआचार्यजी आप अंतर्धान लीला किये । ओर श्रीगुसाईजी कों करनी है । सो पहले भगवदीयन कूं नित्यलीला में स्थापन करके आप पधारेंगे । सो भगवदीय कों (अपनी) लौकिक अंतर्धानलीला दिखावत नाहीं । सो जैसे चाचा हरिवंशजी सों कहे, जो-तुम गुजरात जावो । सो या प्रकार गुजरात पठाय के अंतर्धान लीला किये । सूरदासजी कूं नित्यलीलामें बुलायवेकी इच्छा श्रीगोवर्धनधर की है ।

वार्ता—प्रसंग १०—आ प्रकारे सूरदासजीने बहुत दिवसो सुधी लगवतसेवा करी. ते पछी जगद्वय के लगवदीयने भने भोलाववानी छे.

भावप्रकाश—ते शाथी ? के प्रभुनी अे रीत छे के न्यारे वैकुंठथी भूमी उपर प्रकट थवानी छे छे त्यारे वैकुंठवासी ने भक्त छे तेभने पडेलां भूमी उपर प्रकट करे छे ते पछी पोते श्रीभगवान प्रकट थथ भक्तोना संगे लीला करे छे. पछी पोताना भक्तोने आ जगतथी तिरोधान करावीने वैकुंठमां लीला करे छे. जेभ नंद, यशोदा, गोपीजन, सखा, वसुदेव, देवकी, यादव, जधाने पडेलां प्रकट कर्थां. ते पछी आप प्रकट थधने भूमी उपर लीला करी पछी यादवोने भूशाल द्वारा अंतर्धान करी लौकिक लीला करी. श्रीनंदराय, श्रीयशोदा, गोपीजनने लौकिक अंतर्धान लीला न देभाडी. ते प्रकटे श्रीआचार्य, श्रीगुसांथ पूरणु पुरुषोत्तमनुं प्राकट्य छे. जेथी लीला-संबंधी वैष्णव प्रकट कर्थां. हुवे श्रीआचार्य आपे अंतर्धान लीला करी अने श्रीगुसांथने करपी छे तेथी पडेलां लगवदीयोने नित्य लीलामां स्थापन करीने आप पधारथे. लगवदीयोने पोतानी लौकिक अंतर्धान लीला देभाडता नथी. जेभ आचा हरिवंशने कहुं

सो तब सूरदासजी मन में विचारे, जो-मैं तो अपने मन में सवा लाख कीर्तन प्रकट करिबे को संकल्प कियो है, सो तामेतें लाख कीर्तन तो प्रकट भये हैं। सो भगवद् इच्छा तें पचीस हजार कीर्तन और प्रकट करने। ता पाछे यह देह छोड़िके अंतर्धान होय जानो। सो या प्रकार सूरदासजी अपने मनमें विचार करत हते। बाही समय श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु प्रकट होयके दरसन दे के कह्यो, जो-सूरदासजी ! तुमने जो सवा लाख कीर्तन को मन में मनोरथ कियो है, सो तो पूरन होय चुक्यो है, जो-पचीस हजार कीर्तन मैंने पूरन करि दिये हैं। तासों तुम अपने कीर्तनन के चोपडा देखो। तब सूरदासजी ने एक वैष्णव सों कह्यो जो-तुम मेरे कीर्तनके चोपडा देखो। सो तब वह वैष्णव देखे तो सूरदासजी के कीर्तन के बीच बीच में 'सूरश्याम' को भोग (छाप) है। सो एसे कीर्तन सगरी लीला में हैं। सो पचीस हजार हैं। सो बात वा वैष्णव ने सूरदास सों कही जो-कालिह तक तो 'सूरश्याम' के कीर्तन हते नाहीं, और आज सगरी लीला की बीच में हैं। तब सूरदासजी श्रीनाथजी कों दंडवत करिके कहे, जो-अब मेरो मनोरथ आपकी कृपा तें पूरन भयो। तासों अब आपु आज्ञा देऊ सो करों। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे जो-अब तुम

के तमे गुजरात भव. ये प्रकारे गुजरात भोडली अंतर्धान लीला करा. येथी सूरदास-
लुने नित्य लीलाभां भोडलववानी धरुछा श्रीगोवर्द्धनधरनी छे.

त्यारे सूरदासलुये मनभां विचारुं के मे' तो मारा मनभां सवा लाख कीर्तन प्रकट करवाने संकल्प कर्यो छे तेभांथी लाख कीर्तन तो प्रकट थयां छे. लखवदीच्छांथी पचीस हजार कीर्तन भीला प्रकट करवां. ते पछी आ देहु छोडीने अंतर्धान थध नधु'. आ प्रकारे सूरदासलु पोताना मनभां विचार करता हुता. तेज समये श्रीगोवर्द्धननाथलुये पोते प्रकट थधने दर्शन धधने कलुं, के सूरदासलु ! तमे ने सवालाख कीर्तनाने मनभां मनोरथ कर्यो छे ते तो पूरलु थध बूक्यो छे. पचीस हजार कीर्तन मे' पूरां करी दीधां छे तेथी तमे तमारां कीर्तनाना चोपडा लुय्यो. त्यारे सूरदासलुये अेक वैष्णवने कलुं, के तमे मारां कीर्तनाना चोपडा लुय्यो. त्यारे ते वैष्णुव लुये तो सूरदासलुना कीर्तनाना वर्ये वर्ये 'सूरश्याम'नी छाप छे अेवां कीर्तन भधी लीलाभां छे ते पचीस हजार छे अे वात ते वैष्णुवे सूरदासने कही, के काल सुधी तो 'सूरश्याम' नां कीर्तन हुतां नही अने आण भधी लीलाना वयभां छे. त्यारे सूरदासलुये श्री-नाथलुने दंडवत करीने कलुं, के हुवे मारे मनोरथ आपनी कृपाथी पूर्यो थयो. तेथी

मेरी लीला में आयके लीलारस को अनुभव करो। सो यह आज्ञा करिके श्रीनाथजी अंतर्धान भये। तब सूरदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजी को दंडवत करिके मन में बहोत प्रसन्न भये। परंतु पास दोग वैष्णव साधारण हते, सो जाने नहीं, जो-श्रीठाकुरजी आपु सूरदासजीके पास पधारे, और कहा आज्ञादीनी। सो काहेतें, जो-ठाकुरजीके स्वरूप को अनुभव भगवदीय विना और काहू को नहीं।

वार्ता-प्रसंग ११—सो तब सूरदासजी अपने मनमें यह विचार करिके परासोली आये। सो तहां अखंड रासलीला ब्रह्मरात्र करि भगवानने रासपंचाध्याई की सगरी लीला उहां करी है। सो जहां उडुराज चंद्रमा प्रकट्यो है। सो तहां चंद्रसरोवर है ऐसे अलौकिक स्थल में आये।

भावप्रकाश—जो ये अष्टसखा हैं। सो श्रीगिरिराजमें आठ द्वार हैं। सो तहां के ये अधिकारी हैं। तासों आठों सखा अपने अपने द्वार पर श्रीगिरिराज में ही देह छोडी है। और अलौकिक देह धरिके सदा सर्वदा लीला में विराजमान हैं। (१) सो गोविंदकुंड ऊपर एक द्वार है। ताके सन्मुख परासोली चंद्रसरोवर है, तहां सूरदासजी सेवा में मुखिया हैं। (२) अप्सराकुंड ऊपर एक द्वार है, तहां सेवा में छीतस्वामी मुखिया हैं। (३) सुरभीकुंड ऊपर द्वार है, तहां परमानंदास सेवामें सु-

हुवे आप आज्ञा दे तेम कइं। त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथल कहे, के हुवे तमे भारी लीलाभां आवीने लीलारसने अनुभव करे। ये आज्ञा करीने श्रीनाथल अंतर्धान थया। त्यारे सूरदासल श्रीगोवर्द्धननाथलने दंडवत करीने मनभां अहु प्रसन्न थया। परंतु पास ये वैष्णव साधारणलु हुता ते नलु नही' के श्रीठाकुरल आप सूरदासलनी पास पधार्या अपने शी आज्ञा करी। केमके श्रीठाकुरलना स्वइपते अनुभव भगवदीय विना भील कोधने नथी।

वार्ता-प्रसंग ११—त्यारे सूरदासल पोताना मनभां ये विचार करीने परासोली आव्या। त्यां अण्ड रासलीला ब्रह्मरात्र करी भगवाने रासपंचाध्यायीनी अधी लीला त्यां करी छे। न्यां तारापति चंद्रमा प्रकट्यो छे त्यां चंद्रसरोवर छे अवे अलौकिक स्थलभां आव्या।

भावप्रकाश—ये अष्टसखा छे ते श्रीगिरिराजलभां आठ द्वार छे त्यांनो ये अधिकारी छे। तेथी आठे सखायेये पोत-पोताना द्वार उपर श्रीगिरिराजलभां देह छोडी छे। (१) गोविंद कुंड उपर एक द्वार छे तेना सन्मुख परासोली चंद्रसरोवर छे त्यां सूरदासल सेवाभां मुखिया छे। (२) अप्सरा कुंड उपर एक द्वार छे त्यां सेवाभां

खिया हैं । (४) और गोविंदस्वामीकी कदमखंडी पास एक द्वार है, तहां गोविंद-स्वामी मुखिया हैं । (५) और रुद्रकुंड के पास एक द्वार है तहां चतुर्भुजदास सेवामें मुखिया हैं । (६) विलछ सन्मुख एक वारी है, सो ता मारग होयके रास-लीला कों पधारत हैं, सो तहां की सेवा के कृष्णदास अधिकारी मुखिया हैं । (७) और मानसी गंगा के पास एक द्वार है सो तहांकी सेवा में नंददास मुखिया हैं । (८) और अन्योर के सन्मुख एक द्वार है, सो तहां जमुनावतो एक गाम है, सो ता द्वार के मुखिया कुंभनदास हैं । या प्रकार श्रीगिरिराज में नित्य निकुंज-लीला है । सो ता निकुंजलीला के आठ द्वार हैं । तहांके आठ सखा, सखी रूप हैं, सो सेवा में सदा तत्पर हैं । तासों सुरदास को ठिकानो परासोली है ।

सो श्रीगोवर्द्धननाथजी की ध्वजा कों साष्टांग दंडवत् करि के ध्वजा के सन्मुख मुख करिके सुरदासजी सोये, परंतु मन में यह आई, जो-श्रीआचार्यजी और श्रीगुसांईजी आपु मेरे ऊपर बड़ी कृपा करी है । श्रीगोवर्द्धननाथजी की लीला को याही देह सों अनुभव कराये । परंतु या समय एक वार श्रीगुसांईजी आपु मेरे ऊपर कृपा करिके दरसन देय, तो मेरे बड़े भाग्य हैं । श्रीगुसांईजीको नाम कृपासिंधु हैं, सो भक्तन के मनोरथ पूरन कर्ता हैं, सो पूरन करेंगे ।

छीनस्वामी मुखिया छे. (३) सुरभी कुंड उपर द्वार छे त्यां परमानंददास सेवामां मुखिया छे. (४) गोविंदस्वामीनी कदम खंडी पासै एक द्वार छे त्यां गोविंदस्वामी मुखिया छे. (५) रुद्रकुंड पासै एक द्वार छे त्यां चतुर्भुजदास सेवामां मुखिया छे. (६) विलछ सन्मुख एक वारी छे ते मार्गो धरने रासलीलामां पधारै छे त्यांनी सेवाना कृष्णदास अधिकारी मुखिया छे. (७) मानसीगंगानी पासै एक द्वार छे त्यांनी सेवामां नंददास मुखिया छे. (८) अन्योरनी सन्मुख एक द्वार छे त्यां जमुनावतो गाम छे ते द्वारना मुखिया कुंभनदास छे. या प्रकारे श्रीगिरिराजलमां नित्य निकुंज लीला छे ते निकुंजलीलानां आठ द्वार छे. त्यांना आठ सखा सखी रूप छे ते सेवामां सदा तत्पर रहै छे. तेथी सुरदासतुं ठेकाछुं परासोली छे.

पछी श्रीगोवर्द्धननाथजीनी ध्वजाने साष्टांग दंडवत् करीने ध्वजानी सन्मुख मुख करीने सुरदासल सख रह्या. परंतु मनमां ओ आच्युं के श्रीआचार्यल अने श्रीगुसांईलमे पोते मारो उपर महान कृपा करी छे. श्रीगोवर्द्धननाथजीनी लीलाने आन देहथी अनुभव कराव्यो. परंतु या समय एक वार श्रीगुसांईल पोते मारो उपर कृपा करीने दर्शन हे तो मारो मारो लाग्य छे. श्रीगुसांईलतुं नाम कृपासिंधु

सो या प्रकार सूरदासजी श्रीगुसांईजीके स्वरूप को चिंतवन करत हते, और यहां श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजी को सिंगार करत हते। सो वा दिन श्रीगुसांईजी ने सूरदास को जगमोहन में बैठे कीर्तन करत न देखे। सो ता समय श्रीगुसांईजी आपु सेवकन सों पूछे, जो-सूरदासजी कहाँ है ? तब एक वैष्णव नें बिनती कीनी जो-महाराज ! सूरदासजी तो आज मंगला आरती के दरसन करिके परासोलीमें सगरे सेवकन सों भगवत्-स्मरण करिके गये हैं। तब श्रीगुसांईजी आप जाने जो-भगवद् इच्छा सूरदासजी को बुलायवे की भई हैं, तासों आज सूरदासजी परासोली को गये हैं। सो तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख सों सगरे वैष्णवन सों यह आज्ञा किये जो-‘पुष्टिमार्ग को जह्यज’ जात है सो जाको कछु लेनो होय सो लेऊ, और उहां जायके सूरदासजी को देखो। सो या भांति सों जो राजभोग आरती उपरांत रहंत हैं तो मैं हू आवत हों। सो तब सगरे वैष्णव सूरदासजी के पास आये।

भावप्रकाश—सो यहां ‘जहाज’ कहिवे को आसय यह है, जो-जैसे कोई जहाज में काहू व्योपारी ने व्योपार अर्थ अनेक वस्तु जहाज में भरी है, सो तैसे ही सूरदासजी के हृदय में अलौकिक वस्तु नाना प्रकार की भरी हैं।

छे. लक्ष्मिना भनारथ पूरण करवावाणा छे ते पूरण करशे. आ प्रकारे सूरदासल श्रीगुसांईलना स्वइपलुं चिंतवन करता हुता अने अही श्रीगुसांईल पोते श्रीगोवर्द्धननाथलना सिंगार करता हुता. ते द्विसे श्रीगुसांईलये सूरदासलने जगमोहनमां भेसीने कीर्तन करता न जेया ते समये श्रीगुसांईल पोते सेवकेने पूछे, के सूरदासल क्यां छे ? तयारे अके वैष्णवे विनंती करी, के महाराज ! सूरदासल तो आज मंगला आरतिनां दर्शन करीने परासोली अथा सेवकेने भगवत्स्मरण करीने गया छे. तयारे श्रीगुसांईलये पोते जह्युं के भगवदीअथा सूरदासलने पोलाववानी थछ छे, तेथी आज सूरदासल परासोली गया छे. तयारे श्रीगुसांईलये पोते श्रीमुखथी अथा वैष्णवोने आज्ञा करी के, ‘पुष्टिमार्ग जह्यज’ (दीवादांडी-नाय) जय छे. जेने कंठ लेखुं होय ते लेा अने त्यां जघने सूरदासलने लुभो. आ प्रकारथी जे राजभोग आरति उपरांत (सूरदास) रहु छे तो हुं पखुं आपुं छुं. तयारे अथा सूरदासलनी पास आप्या.

भावप्रकाश—अही जह्युं कडेवानो आशय अे छे के जेम कोछ जह्युंमां कोछ वेपारीअे वेपार अर्थे अनेक वस्तु जह्युंमां लरी छे तेअ प्रकारे सूरदासलना हृदयमां विविध प्रकारनी अलौकिक वस्तु लरी छे.

ता समय सूरदासजीने श्रीगुसाईजी के और श्रीगोवर्द्धननाथजी के स्वरूप में मन लगाईके बोलिवो छोड़ दियो। सो तब श्रीगुसाईजी ने पंद्रह ब्रजवासी दोराये। जो घड़ी २ के हमसों सूरदासजी के समाचार आय कहियो। तब वे ब्रजवासी आयके श्रीगुसाईजी सों कहे, जो-महाराज ! अब तो सूरदामजी काहू सों बोलत नाहीं हैं। सो एसे करत २ राजभोग आरती को समय भयो। सो राजभोग आरती को समय भयो तब राजभोग आरती श्रीगोवर्द्धननाथजी की करिके, श्रीगुसाईजी आपु परासोली में जहां सूरदासजी हते तहां पधारे। तब श्रीगुसाईजी के संग रामदास, कुंभनदास, गोविंद-स्वामी, चतुर्भुजदास, आदि सगरे वैष्णव सूरदासजी के पास आये। तब देखे तो सूरदासजी अचेत होय रहे है, कछू देह को अनुसंधान नाहीं है। सो श्रीगुसाईजी आप सूरदासजी को हाथ पकरिके कहे जो-सूरदामजी ! कैसे हो ? तब सूरदासजी तत्काल उठिके दंडवत करिके कहे जो-बाबा ! आये ? जो मैं आपकी बाट ही देखत हतो। या समय आपने बडी कृपा करिके दरसन दियो। जो महाराज ! मैं आप के स्वरूप को ही चिंतन करत हतो। ताही समय सूरदासजीने यह कीर्तन सारंग राग में गायो। सो पद—

राग सारंग—देखो देखो हरि जू कौ एक सुभाव । अति गंभीर उदार उदधि प्रभु ज्ञानि-सिरोमनि राय ॥ १ ॥ राई जितनी सेवा कौ फल मानत मेरु समान ।

ते समये सूरदासलये श्रीगुसांघलना अने श्रीगोवर्द्धननाथलना स्पर्शभंग मन लगाडीने भोलवुं छोडी दीधुं, तयारे श्रीगुसांघलये पंद्र प्रजवासीआने दोडाय्या, डे घडी घडीना अभने सूरदासलना सभाचार आवीने कडो। तयारे ते प्रजवासीआये आवीने श्रीगुसांघलने कहुं, डे महाराज ! हुवे तो सूरदासल कोधथी भोलता नथी। अभ करतां करतां राजभोग आरतिना समय थयो अरदे राजभोग आरति श्रीगोवर्द्धननाथलनी करीने श्रीगुसांघल पाते परासोलीमां नयां सूरदासल हुता त्यां पधार्थ। तयारे श्रीगुसांघलना संगे रामदास, कुंभनदास, गोविंद स्वामी, चतुर्भुजदास आदि संघणा वैष्णव सूरदासलनी पास आव्या। तयारे लुये तो सूरदासल अचेत थय रह्या छे, क'ध देहुतुं अनुसंधान नथी, तयारे श्रीगुसांघलये पाते सूरदासलना हाथ पकडीने कहुं, डे सूरदासल ! केम छे ? तयारे सूरदासलये तत्काल उठिने दंडवत करीने कहुं, डे बाबा ! आव्या ? हुं आपनी बाट भेत हतो। आ समये आपे महान कृपा करीने दर्शन दीयां, महाराज ! हुं आपना स्पर्शभंग चिंतन करतो हुतो। तेज समये

समझ दास अपराध सिंधु सम बूंद न एकौ मान ॥ २ ॥ बदन प्रसन्न कमल पद
सन्मुख देखत हो हरि जैसे । विमुख भए कृपा या मुखकी जब देखो तब तैसे ॥ ३ ॥
भक्त विरह कातर करुनामय डोलत पाछे लागे । 'सूरदास' ऐसे प्रभुकों क्यों दीजे
पीठ अभागे ॥ ४ ॥

यह पद सूरदासने श्रीगुसांईजी के आगे गायो । तब श्रीगु-
सांईजी आपु अपने श्रीमुख सों कहे, जो-या प्रकार श्रीठाकुरजी आपु
अपने भगवदीयन कों दीनता को दान करत हैं, सो ताको पूरन
कृपा जानिये । सो दैन्यतारस के पात्र यही है । सो ता समय सगरे
वैष्णव श्रीगुसांईजी के पास ठाड़े हते । उनमें ते चतुर्भुजदास ने
कह्यो, जो-सूरदासजी परम भगवदीय हैं । और सूरदासजीने श्रीठा-
कुरजी के लक्षावधि पद किये हैं । परंतु सूरदासजी ने श्री आचार्य-
जी महाप्रभुनको जस बरनन नाहीं कियो । यह सुनिके सूरदासजी
कहे जो-मैं तो सगरो जस श्रीआचार्यजी को ही बरनन कियो है, जो
मैं कछु न्यारो देखतो तो न्यारो करतो । परि तैंने मोसों पूछी है, सो
मैं तेरे पास कहत हों, सो या कीर्तन के अनुसार सगरे कीर्तन
जानियो । सो पद—

राग बिहागरो—भरोसो दृढ इन चरनन केरो । श्रीवल्लभ नख चंद्र छटा बिनु
सब जगमांझ अंधेरो ॥ १ ॥ साधन और नहीं या कलिमें जासों होत निवेरो ॥
'सूर' कहा कहे द्विविध आंधरों बिना मोल को चेरो ॥ २ ॥

भावप्रकाश—सो या कीर्तन में सूरदासजी ने अपने हृदय को भाव

सूरदासलये सारंग रागमां आ कीर्तन गायुं । पद :— 'देयो देयो हरिनुके अके
स्वभाव' (उपर लुयो) ये पद सूरदासलये श्रीगुसांईजीनी आगण गायुं । तयारे
श्रीगुसांईजी पोते पोताना श्रीभुषधी कहे, के आ प्रकारे श्रीठाकुरजी पोते पोताना
भगवदीयोमां दीनतातुं दान करे छेअने पूरख कृपा लखिये । दैन्यतारसना पात्र आ न
छे । ते समये अथा वैष्णवो श्रीगुसांईजीनी पासो उला हुता । अमांथी यतुर्भुजदासे
कहुं, के सूरदासल परम भगवदीय छे । वणी सूरदासलये श्रीठाकुरजीनां लक्षावधि पद
क्यो छे । परंतु सूरदासलये श्रीआचार्यजी महाप्रभुनो यश वर्णन नथी क्यो । अ
सांलणीने सूरदासल कहे, के मैं तो अथा यश श्रीआचार्यजीनो न वर्णन क्यो छे । जो
हुं कंध अदग नेतो तो अदग करतो । परंतु तें भने पूछयुं छे तो हुं तारी पासो कहुं
छुं । ने आ कीर्तनने अनुसार अथां कीर्तन लखजे । पद :—राग बिहागरो—दृढ
धन चरनन केरो भरोसो (उपर लुयो)

भावप्रकाश—आ कीर्तनमां सूरदासलये पोताना हृदयने भाव जोली दीयो ।

खोल दियो । जो भरोसो, सो जीव कों विश्वास, दृढ़ चरण के सरन को । सो मोकों (सुरदासकों) दृढ़ता श्रीआचार्यजी के चरण की है । सो श्रीआचार्यजी के नख जो दसों चरणारविंद के अलौकिक मणिरूप नख को प्रकास, सो ता विना सगरे त्रिलोकीमे अंधारो दीखे है । सो तब भरोसो दृढ़ जानिये । सो या कलि में श्रीआचार्यजी के चरण के आश्रय विना और उपाय फल सिद्धि को नाही है । तासों में न्यारो कहा वर्णन करों ? जो श्रीगोवर्द्धनधर में और श्रीआचार्यजीके स्वरूप में भिन्न, जो द्विविध तामें तो मैं अंध हों । सो जैसे श्रीकृष्ण और स्वामिनीजी में न्यारो स्वरूप जाने सो अज्ञानी । सो तैसें श्रीगोवर्द्धनधर और श्रीआचार्यजी हैं । सो तिनको मैं विना मोल को चरो हों । सो विना मोल कहा ? जो केवल भाव करि के । जैसे रासपंचाध्याई में ब्रजभक्त गोपिकागीत में कहे हैं, जो 'अशुल्क दासिका' सो विना मोल की दासी, अलौकिक, जाको मोल नाही । सो काहे ते ? जो भक्ति करिके प्रभुन सों (अर्थ) चाहै, सो सगरे, मोल के दास कहिये । उनकी भक्ति श्रेष्ठ नाही । तासों निष्काम भक्ति सर्वोपरि है । सो ताकों अमोलिक दास कहिये । ता भाव के प्रभु वस होय । सो जैसे पंचाध्याई में श्रीभगवान कहे हैं, जो-तिहारो भजन ऐसो है, जो मौसों पलटो दियो न जाय । जो मैं सदा तिहारो रिनियाँ रहूंगो । सो यह अमोलिक दासके लक्षण है । सो यह पद गायो । सो यह पद कैसे

जे लरोसें ते लवनेो विश्वास दृढ चरणुनी शरणुनेो. तेथी मने दृढता श्रीआचार्यलुना चरणुनी छे. तेथी श्रीआचार्यलुना नभ जे दशे, चरणारविंदना अलौकिक मणि रूप नभनेो प्रकाशे ते विना भधी त्रिलोकीमां अंधाडुं देषाय छे. (अभ देषाय) तयारे लरोसेो दृढ लक्षिये. आ कलिमां श्रीआचार्यलुना चरणुना आश्रय विना इल सिद्धिनेो गीनेो उपाय नथी. तेथी हुं अलग वर्णन शुं कइं ? श्रीगोवर्द्धनधरमां अने श्रीआचार्यलुना स्वरूपमां भिन्न अटवे द्विविधपणुं (नेवामां) तो हुं आंधणो छुं. जेम श्रीकृष्ण अने श्रीस्वामिनीलुने भिन्न स्वरूपे लखे ते अज्ञानी तेवी रीते श्रीगोवर्द्धनधर अने श्रीआचार्यलु छे. तेमनेो हुं विना मोलनेो चरो छुं. ते विना मोल शुं ? केवल भाव करीने. जेम रास पंचाध्यायमां ब्रजभक्त गोपिकागीतमां कहे छे के 'अशुल्क दासिका' अटवे विना मूल्यनी दासी. अलौकिक, जेनुं मूल्य नही. केमके जे लक्षित करीने प्रभुधी अर्थ आडे ते भधां मूल्यना दास कहेवाय. जेमनी लक्षित श्रेष्ठ नही. तेथी निष्काम लक्षित सर्वोपरि छे. तेने अमोलिक दास कहीजे. जे भावधी प्रभु वस थाय. जेम पंचाध्यायमां श्रीभगवान कहे छे के 'तमाडुं लजन जेवुं छे के माराधी अद्वैतो न आपी शक्याय. हुं सदा तमारो इषी रहीश. आ अमोलिक दासनां लक्षणु. जे भावे आ पद गायुं. आ

है ? जो या कीर्तन के भावतें, (पाठतें) सवा लाख कीर्तन सूरदासजी ने किये हैं, सो सब को पाठ होय ।

तब चतुर्भुजदास प्रसन्न भये । पाछें सगरे वैष्णव और श्री-गुसांईजी आपु कहे, जो-सूरदास के हृदय को महा अलौकिक भाव है, तासों श्रीआचार्यजी आपु सूरदासजी को 'सागर' कहते । जैसे समुद्र अगाध है, तैसे सूरदासजी को हृदय अगाध है । सो तब चतुर्भुजदास कहे, जो-सूरदासजी ! तुम बिना अलौकिक भाव कौन दिखावे ? जो अब थोरे में श्रीआचार्यजी को यह पुष्टिभक्तिमार्ग है, ताको स्वरूप सुनावो । सो कौन प्रकार सों पुष्टिमार्ग के रस को अनुभव कबिये । तब वा समय सूरदासजीने यह पद गायो । सोपद-

राग सारंग—भजि सखी भाव-भाविक देव । कोटि साधन करो कोऊ ताऊ न माने सेव ॥ १ ॥ घुम्रकेतु कुमार मांग्यो कौन मारग रीति । पुरुषतें त्रिय भाव उपन्यो सबै उलटी रीत ॥ २ ॥ बसन भूषन पलटि पहरेरे भाव सों संजोई । उलट मुद्रा दई अंकन बरन सूधे होई ॥ ३ ॥ वेदविधिको नेम नहीं जहां प्रीतिकी पहचानि । ब्रजवधू बस किये मोहन 'सूर' चतुर सुजान ॥ ४ ॥

सो पद सूरदासजी ने सगरे वैष्णवन कों सुनायो ।

भावप्रकाश—सो या पद में यह जताये, जो-गोपीजन के भाव सों जो प्रभु कों भजे । सो तिनके भाविक जो-श्रीगोवर्द्धनधर, सो तिन कों गोपिन के भाव करि सखी भाव सों भजिये । कुंजलीला में सखीजन कों अधिकार है ।

यह केवुं छे ? के आ कीर्तनना लावथी (पाठथी) सवा लाख कीर्तन सूरदासजी किये कयों छे ते अधानो पाठ थाय.

त्यारे चतुर्भुजदास प्रसन्न थया. पछी अधा वैष्णवो अने श्रीगुसांईजीये पोते कहुं, के सूरदासजीना हृदयनो महुा अलौकिक भाव छे. तेथी श्रीआचार्यजीये पोते सूरदासजीने 'सागर' कहुता. नेम समुद्र अगाध छे तेम सूरदासजीतुं हृदय अगाध छे. त्यारे चतुर्भुजदास कहे, के सूरदासजी ! तभारा बिना अलौकिक भाव कोखु देखाउ ? हुवे थोडामां श्रीआचार्यजीने आ पुष्टिभक्तिमार्ग छे तेतुं स्वरूप संलगावो. क्या प्रकारे पुष्टिमार्गना रसनो अनुभव करीये ? त्यारे ते समये सूरदासजीये आ पद गाथुं. ते पद :—राग सारंग—' लव सखी लाव लाविक देव ' (उपर लुओ) ये पद सूरदासजीये अधा वैष्णवोने संलगाव्युं.

भावप्रकाश—ये, पदमां ये लखायुं छे के श्रीगोपीजनना लावथी प्रभुने लवे. तेमना लाविक वे श्रीगोवर्द्धनधर तेमने गोपीजननोना लाव करी सखी लावथी लखिये. कुंज लीलामां सखीजननोना अधिकार छे. तेथी अही सखी कहुं. वणी डोटी

तासों (यहां) सखी कहे । और काण्टि साधन वेद के करो, परंतु एक हू सेवा नहीं मानत हैं । ताको दृष्टांत जो-सोलह हजार अग्निकुमारिका ऋचा हैं । 'धूम्र-केतु' ऐसी जो अग्नि ताके पुत्र जो सोलह हजार ऋषि, सो वे रामचंद्रजीके स्वरूप ऊपर मोहित होंई दंडकारण्य में कहे, जो-हमसों विहार करो । तब उनसों श्रीरामचंद्रजी यह आज्ञा किये, जो-व्रज में तुम स्त्री होइ प्रकटोगी तब तिहारो मनोरथ पूरन होयगो । तासों स्त्री कों वेद कर्म में अधिकार नहीं है । और श्रीपूर्णपुरुषोत्तम की लीला में मुख्य स्त्रीभाव को अधिकार है । यह भक्तिमार्ग की वेद सों उलटी रीत है । जैसे रास पंचाध्याई में व्रजभक्त उलटे आभूषण वस्त्र धारन करे, सो लोक में उनसों 'बावरो' कहें, सो स्नेह में सर्वोपरि कहिये । जैसे जा छाप में उलटे अक्षर होय सो सरीरमें सधे आछे अक्षर होंय, तैसे या जगत में अज्ञानी (और) प्रभु की लीलामें चतुर होय सो प्रपंच भूले, सो ताकों प्रेम कहिये । मुख्य भक्तिरस में वेदविधि को नेम नहीं है । तासों ऐसी जो प्रेम होय सो श्रीठाकुरजी कों वस करे, जैसे गोपीजन ने श्रीठाकुरजी वस किये । सो श्रीठाकुरजी कैसे हैं, जो सब ही कों मोहि डारें । और सूर है, सो काहूसों जीते जाय नहीं । और वे ही चतुर सिरोमणि हैं, सो काहू के वस होय नहीं तोऊ, प्रेम के वस हैं । सबकूं भूलि जाय । यह पुष्टिमार्ग की भक्ति और पुष्टिमार्ग को स्वरूप है । सो या भांति सों सूरदासजी कहे ।

साधन वेदनां करो परंतु एक पद्य सेवा नहीं मानता. तेनु दृष्टांत-जे सोण हुनर कुमारिकायो ऋचा छे. धूम्र-केतु ऐवो जे अग्नि तेना पुत्र सोण हुनर इधी, ऐमछे रामचंद्रलना स्वरूप उपर मोहित थइ दंडकारण्यमां कहुं, के अमार थी विहार करो. त्यारे ऐमने श्रीरामचंद्रलये ऐ आज्ञा करी, के व्रजमां तमे स्त्री थइ प्रकट थशे। त्यारे तमारो मनोरथ पूर्ण थशे. तेथी स्त्रीने वेद कर्ममां अधिकार नहीं. अने पूर्ण पुरुषोत्तमनी लीलामां मुख्य स्त्रीभावना अधिकार छे. आ लक्षितमार्गनी वेदथी उलटी रीति छे. जेम रासपंचाध्याईमां व्रजभक्तोये उलटां आभूषण वस्त्र धारण कर्थां. ते लोकमां ऐने भावरो कडे, स्नेहमां सर्वोपरि कहीये. जेम, जे छापमां उलटा अक्षर होय ते शरीरमां सीधा सारा अक्षर थाय. तेमज आ जगतमां अज्ञानी (अने) प्रभुनी लीलामां चतुर होय ते प्रपंच भूले तेने प्रेम कहीये. मुख्य लक्षितरसमां वेद विधिना नियम नहीं. तेथी ऐवो जे प्रेम होय ते श्रीठाकुरलने वश करे. जेम गोपीजनोये श्रीठाकुरलने वश कर्थां. ते श्रीठाकुरल केवा छे? जे अधानेय मोही नाणे. वणी शूर छे ते कोइथी लत्या न जाय. तो पद्य प्रेमने वश छे. अधाने भूली जाय. आ पुष्टिमार्गनी लक्षित अने पुष्टिमार्गनुं स्वरूप छे. ऐ प्रकारे सूरदासलये कहुं.

है? जो या कीर्तन के भावों, (पाठों) सवा लाख कीर्तन सुरदासजी ने किये हैं, सो सब को पाठ होय ।

तब चतुर्भुजदास प्रसन्न भये । पाछें सगरे वैष्णव और श्री-गुसांईजी आपु कहे, जो—सूरदास के हृदय को महा अलौकिक भाव है, तासों श्रीआचार्यजी आपु सूरदासजी को 'सागर' कहते । जैसे समुद्र अगाध है, तैसे सूरदासजी को हृदय अगाध है । सो तब चतुर्भुजदास कहे, जो—सूरदासजी ! तुम बिना अलौकिक भाव कौन दिखावे? जो अब थोरे में श्रीआचार्यजी को यह पुष्टिभक्तिमार्ग है, ताको स्वरूप सुनावो । सो कौन प्रकार सों पुष्टिमार्ग के रस को अनुभव किये । तब वा समय सूरदासजीने यह पद गायो । सोपद—

राग सारंग—भजि सखी भाव-भाविक देव । कोटि साधन करो कोऊ ताऊ न माने सेव ॥ १ ॥ धुन्नकेतु कुमार मांग्यो कौन मारग रीति । पुरुषते त्रिय भाव उपन्यो सबै उलटी रीत ॥ २ ॥ बसन भूषन पलटि पहेरे भाव सों संजोई । उलट मुद्रा दई अंकन वरन सूधे होई ॥ ३ ॥ वेदविधिको नेम नहीं जहां प्रीतिकी पहचानि । ब्रजवधू बस किये मोहन 'सूर' चतुर सुजान ॥ ४ ॥

सो पद सूरदासजी ने सगरे वैष्णवन कों सुनायो ।

भावप्रकाश—सो या पद में यह जताये, जो—गोपीजन के भाव सों जो प्रभु कों भजे । सो तिनके भाविक जो—श्रीगोवर्द्धनधर, सो तिन कों गोपिन के भाव करि सखी भाव सों भजिये । कुंजलीला में सखीजन कों अधिकार है ।

यह डेवुं छे ? के आ कीर्तनना लावथी (पाठथी) सवा लाख कीर्तन सुरदासलये कर्थां छे ते भधानो पाठ थाय.

त्यारे चतुर्भुजदास प्रसन्न थया. पछी अथा वैष्णवो अने श्रीगुसांईलये पोते कहुं, के सुरदासलना हृदयनो महुा अलौकिक भाव छे. तेथी श्रीआचार्यलये पोते सुरदासलने 'सागर' कहुता. नेम समुद्र अगाध छे तेम सुरदासलतुं हृदय अगाध छे. त्यारे चतुर्भुजदास कहे, के सुरदासल ! तभारा बिना अलौकिक भाव कोणु देखाउ ? हुवे थोडाभां श्रीआचार्यलनो आ पुष्टिमार्ग छे तेनुं स्वरूप संलगावो. क्या प्रकारे पुष्टिमार्गना रसना अतुलव करीये ? त्यारे ते समये सुरदासलये आ पद गायुं. ते पद :—राग सारंग—' लख सखी भाव भाविक देव ' (उपर लुयो.) ये पद सुरदासलये अथा वैष्णवोने संलगावुं.

भावप्रकाश—ये पदभां ये लुयो छे के श्रीगोपीजनना लावथी प्रलुने लने. तेमना लाविक ले श्रीगोवर्द्धनधर. तेमने गोपीजनना लाव करी सखी लावथी लनिये. कुंज लीलाभां सखीजनोना अधिकार छे. तेथी अही सखी कहुं. वणी कोटी

तासों (यहां) सखी कहे । और कांठि साधन वेद के करो, परंतु एक हू सेवा नहीं मानत हैं । ताको दृष्टांत जो-सोलह हजार अग्निकुमारिका ऋचा हैं । 'धूम्र-केतु' ऐसी जो अग्नि ताके पुत्र जो सोलह हजार ऋषि, सो वे रामचंद्रजीके स्वरूप ऊपर मोहित होई दंडकारण्य में कहे, जो-हमसों विहार करो । तव उनसों श्रीरामचंद्रजी यह आज्ञा किये, जो-व्रज में तुम स्त्री होइ प्रकटोगी तव तिहारो मनोरथ पूरन होयगो । तासों स्त्री कों वेद कर्म में अधिकार नहीं है । और श्रीपूर्णपुरुषोत्तम की लीला में मुख्य स्त्रीभाव को अधिकार है । यह भक्तिमार्ग की वेद सों उलटी रीत है । जैसे रास पंचाध्याई में व्रजभक्त उलटे आभूषण वस्त्र धारन करे, सो लोक में उनसों 'बावरो' कहें, सो स्नेह में सर्वोपरि कहिये । जैसे जा छाप में उलटे अक्षर होय सो सरीरमें सूधे आछे अक्षर होंय, तैसे या जगत में अज्ञानी (और) प्रभु की लीलामें चतुर होय सो प्रपंच भूले, सो ताकों प्रेम कहिये । मुख्य भक्तिरस में वेदविधि को नेम नहीं है । तासों ऐसी जो प्रेम होय सो श्रीठाकुरजी कों वस करे, जैसे गोपीजन ने श्रीठाकुरजी वस किये । सो श्रीठाकुरजी कैसे हैं, जो सब ही कों मोहि डारें । और सूर है, सो काहूसों जीते जाय नहीं । और वे ही चतुर सिरोमणि हैं, सो काहू के वस होय नहीं तोऊ, प्रेम के वस हैं । सबकूं भूलि जाय । यह पुष्टिमार्ग की भक्ति और पुष्टिमार्ग को स्वरूप है । सो या भांति सों सूरदासजी कहे ।

साधन वेदनां करो परंतु एक पक्ष सेवा नहीं मानता. तेनु' दृष्टांत-जे सोण हुनार कुमारिकायो ऋचा छे. धूम्र-केतु जेवो जे अग्नि तेना पुत्र सोण हुनार इपी, जेमणु रामचंद्रजना स्वरूप ऊपर मोहित थछ दंडकारण्यमां कहुं; के अमार थी विहार करो. त्यारे जेमने श्रीरामचंद्रज्ये जे आज्ञा करी, के व्रजमां तमे स्त्री थछ प्रकट थशे। त्यारे तमारो मनोरथ पूरुं थशे. तेथी स्त्रीने वेद कर्ममां अधिकार नहीं. अने पूरुं पुरुषोत्तमनी लीलामां मुख्य स्त्रीभावने अधिकार छे. आ लक्ष्मिभार्गनी वेदथी उलटी रीति छे. जेम रासपंचाध्याईमां व्रजभक्तोये उलटां आभूषण वस्त्र धारण कर्यां. ते लोकमां जेने आवरो कहे, स्नेहमां सर्वोपरि कहीये. जेम, जे छापमां उलटा अक्षर होय ते शरीरमां सीधा सारा अक्षर थाय. तेमज आ जगतमां अज्ञानी (अने) प्रभुनी लीलामां चतुर होयते प्रपंच भूले तेने प्रेम कहीये. मुख्य लक्ष्मिभार्गमां वेद विधिने नियम नहीं. तेथी जेवो जे प्रेम होयते श्रीठाकुरजने वस करे. जेम गोपीजनोये श्रीठाकुरजने वस कर्या. ते श्रीठाकुरज केवा छे? जे अधानेय मोही नाणे. वणी शूर छे ते केथी छत्या न जाय. तो पक्ष प्रेमने वस छे. अधाने भूली जाय. आ पुष्टिमार्गनी लक्ष्मि अने पुष्टिमार्गनु' स्वरूप छे. जे प्रकारे सूरदासज्ये कहुं.

सो तब चतुर्भुजदास आदि सृगरे वैष्णव सूरदासजीकों धन्य धन्य कहे, जो—इनके ऊपर बड़ी भगवत् कृपा है, तब सूरदासजी चुप होय रहे । तब श्रीगुसांईजी आप सूरदासजीसों पूछयो, जो—सूरदासजी ! अब या समय चित्त की वृत्ति कहां है ? तब वाही समय सूरदासजी ने एक पद गायो सो पद—

राग सारंग—बलि बलि हौं कुंवरि राधिका नंदसुवन जासों रति मानी ।
वे अतिचतुर तुम चतुरसिरोमनी प्रीति करी कैसे रहे छानी ॥ १ ॥ वे जो घरत तन कनक पीत पट सो तो सब तेरी गति ठानी । तैं पुनि स्याम सहज यह सोभा अंबर मिस अपने उर आनी ॥ २ ॥ पुलकित अंग अब ही व्है आयो निरखि सुभग निज देह सयानी । 'सूर' सुजान सखी के बूझे प्रेम प्रकास भयो विदँसानी ॥ ३ ॥

पाछें दूसरो यह पद गायो—

राग बिहागरो—खंजन नैन रूप रस माते । अतिसै चारू चपल अनियारे पल पिंजरा न समाते । चलि-चलि जात निकट श्रवननके उलट फिरत ताटक फंदाते । 'सूरदास' अंजन गुन अटके नाँतर अब उडि जाते ॥

सो यह पद सूरदासजीने गायो । पाछें सूरदासजी जुगल स्वरूप को ध्यान करिके यह लौकिक शरीर छोड़ि लीला में जाय प्राप्त भये । ता पाछे श्री गुसांईजी आप तो गोपालपुर पधारे । तब सृगरे वैष्णवन ने मिलिके सूरदासजीकी देहको अग्निसंस्कार कियो । ता पाछें सृगरे वैष्णव श्रीगुसांईजी के पास आये ।

भावप्रकाश—सो इन सूरदासजी के चारि नाम हैं । श्रीआचार्यजी आप तो 'सूर' कहते । जैसे सूर होय सो रण में सों पाछो पांव नाहिं देय, जो—

त्यारे चतुर्भुजदास आदि अथा वैष्णवोअये सूरदासअने धन्य धन्य कहे। कहुं, डे अेमना उपर भदान भगवत्कृपा छे. त्यारे सूरदासअ यूप थय रह्या. त्यारे श्रीगुसां-धअये पोते सूरदासअने पुछयुं, डे सूरदासअ ! हुवे आ समय चित्तनी वृत्ति क्यां छे ? त्यारे ते समय सूरदासअअये अेक पद गायुं. ते पद :- 'अलि अलि हों कुंवरि राधिका' (उपर लुअो). पछी भीलुं आ पद गायुं. राग अिहागरे:- 'अंजन नैन रूपरस माते' (उपर लुअो). अे पद सूरदासअअये गायुं. पछी सूरदासअ लुगल स्वरूपतुं ध्यान करीने आ लौकिक शरीर छोडी दीलाभां न्ध प्राप्त थया. ते पछी श्रीगुसांअअये आप तो गोपालपुर पधार्या. त्यारे अथा वैष्णवोअये मणीने सूरदासअना देहुना अग्नि-संस्कार कर्या. ते पछी अथा वैष्णव श्रीगुसांअअनी पासै आअ्या.

भावप्रकाश—अे सूरदासअनां यार नाम छे. श्रीआचार्यअ पोते 'सूर' कहेता. अेम शूर थअने रअुमांथी पाछे पग न हे. अथानी आंगण यादे तेअ प्रकारे

सबसों आगे चले । तैसेई सूरदासजी की भक्ति दिन दिन चढ़ती दगा भई । तासों श्रीआचार्यजी आप 'सूर' कहते । और श्रीगुसांईजी आप 'सूरदास' कहते । सो दासभाव में कबहू घटे नाहीं । ज्यों ज्यों अनुभव अधिक भयो, त्यों त्यों सूरदासजी कों दीनता अधिक भई । सो सूरदासजी कों कबहू अहंकार मद नाहीं भयो । सो 'सूरदासजी' इनको नाम कहे । और तीसरो, इनको नाम 'सूरजदास' है । जो श्रीस्वामिनीजी के ७ हजार पद सूरदासजी ने किये हैं, तामें अलौकिक भाव वर्णन किये हैं । तासों श्रीस्वामिनीजी कहते जो ये 'सूरज' हैं । जैसे सूरज सों जगत में प्रकाश होय, सो या प्रकार स्वरूपको प्रकाश कियो सो जव श्रीस्वामिनीजी ने 'सूरजदास' नाम धरयो, तव सूरदासजी ने बहोत कीर्तनन में 'सूरज' भोग धरे । और श्रीगोवर्द्धननाथजीने पचीस हजार कीर्तन आपु सूरदासजी कों करि दिये । तामें 'सूरश्याम' नाम धरे । सो या प्रकार सूरदासजी के चारि नाम प्रकट भये । सो, सूरदासजी के कीर्तन में ये चारों 'भोग' कहे हैं ।

या प्रकार सूरदासजी मानसी सेवा में सदा मगन रहते । तातें इनके माथे श्रीआचार्यजी ने भगवत् सेवा नाहीं पधराये । सो काहे-तें ? जो सूरदासजी कों मानसी सेवा में फल रूप अनुभव है । सो ये सदा लीलारस में मगन रहत हैं । सो सूरदासजी की वार्ता में यह सर्वोपरि सिद्धांत है, जो-दैन्यता समान और पदारथ कोई नाहीं है,

सूरदासनी भक्तिनी द्विवसे द्विवसे चढती दशा थछ तेथी श्रीआचार्य७ आप 'सूर' कहेता. वणी श्रीगुसांई७ आप 'सूरदास' कहेता. ते दास भावमां कहीये धट्या नही. जेम जेम अनुभव अधिक थयो तेम तेम सूरदास७ने दीनता अधिक थछ. सूरदास७ने क्यारेय अहुंकार न थयो. तेथी सूरदास७ अेमनुं नाम कहुं. वणी त्रोगुं अेमनुं नाम 'सूरदास' छे. श्रीस्वामिनी७नां सातहुंनर पद सूरदास७अे क्यार् छे. तेमां अलौकिक भाव वर्णन क्यो छे. तेथी श्रीस्वामिनी७ कहेतां के अे 'सूरज' छे. जेम सूरजथी जगतमां प्रकाश थाय. अे प्रकारे स्वरूपना प्रकाश क्यो. त्यारे सूरदास७अे धणुं कीर्तनामां 'सूरज' छाप धरी. वणी श्रीगोवर्द्धननाथ७अे पचीसहुंनर कीर्तन पोते सूरदास७ने करी दीधां. तेमां 'सूरश्याम' नाम धर्युं. अे प्रकारे सूरदास७नां चार नाम प्रकट थयां. तेथी सूरदास७नां कीर्तनामां अे चारे छाप कही छे.

अे प्रकारे सूरदास७ मानसी सेवामां सदा मगन रहेता. तेथी अेमना माथे श्रीआचार्य७अे भगवत् सेवा नही पधरावी. केमके सूरदास७ने मानसी सेवामां क्लृप्त अनुभव छे. ते सदा लीलारसमां मगन रहेता. सूरदास७नी वार्तामां आ सर्वोपरि

और परोपकार समान दूसरो धर्म नहीं है। जो वा बनियाके लिये सूरदासजी ने इतना श्रम कियो। परि वाकों अंगीकार करवाय वाको उद्धार करि दियो। तासों श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी आपु और सगरे वैष्णव जीव मात्र सूरदामजी के ऊपर बहोन प्रसन्न रहते। सो जो कोऊ सूरदासजी सों आगके पूछतो, तिनकों प्रीति सों मारग को सिद्धांत बतावते, और उनको मन प्रभुन में लगाय देते। तासों सूरदासजी सरोखे भगवदीय कोटिन में दुर्लभ हैं। सो वे सूरदासजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के ऐसे कृपापात्र हते। तातें इनकी वार्ता को पार नहीं सो कहां ताई कहिए। वार्ता ॥ ८१ ॥

* * * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक परमानंदस्वामी, कनौजिया ब्राह्मण कनौज में रहते, जिनके पद गाइयत हैं अष्टछाप में, तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो ये परमानंददासजी लीला में अष्टसखान में 'ताक' सखा को प्राकट्य हैं। सो तोक सखा को दूसरो स्वरूप निकुंज में सखीरूप है। ता स्वरूपको नाम 'चंद्रभागा' है। सो सुरभीकुंड के पास श्रीगिरिराज के एक द्वार है ताके मुखिया हैं। सो ये कनौज में कनौजिया ब्राह्मण के यहां जन्मे। जा दिन

सिद्धांत छे डे दैन्यता समान थीजे पदार्थ कोष नथी अने परोपकार समान थीजे धर्म नथी। ते वाञ्छियाने भाटे सूरदासलये अष्टलो श्रम क्यो, परंतु तेना अंगीकार करावी तेना उद्धार करी दीये। श्रीआचार्यल, श्रीगुसांछल पोते अने पधा वैष्णवो लव-मात्र सूरदासल एपर भडु प्रसन्न रहते। जे कोष सूरदासलने आवीने पूछतो तेमने प्रीतिथी भागिना सिद्धांत बतावता अने अभनु' मन प्रभुमां लगाडी देता। तेथी सूरदासल सखा भगवदीय कोटीमां दुर्लभ छे। जे सूरदासल श्रीआचार्यल महाप्रभुलना जेवा कृपापात्र भगवदीय लता। जेमनी वार्ताना पार नहीं। ते क्यो सुधी कहीजे ?

* * * *

हुवे श्रीआचार्यल महाप्रभुलना सेवक, परमानंद स्वामी, कनौजिया ब्राह्मण कनौजमां रहते, जेमनां पद अष्टछापमां गाइये छीजे, तेमनी वार्ताना भाव कहीजे छीजे।

भावप्रकाश—जे परमानंददास लीला मां अष्टसखाजोमां 'ताक' सखातुं प्राकट्य छे। ताक सखातुं थीलुं स्वरूप निकुंजमां सखी रूप छे। ते स्वरूपतुं नाम 'चंद्रभागा' छे। सुरभी कुंडनी पास श्रीगिरिराजलनुं ओक द्वार छे तेना मुखिया छे। जे कनौजमां कनौजिया ब्राह्मणने त्यां जन्म्या। जे दिवसे परमानंददासल जन्म्या ते

परमानंददासजी जन्मे, वा दिन उनके पिता को एक सेठ ने बहोत द्रव्य दान दियो । तब या ब्राह्मण ने बहोत प्रसन्न होय के कह्यो, जो-श्रीठाकुरजी ने मोकों पुत्र दियो और धन हू बहोत दियो । तासों यह पुत्र बड़ो भाग्यवान है, जाके जनमत ही मोकों परम आनंद भयो है । सो मैं या पुत्र को नाम 'परमानंददास' ही धरूंगो । पाछे जब नाम करन लागे तब वा ब्राह्मण ने कही, जो-नाम तो मैं पहले ही पुत्र को 'परमानंद' विचारि चुक्यो हों । तब सब ब्राह्मण बोले, जो-तुमने विचार्यो है सोइ नाम जन्मपत्रिका में आयो है । तब तो वह ब्राह्मण बहोत ही प्रसन्न भयो । पाछे वा ब्राह्मण ने जातकर्म करि दान बहुत कियो । ऐसे करत परमानंददास बडे भये । तब पिताने बडो उत्सव कियो । और इनको यज्ञोपवीत कियो । सो ये परमानंददास बडे कृपापात्र भगवदीय हैं, लीलामध्यपाती श्रीठाकुरजी के अत्यंत (अतरंग) सखा हैं । सो जब श्रीआचार्यजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजी की आज्ञा तें दैवी जीवन के उद्धारार्थ भूतल पर प्रकट भये, तेसेही श्रीठाकुरजी सहित सगरो परिकर प्रकट भयो । सो दैवी जीव अनेक देशांतर में प्रकट भये । सो गोपालदासजी बल्लभाख्यान में गाये हैं, जो- 'अनेक जीवने कृपा करवा देशांतर प्रवेश' ० । सो कनौज में परमानंददासजी बहोत ही प्रसन्न बालपने तें रहते । पाछे ये बडे योग्य भये, और कवीश्वर हू भये । वे अनेक पद बनाय के गावते ।

द्विसे अभना पिताने अक शेठे धणुं द्रव्य दान क्युं । त्यारे अे आह्मणे अहु प्रसन्न थधने कहुं के श्रीठाकुरलये भने पुत्र आभ्यो अने धन पणु धणुं आभ्युं । तेथी आ पुत्र मोटो भाग्यशाणी छे अेना जन्मतांज भने परमआनंद थयो छे । तेथी हुं आ पुत्रनुं नाम परमानंददासज धरीश पछी न्यारे नाम करवा लाग्या त्यारे अे आह्मणे कहुं, के पुत्रनुं नाम तो हुं पडेदांज 'परमानंद' विचरि चुक्यो छुं । त्यारे अथा आह्मणु ओह्या, के तमे विचार्युं छे तेज नाम जन्मपत्रिकां आभ्यु छे त्यारे ते आह्मणु धणुं प्रसन्न थयो । पछी अे आह्मणे जात कर्म करी अहु दान क्युं । अेम करतां परमानंददास मोटा थया । त्यारे पिताने मोटो उत्सव कयो अने अेमनुं यज्ञोपवित क्युं । अे परमानंददास मोटा कृपापात्र भगवदीय छे । लीला मध्यपाती श्रीठाकुरलना अत्यंत (अंतरंग) सखा छे । न्यारे श्रीआचार्यल पोते श्रीगोवर्द्धननाथलनी अज्ञाथी दैवी लयेना उद्धारार्थ भूतल उपर प्रकट थया त्यारे तेज रीते श्रीठाकुरल सहिते अथे परिकर प्रकट थयो । तेथी दैवीलव अनेक देशांतरमां प्रकट थया । गोपालदासलये वदत-लाभ्यानगां गायुं छे के 'अनेक लवने कृपा करवा देशांतर प्रवेश' क्तोलां परमानंददासल आलपणुं अहुं प्रसन्न रहेता । पछी अे मोटा योग्य थया अने कवीश्वर

सो 'स्वामी' कहावते और सेवक हू करते। सो परमानंददास के साथ समाज बहोत, अनेक गुनीजन संग रहते। एक समय कनौज में अकाल परयो सो हाकिम की बुद्धि विगरी। सो गाम में सों दंड लियो। और परमानंददास के पिता को सब द्रव्य लूटि लियो। तब मातापिता बहोत दुःख पाय के परमानंददास सों कहे, जो-हम तेरो ब्याह हू न करन पाये, और सब द्रव्य योंही गयो, तासों अब तू कमायवे को उपाय करि। सो काहेतें? जो-तू गुनी है और तेरे द्रव्य बहोत आवत है सो तू वा द्रव्य कों इकठोरे करे तो हम तेरो ब्याह करें। तब परमानंददासने मातापिता सों कह्यो, जो-मेरे तो ब्याह करनो नाहीं है, और तुमने इतनो द्रव्य भेलो करिके कहा पुरुषार्थ कियो? सगरो द्रव्य योंही गयो। तासों द्रव्य आये को फल यही है, जो-वैष्णव ब्राह्मण कों खवावनों। तासों मैं तो द्रव्य को संग्रह कबहू नाहीं करूंगो और तुम खायवे लायक मोसों नित्य अन्न लेहू, और बैठे २ श्रीठाकुरजी को नाम लियो करो। जो-अब निर्धन भये हो तासों अब तो धनको मोह छोडो। तब पिताने परमानंददास सों कह्यो, जो-तू तो वैरागी भयो। तेरी संगति वैरागीन की है, तासों तेरी ऐसी बुद्धि भई। और हम तो गृहस्थी हैं। तासों हमारे धन जोरे विना कैसे चले? जो-कुटुंब में ज्ञाति में खरचें तब हमारी बड़ाई होय। पाछे पिता धन के लिये पूरब कों गयो। तहां जीविका न मिली तब दक्षिन कों गयो

पणु थया. ये अनेक पद बनावीने गाता. स्वामी कडेवाता. अने सेवक पणु करता परमानंददासनी साथे समाज धणु, अनेक गुणीजन संगे रहता. एक समय कनौज में दुष्काल पडयो. तेथी हाकेमनी बुद्धि भगडी. तेणु गाममांथी दंड लीधे. अने परमानंददासना पितानुं अधुं द्रव्य लूटी लीधुं. त्यारे मातापिता अहु दुःख पाभीने परमानंददासने कडे के अमे ताडूं लक्ष पणु न करवा पाभ्यां, अधुं द्रव्य अेभज गयुं. तेथी हुवे तुं कभाववानो उपाय कर. केभडे? तुं गुणी छे अने तारे द्रव्य अहु आवे छे. तुं अे द्रव्यने लेशुं करे तो अमे ताडूं लक्ष करीअे. त्यारे परमानंददासे पितानां मातापिताने कहुं, के मारे लक्ष करवुं नथी. अने तमे आटलुं द्रव्य लेशुं करीने शेा पुरुषार्थ कर्ये? अधुं द्रव्य अेभज गयुं. तेथी द्रव्य आववानुं इल अेज छे के वैष्णव-प्राह्मणुने भवडाववुं. तेथी हुं द्रव्यनो संग्रह कहीय न कर् अने तमे भावा लायक भारथी नित्य अन्न देा. अने भेहां भेहां श्रीठाकुरलुं नाम लीधा करे. केभडे हुवे निर्धन थयां छे तेथी हुवे. तो धननो मोह छेडो. त्यारे पिताने परमानंददासने कहुं के तुं तो वैरागी थये. तने संगत वैरागीनी छे. तेथी तारी अेवी बुद्धि थध. अने अमे तो गृहस्थी छीअे. तेथी अमारे धन जोडया विना केम आवे? कुटुंभमां ज्ञातिमां अये त्यारे अमारी वडाध थाय. पछी

और तहां द्रव्य मिल्यो सो तहां रह्यो । और परमानंददासने अपने घर कीर्तन को समाज कियो । सो गाम गाम में प्रसिद्ध भये । और परमानंददास गान-विद्या में परम चतुर हते ।

वार्ता-प्रसंग १—सो एक समय परमानंददास कनौज तें मकर-स्नान कों प्रयाग में आये, सो तहां रहे । और कीर्तन को समाज नित्य करै, सो बहोत लोग इनके कीर्तन सुनिबे कों आवते । सो पार अडेल में श्रीआचार्यजी विराजत हते । अडेल तें लोग कछु कार्यार्थ गाम में आवते । सो परमानंददास के कीर्तन सुनिके अडेल में जायके श्रीआचार्यजी सों कहते, जो-एक परमानंददास कनौज तें आयो है, सो कीर्तन बहोत आछो गावन है । तब श्रीआचार्यजी कहे, जो-परमानंददास दैवी जीव है, जो-इनको गुन होय सो उचित ही है । सो श्रीआचार्यजी को सेवक एक 'कपूर क्षत्री' जलघरिया हतो, वाकी राग ऊपर बहोत आमक्ति हती । सो यह बात सुनि के वाके मन में आई, जो-मैं श्रीआचार्यजी न जानें ऐसे परमानंदस्वामी को गान सुनूं । काहेतें जो-श्रीआचार्यजी आपु सुनेंगे तो खीजेंगे, जो-तू सेवा छोड़िके क्यों गयो ? तासों प्रयाग न जाय सके । परंतु वा जलघरिया 'क्षत्री कपूर' को मन परमानंदस्वामी के कीर्तन सुनिबे कों बहोत हतो ।

पिता धनने भाटे पूरवभां गयो, त्यां लुविका न भणी त्यारे दक्षिणु गयो त्यां द्रव्य मज्युं, अेटले त्यां रह्यो, अने परमानंददासे पोताना धरे कीर्तननो समाज क्यो गाम-गामभां प्रसिद्ध थया, वणी परमानंददास गान-विद्याभां परम चतुर हता.

वार्ता-प्रसंग १—अेक समय परमानंददास कनौजथी मकर स्नान अर्थे प्रयागभां आव्या, त्यां रह्या अने कीर्तननो समाज नित्य करे, ते धरुा लोके अेमनां कीर्तन सांलणवने आवता, त्यारे पार अडेलभां श्रीआचार्यल विराजता हुता, अडेलथी लोके कंठ काम भाटे गामभां आवता, ते परमानंददासनां कीर्तन सांलणीने अडेलभां जधने श्रीआचार्यलने कहुता, के अेक परमानंददास कनौजथी आव्यो छे ते कीर्तन अहु सारां गाथ छे, त्यारे श्रीआचार्यल कहु, के परमानंददास दैवी लव छे अेमनो गुणु-(प्रसिद्ध) होय ते उचित न छे, त्यारे श्रीआचार्यलनो सेवक अेक 'कपूर' क्षत्री जलघरीया हुतो, अेनी राग ऊपर अहु आसक्ति हुती, ते वात सांलणीने अेना मनभां आव्युं के हुं श्रीआचार्यल न जणुे अेम परमानंद स्वामीनुं गान सांलणुं, केअे श्रीआचार्यल पोते सांलणशे तो भीजशे, के तू सेवा छोडीने

भावप्रकाश—सो काहेतें ? जो-इनको पूर्व को संबंध है । जो-लीला में यह क्षत्री परमानंददासकी सखी है, सो ये चंद्रभागा की सखी 'सोनजुही' याको नाम है । सो यह क्षत्री सुदामापुरी में एक क्षत्री के घर प्रकटे, इनको पिता महा-विषयी हतो । सो जहां तहां परस्त्री को संग करतो । और द्रव्य बहोत हतो, सो सब विषय में खोयो । ता पाछें गाम के राजाने सगरो घर लूटि लियो । सो या क्षत्री के मातापिता पुत्र सहित बंदीखाने में दिये । तब याको पिता एक सिपाही कों कछु देकें रात्रि कों स्त्रीपुरुष और या पुत्र कों ले भाग्यो । सो ये दिन दोय तीन ताई भाजे, सो तहां एक वन में जाय निकसे । तहां नाहरने याके मातापिताकों माख्यो, और यह पुत्र वरस चौदह को बच्यो । सो वन में बैठ्यो रुदन करे, सो भूख्यो प्यासो चलयो न जाय । सो भागिजोग तें पृथ्वीपरिक्रमा करत श्रीआचार्यजी गह-वरवन (सधन वन) में आये । तब या क्षत्री सों पूछी, जो-तू कौन है ? जो अकेलो वन में रुदन करत है । तब इनने दंडवत् करिके अपनो सब वृत्तांत कह्यो । तब श्रीआचार्यजी आपु कृष्णदास मेघन सों कहे, जो-कछु महाप्रसाद होय तो याकों खवायके वेगि जलपान करावो, जो-याके प्राण बचें । तब कृष्णदास मेघन के पास प्रसाद हतो, सो या क्षत्री कों न्हाय के खवायके जल पिवायो । तब या क्षत्री

केम गयो ? तेथी प्रयाग ज्छ शके नही. परंतु ये जलधरीया कपूरतुं मन परमानंद-दासजना कीर्तन सांखणवातुं हतुं.

भावप्रकाश—केमके अने पूर्वने संबंध छे. लीलाभां अने क्षत्री परमानंद-दासनी सखी छे. अने 'चंद्रभागा' नी सखी 'सोनजुही' अने नाम छे. अने क्षत्री सुदामापुरीभां अने क्षत्रीने घर प्रकट्यो. अनेना पिता महा विषयी हतो. जथां त्यां पर-स्त्रीने संग करतो. द्रव्य धरुं हतुं अधुं विषयमां भोयुं. पछी गामना राजअने अधुं धर लूटी लीधुं. अने क्षत्रीना मातापिता पुत्र सहित अधाने केहमां राख्यां. पछी अनेना पिता अने सिपाईने कंधं आपीने रात्रिअने स्त्री-पुरुष अने आ पुत्रने लक्ष केहमांथी लाग्यो. अने द्विषस अने त्रिषु लाग्यां त्यारे अने वनमां ज्छ निकल्यां. त्यां वाघे अनेना माता-पिताने भार्या अने आ पुत्र वरस चौदहने अरयो. ते वनमां जेठयो इहन करे. ते भूख्यो तरस्यो (तेथी) खलाय नही. पछी लागलोगथी पृथ्वी परिक्रमा करतां श्रीआचार्यज्छ त्यां सधन वनमां आव्या. त्यारे आ क्षत्रीने पुछ्युं, के तू कोण छे ? जे अकेलो वनमां इहन करे छे ? त्यारे अने दंडवत् करीने पोतातुं अधुं वृत्तांत कहुं. त्यारे श्रीआचार्यज्छ पोते कृष्णदास मेघनने कहे, के कंधं महाप्रसाद होय तो अने भवदावीने ज्छही जलपान करावो. जे अनेना प्राणु भये. त्यारे कृष्णदास मेघननी पास प्रसाद हतो ते अने क्षत्रीने

को मन ठिकाने आयो । तब या क्षत्रीने श्रीआचार्यजी सों विनती कीनी जो-महाराज ! मोकों आप पास राखो । जो मैं जनम भरि आप को गुलाम रहूंगो । अब मेरे मातपिता भगवान आपु हो । तब श्रीआचार्यजी आपु श्रीमुख सों कहे, जो-तू चिंता मति करे, और तू हमारे संग ही रहियो । तब यह क्षत्री श्रीआचार्यजी के संग ही रह्यो । ता पाछे दूसरे दिन श्रीआचार्यजी आपु वा क्षत्री कों नाम, ब्रह्मसंबंध करवायो, और जल लायवे की सेवा याकों दिये । पाछे कछुक दिन में श्रीआचार्यजी आपु अडेल पधारे तब, वह क्षत्री श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन करिके अपने मन में बहोत प्रसन्न भयो । और कह्यो, जो-मैं अनाथ हतो, सो श्रीआचार्यजी आपु मोकों कृपा करिके सरन लेके संग लाये, सो मोकों साक्षात् श्रीयशोदोत्संगलालित श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन भये । तब वा क्षत्री कपूर जलधरिया को मन श्रीनवनीतप्रियजी के स्वरूप में लगि गयो । सो तब या क्षत्रीने अपने मन में विचारी, जो-अब मोकों श्रीनवनीतप्रियजी की सेवा कछु मिले, तब मैं सदा सेवा करूं और दरसन करूं । सो श्रीआचार्यजी आप साक्षात् पुरुषोत्तम हैं, सो या क्षत्री के मन की जानि याकों पास बुलाय के कह्यो, जो-तेरे मन में सेवा की आई, सो तेरे बड़े भाग्य हैं । तासों अब तू श्रीनवनीतप्रियजी के जलधरा की सेवा कियो करि । तब वा क्षत्रीने प्रसन्न होयके

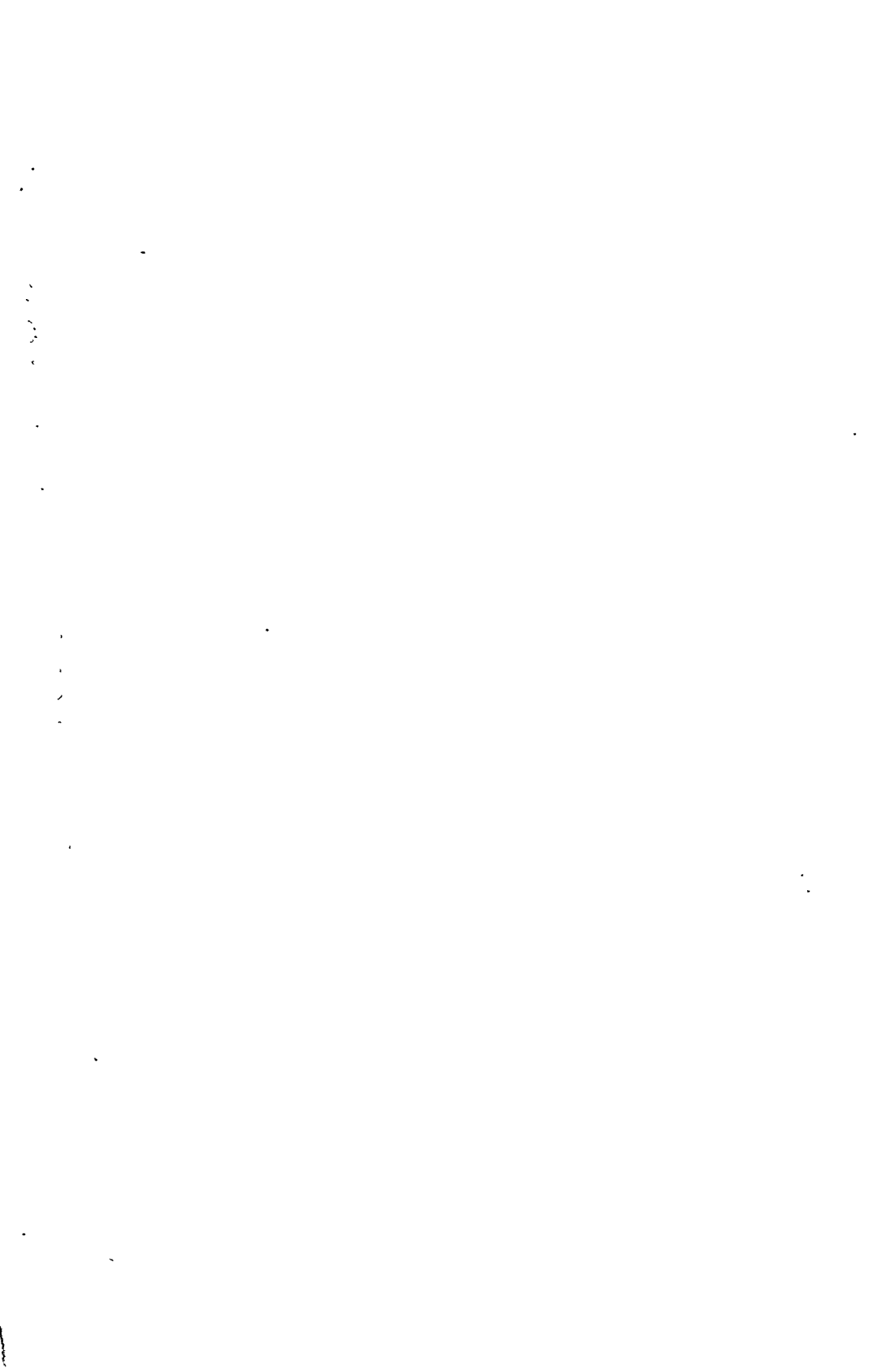
• • • • •
 -हुवडापीने भवडापीने जल पीवडाव्युं. त्यारे अे क्षत्रीतुं मन डेक.णे आव्युं. त्यारे आ क्षत्रीअे श्रीआचार्यलने विनति करी, डे महाराज ! मने आपनी पासे राणो. हुं जनम बार आपने गुलाम रहीश. हुवे मारा मातापिता लगवान आप छे. त्यारे श्रीआचार्यल पोते श्रीमुभधी कडे, डे तू चिंता न कर अने तू अमारी साथेन रहेने. त्यारे अे क्षत्री श्रीआचार्यलनी साथेन रह्यो. ते पछी श्रीआचार्यलअे पोते ते क्षत्रीने नाम-ब्रह्मसंबंध करव्युं अने जल लाववानी सेवा अेने आपी. पछी डेटलाड दिवसमां श्रीआचार्यल पोते अडेल पधार्थ. त्यारे ते क्षत्री श्रीनवनीतप्रियलनां दर्शन करीने पोताना मनमां अहु प्रसन्न थयो अने कहुं, डे हुं अनाथ हुतो ते श्रीआचार्यल पोते मने कृपा करीने शरण लधने संग लाव्या. मने साक्षात् श्रीयशोदोत्संगलालित श्रीनवनीतप्रियलनां दर्शन थयां. त्यारे आ क्षत्री कपूर जलधरीयातुं मन श्रीनवनीतप्रियलना स्वरूपमां लागी गयुं. त्यारे आ क्षत्रीअे पोताना मनमां विचार्युं, डे हुवे मने श्रीनवनीतप्रियलनी सेवा कछ भणे तो हुं सदा सेवा कर्ं अने दर्शन कर्ं. श्रीआचार्यल आप तो साक्षात् पुरुषोत्तम छे अेटवे आ क्षत्रीना मननी लखी अेने पासे जेलापीने कहुं, डे तारा मनमां सेवानी आपी अे तारां मोटां लाग्य छे. तेथी हुवे

श्रीआचार्यजी कों दंडवत् करिकें विनती कीनी, जो-महाराज ! मेरे हू मन में ऐसे हती, सो आपु तो परम कृपालु हो, तासों मेरो सर्व मनोरथ पूरन कियो । ता पाछें अति प्रीति सों वह क्षत्री वैष्णव प्रसन्न होयके खारो तथा मीठो जल भरन लाग्यो । सो कलुक दिन में श्रीनवनीतप्रियजी आपु सानुभावता जतावन लागे । परंतु सेवा में अवकाश नाही, जो-ये परमानंदस्वामी के कीर्तन सुनिवे कों जाय ।

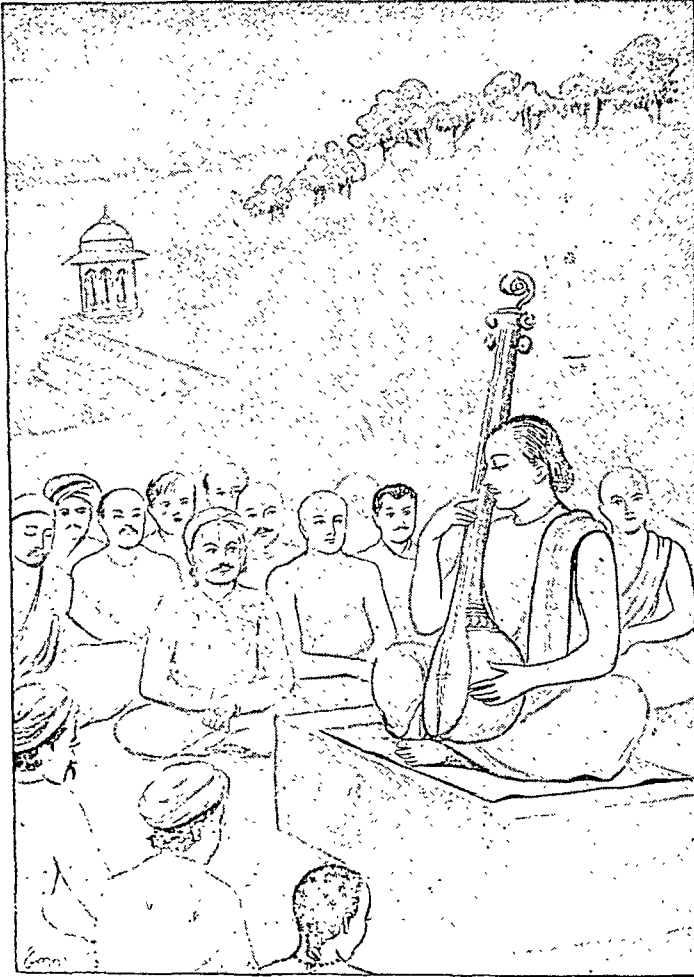
सो एक दिन एकादशी को दिन हतो । ता दिन प्रयाग सों एक वैष्णव श्रीआचार्यजी के दरसन कों अडेल में आयो । तब वा क्षत्री जलघरिघाने वा वैष्णव सों परमानंदस्वामी के समाचार पूछे । तब वा वैष्णवनें कह्यो, जो-नित्य तो चारि घडी तथा पहर को समाज होत है रात्रि के समे, और आज तो एकादशी है, जो-सगरी रात्रि परमानंदस्वामी के यहां जागरन होयगो । सो ये वचन सुनिके वह क्षत्री वैष्णव अपने मन में बहोत प्रसन्न भयो, और विचार कियो, जो-आजु परमानंदस्वामी के कीर्तन सुनिवे को दाव लग्यो है । तासों जब श्रीआचार्यजी आपु रात्रि कों पोढ़ेंगे तब मैं रात्रि कों प्रयाग में जायके परमानंदस्वामी के कीर्तन सुनूंगो । ना पाछें रात्रि भई । तब

तू श्रीनवनीतप्रियलना जलघरानी सेवा क्यो करे । त्यारे ये क्षत्रीये प्रसन्न थधने श्री-आचार्यलने दंडवत् करीने विनती करी, के महाराज ! मारा पणु मनमां येवुं हतुं । ते आप तो परम कृपालु छे तेथी मारे सर्व मनोरथ पूरणु क्यो । ते पछी अति प्रीतिथी ते क्षत्री वैष्णव प्रसन्न थधने भाड़ तथा मीठुं जल भरवा ल ग्यो । पछी डेटलाक द्विसमां श्रीनवनीतप्रियल पोते सानुभावता जणाववा लाग्या परंतु सेवामां अवकाश नही के ये परमानंदस्वामीनां कीर्तन सांभणवाने जय ।

पछी अेक द्विस अेकादशीना द्विस हतो । ते द्विसे प्रयागथी अेक वैष्णव श्री-आचार्यलना दर्शने अडेसमां आव्यो । त्यारे अे क्षत्री जलघरीयाअे अे वैष्णवने परमानंद स्वामीना समाचार पूछया । त्यारे अे वैष्णवे कथुं, के नित्य तो चार घडी तथा प्रहरना समाज थाय छे रात्रिना समये, अने आज तो अेकादशी छे । अेटले आपी रात परमानंद स्वामीने त्यां जगरणु थशे । अे वचन सांभणीने अे क्षत्री वैष्णव पोताना मनमां अहु प्रसन्न थयो । अने विचार क्यो के आज परमानंद स्वामीनां कीर्तन सांभणवानो दाव लाग्यो छे । तेथी ज्यारे श्रीआचार्यल आप रात्रीअे पोदशे त्यारे हू रात्रीअे प्रयागमां जधने परमानंद स्वामीनां कीर्तन सांभणीशे । ते पछी रात्री थध । त्यारे अे क्षत्री कपूर जलघरिया पोतानी सेवाथी पहुंथीने श्रीआचार्य-



चौरासी वैष्णवन की वार्ता



मकर संक्रांति पर प्रयाग में भजन-कीर्तन करते हुए—

परमानंददास

जन्म सं० १५५०]

[देहावसान सं० १६४१



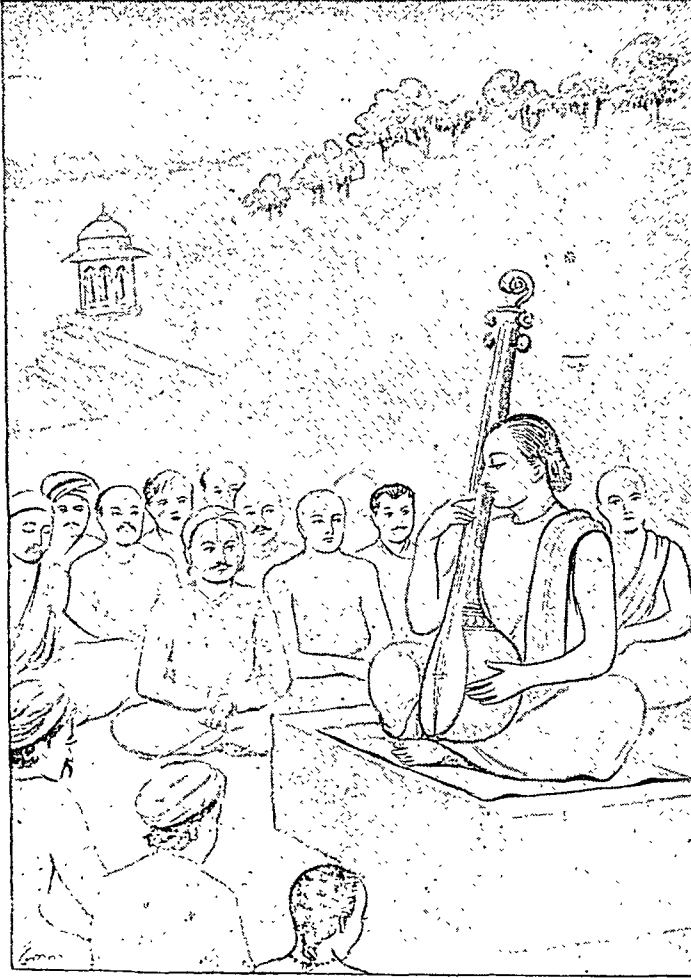
वह क्षत्री कपूर जलघरिया अपनी सेवा सों पहोंचिके श्रीआचार्यजी के श्रीमुख तें कथा सुनिके रात्रि प्रहर डेढ़ गई, ताही समय अडेल सों प्रयाग कों चलयो । तब अपने मन में विचारयो, जो-या समय घाट ऊपर तो नाव मिलनी नाहीं है, तासों पैरिके जाऊं । सो वे पेरिवे में बड़े निपुन हते । पाछे घाट ऊपर आय परदनी एक छोटीसी पहरिके, धोती उपरना माथे सों बांधे । सो उष्णकाल गरमी के दिन हते सो पैरिके परमानंदस्वामी कीर्तन करत हते तहां आये । सो इनको पहलें परमानंदस्वामी सों मिलाप तो कबहू भयो न हतो, तासों दूरि बैठि गये । उहां श्रीआचार्यजी के सेवक प्रयाग के वैष्णव बैठे हते सो इनकों जानत हते । सो तहां अपने पास ही इन क्षत्री कपूर कों बैठारि लिये । सो वे जहां परमानंदस्वामी बैठे हते तिनके पास जाय बैठे । तब और और गुनीन के पद गाये पाछें परमानंदस्वामी ने गाइवै को आरंभ कियो । सो परमानंदस्वामी विरह के पद गावते ।

भावप्रकाश—सो काहेतें ? जो-ऊपर इनको स्वरूप कहि आये हैं, जो-ये परमानंददास लीला में सों विलुरे हैं, सो अब ही श्रीआचार्यजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन भये नाहीं हैं । सो जब श्रीआचार्यजी श्रीनाथजी को दरसन करावेंगे तब परमानंददास कों लीला को ज्ञान होयगो । श्रीआचार्यजी के मार्ग

र्थलना श्रीभुषथी कथा सांलणीने रात्रि द्वाद प्रहर गद्य तेज समये अउलथी प्रयाग यादयो. त्पारे पोताना मनमां विचार्युं के आं समय घाट उपर तो नाव मलशे नहूँ तथी तरीने लठि. अे तरवाभां अहु प्रवीणु हुता. पछी घाट उपर आवी अेक नावुं पोतियुं पहुरीने धोती उपरणा माथेथी आंध्या. उष्णकाल गरमीना द्विस हुता. तथी तरीने ज्यां परमानंद स्वामी कीर्तन करता हुता त्यां आब्या. अेमने परमानंद स्वामीथी पहुलां क्यारेय मिलाप थयो न हुता तथी दुर भेसी गया. त्यां आचार्यलना सेवक प्रयागना वैष्णव भेडा हुता. अे आभने लणुता हुता. अेभणे त्यां पोतानी पासैज आ क्षत्री कपूरने भेसाडी दीधा. ते ज्यां परमानंद स्वामी भेडा हुता तेभनी पासै जभ भेडा. त्पारे भील गुणीआअे पद गायां पछी परमानंद स्वामीअे गावाने आरंल क्यो. ते परमानंद स्वामी विरहनां पद गाता.

भावप्रकाश—केभडे ? अेमनुं स्वरूप उपर कही आब्या छीअे के अे परमानंददास लीलाभांधी विछयां छे. हुलु श्रीआचार्यल अने श्रीगोवर्द्धननाथलनां दर्शन थयां नथी. न्यारे श्रीआचार्यल श्रीनाथलनां दर्शन करावेंशे त्पारे परमानंददासने

चौरासी वैष्णवन की वार्ता



मकर संक्रांति पर प्रयाग में भजन-कीर्तन करते हुए—

परमानंददास

जन्म सं० १५५०]

[देहावसान सं० १६४१



राग कान्हरो—कौन रसिक है इन बातन कौ । नंदनंदन विनु कासों कहिए सुनिरी सखी मेरे दुःख या तन कौ ॥ १ ॥ कहां वह जमुना पुलिन मनोहर कहां वह खटपद जल-जातन कौ ॥ २ ॥ कहां वह सेज पौढिधो वन कौ फूल विछौना मृदु पातन कौ । कहां वह दरस परस 'परमानंद' कमलनैन कोमल गातन कौ ॥ ३ ॥

राग सोरठ—माई को मिलिवे नंदकिसोरै । एकवार को नैन दिखावे मेरे मन के चोरै ॥ १ ॥ जागत जाम गिनत नहीं खूटत क्यों पाउंगी भोरै । सुनिरी सखी अब कैसे जीजे सुनि तमचर खग रोरै ॥ २ ॥ जो पै सत्य प्रीति अंतरगति जिनि काहुडव निहोरै । 'परमानंद' प्रभु आन मिलेंगे सखी सीस जिनि फोरै ॥ ३ ॥

इत्यादि बहोन कीर्तन परमानंददासनें गाये सगरी रात्रि । ता पाछें चार घड़ी रात्रि रही तब कीर्तन राखे । सो जो कोई जागरन में आये हते वे सब अपने अपने घर कों गये । पाछे यह जलघरिया क्षत्री कपूर परमानंदस्वामी सों भगवत्स्मरण करिके उठिके तहांते चल्यो । परमानंदस्वामी के कीर्तन सुनिके अपने मनमें बहोन प्रसन्न होयके कह्यो, जो-जैसो परमानंदस्वामी को गुन सुनत हते सो तैसेई हैं । सो या प्रकार परमानंदस्वामी की मराहना करन करत वह क्षत्री कपूर यमुनाजी के तट पर आइके वाही प्रकार सों पैरिकें पार आय, घोवती उपरना परदनी सहित न्हाय के अपरसही में आये । ताही समय श्रीआचार्यजी आपु पोंढिके उठे हते । सो श्रीआचार्यजी के दरसन करि, दंडवत करि अपने जलघरा की सेवा में तत्पर भये ।

भावप्रकाश—सो या प्रकार ये क्षत्री कपूर परमानंदस्वामी के ऊपर कृपा करिवे के अर्थ परमानंदस्वामी के पास गये । नाहीं तो इनकों श्रीठाकुरजी

इत्यादि धरुणों कीर्तन परमानंददासे गायां, आभी रात. ते पछी चार घड़ी रात रही तयारे कीर्तन राख्यां. तयारे जे कोछ जगश्नुभां आब्या हुता ते थधा पोतपोताने धरे गया. पछी आ जलघरीया क्षत्री कपूर परमानंद स्वामीथी भगवद्स्मरण करीने उठीने त्यांथी आब्यो. ते परमानंद स्वामीनां कीर्तन सांलणीने पोताना मनभां थहु प्रसन्न थधने कथुं, के जेवो परमानंद स्वामीना गुण सांलण्यो हुतो तेवा ज छ. आ प्रकारे परमानंद स्वामीनां वयाणु करतो करतो ते क्षत्री कपूर श्रीयमुनाजना तट उपर आवीने तेज प्रकारे तरीने पार आवी घोती उपरणा परदनी सहित न्हाधने अपरसभां ज आब्यो. तेज सभये श्रीआचार्यज आप पोठीने उठ्या हुता. तेथी श्रीआचार्यजनां दर्शन करी दंडवत करी पोतानी जलघरानी सेवाभां तत्पर थया.

भावप्रकाश—आ प्रकारे ये क्षत्री कपूर परमानंद स्वामीना उपर कृपा करवाने भाटे परमानंद स्वामीनी पास गया. नहीं तो येभने श्रीठाकुरज पोते सातुभाव

को यह सिद्धांत है, जो-भगवदीय को संग होय तब श्रीठाकुरजी कृपा करें। ताके लिये श्रीआचार्यजी परमानंदस्वामी के ऊपर कृपा करन के अर्थ अपने कृपापात्र भगवदीय क्षत्री कपूर जलधरिया कों पठाये। सो क्षत्री कपूर जलधरिया कैसे हते, जो-जिनकों श्रीठाकुरजी एक क्षण हू नाहीं छोड़त हैं, जो-सदा इनके संग ही रहत हैं। तासों सूरदासजी गाये हैं-‘ जो भक्तविरहकातर करुणामय डोलत पाछें लागे ’ । और ऊपर जगन्नाथजोसी की वार्ता में कहि आये हैं, जो-जब वा रजपूत ने तरवार काढी तब श्रीठाकुरजी आपु पाछे तें आयके तरवार सहित हाथ ऊपर ही थांमि दियो, सो हाथ चलन न दियो। तासों श्रीभागवत में सब ठौर वरनन है, जो-भगवदीय वैष्णव के संग ही श्रीठाकुरजी डोलत हैं। सो परमानंदादस कों अब ही वियोग है। तासों विरह के कीर्तन नित्य गावते।

राग बिहागरो—ब्रज के बिरही लोग बिचारे। बिनु गोपाल ठगे से ठाढे अतिदुर्बल तनु हारे ॥ १ ॥ मात जसोदा पंथ निहारति निरखत सांझ सवारे। जो कोऊ कान्ह कान्ह कहि टेरत अखियन बहत पनारे ॥ २ ॥ यह मथुरा काजर की रेखा जो निकसे सो कारे। ‘परमानंद’-स्वामी बिनु ऐसे जैसे चंद्र बिनु तारे ॥ ३ ॥

राग बिहागरो—गोकुल सब गोपाल उपासी। जो गाहक साधन के उधो वे सब बसत ईस-पुरि कासी ॥ १ ॥ जदपि हरि हम तजि अनाथ करी अब छांडत क्यों रति की गांसी। अपनी सीतलता तऊ न छांडत यद्यपि विधु भयो राहु ग्रासी ॥ २ ॥ किहि अपराध जोग लिखि पठयो प्रेम भजन तें करत उदासी। ‘परमानंद’ ऐसी को बिरहनि मांगे मुक्ति छांडि गुनरासी ॥ ३ ॥

दीवानुं ज्ञान थशे. श्रीआचार्यजीना मार्गना ये सिद्धांत छे के भगवदीयने संग होय त्यारे श्रीठाकुरजी कृपा करे. तेथी श्रीआचार्यजीये परमानंद स्वामी उपर कृपा करवाने भाटे पोताना कृपापात्र भगवदीय क्षत्री कपूर जलधरीयाने भेकल्या. ये क्षत्री कपूर जलधरीया डेवा हुता के जेभने श्रीठाकुरजी अेक क्षण पणु छोडता नही. सदा येभनी साथे रहे छे. तेथी सूरदासजीये गाथुं छे के, ‘ भक्तविरहकातर कर्णामय डोलत पाछे लागे ’ अने उपर जगन्नाथ जेपीनी वार्तामां कही आव्या छीये के ज्यारे ते रजपूते तरवार काढी त्यारे श्रीठाकुरजीये पोते पाछगथी आवीने तरवार सहित हाथ उपरं ज थांमि दीधो. हाथ चालवा न दीधो. तेथी श्रीभागवतमां अधी जगाये वर्णन छे, के भगवदीय वैष्णवना संगे ज श्रीठाकुरजी वियरे छे. परमानंददासने उणु वियोग छे. तेथी विरह नित्य गाता. (१) ‘ ब्रजके विरही लोग गियारे ’ (२) ‘ गोकुल सभ गोपाल उपासी ’ (३) ‘ डौन रसिक है धन भातन डो ’ (४) ‘ भाधरी ! डो भिलिये नंदकिशोरे ’

राग कान्हरो—कौन रसिक है इन बातन कौ । नंदनंदन विनु कासों कहिए सुनिरी सखी मेरे दुःख या तन कौ ॥ १ ॥ कहां वह जमुना पुलिन मनोहर कहां वह खटपद जल-जातन कौ ॥ २ ॥ कहां वह सेज पौढिवो बन कौ फूल विछौना मृदु पातन कौ । कहां वह दरस परस 'परमानंद' कमलनैन कोमल गातन कौ ॥ ३ ॥

राग सोरठ—माई को मिलिबे नंदकिसोरै । एकवार को नैन दिखावे मेरे मन के चोरै ॥ १ ॥ जागत जाम गिनत नहीं खूटत क्यों पाउंगी भोरै । सुनिरी सखी अब कैसे जीजे सुनि तमचर खग रोरै ॥ २ ॥ जो पै सत्य प्रीति अंतरगति जिनि काहुऽव निहोरै । 'परमानंद' प्रभु आज मिलेंगे सखी सीस जिनि फोरै ॥ ३ ॥

इत्यादि बहोन कीर्तन परमानंददासनें गाये सगरी रात्रि । ता पाछें चार घड़ी रात्रि रही तब कीर्तन राखे । सो जो कोई जागरन में आये हते वे सब अपने अपने घर कों गये । पाछे यह जलघरिया क्षत्री कपूर परमानंदस्वामी सों भगवत्स्मरण करिके उठिके तहांते चलयो । परमानंदस्वामी के कीर्तन सुनिके अपने मनमें बहोत प्रसन्न होयके कह्यो, जो-जैसो परमानंदस्वामी को गुन सुनत हते सो तैसेई हैं । सो या प्रकार परमानंदस्वामी की सराहना करत करत वह क्षत्री कपूर यमुनाजी के तट पर आइके बाही प्रकार सों पैरिकें पार आय, धोवती उपरना परदनी सहित न्हाय के अपरसही में आये । ताही समय श्रीआचार्यजी आपु पौढिके उठे हते । सो श्रीआचार्यजी के दरसन करि, दंडवत करि अपने जलघरा की सेवा में तत्पर भये ।

भावप्रकाश—सो या प्रकार ये क्षत्री कपूर परमानंदस्वामी के ऊपर कृपा करिवे के अर्थ परमानंदस्वामी के पास गये । नाहीं तो इनकों श्रीठाकुरजी

इत्यादि धरुं कीर्तन परमानंददासे गायां, आभी रात. ते पछी चार घड़ी रात रही तयारे कीर्तन राख्यां. तयारे जे डोड जगरणुमां आव्या हुता ते अंधा पोतपोताने धरे गया. पछी आ जलघरीया क्षत्री कपूर परमानंद स्वामीथी भगवद्स्मरण करीने उठीने त्यांथी आयेथे. ते परमानंद स्वामीनां कीर्तन सांभणीने पोताना मनमां अहु प्रसन्न थयने कहुं, के जेवो परमानंद स्वामीना गुण सांभय्ये हुतो तेवा ज छे. आ प्रकार परमानंद स्वामीनां वयाणु करतो करतो ते क्षत्री कपूर श्रीयमुनाजना तट उपर आवीने तेज प्रकारे तरीने पार आवी घाती उपरणा परदनी सहित न्हायने अपरसमां ज आव्यो. तेज समये श्रीआचार्यज आप पोदीने उठ्या हुता. तेथी श्रीआचार्यजनां दर्शन करी दंडवत करी पोतानी जलघरानी सेवामां तत्पर थया.

भावप्रकाश—आ प्रकारे ये क्षत्री कपूर परमानंद स्वामीना उपर कृपा करवाने भाटे परमानंदस्वामीनी पासे गया. नही तो येभने श्रीठाकुरज पोते सानुभाव

आप सानुभाव हते, सो ऐसे भगवदीय काहेकों काहूके घर जाय ? परंतु परमानंद-स्वामी के ऊपर कृपा होनहार है, तासों श्रीनवनीतप्रियजी वा क्षत्री कपूर जल-घरिया को मन प्रेरिकें याके संग आपुही पधारि, याही की गोद में बैठिके परमानंदस्वामी के कीर्तन सुने ।

सो या प्रकार वह क्षत्री जलघरिया परमानंदस्वामी के कीर्तन सुनि जब प्रयाग सों अडेल कों चले, सो तब परमानंदस्वामी सगरी रात्रि के श्रमित हते, सो येह सोये ।

भावप्रकाश—सो तहां यह संदेह होय, जो-परमानंदस्वामी सगरी रात्रि जागरन करिके चारि घड़ी पिछली रात्रि रही तब सोये । सो सोये तें जागरन कों फल जात रहत है । सो परमानंदस्वामी तो सुज्ञान है, और चतुर हैं तासों वे क्यों सोये ? तहां कहत हैं, जो-परमानंदस्वामी लीला संबंधी पुष्टिजीव हैं । सो एक श्रीठाकुरजी कों चाहत हैं और जागरन के फल कों चाहत नहीं हैं । सो ये परमानंदस्वामी एकादसी के जागरन को मिस मात्र लेकें भगवन्नाम अधिक लियो जाय ताके लिये जागरन करत हते । सो इनकों विधि रीति सों कछु जागरन करिवे के फल को कारन नहीं है । तासों परमानंददास चारि घड़ी रात्रि पिछली रही तब सोये । सो यातें जो-जागरन को फल जायगो, परंतु भगवन्नाम लियो, सो गुन तो कोई काल में जायगो नहीं । तासों भगवन्नाम लेयवे

हुता तेथी अेवा भगवदीय शा भाटे कोधना घरे नय ? परंतु परमानंद स्वामीना उपर कृपा थवावाणी छे तेथी श्रीनवनीतप्रियज्ये क्षत्री कपूर जलघरियातुं मन प्रेरिने अेनी साथे आपु पधार्यां अेनी गौदीमां अेसीने परमानंद स्वामीनां कीर्तन सांभल्यां ।

अे प्रकारे अे क्षत्री जलघरीया परमानंद स्वामीनां कीर्तन सांभली न्यारे प्रयागथी अउल आल्या त्यारे परमानंद स्वामी यधी रात्रिअे श्रमित हुता ते पणु सुध रह्या ।

भावप्रकाश—त्यां आ संदेह होय के परमानंद स्वामी आभी रात्रि नगरणु करिने आर घडी पाछली रात्रि रही त्यारे सूता । ते सुवाथी नगरणुतुं इल नतुं रहें छे । परमानंद स्वामी तो सुज्ञान छे अतुर छे तेथी अे केम सुध रह्या ? त्यां कडे छे के परमानंद स्वामी लीला संबंधी पुष्टिज्ये छे । तेथी अेक श्रीठाकुरज्ये आडे छे । नगरणुना इलने नथी आहुता । अे परमानंद स्वामी अेकादशीना नगरणुतुं मिष मात्र लधने भगवन्नाम अधिक लेवाय तेने भाटे नगरणु करता हुता । अेभने विधि-रीतिथी कंधं नगरणु करवाना इलतुं कारणु नथी । तेथी परमानंददास आर घडी रात्रि पाछली रही त्यारे सुध रह्या । ते अेथी के नगरणुतुं इल नथे परंतु भगवन्नाम लीधुं ते गुणु

के अर्थ चारि घड़ी रात्रि पाछिली कों सोये । सो काहेतें ? जो-सोवे नाही तो द्वादसी के दिन आलस सरीर में रहे । फेरि द्वादसी की रात्रि कों डेढ़ पहर रात्रि ताई कीरतन करने हैं । तासों जागरन को आश्रय छोडिकें भगवन्नाम को आश्रय करिके सोये ।

सो नींद आवत ही परमानंदस्वामी कों स्वप्न आयो । सो स्वप्न में देखे तो श्रीआचार्यजी के सेवक क्षत्री जागरन में बैठे हैं । और इनकी गोद में श्रीनवनीतप्रियजी बैठे देखे । और श्रीनवनीतप्रियजी स्वप्न में सुस्विक्याय के परमानंदस्वामी कों आज्ञा किये, जो-आज मैंने तेरे कीर्तन सुने हैं । सो श्रीआचार्यजी के कृपापात्र सेवक कपूर क्षत्री जलघरिया तेरे यहां रात्रि कों जागरन में आये । तासों इनके साथ मैं हू आयो । सो इतने दिनन में आजु तेरे कीर्तन सुन्यो हों ।

भावप्रकाश—सो यह कहे, तहां यह संदेह होय, जो-श्रीठाकुरजी तो सदा सुनत हैं, और सब ठौर व्यापक हैं । सो कहे, जो-‘ आज मैं सुन्यो ’ ताको कारन कहा ? तहां कहत हैं, जो-इतने दिन सों अंगीकार में ढील हती, सो अंतर्-र्यामी साक्षि रूप सों सुने । तासों अब अंगीकार करना है और कृपा करनी है, सो वेगि कृपा करन को लक्षण बताये । तासों कहे, जो-आजु हों तेरे कीर्तन सुन्यो

तो डोछ कालमां नशे नही. तेथी लगवन्नाम देवाने भाटे चार घडी रात्रि पाछली ये सोया. केभडे ? सुवे नही तो द्वादशीना दिवसे शरीरमां आणस रहे. इरी द्वादशीनी रात्रिये होठ प्रहर रात्रि सुधी कीर्तन करवां छे. तेथी लगवणुनो आश्रय छोडीने लगव-न्नामनो आश्रय करीने सूध रह्या.

पछी निंदा आवतां न परमानंद स्वामीने स्वप्न आव्युं. स्वप्नमां लुये तो श्रीआचार्यलना सेवक क्षत्री लगवणुमां भेडा छे अने ऐमनी गोदीमां श्रीनवनीत-प्रियलने भिराजेला जेया अने श्रीनवनीतप्रियलये स्वप्नमां हुसीने परमानंद स्वामीने आज्ञा करी, के आज में तारां कीर्तन सांलल्या छे श्रीआचार्यलना कृपापात्र सेवक कपूर क्षत्री जलघरीया तारे त्यां रात्रिये लगवणुमां आव्या. तेथी ऐमनी साथे हुं आव्ये. तेथी आटला दिवसमां आज तारां कीर्तन सांलल्यां छे.

भावप्रकाश—आ कहुं त्यां ये संदेह थाय के श्रीठाकुरल तो सदा सांलणे छे. णधी नजे व्यापक छे तेथी कहुं के आज में सांलल्यां तेतुं कारण थुं ? त्यां कडे छे के आटला दिवसथी अंगीकारमां ढील हुती अटले अंतर्थांमी साक्षीपथी सांलल्यां. तेथी हुवे अंगीकार करवे छे अने कृपा करपी छे अटले नदही कृपा करवातुं लक्षण

हों। सो आज मैं तोपर पूरन कृपा करी। तासों अब वेगि मोकों पावोगे। सो यह आसय जाननो।

तब परमानंदस्वामी की नींद खुली। सो नेत्रन में श्रीनवनीत-प्रियजी को स्वरूप कोटिकंदर्पलावण्य, ऐसो स्वप्न में दरसन भयो। तासों नेत्रन में हृदय में ज्ञान भयो। तब परमानंदस्वामी के मन में बड़ी चटपटी लगी, और आर्ति भई, जो-अब मैं कब श्रीनवनीतप्रियजी को दरसन करों? ता पाछें परमानंदस्वामी ने अपने मन में विचार कियो, जो-मैं इतने दिन तें जागरन कियो और कीर्तन हू गाये, परंतु मोकों ऐसो दरसन कबहू न भयो। जो आज भयो है। सो श्रीआचार्यजी को सेवक जलधरिया क्षत्री कपूर आयो, तासों उनकी गोद में भयो। सो क्षत्री कपूर बिना श्रीनवनीतप्रियजी को दरसन न होयगो, तासों उनके पास चलिये, और उनसों मिलिये तब अपना कार्य सिद्ध होय। सो यह विचार मनमें करिके परमानंदस्वामी तत्काल उठि के अडेल कों चले। इतने में प्रातःकाल भयो। सो श्रीयमुनाजी के तीर पे आये, सो प्रथम ही नाव पार चली, तामें बैठिके परमानंदस्वामी पार आये। ता समय श्रीआचार्यजी श्रीयमुनाजी में स्नान करिके प्रातःकाल की संध्या करत हते। परमानंदस्वामी कों श्रीआ-

गताव्युं. तेथी कहे, के आज मे' तारां कीर्तन सांख्य्यां छे. आज मे' तारा उपर पूरण कृपा करी. तेथी हुवे नदही मने पामीश. आ आशय जाणुवे.

त्यारे परमानंद स्वामीनी नींद खुली. नेत्रोमां श्रीनवनीतप्रियल्लतुं स्वरूप केटी कंदर्प लावण्य जे स्वप्नमां दर्शन थयां तेनाथी नेत्रमां, हृदयमां ज्ञान थयुं. त्यारे परमानंद स्वामीना मनमां भहु चटपटी लागी अपने आर्ति थध के हुवे हुं क्यारे श्रीनवनीतप्रियल्लनां दर्शन कइ? ते थली परमानंद स्वामीअे पोताना मनमां विचार कथे के मे' आरदा द्विवसथी जगरणु कथुं अपने कीर्तन पणु गायां परंतु मने अेवां दर्शन क्यारेथ न थयां. जे आजे थयां छे. ते श्रीआचार्यल्लना सेवक जलधरिया क्षत्री कपूर आण्ये तेथी तेनी गादीमां थयां. तेथी क्षत्री कपूर बिना श्रीनवनीतप्रियल्लनां दर्शन नही थाय भाटे अेमनी पास यालो अपने अेमने भणीअे त्यारे आपणुं कार्य सिद्ध थाय. अे विचार मनमां करीने परमानंद स्वामी तत्काल उठीने अडेल याल्या अेटामां प्रातःकाल थयो. त्यारे श्रीयमुनाल्लना तीरे आण्ये. त्यां प्रथम ज नाव पार यादी तेमां अेसीने परमानंद स्वामी पार आण्ये. ते समय श्रीआचार्यल्ल श्रीयमुनाल्लमां स्नान करीने प्रातःकालनी संध्या करता हुता. त्यारे परमानंद स्वामीने

चार्यजी के दरसन अत्यद्भुत अलौकिक साक्षात् श्रीकृष्ण के स्वरूप सों भये । सो जैमो श्रीगुसांईजी श्रीवल्लभाष्टक में वर्णन किये है, जो- 'वस्तुतः कृष्ण एव०' ऐसो दरसन करिके परमानंदस्वामी चकित होय रहे । सो कछु बोल न निकस्यो । तब परमानंदस्वामी नें अपने मन में विचार कियो, जो-श्रीआचार्यजी के सेवक कपूर क्षत्री की गोद में बैठिके श्रीनवनीतप्रियजी मेरे कीर्तन क्यों न सुनें ? जिनके माथे श्रीआचार्यजी आपु ऐसे धनी विराजत हैं । तासों मैं हू इन्को सेवक होऊंगो । परि मेरो मामर्थ्य नहीं है, जो-मैं इन्को सेवक हौन की बिनती करों । तासों वह क्षत्री फेर मिले तो उनसों सगरी बात कहिके सेवक हौन की बिनती करों । यह विचार परमानंदस्वामी अपने मनमें करत हते, इतने में श्रीआचार्यजी आपु श्रीमुखतें परमानंदस्वामी सों आज्ञा किये, जो-परमानंददाम ! कछु भगवल्लीला गावो । तब परमानंददासजीने श्रीआचार्यजी कों साष्टांग दंडवत करिके ये पद गाये :-

राग सारंग—कौन बेर भई चलेरी गोपालें । हों ननसार गई ही न्योतें बार-बार वृद्धति ब्रजवालें ॥ १ ॥ तेरे तन को रूप कहां गयो भामिनि और तुलकमंडल सुकाइ रह्यो । सब सौभाग्य गयो हरि के संग हठौ सकामल विरह दह्योय २ ॥ को बोलै को नैन उधारे को उत्तर देहि विकल मन । सो सरबहु कुर कुरावो 'परमानंदस्वामी' जीवन घन ॥ ३ ॥

राग सारंग—जियकी साधि जिय ही रही री । बहुरि गोराज देवन रही गरी विलपति कुंज अहीरी ॥ १ ॥ इक दिन सो जु सली यह मारु देवन जाते हई वी प्रीतिके लिए दान मिस मोहन मेरी बांह गही री : २ ॥ बिहू बने छिन काल कबर भरि विरहा बनल दहीरी । 'परमानंदस्वामी' बिहू दरसन मैनि री बहीरी ॥ ३ ॥

श्रीआचार्यजीनां दर्शन अति अद्भुत अलौकिक साक्षात् श्रीकृष्ण के स्वरूप सों भये । सो जैमो श्रीगुसांईजी श्रीवल्लभाष्टक में वर्णन किये है, जो- 'वस्तुतः कृष्ण एव०' ऐसो दरसन करिके परमानंदस्वामी चकित होय रहे । सो कछु बोल न निकस्यो । तब परमानंदस्वामी नें अपने मन में विचार कियो, जो-श्रीआचार्यजी के सेवक कपूर क्षत्री की गोद में बैठिके श्रीनवनीतप्रियजी मेरे कीर्तन क्यों न सुनें ? जिनके माथे श्रीआचार्यजी आपु ऐसे धनी विराजत हैं । तासों मैं हू इन्को सेवक होऊंगो । परि मेरो मामर्थ्य नहीं है, जो-मैं इन्को सेवक हौन की बिनती करों । तासों वह क्षत्री फेर मिले तो उनसों सगरी बात कहिके सेवक हौन की बिनती करों । यह विचार परमानंदस्वामी अपने मनमें करत हते, इतने में श्रीआचार्यजी आपु श्रीमुखतें परमानंदस्वामी सों आज्ञा किये, जो-परमानंददाम ! कछु भगवल्लीला गावो । तब परमानंददासजीने श्रीआचार्यजी कों साष्टांग दंडवत करिके ये पद गाये :-

ने
७
थी-
भारा
भारी
आपे
आया-
भनारथ

राग सारंग—वह बात कमल दल नैन की । बार-बार सुधि आवत सजनी
वह दुरि देनी सैन की ॥ १ ॥ वह लीला वह रास सरद कौ गौरज रंजित आवनी ।
अरू वह उंची टेर मनोहर मिस करि मोहि बुलावनी ॥२॥ वे बातें सालनि उर अंतर
को पर पीर हिं पावे । 'परमानंद' कह्यो न परे कछु हियो सुखुंध्यो आवे ॥ ३ ॥

राग सारंग—सुधि करति कमलदल नैनकी । भरि भरि लेति नीर अति आतुर
रति वृन्दावन चन की ॥ १ ॥ दे-दे गाढे आलिंगन मिलती कुंजलता द्रुम ऐन की ।
वे बातें कैसे कै विसरति बांह उसीसे सैन की ॥ २ ॥ वसि निकुंज रास खिलाए
व्यथा गँवाई मैन की । 'परमानंद प्रभु' सो क्यों जीवहि जो पोखी मृदु बेनकी ॥३॥

या भांति सों परमानंददास ने विरह के पद श्रीआचार्यजी के
आगे गाये । सो सुनिके श्रीआचार्यजी श्रीमुख सों कहे, जो-परमा-
नंददास ! कछु बाललीला के पद गावो । तब परमानंददास ने हाथ
जोरिके श्रीआचार्यजी सों विनती कीनी, जो-महाराज ! मैं बाललीला
में कछु समुझन नहीं हों । तब श्रीआचार्यजी आपु श्रीमुख सों पर-
मानंददास सों आज्ञा किये, जो-तुम श्रीयमुनाजी में स्नान करि आवो;
जो-हम तुमकों समुझाय देयें । पाछें परमानंददासने श्रीआचार्यजी
सों विनती कीनी, जो-महाराज ! आपुको सेवक क्षत्री कपूर कहाँ है ?
सो तब श्रीआचार्यजी आप कहे, जो-कछु सेवा टहल में होगो ।
तब परमानंददास श्रीयमुनाजी में स्नान करन कों चले, और श्रीआ-
चार्यजी तो सेवा को समय हतो सो वेगि ही उहां ते मंदिर में पधारे ।

स्वामीने आज्ञा करी, के परमानंददास ! कंठ लगवटदीला गावो. त्यारे परमानंददा-
सलये श्रीआचार्यलने साष्टांग दंडवत करिने आ पद गायुं. राग सारंग—१ 'कौन
पेर लछ यलेरी गोपाल' २ 'जियडी साध जियडी रही री' ३ 'वहु आत कमल-
दल नैनकी' ४ 'सुधि करत कमलदल नैनकी' (उपर लुग्यो) आ प्रकारे परमानंद-
दासे विरहनां पद श्रीआचार्यलनी आगण गायां. ये सांलणीने श्रीआचार्यल
श्रीमुखी कहे, के परमानंददास ! कंठ आलदीलानां पद गावो. त्यारे परमानंददासे
हाथ जेडीने श्रीआचार्यलने विनंती करी, के महाराज ! हुं आलदीलामां कंठ
समजतो नथी. त्यारे श्रीआचार्यलये पोते श्रीमुखी परमानंददासने आज्ञा करी,
के तमे श्रीयमुनालमां स्नान करी आवो अमे तमने समजवी द्यशुं. पछी परमानं-
दासे श्रीआचार्यलने विनंती करी, के महाराज ! आपने सेवक क्षत्री कपूर क्यां छे ?
त्यारे श्रीआचार्यल पोते कहे, के कंठ सेवा टहलमां हुशे. त्यारे परमानंददास
श्रीयमुनालमां स्नान करवाने आल्या अने श्रीआचार्यल तो सेवाने समय हुतो ते
जददी न त्यांधी मंदिरमां पधार्या अने श्रीनयनीतप्रियलने जगाव्या. अटलामां न

और श्रीनवनीतप्रियजी को जगाये। इतने ही में वह क्षत्री जलघरिया श्रीयमुना जल भरिवे को गागर लेके श्रीयमुनाजीके पार आयो। सो उनको देखि के परमानंदस्वामी परम आनंद सो दोऊ हाथ जोरिके भगवत् स्मरण करिके कह्यो, जो-रात्रि को तुम कृपा करिके जागरन में पधारे हते, सो नवनीतप्रियजी तिहारी गोदि में बैठिके मेरे कीर्तन सुने। सो मैं सोयो तब श्रीनवनीतप्रियजीने दरसन दियो, और कृपा करिके आज्ञा किये, जो-आज मैं तेरे कीर्तन सुन्यो हूं। तासों तुमने मेरे ऊपर बड़ी कृपा करी। सो अब तिहारे दरसन को आयो हों। तासों अब आप जा प्रकार श्रीआचार्यजी आपु मोकों स्मरण लेइ और श्रीठाकुरजी कृपा करिके मोकों नित्य दरसन देइ, सो प्रकार कृपा करिके बतावो। और मोकों श्रीआचार्यजी आपु कृपा करिके श्रीकृष्णजी के स्वरूप को दरसन दियो है, सो यह तिहारे सत्संग को प्रताप हैं। तब यह बात सुनिके क्षत्री कपूरने उनसों कह्यो, जो-तिहारी ऊपर श्रीआचार्यजी की कृपा भई है। तासों तुमकों ऐसो दरसन भयो हैं। और तुमसों आपने आज्ञा करी है, स्मरण लेवे के लिये, सो जासों तुम बेगही न्हायके अपरम ही में श्रीआचार्यजी के पास चलो। सो तुमकों प्रभु कृपा करिके स्मरण लेंगो, तब तिहारो सब मनोरथ सिद्ध होयगो। और रात्रि को मैं जागरन में तिहारे पास गयो, सो बात

ते क्षत्री जलघरिया श्रीयमुना जल भरवाने गागर लधने श्रीयमुनाजना पार आव्यो अथवे अने जेष्ठ परमानंदस्वामीअ परम आनंदथी अन्ते लुथ जेडीने भगवद्स्मरण करीने कछु, के रात्रिअ कृपा करीने तमे जगरेअमां पधार्या लुता त्यारे श्रीनवनीतप्रियअ तमारा भोणामां भेसीने मारा कीर्तन सांलण्यां पछी हुं स्र रह्यो त्यारे श्रीनवनीतप्रियअ दर्शन आप्यां अने कृपा करीने आज्ञा करी, के आज में तारा कीर्तन सांलण्यां छे तेथी तमे मारा उपर अहु मोटी कृपा करी। लुवे तमारा दर्शन आव्यो छुं, तेथी लुवे जे प्रकारे श्रीआचार्यअ पाते मने शरअ ले अने श्रीठाकुरअ कृपा करीने मने नित्य दर्शन हे ते प्रकारे कृपा करीने बतावो। वणी मने श्रीआचार्यअ आपे कृपा करीने श्रीकृष्णअ स्वप्नां दर्शन आप्यां छे, ते आ तमारा सत्संगनां प्रताप छे, त्यारे अे वात सांलणीने क्षत्री कपूरे अमने कछुं, के तमारी उपर श्रीआचार्यअनी कृपा थध छे तेथी तमने अेवां दर्शन थयां छे अने तमने आपे आज्ञा करी छे शरअ लेवाने भाटे तेथी तमे जददी न्हाधने अपरसमां ज श्रीआचार्यअनी पास आवो। तमने प्रभु कृपा करीने शरअ लेसे, त्यारे तमारे अथे मनोरथ

तुम श्रीआचार्यजीके आगें मति करियो । नाहिं तो आपु मेरे ऊपर खीजेंगे, जो-तू सेवा छोड़िके क्यों गयो हतो ? यह वचन परमानंद-स्वामी सों कहिके वा क्षत्री वैष्णव ने तो श्रीयमुनाजलकी गागर भरी, और परमानंददास स्नान करिके अपरसही में श्रीआचार्यजीके पास उन जलघरिया क्षत्री के पाछे आये । ता समय श्रीआचार्यजी श्रीनवनीतप्रियजी को सिंगार करिके श्रीगोपीवल्लभ भोग धरिकें बिराजे हते । ता समय परमानंददास न्हाय के आये । तब श्रीआचार्यजी आपु परमानंददास सों कहे, जो-परमानंददास वेठो । तब परमानंददास श्रीआचार्यजी कों साष्टांग दंडवत करिके बेठे । पाछें श्रीआचार्यजी आपु भीतर पधारि भोग सराय के परमानंददास कों बुलायके श्रीनवनीतप्रियजी की सन्निधान कृपा करिके नाम सुनायो । ता पाछे ब्रह्मसंबंध करवायो । पाछे श्रीभागवत दशमस्कंध की अनुक्रमणिका सुनाये ।

भावप्रकाश—सो ताको हेतु यह है, जो-प्रथम परमानंददास सों श्री-आचार्यजीने कह्यो, जो-कछु भगवद्दीला वर्णन करो । तब परमानंददास ने बिरह के पद गाये । पाछें श्रीआचार्यजी आपु परमानंददास कों कहे, जो-बाललीला गावो । सो ताको हेतु यह है, जो-बाललीला श्रीनंदरायजी के घर की लीला है,

सिद्ध थसे अने रात्रिये हुं. जगरणुमां तमारी पासै गयो ते वात तमे श्रीआचार्यल आगण करता नही. नहीतो आप भारा उपर भीजसे के तू सेवा छोडीने केम गयो हुतो ? अे वचन परमानंदस्वामीने कहीने अे क्षत्री वैष्णुवे तो श्रीयमुना जलनी गागर लरी अने परमानंददास स्नान करीने अपरसमां ज श्रीआचार्यलनी पासै अे जलघरिया क्षत्रीनी पाछण आव्या. ते समये श्रीआचार्यल श्रीनवनीतप्रियलने शृंगार करीने श्रीगोपीवल्लभ लोग धरीने बिराज्या हुता. ते समये परमानंददास न्हायने आव्या. तयारे श्रीआचार्यल आप परमानंददासने कहे, के परमानंददास येसो. पछी श्रीआचार्यल आपे अंदर पधारी लोग सरायीने परमानंददासने भो-लायीने श्रीनवनीतप्रियलनी सन्निधान कृपा करी नाम संलगाव्युं. ते पछी ब्रह्मसंबंध करायुं. पछी श्रीभागवत दशमस्कंधनी अनुक्रमणिका संलगायी.

भावप्रकाश—तेनो हेतु अे छे के प्रथम परमानंददासने श्रीआचार्यलअे कहुं, के कंध भगवद्दीला वर्णन करो. तयारे परमानंददासे बिरहनां पद गायां. पछी श्रीआचार्यल पोते परमानंददासने कहे, के बाललीला गावो. तेनो हेतु अे छे, के बाललीला श्रीनंदरायलना घरनी लीला छे ते संयोग रस छे. अेटले अेकवार संयोग

सो संयोग रस है । सो एकवार संयोग होय ता पाछे विरह फलरूप होय । सो काहेतें ? जो-रास पंचाध्यायी में ब्रजभक्तन कों बुलाय के लीला किये । ता पाछे अंतर्धान में विरह फलरूप भयो । तामों भगवान कहे- 'यथाऽधनो लब्धधने विनष्टे तच्चिन्तया०' जैसे धन पायके धन जाय, तब धन को चितन बहोत होय । सो पहले श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो-बाललीला गावो । क्यों ? जो-अनुभव करिके विरह को गान बेगि फले । परि परमानंददास ने विनती कीनी, जो-महाराज ! मैं कछु समझत नाही हों । ताको आसय यह है, जो-संयोग रस अब ही है नाही । जो मूल लीला में हतो सो विस्मृत भयो है । परि लीला में तें विछुरे हैं, और दैवी जीव हैं, तासों विरह जनम ही तें गाये । सो अब नाम समर्पण कराय के अज्ञान प्रतिबंध दूरि कियो, ता पाछे श्रीभागवत दशमस्कंध की अनुक्रमणिका सुनाये । सो तब साक्षात् श्रीनवनीतप्रियजी के स्वरूप को अनुभव भयो और दशम की सगरी लीला स्फुरी । परमानंददास कों दशम की अनुक्रमणिका सुनाये ताको कारन यह है, जो-सर्वोत्तम ग्रंथ श्रीगुसांईजी प्रकट किये हैं । तामें श्रीआचार्यजी को नाम कहे हैं, जो-' श्रीभागवत-पीयूषसमुद्र-मथन क्षमः ' । सो श्रीभागवत को श्रीगुसांईजी अमृत को समुद्र करिके वर्णन किये, सो श्रीआचार्यजी आपु अनुक्रमणिका द्वारा श्रीभागवत रूपी समुद्र परमानंददास के हृदय में स्थापन

थाय त्यार पछी विरह इल इप थाय. केमके ? रास पंचाध्यायीमां ब्रजभक्तोने ओला-पीने लीला करी. ते पछी अंतर्धानमां विरह इल इप थयो. तेथी भगवान कहे, ' यथा ऽधनो ' (उपर लुब्धो) नेम धन पाभीने धन नथ त्यारे धननुं चिंतन णहु थाय. तेथी पछेलां श्रीआचार्यलु आपु कहे के णाललीला गावो. केम ? ने अनुभव करीने विरहनुं गान नदही इणे. परंतु परमानंददासे विनंती करी के महाराज ! हुं कछु सम-जतो नथी. तेना आशय ये छे के येमने संयोग रस हुनु नथी. मूल लीलामां हुतो ते विस्मरण थयो छे. परंतु लीलामांथी विछुर्या छे अने दैवी लव छे. तेथी विरह जनमथीन गायो. हुवे नाम-समर्पण करावीने अज्ञान प्रतिबंध दूर कथो ते पछी श्रीभागवत दशमस्कंधनी अनुक्रमणिका संभणावी. त्यारे साक्षात् श्रीनवनीतप्रियलुना स्वइधनो अनुभव थयो अने दशमनी अधी लीला स्फुरी. परमानंददासने दशमनी अनु-क्रमणिका संभणावी तेनुं कारण ये छे के सर्वोत्तम ग्रंथ श्रीगुसांईलुये प्रकट कथो छे. तेमां श्रीआचार्यलुनुं नाम कहुं छे के ' श्रीभागवतपीयूषसमुद्रमथन क्षमः ' त्यां श्रीभागवतने श्रीगुसांईलुये अमृतनो समुद्र कहीने वर्णन कथुं तेथी श्रीआचा-र्यलुये आपे अनुक्रमणिका द्वारा श्रीभागवतइपी समुद्र परमानंददासना हृदयमां स्था-

कियो । तैसे ही प्रथम सूरदास के हृदय में अनुक्रमणिका द्वारा श्रीभागवत रूपी समुद्र स्थापन कियो हतो । तासों वैष्णव तो अनेक श्रीआचार्यजी के कृपापात्र हे, परंतु सूरदास और परमानंददास ये दोऊ 'सागर' भये । इन दोउन के कीर्तन की संख्या नाहीं, सो दोऊ सागर कहवाये । सो श्रीआचार्यजीने आज्ञा करी, जो बाललीला गावो । अब संयोग रस को अनुभव भयो ।

तब परमानंददासजी ने श्रीआचार्यजी के आगे बाललीला के पद गाये । सो पद—

राग आसावरी—माईरी ! कमल नैन स्यामसुंदर झूलत हैं पलना । बाललीला गावति सब गोकुल की ललना ॥ १ ॥ लालकै अरुन तरुन चरनकमल नख-मनि ससि-ज्योती । कुंचित कच भँवराकृति लर लटकै गज-मांती ॥ २ ॥ लाल अंगुठा गहि कमल पानि मेलत मुख मांही । अपनो प्रतिबिंब देखि पुनि पुनि मुसिकाहीं ॥ ३ ॥ रानी जसुमति के पुन्य पुंज निरखि निरखि लालैं । 'परमानंदस्वामी' गोपाल सुत सनेह पालैं ॥ ४ ॥

राग बिलावल—जसोदा ! तेरे भाग्यकी कहीय न जाइ । जो मूरति ब्रह्मादिक दुर्लभ सो प्रगटे हैं आइ ॥ १ ॥ सिव नारद सनकादि महामुनि मिलिबे करत उपाई । ते नंदलाल धूरिधूसर वपु रहत कंठ लपटाई ॥ २ ॥ रतन जटित पौढाय पालने वदन देखि मुसिकाई । झूलो मेरे लाल जाऊं बलिहारी 'परमानंद' बाल जाई ॥ ३ ॥

राग बिलावल—मनिमै आंगन नंद के खेलत दोऊ भैया । गौर स्याम जोरी वनी बल कुंवर कन्हैया ॥ १ ॥ नू पुरु कंकन किंकनी रुनझुन बाजे । मोहि रही ब्रज सुंदरि मनसिज सुनि लाजे ॥ २ ॥ संग जसुमति रोहिणी हितकारिनी भैया । खुटकी दे दे नचावही सुत जानि नन्हैया ॥ ३ ॥ नीलपीत पट ओढनी देखत मोहि भावे । बाल विनोद प्रमोद सों 'परमानंद' गावे ॥ ४ ॥

राग कान्हरो—प्यारे हरि कौ जस गावति गोपांगना । मनिमय आंगन नंद-राय के बाल विनोद करत हैं रिंगना ॥ १ ॥ गिरि गिरि उठत घुटुखवन टेकत जानु-पानि मेरो लगन कौ मगना । धूसर धूरि उठाय गोद ले मात यसोदा के प्रेम को भजना ॥ २ ॥ त्रिपद पहुंसि नापी तब न आलस भयो अब जो कठिन भयो दहेरी उल्लंघना । 'परमानंद प्रभु' भक्तवत्सल हरि सचिर द्वार वरकंठ सोहे बघना ॥ ३ ॥

पन कथीं । तेज प्रकारे प्रथम सूरदासना हृदयमां अनुक्रमणिका द्वारा श्रीभागवतरूपी समुद्रने स्थापन कथीं हुतो । तेथी वैष्णव तो अनेक श्रीआचार्यजीना कृपापात्र हुता । परंतु सूरदास अने परमानंददास ये ये 'सागर' थया । ये अन्नेनां कीर्तनेनां संख्या नथी । तेथी अन्ने सागर कडेवाया । पछी श्रीआचार्यजीये आज्ञा करी के बाललीला गावो हुवे संयोगरसने अनुभव थये ।

त्यारे परमानंददासजीये श्रीआचार्यजीनी आज्ञा बाललीलानां पद गायां ।
(१) ' माधरी कमलनैन स्यामसुंदर ' (२) ' जसोदा तेरे भाग्य की ' (३)

सो ऐसे पद परमानंददास ने बाललीला के बहोत ही गाये । सो सुनिके श्रीआचार्यजी आपु बहोत ही प्रसन्न भये । ता पाछें परमानंददास अडेल में श्रीआचार्यजी के पास रहे । तब श्रीआचार्यजी परमानंददास सों कहे, जो-अब समय समय के पद नित्य श्रीनवनीतप्रियजी कों सुनायो करो, मो यह सेवा तुमकों दीनी । तब परमानंददास नित्य नये पद करिके समय समय के श्रीनवनीतप्रियजी कों सुनावते । और जब श्रीनवनीतप्रियजी कों अनोसर होय, तब परमानंददास श्रीआचार्यजीके आगे अनेक ब्रजलीला के कीर्तन करते । और श्रीआचार्यजी आपु श्रीसुबोधिनी की कथा कहते । सो जा समय (जा) प्रसंग की कथा श्रीआचार्यजी के श्रीमुख तें सुनते नाही प्रसंग के कीर्तन कथा भये पाछे परमानंददास श्रीआचार्यजी कों सुनावते ।

वार्ता-प्रसंग २—एक दिन परमानंददासनें श्रीठाकुररजी के चरणारविंद को माहात्म्य कथामें श्रीआचार्यजी के श्रीमुखतें सुन्यो । सो ता समय परमानंददासने श्रीठाकुरजी के चरणारविंद को माहात्म्य सहित कीर्तन श्रीआचार्यजी के आगे गायो । सो पद—

राग कान्हरो—चरनकमल वंदों जगदीस जे गोघन के संग धाए । जे पद कमल धूरि लपटाने कर गहि गोपिनि उर लाए ॥ १ ॥ जे पदकमल युधिष्ठिर पूजित राजसूयमें चलि आए । जे पदकमल पितामह भीषम भारत में देखन पाए ॥२॥ जे

‘ भखियभ आंगन नंदके ’ (४) ‘ थारे हरिके विभक्त जश ’ (७२ लुआ) अयां पद परमानंददासे आलदीसानां धरुं गायां । अे सांलणीने श्रीआचार्यजी येते अहु प्रसन्न थया । ते पछी परमानंददास अडेसमां श्रीआचार्यजीनी पास रह्या । थारे श्रीआचार्यजी परमानंददासने कहे, के हुवे समय-समयनां पद नित्य नवनीतप्रियजीने संलणाव्या करे । अे सेवा तमने आपी । थारे परमानंददास नित्य नयां पद करीने समय-समयनां श्रीनवनीतप्रियजीने संलणावता अने न्यारे श्रीनवनीतप्रियजीने अनोसर थाय थारे परमानंददास श्रीआचार्यजीनी आगण अनेक ब्रजदीसानां कीर्तन करता । वणी श्रीआचार्यजी येते श्रीसुबोधिनीनी कथा कहुता अे समय ते प्रसंगनी कथा श्रीआचार्यजीना श्रीमुखी सांलणे तेज प्रसंगनां कीर्तन कथा थया पछी परमानंददास श्रीआचार्यजीने संलणावता ।

वार्ता-प्रसंग २—अेक दिवस परमानंददासे श्रीठाकुरजीना यरखारविंदुं माहात्म्य कथामां श्रीआचार्यजीना श्रीमुखी सांलणुं । ते समय परमानंददासे श्रीठाकुरजीना यरखारविंदुं माहात्म्य सहित कीर्तन श्रीआचार्यजीनी आगण गायुं । ते पद :—

पदकमल संभु चतुरानन हृदै कमल अंतर राखे । जेपद कमल रमा-उर भूषण वेद
भागवत मुनि साखे ॥ ३ ॥ जे पद कमल लोकत्रय पावन बलिराजा के पीठ धरे ।
सो पद कमल 'दास परमानंद' गावत प्रेम पीयूष भरे ॥ ४ ॥

ता पाछे श्रीआचार्यजी के आगे प्रार्थना को पद गायो । सो पद—

राग कान्हरो—यह मांगों गोपीजनवल्लभ । मानुस जनम और हरि की सेवा
ब्रज बसिबो दीजे मोहि सुलभ ॥ १ ॥ श्रीवल्लभकुल कौ हों चैरो वैष्णवजन कौ
दास कहाऊं । श्रीयमुनाजल नितप्रति न्हाऊं मन क्रम बचन कृष्ण गुन गाऊं ॥ २ ॥
धीमद्भागवत श्रवन सुनों नित्य इन तजि चित्त कहूँ अनत न लाऊं । 'परमानंददास'
यह मांगत नित निरखों कबहू न अघाऊं ॥ ३ ॥

सो यह पद परमानंददासने गायो । सो सुनिके श्रीआचार्यजी
महाप्रभु आपु जानें, जो-या पद में ब्रज के दरसन की प्रार्थना कीनी
है । तासों परमानंददास कों ब्रज के दरसन अवश्य करवावने । तब
श्रीआचार्यजी आपु ब्रजमें पधारिवे को उद्यम किये । सो तब दामो-
दरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, परमानंददास, और यादवेन्द्रदास
आदि सब वैष्णवन कों संग लेके श्रीआचार्यजी आप अड़ेल तें ब्रज
कों पधारे । सो ब्रज कों आवत मारग में परमानंददास को गाम
कनौज आयो । तब परमानंददास ने श्रीआचार्यजी सों विनती करि
अपने घर पधराये । पाछें परमानंददास अपने भाग्य मानिके परम
प्रीतिसों अपने घर पधरायके सब सामग्री बजारतें लाये । और जो
वैष्णव हते सो तिनसों बहोत विनती दैन्यता करिके सबन कों सीधो
सामान देके रसोई करवाई । पाछें श्रीआचार्यजी आपु सखड़ी अन-

'अरञ्जकमल पद्मे जगदीश' (उपर लुब्धे) . ते पछी श्रीआचार्यजीनी आगण
प्रार्थनातुं पद गायुं . ते पद :- ' यह मांगो गोपीजनवल्लभ ' (उपर लुब्धे) . ये
पद परमानंददासने गायुं . ते सांख्यीने श्रीआचार्यजी महाप्रलुब्धे पोते लक्ष्युं के आ
पदमां प्रणना दर्शननी प्रार्थना करी छे . तेथी परमानंददासने प्रणनां दर्शन अवश्य
कराववां . तयारे श्रीआचार्यजीये पोते प्रणमां पधारवानो उद्यम कर्यो . तयारे दामोदरदास
हरसानी, कृष्णदास मेघन, परमानंददास अने यादवेन्द्रदास आदि अथा वैष्णवोने संग
सध श्रीआचार्यजी पोते अउरथी ब्रज तरकुं पधार्यो . ते प्रणमां आवतां मार्गमां
परमानंददासतुं गाम कनौज आव्युं . तयारे परमानंददासने श्रीआचार्यजीने विनती
करी पोताना धरे पधराव्या . पछी परमानंददास पोतानां लाग्य मानीने परम प्रीतिथी
पोताना धरे पधरावीने अथी सामग्री अजरथी लाव्या अने जे वैष्णव हुता तेभने
अहुज विनती दीनता करीने अधाने सीधुं सामग्री दध रसोई करावी . पछी श्रीआ-

सखड़ी पाक सामग्री सिद्ध करिके श्रीठाकुरजी को भोग धरि भोग सराय आपु भोजन किये । ता पाछे परमानंददास आदि सब वैष्णव न को महाप्रसाद देके आपु गादी तकीयानके ऊपर विराजे । पाछे परमानंददास महाप्रसाद ले श्रीआचार्यजी के पास आय दंडवत करिके बैठे । तब आपु आज्ञा किये जो—परमानंददास ! कछु भगवद् जस गावो । तब परमानंददास अपने मनमें विचारे, जो—या समय श्रीआचार्यजी को मन तो ब्रजलीला में श्रीगोवर्द्धननाथजी के पास है । तासों विरह को पद गाऊं, जामें एक क्षण कल्प समान जाय । सो पद—

राग सोरठ—हरि तेरी लीला की सुधि आवे । कमलनैन मनमोहन सूरति मन मन चित्र बनावे ॥ १ ॥ एकवार जाहि मिलत मया करि सां कैसे विसरावे । मुख मुसक्यान बंक अवलोकन चाल मनोहर भावे ॥ २ ॥ कवहु निविड तिमिर आलिंगत कवहुक पिकसुर गावे । कवहुक संभ्रम कवासि कवासि कहि संगहि उठि घावे ॥ ३ ॥ कवहुक नैन मूदि अंतर गति मणिमाला पहरावे । 'परमानंद-प्रभु' स्याम ध्यान करि ऐसे विरह गँवावे ॥ ४ ॥

यह पद परमानंददास ने गायो । सो यामें यह कहें, जो—' हरि तेरी लीला की सुधि आवे ।' सो ताही समय श्रीआचार्यजी आपु लीला में मग्न होय गये ।

भावप्रकाश—सो तहां श्रीगुसाईंजी श्रीआचार्यजी को स्वरूप 'श्रीवल्लभाएक'में वरनन कियो है, जो—'श्रीमद् वृंदावनेंदुः प्रकटित रसिकानन्द-सन्दोहरूप

आर्यलये पोते सखड़ी अनसखड़ी पाक सामग्री सिद्ध करीने श्रीठाकुरलने लोग धरी लोग सरायी पोते लोअन क्युं । ते पछी परमानंददास आदि अथा वैष्णवोने महुा-प्रसाद आपीने पोते गादीतडिया उपर विराज्या । पछी परमानंददास महुाप्रसाद लध श्रीआचार्यलनी पासे आपीने दंडवत करीने भेडा । त्यारे पोते आज्ञा करी, के परमानंददास ! कंध भगवद्भयश गावो । त्यारे परमानंददासे पोताना मनमां वियायुं, के आ समय श्रीआचार्यलनुं मन तो ब्रजलीलां श्रीगोवर्द्धननाथलनी पासे छे । तेथी विरहनां पद गाऊं । जेमां अेक क्षण कल्प समान जाय, ते पद :— राग सोरठ— 'हरि तेरी लीलाकी सुधि आवे' (उपर लुअो) । आ पद परमानंददासलये गायुं । अेमां अेम कछुं के ' हरि तेरी लीलाकी सुधि आवे ' तेज समये श्रीआचार्यल आपु लीलां मग्न थय गया ।

भावप्रकाश—त्यां श्रीगुसांघलये श्रीआचार्यलनुं स्वरूप श्रीवल्लभाएकमां वर्णन क्युं छे के ' श्रीमद् वृंदावनेंदु ' (उपर लुअो) अेवा रसथी लयां छे । वणी सर्वो-

पदकमल संभु चतुरानन हृदै कमल अंतर राखे । जेपद कमल रमा-उर भूषन वेद भागवत मुनि साखे ॥ ३ ॥ जे पद कमल लोकत्रय पावन बलिराजा के पीठ धरे । सो पद कमल 'दास परमानंद' गावत प्रेम पीयूष भरे ॥ ४ ॥

ता पाछे श्रीआचार्यजी के आगे प्रार्थना को पद गायो । सो पद—

राग कान्हरो—यह मांगों गोपीजनवल्लभ । मानुस जनम और हरि की सेवा ब्रज बसिवो दीजे मोहि सुलभ ॥ १ ॥ श्रीवल्लभकुल कौ हों चरो वैष्णवजन कौ दास कहाऊं । श्रीयमुनाजल नितप्रति न्हाऊं मन क्रम बचन कृष्ण गुन गाऊं ॥ २ ॥ श्रीमद्भागवत श्रवन सुनों नित्य इन तजि चित्त कहूँ अनत न लाऊं । 'परमानंददास' यह मांगत नित निरखों कबहू न अघाऊं ॥ ३ ॥

सो यह पद परमानंददासने गायो । सो सुनिके श्रीआचार्यजी महाप्रभु आपु जानें, जो-या पद में ब्रज के दरसन की प्रार्थना कीनी है । तासों परमानंददास कों ब्रज के दरसन अवश्य करवावने । तब श्रीआचार्यजी आपु ब्रजमें पधारिवे को उच्यम किये । सो तब दामो-दरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, परमानंददास, और यादवेन्द्रदास आदि सब वैष्णवन कों संग लेके श्रीआचार्यजी आप अड़ेल तें ब्रज कों पधारे । सो ब्रज कों आवत मारग में परमानंददास को गाम कनौज आयो । तब परमानंददास ने श्रीआचार्यजी सों बिनती करि अपने घर पधराये । पाछें परमानंददास अपने भाग्य मानिके परम प्रीतिसों अपने घर पधरायकें सब सामग्री बजारतें लाये । और जो वैष्णव हते सो तिनसों बहोत बिनती दैन्यता करिके सबन कों सीधो सामान देके रसोई करवाई । पाछें श्रीआचार्यजी आपु सखड़ी अन-

'अरबुडभस व'दो जगदीश' (उपर लुब्धो), ते पछी श्रीआचार्यजीनी आगण प्रार्थनातुं पद गायुं । ते पद :— ' यह मांगा गोपीजनवल्लभ ' (उपर लुब्धो) । ओ पद परमानंददासे गायुं । ते सांलणीने श्रीआचार्यजी महाप्रभुये पोते लुब्धुं के आ पदमां ब्रजना दर्शननी प्रार्थना करी छे । तेथी परमानंददासने ब्रजनां दर्शन अपश्य कराववां । त्यारे श्रीआचार्यजीये पोते ब्रजमां पधारवाने उद्यम क्यो । त्यारे दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, परमानंददास अने यादवेन्द्रदास आदि अघा वैष्णुवाने संग लघ श्रीआचार्यजीये पोते अउलथी ब्रज तरङ्ग पधार्यां । ते ब्रजमां आवतां मार्गमां परमानंददासतुं गाम कनौज आव्युं । त्यारे परमानंददासे श्रीआचार्यजीने बिनती करी पोताना धरे पधराव्या । पछी परमानंददास पोतानां लाग्य भानीने परम प्रीतिथी पोताना धरे पधरावीने अधी सामग्री अजरथी लाव्या अने जे वैष्णव हुता तेभने अहुज बिनती दीनता करीने अधाने सीधुं सामग्री दध रसोइ करावी । पछी श्रीआ-

सख डी पाऊ सामग्री सिद्ध करिके श्रीठाकुरजी कों भोग धरि भोग सराय आपु भोजन किये । ता पाछे परमानंददास आदि सब वैष्णवन कों महाप्रसाद देकें आपु गादी तकीयानके ऊपर चिराजे । पाछे परमानंददास महाप्रसाद ले श्रीआचार्यजी के पास आय दंडवत करिके बैठे । तब आपु आज्ञा किये जो—परमानंददास ! कछु भगवद् जस गावो । तब परमानंददास अपने मनमें विचारे, जो—या समय श्रीआचार्यजी को मन तो ब्रजलीला में श्रीगोवर्द्धननाथजी के पास है । तासों विरह को पद गाऊं, जामें एक क्षण कल्प समान जाय । सो पद—

राग सौरठ—हरि तेरी लीला की सुधि आवे । कमलनैन मनमोहन सूरति मन मन चित्र बनावे ॥ १ ॥ एकवार जाहि मिलत मया करि सो कैसे विसरावे । मुख मुसक्यान बंक अवलोकन चाल मनोहर भावे ॥ २ ॥ कबहु निविड तिमिर आलिंगत कबहुक पिकसुर गावे । कबहुक संभ्रम कवासि कवासि कहि संगहि उठि धावे ॥ ३ ॥ कबहुक नैन मूदि अंतर गति मणिमाला पहरावे । 'परमानंद-प्रभु' स्याम ध्यान करि ऐसे विरह गँवावे ॥ ४ ॥

यह पद परमानंददास ने गायो । सो यामें यह कहें, जो—' हरि तेरी लीला की सुधि आवे । ' सो ताही समय श्रीआचार्यजी आपु लीला में मग्न होय गये ।

भावप्रकाश—सो तहां श्रीगुसाईंजी श्रीआचार्यजी को स्वरूप 'श्रीवल्लभाष्टक'में वरनन कियो है, जो—'श्रीमद् वृंदावनेंदुः प्रकटित रसिकानन्द-सन्दोहरूप

आर्यल्लभे पोते सखडी अनसखडी पाऊ सामग्री सिद्ध करीने श्रीठाकुरल्लभे लोग धरी लोग सरावी पोते लोगन क्युं । ते पछी परमानंददास आदि अंधा वैष्णवोंने महाप्रसाद आपीने पोते गादीतकिया उपर भिराज्या । पछी परमानंददास महाप्रसाद लध श्रीआचार्यल्लनी पासे आपीने दंडवत करीने जेडा । त्यारे पोते आज्ञा करी, के परमानंददास ! कंठ भगवद्भयश गावो । त्यारे परमानंददासे पोताना मनमां विचार्युं, के आ समय श्रीआचार्यल्लतुं मन तो ब्रजलीलामां श्रीगोवर्द्धननाथल्लनी पासे छे । तेथी विरहनां पद गाउं । जेमां अेक क्षण कल्प समान जय । ते पद :— राग सौरठ—' हरि तेरी लीलाकी सुधि आवे ' (उपर लुओ) । आ पद परमानंददासल्लभे गायुं । जेमां जेम कछुं के ' हरि तेरी लीलाकी सुधि आवे ' तेज समये श्रीआचार्यल्ल आप लीलामां मग्न थय गया ।

भावप्रकाश—त्यां श्रीगुसांथल्लभे श्रीआचार्यल्लतुं स्वरूप श्रीवल्लभाष्टकमां वर्णन क्युं छे के ' श्रीमद् वृंदावनेंदु ' (उपर लुओ) जेवा रसथी लयॉ छे । वणी सर्वो-

पदकमल संभु चतुरानन हृदै कमल अंतर राखे । जेपद कमल रमा-उर भूषन वेद
भागवत मुनि साखे ॥ ३ ॥ जे पद कमल लोकत्रय पावन बलिराजा के पीठ घरे ।
सो पद कमल 'दास परमानंद' गावत प्रेम पीयूष भरे ॥ ४ ॥

ता पाछे श्रीआचार्यजी के आगे प्रार्थना को पद गायो । सो पद—

राग कान्हरो—यह मांगों गोपीजनवल्लभ । मानुस जनम और हरि की सेवा
ब्रज बसिवो दीजे मोहि सुलभ ॥ १ ॥ श्रीवल्लभकुल कौ हों चैरो वैष्णवजन कौ
दास कहाऊं । श्रीयमुनाजल नितप्रति न्हाऊं मन क्रम बचन कृष्ण गुन गाऊं ॥ २ ॥
धीमद्भागवत भवन सुनों नित्य इन तजि चित्त कहूँ अनत न लाऊं । 'परमानंददास'
यह मांगत नित निरखों कबहू न अघाऊं ॥ ३ ॥

सो यह पद परमानंददासने गायो । सो सुनिके श्रीआचार्यजी
महाप्रभु आपु जानें, जो-या पद में ब्रज के दरसन की प्रार्थना कीनी
है । तासों परमानंददास कों ब्रज के दरसन अवश्य करवावने । तब
श्रीआचार्यजी आपु ब्रजमें पधारिवे को उद्यम किये । सो तब दामो-
दरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, परमानंददास, और यादवेन्द्रदास
आदि सब वैष्णवन कों संग लेके श्रीआचार्यजी आप अड़ेल तें ब्रज
कों पधारे । सो ब्रज कों आवत मारग में परमानंददास को गाम
कनौज आयो । तब परमानंददास ने श्रीआचार्यजी सों बिनती करि
अपने घर पधराये । पाछें परमानंददास अपने भाग्य मानिके परम
प्रीतिसों अपने घर पधरायकें सब सामग्री बजारतें लाये । और जो
वैष्णव हते सो तिनसों बहोत बिनती दैन्यता करिके सबन कों सीधो
सामान देके रसोई करवाई । पाछें श्रीआचार्यजी आपु सखड़ी अन-

'यरणुकमल पदो जगदीश' (उपर लुब्धो) . ते पछी श्रीआचार्यजीनी आगण
प्रार्थनातुं पद गायुं . ते पद :— ' यह मांगो गोपीजनवल्लभ ' (उपर लुब्धो) . ये
पद परमानंददासे गायुं . ते सांखणीने श्रीआचार्यजी महाप्रभुसे पोते नख्युं के आ
पदमां प्रजना दर्शननी प्रार्थना करी छे . तेथी परमानंददासने प्रजनां दर्शन अवश्य
कराववां . त्यारे श्रीआचार्यजीसे पोते प्रजमां पधारवानो उद्यम कर्यो . त्यारे दामोदरदास
हरसानी, कृष्णदास मेघन, परमानंददास अने यादवेन्द्रदास आदि अधा वैष्णवाने संग
सह श्रीआचार्यजी पोते अउलथी प्रज तरङ्ग पधार्या . ते प्रजमां आवतां भागमां
परमानंददासतुं गाम कनौज आव्युं . त्यारे परमानंददासे श्रीआचार्यजीने बिनती
करी पोताना घरे पधराव्या . पछी परमानंददास पोतानां साग्य मानीने परम प्रीतिथी
पोताना घरे पधरावनीने अधी सामग्री अजरथी लाव्या अने जे वैष्णव हुता तेभने
अहुज बिनती दीनता करीने अधाने सीधुं सामग्री दध रसोइ करावी . पछी श्रीआ-

सखड़ी पाक सामग्री सिद्ध करिके श्रीठाकुरजी कों भोग धरि भोग सराय आपु भोजन किये । ता पाछे परमानंददास आदि सब वैष्णवन कों महाप्रसाद देकें आपु गादी तकीयानके ऊपर चिराजे । पाछे परमानंददास महाप्रसाद ले श्रीआचार्यजी के पास आय दंडवत करिके बैठे । तब आपु आज्ञा किये जो—परमानंददास ! कछू भगवद् जस गावो । तब परमानंददास अपने मनमें विचारे, जो—या समय श्रीआचार्यजी को मन तो ब्रजलीला में श्रीगोवर्द्धननाथजी के पास है । तासों विरह को पद गाऊं, जामें एक क्षण कल्प समान जाय । सो पद—

राग सौरठ—हरि तेरी लीला की सुधि आवे । कमलनैन मनमोहन सूरति मन मन चित्र बनावे ॥ १ ॥ एकवार जाहि मिलत मया करि सां कैसे विसरावे । मुख मुसक्यान बंक अबलोकन चाल मनोहर भावे ॥ २ ॥ कवहु निविड तिमिर आलिंगत कवहुक पिकसुर गावे । कवहुक संभ्रम कवासि कवासि कहि संगहि उठि धावे ॥ ३ ॥ कवहुक नैन मूदि अंतर गति मणिमाला पहरावे । 'परमानंद-प्रभु' स्याम ध्यान करि ऐसे विरह गंवावे ॥ ४ ॥

यह पद परमानंददास ने गायो । सो यामें यह कहें, जो—' हरि तेरी लीला की सुधि आवे । ' सो ताही समय श्रीआचार्यजी आपु लीला में मग्न होय गये ।

भावप्रकाश—सो तहां श्रीगुसाईंजी श्रीआचार्यजी को स्वरूप 'श्रीवल्लभाष्टक'में वरनन कियो है, जो—'श्रीमद् वृंदावनेंदुः प्रकटित रसिकानन्द-सन्दोहरूप

यार्थलये पोते सखड़ी अनसखड़ी पाक सामग्री सिद्ध करिने श्रीठाकुरजीने भोग धरि भोग सरायी पोते भोजन क्युं । ते पछी परमानंददास आदि षथा वैष्णवोंने महाप्रसाद आपीने पोते गादीतडिया उपर गिराव्या । पछी परमानंददास महाप्रसाद लभ श्रीआचार्यजीनी पासि आपीने दंडवत करिने भेडा । त्यारे पोते आज्ञा करी, के परमानंददास ! कंठ लगवद्वयश गावो । त्यारे परमानंददासे पोताना मनमां विचार्युं, के आ समय श्रीआचार्यजीनुं मन तो ब्रजलीलामां श्रीगोवर्द्धननाथजीनी पासि छे । तथी विरहनां पद गाई । जेमां अेक क्षण कल्प समान जाय । ते पद :— राग सौरठ—' हरि तेरी लीलाकी सुधि आवे ' (उपर लुओ) । आ पद परमानंददासलये गायुं । जेमां जेम कछुं के ' हरि तेरी लीलाकी सुधि आवे ' तेज समये श्रीआचार्यजी आपु लीलामां मग्न थय गया ।

भावप्रकाश—त्यां श्रीगुसांथलये श्रीआचार्यजीनुं स्वरूप श्रीवल्लभाष्टकमां वर्णन क्युं छे के ' श्रीमद् वृंदावनेंदु ' (उपर लुओ) जेवा रसथी लर्यां छे । वणी सर्वो-

-स्फूर्जद्रासादिलीलामृत० । ऐसे रस सों भरे हैं । और 'सर्वोत्तम' में श्रीगुसांईजी श्रीआचार्यजी को नाम कहे-रासलीलैकतात्पर्याय नमः' । सो श्रीआचार्यजी को कार्य कहियत हैं, जो-जो ग्रन्थ क्रिये सो तामें रासलीला ही तात्पर्य है । और कछु काहू बात में आपु को तात्पर्य नहीं है । सो तासों रासलीला में मगन होय गये ।

सो ऊपर सरीर को देह को-अनुसंधान हू रह्यो नहीं । सो तीन दिनलों श्रीआचार्यजी कों सूँझा रही । सो नेत्र मूँदि के गादी तकियान पें बिराजे हते, और दामोदरदास हरमानी आदि वैष्णव (जो) श्रीमहाप्रभुजी के स्वरूप कों जानत हते सो जाने । सो कोई वैष्णव बोले नहीं, बैठे बैठे चुप होय के श्रीआचार्यजी को दरसन कियो करें ।

भावप्रकाश—सो काहेतें ? जो-श्रीआचार्यजी आप पूरन पुरुषोत्तम हैं सो इनकों सरीरधर्म बाधक नहीं । जो-मनुष्य देह धारन कियो है तासों मनुष्य-क्रिया जगत में दिखावत हैं, परि इनकों देह को धर्म बाधक नहीं है । तासों सब सेवक तीन दिनलों बैठे रहे ।

सो पाछें चौथे दिन सावधान होयके श्रीआचार्यजी ने नेत्र खोले, तब सब वैष्णव प्रसन्न भये ।

भावप्रकाश—सो तहां यह पूर्वपक्ष होय, जो-रासादिक लीला में

त्तममां श्रीगुसांइलु श्रीआचार्यलुनां नाम कडे, ' रासलीलैकतात्पर्य' त्यां श्रीआचार्य-लुनां कार्य कडीये छीये, ने-ने अथ कयां तेमां रासलीलाञ्च तात्पर्य छे. पीलु कोइ वातमां आपनुं तात्पर्य नथी. तेथी रासलीलामां मगन थइ गया.

तेथी उपरतुं देहानुसंधान पणु न रह्युं. ते त्रणु द्विवस सुधी श्रीआचार्यलुने भूछां रही. तेथी नेत्र भूँदिने गादीतकिया उपर भिराज्या हुता अने दामोदरदास हरमानी आदि वैष्णव ने श्रीमहाप्रभुलुना स्वरूपने जणुता हुता ते जणु. तेथी कोइ वैष्णव भोल्या नही. भेडा भेडा चुप थइने श्रीआचार्यलुनां दर्शन कयां करे.

भावप्रकाश—डेभके श्रीआचार्यलु आप पूरणु पुरुषोत्तम छे. तेथी आपने शरीर धर्म बाधक नथी. मनुष्य देह धारणु कयां तेथी मनुष्यनी क्रिया जगतमां देखाडे छे. परंतु अनेने देहने धर्म बाधक नथी. अम समलु अथा सेवके त्रणु द्विवस सुधी गेसी रह्या.

पछी येथा द्विवसे सावधान थइने श्रीआचार्यलुने नेत्र भोल्यां. तयारे अथा वैष्णव प्रसन्न थया.

भावप्रकाश—त्यां अे पूर्वपक्ष थाय डे रासादिलीलामां मगन त्रणु द्विवस

मगन तीन दिन ताई क्यों रहे ? सो तहां कहत हैं, जो—रासादिक लीला में तीन ही ठौर मुख्य हैं । जो—श्रीगिरिराज, श्रीवृंदावन और श्रीयमुनाजी । १ श्रीगिरिराज स्वरूप होय सगरी लीला की सामग्री सिद्ध करत हैं । २ श्रीवृंदावन की लीला रसात्मक कुंजविहार में । ३ और श्रीयमुनाजी सब रास को मूल । या प्रकार जल स्थल की लीला हैं । सो एक दिन श्रीगिरिराज संबंधी लीला को अनुभव किये, जो—कंदरा में नाना प्रकार के विलास, चतुर्भुजदासजी गाये हैं—‘ श्रीगोवर्द्धनगिरि सघन कंदरा । ’ आदि । दूसरे दिन वृंदावन लीला, और तीसरे दिन श्रीयमुनाजी की पुलिन (में) रास जलविहारादि । या प्रकार तीन दिनलों तीनों रासको अनुभव किये । ता पाछें भूमि पर भक्तिभारग प्रकट करिकें अनेक जीवन कों सरन लेकें लीलारस को अनुभव कराववो है, सो चौथे दिन श्रीआचार्यजी आपु नेत्र खोलि के सावधान भये ।

तब परमानंददासजी अपने मनमें डरपे, जो—ऐसे पद फेरि कबहूँ नाहीं गाजंगो ।

भावप्रकाश—सो परमानंददासजी यासों डरपे, जो—श्रीआचार्यजी आपु रासको अनुभव करिके कदाचित् लीलारस में मगन होइ जाय । सो भूमि पर पधारिवे को मन न करें तो यह दैवीजीवन कौ उद्धार कौन भांति सों होयगो ?

सुधी केम रह्या ? त्यां कडे छे डे रासादिलीलांमां त्रलुज जगा मुण्य छे श्रीगिरिराजल, श्रीवृंदावन अने श्रीयमुनाल. श्रीगिरिराजल स्वरूपे गधी लीलानी सामग्री सिद्ध करे छे. श्रीवृंदावननी लीला रसात्मक कुंज विहारमां अने श्रीयमुनाल गधा रासतुं मूल. अे प्रकारे जल स्थलनी लीला छे. ते अेक दिवस श्रीगिरिराजल स'गंधी लीलाने अनुभव कर्यो ? अेटले कंदरांमां नाना प्रकारने विलास. अतुर्भुजदासलअे गायुं छे. ‘ श्री गोवर्द्धनगिरि सघनकंदरा रेन निवास किये पिय भ्यारी ’ आदि. थील दिवसे वृंदावन लीला अने श्रील दिवसे श्रीयमुनालना पुलिनमां रास जलविहारादि. आ प्रकारे त्रलु दिवस सुधी त्रलु रासने अनुभव कर्यो. ते पछी भूमि पर लकितमार्ग प्रकट करवाने अनेक लयेने शरलुे लधने लीलारसने अनुभव करावये छे तेथी योथा दिवसे श्री-आचार्यल आप नेत्र खोलीने सावधान थया.

त्यारे परमानंददास पोताना मनमां उर्यां के आवां पद इरी कदीय नहुं गाईं. भावप्रकाश—ते परमानंददास अेथी उर्यां के श्रीआचार्यल पोते रासने अनुभव करीने कदाचित् लीलारसमां मगन थध लय तो भूमि उपर पधारवातुं मन न करे तो आ दैवीलयेने उद्धार केवी रीते थशे ? तेथी परमानंददासे पोताना मनमां विचार

तासों परमानंददास ने अपने मन में विचार कियो, जो-अब मैं फेरि विरह को पद श्रीआचार्यजी आगे नाही गाऊंगो । सो काहेंते ? जो-श्रीआचार्यजी आपु विरहात्मक स्वरूप हैं । सर्वोत्तममें श्रीगुमाईजी आपु श्रीआचार्यजी को नाम कहे हैं ' जो-विरहानुभवैकार्थ सर्वत्यागोपदेशकः ' सो विरहरसके अनुभवके अर्थ सर्व लौकिक में त्याग किये, सो उपदेश करत हैं । यामें विरह को स्वरूप जतायें । विरह दसा में लौकिक वैदिक की कछु सुधि न रहे सो तब विरह भयो जानिये ।

ता पाछे परमानंददास ने सूधे पद गाये । सो पद—

राग रामकली—माईरी ! हों आनंद मंगल गाऊं । गोकुलकी चिंतामणि माधौ जों मांगों सो पाऊं ॥ १ ॥ जब तें कमल नैन ब्रज आए सकल संपदा बाढी । नंदराय के द्वारे देखो अष्ट महासिद्धि टाढी ॥ २ ॥ फूले फले सदा वृन्दावन कामधेनु दुहि लीजे । मांग्यो मेह ईंद्र बरसावे कृष्ण कृपा तें जीजे ॥ ३ ॥ कदत जसोदा सखियन आगे हरि उत्कर्ष जनावे । 'परमानंद' कौ ठाकुर मुरली मनोहर भावे ॥ ४ ॥

ता पाछे श्रीआचार्यजी आपु भोजन करिके पोढ़े, तब सब वैष्णव महाप्रसाद लियो । ता पाछे परमानंददास महाप्रसाद ले के श्रीआचार्यजी आगे यह पद गाये—

राग गोरी—बिमल जस वृन्दावन के चंद्र कौ । कहा प्रकास सोम सूरज कौ जो मेरे गोविंद कौ ॥ १ ॥ कहति जसोदा औरन आगे वैभव आनंद-कंद कौ । खेलत फिरत गोप-बालक संग ठाकुर 'परमानंद' कौ ॥ २ ॥

ता पाछे परमानंददासने यह पद गायो । सो पद—

राग सारंग—चलि सखी नंदगाम जाइ बसिए । खरिक-खेलत ब्रजचंद्र जु सों हसिए ॥ १ ॥ बसि नठेन सबै सुख माई, एक कठिन दुख दूर कन्हवाई ॥ २ ॥ माखन चोरत दुरि दुरि देखों, सजनी जनम सुफल कर लेखों ॥ ३ ॥ जलचर लोचन छिनु छिनु प्यासा । कठिन प्रीति परमानंददासा ॥ ४ ॥

इर्थो के हुवे हुं इरी विरहनुं पद श्रीआचार्यजी आगण नहीं गाईं । केभंडे श्रीआचार्यजी पोते विरहात्मक स्वरूप छे । सर्वोत्तममां श्रीगुसांठजी पोते श्रीआचार्यजीनुं नाम कहे छे के ' विरहानुभवैकार्थसर्वत्यागोपदेशकः ' विरहरसना अनुभवअर्थे लौकिकमां पधुं त्याग क्युं । तेवो उपदेश करे छे । जेमां विरहनुं स्वरूप ज्ञानोयुं । विरहदशामां लौकिक वैदिकनी कंठ सुधन रहे त्यारे विरह थयो ज्ञानिये ।

ते पछी परमानंददासे सीधां पद गायां । ते पद— ' माधरी हों आनंद मंगल गाईं ' (उपर लुआ) ते पछी श्रीआचार्यजी पोते लोजन करीने पाठ्या त्यारे पधा वैष्णवोअे महाप्रसाद दीधो । ते पछी परमानंददासे महाप्रसाद लधने श्रीआचार्यजी आगण आ पद गायुं । ' विमलजश वृन्दावनके चंद्रके ' (उपर लुआ) ते पछी पर-

यह पद सुनिके श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो-अब ब्रज कों चलिये । पाछें परमानंददास ने जो सेवक किये हते, तिन सबन कों श्रीआचार्यजी के पास लाय बिनती कीनी, जो-महाराज ! इन जीवन कों अंगीकार करिये । तब श्रीआचार्यजी आपु परमानंददास सों कहे, जो-इनकों तुम नाम सुनाय के सेवक किये हैं, तातें अब हम पास तुम इनकों सेवक क्यों करावत हो ? तब परमानंददास कहे, जो-महाराज ! यह तो पहली दसा में स्वामीपनो हतो, तासों सेवक किये हते । और अब तो मैं आप को दाम हों । 'स्वामीपद' तो जो स्वामी हैं तिनही कों सोहन है । दास होय स्वामीपद चाहे सो मूरख है । तासों में अज्ञान दसा में सेवक किये, सो अब आप इन कों सरन लेके उद्धार करिये । तब सबन कों श्रीआचार्यजी ने नाम सुनाय सेवक किये । ता पाछे सब वैष्णवन कों संग ले कनौज सों ब्रज में पधारे । सो कछुक दिन में श्रीगोकुल पधारे । सो गोविंदघाट ऊपर स्नान करिके छोकर के नीचे श्रीआचार्यजी आपु अपनी बैठकमें आय विराजे । सो एक भीतर बैठक श्रीद्वारकानाथजी के मंदिर के पास है, तहां रात्रि कों श्रीआचार्यजी के विश्राम करिवे की ठोर है । सो आपु जब श्रीगोकुल पधारते, तब आपु उहां उतरते । सो यह

मानंददासने आ पद गाथुं । ते पद 'यसि सषी नंदगाम जय वसिये' (एपर लुओ) । ते पद सांखणीने श्रीआचार्यजी पोते कहे, के हुवे प्रजभां यासिये । पछी परमानंद-दासे जे सेवक कर्थां हुता ते अधाने श्रीआचार्यजी पासै लावीने बिनती करी, के महाराज ! आ लुवाने अंगीकार करे । त्तारे श्रीआचार्यजी पोते परमानंददासने कहे, के आसने तमे नाम संखणावी सेवक कर्थां छे तेथी हुवे अमारी पासै अमने सेवक केम करावे छे ? त्तारे परमानंददास कहे, के महाराज ! आ तो पहुडी दशाभां स्वामी-पछुं हुतुं तेथी सेवक कर्थां हुता । अने हुवे तो हुं आपनो दास छुं । 'स्वामी पद' तो जे स्वामी छे तेमनेज शोले छे । दास थइ स्वामी पद ग्राहे ते मूरख छे । तेथी में अज्ञान दशाभां सेवक कर्थां हुवे आप आसने शरणे लइ उद्धार करे । त्तारे अधाने श्रीआचार्यजीने नाम संखणावी सेवक कर्थां । ते पछी अधा वैष्णुवाने संग लइ कनौज-जथी प्रजभां पधार्थां । ते डेरदाड दिवसे श्रीगोकुल पधार्थां । त्यां गोविंद घाट एपर स्नान करीने शमी वृक्षनी नीचे श्रीआचार्यजी पोते पोतानी भेडकभां आवी भिराज्या । अइ अंदर भेडक श्रीद्वारकानाथजीना मंदिरनी पासै छे । त्यां रात्रिये श्रीआचार्यजीने विश्राम करवानी जग छे । त्तारे आप श्रीगोकुल पधारता त्तारे त्यां उतरता । आ अंद-

भीतर की बैठक है। सो श्रीआचार्यजी आपु श्रीनवनीतप्रियजी को पालने झुलाय दधिकादो जन्माष्टमी को उत्सव किये हैं। सो ऊपर गजजनधायन की वार्ता में वरनन करि आये हैं। सो श्रीआचार्यजी आपु स्नान करि छोकर के नीचे अपनी बैठक में बिराजे हते। तब सब वैष्णव परमानंददास सहित स्नान करि प्रभुनके (श्रीआचार्यजी के) पास बैठे हते। पाछें श्रीआचार्यजीने श्रीयमुनाष्टक को पाठ परमानंददासको सिखाये तब परमानंददास के हृदय में श्रीयमुनाजी को स्वरूप स्फुरयो। सो श्रीयमुनाजी को जस वरनन कियो। सो पद-

राग रामकली—श्रीयमुनाजी ! यह प्रसाद हों पाऊं। तिहारे निकट रहों निसबासर रामकृष्ण गुन गाऊं ॥ १ ॥ मज्जन करों विमल जल पावन चिंता कलह बहाऊं। तिहारी कृपा तें भानु की तनया हरि पद प्रीत बढ़ाऊं ॥ २ ॥ विनती करों यहीं वर मांगों अधम संग बिसराऊं। 'परमानंद' चारि फलदाता मदनगोपाल लडाऊं ॥ ३ ॥

राग रामकली—श्रीयमुनाजी दीन जानि मोहि दीजे। नंद को लाल सदा वर मांगो गोपिन को दासी मोहि कीजे ॥ १ ॥ तुम हो परम उदार कृपानिधि चरन सरन सुखकारी। तिहारे बस सदा लाडिलीवर वर्तत निर्तत गिरिवरधारी ॥ २ ॥ ब्रजनारी सब खेलति हरिसंग अद्भुतरास बिलासी। तिहारे पुलिन मधि कुंज द्रुम कमल पुहप सुखरासी ॥ ३ ॥ श्रमजल भरि न्हात ब्रजसुंदरि जलक्रीडा सुखकारी। मनहु तारा मंध्य चंद्र बिराजत भरि भरि छिरकत नारी ॥ ४ ॥ रानी जू के पांइ परों नित्य गृह-कारज सब कीजै। 'परमानंददास' दासी व्है चरन कमल सुख दीजै ॥ ५ ॥

राग रामकली—कालिंदी कलि-कलमष हरनी। रवितनया जम-अनुजा स्यामा महासुन्दरी गोविंद घरनी ॥ १ ॥ जै जमुने श्रीकृष्णवल्लभा पतितन को पावन भव तरनी। सरनागत को देति अभयपद जननी तजत जैसे सुत की करनी ॥ २ ॥ सीतल मंद सुगंध सुधानिधि धारा धरि वपु उतरी घरनी। 'परमानंद प्रभु' परम पावनी जुग जुग साखि निगम नित वरनी ॥ ३ ॥

रनी षेऊँ छे. श्रीआचार्यजी पोते श्रीनवनीतप्रियजीने पालने जुलावी दधिकादव (थी) जन्माष्टमीना उत्सव कियो छे. ते उपर गजजन धायननी वार्ताभां कही व्याख्या छीये. त्यां श्रीआचार्यजी पोते स्नान करी छोकरनी नीचे पोतानी षेऊँभां बिरा-ज्या हुता. त्यारे अधा वैष्णव परमानंददास सहित स्नान करी प्रभुनी पास षेऊँ हुता. पछी श्रीआचार्यजीने श्रीयमुनाष्टको पाठ परमानंददासने शिखाव्या. त्यारे परमानंददासना हृदयभां श्रीयमुनाजीनुं स्वरूप स्फुर्युं. अतएव श्रीयमुनाजीना यश वल्लन कियो. ते पद (१) श्रीयमुनाजी यह प्रसाद हों पाऊं. (२) श्रीयमुनाजी दीन

ऐसे पद परमानंददासनें श्रीआचार्यजी के आगे श्रीयमुनाजी के तटपै गाये । तब श्रीआचार्यजी आपु प्रसन्न होय के परमानंददास को श्रीगोकुल की बाललीला के दरसन करवाये । सो बाललीला विशिष्ट परमानंददास को ऐसे दरसन भये, जो-ब्रजभक्त श्रीयमुनाजल भरत हैं, और श्रीठाकुरजी आप ब्रजभक्तन सो नाना प्रकारके खयाल लीला करि सुख देत हैं । सो परमानंददास लीला के दरसन करि ऐसे पद श्रीआचार्यजी के आगे गाये । सो पद—

राग विलावल—श्रीयमुनाजल घट भरि ले चली श्रीचंद्रावलि नारि । मारग में खेलत मिले श्रीघनस्याम मुरारि ॥ १ ॥ नैनन सो नैना मिले मन रह्यो है लुभ्याई । मोहन मूरति मन बसी पग घरयो न जाई ॥ २ ॥ मन की प्रीति प्रगट भई यह पहेली भेट । 'परमानंद' ऐसैं मिली जैसे गुड में चैंट ॥ ३ ॥

राग सारंग—लाल नेक टेको मेरी बहियां । औघट घाट भरयो नहीं जाई रपटन हों कालिंदी महियां ॥१॥ सुन्दरस्याम कमल दल लोचन देखि स्वरूप ग्वालनि अरुझानी । उपजी प्रीति काम अंतरगति तव नागर नागरी पहचानी ॥ २ ॥ हँसि ब्रजनाथ गह्यो कर पल्लव जैसे गगरी गिरन न पावे । 'परमानंद' ग्वालि सयानी कमल नैन परसोई भावे ॥ ३ ॥

ता पाछे परमानंददासने श्रीगोकुल की बाललीला के पद बहोत किये । सो जामें श्रीगोकुल को स्वरूप जान्यो परे । सो पद—

राग कान्हरो—गावति गोपी मधु मृदुवानी । जाके भवन वसत त्रिभुवनपति राजा नंद जसोदा रानी ॥ १ ॥ गावत वेद भारती गावति गावत नारदादि मुनि ज्ञानी ॥ २ ॥ गावत चतुरानन जग नायक गावत सेस सहस्र मुखरास । मन क्रम वचन प्रीति पद अंबुज अब गावत 'परमानंददास' ॥ ३ ॥

जनि भाड़ी दीजे. (३) कालिंदी कलि कदमपहरनी. (६पर लुभ्या) जेवां पद परमानंददासे श्रीआचार्यजीनी आगण श्रीयमुनाजीना तट ६पर गायां. त्यारे श्रीआचार्यजीने पोते प्रसन्न थधने परमानंददासने श्रीगोकुलनी आसदीसानां दर्शन कराव्यां. त्यारे आसदीसा विशिष्ट परमानंददासने जेवां दर्शन थयां के प्रबलभक्त श्रीयमुनाजल लरे छे अने श्रीठाकुरजी आप प्रबलभक्तो साथे नाना प्रकारना आस दीसा करी सुख ह छे. त्यारे परमानंददासे दीसानां दर्शन करी जेवां न पद श्रीआचार्यजीनी आगण गायां ते पद-१ 'श्रीयमुना जल घट लर ले बसी' (२) सासनक टेको मेरी बहियां (६पर लुभ्या). ते पछी परमानंददासे श्रीगोकुलनी दीसानां पद धयां कथां. जेमां श्रीगोकुलतुं स्वरूप जलपुं पडे. ते पद-१ 'गावत गोपी मधु मृदु आनी' २ 'रानी जसुभति थहु आवति गोपीजन' ३ गिरिधर

राग कान्हरो—रानी जसुमति गृह आवति गोपीजन । वासर ताप निवारन
कारन वारंवार कमलमुख निरखन ॥ १ ॥ चाहत पकरि देहरी उल्लंघन किलकि
किलकि हुलसत मन हि मन । राई लौन उतारि दुहंकर वार फेरि डारति तन मन
घन ॥ २ ॥ लेति उठाय चांपति हियो भरि प्रेम विवस लागे दृग दरकन । चली ले
पलना पोढावन कौ अरकसाय पोढे सुन्दरघन ॥ ३ ॥ देति असीस सकल गोपीजन
चिरजीयो जौलों गंग यमुन । 'परमानंददास' कौ ठाकुर भक्तवच्छल भक्तन
मनरंजन ॥ ४ ॥

राग हमीर—गिरिधर सब ही अंग कौ बांकौ । बांकी चाल चलत गोकुल में
छेल छबीलो कहां कौ ॥ १ ॥ बांकी भौंह चरन गति बांकी बांकौ हृदयो है ताकौ ।
'परमानंददास' कौ ठाकुर कियो खौर ब्रज सांकौ ॥ २ ॥

या भांति परमानंददासने बहोत कीर्तन किये । सो श्रीगोकुल
के दरसन करिके परमानंददास कौ श्रीगोकुल पै बहोत आसक्ति
भई । तब श्रीआचार्यजी के आगे ऐसे प्रार्थनाके पद गाये, जो-मोकौं
श्रीगोकुल में आपके चरणारविंद के पास राखो, जासौं नित्य श्री-
ठाकुरजी के दरसन करों, और सगरी लीला को अनुभव होय ।

राग सारंग—यह मांगों जसोदानंदन । चरनकमल मेरो मन मधुकर यह छवि
नैनन पाऊं दरसन ॥ १ ॥ चरनकमल की सेवा दीजे दोऊ तन राजत विज्जुलता
घन । नंदनंदन वृषभाननंदिनी मेरे सर्वसु प्रानजीवन घन ॥ २ ॥ ब्रज बसिवो
जमुनाजल अचिवौ श्रीवल्लभ कौ दास यहै पन । महाप्रसाद पाऊं हरिगुन गाऊं
'परमानंददास' दासी जन ॥ ३ ॥

राग कान्हरो—यह मांगों संकर्षण वीर । चरनकमल अनुराग निरंतर भावत
हैं भक्तन की भीर ॥ १ ॥ संग देहो तो हरिभक्तन कौ वास वृन्दावन जमुनातीर ।
श्रवण देहु तो कृष्णकथारस ध्यान देउ तो स्याम सरीर । मनकामना सकल परिपूरन
मज्जन विमल कालिंदी नीर । 'परमानंददास' कौ ठाकुर गोकुल नायक सब विधि धीर ॥

सो ऐसे कीर्तन परमानंददासने प्रार्थना के गाये सो सुनिके
श्रीआचार्यजी आपु परमानंददास के ऊपर बहोत प्रसन्न भये ।

सम्पुष्टी अंगके आंके (उपर लुओ), ये प्रकारे परमानंददासे अहु कीर्तन कर्थां, पछी
श्रीगोकुलनां दर्शन करीने परमानंददासने श्रीगोकुल उपर धरणी आसक्ति थय. तयारे
श्रीआचार्यजीनी आगण अेषां प्रार्थनानां पद गायां के भने श्रीगोकुलमां आपना
चरणारविंदनी पास राषे. जेथी नित्य श्रीठाकुरजीनां दर्शन करूं. अने पछी दीक्षाने
अनुभव थाय. ते पद (१) 'यहु भांगे जशोदा नंदन' (२) 'यहु भांगे संकर्षण
वीर'. अेषां कीर्तन परमानंददासे प्रार्थनानां गायां. अे सांखणीने श्रीआचार्यजी
थेते परमानंददासना उपर अहु प्रसन्न थया.

वार्ता-प्रसंग ३—पाछें श्रीआचार्यजी आपु परमानंददास सहित सब वैष्णव समाज लेके श्रीगोकुल तें श्रीगोवर्द्धन पधारे। सो उत्थापन के समय श्रीआचार्यजी आपु श्रीगिरिराज पधारे। तहां स्नान करि श्रीआचार्यजी श्रीगिरिराज ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर पधारे। तब परमानंददास न्हाय के श्रीगिरिराज कों साष्टांग दंडवत करिके पर्वत के ऊपर मंदिर में आय, उत्थापनके दरसन किये। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करत ही परमानंददास आसक्त होय रहे। तब श्रीआचार्यजी आप श्रीमुखतें परमानंददास सों कहे, जो-परमानंददास ! कछ भंगवल्लीला के कीर्तन श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सुनावो। तब परमानंददास अपने मनमें विचार किये, जो-यै कहा गाऊँ ? क्यों जो रसना तो एक है, और श्रीगोवर्द्धननाथजी को स्वरूप तो अपार है, और इनकी लीला हू अपार है। जो वस्तु स्मरण करों स्ने ताही में बुद्धि विकसित होय जात है। परंतु श्रीआचार्यजी की आज्ञा है, तासों कछ गावनी तो सही। सो ऐसो पद गाऊँ जामें प्रथम तो अवतार-लीला, पाछें कुंज-लीला, पाछें चरणारविंद की वंदना, पाछें स्वरूप को वर्णन, ता पाछें माहात्म्य सहित श्रीठाकुरजी की लीला होय। सो ऐसो पद गायो। सो पद—

वार्ता प्रसंग-३—पछी श्रीआचार्यजी येते परमानंददास सहित यथा वैष्णव समाजने लहने श्रीगोकुलती गोवर्द्धन पधार्या। ते उत्थापनना समये श्रीआचार्यजी आप गिरिराज पधार्या। त्यां स्नान करी श्रीआचार्यजी श्रीगिरिराजजी उपर श्रीगोवर्द्धननाथजीना मंदिर पधार्या। त्यारे परमानंददासे न्हायने श्रीगिरिराजजीने साष्टांग दंडवत करीने पर्वतना उपर मंदिरमां आवी उत्थापननां दर्शन कर्या। त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन करतान परमानंददास आसक्त थय गया। ते समये श्रीआचार्यजी आप श्रीमुखती परमानंददासने कहे, के परमानंददास कंछ भंगवल्लीलानां कीर्तन श्रीगोवर्द्धननाथजीने संलगावो। त्यारे परमानंददासे येताना मनमां विचार कर्या के हुं शुं गाऊँ ? केम ? जे रसना तो एक छे अने श्रीगोवर्द्धननाथजीतुं स्वरूप तो अपार छे। वणी ऐमनी लीला पखु अपार छे, जे वस्तु स्मरण करूं तेमांज बुद्धि विकसित थय जय छे। परंतु श्रीआचार्यजीनी आज्ञा छे तेथी कंछ गावुं-ता अइं। ऐवुं पद गाऊँ जेमां प्रथम तो अवतार-लीला, पछी कुंज लीला, पछी चरणारविंदनी वंदना, पछी स्वरूप वर्णन, ते पछी माहात्म्य सहित श्रीठाकुरजीनी लीला होय। ऐवुं पद गावुं

राग विलावल—मोहन नंदराह कुमार । प्रकट ब्रह्म निकुंज-नायक भक्त हित अवतार ॥ १ ॥ प्रथम चरन-सरोज वंदों स्यामघन गोपाल । मकर कुंडल गंड मंडित चारु नैन विसाल ॥२॥ बलराम सहित विनोद लीला सेस संकर हेत । 'दास परमानंद प्रभु' हरि निगम बोलत नेति ॥ ३ ॥

सो यह प्रार्थना को पद गायके पाछें आसक्ति के पद गाये ।

राग आसावरी—माई मेरो माधौ सों मन मान्यो । अपनी मन और वा ढोटा कौ एक-मेक करि सान्यो ॥ १ ॥ लोक वेद की कानि तजी मैं न्योति आपुने आन्यो । एक गोविंदचंद के कारन बैर सबन सों टान्यो ॥ २ ॥ अब क्यों भिन्न होहि मेरी सजनी दूध मिल्यो ज्यों पान्यो । 'परमानंद' मिले हैं गिरिधर है पहलो पहचान्यो ॥३॥

राग गोरी—मैं अपुनो मन हरि सों जोरयो । हरि सों जोरि सबन सों तोरयो १ ॥ आगे पाछे कौ सोच मिल्यो अब बाट माझ मटुका ले फोरयो । कहनो होइ सो कहो सखीरी कहा भयो काहू मुख मोरयो ॥ २ ॥ नवल लाल गिरिधर पिया संग प्रेम रंग में यह तन बोरयो । 'परमानंदप्रभु' लोक हंसन है विधि-निषेध कौ नांतो तोरयो ॥ ३ ॥

राग कान्हरो—तिहारी बात मोहि भावति, लाल । बार-बार जसोमति के भवन में यह सुनन हों आवति जाति ॥ १ ॥ पार परोसी अनख करत हैं और कलुक लगावति लाल । ताकी साखि विधाता जाने जिहिं लालच उठि घावति लाल ॥ २ ॥ दधिकौ मथन अरु गृह कौ कारज तिहारे प्रेम बिसरावति लाल । 'परमानंद प्रभु' कुंवर भांमतो तुम देखे सच्चु पावत लाल ॥ ३ ॥

ता पाछें श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेनआरती किये । ता समय परमानंददासने यह पद गायो । सो पद—

राग केदारो—पौढे रंगमहल गोविंद । राधिका संग सरद-रजनी उदित पूरनचंद ॥ १ ॥ विविध विचित्र चित्र चित्रित कोक कोटिक फंद । निरखि निरखि विलास बिलसत दंपति रसकंद ॥ २ ॥ मलयचंदन अंग लेपन परस्पर आनंद । कुसुम विजना ब्यार ढोरे सजनी 'परमानंद' ॥ ३ ॥

सो ऐसे पद परमानंददासजीने बहोत गाये । सो सुनिके श्रीआचार्यजी आपु बहोत प्रसन्न भये । ता पाछें श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धननाथजी कौ पोढ़ायके अनोसर करि पर्वत नीचे पधारे । तब

ते पद (१) 'मोहन नंदरायकुमार' (उपर लुओ) अे प्रार्थनालुं पद गाधने पडी आसक्तिनां पद गायां. (१) माधु मेरो माधो सों मन मान्यो. (२) में अपुनो मन हरिसों जेयो (३) तिहारी बात मोही लावत लाल' (उपर लुओ). ते पडी श्रीआचार्यजी अे श्रीगोवर्द्धननाथजीनी सेन आरती करी. ते सभये परमानंददासने आ पद गाथुं अे पद (१) 'पौढे रंगमहल गोविंद' (उपर लुओ). अेयां पद परमानंददासलुअे धणां गायां. अे सांलणीने श्रीआचार्यजी आपु अहु प्रसन्न थया. ते पडी श्रीआचा-

श्रीआचार्यजीने रामदास भीतरिया सों कह्यो, जो-परमानंददास कों प्रसादी दूध पठाय दीजो। तब रामदासने वह प्रसादी दूध पठायो सो परमानंददास प्रसादी-दूध लेंन लागे, सो तातो लाग्यो। तब सीरो करिके लियो। पाछें परमानंददास श्रीआचार्यजी पास आय दंडवत करिके बैठे। तब श्रीआचार्यजी आप परमानंददास सों पूछे, जो-परमानंददास ! महाप्रसादी दूध लियो सो कैसो हतो ? तब परमानंददासने श्रीआचार्यजी सों कह्यो, जो-महाराज ! दूध तो तातो हो। तब श्रीआचार्यजीने सब भीतरियान सों बुलाय के पूछयो, जो-दूध तातो क्यों भोग धरत हो ? सो आछो सुहातो होय तब भोग धरनो। तब सगरे भीतरियानने कही, जो-महाराज ! अब ते सुहातो सीरो करिके भोग धरेंगे।

भावप्रकाश—सो परमानंददास कों श्रीआचार्यजी आपु प्रसादी दूध यासों दिवायो, जो-श्रीठाकुरजी कों दूध बहोत प्रिय है। तासों सेवक कों दूध निकुंज-लीला संबंधी रसके दान करन कों, और सामग्री विगरी सुधरी वैष्णवन द्वारा श्रीठाकुरजी कहत हैं। जो-सामग्री वैष्णव सराहें तब जानिये, जो-श्रीठाकुरजी भली भांति सों अनुभव किये। सो या भावतें दूध दिये।

श्रीआचार्यजीने रामदास भीतरियाने कहुं, के परमानंददासने प्रसादी दूध भोक्ती दले। तब रामदासने ते प्रसादी दूध भोक्थुं। तब परमानंददास प्रसादी दूध लेवा लाग्या। ते गरम लाग्युं। तबरे हंडु करीने लीधुं। पछी परमानंददास श्रीआचार्यजी पास आवी दंडवत करीने भेदा तबरे श्रीआचार्यजी पोते परमानंददासने पूछे, के परमानंददास ! महाप्रसादी दूध लीधुं ते केवुं हतुं ? तबरे परमानंददासने श्रीआचार्यजीने कहुं, के महाराज दूध तो गरम हतुं। तबरे श्रीआचार्यजीने भधा भीतरियाओने भोदावीने पूछ्युं, के दूध गरम केम लोग धरे छे ? सुंदर सुहातु होय तबरे लोग धरवुं। तबरे भधा भीतरियाओने कहुं, के महाराज ! हवेथी सुहातु हंडु करीने लोग धरीशुं।

भावप्रकाश—परमानंददासने श्रीआचार्यजी पोते प्रसादी दूध अथी देव-लाग्युं के श्रीठाकुरजीने दूध बहुत प्रिय छे तथी सेवकने दूध निकुंज-लीला संबंधी रसके दान करवाने, अने सामग्री भगडी सुधरी वैष्णवो द्वारा श्रीठाकुरजी कहे छे, ले, सामग्री वैष्णव वभाषे तबरे लखवुं के श्रीठाकुरजी सारी रीते आरोग्या, अने लावथी दूध आप्युं।

राग विलावल—मोहन नंदराइ कुमार । प्रकट ब्रह्म निकुंज-नायक भक्त हित अवतार ॥ १ ॥ प्रथम चरन-सरोज बंदों स्यामघन गोपाल । मकर कुंडल गंड मंडित चारु नैन बिसाल ॥२॥ बलराम सहित विनोद लीला सेस संकर हेत । 'दास परमानंद प्रभु' हरि निगम बोलत नेति ॥ ३ ॥

सो यह प्रार्थना को पद गायके पाछें आसक्ति के पद गाये ।

राग आसावरी—माई मेरो माधौ सों मन मान्यो । अपनो मन और वा ढोटा कौ एक-मेक करि सान्यो ॥ १ ॥ लोक वेद की कानि तजी मैं न्योति आपुने आन्यो । एक गोविंदचंद के कारन बैर सबन सों ठान्यो ॥ २ ॥ अब क्यों भिन्न होहि मेरी सजनी दूध मिल्यौ ज्यों पान्यौ । 'परमानंद' मिले हैं गिरिधर है पहलो पहचान्यौ ॥३॥

राग गोरी—मैं अपुनो मन हरि सों जोरयो । हरि सों जोरि सबन सों तोरयो १ ॥ आगे पाछे कौ सोच मिट्यो अब बाट मांझ मटुका ले फोरयो । कहनो होइ सो कहो सखीरी कहा भयो काहू मुख मोरयो ॥ २ ॥ नवल लाल गिरिधर पिया संग प्रेम रंग में यह तन बोरयो । 'परमानंदप्रभु' लोक हँसन है विधि-निषेध कौ नांतौ तोरयो ॥ ३ ॥

राग कान्हरो—तिहारी बात मोहि भावति, लाल । बार-बार जसोमति के भवन में यह सुनन हों आवति जाति ॥ १ ॥ पार परोसी अनख करत हैं और कलुक लगावति लाल । ताकी साखि बिधाता जाने जिहि लालच उठि धावति लाल ॥ २ ॥ दधिकौ मथन अरु गृह कौ कारज तिहारे प्रेम बिसरावति लाल । 'परमानंद प्रभु' कुंवर भामतो तुम देखे सचु पावत लाल ॥ ३ ॥

ता पाछें श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेनआरती किये । ता समय परमानंददासने यह पद गायो । सो पद—

राग केदारो—पौढे रंगमहल गोविंद । राधिका संग सरद-रजनी उदित पूरनचंद ॥ १ ॥ विविध विचित्र चित्र चित्रित कोक कोटिक फंद । निरखि निरखि विलास बिलसत दंपति रसकंद ॥ २ ॥ मलयचंदन अंग लेपन परस्पर आनंद । कुसुम विंजना ब्यार ढोरे सजनी 'परमानंद' ॥ ३ ॥

सो ऐसे पद परमानंददासजीने बहोत गाये । सो सुनिके श्रीआचार्यजी आपु बहोत प्रसन्न भये । ता पाछें श्रीआचार्यजी श्री-गोवर्द्धननाथजी कों पोढ़ायके अनोसर करि पर्वत नीचे पधारे । तब

ते पद (१) 'मोहन नंदरायकुमार' (उपर लुओ) से प्रार्थनातुं पद गाधने पछी आसक्तिनां पद गायां. (१) माधु मेरो माधो सों मन मान्यो. (२) मैं अपुनो मन हरिसों ज्यो (३) तिहारी बात मोही लावत लाल' (उपर लुओ). ते पछी श्रीआचार्यजीसे श्रीगोवर्द्धननाथजीनी सेन आरती करी. ते समय परमानंददासे आ पद गाथुं से पद (१) 'पौढे रंगमहल गोविंद' (उपर लुओ). जेवां पद परमानंददासलुओ धणां गायां. से सांलणीने श्रीआचार्यजी आपु थहु प्रसन्न थया. ते पछी श्रीआचार्य-

चार्यजी आपु स्नान करिके पर्वत ऊपर पधारे, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कों जगाये । तब परमानंददासने यह पद गाथो । सो पद—

राग रामकली—जागो गोपाललाल देखों मुख तेरो । पाछें गृहकाज करों नित्य नेम मेरो ॥ १ ॥ बिगसत निसा अरुन दिसा उदिन भयो भान । गुंजत अली पंकज वन जागिए भगवान ॥ २ ॥ द्वारें ठाढे वंदीजन करत हैं उच्चार । वंस प्रसंस गावत है हरि-लीला अवतार ॥ ३ ॥ 'परमानंदस्वामी' गोपाल जगत मंगल रूप । वेद पुरान पढत ज्ञान महिमा अनूप ॥ ४ ॥

राग रामकली—लाल को मुख देखन हों आई । कालिद्वं मुख देखि गई दधि बेचन जात हि गयो है विक्राई ॥ १ ॥ दिनतें दूनो लाभ भयो घर काजर बछिया जाई । आई हों घाय थंमाय साथकीन मोहन देहु जगाई ॥ २ ॥ सुनि त्रिय वचन वे हैंसि बैठे नागरी निकट बुलाई । 'परमानंद' सयानि ग्वालिन सेन संकेत बताई ॥ ३ ॥

राग रामकली—ग्वालिन पिछवारे व्है बोल सुनायो । कमलनैन प्यारो करत कलेऊ कोर न मुख लों आयो ॥ १ ॥ अरी मैया एक वन व्याई मैया बछरा उदाई बसायो । सुरली न लीनी लकुटिया न लीनी अरवराय कोऊ सखा न बुलायो ॥ २ ॥ चकून भई नंद जू की रानी सत्य आइ कैधों सुपनो पायो । फूले अंगन माय रसिकवर त्रिभुवन-राय सिर-छत्र जु छायो ॥ ३ ॥ बैठे जाइ निकुंज सदन में विविध भांति कियो मन भायो । 'परमानंद' सयानी ग्वालिन उलटि अंक गिरिधर पिय पायो ॥ ४ ॥

सो या प्रकार के पद परमानंददासने बहोत गाये । ता पाछे श्रीआचार्यजी ने परमानंददास कों श्रीगोवर्द्धननाथजी के कीर्तन की सेवा दीनी । सो नित्य नये पद करिके परमानंददास श्रीनाथजी कों सुनावते ।

वार्ता—प्रसंग ४—एक दिन एक राजा अपनी रानी कों संग लेके ब्रज में यात्रा करिवे आयो । वह राजा श्रीआचार्यजी को सेवक हतो । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करिके डेरान में आइके वा

लव कथीं । ते गुरु कीर्तन गायां । ते पछी प्रातःकाल थयो त्यारे श्रीआचार्यजी पोते स्नान करीने पर्वत उपर पधार्यां । पछी श्रीगोवर्द्धननाथजीने जगाइया त्यारे परमानंददासे आ पद गायां ते पद—(१) जगा गोपालदास देषों सुभ तेरो (२) लालके सुभ दृषन डों आइ (३) ग्वालिन पिछवारे गुरु पोस सुनायो (उपर लुआ) ओ प्रकारनां पद परमानंददासे धरुं गायां । ते पछी श्रीआचार्यजीये परमानंददासने श्रीगोवर्द्धननाथजीनां कीर्तननी सेवा आपी । पछी नित्य नयां पद करीने परमानंददास श्रीनाथजीने संलगावता ।

वार्ता प्रसंग-४—એક દિવસ એક રાજા પોતાની રાણીને સાથે લઇને વ્રજમાં યાત્રા કરવા આવ્યા. તે રાજા શ્રીઆચાર્યજીને સેવક હતો. તે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં

ता पाछे परमानंददास को दूध अधरासृत पिये तें सगरी रात्रि लीला-रस को अनुभव भयो । तब रात्रि की लीला में मगन होय के ये पद गाये । सो पद—

राग कान्हरो—आनंदसिंधु बढ्यो हरितन में । श्रीराधा पूरन ससि मुख निरखत उमगि चलयो ब्रज वृन्दावन में ॥१॥ इत रोकयो यमुना उत गोपी कछु इक फैल परयो त्रिभुवन में । ना परस्यो कर्मठ अरू ज्ञानी अटक रद्यो रसिकन के मन में ॥२॥ मंद मंद अवगाहत बुद्धिबल भक्त हेत लीला छिन छिन में । कछु एक लह्यो नंद-सुवन कृपातें सो देखियत 'परमानंद' जन में ॥ ३ ॥

राग कान्हरो—पिय मुख देखत ही रहिये । नैनन को सुख कहत न आवे जा कारन दुःख सब हि सहिए ॥ १ ॥ सुनो गोपाललाल पाँइ लागों भली पोच ले बहिए । हों आसक्त भई या रूप हि बड़े भागि तें लहिए ॥ २ ॥ तुम बहुनायक चतुर-सिरोमनि मेरी बांह दृढ गहिए । 'परमानंदस्वामी' मनमोहन तुमहि पें निरबहिए ॥३॥

राग गोरी—कौन रस गोपिन लीनो घूंट । मदन गोपाल निकट कर पाए प्रेम काम की लूट ॥ १ ॥ निरखि रूप नंदनंदन की लोकलाज गई छूटि । 'परमानंद' वेद सागर की मर्यादा गई तूट ॥ २ ॥

राग गोरी—यातें माई भवन छांडि बन जैए । अखि-रस कनरस वत-रस सब रस नंदनंदन पें पैये ॥ १ ॥ कर पल्लव गहि कंठ बाहु धरि संग मिले गुन नैये । रास विलास विनोद अनूपम माधौ के मन भैये ॥२॥ यह सुख सखी कहत नहि आवे देखत दुःख बिसरैये । 'परमानंदस्वामी' को संगम भाग्य बडे तें पैये ॥३॥

राग हमीर—अमृत निचोय कियो इकठोर । तेरो बदन सुधारि सुधानिधि तव तें विधना रचि न और ॥ १ ॥ सुनि राधे उपमा कहा दीजे स्याम मनोहर भए हैं चकोर । सादर पान करत तुव आनन तृषित काम बस नंद किसोर ॥ २ ॥ कौन कौन अंग करौरी निरूपन नवगुन सील रूपकी रासि । 'परमानंद प्रभु' को चित्त चोरयो लोचन वँधे प्रेम की प्यास ॥ ३ ॥

राग विहागरो—यह तन नवल कुंवर परवारों । नव निकुंज में गौरस्याम तन चारंवार निहारों ॥ १ ॥ इतनी टहल कृपा करि दीजे संग मिलि जीव उधारों । 'परमानंदस्वामी' के मिले विनु और काज सब वारों ॥ २ ॥

सो या भांति परमानंददासने सगरी रात्रि लीलाको अनुभव कियो, सो बहुत कीर्तन गाये । ता पाछे प्रातःकाल भयो तब श्रीआ-

ते पछी परमानंददासने दूध पीवाथी आभी रात्रि दीसा रसने अनुभव थयो. रात्रिनी दीसाभां मगन थने आ पद गायां. ते पद (१) आनंद सिंधु अथवा हरि तनमें (२) पिय सुभ देभतही रहिये (३) कौन रस गोपिन दीना घूंट (४) यातें माधु लवन छांडि अन नैये (५) अमृत निचोय कियो इकठोर (६) यह तन नवल कुंवर पर वारों (७) पर लुआ (८) अ प्रकारे परमानंददासे आभी रात्रि दीसाने अनु-

चार्यजी आपु स्नान करिके पर्वत ऊपर पधारे, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कों जगाये । तब परमानंददासने यह पद गायो । सो पद—

राग रामकली—जागो गोपाललाल देखौ मुख तेरो । पाछें गृहकाज करौ नित्य नेम मेरो ॥ १ ॥ विगसत निसा अरुन दिसा उदिन भयो भान । गुंजत अली पंकज वन जागिए भगवान ॥ २ ॥ द्वारें ठाढे वंदीजन करत हैं उच्चार । वंस प्रसंस गावत है हरि-लीला अवतार ॥ ३ ॥ 'परमानंदस्वामी' गोपाल जगत मंगल रूप । वेद पुरान पढत ज्ञान महिमा अनूप ॥ ४ ॥

राग रामकली—लाल को मुख देखत हों आई । कालिह मुख देखि गई दधि बेचन जात हि गयो है विकारि ॥ १ ॥ दिनतें दूनो लाभ भयो घर काजर बलिया जाई । आई हों घाय थँमाय साथकीन मोहन देहु जगाई ॥ २ ॥ सुनि त्रिय वचन वे हैंसि बैठे नागरी निकट बुलाई । 'परमानंद' सयानि ग्वालिन सेन संकेत बताई ॥ ३ ॥

राग रामकली—ग्वालिन पिछवारे व्है चोल सुनायो । कमलनैन प्यारो करत कलेऊ कोर न मुख लों आयो ॥ १ ॥ अरी मैया एक वन व्याई गैया बछरा उटाई वसायो । सुरली न लीनी लकुटिया न लीनी अरवराय कोऊ सखा न बुलायो ॥ २ ॥ चकृत भई नंद जू की रानी सत्य आइ कैधों सुपनो पायो । फूले अंगन माय रसिकवर त्रिभुवन-राय सिर-छत्र जु छायो ॥ ३ ॥ बैठे जाइ निकुंज सदन में विविध भांति कियो मन भायो । 'परमानंद' सयानी ग्वालिन उलटि अंक गिरिधर पिय पायो ॥ ४ ॥

सो या प्रकार के पद परमानंददासने बहोत गाये । ता पाछे श्रीआचार्यजी ने परमानंददास कों श्रीगोवर्द्धननाथजी के कीर्तन की सेवा दीनी । सो नित्य नये पद करिके परमानंददास श्रीनाथजी कों सुनावते ।

वार्ता-प्रसंग ४—एक दिन एक राजा अपनी रानी कों संग लेके ब्रज में यात्रा करिवे आयो । वह राजा श्रीआचार्यजी को सेवक हतो । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करिके डेरान में आइके वा

सव क्योँ, ते थहु कीर्तन गायां, ते पछी प्रातःकाल थयो त्यारे श्रीआचार्यजी पोते स्नान करीने पर्वत उपर पधार्या, पछी श्रीगोवर्द्धननाथजीने नगाड्या त्यारे परमानंददासे आ पद गायां ते पद—(१) जगो गोपाललाल देषों भुभ तेरो (२) लालके भुभ द्यपन केों आठ (३) ग्वालिन पिछवारे व्है चोल सुनायो (उपर लुभो) ये प्रधारनां पद परमानंददासे धरुं गायां, ते पछी श्रीआचार्यजीये परमानंददासने श्रीगोवर्द्धननाथजीनां कीर्तननी सेवा आपी, पछी नित्य नयां पद करीने परमानंददास श्रीनाथजीने संसगावता,

वार्ता प्रसंग-४—एके द्विपस एके राजा पोतानी राणीने साथे लभने मनभां यात्रा करया आभ्यो, ते राजा श्रीआचार्यजीने सेवक हुतो, ते श्रीगोवर्द्धननाथजीने

राजानें अपनी रानी सों कह्यो, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी को दरसन बहुत सुंदर है, सो तू गिरिराज पर जायके श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि आव। तब रानीनें राजासों कह्यो, जो-जैसे हमारी रीत है, तैसे परदान में दरसन होय तो मैं करूं। तब राजानें रानी सों कही, जो ये ब्रज के ठाकुर हैं सो श्रीठाकुरजी के दरसन में परदा को कहा काम है? सो ये ठाकुर ब्रज के हैं सो काहू को परदा राखत नाहीं। या प्रकार राजा ने रानी कों बहोत समझाई, पर रानी ने राजा को कह्यो मान्यो नाहीं। तब राजा ने श्रीआचार्यजी सों विनती कीनी, जो-महाराज ! मैंने रानी कों बहोत समझायो, परन्तु वह मानत नाहीं, जो वह परदा में दरसन कियो चाहत है। तब श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो-वाको परदा में ही ले आव, जो सबतें पहले दरसन करवाय देंगे। तब रानी परदान में आई और श्रीनाथजी के दरसन करन लागी। तब श्रीनाथजी (भक्तोद्धारक स्वरूप सों) सिंहासन सों उठिके सिंहपौरि के किंवाड़ खोलि दिये सो भीड़ वा रानी के ऊपर परी। सो वाके देह के सब वस्त्र निकसि गये। तब रानी बहोत लज्जित भई। सो जब राजा सों रानी ने डेरान में आयके सब समाचार कहे। तब राजा ने रानी सों कही, जो-मैं तोसों पहले ही

दर्शन करिने उराभां आवीने ते राजये पोतानी राणीने कहुं, के श्रीगोवर्द्धननाथलनां दर्शन अहु सुंदर छे। तुं श्रीगिरिराज उपर जधने श्रीगोवर्द्धननाथलनां दर्शन करी आव। तयारे राणीये राजने कहुं, के जेवीं अमारी रीत छे ते रीते पडदाभां दर्शन होय तो हुं करूं। तयारे राजये राणीने कहुं, के प्रजना ठाकुर छे ते ठाकुरना दर्शनभां पडदातुं शुं काम छे? ये ठाकुर प्रजना छे ये कोधना पडदा राखता नथी। ये प्रकारे राजये राणीने अहु समजवी, परंतु राणीये राजतुं कहुं मान्युं नही। तयारे राजये श्रीआचार्यलने विनती करी, के महाराज ! में राणीने अहु समजवी परंतु ये मानती नथी। ये पडदाभां दर्शन करवाने चाहे छे। तयारे श्रीआचार्यल पोते कहे, के येने पडदाभां ज लभ आवो। अधानां पहेलां दर्शन करावी छशुं। तयारे राणी पडदाभां आवी अने श्रीनाथलनां दर्शन करवा लागी। तयारे श्रीनाथलये (लक्तोद्धारक स्वरूपथी) सिंहासनथी उठीने सिंहपौरनां कमाड जोदी दीधां। अरले लीड ये राणी उपर पडी। तथी येना देहनां अधां वस्त्र निकणी गयां। तयारे राणी अहु लज्जित थध। पडी न्यारे राजने राणीये उराभां आवीने अधा समाचार कहा। तयारे राजये राणीने कहुं, के में तने पहेलां ज कहुं हुतुं के ये श्रीनाथल प्रजना ठाकुर छे, अमये

कह्यो हतो, जो-ये श्रीनाथजी व्रज के ठाकुर हैं, सो इनने काहू को परदा राख्यो नाहीं है। ता समय परमानंददास यह पद गावत हते, सो बाकी एक तुक कही हती। सो पद—

‘कौन यह खेलिवे की वानि।

मदन गोपाललाल काहू की राखत नांहिन कानि० ॥’

सो यह सुनिके श्रीआचार्यजी परमानंददास कों वरजे, जो-ऐसे न कहिये, यासों ऐसे कह्यो, जो-‘भली यह खेलिवे की वानि।’

भावप्रकाश—सो काहेतें ? जो-अब ही परमानंददास कों दास पदवी दिये हैं। सो दासभाव सों रहे, और बोले, तो प्रभु आगे कृपा करें। जब सख्य भाव दृढ़ होय, तब बराबरी सों वार्ता होय। तासों विना अधिकार अधिक भाव नाहीं है। जो-करे तो नीचे गिरे। सो जब श्रीठाकुरजी सरल भाव को दान करें, तब ही वने। दूसरो आसय, श्रीआचार्यजी आपु आपनो स्नेह श्रीगोवर्द्धन-नाथजी में राखे सो सर्वोपरि दिखाये, जो-स्नेही सों ऐसे न बोले। जो-कार्य सनेही प्रीति सों न करे सो तासों हू कहिये, जो-भलो कार्य किये। ऐसी सनेह की रीति है। तासों श्रीआचार्यजी आपु परमानंददास कों वरजे-‘कौन यह खेलिवे की वानि०।’ या भाँति सों कवहू न कहिये। कहिये, बरजिवे लायक तो व्रजभक्त हैं, सो तासों चाहै तैसें बोलें। तासों तुम ऐसे कह्यो जो-‘भली यह खेलिवे की वानि।’

तब परमानंददास ने ऐसे ही पद गायो। सो पद—

झाँटना पडहे। राख्यो नथी। ते समय परमानंददास आ पद गाता हुता ऐनी ओइ तुक कही हुती। ते पद :—‘कौन यह खेलिवेकी वानि। मदनगोपालदास काहुडी राखत नाही’न कानि’ ऐ साँसणीने श्रीआचार्यलये परमानंददासने रोक्या डे ऐभ न कहीअे ऐथी ऐभ कहे। ‘भली यह खेलिवेकी वानि’

भावप्रकाश—ते शायी ? डे हुभलां न परमानंददासने दास पदवी आपी छे ऐ दास भावथी रहे. अने भोले तो प्रभु आगण कृपा करे. न्यारे सख्यभाव दृढ़ होय त्यारे भराभरीथी वार्ता थाय. तेथी विना अधिकार अधिक भाव न करवो. जे करे तो नीचे पडे ऐथी न्यारे श्रीठाकुरल सरण भावतुं दान करे त्यारेन अने. भीन्ते आशय, श्रीआचार्यलये पोते पोतानो स्नेह श्रीगोवर्द्धननाथलमां राख्यो छे ते सर्वोपरि देखाडयो, डे स्नेहीथी ऐभ न भोलेतुं. जे, कार्य स्नेही प्रीतिथी न करे तेने पणु कहीअे डे साइं कार्य कथुं. ऐवी स्नेहनी रीति छे. तेथी श्रीआचार्यलये पोते परमानंददासने रोक्या. ‘कौन यह खेलिवेकी वानि’ अे प्रकारे कही न कहीअे. कहेवा, रोकवा लायक तो व्रजभक्त छे तेथी आडे तेभ भोले. तेथी तभे ऐभ कहे। डे ‘भली यह खेलिवेकी वानि’

राग सारंग—भली यह खेलिवेकी वानि । मदनगुपाललाल काहूकी राखत नाहीन कानि ॥ १ ॥ अपने हाथ ले देत बनचरन हि दूध भात घृन सानि । जो चरजों तो आंख दिखावे पर घर कूदन-दानि ॥ २ ॥ सुनरि जसोदा सुन के करतव यह ले माट मथानि । फोड़ि ढोरि दधि डारि अजिर में कौन सहे नित हानि ॥ ३ ॥ ठाढी हँसति नंदजूकी रानि मूँदि कमल मुख पानि । 'परमानंददास' इह जाने वालि बूझि धों आनि ॥ ४ ॥

सो यह पद सुनिकें श्रीआचार्यजी आपु बहोत प्रसन्न भये ।

भावप्रकाश—या प्रकार सहस्रावधि कीर्तन परमानंददास ने किये ।

तासों परमानंददास के पदन में बाल लीला भाव, (और) रहस्य हू झलकत है । सो जा लीला को अनुभव परमानंददास कों भयो, ताही लीला के पद परमानंददास गाये । परन्तु श्रीआचार्यजी आपु परमानंददास कों बाललीला रस को दाव हृदय में कियो है, तासों बाललीला गूढ़ पदन में हू झलकत है ।

वार्ता-प्रसंग ५—और एक दिन सगरे भगवदीय सूरदासजी, कुंभनदासजी तथा रामदास आदि सब वैष्णव मिलिके जहाँ परमानंददास रहत हते तहाँ इनके घर आये । सो सब भगवदीय कों अपने घर आये देखिके परमानंददास अपने मन में बहोत प्रसन्न भये, जो—आज मेरो बड़ी भाग्य है । सो सब भगवदीय मेरे ऊपर कृपा करिके पधारे, ये भगवदीय कैसे हैं, जो—साक्षात् श्रीगोवर्द्धननाथजी को स्वरूप ही हैं, तासों आज मो ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी ने बड़ी कृपा करी है ।

त्यारे परमानंददासे अभेन पद गाथुं ते पद—'लली यह खेलिवेकी वान' (उपर लुभ्यो.)

ये पद सांभलीने श्रीआचार्यलु भहु प्रसन्न थया.

भावप्रकाश—ये प्रकार सहस्रावधि कीर्तन परमानंददासे कर्था तेथी परमानंददासनां पदोभां आललीलाभाव अने रहस्य पणु जलके छे. जे लीलानो अतुल्य परमानंददासने थयो तेज लीलानां पद परमानंददासे गायां. परंतु श्रीआचार्यलुये पोते परमानंददासने आललीलारसतुं दान कथुं छे. तेथी आललीला गूढ पदोभां पणु जलके छे.

वार्ता-प्रसंग ५-वली अेक द्विसे अधा भगवदीयो सूरदासलु, कुंभनदासलु, तथा रामदास आदि अधा वैष्णुयो भणीने जयां परमानंददास रहेता लुता त्यां अभेना धरे आव्या त्यारे अधा भगवदीयोने पोताना धरे आव्या जेधने परमानंददास पोताना मनभां भहु प्रसन्न थया, के आण भाइं भाटुं लाग्य छे. अधा भगवदीयो भारा उपर कृपा करीने पधार्या. आ भगवदीयो केवा छे ? के साक्षात् श्रीगोवर्द्धननाथलुं स्वरूप छे. तेथी आजे भारा उपर श्रीगोवर्द्धननाथलुये भहान कृपा करी छे.

भावप्रकाश—सो काहेत ? जो-अनेक रूप होयके श्रीठाकुरजी मेरे घर पधारे हैं । सो भगवदीय के हृदय में श्रीठाकुरजी आपु विराजत हैं, तासों मेरे वड़े भाग्य हैं । अब मैं कृतकृत्य होय गयो, जो सब भगवदीय कृपा किये हैं । सो प्रथम तो इन भगवदीयन की न्योछावरि करी चाहिये । सो ऐसी कहा वस्तु है ? जासों सब भगवदीयन की न्योछावरि होय ?

पाछें परमानंददास ने भगवदीय वैष्णवन सों मिलिकें ऊंचे आसन बैठारि के यह पद गायो । सो पद—

राग विहागरो—आप मेरे नंदनंदन के प्यारे । माला तिलक मनोहर बानो त्रिभुवन के उजियारे ॥ १ ॥ प्रेम सहित उर बसत निरंतर नेक हू टरत न टारे । हृदै कमल के मध्य विराजत श्रीवज्रराज डुलारे ॥ २ ॥ कहा जानों कौन पुन्य उदय भयो मेरे घर जु पधारे, 'परमानंद' करत न्योछावरि वारि वारि वहो वारे ॥ ३ ॥

ता पाछें दूसरो पद गायो । सो पद—

राग विहागरो—हरिजन संग छिनक जो होई । करे कृपा गिरिघरन जीव पर पातक रहे न कोई ॥ १ ॥ सकल कुतर्क वासना नासे हरि सुमरे सुमरावे । जड वड़े चतुर मंद बुद्धि निरमल मनमोहन मन भावे ॥ २ ॥ माया काल कछू नहीं व्यापे जो हरिजन को जाने । 'परमानंद' यही मन निश्चय हरिजन गुन हि बखाने ॥ ३ ॥

सो ऐसे पद परमानंददास ने गाये । सो सुनिके सब भगवदीय परमानंददास के ऊपर बहोत प्रसन्न भये । तब परमानंददास ने सब वैष्णवन सों बिनती कीनी, जो-आजु कृपा करिके मेरे घर पधारे सो कछू आज्ञा करिये । तब रामदासजी ने पूछी, जो-परमानंददास !

भावप्रकाश—केभडे अनेक रूप धरने श्रीठाकुरजी मारा धरे पधार्या छे. भगवदीयना हृदयमां श्रीठाकुरजी पोते गिराजे छे तेथी मारां मोटां लाग्य छे. डवे डुं कृतकृत्य धर गयो. केभ, जे यथा भगवदीयोअे कृपा करी छे. तेथी प्रथम तो आ भगवदीयोनी न्योछावर करवी न्हेछये. ते अेवी वस्तु कथीछे जेथी यथा भगवदीयोनी न्योछावर थाय ?

पछी परमानंददासे भगवदीय वैष्णवोने भणीते उचे आसने भेसाडीते आ पद गायुं. पद :—'आये मेरे नंदनंदनके प्यारे' (उपर लुओ). ते पछी थीलुं पद गायुं पद :—'हरिजन संग छिनक जे होई' (उपर लुओ) अेवां पद परमानंददासे गायां. अे सांभणीते यथा भगवदीयो परमानंददासनी उपर धरुा प्रसन्न थया. तयारे परमानंददासे यथा वैष्णवोने बिनती करी, डे आळ कृपा करीते. मारा धरे पधार्या तेथी कंठ आज्ञा करे. तयारे रामदासअे पूछयुं डे परमानंददास प्रणमां

બ્રજ મેં સગરો પ્રેમ બ્રજમક્તન કો હૈ, સો શ્રીનંદરાયજી, ગોપીજન, ગ્વાલ, સખાનકો । તામેં સવ તેં શ્રેષ્ઠ પ્રેમ કિન કો હૈ ?

ભાવપ્રકાશ—સો કાહેતેં ? જો-તિહારી બાલલીલા મેં લગન વહુત હૈ । ઓર તુમ કૃપાપાત્ર ભગવદીય હો, તાસોં યહ સંદેહ હૈ સો દૂરિ કરો । સો યા પ્રકાર રામદામજી ને પરમાનંદદાસ સોં યોં પૂછી, જો-શ્રીઆચાર્યજી કે અભિપ્રાયમેં તો ગોપીજનકો પ્રેમ વહોત હૈ । ઓર પરમાનંદદાસને નંદાલય કી લીલા ઓર બાલલીલા વહોત વર્ણન કિયે હૈં, તાસોં શ્રીઆચાર્યજી કે હૃદય કે અભિપ્રાયકી સ્વરિ પરી કે નાહીં ? તાસોં પરમાનંદદાસકી પરીક્ષા લેની ।

તા સમય પરમાનંદદાસ ને યહ પદ ગાયો । સો પદ—

રાગ નાયકી—ગોપી પ્રેમકી ધ્વજા । જિન ગોપાલ કિયો વસ અપને ઊર ધરિ સ્યામ ભુજા ॥ ૧ ॥ સુક મુનિ વ્યાસ પ્રસંસા કીની ઉદ્ધવ સંત સરાહી । મૂરિ ભાગિ ગોકુલ કી ઘનિતા અતિ પૂનિત જગમાંહી ॥ ૩ ॥ કહા મયો જુ વિપ્રકુલ જન્મ્યો જો હરિ સેવા નાહીં । સોઈ પૂનિત દાસ ‘ પરમાનંદ ’ જો હરિ સન્મુખ જાહીં ॥ ૩ ॥

રાગ કાન્હરો—બ્રજજન સમ ધર પર કોઝ નાહીં । જિન સવ તન મન હરિ અર્પન કરિ મોહન ઘરે ઊર માંહીં ॥ ૧ ॥ સદા સંગ ડોલત મન મોહન ગોપી ધરિ ઊર ધ્યાન । ગોપી ગોપી રટત નિરંતર મૂલિ ગયે સવ જ્ઞાન ॥ ૨ ॥ જા ગોપી કી પદ-રજ ઉદ્ધવ વ્રહ્માદિક સવ જાચેં । તા ગોપી ગૃહ માલન કાર્જે સવ દિન ગિરિધર નાચે ॥ ૩ ॥ ગોપીજન મેં કૌન વતાઝ હરિ હૂ પાર ન પાવે । તો હોં મંદ બુદ્ધિ કહા જાનોં ‘ પરમાનંદ ’ ગુન ગાવેં ॥ ૪ ॥

સો યહ પદ પરમાનંદદાસ ને ગાયે । તવ સગરે વૈષ્ણવ કહે, જો-પરમાનંદદામ ! તુમ ધન્ય હો । યા પ્રકાર સગરે વૈષ્ણવ પ્રસન્ન હોયકે પરમાનંદદાસ કી સરાહના કરત વિદા હોય અપને ઘર આયે ।

બધો પ્રેમ પ્રજલક્તોનો છે. શ્રીનંદરાયજી, ગોપીજન, ગ્વાલ, સખાઓનો. તેમાં બધાથી શ્રેષ્ઠ પ્રેમ કોનો છે ?

ભાવપ્રકાશ—કેમકે તમારી બાલલીલામાં લગન ઘણી છે અને તમે કૃપાપાત્ર ભગવદીય છો. તેથી આ સંદેહ છે તે દૂર કરો. આ પ્રકારે રામદાસજીએ પરમાનંદદાસને એમ પૂછ્યું કે શ્રીઆચાર્યજીના અભિપ્રાયથી તો શ્રીગોપીજનનો પ્રેમ ઘણો છે અને પરમાનંદદાસે નંદાલયની લીલા અને બાલલીલાનું ઘણું વર્ણન કર્યું છે. તેથી શ્રીઆચાર્યજીના હૃદયના અભિપ્રાયની ખબર પડી કે નહીં. તેથી પરમાનંદદાસની પરીક્ષા લીધી.

તે સમયે પરમાનંદદાસે આ પદ ગાયું. તે પદ ‘ ગોપી પ્રેમકી ધ્વજા ’ ‘ પ્રજન સમ ધર પર કોઈ નાહી ’ (ઉપર જુઓ). એ પદે પરમાનંદદાસે ગાયાં. ત્યારે બધા વૈષ્ણવો કહે, કે પરમાનંદદાસ તમે ધન્ય છો. એ પ્રકારે બધા વૈષ્ણવો પ્રસન્ન થઈને

ता पाछे परमानंददास ने बहोत दिन ताई श्रीगोवर्द्धननाथजी के कीर्तन की सेवा कीनी ।

वार्ता-प्रसंग ६—ता पाछे एक दिन परमानंददास श्रीगुसांईजी के और श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन कों गोपालपुर तें श्रीगोकुल आये, सो दरसन करिके रात्रि तहां रहे । पाछे प्रातःकाल श्रीगुसांईजी स्नान करिके श्रीनवनीतप्रियजी के मंदिर में पधारे तब परमानंददास कों बुलाये । तब परमानंददास आगे आय दंडवत किये । सो तब श्रीगुसांईजी आपु परमानंददास सों कहे, जो—श्रीठाकुरजी कों सगरी लीला ब्रज की बहोत प्रिय है । सो नित्य-लीला ब्रज की श्रीठाकुरजी कों सुनावे, सो तो कोई काल में हू पार पावे नाहीं । काहेतें ? जो—एक लीला को पार न पैये, तो सगरी लीला कौन गावे । परंतु मैं एक कीर्तन करि देत हों, तामें सगरी ब्रज की लीला को अनुभव है । सो तुम या समय नित्य गाईयो । तब परमानंददास कहे, जो—महाराज ! वह पद कृपा करिके बताइये । सो श्रीगुसांईजी तो मारग के चलायवे वारे हैं सो भाषा के पद करे नाहीं । तासों संस्कृत में कीर्तन गायो । सो पद—

राग रामकली—मंगल मंगलं ब्रजभुवि मंगलम् । मंगलमिह श्रीनंदयसोदा नामसुकीर्तनमेतद्बुचिरोत्संगसुलालितपालितरूपम् ॥ १ ॥ श्रीश्रीकृष्ण इति श्रुतिसारं नाम स्वार्तजनाशयतापापहमिति मंगलरावम् । ब्रजसुंदरीवयस्यसुरभिवृन्द

परमानंददासना वप्याणु करता विद्वथ योताने धरे व्याव्या. ते पछी परमानंददासे धृष्टा द्विवस भुधी श्रीगोवर्द्धननाथलनां कीर्तननी सेवा करी.

वार्ता प्रसंग-६—ते पछी अेक द्विवस परमानंददास श्रीगुसांईलना अने श्रीनवनीतप्रियलनां दर्शने गोपालपुरथी श्रीगोकुल व्याव्या. तयारे दर्शन करीने रात्रिअे त्यां रक्षा. पछी प्रातःकाल श्रीगुसांईल स्नान करीने श्रीनवनीतप्रियलना मंदिरमां पधार्थां तयारे परमानंददासने पोसाव्या. तयारे परमानंददासे आगण आवीने दंडवत कर्थां. तयारे श्रीगुसांईल पोते परमानंददासने कहे, के श्रीठाकुरलने ब्रजनी अधी दीसा अडुण प्रिय छे तेथी नित्यदीसा ब्रजनी श्रीठाकुरलने संलगावे ते तो कोध कालमां पणु पार न पावे. केअके ? जे अेक दीसानो पार न पासीये तो अधी दीसा कोणु गाअ शके ? परंतु हुं अेक कीर्तन कही हईं छुं तेमां अधी ब्रजनी दीसानो अनुभव छे. ते तमे आ समये नित्य गाअे. तयारे परमानंददास कहे के महाराज ! अे पद कृपा करीने अतावे. तयारे श्रीगुसांईल तो भागिना असाववाणा छे ते लापानां पद कर्थां नहीं तेथी संस्कृतमां कीर्तन गायुं. ते पद 'मंगल मंगल' (उपर लुअे). अे पद श्री-

सृगीगणनिरूपमभावा मंगलसीधुचया ॥ २ ॥ मंगलमीषवस्मितयुतमीक्षणभाषण
मुन्नतनासापुटगतमुक्ताफल चलनम् । कोमलचलदङ्गुलिदल सङ्गत वेणुनिनाद
विमोहितवृन्दावनभुवि जाताः ॥ ३ ॥ मंगलमखिलं गोपी शितु रत्रिमंथरगनि विभ्रम
मोहितरासस्थितगानम् । त्वं जय सततं श्रीगोवर्द्धनघर पालय निजदालान् ॥ ४ ॥

सो यह पद श्रीगुसांईजी आपु गायके परमानंददास को
गवाये । सो परमानंददास ' मंगल मंगल० ' गाये । तब मंगल रूप
परमानंददास ने और हू पद गाये । सो पद—

राग भैरव—मंगल माधौ नाम उच्चार । मंगल बदन कमलकर मंगल मंगलजन
की सदा सम्हार ॥ १ ॥ खेलत मंगल पूजत मंगल गावत मंगल गीत उदार । मंगल
भवत कथारस मंगल मंगल तन वसुदेव कुमार ॥ २ ॥ गोकुल मंगल मधुवन मंगल
मंगल रुचि वृन्दावनचंद । मंगल करन गोवर्द्धनधारी मंगल भेख जसोदानंद ॥ ३ ॥
मंगलधेनु रेनु भुवमंगल मंगल मधुर बजावत वेनु । मंगल गोपवधू परिरंभन मंगल
कालिंदी पय फेनु ॥ ४ ॥ मंगल चरनकमलदल मंगल मंगल कीरति जगत निवास ।
अनुदिन मंगल ध्यान घरत मुनि मंगल मति ' परमानंददास ' ॥ ५ ॥

सो यह पद परमानंददास ने गायो, ता पाछें श्रीगुसांईजी
आपु मंगल-भोग सराय के मंगला-आरती किये । ता समय परमा-
नंददास ने यह पद गायो । सो पद—

राग भैरव—मंगल आरती करि मन मोर । भरम निसा वीती भयो भोर ॥१॥
मंगल बाजत झालर ताल । मंगल रूप उठे नंदलाल ॥ २ ॥ मंगल बाजत वीन सृदंग ।
मंगल नांसुरी सरस उपंग ॥ ३ ॥ मंगल धूपदीप करि जोर । मंगल गावत सब मिलि
कोर ॥ ४ ॥ मंगल उदयो मंगल रास । मंगल मति ' परमानंददास ' ॥ ५ ॥

सो या प्रकार श्रीगुसांईजी कृत ' मंगल मंगल० ' के अनुसार
परमानंददास ने बहोत कीर्तन किये, और श्रीगुसांईजी कृत मंगल
मंगल० पद नित्य गावते ।

भावप्रकाश—यामें सगरी ब्रजलीला है, सो ठाकुरजीकों नित्य सुना-

गुसांईजीये पोते गाधने परमानंददासने गवडाधुं ते परमानंददासे गाधुं । तयारे मंगल
रूपनां परमानंददासे थीनां पद्य पद गायां ते पद ' मंगल माधौ नाम उच्चार ' (उपर लुओ) । ये पद परमानंददासे गाधुं । ते पछी श्रीगुसांईजीये मंगलभोग सरा-
वीने मंगला आर्ति करी, ते समय परमानंददासे आ पद गाधुं । ते पद :—' मंगल
आरती करि मन मोर ' (उपर लुओ) । आ प्रकारे श्रीगुसांईजीकृत ' मंगल
मंगल ' अनुसार परमानंददासे धणां कीर्तन कयां अने श्रीगुसांईजीकृत ' मंगल
मंगल ' नित्य गाता ।

भावप्रकाश—आसां पछी ब्रजलीला छे, ते श्रीठाकुरजीने नित्य सुनणाये छे ।

वत हैं । और मंगल मंगलं० के पाठते ब्रजलीलाको सब पाठ होय । सो तहां मंगला को पद परमानंददास ने कियो सो तामें कहे—‘मंगल तन वसुदेवकुमार०’ । सो तहां यह संदेह होय, जो—परमानंददास तो नंदनंदन के उपासक हैं । सो वसुदेवकुमार ब्रजलीलामें कहे, ताको कारन कहा ? तहां कहतहैं, जो—वेणुगीत और युगलगीत में ‘देवकीसुत’ गोपिकानने कहे, सो ये कुमारिका के भावते । सो काहेते ? जो—कुमारिका श्रीयशोदाजी कों माता कहते, तासों श्रीठाकुरजी में पतिभाव है । याही सों वसुदेव—सुत कहि पतिभाव दृढ करत हैं । जो—यशोदा सुत कहें, तो भाइ बहन को भाव होय ।

पाछे परमानंददास श्रीगोवर्द्धनधर के दरसन कों श्रीगोकुलतें श्रीगिरिराज आये । सो तहां मंगला आरती पहलै ‘मंगल मंगलं०’ पद परमानंददासने गायो । सो श्रीगोवर्द्धनधर के यहां ‘मंगल मंगलं०’ की रीत भई । सो वे परमानंददास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ।

वार्ता—प्रसंग ७—और जब जन्माष्टमी आवती तब श्रीगुमाईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजी कों पंचामृत स्नान करवायके सिंगार करि श्रीगिरिराज पर्वत ऊपर पधारिके श्रीगोवर्द्धननाथजीके सिंगार करते । ता पाछे राजभोग सों पहाँचिके फेरि श्रीगिरिराज तें श्रीगोकुल आवते । सो तहां श्रीनवनीतप्रियजी कों सधयरत्रि कों जन्मकी रीति

वणी मंगल मंगलना पाठथी ब्रजलीलानो अथो पाठ थाय. त्यां मंगलातु' पद परमानंददासे कथुं' तेमां कहुं, मंगल तन वसुदेवकुमार. तेमां अे संदेह थाय के परमानंददास तो नंदनंदनना उपासक छे. तो वसुदेवकुमार ब्रजलीलांमां कछा तेतुं कारणु शुं ? त्यां कहीअे छीअे के वेणुगीत अने युगल गीतमां गोपिकाअेअे 'देवकीसुत' कछा छे. ते कुमारिकाअेना भावथी. केभके ? कुमारिका श्रीयशोदाअेने माता कहेतां तेथी श्रीठाकुरअेमां पतिभाव छे. अेथीअे वसुदेव सुत कही पतिभाव दृढ करे-छे. अेने यशोदा सुत कहे तो भाइ-बहनने भाव थाय.

पछी परमानंददास श्रीगोवर्द्धनधरना दर्शने श्रीगोकुलथी श्रीगिरिराजअे आव्या. त्यां मंगला अ्यातिं पहिलां 'मंगल मंगल' पद परमानंददासे गाथुं. (त्यारथी) श्रीगोवर्द्धनधरने त्यां 'मंगल-मंगल' नी रीत थअ. ते परमानंददास अेवा कृपापात्र भगवदीय हुता.

वार्ता—प्रसंग ७—वणी नयारे जन्माष्टमी आवती तयारे श्रीगुसांमल येते श्रीनवनीतप्रियअेने पंचामृत स्नान करावीने शृंगार करी श्रीगिरिराज पर्वत उपर पधारिने श्रीगोवर्द्धननाथअेना शृंगार करता. ते पछी राजभोगथी पहुंअेने करी

करिके पलना झुलाय श्रीनाथजीके यहां नंदमहोत्सव करते। सो जब जन्माष्टमी आई, तब श्रीगुसांईजी आप परमानंददासजीकों संग लेय के श्रीगिरिराज सों श्रीगोकुल पधारे। सो जन्माष्टमी के दिन श्रीगुसांईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजी कों अभ्यंग कराये। ता समय परमानंददासने यह बधाई गई। बधाई—

राग घनाश्री—मिलि मंगल गावहु माई, सबे मिलि०। आजु लाल कौ जन्म दिवस है बाजत रंग बधाई ॥ १ ॥ आंगन लींपो चोक पुरावो विप्र पढन लागे वेद। करहु सिंगार स्यामसुंदर कों चोवा चंदन मेद ॥ २ ॥ आनंदभरी बावा नंदजू की रानी फूली अंग न समाई। 'परमानंददास कौ ठाकुर' बहुत न्योछावरि पाई ॥ ३ ॥

ता पाछे श्रीगुसांईजीने श्रीनवनीतप्रियजी के सिंगार करिके तिलक कियो। ता समय परमानंददासने यह पद गायो। सो पद—

राग सारंग—आज बधाई को दिन नीकौ। नंदघरनी जसुमति जायो है लाल भौवतो जी कौ ॥ १ ॥ पंच सब्द बाजे बाजत है घर-घर तें आयो टीको। मंगल कलस लिये ब्रजसुंदरि ग्वाल बनावत छीकौ ॥ २ ॥ देति असीस सकल गोपीजन जीवो कोटि वरीसो। 'परमानंददास कौ ठाकुर' गोप भेख जगदीसो ॥ ३ ॥

राग सारंग—घर घर ग्वाल देत हैं हेरी। बाजत तालमृदंग बांसुरी ढोल दमामा भेरी ॥ १ ॥ लूटत झपटत खात मिठाई कही न सकत कोऊ फेरी। उनमद ग्वाल बंदत नहीं काहू ब्रजवनिता सब बेरी ॥ २ ॥ ध्वजा पताका तोरनमाला सबे सिंगारी सेरी। जै जै कृष्ण कहत 'परमानंद' प्रगट्यो कंस कौ बैरी ॥ ३ ॥

या प्रकार परमानंददासने बहोत पद गाये। ता पाछे अर्द्ध रात्रिके समय श्रीगुसांईजी आपु जन्म करायके श्रीनवनीतप्रियजीकों पालने सें पधराये, श्रीनंदरायजी श्रीयसोदाजी, गोपी ग्वाल को भेख धराये। ता समय परमानंददासने यह पद गायो। सो पद—

श्रीगिरिराजकी श्रीगोकुल आवता. त्यां श्रीनवनीतप्रियजीने मध्य रात्रिये जन्मनी रीति करीने पलना झुलायी श्रीनाथजीने त्यां नंदमहोत्सव करता. ते (अेक वषत) न्यारे जन्माष्टमी आवी त्यारे श्रीगुसांइजी परमानंददासने संग लधने श्रीगिरिराजकी श्रीगोकुल पधार्या. पछी जन्माष्टमीना दिवसे श्रीगुसांइजीये पोते श्रीनवनीतप्रियजीने अब्यंग करान्यां ते समये परमानंददासे आ वधाधगाध, वधाध—' मिलि मंगल गावो माध ' (उपर लुओ). पछी श्रीगुसांइजीये श्रीनवनीतप्रियजीने शृंगार करीने तिलक क्युं. ते समये परमानंददासे आ पद गायु. ते पद—' आज अंधाध डे दिन नीके ' ' घर घर ग्वाल देत हैं हेरी ' (उपर लुओ). अे प्रकारे परमानंददासे अहु पद गायां. ते पछी अर्धरात्रिना समये श्रीगुसांइजी पोते जन्म करवीने श्रीनव-

राग घनाश्री—जसोदा रानी सोवन फूले फूली । तुम्हारे पुत्र भयो कुलमंडन
वासुदेव समतूली ॥ १ ॥ देति असीस विरध जे ग्वालनि गाम-गाम तें आई । ले ले
मेठ सबै मिलि निकसी मंगल चार बघाई ॥ २ ॥ ऐसे दसक होइ जो औरे तो सब
कोऊ सचुपावे । बाढौ वंस नंद बाबा कौ ' परमानंद ' जिय भावे ॥ ३ ॥

भावप्रकाश—सो या पद में परमानंददासजी यह कहे, जो—' ऐसे
दसक होय जो औरे तो सब कोऊ सचु पावे ' । सो भगवदीयनके वचन सत्य
करिवेके लिये श्रीगुसाईंजी के बालक सातों और श्रीगुसाईंजी तथा श्रीआचार्यजी
तथा श्रीगोवर्द्धननाथजी सो ये दस स्वरूप प्रकट होयके सबकों सुख दिये हैं । सो
' सब ' माने सगरे दैवी पुष्टिमागींय । सो या प्रकार सों भाव सहित परमानंद-
दासजीने कीर्तन गाये ।

पाछें श्रीनंदरायजी और गोपी ग्वाल, वैष्णवनके जूथ, अपने
लालजी सब (कों) लेके दधिक्रादो किये । तब परमानंददास को चित्त
आनंद में विक्षिप्त होय गयो । वा समय परमानंदास नाचन लागे
और यह पद गायो । सो वा प्रेम में परमानंददास रागको हू क्रम
भूलि गये । सो रात्रि को तो समय और सारंग में गाये । सो पद—

राग सारंग—आज नंदराय के आनंद भयो । नाचत गोपी करति कोलाहल
मंगल चार ठयो ॥ १ ॥ राती पीयरी चोली पहेरे नौतम झूमक सारी । चोवा चंदन
अंग लगाए सेंदुर मांग सँवारी ॥ २ ॥ माखन दूध दह्यो भरि भाजन सकल ग्वाल
ले आए । बाजत वेजु पखान महुवरि गावत गीत सुहाये ॥ ३ ॥ हरद दूब अक्षत
दधि कुमकुम आंगन बाढी कीच । हसत परस्पर प्रेम मुदित मन लागि लागि भुज
वीच ॥ ४ ॥ चहुं वेद ध्वनि करत महामुनि पंच सव्द ढम ढोल । ' परमानंद ' बढ्यो
गोकुल में आनंद हृदै कलोल ॥ ४ ॥

नीतप्रियलने पालनाभां पधराव्या. श्रीनंदरायल श्रीयशोदाल गोपीग्यासने लेष
धराव्या. ते समये परमानंददासे व्या पद गाथुं. ' सोवन झूले झूटी जशोदा
रानी ' (उपर लुओ).

भावप्रकाश—ये पदभां परमानंददासलये कहुं के ' ऐसे दसेक होइ जे
औरे' तो सभ कोउ सचु पावे' ऐथी भगवदीयानां वचन सत्य करवाने भाटे श्रीगुसां-
इलना सात पालके, श्रीगुसांइल तथा श्रीआचार्यल तथा श्रीगोवर्द्धननाथल ऐभ
दश स्वरूपे प्रकट थधने पधाने सुभ आभ्युं छे. पधा ऐटले पधा दैवी पुष्टिमागींय.
आ प्रकटे भाव सहित परमानंददासलये कीर्तन गायां.

पडी श्रीनंदरायल अने गोपीग्यास, वैष्णवोना जूथ, पीताना दासल पधाने
सधने दधिक्रादव कर्या. त्यारे परमानंददासतुं चित्त आनंदभां विक्षिप्त थधगथुं. ये समये

यह पद गाये पाछे परमानंददास प्रेम में मूर्छा खाय भूमिमें गिरि पड़े। तब श्रीगुसांईजी आपु अपने श्रीहस्तकमलसों परमानंददास को उठायके अंजुलि में जल लेके वेदमंत्र पढ़िके आपु परमानंददास के ऊपर छिरके। सो तब उच्छलित प्रेम जो विकल करतो, सो हृदय में स्थिर भयो। सो परमानंददास सगरी लीला को अनुभव किये, और गान किये। या प्रकार परमानंददास के ऊपर श्रीगुसांईजीने कृपा करी। ता पाछे यह पलना को पद परमानंददासने गायो—

राग विलावल—हालरो हुलरावति माता । बलि बलि जाय घोष सुख दाता ॥ १ ॥
 अति लोहित कर चरन सरोजे । जे ब्रह्मादिक मनसा खोजे ॥ २ ॥
 जसुमति अपने पुन्य बिचारे । बारवार मुख कमल निहारे ॥ ३ ॥
 अखिल भुवनपति गरुडागामी । नंदसुवन 'परमानंदस्वामी' ॥ ४ ॥

भावप्रकाश—सो या भांति सों 'अखिल भुवनपति गरुडागामी' ऐसे परमानंदजीने कह्यो। सो अखिल भुवन-पति यातें, जो-श्रीभगवान गरुड पै विराजमान सो (तो) सब जगत्के पति हैं। और नंदसुवन ठाकुर, सो परमानंददासने कही, जो-ये मेरे स्वामी हैं।

सो यह कीर्तन सुनिके श्रीगुसांईजी आपु परमानंददास की ऊपर बहोत प्रसन्न भये। ता पाछे परमानंददासने यह पद कान्हरो राग में करिके गायो। सो प्रेम में राग को क्रम नाहीं, लीला को

परमानंददास नायवा लाग्या अपने आ पद गायुं, तयारे प्रेमभां परमानंददास रागने पणु कम लूदी गया। रात्रिने समय अपने सारंगभां गायुं, ते पद—'आज नंदराय के आनंद लयो' (उपर लुओ)। ये पद गाया पछी परमानंददास प्रेमभां मूर्छा भाधने लूमिभां पडी गया। तयारे श्रीगुसांईजी ये पोते पोताना श्रीहस्तकी परमानंददासने उठाडीने पोथाभां जल लधने वेदमंत्र लणुने पोते परमानंददासना उपर धार्युं। तयारे उच्छलित प्रेम जे विकल करतो ते हृदयभां स्थिर थयो। तयारे परमानंददासने पछी लीलानो अनुभव कर्यो अपने गान क्युं। ये प्रमाणे परमानंददासना उपर श्रीगुसांईजीने कृपा करी। ते पछी आ पद परमानंददासने गायुं, ते पद—'हालरो हुलरावति माता' (उपर लुओ)।

भावप्रकाश—ये प्रकारे 'अखिल भुवन पति गरुडागामी' येम परमानंददासने कहुं 'अखिल भुवन पति येथी के श्रीभगवान गरुड उपर विराजमान ते पछा जगतना पति'छे, अपने नंदसुवन ठाकुर ते परमानंददासने कहुं, के ये भास स्वामी छे, आ कीर्तन सांलगीने श्रीगुसांईजी पोते परमानंददासनी उपर धर्यु। प्रसन्न

क्रम । सो जैसी लीला करी, सो स्फुरी । सो तैसे परमानंददास गाये ।
सो पद—

राग कान्हरो— रानीजु तिहारो घर सुवस बसो । सुनहु जंसोदा तिहारे
ढोटा कौ न्हात हु जिनि वार खसो ॥ १ ॥ कोऊ करत वेद मंगल धुनि कोऊ गावो
कोऊ हसो । निरखि निरखि मुख कमल नयन कौ आनंद प्रेम हिये हुलसो ॥ २ ॥
देति असीस सकल गोपीजन कोऊ अति आनंद लसौ । 'परमानंद' नंद घर
आनंद पुत्रजन्म भयो जगत जसो ॥ ३ ॥

सो यह असीसको पद परमानंददासने गायो । तब श्रीगुसांईजी
आपु अपने पुत्र श्रीगिरिधरजीको श्रीनवनीतप्रियजी के पास राखिके
दधिकारों किये । ता पाछे परमानंददास को संग लेके श्रीगुसांईजी
आपु श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये । सो दधिकारों देखिके
परमानंददास लीलारस में मगन होय गये । ता पाछे श्रीगुसांईजी
आपु श्रीगोवर्द्धननाथजीको राजभोग धरिके बाहिर आये । तब श्री-
गुसांईजी आपु परमानंददास की अलौकिक दसा देखके कहे, जो-
जैसे कुंभनदास को किसोर लीला में निरोध भयो, सो तैसे वाललीला
में परमानंददास को निरोध भयो है । पाछे परमानंददास श्रीगुसां-
ईजी को दंडवत करि, पर्वतते नीचे उतरे । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी
की ध्वजा को दंडवत करि, सुरभी कुंड ऊपर आयके अपने ठिकाने
कुटीमें आय बोलिवो छोड़ि दियो । सो नंदमहोत्सवके रसमें मगन
होयके परमानंददास अपनी देह छोड़िबे को विचार करिके सुरभी

थया. ते पछी परमानंददासे व्या पद कान्हरो रागमां करीने गाथुं. प्रेममां रागनां कभ
नहीं दीलानो कभ लेवीं दीला करी ते स्फुरी तेधुं परमानंददासे गाथुं. ते पद :—
'रानी तिहारो घर' (उपर लुभो). व्या व्याशीयतुं पद परमानंददासे गाथुं.
त्यारे श्रीगुसांइछमे पोते पोताना पुत्र श्रीगिरिधरछने श्रीनवनीतप्रियछनी पास
राभीने दधिकार क्यो. ते पछी परमानंददासने साथे लधने श्रीगुसांइछमे पोते श्री-
गोवर्द्धननाथछनां दर्शन क्यो. ते दधिकार क्येने परमानंददास दीलारसमां मगन
थध गया ते पछी श्रीगुसांइछ पोते श्रीगोवर्द्धननाथछने राजभोग धरीने पहार
पधयो. त्यारे श्रीगुसांइछ पोते परमानंददासनी अलौकिक दशा जेधने कहे, के जेभ
कुंभनदासनेा किशोरदीलाभां निरोध थयो तेभ पालदीलाभां परमानंददासनेा निरोध
थयो छे. पछी परमानंददास पर्वत नीचे उतरी श्री गोवर्द्धननाथछनी ध्वजने दंड-
वत करी सुरभीकुंड उपर आवीने पोताना ठेकाछे कुटीमां आवी पालतुं छोडी दीधुं.
पछी नंद महोत्सवनां रसमां मगन थध परमानंददास पोतानी देह छोडवानो विचार

कुंड ऊपर आयके सोये । और यहां श्रीगुसाईजी आपु श्रीनाथजी की राजभोग आरती करिके अनोमर करवाये । पाछें श्रीगुसाईजी आपु सेवकनसों पूछै, जो-आज राजभोग आरती के समय परमानंददास कों नाहीं देखे, सो कहां गये ? तब एक वैष्णवने श्रीगुसाईजी सों आय बिनती कीनी, जो-महाराज ! परमानंददास तो आजु विकल से दीसत हैं, और काहू सों बोलत नाहीं, और सुरभी कुंड पें जायके सोये हैं । तब श्रीगुसाईजी आपु वा वैष्णव कों संग ले सुरभी कुंड ऊपर पधारिके परमानंददास के पास आये । परमानंददास के माथे पर श्रीहस्त फेरिके श्रीगुसाईजी आपु परमानंददास सों कहें, जो-परमानंददास ! हम तुम्हारे मन की जानत हैं । जो अब तिहारो दरसन दुर्लभ भयो । तब परमानंददास ने उठि के श्रीगुसाईजी कों साष्टांग दंडवत किये । ता समय यह पद परमानंददास ने गायो । सो पद—

राग सारंग—प्रीति तो नंदनंदन सों कीजे । संपति विपति परे प्रतिपाले कृपा करें तो जीजे ॥ १ ॥ परम उदार चतुर चिंतामनि सेवा सुमरन माने । चरन कमल की छाया राखे अंतरगति की जानें ॥ २ ॥ वेद पुरान भागवत भाखे कियो भक्तन मन भायो । 'परमानंद' ईंद्र कौ वैभव विप्र सुदामा पायो ॥ ३ ॥

सो यह पद परमानंददास ने श्रीगुसाईजी कों सुनायो ।

भावप्रकाश—सो परमानंदजी ने या पद में श्रीगुसाईजी सों प्रार्थना कीनी, जो-प्रीत हू तुमसों करनी सो सदा कृपा एकरस करो । सो परम कृपालु,

इरीने सुरलीकुंड ऊपर आवीने स्रष्ट रखा. अही श्रीगुसाईजी पोते श्रीनाथजीनी राजभोग आर्ति इरीने अनासर कराव्या. पछी श्रीगुसाईजी पोते सेवकोने पूछे के आन राजभोग आर्तिना सभये परमानंददासने जेया नही. ते क्यां गया ? त्यारे अक वैष्णवे श्रीगुसाईजीने आवीने बिनती इरी, के महाराज ! परमानंददासजी तो आन विकल जेया देआय छे अने डोडथी भोलता नथी अने सुरलीकुंड ऊपर जधने स्रष्ट रखा छे. त्यारे श्रीगुसाईजी पोते ते वैष्णवने संगे लभ सुरलीकुंड ऊपर पधारिने परमानंददासनी पासे आव्या. परमानंददासना माथा ऊपर श्रीहस्त डेरवीने श्रीगुसाईजी पोते परमानंददासने छे, के परमानंददास ! अये तभारा मननी जखिअे छीअे. हवे तभारा दर्शन दुर्लभ थयां. त्यारे परमानंददासने उठीने श्रीगुसाईजीने साष्टांग दंडवत कयां. ते सभये आ पद परमानंददासने गायुं. ते पद :- 'प्रीति तो नंदनंदन सों कीजे' आ पद परमानंददासने श्रीगुसाईजीने संलगाव्युं.

भावप्रकाश—परमानंददासजीने आ पद में श्रीगुसाईजीने प्रार्थना इरी के

अपने हस्त कमल की छायां तें जन कों राखत हैं । या समय हू मोकों दरसन दे मेरे मस्तक ऊपर श्रीहस्तकमल धरे । सो मेरे अंतःकरणमें, जो-मेरो मनोरथ हतो सो पूरन कियो । सो वेद पुरान सब ही कहत हैं, जो-सदा भक्तन को भायो करि आनंद दिये हैं । जैसे एक समें इन्द्रकी पदवी लायक जीव कोई न देखे तब भगवान ही इन्द्र होय के इन्द्र को कार्य चलाये । सो प्रसाद वैष्णव सुदामा भक्तकों दिये । तामें सुदामा को वैभव पाये हू मोह न भयो । सो तैसे आपु जो-ब्रज में लीला करत हैं सो परमानंदरूप सों कृपा करके मोकों दान दिये । सो आपके गुन में कहां ताई कहौं । ऐसी प्रार्थना परमानंददासजी श्रीगुसांईजी सों किये ।

यह पद सुनिके श्रीगुसांईजी आप बहुत प्रसन्न भये । ता समय एक वैष्णव ने परमानंददास सों कछो, जो-मोकों कछु साधन बतावो सो मैं करों । तातें श्रीठाकुरंजी आपु मेरे ऊपर प्रसन्न होय के कृपा करें । तब परमानंददास वा वैष्णव सों प्रसन्न होय के कहे, जो-तुम मन लगाय के सुनो । जो सुगम उपाय है सो मैं कहूँ । या बात कों मन लगाय के सुनोगे तो फल-सिद्धि होयगी । सो या प्रकार प्रीत सों समाधान करि के परमानंददासने एक पद वा वैष्णव कों सुनायो । सो पद—

प्रीति पणु तमारथी करवी जे सदा कृपा अेक रस करे। परम कृपालु पोताना हस्त कमलनी छायाथी (पोताना) जनने राषे छो। आ समय पणु मने दर्शन दध मारा भरतक उपर श्रीहस्तकमल धर्या। मारा अंतःकरणमां मारे जे मनोरथ हुतो ते पूरणु कर्ये। वेद पुराणु अधांज कहे छे के सदा लक्ष्मणुं गमतुं करी आनंद आप्ये छे। जेम अेक समय इन्द्रनी पदवी लायक एव कोष न जेथे। त्यारे लगवाने इन्द्र थध ने इन्द्रनुं कार्य अलायुं। आ प्रसाद (कृपा) वैष्णव सुदामा लक्ष्मणुं आप्ये। तेमां सुदामाने वैभव भणे पणु मोह न थथे। तेथी पोते ब्रजमांज लीला करे छे। ते परमानंद रूपथी कृपा करीने मने दान दीधुं। आपना गुणु हुं कयां सुधी कहुं। अेवी प्रार्थना परमानंददासलुअे श्रीगुसांईलुने करी।

आ पद सांखणीने श्रीगुसांईलु आप घणा प्रसन्न थया। ते समय अेक वैष्णुवे परमानंददासने कहुं, के मने कंठ साधन बतावो ते हुं कहुं। तेथी श्रीठाकुरलु मारा उपर प्रसन्न थधने कृपा करे। त्यारे परमानंददास अे वैष्णुवने प्रसन्न थधने कहे के तमे मन लगाडीने सांखणो। जे सुगम उपाय छे ते हुं कहुं। आ वातने मन लगाडीने सांखणेशे तो इससिद्धि थशे। अे प्रकारे प्रीतिथी समाधान करीने परमानंददासे

राग भैरव—प्रात समै उठि करिय श्रीलक्ष्मन सुत गान । प्रगट भए श्रीवल्लभ प्रभु देत भक्ति दान ॥ १ ॥ श्रीविठ्ठलेस महाप्रभु रूप ही सुहान । श्रीगिरिधर श्रीगिरिधर उदय भयो भान ॥ २ ॥ श्रीगोविंद आनंदकंद कहा बरनों गुनगान । श्रीबालकृष्ण बालकैलि रूप ही सुहान ॥ ३ ॥ श्रीगोकुलनाथ प्रगट कियो मारग बखान । श्रीरघुनाथलाल देख मन्मथ ही लजान ॥ ४ ॥ श्रीयदुनाथ महाप्रभु पूरन भगवान । श्रीघनश्याम पूरन काम पोथी में ध्यान ॥ ५ ॥ पांडुरंग विठ्ठलेस करत वेद गान । 'परमानंद' निरखि लीला थके सुर विमान ॥ ६ ॥

सो या प्रकार यह कीर्तन परमानंददासने गायो । यह सुनि के श्रीगुसांईजी और सगरे वैष्णव प्रसन्न भये । ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु परमानंददास सों पूछे, जो-परमानंददाम ! अब तिहारो मन कहाँ है ? तब परमानंददासने यह कीर्तन सारंग राग में गायो । सो पद—

राग सारंग—राधे बैठी तिलक संवारति । मृगनैनी कुसुमाकर धरि नंद-सुवनकौ रूप विचारति ॥ १ ॥ दरपन हाथ सिंगार बनावति बासर सम जुग द्वारति । अंतर प्रीति श्यामसुंदरसों हरि संग केलि सम्हारति ॥ २ ॥ बासर गत रजनी ब्रज आवत मिलत गोवर्द्धनधारी । 'परमानंदस्वामी' के संगम मुदित भई ब्रजनारी ॥३॥

सो या प्रकार जुगल स्वरूप की लीला में मन लगाय के पर-नंददास देह छोड़ि के श्रीगोवर्द्धननाथजी की लीला में जायके प्राप्त भये । पाछें श्रीगुसांईजी गोपालपुर में आयके स्नान करिके पर्वतके ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी कों उत्थापन कराये । पाछें सेन पर्यंत सेवा सों पहाँचिके अनोसर करवाय पर्वत तें उतरि अपनी बैठक में आय बिराजे । तब सब वैष्णवननें परमानंददास की देह को अग्निसंस्कार कियो और पाछें गोपालपुर में आय के श्रीगुसांईजी के आगे बहोत

એક પદ વૈષ્ણવને સાંભળાવ્યું. તે પદ. 'પ્રાત સમયે ઉઠ કરિએ શ્રી લક્ષ્મણ સુત ગાન' (ઉપર જુઓ). આ પ્રકારે એ કીર્તન પરમાનંદદાસે ગાયું. એ સાંભળીને શ્રીગુસાંઈજી અને અધા વૈષ્ણવ પ્રસન્ન થયા. તે પછી શ્રીગુસાંઈજી પોતે પરમાનંદદાસને પૂછે કે, પરમાનંદદાસ હવે તમારું મન ક્યાં છે? ત્યારે પરમાનંદદાસે આ કીર્તન સારંગમાં ગાયું. 'રાધે બેઠી તિલક સંવારે' (ઉપર જુઓ) આ પ્રકારે જુગલ સ્વરૂપની લીલામાં મન લગાડીને પરમાનંદદાસ દેહ છોડીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની લીલામાં જઠને પ્રાપ્ત થયા. પછી શ્રીગુસાંઈજીએ ગોપાલપુરમાં આવીને સ્નાન કરીને પર્વતના ઉપર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીને ઉત્થાપન કરાવ્યા. પછી સેન પર્યંત સેવાથી પહોંચીને અનોસરે કરાવી પર્વતથી ઉતરી પોતાની બેઠકમાં આવી બિરાજ્યા. ત્યારે અધા વૈષ્ણવોએ પરમાનંદદાસની દેહને અગ્નિસંસ્કાર કર્યા. અને પછી ગોપાલપુરમાં આવીને

बड़ाई करन लागे । सो ता समय श्रीगुसांईजी आपु उन वैष्णवन के आगे यह वचन श्रीमुख सों कहे, जो-ये पुष्टिमार्ग में दोह 'सागर' भये । एक तो सूरदास और दूसरे परमानंददास । सो तिनको हृदय अगाधरस, भगवल्लीला रूप जहां रत्न भरे हैं । सो या प्रकार श्री-गुसांईजी आपु श्रीमुखसों परमानंददाम की सराहना किये । सो वे परमानंददासजी श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते । जिनके ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी सदा प्रसन्न रहते । तातें इनकी वार्ता को पार नहीं । सो अनिर्वचनीय है, सो कहां तांई कहिये ॥८२॥

* * * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, कुंभनदासजी गोरवा क्षत्री,
जमुनावते रहते, जिनके पद अष्टछाप में गाइयत हैं
तिनकी वार्ता को भाव कहन हैं—

भावप्रकाश—ये कुंभनदासजी लीला में श्रीठाकुरजी के 'अर्जुन' सखा अंतरंग तिनको प्राकृत्य हैं । सो दिवस की लीला में तो अर्जुन सखा हैं और रात्रि की लीला में विसाखा सखी हैं, सो श्रीस्वामिनीजी की । सो तिनको (विसाखाजी को) दूसरो स्वरूप कृष्णदास मेघन, सदा पृथ्वी परिक्रमा में श्रीआचार्यजी के संग रहते, और कुंभनदासजी सदा श्रीगोवर्द्धननाथजी के संग रहते । सो या

श्रीगुसांईजी आगण वणी अडाअ करवा लाग्या । ते समय श्रीगुसांईजी पोते अे वैष्णु-वानी आगण आ वचन श्रीमुखे कहुं, के पुष्टिभागिंमां ये सागर थया । अेके तो सूरदास अने भील परमानंददास । तेभुं हृदय अगाधरस (इप) भगवदीया इप ज्यां रत्न लयां छे । आ प्रकारे श्रीगुसांईजी पोते श्रीमुखथी परमानंददासनी सराहना करी । अे परमानंददास श्रीआचार्यजीना अेवा कृपापात्र भगवदीय हुता । जेभना ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी सदा प्रसन्न रहेता । तेथी अेभनी वार्ताना पार नथी । ते अनिर्वचनीय छे ते क्यां सुधी कहुअे ? ॥ वार्ता ८२ ॥

* * * *

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुना सेवक कुंभनदासजी गोरवा क्षत्री जमुनावते रहेता जेभनां पद अष्टछापमां गाइअे छीअे तेभनी वार्ताना लाव कहुअे छीअे ।

भावप्रकाश—अे कुंभनदासजी लीलामां श्रीठाकुरजीना 'अर्जुन' सखा अंतरंग तेभुं प्राकृत्य छे । अे दिवसनी लीलामां तो अर्जुन सखा छे अने रात्रिनी लीलामां विसाखा सखी छे । श्रीस्वामिनीजीनी, तेभुं भीलुं स्वइप कृष्णदास मेघन सदा पृथ्वी परिक्रमां श्रीआचार्यजीना साथे रहेता । अे लावथी कुंभनदासजी सखाभावमां

भावते कुंभनदासजी सखाभाव में अर्जुन सखारूप, और सखी भाव में विसाखारूप हैं। सो गिरिराज में आठ द्वार हैं। तामें एक द्वार आन्योर पास है। सो तहां की सेवा के ये मुखिया हैं। और गाम को नाम 'जमुनावता' यासों कहत हैं, जो-श्रीयमुनाजी के प्रवाह, सारस्वत कल्प में दौय हते। एक तो जमुनावता होय के आगरे के पास जात हतो, और एक चीरघाट होय श्रीगोकुल होयके। आगे दोऊ धारा एक मिलि सारस्वत कल्प में बहती। और ता समय आगरा आदि गाम नाहीं हतो। दोऊ धारा एक मिलिके आगे को गई हती। सो चीरघाट तें धारा होयके गिरिराज आवती, तासों पंचाध्याई को रास 'परासोली' में चंद्रसरोवर ऊपर कियो। सो ब्रजभक्त, अंतरधान के समय चंद्रसरोवर सों द्रुमलतान सों पूछत चली सो गोविन्दकुंड के पास होयके अप्सराकुंड ऊपर आयके श्रीठाकुरजी के चरणारविंद के दरसन भये। तासों अप्सराकुंड ऊपर चरनचिन्ह हैं। तहां ते आगे चलिके राधा सहचरी की बेनी गुही, सो सिंदूर, काजर सगरो विंगार कियो तासों वहां सिंदूरी, कजली और वाजनी सिला है। ता पाछें जब रुद्रकुंड ऊपर आयके राधा सहचरी को मान भयो। सो श्रीठाकुरजी सों कह्यो, जो-मोसों तो चलयो नाहीं जात है। तब श्रीठाकुर कांधे चढन (की कहिके ता) के मिष वृक्ष तरे ही अंतर्धान भये। तब राधा सहचरी रुदन कियो, जो- 'हा नाथ रमणप्रेष्ठ कासि र महाभुज ! दास्यास्ते कृपणया मे सखे दर्शय सन्निधिम्' ।

अर्जुन सखा रूप अने सखीभावमा विशाखा रूप छे। श्रीगिरिराजमा आठ द्वार छे। तेमां ओक द्वार आन्योर पास छे तेनी सेवाना ओ मुखिया छे। अमना गामतुं नाम जमुनावता ओथी कडे छे के श्रीयमुनालना प्रवाह सारस्वत कल्पमां भे हुता। ओक तो जमुनावता थधने आथानी पास जतो हुतो अने ओक चीरघाट थध श्रीगोकुल थधने। आगण गन्ने धारा ओक भणी सारस्वत कल्पमां 'वडेती। ते समये आथा आदि गाम न हुतां। गन्ने धारा ओक भणीने आगण गध हुती। चीरघाटथी धारा थधने श्रीगिरिराज आवती तेथी पंचाध्याधने रास परासोलीमां चंद्रसरोवर उपर कथे ब्रजभक्तो अंतरधान समये चंद्रसरोवरथी वृक्षलताओने पूछतां आद्यां ते गोविन्दकुंडनी पास थधने अप्सरा कुंड उपर आवीने श्रीठाकुरलनां चरणारविंदनां दर्शन थयां। तेथी अप्सरा कुंड उपर चरनचिन्ह छे। त्यांथी आगण आदीने राधा सहचरीनी वेछी गूथी। ते सिंदूर, काजल भयो शृंगार कथे तेथी त्यां सिंदूरी, काजली अने वाजनी सिला छे ते पछी न्यारे रुद्रकुंड उपर आवीने राधा सहचरीने मान थयुं त्यारे श्रीठाकुरने कहुं, के 'भारथी नथी अदातुं त्यारे श्रीठाकुरल कंधा उपर अढावाना (ओ) आहुने

तासों वा कुंड को नाम 'रुद्रकुंड' है। सो अब ताई लोग वासों रुद्रकुंड कहत हैं। पाछें तहां सब गोपी आय मिली। पाछें आगे चलिके 'जान' 'अजान' वृक्ष सों पूछते-पूछते जमुनावता श्रीजमुनाजीकी पुलिन में गोपिका गीत ('जयति तेऽधिकं') गायके सब भक्तनने रुदन कियो। तब श्रीठाकुरजी आपु प्रकट-होयके फेरि 'परासोली' चंद्रसरोवरपें रास किये, सो श्रम भयो। तब श्रीजमुनाजी के जल में जलविहार किये। सो या प्रकार सारस्वत-कल्पकी पंचाध्याई को रास श्रीगिरिराज के पास है। और ब्रजभक्त हृदय र श्रीठाकुरजी के मिलनार्थ-दूरि गई। सो अधियागे देखिके उहांते किये। 'तमः प्रविष्टमालक्ष्य ततो निववृत्तुर्हरेः'। इति।

सो यह अधियारो श्यामढाक के आगे 'मामई' गाम हैं। सो तहां स्याम-वन है, सो महासघन। ताते वहां पंचाध्याई के अनुसार-सगरे स्थल दरसन देत हैं। और कालीदह घाटते हू श्रीवृंदावन कहत हैं। तहां हू वंसीवट है। तहां अनेक श्वेतवाराहकल्प में पंचाध्याई को रास उहां ही किये हैं। और सारस्वतकल्प में शरदऋतु किए, सो 'परासोली'-श्रीगिरिराज ऊपर किये। पाछें वसंत चैत्र वैशाख को रास केसीघाट पास वंसीवट नीचे किये। सो या प्रकार राम दोऊ ठिकाने। परंतु मुख्य पंचाध्याई सारस्वतकल्प को रास गिरिराज को। या प्रकार लीला के

वृक्ष नीचे अंतर्धान थछ गया। त्पारे राधा सहचरीके इहन कथुं। के 'ह्य नाथ रमण्य-प्रेष्ठ' (उपर लुख्ये)। तेथी के कुंडतुं नाम इद्रकुंड छे। ते लुख्य सुधी लोकां केने इद्रकुंड कहे छे। पछी त्या णधी गोपी आवी भणी। पछी आगण आलीने 'वन, ' 'अजान' वृक्षने पूछतां पूछतां-जमुनावता-श्रीजमुनाजीनी पुलिनमां ' गोपिका गीत ' गाछने अंधा लक्ष्मणेके इहन कथुं। त्पारे श्रीठाकुरलके पोते प्रकट थछने इरी परासोली चंद्रसरोवर उपर रास कथुं। ते श्रम थये। त्पारे श्रीजमुनाजीना जलमां जलविहार कथुं। के प्रकारे सारस्वतकल्पनी पंचाध्याछने रास श्रीगिरिराजलनी पास छे। वणी ब्रज-लक्ष्मणे जेणतां-जेणतां श्रीठाकुरलना भणवाने माटे हूर गयां त्यां अंधाडं लेछने त्यांथी इयां। ' तमः प्रविष्ट ' (उपर लुख्ये) के अंधाडं श्यामढाकनी आगण 'सामई' गाम छे त्यां श्यामवन छे ते महासघन। त्यांथी इयां त्यां (गिरिराजलमां) पंचा-ध्याछने अनुसार अंधा स्थल दर्शन हे छे अने कालीदह घाटने पणु वृंदावन कहे छे। त्यां पणु वंसीवट छे। त्यां अनेक श्वेतवाराह कल्पमां पंचाध्याछने रास त्यांज कथुं छे। अने सारस्वतकल्पमां शरदऋतु इरी (रास कथुं) ते परासोली श्रीगिरिराज उपर कथुं। पछी वसंत चैत्र वैशाखने रास केसीघाट पास वंसीवट नीचे कथुं। आ प्रकारे रास छे जगाके। परंतु मुख्य पंचाध्याछ सारस्वतकल्पने रास गिरिराजने। आ प्रकारे

भेद हैं। तासों 'जमनावता' में एक धारा श्रीयमुनाजी की सारस्वतकल्प में बहती, तासों वा गाम को नाम 'जमुनावता' है। सो नंदगाम बरसाने के मध्य संकेत पास धारा होयके श्रीयमुनावता आई। तासों संकेत के पास श्रीयमुनाजी के पधारिवे को चिह्न है। सो या प्रकार यातें कह्यो, जो-अवके जीव को विश्वास दृढ होत नहीं है। सो सब चिह्ननों देखे, सुने तब विश्वास होय। और जब फल सिद्ध होय, तब भाव बढ़े, तासों खोलिके कहे।

वार्ता-प्रसंग १—सो जमुनावता में कुंभनादास रहते। सो परासोली चंद्र सरोवर के ऊपर कुंभनदास के बापदादान के खेत हते। तहां कुंभनदाम खेती करते। सो परासोली में कुंभनदाम खेत अर्थ बहोत रहत हते। उन कुंभनदास को बालपने तें गृहासक्ति नहीं, और झूठ बोलते नहीं, और पापादिक कर्म नहीं करते। सूधे ब्रजवासी की रीति सों रहते। जो जब कुंभनदास बड़े भये। तब 'जेत' (गाँव) के पास बहुलावन है तहां कुंभनदास को व्याह भयो, सो स्त्री साधारन आई, लीला संबंधी तो नहीं। परंतु कुंभनदासजी सरीखे वैष्णव भगवदीयन को संग निष्फल जाय नहीं, सो उद्धार होयगो। परंतु अब ही श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगिरिराज ऊपर प्रकटे नहीं। जब श्रीगोवर्द्धननाथजी को अपने पास बुलावेंगे, तब श्री-

दीवाने लेह छे। तेथी जमनावतामां ओक धारा श्रीयमुनाजी सारस्वतकल्पमां वहेती। तेथी ओ गामनुं नाम जमनावता छे। ते नंदगाम बरसाना मध्य संकेत पासे धारा थधने श्रीयमुनावता आवी। तेथी संकेतनी पासे श्रीयमुनाजीने पधारवानुं चिन्ह छे। आ प्रकार ओथी कह्यो, के आजना ज्येने विश्वास दृढ थतो नथी जधा चिन्होने जुओ सांभणे त्यारे विश्वास थाय। अने त्यारे इह सिद्ध थाय। त्यारे लाव वधे तेथी जोदीने कह्युं।

वार्ता-प्रसंग १-जमुनावतामां कुंभनदास रहेता त्यां परासोली चंद्रसरोवर उपर कुंभनदासना बापदादानां जेतर हुतां। त्यां कुंभनदासज्येती करता। ते परासोलीमां कुंभनदास जेती भाटे धरुं रहेता हुता। ओमरे आलपंशुथी गृहासक्ति न्होती। जुहुं जोसता नही। अने पापादिक कर्म न करता। सीधे ब्रजवासीनी रीतिथी रहेता। ज्यारे कुंभनदासज्ये भाटा थया त्यारे 'जेत' गामनी पासे बहुलावन छे त्यां कुंभनदासनुं लगन थयुं। ते स्त्री साधारण आवी। लीला संबंधी तो नहुती। परंतु कुंभनदास संस्था वैष्णव भगवदीयनो संग निष्फल जाय नही। तेथी उद्धार थरो। परंतु लभणां श्रीगोवर्द्धननाथज्ये श्रीगिरिराज उपर प्रकटयां नथी। ज्यारे श्री गोवर्द्धननाथज्ये श्रीगिरिराज उपर प्रकट थधने श्रीआचार्यज्येने जोतानी पासे

आचार्यजी आपु सरन लेयगें, और तब ये भगवदीय प्रसिद्ध होयगें । सो एक समय श्रीआचार्यजी आपु पृथ्वी-परिक्रमा करत दक्षिन में झारखंड में पधारे । सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीआचार्यजी सों कहे, जो-हम श्रीगोवर्द्धन में प्रकटे हैं, सो आपु यहां आयके हमकों बाहिर पधरायके हमारी सेवा जगत में प्रगट करि प्रकास करो । तब श्रीआचार्यजी आपु पृथ्वी परिक्रमा उहां झारखंड में राखिके सूधे ब्रज कों पधारे । तब दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, माधवभट्ट, नारायणदास और रामदास सिकंदरपुरवारे ये पांच सेवक श्रीआचार्यजी के संग हते । सो तब श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धन पर्वत के नीचे आन्योर में सदूपांडे के द्वारपे एक चोतरा हतो तापे आय विराजे । पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी के प्राकट्य को प्रकार श्रीआचार्यजी सदूपांडे, और उनके भाई माणिकचंद पांडे, नरो भवानी, ये सब सेवक भये हते तिनसों पूछयो । सो सब प्रकार ऊपर सदूपांडे की वार्ता में कहि आये हैं । पाछें रामदास चौहान पूछरी पास गुफा में रहते सो सेवक भये, तिनकों श्रीआचार्यजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा सोंपी । सो रामदास ब्रजवासी आदि औरहू सेवक भये । सो कुंभनदास 'जमुनावता' गाम में रहते । तहां ये समाचार सुने

षोडशवशे त्यारे श्रीआचार्यजी पौते (तेमने) शरणे लेशे अने त्यारे अने भगवदीय प्रसिद्ध थशे. ते अके समय श्रीआचार्यजी पौते पृथ्वी-परिक्रमा करतां दक्षिणुमां झारखंडमां पधार्या. त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीआचार्यजीने कहे, के अमे श्रीगोवर्द्धनमां प्रकट्या छीअे तेथी आप अहूं आवीने अमने अहार पधरावीने अमारी सेवा जगतमां प्रकट करी प्रकाश करे. त्यारे श्रीआचार्यजी पौते पृथ्वी-परिक्रमा त्यां झारखंडमां राणीने सीधा ब्रजमां पधार्या. त्यारे दामोदरदास हरसानी, कृष्णदास मेघन, माधवभट्ट, नारायणदास अने रामदास सिकंदरपुरवाणा अने पांच सेवक श्रीआचार्यजीनी साथे हुता. त्यारे श्रीआचार्यजी श्रीगिरिनाथ पर्वतनी नीचे आन्योरमां सदूपांडेना द्वार उपर चोतरा हुतो तेनी उपर आवी पिराज्या. पछी श्रीगोवर्द्धननाथजीना प्राकट्यने प्रकार श्रीआचार्यजी सदूपांडे अने अमेना लाल भाइकचंद पांडे नरो भवानी अने अंधा सेवक थया हुता तेमने पूछयो. ते अंधे प्रकार उपर सदूपांडेनी वार्तामां कही आव्या छीअे. पछी रामदास चौहान पूछरी पास गुफांमां रहता ते सेवक थया. तेमने श्रीआचार्यजीअे श्रीगोवर्द्धननाथजीनी सेवा सोंपी. रामदास ब्रजवासी आदि भील पणु सेवक थया. अने कुंभनदास जमुनावता गाममां रहता हुता.

जो एक बड़े महापुरुष आन्योर में आये हैं। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीठाकुरजी श्रीगोवर्द्धन पर्वत में सों प्रकट करे हैं, और सदूपांडे आदि ब्रजवासी बहोत लोग सेवक भये हैं। तब कुंभनदास सुनिके अपनी स्त्री सों कहे, जो-अन्योर में चलिके श्रीआचार्यजी के सेवक हूजिये, सो इनकी कृपातें श्रीठाकुरजी कृपा करेंगे। सो तब स्त्रीने कही, जो-मैं चलूंगी, जो मेरे कोई संतति बेटा नहीं है, सो वे महापुरुष देंय तो होय। सो या प्रकार बिचार करिके दोऊ जनें श्रीआचार्यजीके पास आयके दंडवत करी। सो तब श्रीआचार्यजी आपु पूछे, जो-कुंभनदाम! आये? सो तब कुंभनदास दंडवत करि बिनती करी, जो-महाराज! बहोत दिनतें भटकत हतो; सो अब आपु मो ऊपर कृपा करो। सो कुंभनदास तो दैवीजीव हैं, सो श्रीआचार्यजी के दरसन करत ही श्रीआचार्यजी के स्वरूप को ज्ञान होय गयो। तब श्रीआचार्यजी आपु कुंभनदास सों कहे, जो-तुम स्त्री पुरुष दोउ जने न्हाय आवो। तब दोऊ जने संकर्षणकुंड में न्हायके श्रीआचार्यजी के पास आये। तब श्रीआचार्यजी आपु कुंभनदास और उनकी स्त्री कों नाम सुनाये। तब वा स्त्री ने श्रीआचार्यजी सों बिनती करी, जो-महाराज! आपु बड़े महापुरुष हो, मेरे बेटा नाहीं है, तासों

त्यां (ऐभणु) ऐ सभाचार सांलण्या, के ऐक भोटा महापुरुष आन्योरमां आव्या छे. ऐभणु श्रीगोवर्द्धननाथ श्रीठाकुरने श्रीगोवर्द्धन पर्वतमांथी प्रकट कर्या छे अने सह पांडे आदि ब्रजवासी घणु लोके (ऐभना) सेवक थया छे. त्यारे कुंभनदास ऐ सांलणीने पोतानी स्त्रीने कहे, के आन्योरमां यादीने श्रीआचार्यना सेवक थयऐ. ऐभनी कृपाथी श्रीठाकुर कृपा करे. त्यारे स्त्रीऐ कथुं, के हुं पणु यादीश. मारे केड संतती भेटा नथी. तेथी ऐ महापुरुष आपे तो थाय. या प्रकारे विचार करीने अने न्णुंऐ श्रीआचार्यनी पासे आवीने दंडवत कर्या. त्यारे श्रीआचार्यनी पोते पूछे के कुंभनदास! आव्या? त्यारे कुंभनदासे दंडवत करी बिनती करी, के महाराज! घणु द्विसथी लटकतो हुतो हुवे आप मारे उपर कृपा करे. ते कुंभनदास तो दैवी लव छे. तेथी श्रीआचार्यनां दर्शन करतां श्रीआचार्यना स्वइपुं ज्ञान थय गयुं. त्यारे श्रीआचार्यनी पोते कुंभनदासने कहे, के तमे स्त्री पुत्र अने न्णुं न्हाय आवो. त्यारे अने न्णु संकर्षण कुंडमां न्हायने श्रीआचार्यनी पासे आव्यां. त्यारे श्रीआचार्यनी पोते कुंभनदास अने ऐभनी स्त्रीने नाम सांलणाव्युं. त्यारे स्त्रीऐ आचार्यने बिनती करी, के महाराज! आप भोटा महापुरुष छे. मारे

आपु कृपा करिके देऊ । तब श्रीआचार्यजी आपु कृपा करिके प्रसन्न होयके कहे, जो-तेरे सान बेटा होयगें, तू चिंता मति करे । सो तब वह स्त्री अपने मनमें बहोत प्रसन्न भई । तब कुंभनदास अपनी स्त्री सों कही, जो-यह कहा तेनें श्रीआचार्यजी के पास मांग्यो । जो श्रीठाकुरजी मांगती तो श्रीठाकुरजी देते । तब वा स्त्रीने कही, जो-मोकों चाहियत हतो सो मैंने मांग्यो, और जो तुम कों चाहिये सो तुम मांगि लेहु । तब कुंभनदास चुप होय रहे । ता पाछें श्रीआचार्यजी आपु श्रीगोवर्द्धनधर को छोटी सो मंदिर बनवायके ता मंदिर में श्रीगोवर्द्धनधर को पधरायके रामदास चौहान को सेवा की आज्ञा दीनी । सो रामदास, सद्गुण्डे आदि ब्रजवासी सब सीधो सामग्री ले आवते । सो श्रीगोवर्द्धनधर को पधरायके रामदास चौहान को सेवा की आज्ञा दीनी । सो रामदास, सद्गुण्डे आदि ब्रजवासी सब सीधो सामग्री ले आवते । सो दूध दही माग्वन श्रीगोवर्द्धननाथजी को भोग धरिके ता महाप्रसाद सों रामदास निर्वाह करते । और ब्रजवासी, जो सेवक कुंभनदास आदि भक्त, तिनकों श्रीआचार्यजी ने आज्ञा दीनी, जो-ये श्रीगोवर्द्धननाथजी हमारो सर्वस्व हैं, तासों इनकी सेवा में तुम तत्पर रहियो, और श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन

येटा नथी तेथी आपु कृपा करीने हो । त्यारे श्रीआचार्यजी पोते कृपा करीने प्रसन्न थयने कहे के तारे सात येटा थये तू चिंता न करे, त्यारे ते स्त्री पोताना मनमां भुहु प्रसन्न थय त्यारे कुंभनदासे पोतानी स्त्रीने कछु, के आ शुं ते श्रीआचार्यजी पास मांग्युं ? श्रीठाकुरजी मांगती तो श्रीठाकुरजी देता, त्यारे स्त्रीने कछु, के मने के जेधुं लुतुं ते मे मांग्युं अने के तभारे जेधये ते तमे भागी हो । त्यारे कुंभनदास चूप थय रह्या, ते पछी श्रीआचार्यजी पोते श्रीगोवर्द्धनधरने नातुं सरणुं मंदिर अनापराधीने ते मंदिरमां श्रीगोवर्द्धनधरने पधरावीने रामदास योहाणुने सेवानी आज्ञा आपी, त्यारे रामदास, सद्गुण्डे आदि ब्रजवासी भुं सीधुं सामग्री ले आवता, अरीते श्रीगोवर्द्धनधरने पधरावीने रामदास योहाणुने सेवानी आज्ञा आपी, पछी रामदास, सद्गुण्डे आदि ब्रजवासी भुं सीधुं सामग्री लय आवता ते दूध दही माग्वन श्रीगोवर्द्धननाथजीने लोग धरीने ते महाप्रसादथी निर्वाह करता, वणी ब्रजवासी, के सेवक कुंभनदास आदि भक्त तेमने श्रीआचार्यजीने आज्ञा आपी के अरी श्रीगोवर्द्धननाथजी अमाइं सर्वस्व छे तेथी अमनी सेवामां तमे तत्पर रह्ये, अने श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन कर्या चिंता महाप्रसाद न लेता, अने श्रीगोवर्द्धननाथजीने सेवा

किये बिना महाप्रसाद मति लीजियो । और श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा सावधानी सों करियो । सो कुंभनदास कीर्तन बहुत सुन्दर गावते । कंठहू इनको बहोत सुन्दर हतो । तासों कुंभनदास सों श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो—तुम समय समय के कीर्तन नित्य श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सुनाइयो । सो प्रातःकाल श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धननाथजी कों जगायके कुंभनदास कों कहे, जो—कछु भगवल्लीला वरणन करो । तब कुंभनदास श्रीगोवर्द्धननाथजी कों दंडवत करिके पहले यह पद गायो । सो पद—

राग बिलावल—सांझ के साँचे बोल तिहारे ।

रजनी अनत जगे नंदनंदन आप निपट सवारे ॥ १ ॥

आतुर भए नीलपट ओढे पीयरे बसन बिसारे ।

‘कुंभनदास प्रभु’ गोवर्द्धनधर भले बचन प्रतिपारे ॥ २ ॥

सो यह कीर्तन कुंभनदास के मुखतें सुनिके श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो—कुंभनदास ! निकुंज—लीला संबंधी रस को अनुभव भयो ? तब कुंभनदास ने दंडवत कीनी और कह्यो, जो—महाराज ! आपु की कृपातें । तब श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो—तिहारे बडे भाग्य हैं । जो—प्रथम प्रभु तुमकों प्रमेय बलको अनुभव बताये, तासों तुम सदा हरिरस में मगन रहोगे । तब कुंभनदास ने बिनती कीनी जो—महाराज ! भोकों तो सर्वोपरि याही रस को अनुभव कृपा करिके दीजिये । सो कुंभनदास सगरे कीर्तन युगल स्वरूप संबंधी किये । सो

सावधानीथी करेजे । ओ कुंभनदास कीर्तन अहुण सुंदर गाता । कंठ पणु अमनो अहु सुंदर हतो । तेथी कुंभनदासने श्रीआचार्यजी पोते कहे, के तमे समय समयनां कीर्तन नित्य श्रीगोवर्द्धननाथजीने संभणायजे । प्रातःकाल श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धननाथजी ने जगायने कुंभनदासने कहे, के कंठ भगवल्लीला वरुन करे । त्यारे कुंभनदासे श्रीगोवर्द्धननाथजीने दंडवत करीने पड़ेसां आ पद गायु—पद ‘सांझके सांचे भोल तिहारे’ आ कीर्तन कुंभनदासना भुअथी सांभणीने श्रीआचार्यजी पोते कहे, के कुंभनदास ! निकुंज लीला संबंधी रसना अनुभव थयो ? त्यारे कुंभनदासे दंडवत करीने कहुं, के महाराज आपनी कृपाथी । त्यारे श्रीआचार्यजी पोते कहे, तमारं भाटां भाग्य छे के प्रथम प्रभुअे तमने प्रमेय असनो अनुभव जणाव्यो तेथी तमे सदा हरिरसमां मगन रहेथो । त्यारे कुंभनदासे बिनती करी के महाराज ! मने तो सर्वोपरि आ ज रसनो अनुभव कृपा करीने आपो । तेथी कुंभनदासे अथां कीर्तन युगल स्वरूप संबंधी

वधाई, पलना, बाललीला गाई नहीं। सो ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये। या प्रकार कुंभनदामजी आदि वैष्णव ऊपर कृपा करि श्रीआचार्यजी दक्षिन के झारखंड में पृथ्वी-परिक्रमा छोडिके पधारे हते, सो फेरि जीवन की ऊपर कृपा करन के अर्थ परिक्रमा करन पधारे।

वार्ता-प्रसंग २—और यहां कुंभनदामजी नित्य सवारे 'जमुनावता' तें श्रीगिरिराज ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आवते सो समय २ के कीर्तन करते। श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु कुंभनदास सों सानुभावता जनावते, सो संग खेलन लागे। और खेल की वार्ता करते। पाछें कछुक दिनमें एक म्लेच्छ को उपद्रव भयो, सो सगरे गाम कों लूटत भारत पश्चिमतें आयो। ताके डेरा श्रीगिरिराजतें पांच कोस आगे भये। तब सद्पांडे, माणिकचंद पांडे, रामदासजी, कुंभनदासजी ये चारि वैष्णवननैं अपने मनमें विचार कियो, जो-यह म्लेच्छ बुरो आयो है, जो-भगवद्धर्म को द्वेषी है। तासों कहा विचार करनो? सो ये चारों वैष्णव श्रीनाथजी के अंतरंग हते, सो इन सों श्रीगोवर्द्धननाथजी वार्ता करते। तासों इन चार्यों वैष्णवननैं मंदिर में जायके श्रीनाथजी सों पूछी, जो-महराज ! अब कैसी करें? जो धर्म को द्वेषी म्लेच्छ लूटत आवत है। तासों आपु कृपा करिके

धर्यां वधाइ, पलना, बाललीला गाइ नही अवा कृपापात्र भगवदीय थया। अे प्रकार कुंभनदासज आदि वैष्णव उपर कृपा करी श्रीआचार्यज दक्षिणा आरभंडमां पृथ्वी परिक्रमा छोडीने पधार्या हुता ते करी लवोनी उपर कृपा करवाने भाटे परिक्रमा करवा पधार्या।

वार्ता प्रसंग-२—अने अहीं कुंभनदासज नित्य सवारे 'जमुनावता' थी श्री गिरिराज उपर श्रीगोवर्द्धननाथजनां दर्शने आयता। त्यारे समय समयनां कीर्तन करता। श्रीगोवर्द्धननाथज पोते कुंभनदासने सानुभावता जलुयता। साथे रमवा लाग्या अने भेदनी वार्ता करता। पछी थोडाक द्वियसमां अेक यवनतो उपद्रव थयो अे अंधां गामोने लुटतो भारते पश्चिमथी आय्यो। तेतो मुझम श्रीगिरिराजजथी पांच गाठे आगण थयो। त्यारे सह पांडे, माणिकचंद पांडे, रामदासज, कुंभनदासज अे यार वैष्णवोअे पोताना मनमां विचार कर्यो के आ यवन भराथ आय्यो छे। अे भगवद्धर्मना द्वेषी छे। तेथी शे विचार करयो? अे यारे वैष्णव श्रीनाथजना अंतरंग हुता। अभनाथी श्रीगोवर्द्धननाथज वार्ता करता। तेथी अे यारे वैष्णवोअे मंदिरमां जधने श्रीनाथजने पूछ्युं, के महराज ! हुवे शुं करीअे ? धर्मना द्वेषी यवन

किये बिना महाप्रसाद मति लीजियो । और श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा सावधानी सों करियो । सो कुंभनदास कीर्तन बहुत सुन्दर गावते । कंठहू इनको बहोत सुन्दर हतो । तासों कुंभनदास सों श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो—तुम समय समय के कीर्तन नित्य श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सुनाइयो । सो प्रातःकाल श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धननाथजी कों जगायके कुंभनदास कों कहे, जो—कछु भगवल्लीला वरणन करो । तब कुंभनदास श्रीगोवर्द्धननाथजी कों दंडवत करिके पहले यह पद गायो । सो पद—

राग बिलावल—सांझ के साँचे बोल तिहारे ।

रजनी अनत जगे नंदनंदन आप निपट सवारे ॥ १ ॥

आतुर भए नीलपट ओढे पीयरे बसन बिसारे ।

‘कुंभनदास प्रभु’ गोवर्द्धनघर भले बचन प्रतिपारे ॥ २ ॥

सो यह कीर्तन कुंभनदास के सुखतें सुनिके श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो—कुंभनदास ! निकुंज—लीला संबंधी रस को अनुभव भयो ? तब कुंभनदास ने दंडवत कीनी और कह्यो, जो—महाराज ! आपु की कृपातें । तब श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो—तिहारे बडे भाग्य हैं । जो—प्रथम प्रभु तुमकों प्रमेय बलको अनुभव बताये, तासों तुम सदा हरिरस में मगन रहोगे । तब कुंभनदास ने विनती कीनी जो—महाराज ! भोकों तो सर्वोपरि याही रस को अनुभव कृपा करिके दीजिये । सो कुंभनदास सगरे कीर्तन युगल स्वरूप संबंधी किये । सो

सावधानीथी करजे. ओ कुंभनदास कीर्तन अहुण सुंदर गाता. कंठ पल्लु अमनो अहु सुंदर हुतो. तेथी कुंभनदासने श्रीआचार्यजी पोते कहे, के तमे समय समयनां कीर्तन नित्य श्रीगोवर्द्धननाथजीने संलणायजे. प्रातःकाल श्रीआचार्यजी श्रीगोवर्द्धननाथजीने जगावीने कुंभनदासने कहे, के कंठ भगवल्लीला वरणन करे. त्यारे कुंभनदासे श्रीगोवर्द्धननाथजीने दंडवत करीने पड़ेसां आ पद गाथुं-पद ‘सांझके सांजे भोस तिहारे’ आ कीर्तन कुंभनदासना भुअथी सांलणीने श्रीआचार्यजी पोते कहे, के कुंभनदास ! निकुंज लीला संबंधी रसना अनुभव थयो ? त्यारे कुंभनदासे दंडवत करीने कछुं, के महाराज आपनी कृपाथी. त्यारे श्रीआचार्यजी पोते कहे, तभारां भोरां भाग्य छे के प्रथमज प्रभुअे तभने प्रमेय अलना अनुभव जल्लाव्यो तेथी तमे सदा हरिरसमां मगन रहेशो. त्यारे कुंभनदासे विनती करी के महाराज ! भने तो सर्वोपरि आ ज रसना अनुभव कृपा करीने आपो. तेथी कुंभनदासे अथां कीर्तन युगल स्वरूप संबंधी

वधाई, पलना, बाललीला गाई नहीं। सो ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये। या प्रकार कुंभनदामजी आदि वैष्णव ऊपर कृपा करि श्रीआचार्यजी दक्षिन के झारखंड में पृथ्वी-परिक्रमा छोड़िके पधारे हते, सो फेरि जीवन की ऊपर कृपा करन के अर्थ परिक्रमा करन पधारे।

वार्ता-प्रसंग २—और यहां कुंभनदामजी नित्य सवारे 'जसुनावता' तें श्रीगिरिराज ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आवते सो समय २ के कीर्तन करते। श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु कुंभनदास सों सानुभावता जनावते, सो संग खेलन लागे। और खेल की वार्ता करते। पाछें कछुक दिनमें एक म्लेच्छ को उपद्रव भयो, सो सगरे गाम कों लूटत भारत पश्चिमतें आयो। ताके डेरा श्रीगिरिराजतें पांचकोस आगे भये। तब सदूपांडे, माणिकचंद पांडे, रामदासजी, कुंभनदासजी ये चारि वैष्णवननैं अपने मनमें विचार कियो, जो-यह म्लेच्छ बुरो आयो है, जो-भगवद्धर्म को द्वेषी है। तासों कहा विचार करनो? सो ये चारों वैष्णव श्रीनाथजी के अंतरंग हते, सो इन सों श्रीगोवर्द्धननाथजी वार्ता करते। तासों इन चारयों वैष्णवननैं मंदिर में जायके श्रीनाथजी सों पूछी, जो-महराज ! अब कैसी करें? जो धर्म को द्वेषी म्लेच्छ लूटत आवत है। तासों आपु कृपा करिके

धर्या। पधाइ, पलना, बाललीला गाइ नही जेवा कृपापात्र भगवदीय थया। जे प्रकारे कुंभनदासज आदि वैष्णव उपर कृपा करी श्रीआचार्यज दक्षिणता झारखंडमां पृथ्वी परिक्रमा छोडीने पधार्या हुता ते श्री जेवानी उपर कृपा करवाने माटे परिक्रमा करवा पधार्या।

वार्ता प्रसंग-२—अने अहों कुंभनदासज नित्य सवारे 'जसुनावता' थी श्री गिरिराज उपर श्रीगोवर्द्धननाथजनां दर्शने आवता। तयारे समय समयतां कीर्तन करता। श्रीगोवर्द्धननाथज पोते कुंभनदासने सानुभावता जणावता। साथे रभवा लाग्या अने जेसनी वार्ता करता। पछी थोडाक दिनसमां जेक यवनने उपद्रव थयो जे अथां गामने लुटतो भारत पश्चिमथी आव्यो। तेने मुकाम श्रीगिरिराजजधी पांच गाठ आवण थयो। तयारे सह पांडे, माणिकचंद पांडे, रामदासज, कुंभनदासज जे चार वैष्णवो जे पोताना मनमां विचार कर्या के आ यवन पराज आव्यो छे। जे भगवद्धर्मने द्वेषी छे। तेथी शे विचार करयो? जे चारे वैष्णव श्रीनाथजना अंतरंग हुता। जेभनाथी श्रीगोवर्द्धननाथज वार्ता करता। तेथी जे चारे वैष्णवो जे मंदिरमां जने श्रीनाथजने पूछ्युं, के महराज ! हुवे शुं करीजे? धर्मने द्वेषी यवन

आज्ञा करो सो करै । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी यह आज्ञा किये, जो-हमकों तुम टोंड के घने में पधराय के ले चलो । हमारो मन वहाँ पधारिवे को है । तब चारयों वैष्णव नें बिनती कीनी, जो-महाराज ! या समय असवारी कहा चहिये ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-सदूपांडे के घर भैंसा है, सोई ले आवो, तापे चढ़िके चलूंगो । पाछें सदूपांडे वा भैंसा कों ले आये । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी वा भैंसा पे चढ़िके पधारे ।

भावप्रकाश—सो वह भैंसा दैवी जीव हतो । सो वह लीला में श्री-वृषभानजी के घर की मालिन है । सो नित्य फूलन की माला श्रीवृषभानजीके घर करिके ले आवती । सो लीला में 'वृन्दा' याको नाम है । एक दिन श्रीस्वामिनीजी वगीची में पधारी । ता समय वृन्दा के पास एक बेटी हती, सो ताकों खवावती हती । सो याने उठिके न तो दंडवत कीनी और न समाधान कियो । तब हू श्रीस्वामिनीजी ने यासों कछु कह्यो नहीं । ता पाछें श्रीस्वामिनीजी ने वृन्दा सों कही, जो-तू श्रीनंदरायजी के घर जायके श्रीठाकुरजी सों समस्या सों हमारो यहाँ पधारिवो कहियो । तब श्रीस्वामिनीजी के वचन सुनिके वृन्दा ने कही, जो-अवही मेरे माला करिके श्रीवृषभानजी कों पठावनी है, तासों मैं तो जात नहीं । यह

लूटतो र आवे छे. तेथी आप कृपा करीने आज्ञा करे. तेभ करीये. त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथजीये ये आज्ञा करी के अपने तमे टोंडना घनामां पधरावने लछ आवे। अमाइं मन त्यां पधारवानुं छे. त्यारे त्यारे वैष्णवोये बिनती करी के महाराज ! आ समये सवारी कछ जेधये ? त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, के सह पांडेना घरे पाडे छे तेज लछ आवे। तेनी उपर यदीने यादीश. पछी सह पांडे ते पाडाने लछ आव्या. त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथजी ये पाडा उपर यदीने पधार्या.

भावप्रकाश—ये पाडे देवी लव हुते। ये लीलामां श्रीवृषभानजीना घरनी मालिनी छे. नित्य कूलेनी भाणा श्रीवृषभानजीना घरे करीने लछ आवती. लीलामां 'वृन्दा' येनुं नाम छे. एक दिवस श्रीस्वामिनीजी भगीचां पधारी त्यारे वृन्दाणी पासे एक बेटी हुती. ते तेने अववावती हुती. येथी येथे उठीने न तो दंडवत करी अने न समाधान कर्युं. ते पछु श्रीस्वामिनीजीये येने क'छ कहुं नही. ते पछी श्रीस्वामिनीजीये वृन्दाने कहुं, के तू श्रीनंदरायजीना घरे जधने श्रीठाकुरजीने धशारतथी. अमाइं अही पधारवानुं कहेये. त्यारे श्रीस्वामिनीजीनां वचन सांभणीने वृन्दाये कहुं, के लभणां भारे भाणा करीने श्रीवृषभानजीने भेकलवी छे तेथी हुं ते जती नथी. ये

वचन सुनिके श्रीस्वामिनीजी ने यासों कही, जो-मैं यहां आई तब तेने उठिके सन्मान हू न कियो, और एक कार्य कह्यो सोऊ तोसों नार्हीं बन्यो । तासों तू या वगीची में रहिवे योग्य नार्हीं है । और तू यहां सों गिरिके भैंसा को जन्म लेहु । सो यह शाप श्रीस्वामिनीजी ने वा मालिन कों दियो । तब तो यह मालिन श्रीस्वामिनीजी के चरणारविंद में जाय परी, और बहोत ही विनती स्तुति करन लागी । और कही, जो-अब ऐसी कृपा करो, जो-फेरि मैं यहां आऊं । तब श्रीस्वामिनीजी ने यासों कही, जो-जब तेरे ऊपर चढिके श्रीठाकुरजी वन में पधारेंगे, तब तेरो अंगीकार होयगो । सो भैंसा को देह छोडिके सखी-देह धरिके फेरि या वाग की मालिन होयगी । सो या प्रकार वह मालिन सदूपांडे के घर में भैंसा भई ।

सो वाही भैंसा के ऊपर श्रीनाथजी आपु चढिके 'टोंड के घने' में पधारे, सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कों एक ओर तो रामदासजी पकड़े चले, और एक ओरतें सदूपांडे पकड़े रहे । और कुंभनदास और मानिकचंद पांडे बीच में थांभे जाय । सो मारग में कांटा बहोत लागे, वस्त्र सब फाटि गये, बहोत दुःख पायो । मारग आछो न हतो । सो वा 'टोंड के घना' में बीच में एक निकुंज है । तहां नदी (?) है, सो कुंभनदास और मानिकचंद पांडे ये दोड जने श्री-

वचन सांभलीने श्रीस्वामिनीजीके आने कहुं, के हुं न्यारे आवी त्यारे ते' ठडीने सन्मान पणु न क्युं' अने अेक कार्य कहुं ते पणु ताराथी न गन्थुं' तेथी तू आ अगी-आमां रहेवा योग्य नथी अने तू अर्हीथी (लीलायांथी) पड (लुतलमां) पाडानो जन्म ले. अे शाप श्रीस्वामिनीजीके ते मालणुने आये. त्यारे तों अे मालणु श्रीस्वामिनीजीना चरणारविंदमां जध पडी अने गहुंज विन'ती स्तुति करवा लागी अने कहुं' के हुवे कृपा करे के इरी हुं अडी' आड'. त्यारे श्रीस्वामिनीजीके अने कहुं' के न्यारे तारा उपर अडीने श्रीठाकुरजी वनमां पधारेशे त्यारे तारे अंगीकार थशे. त्यारे पाडानो देहु छोडीने सणी देहु धरीने इरी आ गगनी मालणु थधश. अे प्रधारे अे मालणु सहूपांडेना घरमां पाडो थध.

ते ज ले'साना उपर श्रीनाथजी पोते अडीने 'टोंड ना घने' पधायीं. त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथजीके अेक तरइथी रामदासजी थांभिन आले अने भील तरइथी सहू पांडे थांली रहे अने कुंभनदास अने मालेकचंद पांडे वचमां थांलीने आलता. ते मारगमां कांटा घणु लागे, वस्त्र पधमां इरी गयां, अहु दुःख पाभ्या. अे 'टोंड ना घना' नी वचमां अेक निकुंज छे त्यां नदी (सरायर) छे. ते कुंभनदास अने मालेकचंद

नाथजी के आगे मारग बतावें, लता कांटा टारत जांय । सो या प्रकार 'टोंड के घने' में भीतर एक चौतरा है तहाँ छोटे सो सरोवर है, और एक गोल चौक मंडलाकार है । तहाँ रामदासजी और कुंभनदासजी श्रीनाथजी सों पूछे, जो-आपु कहाँ विराजोगे ? तब श्रीनाथजी आपु आज्ञा किये, जो-याही चौतरा पे विराजेंगे । सो तब श्रीनाथजी के नीचे भैंसा के ऊपर गादी डारे हते सो वही गादी चौतरा ऊपर डारि बिछाई, तापें श्रीनाथजी कों पधराये । पाछें श्रीनाथजी रामदासजी सों आज्ञा किये, जो-तुम कछ भोग धरिके न्यारे ठाड़े होउ । तब रामदासजी तथा कुंभनदासजी मन में विचारै, जो-कोई ब्रजभक्तन के मनोरथ पूरन करिवे के लिये यहाँ लीला करी है । पाछें रामदासजी थोड़ी सामग्री भोग धरे । सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहें, जो-सब सामग्री धरि देउ । सो रामदासजी उतावली में दाय सेर चून को सीरा कर लाये हते, सो सगरी भोग धरे । पाछें रामदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजी तें कहे, जो-सगरी सामग्री भोग धरी, परि यहां रहनो होय तब कहा करेंगे ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-यहाँ रहनो नाहीं है । जो इतनो ही काम हतो । पाछें कुंभनदास सहित सदूपण्डे माणिकचंद पांडे, और रामदासजी ये चारों

पांडे ये भेड़ि जलु श्रीनाथजीनी आगण भागि अतावे, लता-कांटा टारत जाता, ये प्रकारे 'टोंड ना घना'नी अंदर अक यथुतरा छे, त्यां नातुं सरभुं सरोवर छे अने अक गाण थोड मंडलाकार छे, त्यां रामदासल अने कुंभनदासल श्रीनाथजीने पूछे के आपु कयां विराजशा ? त्यारे श्रीनाथजीये पोते आज्ञा करी के आ ज यथुतरा उपर विराजशुं, त्यारे श्रीनाथजीनी नीचे पाडानी उपर गादी नापी हुती ते ज गादी यथुतरा उपर नापी भिछावी तेनी उपर श्रीनाथजीने पधराव्या, पछी श्रीनाथजीये रामदासजीने आज्ञा करी के तमे कंध लोग धरीने अलग उला रहु। त्यारे रामदासल तथा कुंभनदासल मनमां विचारै के केध प्रजलक्तोनो मनोरथ पूरलु करवाने भाटे अही लीला करी छे, पछी रामदासलये थोड़ी सामग्री लोग धरी, त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथल कहे अधी सामग्री धरीहा ते रामदासल उतावणमां अशेर आरानो शीरे करीने लाव्या हुता ते अधी लोग धर्यां, पछी रामदासल श्रीगोवर्द्धननाथजीने कहे, के अधी सामग्री लोग धरी परंतु अही रहलु हुं होय त्यारे शुं करीशुं ? त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथल कहे, के अही रहलु नथी, आरलुं ज काम हुतुं, पछी कुंभनदास सहित सह पांडे, माणिकचंद पांडे अने रामदासल ये त्यारे जलु अक वृक्षनी अंतरमां जध भेडा, त्यारे

जन एक वृक्ष की ओट में जाय बैठे। सो तब निकुंज के भीतर श्रीस्वामिनीजी अपने हाथ सों मनोरथ की सामग्री करी हती सो ले के श्रीगोवर्द्धननाथजी के पास पधारी। पाछें मिलिके भोजन करना विचार कियो। सो सामग्री करत रंचक श्रीस्वामिनीजी कों श्रम भयो। तासों श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु श्रीसुखतें कुंभनदास सों आज्ञा किये, जो—कुंभनदास ! तू कछु या समय कीर्तन गावे तो मन प्रसन्न होय। और मैं सामग्री अरोगत हौं, तासों तू कीर्तन गाउ। सो कुंभनदास अपने मन में विचारे, जो—प्रभुन को मन कछु हास्य प्रसंग सुनिवे को है। और कुंभनदास आदि चारयों वैष्णव भूखे हते और कांटाहू लगे हते, सो ता समय कुंभनदासने एक पद गायो। सो पद—

राग सारंग—भावन है तोहि टोंड कौ घनो। कांटा लागे गोखरू भागे फटयो जात यह तनो ॥ १ ॥ सिंहै कहा लोंकरी कौ डर यह कहा बानिक वन्यो। 'कुंभनदास' तुम गोवर्द्धनघर वह कौन रांड देढ़नी कौ जन्यो ॥ २ ॥

सो यह कीर्तन सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी और श्रीस्वामिनीजी बहोत प्रसन्न भये। और सब वैष्णव हू प्रसन्न भये। ता पाछें माला के समय कुंभनदास ने यह पद गायो। सो पद—

राग मालकोस—बोलत स्याम मनोहर बैठे कमल खंड और रुद्रम की छैयां। कुसुमित द्रुम अलि पीक गूजत कोकिला कल गावत तहियां ॥ १ ॥ सुनत दूतिका के वचन माधुरी भयो हुलास तन मन महियां। 'कुंभनदास प्रभु' ब्रज जुवति मिलन चली रसिक कुवर गिरिघर पहियां ॥ २ ॥

यह पद कुंभनदास ने गायो, सो सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी

निकुंजनी अंदर श्रीस्वामिनीजीये पोताना हाथथी मनोरथनी सामग्री करी हती ते लधने श्रीगोवर्द्धननाथजीनी पासै पधार्यां। पछी भणीते लोजन करवाने विचार धर्यां। ते सामग्री करतां रंचक श्रीस्वामिनीजीने श्रम थयो। तेथी श्रीगोवर्द्धननाथजीये पोते श्रीसुखथी कुंभनदासने आज्ञा करी के, कुंभनदास ! तू कंघ आ समये कीर्तन गाय तो मन प्रसन्न थाय अने हुं सामग्री आरोगुं हुं तेथी तू कीर्तन गा। तयारे कुंभनदासै पोताना मनभां विचार्युं, के प्रभुतुं मन कंघ हास्य प्रसंग सांलगावतुं छे। पछी कुंभनदास आदि आरे वैष्णव लूभ्या हता अने कांटा पशु लाग्या हता। तेथी ते समये कुंभनदासै अेक पद गायुं। ते पद :—' लावत है तोहि टोंडके घनो ' (उपर लुओ)। अे कीर्तन सांलणीते श्रीगोवर्द्धननाथजी अने श्रीस्वामिनीजी वषा प्रसन्न थया अने पधा वैष्णव प्रसन्न थया। ते पछी भाणानासभये कुंभनदासजीये आ पद गायुं। ते पद :—' पोसत श्याम मनोहर अैडे ' (उपर लुओ)। अे पद कुंभनदासै

આપુ બહોત પ્રસન્ન ભયે । તવ શ્રીસ્વામિનીજી નેં શ્રીગોવર્દ્ધનધર સોં પૂછી, જો-તુમ કૌન પ્રકાર પધારે ? તવ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી ને કહી, જો-સદૂપાંડે કે ઘર મૈંસા હતો સો વા ઉપર ચઢિકે પધારે હૈં । તવ શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી કે વચન સુનિકે શ્રીસ્વામિનીજી આપુ વા મૈંસા કી ઓર દેલિકે કૃપા કરિકે કહે, જો-યહ તો મેરે બાગ કી માલિન હૈ, સો મેરી અવજ્ઞા તેં મૈંસા મૈંસા પરંતુ આજ ઘાને મલી સેવા કરી, તાસોં અવ યાકો અપરાધ નિવૃત્ત ભયો । સો યા પ્રકાર કહિ, નાના પ્રકાર કી કેલિ ટોંડ કે ઘનેમૈં કરિકે શ્રીસ્વામિનીજી તો બરસાને મૈં પધારે ।

ભાવપ્રકાશ— સો તહાં કાંટા બહોત હતે, સો શ્રીસ્વામિનીજી ઝહાં કૈસે પધારે ? યહ શંકા હોય તહાં કહત હૈં । જો-યે વ્રજ કે વૃક્ષ પરમ સ્વરૂપાત્મક હૈં, સો જહાં જૈસી ઇચ્છા હોય સો તહાં તેસી કુંજલતા ફલ ફૂલ હોય જાત હૈં । સો કવહૂ સકલ કાંટા તો યહ લૌકિક લોગન કોં દીસત હૈં । સો તહાં કુંજ મૈં સવ વ્રજભક્તન મહિત શ્રીઠાકુરજી આપ લીલા કરત હૈં । સો તહાં ગોપન કોં ઓર મર્યાદા વારેન કોં યહ કાંટાન કી આઢ હોત હૈ, (નાંતર) સઘન વન હોત હૈ । સો વ્રજ કે ભક્ત સદા સેવા મૈં તત્પર રહત હૈં, સો તાસોં યહ સંદેહ નાહીં હૈ । ઓર શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી મૈંસા ડપર ચઢિકે ટોંડ કે ઘના મૈં પધારે । સો તા સમય ચાર વૈષ્ણવ સંગ હતે । સો મારગ મૈં વ્રજવાસી લોગ બહોત મિલતે, સો શ્રીગોવર્દ્ધન-

ગાયુઃ એ સાંભળીને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી પોતે ઘણા પ્રસન્ન થયા. ત્યારે શ્રીસ્વામિનીજીએ શ્રીગોવર્દ્ધનધરને પુછ્યું, કે તમે કયા પ્રકારે પધાર્યા ? ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીએ કહ્યું, કે સદૂ પાંડેના ઘરે પાડા હોતો તેના ઉપર ચઢીને પધાર્યા છીએ. ત્યારે શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીનાં વચન સાંભળીને શ્રીસ્વામિનીજી પોતે એ પાડાની તરફ જોઇને કૃપા કરીને કહે, કે આ તો મારા બાગની માલણ છે. તે મારી અવજ્ઞાથી પાડા થઇ પરંતુ આજે એણે સારી સેવા કરી તેથી હવે એનો અપરાધ નિવૃત્ત થયો. એ રીતે કહી નાના પ્રકારની કેટલી ટોંડના ઘનામાં કરીને શ્રીસ્વામિનીજી તો બરસાના પધાર્યાં.

ભાવપ્રકાશ—ત્યાં કાંટા ઘણા હતા. તેથી શ્રીસ્વામિનીજી ત્યાં કેવી રીતે પધાર્યા ? એવી શંકા થાય ત્યાં કહે છે કે એ વ્રજનાં વૃક્ષ પરમ સ્વરૂપાત્મક છે. જ્યાં જેવી ઇચ્છા હોય ત્યાં તેવી કુંજલતા ફલ-ફૂલ થઈ જાય છે. ક્યારેક બધા કાંટા તો આ લૌકિક લોકોને દેખાય છે. ત્યાં કુંજમાં બધાં વ્રજભક્તો સહિત શ્રીઠાકુરજી પોતે લીલા કરે છે. ત્યાં ગોપોને અને મર્યાદાવાળાને આ કાંટાની આડ થાય છે. નહીં તો સઘન વન થાય છે. વ્રજના ભક્ત સદા સેવામાં તત્પર રહે છે તેથી આમાં સંદેહ નથી. અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજી પાડા ઉપર ચઢીને ટોંડના ઘનામાં પધાર્યાં. તે સમયે ચાર વૈષ્ણવ સાથે હતા.

नाथजी कों देखे नहीं, जाने जो-मैसा लिये चारि जन जात हैं । सो कांटा न होय तो सगरे ब्रजवासी तहां आवे । या प्रकार केवल ब्रजभक्तन कों सुख देनार्थ श्रीठाकुरजी की लीला रस है । सो लौकिक में डरिके छिपि के पधारनो; सो यह रस है । ईश्वरता को भाव नहीं विचारनो है । ईश्वरता में कहे तो भजनो कहा ? डर, जहां माधुर्य रस में है सो प्रेम सों; ईश्वरता में डर नहीं है । या प्रकार रसिक जन नेत्रन सों जो देखत हैं सो तिनकों आनंद उपजत है, सो ज्ञान नेत्रन-अलौकिक नेत्रन-सों लीलारस को अनुभव होत है ।

सो जब श्रीस्वामिनीजी बरसाने पधारे, तब चार्यों भगवदीयन कों श्रीगोवर्द्धननाथजी ने अपने पास बुलाये ।

भावप्रकाश—सो तहां यह संदेह होय जो-यह भगवदीय तो अंतरंग हैं । सो जब लीला को अनुभव है तो फेरि श्रीगोवर्द्धननाथजी इन कों न्यारे ओट में क्यों विदा किये ? तहां कहत हैं, जो-ये भगवदीय यद्यपि सखी रूप सों लीला को दरसन करत हैं, तोऊ श्रीस्वामिनीजी कों अपने हस्त सों हास्यविनोद करत आरोगावनो है, सो पास सखी होय तो लज्जा, संकोच रहे । सो ताही सों निकुंज में जब दोउ स्वरूप लीला करत हैं, तब सखी सब जालरंघ्र व्हेके लतान की ओट लीला

त्यारे मार्गमां ब्रजवासी लोके घण्टा भणता. ते श्रीगोवर्द्धननाथजीने लुये नहीं. लोके के पाडे लथ तार लखु लय छे. जे कांटा न होय तो भधा ब्रजवासी त्यां आवे. जे प्रकारे केवण ब्रजलक्तोने सुभ देवाने माटे श्रीठाकुरजीने लीला रस छे. लौकिकमां डरीने संताधने पधारवुं जे रस छे. ईश्वरताने भाव विचारये नहीं ईश्वरतामां कहे तो भागवुं केवुं ? डर ल्यां माधुर्य रसमां छे त्यां ते प्रेमथी. ईश्वरतामां डर नहीं. या प्रकारनी दृष्टिथी जे रसिकजनो लुये छे तेमने आनंद लपजे छे. माटे ज्ञाननेत्रो-अलौकिक नेत्रो-थी लीला रसनो अनुभव थाय छे.

न्यारे श्रीस्वामिनीजी परसाना पधार्यां त्यारे तारे भगवदीयाने श्रीगोवर्द्धननाथजीने पोतानी पासो पोलाय्या.

भावप्रकाश—त्यां या संदेह थाय के जे भगवदीयो तो अंतरंग छे. न्यारे (तेमने) लीलानो अनुभव छे तो पछी श्रीगोवर्द्धननाथजीने जेमने अलग ओटमां केम विदाय कर्था ? त्यां कहे छे, के जे भगवदीय यद्यपि सखी रूपथी लीलानां दर्शन करे छे तो पछु श्रीस्वामिनीजीने पोताना श्रीहस्तथी हास्यविनोद करतां त्यारे भागवुं छे तेथी पासो सखी होय तो लज्जा संकोच रहे. तेथी ल निकुंजमां न्यारे भन्ने स्व-रूप-लीला करे छे त्यारे सखी पछी जालरंघ्रे लतायेनी आडमां रहिने; लीलाना सुभनुं

को सुख अवलोकन करत हैं। सो तासों श्रीगोवर्द्धननाथजी ने भगवदीयन कों नेक ओट में बैठाये हते, सो बुलाये।

सो जब चार्यों वैष्णव आये, तब श्रीगोवर्द्धननाथजी सदूपांडे सों कह्यो, जो-अब देखो उपद्रव मिथ्यो? तब सदूपांडे टोंड के घने सों बाहिर आये, सो इतने में श्रीगोवर्द्धन सों समाचार आये, जो-वह म्लेच्छ की फौज आई हती सो पाछी गई हैं। तब सदूपांडेने आयके श्रीगोवर्द्धननाथजी सों कह्यो, जो-वह फौज तो म्लेच्छकी भाजि गई। तब श्रीगोवर्द्धनधर कहे, जो-अब तुम मोकों गिरिराज ऊपर मंदिर में पधरावो। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कों भैंसा ऊपर बेठाये। पाछे चार्यों वैष्णवन ने श्रीनाथजी कों श्रीगिरिराज पर्वत ऊपर मंदिर में पधराये। तब भैंसा पर्वत सों उतरिके देह छोड़िके फेरि लीला में प्राप्त भयो। पाछे सगरे ब्रजवासी श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिके बहोत हरषित भये, और कहन लागे, जो-धन्य है, देवदमन! जो इनके प्रतापसों, ऐसो उपद्रव भयो हतो सो एक क्षणमें मिटि गयो, सो कछु जान्यो हू न पर्यो। तब कुंभनदास ने श्रीनाथजी के आगे यह पद गायो। सो पद—

राग श्रीराग—जयति जयति हरिदासवर्यधरने। वारि वृष्टि निवारि, घोख आरति टारि देवपति मान भंग करने ॥ १ ॥ जयति पट पीत दासिनी रुचिर वर

अवलोकन करे छे. तेथी श्रीगोवर्द्धननाथजीके भगवदीयाने थोडीक ओटमां भेसाड्या हुता पछी भेलाव्या.

पछी न्यारे न्यारे वैष्णवो आव्या त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथजीके सह पांडेने कछु, के हुवे लुग्यो उपद्रव भयो? त्यारे सह पांडे टोंडना घनेथी अहार आव्या. ओटलासां श्रीगोवर्द्धनथी समाचार आव्या के अे यवननी झेण आवी हुती ते पाछी गछ छे. त्यारे सह पांडेके आवीने श्रीगोवर्द्धननाथजीके कछु, के अे यवननी झेण तो लागी गछ. त्यारे श्रीगोवर्द्धनधर कहे, के हुवे तमे मने गिरिराज उपर मंदिरमां पधरावो. त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथजीके पाडा उपर भेसाड्या. पछी न्यारे वैष्णवोके श्रीनाथजीके श्रीगिरिराज पर्वत उपर पधराव्या. त्यारे पाडा पर्वतथी उतरिने देह छोडीने इरी दीलासां प्राप्त थयो. पछी अथा ब्रजवासी श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन करिने अहुण प्रसन्न थया अने कहुवा लाग्या के धन्य छे देवदमन! जे अेमना प्रतापथी अेवो उपद्रव थयो हुतो ते अेक क्षणमां भटी गयो. ते क'छु लुग्युं न गयुं. त्यारे कुंभनदासे श्रीनाथजीके आगण आ पद गायुं. ते पद :—१ 'जयति र श्रीहरिदास वर्य धरने'

मृदुल अंग सांवल जलद वरने । कर अघर वेनु धरि गान कल-रव सव्द सहज
 व्रज युवती जन चित्त हरने ॥ २ ॥ जयति वृंदा विपिन भूमि डोलनि अखिल लोक-
 वंदनि अंबुहह चरने । तरनि-तनया-तीर विहार नंदगोप-कुमार 'दासकुंभन'
 नमित तुव शरने ॥ ३ ॥

राग श्रीराग—कृष्ण तरनी तनया तीरं राममंडल रचयो अघर कर सुधुर
 सुर वेनु वाजे । जुवती जन जूथ संग निर्गत अनेक रंग निरखि अभिमान तजि काम
 लाजे ॥ १ ॥ श्यामतन पीत कौशेय सुभ पद-नखचन्द्रिका लकल भुव तिमिर भाजे ।
 ललित अवतंस भ्रुव भु धनुस लोचन चंपल चितवनि मनो मदनवान साजे ॥ २ ॥
 सुखर मंजीर कटि किंकनी कुनीत रव धवन गंभीर मनु मेघ गाजे । 'दास कुंभन'
 नाथ हरिदासवर्यधरन नखसिख स्वरूप अद्भुत विराजे ॥ ३ ॥

सो ऐसे कीर्तन कुंभनदास ने श्रीगोवर्द्धननाथजी को बहोत
 सुनाये । सो सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी कुंभनदास के ऊपर बहोत
 प्रसन्न भये । सो कुंभनदासजी के पद जगत में प्रसिद्ध भये ।

वार्ता-प्रसंग ३—सो कुंभनदासने बहोत पद बनाये, सो जहां तहां
 लोग गावन लागे । ता पाछें एक कलावन ने एक पद कुंभनदासजी
 को सीख्यो, सो देसाधिपति के आगे गायो । सो सीकरी फतेपुर में
 देसाधिपति के डेरा हते सो तहां यह पद गायो । सो पद—

राग घनाश्री—देखरी आवनी मदन गोपाल की । सक्रवाहन-गति निरख
 लाजत गजगति अनूप लटक चालकी ॥ १ ॥ स्याम तन कटि वसन मन हरन सुंदरता
 उर श्रीमाल की । भोंह धनुस सजि मनहु मदन सर चितवनी लोचन विसाल की
 ॥ २ ॥ रेनुमंडित कुंतल-अलक सोभा केसर कौ तिलक भाल की (य) 'दास कुंभन'
 चारु रास मोहे जगत गोवर्द्धनघर कुंवर रसाल की ॥ ३ ॥

सो यह कीर्तन सुनिके देसाधिपति को मन वा पद में गडि
 गयो, सो साथो धुन्यो और कह्यो, जो-ऐसे ऐसे महापुरुष भूमि पर
 होय गये, सो जिनको ऐसे दरसन परमेस्वर के होते । तब वा कला-

२ 'कृष्ण तरनि तनया तीर' (उपर लुओ) . अयां कीर्तन कुंभनदासे श्रीगोवर्द्ध-
 ननाथने धरुं सांलणाव्यां . अे सांलणीने श्रीगोवर्द्धननाथने कुंभनदास उपर
 धरुं प्रसन्न थया . अे कुंभनदासनां पद जगतमां प्रसिद्ध थयां .

वार्ता-प्रसंग ३—कुंभनदासे अहु पद बनाव्यां ते न्यां त्यां लोको गावा लाव्या .
 ते पछी अेक गवैथे कुंभनदासने अेक पद शीष्ये . ते तेणे देशाधिपतिनी आगण
 गाथुं . पछी इतेहुपुर सीकरीमां देशाधिपतिने मुकाम हुतो त्यां तेणे अे पद गाथुं . ते
 पद :—' देखरी आवनी मदन गोपालकी ' अे कीर्तन सांलणीने देशाधिपतिनुं मन
 अे पदमां थोटी गथुं तेथी साथुं धुंलाव्युं अने इधुं , इ अेवा अेवा महापुरुष भूमि

वत ने देसाधिपति सों कही, जो-साहिब ! वे महापुरुष पद करिबे वारे यहां ही हैं। सो तब यह देसाधिपति वा कलावतके ऊपर बहोत प्रसन्न होयके पूछयो, जो-वे महापुरुष कहां हैं ? तब कलावत ने कही, जो-श्रीगोवर्द्धन के पास 'जमुनावतो' गाम है, सो तहां वे महापुरुष रहत हैं, और कुंभनदासजी उनको नाम है। तब देसाधिपतिने कही, जो-उनकों यहां ही बुलावो, जो-हज़ उन सों मिलेंगे। पाछें देसाधिपतिने अपने मनुष्य और सब तरहकी असवारी कुंभनदास कों लेवे कों पठाई। सो जमुनावता गाममें भेजी। तब वे मनुष्य असवारी लिवाये, जमुनावता गाम में आये। ता समय कुंभनदासजी तो जमुनावता में हते नाहीं, परासोली चंद्रसरोवरि में अपने खेत ऊपर बैठे हते। सो तब उन मनुष्यन ने जमुनावतामें आय के पूछी। पाछें खबरि पायके गाम में तें एक मनुष्य कों संग लेके वे लोग कुंभनदासजीके पास आये। तब देसाधिपतिके मनुष्यनने आयके कुंभनदाससों कह्यो, जो-तुमकों देसाधिपतिने बुलाये हैं। तब कुंभनदास ने कही, जो-हम तो गरीब ब्रजवासी हैं, सो काहूके चाकर नाहीं हैं। तासों हमारो देसाधिपति सों कहा काम है ? जो मैं चलूं। तब देसाधिपतिके मनुष्य ने कह्यो, जो-बाबा साहिब ! हम तो कछु

उपर थप गया के जेभने जेवां दर्शन परमेश्वरनां थतां। त्यारे जे गवैयाजे देसाधिपतिने कछु, के साहज ! जे महापुरुष पदना करवावाणा अही जे छे। त्यारे जे देसाधिपतिजे ते गवैयाना उपर अहु प्रसन्न थधने पूछयुं, के ते महापुरुष क्यां छे ? त्यारे कलावते कछु, के श्रीगोवर्द्धननी पास जमुनावतो गाम छे। त्यां ते महापुरुष रहे छे अने कुंभनदासजे जेभनुं नाम छे। त्यारे देसाधिपतिजे कछु, जेभने अही जे जेलावो जेभे जेभने भणीशुं, पछी देसाधिपतिजे पोताना मनुष्य अने अधी प्रकारनी असवारी कुंभनदासने लेवा भाटे भोक्डी। ते जमुनावता गामभां भोक्डी। त्यारे जे मनुष्य असवारी लधने जमुनावता गामभां आव्या। ते समये कुंभनदासजे तो जमुनावता गामभां तो हुता नहीं। परासोली चंद्रसरोवरभां पोताना जेतर उपर जेहा हुता। त्यारे जे मनुष्यजे जमुनावताभां आवीने पूछयुं, पछी जपर कडीने गामभांथी जेक मनुष्यने संग लधने जे लोको कुंभनदासजे पास आव्या। त्यारे देसाधिपतिना मनुष्यजे आवीने कुंभनदासजे कछु, के तभने देसाधिपतिजे जोलाव्या छे। त्यारे कुंभनदासजे कछु, के जेभे तो गरीब ब्रजवासी छीजे कोधना थोकर नहीं। तेथी जभाइ देसाधिपतिथी शुं काम छे, के हुं यालुं ? त्यारे देसाधिप-

समुझत नहीं हैं। सो हमको तो देसाधिपति को हुकम है, जो-तुम कुंभनदासजी को ले आवो, सो ये घोड़ा पालकी तिहारी असवारी के लिये आये हैं। सो तिनके ऊपर तुम असवार होयके चलिये। हम आये हैं जो देसाधिपति ने भेजे हैं, सो हम तुमको लेके जायंगे। और जो हम न ले जाय तो देसाधिपति को हुकम टरें, तो देसाधिपति हमको भरवाय डारे। तासों आपु चलिये, और उनसों मिलिके चले आईये। तब कुंभनदास अपने मनमें विचार कियो, जो-यह आपदा जो आई है, तासों अब गये विना चले नहीं। तासों आपदा होय सोऊ भुगतनो। सो कुंभनदास को देसाधिपति ने असवारी पठाई हती, सो तिनके संग मनुष्य आये हते सो उनने कह्यो, जो-बाबा साहिब ! घोड़ा तथा पालकी पर चढिके वेगि चलिये। तब कुंभनदास ने उन मनुष्यन सों कह्यो, जो-मैं तो कबहू असवारी में बैख्यो नहीं। हम सों तुम कछु बोलो मति, जो-हम जोड़ा पहरि के पाँयन चलेंगे। तब उन मनुष्यन ने बहोत विनती कीनी, परि कुंभनदास तो असवारी में बैठे नहीं, सो जोड़ा पहरिके पाँयन चले। सो फतेपुर सीकरी में देसाधिपति के डेरान के पास गये। तब देसाधिपति को खबरि करवाई, जो-कुंभनदास महापुरुष आये हैं। तब

तिना मनुष्योये कछु, के आवा साहस्य ! अमे तो इध समजता नथी. अमने तो देशाधिपतिना हुकम छे के तमे कुंभनदासले लेव आवो. आ घोड़ा. पालकी तमारी असवारीने भेटे आव्यां छे. तेमना उपर तमे असवार थधने वालो. अमे आव्या छीये ले देशाधिपतिये मोडक्या छे ते अमे तमने लधने जधशु अने जे अमे न लध जधये तो देशाधिपतिना हुकम टणे तो देसाधिपति अमने भरावी नाणे. तेथी आपु वालो अने अमने भणीने वाल्या आवो. त्यारे कुंभनदासे पोताना मनमां विचार क्यो, के आ आपदा आवी छे तेथी हुये गया विना नहीं वाले. तेथी आपदा होय ते ये लोगववी. पछी कुंभनदासे देशाधिपतिने असवारी मोडकी हुती तेनी साथे मनुष्यो आव्या हुता. अमले कछु, के आवा साहस्य ! घोड़ा तथा पालकी उपर चढीने जहदी वालो. त्यारे कुंभनदासे अ मनुष्योने कछु, के हु तो क्यारेय असवारीमां भेख्यो नथी. अमाराथी तमे इध जोलो नहीं. अमे जोड़ा पहेरीने पगे वालीशु. त्यारे अ मनुष्योये अहु विनती करी परंतु कुंभनदासतो असवारीमां भेख नहीं. जोड़ा पहेरीने पगे वाल्या. ते इतेपुरसीकरीमां देशाधिपतिना मुद्रामनी पासो गया. त्यारे देशाधिपतिने अयर कशी के कुंभनदासले महापुरुष आव्या छे.

वत ने देसाधिपति सों कही, जो-साहिब ! वे महापुरुष पद करिवे वारे यहां ही हैं। सो तब यह देसाधिपति वा कलावतके ऊपर बहोत प्रसन्न होयके पूछ्यो, जो-वे महापुरुष कहां हैं ? तब कलावत ने कही, जो-श्रीगोवर्द्धन के पास 'जमुनावतो' गाम है, सो तहां वे महापुरुष रहत हैं, और कुंभनदासजी उनको नाम है। तब देसाधिपतिने कही, जो-उनकों यहां ही बुलावो, जो-हम उन सों मिलेंगे। पाछें देसाधिपतिने अपने मनुष्य और सब तरहकी असवारी कुंभनदास कों लेवे कों पठाई। सो जमुनावता गाममें भेजी। तब वे मनुष्य असवारी लिवाये, जमुनावता गाम में आये। ता समय कुंभनदासजी तो जमुनावता में हते नाहीं, परासोली चंद्रनरोवरि में अपने खेत ऊपर बैठे हते। सो तब उन मनुष्यन ने जमुनावतामें आय के पूछी। पाछें खबरि पायके गाम में तें एक मनुष्य कों संग लेके वे लोग कुंभनदासजीके पास आये। तब देसाधिपतिके मनुष्यनने आयके कुंभनदाससों कह्यो, जो-तुमकों देसाधिपतिने बुलाये हैं। तब कुंभनदास ने कही, जो-हम तो गरीब ब्रजवासी हैं, सो काहूके चाकर नाहीं हैं। तासों हमारो देसाधिपति सों कहा काम है ? जो मैं चलूं। तब देसाधिपतिके मनुष्य ने कह्यो, जो-बाबा साहिब ! हम तो कछु

उपर थप गया के जेभने जेवां दर्शन परमेश्वरनां थतां। त्यारे जे गवैयाजे देशाधिपतिने कछुं, के साहुण ! जे महापुरुष पदना करवावाणा अहीं जे छे। त्यारे जे देशाधिपतिजे ते गवैयाना उपर थहु प्रसन्न थधने पूछ्युं, के ते महापुरुष क्यां छे ? त्यारे क्लावते कछुं, के श्रीगोवर्द्धननी पास जमुनावतो गाम छे। त्यां ते महापुरुष रहे छे जेने कुंभनदासज्जे जेभने नाम छे। त्यारे देशाधिपतिजे कछुं, जेभने अहीं जे जेसावो जेभने जेणीशुं। पछी देशाधिपतिजे जेताना मनुष्य जेने थधी प्रकारनी असवारी कुंभनदासने लेवा भाटे भेकडी। ते जमुनावता गामभां भेकडी। त्यारे जे मनुष्य असवारी लधने जमुनावता गामभां आव्या। ते समये कुंभनदासज्जे ते जमुनावता गामभां तो लुता नहीं। परासोली चंद्रनरोवरभां जेताना जेतर उपर भेहा लुता। त्यारे जे मनुष्यजे जमुनावताभां आवीने पूछ्युं, पछी जेपर डाढीने गामभांथी जेक मनुष्यने संग लधने जे लोको कुंभनदासज्जे पास आव्या। त्यारे देशाधिपतिना मनुष्यजे आवीने कुंभनदासज्जे कछुं, के तभने देशाधिपतिजे जेसावो छे। त्यारे कुंभनदासज्जे कछुं, के जेभने तो गरीब ब्रजवासी छीजे जेभने जेसावो नथी। तेथी जेभाइ देशाधिपतिथी शुं काम छे, के हुं साहुं ? त्यारे देशाधिप-

समुझत नहीं हैं। सो हमको तो देसाधिपति को हुकम है, जो-तुम कुंभनदासजी को ले आवो, सो ये घोड़ा पालकी तिहारी असवारी के लिये आये हैं। सो तिनके ऊपर तुम असवार होयके चलिये। हम आये हैं जो देसाधिपति ने भेजे हैं, सो हम तुमको लेके जायेंगे। और जो हम न ले जाय तो देसाधिपति को हुकम टरें, तो देसाधिपति हमको मरवाय डारे। तासों आपु चलिये, और उनसों मिलिके चले आईये। तब कुंभनदास अपने मनमें विचार कियो, जो-यह आपदा जो आई है, तासों अब गये बिना चले नहीं। तासों आपदा होय सोऊ भुगतनो। सो कुंभनदास को देसाधिपति ने असवारी पठाई हती, सो तिनके संग मनुष्य आये हते सो उनने कह्यो, जो-बाबा साहिब ! घोड़ा तथा पालकी पर चढिके बेगि चलिये। तब कुंभनदास ने उन मनुष्यन सों कह्यो, जो-मैं तो कबहू असवारी में बैद्यो नहीं। हम सों तुम कछु बोलो मति, जो-हम जोड़ा पहरि के पाँयन चलेंगे। तब उन मनुष्यन ने बहोत विनती कीनी, परि कुंभनदास तो असवारी में बैठे नहीं, सो जोड़ा पहरिके पाँयन चले। सो फतेपुर सीकरी में देसाधिपति के डेरान के पास गये। तब देसाधिपति को खबरि करवाई, जो-कुंभनदास महापुरुष आये हैं। तब

तिना मनुष्योअ्ये कछु, के आवा साहय ! अमे तो इंध सभजता नथी. अमने तो देशाधिपतिने हुकम छे के तमे कुंभनदासने लभ आवे. आ घोड़ा. पालकी तमारी असवारीने माटे आव्या छे. तेमना उपर तमे असवार थधने यासे. अमे आव्या छीअ्ये जे देशाधिपतिअ्ये मोकल्या छे ते अमे तमने लभने जधशु अने जे अमे न लभ जधअ्ये तो देशाधिपतिने हुकम थजे तो देसाधिपति अमने भरावी नाणे. तथी आप यासे अने अमने भणीने यास्या आवे. त्यारे कुंभनदासे याताना मनमां विचार क्यो, के आ आपदा आवी छे तथी हुवे गया बिना नही यासे. तथी आपदा होय ते ये लोगववी. पछी कुंभनदासे देशाधिपतिने असवारी मोकदी हुती तेनी साथे मनुष्यो आव्या हुता. अमने कछु, के आवा साहय ! घोड़ा तथा पालकी उपर यहीने जहदी यासे. त्यारे कुंभनदासे अे मनुष्योने कछु, के हुं तो क्यारेय असवारीमां भेड्यो नथी. अमारथी तमे इंध जोसे नही. अमे जेडा पहुरीने पजे यादीशुं. त्यारे अे मनुष्योअ्ये षहु विनंती करी परंतु कुंभनदासतो असवारीमां भेड नही. जेडा पहुरीने पजे यास्या. ते इतेपुरसीकरीमां देशाधिपतिना मुकामनी पासे गया. त्यारे देशाधिपतिने अयर करवी के कुंभनदासने महापुरुष आव्या छे.

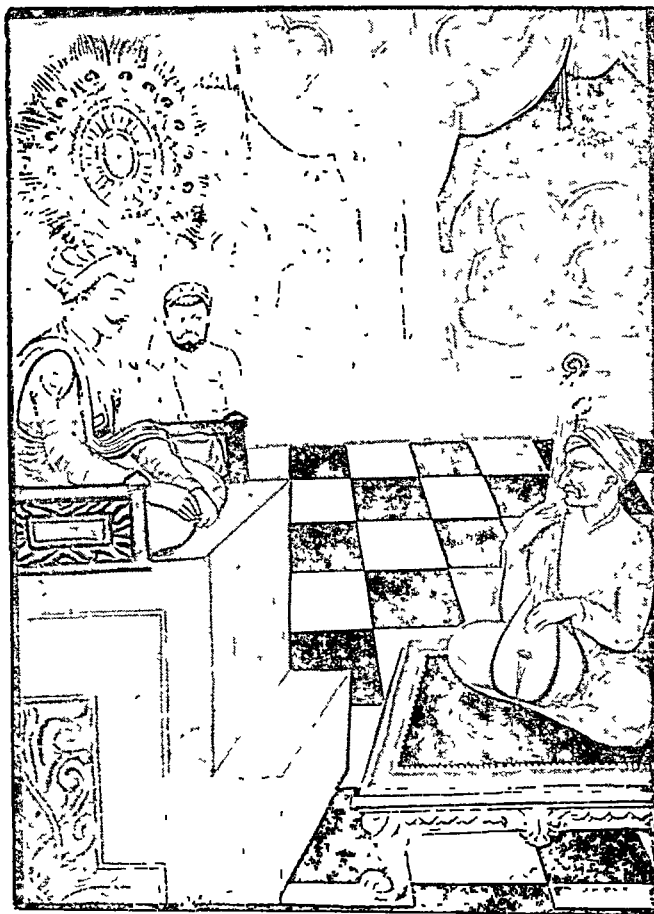
देसाधिपति ने कुंभनदास को भीतर बुलवाये, तब भीतर गये। पाछें देसाधिपति ने कही, जो-बाबा साहिब ! आगे आवो। तब कुंभनदासजी तनिया पहरे, फटी मेली पाग, पिछोरा, दूटे जोड़ा सहित देसाधिपति के आगे जाय ठाड़े भये। तब देसाधिपतिने कही, जो-बाबा साहिब ! बैठो। सो तहां जड़ाउ रावटी ही, तामें मोतिन की झालरी लागि रही है, और सुगंध की लपट आवत है। परंतु कुंभनदासजी के मन में महादुःख, जो-जीवते मानो नरक में बैठ्यो हूं। (और बिचारे जो) यासों तो मेरे ब्रज के खूब आछे हैं। जहां साक्षात् श्रीगोवर्द्धनधर खेलत हैं। सो या प्रकार कुंभनदासजी अपने मन में बिचार करत हते, इतने में देसाधिपति बोल्यो, जो-बाबा साहिब ! तुमने विष्णुपद बहोत किये हैं। तासों तिहारे सुखतैं मैं कछु विष्णुपद सुनूंगो, तासों आप कोई विष्णु-पद गावो। तब देसाधिपति के बचन सुनिके एक तो कुंभनदास मन में झुठि रहे हते और दूसरे देसाधिपति ने गायवे की कही। तब कुंभनदास के मन में बहोत बुरी लगी। तब कुंभनदास अपने मनमें बिचार कियो, जो-गाये बिना छुटकारो होयगो नाहीं। और झलेच्छ के आगे तो श्री-ठाकुरजी की लीला के पद गाये जाय नाहीं। सो तासों मैं कहा

त्यारे देसाधिपतिअे कुंभनदासने अंदर भोलाव्या। त्यारे अंदर गया। पछी देसाधिपतिअे कछु, के आवा साहुभ ! आगण आवो। त्यारे कुंभनदासल लंगोट पहरीने झटी मेदी पाग, पिछाडा (लांघ विनानी घाती) दूटेला जेडा सहित देसाधिपतिनी आगण नध उसा रखा। त्यारे देसाधिपतिअे कछु, के आवा साहुभ ? भेसो, अे समये त्यां नडावनी रावटी हुती तेमां भेतीनी आसर लागी रह्यी छे। अने सुगंधनी लपट आवे छे। परंतु कुंभनदासलना मनमां अहु दुःख के लखे लवतां नरकमां भेठा छुं। (अने विचारुं के) आनाथी तो मारा ब्रजनां वृक्ष सारां छे, ज्यां साक्षात् श्री-गोवर्द्धनधर रभे छे। अे प्रकारे कुंभनदासल पोताना मनमां विचार करता हुता अेट-लामां देसाधिपति भोलाव्या के आवा साहुभ ! तमे विष्णु पद घणुं कर्थां छे। तेथी तमारा सुभथी हुं कंठ विष्णु पद सांलणुं तेथी आप कोछ.विष्णु पद गाव. त्यारे देसाधिपतिनां वचन सांलणीने अेक तो कुंभनदासल मनमां अणी रखा हुता अने भीलुं देसाधिपतिअे गावानुं कछुं, त्यारे कुंभनदासना मनमां अहु भोटुं लाग्युं। त्यारे कुंभनदासे पोताना मनमां विचार कर्थां के गाया विना छुटकारे थशें नह्यीं। अने आधवननी आगण श्रीठाकुरलनी दीलानां पद गायां नय नह्यीं। तेथी हुं शुं गाउं ?

देसाधिपति ने कुंभनदास कों भीतर बुलवाये, तब भीतर गये । पाछें देसाधिपति ने कही, जो-बाबा साहिब ! आगे आवो । तब कुंभनदासजी तनिया पहरे, फटी मैली पाग, पिछोरा, दूटे जोड़ा सहित देसाधिपति के आगे जाय ठाड़े भये । तब देसाधिपतिने कही, जो-बाबा साहिब ! बैठो । सो तहां जड़ाउ रावटी ही, तामें मोतिन की झालरी लागि रही है, और सुगंध की लपट आवत है । परंतु कुंभनदासजी के मन में महादुःख, जो-जीवते मानो नरक में बैथ्यो हूं । (और विचारे जो) यासों तो मेरे ब्रज के रूख आछे हैं । जहां साक्षात् श्रीगोवर्द्धनधर खेलत हैं । सो या प्रकार कुंभनदासजी अपने मन में विचार करत हते, इतने में देसाधिपति बोल्यो, जो-बाबा साहिब ! तुमने विष्णुपद बहोत किये हैं । तासों तिहारे सुखतें मैं कछु विष्णुपद सुनूं गो, तासों आप कोई विष्णु-पद गावो । तब देसाधिपति के बचन सुनिके एक तो कुंभनदास मन में झुठि रहे हते और दूसरे देसाधिपति ने गायवे की कही । तब कुंभनदास के मन में बहोत बुरी लगी । तब कुंभनदास अपने मनमें विचार कियो, जो-गाये बिना छुटकारो होयगो नहीं । और म्लेच्छ के आगे तो श्री-ठाकुरजी की लीला के पद गाये जाय नहीं । सो तासों मैं कहा

त्यारे देशाधिपतिअे कुंभनदासने अंदर भोलाव्या. त्यारे अंदर गया. पछी देशाधिपतिअे कछु, के आवा साहय ! आगण आवो. त्यारे कुंभनदासअे लंगाट पहरीने झटी मैली पाग, पिछोरा (सांध विनानी धोती) दूटेसा भेडा सहित देशाधिपतिनी आगण नथ उला रहा. त्यारे देशाधिपतिअे कछु, के आवा साहय ? भेसा, अे समये त्यां नडावनी रावटी हती तेमां भोतीनी आसर लागी रही छ. अने सुगंधनी लपट आवे छ. परंतु कुंभनदासअेना मनमां अहु दुःख के नखे लवतां नरकमां भेडे छु. (अने विचारुं के) आनाथी तो भारा प्रजनां वृक्ष सारां छ, ज्यां साक्षात् श्री-गावर्द्धनधर रहे छ. अे प्रकारे कुंभनदासअे पोताना मनमां विचार करता.हता अेट-सामां देशाधिपति भोदया के आवा साहय ! तमे विष्णु पद धर्यां कर्थां छ. तेथी तभारा सुअथी हुं कंध विष्णु पद सांलणुं. तेथी आप कोछ.विष्णु पद गाव. त्यारे देशाधिपतिनां वयन सांलणीने अेक तो कुंभनदासअे मनमां अणी रहा.हता अने भीळुं देशाधिपतिअे गावातुं कछु, त्यारे कुंभनदासना मनमां अहु भोटुं लाअुं. त्यारे कुंभनदासे पोताना मनमां विचार कर्थां के गाया विना छुटकारो थरो नही. अने आ यवननी आगण श्रीठाकुरअेनी दीसानां पद गायां नय नहीं. तेथी हुं शुं गाँ ?

चौरासी वैष्णवन की वार्ता



फतहपुर सीकरी में अकबर के सम्मुख अनिच्छा पूर्वक गाते हुए—

कुंभनदास

जन्म सं० १५२५ : देहावसान सं० १६४०



गाऊं? जो मेरी बानी के सुनिवेवारे तो श्रीगोवर्द्धननाथजी हैं, और या म्लेच्छ ने मोकों बुलाइके श्रीगोवर्द्धननाथजी सों विछोयो करायो है। तासों याकों कछु ऐसो सुनाऊं जो—यह बुरो माने तो आछो। और बुरो मानि के मेरो कहा करेगो? तब कुंभनदास के मनमें यह बात आई—‘जाकों मनमोहन अंगीकार करें, एको केस खसै नहीं सिरतैं जो जग बैर परे।’ सो यह विचारिके एक नयो पद करिके कुंभनदास ने देसाधिपति के आगे गायो। सो पद—

राग सारंग—भक्तन कों कदा लिकरी काम। आवत जान पन्हैया दूटी विसर गयो हरि नाम ॥ १ ॥ जाको मुख देखे दुःख उपजे ताकों करनों परयो प्रनाम।

‘कुंभनदास’ लाल गिरिघर विनु यह सब झूठो धाम ॥ २ ॥

सो यह पद कुंभनदासने गायो सो सुनिके देसाधिपति अपने मन में बहोत क्रुद्धयो। सो पाछें उनने अपने मन में विचारी, जो—इनकों कछु लेवे को लालच होय तो ये मेरी खुनामद करें। जो—इनकों तो अपने इश्वर सों काम हैं। यह विचारिके अकबर पात्साह ने कुंभनदास सों कह्यो, जो—बाबासाहिब! मोकों कछु आज्ञा परमावो सो मैं करूं। तब कुंभनदास ने कही, जो—आज पाछें मोकों कबहूँ बुलाइयो मति। तब देसाधिपतिने कुंभनदास कों विदा किये। सो तब कुंभनदास उहां ते चले, सो मारग में आवत कुंभनदास के मन में श्रीगोवर्द्धननाथजी को विरह कलेज (भयो) जो—अब मैं श्री-

भारी बाणीना सांलणवावाणा तो श्रीगोवर्द्धननाथछे. अने आ यवने मने पोसा पीने श्रीगोवर्द्धननाथछथी विथाग कराय्ये छे. तेथी आने इंध अयेवुं सांलणायुं डे अे भोटुं माने तो साइं. अने भोटुं मानीने अे भाइं शुं इररी? त्यारे इंसनदास-छना मनमां अे वात आवी. ‘जकों मनमोहन अंगीकार करे, अेको केस असे नहोई शिरते जे जग बैर पडो’ अे विचारिने अेक नयुं पद इररीने इंसनदासे देशाधिपतिनी आगण गायुं. ते पद—‘लक्ष्मण कों इहा सिद्धरी काम’ (उपर लुग्ये). आ पद इंसनदासछे गायुं. अे सांलणीने देशाधिपति पोताना मनमां अहु अय्ये. पछी अेछे पोताना मनमां विचार्युं, डे अेमने इंध लेवानी सासय होय तो अे भारी पुशा-मद इरे. अेमने तो पोताना इंधरथी काम छे. अे विचारिने अकबरभादशाहे इंसनदासने इछुं, डे आवा साहय! मने इंध आज्ञा इरमावो ते हुं इरं? त्यारे इंसनदासे इछुं, डे आज पछी मने इही पोसावता नहोई. त्यारे देशाधिपतिअे इंसनदासने विदाय कर्था. त्यारे इंसनदास त्यांथी आख्या. ते मारगमां आवतां इंसनदासना

गोवर्द्धननाथजी को मुख कब देखौं ? सो ऐसैं विचार करत मारग में आवत कुंभनदास ने विरह को पद गायो । सो पद—

राग घनाश्री—कब हौं देखि हौं इन नैननु । सुंदर स्याम मनोहर मूरति अंग अंग सुख दैननु ॥ १ ॥ वृन्दावन बिहार दिन दिन प्रति गोप-वृन्द संग लेननु । हँसि हँसि हरखि पतौवनि पीवनु बाँटि बाँटि पय फेननु ॥ २ ॥ 'कुंभनदास' केते दिन बिते किए रेन सुख सैननु । अब गिरिधर बिनु निसि अरु बासर मन न परत कछु चैननु ॥ ३ ॥

सो ऐसे पद मारग में गावत कुंभनदास श्रीगिरिराज ऊपर आय श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरशन किये । सो दोय प्रहर बीते, सो कुंभनदास कों मानों दोय जुग बीते । ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी को श्रीमुख देखत ही सगरो दुःख बिसरि गयो । ता समय कुंभनदास ने एक पद गायो । सो पद—

राग घनाश्री—नैन भरि देख्यो नंदकुमार । ता दिन तैं सब भूलि गई हौं बिसरयो पति-परिवार ॥ १ ॥ बिनु देखे हौं बिबस भई री अंग-अंग सब हारि । तातैं सुधि है सांवरी मूरति लोचन भरि भरि वारि ॥ २ ॥ रूपरासी परिमित नहीं मानों कैसे मिले कन्दाई । 'कुंभनदास प्रभु' गोवर्द्धनघर मिली बहुरि उर लाई ॥ ३ ॥

राग घनाश्री—हिलगन कठिन है या मन की । जाके लिये देखि मेरी सजनी लाज गई सब तन की ॥ १ ॥ धरम जाउ और लोग हसौ सब, अरु आवो कुल-गारी । सो क्यों रहे ताहि बिनु देखे जो जाकौ हितकारी ॥ २ ॥ रस-लुब्ध एक निमिष नहीं छांडत ज्यों अधीन मृग गाने । 'कुंभनदास' यह सनेह मरम कौ श्री-गोवर्द्धनघर जाने ॥ ३ ॥

सो ऐसे पद कुंभनदास ने बहोत ही गाये । सो सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु कहे, जो-कुंभनदास ! तू धन्य है । जो-मेरे बिना एक छिन तोकों कल नाहीं है । तासों मोहू कों तो बिना कछू सुहात

मनभां श्रीगोवर्द्धननाथलता विरह इलेश थयो, के लये लुं श्रीगोवर्द्धननाथलतुं भुभु थयारे जेधश ? येभ विचार करतां भागीभां व्यापतां कुंभनदासे विरहलतुं पद गायुं, ते पद-‘धुभ हों दृषि हों धन नैनन’ (उपर लुभ्या) येवां पद मारगभां गातां कुंभनदासे श्रीगिरिराज उपर आवी श्रीगोवर्द्धननाथलतां दर्शन कर्यां, ते ये प्रहुर वीत्या तेभां कुंभनदासने लखे ये युग वीत्या, ते पथी श्रीगोवर्द्धननाथलतुं श्रीभुभु जेतां ज भधु दुःख बिसरी-गया, ते समये कुंभनदासे येक पद गायुं, १. 'नैन लरि दृष्ये नंदकुमार' २ 'हिलगन कठिन है या मनकी' येवां पद कुंभनदासलये धरुं ज गायां, ये सांभणीने श्रीनाथल पोते कहे, के कुंभनदास तू धन्य छे, भास बिना

नाहीं है। सो या प्रकार कुंभनदामजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी की परस्पर प्रीति हती।

वार्ता-प्रसंग ४—और एक समय मानसिंह देसदेस में दिग्विजय करिके जीतिके आगरे में देसाधिपति के पास आयो। तब देसाधिपति सों सीख मांगि के अपने देस कों चलयो। तब राजा मानसिंह अपने मन सों विचारयो, जो-बहोत दिन में आयो हूं, सो श्रीमथुराजी में न्हायके अपने देस जाऊं तो आछो है। सो राजा मानसिंह यह विचारिके श्रीमथुराजी में आयो। तहां विश्रान्त घाट ऊपर न्हायो। तब चोवेनने मिलिके कह्यो, जो-श्रीकेसोरायजी श्रीठाकुरजी के दरसन कों चलो। सो गरमी ज्येष्ठ मास के दिन और मथुरिया चोवेनने राजा कों आवत जानिके श्रीकेसोरायजी कों जरीकी ओढनी, वागा, पिछवाई, चंदोवा सब जरी के किये। सोने के आभूषण पहिराये। सो दरसन करिके राजा मानसिंह ने अपने मन में कह्यो, जो-इनने मेरे दिग्वायवे के लिये श्रीठाकुरजी कों इतनी जरी लपेटी है। पाछें भेट धरिके चले। पाछें उनने कही, जो-वृंदावन में श्रीठाकुरजी के मंदिर हैं, सो तहां दरसन कों चलेंगे। पाछें राजा मानसिंह श्रीवृंदावन में आयो। सो श्रीवृंदावन के संत महंतनने सुनिके मनमें

એક ક્ષણ પણ તને કળ નથી. તેથી મને પણ તારા વિના કંઈ ગમતું નથી. આ પ્રકારે કુંભનદાસજી અને શ્રીગોવર્દ્ધનનાથજીની પરસ્પર પ્રીતિ હતી.

વાર્તા પ્રસંગ-૪ - વળી એક સમય માનસિંહ દેશ-દેશમાં દિગ્વિજય કરીને જતીને આત્રામાં દેશાધિપતિની પાસે આવ્યો. ત્યારે દેશાધિપતિથી આજ્ઞા માંગીને પોતાના દેશ ચાલ્યો. ત્યારે માનસિંહે પોતાના મનમાં વિચાર્યું, કે બહુ દિવસમાં આવ્યો છું તેથી શ્રીમથુરાજીમાં ન્હાઇને આપણા દેશમાં જઈ તો સાઈ. રાજા માનસિંહ એમ વિચારીને મથુરાજી આવ્યો. ત્યાં વિશ્રાંત ઘાટ ઉપર ન્હાયો. ત્યારે ચોખ્ખા-આંખે મળીને કહ્યું, કે શ્રીકેશવરાયજી ઠાકુરજીનાં દર્શને ચાલો. ત્યારે ગરમી જ્યેષ્ઠ માસના દિવસ અને મથુરિયા ચોખ્ખાઓએ રાજાને આવતો જાણીને શ્રીકેશવરાયજીને જરીની ઓઢણી, વાગા, પિછવાઇ, ચંદરવા બધું જરીતું કર્યું. સોનાનાં આભૂષણ પહેરાવ્યાં. પછી દર્શન કરીને રાજા માનસિંહે પોતાના મનમાં કહ્યું, કે આ લોકોએ મને દેખાડવાને માટે શ્રીઠાકુરજીને આટલી જરી લપેટી છે. પછી ભેટ ધરીને ચાલ્યા. પછી એમણે કહ્યું, કે વૃંદાવનમાં શ્રીઠાકુરજીનાં મંદિર છે ત્યાં દર્શને ચાલીશું. પછી રાજા માનસિંહ શ્રીવૃંદાવનમાં આવ્યો. ત્યારે શ્રીવૃંદાવનના સંત મહંતોએ સાંભળીને

बिचारी, जो-यहां राजा मानसिंह दरसन कों आवेगो । यह जानि के अपने श्रीठाकुरजी के लिये भारी भारी जरी के चीरा, चागा, पटका, सूथन, जरी की ओढ़नी भारी भारी उढाई, और सोने के आभूषण पहराये । पाछें राजा मानसिंह आयके दोय चार ठिकाने बड़े-बड़े मंदिर में दरसन करि भेट किये । गरमी बहोत लगी सो डेरान पें आयो और कह्यो, जो-ये मोकों दिवाघवे के लिये कियो है । ता पाछें राजा मानसिंह वृंदावन सों चलयो, सो तीसरे प्रहर श्रीगोवर्द्धन में आयो । तब काहूने कही, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों चलोगें ? तब राजा मानसिंहने कह्यो, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन तो अवश्य करने हैं । सो तब गोपालपुर में आयके दरसन को समय पूछ्यो, तब काहूने कही, जो-उत्थापन के दरसन होय चुके है । और भोग के दरसन की तैयारी है । तब यह सुनिके राजा मानसिंह पर्वत की ऊपर चढ्यो, सो महा गरमी पड़े । सो उघारे पांव राजा गरमी में व्याकुल होय ऊपर गयो । सो तब ही भोग के किंवाड़ खुले हते । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करत ही राजा मानसिंह के नेत्र सीरे होय गये । सो ऊन दिनन में श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा बड़े वैभव सों होत ही । सो ऊषणकाल के दिन हते, तातें गुलाब के जल

भनभां पियायुं, के अही राजा मानसिंह दर्शन आवेशे ये नालीने पौताना श्रीठाकुरजीने भाटे लारी लारी नरीना थीरा, चागा, पटका सूथन नरीनी आठणी लारी लारी आठवीं अने सोतानां आलूषण पहुरायां । पछी राजा मानसिंह आवीने प्येचार नगाये मोठां मोठां मंदिरोंमां दर्शन करी बेट करी । गरमी घली लागी पछी सुझसे आव्यो अने कहुं, के ये अने दृभाउवाने भाटे क्युं छे । ते पछी राजा मानसिंह वृंदावनथी आव्यो । ते तीन प्रहरे श्रीगोवर्द्धनमां आव्यो । तारे कोधअे कहुं, के श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन आसशे ? तारे राजा मानसिंह कहुं, के श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन तो अवश्य करवां छे । पछी गोपालपुरमां आवीने दर्शनने समय पूछ्यो । तारे कोधअे कहुं, के उत्थापननां दर्शन थध यूक्यां छे अने लोगनां दर्शननी तैयारी छे । ये सांलणीने राजा मानसिंह पर्वत उपर अढ्यो । ते गरमी घली पउ । तेथी उवाडा पगे राजा गरमीमां व्याकुल थधने उपर गयो । ते समये न लोगनां कमाड खुल्यां हुतां । ते श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन करतां न राजा मानसिंहनां नेत्र हंठां थध गयां । ये दिवसोमां श्रीगोवर्द्धननाथजीनी सेवा अहु वैभवथी थती हुती । ते उषणकालना दिवस हुता । तेथी सुसाधना नसने छंटाव थयो हुतो अने

विचारी, जो-यहां राजा मानसिंह दरसन को आवेगो। यह जानि के अपने श्रीठाकुरजी के लिये भारी भारी जरी के चीरा, वागा, पटका, सूथन, जरी की ओढनी भारी भारी उढाई, और सोने के आभूषण पहराये। पाछें राजा मानसिंह आयके दोय चार ठिकाने बड़े-बड़े मंदिर में दरसन करि भेट किये। गरमी बहोत लगी सो डेरान पें आयो और कह्यो, जो-ये मोकों दिग्वायवे के लिये कियो है। ता पाछें राजा मानसिंह वृंदावन सों चल्यो, सो तीखरे प्रहर श्रीगोवर्द्धन में आयो। तब काहूने कही, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों चलोगे? तब राजा मानसिंहने कह्यो, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन तो अवश्य करने हैं। सो तब गोपालपुर में आयके दरसन को समय पूछ्यो, तब काहूने कही, जो-उत्थापन के दरसन होय चुके है। और भोग के दरसन की तैयारी है। तब यह सुनिके राजा मानसिंह पर्वत की ऊपर चढ्यो, सो महा गरमी पड़ै। सो उघारे पांव राजा गरमी में व्याकुल होय ऊपर गयो। सो तब ही भोग के किंवाड़ खुले हते। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करत ही राजा मानसिंह के नेत्र सीरे होय गये। सो उन दिनन में श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा बड़े वैभव सों होत ही। सो ऊषणकाल के दिन हते, तातें गुलाब के जल

मनमां विचार्युं, के अही राजा मानसिंह दर्शने आवेशे से जालीने पेताना श्रीठाकुरजीने भाटे लारी लारी जरीना यीरा, वागा, पटका सूथन जरीनी ओढणी लारी लारी ओढावी अने सोनानां आभूषण पहरेवायां। पछी राजा मानसिंह आवीने अरार जगाअे भाटां भाटां मंदिरोमां दर्शन करी भेट करी, गरमी घणी लागी पछी मुकामे आव्ये अने क्युं, के अे मने देखाडवाने भाटे क्युं छे। ते पछी राजा मानसिंह वृंदावनथी आव्ये। ते त्रीज प्रहरे श्रीगोवर्द्धनमां आव्ये। त्पारे केअे क्युं, के श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शने यासशा? त्पारे राजा मानसिंह क्युं, के श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन तो अवश्य करवां छे। पछी गोपालपुरमां आवीने दर्शनने समय पूछ्ये। त्पारे केअे क्युं, के उत्थापननां दर्शन थछ यूकयां छे अने लोगनां दर्शननी तैयारी छे। अे सांलणीने राजा मानसिंह पर्वत उपर अक्ये। ते गरमी घणी पडे। तेथी उघाडा पजे राजा गरमीमां व्याकुल थछने उपर गये। ते समये ज लोगनां कमाड पुट्यां हुतां। ते श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन करतां ज राजा मानसिंहनां नेत्र हंटां थछ गयां। अे दिवसोमां श्रीगोवर्द्धननाथजीनी सेवा अहु वैभवथी थती हुती। ते उषणकालना दिवस हुता। तेथी गुलाबना जलने छंटाव थये हुते अने

सों छिरकाव भयो हतो, और अरगजा की लपट आवत है, और सुगंध आवत है, और दोहरो पंगवा होन है । सुपेद पाग परदनी को सिंगार, श्रीकंठ में मोतीन की माला, और मोतीनके करनफूल और मोतीनके सूक्ष्म आभूषन । सो सुगंध सहित सीरी व्यारि लागी । सो राजा मानसिंह को रोम र सीतल भयो । सेवा रीति देखि के राजा मानसिंहने कह्यो, जो-सेवा तो यहां है । जो श्रीठाकुरजी सुख सों विराजे हैं । सो साक्षात् श्रीकृष्ण प्रगट भये सुने हते श्रीभागवत में । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी यही हैं । तासों आजु मेरे बड़े भाग्य हैं । जो मैंने ऐसो दरसन पायो है । ता समय श्रीगोवर्द्धननाथजी के आगे कुंभनदासजी पद गावन हते । सो जैसे श्रीगोवर्द्धनधर कोटि कंदर्प लावण्य स्वरूप मन हरन, और तैसे रसरूप कुंभनादासजीने पद गाये । सो पद—

राग नट—रूप देखि नैनं पलक लगे नहीं । गोवर्द्धनधर के अंग अंग प्रति निरखि नैन मन रहत नहीं ॥ १ ॥ कहा री कहां कछु कहत न आवे चित्त चोरयो वे मांग दहीं । 'कुंभनदास' प्रभु के मिलिवेकी सुंदर बात सखियन सों जु कही ॥२॥

राग नट—पूनरी पोरिया इनके भए री माई । को रोके या मग आवत खंजन छोरि दए पलक न कपाट दिये री माई ॥ १ ॥ ठाढ़े रहत प्रेम के वाढ़े निसवासर सब सुख चितए री माई । 'कुंभनदास' लाल गिरिधरन मन के भाजन फोरि ढँडोरि लिये री माई ॥ २ ॥

राग श्रीराग—आवत गिरिधर मन जू हरयो हो । हों अपने घर सचु सों वैठी निरखि बदन अचरा विसरयो हो ॥ १ ॥ रूप निधान रसिक नंदनंदन निरखि नैन धीरजन धरयो हो । 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्द्धनधर अंग अंग प्रेम पीयूष भरयो हो ॥२॥

अने अरगजा (अेक प्रकारकुं मिथित सुगंधी द्रव्य) नी भलेके आवे छे अने गेवडा पंगवा आवे छे. सड़े पाग, परदनीना सुंगार ओकंठमां मोतीनी माला अने मोतीनां कृष्णकूल अने मोतीनां सूक्ष्म आभूषण. पछी सुगंध सहित सीरी उवा लागी तयारे राजा मानसिंहनां रोम रोम शीतल थयां. सेवा रीति जेधने राजा मानसिंहे कछु, के सेवा तो अहीं छे. श्रीठाकुरकुं सुखथी गिराजे छे. साक्षात् श्रीकृष्ण प्रगट थया सांखण्या उता श्रीसागवतमां, ते श्रीगोवर्द्धननाथकुं आज छे. तेथी आज मारां मोठां भाग्य छे, के भने व्यायां दर्शन भव्यां. ते समये श्रीगोवर्द्धननाथकुं आगण कुंभनदासकुं पद गाता उता. ते जेया श्रीगोवर्द्धननाथकुं डोटी कंदर्प लावण्य स्वरूप मन हरणु, तेयां रस रूप कुंभनदासकुं पद गायां. ते पद-रूप दृष्टि-नैनं पलक लगे नहीं. २ पूनरी पोरिया धन के लये भाठ र आवत गिरिधर मनकुं उये छे. (उपर जुओ). अयां पद कुंभनदासकुं गायां. पछी लोगना समय



श्री नथजी

प्रा. स्थान : गिरिराज

प्रा. सं. १५३५

सों छिरकाव भयो हतो, और अरगजा की लपट आवत है, और सुगंध आवत है, और दोहरो पंचा होत है। सुपेद पाग परदनी को सिंगार, श्रीकंठ में मोतीन की माला, और मोतीनके करनफूल और मोतीनके सूक्ष्म आभूषन। सो सुगंध सहित सीरी व्यापारि लागी। सो राजा मानसिंह को रोम र सीतल भयो। सेवा रीति देखि के राजा मानसिंहने कह्यो, जो-सेवा तो यहां है। जो श्रीठाकुरजी सुख सों विराजे हैं। सो साक्षात् श्रीकृष्ण प्रगट भये सुने हते श्रीभागवत में। सो श्रीगोवर्द्धननाथजी यही हैं। तासों आजु मेरे बड़े भाग्य हैं। जो मैंने ऐसो दरमन पायो है। ता समय श्रीगोवर्द्धननाथजी के आगे कुंभनदासजी पद गावत हते। सो जैसे श्रीगोवर्द्धनधर कोटि कंदर्प लावण्य स्वरूप जन हरन, और तैसे रसरूप कुंभनादासजीने पद गाये। सो पद—

राग नट—रूप देखि नैनं पलक लगे नहीं। गोवर्द्धनधर के अंग अंग प्रति निरखि नैन मन रहत तहीं ॥ १ ॥ कहा री कहाँ कछु कहत न आवे चित्त चोरयो वे मांग दहीं। 'कुंभनदास' प्रभु के मिलिवेकी सुंदर वात सखियन सों जु कही ॥२॥

राग नट—पूनरी पोरिया इनके भए री माई। को रोके या मग आवत खंजन छोरि दए पलक न कपाट दिये री माई ॥ १ ॥ ठाढ़े रहत प्रेम के बाड़े निसवासर सब सुख चितए री माई। 'कुंभनदास' लाल गिरिधरन मन के भाजन फोरि ढँढोरि लिये री माई ॥ २ ॥

राग श्रीराग—आवत गिरिधर मन जू हरयो हो। हों अपने घर सजु सों वैठी निरखि बदन अचरा विसरयो हो ॥ १ ॥ रूप निधान रसिक नंदनंदन निरखि नैन धीरज न धरयो हो। 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्द्धनधर अंग अंग प्रेम पीयूष मरयो हो ॥२॥

अने अरगजा (अेक प्रकारसुं मिश्रित सुगंधी द्रव्य) नी भलेक आवे छे अने जेवडा पंचा आवे छे. सङ्के पाग, परदनीना शिंगार श्रोत्रंभंभं भोतीनी भासा अने भोतीनां कर्णकूल अने भोतीनां सूक्ष्म आभूषण. पञ्जी सुगंध सहित इंडी हुवा लागी त्वारे राजा मानसिंहनां रोम रोम शीतल थयां. सेवा रीति जेधने राजा मानसिंहि कछुं, के सेवा तो अह्नीं छे. श्रीठाकुरसु सुभधी गिराजे छे. साक्षात् श्रीकृष्ण प्रकट थया सांसल्या हुता श्रीसागवतमां, ते श्रीगोवर्द्धननाथसु आ ज छे. तेथी व्याज मारां भोथां लाग्य छे, के मने व्यायां दर्शन मय्यां. ते समये श्रीगोवर्द्धननाथसु आगण कुंभनदाससु पद गाता हुता. ते जेवा श्रीगोवर्द्धननाथसु कोटी कंदर्प लावण्य स्वरूप मन हरणु, तेयां रस रूप कुंभनदाससुअे पद गायां. ते पद-रूप देखि-नैनं पलक लगे नहीं. २ पूनरी पोरिया धन के लये भाध र व्यावत् गिरिधर मनलु लये छे. (उपर लुओ), अयां पद कुंभनदाससुअे गायां. पञ्जी लागेना समय

सो ऐसे पद कुंभनदासजीने गाये । ता पाछें भोग को समय होय चुक्यो तब टेरा आयो । पाछें राजा मानसिंह दंडवत करिके अपने डेरान में आयो । ता पाछें सेन आरती के ममे कुंभनदासजी ने यह पद गायो । सो पद—

राग केदारो—लाल के बदन पर आरती वारों । चारु चितवनि करों साज नीकी युक्ति बाती अगनित घृत कपूर सो बारों ॥ १ ॥ संख धुनि मेरि—मृदंग झालर झाँझ ताल घंटा बाजे बहुत विस्तारों । गाऊं सामल सुजस रसना सुखस्वाद रस परम हरख तन चमर कर डारों ॥ २ ॥ कोटि उद्योत रविकान्ति अंग अंग छवि सकल भूलोक को तिमिर टारों । 'दासकुंभन' पिय लाल गिरिधरन को रूप देखि नयनन भरि भरि निहारों ॥ ३ ॥

सो या प्रकार सनेह के कीर्तन गाय अपनी सेवा सों पहोंचि के कुंभनदासजी अपने घर जमुनावता में आये । सो ऊहां राजा मानसिंह अपने डेरान में जाय के अपने मनुष्य के आगे श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा सिंगार की वार्ता कहन लाग्यो । और कह्यो, जो—श्रीगोवर्द्धननाथजी के आगे विष्णु पद गावन हते, सो कौन हतो ? जो—ऐसे पद गाये, जो—मनमें पैंठि गये हैं । ऐसे पद आज ताई मैंने कवहू सुने नहीं । तब एक ब्रजवासी ने कह्यो, जो—ए गोरवा हैं और कुंभनदासजी इनको नाम हैं । जो—अपनी खेती में अन्न होय सो ताही सों जिर्वाह करत हैं । जो—तुमने सुने ही होयगें, जो—आगे देसाधिपति ने बुलाये हते, परंतु कुंभनदासजी कछु लिये नहीं । जो ये महापुरुष हैं । सो तब राजा मानसिंह ने कह्यो, जो—आज तो रात्रि

थध यूक्यो त्यारे राजा मानसिंह दंडवत करीने पोताना मुकामे आव्यो. ते पछी सेन आर्तिना समये कुंभनदासजीये आ पद गायुं. ते पद—लालके वदन पर आरति वारों. (उपर लुओ). ये प्रकारे सनेहनां कीर्तन गाध पोतानी सेवाथी पहोंचीने कुंभनदासजी पोताना धरे जमुनावतामां आव्यो. त्यां राजा मानसिंह पोताना मुकामे जधने पोताना मनुष्योनी आगण श्रीगोवर्द्धननाथजीना सेवा-शृंगारनी वार्ता करवा लाव्यो अने कछुं, के श्रीगोवर्द्धननाथजीनी आगण विष्णु पद गाता हता ते कोणु हता ? (अभए) अेवां पद गायां के मनमां गडी गयां छे. आवां पद आवज सुधी में क्यारेय सांख्यो नथी. त्यारे अेक ब्रजवासीअे कछुं, के अे गोरवा छे अने कुंभनदासजी अेमनुं नाम छे. अे पोतानी अेतीमां जे अन्न थाय छे तेनाथीज निर्वाह करे छे. तमे सांख्युंज हरो के आगण देसाधिपतिअे पोसांव्या हता. परंतु कुंभनदासजीअे कंध दीधुं नही. अे महापुरुष छे. त्यारे राजा मानसिंह कछुं, के आवज तो रात्रि थध छे

भई हैं यातें काल सकारे हमहू इनसों मिलेंगे। सो तब प्रातःकाल राजा मानसिंह उठिके श्रीगिरिराज की परिक्रमा करत परासोली में आयो। सो परासोली में चंद्रमरोवर हैं। तहां कुंभनदासजी न्हाय के खेत ऊपर बैठे हते। सो इतने ही में श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु कुंभनदास के पाम पधारे। सो श्रीमुख देखत ही कुंभनदासजी श्रीनाथजी सों कहे, जो-बाबा ! आगे आवो। तब श्रीनाथजी आपु कुंभनदासजी की गोद में बैठिके कहे, जो-कुंभनदास ! मैं तोसों एक वान कहन आयो हूँ। सो या प्रकार कहत हते, इतने में राजा मानसिंह कुंभनदास के पाम आयो। सो ताही समय श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु भाजि के दरि के एक वृक्ष की ओट में जाय के ठाढ़े गये। सो ताही समय कुंभनदासजी की दृष्टि तो एक श्रीगोवर्द्धननाथजी के संग गई। सो जहां श्रीगोवर्द्धननाथजी ठाढ़े हते सो ताही ओर कों देख्यो करें। तब राजा मानसिंह कुंभनदास कों प्रणाम करिके पास बेठ्यो, परंतु कुंभनदासजी तो राजा मानसिंह की ओर दृष्टि हू नार्हीं किये। सो कुंभनदासजी की एक भतीजी हती। सो जमुनावते सों वेझरिको चूँन कठोटी में करि, लेके कुंभनदास कों रसोई करिवे के लिये लावत हती। सो या भतीजी सों एक ब्रजवासी ने कछो, जो-तू बेगि जा। जो-कुंभनदासजी पाम राजा गयो है सो वह कछ देवे तो तू लीजियो।

तेथीं काले सवारे अमे पणु अमेने मणीशुं. पछी प्रातःकाले राजा मानसिंह उठीने श्रीगिरिराजनी परिक्रमा करतो परासोलीमां आव्यो. त्यां परासोलीमां चंद्रमरोवर छे त्यां कुंभनदासञ्च न्हायने भेत उपर भेडा हुता. अरदाभां श्रीगोवर्द्धननाथञ्च पाते कुंभनदासञ्च पास पधार्या. त्यारे श्रीमुख जेताञ्च कुंभनदासञ्च श्रीनाथञ्चने कहे, बाबा आगण आवो. त्यारे श्रीनाथञ्च पाते कुंभनदासञ्चनी गोदीमां भेरीने कहे, के कुंभनदास ! हुं तने अेक यात कहुवा आव्यो छुं. अे प्रकारे कहेता हुता अरदाभां राजा मानसिंह कुंभनदासञ्चनी पास आव्यो. ते न समये श्रीगोवर्द्धननाथञ्च पाते भाजिने उरीने अेक वृक्षनी अोरमां न्हायने उला रखा. ते न समये कुंभनदासनी दृष्टि तो अेक श्रीगोवर्द्धननाथञ्चना संगे गध. न्यां श्रीगोवर्द्धननाथञ्च उला हुता ते न तरङ्ग जेया करे. त्यारे राजा मानसिंह कुंभनदासञ्चने प्रणाम करीने पास भेडा. परंतु कुंभनदासञ्चने तो राजा मानसिंहनी तरङ्ग दृष्टि पणु न करी. अे कुंभनदासञ्चनी अेक लत्रिञ्च हुती ते नमनावताथो भेजर (नव यष्टा) तो आशे कुरेडमां करी लधने कुंभनदासञ्चने-रसोइ करवाने मटे लावती हुती. अे लत्रिञ्चने अेक ब्रजवासीअे

क्यों, जो-कुंभनदासजी तो छुवेंगे हू नहीं। तब यह भतीजी बेगि ही कुंभनदासजी के पास आई। तब कुंभनदासजी की दृष्टि एक वृक्ष के ओर देखिके कहे, जो-बाबा ! राजा बैठ्यो है। सो कछु इनको समाधान करो। तब कुंभनदासजी कहे, जो-मैं कहा करूँ जो बैठ्यो है तो। जो-कछु बात कहन हते सोऊ भाजि गये। सो अब बात कहेंगे के, नहीं कहेंगे ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु सेन ही में कुंभनदासजी सों कहे, जो-मैं तिहारे ऊपर बहोत प्रमन्न हूँ। जो-मैं बात कहूँगो तू चिंता मति करे। तब कुंभनदासजीको चित्त ठिकाने आयो। सो कुंभनदासजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी की वार्ता राजा आदि काहूँ ने जानी नहीं। पाछे कुंभनदासजी ने भतीजी सों कह्यो, जो-बेटी ! आसन और आरसी लावे, तो मैं तिलक करि लेऊँ। तब भतीजी ने कह्यो, जो-बाबा ! आसन (घासको) पडिया (भेंसकी पाडी) खाय के आरसी (कठोटी को जल) पी गई। तब कुंभनदासजी ने कह्यो, जो-आरसी करि ले आज तो आछो। यह बात सुनिके राजा मानसिंह ने अपने मन में कह्यो, जो-आसन खाय के आरसी पडिया पी गई ! (सो कहा ?) सो इतने ही में भतीजी एक पूरा घाम को और एक कठोटी में पानी भरि के ले आई। सो पूरा को आसन बिछाय दियो

कछु, के तू नवदी न. कुंभनदासजी पासै राजा गयो छे. ओ कंध आपे तो तू लेने. केम ? ने कुंभनदासजी तो अउरो पखु नहीं. तयारे ओ लत्रिण नवदी कुंभनदासजी पासै आवी. तयारे कुंभनदासजी दृष्टि ओक वृक्ष तरङ्ग जेधने कहे, के पावा ! राजा जेठा छे. कंध अतुं समाधान करो. तयारे कुंभनदासजी कहे, हुं शुं कइ ? जेठा छे तो, कंध वात कहेता हुता ते पखु लागी गया. हुवे वात कहेरो के नहीं कहे ? तयारे श्रीगोवर्द्धननाथजी आपे धशाराथी कहे, के हुं तारा उपर धखो प्रसन्न छुं. हुं वात कहीश. तू चिंता न कर. तयारे कुंभनदासजी चित्त ठेकाखे आव्युं. आ कुंभनदासजी अने श्रीगोवर्द्धननाथजीनी वार्ता राजा आदि कोअये नखी नहीं. पछी कुंभनदासजी लत्रिणने कछु, के जेटी ! आसन अने आरसी लावे तो हुं तिलक करी लउं. तयारे लत्रिणने कछु, के पावा ! (घासतुं) आसन पाडी आधने आरसी (कथरोटतुं नस) पी गध. आ वात सांलणीने राजा मानसिंहे पोताना मनमां कछु, के आसन आधने आरसी पाडी पी गध (ओ शुं ?) अटला-मांज लत्रिण ओक घासतो पूजा अने ओक-कथरोटमां पाखी लरीने लध आवी. ते पूजातुं आसन पिछावी दीधुं. ते पूजा उपर कुंभनदासजी जेसीने कथरोटमां

सो ता पूरा पर कुंभनदासजी बैठि के कठोटी में पानी में सुख देखि के तिलक करन लागे । तब राजा मानसिंह ने अपने मन में जान्यो, जो-कुंभनदासजी के द्रव्य को बहोत संकोच हैं, जो आसन आरसी तिलक करवे की नहीं है । सो कुंभनदासजी त्यागी सुनत हते सो देखे । तब राजा मानसिंह ने आरसी सोने की जड़ाऊ घर में जडी ऐसी मनुष्य सों संगई । और पाछे वह आरसी कुंभनदासजी के आगे धरि के कह्यो, जो-बाबा साहिब ! यामें सुख देखि के तिलक करिये । तब कुंभनदासजी कहे, जो-अरे भैया ! मैं याकों धरूँगो कहाँ ? हमारे तो यह छानि के घर हैं । सो यह आरसी हमारे घर में होय तो याके पीछे कोई हमारो जीव लेय, तासों हमारे नहीं चाहियत है । तब राजा मानसिंह ने मन में बिचारी जो-ये आरसी लेके कहा करेगो ? जो-कहा याकों बेचन जायगो ? यह तो इनके काम की नहीं है । तासों कछु ऐसो द्रव्य देजुं जो जनमादि भरि के खायो करें । तब हजार मोहौर की थेली कुंभनदासजी के आगे धरी । तब कुंभनदासजी ने कही, जो-यह हमारे काम की नहीं है । हमारे तो खेती होत है, तामें जो धान उपजत हैं सो हम खात हैं । और कछु हमको चाहियत नहीं । तब राजा मानसिंह ने कह्यो, जो-तिहारो गाम जमुनावता है, सो ताको मैं तुमको लिख्यो करि देजुं । तब कुंभनदा-

पाणीमां सुभ जेधने तिलक करवा लाग्या । तारे राज मानसिंह पोताना मनमां जेधुं के कुंभनदासजे द्रव्यतो धरुा स'डेय छे । आसन, आरसी तिलक करवानी नथी । कुंभनदासजे त्यागी सांखणता हुता ते जेया । तारे राज मानसिंह आरसी सोनानी जडाई घरमां जडेदी जेवी मनुष्यो पासै मंगावी अने पछी ते आरसी कुंभनदासजनी आगण धरीने कहुं, आवा साहुण ! आमां सुभ जेधने तिलक करे । तारे कुंभनदासे कहुं, के अरे साध ! हुं आने धरीश कथां ? अमारे तो आ वासनां घर छे । आ आरसी अमारा घरमां होय तो अनी पाछण डेध अमारे लव ले तेथी अमारे जेधये नहीं । तारे राज मानसिंह पोताना मनमां विचारुं के अे आरसी लधने शुं करे ? शुं आने वेयवा जशे ? आतो अेमना डामनी नथी । तेथी क'ध अेधुं द्रव्य दई के जन्म पर्यंत भाधा करे । तारे लुंजर महारनी थेदी कुंभनदासजना आगण धरी । तारे कुंभनदासजे कहुं, के आ अमारा डामनी नथी । अमारे तो भेती थाय छे । तेमां जे अनाज उपजे छे ते अमे भाइये छीये । भीलुं क'ध अमने जेधतुं नथी । तारे राज मानसिंह कहुं, के तमाइं गाम जम-

सजी ने राजा मानसिंह सों कह्यो, जो-मैं ब्राह्मण तो नाहीं, जो-तेरो उदक लेऊं। और जो तेरे देनो होय तो और काहू ब्राह्मण कों दीजियो, मोकों तिहारो कछु नाहीं चाहियत है। तब राजा मानसिंह ने कह्यो, जो-तुम मोकों अपना मोदी बतावो, सो ताके पास सों सीधो सामान लियो करो। तब कुंभनदासजीने कही, जो-जैसे हम हैं सो तैसे ही हमारो मोदी है। तब राजा मानसिंह ने कह्यो, जो-बनावो तो मही, जो-मैं वाकों देऊंगो। तब कुंभनदासजी ने एक करील को वृक्ष दिखायो, और एक बेर को वृक्ष दिखायके कह्यो, जो-उष्णकाल में तो मोदी करील है, सो फूल और टेंटी देत है। और सीतकाल को मोदी बेरको झाड़ है। सो बेर बहोन देत हैं। सो ऐसे काम चल्यो जात है। तब राजा मानसिंहने कही, जो-धन्य है। जिनके वृक्ष मोदी हैं, जो मैंने आज ताई बड़े २ त्यागी वैरागी देखे, परंतु ये गृहस्थ, सो ऐसे त्यागी हैं! सो ऐसे धरती पर नाहीं हैं। सो तब राजा मानसिंह कुंभनदासजी कों प्रणाम करिके कह्यो, जो-बाबा साहिब ! मोसों कछु तो आज्ञा करो। तब कुंभनदासजी कहे, जो-हम कहेंगे सो करोगे ? तब राजा मानसिंहने कही, जो-तुम आज्ञा करो सोई मैं अपना परम भाग्य मानिके कसूंगो। तब कुंभनदासजी ने कही, जो-आज पाछें तुम

नापता छे. तेने हुं तमने लणी आपुं. त्यारे कुंभनदासजिये राजा मानसिंह-
ने कहुं, हुं तो आज्ञा नथी के ताइं दान लई अपने जे तारे आपुं होय तो
पीन कोष आज्ञाने आपने. मने ताइं कंध न जेधये. त्यारे राजा मानसिंह
कहुं, तमे मने तमारो मोदी अतावो. तेनी पासथी सीधुं सामान दीधा करे. त्यारे
कुंभनदासजिये कहुं, जेवा अमे छीये तेवोन अमारो मोदी छे. त्यारे राजा मान-
सिंह कहुं, अतावो तो अरा ? हुं अने आपीश. त्यारे कुंभनदासजिये केरुंतां अउ
अतावुं अने अक थोरुं वृक्ष अतावीने कहुं, के उष्णकालमें तो मोदी केरुंतां छे ते
इस अने टेंटी (केरुंतां इस) आपे छे अने शियाणानो मोदी थोरुं अउ छे
ते थोर घणुं आपे छे. अनाथी काम गाल्युं जय छे. त्यारे राजा मानसिंह कहुं, के
धन्य छे, जेना वृक्ष मोदी छे ! मैं आज सुधी मोटा मोटा त्यागी वैरागी जेवा परंतु
अे गृहस्थ ते आवा त्यागी छे ! जेवा धरती उपर नथी. त्यारे राजा मानसिंह
कुंभनदासने प्रणाम करीने कहुं, के आवा साहब ! मने कंध तो आज्ञा करे ? त्यारे
कुंभनदासजिये कहुं, के अमे कहीशुं ते करशो ? त्यारे राजा मानसिंह कहुं, के तमे
आज्ञा करे ते हुं माइं परम भाग्य मानीने करीश. त्यारे कुंभनदासजिये कहुं, के

हमारे पास कबहू मति आइयो, और हम सों कछु कहियो मति । तब राजा मानसिंह ने दंडवत करिके कही, जो-तुम धन्य हो, माया के भक्त तो मैं सगरी पृथ्वी में फिरयो, सो बहोन देखे, परंतु श्री-ठाकुरजीके सांचे भक्त तो एक तुम ही देखे । सो यह कहिके राजा मानसिंह चल्यो गयो । तब भतीजी ने पास आयके कुंभनदासजी सों कही, जो-घरमें तो कछु हतो नाहीं, सो राजा देन हतो सो क्यों न लियो ? तब कुंभनदासजी कहे, जो-बैठि रांड ! गोवर्द्धननाथजी सुनेंगे तो खीजेंगे, जो-कुंभनदास की भतीजी बड़ी लोभिन है । तब भतीजी ने कह्यो, जो-मैंने तो हँसिके कह्यो हतो, जो-मोको तो कछु नाहीं चहियत है । तब कुंभनदासजी कह्यो, जो-वेटी ! काहू सों लेवेकी वार्ता हांसी में हू कबहू न कहिये । सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आयके कुंभनदासजी की गोद में बैठिके कहे, जो-तू एक छिन में ऐसो क्यों होय गयो ? तेरे मन में कहा है ? सो तू मोसों कहे ? तब कुंभनदास जीने यह पद गायो । सो पद—

राग सारंग—परम भाँवते जियके मोहन नैनन तैं मति टरो । जो लों जीऊं तो लों देखों वार वार पाइ लागों चित्त अनत न धरों ॥ १ ॥ तब सुख चित्त तोहि लों ले ले अंग भरों । रसिकन माझ रसिक-नंदनंदन तुम पिय मेरे सकल दुःख हरो ॥ २ ॥ आवहु सदा रहो घर मेरे स्याम मनोहर संग किन करो ? 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्द्धनघर तुम बिनु अंजन कासों करों ॥ ३ ॥

सो यह कीर्तन कुंभनदासजी को सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी

आज पछी तमे अमारी पासे कहीये आवता नहीं अने अमने कंध कहेता नहीं । त्यारे राजा मानसिंह दंडवत करीने कहुं, के तमे धन्य छे । मायाना भक्त तो हुं आभी पृथ्वीमां इधे ते धरुआ जेया परंतु श्रीठाकुरजीना साथे भक्त तो अेक तमने न जेया, अेम कहीने राजा मानसिंह आइयो गयो । त्यारे अत्रीअे पासे आवीने कुंभनदासने कहुं, के घरमां तो कंध लुतुं नहीं तेथी राजा देतो लुतो ते केम न दीधुं ? त्यारे कुंभनदासअे कहे भेठ रांड ! गोवर्द्धननाथअे सांअणशे तो भीअशे, के कुंभनदासनी अत्रीअे अहु लोअणु छे । त्यारे अत्रीअे कहुं, के में तो लसवामां कहुं लुतुं । भारे तो कंध जेधतुं नथी । त्यारे कुंभनदासअे कहुं, के जेटी ! जेधनाथी लेवानी वार्ता लसवामां पणु कहीय न कहीअे । ते पछी श्रीगोवर्द्धननाथअे आवीने कुंभनदासअेनी गोदीमां जेसीने कहे के तू अेक क्षणमां अेवो केम थध गयो ? तारा मनमां शुंछे ? ते तू मने कहे । त्यारे कुंभनदासअे आ पद गायुं । 'परम भाव तें अे मोहन नैनन तें मति टरे ।' अे कीर्तन कुंभनदासअे सांअणीने श्रीगोवर्द्धननाथअे गणे

सजी ने राजा मानसिंह सों कह्यो, जो-मैं ब्राह्मण तो नहीं, जो-तेरो उदक लेऊं। और जो तेरे देनो होय तो और काहू ब्राह्मण कों दीजियो, मोकों तिहारो कछु नहीं चाहियत है। तब राजा मानसिंह ने कह्यो, जो-तुम मोकों अपनो मोदी बनावो, सो ताके पास सों सीधो सामान लियो करो। तब कुंभनदासजीने कही, जो-जैसे हम हैं सो तैसे ही हमारो मोदी है। तब राजा मानसिंह ने कह्यो, जो-बनावो तो सही, जो-मैं वाकों देऊंगो। तब कुंभनदासजी ने एक करील को वृक्ष दिखायो, और एक बेर को वृक्ष दिखायके कह्यो, जो-उष्णकाल में तो मोदी करील है, सो फूल और टेंटी देत है। और सीतकाल को मोदी बेरको झाड़ है। सो बेर बहोन देत हैं। सो ऐसे काम चल्यो जान है। तब राजा मानसिंहने कही, जो-धन्य है। जिनके वृक्ष मोदी हैं, जो मैंने आज ताई बड़े २ त्यागी वैरागी देखे, परंतु ये गृहस्थ, सो ऐसे त्यागी हैं! सो ऐसे धरती पर नहीं हैं। सो तब राजा मानसिंह कुंभनदासजी कों प्रणाम करिके कह्यो, जो-बाबा साहिब ! मोसों कछु तो आज्ञा करो। तब कुंभनदासजी कहे, जो-हम कहेंगे सो करोगे ? तब राजा मानसिंहने कही, जो-तुम आज्ञा करो सोई मैं अपनो परम भाग्य मानिके करूंगो। तब कुंभनदासजी ने कही, जो-आज पाछें तुम

नापता छे, तेने हुं तमने लभी आपुं, त्यारे कुंभनदासलये राजा मानसिंहने कछुं, हुं तो ब्राह्मण नथी के ताईं दान लईं अने जे तारे आपुं छे। तब तो भीज के छे। ब्राह्मणने आपने, मने ताईं कंध न जेधये, त्यारे राजा मानसिंह कछुं, तमे मने तमारो मोदी अतायो, तेनी पासथी सीधुं सामान दीधा करे, त्यारे कुंभनदासलये कछुं, जेवा अमे छीये तेवोन अमारो मोदी छे, त्यारे राजा मानसिंह कछुं, अतायो तो भरा ? हुं अने आपीश, त्यारे कुंभनदासलये केरसंतुं आउ अताव्युं अने अके भोरतुं वृक्ष अतावीने कछुं, के उष्णकालमां तो मोदी केरसां छे ते दूस अने टेंटी (केरसांमां दूस) आपे छे अने शियाणानो मोदी भोरतुं आउ छे ते भोर घणां आपे छे, अनाथी काम थाव्युं नथ छे, त्यारे राजा मानसिंह कछुं, के धन्य छे, जेना वृक्ष मोदी छे ! में आज सुधी भोटा भोटा त्यागी वैरागी जेवा परंतु अ गृहस्थ ते आवा त्यागी छे ! जेवा धरती उपर नथी, त्यारे राजा मानसिंह कुंभनदासने प्रणाम करीने कछुं, के आवा साहब ! मने कंध तो आज्ञा करो ? त्यारे कुंभनदासलये कछुं, के अमे कहीशुं ते करशो ? त्यारे राजा मानसिंह कछुं, के तमे आज्ञा करो ते हुं माईं परम भाग्य मानीने करीश, त्यारे कुंभनदासलये कछुं, के

हमारे पास कबहू मति आइयो, और हम सों कछु कहियो मति । तब राजा मानसिंह ने दंडवत करिके कही, जो—तुम धन्य हो, माया के भक्त तो मैं सगरी पृथ्वी में फिरयो, सो बहोत देखे, परंतु श्री-ठाकुरजीके सांचे भक्त तो एक तुम ही देखे । सो यह कहिके राजा मानसिंह चल्यो गयो । तब भतीजी ने पास आयके कुंभनदासजी सों कही, जो—घरमें तो कछु हतो नाहीं, सो राजा देन हतो सो क्यों न लियो ? तब कुंभनदासजी कहे, जो—बैठि रांड ! गोवर्द्धननाथजी सुनेंगे तो खीजेंगे, जो—कुंभनदास की भतीजी बड़ी लोभिन है । तब भतीजी ने कह्यो, जो—मैंने तो हँसिके कह्यो हतो, जो—मोको तो कछु नाहीं चाहियत है । तब कुंभनदासजी कह्यो, जो—बेदी ! काहू सों लेवेकी चार्ता हांसी में हू कबहू न कहिये । सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आयके कुंभनदासजी की गोद में बैठिके कहे, जो—तू एक छिन में ऐसो क्यों होय गयो ? तेरे मन में कहा है ? सो तू मोसों कहे ? तब कुंभनदास जीने यह पद गायो । सो पद—

राग सारंग—परम भाँवते जियके मोहन नैनन तें मति टरो । जो लों जीऊं तो लों देखों बार बार पाइ लागों चित्त अनत न धरों ॥ १ ॥ तब सुख चित्त तोहि लों ले ले अंग भरों । रसिकन मांझ रसिक-नंदनंदन तुम पिय मेरे सकल दुःख हरो ॥ २ ॥ आवहु सदा रहो घर मेरे स्याम मनोहर संग किन करो ? 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्द्धनघर तुम विनु अंजन कासों करों ॥ ३ ॥

सो यह कीर्तन कुंभनदासजी को सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी

आज पछी तमे अभादी पासे कहीये आवता नहीं अने अभने कंठ कहेता नहीं । त्तारे राजा मानसिंह दंडवत करीने कछु, के तमे धन्य छे । भायाना भक्त तो हुं आभी पृथ्वीमां कुर्यो ते घणु जेया परंतु श्रीठाकुरजीना साथे भक्त तो अेक तमने ज जेया । अेम कहीने राजा मानसिंह यावयो गयो । त्तारे भत्रीछमे पासे आवीने कुंभनदासने कछु, के घरमां तो कंठ हतुं नहीं तेथी राजा देतो हतो ते केभ न दीधुं ? त्तारे कुंभनदासछ कहे भेठ रांड ! गोवर्द्धननाथछ सांभणसे तो भीजये, के कुंभनदासनी भत्रीछ अहु सोसणु छे । त्तारे भत्रीछमे कछु, के में तो हसवामां कछु हतुं । भारे तो कंठ जेधतुं नथी । त्तारे कुंभनदासछमे कछु, के भेरी ! केधनाथी लेवानी वार्ता हसवामां पणु कहीय न कहीअे । ते पछी श्रीगोवर्द्धननाथछ आवीने कुंभनदासछनी गौदीमां पेसीने कहे के तू अेक क्षणमां अेयो केभ थध गयो ? तारा मनमां शुं छे ? ते तू भने कहे । त्तारे कुंभनदासछमे आ पद गायुं । 'परम भाव तें छय के मोहन नैनन तें मति टरो ।' अे कीर्तन कुंभनदासछुं सांभणीने श्रीगोवर्द्धननाथछ गये

गरे सों लपटिके कहे, जो-कुंभनदास ! मैं तोसों एक बात कहन कों आयो हूं । तब कुंभनदासजीने कही, जो-कहिये । आपु वा समय बात कहत हते सो ता समय तो राजा अभागिया आय गयो, सो आपु भाजि गये । सो तब सों मेरो मन वा बातमें लागि रह्यो है, सो यह बात आपु कृपा करिके कहिये । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु कुंभनदाससों कहे, जो-कुंभनदास ! आज सखानमें होड परी है, जो-भोजन सबके घरको न्यारो न्यारो देखिये । तामें सुन्दर कौनके घरको है ? सो तुमहू कछु मनोरथ करोगे ? सो मैं यह बात तोसों कहिये आयो हूं । तब कुंभनदासजी पूछे, जो-आपकी रुचि काहे पे है ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-ज्वार की महेरी, दही, दूध, बेझरि की रोटी और टेंटी को साग संधानो । तब कुंभनदासजी कहे, जो-यह तो घर में सिद्ध है । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-बेगि मंगावो । सो तब कुंभनदासजी भतीजी सों कहे, जो-घरतें बेझरि को चून, टेंटी को साग, संधानो, दही दूध बेगि ले आउ । तब भतीजी ने कही, जो-बेझरि को चून टेंटी को साग, संधानो, दही इतनो तो मैं ले आई हूं और दूध जमायवेके ताई तातो होत है, तब कुंभनदासजी कहे, जो-आज दूध जमावे मति । दूध की हांडी और ज्वार घर तें

लपटीने कहे, के कुंभनदास ! हुं तने अेक वात कहेवा आओ्यो छुं । त्तारे कुंभनदास-
 लअे कछुं, के कहे। आप ते समये वात कहेता हुता ते समये तो राज अभागिया
 आवी गया तेथी आप लागी गया । त्तारथी माइं मन अे वातमां लागी रहुं छे ।
 तेथी अे वात आप कृपा करीने कहे। त्तारे श्रीगोवर्द्धननाथल आप कुंभनदासलने
 कहे, के कुंभनदास ! आज सभाओमां होड पडी छे के अधाना घरतुं लोअन अलग
 अलग लेअे, तेमां सुंदर केना घरतुं छे ? तेथी तमे पणु कंध मनोरथ करशा ? हुं अे
 वात तने कहेवा आओ्यो छुं । त्तारे कुंभनदासलअे पूछ्युं, के आपनी इथी शेना उपर
 छे ? त्तारे श्रीगोवर्द्धननाथल कहे, के ज्वारनी भडेरि (घंस) दही, दूध, भेजरनी
 रोटी, अने टेंटीतुं साक, अथाथुं । त्तारे कुंभनदासल कहे अे तो घरमां सिद्ध छे । त्तारे
 श्रीगोवर्द्धननाथल कहे, जवदी मंगावो । त्तारे कुंभनदासल लत्रिलने कहे, घरथी भेज-
 रनो आये टेंटीतुं साक अथाथुं दही दूध जवदी लध आव । त्तारे लत्रिलअे कछुं, के
 भेजरनो आये, टेंटीतुं साक, अथाथुं, दही अेरहुं तो हुं लध आवी छुं अने दूध
 जमायवा माटे लुं थाय छे । त्तारे कुंभनदासल कहे, के आज दूध जमावीश नही ।
 इथनी लांडी अने ज्वार घरथी दणीने लध आव । त्यां सुधी हुं रसोई कइं छुं । त्तारे

दरिंके ले आव, सो तहां ताईं मैं रसोई कग्न हौं । सो न्हाय के तो कुंभनदासजी बैठे ही हते । तासों वेझरि की रोटी नौन डारिके ठीकरा पे किये । इतने में भतीजी जमुनावता गाम में जायके ज्वारि दरिके दूधकी हांडी ले आई । तब कुंभनदासजी हांडीमें पानी डारिके ज्वारकी सामग्री सिद्ध किये । इतने में घरतें सखान की छाक आई, सो कुंभनदास की सामग्री श्रीगोवर्द्धननाथजी पास राखे । पाछें घर के सखान कों चखाय आपु आरोगे ।

भावप्रकाश—कुंभनदासजी की सामग्री विसाखाजीने दूध में मिश्री डारि श्रीस्वामिनीजी कों आरोगाय अति मधुर कर दीनी । सो काहेतें ? जो-विसाखाजी को प्रागव्य कुंभनदासजी हैं ।

और जब श्रीठाकुरजी कों कुंभनदामजी की सामग्री बहोत खाद लगी, ता समय कुंभनदासजी ने कीर्तन गाये । सो पद—

राग सारंग—ब्रज में बडो मेवा यह टेंटी । जाकौ होत है साग संघानो और बेजर की रोटी ॥१॥ ले ले डलिया वीनन निकसी बडे गोप की बेटी । 'कुंभनदास' लाल गिरिघर सों व्है गई भेटा भेटा ॥ २ ॥

राग सारंग—घर घर तें आई है छाक । खाटे सीठे और सलोने विविध भांति के पाक ॥ १ ॥ मंडल रचना करी जमुना तट सघन लता की छांहि । गोपी-ग्वाल सकल मिलि जैमत मुख हि सराहत जाहि ॥२॥ वांटत बल मोहन दोउ भैया कर दोना अति सोहे । चाखत आपुन सखन मुखन दे के गोपीजन मन मोहे ॥ ३ ॥ टेंटी, साग, संघानो रोटी, गोरस, सरस महेरी । 'कुंभनदास' गिरिघर रस-लंपट नाचत दे दे फेरी ॥ ४ ॥

नहायने तो कुंभनदासल येदाव हुता. तेथी येजरनी रोटी भीकुं नाभीने ठीकरा ठपरा करी. अटलाभां अत्रिल जमनावता गामभां जठने ज्वार हणीने दूधनी हांडी लघ आवी. त्तारे कुंभनदासलये हांडीभां पाषुो नाभीने ज्वारनी सामग्रीसिद्ध करी अटलाभां घरथी सभाअोनी छाक आवी. त्तारे कुंभनदासलनी सामग्री श्रीगोवर्द्धननाथलये पास राभी. पछी घरता सभाअेने येदावने आप्य आरेख्या.

भावप्रकाश—कुंभनदासलनी सामग्री विशाखालये दूधभां मिश्री नाभी श्रीस्वामिनीलने आरोगाय अति मधुर करी दीधी. केभके विशाखालतुं प्राकव्य कुंभनदासल छे.

पछी ज्यारे श्रीठाकुरलने कुंभनदासलनी सामग्री अहु स्वाद लागी ते समये कुंभनदासलये कीर्तन गायां. ते पद (१) 'ब्रजमें बडो मेवा अक टेंटी' (२) 'घर तें खाद्य है छाक' ये पदा कुंभनदासलये अति आनंदथी गायां अने पोताना

सो यह कुंभनदासजी अति आनंद पायके गाये । और अपने मन में कहे, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी ने भली एक बात कही, जो-यामें या लीला को अनुभव भयो । या प्रकार श्रीगोवर्द्धननाथजी कुंभनदासजी की ऊपर कृपा करते । वा दिन कुंभनदासजी रस में मग्न होय गये । सो सांझ कों सरीर की सुधि नहीं । तब परासोली तें दौरे, जो आज मैं श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन नहीं पायो । विरह मन में उठि आयो सो भोग सरत हतो ता समय कुंभनदासजी मंदिर में आये । मन में यह, जो-कब दरसन पाऊं । इतने में सेन के किंवाड़ खुले । तब कुंभनदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि नेत्र इकटक लगाय के यह कीर्तन गाये । सो पद—

राग विहाग—लोचन मिलि गए जब चारयो । हों व्है रही ठगी सी ठाढी उर अचरा न सँवारयो ॥ १ ॥ अपने सुभाई नंद जू के आइ सुन्दर स्याम निहारयो । एक टक लगी चरन गति थाकी क्यों हू टरत नहीं टारयो ॥ २ ॥ उपजी प्रीति मदन मोहन सो गृह कौ काज बिसारयो । ' कुंभनदास ' गिरिधर रस लोभी भलो आरज पंथ पारयो ॥ ३ ॥

राग विहागरो—नंदनंदन की बलि जैये । सांवल मृदुल कलेवर की छवि देखि देखि सुख पैये ॥ १ ॥ सकल लोकपति ठाकुर रसना रसिक विमल जस गैये । ' कुंभनदास प्रभु ' गिरिधर कों तन मन सर्वस्व दैये ॥ २ ॥

राग केदारो—छिनु छिनु बानिक और ही और । जब देखों तब नौतन सखीरी दृष्टि न रहे इकठौर ॥ १ ॥ कहा कहीं परमित नहीं पावत बोंहोत करों चित दौर । ' कुंभनदास प्रभु ' सौभग सीवा गिरिधर रसिकराय सिर मोर ॥ २ ॥

सो या प्रकार रस के कीर्तन कुंभनदासने वहोत गाये । सो वे कुंभनदासजी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ।

मनभां कहे, के श्रीगोवर्द्धननाथजीके लली अक वात कही, के आभां आ लीलाना अनुभव थयो. आ प्रकारे श्रीगोवर्द्धननाथजी कुंभनदासजीके ऊपर कृपा करता. ते द्विसें कुंभनदासजी रसभां मग्न थय गया. ते सांजे, शरीरनी सुधि रहुी नहीं. तेथी परासोलीथी होउया. के आन में श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन नथी कर्थां. विरह मनभां थय आव्या. ते सेन भोग सरता हुतो. तेसभये कुंभनदासजी मंदिरभां आव्या. मनभां अे के क्यारे दर्शन करे ? अेरलाभां सेननां कमाउ पुढ्यां. त्यारे कुंभनदासजीके श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन करीने नेत्र अेकटक लगाडीने आ पद गायां—(१) ' लोचन मिलि गये जब चारों ' (२) नंदनंदनकी अलि अलि जैये. (३) छिनु छिनु बानिक औरही और (ऊपर लुओ). अे प्रकारे रसनां कीर्तन कुंभनदासके अहु गायां. ते कुंभनदासजी अेवा कृपापात्र भगवदीय हुता.

वार्ता—प्रसंग ५—और एक समय वृंदावन के संत महंत कुंभ-
नदासजी सों मिलिवे कों श्रीगिरिराज पे आये । सो यासों आये, जो-
जाने जो इनसों श्रीठाकुरजी साक्षात् बोलत हैं । और कुंभनदासजी
श्रीस्वामिनीजी की बधाई गाये हैं, तासों इनसों मिलिके पूछें, जो-
श्रीस्वामिनीजी को वर्णन हमहू किये हैं । और देखें, जो-कुंभनदासजी
कैसो वर्णन करत हैं ? सो यह बिचारिके हरिवंश, हरिदास प्रभृति
महंत, स्वामी आय कुंभनदासजी सों मिलिके पूछे, जो-कुंभनदासजी
तुमने जुगल स्वरूप के कीर्तन किये हैं, सो हमने तिहारे कीर्तन बहोत
सुने, परि कोई श्रीस्वामिनीजी को कीर्तन नाहीं सुन्यो, तासों आपु
कृपा करिके कोई पद श्रीस्वामिनीजी को सुनावो । तब कुंभनदासजी
ने श्रीस्वामिनीजी को एक पद करिके उनकों सुनायो । सो पद—

राग रामकली—कुंवरी राधिके तुव सकल सौभाग्य सीवा या बदन पर कोटि
सत चंद वारि डारों । खंजन कुरंग सत कोटि नैनन उपर वारने करत जियमें विचारों
॥ १ ॥ कदली सत कोटि जंघन ऊपर सिंघ सत कोटि कटि पर न्योछावर करि
उतारों । मत्त गज कोटि सत चाल पर कुंभ सत कोटि इन कुचन पर वारि डारों ॥२॥
फीर सत कोटि नासिका ऊपर कुंद सत कोटि दसनन ऊपर काहे न वारों ? पक्व
किंदूर बंधूक सत कोटि अघरन ऊपर वारि रुचि गर्व टारों ॥३॥ नाग सत कोटि
वेनी ऊपर कपोत सत कोटि ग्रीवा दूरि सारों । कमल सत कोटि कर-जुगल पर
वारने नाहिन कोऊ उपमा जु धारों ॥४॥ 'दासकुंभन' स्वामिनी सुनख-सिख अद्भुत
सुठान कहां लों संभारों । लाल गिरिधर कहत मोहि तोहि लों सुख जो लोंये रूप
छिनु छिनु निहारों ॥ ५ ॥

यह पद कुंभनदासजी ने गायो सो सुनिके श्रीवृंदावन के संत

वार्ता—प्रसंग ५—वणी अेक समय वृंदावनना संतमहंतो कुंभनदासलने भण-
वाने श्रीगिरिशय व्याव्या, ते अेथी व्याव्या के लखे ले अेमनाथी श्रीठाकुरल साक्षात्
पेले छे अने श्रीस्वामिनीलनी वधाई गाथ छे तेथी अेभने भणीने पूछीअे अने
श्रीस्वामिनीलनुं वरुन अेभे पणु क्युं छे तेथी अेभये के कुंभनदासल केयुं वरुन
करे छे ? अे विचारिने हरिवंश, हरिदास प्रभृति महंत स्वामी आवी कुंभनदासलने
भणीने पूछे, के कुंभनदास ! तमे जुगल स्वरूपनां कीर्तन क्युं छे ते अेभे तमारां
कीर्तन धरुं सांलणुं परंतु केध स्वामिनीलनुं कीर्तन नथी सांलणुं । तेथी आप
कृपा करिने केध पद श्रीस्वामिनीलनुं संलणावे । तयारे कुंभनदासलअे, श्रीस्वामि-
नीलनुं अेक पद करिने अेभने संलणाव्युं । ते पद :— ' कुंवरि राधिके ' (उपर
लुअे) । अे पद कुंभनदासलअे गाथुं । अे सांलणीने श्रीवृंदावनना संतमहंत अहु

महंत बहोत प्रसन्न भये । और कहे, जो-हमने श्रीस्वामिनीजी के पद बहोत किये हैं, तामें चंद्रमा आदि की उपमा बहोत दीनी हैं । परि कुंभनदास ! तुमने तो शतकोटि चंद्रमा वारि डारें हैं । तासों कुंभनदासजी कों श्रीस्वामिनीजी आगे जगत में कौज उपमा देवे योग्य नाहीं (दीसत), सो या प्रकार अद्भुत स्वरूपको वरणन किये हैं । पाछें कुंभनदासजी सों बिदा होयके सिंगरे वृंदावन में आये । सो ये कुंभनदासजी किशोर भावना, लीला रसमें मग्न रहते । सो ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे ।

वार्ता-प्रसंग ६—और एक समय श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल में श्रीनवनीतप्रियजी सों बिदा मांगिके श्रीद्वारिकाजी पधारिवे को विचार किये, सो परदेस में दैवी जीवन के उद्धारार्थ । सो श्रीगोकुलतें श्रीनाथजीद्वार आयके श्रीगोवर्द्धननाथजी के सेवा सिंगार किये । ता पाछें अनोसर करायके आपु भोजन करि के अपनी बैठक में गादी तकियान के ऊपर बिराजे हते, सो तहां सिंगरे वैष्णव आयके पास बैठे हते । सो बात चलत में कुंभनदासजी की बात चली । तब काहू वैष्णवमें श्रीगुसांईजी के आगे यह बात कही, जो-सहाराज ! कुंभनदासजी के घर आजकाल द्रव्य को बहोत संकोच है, सो काहेतें ? जो घरमें परिवार बहोत है, जो-सात बेटा हैं, और सातों बेटान की

प्रसन्न तथा अने कहे के अने श्रीस्वामिनीजीनां पद धरुं कर्थां छे तेमां यंद्र आदिनी उपमा धरुं दीधी छे परंतु कुंभनदास ! तमे तो सो करेउ यंद्रमा वारी नाथ्या छे. तेथी कुंभनदासजीने श्रीस्वामिनीजीनी आगण जगतमां कोष उपमा देवा योग्य नथी जणुतुं. अे प्रकारे अद्भुत स्वरूपतुं वर्णुं कर्थां छे. ते पछी कुंभनदासजीथी विदाय थधने पछा वृंदावनमां आव्या. अे कुंभनदासजी किशोर भावना दीदारसमां भगन रहेता. अे अेवा कृपापात्र भगवदीय हुता.

वार्ता-प्रसंग ६-वणी अेक समय श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुलमां श्रीनवनीत-प्रियजीथी विदाय थधने श्रीद्वारिकाजी पधारवाने विचार कर्थां. ते परदेशमां दैवी लयाना उद्धार भाटे. पछी श्रीगोकुलथी श्रीनाथजीद्वार आवीने श्रीगोवर्द्धननाथजीना सेवा-सिंगार कर्थां. ते पछी अनोसर करीने आपु सोलन करीने आपुतानी अेकमां गादीतकिया उपर बिराज्या हुता त्यां सधणा वैष्णवो आवीने पासे अेका हुता. त्यारे बात आसतामां कुंभनदासनी बात आसी. त्यारे कोष वैष्णवो श्रीगुसांईजीनी आगण अे बात कही, के सहाराज ! कुंभनदासजीना घर आवेकास द्रव्यते धरुं सकोच छे.

बहू हैं। और आपु स्त्रीपुरुष और एक भतीजी। सो ताहू में आये गये वैष्णवन को समाधान करत हैं, और आमदनी तो थोरीसी है। जो परसोली में खेती है, तामें निर्वाह टेंटी फूलन सों करत हैं। यह बात सुनिके श्रीगुसाईंजी ने अपने मनमें राखी। ता पाछें (जब) कुंभनदासजी श्रीगुसाईंजी के दरसन कूं आये, तब दंडबन करिके ठाड़े होय रहे। तब श्रीगुसाईंजी कहे, जो-कुंभनदासजी ! बैठो। तब कुंभनदासजी बैठे। पाछें श्रीगुसाईंजी सिंगरे वैष्णवनकों विदा करिके कुंभनदास सों कहे, जो-कुंभनदासजी ! हम श्रीद्वारिकाके मिस परदेसकों जात हैं, तहां अनेक वैष्णवन सों मिलाप होयगो। सो वैष्णवननें बहोत बिनती पत्र लिखे हैं, तासों अवश्य जानो है। सो तुम हमारे संग चलो। सो भगवदीयन कों विरहको क्लेश बाधा न करे, और भगवदीयन को काल आछें व्यतीत होय। सो तिहारे संग तें कछु जान्यो न परे। और हमने सुन्यो है, जो-तिहारे घर द्रव्यको संकोच है, सोऊ कार्य सिद्ध होयगो। तासों तुमकों सर्वथा चलयो चाहिये। तब कुंभनदासजीने श्रीगुसाईंजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! आपु के साम्हे हमसों बहोत बोल्यो नाहीं जात है, जो-आपु आज्ञा करो सोई हमकों करनो। इतने में उत्थापन को समय भयो। तब

डेभडे ? घरमां परिवार घण्णो छे. जे सात भेदा छे अने साते भेदाओनी पड्ठुओ छे. वणी आपु पोते स्त्रीपुरुष अने अेक लत्रीछ. तेभांअे आव्या गया वैष्णुवोतुं समाधान करे छे अने आवक तो थोडी सरणी छे. परासोदीमां भेती छे तेमां निर्वाह टेंटी फूलोथी करे छे. अे वात सांलणीने श्रीगुसांछुअे पोताना मनमां राणी. ते पछी न्यारे कुंभनदासछु श्रीगुसांछुअे दर्शने आव्या त्यारे दंडवत् करीने उला रह्या. त्यारे श्रीगुसांछु कहे, के कुंभनदासछु ! भेसो. त्यारे कुंभनदासछु भेसो. पछी श्रीगुसांछु अथा वैष्णुवोने विदाय करीने कुंभनदासछुने कहे, के कुंभनदासछु ! अमे श्रीद्वारकाना सिधे परदेशे जधअे छीअे. त्यां अनेक वैष्णुवोथी मिलाप थशे. वैष्णुवोअे घण्णो बिनंती-पत्रो लभ्या छे तेथी अवश्य जपुं छे. तेथी तमे अमारी साथे आसो. जेथी लगवदीयने विरहनेा क्लेश आधा न करे अने लगवदीयनेा समय सारी रीते व्यतीत थाय. तमारा संगथी कंछ (विरह) जडुथे नहीं जय. वणी अमे सांलण्णुं छे के तमारा घरमां द्रव्यनेा संकोच छे. ते पछु कार्य सिद्ध थशे. तेथी तमारे सर्वथा आसपुं जेधअे. त्यारे कुंभनदासछुअे श्रीगुसांछुअे बिनंती करी, के भडु-राज ! आपनी सामे अमाराथी घण्णुं भोसातुं नथी. आप आज्ञा करे ते जे अमारे

श्रीगुसांईजी स्नान करिके, श्रीगोवर्द्धननाथजी कों उत्थापन करायकें, सेन पर्यतकी सेवा सों पढ़ोंचिके आपु बैठक में पधारे । तब श्रीगुसां-ईजी आपु कुंभनदास सों कहे, जो-अब तुम घर जाऊ, जो-सवारे घर सों विदा होयके आइयो, राजभोग आरती पाछें परदेस कों चलेंगे । पाछें कुंभनदासजी श्रीगुसांईजीकों दंडवत करिके अपुने घर जमुनावतामें आये । ता पाछें सवारे घरतें श्रीगुसांईजी के पास आये । तब श्रीगुसांईजी आपु स्नान करिके परवत ऊपर पधारिके श्रीनाथजी कों जगाये । पाछें सेवा सिंगार करि राजभोग धरि समयानुसार भोग सरायके, राजभोग आरती करि श्रीगोवर्द्धननाथजी सों विदा होय परवत सों नीचे पधारे । सो अप्सराकुंड ऊपर डेरा अगाऊ भये हते । तब कुंभनदास सों कहें, जो-अब हम अप्सराकुंड ऊपर डेरान में जायकें सोवेंगे । सो तब सब वैष्णव तथा कुंभनदासजी अप्सराकुंड ऊपर आये । तब कुंभनदासजी अपने मनमें विचार करन लागे, जो-हे मन ! अब कहा करिये ? 'कहिये कहा कहिये की होय ? प्राणनाथ विछुरन की वेदन जानत नाहिं न कोय ॥ १ ॥' या प्रकार विचार करत श्रीगोवर्द्धननाथजी को विरह हृदय में बढ़ि गयो । तब श्रीगुसां-ईजी आपु डेरान के भीतर जागे । सो जब उत्थापन को समय भयो,

इसुं. अथलाभां उत्थापनना समय थयो त्यारे श्रीगुसांइल स्नान करी श्रीगोवर्द्धननाथलने उत्थापन करावीने सेन पर्यतनी सेवाथी पहोंच्यीने पोते षेठकभां पधार्या. त्यारे श्रीगुसांइल पोते कुंभनदासलने कडे, के लुवे तमे घर जय. सवारे घरथी विदाय थधने आवजे. राजभोग आर्ति पथी परदेशे यादीशुं. पथी कुंभनदासल श्रीगुसांइलने दंडवत करीं । पोताना घर जभनावते आव्या. त्यार पथी सवारे घरथी श्रीगुसांइलनी पास आव्या. त्यारे श्रीगुसांइलने पोते स्नान करीने पर्यत उपर पधारीने श्रीनाथलने जगाया. पथी सेवा-शुंगार करी राजभोग धरी समयानुसार भोग सरावीने राजभोग आर्ति करी श्रीगोवर्द्धननाथलथी विदाय थध पर्यतथी नीचे पधार्या. त्यारे अप्सराकुंड उपर मुकाम अगाथी थया लता. तेथी कुंभनदासे कहुं, के लुवे अमे अप्सराकुंड उपर मुकामे जधने सूधुं. त्यारे अथा वैष्णव अने कुंभनदासल अप्सरा कुंड उपर आव्या. त्यारे कुंभनदासल पोताना मनमां विचार कर्या लाग्या के, हे मन ! लुवे शुं इसुं ? 'कहिये कहा कहिये की होय ? प्राणनाथ विछुरन की वेदन जानत विरहा डोष' अे प्रकार विचार इरतां श्रीगोवर्द्धननाथलने विरह हृदयमां बढ़ी गयो. त्यारे श्रीगुसांइल पोते तंजुना अंहर जग्या. त्यारे उत्थापनना

तब कुंभनदासजी को श्रीनाथजी के दरसन की सुधि आई, नेत्रन में सों आंसुनकी धारा चली, सो सगरे सरीर में पुलकावली हौन लागी। पाछें कुंभनदासजी डेरान के पास ही एक वृक्ष तरें ठाड़े-ठाड़े धीरे-धीरे गावन लागे। सो पद—

राग सारंग—किते दिन व्है जु गए विनु देखे। तरून किसोर रसिक नंद-
नंदन कलुक उठत मुख रेखे ॥ १ ॥ वह सोभा वह कांति वदन की कोटिक चंद्र
विसेखे। वह चितवनि वह हास्य मनोहर वह नटवर वपु मेखे ॥ २ ॥ स्यामसुंदर
संग मिलि खेलन की आवत जिय अपेखें। 'कुंभनदास' लाल गिरिधर विनु जीवन
जन्म अलेखें ॥ ३ ॥

यह कीर्तन कुंभनदासजीनें अत्यंत विरह क्लेश सों गायो। सो श्रीगुसांईजी आपु डेरान के भीतर बैठके कुंभनदासजी को सगरो कीर्तन सुने। सो कुंभनदासजी को क्लेश श्रीगुसांईजी आपु सहि नहीं सके। सो आपु डेरानतें बाहिर पधारिके कुंभनदासजी की यह दसा देखे, जो-नेत्रन सों जल बह्यो जात है, महा विरह करिके दुःखी होय रहे हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुखतें कुंभनदास सों कहे, जो-कुंभनदास ! तुम मंदिर में जायके श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करो, जो-तिहारो विदेश होय चुक्यो।

भावप्रकाश—सो काहेतें ? जो जैसी तिहारी दसा यहां है, सो तैसी दसा उहां श्रीगोवर्द्धननाथजी की होयगी। सो कैसे जानिये ? जो जैसे 'गज्जनधावन' कों श्रीअक्काजी ने पान लेवे कों पठायो सो गज्जन कों तो श्रीनवनीतप्रियजी के

समय थयो। त्यारे कुंभनदासलने श्रीनाथलना दर्शननी याद आवी। नेत्रोभांथी आंसुआनी धारा यादी तेथी पधा शरीरमां रोभांय थया लाग्यां। पछी कुंभनदासल मुझाभनी पासे न अक वृक्षनी नीचे उसा उसा धीरे धीरे गावा लाग्या। ते पदः—
'केते दिन व्है लु गये' (उपर लुआ)। आ कीर्तन कुंभनदासलने अत्यंत विरह क्लेशथी गायुं। त्यारे श्रीगुसांइलने पोते तंछुनी अंदर पेसीने कुंभनदासलनुं सघणुं कीर्तन सांलण्युं। पछी कुंभनदासने क्लेश श्रीगुसांइल पोते सही न सक्या। अइले पोते तंछुथी पधारिने कुंभनदासलनी आ दशा जेध, के नेत्रोभांथी नस यादयुं नय छे। महा विरह करिने दुःखी थय रह्या छे। त्यारे श्रीगुसांइल आप श्रीमुखथी कुंभनदासलने कहे, कुंभनदास ! तमे मंदिरमां नधने श्रीगोवर्द्धननाथलनां दर्शन करे। तमारो विदेश थय चूक्यो।

भावप्रकाश—केमके ? जेवी तमारी दशा अही छे जेवी दशा त्यां श्रीगोव-
र्द्धननाथलनी दुशे। ते केम लखिये ? के जेम गज्जनधावनने श्रीअक्कालने पान

विरह को एक क्षण सह्यो न जातो, सो पान लेवे कों द्वार सों बाहिर जात ही विरह ज्वर चढ्यो । सो द्वार पास ही दुकान में परि रह्यो, मूर्छा खाइके । और यहाँ मंदिर में श्रीआचार्यजी श्रीनवनीतप्रियजी कों राजभोग धरे । तब श्रीनवनीतप्रियजी ने महाप्रभुन सों कही, जो-मेरो गज्जन आवेगो तब मैं आरोगूंगो । तब श्रीआचार्यजी सवन सों पूछे, जो-गज्जन कहाँ गयो है ? तब श्रीअक्काजी कहे, जो-पान न हते तासों गज्जन कों पान लेवे पठायो है । तब श्रीआचार्यजी कहे, जो-तुम जानत नाहीं, जो-गज्जन विना श्रीनवनीतप्रियजी एक छिन नाहीं रहत हैं ? तासों गज्जन कों पान लेन कों क्यों पठायो ? ता पाछें गज्जन कों बुलायेवे कों ब्रजवासी पठायो, सो गज्जन कों बुलाय के ले आयो । तब गज्जन ने श्रीनवनीतप्रियजी के पास आय के कह्यो, जो-बाबा ? आरोगो । तब श्रीनवनीतप्रियजी आरोगे । सो गज्जन विना आपु विरह करिकें बैठि रहे । सो यह श्रीआचार्यजी के मार्ग की मर्यादा है । जो जैसो सेवक को एक चित्त सों स्वामी के ऊपर (अनन्य) भाव होय, तैसेही स्वामी को भाव दास विषे (विशेष) सेवक के ऊपर होय । सो श्रीभगवान अर्जुन प्रति कहे हैं, जो—

‘ ये यथा सां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् । ’

तासों श्रीगुसाईंजी आपु कुंभनदासजी सों कहे, जो-जैसो तुम यहाँ

देवाने मोकल्यो त्यारे गज्जनने तो श्रीनवनीतप्रियजीना विरहनी ओक क्षण पणु सडी न जाती. ते पान देवाने द्वार सुधी गहार जतांज विरह ज्वर चढ्यो ते द्वार पासेज दुकानमां पडी रखा मूर्छा पाछेने अने अहीं मंदिरमां श्रीआचार्यजीअ श्रीनवनीतप्रियजीने राजभोग धर्या. त्यारे श्रीनवनीतप्रियजीअ महाप्रभुने कहुं. के भारो गज्जन आवेशे त्यारे हुं आरोगीश. त्यारे श्रीआचार्यजीअ गधाने पूछे, के गज्जन क्यां गयो छे ? त्यारे श्रीअक्काजी कहे, के पान न हुतां तेथी गज्जनने पान देवा मोकल्यो छे. त्यारे श्रीआचार्यजीअ कहे, के तमे जाणुता नथी के गज्जन विना श्रीनवनीतप्रियजीअ ओक क्षण नथी रहता तेथी गज्जनने पान देवा केम मोकल्यो ? ते पछी गज्जनने जोलाववाने ओक ब्रजवासी मोकल्यो. ते गज्जनने जोलावीने लछ आव्यो. त्यारे गज्जनने श्रीनवनीतप्रियजीअनी पासे आवीने कहुं, के बाबा ! आरोगो. त्यारे श्रीनवनीतप्रियजीअ आरोग्या. गज्जन विना आपु विरह करीने ऐसी रखा. आ श्रीआचार्यजीअ मार्गनी मर्यादा छे, के जेवो सेवकने ओक चित्तथी स्वामीना उपर (अनन्य) भाव होय तेवो ज स्वामीने भाव दास विषे सेवकना उपर होय. ते श्रीभगवाने अर्जुन प्रति कहुं छे के ‘ येयथासां ’ (उपर नुच्यो). तेथी श्रीगुसाईंजीअ आपु कुंभनदासजीअने कहे, के जेपुं

श्रीगोवर्द्धननाथजी के लिये विरह दुःख करत हो, तैसे उहाँ श्रीगोवर्द्धननाथजी तिहारे लिये विरह दुःख करत हैं । तासों तुम बेगि जायकें श्रीगोवर्द्धननाथजी के दाग्न करो, तिहारो विदेश होय चुक्यो ।

या प्रकार श्रीगुसांईजी ने कुंभनदास को आज्ञा दीनी । तब कुंभनदास को रोम रोम सीतल होय गयो । तब मनमें प्रसन्न होय श्रीगुसांईजी को दंडवत करि बेगि अप्सराकुंडतें दोरि के श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में आये । ता समय उत्थापन के दरसन को समय हतो, सो किंवाड खुले । तब कुंभनदासजी ने यह पद गायो । सो पद—

राग नट—जोपें चोंप मिलनकी होई । तो क्यों रह्यो परे सुनि सजनी लाख करे किन कोई ॥ १ ॥ जोपे विरह परस्पर व्यापे तो कछु जीय वने । लोक लाज कुल की मर्यादा एको चित्त न गिने ॥ २ ॥ 'कुंभनदास' जिहिं तन लागी और कछु न सुहाय । गिरिधरलाल तोय विनु देखे छिन छिन कल्प विहाय ॥ ३ ॥

यह पद सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रसन्न होय के कुंभनदास सो कह्ये, जो—कुंभनदास ! मैं तेरे मनकी बात जानत हूं । जो-तू मेरे बिना रहि नहीं सकत है । तैसें मैं हू तो बिना रहि नहीं सकत हों । तासों अब तू सदा मेरे पास ही रहेगो । तब कुंभनदासजी ने वही पद प्रसन्न होयके साष्टांग दंडवत कीनी, और हाथ जोरिके कुंभनदासजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी सो बिनती कीनी जो—महाराज ! सोको

तमे अही श्रीगोवर्द्धननाथलना भाटे विरह दुःख करे छे तेपुं त्यां श्रीगोवर्द्धननाथल तभारा भाटे विरह दुःख करे छे, तेथी तमे नदनी नधने श्रीगोवर्द्धननाथलनां दर्शन करे, तभारे विदेश थध यूक्ये।

अे प्रकारे श्रीगुसांईलये कुंभनदासने आज्ञा आपी त्तारे कुंभनदासलुं रोम-रोम सीतल थध गयुं, त्तारे मनमां प्रसन्न थध श्रीगुसांईलने दंडवत करी नदनी अप्सरा कुंडथी हाडीने श्रीगोवर्द्धननाथलना भदिरथां आव्या, ते समय उत्थापनना दर्शननेा समय लुते। ते कभाड थुध्यां, त्तारे कुंभनदासलये अे पद गायुं, ते पद ' जे पे चोंप मिलनकी होय ' (उपर लुये)। अे पद सांखणी श्रीगोवर्द्धननाथल प्रसन्न थधने कुंभनदासलने छे, के कुंभनदास लुं तारा मननी यात नथुं थुं, के तू मारा बिना रही शकते नथी, तेस लुं पणु तारा बिना रही शकते नथी, तेथी लुवे तू सदा मारी पासेन रहीश, त्तारे कुंभनदासे थधु प्रसन्न थधने साष्टांग दंडवत करी अने हाथ जेडीने कुंभनदासलये श्रीगोवर्द्धननाथलने बिनती करी, के महु-

यही चाहियत हतो, और यही अभिलाषा हती, जो—तुमसों बिछायो न होय । सो कुंभनदासजी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ।

वार्ता—प्रसंग ७—और एक समय श्रीगुसाईंजी के पास कुंभनदास बैठे हते और सगरे वैष्णव हू बैठे हते । सो श्रीगुसाईंजी आपु हंसिके कुंभनदासजी सों पूछे, जो—कुंभनदास ! तिहारे बेटा कितने हैं ? तब कुंभनदासजी ने श्रीगुसाईंजी सों कह्यो, जो—महाराज ! बेटा तो मेरे डेढ़ हैं । तब श्रीगुसाईंजी कहे, जो—हमने तो सात बेटा सुने हैं, और तुम डेढ़ बेटा कहे, ताको कारन कहा ? तब कुंभनदासजी ने कह्यो, जो—महाराज ! यों तो सात बेटा हैं, तामें पांच तो लौकिकासक्त हैं, जो—वे बेटा काहे के हैं ? और पूरो एक बेटा तो चतुर्भुजदास है । और आधो बेटा कृष्णदास है । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी की गायन की सेवा करत है ।

भावप्रकाश—सो तहां संदेह होय—गायन की सेवा तो सर्वोपरि है । और गायन की सेवा किये तें बहोत वैष्णव श्रीठाकुरजी कों पाये है; और कुंभनदासजी कृष्णदास कों आधो बेटा क्यों कहे ? तहां कहत हैं, जो—श्रीआचार्यजी आपु यह पुष्टिमार्ग प्रगट किये हैं । सो पुष्टिमार्ग ब्रजजन को भावरूप मार्ग है । सो भगवदीय गाये हैं, जो—‘सेवा रीति प्रीति ब्रजजन की जनहित जग प्रगटाई ।’

राज ! मने अने अने छे अने अने अलिखापा हती के तभाराथी विभाग न थाय. अने कुंभनदासले अने कृपापात्र भगवदीय हता.

वार्ता—प्रसंग ७—वणी अनेक समय श्रीगुसाईंजीनी पास कुंभनदासले भेडा हता अने अथा वैष्णवो पणु भेडा हता. तयारे श्रीगुसाईंजी आपु हसिने कुंभनदासलेने पूछे के कुंभनदासले ! तभारे भेटा केडला छे ? तयारे कुंभनदासलेने श्रीगुसाईंजीने कहुं. के महाराज ! भेटा तो भारे दोढ छे. तयारे श्रीगुसाईंजी कहे, के अने तो सात भेटा सांभल्या हता अने तमे दोढ कह्यो तेनुं कारणु शुं ? तयारे कुंभनदासलेने कहुं, महाराज ! अने तो सात भेटा छे तमां पांच तो लौकिक आसक्त छे. अने भेटा शेना ? अने पूरे अने भेटा तो चतुर्भुजदास छे अने अर्धो भेटा कृष्णदास छे. ते श्रीगोवर्द्धननाथजीनी गायनी सेवा करे छे.

भावप्रकाश—त्यां संदेह थांय के गायनी सेवा तो सर्वोपरि छे अने गायनी सेवा करवाथी धरुा वैष्णव श्रीठाकुरलेने पाम्या छे अने कुंभनदासलेने कृष्णदासने अर्धो भेटा केम कह्यो ? त्यां कहे छे, के श्रीआचार्यलेने पोते आ पुष्टिमार्गने प्रकट कर्यो छे. अने पुष्टिमार्ग ब्रजजनोने भावरेप मार्ग छे. तेथी भगवदीये गायुं छे, ‘सेवा

सो ब्रजभक्तन की कहा रीति है ? जो-श्रीठाकुरजी के सन्निधान में तो सेवा करं, सो स्वरूपानंद को अनुभव करि संयोग रस में मग्न रहैं । और श्रीठाकुरजी गो-चाग्न अर्थ ब्रज में पधारं तब ब्रजभक्त विरह रस को अनुभव करि गान करें । सो या प्रकार संयोग रस और विप्रयोग रस को अनुभव जाकों होय सो पूरो वैष्णव होय । और (जामें) एक न होय सो आधो वैष्णव है । सो कृष्णदास तो गायन की सेवा करत है । और श्रीगोवर्द्धननाथजी को दरसन हू होत है । परंतु ब्रजभक्तन की रहस्य लीला को अनुभव नाहीं है । तासों ये आधो है । और चतुर्भुजदास संयोग और विप्रयोग दोऊ रस के अनुभवयुक्त सेवा करत हैं, सो लीलासंबंधी कीर्तन हू गान करत हैं । तासों कुंभनदासजी चतुर्भुजदास को पूरो बेटा कहे ।

यह कुंभनदासजी के बचन सुनिके श्रीगुसांईजी आपु प्रसन्न होयके कहे, जो-कुंभनदास ! तुम सांची बात कही । जो-भगवदीय है सोई बेटा है । और बहोत भये तो कौन काम के ? सो चतुर्भुजदासजी की वार्ता तो श्रीगुसांईजी के सेवकन में लिखी है, और अब कृष्णदास की वार्ता कहत हैं—

वार्ता-प्रसंग ८—सो ये कृष्णदास श्रीगोवर्द्धननाथजी के गायन की सेवा करतें, सो गायन के ग्वाल हते । सो श्रीगुसांईजी आपु

रीति प्रीति प्रबन्धन की जनहित जग प्रगटाछ' ते प्रबलकतोनी शी रीत छे ? के श्रीठाकुरलना सानिध्यमां तो सेवा करे अने स्वरूपानंदने अनुभव करी संयोग रसमां भगनं रडे अने श्रीठाकुरल गोचारण अर्थ प्रबमां पधारे तयारे प्रबलकत विरह रसने अनुभव करी गान करे. आ प्रकारे संयोग रस अने विप्रयोग रसने अनुभव लेने डोय ते पूरो वैष्णव थाय अने लेमां ओक न डोय ते अर्धो वैष्णव छे. तेथी कृष्णदास तो गायनी सेवा करे छे अने श्रीगोवर्द्धननाथलनां दर्शन पणु करे छे परंतु प्रबल-कतनी रहस्यलीलानो अनुभव नथी. तेथी ओ अर्धो छे अने चतुर्भुजदास संयोग अने विप्रयोग अने रसना अनुभवयुक्त सेवा करे छे. ते लीला संबंधी कीर्तन पणु गान करे छे तेथी कुंभनदासलओ चतुर्भुजदासने पूरो भेटा कह्यो.

आ कुंभनदासलना वचन सांभलीने श्रीगुसांईल पोते प्रसन्न थकने कहे के कुंभनदास ! तमे साथी वात कही जे लगवदीय छे तेज भेडा छे भीज घण्टा थया ते शा कामना ? ओ चतुर्भुजदासनी वार्ता तो श्रीगुसांईलना सेवकमां लपी छे अने लुवे कृष्णदासनी वार्ता कहीओ छीओ.

वार्ता-प्रसंग ८—ओ कृष्णदास श्रीगोवर्द्धननाथलनी गायनी सेवा करता. ओ

कृष्णदास कों गायन की सेवा दीनी हती । सो सगरे खिरक की सेवा करि कें आछें झारि बुहारिके ता पाछें गायन के संग बन में जाते, सो सगरे दिन गाय चरावते । सो संध्या समय गायन कों घेरि के ले आवते । एक दिन कृष्णदास गाय चराय के घर आवत हते सो पूंछरी के पास आये । सो सगरी गाय तो खिरक में गई, और एक गाय बहुत बडी हती, ताको एन बहोत भारी हतो । सो दूध हू बहोत देती, और थन हू बडे हते । सो वह गाय हरुवे-हरुवे चलती । वा गायके पाछें कृष्णदास आवन हते सो पूंछरी के पास श्रीगिरिराज की कंदरा में ते एक नाहर निकस्यो । सो वह सगरी गाय तो भाजिके खिरक में आई । और वह गाय धीरे चलती, सो वा गाय के ऊपर नाहर दोरयो । तब कृष्णदास ने नाहर सों ललकारि के कह्यो, जो-अरे अधर्मी ! यह श्रीगोवर्द्धननाथजी की गाय है, और तू भूख्यो होय तो मेरे ऊपर आव । सो नाहर की यह रीति है, जो-ललकारे सो ताही पे आवे । तब नाहर निकट आयो । सो जब कृष्णदास ने वा गाय कों हांकी, सो वह डरपि के भाजी सो खिरक में आई, और कृष्णदास कों नाहर ने मारयो । और सब गाय भाजिके खिरक में आई हती सो गायन कों गोपीनाथ आदि उवाल दुहन लागे । सो

गायाना व्यास हुता, श्रीगुसांछल्ये पोते कृष्णदासने गायानी सेवा आपी हुती. तेथी ये सभय गौशाणानी सेवा करीने सुंदर आडी खुहारीने ते पछी गायानी साथे वनमां जता. त्यां व्यासे दिवस गाय चरावता. पछी संध्या सभय गायाने घेरिने लघु आवता. अेक दिवस कृष्णदास गायो चरावीने घर आवता हुता त्यारे पूंछरीनी पासो आव्या. त्यारे भधी गाय तो गौशाणामां गध अने अेक गाय अहुंज भोटी (नडी) हुती तेनुं आठे लारी हुतुं. ते दूध अहुं देती हुती अने थन पखु भोटां हुतां. ते गाय धीरे धीरे आसती. अे गायनी पाछण कृष्णदास आवता हुता. त्यारे पूंछरीनी पासो श्रीगिरिराजली इंदराभांथी अेक वाघ निकस्यो. तेथी ते भधी गायो तो लागीने गौशाणामां आवी अने तेगाय धीरे धीरे आसती अेथी अे गायना उपर वाघ टाडयो. त्यारे कृष्णदासे वाघने ललकारिने इलुं, के अरे अधर्मी ! अे श्रीगोवर्द्धननाथली गाय छे अने तू भूख्यो होय तो मारा उपर आव. ते वाघनी अे रीति छे के ललकारे तेनी पासो आवे. त्यारे वाघ निकट आव्यो. ते न्यारे कृष्णदासे ते गायने हांकी त्यारे ते डरीने लागी ते गौशाणामां आवी अने कृष्णदासने वाघे मार्या अने भधी गायो ने गौशाणामां आवी हुती ते गायाने

गोपीनाथ ग्वाल बड़े कृपापात्र भगवदीय हते। सो देखे तो-श्रीगोवर्द्धननाथजी वा बड़ी गाय कों दुहत हैं। और कृष्णदास वा गाय को बछरा पकरें ठाड़े हैं, सो कुंभनदासजी हू ठाड़े हते। सो गाय बछरा कों चाटत है। सो कुंभनदासजी कों खिरक में ऐसो दरसन भयो। ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी वा बड़ी गाय कों दुहिके आपु तो मंदिर में पधारे। तब गुसाईंजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सेन भोग धरे। सो कुंभनदास हू खिरक में ते मंदिर में चले, सो दंडोती सिलाके पास आये। इतने में सब समाचार आये, जो-कृष्णदास ग्वाल कों नाहर ने मारयो। तब कृष्णदास की बात काहूने कुंभनदास सों कही जो-तिहारे बेटा कृष्णदास कों नाहर ने मारयो है। यह बात सुनिके कुंभनदासजी मूर्छा खाइके गिर पड़े। सो ऐसे गिरे जो कछ देहानुसंधान न रह्यो। सो कुंभनदास कों ब्रजवासी वैष्णव व्होतेरो बुलावें सो कुंभनदासजी बोले नहीं। तब ये समाचार काहूने श्रीगुसाईंजी सों जायके कहे, जो-महाराज ! कुंभनदास को बेटा कृष्णदास ग्वाल नाहर ने मारयो है, और कृष्णदास ने गाय बचाई। आपु नाहर के आड़े परि देह छोड़ी, सो कृष्णदास पूंछरी की ओर परे हैं। तब श्रीगुसाईंजी कहे, जो-ऐसे मति कहो। क्यों ? जो-गाय कृष्णदास कों कबहू छोडि आवे नहीं।

गोपीनाथ आदि होइया लाग्या, ते गोपीनाथ ग्वाल भोटा कृपापात्र भगवदीय हुता, ते लुभे तो श्रीगोवर्द्धननाथल ते भोटी गायने हूडे छे अने कृष्णदास अने गायतुं वाछुं पकडीने उला छे, (अ समये) कुंभनदासल पणु (त्यां) उला हुता, गाय वाछुने याटे छे, कुंभनदासलने (पणु) गौशासामां अवां दर्शन थयां, ते पछी श्रीगोवर्द्धननाथल अने भोटी गायने होडीने पोते तो मंदिरमां पधार्या, त्यारे श्रीगुसाईंजलने पोते श्रीगोवर्द्धननाथलने सेनभोग धर्या, पछी कुंभनदासल पणु गौशासामांथी मंदिरमां याव्या, ते दंडवती शीसानी पासि आंव्या, अटसामां अथा समाचार आंव्या के कृष्णदास ग्वालने वाधे भार्या छे, अने वात सांखणीने कुंभनदासल मूर्छा पाठने पड्या, ते अनेवा पड्या, के कंध देहानुसंधान न रह्युं, त्यारे कुंभनदासने ब्रजवासी वैष्णव धनुं धनुं पोलावे परंतु कुंभनदासल पोले नहीं, त्यारे अने समाचार कोअने श्रीगुसाईंजलने जधने कथ्या, के महाराज ! कुंभनदासना भेटा कृष्णदासने वाधे भार्या अने कृष्णदासने गाय अयावी, पोते वाधनी आउ पडी देह छोडी, ते कृष्णदास पूंछरीनी तरङ्ग पड्या छे, त्यारे श्रीगुसाईंजल कहे, अने न कहे, केम ने गाय कृष्णदासने क्यारेय छोटे नहीं,

भावप्रकाश—सो काहेतें, जो-अंत समय गाय संकल्प करत है, सो ताकों गाय उत्तम लोक में ले जात है। और कृष्णदास ने तो श्रीगोवर्द्धननाथजी की गाय बचाई है, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी की गाय कृष्णदास कों कबहू न छोड़ेगी।

तब श्रीगुसांईजी आपु पूछे, जो-कुंभनदासजी कहां है? तब काहू वैष्णव ने विनती कीनी, जो-महाराज! कुंभनदास कों तो पुत्र को सोक बहोत व्याप्यो है, सो दंडोती सिला के पास भूर्छा खायके गिर परे हैं। सो कितनेक लोग पुकारत हैं, परि कुंभनदासजी काहू सों बोलत नाहीं। जो अचेत परे हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीनाथजी की सेवा सों पहाँचि के अनोमर कराय परवत तें नीचे पधारि दंडोती सिला के पास कुंभनदासजी परे हते तहां पधारे। ता समय वैष्णव ने सब समाचार कहे। सो श्रीगुसांईजी आपु देखें तो कुंभनदासजी के पास सब लोग ठाड़े हैं। ता समय लोगन नें कही, जो-महाराज! कुंभनदासजी बड़े भगवदीय हैं, परंतु पुत्र को सोक महा बुरो होत है, सो या पीड़ा सों कोई बच्यो नाहीं है। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-इनकों पुत्रको सोक नाहीं है; जो-इनकों और दुःख है। सो तुम कहा जानो? इनकों यह दुःख है जो-सूतक में श्रीनाथजी के दरसन कैसें होयगे? सो या दुःख सों

भावप्रकाश—डेभके जे अंतसमये गाय संकल्प करे छे तेने गाय उत्तम लोकमां लय छे अने कृष्णदासने तो श्रीगोवर्द्धननाथजीनी गाय बचायी छे. ते श्रीगोवर्द्धननाथजीनी गाय कृष्णदासने कहीय नही छोडे.

पछी श्रीगुसांईजी पोते पूछे के कुंभनदासजी क्यां छे? तयारे डेभ वैष्णवे विनती करी, डे महाराज! कुंभनदासने तो पुत्रनो शोक बहोत व्याप्यो छे. तेथी दंडवती शिलानी पास भूर्छा खाइने पड्या छे. ते डेहलाक लेके भोलावे छे परंतु कुंभनदासजी डेभथी भोलाता नथी. जे अचेत पड्या छे. तयारे श्रीगुसांईजी पोते श्रीनाथजीनी सेवार्थी पहेंचीने अनासर इरावी पर्वतथी नीचे पधारी दंडवती शिलानी पास कुंभनदासजी पड्या हुता त्यां पधार्या. ते समये वैष्णवोअे अथा समाचार कइल। तयारे श्रीगुसांईजी पोते लुअे तो कुंभनदासजीनी पास अथा लोको उला छे. ते समये लोकोअे कहुं, डे महाराज! कुंभनदास महान भगवदीय छे परंतु पुत्रनो शोक अहु भोरो होय छे. अे पीड़ाथी डेभ अच्यो नथी. तयारे श्रीगुसांईजी पोते कहे, डे अेभने पुत्रनो शोक नथी अेभने पीलुं दुःख छे ते तमे शुं जाणो? अेभने अे दुःख छे, डे सूतकमां श्रीनाथजीनां दर्शन केवी रीते थशे? आ हःअथी पड्या छे. हवे तमारो संहैल हूर थशे. तयारे श्री-

गिरे हैं। सो अब तुम्हारे संदेह दूर होयगो। तब श्रीगुसांईजी आपु भगवदीयन को स्वरूप प्रकट करिवे के लिये कुंभनदास को पुकारि के कहे, जो-कुंभनदास ! सवारे श्रीनाथजी के दरसन को आइयो, जो-तुमको श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करवावेंगे। तब श्रीगुसांईजी के यह बचन सुनिके कुंभनदासजी ने तत्काल उठि के श्रीगुसांईजी को साष्टांग दंडवत कीनी, और बिनती कीनी। जो-महाराज ! आपु बिना मेरे अंतःकरण की कौन जाने ? तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-हम जानत हैं, तुमको संसार संबंधी दुःख लगे नाहीं। जो कोई वैष्णव तिहारो एक क्षण संग करे तो वाको लौकिक दुःख न लागे। तो तुमको कहा ? तासों जावो, जो-कृष्णदास के शरीर को संस्कार करो। पाछें सवारे दरसन को आइयो। तब कुंभनदासजी श्रीगुसांईजी को दंडवत करिके जायके कृष्णदास के शरीर को क्रियाकर्म किये। और श्रीगुसांईजी आप बैठक में जायके विराजे, तब सगरे वैष्णव बैठक में आयके बैठे। सो इतने में गोपीनाथदास ग्वाल(नें) आयके कह्यो, जो-महाराज ! कृष्णदास को तो पूछरी पास नाहर ने मारयो, और मैं खिरक में गोदोहन करत हतो, सो ता समय श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु वा बड़ी गाय को दुहत हते और कृष्णदास वा गाय को बछरा थांमे हते। सो गाय बछरा को चाटत हती। सो

गुसांईजी पोते भगवदीयानु स्वरूप प्रकट करवाने भाटे कुंभनदासने पोछरीने कथुं, के कुंभनदास ! सवारे श्रीनाथजीनां दर्शने आवजे, तमने श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन करवीशुं। त्यारे श्रीगुसांईजीनां ये वचन सांभलीने कुंभनदासने तत्काल उठीने श्रीगुसांईजीने साष्टांग दंडवत कर्यां अने बिनती करी, के महाराज ! आपना बिना मारा अंतःकरणनी कोषु जाखे ? त्यारे श्रीगुसांईजी पोते कहे, के अमे जाखिये छीअे के तमने संसार संबंधी दुःख लागे नहीं। ने कोछ वैष्णव तमारो अेक क्षण पणु संग करे तो अने लौकिक दुःख न लागे। तो तमने शुं ? तेथी जाव, कृष्णदासना शरीरनो अग्निसंस्कार करो। पछी सवारे दर्शने आवजे, त्यारे कुंभनदासने श्रीगुसांईजीने दंडवत करीने जधने कृष्णदासना शरीरनुं क्रियाकर्म क्युं अने श्रीगुसांईजी पोते भेडकमां जधने विराज्या त्यारे पछा वैष्णवो भेडकमां आवीने भेडकमां गायनामां गोपीनाथदास ग्वाल आवीने कथुं, के महाराज ! कृष्णदासने तो पूछरीपासे पाघे भार्यो अने हुं गौशालामां गोदोहन करतो छतो ते समये श्रीगोवर्द्धननाथजी पोते अे भोटी गायने दोहता छता अने कृष्णदासने गायना वाछाते पकडयो छतो। अे गाय वाछाते

ऐसो दरसन खिरक में ओकों भयो । तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख सों कहे, जो-यामें आश्रय कहा ? ये कृष्णदास ऐसे भगवदीय हैं, जो-आपु नाहर के आडे परे और श्रीगोवर्द्धननाथजी की गाय कों बचाई । सो कृष्णदास के ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु प्रसन्न होय के अपनी लीला में कृष्णदास कों प्राप्त किये । सो तुम भगवदीय हो, तासों तुमकों दरसन भयो । और कों तो लीला के दरसन दुर्लभ हैं । यह बात सुनिके सगरे वैष्णव ब्रजवासी बहोत प्रमन्न भये जो-सेवा पदार्थ ऐसो है । ता पाछें प्रातःकाल कुंभनदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आये । तब श्रीगुसांईजीने सेवकन सों आज्ञा कीनी, जो-सब तें पहले कुंभनदासजी कों दरसन करवाय देउ, ता पाछें और सगरे लोग दरसन करेंगे । पाछें श्रीगुसांईजी ने सबतें पहले कुंभनदासजी कों दरसन करवाय दियो । सो या प्रकार कुंभनदासजी के ऊपर श्रीगुसांईजी आपु अनुग्रह किये ।

भावप्रकाश—सो काहेतें ? जो सूतकी कों भगवत्-मंदिर में कौन आयवे देतो ? सो कुंभनदास कों सूतकमें दरसन कराये । सो यह रीति वा दिन तें राखी । जो सूतक जाकों होय सोहू दरसन पावे । सो या प्रकार कुंभनदासजी की कृपातें सूतकीन कों दरसन हौन लागे । सो यह रीति श्रीगुसांईजी आपु यासों

यादती हुती. जेवां दर्शन गौशाणाभां भने थयां. त्यारे श्रीगुसांईजी श्रीमुखी कहे, के जेभां आश्रय शुं ? जे कृष्णदास जेवा भगवदीय हुता के पोते वाघनी आउ पडया जने श्रीगोवर्द्धननाथजीनी गायने भयावी. तेथी कृष्णदासना उपर श्रीगोवर्द्धननाथजीपोते प्रसन्न थधने कृष्णदासने पोतानी लीलाभां प्राप्त कर्था. ते तमे भगवदीय छे तेथी तभने दर्शन थयां. भीजने तो लीलानां दर्शन दुर्लभ छे. जे वात सांखणीने जधा वैष्णव ब्रजवासी घण्टा प्रसन्न थया, के सेवा पदार्थ जेवा छे. ते पछे प्रातःकाल कुंभनदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शने आव्या. त्यारे श्रीगुसांईजीसेवकाने आज्ञा करी, के सौंथी पहेलां कुंभनदासजीने दर्शन करावी दा. ते पछी भीज जधा दोडो दर्शन करी. पछी श्रीगुसांईजी जे जधाथी पहेलां कुंभनदासने दर्शन करावी दीयां. जे प्रकारे कुंभनदासजीना उपर श्रीगुसांईजीपोते अनुग्रह कर्था.

भावप्रकाश—केभडे सूतकीने भगवत्-मंदिरभां केषु आवना हेतो ? तेथी कुंभनदासने सूतकभां दर्शन कराव्यां. जे रीति ते दिवसथा राभी, के जेने सूतक होय ते पछे दर्शन करे. जे प्रकारे कुंभनदासनी कृपाथी सूतकीजाने दर्शन थवा लाग्यां. जे रीति श्रीगुसांईजीपोते जेथी करी के वैष्णवना हृदयभां स्नेह छे जे आगण कौण

किये, जो-वैष्णव के हृदय में स्नेह है, सो आगे कोई जानेगो नहीं। तासों आगे के वैष्णव कों दरसन की छुट्टी रहे। तब वैष्णव हू सुख पावें, और श्री-गोवर्द्धननाथजी हू सुख पावें। तासों आगे दरसन की छुट्टी राखे।

सो कुंभनदासजी भोग पर्यंत दरसन करि पाछे परासोलीं में जायके विरह के पद गावते। सो पद—

राग बिहागरो—तिहारे मिलन विनु दुखित गोपाल। अति आनुर कुलवधू ब्रज-सुंदरि प्यारे-विरह बेहाल ॥ १ ॥ सीतल चंद्र तपत दहत किरननि कमलपत्र जल-जनु व्याल। चंदन कुसुम सुहाय न बाढी है तन ज्वाल। 'कुंभनदास' नव तन स्याम तुम विनु कनकलता सूकी मानों ग्रीष्म काल ॥ २ ॥

राग बिहागरो—अब दिन रात पहारसे भए। तब तें निघटत नाहिन जब तें हरि मधुपुरी गए ॥ १ ॥ यह जा नियत विघाता जुग सम कीने जाम नए। जागत जात विघात न क्यों हू ऐसे मीत ठए ॥ २ ॥ ब्रजवासी सब परम दीन अति व्याकुल सोच लए। ज्यों विनु प्रान दुखित जलरुह गन दाखन हृदे हए। 'कुंभनदास' विछुरि नंदनंदन बहु संताप दए। अब गिरिधर विनु रहत निरंतर लोचन नीर छए ॥ ४ ॥

राग केदारो—औरनकों समीप विछुरनो आयो मेरे ही हिंसा। सब कोऊ सोवे अपुने सुख आली मोकों चाहत जाय चहुं दिसा ॥ १ ॥ ना जानों या विघाता की गति मेरे आंक लिखे ऐसे कौन रिसा। 'कुंभनदास' प्रभु गिरिधर कहैत निसदिन ही रटे ज्यों चातक घन त्रिसा ॥ २ ॥

सो या प्रकार विरह के पद गायके कुंभनदासजीनें सूतक के दिन व्यतीत किये। ता पाछे शुद्ध होयके कुंभनदासजी अपनी सेवा में आये, सो जैसे नित्य नेम सों सेवा करते तार्ही प्रकार सों करन लागे। सो या प्रकार को स्नेह कुंभनदासजी को श्रीगोवर्द्धननाथजी में हतो।

वार्ता-प्रसंग ९—और एक दिन श्रीगोकुलनाथजी और श्रीबाल-

लक्ष्मणे नही। तेथी आगणना वैष्णुवेने दर्शननी छुट्टी रहे। त्यारे वैष्णुवे पण सुभ पाये अने श्रीगोवर्द्धननाथल पण सुभ पाये तेथी आगण दर्शननी छुट्टी रापी।

पछी कुंभनदासल भोग पर्यंत दर्शन करी पछी परासोलींमां आवीने विरहनां पद गाता। ते पद—(१) ' तिहारे मिलन विनु ', (२) ' अब दिन रात ' (३) ' औरनको समीप ' (उपर लुआ)। ये प्रकारे विरहनां पद गाधने कुंभनदासलये सूतकना द्विसो व्यतीत कर्या। ते पछी शुद्ध थधने कुंभनदासल पोतानी सेवामां आव्या। ते नेम नित्य नेमथी सेवा करता हुता तेज प्रकारथी करवा लाग्या। ये प्रकारनो स्नेह कुंभनदासलनो श्रीगोवर्द्धननाथलमां हुतो।

वार्ता-प्रसंग ६-वणी अेक द्विस श्रीगोकुलनाथल अने श्रीबालकृष्णल अे अने

ऐसो दरसन खिरक में मोकों भयो । तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख सों कहे, जो-यामें आश्चर्य कहा ? ये कृष्णदास ऐसे भगवदीय हैं, जो-आपु नाहर के आडे परे और श्रीगोवर्द्धननाथजी की गाय कों बचाई । सो कृष्णदास के ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु प्रसन्न होय के अपनी लीला में कृष्णदास कों प्राप्त किये । सो तुम भगवदीय हो, तासों तुमकों दरसन भयो । और कों तो लीला के दरसन दुर्लभ हैं । यह बात सुनिके सगरे वैष्णव ब्रजवासी बहोत प्रसन्न भये जो-सेवा पदार्थ ऐसो है । ता पाछें प्रातःकाल कुंभनदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आये । तब श्रीगुसांईजीने सेवकन सों आज्ञा कीनी, जो-सब तें पहले कुंभनदासजी कों दरसन करवाय देउ, ता पाछें और सगरे लोग दरसन करेंगे । पाछें श्रीगुसांईजी ने सबतें पहले कुंभनदासजी कों दरसन करवाय दियो । सो या प्रकार कुंभनदासजी के ऊपर श्रीगुसांईजी आपु अनुग्रह किये ।

भावप्रकाश—सो काहेतें ? जो सूतकी कों भगवत्-मंदिर में कौन आयवे देतो ? सो कुंभनदास कों सूतकमें दरसन कराये । सो यह रीति वा दिन तें राखी । जो सूतक जाकों होय सोहू दरसन पावे । सो या प्रकार कुंभनदासजी की कृपातें सूतकीन कों दरसन हौन लागे । सो यह रीति श्रीगुसांईजी आपु यासों

यादती लती. जेवां दर्शन गौशाणाभां भने थयां. त्यारे श्रीगुसांईजी श्रीमुखी कहे, के जेभां आश्चर्य शुं ? जे कृष्णदास जेवा लगवदीय लता के पोते पावनी आउ पडया जने श्रीगोवर्द्धननाथजीनी गायने भयावी. तेथी कृष्णदासना उपर श्रीगोवर्द्धननाथजीजे पोते प्रसन्न थधने कृष्णदासने पोतानी लीलाभां प्राप्त कर्था. ते तजे लगवदीय छे तेथी तभने दर्शन थयां. भीजनने तो लीलानां दर्शन दुर्लभ छे. जे वात सांलणीने अधा वैष्णव ब्रजवासी धरुा प्रसन्न थया, के सेवा पदार्थ जेवो छे. ते पछी प्रातःकाल कुंभनदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शने आव्या. त्यारे श्रीगुसांईजीजे सेवकाने आज्ञा करी, के सौथी पहुलां कुंभनदासजीने दर्शन करावी हो. ते पछी भीज अधा लोको दर्शन करी. पछी श्रीगुसांईजीजे अधाथी पहुलां कुंभनदासने दर्शन करावी दीयां. जे प्रकारे कुंभनदासजीना उपर श्रीगुसांईजीजे पोते अनुग्रह कर्था.

भावप्रकाश—केभके सूतकीने लगवत्-मंदिरभां कोण आववा देतो ? तेथी कुंभनदासने सूतकभां दर्शन कराव्यां. जे रीति ते दिवसथा राभी, के जेने सूतक डाय ते पछ दर्शन करे. जे प्रकारे कुंभनदासनी कृपाथी सूतकीजेने दर्शन थवा लाग्यां. जे रीति श्रीगुसांईजीजे पोते जेथी करी के वैष्णवना लुहयभां स्नेह छे जे आगण कोछ

किये, जो-वैष्णव के हृदय में स्नेह है, सो आगे कोई जानेगो नहीं । तासों आगे के वैष्णव कों दरसन की छुट्टी रहे । तव वैष्णव हू सुख पावें, और श्री-गोवर्द्धननाथजी हू सुख पावें । तासों आगे दरसन की छुट्टी राखे ।

सो कुंभनदासजी भोग पर्यंत दरसन करि पाछे परासोलीं में जायके विरह के पद गावते । सो पद—

राग विहागरो—तिहारे मिलन विनु दुखित गोपाल । अति आतुर कुलबधू ब्रज-सुंदरि प्यारे-विरह बेहाल ॥ १ ॥ सीतल चंद्र तपत दहत किरननि कमलपत्र जल-जनु व्याल । चंदन कुसुम सुहाय न बाढी है तन ज्वाल । 'कुंभनदास' नव तन स्याम तुम विनु कनकलता सूकी मानों ग्रीष्म काल ॥ २ ॥

राग विहागरो—अब दिन रात पहारसे भए । तव तैं निघटत नाहिन जब तैं हरि मधुपुरी गए ॥ १ ॥ यह जा नियत विघाता जुग सम कीने जाम नए । जागत जात विहात न क्यों हू ऐसे मीत ठए ॥ २ ॥ ब्रजवासी सब परम दीन अति व्याकुल सोच लए । ज्यों विनु प्रान दुखित जलरुह गन दारुन हृदें हए । 'कुंभनदास' विलुरि नंदनंदन बहु संताप दए । अब गिरिधर विनु रहत निरंतर लोचन नीर छए ॥ ४ ॥

राग केदारो—औरनकों समीप विलुरनो आयो मेरे ही हिसा । सब कोऊ सोवे अपुने सुख आली मोकों चाहत जाय चहुं दिसा ॥ १ ॥ ना जानों या विघाता की गति मेरे आंक लिखे ऐसे कौन रिसा । 'कुंभनदास' प्रभु गिरिधर कहैत निसदिन ही रटे ज्यों चातक घन त्रिसा ॥ २ ॥

सो या प्रकार विरह के पद गायके कुंभनदासजीनें सूतक के दिन व्यतीत किये । ता पाछे शुद्ध होयके कुंभनदासजी अपनी सेवा में आये, सो जैसे नित्य नेम सों सेवा करते ताही प्रकार सों करन लागे । सो या प्रकार को स्नेह कुंभनदासजी को श्रीगोवर्द्धननाथजी में हतो ।

वार्ता-प्रसंग ९—और एक दिन श्रीगोकुलनाथजी और श्रीवाल-

लक्ष्मणे नडी. तेथी आगणना वैष्णुवाने दर्शननी छुट्टी रहे. त्यारे वैष्णुवो पण सुभ पामे अने श्रीगोवर्द्धननाथल पण सुभ पामे तेथी आगण दर्शननी छुट्टी राभी.

पछी कुंभनदासल लोग पर्यंत दर्शन करी पछी परासोलींमां आवीने विरहनां पद गाता. ते पद—(१) 'तिहारे मिलन विनु', (२) 'अथ दिन रात' (३) 'औरनको समीप' (उपर लुओ). ये प्रकारे विरहनां पद गाधने कुंभनदासलये सूतकना द्विसो व्यतीत कर्या. ते पछी शुद्ध थधने कुंभनदासल पेतानी सेवामां आव्या. ते नेम नित्य नेमथी सेवा करता हुता तेण प्रकारथी करवा लाग्या. ये प्रकारने स्नेह कुंभनदासलने श्रीगोवर्द्धननाथलमां हुतो.

वार्ता-प्रसंग ९-१०—एक दिवस श्रीगोकुलनाथल अने श्रीपालकृष्णल ये अने

ऐसो दरसन खिरक में सोकों भयो । तब श्रीगुसांईजी श्रीगुण सों कहे, जो-यामें आश्रय कहा ? ये कृष्णदास ऐसे भगवदीय हैं, जो-आपु नाहर के आडे परे और श्रीगोवर्द्धननाथजी की गाय कों बचाई । सो कृष्णदास के ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु प्रसन्न होय के अपनी लीला में कृष्णदास कों प्राप्त किये । सो तुम भगवदीय हो, तासों तुमकों दरसन भयो । और कों तो लीला के दरसन दुर्लभ हैं । यह बात सुनिके सगरे वैष्णव ब्रजवासी बहोत प्रसन्न भये जो-सेवा पदार्थ ऐसो है । ता पाछें प्रातःकाल कुंभनदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आये । तब श्रीगुसांईजीने सेवकन सों आज्ञा कीनी, जो-सब तें पहले कुंभनदासजी कों दरसन करवाय देउ, ता पाछें और सगरे लोग दरसन करेंगे । पाछें श्रीगुसांईजी ने सबतें पहले कुंभनदासजी कों दरसन करवाय दियो । सो या प्रकार कुंभनदासजी के ऊपर श्रीगुसांईजी आपु अनुग्रह किये ।

भावप्रकाश—सो काहेतें ? जो सूतकी कों भगवत्-मंदिर में कौन आयवे देतो ? सो कुंभनदास कों सूतकमें दरसन कराये । सो यह रीति वा दिन तें राखी । जो सूतक जाकों होय सोहू दरसन पावे । सो या प्रकार कुंभनदासजी की कृपातें सूतकीन कों दरसन होंन लागे । सो यह रीति श्रीगुसांईजी आपु यासों

यादती हती. जेवां दर्शन गौशाणाभां भने थयां. त्पारे श्रीगुसांभल श्रीगुभथी कहे, डे जेभां आश्रय शुं ? जे कृष्णदास जेवा लगवदीय हुता डे पोते वाधनी आडे परया जने श्रीगोवर्द्धननाथलनी गायने भयावी. तेथी कृष्णदासना उपर श्रीगोवर्द्धननाथलजे पोते प्रसन्न थधने कृष्णदासने पोतानी लीलाभां प्राप्त कर्था. ते तजे लगवदीय छे तेथी तभने दर्शन थयां. भीजनने तो लीलानां दर्शन दुर्लभ छे. जे वात सांभणीने भधा वैष्णव ब्रजवासी धणु प्रसन्न थया, डे सेवा पदार्थ जेयो छे. ते पछी प्रातःकाल कुंभनदासल श्रीगोवर्द्धननाथलनां दर्शने आव्या. त्पारे श्रीगुसांभलजे सेवकाने आज्ञा करी, डे सौथी पहुलां. कुंभनदासलने दर्शन करावी हो. ते पछी भीज भधा लोडो दर्शन करे. पछी श्रीगुसांभलजे भधाथी पहुलां कुंभनदासने दर्शन करावी दीयां. जे प्रकारे कुंभनदासलना उपर श्रीगुसांभलजे पोते अनुग्रह कर्था.

भावप्रकाश—डेभके सूतकीने लगवत्-मंदिरभां कौण आववा देतो ? तेथी कुंभनदासने सूतकभां दर्शन कराव्यां. जे रीति ते दिवसथा राभी, डे जेने सूतक होय ते पछ दर्शन करे. जे प्रकारे कुंभनदासनी कृपाथी सूतकीजेने दर्शन थवा लाग्यां. जे रीति श्रीगुसांभलजे पोते जेथी करी डे वैष्णवना हृदयभां स्नेह छे जे आगण डोड

किये, जो-वैष्णव के हृदय में स्नेह है, सो आगे कोई जानेगो नहीं । तासों आगे के वैष्णव कों दरसन की छुट्टी रहे । तव वैष्णव हू सुख पावें, और श्री-गोवर्द्धननाथजी हू सुख पावें । तासों आगे दरसन की छुट्टी राखे ।

सो कुंभनदासजी भोग पर्यंत दरसन करि पाछे परासोलीं में जायके विरह के पद गावते । सो पद—

राग विहागरो—तिहारे मिलन बिनु दुखित गोपाल । अति आतुर कुलवधू ब्रज-सुंदरि प्यारे-विरह बेहाल ॥ १ ॥ सीतल चंद्र तपत दहत किरननि कमलपत्र जल-जनु व्याल । चंदन कुसुम सुहाय न वाही है तन ज्वाल । 'कुंभनदास' नव तन स्याम तुम बिनु कनकलता सूकी मानों ग्रीष्म काल ॥ २ ॥

राग विहागरो—अब दिन रात पहारसे भए । तव तें निघटत नाहिन जब तें हरि मधुपुरी गए ॥ १ ॥ यह जा नियत विधाता जुग सम कीने जाम नए । जागत जात विधात न क्यों हू ऐसे मीत ठए ॥ २ ॥ ब्रजवासी सब परम दीन अति व्याकुल सोच लए । ज्यों बिनु प्रान दुखित जलरुह गन दारुन हृदे हए । 'कुंभनदास' विछुरि नंदनंदन बहु संताप दए । अब गिरिधर बिनु रहत निरंतर लोचन नीर छए ॥ ४ ॥

राग केदारो—औरनकों समीप विछुरनो आयो मेरे ही हिसा । सब कोऊ सोवे अपने सुख आली मोकों चाहत जाय चहुं दिसा ॥ १ ॥ ना जानों या विधाता की गति मेरे आंक लिखे ऐसे कौन रिसा । 'कुंभनदास' प्रभु गिरिधर कहेत निसदिन ही रटे ज्यों चातक घन त्रिसा ॥ २ ॥

सो या प्रकार विरह के पद गायके कुंभनदासजीनें सूतक के दिन व्यतीत किये । ता पाछे शुद्ध होयके कुंभनदासजी अपनी सेवा में आये, सो जैसे नित्य नेम सों सेवा करते ताही प्रकार सों करन लागे । सो या प्रकार को स्नेह कुंभनदासजी को श्रीगोवर्द्धननाथजी में हतो ।

वार्ता-प्रसंग ९—और एक दिन श्रीगोकुलनाथजी और श्रीबाल-

लक्ष्मणे नही. तेथी आगणना वैष्णवोंने दर्शननी छुट्टी रहे. त्तारे वैष्णवो पण सुभ पामे अने श्रीगोवर्द्धननाथल पण सुभ पामे तेथी आगण दर्शननी छुट्टी राणी.

पठी कुंभनदासल लोग पर्यंत दर्शन करी पठी परासोलींमां आवीने विरहनां पद गाता. ते पद—(१) ' तिहारे मिलन बिनु '. (२) ' अथ दिन रात ' (३) ' औरनको समीप ' (उपर लुयो). ये प्रकारे विरहनां पद गाधने कुंभनदासलये सूतकना हिसो व्यतीत कर्या. ते पठी शुद्ध थधने कुंभनदासल पोतानी सेवामां आव्या. ते नेम नित्य नेमथी सेवा करता हुता तेज प्रकारथी करवा लाग्या. ये प्रकारने स्नेह कुंभनदासलने श्रीगोवर्द्धननाथलमां हुता.

वार्ता-प्रसंग ९-पणी अेक हिवस श्रीगोकुलनाथल अने श्रीबालकृष्णल अे अने

ऐसो दरसन खिरक में भोकों भयो । तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख सों कहे, जो-यामें आश्रय कहा ? ये कृष्णदास ऐसे भगवदीय हैं, जो-आपु नाहर के आडे परे और श्रीगोवर्द्धननाथजी की गाय कों बचाई । सो कृष्णदास के ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु प्रसन्न होय के अपनी लीला में कृष्णदास कों प्राप्त किये । सो तुम भगवदीय हो, तासों तुमकों दरसन भयो । और कों तो लीला के दरसन दुर्लभ हैं । यह बात सुनिके सगरे वैष्णव ब्रजवासी बहोत प्रसन्न भये जो-सेवा पदार्थ ऐसो है । ता पाछें प्रातःकाल कुंभनदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों आये । तब श्रीगुसांईजीने सेवकन सों आज्ञा कीनी, जो-सब तें पहले कुंभनदासजी कों दरसन करवाय देउ, ता पाछें और सगरे लोग दरसन करेंगे । पाछें श्रीगुसांईजी ने सबतें पहले कुंभनदासजी कों दरसन करवाय दियो । सो या प्रकार कुंभनदासजी के ऊपर श्रीगुसांईजी आपु अनुग्रह किये ।

भावप्रकाश—सो काहेतें ? जो सूतकी कों भगवत्-मंदिर में कौन आयवे देतो ? सो कुंभनदास कों सूतकमें दरसन कराये । सो यह रीति वा दिन तें राखी । जो सूतक जाकों होय सोहू दरसन पावे । सो या प्रकार कुंभनदासजी की कृपातें सूतकीन कों दरसन होंन लागे । सो यह रीति श्रीगुसांईजी आपु यासों

यादती हुती. जेवां दर्शन गौशाणाभां मने थयां. त्यारे श्रीगुसांईजी श्रीमुखी कहे, के जेभां आश्रय शुं ? जे कृष्णदास जेवा भगवदीय हुता के पोते वाघनी आउ पडया जने श्रीगोवर्द्धननाथजीनी गायने भयावी. तेथी कृष्णदासना उपर श्रीगोवर्द्धननाथजीजे पोते प्रसन्न थधने कृष्णदासने पोतानी लीलाभां प्राप्त कर्था. ते तमे भगवदीय छे तेथी तमने दर्शन थयां. भीजनने तो लीलानां दर्शन दुर्लभ छे. जे वात सांख्यीने भधा वैष्णव ब्रजवासी घणुा प्रसन्न थया, के सेवा पदार्थ जेवा छे. ते पछे प्रातःकाल कुंभनदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शने आव्या. त्यारे श्रीगुसांईजीजे सेवकेने आज्ञा करी, के सौथी पछेसां. कुंभनदासजीने दर्शन करावी हो. ते पछे भीज भधा लोको दर्शन करी. पछे श्रीगुसांईजीजे भधाथी पछेसां कुंभनदासने दर्शन करावी दीयां. जे प्रकारे कुंभनदासजीना उपर श्रीगुसांईजीजे पोते अनुग्रह कर्था.

भावप्रकाश—जेभके सूतकीने भगवत्-मंदिरभां कोष आववा हेतो ? तेथी कुंभनदासने सूतकभां दर्शन कराव्यां. जे रीति ते द्विषथी राणी, के जेने सूतक होय ते पछे दर्शन करे. जे प्रकारे कुंभनदासनी कृपाथी सूतकीजेने दर्शन थवा लाग्यां. जे रीति श्रीगुसांईजीजे पोते जेथी करी के वैष्णवना हृदयभां स्नेह छे जे आगण कोष

होत है ? जो कुंभनदासजी मरीखे भगवदीय को संग तो या मिष तें होयगो, सो यही बड़ो लाभ होयगो । पाछें दोनो भाई श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेन आरती ताई सेवा सों पहाँचिके श्रीनाथजी कों पोंढाय अनोसर करवाय बाहिर आये । और कुंभनदासजी को हाथ पकरिके भगवद् वार्ता लीला को भाव कहन लागे । सो कुंभनदासजी लीला-रस में मगन होय गये, सो कछु सुधि न रही जो हम कहाँ हैं ? तब श्रीगोकुलनाथजी भगवद् वार्ता करत कुंभनदासजी को हाथ पकरिके अन्योर की ओर परवन सों उतरिकें श्रीगोकुल कों चले । सो रहस्य वार्ता में मगन हैं । और श्रीबालकृष्णजी दोय चारि वैष्णव संग चुपचाप होयके कुंभनदासजी की और श्रीगोकुलनाथजी की वार्ता सुनत श्रीगोकुल कों चले । तब मारग में श्रीगोकुलनाथजी वार्ता करिके कुंभनदासजी सों पूछे । जो श्रीस्वामिनीजी को सिंगार कवहू श्रीगोवर्द्धनधर हू करत हैं ? तब कुंभनदासजी प्रेम में मगन होय के कहे, जो-हां, हां, करत हैं । जो एक दिन आश्विन महिना में श्रीनाथजी और श्रीस्वामिनीजी ललितादिक सखी संग रात्रि कों वन में फूल बीने । ता पाछें समाज सहित रासमंडल के पास सिंगार को चौतरा हैं सो ता ऊपर आपु विराजे । तब विसाखाजी सिंगार

आपणे पणु पगे यादीशुं. आ प्रकारथो याद्या यादीशुं, लुओा शुं कौतुक थाय छे ? कुंभनदासल सरभा भगवदीयनो संग तो आ अहाने थशे. अय भोरो लाल थशे. पछी अन्ने लोअ श्रीगोवर्द्धननाथलनी सेन आरती सुधीनी सेवाथी पढोथीने श्रीनाथलने पोढावी अनोसर करी अहार आव्या अने कुंभनदासलने हाथ पकडीने भगवद् वार्ता दीलाने लाव कडेवा लाग्या. तयारे कुंभनदासल दीदारसमां मगन थअ गया ते कंअ सुध रडी नडी के अमे क्यां छीअे ? तयारे श्रीगोकुलनाथल भगवद् वार्ता करत कुंभनदासलने हाथ पकडीने अन्यान्योरनी तरक परवतथी उतरनीने श्रीगोकुल याद्या. ते रहस्यवार्तामां मगन छे अने श्रीबासकृष्णल अे यार वैष्णवोना संगे चुपचाप थअने कुंभनदासलनी अने श्रीगोकुलनाथलनी वार्ता सांलगता श्रीगोकुल याद्या. तयारे भागमां श्रीगोकुलनाथल वार्ता करीने कुंभनदासलने पूछे के श्रीस्वामिनीलने शृंगार क्यारेय श्रीगोवर्द्धनधर पशु करे छे ? तयारे कुंभनदासल प्रेममां मग्न थअने कडे, के हां ! हां ! करे छे. अेक दिवस आसो महीनामां श्रीनाथल अने श्रीस्वामिनीलने ललितादिक सखी साथे रात्रिअे वनमां दूंस वीइयां. ते पछी सभाज सहित रास मंडलनी पास शृंगारनो योंतरे छे ते उपर पाते थिराव्या.

कृष्णजी ये दोऊ भाई मिलिके श्रीगुसांईजी सों कहे, जो-कुंभनदामजी कबहू श्रीगोकुल नहीं गये हैं । सो ये कोई प्रकार श्रीगोकुल तांई जाय तब श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन कुंभनदासजी करें । तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-कुंभनदासजी तो श्रीगोवर्द्धननाथजी की रहस्य लीला में मगन हैं, सो इनसों श्रीगोवर्द्धननाथजी हिलै हैं । तब श्रीगोकुलनाथजी कहे, जो-इनकों ले जायवे को उपाय तो करिये । पाछे न आवें तो भगवद् इच्छा । तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-उपाय करो, परंतु कुंभनदासजी श्रीयमुनाजो पार कबहू न उतरेंगे । पाछे कछुक दिन में श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल पधारे हते, और श्रीबालकृष्णजी और श्रीगोकुलनाथजी श्रीनाथजीद्वार में हते । सो वैशाख सुदि ११ के दिन श्रीगोकुलनाथजी श्रीबालकृष्णजी सों कहे, जो-श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी हैं और आपुन दोऊ जने यहां है । तासों कुंभनदासजी कों श्रीगोकुल ले चलिये । तब श्रीबालकृष्णजी ने कह्यो, जो-कैसे ले चलोगे ? जो कुंभनदासजी तो असवारी पर बैठत नहीं हैं । सो तब श्रीगोकुलनाथजी ने कह्यो, जो-कुंभनदासजी असवारी पें तो बैठेंगे नहीं, और दिन में श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन छोड़िके कहूं जांयगे नहीं । तासों रात्रि उजियारी है, सो हमहू पाँवन सों चलेंगे । सो या प्रकार सों चले चलेंगे सो देखें कहा कौतुक

साधु मणीने श्रीगुसांईजीने कहे, कुंभनदासजी क्यारेय श्रीगोकुल नहीं गया तेथी अ-
 दोष प्रकारे श्रीगोकुल सुधी जाय त्यारे कुंभनदासजी श्रीनवनीतप्रियजीनां दर्शन करे-
 त्यारे श्रीगुसांईजी पीते कहे, के कुंभनदासजी तो श्रीगोवर्द्धननाथजीनी रहस्यदीलामां
 भजन छे. अमनाथी श्रीगोवर्द्धननाथ जीण्या छे. त्यारे श्रीगोकुलनाथजी कहे, के अमने
 लक्ष नयानो उपाय तो करीअ. पछी न आवे तो लगवदीच्छा. त्यारे श्रीगुसांईजी
 पीते कहे के, उपाय करे. परंतु कुंभनदासजी श्रीयमुनाजी पार कहीय नहीं उतरे. पछी
 थोडाक दिवसमां श्रीगुसांईजी पीते श्रीगोकुल पधार्या हुता अने श्रीभालकृष्णजी अने
 श्रीगोकुलनाथजी आनाथजीद्वारमां हुता. त्यारे वैशाख सुदि ११ ना दिवसे श्रीगोकुलना-
 थजी श्रीभालकृष्णजीने कहे, के श्रीगोकुलमां श्रीगुसांईजी छे अने "आपणु अने अली
 श्रीअ. तेथी कुंभनदासजीने श्रीगोकुल लक्ष खावो. त्यारे श्रीभालकृष्णजीअे कछु", के
 डेवी रीते लक्ष खादीशु ? कुंभनदासजी तो असवारी उपर भेसता नहीं. त्यारे श्रीगो-
 कुलनाथजीअे कछु. के कुंभनदासजी असवारी उपर तो भेसते नहीं अने दिवसमां
 श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन छोडीने कथं नये नहीं. तेथी रात्री अमनवाणी छे अथे

होत है ? जो कुंभनदासजी सरीखे भगवदीय को संग तो या मिष तें होयगो, सो यही बड़ो लाभ होयगो । पाछें दोनो भाई श्रीगोवर्द्धन-नाथजी की सेन आरती ताई सेवा सों पहाँचिके श्रीनाथजी कों पोंढाय अनोसर करवाय बाहिर आये । और कुंभनदासजी को हाथ पकरिके भगवद् वार्ता लीला को भाव कहन लागे । सो कुंभनदासजी लीलारस में मगन होय गये, सो कछु सुधि न रही जो हम कहां हैं ? तब श्रीगोकुलनाथजी भगवद् वार्ता करत कुंभनदासजी को हाथ पकरिके अन्योर की ओर परवन सों उतरिकें श्रीगोकुल कों चले । सो रहस्य वार्ता में मगन हैं । और श्रीबालकृष्णजी दोय चारि वैष्णव संग चुपचाप होयके कुंभनदासजी की और श्रीगोकुलनाथजी की वार्ता सुनत श्रीगोकुल कों चले । तब मारग में श्रीगोकुलनाथजी वार्ता करिके कुंभनदासजी सों पूछे । जो श्रीस्वामिनीजी को सिंगार कवहू श्रीगोवर्द्धनधर हू करत हैं ? तब कुंभनदासजी प्रेम में मगन होय के कहे, जो-हां, हां, करत हैं । जो एक दिन आश्विन महिना में श्रीनाथजी और श्रीस्वामिनीजी ललितादिक सखी संग रात्रि कों वन में फूल बीने । ता पाछें समाज सहित रासमंडल के पास सिंगार की चौतरा हैं सो ता ऊपर आपु विराजे । तब विसाखाजी सिंगार

आपणे पणु पगे यादीशुं. आ प्रकाश्या याद्या यादीशुं, लुओ शुं कौतुक थाय छे ? कुंभनदासजी सरभा भगवदीयनो संग तो आ पहलाने थसे. अये भोये लाल थसे. पछी अन्ते लाम श्रीगोवर्द्धननाथजीनी सेन आरती सुधीनी सेवाथी पहुंथीने श्रीनाथजीने पोढावी अनोसर करी पहार आव्या अने कुंभनदासजीने हाथ पकडीने भगवद् वार्ता दीलानो लाव छुह्या लाग्या. तयारे कुंभनदासजी दीसारसमां मगन थथ गया ते कंठ सुध रही नही के अने क्यां छीये ? तयारे श्रीगोकुलनाथजी भगवद् वार्ता करता कुंभनदासजीने हाथ पकडीने आन्योरनी तरङ्ग पर्वतथी उतरिने श्रीगोकुल याद्या. ते रहस्यवार्तामां मगन छे अने श्रीबालकृष्णजी अये यार वैष्णवोना संगे चुपचाप थथने कुंभनदासजीने अने श्रीगोकुलनाथजीनी वार्ता सांलगता श्रीगोकुल याद्या. तयारे भागमां श्रीगोकुलनाथजी वार्ता करिने कुंभनदासजीने पूछे के श्रीस्वामिनीजीने शृंगार करिये श्रीगोवर्द्धनधर पणु करे छे ? तयारे कुंभनदासजी प्रेममां मगन थथने छुहे, के हां ! हां ! करे छे. अके द्विस आसो महीनामां श्रीनाथजी अने श्रीस्वामिनीजीने ललितादिक सखी साथे रात्रिने वनमां दूस वीण्यां. ते पछी समाज सहित रास मंडलनी पास शृंगारनो योतरे छे ते उपर येते विराज्या.

कृष्णजी ये दोऊ भाई मिलिके श्रीगुसांईजी सों कहे, जो-कुंभनदाम्जी कबहू श्रीगोकुल नहीं गये हैं। सो ये कोई प्रकार श्रीगोकुल तांई जाय तब श्रीनवनीतप्रियजी के दरसन कुंभनदासजी करें। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-कुंभनदासजी तो श्रीगोवर्द्धननाथजी की रहस्य लीला में मगन हैं, सो इनसों श्रीगोवर्द्धननाथजी हिलै हैं। तब श्रीगोकुलनाथजी कहे, जो-इनकों ले जायवे को उपाय तो करिये। पाछे न आवें तो भगवद् इच्छा। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-उपाय करो, परंतु कुंभनदासजी श्रीयमुनाजी पार कबहू न उतरेंगे। पाछे कछुक दिन में श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल पधारे हते, और श्रीबालकृष्णजी और श्रीगोकुलनाथजी श्रीनाथजीद्वार में हते। सो वैशाख सुदि ११ के दिन श्रीगोकुलनाथजी श्रीबालकृष्णजी सों कहे, जो-श्रीगोकुल में श्रीगुसांईजी हैं और आपुन दोऊ जने यहां है। तासों कुंभनदासजी कों श्रीगोकुल ले चलिये। तब श्रीबालकृष्णजी ने कह्यो, जो-कैसे ले चलोगे? जो कुंभनदासजी तो असवारी पर बैठत नहीं हैं। सो तब श्रीगोकुलनाथजी ने कह्यो, जो-कुंभनदासजी असवारी पें तो बैठेंगे नहीं, और दिन में श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन छोड़िके कहूं जायगे नहीं। तासों रात्रि उजियारी है, सो हमहू पाँवन सों चलेंगे। सो या प्रकार सों चले चलेंगे सो देखें कहा कौतुक

लाभ न्नीने श्रीगुसांईजीने कहे, कुंभनदासजी क्यारेय श्रीगोकुल नथी गया तेथी अये। डोष प्रकारे श्रीगोकुल सुधी जाय त्यारे कुंभनदासजी श्रीनवनीतप्रियजीनां दर्शन करे। त्यारे श्रीगुसांईजी पीते कहे, के कुंभनदासजी तो श्रीगोवर्द्धननाथजीनी रहस्यलीलाभां मगन छे। अमनाथी श्रीगोवर्द्धननाथ हुण्या छे। त्यारे श्रीगोकुलनाथजी कहे, के अमने लभ नवाने उपाय तो करीअे। पछी न आवे तो लगवटीच्छा। त्यारे श्रीगुसांईजी पीते कहे के, उपाय करे। परंतु कुंभनदासजी श्रीयमुनाजी पार कदीय नहीं उतरे। पछी थोडाक दिवसभां श्रीगुसांईजी पीते श्रीगोकुल पधारा हुता अने श्रीबालकृष्णजी अने श्रीगोकुलनाथजी आनाथजीद्वारभां हुता। त्यारे वैशाख सुदि ११ ना दिवसे श्रीगोकुलनाथजी श्रीबालकृष्णजीने कहे, के श्रीगोकुलभां श्रीगुसांईजी छे अने आपणे अने अली छीअे। तेथी कुंभनदासजीने श्रीगोकुल लभ गाले। त्यारे श्रीबालकृष्णजीअे कहुं, के डेवी रीते लभ यादीशु? कुंभनदासजी तो असवारी उपर भेसता नथी। त्यारे श्रीगोकुलनाथजीअे कहुं, के कुंभनदासजी असवारी उपर तो भेसता नहीं अने दिवसभां श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन छोडीने कंठ नथे नहीं। तेथी रात्रीअंनवाणी छे अयेले

रोम आनंद पावें। सो या प्रकार सब सिंगार श्रीगोवर्द्धननाथजी करिके काजर बेंदी, तिलक और चरण में महाबर किये। पाछें श्रीस्वामिनीजी श्रीगोवर्द्धनधर को सिंगार किये। ता पाछे रासविलास आदि अनेक लीला करी। सो या प्रकार वार्ता करत करत श्रीगोकुल साम्हे श्रीयमुनाजी के तीरलों कुंभनदासजी आये। पाछे पार श्रीगोकुल तें नाव पर चढिके श्रीगुसांईजी आपु या पार आये। सवारो हू भयो। सो कुंभनदासजी कों सरीर की सुधि नाही, लीला रस में मगन हते। तब कुंभनदासजी सावधान होयके देखे तो सवारो भयो है। सो इतने में श्रीगुसांईजी कों देखिके श्रीगोकुलनाथजी सों हाथहू छूटि गयो। सो कुंभनदासजी महा उतावल सों भाजे, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी के यहाँ कीर्तन कौन करेगो? जो-हाय हाय मेरी सेवा गई। सो या प्रकार मनमें कहत दौरे, सो अति बेगि दौरे। तब श्रीगोकुलनाथजी और श्रीबालकृष्णजी और सब वैष्णव कुंभनदासजी कों पकरिवे कों पीछे ते दौरे। सो कुंभनदास तो भाजे दौरेई गये। इन कोई कों पाये नाही। पाछे श्रीगुसांईजी के पास आये। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-अब कहा कुंभनदास कों पावोगे? जो इनकों यहाँ काहेंकों लें आये हो? जो ये श्रीजमुना के पार कबहू न उतरेंगे। सो हमने

शाला जेधने रोम रोम आनंद पावे अये प्रकारे अघे शृंगार श्रीगोवर्द्धननाथजी अये करीने काजण बेंदी, तिलक अने चरणमां महावर क्युं पछी श्रीस्वामिनीजी अये श्री-गोवर्द्धनधरना शृंगार क्यो। ते पछी रासविलास आदि अनेक लीला करी। आ प्रकारे वार्ता करता करता श्रीगोकुल सामे श्रीयमुनाजीना तीर सुधि कुंभनदासजी आव्या। पछी पार श्रीगोकुलथी नाव उपर चढीने श्रीगुसांईजी पोते आ पार आव्या। सवार पछु थयुं। कुंभनदासजीने शरीरनी सुधि नहीं। लीला रसमां मगन हुता। त्यारे कुंभन-दाजी सावधान थकने लुअे तो सवार थयुं छे अटलामां श्रीगुसांईजीने जेधने श्रीगो-कुलनाथजीही हाथ छूटी गयो। त्यारे कुंभनदासजी महा उतावणथी होइया ने श्रीगो-वर्द्धननाथजीने त्यां कीर्तन कोलु करी? (कहे) जे हाथ हाथ! मरी सेवा गई। अये प्रकारे मनमां कहेता होइया। ते अत्यंत बेगथी होइया। त्यारे श्रीगोकुलनाथजी अने श्रीबालकृष्णजी अने अघे वैष्णव कुंभनदासजीने पकडवाने पाछणथी होइया। ते कुंभ-नदासजी तो लाग्या होइयाव गयो। आ कोधने मण्यो नहीं। पछी (अघे) श्रीगुसां-ईजीनी पास आव्या। त्यारे श्रीगुसांईजी कहे के हवे शुं कुंभनदासजीने पहांथी शक्यो। ओभने अहाँ केम लछ आव्या छे। अये श्रीयमुनाजीनी पार क्यारेय नहीं उतरे। अने

करन लागी । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-आजु सिंगार मैं करूंगो । सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीस्वामिनीजी के पास ठाड़े भये । 'सो मुख्वादिऊ के दरसन बिना रह्यो न जाय दोउन सों । तब विसाखाजी परम चतुर दोउन के हृदय को अभिप्राय जानि श्रीस्वामिनीजी के आगे एक दर्पन धर्यो । तब वा दर्पन में दोउन के श्रीमुख सन्मुख भये, सो अवलोकन लागे । सो श्रीठाकुरजी बड़े लंबे बार श्याम सचिकन श्रीहस्त में कांकासी सों सम्हारि, एक एक बार में झीने मोती परम चतुराई सों पिरोय के श्रीस्वामिनीजी के मुखचंद्र-शोभा दरपन में देखिके प्रसन्न होय गये, सो हाथ सों केस छूटि गये । तब सगरे मोती बार में सों निकसि सिंगार को चाँतरा है रतन खचित, तहां फेलि गये । तब बड़ो हास्य भयो । जो इतनी बारलों सिंगार किये सो एक छिन में बड़ो होय गयो । सो यह सखीन ने कही । तब श्रीठाकुरजी ने विसाखाजी सों कह्यो, जो-तुम बेनी पकरे रहो, मैं पिरोऊँ । तब विसाखाजी ने बेनी पकरी । सो तब फेरि बेनी मोतीन सों सिंगार करि मोतीन सों मांग सँवारी । पाछें फूलन के आभूषण सखीजन ने बनाय के श्रीठाकुरजी कों दिये । सो श्रीठाकुरजी पहरावत जाँय और छिन छिन में मुखचंद्र की शोभा देखिके रोम

त्यारे विशाखाल शृंगार करवा लागी । त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथल कहे, हे आन शृंगार हुं करीश । पछी श्रीगोवर्द्धननाथल श्रीस्वामिनीलनी पासै उला रह्या । त्यारे मुअ-आदिनां दर्शन विना अन्नेथी रहवाय नही । त्यारे विशाखाल परम यतुर अमल्ले अन्नेना हृदयने अलिप्राय जल्लिने श्रीस्वामिनीलनां आगण अक दर्पण धर्यु' । त्यारे ते दर्पणमां अन्नेनां श्रीमुख सन्मुख थयां । त्यारे अवलोकवा लाग्या । पछी श्री-ठाकुरलये मोटा लांभा वाण श्याम थीकल्लु श्रीहस्तमां कांसकाथी सम्हारी अक अक वाणमां जीलुं मोती परम यतुराथी परेवीने श्रीस्वामिनीलना मुअ यंद्रनी शोभा दर्पणमां जेधने प्रसन्न थय गया । तेथी हाथमांथी वाण छुटी गया । त्यारे अंधां मोती वाणमांथी निकली त्यां रतन अयित शृंगारना । चातरा उपर ड्रेसाय गयां । त्यारे अहु हास्य थयुं हे आरतीवार सुधी शृंगार कर्ये ते अक क्षणमां वडा थय गयो । अयुं सभीअये कल्लुं । त्यारे श्रीठाकुरलये विशाखालने कल्लुं, हे तमे वेणी पकरी रहे हुं मोती परेयुं । त्यारे विशाखालये वेणी पकरी त्यारे करी अ वेणीने मोतीअथी शृंगार करी मांग सम्हारी पछी डूतानां आभूषण सभीजनेअ अना-वीने श्रीठाकुरलने आयां । ते श्रीठाकुरल पहरावता जय अंने क्षण क्षणमां मुअयंद्रनी

रोम आनंद पावें। सो या प्रकार सब सिंगार श्रीगोवर्द्धननाथजी करिके काजर बेंदी, तिलक और चरण में महाबर किये। पाछें श्रीस्वामिनीजी श्रीगोवर्द्धनधर को सिंगार किये। ता पाछे रासविलास आदि अनेक लीला करी। सो या प्रकार वार्ता करत करत श्रीगोकुल साम्हे श्रीयमुनाजी के तीरलों कुंभनदासजी आये। पाछे पार श्रीगोकुल तें नाव पर चढिके श्रीगुसांईजी आपु या पार आये। सवारो हू भयो। सो कुंभनदासजी कों सरीर की सुधि नाहीं, लीला रस में मगन हते। तब कुंभनदासजी सावधान होयके देखे तो सवारो भयो है। सो इतने में श्रीगुसांईजी कों देखिके श्रीगोकुलनाथजी सों हाथहू छूटि गयो। सो कुंभनदासजी महा उतावल सों भाजे, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी के यहाँ कीर्तन कौन करेगो? जो-हाय हाय मेरी सेवा गई। सो या प्रकार मनमें कहत दोरे, सो अति वेगि दोरे। तब श्रीगोकुलनाथजी और श्रीबालकृष्णजी और सब वैष्णव कुंभनदासजी कों पकरिवे कों पीछे ते दोरे। सो कुंभनदास तो भाजे दोरेई गये। इन कोई कों पाये नाहीं। पाछे श्रीगुसांईजी के पास आये। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-अब कहा कुंभनदास कों पावोगे? जो इनकों यहाँ काहेंकों लें आये हो? जो ये श्रीजमुना के पार कबहू न उतरेंगे। सो हसने

शोभा जेधने रोम रोम आनंद पामे अे प्रकारे भयो शृंगार श्रीगोवर्द्धननाथलये करीने काजण बेंदी, तिलक अने चरणमां मलावर क्युं पछी श्रीस्वामिनीलये श्री-गोवर्द्धनधरना शृंगार क्यो। ते पछी रासविलास आदि अनेक लीला करी। आ प्रकारे वार्ता करता करता श्रीगोकुल सामे श्रीयमुनालना तीर सुधी कुंभनदासल आल्या, पछी पार श्रीगोकुलथी नाव उपर बेंदीने श्रीगुसांइल पोते आ पार आल्या, सवार पण थयुं, कुंभनदासलने शरीरनी सुध नहीं। लीलासरसमां मगन हुता, त्यारे कुंभन-दाल सावधान थधने लुअे तो सवार थयुं छे अेरसामां श्रीगुसांइलने जेधने श्रीगो-कुलनाथलथी हाथ छूटी गयो, त्यारे कुंभनदासल महा उतावणथी होइया जे श्रीगो-वर्द्धननाथलने त्यां कीर्तन केणु करे? (कहे) जे हाय हाय ! म री सेवा गध, अे प्रकारे मनमां कहेता होइया, ते अत्यंत वेगथी होइया, त्यारे श्रीगोकुलनाथल अने श्रीबालकृष्णल अने अंधा वैष्णव कुंभनदासलने पकडवाने पाछणथी होइया, ते कुंभ-नदासल तो लाग्या होइयाज गया, आ कोधने भल्या नहीं, पछी (अंधा) श्रीगुसां-इलनी पास आल्या, त्यारे श्रीगुसांइल कहे के हुवे शुं कुंभनदासलने पछोंथी शक्यो, अेभने अही केम लध आल्या छे, अे श्रीयमुनालनी पार क्यारिय नहीं उतरे, अमे

करन लागी । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-आजु सिंगार मैं करुंगो । सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीस्वामिनीजी के पास ठाड़े भये । 'सो मुख्यादिक के दरसन बिना रह्यो न जाय दोउन सों । तब विसाखाजी परम चतुर दोउन के हृदय को अभिप्राय जानि श्रीस्वामिनीजी के आगे एक दर्पन धर्यो । तब वा दर्पन में दोउन के श्रीमुख सन्मुख भये, सो अबलोकन लागे । सो श्रीठाकुरजी बड़े लंबे बार श्याम सचिकन श्रीहस्त में कांकी सों सम्हारि, एक एक बार में झीने मोती परम चतुराई सों पिरोय के श्रीस्वामिनीजी के मुखचंद्र-शोभा दरपन में देखिके प्रसन्न होय गये, सो हाथ सों केस छूटि गये । तब सगरे मोती बार में सों निकसि सिंगार को चौतरा है रतन खचित, तहां फेलि गये । तब बड़ो हास्य भयो । जो इतनी बारलों सिंगार किये सों एक छिन में बड़ो होय गयो । सो यह सखीन ने कही । तब श्रीठाकुरजी ने विसाखाजी सों कह्यो, जो-तुम बेनी पकरे रहो, मैं पिरोऊँ । तब विसाखाजी ने बेनी पकरी । सो तब फेरि बेनी मोतीन सों सिंगार करि मोतीन सों मांग सवारी । पाछें फूलन के आभूषण सखीजन ने बनाय के श्रीठाकुरजी कों दिये । सो श्रीठाकुरजी पहरावत जाँय और छिन छिन में मुखचंद्र की शोभा देखिके रोम

त्यारे विशाखा शृंगार करवा लागी । त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथ कहे, के आल शृंगार हुं करीश । पछी श्रीगोवर्द्धननाथ श्रीस्वामिनीजीनी पास उला रहा । त्यारे मुभ-आदिनां दर्शन बिना अन्नेथी रहेवाय नहीं । त्यारे विशाखा परम चतुर अभे अन्नेना हृदयेने अलिप्राय जालीने श्रीस्वामिनीजीनां आगण अक दर्पण धर्युं । त्यारे ते दर्पणमां अन्नेनां श्रीमुख सन्मुख थयां । त्यारे अवलोकवा लाग्या । पछी श्रीठाकुरजीये मोटा लांभा वाण श्याम नीकला श्रीहस्तमां कांसकाथी सम्हारी अक अक वाणमां जीलुं मोती परम चतुराथी परेवीने श्रीस्वामिनीजीना मुभ चंद्रनी शोभा दर्पणमां अेधने प्रसन्न थय गया, तेथी हाथमांथी वाण छुटी गया । त्यारे अथां मोती वाणमांथी निकणी त्यां रतन अचित शृंगारना । चौतरा उपर देखीय गयां । त्यारे अहु हास्य थयुं के आरदीवार सुधी शृंगार कर्यो ते अक क्षणमां वडा थय गया । अेयुं सभीअेये कहुं । त्यारे श्रीठाकुरजीये विशाखालने कहुं, के तमे वेणी पकरी रहे हुं मोती परेयुं । त्यारे विशाखालये वेणी पकरी त्यारे करी अे वेणीने मोतीअेथी शृंगार करी मांग सम्हारी पछी दूलेनां आभूषण सभीअेनाये अनावीने श्रीठाकुरजीने अायां । ते श्रीठाकुरजी पहरावता जय अंने क्षण क्षणमां मुअयं दनी

रोम आनंद पावें। सो या प्रकार सब सिंगार श्रीगोवर्द्धननाथजी करिके काजर बेंदी, तिलक और चरण में महाबर किये। पाछें श्रीस्वामिनीजी श्रीगोवर्द्धनधर को सिंगार किये। ता पाछे रासविलास आदि अनेक लीला करी। सो या प्रकार वार्ता करत करत श्रीगोकुल साम्हे श्रीयमुनाजी के तीरलों कुंभनदासजी आये। पाछे पार श्रीगोकुल तें नाव पर चढिके श्रीगुसांईजी आपु या पार आये। सवारो हू भयो। सो कुंभनदासजी कों शरीर की सुधि नाही, लीला रस में मगन हते। तब कुंभनदासजी सावधान होयके देखे तो सवारो भयो है। सो इतने में श्रीगुसांईजी कों देखिके श्रीगोकुलनाथजी सों हाथहू छूटि गयो। सो कुंभनदासजी महा उतावल सों भाजे, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी के यहाँ कीर्तन कौन करेगो? जो-हाय हाय मेरी सेवा गई। सो या प्रकार मनमें कहत दौरे, सो अति बेगि दौरे। तब श्रीगोकुलनाथजी और श्रीबालकृष्णजी और सब वैष्णव कुंभनदासजी कों पकरिवे कों पीछे ते दौरे। सो कुंभनदास तो भाजे दौरेई गये। इन कोई कों पाये नाही। पाछे श्रीगुसांईजी के पास आये। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-अब कहा कुंभनदास कों पावोगे? जो इनकों यहाँ काहेंकों लें आये हो? जो ये श्रीजमुना के पार कबहू न उतरेंगे। सो हसने

शोभा जेधने रोम रोम आनंद पावे प्रकारे अंधा शृंगार श्रीगोवर्द्धननाथजीके करीने डान्ण जेदी, तिलक अने चरणमां महावर क्युं पछी श्रीस्वामिनीजीके श्रीगोवर्द्धनधरना शृंगार क्युं। ते पछी रासविलास आदि अनेक लीला करी। या प्रकार वार्ता करता करता श्रीगोकुल सामे श्रीयमुनाजीना तीर सुधी कुंभनदासजी आव्या। पछी पार श्रीगोकुलथी नाव उपर चढीने श्रीगुसांईजी पोते या पार आव्या। सवार पञ्च थयुं। कुंभनदासजीने शरीरनी सुधि नहीं। लीला रसमां मगन हुता। तयारे कुंभनदास सावधान थधने ज्युंये तो सवार थयुं छे अउतामां श्रीगुसांईजीने जेधने श्रीगोकुलनाथजीके हाथ छूटी गयो। तयारे कुंभनदासजी महा उतावणथी होइया जे श्रीगोवर्द्धननाथजीने त्यां कीर्तन केषु करी? (कहे) जे हाय हाय ! मेरी सेवा गध। ये प्रकार मनमां कहेता होइया। ते अत्यंत बेगथी होइया। तयारे श्रीगोकुलनाथजी अने श्रीबालकृष्णजी अने अंधा वैष्णव कुंभनदासजीने पकड़वाने पाछणथी होइया। ते कुंभनदासजी तो भाजे होइया जे गयो। या कहेने भव्या नहीं। पछी (अंधा) श्रीगुसांईजीनी पासे आव्या। तयारे श्रीगुसांईजी कहे के हुये शुं कुंभनदासजीने पछींकी शकशा। जेभने अहाँ केम लध आव्या छे। ये श्रीयमुनाजीनी पार क्यारेय नहीं उतरे। अने

तुमसों पहले ही कह्यो हतो। तब श्रीगोकुलनाथजी श्रीगुसांईजी सों कहे, जो-पार न उतरे तो कहा भयो ? परन्तु सगरी रात्रि भगवद्-वार्ता के भाव में महा अलौकिक सिद्धि मिले तें भई। सो वह बड़ो लाभ भयो है, जो-भगवदीयन को सत्संग एक क्षण हू दुर्लभ हैं। यह सुनिके श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-यह तो तुम ठीक कहे, परन्तु अब या समय तो कुंभनदास कों दोरनो परयो। और जहां तांई कुंभन-दास श्रीगिरिराज ऊपर न जांयगे, तहां तांई श्रीगोवर्द्धननाथजी जांगेंगे नाहीं। जो कुंभनदास जगायवे के कीर्तन गावेंगे तब जांगेंगे। सो ऐसे, भक्त के आधीन श्रीगोवर्द्धननाथजी हैं। तासों तुमकों भग-वद्-वार्ता सुननी होय तो परासोली में जमुनावता में जायके कुंभन-दास सों-पूछियो। सो तहाँ कुंभनदासजी तुमसों कहेंगे। ता पाछे श्रीगोकुलनाथजी, श्रीबालकृष्णजी, सब वैष्णव सहित श्रीगोकुल पधारे। श्रीगुसांईजी को घोड़ा जीन सहित पार बंध्यो हतो, सो ता पर आप श्रीगुसांईजी बेगि ही असवार होयके घोड़ा दोराय के चले। और कुंभनदासजी तो दोरे जात हते, सो तहाँ आयके श्रीगुसांईजी कुंभनदासजी सों कहे, जो-तुमने कबहू यह मारग देख्यो नाहीं, सो तुम भूलि जाओगे। तासों घोड़ा के पीछे पीछे दौरे आवो। तब कुंभनदासजी श्रीगुसांईजी के पीछे दौरे चले जाँय। सो यहां रामदास

तमने पह्लेसांन कहुं हतुं। त्यारे श्रीगोकुलनाथजीसे श्रीगुसांईजीने कहुं, पार न उतर्या तो शुं थयुं परंतु आभी रात्री भगवद्-वार्ताना भावमां महाअलौकिक सिद्धि भव्याथी थथ। ऐ मोटा लाभ थयो। भगवदीयानो सत्संग ऐक क्षण पण दुर्लभ छे। आ सांभणीने श्रीगुसांईजी पीते कहे, के ऐ तो तमे ठीक कहुं परंतु हवे आ समय तो कुंभनदासने दोउयुं पडयुं अने न्यां सुधी कुंभनदास श्रीगिरिराज ऊपर नही नथ त्यां सुधी श्रीगोवर्द्धननाथजी नगशे नही। कुंभनदासजी नगाडवानां कीर्तन गाशे त्यारे नगशे अयां लक्ष्मणा आधीन श्रीगोवर्द्धननाथजी छे, तेथी तमारे भगवद्-वार्ता सांभणवी होय तो परासोलीमां नभनावतामां नभने कुंभनदासने पूछजे। त्यां कुंभ-नदासजी तमने कहेथे। ते पछी श्रीगोकुलनाथजी श्रीबालकृष्णजी थथा वैष्णव सहित श्रीगोकुल पधार्या। पछी श्रीगुसांईजीने घोडा छन सहित पार आंध्या हतो ते उपर पीते श्रीगुसांईजी नहदीन असवार थथने घोडा दोरायने आया अने कुंभनदासजी तो दोराया नता हता त्यां आवीने श्रीगुसांईजी कुंभनदासजीने कहे, के तमे थ्यारेय आ मागं जेयो नथी तेथी तमे लूदी नथो। तेथी घोडानी पाछण पाछण दोराया आवो।

भीतरिया आदि जो न्हाय के पर्वत ऊपर आवें सो (ये) छुय जांय । सो ऐसैं करत चार घड़ी दिन चंढ्यौ । तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीगिरिराज पधारिके घोड़ा पर तैं उतरिके तत्काल स्नान करि पर्वत ऊपर मंदिर में पधारे । तब देखे तो सगरे भीतरिया रामदास सहित न्हाय के मंदिर में आये हैं । तब श्रीगुसांईजी आपु पूछे, जो-रामदास ! आज इतनी अवार क्यों भई है ? तब रामदास ने विनती कीनी, जो-महाराज ! आज न जानिये कहा भयो है ? जो चारि बेर न्हाये और चारथों बेर सगरे भीतरिया छुवाने । सो अब पांचमी वार न्हाय के आये हैं, सो कारन जान्यो न परयो । तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-यह कुंभदासनजी के लिये श्रीगोवर्द्धननाथजी कौतुक किये हैं । ता पाछे श्रीगुसांईजी आप शंखनाद करवाय के श्रीगोवर्द्धननाथजी कों जगायें । ता समय कुंभनदासजी ने जगायवे के पद गाये । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी उठे । तब कुंभनदासजी ने अपने मन में बहोत हरष मान्यो । जो मेरी कीर्तन स्त्री सेवा मिली । ता पाछे राजभोग पर्यंत श्रीगुसांईजी सेवा सों पहुँचे । सवारे नृसिंह चतुर्दशी हती । सो केसरी पिछोड़ा, कुलह सिद्ध कियो । ता पाछें सेन पर्यंत सेवा सों पहुँचे । सो या प्रकार कुंभनदासजी कबहू श्रीगोकुल कों

त्यारे कुंभनदासल श्रीगुसांईजीनी पाछण पाछण दोष्या ग्याल्या जय. अही रामदास भीतरिया आदि न्हायने पर्वत उपर आवे त्यारे अे छोवाय जय अेम करतां यार घड़ी द्विस यथेो त्यारे श्रीगुसांईजी पोते गिरिराज पधारिने घोडा उपरथी उतरिने तत्काल स्नान करी पर्वत उपर मंदिरमां पधार्या त्यारे जुअे तो अथा भीतरिया रामदास सहित न्हायने मंदिरमां आव्या छे. त्यारे श्रीगुसांईजीअे पोते पूछ्युं के रामदास ! आव्जे आटली अवार केम थय ? त्यारे रामदासे विनती करी के महाराज ! आज न जणुे शुं थयुं छे के यार वार न्हाया अने यारेय वार भीतरिया छोवाया. हवे पांचमी वार न्हायने आव्या छीअे. अे कारणु समज्युं नही. त्यारे श्रीगुसांईजी आपु कहे, के आ कुंभनदासलने माटे श्रीगोवर्द्धननाथलअे कौतुक क्युं छे. ते पछी श्रीगुसांईजीअे शंखनाद करावीने श्रीगोवर्द्धननाथलने जगाय्या. ते समये कुंभनदासलअे जगावानां पद गायां अेदले श्रीगोवर्द्धननाथल उठ्या. त्यारे कुंभनदासलअे पोताना मनमां अहुज लुषं मान्यो के मारी कीर्तननी सेवा मंगी. ते पछी राजभोग पर्यंत श्रीगुसांईजी सेवाथी पहुँच्या. सवारे नृसिंह चतुर्दशी हती तेथी केसरी पीछोड़ा, कुहले सिद्ध कर्था. ते पछी सेन पर्यंत सेवाथी पहुँच्यां. अे प्रकारे कुंभनदासल कया-

तुमसों पहले ही कह्यो हतो । तब श्रीगोकुलनाथजी श्रीगुसांईजी सों कहे, जो-पार न उतरे तो कहा भयो ? परन्तु सगरी रात्रि भगवद्-वार्ता के भाव में महा अलौकिक सिद्धि मिले तें भई । सो वह बड़ो लाभ भयो है, जो-भगवदीयन को सत्संग एक क्षण हू दुर्लभ हैं । यह सुनिके श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-यह तो तुम ठीक कहे, परन्तु अब या समय तो कुंभनदास कों दोरनो परयो । और जहां तांई कुंभनदास श्रीगिरिराज ऊपर न जांयगे, तहां तांई श्रीगोवर्द्धननाथजी जागेंगे नाहीं । जो कुंभनदास जगायवे के कीर्तन गावेंगे तब जागेंगे । सो ऐसे, भक्त के आधीन श्रीगोवर्द्धननाथजी हैं । तासों तुमकों भगवद्-वार्ता सुननी होय तो परासोली में जमुनावता में जायके कुंभनदास सों-पूछियो । सो तहाँ कुंभनदासजी तुमसों कहेंगे । ता पाछे श्रीगोकुलनाथजी, श्रीबालकृष्णजी, सब वैष्णव सहित श्रीगोकुल पधारे । श्रीगुसांईजी को घोड़ा जीन सहित पार बंध्यो हतो, सो ता पर आप श्रीगुसांईजी वेगि ही असवार होयके घोड़ा दोराय के चले । और कुंभनदासजी तो दोरे जात हते, सो तहाँ आयके श्रीगुसांईजी कुंभनदासजी सों कहे, जो-तुमने कबहू यह मारग देख्यो नाहीं, सो तुम भूलि जाओगे । तासों घोड़ा के पीछे पीछे दौरे आवो । तब कुंभनदासजी श्रीगुसांईजी के पीछे दौरे चले जाँय । सो यहां रामदास

तमने पहेंलांज क्छुं हतुं । त्पारे श्रीगोकुलनाथलये श्रीगुसांईलने क्छुं, पार न उतर्या तो शुं थयुं परंतु आभी रात्री भगवद्-वार्ताना लावमां महुअलौकिक सिद्धि भव्याथी थयुं । ये मोटा लाल थयो । भगवदीयानो सत्संग अेक क्षण पणु दुर्लभ छे । आ सांभणीने श्रीगुसांईल पोते क्छे, के अे तो तमे ठीक क्छुं परंतु हवे आ समय तो कुंभनदासने दोडयुं पडयुं अने न्यां सुधी कुंभनदास श्रीगिरिराज उपर नही नय त्यां सुधी श्रीगोवर्द्धननाथल नगथे नहीं । कुंभनदासल नगाडवानां कीर्तन गाथे त्पारे नगथे अेयां लक्ष्मना आधीन श्रीगोवर्द्धननाथल छे । तेथी तमारे भगवद्-वार्ता सांभणवी होय तो परासोलीमां नभनावतामां नथने कुंभनदासने पूछये । त्यां कुंभनदासल तमने क्छेथे । ते पछी श्रीगोकुलनाथल श्रीबालकृष्णल अधा वैष्णव सहित श्रीगोकुल पधार्या । पत्री श्रीगुसांईलने घोडा लन सहित पार आंध्यो हतो ते उपर पोते श्रीगुसांईल नदहीन असवार थथने घोडा दोडावीने आड्या अने कुंभनदासल तो दोड्या नता हता त्यां आवीने श्रीगुसांईल कुंभनदासलने क्छे, के तमे थ्यारेय आ मारग नथे नथी तेथी तमे लूटी नथे । तेथी घोडाणी पाछण पाछण दोड्या आवो ।

भीतरिया आदि जो न्हाय के पर्वत ऊपर आवें सो (ये) छुय जांय । सो ऐसैं करत चार घड़ी दिन चढ़्यौ । तब श्रीगुसांईजी आपु श्री-गिरिराज पधारिके घोड़ा पर तें उतरिके तत्काल स्नान करि पर्वत ऊपर मंदिर में पधारे । तब देखे तो सगरे भीतरिया रामदास सहित न्हाय के मंदिर में आये हैं । तब श्रीगुसांईजी आपु पूछे, जो-रामदास ! आज इतनी अवार क्यों भई है ? तब रामदास ने विनती कीनी, जो-महाराज ! आज न जानिये कहा भयो है ? जो चारि बेर न्हाये और चार्यों बेर सगरे भीतरिया छुवाने । सो अब पांचमी वार न्हाय के आये हैं, सो कारन जान्यो न परयो । तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-यह कुंभदासनजी के लिये श्रीगोवर्द्धननाथजी कौतुक किये हैं । ता पाछे श्रीगुसांईजी आप शंखनाद करवाय के श्रीगोवर्द्धननाथजी को जगाये । ता समय कुंभनदासजी ने जगायवे के पद गाये । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी उठे । तब कुंभनदासजी ने अपने मन में बहोत हरष मान्यो । जो मेरी कीर्तन क्री सेवा मिली । ता पाछे राजभोग पर्यंत श्रीगुसांईजी सेवा सों पहोंचे । सवारे नृसिंह चतुर्दशी हती । सो केसरी पिछोड़ा, कुलह सिद्ध कियो । ता पाछें सेन पर्यंत सेवा सों पहोंचे । सो या प्रकार कुंभनदासजी कबहू श्रीगोकुल को

त्यारे कुंभनदासल श्रीगुसांईजीनी पाछण पाछण होइया गइया जय. अही' रामदास भीतरिया आदि न्हायने पर्यंत उपर आवे त्यारे अे छोवाय जय अेम करतां चार घड़ी दिवस गइयो त्यारे श्रीगुसांईजी पोते गिरिराज पधारिने घोड़ा उपरथी उतरिने तत्काल स्नान करी पर्वत उपर मंदिरमां पधार्या त्यारे जुअे तो अधा भीतरिया रामदास सहित न्हायने मंदिरमां आव्या छे. त्यारे श्रीगुसांईजी अे पोते पूछ्युं के रामदास ! आजे आरली अवार केम थय ? त्यारे रामदासे विनती करी के महाराज ! आज न जणे शुं थयुं छे के चार वार न्हाया अने चारैय वार भीतरिया छोवाया. हवे पांचमी वार न्हायने आव्या छीअे. अे कारण समजयुं नही. त्यारे श्रीगुसांईजी आप कहे, के आ कुंभनदासलने भाटे श्रीगोवर्द्धननाथल अे कौतुक क्युं छे. ते पछी श्रीगुसांईजी अे शंखनाद करावीने श्रीगोवर्द्धननाथलने जगाइया. ते समये कुंभनदासल अे जगावानां पद गायां अेरदे श्रीगोवर्द्धननाथल उठया. त्यारे कुंभनदासल अे पोताना मनमां अहुज हर्ष मान्यो के भारी कीर्तननी सेवा भणी. ते पछी राजभोग पर्यंत श्रीगुसांईजी सेवाथी पहोंच्या. सवारे नृसिंह चतुर्दशी हंती तथी केसरी पीछोड़ा, कुलह सिद्ध क्यो. ते पछी सेन पर्यंत सेवाथी पहोंच्या. अे प्रकारे कुंभनदासल कया-

न गये । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी की लीला रस में मग्न रहते । सो वे कुंभनदासजी ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते ।

वार्ता-प्रसंग १०—और एक समय परासोली में कुंभनदासजी खेत ऊपर बैठे हते, और श्रीगोवर्द्धननाथजी कुंभनदास के आगे खेत में खेलत हते । इतने में उत्थापन को समय भयो तब कुंभनदासजी उठिके श्रीगिरिराज चलिवे कों कियो । तब श्रीनाथजी ने कुंभनदासजी सों कही, जो-तू कहां जात है ? सो तब इन (नें) कही, जो-उत्थापन को समय भयो है, सो गिरिराज ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों जान हों । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-मैं तो तिहारे पास खेलत हों, तासों तू उहां क्यों जात है ? तब कुंभनदासजी ने कही, जो-महाराज ! यहाँ तुम खेलत हो और दरसन देत हो सो तो अपनी ओर तें कृपा करिके, और अबही तुम भाजि जाव तो मेरी तुमसों कछु चले नाहीं । और मंदिर में तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के पधगये हो सो उहां सों कहुँ जावो नाहीं, और उहां सबकों दरसन देत हो । और मंदिर में दरसन की आसक्ति जो मोकों है, सो तासों तुम घर बैठेहू मोकों कृपा करि दरसन देत हो । या समय तुम कृपा करि दरसन दे अनुभव जतावन हो, सो मंदिर की सेवा

रेय श्रीगोवर्द्धननाथजी न गया. श्रीगोवर्द्धननाथजीनी लीलासरसमां मग्न रहते. ओ कुंभनदासजी ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हता.

वार्ता-प्रसंग १०—वणी ओक समय परासोलीमां कुंभनदासजी भेतर उपर भेडा हुता अने श्रीगोवर्द्धननाथजी कुंभनदासनी आगण भेतरमां रमता हुता. ओटलामां उत्थापनता समय थयो तयारे कुंभनदासजीये उडीने श्रीगिरिराजजी नवानुं नक्री कर्युं. तयारे श्रीनाथजीये कुंभनदासने कहुं, के तू क्यां नय छे ? तयारे आभेले कहुं, के उत्थापनता समय थयो छे तेथी गिरिराज उपर श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन नउं छुं. तयारे श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, के हुं तो तारी पास भेलुं छुं तेथी तू त्यां केम नय छे ? तयारे कुंभनदासजीये कहुं, के महाराज ! अहीं तमे भेला छे अने दर्शन देा छे ते तो तमारी तरङ्गथी कृपा करीने. जो उभलां न तमे लागी नय तो माइं तमाराथी कंठ्याले नहुं अने मंदिरमां तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुये पधराव्या छे ते त्यांथी क्यांय नय नहुं अने त्यां प्रधाने दर्शन आपो छे. वणी मंदिरमां दर्शननी आसक्ति भने छे तेथी तमे घर भेडां कृपा करीने दर्शन देा छे. आ समय तमे कृपा करीने दर्शन देा अनुभव नखावो छे. ते मंदिरनी सेवा-दर्शन प्रतापथी. तेथी त्यां गया विना न

दरसन के प्रताप सों । तासों उहां गये विना न चले । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी हंसिके कहे, जो-कुंभनदास ! तेरो भाव-महा अलौकिक है तासों मैं तोकों एक छिन नार्हीं छोड़त हों । ता पाछें श्रीनाथजी और कुंभनदासजी परासोली सों संग चले । सो गोविंदकुंड ऊपर आये तब शंखनाद भये । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी मंदिर में आये, और कुंभनदासजी आन्योर ताई संग आये । सो तहां तें पर्वत ऊपर आप चढि मंदिर में श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन किये । सो कुंभन-दामजी ऐसे भगवदीय हते ।

वार्ता-प्रसंग ११—और एक दिन माली दोगसे आम बड़े-बड़े, महा सुन्दर टोकरा में लेके परासोली चंद्रसरोवर है तहां आयो, पाछें टोकरा उतारि के कुंड के पास सगरे आम भूमि में धरि कें कपड़ा तें पोंछि-पोंछि मेल छुडावन लाग्यो । ता समय कुंभनदासजी राज-भोग आरती के दरसन करिके श्रीगिरिराज तें चले सो चंद्रसरोवर ऊपर जल पीवन कों आये । सो आम बहुत सुन्दर श्रीगोवर्द्धननाथजी के लायक देखिके कुंभनदास वा माली सों पूछें, जो-आम तू कहां ले जायगो ? तब वा मालीने कह्यो, जो-मथुरा ले जाऊंगो, वहां इनके दस रुपैया लेऊंगो । सो कुंभनदास के पास तो कछू पैसा हू न हते ।

आये. त्पारे श्रीगोवर्द्धननाथजीके हुसीने कछु, के कुंभनदास ! तारे भाव महा अलौकिक छे तेथी हुं तने अक क्षण नथी छोडते. ते पडी श्रीनाथजी अने कुंभनदासजी परासोलीथी संग आइया ते गोविंदकुंड उपर आव्या त्पारे शंखनाद थया. त्पारे श्रीगोवर्द्धननाथजी मंदिरमां गया अने कुंभनदासजी आन्योर सुधी साथे आव्या. त्यांथी पर्वत उपर पोते यही मंदिरमां श्रीगोवर्द्धननाथजीनां दर्शन कर्यां. ते कुंभनदासजी अेवा भगवदीय हुता.

वार्ता-प्रसंग ११-वणी अेक द्वियस भादी असे आंया मोठा मोठा अहु सुंदर टोपलामां लधने परासोली चंद्रसरोवर छे त्यां आव्या. पडी टोपला उतारिने कुंडनी पासे अथा आंया लूमीमां धरिने कपडाथी पोछी-पोछीने मेल छोडावा लाग्यो. ते समये कुंभनदासजी राजभोग आरतीनां दर्शन करिने श्रीगिरिराजजीथी आइया. ते चंद्रसरोवर उपर जल पीवाने आव्या. त्यां आंया अहु सुंदर श्रीगोवर्द्धननाथजीना लायक लधने कुंभनदास अे भादीने पूछे, के अे आंया तू कयां लध जग्गश ? त्पारे अे भादीअे कछु, के मथुरा लध जग्गश. त्यां अेना दश रुपैया लधश. त्पारे कुंभनदासजीना पासे तो कंथ पैसा हुता नडी ते शुं करे ? त्पारे श्रीगोवर्द्धननाथजीनुं रभरलु

न गये । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी की लीला रस में मग्न रहते । सो वे कुंभनदासजी ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते ।

वार्ता-प्रसंग १०—और एक समय परासोली में कुंभनदासजी खेत ऊपर बैठे हते, और श्रीगोवर्द्धननाथजी कुंभनदास के आगे खेत में खेलत हते । इतने में उत्थापन को समय भयो तब कुंभनदासजी उठिके श्रीगिरिराज चलिवे कों क्रियो । तब श्रीनाथजी ने कुंभनदासजी सों कही, जो-तू कहां जात है ? सो तब इन (नें) कही, जो-उत्थापन को समय भयो है, सो गिरिराज ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कों जात हों । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-मैं तो तिहारे पास खेलत हों, तासों तू उहां क्यों जात है ? तब कुंभनदासजी ने कही, जो-महाराज ! यहाँ तुम खेलत हो और दरसन देत हो सो तो अपनी ओर तें कृपा करिके, और अबही तुम भाजि जाव तो मेरी तुमसों कछू चले नाहीं । और मंदिर में तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के पधराये हो सो उहां सों कहूँ जावो नाहीं, और उहां सबकों दरसन देत हों । और मंदिर में दरसन की आसक्ति जो मोकों है, सो तासों तुम घर बैठेहू मोकों कृपा करि दरसन देत हो । या समय तुम कृपा करि दरसन दे अनुभव जतावत हो, सो मंदिर की सेवा

रेय श्रीगोवर्द्धन न गया. श्रीगोवर्द्धननाथलनी लीलारसमां भगन रहेता. ये कुंभनदासल येवा परम कृपापात्र भगवदीय हुता.

वार्ता-प्रसंग १०-वणी येक समय परासोलीमां कुंभनदासल भेतर उपर भेडा हुता अने श्रीगोवर्द्धननाथल कुंभनदासनी आगण भेतरमां रमता हुता. येदलामां उत्थापनना समय थयो त्यारे कुंभनदासलये उठीने श्रीगिरिराजल नवानुं नक्षी कर्तुं. त्यारे श्रीनाथलये कुंभनदासने कहुं, के तू क्यां नय छे ? त्यारे आभणु कहुं, के उत्थापनना समय थयो छे तेथी गिरिराज उपर श्रीगोवर्द्धननाथलनां दर्शने नउं छुं. त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथल कहे, के हुं तो तारी पास भेलुं छुं तेथी तू त्यां केन नय छे ? त्यारे कुंभनदासलये कहुं, के महाराज ! अहीं तमे भेला छे अने दर्शन दे छे ते तो तभारी तरुथी कृपा करीने. जे लभणां न तमे लागी नय तो भाइं तभाराथी कंठ यावे नही अने मंदिरमां तो श्रीआचार्यल महाप्रभुलये पधराया छे ते त्यांथी क्यांय नय नही अने त्यां थधाने दर्शन आषो छे. वणी मंदिरमां दर्शननी आसक्ति भने छे तेथी तमे घर भेडां कृपा करीने दर्शन दे छे. या समय तमे कृपा करीने दर्शन छ अनुभव नखावो छे. ते मंदिरनी सेवा-दर्शन प्रतापथी. तेथी त्यां गया विना न

ऊपर श्रीगोवर्द्धन पर्वत है, तहां विराजत हैं। तब वा रजपूत ने ब्राह्मण सों कही, जो-तू महा मूरख है, जो-ऐसे स्वरूप को साक्षात दरसन करि पाछें और ठोर क्यों भटकत है? सो मैंने स्वरूप के दरसन स्वप्न में पाये। सो मोसों रह्यो नहीं जात है। जो-मवारे तू मगरे आम ले और मैं तोकों रुपैया पांच देऊंगो, जो-मोकों श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन कराय दे। तब वा ब्राह्मण ने कही, जो-आछो। ता पाछें सवेरो भयो। तब वा रजपूत ने पचास आम वा ब्राह्मण कों दीने। तब वह ब्राह्मण मथुराजी में अपने घर आयके अपने पास के हू आम सौ देके वा रजपूत के पास आयके दोउ जने चले। सो श्री-गोवर्द्धननाथजी की सेन आरती के दरसन दोउ जनेन ने किये। सो श्रीनाथजीने वा रजपूत को मन हर लीनो। ता पाछे दरसन होय चुके। तब रजपूत ने अपने हथियार, कपड़ा, पांच रुपैया वा ब्राह्मण कों दिये और दस रुपया और हते सो पास राखे। तब वह ब्राह्मणने कही, जो-मैं घर जाऊंगो। सो वह ब्राह्मण तो मथुरा अपने घर आयो। पाछे वह रजपूत एक धोवती पहरे दंडोती सिला के पास ठाडो होय रह्यो। सो इतने ही में श्रीगोवर्द्धननाथजी कों अनोसर करायके श्रीगुसांईजी आपु पर्वत तें नीचे पधारे। तब रजपूत नें

नाथल आप क्या बिराजे छे ? त्यारे ऐ आह्मणु कछुं, के अह्दीथी सात गाँठे उपर श्रीगोवर्द्धन पर्वत छे त्यां बिराजे छे. त्यारे ऐ रजपूते आह्मणुने कछुं, के तू मछा मूरख छे के ऐवा स्वरूपनां साक्षात दर्शन कर्यां पछी भील जगाये केम अरुके छे ? में स्वरूपनां दर्शन स्वप्नमां कर्यां तेथी माराथी रह्यी शकतुं नथी सवारे तू अंधा आंआ ले अने हुं तने इपीआ पांच आपीश. तेथी मने श्रीगोवर्द्धननाथलनां दर्शन करावी हे. त्यारे ऐ रजपूते पचास आंआ ऐ आह्मणुने आंआ. त्यारे ऐ आह्मणु मथुरालमां पोताना धरे आवीने पोतानी पासैना पछु सो आंआ छने ते रजपूतनी पासै आवीने अने जणा आल्या. ते श्रीगोवर्द्धननाथलनी सेन आरतीनां दर्शन अने जणाये कर्यां. ते श्रीनाथलये ऐ रजपूतनुं मन हुरी दीधुं. ते पछी दर्शन थछ युक्त्यां. त्यारे रजपूते पोतानां हथियार कपडा पांच रुपैया ऐ आह्मणुने आंआ अने दस इपीआ भील हुता ते पासै राख्या. त्यारे ऐ आह्मणु कछुं, के हुं धरे जधश. पछी ते आह्मणु तो मथुरा पोताना धरे आव्यो. पछी ऐ रजपूत ऐक पोती पहरेरी दंडवती शीलानी पासै उलो रह्यो. अरुआमां श्रीगोवर्द्धननाथलने अनोसर करावीने श्रीगुसांइल पोते पर्वतथी नीचे पधार्या. त्यारे रजपूते

सो कहा करें ? तब मन में श्रीगोवर्द्धननाथजी को स्मरण करिकें कहे, जो-महाराज ! यह सामग्री परम सुन्दर है, और आपु लायक है, (क्यों ?) जो उत्तम वस्तु के भोक्ता आपु ही हो । तासों ये आम आरोगो । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी सगरे आम आयेके आरोगे । सो वा माली कों खबरि नाही । सो यह माली टोकरा में आम भरि के मथुरा गयो । सो सांझ होय गई । सो एक रजपुत माट गाम में तें मथुरा कछु कार्यार्थ आयो हतो, सो वाने आम देखिके कह्यो, जो-कहा लेयगो ? तब माली ने कही, जो-दस रुपैया तें घाट न लेजंगो । तब वह रजपूत दस रुपैया देके आम सगरे लेके श्रीयमुनाजी के तट पर आयो । सो वा रजपूत के संग एक सनोढ़िया ब्राह्मण हतो सो वार्को सौ आम दिये । सो दोऊ जनेन ने पचास-पचास आम घरके लिये धरिके पचास २ आम दोउनने श्रीयमुनाजी के किनारे बैठिके चूसे । ता पाछें श्रीमथुरा में एक हाट ऊपर दोऊ जने सोये । सो दोउन कों स्वप्न में श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन भये । सो ये जागे तब वा रजपूत ने कही, जो-ब्राह्मण देव ! तुमने कछु देखयो । तब वा ब्राह्मणने कह्यो, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी ठाकुर को दरसन भयो है । तब वा रजपूतने वा ब्राह्मण सों पूछी, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु कहां विराजत हैं ? तब वा ब्राह्मण ने कही, जो-यहां ते सात कोम

धरीने कहे, के महाराज ! आ सामग्री परम सुंदर छे अने आपना लायक छे, केम जे उत्तम वस्तुना भोक्ता आप न छे। तेथी आ आंभा आरोगो। तयारे श्रीगोवर्द्धननाथलये आवीने भधा आंभा आरोग्या। अे अे भादीने जभर नही। पछी अे भादी टोपनामां आंभा लरीने मथुरा गयो। पछी सांज थध गध तयारे अेक रजपूत माट गाममांथी मथुरा कंघ कार्यार्थ आव्यो हुतो। अेले आंभा जेधने कहुं, के शुं लक्ष ? तयारे भादीअे कहुं, के दश रुपैयाथी आंभुं नही लई। तयारे अे रजपूत दश रुपैया दधने भधा आंभा लधने श्रीयमुनालना तट उपर आव्यो। तयारे अे रजपूतनी साथे अेक सनोढ़ीया ब्राह्मण हुतो। तेथी अेने सो आंभा आव्या। ते अने जलुअे पयास पयास आंभा घरना भाटे धरीने पयास पयास आंभा अनेअे श्रीयमुनालना दिनारे भेसीने बूस्या। ते पछी मथुरामां अेक दुकान उपर अने जलुअे सध रह्या। तयारे अनेने स्वप्नमां श्रीगोवर्द्धननाथलनां दर्शन थयां। पछी अे जलुअे तयारे अे रजपुते कहुं, के ब्राह्मणदेव ! तमे कंघ जेथुं ? तयारे अे ब्राह्मण कहुं, के श्रीगोवर्द्धननाथल ठाकुरना दर्शन थयां छे। तयारे अे रजपुते ते ब्राह्मणने पूछ्युं, के श्रीगोवर्द्धन-

नाथजी को अंगीकार करवाये। ता पाछे वा माली के पासतें दस
 पा देके तुमने आम लिये, सो पचास तुमने राखे। तुमने वे महा-
 शादी आम लिये, और तुम दैवी जीव हते, सो तिहारो मन फेरिके
 श्रीनाथजी ने स्वप्न में दरसन दियो। और वह ब्राह्मण दैवी जीव न
 हतो, सो वाको स्वप्न में श्रीनाथजीने दरसन दियो, परंतु तो हू वाको
 ज्ञान न भयो। सो लीला में तेरो नाम 'नेना' हतो। अब तुम श्री-
 नाथजी की गायन के संग शस्त्र बांधिके जायो करो। और श्रीनाथजी
 की रसोई में महाप्रसाद लेऊ। जो-शस्त्र कपड़ा हम तुमको देंगें।
 और आज तुम व्रत करो, जो-कालिह तुमको समर्पन करवावेंगे। तव
 वा रजपूतने दंडवत कीनी। ता पाछे दूसरे दिन श्रीगुसांईजी आपु
 श्रीनाथजी को सिंगार करि वा रजपूत को न्हायके श्रीनाथजी के
 साम्हे ब्रह्मसंबंध करवाये। तव वा रजपूतकी बुद्धि निर्मल होय गई।
 ता पाछे वा रजपूत को जूठनि की पातरि धरी। पाछे शस्त्र देके
 श्रीगुसांईजी आपु वाको प्रसादी कपड़ा दिचे, सो लेके घोड़ा ऊपर
 चढिके गायन के संग गयो। सो वाको मन श्रीगोवर्द्धननाथजी के
 स्वरूप में लग्यो, सो कछुक दिन में श्रीनाथजी गायन में वा रजपूत को
 दरसन देन लगे। ता पाछे वह रजपूत बड़ो कृपापात्र भगवदीय भयो।
 भावप्रकाश—सो यामें यह जताये, जो-कुंभनदासजी मानसी सेवामें

इपीया छने तमे आंया दीधा ते पयास तमे राभ्या. तमे ऐ महाप्रसादी आंया
 दीधा अने तमे दैवी छव हुता तेथी तमाइं मन देरवीने श्रीनाथछये स्वप्नमां दर्शन
 दीधां अने ते ब्राह्मण दैवीछव न हुतो तेथी तेने स्वप्नमां श्रीनाथछये दर्शन आंयां
 तो पण तेने ज्ञान न थयुं. दीसाभां ताइं नाम 'नेनां' हुतुं. हुने तमे श्रीनाथछनी
 गायनी साथे शस्त्र आंधीने जया करे अने श्रीनाथछनी रसेछमां महाप्रसाद लेा.
 शस्त्र, कपडां अमे तमने आपीशुं अने आज तमे व्रत करे. डास तमने समर्पण
 करापीशुं. त्यारे ऐ रजपूते दंडवत कर्यां. ते पछी पीज दिवसे श्रीगुसांछथे पोते
 श्रीनाथछने शृंगार करी ते रजपूतने न्हायवीने श्रीनाथछनी सामे ब्रह्मसंबंध
 कराण्युं. त्यारे ऐ रजपूतनी बुद्धि निर्मल थई गछ. ते पछी ऐ रजपूतने घोड़ुनी
 पातर धरी. पछी शस्त्र छने श्रीगुसांछथे पोते अने प्रसादी, कपडां दीधां. ऐ छने
 घोडा उपर चढीने गायनी संगे गयो. त्यारे ऐतुं मन श्रीगोवर्द्धननाथछना स्वरूपमां
 लाग्युं. पछी देसाद दिवसमां श्रीनाथछ गायीमां ते रजपूतने दर्शन देवा लाग्या.
 ते पछी ते रजपूत भेटे कृपापात्र भगवदीय थयो.

दंडवत करिके कही, जो-महाराज ! मैं बहोत दिनन तें भटकत हतो, सो मेरो अंगीकार करि मोकों अपने चरण पास राखिये । तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-तुम पर कुंभनदासजी की कृपा भई है, तासों तिहारी यह दसा है । जो तेरे बड़े भाग्य हैं । सो तब श्रीगुसांईजी आपु अपनी बेठकमें पधारि वा रजपूत कों नाम सुनायो । तब वा रजपूत ने दस रुपया श्रीगुसांईजी की भेट किये । तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-तू अपने पास रहन दे । क्यों जो तेरे पास खरची नहीं हैं, (तेंने) सब वा ब्राह्मण कों दीनी । तब वा रजपूतने दंडवत् करिके बिनती कीनी, जो-महाराज ! अब मेरे रुपयान सों कहा काम है ? मैं तो अब आपुकी सरन हूं, जो-टहल बतावोगे सो मैं करूंगो । पाछे वा रजपूतने बिनती कीनी, जो-महाराज ! पूर्व जन्म को मैं कौन हूं ? और कौन पुन्य तें मोकों आप को दरसन भयो है । तब श्रीगुसांईजी आपु कृपा करि वासों कहे, जो-तुम पहले ब्रजमें गोप हते । सो तुम शस्त्र बाँधिके श्रीनंदरायजीकी गायनके संग जाते, सो एक दिन तुमने सर्प मारयो, सो अपराध तें तुमने संसार में बहोत जन्म पाये । पाछे ये आम कुंभनदासजीने देखे सो मन करिके श्रीगोवर्द्धननाथजी कों समर्पन किये । सो वा माली के सगरे आम कुंभनदासजीने

दंडवत करीने कहुं, के महाराज ! हुं अहु द्विसथी लटकता हुतो । तेथी भारे अंगी-
कार करी मने पोताना यरखु पासे रांभये । त्यारे श्रीगुसांईजी कहे, के तभारा उपर
कुंभनदासजीनी कृपा थछ छे । तेथी तारी आ दशा छे । तारां महान भाग्य छे । पछी
श्रीगुसांईजीने पोते पोतानी षेठकमां पधारी अे रजपूतने नाम संलगाव्युं । त्यारे
अे रजपूते दश रुपिया लेट कर्यां । त्यारे श्रीगुसांईजी पोते कहे, के तू तारी पासे रखेवा
द केभके तारी अर्थी नथी । तें, अंधी ते ब्राह्मणने आपी । त्यारे ते रजपूते दंडवत
करीने बिनती करी के महाराज ! हुवे भारे रुपियाथी शुं काम छे ? हुं तो हुवे
आपनी शरखे छुं के दस अतावशेते करीश । पछी ते रजपूते बिनती करी के महा-
राज ! पूर्व जन्मने हुं केखे छुं ? अने कयां पूछ्यथी मने आपनां दर्शन थयां छे ?
त्यारे श्रीगुसांईजी पोते कृपा करीने तेने कहे, के तभे पहुलां ब्रजमां गोप हुता । तभे
शस्त्र बाँधीने श्रीनंदरायजीनी गायनी संगे जाता । पछी अेक द्विस तभे समर्पने भार्ये ।
ते अपराधथी तभे संसारमां घण्टा जन्म लीधा । पछी आ आंया कुंभनदासजीने
जेया ते मन करीने श्रीगोवर्द्धननाथजीने समर्पण कर्यां । अे मादीना अथा आंया
कुंभनदासजीने श्रीनाथजीने अंगीकार कराव्या । ते पछी अे मादीनी पासेथी दश

श्रीनाथजी कों अंगीकार करवाये । ता पाछे वा माली के पासतें दस रूपया देके तुमने आम लिये, सो पचास तुमने राखे । तुमने बे महा-प्रसादी आम लिये, और तुम दैवी जीव हते, सो तिहारो मन फेरिकें श्रीनाथजी ने स्वप्न में दरसन दियो । और वह ब्राह्मण दैवी जीव न हतो, सो वाकों स्वप्न में श्रीनाथजीने दरसन दियो, परंतु तो हू वाकों ज्ञान न भयो । सो लीला में तेरो नाम 'नेना' हतो । अब तुम श्री-नाथजी की गायन के संग शस्त्र बांधिके जायो करो । और श्रीनाथजी की रसोई में महाप्रसाद लेऊ । जो-शस्त्र कपड़ा हम तुमकों देंगें । और आज तुम व्रत करो, जो-काल्हि तुमकों समर्पन करवावेंगे । तब वा रजपूतने दंडवत कीनी । ता पाछे दूसरे दिन श्रीगुसांईजी आपु श्रीनाथजी को सिंगार करि वा रजपूत कों न्हायके श्रीनाथजी के साम्हे ब्रह्मसंबंध करवाये । तब वा रजपूतकी बुद्धि निर्मल होय गई । ता पाछे वा रजपूत कों जूठनि की पातरि धरी । पाछे शस्त्र देके श्रीगुसांईजी आपु वाकों प्रसादी कपड़ा दिये, सो लेके घोड़ा ऊपर चढिके गायन के संग गयो । सो वाको मन श्रीगोवर्द्धननाथजी के स्वरूप में लग्यो, सो कछुक दिन में श्रीनाथजी गायन में वा रजपूत कों दरसन देन लगे । ता पाछे वह रजपूत बड़ो कृपापात्र भगवदीय भयो ।

भावप्रकाश—सो यामें यह जताये, जो-कुंभनदासजी मानसी सेवामें

इपीआ छने तमे आंआ दीधा ते पयास तमे राण्या. तमे अे महाप्रसादी आंआ दीधा अने तमे दैवी लव हुता तेथी तमाइं मन इरवीने श्रीनाथलये स्वप्नमां दर्शन दीधां अने ते आहालु दैवीलव न हुतो तेथी तेने स्वप्नमां श्रीनाथलये दर्शन आप्यां तो पखु तेने ज्ञान न थयुं. दीसामां ताइं नाम 'नेनां' हुतुं. हुवे तमे श्रीनाथलनी गाथोनी साथे शस्त्र आंधीने जया करे. अने श्रीनाथलनी रसोइमां महाप्रसाद लेा. शस्त्र, कपडां अमे तमने आपीशुं अने आण तमे व्रत करे. काल तमने समर्पलु करावीशुं. त्यारे अे रजपूते दंडवत कर्या. ते पछी पीज दिवसे श्रीगुसांइल पोते श्रीनाथलना सुंगार करी ते रजपूतने न्हावावीने श्रीनाथलनी सामे ब्रह्मसंबंध कराव्युं. त्यारे अे रजपूतनी बुद्धि निर्मल थई गछ. ते पछी अे रजपूतने लुंलुनी पातर धरी. पछी शस्त्र छने श्रीगुसांइलये पोते अने प्रसादी, कपडां दीधां. अे लछने घोडा उपर यदीने गाथोनी संगे गयो. त्यारे अेतुं मन श्रीगोवर्द्धननाथलना स्वइपमां लाग्युं. पछी केरसाक दिवसमां श्रीनाथल गाथोमां ते रजपूतने दर्शन देवा लाग्या. ते पछी ते रजपूत भेटो कृपापात्र भगवदीय थयो.

दंडवत करिके कही, जो-महाराज ! मैं बहोत दिनन तें भटकत हतो, सो मेरो अंगीकार करि मोकों अपने चरण पास राखिये । तब श्रीगुसाईंजी कहे, जो-तुम पर कुंभनदासजी की कृपा भई है, तासों तिहारी यह दसा है । जो तेरे बड़े भाग्य हैं । सो तब श्रीगुसाईंजी आपु अपनी बैठकमें पधारि वा रजपूत कों नाम सुनायो । तब वा रजपूत ने दस रुपया श्रीगुसाईंजी की भेट किये । तब श्रीगुसाईंजी आपु कहे, जो-तू अपने पास रहन दे । क्यों जो तेरे पास खरची नाहीं हैं, (तेंने) सब वा ब्राह्मण कों दीनी । तब वा रजपूतने दंडवत् करिके बिनती कीनी, जो-महाराज ! अब मेरे रुपयान सों कहा काम है ? मैं तो अब आपुकी सरन हूं, जो-टहल बतावोगे सो मैं करूंगो । पाछे वा रजपूतने बिनती कीनी, जो-महाराज ! पूर्व जन्म को मैं कौन हूं ? और कौन पुन्य तें मोकों आप को दरसन भयो है । तब श्रीगुसाईंजी आपु कृपा करि वासों कहे, जो-तुम पहले ब्रजमें गोप हते । सो तुम शस्त्र बाँधिके श्रीनंदरायजीकी गायनके संग जाते, सो एक दिन तुमने सर्प मारयो, सो अपराध तें तुमने संसार में बहोत जन्म पाये । पाछे ये आम कुंभनदासजीने देखे सो मन करिके श्रीगोवर्द्धननाथजी कों समर्पन किये । सो वा माली के सगरे आम कुंभनदासजीने

दंडवत करिने कहुं, के महाराज ! हुं बहुत द्विसथी लटकता हुता । तेथी मारे अंगीकार करी भने पोताना चरण पास राखिये । तारे श्रीगुसाईंजी कहे, के तमारा उपर कुंभनदासजीनी कृपा थछ छे । तेथी तारी आ दशा छे । तारां महान भाग्य छे । पछी श्रीगुसाईंजीये पोते पोतानी भेडकमां पधारी अे रजपूतने नाम संलणाव्युं । तारे अे रजपूते दश रुपिया लेट कर्या । तारे श्रीगुसाईंजी पोते कहे, के तू तारी पास रहववा दू केभके तारी अर्थी नथी । ते, अथी ते ब्राह्मणने आपी । तारे ते रजपूते दंडवत करिने बिनती करी के महाराज ! हुवे मारे रुपियाथी शुं काम छे ? हुं तो हुवे आपनी शरणे छुं ने टहल बतावशाते करीश । पछी ते रजपूते बिनती करी के महाराज ! पूर्व जन्मने हुं कौण छुं ? अने क्यां पूछथी भने आपनां दर्शन थयां छे ? तारे श्रीगुसाईंजी पोते कृपा करिने तेने कहे, के तमे पछेसां ब्रजमां जाय हुता । तमे शस्त्र बाँधीने श्रीनंदरायजीनी गायनी सगे जाता । पछी अेक द्विस तमे समर्पने भार्या । ते अपराधथी तमे संसारमां घण्टा जन्म दीधा । पछी आ आंआ कुंभनदासजीये गेया ते मन करिने श्रीगोवर्द्धननाथजीने समर्पण कर्या । अे मादीना अथा आंआ कुंभनदासजीये श्रीनाथजीने अंगीकार कराव्या । ते पछी अे मादीनी पासथी दश

सो अलौकिक जानिये । क्यों ? जो—श्रीगोवर्द्धननाथजी भगवदीय के बस हैं । और कुंभनदासजी की स्त्री और पांचों बेटा नाम मात्र पाये । सो कुंभनदासजी के संग तें उद्धार भयो । और कुंभनदास की भतीजी, (जो) भाई की बेटी हती, सो व्याह होत ही विधवा भई । सो लौकिक संबंध यासों न भयो ।

भावप्रकाश—क्यों ? जो—मूलमें दैवी जीव है । सो श्रीविसाखाजी की सखी है । सो लीला में याको नाम ' सरोवरि ' है । याके माता-पिता मरि गये यासों ये कुंभनदास के घर में रहती । लीला में विसाखाजी की सखी है । सो यहां (हू) कुंभनदासजी (जैसे) भगवदीय को संग । तातें भतीजी कों हू श्रीगोवर्द्धननाथजी दरसन देते, और सानुभाव जनावते ।

वार्ता-प्रसंग १२—और एक समय श्रीगुसांईजी को जन्म दिवस आयो । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी अपने मन में विचारे, जो-मेरो जन्म दिवस श्रीगुसांईजी सब वैष्णवन सहित जगत में प्रगट किये । तासों मैं हू अब श्रीगुसांईजी को जनम दिवस प्रगट करूँ । सो यह विचारि के जब पूस बदी ८ कूं रामदासजी श्रीनाथजी को सिंगार करत हते, ता समय कुंभनदासजी सिंगार के कीर्तन करत हते । और श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल में हते । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी रामदासजी सों कहे, जो-मेरे जनम दिवस कों श्रीगुसांईजी आपु बड़ो उत्साह

नाथल भगवदीयना वश छे । वणी कुंभनदासलनी स्त्री अने पांचे बेटा नाम मात्र पाया । तेथी कुंभनदासलना संगथी उद्धार थयो अने कुंभनदासलनी सत्रिल, ने साधनी भेटी हुती ते लगन थतां न विधवा थध । तेने लौकिक संबंध थयो न हुतो ।

भावप्रकाश—कैम ? ने मूलमां दैवी छे । लीलामां अेतुं नाम ' सरो-वरि ' छे । अेनां माता-पिता मरी गयां अेथी अे कुंभनदासना घरमां रहेती । लीलामां विसाखालनी सखी छे तेथी अही पणु कुंभनदासल नेवा भगवदीयना संग (रह्यो) तेथी सत्रिलने पणु श्रीगोवर्द्धननाथल दर्शन हेता अने सानुभाव नष्ठावता ।

वार्ता-प्रसंग १२-वणी अेक दिवस श्रीगुसांइलनो जन्मदिवस आय्यो । त्तारे श्रीगोवर्द्धननाथलअे पोताना मनमां विचार्युं, के भारे जन्मदिवस श्रीगुसांइलअे पधा वैष्णवो सहित जगतमां प्रकट कर्यो । तेथी हुं पणु हुवे श्रीगुसांइलनो जन्मदिवस प्रकट करूं । अेम विचारने न्यारे पोष वद ८ ना रामदासल श्रीनाथलनो शृंगार करता हुता ते समये कुंभनदास शृंगारनां कीर्तन करता हुता अने श्रीगुसांइल पोते श्रीगोकुलमां हुता । त्तारे श्रीगोवर्द्धननाथल रामदासलने कहे, के भारे जन्म

भोग धरे, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी आरोगे । सो महाप्रसादी आम लियेतें वा रजपूत के ऊपर भगवद् अनुग्रह भयो । तासों जो भगवदीय अपने हाथसों भोग धरत हैं, सो तो सर्वथा ही श्रीठाकुरजी प्रीति सों आरोगत हैं । सो महाप्रसाद अलौकिक होय तामें कहा कहनो ?

ता पाछे वा रजपूत के दोय बेटा हते, सो वा रजपूतके पास आये । तब वा रजपूतने अपने दोय बेटानसों कह्यो, जो-बेटा ! आपुन तो सिपाई हैं । सो कहुं लराई में वृथा प्रान जाते, तासों मो पर प्रभु कृपा करी है, तासों अब तुम यह जानियो, जो-मेरो पिता मरि गयो । तासों अब तुम जायके अपनो घर सम्हारो, हमारी बाट मति देखियो । हम तो नहीं आवेंगे । पाछे वा रजपूतके दोउ बेटा अपने घर आये, और सब समाचार कहे, जो-हमारो पिता वैरागी भयो है । तासों अब हमारे कहा काम है ? पाछे सब घरके मोह छाँडि के बैठि रहे ।

भावप्रकाश—या प्रकार महाप्रसाद तथा भगवदीयन को दरसन (जो) दैवी जीव होंय तिनकों फलित होय । सो यह सिद्धांत जताये ।

सो वे कुंभनदासजी ऐसे भगवदीय हे, जो-सहजमें आँवान द्वारा रजपूत ऊपर कृपा किये । तासों भगवदीय, जो-कृत्य करत हैं

भावप्रकाश—येमां ये जगुण्युं के कुंभनदासज्ये मानसी सेवामां लोग धर्यां ते श्रीगोवर्द्धननाथज्ये आरोग्या । ये महाप्रसादी आंगां देवाथी ते रजपूत उपर लगवदनुग्रह थयो । तेथी जे लगवदीय पोताना हाथथी लोग धरे छे ते तो श्रीठाकुरज्ये सर्वथा प्रीतिथी आरोगे छे । ते महाप्रसाद अलौकिक होय तेमां कहेवुं शुं ?

ते पछी ये रजपूतना ये भेटा हुता ते रजपूतनी पासे आव्या । त्यारे ये रजपूते अपने भेटायेने कहुं के, भेटा ! आपणु तो सिपाय छीये । ते क्यांक लडायमां वृथा प्राणु जता तेथी भारा उपर प्रभुये कृपा करी छे अटले हुवे तमे अम जगुणे, के भारे पिता मरी गयो तेथी हुवे तमे जव । तमारं घर संभाणो । अमारी राह न जेता । अमे तो नहीं आवीये । पछी ते रजपूतना अपने भेटा पोताने धरे आव्या अपने पथा समाचार क्हा, के अमारो पिता वैरागी थयो छे । तेथी हुवे अमारो शुं काम छे ? पछी पथा घरना मोह छोडीने भेसी र्हा ।

भावप्रकाश—आ प्रकारे महाप्रसाद अने लगवदीयानां दर्शन जे दैवी ज्ये होय तेमने इक्षित थाय ये सिद्धांत जगुण्यो ।

ये कुंभनदासज्ये येवा लगवदीय हुता, के सहजमां आंगां द्वारा रजपूत उपर कृपा करी । तेथी लगवदीय जे कृत्य करे छे ते अलौकिक जगुण्युं केम ? जे श्रीगोवर्द्धन-

सो अलौकिक जानिये । क्यों ? जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी भगवदीय के बस हैं । और कुंभनदासजी की स्त्री और पांचों बेटा नाम मात्र पाये । सो कुंभनदासजी के संग तें उद्धार भयो । और कुंभनदास की भतीजी, (जो) भाई की बेटा हती, सो व्याह होत ही विधवा भई । सो लौकिक संबंध यासों न भयो ।

भावप्रकाश—क्यों ? जो-मूलमें देवी जीव है । सो श्रीविसाखाजी की सखी है । सो लीला में याको नाम 'सरोवरि' है । याके माता-पिता मरि गये यासों ये कुंभनदास के घर में रहती । लीला में विसाखाजी की सखी है । सो यहां (हू) कुंभनदासजी (जैसे) भगवदीय को संग । तातें भतीजी कों हू श्रीगोवर्द्धननाथजी दरसन देते, और सातुभाव जनावते ।

वार्ता-प्रसंग १२—और एक समय श्रीगुसांईजी को जन्म दिवस आयो । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी अपने मन में विचारे, जो-मेरो जन्म दिवस श्रीगुसांईजी सब वैष्णवन सहित जगत में प्रगट किये । तासों मैं हू अब श्रीगुसांईजी को जन्म दिवस प्रगट करूँ । सो यह विचारि के जब पूस वदी ८ कूं रामदासजी श्रीनाथजी को सिंगार करत हते, ता समय कुंभनदासजी सिंगार के कीर्तन करत हते । और श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल में हते । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी रामदासजी सों कहे, जो-मेरे जन्म दिवस कों श्रीगुसांईजी आपु बड़ो उत्साह

नाथल भगवदीयना वश छे । वणी कुंभनदासलनी स्त्री अने पांचे बेटा नाम मात्र पाभ्या तेथी कुंभनदासलना संगथी उद्धार थयो अने कुंभनदासलनी लत्रिल, जे लाधनी भेटी हुती ते लगन थतां ज विधवा थछ । तेने लौकिक संबंध थयो न हुतो ।

भावप्रकाश—कैम ? जे मूलमां देवी लव छे । लीलामां अेतुं नाम 'सरोवरि' छे । अेनां माता-पिता मरी गयां अेथी अे कुंभनदासना घरमां रहेती । लीलामां विशाखालनी सखी छे तेथी अही पणु कुंभनदासल जेवा भगवदीयना संग (रह्यो) तेथी लत्रिलने पणु श्रीगोवर्द्धननाथल दर्शन देता अने सातुभाव जणुवता ।

वार्ता-प्रसंग १२-वणी अेक द्विवस श्रीगुसांइलनो जन्मदिवस आण्यो । त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथलये पोताना मनमां वियार्युं, के भारो जन्मदिवस श्रीगुसांइलये प्पधा वैष्णवो सहित जगतमां प्रकट कर्यो । तेथी हुं पणु हुवे श्रीगुसांइलनो जन्मदिवस प्रकट करूं । अेम वियारीने ज्यारे पोष वद ८ ना रामदासल श्रीनाथलनो सुंगार करता हुता ते समये कुंभनदास शृंगारनां कीर्तन करता हुता अने श्रीगुसांइल पोते श्रीगोकुलमां हुता । त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथल रामदासलने कहे, के भारो जन्म

भोग धरे, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी आरोगे । सो महाप्रसादी आम लियेतें वा रजपूत के ऊपर भगवद् अनुग्रह भयो । तासों जो भगवदीय अपने हाथसों भोग धरत हैं, सो तो सर्वथा ही श्रीठाकुरजी प्रीति सों आरोगत हैं । सो महाप्रसाद अलौकिक होय तामें कहा कहनो ?

ता पाछे वा रजपूत के दोय बेटा हते, सो वा रजपूतके पास आये । तब वा रजपूतने अपने दोय बेटानसों कह्यो, जो-बेटा ! आपुन तो सिपाई हैं । सो कहुं लराई में वृथा प्रान जाते, तासों मो पर प्रभु कृपा करी है, तासों अब तुम यह जानियो, जो-मेरो पिता मरि गयो । तासों अब तुम जायके अपनो घर सम्हारो, हमारी बाट मति देखियो । हम तो नाहीं आवेंगे । पाछे वा रजपूतके दोउ बेटा अपने घर आये, और सब समाचार कहे, जो-हमारो पिता वैरागी भयो है । तासों अब हमारे कहा काम है ? पाछें सब घरके मोह छाँडि के बैठि रहे ।

भावप्रकाश—या प्रकार महाप्रसाद तथा भगवदीयन को दरसन (जो) दैवी जीव होय तिनकों फलित होय । सो यह सिद्धांत जताये ।

सो वे कुंभनदासजी ऐसे भगवदीय हे, जो-सहजमें आँवान द्वारा रजपूत ऊपर कृपा किये । तासों भगवदीय, जो-कृत्य करत हैं

भावप्रकाश—येमां ये जलुव्युं के कुंभनदासलये मानसी सेवामां लोग धर्या ते श्रीगोवर्द्धननाथल आरोग्या. ये महाप्रसादी आंगा देवाथी ते रजपूत उपर भगवदनुग्रह थयो. तेथी जे भगवदीय पोताना हाथथी लोग धरे छे ते तो श्रीठाकुरल सर्वथा प्रीतिथी आरोगे छे. ते महाप्रसाद अलौकिक होय तेमां कडेवुं शुं ?

ते पछी ये रजपूतना ये भेटा हुता ते रजपूतनी पासे आव्या. तयारे ये रजपूते अपने भेटाओने कहुं के, भेटा ! आपणु तो सिपाय छीये. ते क्यांक लडायमां वृथा प्राणु जाता तेथी भारा उपर प्रभुये कृपा करी छे ओरले हुवे तमे अम जलुजे, के भारे पिता मरी गयो तेथी हुवे तमे जय. तमाइं घर संभाणो. अमारी राहु न नेता. अमे तो नहुं आवीये. पछी ते रजपूतना अपने भेटा पोताने धरे आव्या अपने अथा समाचार कथा, के अमारो पिता वैरागी थयो छे. तेथी हुवे अमारो शुं काम छे ? पछी अथा धरना मोहु छोडीने भेसी रथा.

भावप्रकाश—आ प्रकारे महाप्रसाद अने भगवदीयानां दर्शन जे दैवी लव होय तेमने इतित थाय ये सिद्धांत जलुव्यो.

ये कुंभनदासल येवा भगवदीय हुता, के सहजमां आंगा द्वारा रजपूत उपर कृपा करी. तेथी भगवदीय जे कृत्य करे छे ते अलौकिक जलुवुं. केम ? जे श्रीगोवर्द्धन-

सो अलौकिक जानिये । क्यों ? जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी भगवदीय के बस हैं । और कुंभनदासजी की स्त्री और पांचों वेदा नाम मात्र पाये । सो कुंभनदासजी के संग तें उद्धार भयो । और कुंभनदास की भतीजी, (जो) भाई की वेटी हती, सो व्याह होत ही विधवा भई । सो लौकिक संबंध यासों न भयो ।

भावप्रकाश—क्यों ? जो-मूलमें दैवी जीव है । सो श्रीविसाखाजी की सखी है । सो लीला में याको नाम ' सरोवरि ' है । याके माता-पिता मरि गये यासों ये कुंभनदास के घर में रहती । लीला में विसाखाजी की सखी है । सो यहां (हू) कुंभनदासजी (जैसे) भगवदीय को संग । तातें भतीजी कों हू श्रीगोवर्द्धननाथजी दरसन देते, और सानुभाव जनावते ।

वार्ता-प्रसंग १२—और एक समय श्रीगुसांईजी को जन्म दिवस आयो । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी अपने मन में विचारे, जो-मेरो जन्म दिवस श्रीगुसांईजी सब वैष्णवन सहित जगत में प्रगट किये । तासों मैं हू अब श्रीगुसांईजी को जन्म दिवस प्रगट करूँ । सो यह विचारि के जब पूस वदी ८ कूं रामदासजी श्रीनाथजी को सिंगार करत हते, ता समय कुंभनदासजी सिंगार के कीर्तन करत हते । और श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल में हते । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी रामदासजी सों कहे, जो-मेरे जन्म दिवस कों श्रीगुसांईजी आपु बड़ो उत्साह

नाथल भगवदीयना वश छे । वणी कुंभनदासलनी स्त्री अपने पांचे वेदा नाम मात्र पाभ्या तेथी कुंभनदासलना संगथी उद्धार थयो अपने कुंभनदासलनी लत्रिल, वे लाधनी वेटी हुती ते लगन थतां न विधवा थध । तेने लौकिक संभंध थयो न हुतो ।

भावप्रकाश—कैम ? वे मूलमां दैवी लव छे । लीलामां अेनुं नाम ' सरो-वरि ' छे । अेनां माता-पिता मरी गयां अेथी अे कुंभनदासना घरमां रहेती । लीलामां विशाखालनी सखी छे तेथी अही पखु कुंभनदासल अेवा भगवदीयनो संग (रह्यो) तेथी लत्रिलने पखु श्रीगोवर्द्धननाथल दर्शन हेता अपने सानुभाव लखुवता ।

वार्ता-प्रसंग १२-वणी अेक दिवस श्रीगुसांइलनो जन्मदिवस आब्यो । तयारे श्रीगोवर्द्धननाथलअे पोताना मनमां विचार्युं, के भारो जन्मदिवस श्रीगुसांइलअे पधा वैष्णवो सहित जगतमां प्रकट कर्यो । तेथी हुं पखु लुवे श्रीगुसांइलनो जन्मदिवस प्रकट करूं । अेम विचारीने न्यारे पोष वद ८ ना रामदासल श्रीनाथलनो सुंगार करता हुता ते समये कुंभनदास सुंगारनां कीर्तन करता हुता अपने श्रीगुसांइल पोते श्रीगोकुलमां हुता । तयारे श्रीगोवर्द्धननाथल रामदासलने कहे, के भारो जन्म

भोग धरे, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी आरोगे । सो महाप्रसादी आम लियेतें वा रजपूत के ऊपर भगवद् अनुग्रह भयो । तासों जो भगवदीय अपने हाथसों भोग धरत हैं, सो तो सर्वथा ही श्रीठाकुरजी प्रीति सों आरोगत हैं । सो महाप्रसाद अलौकिक होय तामें कहा कहनो ?

ता पाछे वा रजपूत के दोय बेटा हते, सो वा रजपूतके पास आये । तब वा रजपूतने अपने दोय बेटानसों कह्यो, जो-बेटा ! आपुन तो सिपाई हैं । सो कहुं लराई में वृथा प्रान जाते, तासों मो पर प्रभु कृपा करी है, तासों अब तुम यह जानियो, जो-मेरो पिता मरि गयो । तासों अब तुम जायके अपनो घर सम्हारो, हमारी बाट मति देखियो । हम तो नाहीं आवेंगे । पाछे वा रजपूतके दोउ बेटा अपने घर आये, और सब समाचार कहे, जो-हमारी पिता वैरागी भयो है । तासों अब हमारे कहा काम है ? पाछें सब घरके मोह छाँडि के बैठि रहे ।

भावप्रकाश—या प्रकार महाप्रसाद तथा भगवदीयन को दरसन (जो) दैवी जीव होय तिनकों फलित होय । सो यह सिद्धांत जताये ।

सो वे कुंभनदासजी ऐसे भगवदीय हे, जो-सहजमें आँवान द्वारा रजपूत ऊपर कृपा किये । तासों भगवदीय, जो-कृत्य करत हैं

भावप्रकाश—अेमां अे नृणां अे कुंभनदास अे मानसी सेवामां लोग धर्या ते श्रीगोवर्द्धननाथ अे आरोग्या. अे महाप्रसादी आंगा लेवाथी ते रजपूत ऊपर भगवदनुग्रह थयो. तेथी ने भगवदीय पोताना हाथथी लोग धरे छे ते तो श्रीठाकुर अे सर्वथा प्रीतिथी आरोगे छे. ते महाप्रसाद अलौकिक होय तेमां कडेवुं शुं ?

ते पछी अे रजपूतना अे भेरा हुता ते रजपूतनी पासे आव्या. तयारे अे रजपूते अने भेराअेने कहुं के, भेरा ! आपछे तो सिपाय छीअे. ते क्यांक लडायमां वृथा प्राणु जाता तेथी भारा ऊपर प्रभुअे कृपा करी छे अेदले हुवे तमे अेभ नालुअे, के भारे पिता मरी गयो तेथी हुवे तमे नय. तमाइं घर संभाणो. अमारी राहु न जेता. अमे तो नहों आवीअे. पछी ते रजपूतना अने भेरा पोताने धरे आव्या अने अंधा समाचार कहा, के अमारे पिता वैरागी थयो छे. तेथी हुवे अमारे शुं काम छे ? पछी अंधा धरना मोहु छोडीने भेसी रहा.

भावप्रकाश—आ प्रकार महाप्रसाद अने भगवदीयानां दर्शन ने दैवी अेव होय तेमने इवित थाय अे सिद्धांत नृणां अे.

अे कुंभनदास अेवा भगवदीय हुता, के सहजमां आंगा द्वारा रजपूत ऊपर कृपा करी. तेथी भगवदीय ने कृत्य करे छे ते अलौकिक नृणां अे ? ने श्रीगोवर्द्धन-

सो अलौकिक जानिये । क्यों ? जो—श्रीगोवर्द्धननाथजी भगवदीय के बस हैं । और कुंभनदासजी की स्त्री और पांचों वेटा नाम मात्र पाये । सो कुंभनदासजी के संग तें उद्धार भयो । और कुंभनदास की भतीजी, (जो) भाई की वेटी हती, सो व्याह होत ही विधवा भई । सो लौकिक संबंध यासों न भयो ।

भावप्रकाश—क्यों ? जो—मूलमें दैवी जीव है । सो श्रीविसाखाजी की सखी है । सो लीला में याको नाम ' सरोवरि ' है । याके माता-पिता मरि गये यासों ये कुंभनदास के घर में रहती । लीला में विसाखाजी की सखी है । सो यहां (हू) कुंभनदासजी (जैसे) भगवदीय को संग । तातें भतीजी कों हू श्रीगोवर्द्धननाथजी दरसन देते, और सानुभाव जनावते ।

वार्ता-प्रसंग १२—और एक समय श्रीगुसांईजी को जन्म दिवस आयो । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी अपने मन में विचारे, जो-मेरो जन्म दिवस श्रीगुसांईजी सब वैष्णवन सहित जगत में प्रगट किये । तासों मैं हू अब श्रीगुसांईजी को जनम दिवस प्रगट करूँ । सो यह विचारि के जब पूस वदी ८ कूं रामदासजी श्रीनाथजी को सिंगार करत हते, ता समय कुंभनदासजी सिंगार के कीर्तन करत हते । और श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल में हते । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी रामदासजी सों कहे, जो-मेरे जनम दिवस कों श्रीगुसांईजी आपु बड़ो उत्साह

नाथल भगवदीयना वश छे. वणी कुंभनदासलनी स्त्री अने पांचे वेटा नाम मात्र पाया तेथी कुंभनदासलना संगथी उद्धार थयो अने कुंभनदासलनी लत्रिल, ने लाधनी भेटी हुती ते लगन थतां न विधवा थछ. तेने लौकिक संबंध थयो न हुतो.

भावप्रकाश—कैम ? ने मूलमां दैवी लव छे. लीलामां येतुं नाम ' सरोवरि ' छे. येनां माता-पिता मरी गयां येथी ये कुंभनदासना घरमां रहेती. लीलामां विशाखालनी सखी छे तेथी अही पणु कुंभनदासल नेवा भगवदीयना संग (स्त्री) तेथी लत्रिलने पणु श्रीगोवर्द्धननाथल दर्शन हेता अने सानुभाव नष्ठावता.

वार्ता-प्रसंग १२-वणी येक दिवस श्रीगुसांइलनो जन्मदिवस आव्यो. तयारे श्रीगोवर्द्धननाथलये पोताना मनमां विचार्युं, के भारो जन्मदिवस श्रीगुसांइलनये पधा वैष्णवो सहित जगतमां प्रकट कर्यो, तेथी हुं पणु हुवे श्रीगुसांइलनो जन्मदिवस प्रकट करूं. येम विचारीने न्यारे थोष वह ८ ना रामदासल श्रीनाथलनो शृंगार करता हुता ते समये कुंभनदास शृंगारनां कीर्तन करता हुता अने श्रीगुसांइल पोते श्रीगोकुलमां हुता. तयारे श्रीगोवर्द्धननाथल रामदासलने कहे, के भारो जन्म

करत हैं, तासों मोकों श्रीगुसाईंजी को जनम-दिवस माननो है। सो तुम सगरे मिलिके श्रीगुसाईंजी के जनम-दिन को मंडान करो, जो-मोकों सामग्री आरोगावो। सो काल्हि जनम-दिन है। तब रामदास ने विनती कीनी, जो-महाराज ! कहा सामग्री करें ? तब श्रीगोवर्द्धन-नाथजी कहे, जो-जलेबी रसरूप करो। तब रामदास, कुंभनदासजी ने कह्यो, जो-बहोत आछे। पाछें रामदासजी सेवा सों पहाँचि के सगरे सेवकन कों भेले करिके कह्यो, जो-सवारे श्रीगुसाईंजीको जनम-दिवस है, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सामग्री करनी। तब सद् पांडे ने कही, जो-घी, चून चहिये इतनो मेरे घरसों लीजियो। पाछें कुंभनदासजी तत्काल घर आये। तब घरतो कछु हतो नाहीं, सो दोग षाडा और दोग पडिया एक ब्रजवासी के पास बेचिके पांच रुपैया लायके कुंभनदासजी ने रामदासजी कों दिये। और सब सेवकन ने एक रुपैया, कोई ने दोग रुपैया ऐसे दिये, सो ताकी खाँड मँगाये। और घी मेंदा सद् पांडे लाये। सो सगरी रात्रि जलेबी क्रिये। ता पाछें प्रातःकाल भयो। तब रामदासजी अभ्यंग कराय के केसरी पाग, केसरी वस्त्र, वागा कुलह, श्रीगुसाईंजी आपु श्रीगोकुल सों अपने श्रीहस्त सों सिद्ध करिके पठाये हते सो धराये। पाछें भोग धरे। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कुंभनदासजी सों कहे, जो-तुम श्रीगुसाईं-

द्विसे श्रीगुसाईंजी पोते भोगे आश्रय करे छे तेथी भारे श्रीगुसाईंजीने। जन्म द्विस मानयो छे तेथी तमे यथा भणीने श्रीगुसाईंजीने जन्म द्विसतुं मंडानुं करे। भने सामग्री आरोगावो। काले जन्म द्विस छे। त्तारे रामदासे विनती करी के महाराज ! शी सामग्री करे ? त्तारे श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, के जलेबी रसरूप करे। त्तारे रामदास कुंभनदासजीके कहुं, के पदु साइं। पछी रामदासजी सेवाथी पहुँचीने यथा सेवकने लेगा करीने कहुं, के सवारे श्रीगुसाईंजीने जन्म द्विस छे। तेथी श्रीगोवर्द्धननाथजीने सामग्री करवी। त्तारे सद् पांडेके कहुं, के घी, चून लेके अष्टलां भारा धरथी लेजे। पछी कुंभनदास तत्काल घर आव्या त्तारे धरे तो कंध लुतु नही। तेथी जे पाडा अने जे पाडी अक ब्रजवासीने वेचीने पांच रुपैया लावीने कुंभनदासजीके रामदासजीने आव्या। भोजन यथा सेवकेके अक रुपैया केअजे जे रुपैया अम आव्या। तेनी आंड मँगावी। अने घी, मेंदा सद् पांडे लाव्या तेनी आभी रात्रि जलेबी करी ते पछी प्रातःकाल थयो त्तारे रामदासजीके अभ्यंग धरावीने केसरी पाग केसरी वस्त्र वागा कुलह, श्रीगुसाईंजीके पोते श्रीगोकुलथी पानाना श्रीहस्ते सिद्ध करीने मोक्यां लुतां ते धराव्यां। पछी भोग धर्या। त्तारे श्री-

जी की बधाई गावो । तब कुंभनदासजी बधाई गाये । सो पद—

राग देवगंधार—आज बधाई श्रीवल्लभद्वार । प्रगट भए पूरन पुरुषोत्तम
पुष्टि करन विस्तार ॥ १ ॥ भागि उदै सब देवी जीवनके निःसाधन जन किये
उद्धार । 'कुंभनदास' गिरिधरन जुगल वपु निगम अगम सब साधन सार ॥ २ ॥

राग सारंग—प्रगट भए श्रीवल्लभ आय । सेवा रस विस्तार करनको गूढ
ज्ञान सब प्रगट दिखाय ॥ १ ॥ निजजन सकल किये पावन घर घर वंदनचार
बंधाय । 'कुंभनदास' गिरिधर गुन महिमा वंदीजन चारन गुन गाय ॥ २ ॥

सो या भांति सों कुंभनदासजी ने बहोत बधाई गाई, सो
सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी बहोत प्रसन्न भये । और यहाँ श्रीगुसांईजी
आपु श्रीनवनीतप्रियजी कों अभ्यंग कराय, केसरी वाधा कुलह
धराय राजभोग धरिके श्रीनाथजीद्वार पधारे । तब रामदास कहे,
जो राजभोग आये हैं । तब श्रीगुसांईजी आपु स्नान करिके परबत
के ऊपर मंदिर में पधारे । तब समय भये भोग सरायवे जायके देखे
तो जलेवी के अनेक टोकरा धरे हैं । तब श्रीगुसांईजी आपु रामदासजी
सों पूछे, जो—आज कहा उत्सव है, जो—यह सामग्री इतनी अरोगाये
हो ? तब रामदासजी ने कही, जो—आज आपु को जनमदिन श्रीगोव-
र्द्धनधर माने हैं, और सब सेवकन सों सामग्री कराई हैं । तब श्री-
गुसांईजी आपु भोग सराय आरती किये । ता पाछें अनोसर कराय
के आपु अपनी बैठक में पधारे और विराजे । तहाँ रामदासजी सों
बुलाय के श्रीगुसांईजी आपु पूछे, जो—सामग्री बहोत है, और सेवक

गोवर्द्धननाथल कुंभनदासलने कहे, के तमे श्रीगुसांइली वधाइ गावो. त्यारे कुंभ-
नदासलमे वधाइ गाइ. ते पद (१) आन वधाइ श्रीवल्लभ द्वार. (२) प्रकट लये
श्रीवल्लभ आय (उपर लुयो). मे प्रकारे कुंभनदासलमे अहु वधाइ गाइ. मे
सांभलीने श्रीगोवर्द्धननाथल वषा प्रसन्न थया अने अहीं श्रीगुसांइली पोते श्रीन-
वनीतप्रियलने अल्यंग करावी केसरी वागा, कुहे धरावी राजभोग धरीने श्रीना-
थलद्वार पधार्या. त्यारे रामदासल कहे, राजभोग आव्या छे. त्यारे श्रीगुसांइली पोते
स्नान करीने परबतना उपर मंदिरमां पधार्या. त्यारे समय थये लोग सरावी नठने
लुये तो नलेपीना अनेक टापसा धर्या छे. त्यारे श्रीगुसांइली पोते रामदासलने पूछे
के आन शेा उत्सव छे के आ सामग्री आरती आरोगावी छे ? त्यारे रामदासलमे
कहुं के आन आपने जन्म दिवस श्रीगोवर्द्धनधरे मान्योछे अने अथा सेवोधी
सामग्री करावी छे. त्यारे श्रीगुसांइलीमे पोते लोग सरावीने आरती करी. ते पछा
अनोसर करावीने पोते पोतानी षेइमां पधार्या अने षिराल्या. त्यां रामदासलने
पोसावीने श्रीगुसांइली पोते पूछे के सामग्री वषी छे अने सेवक (मंदिरना) थोडा

करत हैं, तासों मोकों श्रीगुसांईजी को जनम-दिवस माननो है। सो तुम सगरे मिलिके श्रीगुसांईजी के जनम-दिन को मंडान करो, जो-मोकों सामग्री आरोगावो। सो काल्हि जनम-दिन है। तब रामदास ने विनती कीनी, जो-महाराज ! कहा सामग्री करें ? तब श्रीगोवर्द्धन-नाथजी कहे, जो-जलेबी रसरूप करो। तब रामदास, कुंभनदासजी ने कह्यो, जो-बहोत आछो। पाछें रामदासजी सेवा सों पहोंचि के सगरे सेवकन कों भेले करिके कह्यो, जो-सवारे श्रीगुसांईजीको जनम-दिवस है, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सामग्री करनी। तब सद् पांडे ने कही, जो-धी, चून चाहिये इतनो मेरे घरसों लीजियो। पाछें कुंभ-नदासजी तत्काल घर आये। तब घरतो कछु हतो नाहीं, सो दोय षाडा और दोय पडिया एक ब्रजवासी के पास बेचिके पांच रुपैया लायके कुंभनदासजी ने रामदासजी कों दिये। और सब सेवकन ने एक रुपैया, कोई ने दोय रुपैया ऐसे दिये, सो ताकी खाँड मँगाये। और धी मेंदा सद् पांडे लाये। सो सगरी रात्रि जलेबी क्रिये। ता पाछें प्रातःकाल भयो। तब रामदासजी अभ्यंग कराय के केसरी पाग, केसरी वस्त्र, वागा कुलह, श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल सों अपने श्रीहस्त सों सिद्ध करिके पठाये हते सो धराये। पाछें भोग धरे। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कुंभनदासजी सों कहे, जो-तुम श्रीगुसांई-

दिवसे श्रीगुसांईजी पोते भोगे आरुध्य करे छे तेथी भारे श्रीगुसांईजीनो जन्म दिवस माननो छे तेथी तमे अथा मणीने श्रीगुसांईजीनो जन्म दिवसतुं मंडाय करे। भने सामग्री आरोगावो। काले जन्म दिवस छे। त्यारे रामदासे विनती करी के महाराज ! शी सामग्री करे ? त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथलु कहे, के जलेबी रसरूप करे। त्यारे रामदास कुंभनदासलुअे कहुं, के अहु साइं। पछी रामदासलुअे सेवाथी पहोंचीने अथा सेवकाने लोग करीने कहुं, के सवारे श्रीगुसांईजीनो जन्म दिवस छे। तेथी श्रीगोवर्द्धननाथलुने सामग्री करवी। त्यारे सद् पांडेअे कहुं, के धी, चून जेअेअे अइसां भारा धरथी लेजे। पछी कुंभनदास तत्काल घर आव्या त्यारे धरे तो कछु हतुं नही। तेथी जे पाडा अने जे पाडी अेक ब्रजवासीने वेचीने पांच रुपैया लावीने कुंभ-नदासलुअे रामदासलुने आव्या। अीज अथा सेवकाने अेक रुपैयाे केअेअे जे रुपैया अेभ आव्या। तेनी आंड मँगावी। अने धी, मेंदा सद् पांडे लाव्यां तेनी आभी रात्रि जलेबी करी ते पछी प्रातःकाल थयो त्यारे रामदासलुअे अभ्यंग करवीने केसरी पाग केसरी वस्त्र वागा कइले, श्रीगुसांईजीने पोते श्रीगोकुलथी पोताना श्रीहस्ते सिद्ध करीने भाकियां हुतां ते धराव्यां। पछी लोग धर्या। त्यारे श्री-

जी की बधाई गावो । तब कुंभनदासजी बधाई गाये । सो पद—

राग देवगंधार—आज बधाई श्रीवल्लभद्वार । प्रगट भए पूरन पुरुषोत्तम
पुष्टि करन विस्तार ॥ १ ॥ भागि उदै सब देवी जीवनके निःसाधन जन किये
उद्धार । ' कुंभनदास ' गिरिधरन जुगल वपु निगम अगम सब साधन सार ॥ २ ॥

राग सारंग—प्रगट भए श्रीवल्लभ आय । सेवा रस विस्तार करनको गूढ
ज्ञान सब प्रगट दिखाय ॥ १ ॥ निजजन सकल किये पावन घर घर बंदनवार
बंघाय । ' कुंभनदास ' गिरिधर गुन महिमा बंदीजन चारन गुन गाय ॥ २ ॥

सो या भांति सों कुंभनदासजी ने बहोत बधाई गाई, सो
सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी बहोत प्रसन्न भये । और यहाँ श्रीगुसांईजी
आपु श्रीनवनीतप्रियजी कों अभ्यंग कराय, केसरी बाघा कुलह
धराय राजभोग धरिके श्रीनाथजीद्वार पधारै । तब रामदास कहे,
जो राजभोग आये हैं । तब श्रीगुसांईजी आपु स्नान करिके परवत
के ऊपर मंदिरमें पधारै । तब समय भये भोग सरायवे जायके देखे
तो जलेबी के अनेक टोकरा धरे हैं । तब श्रीगुसांईजी आपु रामदासजी
सों पूछे, जो-आज कहा उत्सव है, जो-यह नामग्री इतनी अरोगाये
हो ? तब रामदासजीने कही, जो-आज आपु को जनमदिन श्रीगोव-
र्द्धनधर माने हैं, और सब सेवकन सों सामग्री कराई हैं । तब श्री-
गुसांईजी आपु भोग सराय आरती किये । ता पाछें अनोसर कराय
के आपु अपनी बैठक में पधारै और विराजे । तहाँ रामदासजी सों
बुलाय के श्रीगुसांईजी आपु पूछे, जो-सामग्री बहोत है, और सेवक

गोवर्द्धननाथल कुंभनदासलने कहे, के तमे श्रीगुसांइलनी बधाइ गावो. त्यारे कुंभ-
नदासलले बधाइ गाध. ते पद (१) आल बधाइ श्रीवदलल द्वार. (२) प्रकट लये
श्रीवल्लभ आय (उपर लुये). ये प्रकारे कुंभनदासलले बहु बधाइ गाध. ये
सांलणीने श्रीगोवर्द्धननाथल वला प्रसन्न थया अने अही श्रीगुसांइल पोते श्रीन-
वनीतप्रियलने अब्यंग करावी केसरी बागा, कुदहे धरावी राजलोग धरीने श्रीना-
थलद्वार पधार्या. त्यारे रामदासल कहे, राजलोग आव्या छे. त्यारे श्रीगुसांइल पोते
स्नान करीने पर्वतना उपर मंदिरमां पधार्या. त्यारे समय थये लोग सरावी नधने
लुये तो नलेपीना अनेक टोपला धर्या छे. त्यारे श्रीगुसांइल पोते रामदासलने पूछे
के आल शेा उत्सव छे के आ सामग्री आरती आरोगावी छे ? त्यारे रामदासलले
इधुं के आल आपने नन्स दिवस श्रीगोवर्द्धनधरे मान्योछे अने अधा सेवकोथी
सामग्री करावी छे. त्यारे श्रीगुसांइलले पोते लोग सरावीने आरती करी. ते पछे
अनोसर करावीने पोते पोतानी भेदकमां पधार्या अने बिराज्या. त्यां रामदासलने
पोसावीने श्रीगुसांइल पोते पूछे के सामग्री वली छे अने सेवक (मंदिरना) थोडा

करत हैं, तासों मोकों श्रीगुसांईजी को जनम-दिवस माननो है। सो तुम सगरे मिलिके श्रीगुसांईजी के जनम-दिन को मंडान करो, जो-मोकों सामग्री आरोगावो। सो काल्हि जनम-दिन है। तब रामदास ने विनती कीनी, जो-महाराज ! कहा सामग्री करें ? तब श्रीगोवर्द्धन-नाथजी कहे, जो-जलेबी रसरूप करो। तब रामदास, कुंभनदामजी ने कह्यो, जो-बहोत आछो। पाछें रामदासजी सेवा सों पहाँचि के सगरे सेवकन कों भेले करिके कह्यो, जो-सवारे श्रीगुसांईजीको जनम-दिवस है, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सामग्री करनी। तब सद् पांडे ने कही, जो-घी, चून चाहिये इतनो मेरे घरसों लीजियो। पाछें कुंभनदासजी तत्काल घर आये। तब घरतो कछु हतो नहीं, सो दोय पाडा और दोय पडिया एक ब्रजवासी के पास बेचिके पांच रुपैया लायके कुंभनदासजी ने रामदासजी कों दिये। और सब सेवकन ने एक रुपैया, कोई ने दोय रुपैया ऐसे दिये, सो ताकी खाँड मँगाये। और घी मेंदा सद् पांडे लाये। सो सगरी रात्रि जलेबी किये। ता पाछें प्रातःकाल भयो। तब रामदासजी अभ्यंग कराय के केसरी पाग, केसरी वस्त्र, वागा कुलह, श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल सों अपने श्रीहस्त सों सिद्ध करिके पठाये हते सो धराये। पाछें भोग धरे। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कुंभनदासजी सों कहे, जो-तुम श्रीगुसांई-

दिवसे श्रीगुसांईजी पोते भोगे आच्छव करे छे तेथी भारे श्रीगुसांईजीने जन्म दिवस मानवो छे तेथी तमे अथा भणीने श्रीगुसांईजीने जन्म दिवसतुं मंडान करे। भने सामग्री आरोगावो। काले जन्म दिवस छे, त्यारे रामदासे विनती करी के महाराज ! शी सामग्री करे ? त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, के जलेबी रसरूप करे। त्यारे रामदास कुंभनदासजीके कछु, के अहु साइं, पछी रामदासजीके सेवाथी पहोचिने अथा सेवकने लोग करीने कछु, के सवारे श्रीगुसांईजीने जन्म दिवस छे। तेथी श्रीगोवर्द्धननाथजीने सामग्री करवी। त्यारे सद् पांडेके कछु, के घी, चून भोगके अछुसं मारा धरथी लेजे। पछी कुंभनदास तत्काल घर आव्या त्यारे धरे तो कछु छुं नही। तेथी जे पाडा अने जे पाडी अक ब्रजवासीने देथीने पांच रुपैयां लावीने कुंभनदासजीके रामदासजीके आव्या। अने अथा सेवकके अक रुपैया देथुंके जे रुपैया अम आव्या। तेनी खाँड मँगावी। अने घी, मेंदा सद् पांडे लाव्यां तेनी आभी रात्रि जलेबी करी ते पछी प्रातःकाल थयो त्यारे रामदासजीके अभ्यंग धरावीने केसरी पाग केसरी वस्त्र वागा कुलह, श्रीगुसांईजीके पोते श्रीगोकुलथी पोताना श्रीहस्ते सिद्ध करीने भोगके अछुसं लेतां ते धराव्यां। पछी लोग धर्या। त्यारे श्री-

जी की बधाई गावो । तब कुंभनदासजी बधाई गाये । सो पद—

राग देवगंधार—आज बधाई श्रीवल्लभद्वार । प्रगट भए पूरन पुरुषोत्तम पुष्टि करन विस्तार ॥ १ ॥ भागि उदै सब दैवी जीवनके निःसाधन जन किये उद्धार । 'कुंभनदास' गिरिधरन जुगल वपु निगम अगम सब साधन सार ॥ २ ॥

राग सारंग—प्रगट भए श्रीवल्लभ आय । सेवा रस विस्तार करनको गूढ ज्ञान सब प्रगट दिखाय ॥ १ ॥ निजजन सकल किये पावन घर घर वंदनवार वंघाय । 'कुंभनदास' गिरिधर गुन महिमा वंदीजन चारन गुन गाय ॥ २ ॥

सो या भांति सों कुंभनदासजी ने बहोत बधाई गाई, सो सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी बहोत प्रसन्न भये । और यहाँ श्रीगुसाईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजी कों अभ्यंग कराय, केसरी बाघा कुलह धराय राजभोग धरिके श्रीनाथजीद्वार पधारे । तब रामदास कहे, जो राजभोग आये हैं । तब श्रीगुसाईजी आपु स्नान करिके परबत के ऊपर मंदिर में पधारे । तब समय भये भोग सरायवे जायके देखे तो जलेबी के अनेक टोकरा धरे हैं । तब श्रीगुसाईजी आपु रामदासजी सों पूछे, जो—आज कहा उत्सव है, जो—यह सामग्री इतनी अरोगाये हो ? तब रामदासजी ने कही, जो—आज आपु को जनमदिन श्रीगोवर्द्धनधर माने हैं, और सब सेवकन सों सामग्री कराई हैं । तब श्रीगुसाईजी आपु भोग सराय आरती किये । ता पाछें अनोसर कराय के आपु अपनी बैठक में पधारे और विराजे । तहाँ रामदासजी सों बुलाय के श्रीगुसाईजी आपु पूछे, जो—सामग्री बहोत है, और सेवक

गोवर्द्धननाथल कुंभनदासलने कहे, के तमे श्रीगुसांभलनी वधाध गावो. त्यारे कुंभनदासलये वधाध गाध. ते पद (१) आल अधाध श्रीवल्लभ द्वार. (२) प्रकट लये श्रीवल्लभ आय (उपर लुये). ये प्रकारे कुंभनदासलये अहु वधाध गाध. ये सांभलीने श्रीगोवर्द्धननाथल धरुा प्रसन्न थया अने अही श्रीगुसांभल पोते श्रीनवनीतप्रियलने अब्यंग करावी केसरी बागा, कहे धरावी राजभोग धरीने श्रीनाथलद्वार पधार्या. त्यारे रामदासल कहे, राजभोग आव्या छे. त्यारे श्रीगुसांभल पोते स्नान करीने पर्वतना उपर मंदिरमां पधार्या. त्यारे समय थये लोग सरावी न्ठने लुये तो नलेपीना अनेक टोपला धर्या छे. त्यारे श्रीगुसांभल पोते रामदासलने पूछे के आल शा उत्सव छे के आ सामग्री आरती आरोगावी छे ? त्यारे रामदासलये कहुं के आल आपने न्ठम दिवस श्रीगोवर्द्धनधरे मान्येछे अने अधा सेवकोथी सामग्री करावी छे. त्यारे श्रीगुसांभलये पोते लोग सरावीने आरती करी. ते पछा अनोसर करावीने पोते पोतानी भेदकमां पधार्या अने थिरान्या. त्यां रामदासलने पोतावीने श्रीगुसांभल पोते पूछे के सामग्री धरुी छे अने सेवक (मंदिरना) थोडा

करत हैं, तासों मोकों श्रीगुसाईंजी को जनम-दिवस माननो है। सो तुम सगरे मिलिके श्रीगुसाईंजी के जनम-दिन को मंडान करो, जो-मोकों सामग्री आरोगावो। सो कालिह जनम-दिन है। तब रामदास ने विनती कीनी, जो-महाराज ! कहा सामग्री करें ? तब श्रीगोवर्द्धन-नाथजी कहे, जो-जलेबी रसरूप करो। तब रामदास, कुंभनदामजी ने कह्यो, जो-बहोत आछो। पाछें रामदासजी सेवा सों पहाँचि के सगरे सेवकन कों भेले करिके कह्यो, जो-सवारे श्रीगुसाईंजीको जनम-दिवस है, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सामग्री करनी। तब सद् पांडे ने कही, जो-घी, चून चाहिये इतनो मेरे घरसों लीजियो। पाछें कुंभनदासजी तत्काल घर आये। तब घरतो कछु हतो नाहीं, सो दौघ षाडा और दौघ पडिया एक ब्रजवासी के पास बेचिके पांच रुपैया लायके कुंभनदासजी ने रामदासजी कों दिये। और सब सेवकन ने एक रुपैया, कोई ने दौघ रुपैया ऐसे दिये, सो ताकी खाँड मँगाये। और घी मेंदा सद् पांडे लाये। सो सगरी रात्रि जलेबी किये। ता पाछें प्रातःकाल भयो। तब रामदासजी अभ्यंग कराय के केसरी पाग, केसरी वस्त्र, वागा कुलह, श्रीगुसाईंजी आपु श्रीगोकुल सों अपने श्रीहस्त सों सिद्ध करिके पठाये हते सो धराये। पाछें भोग धरे। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कुंभनदासजी सों कहे, जो-तुम श्रीगुसाईं-

द्विसे श्रीगुसाईंजी पोते मोदो आश्रय करे छे तेथी भारे श्रीगुसाईंजीने जन्म दिवस माननो छे तेथी तमे अथा मणीने श्रीगुसाईंजीना जन्म दिवसतुं मंडान करे। भने सामग्री आरोगावो। धाले जन्म दिवस छे। त्यारे रामदासे विनती करी के महाराज ! शी सामग्री करे ? त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, के जलेबी रसरूप करे। त्यारे रामदास कुंभनदासज्ये कहुं, के अहु साइं। पछी रामदासज्ये सेवार्थी पहाँचिने अथा सेवकने लेगा करीने कहुं, के सवारे श्रीगुसाईंजीने जन्म दिवस छे। तेथी श्रीगोवर्द्धननाथजीने सामग्री करवी। त्यारे सद् पांडेज्ये कहुं, के घी, चून जेधज्ये जेधसां मारा धरथी लेजे। पछी कुंभनदास तत्काल घर आव्या त्यारे धरे तो डंघ हुतुं नही। तेथी जे पाडा अने जे पाडी अेक ब्रजवासीने वेथीने पांच रुपैया लावीने कुंभनदासज्ये रामदासज्ये आव्या। अथवा अथा सेवकज्ये अेक रुपैया डेधज्ये जे रुपैया जेम आव्या। तेनी आंड मँगावी। अने घी, मेंदा सद् पांडे लाव्यां तेनी आभी रात्रि जलेबी करी ते पछी प्रातःकाल थयो त्यारे रामदासज्ये अभ्यंग करावीने केसरी पाग केसरी वस्त्र वागा कुलह, श्रीगुसाईंजीपोते श्रीगोकुलथी पानाना श्रीहस्ते सिद्ध करीने मोक्षध्यां हुतां ते धराव्यां। पछी भोग धर्या। त्यारे श्री-

जी की बधाई गावो । तब कुंभनदासजी बधाई गाये । सो पद—

राग देवगंधार—आज बधाई श्रीवल्लभद्वार । प्रगट भए पूरन पुरुषोत्तम
पुष्टि करन विस्तार ॥ १ ॥ भागि उदै सब देवी जीवनके निःसाधन जन किये
उद्धार । 'कुंभनदास' गिरिघरन जुगल वपु निगम अगम सब साधन सार ॥ २ ॥

राग सारंग—प्रगट भए श्रीवल्लभ आय । सेवा रस विस्तार करनको गूढ
ज्ञान सब प्रगट दिखाय ॥ १ ॥ निजजन सकल किये पावन घर घर वंदनवार
बंधाय । 'कुंभनदास' गिरिघर गुन महिमा बंदीजन चारन गुन गाय ॥ २ ॥

सो या भांति सों कुंभनदासजी ने बहोत बधाई गाई, सो
सुनिके श्रीगोवर्द्धननाथजी बहोत प्रसन्न भये । और यहाँ श्रीगुसांईजी
आपु श्रीनवनीतप्रियजी को अभ्यंग कराय, केसरी बाघा कुलह
धराय राजभोग धरिके श्रीनाथजीद्वार पधारे । तब रामदास कहे,
जो राजभोग आये हैं । तब श्रीगुसांईजी आपु स्नान करिके परवत
के ऊपर मंदिर में पधारे । तब समय भये भोग सरायवे जायके देखे
तो जलेबी के अनेक टोकरा धरे हैं । तब श्रीगुसांईजी आपु रामदासजी
सों पूछे, जो—आज कहा उत्सव है, जो—यह सामग्री इतनी अरोगाये
हो ? तब रामदासजीने कही, जो—आज आपु को जनमदिन श्रीगोव-
र्द्धनधर माने हैं, और सब सेवकन सों सामग्री कराई हैं । तब श्री-
गुसांईजी आपु भोग सराय आरती किये । ता पाछें अनोसर कराय
के आपु अपनी बैठक में पधारे और विराजे । तहाँ रामदासजी सों
बुलाय के श्रीगुसांईजी आपु पूछे, जो—सामग्री बहोत है, और सेवक

गोवर्द्धननाथल कुंभनदासलने कहे, के तमे श्रीगुसांईलनी बधाई गावो. त्तारे कुंभ-
नदासलने बधाई गाध. ते पद (१) आल बधाई श्रीवल्लभ द्वार. (२) प्रकट लये
श्रीवल्लभ आय (उपर लुये). अे प्रकारे कुंभनदासलने अहु बधाई गाध. अे
सांखणीने श्रीगोवर्द्धननाथल वषा प्रसन्न थया अने अह्नी श्रीगुसांईल पोते श्रीन-
वनीतप्रियलने अल्यंग करावी केसरी वागा, कुंहे धरावी राजभोग धरीने श्रीना-
थलद्वार पधार्या. त्तारे रामदासल कहे, राजभोग आल्या छे. त्तारे श्रीगुसांईल पोते
स्नान करीने पर्वतना उपर मंदिरमां पधार्या. त्तारे समय थये भोग सरावी न्ठने
लुये तो नलेणीना अनेक टोपसा धर्या छे. त्तारे श्रीगुसांईल पोते रामदासलने पूछे
के आल शो उत्सव छे के आ सामग्री आरती आरोगावी छे ? त्तारे रामदासलने
कहुं के आल आपने जन्म दिवस श्रीगोवर्द्धनधरे मान्योछे अने अधा सेवकोधी
सामग्री करावी छे. त्तारे श्रीगुसांईलने पोते भोग सरावीने आरती करी. ते पछा
अनोसर करावीने पोते पोतानी अेकमां पधार्या अने अिराव्या. त्यां रामदासलने
पोसावीने श्रीगुसांईल पोते पूछे के सामग्री वषी छे अने सेवक (मंदिरना) थोडा

(मंदिर के) तो थोरे हैं और निष्कंचन हैं, सो सामग्री कौन प्रकार सों भई है? तब रामदासजी कहे, जो-महाराज ! धी मेंदा तो सद् पांडे दिये, और पांच रुपैया कुंभनदासजी दिये हैं। और ये वैष्णव कोई एक, कोई दोय, जो जासों बनि आयो सो दियो। सो ऐसे रुपैया २१) भये। ताकी खांड आई। सो श्रीप्रभुजी ने अङ्गीकार कीनी। इतने में कुंभनदासजी ने आयके श्रीगुसांईजी कों दंडवत कीनी। तब कुंभनदासजी सों श्रीगुसांईजी पूछे, जो-कुंभनदास ! तुम पाँच रुपैया कहाँ सों लाये? जो तिहारे घरकी बात तो हम सब जानत हैं। तब कुंभनदासजी कहे, जो-महाराज ! मेरो घर कहाँ है? मेरो घर तो आपके चरणारविंद में है, जो-यह तो आपको है। दोय पाडा और दोय पडिया अधिक हती सो बेचि दीनी हैं। अपनो शरीर, प्रान, घर, स्त्री, पुत्र बेचिके आपके अर्थ लागे, तब वैष्णव धर्म सिद्ध होय। जो-महाराज ! हम संसारी गृहस्थ हैं, सो हमसों वैष्णव धर्म कहा बने? यह तो आपकी कृपा, दीन जानके करत हो। सो यह कुंभनदासजी के वचन सुनिके श्रीगुसांईजी को हृदो भरि आयो। तब आपु कहे, जो-श्रीआचार्यजी आप जाकों कृपा करिके ऐसी दैन्यता देय सो पावे। सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी सदा इनके बस रहें। सो या प्रकार

छ अपने निष्कंचन छ तथी सामग्री क्या प्रकारे थछ ? त्यारे रामदासछ कहे, के महाराज ! धी मेंदा तो सद् पांडेअये आप्या अपने पांच रुपैया कुंभनदासछअये आप्या छ अपने ये वैष्णव कोअये अक, कोअये ये, जे जेनाथी अपनी आव्युं ते आव्युं. अम रुपैया २१) थया तेनी आंड आवी. ते श्री प्रभुछअये अंगीकार करी. अटलाभां कुंभनदासछअये आवी श्रीगुसांइछने दंडवत कर्या. त्यारे कुंभनदासछने श्रीगुसांइछ पूछे, के कुंभनदासछ ! तमे पांच रुपैया कथांथी लाव्या ? तभारा घरनी वात तो अमे अधी लखिये छीअये. त्यारे कुंभनदासछअये कछुं, के महाराज ! भाइं घर कयां छे ? भाइं घर तो आपना चरणारविंदमां छे. आ तो आपतुं छे. ये पाडा अने ये पाडी अधिक हती ते बेची दीधी छे. भाइं शरीर, प्राण, घर, स्त्री, पुत्र बेचीने आपना भाटे लाजे त्यारे वैष्णव धर्म सिद्ध थाय. महाराज ! अमे संसारी गृहस्थ छीअये. तथी अमारथी वैष्णव धर्म शुं अने ? आ तो आपनी कृपा, दीन लखीने करे छे. अयां कुंभनदासनां वचन सांलणीने श्रीगुसांइछतुं हृदय लराअ आव्युं, त्यारे आप कहे, के श्रीआचार्यछ पोते जेना उपर कृपा करीने आवी दैन्यता दे ते पावे. त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथछ सदा अमना वश रहे. आ प्रकारे श्रीगुसांइछ पोते कुंभनदासछनी

श्रीगुसांईजी आपु कुंभदासनजी की वहीत सराहना करे। सो वे कुंभनदासजी ऐसे कृपापात्र हते।

वार्ता-प्रसंग १३—और एक समय कुंभनदासजी ने श्रीआचार्यजी सों पुष्टिमार्ग को सिद्धान्त पूछ्यो। तब श्रीआचार्यजी आपु कृपा करिके चौरासी अपराध, राजसी, तामसी, सात्विकी भक्तन के लक्षण और प्रातःकालतें सेन पर्यंत की सेवा को प्रकार कहे, बाललीला किशोरलीला को भाव कहे। पाछें कहे, जो-जा पर श्रीगोवर्द्धननाथजी की कृपा होगी सो या काल में पूछेंगे और करेंगे। जो तुम सरीखे भगवदीय पूछेंगे और करेंगे। आगे काल महाकठिन आवेगो, और न कोई पूछेगो और न कोई कहेगो। सो या प्रकार सों श्रीआचार्यजी आपु कुंभनदासजी सों कहे।

भावप्रकाश—सो काहेंतें ? जो सिंधिनी को दूध सोने के पात्र विना रहे नहीं। तैसे ही भगवद्गीला को भाव और भगवद्धर्म भगवदीय विना और के हृदय में रहे नहीं।

वार्ता-प्रसंग १४—और एक दिन कुंभनदासजी ने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! मेरे घर में स्त्री है और सात में तें पांच वेटा हैं, और सात वेटान की बहू हैं। परंतु भगवद्भाव काहू को हढ़ नहीं है। और एक भतीजी है सो ताको भगवद्भाव हढ़,

पहु सराहना करी. ओ कुंभनदासओ ओया कृपापात्र हुता.

वार्ता-प्रसंग १३-वणी ओक समय कुंभनदासओ श्रीआचार्यओने पुष्टिमार्गना सिद्धांत पूछ्यो. त्पारे श्रीआचार्यओने पोते कृपा करीने ८४ अपराध राजसी, तामसी, सात्विकी लक्ष्णोनां लक्षणु अने प्रातःकालथी सेन पर्यंतनी सेवानो प्रकार कथ्यो. बाललीला, किशोरलीलानो भाव कथ्यो. पछी कथ्युं, के नेना उपर श्रीगोवर्द्धननाथओनी कृपा थरो ते आ कालमां पूछरो अने कररो. तमारा सरभा भगवदीय पूछरो अने कररो. आगण काल महाकठणु आवरो अने न कोछ पूछरो अने न कोछ कथुरो. आ प्रकारे श्रीआचार्यओने पोते कुंभनदासओने कथ्युं.

भावप्रकाश—केभके ? सिंधिनीतुं दूध सोनाना पात्र विना रहे नहीं. तेवीनरीते भगवद्गीलानो भाव अने भगवद्धर्म भगवदीय विना भीजनो हृदयमां रहे नहीं.

वार्ता-प्रसंग १४-वणी ओक दिवस कुंभनदासओ श्रीगुसांईओने बिनती करी के महाराज ! मारा घरमां स्त्री छे, सातमांथी पांच भेटा छे अने साते भेटानी बहुओआ छे. परंतु भगवद्भाव कोछमां हढ़ नहीं अने ओक भतीओ छे तेने भगवद्भाव हढ़ छे.

(मंदिर के) तो थोरे हैं और निष्कंचन हैं, सो सामग्री कौन प्रकार सों भई है ? तब रामदासजी कहे, जो-महाराज ! घी मेंदा तो सद् पांडे दिये, और पांच रुपैया कुंभनदासजी दिये हैं । और ये वैष्णव कोई एक, कोई दोय, जो जासों बनि आयो सो दियो । सो ऐसे रुपैया २१) भये । ताकी खांड आई । सो श्रीप्रभुजी ने अङ्गीकार कीनी । इतने में कुंभनदासजी ने आयके श्रीगुसांईजी को दंडवत कीनी । तब कुंभनदासजी सों श्रीगुसांईजी पूछे, जो-कुंभनदास ! तुम पाँच रुपैया कहाँ सों लाये ? जो तिहारे घरकी बात तो हम सब जानत हैं । तब कुंभनदासजी कहे, जो-महाराज ! मेरो घर कहाँ है ? मेरो घर तो आपके चरणारविंद में है, जो-यह तो आपको है । दोय पाडा और दोय पडिया अधिक हती सो बेचि दीनी हैं । अपनो सरीर, प्रान, घर, स्त्री, पुत्र बेचिके आपके अर्थ लागे, तब वैष्णव धर्म सिद्ध होय । जो-महाराज ! हम संसारी गृहस्थ हैं, सो हमसों वैष्णव धर्म कहा बने ? यह तो आपकी कृपा, दीन जानके करत हो । सो यह कुंभनदासजी के वचन सुनिके श्रीगुसांईजी को हृदो भरि आयो । तब आपु कहे, जो-श्रीआचार्यजी आप जाकों कृपा करिके ऐसी दैन्यता देय सो पावे । सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी सदा इनके बस रहें । सो या प्रकार

छे अपने निष्कंचन छे तेथी सामग्री क्या प्रकारे थय ? त्यारे रामदासल छहे, के महाराज ! घी मेंदा तो सद् पांडेये आप्ये अपने पांच रुपैया कुंभनदासलये आप्ये छे अपने ये वैष्णव कोषये येक, कोषये ये, जे जेनाथी अपनी आप्युं ते आप्युं, येम रुपैया २१) थया तेनी भांड आवी, ते श्रीप्रभुलये अंगीकार करी, येदलाभां कुंभनदासलये आवी श्रीगुसांईलने दंडवत कर्या, त्यारे कुंभनदासलने श्रीगुसांईल पूछे, के कुंभनदासल ! तमे पांच रुपैया क्यांथी लाव्या ? तभारा घरनी बात तो अमे अधी जणिये छीये, त्यारे कुंभनदासलये कछुं, के महाराज ! भाइं घर क्यां छे ? भाइं घर तो आपना चरणारविंदभां छे, आ तो आपतुं छे, ये पाडा अपने ये पाडी अधिक हती ते वेथी दीधी छे, भाइं शरीर, प्राण, घर, स्त्री, पुत्र वेथीने आपना भाटे लागे त्यारे वैष्णव धर्म सिद्ध थाय, महाराज ! अमे संसारी गृहस्थ छीये, तेथी अभासाथी वैष्णव धर्म शुं अपने ? आ तो आपनी कृपा, दीन जण्णीने करो छे, अंवां कुंभनदासनां वचन सांलणीने श्रीगुसांईलतुं हृदय लराय आप्युं, त्यारे आप छहे, के श्रीआचार्यल पोते जेना एपर कृपा करीने आवी दैन्यता दे ते पावे, त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथल सदा अमेना वश रहें, आ प्रकारे श्रीगुसांईल पोते कुंभनदासलनी

श्रीगुसाईजी आपु कुंभदासनजी की बहोत सराहना करे। सो वे कुंभनदासजी ऐसे कृपापात्र हते।

वार्ता-प्रसंग १३—और एक समय कुंभनदासजी ने श्रीआचार्यजी सों पुष्टिमारग को सिद्धान्त पूछयो। तब श्रीआचार्यजी आपु कृपा करिके चौरासी अपराध, राजसी, तामसी, सात्विकी भक्तन के लक्षण और प्रातःकालतें सेन पर्यंत की सेवा को प्रकार कहे, बाललीला किशोरलीला को भाव कहे। पाछें कहे, जो-जा पर श्रीगोवर्द्धननाथजी की कृपा होयगी सो या काल में पूछेंगे और करेंगे। जो तुम सरीखे भगवदीय पूछेंगे और करेंगे। आगे काल महाकठिन आवेगो, और न कोई पूछेगो और न कोई कहेगो। सो या प्रकार सों श्रीआचार्यजी आपु कुंभनदासजी सों कहे।

भावप्रकाश—सो काहेतें ? जो सिंधिनी को दूध सोने के पात्र विना रहे नहीं। तैसे ही भगवद्गीला को भाव और भगवद्धर्म भगवदीय विना और के हृदय में रहे नहीं।

वार्ता-प्रसंग १४—और एक दिन कुंभनदासजी ने श्रीगुसाईजी सों विनती कीनी, जो-महाराज ! मेरे घर में स्त्री है और सात में तें पांच वेदा हैं, और सात वेदान की बहू हैं। परंतु भगवद्भाव काहू को दृढ़ नहीं है। और एक भतीजी है सो ताको भगवद्भाव दृढ़,

पहु सराहना करी. ये कुंभनदासजी येवा कृपापात्र हुता.

वार्ता-प्रसंग १३-वणी अक समय कुंभनदासजी अश्रीआचार्यजीने पुष्टिमारगने सिद्धान्त पूछयो. तयारे श्रीआचार्यजीअये पोते कृपा करीने ८४ अपराध राजसी, तामसी, सात्विकी लक्तोनां लक्षणु अने प्रातःकालथी सेन पर्यंतनी सेवाना प्रकार कथो. बाललीला, किशोरलीलाना भाव कथो. पछी कथुं, के जेना उपर श्रीगोवर्द्धननाथजीनी कृपा थशे ते आ कालमां पूछशे अने करशे. तमारो सरभा भगवदीय पूछशे अने करशे. आगण काल महाकठिणु आवशे अने न कोइ पूछशे अने न कोइ कहेशे. आ प्रकारे श्रीआचार्यजीअये पोते कुंभनदासजीने कथुं.

भावप्रकाश—केभके ? सिंघुणीतुं दूध सोनाना पात्र विना रहे नहीं. तेवीजरीते भगवद्गीलाना भाव अने भगवद्धर्म भगवदीय विना भीजना हृदयमां रहे नहीं.

वार्ता-प्रसंग १४-वणी अक दिवस कुंभनदासजीअश्रीगुसाईजीने विनती करी के महाराज ! मारो घरमां स्त्री छे, सातमांथी पांच भेदा छे अने साते भेदानी बहुआ छे. परंतु भगवद्भाव कोइमां दृढ़ नथी अने अक भतीजी छे तेने भगवद्भाव दृढ़ छे

(मंदिर के) तो थोरे हैं और निष्कंचन हैं, सो सामग्री कौन प्रकार सों भई है? तब रामदासजी कहे, जो-महाराज ! घी मेंदा तो सद् पांडे दिये, और पांच रुपैया कुंभनदासजी दिये हैं। और ये वैष्णव कोई एक, कोई दोय, जो जासों बनि आयो सो दियो। सो ऐसे रुपैया २१) भये। ताकी खांड आई। सो श्रीप्रभुजी ने अङ्गीकार कीनी। इतने में कुंभनदासजी ने आयके श्रीगुसांईजी कों दंडवत कीनी। तब कुंभनदासजी सों श्रीगुसांईजी पूछे, जो-कुंभनदास ! तुम पाँच रुपैया कहाँ सों लाये ? जो तिहारे घरकी बात तो हम सब जानत हैं। तब कुंभनदासजी कहे, जो-महाराज ! मेरो घर कहाँ है ? मेरो घर तो आपके चरणारविंद में है, जो-यह तो आपको है। दोय पाडा और दोय पडिया अधिक हती सो बेचि दीनी हैं। अपनो सरीर, प्रान, घर, स्त्री, पुत्र बेचिके आपके अर्थ लागे, तब वैष्णव धर्म सिद्ध होय। जो-महाराज ! हम संसारी गृहस्थ हैं, सो हमसों वैष्णव धर्म कहा बने ? यह तो आपकी कृपा, दीन जानके करत हो। सो यह कुंभनदासजी के वचन सुनिके श्रीगुसांईजी को हृदो भरि आयो। तब आपु कहे, जो-श्रीआचार्यजी आप जाकों कृपा करिके ऐसी दैन्यता देय सो पावे। सो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी सदा इनके बस रहें। सो या प्रकार

छे अने निष्कंचन छे तथी सामग्री क्या प्रकारे थछ ? त्यारे रामदासछे कहे, के महाराज ! घी मेंदा तो सद् पांडेये आयेये अने पांच रुपैया कुंभनदासछेये आयेये छे अने ये वैष्णव कोछेये एक, कोछेये ये, जे जेनाथी अपनी आयेये ते आयेये. येभ रुपैया २१) थया तेनी जांड आवी. ते श्रीप्रभुछेये अंगीकार करी. अरदाभां कुंभनदासछेये आवी श्रीगुसांईछेने दंडवत कर्या. त्यारे कुंभनदासछेने श्रीगुसांईछे पूछे, के कुंभनदासछे ! तमे पांच रुपैया क्यांथी लाव्या ? तभारा घरनी वात तो अमे पधी जाखिये छीये. त्यारे कुंभनदासछेये कछुं, के महाराज ! भाइं घर क्यां छे ? भाइं घर तो आपना चरणारविंदमां छे. आ तो आपतुं छे. ये पाडा अने ये पाडी अधिक लुती ते बेची दीधी छे. भाइं शरीर, प्राण, घर, स्त्री, पुत्र बेचीने आपना भाटे लागे त्यारे वैष्णव धर्म सिद्ध थाय. महाराज ! अमे संसारी गृहस्थ छीये. तथी अमारथी वैष्णव धर्म शुं अने ? आ तो आपनी कृपा, दीन जाणीने करो छे. अथां कुंभनदासनां वचन सांखणीने श्रीगुसांईछेतुं हृदय लराछ आयेये, त्यारे आप कहे, के श्रीआचार्यछे पोते जेना उपर कृपा करीने आवी दैन्यता दे ते पावे. त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथछे सदा अमेना पश रहें. आ प्रकारे श्रीगुसांईछे पोते कुंभनदासछेनी

ब्राह्मनन ने कही। तब बेटी के पिता ने कह्यो, जो-यह तुमने कहा कियो। जो-बेटी तो मेरी एक है। सो तुम चारों जने चार वर करि आये सो कैसे बनेगी? तब उन चारों ब्राह्मनन ने कही, जो-तेनें कह्यो तब हमने सगाई करी है। जो-महीना पीछे बेटी को व्याह न करेगो तो हम तेरे ऊपर जीव देंगो। जो-हम तिलक करि सगाई करी, सो कबहू छूटे नाहीं। तब वा ब्राह्मण ने कह्यो, जो-भलो, महीना है सो ता बखत की दीखेगी, जो कहा होनहार है? तब चारों ब्राह्मण ने कही, जो-जब एक दिन व्याह को रहेगो, सो तब हम व्याह करावन आवेंगे। सो यह कहिके चारों ब्राह्मण अपने घर कों गये। पाछें या बेटी के पिता कों महा चिंता भई। जो-अब मैं कहाँ निकसि जाऊँ? जो-प्राण छूटे तोऊ कन्या की खराबी है। तासों अब मैं कहा करूँ? सो मारे चिंता के खानपान सब छूटि गयो, सो ऐसे चारि दिन भूखे गये। ता पाछे पाँचमे दिन नदी ऊपर यह ब्राह्मण संध्यावंदन करत हतो सो एक भगवदीय फिरत २ आय निकस्यो, सो नदी में न्हायो। इतने ही में यह ब्राह्मण महादुःख सों पुकारिके रोयो। सो भगवद्भक्त को हृदय कोमल, सो वा ब्राह्मण को दुःख सहि नाँही सके। तब उन भगवद्भक्त ने वा ब्राह्मण सों पूछी, जो-ब्राह्मण! तुमकों ऐसो कहा दुःख है? जो तेने पुकारिके रुदन कियो है। तब

मारी अेक छे तेथी तमे यारे न्णु यार वर करी आख्या ते केम अनशे? त्यारे अे यारे आह्मणुअे क्खुं, के ते' क्खुं त्यारे अमे सगाध करी छे. जे मडिना पछी जेठीतुं लग्न नहि करे तो अमे तारा उपर लय छ्छुं. केम जे अमे तिलक करी सगाध करी ते थ्यारेय न छूटे. त्यारे अे आह्मणुअे क्खुं, के साइं, मडिना छे ते वणतनी जेध लेवाशे. न न्णु शुं थनार छे? त्यारे यारे आह्मणुअे क्खुं, के न्यारे अेक द्विस लगनते रहेशे त्यारे अमे लग्न कराववा आवीशुं. अेम क्खी यारे आह्मणु पोताना धरे गया. पछी अे जेठीना पिताने मडा चिंता थध के हवे हुं क्खुं न्णु क्खुं! जे प्राण छूटे तो पणु कन्यानी अराथी छे. तेथी हवे हुं शुं क्खुं? ते चिंताने दीधे पानपान अधुं छुटी गयुं. अेम यार द्विस लूमे गया. ते पछी पांथभा द्विसे नदी उपर आ आह्मणु संध्यावंदन करते हुतो त्यारे अेक भगवदीय इरते २ आवी निकस्यो. ते नदीमां न्हायो अेठलाभां जे अे आह्मणु मडा दुःअथी पोडारीने रोयो. ते भगवद्भक्तुं हृदय केमण. तेथी अे आह्मणुतुं दुःअ सहि न शक्यो. त्यारे अे भगवद्भक्त अे आह्मणुने पूछ्युं, के आह्मणु! तमने अेपुं शुं दुःअ छे? के ते' पोडारीने रुदन क्युं? त्यारे अे

ताकों कारन कहा ? तब श्रीगुसाईंजी आपु सगरे वैष्णव कों सुनाय के कुंभनदासजी सों कहे, जो-कुंभनदास ! तुम मन लगायके सुनियो, जो-सावधान होउ । मैं एक पुरान को इतिहास कहत हों । तब सगरे वैष्णव सावधान भये । पाछें श्रीगुसाईंजी कहे, जो-एक ब्राह्मण हतो, ताके एक कन्या हती । सो जब वह कन्या व्याह लायक भई तब ब्राह्मण ने एक और ब्राह्मण कों बुलायके कह्यो, जो-मेरी कन्या को वर ठीक करिके आछो ठिकानो देखिके सगाई करि आवो । तब वह ब्राह्मण तो सगाई करिवे कों गयो । ता पाछें दूसरो ब्राह्मण आयो, सो वाहू सों ऐसे ही कह्यो । तब दूसरो ब्राह्मण हू सगाई करिवे कों गयो । पाछें तीसरो ब्राह्मण आयो, सो वाहू सों ऐसे ही कह्यो । सो तीसरो हू ब्राह्मण सगाई करिवे गयो । पाछें चोथो ब्राह्मण आयो, सो वाहू सों ऐसे ही कह्यो । सो तब चारों ब्राह्मण चार दिसान में भगवद्-इच्छातें गये । सो दोय दोय तीन २ कोस ऊपर एक गाम हतो, तहां न्यारे २ गाँवन में चारों ब्राह्मण ने सगाई करी । सो एक महीना पीछे सगाई टेराई । पाछें वरन कों तिलक करिके चारों ब्राह्मण या ब्राह्मण की आगे आयके कह्यो, जो-सगाई करि तिलक करि आवे हैं । सो एक महीना पीछे प्रातःकाल की लगन है । या प्रकार चारों

तेवुं कारण शु ? त्यारे श्रीगुसांभल पोते अथा वैष्णवोने संभणायीने कुंभनदासने कहे, के कुंभनदास ! तमे मन लगायीने सांभणो ने सावधान थाव. हुं अेक पुराणोना इतिहास कहुं छुं त्यारे अथा वैष्णवो सावधान थया. पछी श्रीगुसांभल कहे, के अेक ब्राह्मणु हुतो तेने अेक कन्या हुती ते पछी न्यारे अे कन्या लग्न लायक थथ त्यारे ब्राह्मणु अेक भीजे ब्राह्मणुने पोसायी ने कहुं, के भारी कन्यानेा वर ठीक करीने साइं ठेकाणुं नेधने सगाइ करी आव. त्यारे अे ब्राह्मणु तो सगाइ करवाने गयो. ते पछी भीजे ब्राह्मणु आव्यो तेने पणु अेमज कहुं. त्यारे भीजे ब्राह्मणु पणु सगाइ करवाने गयो. पछी त्रीजे ब्राह्मणु आव्यो तेने पणु अेमज कहुं. त्यारे त्रीजे ब्राह्मणु पणु सगाइ करवाने गयो. पछी चोथो ब्राह्मणु आव्यो तेने पणु अेमज कहुं. त्यारे चारो ब्राह्मणु चार दिसाओमां भगवदीच्छाथी गया. ते अे-अे त्रणु-त्रणु गाडि उपर अेक ग म हुतुं त्यां अलग अलग गाभोमां चारो ब्राह्मणुअे सगाइ करी. अेक महिना पछी सगाइ (लग्न) करायी पछी वरेने तिसक करीने चारो ब्राह्मणुअे आ ब्राह्मणुनी आगण आवीने कहुं, के सगाइ करी तिसक करी आव्या छीअे. अेक महिना पछी प्रातःकालुं लग्न छे. अे प्रकारे चारो ब्राह्मणुअे कहुं, त्यारे भेटीना पिताअे कहुं के आ तमे शुं क्युं ? भेटी तो

ब्राह्मण ने कही। तब बेटी के पिता ने कह्यो, जो-यह तुमने कहा कियो। जो-बेटी तो मेरी एक है। सो तुम चारों जने चार वर करि आये सो कैसे बनेगी? तब उन चारों ब्राह्मण ने कही, जो-तेनें कह्यो तब हमने सगाई करी है। जो-महीना पीछे बेटी को व्याह न करेगो तो हम तेरे ऊपर जीव देंगो। जो-हम तिलक करि सगाई करी, सो कबहू छूटे नाहीं। तब वा ब्राह्मण ने कह्यो, जो-भलो, महीना है सो ता बखत की दीखेगी, जो कहा होनहार है? तब चारों ब्राह्मण ने कही, जो-जब एक दिन व्याह को रहेगो, सो तब हम व्याह करावन आवेंगे। सो यह कहिके चारों ब्राह्मण अपने घर कों गये। पाछें या बेटी के पिता कों महा चिंता भई। जो-अब मैं कहाँ निकसि जाऊँ? जो-प्राण छूटे तोऊ कन्या की खराबी है। तासों अब मैं कहा करूँ? सो मारे चिंता के खानपान सब छूटि गयो, सो ऐसे चारि दिन भूखे गये। ता पाछे पाँचमे दिन नदी ऊपर यह ब्राह्मण संध्यावंदन करत हतो सो एक भगवदीय फिरत २ आय निकस्यो, सो नदी में नहायो। इतने ही में यह ब्राह्मण महादुःख सों पुकारिके रोयो। सो भगवद्भक्त को हृदय कोमल, सो वा ब्राह्मण को दुःख सहि नाँही सके। तब उन भगवद्भक्त ने वा ब्राह्मण सों पूछी, जो-ब्राह्मण! तुमकों ऐसो कहा दुःख है? जो तेने पुकारिके रुदन कियो है। तब

भारी अक छ तेथी तमे यारे जणु यार वर करी आव्या ते केम अनशे? त्यारे अे यारे आहणुअे कहुं, के तें कहुं त्यारे अमे सगाध करी छे. जे महिना पछी भेटीतुं लग्न नहि करे तो अमे तारा उपर जव दधशुं. केम जे अमे तिलक करी सगाध करी ते ध्यारेय न छूटे. त्यारे अे आहणु कहुं, के साइं, महिनो छे ते वभतनी जेध लेवाशे. न जणु शुं थनार छे? त्यारे यारे आहणुअे कहुं, के ज्यारे अेक दिनस लगननेा रहेशे त्यारे अमे लग्न कराववा आवीशुं. अेम कही त्यारे आहणु पोताना घरे गया. पछी अे भेटीना पिताने महुा चिंता थध के हुवे हुं कयां निडणी जठं! जे प्राणु छुटे तो पणु कन्यानी भराणी छे. तेथी हुवे हुं शुं कइं? ते चिंताने दीधे आनपान अधुं छुटी गयुं. अेम यार दिनस लूभे गया. ते पछी पांचमा दिनसे नदी उपर आ आहणु संध्यावंदन करतो हुतो त्यारे अेक लगवदीय इरतो २ आवी निकस्यो. ते नदीमां नहायो अेरतामां ज अे आहणु महुा दुःअथी पोडारीने रोयो. ते लगवदभक्तुं हृदय केमण. तेथी अे आहणुतुं दुःअ सहि न शक्यो. त्यारे अे लगवदभक्ते आ आहणुने पूछ्युं, के आहणु! तमने अेपुं शुं दुःअ छे? के तें पोडारीने रुदन क्युं? त्यारे अे

वा ब्राह्मण ने अपनी सब बात कही। यह सुनिके वा भगवद्भक्त ने कही, जो-भैं तो एक ठिकाने रहत नाँही हों, परंतु तेरे लिये या नदी पे बैठ्यो हूँ। जो मोकों प्रगट मति करियो। और जा दिन को ब्याह होय तासों एक दिन पहलें मोकों आयके कहियो, जो श्रीठाकुरजी भली करेंगे। और अब तुम घर जायके खानपान करो। तब वा ब्राह्मण ने कह्यो, जो-भलो। पाछें जब ब्याह को एक दिन रह्यो, सो प्रातःकाल को समय हतो। तब वह ब्राह्मण वा भगवद्भक्त के पास आयो और विनती कीनी, जो-प्रातःकाल को ब्याह है, तातें अब कछ् उपाय बतावो। तब ता वैष्णव ने कही, जो-संध्या कों आइयो। पाछे सांझकों ब्राह्मण वा भगवद्भक्त की पास गयो। तब वा भक्त ने कही, जो-तिहारे आगे जो पशु पक्षी आवें सो तिनकों तुम पकरि लीजो। तब वह ब्राह्मण नदी के ऊपर बैठ्यो। सो बिलाइ आई सो पकरी। ता पाछे एक कुतिया आई सो पकरि। पाछे एक गदही आई, सो पकरी। सो तब वा भक्त ने कही, जो-इन तीन्योंन कों एक कोठा में मूँदि देऊ। सो कोठा में मूँदि दिये। तब वा भक्त ने कही, जो-तेरी बेटी सोय जाय तब वाहू कों यामें मूँदि दीजियो। ता पाछें बेटी सोई, तब वा बेटी कों खाट सहित कोठा में मूँदि के ताला लगाय के कहे, जो-

आत्मणु पोतानी अधी वात छडी। अे सांभणीने अे लगवद्भक्तते छहुं, के हुं ते अेक जगाअे रहतेो नथी परंतु तारा भाटे आ नदी उपर भेठा छुं। मने प्रकट करीश नही अने के द्विसतुं लगन हुआ तेनाथी अेक द्विस पहुसां मने आवीने छहेने। श्रीठाकुरजु लखुं करशे। पणी हुवे तमे घर जधने आनपान करे। त्यारे अे आत्मणु छहुं, के सांझं। पथी न्यारे लगनने अेक द्विस रह्यो त्यारे प्रातःकालने समय हुतो ते वभते ते आत्मणु अे लगवद्भक्तनी पासे आव्यो अने विनंती करी, के प्रातःकालतुं लखुं छे तेथी हुवे दंध उपाय बतावो। त्यारे ते वैष्णुवे छहुं, के संध्याअे आवजे पथी सांजे आत्मणु अे लगवद्भक्तनी पासे गयो। त्यारे अे लक्षते छहुं, के तारी आगण के पशु-पक्षी आवे तेने त पकडी लेने। त्यारे अे आत्मणु नदीना उपर भेठा। ते भिसाडी आवी ते पकडी। ते पथी अेक कुतरी आवी ते पकडी। पथी अेक गधेडी आवी ते पकडी। त्यारे अे लक्षते छहुं, के आ त्रणेने अेक डोडाभां अंध कर. अेखे डोडाभां अंध कर्यां। त्यारे अे लक्षते छहुं, हुवे तारी भेटी सूधु नय त्यारे अने पणु आ डोडाभां पुरी देने। ते पथी भेटी सूधु त्यारे ते भेटीने आठ सहित डोडाभां पूरीने ताणुं लगाडीने छहुं, के लगननी तैयारी करे। त्यारे प्रहुर रात्रि गये त्यारे वर आव्या।

व्याह की तैयारी करो । सो तब प्रहर रात्रि गये चारों वर आये । पाछें सगाई करिवे वारे चारों ब्राह्मण ने समाधान करिके उनको बैठाये । इतने में व्याह को समय भयो तब ब्राह्मण ने भगवद्भक्त सों कही, जो—अब व्याह को समय भयो है । तब भक्त ने कह्यो, जो—कोठरी खोलिके चारों वरन कों चारों कन्या देऊ, और व्याह करि देउ । पाछें वह ब्राह्मण तालो खोलिके देखे तो चारों कन्या एक रूप, एक बय, बरोवरी, पहिचानि न परे । सो चारों कन्या चारों वरन कों व्याह, विदा करि दीनी । पाछें चारों ब्राह्मण कों दक्षिणा दे विदा किये । पाछें भगवद्भक्त ने कही, जो—हम चलेंगे । तब ब्राह्मण ने पाँयन परि के कह्यो, जो तुमने मोकों जीवदान दियो है सो यह घर तिहारो है । तातें आपको जो चाहिये सो लेउ । तब भक्तने कही, जो—हमको कछु चाहियत नाही है । तेरो दुःख श्रीठाकुरजी ने दूरि कियो है, सो यही बड़ी वात भई है । तब वा ब्राह्मण ने पूछी, जो—चारों कन्या एक सरखी भई है, सो मोकों खबरि कैसे परे, जो—मेरी बेटी कौनसे वर कों व्याही है ? सो वा बेटी कों बुलावनी होय तो कैसे खबरि परेगी ? तब भक्त ने कही, जो—तेरे चारों जमाई हैं सो उन ही सों बेटीन के लक्षण पूछि लिजियो । तब तोकों खबरि परेगी । जो मनुष्य के लक्षण होय सोई तेरी बेटी जानियो । सो यह कहिके भग-

पछी सगाइ करवायाणा यारे ब्राह्मणोये समाधान करीने अमने भेसाया। अश्लामां लगनते समय थयो। तयारे ब्राह्मणे लगवइलक्षते कछुं, के हुवे लगनते समय थयो छे। तयारे लक्षते कछुं, के डोहरी भोदीने यारे वराने यारे कन्या दे अने लग्न करी दा। पछी अे ब्राह्मण तो ताणुं भोदीने लुअे तो यारे कन्या अेक रूप, अेक वय अरोपरी ते आणभी न लय। ते यारे कन्या यारे वराने विवाही विदाय करी दीधी। पछी यारे ब्राह्मणोने दक्षिणा द्य विदाय कर्था। पछी लगवइलक्षते कछुं, के हुवे अमे नदशुं। तयारे ब्राह्मणे पगे पडीने कछुं, के तमे मने लयदान आर्युं छे ते आ घर तमाइं छे तेथी आपने जे अेअे ते दो। तयारे लक्षते कछुं, के अमने कंअे अेअतुं नथी। ताइं दुःख श्रीठाकुरअे दूर क्युं छे अेअे अहु भोदी वात थअ छे। तयारे पूछ्युं, के यारे कन्याअे अेक सरखी थअ छे। हुवे मने अअर केम पउ के भारी भेटी कथा वरथी विवाही छे ? ते भेटीने भोदावनी होय तो केम अअर पउशे ? तयारे अे लक्षते कछुं, के तारा यार नभाअ छे तेमने न भेटीनां लक्षणे पूछी लेजे। तयारे तने अअर पउशे। मनुष्यनां लक्षणे होय तेज तारी भेटी नअजे। अेम कडी लगवइलक्षते तो यादया गया। तयारे

वदू भक्त तो चले गये। सो तब ब्राह्मण ने कल्लुक दिन पीछे चारों जमाईन कों घर बुलाये, और चारों जमाईन कों रसोई करवाई। सो एक जने कों भोजन कों बैठायो। तब भोजन करत में वासों पूछी, जो-मेरी बेटी अनुकूल है के नाहीं? वामें कैसे लक्षण हैं? तब उनने कही, जो-सब गुन हैं परि कुतिया की नाई भूसत है। जो जीभ ठिकाने नाहीं, और आचार क्रिया नाहीं है, सो तासों प्रिय नाहीं है। ता पाछे दूसरे जमाई कों बुलायो। वासों पूछी, जो-कहो, मेरी बेटी के लक्षण कैसे हैं? तब वाने कही, जो-तिहारी बेटी में आछे लक्षण हैं परंतु चटोरी है, जो-ठाकुर के लिये जो वस्तु आवे सोई वह चौरिके खाय जाय। बिलाई की दसा है, जो-पांच घरको खाये बिना चैन नाहीं परे। ता पाछे तीसरे जमाई कों बुलाइके पूछी, जो-मेरी बेटी के लक्षण कैसे हैं? तब वाने कही, जो-तिहारी बेटी में सब लक्षण आछे हैं, परंतु घर में आवे जाय, तब गदही की नाई भूसे, सदा मलीन रहे और जाकों ताकों तथा मोहूकों गदही की नाई दोउ पावन सों लात मारे है। पाछें चौथे जमाई को बुलायके पूछी, जो-मेरी बेटी के लक्षण कहो? तब उनने कही, जो-तिहारी बेटी की कहा बात है? जो मानो लक्ष्मी है कोऊ देवता है। जो सब कों प्रिय वचन, मीठो बोलनो, उत्तम क्रिया, आचार विचार, पति, गुरु, ठाकुर और

प्राप्तये डेटसाक द्विस पछी तारे नभाधने घर भोसाव्या अने तारे नभाधने रसाध करवी अेक नखने खोखने भेसाखो तारे खोखन करतांमां अने पूछयुं के भारी भेरी अनुकूल छे के नही? अेमां लक्षण देवां छे? तारे अेले कहुं, के अथा गुण छे परंतु कुतरीनी भाङ्क लसे छे? लख डेकले नथी अने आचार-क्रिया नथी. तेथी प्रिय नथी. पछी भील नभाधने भोसाव्या तेने पूछयुं के कहे। भारी भेरीनां लक्षण देवां छे? तारे तेले कहुं, के तारी भेरीमां लक्षण सारां छे परंतु यटोकरी छे. श्रीध-दुरलनी वस्तु आवे तेज ते चोरीने भाध जय. भिसाडीनी दशा छे. पांच घरतुं अथा बिना चैन परतुं नथी. ते पछी भील नभाधने भोसावीने पूछयुं के भारी भेरीनां लक्षण देवां छे? तारे तेले कहुं, के तभारी भेरीमां अथां लक्षण सारां छे परंतु घरमां आवे जय तारे गधेडीनी भाङ्क लसे, सदा भडीन रहे, अने जेने तेने तथा मने पण गधेडीनी भाङ्क अने पगोथी लात मारे छे. पछी अथा नभाधने भोसा-वीने पूछयुं के भारी भेरीनां लक्षण कहे। तारे तेले कहुं के तभारी भेरीनी शी बात छे? मानो लक्ष्मी छे डेअ देवता छे. अथाने प्रिय वचन मीठुं भोसयुं, उत्तम क्रिया

वैष्णवमें प्रीति । सो तब ब्राह्मणनें जानी, जो-यही मेरी बेटी है । ता पाछें वाही बेटी जमाई कों बुलावतो । सो तासों कुंभनदास ! जा मनुष्यमें वैष्णव के लक्षण हैं सोई मनुष्य है । और कहा भयो जो मनुष्य देह भई ? जो रावण, कुंभकरण खोटी क्रियातें राक्षस कहाये । यासों जाकी जैसी क्रिया, सो वाको तैसो ही रूप जानजो । जो भतीजी बड़ी भगवदीय है । तासों तिहारे संगतें कृनार्थ होयगी । सो या प्रकार श्रीगुसांईजी आपु कुंभनदासजी आदि सब वैष्णवनकों समुझाये । सो ये कुंभनदासजी श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ।

वार्ता-प्रसंग १५—पाछें कुंभनदासजी की देह बहोन असक्त भई । सो तहां आन्योर की पास संकर्षणकुंड ऊपर कुंभनदासजी आयके बैठि रहे । तब चतुर्भुजदास ने कही, जो-गोदिमें करिके तुमकों जमुनावता गाममें ले चलें ? तब कुंभनदासजी कहे, जो-अब तो दोय चार घड़ी में देह छूटेगी । तासों अब तो मैं इहांई रहूंगो । तब चतुर्भुजदासजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के राजभोग आर्ति के दरसन किये । तब श्रीगुसांईजी आपु चतुर्भुजदास सों पूछे, जो-कुंभनदास कैसे हैं ? और कहां हैं ? तब चतुर्भुजदास ने कही, जो-संकर्षण कुंड ऊपर बैठे हैं । तब श्रीगुसांईजी आपु कुंभनदासजी के पास पधारे । पाछें

आचार विचार, पति, गुरु हाडुर अने वैष्णवमां प्रीति, तयारे आक्षेपे लक्ष्युं के आन भारी भेटी छे । ते पछी तेज भेटी जभाधने पोसावतो । तेथी कुंभनदास ! जे मनुष्यमां वैष्णवनां लक्षण छे तेज मनुष्य छे । भीजने शुं थयुं जे मनुष्य देह भणी ? रावण, कुंभकर्णुं भेटी क्रियाथी राक्षस कहेवाया । अथी जेनी जेवी क्रिया तेहुं तेहुंज ३५ लक्ष्युं । लत्रील भेटी भगवदीय छे । तेथी तभारा संगथी कृतार्थ थरो । आ प्रकरे श्रीगुसांइज्ये पोते कुंभनदासल आदि पथा वैष्णवोने समजव्या । ते कुंभनदासल श्रीआचार्यलना जेवा कृपापात्र भगवदीय हुता ।

वार्ता-प्रसंग १५-पछी कुंभनदासलनी देह अशक्त थक तयारे त्यां आन्योरनी पास संकर्षण कुंड ऊपर कुंभनदासल आवीने भेसी रह्यो । तयारे चतुर्भुजदासे कहुं, के गोदमां करीने तमने जमुनावता गाममां लभ यादीअे ? तयारे कुंभनदासल कहे, के हुवे तो भे-चार घडीमां देह छूरो । तेथी हुवे तो हुं अहींज रह्यीश । तयारे चतुर्भुजदासे श्रीगोवर्द्धननाथलनी राजभोग आर्तिनां दर्शन कर्यां । तयारे श्रीगुसांइज्ये पोते चतुर्भुजदासने पूछे के कुंभनदास केम छे ? अने क्यां छे ? तयारे चतुर्भुजदासे

श्रीगुसांईजी आपु पधारिके कुंभनदासजी सों कहे, जो-कुंभनदास ! या समय कौन लीला में मन है ? सो कहो । ता समय कुंभनदासजी सों उच्यो तो गयो नाहीं, सो माथो नँवाय मनसों दंडवत करि यह कीर्तन गाये । सो पद—

राग सारंग—बिसरि गयो लाल करत गो-दोहन । निरखि अनूप चंद मुख इकटक रह्यो है सांवरो मोहन ॥ १ ॥ नव नागरी विचित्र चतुर गुन अंग अंग रूप सुठोहन । 'कुंभनदास' लाल गिरिधर मन हरयो कटिली भोंहन ॥ २ ॥

राग सारंग—लाल तेरी चितवनि चित ही चुरावति । नंदगाम वृषभानपुरा वीच मारग चलन न पावति ॥ १ ॥ हों भरि हों डरि हों नहिं काहू ललिता दगन चलावति । 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्द्धनधर धरयो सो क्यों न बतावत ॥ २ ॥

सो ये पद कुंभनदामजी ने गाये । तब श्रीगुसांईजी आपु पूछे, जो-कुंभनदास ! यह लीला तुम सुनाये परि अंतःकरणको मन जहां है सो बतावो । तब कुंभनदासजीने श्रीगुसांईजी के आगे यह पद गाये । सो पद—

राग विहागरो—तोय मिलनकों बोहोत करत है मोहनलाल गोवर्द्धनधारी । उत्तर मोहि देऊ किन भामिनि कहा कहां हों बात तिहारी ॥ १ ॥ देखी तू जो झरोखन के मग तन सोहत झूमक सारी । तन मन बसीरी लाल गिरिधर के एक चित तें टरत न टारी । कहिरी सखी हों किहिं मग आऊं तू बताइ दे डौर सुचारी । 'कुंभनदास' प्रभु बैठे तहां देखियत हैं जहां उंची चित्रसारी ॥ ३ ॥

राग विहागरो—रसिकनी रसमें रहति गद्दी । फनक वेलि वृषभान नंदिनी स्याम तमाल चढ़ी ॥ १ ॥ विहरत श्रीगिरिधरनलाल संग कौन पाठ पढ़ी । 'कुंभनदास' प्रभु श्रीगोवर्द्धनधर रति रस केलि बढी ॥ २ ॥

यह पद गायके कुंभनदासजी देह छोड़ि निकुंज लीला में जायके प्राप्त भये । पाछें श्रीगुसांईजी आपु गोपालपुर पधारे । सो

इत्युं, डे सं'क'र्षणु कुं'उ उपर पेदा छे. तयारे श्रीगुसां'ध'ल पोते कुं'सनदास'लनी पासे पधार्या. पछी श्रीगुसां'ध'ल पोते पधारीने कुं'सनदासने डहे, डे कुं'सनदास ! आ समये इध लीलाभां मन छे ? ते डहो. ते समये कुं'सनदास'लथी उड़ी तो शंकायुं नड़ी. तेथो माथुं नभावी मनथी दंडवत करी आ कीर्तन गायां. ते पद—(१) बिसरि गयो लाल करत गोदोहन. (२) लाल तेरी चितवनि चित ही चुरावति. (उपर लुओ.) अ पद कुं'सनदास'लअ गायां तयारे श्रीगुसां'ध'लअ पोते इत्युं, डे कुं'सनदास ! आ लीला तमे सं'स'गावी परंतु अंतःकरणुं मन क्यां छे ते अतावो. तयारे कुं'सनदास'लअ श्रीगुसां'ध'लनी आगण आ पद गायां. ते पद—(१) तोय मिलन डों (२) रसिकनी रसमें रहति गद्दी (उपर लुओ.) अ पद गाधने कुं'सनदास'ल देह छोड़ी निकुंज-

चतुर्भुजदासजी आदि सब बेटानने कुंभनदासजीको संस्कार कियो । सो कुंभनदासजी लीला में आन्योर के पास गाम है, तहां द्वार पर प्राप्त भये । पाछें श्रीगुसांईजी उत्थापन तें सेन पर्यंत की सेवा सों पोहोंचे । परंतु काहू वैष्णवनों बोले नाहीं, उदास रहे । तब रामदासजी ने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो-महाराज ! ऐसे क्यों हो ? तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुख सों कहें, जो-एसे भगवदीय अंतर्धान भये । अब भूमि में भक्तन को तिरोधान भयो । सो या प्रकार श्रीगुसांईजी अपने श्रीमुखसों कुंभनदासजी की सराहना किये । सो वे कुंभनदासजी श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते, जिनके ऊपर श्रीगोवर्द्धननाथजी तथा श्रीगुसांईजी सदा प्रसन्न रहते । तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं । इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है, सो कहां तांई कहिए ।

वार्ता ॥८३॥

* * * *

अब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के सेवक, कृष्णदास अधिकारी,
सो ये अष्टछाप में हैं, जिनके पद गाइयत हैं,
तिनकी वार्ता को भाव कहत हैं—

भावप्रकाश—सो ये कृष्णदासजी लीला में ऋषभसखा श्रीठाकुरजी के अंतरंग, तिनको यह प्रागद्य हैं । सो दिनकी लीला में तो 'ऋषभ' सखा हैं, और

लीलाभां जधने प्राप्त थया. पछी श्रीगुसांईजी पोते गोपादपुर पधार्या. पछी चतुर्भुज-
दास आदि थया पुत्रोये कुंभनदासजीने संस्कार कर्थी. ते कुंभनदासजी लीलाभां
आन्योर पासे गाम छे त्यां द्वार उपर प्राप्त थया. पछी श्रीगुसांईजी उत्थापनथी सेन
पर्यंतनी सेवाथी पहुंन्था. परंतु कोछ वैष्णवथी गोत्या नहीं. उदास रखा. तयारे
रामदासजीये श्रीगुसांईजीने कछुं, के महाराज येम केम छे ? तयारे श्रीगुसांईजी पोते
श्रीमुखथी कछे के, आया भगवदीय अंतर्धान थया. हुवे भूमिभां अज्ञोतुं तिरोधान
थयुं. आ प्रकारे श्रीगुसांईजीये पोते श्रीमुखथी कुंभनदासजीनी सराहना करी. ये
कुंभनदासजी श्रीआचार्यजीना येया कृपापात्र भगवदीय हुता. जेभना उपर श्री-
गुसांईजी सदा प्रसन्न रहता. तेथी येभनी वार्ताना पार नहीं. येभनी वार्ता अनि-
र्वचनीय छे. ते क्यां सुधी कछिये ? वार्ता ॥ ८३ ॥

* * * *

हुवे श्रीआचार्यजी महाप्रभुना सेवक, कृष्णदास अधिकारी, ये अष्टछापभां छे
जेभनां पद गाइये छीये, तेभनी वार्ताना भाव कछीये छीये :—

भावप्रकाश—ये कृष्णदासजी लीलाभां अष्टसखा श्रीठाकुरजीना अंतरंग

श्रीगुसाईजी आपु पधारिके कुंभनदासजी सों कहे, जो-कुंभनदास ! या समय कौन लीला में मन है ? सो कहो । ता समय कुंभनदासजी सों उख्यो तो गयो नाहीं, सो माथो नँवाय मनसों दंडवत करि यह कीर्तन गाये । सो पद—

राग सारंग—विसरि गयो लाल करत गो-दोहन । निरखि अनूप चंद्र मुख इकटक रह्यो है सांवरो मोहन ॥ १ ॥ नव नागरी विचित्र चतुर गुन अंग अंग रूप सुठोहन । 'कुंभनदास' लाल गिरिधर मन हरयो कटिली भोहन ॥ २ ॥

राग सारंग—लाल तेरी चितवनि चित ही चुरावति । नंदगाम वृषभानपुरा बीच मारग चलन न पावति ॥ १ ॥ हों भरि हों डरि हों नहिं काहू ललिता दगन चलावति । 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्द्धनघर घरयो सो क्यों न बतावत ॥ २ ॥

सो ये पद कुंभनदामजी ने गाये । तब श्रीगुसाईजी आपु पूछे, जो-कुंभनदास ! यह लीला तुम सुनाये परि अंतःकरणको मन जहां है सो बतावो । तब कुंभनदासजीने श्रीगुसाईजी के आगे यह पद गाये । सो पद—

राग विहागरो—तोय मिलनकों बोहोत करत है मोहनलाल गोवर्द्धनधारी । उत्तर मोहि देऊ किन भामिनि कहा कहीं हों बात तिहारी ॥ १ ॥ देखी तू जो झरोखन के मग तन सोहत झूमक सारी । तन मन बसीरी लाल गिरिधर के एक चित तें टरत न टारी । कहिरी सखी हों किहि मग आऊं तू बताह दे ठौर सुचारी । 'कुंभनदास' प्रभु बैठे तहां देखियत हैं जहां उंची चित्रसारी ॥ ३ ॥

राग विहागरो—रसिकनी रसमें रहति गढ़ी । कनक बेलि वृषभान नंदिनी स्याम तमाल चढ़ी ॥ १ ॥ विहरत श्रीगिरिधरनलाल संग कौन पाठ पढ़ी । 'कुंभनदास' प्रभु श्रीगोवर्द्धनघर रति रस केलि बढी ॥ २ ॥

यह पद गायके कुंभनदासजी देह छोड़ि निकुंज लीला में जायके प्राप्त भये । पाछें श्रीगुसाईजी आपु गोपालपुर पधारे । सो

इत्युं, के संकषणु कुंड उपर पेदा छे. तयारे श्रीगुसांघणु पोते कुंभनदासणुनी पासे पधार्या. पछी श्रीगुसांघणु पोते पधारीने कुंभनदासने इहे, के कुंभनदास ! आ समये इध दीलाभां मन छे ? ते इहो. ते समये कुंभनदासणुथी छी तो शंकायुं नही. तेथो माथुं नभाची मनथी दंडवत करी आ कीर्तन गायां. ते पद—(१) विसरि गयो लाल करत गोदोहन. (२) लाल तेरी चितवनि चित ही चुरावति. (उपर लुओ.) अ पद कुंभनदासणुअे गायां तयारे श्रीगुसांघणुअे पोते इत्युं, के कुंभनदास ! आ दीला तमे संभगावी परंतु अंतःकरणुं मन ज्यां छे ते अतावो. तयारे कुंभनदासणुअे श्रीगुसांघणुनी आगण आ पद गायां. ते पद—(१) तोय मिलन कों (२) रसिकनी रसमें रहति गढ़ी (उपर लुओ.). अ पद गाधने कुंभनदासणु देह छोड़ी निकुंज-

ब्राह्मणन ने या कुनवी सों कह्यो, जो-हम कों चाहे तू कछु देय, चाहे मति देय । जो यह तेरो बेटा तो श्रीभगवानको भक्त होयगो । जो कृष्णदास याको नाम होयगो और यह तिहारे घर में न रहेगो । यह सुनि के वह पटेल कुनवी बहोत उदास भयो । और दान पुन्य बहोत कियो और कृष्णदास नाम धर्यो । पाछें कृष्णदास पांच वरस के भये तब ही तें भगवद्वाता कथा में जान लागे । सो मातापिता न जान देय तो रोवें, खानपान नाहीं करें । तब मातापिता ने कही जो-याकों जान देऊ । जो यह अबहीतें वैरागीनसों प्रीति करत है, सो यह वैरागी होयगो । जो मोसों ब्राह्मणन नें आगे कह्यो हतो । तासों या बेटामें प्रीति करि मोह मति लगावो । सो यह सबकों दुःख देयगो । पाछे कृष्णदास जहां तहां कथा सुनते । ऐसे करत कृष्णदास वरस बारह तेरह के भये । तब एक वनजारा एक दिन गाम के बाहिर आयके उतरयो, सो किनारो माल सब 'चिलोतरा' गाम में बेचिके रुपैया चौदह हजार कियो । सो रात्रि कों चोर (ने) कृष्णदास के पिता के भेद में, वनजारा के सब चौदह हजार रुपया लूटे । सो चौदह हजार में ते तेरह हजार रुपैया कृष्णदास के पिता ने राखे । सो यह बात कृष्णदास ने जानी । तब कृष्णदास ने अपने पिता सों कह्यो, जो-तुमने बुरो काम कियो है । क्यों ? जो-तुमने रुपैया पराये वनजारा के लुटाय के लिये । सो तुम वाकों दे डारोगे तब तिहारो कल्याण होयगो । तब पिता ने कृष्णदास कों मारयो,

अमने याडे तूं कछु दे याडे न दे पणु या तारे भेटो तो श्रीभगवानने लकत थशे. कृष्णदास अेतु' नाम थशे अने या तारा घरमां नहीं रहे. अे सांलणीने अे पटेल कणुभी अहु उदास थयो अने दान पुण्य अहु कथु' अने कृष्णदास नाम धर्यु'. पछी कृष्णदास पांच वर्षना थया त्यारथीअ लगवद्वाता कथामां अवा लाग्या. माता पिता न अवा हे तो अे खानपान न करे. त्यारे माता (ने) पिताअे कहुं, के अेने अवाहो. अे लभणुंथीअ वैरागीअेथी प्रीति करे छे अेटले अे वैरागी थशे. मने आहणुअे आगण कहुं अतु' तेथी या भेटामां प्रीति करी भोहू लगाउयो नही. अे अधाने दुःख देशे. पछी कृष्णदास अ्यां त्यां कथा सांलणता. अेम करतां कृष्णदास वर्ष १२-१३ ना थया त्यारे अेक वणुअारे अेक दिवस गामना अहार आवीने उतर्यो. तेखे किनारी माल अयो 'चिलोतरा' गाममां बेचीने अेथीया अेह लुअर कर्या. पछी रात्रिअे अेरोअे कृष्णदासना पिताना लेदमां ते वणुअाराना अया अेह लुअर अेथीयाने लूटया. ते अेह लुअरमांथी तेर लुअर अेपैया कृष्णदासना पिताअे राअ्या. अे बात कृष्णदासे अाणी. त्यारे कृष्णदासे पिताना पिताने कहुं, के तमे भोटु' काम कथु' छे. केअके तमे पराया अेपैया वणुअाराना अुंटावी.

रात्रि की लीला में श्रीललिताजी अंतरंग सखी हैं। सो ललिता हू चारि रूप, आपु तो मध्या, और श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीस्वामिनीजी की लीला निकुंज संबधी अनुभव करें। और श्रीललिताजी को दूसरो स्वरूप ऋषभ सखा होयके बन में संग जाय, दिवस की लीला रस को अनुभव करें। और तीसरो स्वरूप दामोदरदास हरसानी होयके श्रीआचार्यजी के संग सदा रहते। तिनसों श्रीआचार्यजी आपु दमला कहते। सो तो दामोदरदासजी की वार्ता में भाव-विस्तार करिके कह्यो है। और ललिताजी को चोथो स्वरूप कृष्णदास। सो गोवर्द्धनधर के पास रहिके अधिकार किये। सो श्रीगिरिराज के आठ द्वार हैं तामें 'विलछू' बरसाने सन्मुख द्वार एक वारी है। सो ता मारग होय के श्रीगोवर्द्धननाथजी रस करन को पधारते। सो ता द्वार के मुखिया हैं। सो ये कृष्णदास गुजरात में एक 'चिलोतरा' गांव है। तहां एक कुनबी के घर जन्मे। सो वह कुनबी वा गाम को मुखी हतो। सो वा गाम में हाकिमी करतो। जा समय कृष्णदास या कुनबी पटेल के घर-जन्मे, सो ता समय या कुनबी ने अनेक पंडित ब्राह्मण गाम गाम में तें बुलायके भेले करि उनसों पूछयो, जो-मेरे यह बेटा भयो है, सो याके सगरे लखन कहो। और या बेटा की आरवल कहो, सो मैं वाकों जनम भरि में जीवे तहां तांई खरची देऊं। तब सगरे

तेमनु' ओ प्राकृत्य छे। हिवसनी लीलाभां ओ 'ऋषभ' सखा छे अने रात्रिनी लीलाभां 'श्रीललिता' अंतरंग सखी छे। ओ ललिता' पणु आर रूप छे। पोते तो मध्या (थध) श्रीगोवर्द्धननाथ' श्रीस्वामिनी'नी लीला निकुंज संबधी अनुभव करे अने ललिता'नु' णीनु' स्वरूप ऋषभ सखा थधने वनभां संग जाय, हिवसनी लीला रसने अनुभव करे अने त्रीनु' स्वरूप श्रीदामोदरदास हरसानी थधने श्रीआचार्य'नी साथे सदा रहता। तेमने श्रीआचार्य' आप दमला कहेता। ते तो दामोदरदासनी वार्ताभां भाव विस्तार करिने कह्यो छे अने ललिता'नु' योथु' स्वरूप कृष्णदास तेमणे श्रीगोवर्द्धनधरनी पासे रहिने अधिकार कियो। श्रीगिरिराज'नां आठ द्वार छे तेभां 'गिलछू' बरसाना सन्मुख द्वार ओक वारी छे ते मार्ग थधने श्रीगोवर्द्धननाथ' रस करवा पधारता। ते द्वारना मुखिया छे। ओ कृष्णदास गुजरातभां ओक 'चिलोतरा' गाम छे त्यां ओक कृष्णीने घरे जन्म्या ओ कृष्णी ते गामना मुखी हुतो। ओ गामभां हाकिमी करतो। ते समय कृष्णदास आ कृष्णी पटेलना घरे जन्म्या। ते समय कृष्णीओ अनेक पंडित ब्राह्मणने गाम-गामथी बुलावीने भेला करी ओमने पूछयो, 'के भारे आ बेटा भयो छे ओनां गधां लखण कहे अने ओ गेटानी आयुष्य कहे। हुं ओने जन्म भरमां एवे त्यां सुधी भरथी हउं। त्यारे गधां ब्राह्मण'ओ ओ कृष्णीने कहुं, के

मैं बुलाय लीजियो । परन्तु मेरे पिता के प्रान हु न जाय, और चोरन के न जाय, और तेगे भलो होय जाय, सो ऐसो तू करियो । सो या भाँति पास मोकों बुलाइयो मैं सब बताय देउंगो । तासों तेरो माल रूपैया सब या सों मिलेंगे । पाछे वा बनजारा राजनगर में आइके राजा के पाम सब बात । और कह्यो, जो-पिताने तो चोरी कराई और बेटानें बतायो । परन्तु कोई के न जाय । और मेरी वस्तु मिले, ऐसो उपाय करो । तब राजा ने कह्यो, धन्य रा. जो-पिता की चोरी बताई । सो वाकूं तो मैं राखूंगो । सो यह कहिके मनुष्य और सिपाई बुलाय के कह्यो, जो-तुम 'चलोतरा' में जायके उहां किम कों बेटा सहित पकरि लावो । सो या भाँति सों जावो, जो-कोई जानें । सो ये पचास मनुष्य आये, सो लगे रहे । सो एक दिन संध्या समय वह सब घर के द्वार पर ठाड़ो हतो और वाको बेटाहू ठाड़ो हतो । सो राजा के वा हकिम कों पकरि के राजनगर में लाये । तब राजा ने यासों पूछी, जो-केम होय परदेसी कों लूटत है ? जो या बनजारे को माल रूपैया देउ । तब किम ने कही, जो-तुमसों कोई ने झुठेही लगाई होयगी । मैं तो या बात में बू नहीं हूँ । तब वा राजा ने कह्यो, जो-तेरो बेटा सोंह खायके कहे सो पिताने कही. जो-बेटा कहि देय तो सांच है । तो राजा ने कृष्ण-

६ करणे. त्यां मने तू साक्षीमां जोलावणे. परंतु मारा थोराना पणु प्राणु न जय अने ताडूं लहुं थाय अेम ने जोलावणे. हुं पथे उत्तर आपीश. तेथी तारे माल छी अे वणुआराअे राजनगरमां आवीने राजनी ; पिताअे तो थोरी करावी अने जेटाअे जताव्युं. मारी वस्तु मणे तेवे। उपाय करे. त्यारे राजअे कहुं, जतावी तेथी अेने तो हुं रापीश. अेम कहीने पयास ; के तमे 'चलोतरा' मां जधने त्यांना हाडेमने जव के डोध जणु नही. त्यारे पयास मनुष्य आव्या दिवस संध्या समये अे हाडेम घरना द्वार उपर । हुतो त्यारे राजना मनुष्य अे हाडेमने पकडीने पूछ्युं के तू हाडेम थध परदेशीने लूटे छे ? आ ।डेमे कहुं, के तमने डोधअे जुहुंज बराव्युं हथे थी. त्यारे अे राजअे कहुं, के तारे जेटा सोगंध

और कह्यो, जो-तू काहू के आगे मति कहियो। जो-हम गाम के हाकिम हैं, सो हाकिम को यही काम है। तब कृष्णदास नें कह्यो, जो-अब तुम खराब होउगे। सो यह कहिके चुप होय रहे। जब सवारो भयो, तब वह बनजारा चाँतरा ऊपर रोवत आयो। सो आयके कृष्णदास के पिता सों कह्यो, जो-हमकों चोरन नें लूट्यो है। तब कृष्णदास के पिता ने कह्यो, जो-तू गाम में क्यों न रह्यो? जो अब हमसों कहा कहत है? सो ऐसे कहिके वा हाकिम नें अपने मनुष्यन सों कही, जो-या बनजारा कों गाम तें बाहिर काढि देउ, जो सवारे ही रोवत आयो है। तब मनुष्यन नें काढि दियो। सगरी पूंजी गई, सो यह महाविलाप करे। सो कृष्णदास दूरितें दौरिके वाके पास आये। तब कृष्णदास कों दया आइ गई। तब कृष्णदास मनमें विचारे, जो-पिता को बुरो होय तो सुखेन होउ, परन्तु या बनजारा परदेसी को भलो करनो। पाछे कृष्णदास वा बनजारा के पास आयके कहे, जो-तू एकांत में चलिके बैठ, जो मैं तोसों एक बात कहूँ। पाछे एकांत में बनजारा कों ले जायके कृष्णदास ने कह्यो, जो-तेरो माल रूपैया सब गयो, मेरे पिता यहाँ को हाकिम है, सो ताने चोरी कराई है। सो हजार रूपैया चोरन कों देके सगरो माल मेरे पिताने राख्यो है। तासों या गाम में तेरी न चलेगी। तासों तू जायके राजनगर (अहमदाबाद) राजा के यहाँ फरियाद करियो। सो मोकूँ तू

ने लीधा, तमे अने आपी हो त्यारे तमाइं इव्याणु थशे. त्यारे पिताने कृष्णदासने भार्या अने कहुं, के तू कोठनी आगण कहीश नही. अमे गामना हुकिम छीअे अेटदे हुकिमनुं अेअ काम छे. त्यारे कृष्णदासे कहुं, के हुवे तमे भरान थशे. अेम कहीने थूथ थथ रहा. पछी न्यारे सवार थथुं त्यारे अे वणुअारे चोतरा उपर इहन करतो आव्यो तोले आवीने कृष्णदासना पिताने कहुं, अमने चोरे लूटया छे त्यारे कृष्णदासना पिताने कहुं, तू गाममां के मन रह्यो? हुवे अमने शुं कडे छे? अेम कहीने अे हुकिमे पिताना मनुष्येने कहुं, के आ वणुअराने गामथी अहार कादी भूके. अे सवारेअे रोतो आव्यो छे. त्यारे मनुष्ये कादी भूक्यो. अधी पूंअ गध त्यारे अे महु विलाप करे. त्यारे कृष्णदास हरथी होडीने अेनी पासे आव्या. त्यारे कृष्णदासने दया आवी. त्यारे कृष्णदासे मनमां विआरुं के पितानुं अहित थथ तो लदे थव परंतु आ वणुअारा परदेशीनुं लहुं करवुं. पछी कृष्णदास वणुअराने पासे आवीने कडे, तू अेकांतमां आवीने अेस. हुं तने अेक वात कहुं. पछी अेकांतमां वणुअराने लध अधने कृष्णदासे कहुं, के तारे माल रूपैया अधुं गथुं. भारे पिताने अहीने हुकिम छे अेले चोरी करावी छे. हुनर इपीआ चोरेने आपीने अधे माल भारे पिताने राख्यो छे. तेथी आ गाममां ताइं नही आवे. तेथी अधने राजनगर

साक्षी में बुलाय लीजियो । परन्तु मेरे पिता के प्रान ह न जाय, और चोरन के हू प्रान न जाय, और तेगो भलो होय जाय, सो ऐसो तू करियो । सो या भौंति राजा पास मोकों बुलाइयो मैं सब वताय देउंगो । तासों तेरो माल रुपैया सब या भौंति सों मिलेंगे । पाछे वा वनजारा राजनगर में आइके राजा के पास सब बात कही । और कह्यो, जो-पिताने तो चोरी कराई और वेटानें वतायो । परन्तु कोई के प्राण न जाय । और मेरी वस्तु मिले, ऐसो उपाय करो । तब राजा ने कह्यो, धन्य वह वेटा. जो-पिता की चोरी बताई । सो वाकूं तो मैं राखूंगो । सो यह कहिके पचास मनुष्य और सिपाई बुलाय के कह्यो, जो-तुम 'चलोतरा' में जायके उहां के हाकिम कों वेटा सहित पकरि लावो । सो या भौंति सों जावो, जो-कोई जानें नाहीं । सो ये पचास मनुष्य आये, सो लगे रहे । सो एक दिन संध्या समय वह हाकिम घर के द्वार पर ठाडो हतो और वाको वेटाहू ठाडो हतो । सो राजा के मनुष्य वा हाकिम कों पकरि के राजनगर में लाये । तब राजा नें यासों पूछी, जो-तू हाकिम होय परदेसी कों लूटत है ? जो या वनजारे को माल रुपैया देउ । तब वा हाकिम ने कही, जो-तुमसों कोई ने झुठेही लगाई होयगी । मैं तो या बात में जानत ही नाहीं हूँ । तब वा राजा ने कह्यो, जो-तेरो वेटा सोंह खायके कहे सो सांचो । तब पिताने कही, जो-वेटा कहि देय तो सांच है । तो राजा ने कृष्ण-

(अमदावाद) राजाने त्यां इरीयाद करले. त्यां मने तू साक्षीमां षोलावले. परंतु मारा पिताना प्राण पण न न्य अने येराना पण प्राण न न्य अने ताइं लखुं थाय अम तू करले. अे प्रकारे राजा पासे मने षोलावले. हुं अथो उत्तर आपीश. तेथी तारे माल इपैया अंधुं आ प्रकारे मणशे. पछी अे वणुआराने राजनगरमां आपीने राजनी पासे अंधी वात कही अने कहुं, के पिताअे तो येरी करावी अने वेटाअे अताव्युं. परंतु कोधने प्राण न न्य अने मारी वस्तु मणेतेवे उपाय करे. त्यारे राजअे कहुं, धन्य अे वेटा के पितानी येरीने अतावी तेथी अने तो हुं रापीश. अम कहीने पचास मनुष्य अने सिपाध षोलावीने कहुं, के तमे 'चलोतरा' मां नधने त्यांना हाडेमने वेटा सहित पकडी लावे. अे प्रकारे नव के कोध नष्टे नही. त्यारे पचास मनुष्य आव्या ते (दावमां) दाव्या रद्या. पछी अेक दिवस संध्या समये अे हाडेम घरना द्वार उपर उलो हुतो अने अेनो वेटो पण उलो हुतो त्यारे राजाना मनुष्य अे हाडेमने पकडीने राजनगर लाव्या. त्यारे राजअे अेने पूछ्युं के तू हाडेम यध परदेशीने लूटे छे ? आ वणुआराना माल इपैया हे. त्यारे ते हाडेमे कहुं, के तमने कोधअे लुहुं व लराव्युं हशे हुं तो आ आअतमां कंध नष्टतो नथी. त्यारे अे राजअे कहुं, के तारे वेटा सोगंद

दास सों पूछी, जो-तू सांच बोलियो । तब कृष्णदास ने वा राजा सों कह्यो, जो-जीव है, तासों चूक्यो तो सही । जो हजार रुपैया चोरन कों दिये और तेरह हजार रुपैया मेरे पिताने राखे हैं । तासों मैंने वाही समय पिता कों समुझायो, परन्तु मान्यो नाहीं, सो ताको फल पायो । परन्तु यासों माल रुपैया ले लेहु और यासों कछु कहो मति । तब कृष्णदास के पिता सों राजा ने कही, जो-अजहू चेत, नाँतर तेरे प्राण जायंगे । तब कृष्णदास को पिता बोल्यो, जो-काम तो बुरो भयो है । परन्तु या वनजारा कों मेरे संग करि देउ । सो याकों सब रुपैया घरतें दै देउंगो । तब राजा ने दोइसे मनुष्य संग करिके वनजारा कों और कृष्णदास के पिता कों घर पठायो । और कृष्णदास सों वा राजा ने कह्यो, जो-तुम मेरे पास रहो, जो तुम सतवादी हो । तब कृष्णदास कहे, जो-मोकों राखिके तुम कहा करोगे ? मैं सांच कहूँगो, सबकों बुरो लगूँगो । जो आजु को समय तो ऐसो है, तासों मैं तो वैरागी होउंगो । जो मैं पिता के काम को नाहीं रह्यो । सो या प्रकार वा राजा ने कृष्णदास के राखिवे को बहोत जतन कियो । परि कृष्णदास रहे नाहीं, पाछे पिता के संग घर आये । तब पिताने चोरन कों बुलाय के सब पुत्र के समाचार कहे, जो-या पुत्रने हमारी खराबी करी है, तासों हजार रुपैया लावो । नाँतर तिहारे और हमारे प्राण जायंगे । तब उन चोरनने हजार रुपैया

आधने कडे तो सायुं, त्यादे पिताने कहुं, के भेटो कडी दे तो सायुं छे. त्यादे रान्ने कृष्णदासने पूछ्युं, के तू सायुं भोलजे. त्यादे कृष्णदासे अे रान्ने कहुं, के अेव छे तेथी युक्त्ये तो अरे. हुनर इपीआ चोरेने आभ्या अने तेर हुनर इपीआ मारा पिताने राभ्या छे. तेथी में तेज समये पिताने समलन्थे परंतु मान्युं नही तेनुं इल मज्युं. परंतु अेने माल इपीआ लधवे अने अेने कंधं कडे नही. त्यादे कृष्णदासना पिताने रान्ने कहुं, के हुन्ये अेत नही तो तारा प्राणु जशे. त्यादे कृष्णदासने पिताने भेट्ये के काम तो अराभ थयुं छे. परंतु आ वणुजाराने मारी साथे करी दे. अेने गधा इपैया घरथी दधं दधश. त्यादे रान्ने असे मनुष्य साथे करीने वणुजाराने अने कृष्णदासना पिताने घर भोड्ये अने कृष्णदासने रान्ने कहुं, के तमे मारी पासे रडे. तमे सत्यवादी छे. त्यादे कृष्णदास कडे, के मने राभीने तमे शुं करशे ? हुं सायुं कहीश अेटवे गधाने अुरे गनीश. आअने समय अेवे छे. तेथी हुं तो वैरागी थधश. हुं पिताना कामने न रह्यो. अे प्रकारे रान्ने कृष्णदासने राभवाने घणु उपाय कथे परंतु कृष्णदास रहा नही. पछी पिताना संगे घर आभ्या त्यादे पिताने चोरेने गे लावीने पुत्रना गधा समाचार कथा, के आ पुत्रे अमारी अराभी करी छे तेथी हुनर इपीआ लावे नही तो अमारा तमारा प्राणु जशे. त्यादे अे चोरेने हुनर

लाय दिये । सो तेरह हजार घर में सों लेके वा बनजारा कों चौदह हजार रुपैया दिये, और माल लूटि को देके वा बनजारा कों विदा कियो । ता पाछे वा राजा ने दूसरो हाकिम 'चिलोतरा' गाम में पठायो । तब कृष्णदास के पिता ने कह्यो, जो-पुत्र ! तेरो ऐसो बुरो कर्म भयो सो हाकिमी हू गई, और आयो करयो द्रव्यहू गयो । तब कृष्णदास ने पिता सों कही, जो-पिता ! तैंने ऐसो बुरो कर्म कियो हतो जो-येहू लोक जातो और परलोक हू विगरतो, जो जीव तो बच्यो । सो हाकिमी छूटी सो आछो भयो । जो हाकिमी होती तो और पाप कमावते । तब पिता ने कह्यो, जो-तू वा जनम को फकीर है । तासों तैने हमकों हू फकीर कियो है । अब तेरे मन में कहा है ? तब कृष्णदास ने कही जो-अब तुम मोकों घर में राखोगे तो फकीर होउगे, याते मोकों विदा ही करो । तब पिता ने कही, जो-तू कछ खरचि ले घर में ते कहुँ दूरि चलयो जा । न तोकों देखेंगे न दुःख होयगो । तब कृष्णदास पिता कूं नमस्कार करि के उठि चले । पाछे मन में विचारे, जो-ब्रज होय सगरे तीरथ करनो । तब कलुक दिनमें कृष्णदास श्रीमथुराजी में आयके विश्रांत घाट न्हाय के ब्रज में निकसे, तब फिरते फिरते श्रीगोवर्द्धन आवे । सो तहाँ सुनी, जो-देवदमन को मंदिर बन्यो है, जो-अब दोय चारि दिन में विराजेंगे तो ब्रजवासीन कों बड़ी आनंद होयगो । देवदमन जब तें बाहिर प्रकटे,

इपैया दावी आभ्या अने तेर हुनर घरमांथी लधने अे वणुआराने चौद हुनर इपीया आभ्या अने दूटनेो माल दधने अे वणुआराने विहाय कथीं। ते पधी अे राजअे गीजे डुडेभ 'चिलोतरा' गाममां भोकल्यी। त्यारे कृष्णदासे पिताने कहुं, के पुत्र ! ताइं अेपुं 'भोटुं' कर्म थयुं के डाकिमी पणु गध अने आवेलुं द्रव्य, पणु गयुं। त्यारे कृष्णदासे पिताने कहुं, के पिता तमे अेपुं 'भोटुं' कर्म कथुं डतुं के आ लोक पणु लतो अने परलोक पणु भगडतो। जे एव तो अर्यो। डाकिमी छुटी तो साइं थयु। जे डाकिमी होती तो वधारे पाप कमावता। त्यारे पिताये कहुं, तू पडेला जनमनो इकीर छेतेथीते अमने पणु इकीर कथीं। हुवे तारा मनमां शुं छे? त्यारे कृष्णदासे कहुं, के हुवे मने घरमां राभशो तो इकीर थशो। तेथी मने विहाय न करे। त्यारे पिताये कहुं, के तू थोडी अर्यीं लध घरमांथी क'ध हूर आल्ये। न तने जेधशुं न दुःख थशे। त्यारे कृष्णदास पिताने नमस्कार करीने उठी आल्ये। पधी मनमां विचार्युं, के व्रज थधने पधां तीर्थ करवां। पधी डेटलाड दिवसमां कृष्णदास श्रीमथुरालुमां आवीने विश्रांतघाटे न्हाधने व्रजमां नीकल्या। त्यारे इरता इरता श्रीगोवर्द्धन आव्या। त्यां सालय्युं के देवदमननुं मंदिर अर्युं छे। हुमणुं जे अार दिवसमां पिराअशे। त्यारे व्रजवासीअेने

જો શ્રીગિરીરાજ ગોવર્દન મેં તે, તવ તેં સવન કોં સુખ દિયો હૈ । ઓર સવન કે મનોરથ પૂરન કરત હૈ । તવ યહ સુનિકે કૃષ્ણદાસજી અપને મનમેં વિચારે, જો-મેં હૂં દેવદમન કો દરસન કરૂં । સો તવ આયકે કૃષ્ણદાસ ને દેવદમન કે દરસન કિયે । સો શ્રીઆચાર્યજી આપુ રાજભોગ આરતી કિયે । સો દરસન કરત હી કૃષ્ણદાસ કો મન શ્રીગોવર્દનધર ને હરિ લિયો । સો કૃષ્ણદાસ કી ઓર શ્રીગોવર્દનધર દેખિ રહે । પાછે શ્રીગોવર્દનનાથજી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુન સોં કહે, જો-યહ કૃષ્ણદાસ આયો હૈ । સો વહોત દિન કો ઘિહુરયો હૈ, સો મેં યાકોં દેખત હોં । તવ કૃષ્ણદાસ કે પાસ આયકે શ્રીઆચાર્યજી કહે, જો-કૃષ્ણદાસ ! તૂ આયો ! તવ કૃષ્ણદાસ ને દંડવત કરિકે ઘિનતિ કીની, જો-મહારાજ ! આપુ કી કૃપા તેં આયો હૂં । તાસોં અવ મોકોં સરન રાખો । તવ શ્રીઆચાર્યજી કહે, જો જાહ, વેગિ ન્હાય આવો જો તેરે સામેં શ્રીગોવર્દનનાથજી દેખિ રહે હૈ । તાસોં વેગિ આય જાવો । તવ કૃષ્ણદાસ દૌરિકે રુદ્રકુંડ મેં ન્હાય આયે । પાછે કૃષ્ણદાસ શ્રીઆચાર્યજી કે પાસ મંદિર મેં આયે । તવ શ્રીઆચાર્યજી આપુ કૃષ્ણદાસ કોં શ્રીગોવર્દનનાથજીકે સન્નિધાન વૈઠાયકે નામ સમર્પન કરાયે । સો કૃષ્ણદાસ દૈવીજીવ હૈ, સો તત્કાલ સગરી લીલા કો અનુભવ મયો । સો તાહી સમય કૃષ્ણદાસ ને યહ કીર્તન ગાયો । સો પદ—

બહુ આનંદ થશે. દેવદમન ન્યાયથી બહાર પ્રકટ્યા શ્રીગિરીરાજ શ્રીગોવર્દનમાંથી ત્યારથી બધાને સુખ થયું છે અને બધાના મનોરથ પૂરણ કરે છે. એ સાંભળીને કૃષ્ણદાસ પોતાના મનમાં વિચારે કે હું પણ દેવદમનનાં દર્શન કરું. ત્યારે આવીને કૃષ્ણદાસે દેવદમનનાં દર્શન કર્યાં. શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે રાજભોગ આર્તિ કરી. ત્યારે દર્શન કરતાં જ કૃષ્ણદાસનું મન શ્રીગોવર્દનનાથજીએ હરી લીધું. કૃષ્ણદાસની તરફ શ્રીગોવર્દનનાથજી ભેદ રહ્યા. પછી શ્રીગોવર્દનનાથજી શ્રીઆચાર્યજી મહાપ્રભુને કહે, કે આ કૃષ્ણદાસ આવ્યો છે. બહુ દિવસથી વિખુટો પડ્યો છે તેથી હું એને ભેટ છું. ત્યારે કૃષ્ણદાસના પાસે આવીને શ્રીઆચાર્યજીએ કહ્યું, કે કૃષ્ણદાસ ! તૂ આવ્યો ? ત્યારે કૃષ્ણદાસે દંડવત કરીને વિનંતી કરી, કે મહારાજ ! આપની કૃપાથી આવ્યો છું. તેથી હવે મને શરણે રાખો. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજી કહે, કે જા, જલ્દી નહાઈ આવ. તારા સામે શ્રીગોવર્દનનાથજી ભેદ રહ્યા છે તેથી જલ્દી આવી જજે. ત્યારે કૃષ્ણદાસ દોડીને રૂંડ કુંડમાં નહાઈ આવ્યા. પછી કૃષ્ણદાસ શ્રીઆચાર્યજીની પાસે મંદિરમાં આવ્યા. ત્યારે શ્રીઆચાર્યજીએ પોતે કૃષ્ણદાસને શ્રીગોવર્દનનાથજીની સન્નિધાન બેસાડીને નામ-સમર્પણ કરાવ્યું. એ કૃષ્ણદાસ દૈવી જીવ છે તેથી તત્કાલ સઘળી લીલાનો અનુભવ થયો.

राग सारंग—बल्लभ पतित—उद्धारन जानो । सरनि लेत लीला दरसावत
ता पर ढरत गोवर्द्धनरानो ॥ १ ॥ साधन वृथा करत दिन खोवत श्रीवल्लभ कौ रूप
न जाने । जाकी कृपा कटाक्ष सफल फल ' कृष्णदास ' तीनों जनम न माने ॥ २ ॥

सो यह पद कृष्णदास ने गायो, सो सुनिके श्रीआचार्यजी आपु बहोत प्रसन्न भये । ता पाछे श्रीआचार्यजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजी कों अनोसर कराये । ता पाछे मंदिर सिद्ध भयो । सो तव सुन्दर अक्षयतृतीया को दिन देखिके श्री-गोवर्द्धननाथजी कों नये मंदिर में पाट बैठाये । तव पूरनमल के सब मनोरथ सिद्ध किये । तव श्रीआचार्यजी आपु सद् पांडे कों बुलायके कहे, जो—मंदिर तो बड़ो भयो, जो—श्रीगोवर्द्धननाथजी विराजे । परंतु अब इनकी सेवा कों मनुष्य ठीक करयो चाहिये, तातें तुम सेवा करो । तव सद् पांडे ने विनती कीनी, जो—महागज ! हम तो ब्रजवासी हैं, जो—आचार विचार सेवा की रीति कछु समझत नहीं हैं । और घर के अनेक काम हैं, तासों आपु आज्ञा देउ तो राधाकुंड ऊपर बंगाली रहत हैं, सो अष्ट प्रहर भजन करत हैं । तासों उनकों राखे तो बुलाय लाऊँ । तव श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो—बुलाय लावो । सो सद् पांडे बंगाली वीस—पचीस बुलाय लाये । तव उनकों रुद्रकुंड ऊपर झोंपरी बनवाय दीनी, और श्रीगोवर्द्धन-नाथजी की सेवा दीनी । और कृष्णदास कों भेटिया किये । जो तुम परदेस तें भेट लायके बंगालीन कों दीजो । सो या भांति सों सेवा करोगे । या प्रकार सब

तेज समये कृष्णदासे आ कीर्तन गायुं. ते पदः—'बद्धल पतित उद्धारन जानो'(७पर लुओ) ओ पद कृष्णदासे गायुं. ओ सांखणीने श्रीआचार्यओ आप प्रसन्न थया. ते पछी श्रीआचार्यओओ पोते श्रीगोवर्द्धननाथओने अनोसर कराव्या. ते पछी मंदिर सिद्ध थयुं. त्यारे सुंदर अक्षयतृतीयाओे द्विस जेधने श्रीगोवर्द्धननाथओने पाट जेसाक्या. त्यारे पूरनमलनां भधा मनोरथ सिद्ध थया. त्यारे श्रीआचार्यओ पोते सद् पांडेने जेलावीने कहे, के मंदिर तो भोटुं थयुं ओभां श्रीगोवर्द्धननाथओ गिराज्या. परंतु हुवे ओमनी सेवा भाटे मनुष्यनो णहोअस्त करवो जेधओे तेथी तमे सेवा करे. त्यारे सद् पांडेओे विनंती करी, के महाराज ! अमे तो ब्रजवासी छीओे. आचार-विचार सेवानी रीति कंछ समजता नथी. वणीं घरनां अनेक काम छे तेथी आप आज्ञा हो तो राधा कुंड उपर णंगाली रहे छे, ते अष्टप्रहर लजन करे छे तेथी ओमने राधो तो जेलावी लाउं. त्यारे श्रीआचार्यओ पोते कहे, के जेलावी लावो. पछी सद् पांडे णंगाली वीस पचीस जेलावी लाव्या. त्यारे ओमने इद्र कुंड उपर जूंपडी बनवावी छीथी अने श्रीगोवर्द्धननाथओनी सेवा आपी. वणी कृष्णदासने लेटीआ कर्था, के तमे परदेशथी लेट लावीने णंगालीओेने आपजे. ओ रीते सेवा करजे. ओ प्रकारे भधा

बंगालीन कौं रीति भांति वतायके सेवा सोंपी । और कृष्णदास परदेस तें भेट ले आवते सो बंगालीन कौं देते । सो रामदास चौहान रजपूत जब नयो मंदिर बन्यो, तब देह छोड़िके लीला में जायके प्राप्त भये । तब सगरी सेवा बंगाली करते ।

वार्ता-प्रसंग १—पाछें एक समय कृष्णदास श्रीद्वारिकाजी की ओर भेट लेन कौं गये । सो श्रीद्वारिका श्रीरनछोडजी के दरसन करि के वैष्णव न सों भेट लेके आवत हते । सो एक वैष्णव कृष्णदास के संग हतो । सो मारग में मीराबाईको गाम आयो, सो कृष्णदासजी मीराबाई के घर गये, । तहां संत, महंत अनेक स्वामी और मारग के बैठे हते । सो काहूकों आये दस दिन, काहू कौं आये बीस दिन भये हते, परंतु काहूकी विदा न भई हती । और भेट के लिये बैठे हते । और कृष्णदास तो आवत ही कह्यो, जो-मैं तो चलूंगो । तब मीराबाईने कह्यो, जो-कछुक दिन कृपा करिके रहो । तब कृष्णदास ने कही, जो-हमारे तो जहां हमारे वैष्णव श्रीआचार्यजी के सेवक होंयगे सो तहां रहेंगे और अन्यमार्गीय के पास हम नाहीं रहत हैं । तब मीराबाई ११ मोहौर श्रीनाथजी की भेट देन लागी सो कृष्णदास नाहीं लिये । और कृष्णदासने मीराबाई सों कह्यो, जो-तू श्रीआचार्यजी की सेवक नाहीं है, सो हम तेरी मोहौर हाथ तें न छुवेंगे ।

बंगालीने रीति भांति अतापीने सेवा सोंपी अने कृष्णदास परदेशी लेट लधने आवता ते बंगालीने आपता अने रामदास चौहान रजपूत न्यारे नवुं मंदिर बन्यु त्यारे देह छोडीने लीला में अर्धने प्राप्त थया । त्यारे अर्धी सेवा बंगाली करता ।

वार्ता-प्रसंग १-पछी अक समय कृष्णदास श्रीद्वारिकाजी तरफ लेट लेवाने गया । ते श्रीद्वारिका श्रीरनछोडजीनां दर्शन करीने वैष्णवोथी लेट लधने आवता हुता । त्यारे अक वैष्णव कृष्णदासनी साथ हुतो । त्यां मार्गमां मीराबाईतुं गाम आव्युं । ते कृष्णदास मीराबाईना धरे गया । त्यां संतमहुंत अनेक स्वामी भीज मार्गना भेडा हुता । ते कोधने आवे दश दिवस ने कोधने आवे बीस दिवस थया हुता । परंतु कोधनी विदाय थथ न हुती अने लेटने भाटे भेडा हुता अने कृष्णदासे तो आवतां न कछुं, के हुं तो आदीश । त्यारे मीराबाईअे कछुं, के थोडाक दिवस सुधी कृपा करीने रहो । त्यार कृष्णदासे कछुं, के अमारे तो न्यां अमारा वैष्णव श्रीआचार्यजीना सेवक हथे त्यां रह्युं । अन्यमार्गीयनी पाससे अमे नथी रहता । त्यारे मीराबाई ११ महारे श्रीनाथजी लेटनी देवा लागी । ते कृष्णदासे दीधी नही अने कृष्णदासे मीराबाईने कछुं, के तू श्रीआचार्यजीनी सेवक नथी तथी अमे तारी महारेने हाथथी नही

सो ऐसे कहिके उठि चले। तब संग के वैष्णवने कृष्णदास सों कही, जो-तुमने श्रीगोवर्द्धननाथजी की भेट क्यों फेरि दीनी ? तब कृष्णदासने वा वैष्णव सों कही, जो-भेट की कहा है ? जो बहोतेरी भेट वैष्णवन सों लेंयगे। श्रीगोवर्द्धननाथजी के यहां कोई बात को टोटा नाहीं है। परंतु सगरे मारग के स्वामी महंत इतने इकठोरे कहां मिलते ? तासों सबकी नाक नीची तो करी, जानेंगे जो हम भेट के लिये इतने दिन सों बैठे हैं, और श्रीआचार्यजी को एक सेवक शूद्र इतनी मोहौर भेट न लीनी। सो जिनके सेवक ऐसे टेकी हैं, तिनके गुरुकी कहा बात होयगी ? सो ये सब या भांती सों जानेंगे। और आपुन अन्यमार्गीय की भेट काहे कों लेंय ?

भावप्रकाश—तातें शिक्षापत्र में कह्यो है—‘तदीयानां महद्दुःखं विजातीयेन संगमः’ तदीय जो भगवदीय है, तिनकों और दुःख कछु नाहीं है। सो जैसो अन्यमारगीय विजातीय के संग को दुःख होय। तासों श्रीठाकुरजी तो निर्वाहें। जो विजातीय सों बोलनो नाहीं तब ही सुख है। और जो वार्ता करे तो रस को तिरोधान रसाभास निश्चय होय। तासों कृष्णदासजी मीराबाईके घर गये इतनो कहनो परयो। तासों मुख्य सिद्धांत यह जतायो, जो-स्वमार्गीय विना काहू तें मिलनो नाहीं। और कदाचित् मिलनो परे तो अपने धर्म कों गोप्य राखे।

अंडकीये. अम धरुाने उठी यात्या. त्पारे संगना वैष्णवे कृष्णदासने कछु, के तमे श्रीगोवर्द्धननाथजी लेट केम पाछी डेरी ? त्पारे कृष्णदासे अ वैष्णवने कछु, के लेटनी शी वात छे ? धरुणीय लेट वैष्णवाथी लभ्युं. श्रीगोवर्द्धननाथजीने त्यां डेध वातना टाटा नथी. परंतु अधा भार्गना स्वामी महंत आरदा अकडा क्यां भगता ? तेथी अधानी नाक नीची तो करी, जलुशे के अमे लेटने माटे आरदा द्विसथी भेडा छीये अने श्रीआचार्यजीना अक सेवक शूद्रे आरदी महोरि लेट न लीधी. जेना सेवक आवा टेकी छे तेमना गुरुनी शी वात लुशे ? अ अधा आ प्रकारे जलुशे वणी आपुले अन्यमार्गीयनी लेट शा माटे लभ्ये ?

भावप्रकाश—तेथी शिक्षापत्रमां कछु छे ‘तदीयानां महद्दुःखं’ तदीय जे भगवदीय छे तेमने भीनुं दुःख कंठ नथी जेवुं अन्यमार्गीय विजातीयना संगतुं दुःख डोय. तेथी श्रीठाकुरजी तो निर्वाह करे परंतु विजातीयथी भोलवुं नथी त्पारेज सुभ छे. वणी जे (अनाथी) वार्ता करे तो-रसतुं तिरोधान रसाभास निश्चय थाय. तेथी कृष्णदास मीराभाषना धरे गया. अटखुं कडेवुं पड्युं. तेथी मुख्य सिद्धांत अे जलु-व्यो के स्वमार्गीय विना डेधथी भोलवुं नही अने कदाचित् भगवुं पडे तो चोताना

बंगालीन कौं रीति भांति वतायके सेवा सोंपी । और कृष्णदास परदेस तें भेट ले आवते सो बंगालीन कौं देते । सो रामदास चौहान रजपूत जब नयो मंदिर बन्यो, तब देह छोड़िके लीला में जायके प्राप्त भये । तब सगरी सेवा बंगाली करते ।

वार्ता-प्रसंग १—पाछें एक समय कृष्णदास श्रीद्वारिकाजी की ओर भेट लेन कौं गये । सो श्रीद्वारिका श्रीरनछोडजी के दरसन करि के वैष्णवन सों भेट लेके आवत हते । सो एक वैष्णव कृष्णदास के संग हतो । सो मारग में मीराबाईको गाम आयो, सो कृष्णदासजी मीराबाई के घर गये, । तहां संत, महंत अनेक स्वामी और मारग के बैठे हते । सो काहूकों आये दस दिन, काहू कौं आये बीस दिन भये हते, परंतु काहूकी विदा न भई हती । और भेट के लिये बैठे हते । और कृष्णदास तो आवत ही कह्यो, जो-मैं तो चलूंगो । तब मीराबाईने कह्यो, जो-कछुक दिन कृपा करिके रहो । तब कृष्णदास ने कही, जो-हमारे तो जहां हमारे वैष्णव श्रीआचार्यजी के सेवक होंगये सो तहां रहेंगे और अन्यमार्गीय के पास हम नाहीं रहत हैं । तब मीराबाई ११ मोहौर श्रीनाथजी की भेट देन लागी सो कृष्णदास नाहीं लिये । और कृष्णदासने मीराबाई सों कह्यो, जो-तू श्रीआचार्यजी की सेवक नाहीं है, सो हम तेरी मोहौर हाथ तें न छुवेंगे ।

बंगालीओने रीति भांति वतायके सेवा सोंपी अने कृष्णदास परदेशथी भेट लधने आवता ते बंगालीओने आपता अने रामदास चौहान रजपूत न्यारे नवुं मंदिर बन्यु त्यारे देह छोडीने लीलाभां जधने प्राप्त थया । त्यारे गधी सेवा बंगाली करता ।

वार्ता-प्रसंग १-पछी अेक समय कृष्णदास श्रीद्वारिकाजी तरफ भेट लेवाने गया । ते श्रीद्वारिका श्रीरनछोडजीनां दर्शन करीने वैष्णवोथी भेट लधने आवता हुता । त्यारे अेक वैष्णव कृष्णदासनी साथ हुतो । त्यां मार्गभां मीराबाईहुं गाम आव्युं, ते कृष्णदास मीराबाईना धरे गया । त्यां संतमहंत अनेक स्वामी भीज मार्गना भेडा हुता । ते कोधने आवे दस दिवस ने कोधने आवे बीस दिवस थया हुता । परंतु कोधनी विदाय थध न हुती अने भेटने भाटे भेडा हुता अने कृष्णदासे तो आवतां न कछुं, के हुं तो आदीश । त्यारे मीराबाईअे कछुं, के थोडाक दिवस सुधी कृपा करीने रहो । त्यारे कृष्णदासे कछुं, के अभावे तो नयां अभावे वैष्णव श्रीआचार्यजीना सेवक हुशे त्यां रह्युं । अन्यमार्गीयनी पास अने नथी रहेता । त्यारे मीराबाई ११ भडोरे श्रीनाथजी भेटनी देवा लागी, ते कृष्णदासे लीला नही अने कृष्णदासे मीराबाईने कछुं, के तू श्रीआचार्यजीनी सेवक नथी तथी अने तारी भडोरेने हाथथी नही

भावप्रकाश—और एक अवधूतदास श्रीआचार्यजी के सेवक होते सो ब्रज में फिरयो करते, सो वे बड़े कृपापात्र भगवदीय होते, सो अडींग के वासी होते । सो अवधूतदासजी कुमारिका के जूथ में है । सो रासपंचाध्याई में जब श्रीठाकुरजी प्रगट भये, तब ये भक्त सगरे, स्वरूप को दरसन करिके नेत्र मूंदिके योगी की नाई मगन होय गये । सो ये भक्तको प्रागख्य अवधूतदासजी को है । सो लीला में इनको नाम 'केतिनी' है । सो अडींग में एक सनोढ़िया ब्राह्मण के घर जन्मे । जब ब्रज में अकाल परयो, तब मा बाप बनिया कों वेटा देके आपु तो पूरव कों गये । पाछें अवधूतदास बरस पंद्रहके भये । तब वह बनियाको घर छोड़िके मथुरा में आयके श्रीआचार्यजी के दरसन करि विनती कीनी । जो-महाराज ! मोकों सरन लीजिये । तब श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो-हमारे संग श्रीगोवर्द्धन कों चलो, जो-श्रीनाथजी के सान्निध्य सरन लेयंगे । तब अवधूतदास श्रीआचार्यजी के संग श्रीगिरिराज आये । पाछे श्रीआचार्यजी आपु अवधूतदास तें कहे, जो-तुम गोविंदकुंड में न्हाय लेहु । तब अवधूतदास गोविंदकुंड में न्हाय आये । पाछे श्रीआचार्यजी आपु गोविंदकुंड में स्नान करिके मंदिर में पधारे । ता समय श्रीगोवर्द्धनधर कों राजभोग आयो हतो । तब समय भये भोग सराय अवधूतदास कों बुलायके श्रीगोवर्द्धनधर के सान्निध्य बैठाय नाम निवेदन करवायो । तब

भावप्रकाश—एक अवधूतदास श्रीआचार्यलना सेवक हुता ते ब्रजमां क्ष्या करता. ये महान कृपापात्र भगवदीय हुता. ते अडींगना वासी हुता. ते अवधूतदासल कुमारिकाना यूथमां छे. ते रासपंचाध्याईमां न्यारे श्रीठाकुरल प्रकट थया त्यारे आ लक्ष्मण गधा स्वस्वपनां दर्शन करीने नेत्र मूंदीने योगीनी भाइक भगन थई गया. ये लक्ष्मण (मां) तुं प्राकख्य अवधूतदासतुं छे लीलामां अभनुं नाम ' केतिनी ' छे. ते अडींगमां एक सनोडीआ ब्राह्मणना धरे जन्म्या. न्यारे ब्रजमां अकाल पड्यो त्यारे मा-बाप बाखियाने गेटो आपीने पोते पूरवमां गया पछी अवधूतदास वर्ष पंद्रना थया, त्यारे ये बाखियातुं धर छोडीने मथुरामां आवीने श्रीआचार्यलनां दर्शन करी विनती करी, के महाराज ! मने शरखे लो. त्यारे श्रीआचार्यल पोते कडे, के अमारा साथे श्रीगोवर्द्धन यालो. श्रीनाथलना सान्निध्य शरखे लधुं. त्यारे अवधूतदास श्रीआचार्यलनी साथे श्रीगिरिराज आव्या. पछी श्रीआचार्यल पोते अवधूतदासने कडे, के तमे गोविंदकुंडमां न्हाई लो. त्यारे अवधूतदास गोविंदकुंडमां न्हाई आव्या. पछी श्रीआचार्यल पोते गोविंदकुंडमां स्नान करीने मंदिरमां पधार्या. ते समय श्रीगोवर्द्धनधरने राजभोग आव्यो हुतो. त्यारे समय धये भोग सरायी अवधूतदासने बुलायीने

सो श्रीगुसाईंजी आपु चतुःश्लोकी में कहे हैं—

‘विजातीयजनाकीर्णं निजधर्मस्य गोपनं ।

देशे विधाय सततं स्थेयमित्येव मे मतिः’ ॥ १ ॥

सो ऐसे देश में जाय जहां कोई वैष्णव नहीं होय, तहां अपने धर्म कों प्रकट न करें, तो अपना धर्म रहे । सो काहेतें ? जो—लौकिक हू में पनारो है । सो तासों, न्हायो होइ सो बचिके चले । तासों उत्तम जनकों सब प्रकारसों बचनो परे । जैसे उत्तम सामग्री है ताकों अनेक जतनसों बचावे, तब श्रीठाकुरजीके भोग जोग रहे । तैसे ही वैष्णव धर्म है । तासों या धर्म की रक्षा राखे तो रहै । यह सिद्धांत प्रगट कियो ।

सो वे कृष्णदास ऐसें टेकी परम कृपापात्र भगवदीय हते ।
वार्ता—प्रसंग २—और श्रीगोवर्द्धननाथजी को सिंगार बंगाली करते । सो श्रीआचार्यजीने श्रीगोवर्द्धननाथजी कों मीना के सब आभरन समराय दिये हते । और मोरपक्ष को मुकुट, काछिनी, बागा सब बनवाय दिये हते । बंगाली श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा करते । जो भेट श्रीगोवर्द्धननाथजी के आवती सो बंगाली जोरिके सब अपने गुरुन के यहां पठावन लागे । सो जब श्रीआचार्यजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में कृष्णदास कों अधिकारी किये, तब कृष्णदास मथुरा आगरे तें सामग्री लाय देते ।

धर्मने गोप्य राखे तेथी श्रीगुसाईंजी पोते चतुःश्लोकीमां कहे छे, ‘विजातीयजना०’ (उपर लुखो) । जेवा देशमां जय जयां केई वैष्णव न होय त्यां पोतानो धर्म प्रकट न करे तयारे पोतानो धर्म रहे. केमके ? दौकिकमां पणु परनाणो छे तेथी न्हायो होय ते जयीने खावे. तेम उत्तम जनने जधा प्रकारथी जयवुं पडे. तयारे श्रीठाकुरजीना भोग योग रहे तेयोअ वैष्णव धर्म छे. तेथी आ धर्मनी रक्षा राखे तो रहे. जे सिद्धांत प्रकट कर्यो.

वार्ता—प्रसंग २—पछी श्रीगोवर्द्धननाथजीने शिंगार अंगादी करता. श्रीआचार्यजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीने मीनानां जधां आभरण सिद्ध कराव्यां हुतां अने मोरपक्षनो मुकुट, काछनी बागा जधुं अनवावी दीधुं हुतुं. अंगादी श्रीगोवर्द्धननाथजीनी सेवा करता हुता. पछी श्रीगोवर्द्धननाथजीने भेट आवती ते भेगी करीने जधी पोताना गुरुने त्यां भेकसावना लाग्या. ते जयारे श्रीआचार्यजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीना मंदिरमां कृष्णदासने अधिकारी कर्या तयारे कृष्णदास मथुरा आगराथी सामग्री लायो देता.

भावप्रकाश—और एक अवधूतदास श्रीआचार्यजी के सेवक होते सो ब्रज में फिरयो करते, सो वे बड़े कृपापात्र भगवदीय होते, सो अडींग के वासी होते । सो अवधूतदासजी कुमारिका के जूथ में है । सो रासपंचाध्याई में जब श्री-ठाकुरजी प्रगट भये, तब ये भक्त सगरे, स्वरूप को दरसन करिके नेत्र मूंदिके योगी की नाई मगन होय गये । सो ये भक्तको प्रागख्य अवधूतदासजी को है । सो लीला में इनको नाम 'केतिनी' है । सो अडींग में एक सनोढ़िया ब्राह्मण के घर जन्मे । जब ब्रज में अकाल परयो, तब मा बाप बनिया कों बेटा देके आपु तो पूरव कों गये । पाछे अवधूतदास बरस पंद्रहके भये । तब वह बनियाको घर छोड़िके मथुरा में आयके श्रीआचार्यजी के दरसन करि विनती कीनी । जो-महाराज ! मोकों सरन लीजिये । तब श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो-हमारे संग श्रीगोवर्द्धन कों चलो, जो-श्रीनाथजी के सान्निध्य सरन लेंयंगे । तब अवधूतदास श्रीआचार्यजी के संग श्रीगिरिराज आये । पाछे श्रीआचार्यजी आपु अवधूतदास तें कहे, जो-तुम गोविंदकुंड में न्हाय लेहु । तब अवधूतदास गोविंदकुंड में न्हाय आये । पाछे श्री-आचार्यजी आपु गोविंदकुंड में स्नान करिके मंदिर में पधारे । ता समय श्रीगो-वर्द्धनधर कों राजभोग आयो हतो । तब समय भये भोग सराय अवधूतदास कों बुलायके श्रीगोवर्द्धनधर के सान्निध्य बैठाय नाम निवेदन करवायो । तब

भावप्रकाश—एक अवधूतदास श्रीआचार्यजीना सेवक हुता ते ब्रजमां क्षया करता. ये महान कृपापात्र भगवदीय हुता. ते अडींगना वासी हुता. ते अवधूतदासजी कुमारिकाना जूथमां छे. ते रासपंचाध्याईमां न्यारे श्रीठाकुरजी प्रगट थया त्यारे आ लकत गधा स्वरूपनां दर्शन करीने नेत्र मूंदीने योगीनी भाइक भगन थछ गया. ये लकत (मां) तुं प्राकख्य अवधूतदासतुं छे लीलामां अभेतुं नाम 'केतिनी' छे. ते अडींगमां एक सनोड़ीया ब्राह्मणना घरे जन्म्या. न्यारे ब्रजमां अकाल पड्यो त्यारे मा-बाप वाखियाने गेटो आपीने पोते पूरवमां गया पछी अवधूतदास वर्ष पंद्रना थया, त्यारे ये वाखियानुं घर छोडीने मथुरामां आपीने श्रीआचार्यजीनां दर्शन करी विनती करी, के महाराज ! मने शरणे लो. त्यारे श्रीआचार्यजी पोते कछे, के अमारां साथे श्रीगोवर्द्धन थालो. श्रीनाथजीना सान्निध्य शरणे लछथुं. त्यारे अवधूतदास श्री-आचार्यजीनी साथे श्रीगिरिराज आव्या. पछी श्रीआचार्यजी पोते अवधूतदासने कछे, के तमे गोविंदकुंडमां न्हाय लो. त्यारे अवधूतदास गोविंदकुंडमां न्हाय आव्या. पछी श्रीआचार्यजी पोते गोविंदकुंडमां स्नान करीने मंदिरमां पधार्या. ते समये श्रीगोवर्द्धन-धरने राजभोग आव्यो हुतो. त्यारे समय थये भोग सरायी अवधूतदासने पोलावीने

सो श्रीगुसांईजी आपु चतुःश्लोकी में कहे हैं—

‘ विजातीयजनाकीर्णं निजधर्मस्य गोपनं ।

देशे विधाय सततं स्थैर्यमित्येव मे मतिः’ ॥ १ ॥

सो ऐसे देश में जाय जहां कोई वैष्णव नहीं होय, तहां अपने धर्म कों प्रकट न करें, तो अपना धर्म रहे । सो काहेतें ? जो-लौकिक हू में पनारो है । सो तासों, न्हायो होइ सो बचिके चले । तासों उत्तम जनकों सब प्रकारसों बचनो परे । जैसे उत्तम सामग्री है ताकों अनेक जतनसों बचावे, तब श्रीठाकुरजीके भोग जोग रहे । तैसे ही वैष्णव धर्म है । तासों या धर्म की रक्षा राखे तो रहै । यह सिद्धांत प्रगट कियो ।

सो वे कृष्णदास ऐसे देकी परम कृपापात्र भगवदीय हते ।

वार्ता-प्रसंग २—और श्रीगोवर्द्धननाथजी को सिंगार बंगाली करते । सो श्रीआचार्यजीने श्रीगोवर्द्धननाथजी कों मीना के सब आभरन समराय दिचे हते । और मोरपक्ष को मुकुट, काछिनी, बागा सब बनवाय दिचे हते । बंगाली श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा करते । जो भेट श्रीगोवर्द्धननाथजी के आवती सो बंगाली जोरिके सब अपने गुरुन के यहां पठावन लागे । सो जब श्रीआचार्यजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में कृष्णदास कों अधिकारी किये, तब कृष्णदास मथुरा आगरे तें सामग्री लाय देते ।

धर्मने गोप्य राखे तेथी श्रीगुसांईजी पोते चतुःश्लोकीमां कडे छे, ‘ विजातीयजना ’ (उपर लुख्ये) । जेवा देशमां नय नयां कौछ वैष्णव न होय त्यां पोतानो धर्म प्रकट न करे त्यारे पोतानो धर्म रहे. केमके ? दौकिकमां पणु परनाणो छे तेथी न्हायो होय ते अर्थीने आदे. तेम उत्तम जनने अथा प्रकारथी अयवुं पडे. त्यारे श्रीठाकुरजीना भोग योग रहे तेवोअ वैष्णव धर्म छे. तेथी आ धर्मनी रक्षा राखे तो रहे. जे सिद्धांत प्रकट कर्यो.

वार्ता-प्रसंग २-पणी श्रीगोवर्द्धननाथजीने शृंगार अंगादी करता. श्रीआचार्यजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीने मीनानां अथां आभरण सिद्ध करायां हुतां अने मोरपक्षनो मुकुट, काछनी बागा अथुं बनवावी दीवुं हुतुं. अंगादी श्रीगोवर्द्धननाथजीने सेवा करता हुता. पणी श्रीगोवर्द्धननाथजीने भेट आवती ते बेगी करीने अथी पोताना गुरुने त्यां भेटलाववा लाया. ते न्यारे श्रीआचार्यजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीना मंदिरमां कृष्णदासने अधिकारी कर्यो त्यारे कृष्णदास मथुरा आगराथी सामग्री लायो देता.

भावप्रकाश—और एक अवधूतदास श्रीआचार्यजी के सेवक होते सो ब्रज में फिरयो करते, सो वे बड़े कृपापात्र भगवदीय होते, सो अडींग के वासी होते । सो अवधूतदासजी कुमारिका के जूथ में है । सो रासपंचाध्याई में जब श्री-ठाकुरजी प्रगट भये, तब ये भक्त सगरे, स्वरूप को दरसन करिके नेत्र मूंदिके योगी की नाई मगन होय गये । सो ये भक्तको प्रागद्य अवधूतदासजी को है । सो लीला में इनको नाम 'केतिनी' है । सो अडींग में एक सनोढ़िया ब्राह्मण के घर जन्मे । जब ब्रज में अकाल परयो, तब मा बाप बनिया कों वेटा देके आपु तो पूरव कों गये । पाछे अवधूतदास घरस पंद्रहके भये । तब वह बनियाको घर छोड़िके मथुरा में आयके श्रीआचार्यजी के दरसन करि विनती कीनी । जो-महाराज ! मोकों सरन लीजिये । तब श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो-हमारे संग श्रीगोवर्द्धन कों चलो, जो-श्रीनाथजी के सान्निध्य सरन लेंयंगे । तब अवधूतदास श्रीआचार्यजी के संग श्रीगिरिराज आये । पाछे श्रीआचार्यजी आपु अवधूतदास तें कहे, जो-तुम गोविंदकुंड में न्हाय लेहु । तब अवधूतदास गोविंदकुंड में न्हाय आये । पाछे श्री-आचार्यजी आपु गोविंदकुंड में स्नान करिके मंदिर में पधारे । ता समय श्रीगो-वर्द्धनधर कों राजभोग आयो हतो । तब समय भये भोग सराय अवधूतदास कों बुलायके श्रीगोवर्द्धनधर के सान्निध्य वैठाय नाम निवेदन करवायो । तब

भावप्रकाश—एक अवधूतदास श्रीआचार्यजीना सेवक हुता ते ब्रजमां इयां करता. ये महान कृपापात्र भगवदीय हुता. ते अडींगना वासी हुता. ते अवधूतदासल कुमारिकाना यूथमां छे. ते रासपंचाध्याईमां न्यारे श्रीठाकुरल प्रकट थया त्यारे आ लक्ष्मण थया स्वर्णनां दर्शन करीने नेत्र मूंदीने योगीनी माइक भगन थय गया. ये लक्ष्मण (मां) तुं प्राकृत्य अवधूतदासतुं छे लीलामां येभनुं नाम ' केतिनी ' छे. ते अडींगमां एक सनोडीया ब्राह्मणना धरे जन्म्या. न्यारे ब्रजमां अकाल पड्यो त्यारे मा-गाप वाखियाने गेटो आपीने पोते पूरवमां गया पछी अवधूतदास वर्ष पंद्रना थया, त्यारे ये वाखियानुं धर छोडीने मथुरामां आपीने श्रीआचार्यजीनां दर्शन करी विनंती करी, के महाराज ! मने शरणे वी. त्यारे श्रीआचार्यजी पोते कडे, के अमारि साथे श्रीगोवर्द्धन आवी. श्रीनाथजीना सान्निध्य शरणे लक्ष्मणुं. त्यारे अवधूतदास श्री-आचार्यजीनी साथे श्रीगिरिराज आव्या. पछी श्रीआचार्यजी पोते अवधूतदासने कडे, के तमे गोविंदकुंडमां न्हाय वी. त्यारे अवधूतदास गोविंदकुंडमां न्हाय आव्या. पछी श्रीआचार्यजी पोते गोविंदकुंडमां स्नान करीने मंदिरमां पधारा. ते समये श्रीगोवर्द्धन-धरने राजभोग आव्यो हुतो. त्यारे समय थये भोग सरायी अवधूतदासने भोलापीने

सो श्रीगुसांईजी आपु चतुःश्लोकी में कहे हैं—

‘ विजातीयजनाकीर्णं निजधर्मस्य गोपनं ।

देशे विधाय सततं स्थेयमित्येव मे मतिः’ ॥ १ ॥

सो ऐसे देश में जाय जहां कोई वैष्णव नहीं होय, तहां अपने धर्म कों प्रकट न करें, तो अपना धर्म रहे । सो काहेतें ? जो-लौकिक हू में पनारो है । सो तासों, न्हायो होइ सो बचिके चले । तासों उत्तम जनकों सब प्रकारसों बचनो परे । जैसे उत्तम सामग्री है ताकों अनेक जतनसों बचावे, तब श्रीठाकुरजीके भोग जोग रहे । तैसे ही वैष्णव धर्म है । तासों या धर्म की रक्षा राखे तो रहै । यह सिद्धांत प्रगट कियो ।

सो वे कृष्णदास एसें देकी परम कृपापात्र भगवदीय हते ।

वार्ता-प्रसंग २—और श्रीगोवर्द्धननाथजी को सिंगार बंगाली करते । सो श्रीआचार्यजीने श्रीगोवर्द्धननाथजी कों मीना के सब आभरन समराय दिये हते । और मोरपक्ष को सुकुट, काछिनी, वागा सब बनवाय दिये हते । बंगाली श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा करते । जो भेट श्रीगोवर्द्धननाथजी के आवती सो बंगाली जोरिके सब अपने गुरुन के यहां पठावन लागे । सो जब श्रीआचार्यजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में कृष्णदास कों अधिकारी किये, तब कृष्णदास मथुरा आगरे तें सामग्री लाय देते ।

धर्मने गोप्य राखे तेथी श्रीगुसांईजी पोते यतुःप्रदोकीमां कडे छे, ‘ विजातीयजना० ’ (उपर लुखो) . एवा देशमां न्यय न्यां कोछ वैष्णव न होय त्यां पोतानो धर्म प्रकट न करे त्यारे पोतानो धर्म रहे. केमके ? लौकिकमां पणु परनाणो छे तेथी न्हायो होय ते अथीने खादे. तेम उत्तम जनने अधा प्रकारथी अथयुं पडे. त्यारे श्रीठाकुरजीना लोग योग रहे तेवोअ वैष्णव धर्म छे. तेथी आ धर्मनी रक्षा राखे तो रहे. ए सिद्धांत प्रकट क्यो.

वार्ता-प्रसंग २-वणी श्रीगोवर्द्धननाथजीने शृंगार अंगादी करता. श्रीआचार्यजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीने मीनानां अधां आभरण सिद्ध करव्यां हुतां अने मोरपक्षने सुकुट, काछनी वागा अधुं बनवावी दीधुं हुतुं. अंगादी श्रीगोवर्द्धननाथजीनी सेवा करता हुता. पछी श्रीगोवर्द्धननाथजीने भेट आवती ते लेगी करीने अधी पोताना गुरने त्यां भेटदाववा लाग्या. ते न्यारे श्रीआचार्यजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीना मंदिरमां कृष्णदासने अधिकारी क्यो त्यारे कृष्णदास मथुरा आगराथी सामग्री लायो देता.

श्रीगोवर्द्धननाथजी की इच्छा ऐसी है, जो-बंगालीन कों निकासिवे की। तासों आपु या बात में बोलो भति। तासों मैं जैसे बनेगी वैसे बंगालीन कों काढूंगो। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-अवश्य, बंगालीन कों निकास्यो चाहिये। जो बहुत दिन रहेंगे तब झगरो करेंगे। तब कृष्णदास ने कही, जो-महाराज ! मोकों दोय पत्र लिखि दीजिये। सो एक तो राजा टोडरमल्ल के नाम को, और एक राजा वीरबल के नाम को। तब श्रीगुसांईजी आपु दोय पत्र लिखि दिये। जो कृष्णदास श्रीगोवर्द्धन में है सो ये तुमसों कहे, सो करि दीजो। जो हमकों बंगाली काढने हैं, और सेवक राखने हैं। और कृष्णदास श्रीगोवर्द्धननाथजी के अधिकारी हैं, तासों ये करें सो हमकों प्रमाण है। सो यह लिखिके कृष्णदास कों दोऊ पत्र दिये। तब कृष्णदास श्रीगुसांईजी कों दंडवन करिके चले, सो कछुक दिन में आगरे में आये। तब राजा टोडरमल्ल कों और वीरबल कों दोऊ पत्र श्रीगुसांईजी के हस्ताक्षरके दिखाये, तब उन कह्यो, जो-तुम कहो सो हम करें। तब कृष्णदास ने कही, जो-अब तो मैं श्रीनाथजीद्वार बंगालीन कों काढिवे कों जात हूँ। जो कदाचित् बंगालीन के गुरु श्रीवृन्दावन में हैं सो देशाधिपति के आगे पुकारें तब उनकी ठीक राखियो। तब उन दोऊ जनेन ने कही,

राज्या छे. तेथी भंगादी डेम निकणशे ? त्यारे कृष्णदासे कछुं डे महाराज ! श्रीगोवर्द्धनधरल्लनी धर्या अेवी छे भंगादीअेने डाढवानी. तेथी आपु आ बातमां पोलो नही. तेथी हुं नेम अनशे तेम भंगादीअेने डाढीश. त्यारे श्रीगुसांइअे कछुं ने अवश्य भंगादीअेने डाढवा जेधअे. आहु द्विपस रादेशे त्यारे अघडा करशे. त्यारे कृष्णदासे कछुं, महाराज ! मने भे पत्र लभी हो. अेक तो राज टोडरमल्लना नामना अने अेक राज भीरमल्लना नामना. त्यारे श्रीगुसांइअे पोते भे पत्रो लभी दीवा डे कृष्णदास गोवर्द्धनमां छे ते तमने कहे ते करी देजे. अमारे भंगादी डाढवा छे अने भील सेवक राभवा छे. अने कृष्णदास श्रीगोवर्द्धननाथल्लना अधिकारी छे. तेथी अे कहे ते अमने प्रभाळु छे. आ लभीने कृष्णदासने भे पत्रो आया. त्यारे कृष्णदास श्रीगुसांइअेने दंडवत करीने आढया. ते थोडाक द्विपसमां आग्रामां आढया. त्यारे राज टोडरमल्लने अने भीरमल्लने अने पत्र श्रीगुसांइअेना हस्ताक्षरना देषाडया. त्यारे अेभले कछुं डे तमे कडा ते अमे करीअे. त्यारे कृष्णदासे कछुं, डे लभलां तो हुं श्रीनाथल्लद्वार भंगादीअेने डाढवाने जडि छुं. जे कदाचित् भंगादीअेना गुरु वृंदावनमां छे ते देशाधिपति आगण पोकारे त्यारे अेमनी अपर राभजे. त्यारे अे अने जहाअे

श्रीगुसाईजी के पास आये। तब श्रीगुसाईजी कों दंडवत किये। पाछें श्रीगुसाईजी पूछे, जो-कृष्णदास! तुम श्रीनाथजी की सेवा छोड़िके क्यों आये? तब कृष्णदास ने कही, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी कों अपनो वैभव बढावनो है, और बंगालीन की चुटिया में एक देवी है, सो राज-भोग के समें बैठावत हैं। और जो-भेट आवत है सो सब वृन्दावन में अपने गुरुन कों पठाय देन हैं। सो अबही तें काहू को मानत नाहीं हैं। सो आगे बहोत दिन ताई बंगाली रहेंगे तो झगड़ो बढेगो। तासों बंगालीन कों आपु काढिवे की आज्ञा दीजिये, सो मैं जायके काढूंगो। तब श्रीगुसाईजी आपु कृष्णदास सों कहे, जो-श्रीगोपीनाथजी पहेलो परदेस पूरवको कियो हतो, सो एक लक्ष रुपया पूरव सों भेट आई हती। सो गोपीनाथजी प्रथम अडेल में आयके कहे। जो-यह पहले परदेस की भेट श्रीगोवर्द्धननाथजी की है। सो यह कहिके लक्ष रुपया लेके श्रीगोपीनाथजी श्रीजीद्वार पधारै, सो तहां रूपे सोने के थार, कटोरा श्रीनाथजी कों कराये। ता पाछें सेवा सिंगार करि श्रीगोपीनाथजी अडेलमें आये। तब बंगाली सब मिलिकें सगरे थार कटोरा द्रव्य वृन्दावन में अपने गुरुन के यहां पठाय दिचे। सो सब समाचार हमारे पास आये परि हम कहा करें? जो बंगालीन कों श्रीआचार्यजीने राखे हैं। सो तासों बंगाली कैसे निकसेंगे। तब कृष्णदासने कह्यो, जो-महाराज!

धर्या. पछी श्रीगुसाईजी पूछे के कृष्णदास ! तमे श्रीनाथजीनी सेवा छे. डीने डेम आख्या ? त्यारे कृष्णदासे कछुं. के श्रीगोवर्द्धननाथजीने पोताना वैभव पधारवो छे अने अंगादीओनी योदसीमां अेक देवी छे तेने राजभोगना सामे भेसाउ छे अने जे सेट आवे छे ते अथा वृन्दावनमां पोताना गुरुने भोडसी द छे. लुंभलांथीज ते डेअने भानतानथी. अेथी आगण अहु द्विस सुधी अंगादी रहेशे तो अघउा थशे. तथी अंगादीओने डाडवानी आज्ञा आपो. हुं नधने डादीश. त्यारे श्रीगुसाईजी पोते कृष्णदासने कहे के श्रीगोपीनाथजीअे पहलेो परदेश पूरवने धर्या हुतो. त्यारे अेक लाख रुपीआ पूरवथी सेट आवी हुती. त्यारे श्रीगोपीनाथजीअे प्रथम अडेसमां आवीने कछुं, के आ पहेसा परदेशनी सेट श्रीनाथजीनी छे. अेम कहीने लाख रुपीआ लधने श्रीगोपीनाथजी श्रीजीद्वार पधार्या. त्यां रुपी सोनाना थाण डोरा श्रीनाथजीने डराव्या. ते पछी सेवा शृंगार करी श्रीगोपीनाथजी अडेसमां आव्या. त्यारे अंगाणी अथा भणीने अथा थाण डोरा द्रव्य वृन्दावनमां पोताना गुरुने त्यां भोडसी दीधां. ते अथा समाचार अमारी पास आव्या परंतु अमे शुं करीअे ? अंगादीओने श्रीआचार्यजीअे

श्रीगोवर्द्धननाथजी की इच्छा ऐसी है, जो-बंगालीन कों निकासिवे की। तासों आपु या बात में बोलो मति। तासों मैं जैसे बनेगी वैसे बंगालीन कों काढूंगे। तब श्रीगुसाईजी कहे, जो-अवश्य, बंगालीन कों निकास्यो चाहिये। जो बहुत दिन रहेंगे तब झगरो करेंगे। तब कृष्णदास ने कही, जो-महाराज ! मोकों दोय पत्र लिखि दीजिये। सो एक तो राजा टोडरमल्ल के नाम को, और एक राजा वीरवल के नाम को। तब श्रीगुसाईजी आपु दोय पत्र लिखि दिये। जो कृष्णदास श्रीगोवर्द्धन में है सो ये तुमसों कहे, सो करि दीजो। जो हमकों बंगाली काढने हैं, और सेवक राखने हैं। और कृष्णदास श्रीगोवर्द्धननाथजी के अधिकारी हैं, तासों ये करें सो हमकों प्रमाण है। सो यह लिखिके कृष्णदास कों दोऊ पत्र दिये। तब कृष्णदास श्रीगुसाईजी कों दंडवन करिके चले, सो कछुक दिन में आगरे में आये। तब राजा टोडरमल्ल कों और वीरवल कों दोऊ पत्र श्रीगुसाईजी के हस्ताक्षरके दिग्वाये, तब उन कह्यो, जो-तुम कहो सो हम करें। तब कृष्णदास ने कही, जो-अब तो मैं श्रीनाथजीद्वार बंगालीन कों काढिवे कों जात हूँ। जो कदाचित् बंगालीन के गुरु श्रीवृन्दावन में हैं सो देसाधिपति के आगे पुकारें तब उनकी ठीक राखियो। तब उन दोऊ जनेन ने कही,

राज्या छे. तेथी अंगादी केम निकणशे ? त्यारे कृष्णदासे कछुं के महाराज ! श्रीगोवर्द्धनधरलुनी धरुण्ये अेवी छे अंगादीअेने डाढवानी. तेथी आपु आ वातमां ओलो नही. तेथी हुं जेम अनशे तेम अंगादीअेने डाढीश. त्यारे श्रीगुसांभलुअे कछुं जे अवश्य अंगादीअेने डाढवा जेधअे. अहु द्विस राडेशे त्यारे अधडा करशे. त्य रे कृष्णदासे कछुं, महाराज ! मने जे पत्र लभी हो. अेक तो राज टोडरमलना नामने अने अेक राज भीरमलना नामने. त्यारे श्रीगुसांभलुअे पोते जे पत्रो लभी दीवा के कृष्णदास गोवर्द्धनमां छे ते तमने कहे ते करी देजे. अमारे अंगादी डाढवा छे अने भील सेवक राअवा छे. अने कृष्णदास श्रीगोवर्द्धननाथलुना अधिकारी छे. तेथी अे कहे ते अमने प्रभाषु छे. आ लभीने कृष्णदासने जे पत्रो आथ्या. त्यारे कृष्णदास श्रीगुसांभलुने दंडवत करीने आढया. ते थोडाक द्विसमां आथ्रामां आढया. त्यारे राज टोडरमलने अने भीरमलने अने पत्र श्रीगुसांभलुना हस्ताक्षरना देआढया. त्यारे अेमणे कछुं के तमे करे। ते अमे करीअे. त्यारे कृष्णदासे कछुं, के लभलां तो हुं श्रीनाथलुद्वार अंगादीअेने डाढवाने जे छुं. जे कदाचित् अंगादीअेना गुरु वृंदावनमां छे ते देशधिपति आगण पोकारे त्यारे अेमनी अथर राअजे. त्यारे अे अने जहाअे

जो-तुम जाउ । तुमकों श्रीगुसांईजी की आज्ञा होय सो करो । जो हम ठीक राखेंगे । पाछें कृष्णदास आगरे तें चले सो मथुरा आये । पाछें मथुरा तें श्रीगोवर्द्धन आये । तहाँ मारग में अवधूतदास मिले । तब अवधूतदास ने कही, जो-कृष्णदास ! हील क्यों करि राखी है ? जो श्रीनाथजी कों अपुनो वैभव बढ़ावनो है । तासों बंगालीन कों वेगि काढो । जो श्रीगोवर्द्धनधर की इच्छा है । तब कृष्णदास ने कही, जो-मैं श्रीगुसांईजी की आज्ञा ले आयो हूँ । और अब जातही बंगालीन कों काढत हूँ । सो यह कहिके कृष्णदास चले, सो श्रीनाथजीद्वार आये । सो रुद्रकुंड ऊपर आय बंगालीन की झोंपरी में आँच लगवाय दीनी । तब सोर भयो । सो सगरे बंगाली श्रीनाथजी की सेवा छोड़ि के परवत तें नीचे उतरि के अपनी अपनी झोंपरी में आये, सो अग्नि बुझावन लागे । तब कृष्णदास ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में सब ठौर अपने मनुष्य ब्रजवासी दोयसे राखे (हते) सो बैठारि दिचे । और कछो, जो-कोई बंगाली पर्वत ऊपर चढ़ें ताकों तुम चढ़न मत दीजो । और ब्राह्मण सेवक भीतरियान सों कहे, जो-तुम श्रीनाथजी की सेवा में सावधान रहियो । तब यह कहिके कृष्णदास परवत तें नीचे हाथ में लकड़ी लेके ठाड़े भये । पाछें बंगाली अग्नि बुझाय के सगरे आये, सो पर्वत ऊपर मंदिर में

इहुं, के तमे जव. तमने श्रीगुसांईजीनी आज्ञा होय तेम करो. अमे ठीक राखे. पछी कृष्णदास आयाथी याव्या ते मथुरा आया. पछी. मथुराथी गोवर्द्धन आया त्यां मार्गमां अवधूतदास भया. त्यारे अवधूतदासे इहुं, के कृष्णदास ! हील केम करी राखी छे ? श्रीनाथजीने पोतानो वैभव पधारयो छे तेथी अंगालीओने नददी काढो. श्रीगोवर्द्धनधरनी इच्छा छे त्यारे कृष्णदासे इहुं, के हुं श्रीगुसांईजीनी आज्ञा लध आया छुं अने हुवे नतांज अंगालीओने कांडं छुं. अे इहोंने कृष्णदास याव्या ते श्रीनाथजीद्वार आया. ते रुद्रकुंड उपर आवीने अंगालीनी ओ'परीमां आग लगा-डावी दीधी. त्यारे शेर थयो अेठले अधा अंगाली श्रीनाथजीनी सेवा छोडीने परवतथी नीचे उतरिने पोत-पोतानी ओ'परीमां आया. ते अग्नि बुझावा लाया. त्यारे कृष्णदासे श्रीगोवर्द्धननाथजीना मंदिरमां अधी जगे पोताना मनुष्य ब्रजवासी असे राख्या हुता ते पेसाही दीधा अने इहुं के कोई अंगाली पर्वत उपर चढ़े तेने तमे यथान देता. अने ब्राह्मण सेवक भीतरियाओने इहुं, के तमे श्रीनाथजीनी सेवामां सावधान रहेजे. अेअ इहोंने कृष्णदास पर्वतथी नीचे हाथमां लाकड़ी लधने उला रखा.

चढ़न लागे । तब कृष्णदास ने उन बंगालीन सों कह्यो, जो-अब तिहारो काम सेवा में नाहीं है । जो हमने और चाकर राखे हैं, सो सेवा करन कों गये हैं । तब बंगालीन ने लरिवे की तैयारी करी, और कह्यो, जो-हमारे ठाकुर हैं, जो हमकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें राखे हैं । सो तब लराई भई । पाछें कृष्णदास ने बंगालीन कों भजाय दिये । तब सगरे बंगाली भाजे । तब मथुराजी में आय के रूपसनातन सों सगरी बात कही, जो-कृष्णदास जाति को शूद्र, सो सगरेन की झोंपरी जराय दीनी । और सबनकों मारि के सेवा में ते बाहिर काढ़ि दिये हैं । सो या प्रकार बात करत हतें, इतने में कृष्णदास हू रथ पर चढ़िके पचास ब्रजवासी हथियारबंध संग ले श्रीमथुराजी में आये, सो पहले रूपसनातन के पास आये । तब रूपसनातन ने कृष्णदास सों खीजि के कह्यो, जो-क्योरे ! शूद्र ! तैने इन ब्राह्मणन कों क्यों मारयो है ? जो-यह बात देसाधिपति सुनेगो, तब तू कहा जुवाव देयगो ? तब कृष्णदास ने कह्यो, जो-हूँ तो शूद्र हौं । परि मैं ब्राह्मणन कों सेवक तो नाहीं करत हों । तुमहू तो अग्निहोत्री ब्राह्मण नाहीं हो । तुमहू तो कायस्थ हो, कायस्थ होयके इन ब्राह्मणन कों दंडवत कराय सेवक करत हो, सो तुमहू जवाव देत में बहोत दुःख पावोगे । जो-तुमसों

पत्नी अंगाली अग्नि अग्निहोत्री अथवा अग्निहोत्री । ते पर्वत उपर मंदिरमां यद्वा लाग्या त्त्यारे कृष्णदासे ते अंगालीअने कछुं, के लवे तमाइं काम सेवामां नथी अमे भीज याकर राख्या छे अ सेवा करवाने गया छे । त्त्यारे अंगालीअने लडवानी तैयारी करी अने कछुं के अमारो हाकर छे । अमने श्रीआचार्यअ महाप्रभुअे राख्या छे । पत्नी कृष्णदासे अंगालीअने लगाडी दीधा । त्त्यारे मथुरामां आवीने रूपसनातनने अथी वात कही, के कृष्णदास जतिने शूद्र अेल्ले अधानी अंपडी अणावी दीधी अने अधाने भारीने सेवामांथी अहार हाडी दीधा छे । आ प्रकारे वात करता लता अेटलांमां कृष्णदास पल्लु रथ उपर यडीने पयास प्रजवासीअे लुथियारअंध साथे लछने श्रीमथुराअमां आव्या । ते पछेलां रूपसनातननी पास गेया । त्त्यारे रूपसनातने कृष्णदासने भीअने कछुं, के केम रे शूद्र ? ते आ आहल्लेने केम मार्या छे ? अ वात दशाधिपति सांखणशे तो तूं शेा जवाअ आवीश ? त्त्यारे कृष्णदासे कछुं, लुं तो शूद्र छुं परंतु मे आहल्लेने सेवक नथी क्यार् । तमे पल्लु अग्निहोत्री आहल्ले तो नथी । तमेय पल्लु कायस्थ छे । कायस्थ थछने आ आहल्लेने दंडवत करवी सेवक करे छे । ते तमे पल्लु जवाअ देवामां अहु दुःख पावोगे । तमा-

जो-तुम जाउ । तुमको श्रीगुसाईजी की आज्ञा होय सो करो । जो हम ठीक राखेंगे । पाछें कृष्णदास आगरे तें चले सो मथुरा आये । पाछें मथुरा तें श्रीगोवर्द्धन आये । तहाँ मारग में अवधूतदास मिले । तब अवधूतदास ने कही, जो-कृष्णदास ! ढील क्यों करि राखी है ? जो श्रीनाथजी को अपुनो वैभव बढावनो है । तासों बंगालीन को वेगि काढो । जो श्रीगोवर्द्धनधर की इच्छा है । तब कृष्णदास ने कही, जो-मैं श्रीगुसाईजी की आज्ञा ले आयो हूँ । और अब जातही बंगालीन को काढत हूँ । सो यह कहिके कृष्णदास चले, सो श्रीनाथजीद्वार आये । सो रुद्रकुंड ऊपर आय बंगालीन की झोंपरी में आँच लगवाय दीनी । तब सोर अयो । सो सगरे बंगाली श्रीनाथजी की सेवा छोड़ि के परवत तें नीचे उतरि के अपनी अपनी झोंपरी में आये, सो अग्नि बुझावन लागे । तब कृष्णदास ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में सब ठौर अपने मनुष्य ब्रजवासी दोयसे राखे (हते) सो बैठारि दिये । और कह्यो, जो-कोई बंगाली पर्वत ऊपर चढ़ें ताको तुम चढ़न मत दीजो । और ब्राह्मण सेवक भीतरियान सो कहे, जो-तुम श्रीनाथजी की सेवा में सावधान रहियो । तब यह कहिके कृष्णदास परवत तें नीचे हाथ में लकड़ी लेके ठाड़े भये । पाछें बंगाली अग्नि बुझाय के सगरे आये, सो पर्वत ऊपर मंदिर में

इहें, के तमे जय, तमने श्रीगुसांछली आज्ञा होय तेम करो. अमे ठीक राख्यु. पछी कृष्णदास आथाथी आल्या ते मथुरा आल्या. पछी मथुराथी गोवर्द्धन आल्या त्यां भागंभां अवधूतदास भल्या. त्यारे अवधूतदासे इहुं, के कृष्णदास ! ढील केम करी राखी छे ? श्रीनाथलने पोतानो वैभव वधारयो छे तेथी अंगासीओने नवदी काढो. श्रीगोवर्द्धनधरनी भ्रंश छे त्यारे कृष्णदासे इहुं, के हुं श्रीगुसांछली आज्ञा लभ आल्या छुं अने हुवे जतांन अंगासीओने कांडं छुं. अे इहाने कृष्णदास आल्या ते श्रीनाथलद्वार आल्या. ते इद्रकुंड उपर आंवीने अंगासीनी ओपदीमां आग लगा-टावी दीधी. त्यारे शोर थयो अेटले अथा अंगासी श्रीनाथलनी सेवा छोडीने परवतथी नीचे उतरनीने पोत-पोतानी ओपदीमां आल्या. ते अग्नि बुझावा लाग्या. त्यारे कृष्णदासे श्रीगोवर्द्धननाथलना मंदिरमां अधी नगे पोताना मनुष्य ब्रजवासी असे राख्या हुता ते पेसाही दीधा अने इहुं के इधं अंगासी पर्वत उपर यह तेने तमे यदवा न देता. अने ब्राह्मण सेवक भीतरियाओने इहुं, के तमे श्रीनाथलनी सेवामां सावधान रहुंने. अेम इहाने कृष्णदास पर्वतथी नीचे हाथमां लाकडी लभने उला रद्या.

चढ़न लागे । तब कृष्णदास ने उन बंगालीन सों कह्यो, जो-अब तिहारो काम सेवा में नाहीं है । जो हमने और चाकर राखे हैं, सो सेवा करन कों गये हैं । तब बंगालीन ने लरिवे की तैयारी करी, और कह्यो, जो-हमारे ठाकुर हैं, जो हमकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें राखे हैं । सो तब लराई भई । पाछें कृष्णदास ने बंगालीन कों भजाय दिये । तब सगरे बंगाली भाजे । तब मथुराजी में आय के रूपसनातन सों सगरी बात कही, जो-कृष्णदास जाति को शूद्र, सो सगरेन की झोंपरी जराय दीनी । और सबनकों मारि के सेवा में ते बाहिर काढ़ि दिये हैं । सो या प्रकार बात करत हते; इतने में कृष्णदास हू रथ पर चढ़िके पचास ब्रजवासी हथियारबंध संग ले श्रीमथुराजी में आये, सो पहले रूपसनातन के पास आये । तब रूपसनातन ने कृष्णदास सों खीजि के कह्यो, जो-क्योंरे ! शूद्र ! तैने इन ब्राह्मणन कों क्यों मारयो है ? जो-यह बात देसाधिपति सुनेगो, तब तू कहा जुवाव देयगो ? तब कृष्णदास ने कह्यो, जो-हूँ तो शूद्र हौं । परि मैं ब्राह्मणन कों सेवक तो नाहीं करत हों । तुमहू तो अग्निहोत्री ब्राह्मण नाहीं हो । तुमहू तो कायस्थ हो, कायस्थ होयके इन ब्राह्मणन कों दंडवत कराय सेवक करत हो, सो तुमहू जवाब देत में बहोत दुःख पावोगे । जो-तुमसों

पछी अंगाली अग्नि पुत्राचीने अधा व्याख्या. ते पर्वत उपर मंदिरमां यदवा लाग्या त्यारे कृष्णदासे ते अंगालीओने कछुं, के हवे तमाइं काम सेवामां नथी अमे भीज याकर राख्या छे अे सेवा करवाने गया छे. त्यारे अंगालीओने लडवानी तैयारी करी अने कछुं के अमारो ठाकुर छे. अमने श्रीआचार्यल महाप्रभुअे राख्या छे. पछी कृष्णदासे अंगालीओने लगाडी दीधा. त्यारे मथुरामां आचीने रूपसनातनने अधी वात कही, के कृष्णदास जातिने शूद्र अेखे अधानी झोंपडी अणाची दीधी अने अधाने भारीने सेवामांथी अहार डाडी दीधा छे. आ प्रकारे वात करता हुता अेटलामां कृष्णदास पखु रथ उपर यदीने पयास ब्रजवासीओे हथियारबंध साथे लधने श्रीमथुरालमां व्याख्या. ते पहेलां रूपसनातननी पासे गया. त्यारे रूपसनातने कृष्णदासने भीलने कछुं, के केम रे शूद्र ? ते आ आहल्लेने केम भार्या छे ? अे वात देसाधिपति सांलणशे तो तूं शेा नवाअ आपीश ? त्यारे कृष्णदासे कछुं, हुं तो शूद्र छुं परंतु मे आहल्लेने सेवक नथी कर्या. तमे पखु अग्निहोत्री आहल्ले तो नथी. तमेय पखु कायस्थ छे. कायस्थ थधने आ आहल्लेने दंडवत करावी सेवक करे छे. ते तमे पखु नवाअ देवामां अहु दुःख पावशे. तमा-

जो-तुम जाउ । तुमकों श्रीगुसाईंजी की आज्ञा होय सो करो । जो हम ठीक राखेंगे । पाछें कृष्णदास आगरे तें चले सो मथुरा आये । पाछें मथुरा तें श्रीगोवर्द्धन आये । तहाँ मारग में अवधूतदास मिले । तब अवधूतदास ने कही, जो-कृष्णदास ! ढील क्यों करि राखी है ? जो श्रीनाथजी को अपुनो वैभव बढावनो है । तासों बंगालीन को वेगि काढो । जो श्रीगोवर्द्धनधर की इच्छा है । तब कृष्णदास ने कही, जो-मैं श्रीगुसाईंजी की आज्ञा ले आयो हूँ । और अब जातही बंगालीन को काढत हूँ । सो यह कहिके कृष्णदास चले, सो श्रीनाथजीद्वार आये । सो रुद्रकुंड ऊपर आय बंगालीन की झोंपरी में आँच लगवाय दीनी । तब सोर भयो । सो सगरे बंगाली श्रीनाथजी की सेवा छोडि के परवत तें नीचे उतरि के अपनी अपनी झोंपरी में आये, सो अग्नि बुझावन लागे । तब कृष्णदास ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में सब ठौर अपने मनुष्य ब्रजवासी दोयसे राखे (हते) सो बैठारि दिचे । और कह्यो, जो-कोई बंगाली पर्वत ऊपर चढ़ें ताकों तुम चढ़न मत दीजो । और ब्राह्मण सेवक भीतरियान सो कहे, जो-तुम श्रीनाथजी की सेवा में सावधान रहियो । तब यह कहिके कृष्णदास परवत तें नीचे हाथ में लकुरी लेके ठाड़े भये । पाछें बंगाली अग्नि बुझाय के सगरे आये, सो पर्वत ऊपर मंदिर में

इहुं, के तमे जव. तभने श्रीगुसांछलीनी आज्ञा होय तेम करे. अमे ठीक राखु. पछी कृष्णदास आयाथी यादया ते मथुरा आया. पछी. मथुराथी गोवर्द्धन आया त्यां मार्गमां अवधूतदास भया. तयारे अवधूतदासे इहुं, के कृष्णदास ! ढील केम करी राभी छे ? श्रीनाथलने पोताने वैभव पधारयो छे तेथी अंगासीओने नदही काढे. श्रीगोवर्द्धनधरनी इच्छा छे तयारे कृष्णदासे इहुं, के हुं श्रीगुसांछलीनी आज्ञा लभ आया छुं अने लुवे जतांन अंगासीओने काढं छुं. अे इहाने कृष्णदास यादया ते श्रीनाथलद्वार आया. ते इद्रकुंड ऊपर आवीने अंगासीनी ओपडीमां आग लगा-डावी दीधी. तयारे शोर थयो अेठले पधा अंगासी श्रीनाथलनी सेवा छोडीने परवतथी नीचे उतरिने पोत-पोतानी ओपडीमां आया. ते अग्नि लुजावा लाग्या. तयारे कृष्णदासे श्रीगोवर्द्धननाथलना मंदिरमां पधी जगे पोताना मनुष्य ब्रजवासी असे राख्या उता ते पेसाही दीधा अने इहुं के इध अंगासी पर्वत ऊपर चढे तेने तमे यदवा न देता. अने आहाल सेवक सीतरियाओने इहुं, के तमे श्रीनाथलनी सेवामां सावधान रहने. अेम इहाने कृष्णदास पर्वतथी नीचे हाथमां लाडी लभने उला रधा.

चढ़न लागे । तब कृष्णदास ने उन बंगालीन सों कह्यो, जो-अब तिहारो काम सेवा में नाहीं है । जो हमने और चाकर राखे हैं, सो सेवा करन कों गये हैं । तब बंगालीन ने लरिवे की तैयारी करी, और कह्यो, जो-हमारे ठाकुर हैं, जो हमकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुनमें राखे हैं । सो तब लराई भई । पाछें कृष्णदास ने बंगालीन कों भजाय दिये । तब सगरे बंगाली भाजे । तब मथुराजी में आय के रूपसनातन सों सगरी बात कही, जो-कृष्णदास जाति को शूद्र, सो सगरेन की झोंपरी जराय दीनी । और सबनकों मारि के सेवा में ते बाहिर काढ़ि दिये हैं । सो या प्रकार बात करत हते, इतने में कृष्णदास हू रथ पर चढ़िके पचास ब्रजवासी हथियारबंध संग ले श्रीमथुराजी में आये, सो पहले रूपसनातन के पास आये । तब रूपसनातन ने कृष्णदास सों खीजि के कह्यो, जो-क्योंरे ! शूद्र ! तैने इन ब्राह्मणन कों क्यों मारयो है ? जो-यह बात देसाधिपति सुनेगो, तब तू कहा जुवाब देयगो ? तब कृष्णदास ने कह्यो, जो-हूँ तो शूद्र हौं । परि मैं ब्राह्मणन कों सेवक तो नाहीं करत हों । तुमहू तो अग्निहोत्री ब्राह्मण नाहीं हो । तुमहू तो कायस्थ हो, कायस्थ होयके इन ब्राह्मणन कों दंडवत कराय सेवक करत हो, सो तुमहू जुवाब देत में बहोत दुःख पावोगे । जो-तुमसों

पछी अंगाडी अग्नि जुआवीने अधा आव्या. ते पर्वत उपर भदिरभां यदवा लाग्या तयारे कृष्णदासे ते अंगाडीआने कहुं, के हवे तमाइं काम सेवामां नथी अमे भीज याकर राख्या छे अे सेवा करवाने गया छे. तयारे अंगाडीआने लडवानी तैयारी करी अने कहुं के अमारो ठाकुर छे. अमने श्रीआचार्यल महाप्रभुअे राख्या छे. पछी कृष्णदासे अंगाडीआने लगाडी दीवा. तयारे मथुरामां आवीने रूपसनातनने अधी वात कही, के कृष्णदास जातिने शूद्र अेल्ले अधानी जोंपडी अणावी दीधी अने अधाने मारीने सेवामांथी अहुर कही दीवा छे. आ प्रकारे वात करता हुता अेटदांमां कृष्णदास पल्लु रथ उपर यडीने पयास प्रजवासीआे हथियारअंध साथे लधने श्रीमथुरालमां आव्या. ते पछेदां रूपसनातननी पास गया. तयारे रूपसनातने कृष्णदासने भीजने कहुं, के केम रे शूद्र ? ते आ आह्मणेने केम मार्या छे ? अे वात देशाधिपति सांलणशे तो तू शो जवाअ आपीश ? तयारे कृष्णदासे कहुं, हुं तो शूद्र छुं परंतु मे आह्मणेने सेवक नथी कर्या. तमे पल्लु अग्निहोत्री आह्मण तो नथी. तमेय पल्लु कायस्थ छे. कायस्थ थधने आ आह्मणेने दंडवत करावी सेवक करे छे. ते तमे पल्लु जवाअ देवामां अहु दुःअ पावशे. तमा-

जो-तुम जांड । तुमकों श्रीगुसांईजी की आज्ञा होय सो करो । जो हम ठीक राखेंगे । पाछें कृष्णदास आगरे तें चले सो मथुरा आये । पाछें मथुरा तें श्रीगोवर्द्धन आये । तहाँ मारग में अवधूतदास मिले । तब अवधूतदास ने कही, जो-कृष्णदास ! ढील क्यों करि राखी है ? जो श्रीनाथजी कों अपुनो वैभव बढ़ावनो है । तासों बंगालीन कों वेगि काढो । जो श्रीगोवर्द्धनधर की इच्छा है । तब कृष्णदास ने कही, जो-मैं श्रीगुसांईजी की आज्ञा ले आयो हूँ । और अब जातही बंगालीन कों काढत हूँ । सो यह कहिके कृष्णदास चले, सो श्रीनाथजीद्वार आये । सो रुद्रकुंड ऊपर आय बंगालीन की झोंपरी में आँच लगवाय दीनी । तब सोर भयो । सो सगरे बंगाली श्रीनाथजी की सेवा छोड़ि के परवत तें नीचे उतरि के अपनी अपनी झोंपरी में आये, सो अग्नि बुझायन लागे । तब कृष्णदास ने श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में सब ठौर अपने मनुष्य ब्रजवासी दोघसे राखे (हते) सो बैठारि दिये । और कह्यो, जो-कोई बंगाली पर्वत ऊपर चढ़ें ताकों तुम चढ़न मत दीजो । और ब्राह्मण सेवक भीतरियान सो कहें, जो-तुम श्रीनाथजी की सेवा में सावधान रहियो । तब यह कहिके कृष्णदास परवत तें नीचे हाथ में लकड़ी लेंके ठाड़े भये । पाछें बंगाली अग्नि बुझाय के सगरे आये, सो पर्वत ऊपर मंदिर में

कहुं, के तमे जव. तमने श्रीगुसांईजीनी आज्ञा होय तेम करो. अमे ठीक राखुं. पछी कृष्णदास आयाथी यात्या ते मथुरा आव्या. पछी. मथुराथी गोवर्द्धन आव्या त्यां मार्गमां अवधूतदास भव्या. त्यारे अवधूतदासे कहुं, के कृष्णदास ! ढील केम करी राखी छे ? श्रीनाथजीने पोतानो वैभव पधारवा छे तेथी अंगालीआने नष्टी काढो. श्रीगोवर्द्धनधरनी धर्या छे त्यारे कृष्णदासे कहुं, के हुं श्रीगुसांईजीनी आज्ञा लभ आव्यो छुं अने हुवे जतांज अंगालीआने कांडुं छुं. अे कहुने कृष्णदास यात्या ते श्रीनाथजीद्वार आव्या. ते रुद्रकुंड उपर आवीने अंगालीनी ओपडीमां आग लगावावी दीधी. त्यारे शोर थयो अटले अथा अंगाली श्रीनाथजीनी सेवा छोडीने परवतथी नीचे उतरिने पोत-पोतानी ओपडीमां आव्या. ते अग्नि बुझावा लाग्या. त्यारे कृष्णदासे श्रीगोवर्द्धननाथजीना मंदिरमां अधी जगे पोताना मनुष्य ब्रजवासी असे राख्या हुता ते पेसाडी दीधा अने कहुं के कांछ अंगाली पर्वत उपर अठे तेने तमे यदवा न देता. अने ब्राह्मण सेवक भीतरियाआने कहुं, के तमे श्रीनाथजीनी सेवामां सावधान रहुंजे. अमे कहुने कृष्णदास पर्वतथी नीचे हाथमां लाडली लभने उला रधा.

चढ़न लागे । तब कृष्णदास ने उन बंगालीन सों कह्यो, जो-अव तिहारो काम सेवा में नाहीं है । जो हमने और चाकर राखे हैं, सो सेवा करन कौं गये हैं । तब बंगालीन ने लरिवे की तैयारी करी, और कह्यो, जो-हमारे ठाकुर हैं, जो हमकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें राखे हैं । सो तब लराई भई । पाछें कृष्णदास ने बंगालीन कों भजाय दिये । तब सगरे बंगाली भाजे । तब मथुराजी में आय के रूपसनातन सों सगरी बात कही, जो-कृष्णदास जाति को शूद्र, सो सगरेन की झोंपरी जराय दीनी । और सबनकों मारि के सेवा में ते बाहिर काढ़ि दिये हैं । सो या प्रकार बात करत हते, इतने में कृष्णदास हू रथ पर चढ़िके पचास ब्रजवासी हथियारबंध संग ले श्रीमथुराजी में आये, सो पहले रूपसनातन के पास आये । तब रूपसनातन ने कृष्णदास सों खीजि के कह्यो, जो-क्योंरे ! शूद्र ! तैने इन ब्राह्मणन कों क्यों मारयो है ? जो-यह बात देसाधिपति सुनेगो, तब तू कहा जुवाव देयगो ? तब कृष्णदास ने कह्यो, जो-हूँ तो शूद्र हौं । परि मैं ब्राह्मणन कों सेवक तो नाहीं करत हौं । तुमहू तो अग्निहोत्री ब्राह्मण नाहीं हो । तुमहू तो कायस्थ हो, कायस्थ होयके इन ब्राह्मणन कों दंडवत कराय सेवक करत हो, सो तुमहू जुवाव देत में बहोत दुःख पावोगे । जो-तुमसों

पडी अंगादी अग्नि जुवावीने अधा आव्या. ते परत उपर भदिरिभां यदवा लाग्या
त्यारे कृष्णदासे ते अंगादीअने कहुं, के हुवे तमाइं काम सेवामां नथी अमे भील
याकर राख्या छे अे सेवा करवाने गया छे. त्यारे अंगादीअे लडवानी तैयारी
करी अने कहुं के अभासे ठाकुर छे. अमने श्रीआचार्ये महाप्रभुअे राख्या छे.
पडी कृष्णदासे अंगादीअेने लगादी दीधा. त्यारे मथुरामां आवीने रूपसनात-
नने अधी वात कही, के कृष्णदास जातिने शूद्र अेले अधानी जोंपडी अणावी
दीधी अने अधाने भारीने सेवाभांथी अहार कही दीधा छे. आ प्रकारे वात
करता हुता अेरसामां कृष्णदास पणु रथ उपर यहीने पचास प्रजवासीअे लुथि-
यारअंध साथे लछने श्रीमथुरालां आव्या. ते पहुलां रूपसनातननी पासे गया.
त्यारे रूपसनातने कृष्णदासने भीलने कहुं, के केम रे शूद्र ? ते आ आह्वेने
केम भार्या छे ? अे वात देसाधिपति सांलणसे तो तू शो जवाअ आवीश ?
त्यारे कृष्णदासे कहुं, हुं तो शूद्र छुं परंतु में आह्वेने सेवक नथी कर्था. तमे पणु
अग्निहोत्री आह्वे तो नथी. तमेय पणु कायस्थ छे. कायस्थ थधने आ आह्वेने
दंडवत करावी सेवक करे छे. ते तमे पणु जवाअ देवामां अहु दुःख पावोगे. तमा-

जुवाब न बनेगो । और मैं तो जुवाब दे लेउंगो, जो-तिहारो मन होय तो चलो । देखो तो सही, जो-तुमसों जुवाब होत है ? जो कैसे करत हों ? सो यह कृष्णदास के बचन सुनिके रूपसनातन ने कही, जो-तुम जानो और ये जाने । जो हमतो कछु जानत नाहीं हैं । सो या प्रकार रूपसनातन सगरे बंगालीन के गुरु हते सो तिनने यह बात कही । तब सगरे बंगाली निरास होय के मथुरा के हाकिम के पास जायके यह बात कही । जो कृष्णदास ने हमकों श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा में ते काढ़ि दिये हैं । तासों तुम कोई प्रकार सों हमकों रखाय देउ । यह बात करत हते, इतने ही में कृष्णदास हाकिम के पास आये । सो कृष्णदास को तेज देखत ही वह हाकिम उठि के कृष्णदास कों पूछि, पास बैठाय के कही, जो-तुम बड़े हो, और श्री-गोवर्द्धननाथजी के अधिकारी हो । तासों तुम इन बंगालीन को गुन्हा माफ करो । अब भई सो तो भई । परि अब इनकों फेरि राखो, जो-सेवा करें । तब कृष्णदास ने कही, जो-अब तो हम इनकों नाहीं राखेंगे, अब ये हमारे चाकर नाहीं । ये चाकर होय लरिवे कों तैयार भये । इनकी झोंपरी जरि गई, तो हम इनकी झोंपरी और बनवाय देते । परन्तु ये सगरे श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा छांड़ि पर्वत तें नीचे क्यों उतरि आये ? तासों अब इनको सेवा में काम नाहीं है ।

राथी जवाब नही अने अने हुं तो जवाब द्य लक्षश. तमाइं मन होय तो आलो. देपो तो अरा तमाराथी जवाब थाय छे ? ने केम करे छे ? अे कृष्णदासनां पयन सांभणीने रुपसनातने कछुं, के तमे जणु अने अे जणु. अमे कंठं जणुता नथी. अे प्रकारे रुपसनातन ने अथा अंगालीओना गुरु हुता तेमणे अे वात कही. त्तारे अथा अंगालीओअे निराश थअने मथुराना हुकेम पासे जधने आ वात कही, के कृष्णदासे अमने श्रीगोवर्द्धननाथजी सेवाभांधी काढी मूक्या छे तेथी तमे केअ प्रकारे अमने रभावी दा. अे वात करता हुता अेदामां ज कृष्णदास हुकेमनी पासे आण्या. ते कृष्णदासतुं तेज जेधने ज ते हुकेमे उठीने कृष्णदासने पूछयुं, पास भेसाडीने कछुं, के तमे मोटा छे अने श्रीगोवर्द्धननाथजीना अधिकारी छे तेथी तमे आ अंगालीओना गुन्हा माइ करे. हुवे थयुं ते थयुं, परंतु हुवे अमने डेर राणे, ने सेवा करे. त्तारे कृष्णदासे कछुं, के हुवे तो अमे अमने नही राभीअे. हुवे अे अमारा याकर नहीं. अे याकर थअ लडवाने तैयार थया. अेमनी झोंपडी अणी गअ तो अमे अमनी झोंपडीअे भीअ अनावरावी देता, परंतु अे अथा श्रीगोवर्द्धननाथजी सेवा छोडीने

और आपु कहत हो, जो-इनकों राखो । सो अब हम या बात को पत्र श्रीगुसांईजी कों लिखेंगे । सो वे कहेंगे, तैसो करेंगे । तब वा हाकिम ने कही, जो-आछी बात है, जो तुम श्रीगुसांईजी कों लिखो, तब कृष्णदास श्रीनाथजीद्वार आये । ता पाछें वे बंगाली वृन्दावन में रहे । सो ता पाछे फेरि एक दिन सगरे बंगाली भेले होय देसाधिपति के पास आगरे में आयके कृष्णदास की चुगली करी । तब देसाधिपति अकबर पात्साह ने कही, जो-कृष्णदास कौन है ? जो-इन ब्राह्मणन कों पूजा में ते काढ़े, सो उनकों बुलावो । तब राजा टोडरमल ने और वीरबल ने अकबर पात्साह सां कह्यो, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी ठाकुर श्रीविठ्ठलनाथजी श्रीगुसांईजी के हैं । सो पहले ये बंगाली सेवा में राखे हते सो इनकों खरची देते । जो-अब इनकों काढ़ि दिये हैं । तब देसाधिपति ने कही, जो-बंगाली झूठि चुगली करत हैं । जो चाकर को कहा है ? तासों कृष्णदास कों बुलाय के कहो, जो-उनको मन होय तो राखे । तब देसाधिपति के मनुष्य कृष्णदास कों लेवे कों श्रीगिरिराज आये । सो कृष्णदास ने तो पहले ही सुनी हती, सो रथ ऊपर चढ़िके दस बीस आदमी लेके देसाधिपति के मनुष्यन के संग आगरे में आये । तब कृष्णदास राजा

पर्वतनी नीचे डेम उतरी आव्या ? तेथी हुवे ऐमनु' सेवामां काम नथी अने आपु छोडा छे के ऐमने राणे। तो हुवे अमे आ वातना पत्र श्रीगुसांईजीने लभीशुं. ऐ छोडेशे तेम करीशुं. त्यारे ऐ लडेमे कछुं, के सारी वात छे. तमे श्रीगुसांईजीने लणे। त्यारे कृष्णदास श्रीनाथजीद्वार आव्या. ते पछी ते अंगासी वृन्दावनमां रखा. ते पछी इरी अइ दिवसे अंगासी अथाये लेगा थडने देशाधिपतिनी पासे आगरामां आवीने कृष्णदासनी चुगली करी. त्यारे देशाधिपति अकबर पात्साहे कछुं, के कृष्णदास कोछु छे ? के आ ब्राह्मणेने पूजामांथी काठया तेमने पोसावे। त्यारे राजा टोडरमल अने वीरबले अकबर पात्साहने कछुं, के श्रीगोवर्द्धननाथजी ठाकुर श्रीविठ्ठलनाथजी, श्रीगुसांईजीना छे तेभंछे पछेदां ऐ अंगासीने सेवामां राभ्या हुता, ऐमने भरथ आपता. हुवे ऐमने काडी भूक्या छे. त्यारे देशाधिपतिअे कछुं, अंगासी नूडी याडी इरे छे, याकरतुं शुं छे ? तेथी कृष्णदासने पोसावीने छोडा, के ऐमनुं मन होय तो राणे. त्यारे देशाधिपतिना मनुष्य कृष्णदासने सेवाने श्रीगिरिराज आव्या. ते कृष्णदासने तो पछेदां लं सांलख्युं हुतुं तेथी रथ उपर चढ़ीने दस-बीस मनुष्य लधने देशाधिपतिना मनुष्यानी साथे आगरामां आव्या. त्यारे कृष्णदास राजा टोडरमल अने वीरबलने मण्या.

टोडरमल और वीरबल सों मिले । तब राजा टोडरमल और वीरबल ने कह्यो, जो-बंगालीन ने चुगली करी हती, सो हमने कहि दीनी है । और फेरि हू आज कहि देंगो, जो-आजु को दिन तुम यहां रहो । तब कृष्णदास उहां रहे । तब राजा टोडरमल और वीरबल दरवार के समय देसाधिपति के पास आय अकबर सों कहे, जो-कृष्णदास श्रीगोवर्द्धननाथजी के अधिकारी आये हैं, और उनको मन बंगालीन कों राखिवे को नाहीं है । जो-और चाकर राखे हैं, और ये तो काढ़े हैं । तब देसाधिपति ने कही, जो-आछो, उनको मन होय सो ताकों चाकर राखें । यामें झूठो झगरो कहा है ? तासों बंगालीन कों काढ़ि देउ । तब राजा टोडरमल और वीरबल ने आयके बंगालीन सों कही, जो-देसाधिपति को हुकम तुमकों काढ़ि देवे को भयो है, तासों तुम चुप होयके चले जाउ । जो-झगरो करोगे तो दुःख पावोगे । तासों हमने तुमकों समुझाय दियो है । तब सगरे बंगाली निरास होयके चले आये । सो वृन्दावन में रहे । और कृष्णदास राजा टोडरमल और वीरबल सों विदा होयके चले आये, सो श्रीगिरिराज ऊपर आये । ता पाछें दोय कासिद बुलाय के श्रीगुसांईजी कों बिनती पत्र लिख्यो, तामें यह लिख्यो, जो-बंगालीन कों आपु की आज्ञा तें

त्यारे राजा टोडरमल अने भीरबल कहुं, के भंगालीअने नूडी चुगली करी हती तेथी अने कही दीधुं छे अने इरी पणु आण कही दधुं. तेथी आणने दिवस तमे अही रहो. त्यारे कृष्णदास त्यां रह्यो. त्यारे राजा टोडरमल अने भीरबल दरवारना समये देसाधिपतिनी पास आवी अकबरने कहे, के कृष्णदास श्रीगोवर्द्धननाथलना अधिकारी आव्या छे अने अमनुं मन भंगालीअने राखवातुं नथी. भील याकर राख्या छे अने अमने तो काढ्या छे. त्यारे देसाधिपति कहे, के साइं. अमनुं मन होय तेने याकर राखे अमां नूठो अधरा शो छे ? तेथी भंगालीअने काही भूके. त्यारे राजा टोडरमल अने भीरबल आवीने भंगालीअने कहुं, के देसाधिपतिना हुकम तमने काही भूकवानो थयो छे. तेथी तमे चूप थधने यादया जय. जे अधरा करेशो तो दुःख पाभेशो. तेथी अने तमने समजवी दीधुं. त्यारे पथा भंगाली निरास थधने यादया गया. श्रीवृन्दावनमां रह्यो अने कृष्णदास राजा टोडरमल अने भीरबलथी विदाय थधने यादया आव्या. ते श्रीगिरिराजल ऊपर आव्या. ते पछी ये कासदने जोसावीने श्रीगुसांईलने बिनतीपत्र लभ्यो. तमां अे लभ्युं, के भंगालीअने आपनी आज्ञाथी काढ्या तेने

काढ़े, ताको देसाधिपति सों जुवाब होय चुक्यो है, जो-अब झगरो मिटि गयो है । और बंगाली झूठे राजद्वार तें परि चुके हैं । तासों अब आपु कृपा करिके पधारिये । सो दोष जोड़ी कासिद की श्रीगुसाईंजी के पास गई । तब श्रीगुसाईंजी आपु पत्र बांचि अड़ेल तें बेगि ही पधारे, सो श्रीनाथजीद्वार आयके कृष्णदास कों बुलाय श्रीगोवर्द्धननाथजी के सन्मुख अधिकारी को दुसालो उढ़ायो । और श्रीगुसाईंजी आपु श्रीमुखतें कहे, जो-कृष्णदास ! तुमने बड़ी सेवा करी है, जो-यह काम तुमही तें बने जो बंगालीन कों काढ़े । तासों अब सगरो अधिकार श्रीगोवर्द्धननाथजी को तुमही करो । हमहू चूकें तो कहियो, जो-कोई बात को संकोच मति राखियो । जो सगरे सेवक टहलुवान के ऊपर तिहारो हुकुम, और की कहा है ? जो-ऐसी सेवा तुम ही करी, जो-तुम श्रीगोवर्द्धननाथजी सों कहोगे सोई करेंगे । तुम श्रीआचार्यजी के कृपापात्र हो, सो तिहारी आज्ञा में (जो) चलेंगे तिन सबन को भलो होयगो । तासों अब तुम श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा भली भांति सों करियो । सो सावधान रहियो । पाछें कृष्णदास श्रीगुसाईंजी (और) श्रीगोवर्द्धननाथजी कों साष्टांग दंडवत करिके अधिकार की सगरी सेवा करन लागे । ता दिनतें श्रीनाथजी के अधिकार की गादी विछवे लगी । श्रीगुसाईंजी की आज्ञा तें

देशाधिपति आगण उत्तर थड यूक्यो छे. हुवे अंधडा भटी गयो छे अने अंगादी राजद्वारमां अडा पडी यूक्यो छे. तेथी हुवे आपु कृपा करीने पधारीअे. ते अे अेडी कासिदनी श्रीगुसांइजीनी पासे गध त्यारे श्रीगुसांइजी पोते पत्र बांच्यी अउसथी नददी पधार्या. पछी श्रीनाथजीद्वार आवीने कृष्णदासने पोसावी श्रीगोवर्द्धननाथजीना सन्मुख अधिकारीना दुसालो आढाव्यो अने श्रीगुसांइजी पोते श्रीमुखथी कहे, के कृष्णदास ! तमे सारी सेवा करी छे. आ काम तमाराथीन थाय, के अंगादीअेने काढया तेथी हुवे अंधो अधिकार श्रीगोवर्द्धननाथजीना तमेन करे. अमे पणु यूकीअे तो कहेअे. काइ वातना सडोअ न राअता. अंधा सेवक कहेसवा उपर तमारे हुकुम भीजनी शी वात ? अे आवी सेवा तमेन करी तेथी तमे श्रीगोवर्द्धननाथजीने (य) कहेशा तेन करशे. तमे श्रीआचार्यजीना कृपापात्र छे. तमारी आज्ञामां अे आसशे ते अंधानुं सडुं थशे. तेथी हुवे तमे श्रीगोवर्द्धननाथजीनी सेवा सदी-सांतिथी करअे अने सावधान रहअे. पछी कृष्णदास श्रीगुसांइजी अने श्रीगोवर्द्धननाथजीने साष्टांग दंडवत करीने अदिक्षारीनी अंधी सेवा करवा लाग्या. ते दिवसथी श्रीनाथजीना अधिकारनी गादी अिछवा

टोडरमल और वीरबल सों मिले । तब राजा टोडरमल और वीरबल ने कह्यो, जो-बंगालीन ने चुगली करी हती, सो हमने कहि दीनी है । और फेरि हू आज कहि देंग्ये, जो-आजु को दिन तुम यहां रहो । तब कृष्णदास उहां रहे । तब राजा टोडरमल और वीरबल दरबार के समय देसाधिपति के पास आय अरुबर सों कहे, जो-कृष्णदास श्रीगोवर्द्धननाथजी के अधिकारी आये हैं, और उनको मन बंगालीन कों राखिवे को नाहीं है । जो-और चाकर राखे हैं, और ये तो काढ़े हैं । तब देसाधिपति ने कही, जो-आछो, उनको मन होय सो ताकों चाकर राखें । यामें झूठो झगरो कहा है ? तासों बंगालीन कों काढ़ि देउ । तब राजा टोडरमल और वीरबल ने आयके बंगालीन सों कही, जो-देसाधिपति को हुकम तुमकों काढ़ि देवे को भयो है, तासों तुम चुप होयके चले जाउ । जो-झगरो करोगे तो दुःख पावोगे । तासों हमने तुमकों समुझाय दियो है । तब सगरे बंगाली निरास होयके चले आये । सो वृन्दावन में रहे । और कृष्णदास राजा टोडरमल और वीरबल सों विदा होयके चले आये, सो श्रीगिरिराज ऊपर आये । ता पाछें दोय कासिद बुलाय के श्रीगुसांईजी कों बिनती पत्र लिख्यो, तामें यह लिख्यो, जो-बंगालीन कों आपु की आज्ञा तें

त्यारे राजा टोडरमल अने भीरबल कहुं, के भंगालीअने नूडी चुगली करी हती तेथी अने कही दीधुं छे अने करी पणु आन कही कशुं. तेथी आनते द्विस तमे अही रहो. त्यारे कृष्णदास त्यां रह्या. त्यारे राजा टोडरमल अने भीरबल दरबारना समये देशाधिपतिनी पास आवी अकबरने कहे, के कृष्णदास श्रीगोवर्द्धननाथअना अधिकारी आव्या छे अने अमनुं मन भंगालीअने राखवातुं नथी. भीन याकर राख्या छे अने अमने तो काठ्या छे. त्यारे देशाधिपति कहे, के साइं. अमनुं मन होय तेने याकर राखे अमां नूडो अधरा शे छे ? तेथी भंगालीअने कही भूके. त्यारे राजा टोडरमल अने भीरबल आवीने भंगालीअने कहुं, के देशाधिपतिने हुकम तमने कही भूकनाते थयो छे. तेथी तमे रूप थधने आव्या जन. जे अधरा करशे तो दुःख पावशे. तेथी अने तमने समजवी दीधुं. त्यारे अंधा भंगाली निरास थधने आव्या गया. श्रीवृन्दावनमां रह्या अने कृष्णदास राजा टोडरमल अने भीरबलथी विदाय थधने आव्या आव्या. ते श्रीगिरिराजअ ऊपर आव्या. ते पछी जे कासदने जोदावीने श्रीगुसांईअने बिनतीपत्र लख्यो. तमां अे लख्युं, के भंगालीअने आपनी आज्ञाथी काठ्या तेने

सेव्य ठाकुर हू मर्यादारूप । सो बंगालीन कों मर्यादा की पूजा है, तासों दिये ।
और श्रीगुसाईंजी ने झगरो हू मिटाय दियो ।

ता पाछें श्रीगुसाईंजी ने सांचोरा गुजराती ब्राह्मण भीतरिया सेवा में राखे । सो मुखिया भीतरिया रामदास कों किये ।

भावप्रकाश—सो रामदास ब्राह्मण सांचोरा गुजरात में रहते । ये लीला में श्रीचन्द्रावलीजी की सखी हैं । सो लीला में इनको नाम 'मनोरमा' है । सो सात्विक भाव । श्रीचन्द्रावलीजी की आज्ञाकारी । जैसे श्रीस्वामिनीजी श्रीठाकुरजी की लीला में ललिता मध्याजी परम चतुर । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के कृपापात्र ललितारूप कृष्णदास सब ठोर हुकम करें, तैसे मनोरमा रूपसों रामदास मुखिया भीतरिया श्रीगुसाईंजी के आगे सब टहल करें । सो (मनोरमा) रामदास गुजरात में एक सांचोरा ब्राह्मण के यहाँ जनमे । सो वरस बीस के भये । तब माता पिताने देह छोड़ि । ता पाछें रामदासजी श्रीरणछोड़जी के दरसन कों गये । सो श्रीआचार्यजी के दरसन भये, ता समय श्रीआचार्यजी कथा कहत हते । सो कथा श्रीआचार्यजी के श्रीमुख सों सुनिके रामदास कों ज्ञान भयो, जो-श्रीआचार्यजी आपु साक्षात् ईश्वर हैं, इनकी सरन रहिये तो कृतार्थ होय । सो यह मनमें निश्चय कियो । ता पाछे श्रीआचार्यजी आपु कथा कहि चुके । तब रामदास ने दंडवत

मर्यादारूप. अंगालीयेने मर्यादानि पूज छे तेथी आभ्या अने श्रीगुसांछलये अघडे पणु मटानी दीये।

ते पछी श्रीगुसांछलये सांचोरा गुजराती ब्राह्मण भीतरिया सेवामां राख्या. ते मुखिया भीतरिया रामदासने कर्था.

भावप्रकाश—ये रामदास ब्राह्मण सांचोरा गुजरातमां रहेता. ये लीलामां श्रीचन्द्रावलीजीनी सखी छे. लीलामां ऐमनु' नाम मनोरमा छे. ये सात्विक भाव; श्रीचन्द्रावलीजीनी आज्ञाकारी, जेभ श्रीस्वामिनीजी श्रीठाकुरजीनी लीलामां ललिता मध्याजी परम चतुर. ते श्रीगोवर्द्धननाथजीना कृपापात्र ललिता रूप कृष्णदास जधी जगे हुकम करे. तेभ मनोरमा रूपथी रामदास मुखिया भीतरिया श्रीगुसांछलजीनी आगण जधी टहल करे. ते रामदास गुजरातमां एक सांचोरा ब्राह्मणने त्यां जन्म्या. ते वरस बीसना थया त्यादे माता पिताने देह छोडी. ते पछी रामदासजी रणछोड़जीना दर्शन गेया त्यां श्रीआचार्यजीनां दर्शन थयां ते समये श्रीआचार्यजी कथा कहेता हुता. ते कथा श्रीआचार्यजीनां मुखसों सुनिके रामदासने ज्ञान थयुं, जे श्रीआचार्यजी आपु साक्षात् ईश्वर छे, ऐमनी सरने रहिये तो कृतार्थ थयै. ऐवो मनमां निश्चय

कृष्णदास गादी ऊपर बैठते। ता पाछें बंगालीन ने सुनी, जो-श्रीगुसां-ईजी श्रीगोवर्द्धन पधारे हैं, और सिंगार करत हैं। सो सगरे बंगाली मिलके श्रीगुसांईजी के पास आये। पाछे विनती करिके कहे, जो-हमकों श्रीआचार्यजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा में राखे हते, सो कृष्णदास नें काढ़े हैं, तासों आपु फेरि हमकों सेवा में राखो। तब श्रीगुसांईजी कहे, जो-तुम सगरे श्रीनाथजी की सेवा छोड़िके परवत तें नीचे उतरि आये, सो दोष तिहारो है। और अब श्रीगोवर्द्धननाथजी की इच्छा तुमकों राखिवे की नाहीं है, तासों अब तुमकों राखे न जाय। पाछें सगरे बंगाली बहोत विनती करन लागे, जो-तुम हमसों सेवा मति करावो, परन्तु अब हम खाँय कहा? जो श्रीनाथजी की सेवा पीछे हमारो खानपान को सब सुख हतो, तासों हमकों कछू और सेवा टहल बतावो। तथा कोई और श्रीठाकुरजी बतावो, जासों हमारो निर्वाह चलयो जाय। तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोपीनाथजी के सेव्य श्रीमदनमोहनजी कों देके कहे, जो-इनकी सेवा तुम करो। सो तब बंगाली श्रीमदनमोहनजी कों लेके श्रीवृन्दावन में आयके सेवा करन लागे।

भावप्रकाश—सो काहेतें? जो-बलदेवजी मर्यादारूप। सो तिन के

लागी. श्रीगुसांइली आजाथी कृष्णदास गादी उपर भेसता. ते पछी अंगादीआये सांभल्युं, के श्रीगुसांइली श्रीगोवर्द्धन पधार्या छे अने शंगार करे छे. त्यारे अथा अंगादीआ मणीने श्रीगुसांइली पासे आंव्या. पछी विनंती करीने कछुं, के अमने श्रीआचार्यलये श्रीगोवर्द्धननाथली सेवामां राख्या हुता ते कृष्णदासे काठया छे. तेथी आपु इरी अमने सेवामां राणे. त्यारे श्रीगुसांइली कहे, के तमे अथा श्रीनाथली सेवा छोडीने पर्यंतथी नीचे उतरि आंव्या ते दोष तमारो छे अने हुवे श्रीगोवर्द्धननाथली इच्छा तमने राखवानी नथी. तेथी हुवे तमने राख्या न जाय. पछी अथा अंगादीआ अहु विनंती करवां लाग्या, के तमे अमारथी सेवा न करावो परंतु हुवे अमे शुं आइये? श्रीनाथली सेवा पाछण अमारुं खानपानतुं सुख हुतुं. तेथी अमने इंध भील सेवा टहल अतावो तथा इंध भील श्रीठाकुरल अतावो. तेथी अमारो निर्वाह यावयो जाय. त्यारे श्रीगुसांइलये पोते श्रीगोपीनाथली सेव्य श्रीमदनमोहनली आपीने कछुं, के अमनी सेवा तमे करे. त्यारे अंगादी श्रीमदनमोहनलीने लहने श्रीवृन्दावनमां आवीने सेवा करवा लाग्या.

भावप्रकाश—केमके गलदेवल मर्यादारूप छे तेथी अमना सेव्य ठाकुर पशु

सेव्य ठाकुर हू मर्यादारूप । सो वंगालीन कों मर्यादा की पूजा है, तासों दिये ।
और श्रीगुसाईंजी ने झगरो हू मिटाय दियो ।

ता पाछें श्रीगुसाईंजी ने सांचोरा गुजराती ब्राह्मण भीतरिया सेवा में राखे । सो मुखिया भीतरिया रामदास कों किये ।

भावप्रकाश—सो रामदास ब्राह्मण सांचोरा गुजरात में रहते । ये लीला में श्रीचन्द्रावलीजी की सखी हैं । सो लीला में इनको नाम 'मनोरमा' है । सो सात्विक भाव । श्रीचन्द्रावलीजी की आज्ञाकारी । जैसे श्रीस्वामिनीजी श्रीठाकुरजी की लीला में ललिता मध्याजी परम चतुर । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के कृपापात्र ललितारूप कृष्णदास सब ठोर हुकम करें, तैसे मनोरमा रूपसों रामदास मुखिया भीतरिया श्रीगुसाईंजी के आगे सब टहल करें । सो (मनोरमा) रामदास गुजरात में एक सांचोरा ब्राह्मण के यहाँ जनमे । सो वरस बीस के भये । तब माता पिताने देह छोड़ि । ता पाछें रामदासजी श्रीरणछोड़जी के दरसन कों गये । सो श्रीआचार्यजी के दरसन भये, ता समय श्रीआचार्यजी कथा कहत हते । सो कथा श्रीआचार्यजी के श्रीमुख सों सुनिके रामदास कों ज्ञान भयो, जो-श्रीआचार्यजी आपु साक्षात ईश्वर हैं, इनकी सरन रहिये तो कृतार्थ होय । सो यह मनमें निश्चय कियो । ता पाछे श्रीआचार्यजी आपु कथा कहि चुके । तब रामदास ने दंडवत

भर्यादारूप. अंगालीनोने भर्यादानी पूज छे तेथी आभ्या अने श्रीगुसांछलये अघडे पणु मटापी दीधो.

ते पछी श्रीगुसांछलये सांचोरा गुजराती ब्राह्मण भीतरिया सेवामां राभ्या. ते मुभिया भीतरिया रामदासने कर्था.

भावप्रकाश—ये रामदास ब्राह्मण सांचोरा गुजरातमां रहेता. ये लीलामां श्रीचंद्रावलीलानी सखी छे. लीलामां येमनु' नाम मनोरमा छे. ये सात्विक भाव; श्रीचंद्रावलीलानी आज्ञाकारी, जेम श्रीस्वामिनील श्रीठाकुरलानी लीलामां ललिता मध्याल परम चतुर. ते श्रीगोवर्द्धननाथलना कृपापात्र ललिता रूप कृष्णदास गंधी जगे हुकम करे. तेम मनोरमा रूपथी रामदास मुभिया भीतरिया श्रीगुसांछलानी आगण गंधी टहल करे. ते रामदास गुजरातमां येक सांचोरा ब्राह्मणने त्यां जन्म्या. ते वरस बीसना थया त्यारे माता पिताये देह छोडी. ते पछी रामदासल रणछोडलना दर्शने गया त्यां श्रीआचार्यलनां दर्शन थयां ते सभये श्रीआचार्यल कथा कडेता हुता. ते कथा श्रीआचार्यलनां-मुभथी सांभणीने रामदासने ज्ञान थयुं, के श्रीआचार्यल आप साक्षात् ईश्वर छे. येमनी शरणे रहिये तो कृतार्थ थय्ये. येयो मनमां निश्चय

करिके विनती कीनी, जो-महाराज ! मोकों सरन लीजे । तब श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो-जाओ न्हाय आवो । तब रामदास न्हाय आये । तब श्रीआचार्यजी ने रामदास कों नाम निवेदन करवायो । ता पाछे रामदास सों कहे, जो-अब तुम भगवत् सेवा करो । तब रामदास ने कही, जो-मेरे पिता के ठाकुर मेरे पास हैं, सो आपु आज्ञा देउ तैसे मैं सेवा करूं । तब श्रीआचार्यजी आपु रामदास के श्रीठाकुर-जी कों पंचामृत स्नान कराय, दिये । ता पाछे रामदास कछुक दिन श्रीआचार्यजी के पास रहे, सो सेवा की रीति भांति सीखे । ता पाछे रामदास ने श्रीआचार्यजी सों विनती कीनी, जो-महाराज ! शास्त्र तो मैं कछु पढ्यो नाहीं हो, परन्तु आपके ग्रन्थ पढ़िबे की इच्छा अभिलाषा है । तब श्रीआचार्यजी महाप्रभुन ने रामदास कों अपने ग्रन्थ पढ़ाये तब रामदासजी के हृदय में ब्रज की लीला स्फुरी, सो रामदास ने यह कीर्तन श्रीआचार्यजी के आगे गायो । सो पद—

राग गौरी—चलि सखी चलि अहो ब्रज पैठ लगी है जहां बिकात हरि-रस प्रेम । सूठ सोंघो प्रानन के पलटे उलट धरो जिय नेम ॥१॥ और भांति पाइवौ अति दुर्लभ कोटिक खर्चों हेम । 'रामदास प्रभु' रत्न अमोलिक सखी पैयत है एम ॥२॥

या प्रकार के रसरूप पद रामदास ने बहोत गाये, सो सुनिके श्रीआचार्यजी आपु बहोत प्रसन्न भये । तब रामदास श्रीआचार्यजी सों विदा होयके दंडवत करि गुजरात में अपने घर आयके बहोत दिन ताई सेवा कीनी । ता पाछे एक दिन एक

दुर्घो. ते पछी श्रीआचार्यल पोते कथा कही युक्था त्यारे रामदासे दंडवत् करीने विनंती करी, के महाराज ! मने शरणे दो. त्यारे श्रीआचार्यल पोते कडे, के अब न्हाथ आवो. त्यारे रामदास न्हाथ आव्या. त्यारे श्रीआचार्यलये रामदासने नाम निवेदन कराव्युं. ते पछी रामदासने कडे, के हुवे तमे भगवद् सेवा करे. त्यारे रामदासे कहुं, के मारा पिताना ठाकुर मारी पास छे. तेथी आप आज्ञा हो तेम हु सेवा करूं. त्यारे श्रीआचार्यलये पोते रामदासना श्रीठाकुरलने पंचामृत स्नान करावी आख्या. ते पछी रामदास डेटलाक द्विवस श्रीआचार्यलनी पास रह्या. ते सेवानी रीति-भांति शिष्या. ते पछी रामदासे आचार्यलने विनंती करी, के महाराज ! शास्त्र तो हु कंठ लइयो नथी. परंतु आपना ग्रंथ लखवानी धर्या-अभिलाषा छे. त्यारे श्रीआचार्यल महप्रभुये रामदासने पोताना ग्रंथ लखव्या. त्यारे रामदासलना हृदयमां प्रभुनी लीला स्फुरी ते रामदासे आ कीर्तन श्रीआचार्यलनी आगण गायुं. ते पद—'चलि सखी चलि' (उपर लुयो). या प्रकारे रसरूप पद रामदासलये भहु गायं. ये सांखणीने श्री-आचार्यल आप भहु प्रसन्न थया. त्यारे रामदासे श्रीआचार्यलथी विदाय थधने दंडवत करीने गुजरातमां पोताना धरे आवीने भहु द्विवस सुधी सेवा करी. ते पछी येक

वैष्णव रामदास के घर आयो । तब रामदास ने प्रीतियों वैष्णव को अपने घर में राख्यो । पाछे रामदास ने कही, जो-वैष्णव को संग दुर्लभ है । सो तुमने बड़ी कृपा करी, जो-तुम मेरे घर पधारे । सो तब वैष्णव ने कही, जो-संग करिवे लायक तो पद्मनाभदासजी हैं, जो-एक क्षण हू संग होय तो भगवत् कृपा होय । सो सुनत ही रामदासजी के मन में यह आई, जो-पद्मनाभदास को संग करूं । ता पाछे चारि दिन रहिके वह वैष्णव तो गयो । तब रामदासजी श्रीठाकुरजी को पधाय के पद्मनाभदास के घर कनौज में आये । सो पद्मनाभदास प्रीति सों रामदास को महिना एक राखे, सो भगवद्वाता में मगन होय गये । तब रामदासजी ने कही, जो-जैसी तिहारी बड़ाई सुनी हती, तैसेही तिहारे संग तें सुख पायो । सो अब मैं श्रीगोवर्द्धननाथजी के दरसन करि आऊं । तासों मेरे ठाकुर को तुम राखो । तब पद्मनाभदासजी ने रामदास के ठाकुर, श्रीमथुरेशजी की सय्याजी के पास बैठारे । और इहां श्रीगुसांईजी आपु प्रसन्न होयके रामदास को मुखिया किये, सो जनम भरि श्रीनाथजी की सेवा रामदास ने मन लगाय के कीनी । सो या प्रकार रामदासजी रहे । ता पाछे (जब) पद्मनाभदासजी की देह छूटी तब श्रीगोवर्द्धननाथजी के पास श्रीठाकुरजी को बैठारे । सो सदा श्रीनाथजी के पास रहे ।

ता पाछे श्रीगुसांईजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा को विस्तार

दिवस अेक वैष्णव रामदासना धरे आव्यो. त्यारे रामदासे प्रीतिथी वैष्णवने पोताना धरमां राख्यो. पछी रामदासे कहुं, के वैष्णवने संग दुर्लभ छे. तमे महान कृपा करी के तमे मारा धरे पधार्या. त्यारे वैष्णवे कहुं, के संग करवा लायक तो पद्मनाभदास छे जेने अेक क्षण पणु संग थाय तो भगवत् कृपा थाय. अे सांलगतांज रामदासलना मनमां अे आव्युं, के पद्मनाभदासने संग कइं. ते पछी आर दिवस रहिने ते वैष्णव तो गयो. त्यारे रामदासल श्रीठाकुरलने पधरावीने पद्मनाभदासलना धरे कनौजमां आव्या त्यारे पद्मनाभदासे प्रीतिथी रामदासने महिना अेक राख्या ते भगवद् वातांमां मगन थध गया. त्यारे रामदासल अे कहुं. के जेवा तमारां वधाणु सांलग्यां हुतां तेषुं ज तमारा संगथी सुषं मय्युं. हुवे हु श्रीगोवर्द्धननाथलनां दर्शन करी आवुं. तेथी मारा ठाकुरने तमे राख्यो. त्यारे पद्मनाभदासल अे रामदासना ठाकुर श्रीमथुरेशलनी शय्यालनी पासे पधराव्या अने अही श्रीगुसांईल अे पोते प्रसन्न थधने रामदासने सुप्रिया कर्था. ते जनमलर श्रीनाथलनी सेवा रामदासे मन लगाडीने करी. आ प्रकारे रामदासल रह्या. ते पछी पद्मनाभदासलनी देह छुटी. त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथलनी पासे श्रीठाकुरलने जेसाडया. त्यारथी सदा श्रीनाथलनी पासे रह्या.

वढायो । सो राजसेवा करन लागे, जो-भोग सामग्री को नेग कियो, सेवक बहोत राखे, सो दरजी, सुनार, खाती सगरेन को नेग करि दियो । और भंडारी (अधिकारी) राखे सो भंडारी कों गादी तकिया । या प्रकार श्रीगोवर्द्धननाथजी की ईश्वरता बढाये । और सगरे सेवकन की ऊपर कृष्णदास अधिकारी कों मुखिया किये, सो जो काम होय सो पूछनो । सो श्रीगुसाईजी तो सेवा सिंगार करि जांय, और काहूसों कछु कहें नहीं । कोई बात कोई सेवक श्रीगुसाईजी सों पूछे तब श्रीगुसाईजी आप कहें, जो-कृष्णदास अधिकारी के पास जावो । जो हम जानें नहीं । सो या प्रकार मर्यादा राखी । या भांति सों कृष्णदास को वैभव भारी और हुकम भारी । सो जहां चलें तहां रथ, घोड़ा, बैल, ऊंट, गाड़ी, सौ पचास मनुष्य संग । सो कृष्णदास अधिकारी सब देसन में प्रसिद्ध भये । सो कृष्णदास नित्य नये पद करिके श्रीगोवर्द्धनधर कों सुनावते । सो ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ।

वार्ता-प्रसंग ३—और एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी ने कृष्णदास कों आज्ञा दीनी, जो-श्यामकुम्हार कों मृदंग समेत संग लेके परासोली सेन आरती पीछे जैयो तहां रामलीला करेंगे । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कों दंडवत करिके कृष्णदास परवत तें नीचे आये । ता पाछें श्री-

ते पछी श्रीगुसांभलजे श्रीनाथलनी सेवानो विस्तार वधार्यो । ते राजसेवा करवा लाग्या । लोग सामग्रीनो नेक कर्यो । सेवक अहु राख्या । दरल, सोनी, सुधार अधानो नेक करी दीयो अने लंडारी (अधिकारी) राख्या ते लंडारीने गादी तकिया अे प्रकारे श्रीगोवर्द्धननाथलनी ईश्वरता वधारी । अने अधा सेवकानी उपर कृष्णदास अधिकारीने मुखिया कर्था । जे काम होय ते पूछतुं । श्रीगुसांभल तो सेवा-सिंगार करी जय अने डोकने डंठ डहे नही । डोष वात डोष सेवक श्रीगुसांभलने पूछे त्यारे श्रीगुसांभल पोते डहे, डे कृष्णदास अधिकारीनी पासो जय । अमे जालीअे नही । अे प्रकारे मर्यादा राखी । अे प्रकारे कृष्णदासना वैभव धरो अने हुकम धरो । ज्यां जय त्यां रथ, घोडा, अणद, उट, गाड़ी अने पचास माणस साथे । ते कृष्णदास अधिकारी अधा देसोमां प्रसिद्ध थया । अे कृष्णदास नित्य नयां पद करीने श्रीगोवर्द्धनधरने संलगावता । अेवा कृपापात्र भगवदीय हुता ।

वार्ता-प्रसंग ३-वणी अेक दिवस श्रीगोवर्द्धननाथलजे कृष्णदासने आज्ञा आपी, डे श्यामकुम्हारने मृदंग समेत साथे लधने (तमे) परासोली सेन आरति पछी जये । त्यां रामलीला करीशुं । त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथलने दंडवत करीने कृष्णदास परवतथी नीचे आख्या । ते पछी श्रीगोवर्द्धननाथल श्यामकुम्हारने डहे, डे तमने ज्यां

गोवर्द्धननाथजी स्यामकुम्हार सों कहे, जो-तुमकों जहां कृष्णदास कहे, तहां मृदंग लेके जैयो । सो या प्रकार स्यामकुम्हार कों श्री-नाथजी आपु आज्ञा किये ।

भावप्रकाश—सो या प्रकार स्यामकुम्हार कों श्रीनाथजी आपु आज्ञा किये सो याते, जो-लीला में श्यामकुम्हार विसाखाजी की सखी है । तहां लीला में इनको नाम 'रसतरंगिनी' है । सो इनकी मृदंग की सेवा है । सो एक समय रसतरंगिनी सेन किये हते, सो विसाखाजी को मन गान करिवे को भयो । तव रसतरंगिनी कों जगाय के कहे, जो-तू मृदंग बजाव, सो तव मृदंग बजायो । तव विसाखाजी गान करन लागी । सो अलसार्ते रसतरंगिनी चूकि जाय । तव विसाखाजी क्रोध करके कहे, जो-आज कैसे बजावत है ? तव रसतरंगिनी ने कह्यो, जो-मोकों नींद आवत है । और तिहारो मन तो गान करिवे को है, सो कैसे बने ? तव विसाखाजी मृदंग आपुही लीये और क्रोध करिके विसाखाजी ने रसतरंगिनी सों कह्यो, जो-तू मेरी सखी नाहीं है । सो जायके तू भूमि में जनम लेउ । अहंकार करिके बोली सो ताकों यही दंड है । तव ये महावन में एक कुम्हार के घर जन्मे । सो स्यामकुम्हार नाम पच्यो । सो सगरे समाज में चतुर हते । श्रीगुसाईंजी आपु इनकों बुलाय के श्रीनवनीतप्रियजी के पास राखे । तव इन स्यामकुम्हार कों नाम

कृष्णदास कहे त्यां मृदंग लधने जणे. ये प्रकारे श्यामकुम्हारने श्रीनाथलये पोते आज्ञा करी.

भावप्रकाश—आ प्रकारे श्यामकुम्हारने श्रीनाथलये पोते आज्ञा करी ते येथी के. लीलांमां श्यामकुम्हार विशाखालनी सणी छे. त्यां लीलांमां येमनु नाम 'रसतरंगिनी' छे. येमनी मृदंगनी सेवा छे. ते येक समय रसतरंगिनीये शयन कर्युं हुंतुं त्यारे विशाखालतुं मन गान करवातुं थयुं. त्यारे रसतरंगिनीने जगाईने कडे, के तू मृदंग वगाड त्यारे तेणे मृदंग वगाडयुं. त्यारे विशाखाल गान करवा लागी त्यारे आणसने लधने रसतरंगिनी चूकी जाय. त्यारे विशाखाल क्रोध करीने कडे, के आज केवुं वगाडे छे ? त्यारे रसतरंगिनीये कहुं, के मने निद्रा आवे छे अने तमाइं मन तो गान करवातुं छे. ते केम णने ? त्यारे विशाखालये मृदंग पोते जे लीधी अने क्रोध करीने विशाखालये रसतरंगिनीने कहुं, के तू मारी सणी नथी. जधने भूमी उपर जन्म ले. अहंकार करीने जोली तेना आ ज दंड छे. त्यारे ये महावनमां कुम्हारना घरे जन्म्या. श्यामकुम्हार नाम पड्युं. ते अघा समाजमां चतुर हुता. श्री-गुसाईंलये पोते येमने जोलावीने श्रीनवनीतप्रियलनी पास राख्या. त्यारे ये श्याम-

निवेदन करवायो । जब श्रीगोवर्द्धननाथजी को वैभव बढ्यो तब कृष्णदास के मन में आई जो मृदंगी चाहिये । तब गोवर्द्धनधर कहे, जो-गोकुल में स्यामकुम्हार है, सो मृदंग आछी बजावत है । ताकों श्रीगुसांईजी कों कहिके यहां राखो । तब कृष्ण-दाम ने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो-स्यामकुम्हार कों श्रीगोवर्द्धनधर की सेवा में राखो । जो-यह इच्छा प्रभुन की है । तब श्रीगुसांईजी आपु स्यामकुम्हार कों श्रीगोकुल तें बुलायके श्रीनाथजी की सेवा में राखे । सो ता दिन तें स्यामकुम्हार श्रीनाथजी के आगे मृदंग बजावतो । या प्रकार स्यामकुम्हार श्रीगिरिराज रह्यो ।

तब कृष्णदास ने स्यामकुम्हार कों बुलायके कह्यो, जो-श्री-गोवर्द्धननाथजी की इच्छा आजु परासोली में रास करिवे की है, सो मृदंग ले आवो, सेन आरती पीछे चलेंगे । तब स्यामकुम्हारने कह्यो, जो-मोहू कों आज्ञा दीनी है, तासों मृदंग लेके तिहारे पास आयो हूं । सो जब सेन आरती श्रीगोवर्द्धननाथजीकी होय चुकी, तब कृष्ण-दाम स्यामकुम्हार कों लेके परासोली में चंद्रसरोवर है, तहां आये । तहां देखे तो श्रीगोवर्द्धनधर और श्रीस्वामिनीजी सगरी सखीन सहित विराजे हैं । तब श्रीगोवर्द्धनधरने स्यामकुम्हार सों कही, जो-तू तो मृदंग बजाव; और कृष्णदाल सों कह्यो, जो-तू कीर्तन गाव । सो चैत्र सुद १५ पून्यो के दिन रात्रि प्रहर डेढ़ गई, उजियारी फैल

हुंभारने नाम निवेदन कराव्युं. (पछी) न्यारे श्रीगोवर्द्धननाथजीने वैभव बढ्यो त्यारे कृष्णदासना मनमां आव्युं के मृदंगी लेधये. त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथजी कडे, के श्रीगोकुलमां श्यामकुंभार छे ते मृदंग सारी वगाडे छे. तेने श्रीगुसांईजीने कहीने आही राषो. त्यारे कृष्णदासे श्रीगुसांईजीने कहुं, के श्यामकुंभारने श्रीगोवर्द्धनधरनी सेवामां राषो. ये धर्या प्रभुनी छे. त्यारे श्रीगुसांईजीये पोते श्यामकुंभारने श्रीगोकु-लक्षी भोलावीने श्रीनाथजीनी सेवामां राष्या. ते द्विसथी श्यामकुंभार श्रीनाथजीनी आगण मृदंग वगाडतो. ये प्रकारे श्यामकुंभार श्रीगिरिराज रह्यो.

त्यारे कृष्णदासे श्यामकुंभारने भोलावीने कहुं, के श्रीगोवर्द्धननाथजीनी धर्या आज परासोलीमां रास करवानी छे. तेथी मृदंग लध आवो सेन आरति पछी आदीशुं. त्यारे श्यामकुंभारे कहुं, के भने पखु आज्ञा आपी छे तेथी मृदंग लधने तभारी प.से आव्यो छुं. पछी न्यारे सेन आरति श्रीगोवर्द्धननाथजीनी धध बूझी त्यारे कृष्णदास श्यामकुंभारने लधने परासोलीमां चंद्र सरोवर छे त्यां आव्या. त्यां लुभ्ये तो श्रीगोवर्द्धनधर अने श्रीस्वामिनीजी अथी सखीआ सहित विरा-ज्यां छे. त्यारे श्रीगोवर्द्धनधरे श्यामकुंभारने कहुं, के तू तो मृदंग अजव अने

गई सो अलौकिक रात्रि भई । तव श्यामकुम्हारने मृदंग वजायो ।
सो वसंत ऋतु के सुंदर फूल लतानसों फूलि रहे । सो श्रीगोवर्द्धनधर
श्रीस्वामिनीजी सहित नृत्य करन लागे । ता समय कृष्णदामने यह
पद गायो । सो पद—

राग केदारो—श्रीवृषभानन्दनी नाचत लाल गिरिधरन संग, लाग डाट
उरप तिरप रास रंग राच्यौ । झप ताल मिल्यो राग केदारो सप्त सुरन अवघट
२ सुघरतान गान रंग राच्यो ॥ १ ॥ पाई सुख सुरति सिद्धि भरत काम विविध
रिद्धि अभिनव वदन सम सुहाग हुलास रंग राच्यो । वनिता सत-जूथप पिय
निरखि थक्यो सघन चंद्र बलिहारी ' कृष्णदास ' सुघर रंग राच्यो ॥ २ ॥

सो यह पद सुनिके श्रीगोवर्द्धनधर प्रसन्न होयके अपने श्री-
कंठ की प्रसादी कुंद कुसुमन की साला दीनी । सो कृष्णदास अपने
परम भाग्य माने सो रोषरोम में आनंद भरि गयो । सो तव रस में
मगन होयके यह पद गायो सो पद—

राग मालव—(१) अलग लागन उरप तिरप गति नटवत् ब्रजललना रासैं ।
उघटत सबद ततथेइ ततथेइ मृगनयनी इषद हासे ॥ १ ॥ भाल चंद्र लजावन
गावत बांधत मदन-भ्रोंह पासे । चलन उरज कटि किंकिनी कुंडल श्रमजल-कन
सोभित आसे ॥ २ ॥ नूपुर कुन्ति कणित कटिमेखला कटितट काले नील सु
वासे । अवघट तानमान चंचाने मोहित विश्व चरन न्यासे ॥ ३ ॥ मोहनलाल
गोवर्द्धनधारी रिझवत छेल सुघर लासे । अपने कंठ की श्रमजल दलमलि माला
देति ' कृष्णदासे ' ॥ ४ ॥

(२) ततथेई रासमंडल में वने नाचत पियके संग प्रीतमप्यारी । गावत
सरस सुजात मिलवत चपल कुटिल भ्रोंह अनियारी ॥ १ ॥ मालव राग अळापति
भामिनी लेति उरप नागर नारी । प्यारी के संग वेनु वजावन सुघरराय श्रीगोवर्द्धन-
धारी ॥ २ ॥ ' कृष्णदास ' प्रभु लौभग सीवा सब युवतिन में सुकुमारी । जोरी
अद्भुत प्रगटित भूतल केलिकलारस मनुहारी ॥ ३ ॥

कृष्णदासने कृष्ण, देतु शीर्षन गा. ते चैत्र सुदी १५ पुनभना द्विसे रात्रि द्वाद प्रहर
गद्य अन्ववाणुं ईशध गयुं. ते अशौकिक रात्रि थध. त्तारे श्यामकुंभारे मृदंग वजाडी.
वसंत ऋतुनां सुंदर इल लताओथी इडी रखां छे. त्तारे श्रीगोवर्द्धनधर श्रीस्वामि-
नीछ सहित नृत्य करवा लाग्या. ते समये कृष्णदासे आ पद गायुं. ते पद— ' श्रीवृष-
भानन्दनी नाचत ' (७५२ लुओ). अे पद सांखणीने श्रीगोवर्द्धनधरे प्रसन्न
थधने पोताना श्रीकंठनी प्रसादी भाणा, कुंदना इलोनी भाणा आथी. त्तारे कृष्णदासे
पोतानां परम लाग्य मान्यां. अेथी रोभरोभमां आनंद लशध गथे. त्तारे रसमां
मगन थधने आ पद गायां. ते पद (१) ' अलाग लागिनो ' (२) ' तता थध

(३) चंद्र गोविंद गोपी तारा गन बने रास में बनवारी । सुख प्रताप रंजित वृंदावन नवल युवतिजन सुखकारी ॥ १ ॥ कमलनयन कमनीय मनोहर मनहरनी गोकुलनारी । हस्तकमल पर गलित कुसुमदल नृत्यमान् प्रीतम प्यारी ॥ २ ॥ रसमयरासरसिकनि भामिनी अतिरसाल बने बिहारी । 'कृष्णदास' प्रभु रसिक शिरोमनि रसिकराय गिरिवरधारी ॥

(४) सिखवति हरिकों मुरली बजावत । सप्त रंध्र पर धरत अंगुली दल कंध वाहू धरि मधुरे गावत ॥ १ ॥ सरसमेद गति राग कान्हरो गति विलासवर नयन नचावत । 'कृष्णदास' बलि बलि वैभवकी गिरिधर पिय प्यारी मन भावन ॥ २ ॥

सो या प्रकार बहोत कीर्तन कृष्णदासजी गाये । तब स्यामकुम्हार मृदंग बहोत सुंदर बजायो । सो श्रीगोवर्द्धनधर, श्रीस्वामिनीजी सगरे ब्रजभक्तन सहित पास अद्भुत नृत्य किये । सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन की कानि तें कृष्णदास पर श्रीगोवर्द्धनधर एसी कृपा करते । ता पाछें श्रीगोवर्द्धनधर श्रीस्वामिनीजी सहित सगरे ब्रजभक्त अंतर्धान भये । तब कृष्णदास और स्यामकुम्हार मृदंग लेके गोपालपुर आये, सो कृष्णदास ने सभे २ के कीर्तन किये ।

वार्ता-प्रसंग ४—और एक दिन सूरदासजीनें कृष्णदाससों कही, जो-कृष्णदास ! तुमने जितने कीर्तन किये तामें मेरी छाया आवत है । तब कृष्णदासने कही, जो-अबके ऐसो पद करूं सो तामें तिहारी छाया न आवे । पाछें कृष्णदास एकांत में बैठिके विचार किये एकाग्र मन करिके, जो-सूरदास जो वस्तु न गाये होय सो गावनो, यह विचार किये । सो जा लीला को विचार कियो ताही लीला के पद

रासमंडल ०' (३) ' चंद्र गोविंद गोपी तारागन ० ' (४) ' सिखवति पियकारी ' अे प्रकारे धरुं कीर्तन कृष्णदासे गायां तयारे श्यामकुंभार मृदंग अहु सुंदर वगुपी । तयारे श्रीगोवर्द्धनधर श्रीस्वामिनीअये अथा ब्रजभक्तो सहित अद्भुत नृत्य क्युं । ते श्रीआचार्यअ महाप्रभुनी कानिथी कृष्णदास उपर श्रीगोवर्द्धनधर अेवी कृपा करता । ते पछी श्रीगोवर्द्धनधर श्रीस्वामिनीअ सहित अथा ब्रजभक्तो अंतर्धान थयां । तयारे कृष्णदास अने श्यामकुंभार मृदंग लधने गोपालपुर आव्या । कृष्णदासे सभर सभयनां कीर्तन धरुं क्युं ।

वार्ता-प्रसंग ४-वणी अेअ द्वियस सूरदासअये कृष्णदासअने क्युं, के कृष्णदास ! तने अेअसां कीर्तन क्युं तेभां भारी छाया आवे अे । तयारे कृष्णदासे क्युं, के अेअ पद क्युं के तेभां तभारी छाया न आवे । पछी कृष्णदासे अेअंतभां अेसीने विचार क्युं । अेअअ मन करीने, के सूरदासे अे वात न गाअ होय ते गावी अे विचार क्युं ।

सूरदासजी (नें) गाये हैं। सो दान, मान, और गायन को वर्णन सब लीला के पद सूरदासजीने गाये हते। सो कृष्णदासजी विचार करत हारे। मनमें महार्चिना भई। सो कृष्णदासजी को प्रहर एक गयो, सो हारिके उठि बैठे। जो कागज लेवनी द्वारा कलम धरिके महा-प्रसाद लेन गये। तब श्रीगोवर्द्धनधर आयके पद पूरे करि गये।
सो पद—

राग गोरी—श्रवण बने कान्ह गोप-वालक संग नेचुकी खुग-रेनु छुरित अलकावली। भ्रौंह मनमथ-चाप वक्रलोचन वान सीस सोभित मत्त मयूर-चंद्रावली ॥ १ ॥ उदित उडुगाज सुंदर सिरोमनि वदन निरखि फूली नवल जुवति कुमुदावली। अरुन सकुचित अघरविष फल हसन कल्लु प्रगट होन कुंद दसनावली ॥ २ ॥ श्रवण कुंडल भाल तिलक वेसरि नाक, कंठ कौस्तुभमनि सुभ त्रिवलावली। रत्न हाटक खचिन, उरसि पदिकनि पांति, बीच राजति सुभ्र झलक मुक्कावली ॥ ३ ॥ बलय कंकन बाजूबंद आजानुभुज मुद्रिका कर-दल विराजति नखावली। कुनित कर मुगलिका मोहित अखिल विश्व गोपिका जन-मनसि ग्रथित प्रेमावली ॥ ४ ॥ कटि छुद्र घंटिका जटित हीरामनि नाभि अंबुज बलित भ्रंग रोमावली। घाइ कवहुक चलत भक्त हित जानि पिय गंड मंडित रुचिर श्रमजल-कणावली ॥ ५ ॥ पीत कौशेय परिधान सुंदर भंग चलत नूपुर गीत सदावली। हृदय 'कृष्णदास' गिरिधरनलाल की चरन-नख-चंद्रिका हरति तिमिरावली ॥ ६ ॥

यह पद लिखिके आपु तो पधारे। सो 'नेचुकी' गायन को वर्णन सूरदासजीने नाहीं कियो हतो। जो 'नेचुकी' गाय, वासों कहिये, जो-पहले व्यांत होय, ताको स्नेह बछरा ऊपर बहोन होय। सो ऐसी नेचुकी गाय काहू मखा ग्वाल सों धिरत नाहीं हैं, सो वारंवार अपने बछरा के ताई घर को ही भाजत है। जो ऐसी नेचुकी के जूथ में

पडी ने दीलानो विचार करे तेन दीलानां पद सूरदासजीने गायां छे। दान, मान, अने गायनां वर्णन, अथी दीलानां पद सूरदासजीने गायां हुतां। तेथी कृष्णदासजी विचार करतां थाक्या। मनमां मोठी चिंता थय तेमां कृष्णदासजीने अेक प्रहरे गयो। पडी थाकीने उठी भेडा। कागज, लेवनी, अडीयो, कलम धरीने महाप्रसाद लेवा गया। त्यारे श्रीगोवर्द्धनधर आचीने पद पूरे करी गया। ते पद—' आगत अने कान्हो ' (उपर लुओ)। अे पद सभांने आप तो पधार्यां। ते नेचुकी गायतुं वर्णन सूरदासजीने क्युं न हुतुं। नेचुकी गाय अेने इहीअे ने पछेदीवार विवाही होय तेने स्नेह वाछा उपर बछो होय अेवी नेचुकी गाय केअ सभा-व्यासधी घराती नथी। अे वारंवार पैताना वाछाने भाटे घर तरङ्ग न लाजे छे। अेवी नेचुकीना यूथमां

श्रीठाकुरजी आपु पधारे हैं। तब नेचुकी गायकी खुर रेनु सुख पर अलकन पर लगी हैं। सो यह श्रीठाकुरजी आपु एक तुक करि कागज के ऊपर लिखिके पधारे। ता पाछें कृष्णदास महाप्रसाद आनंद सों लेके आये सो कीर्तन पूरन किये। सो पद—

राग गौरी—आवत वने०।

सो या प्रकार कीर्तन पूरो करिके कृष्णदासजी प्रसन्न होयके सूरदासजी के पास आये, हसत-हसत। तब सूरदासजी ने पूछी, जो आज बहोत प्रसन्न हसत आवत हां, सो कहा नौतन पद किये? तब कृष्णदास ने कही, जो-आजु ऐसो पद कियो है, तामें तिहारे पदन की छाया नाही है। जो वस्तु तुमने गाई नहीं है। तब सूरदासजी कहे, जो-तुम मोकों बांचिके सुनावो तो सुनों। तब कृष्णदास (ने) पहली ही तुक कही, जो-ताही कों सुनिके कृष्णदास सों सूरदासजी बोले, जो-कृष्णदास! मेरे तिहारे वाद है। कछु तिहारे वापसों विवाद नाही है। सो यामें तिहारो कहा है? जो मैंने नेचुकी नाही गाई सो प्रभु कहि दिये। और तो श्रीअंगके वरनन के मेरे हजारन पद हैं, सोई तुमने गायके पूरन किये हैं। यह सूरदासजी के बचन सुनिके कृष्णदास चुप होय रहे।

भावप्रकाश—सो तहां यह संदेह होय, जो-कृष्णदासजी तो ललिताजी

श्रीठाकुरजी पोते पधारे छे। त्यारे नेचुकी गायनी 'पुर-रेखु सुख' उपर अलकन (वाण) उपर लागी छे अे श्रीठाकुरजी पोते अेक तुक करी कागज उपर लपनी पधार्या। ते पछी कृष्णदासे महाप्रसाद आनंदथी लडने आवीने ते कीर्तन पुईं कथुं। 'आवत वने०' आ प्रकारे कीर्तन पुईं करीने कृष्णदासल प्रसन्न थडने सूरदासलनी पासे आव्या लसता लसता। त्यारे सूरदासल अे पुछुं, के आन वला प्रसन्न लसता आवो छे ते शुं नवीन पद कथुं? त्यारे कृष्णदासे कथुं, के आन अेपुं पद कथुं छे जेभां तभारा पदानी छाया नथी। अे वस्तु तमे गाड नथी। त्यारे सूरदासल कहे, के तमे मने बांचीने सांभगावो तो सांभणुं। त्यारे कृष्णदासे पहलेडीन तुक कही तेने न सांभणीने कृष्णदासथी सूरदास जोथ्या, के कृष्णदास भारे तभारे वाद छे कंठ तभारा आपथी वाद नथी। आभां तभाडुं शुं छे? मं नेचुकी न गाड ते प्रभुअे कही दीधुं। फीज् तो श्रीअंगनां वर्णननां सारां लउरे पद छे तेन तमे गाडने पूरां कथ्यां छे। आ सूरदासलतुं पयन सांभणीने कृष्णदासल चुप थड रखा।

भावप्रकाश—त्यां आ संदेह धाय के कृष्णदासल तो ललितालतुं स्वइप छे

को स्वरूप हैं, और श्रीगोवर्द्धननाथजी कृष्णदास की पक्ष किये, सो पद बनाये । तोहू सूरदासजी सों न जीते । ताको कागन कहा है ? तहां कहत हैं, जो-कृष्ण-दासजी ललितारूप हैं । सो तैसेही सूरदासजी चंपकलतारूप हैं । परंतु अपनो अधिकार-भेद है । सो लीलाहू में श्रीललिताजी की सेवा श्रेष्ठ है । तैसेही यहां 'सेवा की भांत तैं' कृष्णदास श्रेष्ठ । सो सगरे सेवकन की सेवा में चोकसी, सगरी वस्तु समारनी, सेवा को मंडान विस्तार करनो । यामें कृष्णदास परम चतुर । जैसे सुनार सों दरजी की सेवा न होय और दरजी सों सुनार के आभूपन को काम न होय । सो सब अपनी अपनी सेवा में चतुर हैं । और श्रीस्वामिनीजी की सखी दोऊ प्रिय हैं । तामों श्रीगोवर्द्धननाथजी की प्रीति तो दोउन के ऊपर है । परन्तु कृष्णदास के मन में रंचक अहंकार आयो, जा-मैं हू कीर्तन बहोत किये हैं ।

सो वे कृष्णदास श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ।

वार्ता-प्रसंग ५—और एक समय श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिरमें सामग्री चाहियत हती, सो तब कृष्णदास गाड़ा लिवाय आपु रथपर असवार होयके श्रीगोवर्द्धन सों, आगरे आये । सो जब आगरे के बजार में गये, तहां एक बेरया अपनी छोरीकों नृत्य सिखावत हती । सो वह छोरी परम सुंदर बरम बारह की हती, कंठहू परम सुंदर

अने श्रीगोवर्द्धननाथजीके कृष्णदासको पक्ष कियो, ते पद बनाव्यां । तो पणु सूरदासजीथी ललितारूप हैं । तेनुं शुं डारणु छे ? त्यां कहीअये छीअये, के कृष्णदासललितारूप छे । तेनू रीते सूरदासल अंपकलता रूप छे । परंतु पोतानो अधिकार लेह छे । लीलाभां पणु श्री-ललितारूपनी सेवा श्रेष्ठ छे तेनू रीते अहीं सेवाना लेहथी कृष्णदास श्रेष्ठ । ते अथा सेव-केानी सेवामां चोकसी अधी वस्तु संलाणनी सेवाना मंडाणुनो विस्तार करयो । अेमां कृष्णदास परम चतुर । जेम सोनीथी दरलनी सेवा न थाय अने दरलथी सोनीनां आभू-षणुनुं काम न थाय । ते अथा पोतपोतानी सेवामां चतुर छे । वणी श्रीस्वामिनीलनी अन्ने प्रिय सणी छे । तेथी श्रीगोवर्द्धननाथलनी प्रीति तो अन्नेना उपर छे । परंतु कृष्णदासना मनमां रंचक अहंकार आव्यो के में पणु कीर्तन वणुं कयां छे ।

अे कृष्णदास श्रीआचार्यलना अेवा कृपापात्र भगवदीय हताः

वार्ता-प्रसंग ५-वणी अेक समय श्रीगोवर्द्धननाथलना मंदिरमां सामग्री अेधती हती त्यारे कृष्णदास गाड़ु मंगावी पोते रथ उपर असवार थकते श्रीगोवर्द्धनथी आथा आव्या । न्यारे आथाना अजरमां गया (त्यारे) त्यां अेक बेरया पोतानी छेकरीने नृत्य शिखावती हती । ते छेकरी परम सुंदर बरम बारह की हती । कंठ पणु परम सुंदर

हतो । सो गाननृत्य में चतुर बहोत हती । सो वह वेस्या खयाल टप्पा गावत हती । सो वह छोरी को गान कृष्णदास के कानपें परयो हतो सो कृष्णदास के मनमें बैठि गयो, सो प्रसन्न होय गये । तब कृष्णदास ने तहां अपनो रथ ठाड़ो क्रियो । सो भीड़ सरकायके वा छोरी को रूप देखे, सो तहां गान सुनिके मोहित होय गये ।

भावप्रकाश—तहां यह संदेह होय, जो-कृष्णदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के कृपापात्र सेवक वेस्या के गान पर मोहित क्यों भये ? जो-ये तो श्रीठाकुरजी के ऊपर मोहित हैं । सो उनकों अप्सरा देवांगना तुच्छ दीसत हैं । और श्रीआचार्यजी आपु जलभेद ग्रंथ में कहे हैं, जो—

‘वेश्यादिसहिता मत्ता गायका गर्तसंज्ञिताः ।

जलार्थमेव गर्तास्तु नीचा गानोपजीविनः ॥

वेश्यादि सहित गायक भाट, डोम, नीच को गान सूकर के गड़ेला के जलवत् है । सो वामें न्हाय, पीवे, सो जैसे नीच को गानरस पीवे । या प्रकार के दोष श्रीआचार्यजी कहे हैं । सो कृष्णदाम परमज्ञानवान मर्यादा के रक्षक । सो ये वेस्या के गानपें रीझे ? सो इनकी देखादेखी करे सो बहिर्मुख होय । ये तो सब कों शिक्षा देवे कों उद्धार करन कों प्रगटे हैं, तासों ये कृष्णदास वेस्या के ऊपर क्यों रीझे ? यह संदेह होय तहां कहत हैं, जो-यहां कारन और है । जो-यह

हुतो. गान-नृत्यमां चतुर धणी हुती. ये वेश्या ज्यास-टप्पा गाती हुती. ते छाकरीनुं गान कृष्णदासना कान उपर पडयुं हुतुं. ते कृष्णदासना मनमां भेसी गयुं. तेथी प्रसन्न थय गया. त्यागे कृष्णदासे त्यां पोतानो रथ उल्लो राज्यो. पछी लीड भसेडीने ये छाकरीनुं रुप जेयुं अने त्यां गान सांभणीने मोहित थय गया.

भावप्रकाश—अहीं स'देह थाय के कृष्णदास श्रीआचार्य'ल महाप्रभुलना कृपापात्र सेवक वेस्याना गान उपर मोहित केम थया ? ये तो श्रीठाकुर'ल उपर मोहित छे. येमने अप्सरा देवांगना तुच्छ देभाय छे वणी श्रीआचार्य'ल पोते 'जलभेद' ग्रंथमां कहे छे के 'वेश्यादि सहिता' (उपर लुओ). वेश्यादि सहित गायक भाट, डोम, नीचनुं गान. भूंडना भाडाना जलवत् छे. तेमां न्हाय पीवे तेम नीचनुं गान रस पीवुं छे. आ प्रकारने दोष श्रीआचार्य'लये कह्यो छे. तेथी कृष्णदास परमज्ञानवान मर्यादाना रक्षक ते वेस्याना गान उपर रीज्या ? येमनी देभादेभी करे ते बहिर्मुख थाय. येतो गधाने शिक्षा देवाने उद्धार करवाने प्रकथ्या छे. तेथी ये कृष्णदास वेस्याना उपर केम रीज्या ? ये स'देह थाय त्यां कहे छे के अहीं कारण भीनुं छे. आ वेस्यानी

वेस्या की छोरी लीला संबंधी दैवी जीव ललिताजी की सखी हैं, सो लीला में इनको नाम 'बहुभापिनी' है। सो एक दिन ललिताजी श्रीठाकुरजी के लिये सामग्री करत हती, तब ललिताजी ने बहुभापिनी सों कही, जो-तू मिश्री पीसिके ले आउ। सो बहुभापिनी मिश्री को डवरा भरिके ले चली। मो दूमरी सखी सों बात करते करते छांटा उढ्यो, सो मिश्री में पख्यो। सो बहुभापिनी कों खवरि नाहीं। पाछे मिश्री को डवरा लेके ललिताजी के पास आई, तब ललिताजी परम चतुर हती, सो जानि गई। पाछे बहुभापिनी मों कही, जो-यह सामग्री छुड़ गई, जो-तेरे मुख तें छांटा पख्यो है। सो भगवद् इच्छा होनहार। तब बहुभापिनी ने कही, जो-तुम झूठ कहत हों, छोटा तो नाहीं पख्यो। और श्रीठाकुरजी सखामंडली में सबकी जूठनि हू लेत हैं। सो तब ललिताजी ने कह्यो, जो-प्रभुन की लीला तू कहा जाने? प्रभु प्रसन्न होय चाहे सो करें सोई छाजे। जो-अपने मन तें कछु हीन क्रिया करे सोई भ्रष्ट। तासों तू हीन ठिकाने जनमेगी। तब बहुभापिनी ने कही, जो-तुमहू शूद्र के घर जनम लेके मेरो उद्धार करो। जो-तुमकों छोड़िके मैं कहां जाऊँ? सो या प्रकार परस्पर शाप भयो। तब कृष्णदास शूद्र के घर जन्मे, और बहुभापिनी को जनम वेस्या के घर मात्र भयो, सो लौकिक पुरुष को मुंह नाहीं देख्यो। सो कृष्णदास कों श्रीगोवर्द्धनधर प्रेरिके आगरे में वा वेस्या के अंगीकार के लिये पठाये। तासों कृष्णदास के हृदय में वेस्या को गान प्रिय लग्यो।

छोडरी लीला संबंधी दैवी जीव ललिताजी की सखी छे। लीलाभां अेमनु' नाम 'अहु भापिनी' छे। अेक दिवस ललिताजी श्रीठाकुरजीने भाटे सामग्री करती हुती त्त्यारे ललिताजीअे अहुभापिनीने कह्युं, के तू मिश्री पीसीने लध आव. अेटवे अहुभापिनी मिश्रीने उणरे लरीने लध यादी त्त्यारे जीअ सखीने बात करतां करतां छांटो उख्यो ते मिश्रीभां पडथे। तेनी अहुभापिनीने अणर नही। पछी मिश्रीना उणरे लधने ललिताजीनी पासे आवी। त्त्यारे ललिताजी परम चतुर हुती ते नलषी गध। पछी अहुभापिनीने कह्युं, के आ सामग्री छेवाध गध छे, त्तारा सुअथी छांटो पडथे छे। पछी लगवहीअछा डोनहार त्त्यारे अहुभापिनीअे कह्युं, के तमे नूहुं पोदो छे छांटो तो नधी पड्यो। वणी श्रीठाकुरजी सखा मंडलीभां अधानी नूठ पषु दे छे त्त्यारे ललिताजीअे कह्युं, के प्रभुनी लीलाने तू शुं नलखे? प्रभु प्रसन्न थध आडे ते करे तेय शोले परंतु पौताना मनधी कध हुन क्रिया करे ते अ्रष्ट. तेधी तू हीन अगाअे अन्मीश. त्त्यारे अहुभापिनीअे कह्युं, के तमे पषु शूद्रना धरे अन्म लध भारो उद्धार करे। तमने छोडीने हुं कथां अड? आ प्रकारे परस्पर शाप थथे। त्त्यारे कृष्णदास शूद्रना धरे अन्म्या अने अहुभापिनीने

सो ठाड़े होयके गान नृत्य सुनिके मनमें विचारे, जो-यह सामग्री तो अति उत्तम है, और दैवी जीव है, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के लायक है। तासों श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु बाकों अंगीकार करें तो आछो है। सो यह कृष्णदासजी अपने मन में विचार करिके दस रुपैया वा वेस्याकों देके कहे, जो-हमारे डेगन पर रात्रिकों आइयो। यह कहिके कृष्णदासजी जहां हवेली में हमेस उतरते ताही हवेलीमें उतरे, और सामग्री जो लेनी हती सो गाड़ा लदाय दिये। ना पाछें रात्रि प्रहर एक गई, तब वह वेस्या समाज सहित आई, सो तब नृत्य गान कियो। सो कृष्णदास बहोत प्रसन्न भये। तब वा वेस्या कों रुपैया (१००) सौ दिये। और वा वेस्या सों कहे, जो-तेरो रूप, गान, नृत्य सब आछे हैं। तासों सवारे हम श्रीगोवर्द्धन जायगें, और हमारो सेठ तो उहां हैं, जो-तेरो मन होय तो तू चलियो। तब वा वेस्या ने कही, जो-हमकों तो यही चाहिये। पाछें वह वेस्या अपने मनमें बहोत प्रसन्न भई, जो-ये इतने रुपैया दिये तो सेठ न जाने कहा देयगो? सो तब वेस्या ने घर आयके अपनी गाड़ी सिद्ध कराई, सो गायवे को साज सब आछे बनाय गाड़ी ऊपर धरि राखयो। तब

जन्म मात्र वेस्याना धरे थयो पण लौकिकपुरुषनु मुष्ण न ज्येथुं. अेटवे कृष्णदासने श्री-गोवर्द्धनधरे प्रेरीने आग्रामां ते वेस्याना धरे भोक्कया. तेथी कृष्णदासना हृदयमां वेस्यानुं गान प्रिय लाग्युं.

अेथी उल्ला रडीने गान नृत्य सांभणीने मनमां वियायुं, के आ सामग्री तो अति उत्तम छे. वणी देवी लय छे अेथी श्रीगोवर्द्धननाथलता लायक छे. तेथी श्री-गोवर्द्धननाथल पोते अेना अंगीकार करे तो साइं छे. अेम कृष्णदासे पोताना मनमां वियार करीने दश रुपैया अे वेस्याने आपीने छे, के अमारा मुकामे रात्रिअे आवजे. अेम इडीने कृष्णदासल ज्यां हवेडीमां हंमेश उतरता उता तेज हवेडीमां उतर्या अने सामग्री जे लेवी हुती तेनुं गाड़ुं लरावी दीधुं. ते पथी रात्रि प्रहर अेक गड. त्यारे अे वेस्या समाज सहित आची त्यारे नृत्यगान क्युं. तेथी कृष्णदास अहु प्रसन्न थया. त्यारे अे वेस्याने रुपैया (१००) सो आया अने अे वेस्याने छे, के ताइं रुप. गान. नृत्य अहुं साइं छे. तेथी सवारे अमे श्रीगोवर्द्धन जगथुं अने अमारे सेठ तो त्यां छे. जे ताइं मन होय तो तू यासजे. त्यारे अे वेस्याअे कहुं, के अमारे तो आ न जेअे. पथी अे वेस्या पोताना मनमां अहु प्रसन्न थछ, के आभये आरक्षा रुपैया आया तो सेठ न जेअे थुं आपसे ? त्यार पथी वेस्याअे धर

सवारे भये कृष्णदास के पास आई। पाछें कृष्णदास वा वेस्या कौं लिवाय के ले चले, सो मथुरा आय रहे। तब दूसरे दिन मथुरा तें चले सो मध्यान्ह समय गोपालपुर में आये। पाछें वा वेस्या कौं न्हवाय के नवीन वस्त्र पहरेवेकौं दियो, सो बाने पहरेयो। तब कृष्णदास अपने मन में विचारे, जो-यह ख्याल टप्पा गायगी सो श्रीगोवर्द्धनधर सुनेंगे। तासों मैं याकौं एक पद सिम्बाजं। तब कृष्णदास ने वा वेस्या कौं एक पद सिम्बायो। और कह्यो, जो-ये पद तू पूर्वी राग में गाइयो। सो पद—

राग पूर्वी—मेरो मन गिरिधर छवि पर भटक्यो। ललित त्रिभंगी अंगन ऊपर चलि गयो तहां ही ठठक्यो ॥ १ ॥ सजल स्यामघन नील वरन है फिरि चित्त अनतन भटक्यो। 'कृष्णदास' कियो प्रान न्योछावरि यह तन जग सिर पटक्यो ॥ २ ॥

यह पद कृष्णदासने वा वेस्या कौं सिम्बायो। ता पाछें उत्थापन के दरसन होय चुके, तब भोग के दरसन के समय वा वेस्या कौं समाज सहित कृष्णदास परवन के ऊपर ले गये।

भावप्रकाश—सो भोग के समय यातें ले गये, जो-उत्थापन के समय निकुंज में जागिके (श्रीठाकुरजी) उठत हैं। तातें उत्थापन भोग वेगि आयो चाहिये। और भोग के दरसन-व्रज के मारग में पधारत हैं, सो अनेक भक्तन कौं अंगीकार हैं। तासों याहू को अंगीकार करनो है। तासों भोग के समय कृष्णदास वेस्या कौं परवत उपर ले गये।

आवीने पौतानी गाडी सिद्ध करायी। पछी गावानो साज षषो सुंदर अनावी गाडी उपर धरी राभ्यो। पछी सवारे थये कृष्णदासनी पासे आवी। पछी कृष्णदास ये वेश्याने साथे लडने आल्या ते मथुरा आवी रह्यो। त्यारे पीछे द्विसे मथुराथी आल्या ते मध्याह्न समये गोपालपुरमां आव्या। पछी ये वेश्याने नवउावीने नवीन वस्त्र पहरेयाने आय्युं ये येखे पछेयुं। त्यारे कृष्णदास पौताना मनमां विचारे, के आभ्यास-टप्पा गादी ते श्रीगोवर्द्धनधर सांलगयो, तेथी हुं ओने ओक पद शिभवाडुं। त्यारे कृष्णदासे ये वेश्याने ओक पद शिभवाडुं अने कथुं, के तू पूर्वी रागमां गाये। ते पद—'मेरो मन गिरिधर छपी पर अटक्यो' (उपर लुयो)। ये पद कृष्णदासे ये वेश्याने शिभवाडुं। ते पछी उत्थापननां दर्शन थछ अड्यो। त्यारे लोगना दर्शनना समये ये वेश्याने समाज सहित कृष्णदास परवत उपर लड गया।

भावप्रक श—लोगना समये येथी लड गया के उत्थापनना समये निकुंजमां लगीने (श्रीठाकुरजी) उठे छे। तेथी उत्थापननो लोग न्हेंदो आवयो नेछये अने लोगनां दर्शन (अटले) व्रजना मार्गमां पधारे छे त्यारे अनेक लडताने अंगीकार

सो ठाड़े होयके गान नृत्य सुनिके मनमें विचारे, जो-यह सामग्री तो अति उत्तम है, और दैवी जीव है, सो श्रीगोवर्द्धननाथजी के लायक है। तासों श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु बाकों अंगीकार करें तो आछो है। सो यह कृष्णदासजी अपने मन में विचार करिके दस रुपैया वा बेस्याकों देके कहे, जो-हमारे डेगन पर रात्रिकों आइयो। यह कहिके कृष्णदासजी जहां हवेली में हमेस उतरते ताही हवेलीमें उतरे, और सामग्री जो लेनी हती सो गाड़ा लदाय दिये। ता पाछें रात्रि प्रहर एक गई, तब वह बेस्या समाज सहित आई, सो तब नृत्य गान कियो। सो कृष्णदास बहोत प्रसन्न भये। तब वा बेस्या कों रुपैया (१००) सौ दिये। और वा बेस्या सों कहे, जो-तेरो रूप, गान, नृत्य सब आछे हैं। तासों सवारे हम श्रीगोवर्द्धन जायगें, और हमारो सेठ तो उहां हैं, जो-तेरो मन होय तो तू चलियो। तब वा बेस्या ने कही, जो-हसकों तो यही चाहिये। पाछें वह बेस्या अपने मनमें बहोत प्रसन्न भई, जो-ये इतने रुपैया दिये तो सेठ न जाने कहा देयगो? सो तब बेस्या ने घर आयके अपनी गाड़ी सिद्ध कराई, सो गायवे को साज सब आछे बनाय गाड़ी ऊपर धरि राखयो। तब

जन्म मात्र बेस्याना धरे थयो पण्डु लौकिकपुरषनुं सुभ न जेथुं. अेटवे कृष्णदासने श्री-गोवर्द्धनधरे प्रेरीने आत्राभां ते बेस्याना धरे भोडव्या. तेथी कृष्णदासना हृदयभां बेस्यानुं गान प्रिय लाथुं.

अेथी उला रहुनि गान नृत्य सांलणीने मनभां विचारुं, के आ सामग्री तो अति उत्तम छे. पणी दैवी जीव छे अेथी श्रीगोवर्द्धननाथजना लायक छे. तेथी श्री-गोवर्द्धननाथज पोते अेना अंगीकार करे तो साइं छे. अेम कृष्णदासे पोताना मनभां विचार करीने दश रुपैया अे बेस्याने आपीने डहे, के अमारा सुकामे रात्रिअे आयजे. अेम इहीने कृष्णदासज न्यां हुवेडीभां हुंमेश उतरता हुता तेज हुवेडीभां उतर्या अने सामग्री जे लेवी हुती तेहुं गाडुं लरावी दीधुं. ते पछी रात्रि प्रहर अेक गड. त्पारे अे बेस्या समाज सहित आवी त्पारे नृत्यगान क्युं. तेथी कृष्णदास अहु प्रसन्न थया. त्पारे अे बेस्याने रुपैया (१००) सौ आभ्या अने अे बेस्याने डहे, के ताइं रुप. गान, नृत्य अहुं साइं छे. तेथी सवारे अमे श्रीगोवर्द्धन नरुशुं अने अमारे सेठ तो त्यां छे. जे ताइं मन होय तो तू आसजे. त्पारे अे बेस्याअे डहुं, के अमारे तो आ न जेठअे. पछी अे बेस्या पोताना मनभां अहु प्रसन्न थछ, के आभजे आसजा रुपैया आभ्या तो सेठ न जेठे शुं आपसे? त्पार पछी बेस्याअे धर

सवारे भये कृष्णदास के पास आई। पाछें कृष्णदास वा वेस्या कों लिवाय के ले चले, सो मधुरा आय रहे। तब दूसरे दिन मधुरा तें चले सो मध्यान्ह समय गोपालपुर में आये। पाछें वा वेस्या कों न्हवाय के नवीन वस्त्र पहरेवेक्यों दियो, सो वाने पहरेयो। तब कृष्णदास अपने मन में विचारे, जो—यह ख्याल टप्पा गायगी सो श्रीगोवर्द्धनधर सुनेंगे। तासों मैं याकों एक पद सिग्वाऊं। तब कृष्णदास ने वा वेस्या कों एक पद सिग्वायो। और कह्यो, जो—ये पद तू पूर्वी राग में गाइयो। सो पद—

राग पूर्वी—मेरो मन गिरिधर छवि पर अटक्यो। ललित त्रिभंगी अंगन ऊपर चलि गयो तहां ही ठठक्यो ॥ १ ॥ सजल स्यामघन नील वरन है फिरि चित्त अनतन भटक्यो। 'कृष्णदास' कियो प्रान न्योछावरि यह तन जग सिर पटक्यो ॥ २ ॥

यह पद कृष्णदासने वा वेस्या कों सिग्वायो। ता पाछें उत्थापन के दरसन होय चुके, तब भोग के दरसन के समय वा वेस्या कों समाज सहित कृष्णदास परवन के ऊपर ले गये।

भावप्रकाश—सो भोग के समय यातें ले गये, जो—उत्थापन के समय निकुंज में जागिके (श्रीठाकुरजी) उठत हैं। तातें उत्थापन भोग वेगि आयो चाहिये। और भोग के दरसन—व्रज के मार्ग में पधारत हैं, सो अनेक भक्तन कों अंगीकार हैं। तासों याहू को अंगीकार करनो है। तापों भोग के समय कृष्णदास वेस्या कों परवत उपर ले गये।

आवीने पोतानी गाडी सिद्ध करावी। पछी गावानो साज अवेो सुंदर अनावी गाडी उपर धरी राग्यो। पछी सवार थये कृष्णदासनी पासो आवी। पछी कृष्णदास अवेो वेस्याने साथे लठने आइया ते मधुरा आवी रह्या। त्यारे भील द्विरो मधुराथी आइया ते मध्याह्न समये गोपालपुरमां आइया। पछी अवेो वेस्याने नुवडावीने नवीन वस्त्र पहरेवाने आय्युं अवेो पहेयुं। त्यारे कृष्णदास पोताना मनमां विचारे, के आ आइ—टप्पा गागी ते श्रीगोवर्द्धनधर सांसगरी, तेथी हुं अने अके पद शिभवाडुं। त्यारे कृष्णदास अवेो वेस्याने अके पद शिभवाडुं अने कहुं, के तू पूर्वी रागमां गाये। ते पद—'मेरो मन गिरिधर छपी पर अटक्यो' (उपर लुओ)। अवेो पद कृष्णदास अवेो वेस्याने शिभवाडुं। ते पछी उत्थापननां दर्शन थडू चूक्यां। त्यारे लोगना दर्शनना समये अवेो वेस्याने समाज सहित कृष्णदास परवत उपर लठ गया।

सात्रपके २—लोगना समये अथी लठ गया के उत्थापनना समये निकुंजमां लगीने (श्रीठाकुरजी) उठे छे। तेथी उत्थापनना लोग उठेके आवयो लोछये अने लोगनां दर्शन (अटके) व्रजना मार्गमां पधारे छे त्यारे अनेक लठतोने अंगीकार

पाछें भोगके किवाड़ खुले । तब वह वेस्या ने पहले नृत्य कियो, ता पाछें गान करन लागी । सो कृष्णदास ने पद करिके सिखायो हतो सो गायो । सो गावन २ जब छेली तुरु आई, जो- 'कृष्णदास कियो प्रान न्योछावरि यह तन जग सिर पटकयो' या पद को गान करन ही बा वेस्या की देह छुटि गई, सो दिव्य देह होय लीला में प्राप्त भई सो तब मगरे समाजी तथा बा वेस्याकी माता रोवन लागी । जो हम यासों कमाय जाते, अब हम कहा करेंगे ? तब कृष्णदासने उनकों नीचे ले जायके कह्यो, जो-अब तो भई सो भई, जो याकी इननी आरबल हती । सो या बात को कोऊ कहा करे ? अब तुम कहो सो तुमकों देऊँ । तब उन कही, जो-हजार रुपैया देऊ जो-कछुक दिन खांय । पाछें जो होनहार होयगी सो सही । तब कृष्णदास नें हजार रुपैया देके उन सबन कों विदा किये । सो या प्रकार बा वेस्या की छोरी कों श्रीगोवर्द्धननाथजी कृष्णदास की कानि तें आपु अंगीकार किये ।

भावप्रकाश—तहां यह संदेह होय, जो-श्रीआचार्यजी के संबंध विना लीला की प्राप्ति कैसे भई ? तहां कहत है, जो-कृष्णदास के हृदय में श्रीआचा-

करे छे. तेथी आने पण अंगीकार करवे छे. तेथी लोगना समये कृष्णदास वेश्याने पर्वत उपर लभ गया.

पछी लोगनां कमाउ भुल्यां. त्पारे अ वेश्याये पहेलां नृत्य क्युं. ते पछी गान करवा लागी. कृष्णदासे पद करीने शिष्याउयुं छतुं ते गायुं. ते गातां गातां न्यारे छेटी तुरु आवी के 'कृष्णदास कियो प्रान न्योछावरि यह तन जग सिर पटकयो' अये पदुं गान करतां ज ते वेश्यानी देह छुटी गछ. ते दिव्य देहथी लीलाभां प्राप्त थछ. त्पारे अथा समाज तथा ते वेश्यानी माता रोवा लागी, के अमे आनाथी कमाछ आतां छता छवे अमे शुं करीशुं ? त्पारे कृष्णदासे अमने नीचे लभ नछने कछुं, के छवेतो थयुं ते थयुं. अनी अट्टी न आयुष्य छती. अे वातने केछ शुं करे ? छवे तमे कछो ते तमने आपुं ? त्पारे अछे कछुं, के छगर रुपैया आपो जे थोडाक दिवस आछे. पछी जे थवा काण छरी ते थरी. त्पारे कृष्णदासे छगर रुपैया छने ते अंधांने विदाय कर्या. अे प्रकारे अे वेश्यानी छोडरीने श्रीगोवर्द्धननाथलअे पोते कृष्णदासनी धानथी अंगीकार करी.

भावप्रकाश—त्यां अे संदेह थाय के श्रीआचार्यजना संबंध विना लीलाना प्राप्ति केम थछ ? त्यां कहीअे छीअे, जे कृष्णदासना हृदयभां श्रीआचार्यल गिराजे छे.

र्यजी विराजत हैं । सो कृष्णदास ने पद वेस्या की छोरी कों सिखायो, सो देखिवे मात्र है । या पद द्वारा श्रीआचार्यजी को संबंध कराये । तासों यह पहिली तुक में कहे, जो—‘मेरो मन गिरधर—छवि पर अटकयो’ सो सगरो धर्म, मन लगायवे की रीति करी है । जोव अपनी सत्ता मानि स्त्री, पुत्र, देह में मन लगायो (है) तासों समर्पन करावत हैं । तहां कोऊ कहे, जो-जीव सब दे चुक्यो है, जो-अपनी सत्ता छोड़िके प्रभुन की सत्ता सब है । तासों मोकों तो एक श्रीकृष्ण ही गति हैं । तासों या पद में कहे, जो-मेरो मन श्रीगोवर्द्धनधर की छवि पर अटकयो, सो सब छोड़िके । या प्रकार कृष्णदास द्वारा श्रीआचार्यजी आपु संबंध कराये, यह जाननो । तोहू संदेह होय, जो-गुरु बिना लीला में कैसे प्राप्ति भई ? मो अलीखान कों प्रभु दग्सन दिये । पाछे अलीखान कों और अलीखान की बेटी कों सेवक होयवे की कही, सो सेवक कराये । यहां नाहीं कगये, यह संदेह होय । सो काहेते ? जो-ब्रह्मसंबंध में श्रीगोवर्द्धनधर की हू यही अज्ञा है, जो-जाकों तुम ब्रह्मसंबंध कगवावोगे, ताकूं मैं अंगीकार करूंगो । तासों इनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभु, श्रीगुसांईजी द्वारा ब्रह्मसंबंध न भयो और लीला की प्राप्ति कैसे भई ? उद्धार होय परंतु लीला की प्राप्ति अत्यंत दुर्लभ । सो ब्रह्मसंबंध को दान करिवे के लिये श्रीआचार्यजी के कुल को विस्तार भयो । सो काहे तें ? जो-सेवकन कों श्रीआचार्यजी

कृष्णदासे पद वेस्यानी छोकरिने शिष्यावाडयुं । ते देषवा मात्र छे । (परतु) ये पद द्वारा श्रीआचार्यजीने संबंध कराव्यो तेथी ये पड़ेली तुकमां दहे डे ‘ मेरो मन गिरधर छवि पर अटकयो ’ सधणो धर्म, मन लगावानी रीत करी छे । एवे पोतानी सत्ता मानि स्त्री, पुत्र, देहमां मन लगाव्युं छे तेथी समर्पण करावे छे, त्यां डेह दहे एव भधुं दध चुक्यो छे अटवे डे पोतानी सत्ता छोडीने प्रभुनी भधी सत्ता छे तेथी भने तो अेक श्रीकृष्ण न गति छे तेथी या पदमां कहुं डे भाइं मन श्रीगोवर्द्धनधरनी छवि उपर अटक्युं ते भधुं छोडीने अे प्रकारे कृष्णदास द्वारा श्रीआचार्यजीने पोते संबंध कराव्यो अे जलपुं । तो पल स’देह धाय डे गुरु बिना लीलामां डेवी रीते प्राप्ति थध ? अलीखानने प्रभुअे दर्शन दीधां पछी अलीखानने अने अलीखाननी गेटीने सेवक थवानुं कहुं तेमने सेवक कराव्यां । अहीं नहीं करावी । अे स’देह धाय डेमडे प्रहसंबंधमां श्रीगोवर्द्धनधरनी पल अे न आशा छे । डे नेने तमे प्रहसंबंध करावशो तेनो हुं अंगीकार करीश तेथी आने श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीगुसांईजी द्वारा प्रहसंबंध न थयुं अने लीलानी प्राप्ति डेम थध ? उद्धार धाय परंतु लीलानी प्राप्ति अत्यंत दुर्लभ प्रहसंबंधनुं दान करवाने माटेन श्रीआचार्यजीने कुलने

आपु नाम सुनायवे की आज्ञा दीनी, परि ब्रह्मसंबंध की नाही । तामों ब्रह्मसंबंध को दान बल्लभकुल ही तें होय । सो औरतें फलित नाही है । यह संदेह होय, तहां कहत हैं, जो-वेस्या की छोरी देह तजिके लीला में गई । तहां लीला में ललिता, श्रीस्वामिनीजी सदा विराजत हैं । सो कृष्णदासजी लीला में ललिता रूप होय जगत तें काढिके लीला में पठाये, सो लीला में श्रीललिताजी ने श्रीस्वामिनीजी द्वाग ब्रह्मसंबंध कराय अपनी सेवा में राखे । सो काहेतें ? जो--ललिताजी की सखी है । या प्रकार ब्रह्मसंबंध भयो । सो जैसे मथुरा में नागर की वेटी कों लीला में ब्रह्मसंबंध श्रीगुसाईजी कगाये, यह भाव जाननो ।

सो वे कृष्णदास ऐसे भगवदीय हते । जो वेस्या कों अंगीकार करायो ।

वार्ता-प्रसंग ६—और एक समय मगर वैष्णव मिलिके कुंभनदासजी के पास आये । सो उनकों प्रीति सों बैठारिके पूछे, जो-आजु बड़ी कृपा करी, जो-कछु आज्ञा करिये । तब वैष्णवनने कही, जो-तुमसों कछु मारग की रीति सुनिवे कों आये हैं । तब कुंभनदासजी कह्यो, जो-मारग की रीति में तो कृष्णदास अधिकारी निपुण हैं, सो उनसों पूछो । तब उन वैष्णवनने कही, जो-हमारी सामर्थ्य नाही है, जो-कृष्णदास सों पूछि सकें । तब कुंभनदासजी ने कह्यो, जो-तुम

विस्तार थयो, केभडे सेवकेने श्रीआचार्यलये नाम संलणवावानी आज्ञा आपी परंतु प्रहस'बंधनी नहीं. तेथी प्रहस'बंधनु' दान वल्लभकुलथीन थाय. पीनथी इदित नथी. ये स'देह डोय त्यां इहीये छीये के वेश्यानी छोडरी देह छोडीने लीलाभां गध त्यां लीलाभां ललिता, श्रीस्वामिनील सदा विराजे छे. ते कृष्णदासल लीलाभां ललिता रूप थध जगतमांथी काढीने लीलाभां भेकली. ते लीलाभां ललितालये श्रीस्वामिनील द्वारा प्रहस'बंध करावी पोतानी सेवाभां राणी. केभडे ते ललितालनी सणी छे. ये प्रकारे प्रहस'बंध थयु'. नेभ मथुराभां नागरनी भेटीने लीलाभां प्रहस'बंध श्रीगुसां-धलये कराव्यु' ये भाव जाणवो.

ये कृष्णदास येवा भगवदीय हुता, ने वेश्याना अंगीकार कराव्यो.

वार्ता-प्रसंग ६-वणी अक समय थथा वैष्णवो भणीने कुंभनदासलनी पास आव्या. त्यारे अभने प्रीतिथो भेसाडीने पूछयु', के आज भदान कृपा करी कंठ आज्ञा करे. त्यारे वण्णवोये इलु', के तमारी पासैथी कंठ मार्गनी रीति सांलणवाने आव्या छीये. त्यारे कुंभनदासलये इलु', के मार्गनी रीतिभां तो कृष्णदास अधिकारी निपुण छे तेथी अभने पूछो. त्यारे ये वैष्णवोये इलु', के तमारी सामर्थ्य नहीं ने

मेरे संग चलो, जो-तिहारी ओर तें हम पूछेंगे । तब सगरे वैष्णव कुंभनदासजी के संग गये ।

भावप्रकाश—सो कुंभनदासजी यातें नाहीं कहे, जो-कुंभनदासजी को मन रहस्य लीला में मगन है । सो कहा जानिये जो प्रेम में कहा वस्तु निकसि पडे ? और कीर्तन में गूढ रीति सों लीला वरनन करत हैं । तासों जाको जैसो अधिकार है, ताको तैसो कीर्तन में भासत है । और वैष्णवन सों कहनो परे सो खोलिके समुझावनो परे । तासों कुंभनदासजी कृष्णदास के पास सगरे वैष्णवन कों संग लेके आये ।

सो तब सब वैष्णवन कों देखिके कृष्णदास बहोत प्रसन्न भये, और सबन कों आदर करिके बैठारे । ता समय कृष्णदासने यह कीर्तन गायो । सो पद—

राग सारंग—गिरिघर जब अपुनो करि जाने । ताको मन भक्तन की सेवा भक्त चरनरज सदा लुभाने ॥ १ ॥ भक्तन में मति भक्तन में गति हरिजन हरि एक करि माने । 'कृष्णदास' मन वच क्रम करि हरिजन संगे हरि उर आने ॥ २ ॥

यह पद कृष्णदासने कह्यो । पाछें कृष्णदासने पूछी, जो-आज सो पर सगरे भगवदीय कृपा करे, सो-मेरे पास पधारै । तासों अब जो प्रसन्न होयके आज्ञा करो सो मैं करूं । तब कुंभनदासजीने कह्यो, जो-सगरे वैष्णवन को मन पुष्टिमार्ग की रीति सुनिवे को है । सो कहा कहिये ? कहा सुमिरन करिये ? जासों ऐसे पुष्टिमार्गको अनुभव

(अमे) कृष्णदासने पूछी शकीये । त्यारे कुंभनदासलये कहुं, के तमे मारी साथे आलो । तमारी तरकीबी अमे पूछीशुं, त्यारे अथा वैष्णवो कुंभनदासलनी साथे गया ।

भावप्रकाश—कुंभनदासलये अथी ना कही के कुंभनदासतुं मन रहस्य लीलासां मगन छे । तेथी शुं कृष्णलये के प्रेमसां कछ वस्तु निकली नय ? अने कीर्तनसां (तो) गूढ रीतिथी लीला वर्णन करे छे तेथी जेनो जेवो अधिकार छे तेने तेवुं कीर्तनसां हेभाय छे अने वैष्णवोने कडेवुं पडे ते (तो) भोलीने समलवधुं पडे तेथी कुंभनदासल कृष्णदासनी पास अथा वैष्णवोने संगे लघने आव्या

त्यारे अथा वैष्णवोने जेधने कृष्णदास अहु प्रसन्न थया अने अथाने आदर करिने जेसाथ्या । ते समये कृष्णदासे आ कीर्तन गायुं । अ पद—'गिरिघर नय अपुने । हरि नने ' (उपर लुयो) । अ पद कृष्णदासे गायुं । पछी कृष्णदासे पूछयुं, के आज मारा उपर अथा भगवदीयाये कृपा करी, जे मारी पास पधार्या । तेथी हुवे प्रसन्न थधने जे आज्ञा करो ते हुं करूं । त्यारे कुंभनदासलये कहुं, के अथा वैष्णवोतुं मन

होय, सो कृपा करिके सुनावो । तब कृष्णदासने कह्यो, जो-कुंभन-दासजी ! तुम सगरे प्रकार करिके योग्य हो, जो-श्रीआचार्यजी के कृपापात्र भगवदीय हो, सो उचित है । तुम बड़े हो, जो-तिहारे आगे मैं कहा कहूं ? तुमसों कछु छानी नहीं है । तब कुंभनदासजी कृष्ण-दाससों कहे, जो-तुम कहो, हमारी आज्ञा है । जो सगरे सेवकन में तुम मुख्य हो । सेवकन को कार्य तिहारे हाथ है, जो-यह पुष्टिमारग के अधिकारी तुम हो, तातें तुम कहो । तब कृष्णदासने पहले अष्टाक्षर को भाव कीर्तन में कह्यो, सो पद—

राग सारंग—कृष्ण श्रीकृष्णः शरणं मम उच्चरे । रेन दिन नित्य प्रति सदा पल छिन घडी करत विध्वंस जन अखिल अघ परिहरे ॥ १ ॥ होत हरिरूप ब्रजभूप भावे सदा अगम भवसिंधुकों बिना साधन तरे । रहत निसदिवस आनंद उरमें भरे पुष्टि लीला सकल सार उर में धरे ॥ २ ॥ रमा अज सिव सेष सनकादि सुक सारदा व्यास नारद रटे पल मुख ना टरे । लाल गिरिघरनकी महिमा अतुल जगमगे सरन 'कृष्णदास' निगम नेति नेति करे ॥ ३ ॥

सो यह अष्टाक्षरको भाव कहिके अब पंचाक्षरको भाव कीर्तन में गाये । सो पद—

राग सारंग—कृष्ण ये कृष्ण मन मांह गति जानिए । देह ईंद्रिय प्राण दारा-गारादि वित्त आत्मा सकल श्रीकृष्ण की मानिए ॥ १ ॥ कृष्ण मम स्वामी हों दास मन वच क्रम, कर्ता येही सदा जिय आनिए । 'कृष्णदासनिनाथ' हरिदासवर्यघर चरनरज बल्लभाधीश मन सानिए ॥ २ ॥

सो ये दोय कीर्तन कृष्णदासने गाय सुनाये । तब सगरे वैष्णव प्रसन्न होयके कहे, जो-कृष्णदास ! तुम धन्य हो, जो-दोय कीर्तन में

पुष्टिभागनी रीति सांलणवातुं छे. तेथी शुं कहीअे ? शुं स्मरणु करीअे ? नेनाथी आवा पुष्टिभागनी अनुभव थाय ? ते कृपा करीने सांलणावा. त्तारे कृष्णदासे कछुं, के कुंभनदासल ! तमे अधी रीते योग्य छे. श्रीआचार्यलना कृपापात्र भगवदीय छे तेथी उचित छे (ने तमे कहे) तमे मोटा छे. तभारी आगण हुं शुं कहुं ? तभाराथी कंठ छालुं नथी. त्तारे कुंभनदासल कृष्णदासने कहे, के तमे कहे अभारी आज्ञा छे. अधा सेवकेभां तमे मुख्य छे. सेवकेतुं कार्य तभारे हाथ छे. आ पुष्टिभागनी अधिकारी तमे छे तेथी तमे कहे. त्तारे कृष्णदासे पहुलां अष्टाक्षरने लाव कीर्तनभां कहे, ते पद—' कृष्ण श्रीकृष्णः शरणुं भम उच्चरे ' (उपर लुओ). आ अष्टाक्षरने लाव कहीने हुवे पंचाक्षरने लाव कीर्तनभां गाये. ते पद—' कृष्ण ये कृष्ण मनमांह गति जानिये ' (उपर लुओ). आ ये कीर्तन कृष्णदासे गाथ

संदेह दूरि कियो । और मारग को सब सिद्धांत बतायो । ता पाछें कृष्णदाससों विदा होयके मगरे वैष्णव अपने घर कों गये । सो वे कृष्णदास श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ।

वार्ता-प्रसंग ७—और कृष्णदासको गंगावाइ क्षत्रानीसों बहोत स्नेह हतो ।

भावप्रकाश—सो काहेतें ? जो—लीला में गंगावाइ श्रुतिरूपा के जूथ में तामसी भक्त हैं । सो मथुरा के एक क्षत्री के घर जन्मी । पाछे वरस ११ की भई । तब गंगावाइ को मथुरा में एक क्षत्री के वेटा सों ब्याह भयो । पाछे गंगावाइ क्षत्राणी के जो वेटा होय सो मरि जाय, सो नौ वेटा भये । ता पाछे एक वेटी भई । सो वेटी को विवाह गंगावाइ क्षत्राणी ने कियो । सो गंगावाइ की वेटीके गहना बहोत हतो । सो वह वेटी मरी । सो वेटी को गहनो लाख रुपया को दावि राख्यो, सो कछु मथुरा के हाकिम कों देके गहनो सब राख्यो । ता पाछे वरस ५५ की भई तब झगडा के लिये श्रीनाथजीद्वार आयके रही । सो कृष्णदास सों मिलिके श्रीआचार्यजी सों सेवक होयवे की कही । तब कृष्णदासने श्रीआचार्यजी सों विनती कीनी, जो—महाराज ! गंगावाइ क्षत्राणी कों सरन लीजिये । तब श्रीआचार्यजी आपु कहे, जो—जीव तो दैवी है, परंतु अभी मन श्रीठाकुरजी में

संलग्नाव्यां त्यारे अधा वैष्णुवो प्रसन्न थधने कडे, के कृष्णदास ! तमे धन्य छे । जे कीर्तनमां संदेह दूर कर्ये अपने मार्गना अधा सिद्धांत अताव्ये । ते पछी कृष्णदासथी विदाय थधने अधा वैष्णुवो पोताने धरे गया । जे कृष्णदास श्रीआचार्यजना जेवा कृपापात्र भगवदीय हुता ।

वार्ता-प्रसंग ७-वर्षी कृष्णदासने गंगाभाध क्षत्राणीथी अहु स्नेह हुतो ।

भावप्रकाश—केभके लीलामां गंगाभाध श्रुतिरूपा ना यूथमां तामसी लक्ष्मि छे ते मथुराना जेक क्षत्रीने धरे जन्मी । पछी वर्ष ११ नी थध त्यारे गंगाभाधतुं मथुरामां जेक क्षत्रीना जेटाथी लग्न थयुं । पछी गंगाभाध क्षत्राणीने जे पुत्र थाय ते मरी जय । जेम नव पुत्र थाय । ते पछी जेक पुत्री थध । जे पुत्रीना विवाह गंगाभाध क्षत्राणीजे कर्ये । ते गंगाभाधनी पुत्रीने धरेलुं धलुं हुतुं । ते पुत्री मरी गध त्यारे पुत्रीतुं धरेलुं लाभ रूपीआतुं सताडी राभ्युं । थोडुं मथुराना हाकेभने धधने धरेलुं अधुं राभ्युं । ते पछी वर्ष ५५नी थध त्यारे जधडाने लीधे श्रीनाथजद्वार आवीने रही । त्यारे कृष्णदासने भणीने श्रीआचार्यजथी सेवक थवातुं कहुं । त्यारे कृष्णदासे श्रीआचार्यजने विनती करी के, महाराज ! गंगाभाध क्षत्राणीने शरखे वे । त्यारे श्रीआचार्यज पोते कडे, के जव तो दैवी छे परंतु हुजु मन श्रीठाकुरजमां नथी । त्यारे कृष्णदासे

नाहीं है। तब कृष्णदास ने धिनती क्रीनी, जो—महाराज ! आपकी कृपा तें श्री-
गोवर्द्धननाथजी कृपा करेगें। पाछे श्रीआचार्यजी आपु कृष्णदास के आग्रह सों
गंगाबाई कों नामनिवेदन करवायो। सो कृष्णदास पहले श्रीगोवर्द्धननाथजी के
भेटिया होय के परदेश कों जाते, तब गंगाबाई क्षत्राणी मथुरा कों आवती। पाछे
कृष्णदास श्रीनाथजीद्वार आवते तब गंगा क्षत्राणी हू मथुरा सों सगरी वस्तु ले
श्रीजीद्वार आवती। सो कृष्णदास गंगाबाई को मन भगवद्धर्म में लगायवे के
ताईं दोऊ सभे को महाप्रसाद श्रीनाथजी को वाके घर पठावते। क्यों ? जो—
गंगाबाई की खानपान में प्रीति बहोत हती। सो कृष्णदास बहोत सुंदर सामग्री
श्रीनाथजी कों आरोगावते, और गंगाबाई कों भगवद्धर्म समुझावते। पाछे कृष्णदास
गंगाबाई कों श्रीनाथजी के सगरे दरसन हू करावते। सो कृष्णदास के संग तें
गंगा क्षत्राणी को मन अलौकिक भयो।

सो एक दिन श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजी कों राज-
भोग समर्पत हते, सो स्वाभग्री के ऊपर गंगाबाई की दृष्टि पड़ी।
तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु राजभोग आरोगे नाहीं। ता पाछें श्री-
गुसांईजी आपु भोग सरायो। पाछें राजभोग आरती करि अनोसर
करि आपु परवत तें नीचे पधारे। सो सेवक भीतरिया महाप्रसाद

विनती करी के महाराज ! आपनी कृपाथी श्रीगोवर्द्धननाथजी कृपा करेशे। पछी श्री-
आचार्यजी येते कृष्णदासना आग्रहथी गंगाबाईने नाम निवेदन कराव्युं। ते कृष्ण-
दास पछेलां श्रीगोवर्द्धननाथजीना लेटीया थधने परदेशमां जाता त्यारे गंगाबाई
क्षत्राणी मथुरामां आवती। पछी कृष्णदास श्रीनाथजीद्वार आवता त्यारे गंगाक्षत्राणी
पछु मथुराथी गंधी वस्तु लधने श्रीनाथजीद्वार आवती। ते कृष्णदास गंगाबाईतुं मन
भगवद्धर्ममां लगाडवाने भाटे गन्ने समयने। महाप्रसाद श्रीनाथजीने येना धरे
भोक्तवता। केम ? ने गंगाबाईनी खानपानमां प्रीति धणी हुती। ते कृष्णदास गडुण
सुंदर सामग्री श्रीनाथजीने आरोगावता अने गंगाबाईने भगवद्धर्म समझवता।
पछी कृष्णदास गंगाबाईने श्रीनाथजीनां गंधां दर्शन करावता। ते कृष्णदासना संगथी
गंगा क्षत्राणीतुं मन अलौकिक भयो।

ते अेक दिवस श्रीगुसांईजी येते श्रीगोवर्द्धननाथजीने राजभोग समर्पता हुता।
ते सामग्री उपर गंगाबाईनी दृष्टि पड़ी। त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथजी येते राजभोग
आरोग्या नही। ते पछी श्रीगुसांईजी येते भोग सरायो। पछी राजभोग आरती
करि अनोसर करी येते परवतथी नीचे पधारे। पछी सेवक भीतरियाये महाप्रसाद

लिये । और श्रीगुसांईजी आपहू महाप्रसाद लेके पोंढ़े । ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी आय रामदास भीतरियाकों लात मारिके जगाये । तब रामदासजी जागे । सो देखे तो श्रीगोवर्द्धननाथजी हैं । सो रामदासजी दंडवत् करिके हाथ जोड़िके ठाड़े भये । तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु रामदाससों कहे, जो-मैं तो भूख्यो हूं । पाछें रामदासजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी सों विनती कीनी, जो-महाराज ! श्रीगुसांईजी ने राजभोग सबर्ष्यो हतो, और तुम भूखे क्यों रहे ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी ने कही, जो-राजभोग में तो साजग्री ऊपर गंगाबाई की दृष्टि पड़ी, तासों मैं नहीं आरोग्यो हूं । तब रामदासजी भीतरिया श्रीगुसांईजी के पास जाय चरणारविंद दाविके जगाये, और विनती कीनी, जो-महाराज ! श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु भूखे हैं । सो राजभोग में गंगाबाई की दृष्टि पड़ी है, तासों श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु राजभोग नहीं आरोगे हैं । सो यह सुनन ही श्रीगुसांईजी आपु तत्काल उठिके स्नान करिके श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिरमें पधारे । पाछें रामदासजी न्हाय के आये, इतने में सब भीतरिया हू स्नान करिके आये । तब श्रीगुसांईजी आपु सीतकाल देखिके भीतरियान सों कहे, जो-बड़ी और भान करो । सो बेगि सिद्ध होय जायगो, तातें तैयार करो । तब भीतरिया ने बड़ी और भान कियो । सो

लीघो अने श्रीगुसांईजी पोते पणु महाप्रसाद लधने पोढया. ते पछी श्रीगोवर्द्धननाथ-
 लंये आवीने रामदास सीतरियाने लात मारीने जगाइया त्त्यारे जग्या. ते लुंये तो
 श्रीगोवर्द्धननाथल छे. त्त्यारे रामदासल दंडवत् करीने हाथ जोडीने उभा रखा. त्त्यारे
 श्रीगोवर्द्धननाथल पोते रामदासने कहे, के हुं तो भूभ्या धुं. पछी रामदासलंये
 श्रीगोवर्द्धननाथलने विनंती करी, के महाराज ! श्रीगुसांईलंये राजभोग सबर्ष्यो
 हतो अने तमे भूभ्या केम रखा ? त्त्यारे श्रीगोवर्द्धननाथलंये कधुं, के राजभोगसां
 हो सामग्री उपर गंगाभाइनी दृष्टि पडी तेथी हुं आरोग्यो नथी. त्त्यारे रामदास सीत-
 रियांये श्रीगुसांईलनी पासे जधने चरणारविंद दाषीने (आपने) जगाइया अने विनंती
 करी के, महाराज ! श्रीगोवर्द्धननाथल आप भूभ्या छे. राजभोगसां गंगाभाइनी
 दृष्टि पडी छे तेथी श्रीगोवर्द्धननाथल पोते राजभोग आरोग्यो नथी. ये सांभणतांज
 श्रीगुसांईल पोते तत्काल उडीने स्नान करीने श्रीगोवर्द्धननाथलना मंदिरसां पधार्थो.
 पछी रामदासल न्हाइने आव्या जेरसासां पधा सीतरिया पणु स्नान करीने
 आव्या. त्त्यारे श्रीगुसांईल पोते सीतकाल जग्यीने पधा सीतरियांयेने कहे. के वडी
 अने लात करे. ते जहदी सिद्ध थछ जशे तेथी तैयार करे. त्त्यारे सीतरियांये वडी

श्रीगुसाईजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजी कों भोग धरे । ता पाछें राज-भोग की सगरी सामग्री सिद्ध भई, और सेन भोगकी हू सगरी सामग्री सिद्ध भई । सो राजभोग, सेनभोग दोउ भोग संग ही श्रीगुसाईजी ने धरे । पाछें समय भये भोग सरायो । ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी कों पोढ़ायके अनोसर करवायके बाहिर पधारे । सो एक डबरा में बड़ीभान श्रीगुसाईजी अपुने श्रीहस्त में लेके परवत तें नीचे पधारे । पाछें सगरे सेवकन कों बड़ीभान अपने हाथ सों रंच-रंच दियो, और रंचक श्रीगुसाईजी आपु आरोगे । बड़ी भान महाप्रसाद बहुत स्वाद भयो, सो श्रीगुसाईजी आपु श्रीमुख सों बहोन सरहायो । पाछें रामदास आदि सब सेवकनने श्रीगुसाईजी सों कह्यो, महाराज ! यह सामग्री तो सीतकाल में कितनीक बार करी है, परंतु आजु बहोन स्वाद भयो । तब श्रीगुसाईजी आपु कहे, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु भूखे हते सो प्रीति सों आरोगे, तासों स्वाद अद्भुत भयो । ता समय कृष्णदास पास ठाड़े हते । सो कृष्णदास ने कही, जो-महाराज ! आपुही करनहारे और आपुही आरोगनहारे, सो स्वाद क्यों न होय ? तब श्रीगुसाईजी आपु वा समय श्रीमुखसों कहे, जो-ये तिहारे ही किये भोग भोगत हैं ।

अने लात धर्या. ते श्रीगुसांछल पोते श्रीगोवर्द्धननाथलने लोग धर्या. ते पछी राज-लोगनी अधी सामग्री सिद्ध थध अने सेनलोगनी पल अधी सामग्री सिद्ध थध तेथी राजलोग, सेनलोग अन्ते लोग संगे न श्रीगुसांछलये धर्या. पछी समय थये लोग सराया. त्यारे पछी श्रीगोवर्द्धननाथलने पोढावीने अनेासर करावीने प्वालुर पधार्या. त्यारे अेक उअरामां वडी-लात श्रीगुसांछल पोताना श्रीहस्तमां लधने पर्वतथी नीचे उतर्या. पछी अधा सेवकोने वडी-लात पोताना हाथथी रंच-रंच आग्धा अने रंचक श्रीगुसांछल पोते आरोग्या. वडी-लात महाप्रसाद (नेा) अहुन स्वाद थयो. तेने श्रीगुसांछलये पोते श्रीमुखथी अहु नप्पाएयो. पछी रामदास आदि अधा सेवकोअे श्रीगुसांछलने क्हुं, के महाराज ! आ सामग्री तो शीतकालमां केटीय वार करी छे परंतु आजु अहु स्वाद थयो. त्यारे श्रीगुसांछल पोते क्हुं, के श्रीगोवर्द्धननाथल आप लूण्या हुता तेथी प्रीतिथी आरोग्या तेथी स्वाद अद्भुत थयो. ते समये कृष्णदास पासे उला हुता ते कृष्णदासे क्हुं, के महाराज ! आपन करवा-वाणा अने आपन आरोगवावाणा, स्वाद केम न थाय ? त्यारे श्रीगुसांछलये पोते ते समये श्रीमुखथी क्हुं, के अे तमारां न धर्या लोग लोगवीअे छीअे.

भावप्रकाश—तहां यह संदेह होय, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी आरोगे नाहीं । सो श्रीगुसांईजी आपु भोग सगये, आचमन मुख वस्त्र करायो । पाछे श्रीगोवर्द्धनधर कों वीरी आरोगाये । सो भूखे श्रीगुसांईजी ने न जानें ? और वीरी आरोगत श्रीगोवर्द्धनधर श्रीगुसांईजी सों न कहे, जो-मैं राजभोग नाहीं आरोग्यो ? ताको कारन कहा ? जो-रामदास भीतरिया सों क्यों कहे ? सो यह संदेह होय तहां कहत हैं, जो-श्रीगोवर्द्धननाथजी वा दिना श्रीगोकुल में श्रीनवनीतप्रियजी के यहां श्रीगिरिधरजी ने बड़ीभात करायो हतो, श्रीसोभावेटीजी किये । सो तब श्रीगिरिधरजी और श्रीसोभावेटीजी के मन में आई, जो-श्रीगोवर्द्धनधर आपु पधारे और नौतन सामग्री आरोगें । तासों उहां वह दूसरो स्वरूप (भक्तोद्धारक) श्रीगिरिराजतें पधारिके श्रीगोवर्द्धनधर बड़ीभात आरोगे । और श्रीगिरिधरजी, श्रीसोभावेटीजी को तो मनोरथ, सो भक्तन कों अनुभव करावत हैं । सो स्वरूप तो आरोगि पाछे श्रीगिरिराज पर्वत के ऊपर पधारे । सो उहां (गिरिराजपें) सगरे सेवक महाप्रसाद ले चुके । और श्रीगुसांईजी आपु पोंढ़े । ता समय मंदिर में श्रीस्वामिनीजी ने पूछो, 'जो-कहो, कहां होय आवें हो ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-बड़ीभात श्रीगोकुल में श्रीगिरिधरजी श्रीसोभावेटीजी को मनोरथ (हतो) सो आरोग के आयो हूं । यह सुनिके श्रीस्वामिनीजी हू बड़ोभात आरोगवे को

भावप्रकाश—त्यां आ संदेह थाय के श्रीगोवर्द्धननाथल आरोग्या नही' तो श्रीगुसांईलये पोते लोग सरावी आचमन मुख वस्त्र करायुं' पछी श्रीगोवर्द्धनधरने पीडी आरोगावी त्यारे लूण्या श्रीगुसांईलये न जाण्या अने पीडी आरोगतां श्रीगोवर्द्धनधरे श्रीगुसांईलने न कहुं, के हुं' राजलोग नथी आरोग्ये ? तेतुं' कारणु शुं ? रामदास भीतरियाने केम कहुं' ? ये संदेह होय त्यां कहीये छीये के, श्रीगोवर्द्धननाथल ये हिवसे श्रीगोकुलमां श्रीनवनीतप्रियलने त्यां श्रीगिरिधरलये वडीभात कराय्ये हुते । श्रीशोभावेटीलये कुर्ये हुते । त्यारे श्रीगिरिधरल अने श्रीशोभावेटीलना मनमां आयुं' के श्रीगोवर्द्धनधर पोते पधारे अने नौतन सामग्री आरोगे, तेथी त्यां पीळ स्वरूपे (भक्तोद्धारक) श्रीगिरिराजलथी पधारिने श्रीगोवर्द्धनधर वडीभात आरोग्या अने श्रीगिरिधरल श्रीशोभावेटीलने तो मनोरथ तेथी लक्ष्मणे अतुभव करावे छे. ते स्वरूपे आरोगी पछी श्रीगिरिराज पर्वतना उपर पधार्या. त्यां गिरिराज उपर पधा सेवके महाप्रसाद लक्ष्मण अने श्रीगुसांईल पोते पोठया. ते समये मंदिरमां श्रीस्वामिनीलये पूछ्युं' के, कडो ! क्यां थय आव्या छे ? त्यारे श्रीगोवर्द्धनधर कडे, के वडीभातने श्रीगोकुलमां श्रीगिरिधरल श्रीशोभावेटीलने मनोरथ हुते ते आरोगीने

मनोरथ कियो, जो-बड़ीभात आरोगे तो आछो सो यहाँ (तो) (राजभोग) होय चुके । तब स्वामिनीजी ने श्रीनाथजी सों कछो, जो-जायके रामदास सों कहो, जो-सामग्री पें गंगावाई क्षत्राणी की दृष्टि परी है । सो काहेतें ? जो-लीलासृष्टि के वचन हू सिद्ध करने हैं । सो श्रीगुसाईंजी कों छै महिना को विप्रयोग है । सो यातैं, जो-लीला में एक समय श्रीठाकुरजी ललिताजी सों कहे, जो-मैं तेरी निकुंज में पधारूँगो । यह बात श्रीचंद्रावली ने सुनी । सो श्रीचंद्रावलीजी ने श्रीठाकुरजी कों विविध चतुराई करि सेवा द्वारा ललिताजी के यहां छै मास तक पधारवे सों बरजे । सो ललिताजी विरह करि महा कृष होय गई । पाछें यह बात श्रीस्वामिनीजी ने जानी, सो श्रीस्वामिनीजी ललिताजी कों संग लेके श्रीठाकुरजी के पास वाही समय आई । और श्रीठाकुरजी सों कछो, जो-तुम (नें) छै महिना लों मेरी सखी कों विरह दियो, अब तुम छै महिना लों ललितासखी के बसमें रहोगे । और जाने मेरी सखी कों दुःख दियो हैं, सो छै महिना लों दुःख पावो, और वाकों तिहारो दरसन हू न होय । सो यह बात सुनिके श्रीठाकुरजी आपु चुप होय रहे । यह बात एक सखी ने श्रीचंद्रावलीजी सों कही । सो सुनिके श्रीचंद्रावलीजी कहे, जो-श्रीस्वामिनीजी श्रीठाकुरजी तो बड़े हैं । तासों इनसों तो कछू कही जाय नाहीं । परंतु ललिता सखी होय

आये छुं. ये सांभलीने श्रीस्वामिनीजीये पणु वडीलात आरो गवाने मनोरथ कुर्यो जे वडीलात आरोगीये तो साइं. पणु अही तो राजभोग थछ यूकया. त्यारे श्रीस्वामिनी-जीये श्रीनाथजीने कहुं, के जधने रामदासने कडे के सामग्री उपर गंगावाइ क्षत्राणीनी दृष्टि पडी छे. केभके ? लीला सृष्टिनां वचन पणु सिद्ध करवां छे. श्रीगुसांईंजीने छ महि-नाने विप्रयोग छे. ते ये माटे के लीलाभां येक समय श्रीठाकुरजीये ललिताजीने कहुं, के हुं तारी निकुंजभां पधारीश. ये वात श्रीचंद्रावलीजीये सांभली. तेथी चंद्रावली-जीये श्रीठाकुरजीने विविध चतुराई करी सेवा द्वारा ललिताजीने त्यां छ महिना सुधी पधारतां शकया. तेथी ललिताजी विरह करीने महा कृष थछ गछ. पछी ये वात श्री-स्वामिनीजीये ज्ञानी त्यारे श्रीस्वामिनीजी ललिताजीने संगे लधने श्रीठाकुरजीनी पासे तेज समये आयां अने श्रीठाकुरजीने कहुं, के तमे छ महिना सुधी मारी सखीने विरह आये. हुवे तमे छ महिना सुधी ललिता सखीना वशभां रहेशे अने जेजे मारी सखीने दुःख दीधुं छे ते छ महीना सुधी दुःख पावो अने येने तमारां दर्शन न थाय. ये वात सांभलीने श्रीठाकुरजी आपु रूप थछ रह्या. ये वात येक सखीये श्रीचंद्राव-लीजीने कही, ये सांभलीने श्रीचंद्रावलीजी कडे, के श्रीस्वामिनीजी श्रीठाकुरजी तो मोटां छे तेथी येमने तो कछ कही शकय नही. परंतु ललिता सखी थछ आपुं जेहुं काम

ऐसो खोटो कियो, जो-श्रीस्वामिनीजी की सखी, सो मेरी सखी बराबरि है । सो इन (नैं) मोकों शाप दिवायो, जो-छैं महिना लों मोकों प्रभुन को दरसन हु नाहीं ? सो ललिता ने श्रीस्वामिनी-द्रोह कियो । सो काहें ? जो-श्रीठाकुरजी तें श्रीस्वामिनीजी प्रगटी हैं । और स्वामिनीजी के मुखचंद्रतें श्रीचंद्रावली प्रगटी । श्रीचंद्रावलीतें सगरी स्वामिनी सखी प्रगटी हैं । तासों श्रीठाकुरजी के दक्षिण भाग श्रीचंद्रावलीजी चिराजत हैं । यातें, जो-सगरी सखीन के स्वामिनीरूप, श्रीचंद्रावलीजी (सो सब में) श्रेष्ठ हैं । तासों श्रीचंद्रावलीजी ने कही, जो-ललिता ने स्वामिनी-द्रोह कियो है । तासों ललिता की अकालं मृत्यु होऊ, और प्रेतयोनिहूं पावो । सो श्रीठाकुरजी हू, श्रीस्वामिनीहू रक्षा न करि सके । और काहूतें प्रेतयोनि निवृत्त न होय । जो-मोकों शाप दिवायो ताको यह फल भोगो । यह बात काहू सखी ने ललिता सों कही । सो सुनत ही ललिता महा कंपायमान होयके तत्काल दोरिके श्रीस्वामिनीजी के चरनन में आयके गिरि परी ! पाछे अपनी सब बात ललिता ने कही । तब श्रीस्वामिनीजी ने श्रीठाकुरजी कों बुलाय के कह्यो, जो-ललिताजी अपने हाथ सों गई तासों अब कछु उपाय करो । पाछें श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी कों संग ले ललितादि समाज सहित श्रीचंद्रावलीजी के यहाँ पधारे । सो ललिताजी तत्काल उठिके श्रीठाकुरजी कों श्रीस्वामिनीजी कों नमस्कार करिके

क्युं. श्रीस्वामिनीजीनी सभ्नी ते भारी सभ्नी अरोणर छे. अेणु मने शाप देवडाव्ये ? के छ मास सुधी मने प्रभुनां दर्शन नहीं ? अे ललिताअे स्वामिनी-द्रोह क्ये. के मडे श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी प्रकथ्यां छे अने श्रीस्वामिनीजीना सुभयंद्रथी श्रीचंद्रावली प्रकटी. श्रीचंद्रावलीजीनी अधी स्वामिनी-सभ्नी प्रकटी छे. तेथी श्रीठाकुरजीना दक्षिण लागमां श्रीचंद्रावलीजी गिराणे छे. ते अेथी के अधी सभ्नीअेनी स्वामिनी रूप श्रीचंद्रावलीजी ते अधामां श्रेष्ठ छे. तेथी श्रीचंद्रावलीजीअे कहुं के ललिताअे स्वामिनी-द्रोह क्ये छे. तेथी आ ललितानी अकाल मृत्यु थाव अने प्रेतयोनिने पावो. श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी पणु रक्षा न करी शके अने केअथी प्रेतयोनि निवृत्त न थाय. मने शाप अपावडाव्ये तेनुं आ इल लोगवो. आ बात केअ सभ्नीअे ललिताअेने कही. अे सांभणतांअे ललिता महा कंपायमान थअने तत्काल होडीने श्रीस्वामिनीजीना अरखोमां आवीने गिर पडी. पछी पोतानी अधी बात ललिताअे कही. त्यारे श्रीस्वामिनीजीअे श्रीठाकुरजीने जोलावीने कहुं. के ललिताअे आपणु हाथथी गअ तेथी हुवे कंअ उपाय करे. पछी श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजीने साथे लअे ललितादि समाज सहित श्रीचंद्रावलीजीने त्यां पधार्या. त्यारे श्रीचंद्रावलीजीअे तत्काल होडीने श्रीठाकुरजीने श्रीस्वामिनीजीने नमस्कार करीने उअे आसने पधराव्यां. पछी परम प्रीतिधी

ऊँचे आसन पधराये । पाछे परम प्रीति सों दोउ स्वरूपन की पूजा करिकें सुन्दर सामग्री आरोगाये । ता पाछे बीरी आरोगाय श्रीचंद्रावलीजी हाथ जोरि के ठाड़ी भई । सो तव दोऊ स्वरूप ने प्रसन्न होयके श्रीचंद्रावलीजी को हाथ पकरि के पास बैठारी । ता पाछे श्रीस्वामिनीजी कहे, जो-सुनो श्रीचंद्रावलीजी ! तिहारी प्रीति तो महा अलौकिक है, और हमारे तिहारे में कछु भेद नहीं है । और यह ललिता अपनी सखी है, सो यह तिहारी है । तासों अब याको शाप भयो है, सो ताको छुटकारो करो । तव श्रीचंद्रावलीजी कहे, जो-ललिता अपनी है । तासों यह जो कछु भयो है सो यह जगत पर लीला करन अर्थ भयो है । सो यह ललिता प्रेत होयगी ताको मैं ही उद्धार करूँगी । जो-यह मेरो निश्चय वचन है । तव ललिता श्रीचंद्रावलीजी के चरनन में गिरिके कह्यो, जो-मैं तिहारो अपराध कियो सो पायो है । तव श्रीस्वामिनीजी ने कही, जो-यह सगरो परिकर, कलियुग में श्री-गिरिराज ऊपर लीला करनी है, तहां सब प्रगट होयगो । सो श्रीस्वामिनीजी के यह वचन सुनिके श्रीठाकुरजी श्रीचंद्रावलीजी ललिता आदि सब प्रसन्न भये । सो लीलासृष्टि में अलौकिक स्नेह है, और अलौकिक शाप है, और अलौकिक ही ईर्ष्या है, जो-मायाकृत तहां नहीं है । सो उहां ही करिके है । सो भूमि पर जस प्रगट के अर्थ ईर्ष्या शाप को भिष मात्र । भूमि के जीव लीलागान करि प्रभुन कों पावें,

गन्ने स्वइपोनी पूजा करीने सुंदर सामग्री आरोगावी । ते पछी णीडी आरोगावी श्री-चंद्रावलीजी हाथ जेडीने ठाड़ी रड्डी । त्यारे गन्ने स्वइये प्रसन्न थयने श्रीचंद्रावलीजीने हाथ पकडीने पासे जेसाडी ते पछी श्रीस्वामिनीजी कडे, सुनो श्रीचंद्रावलीजी ! तमारो प्रीति तो महा अलौकिक छे अने अमारा तमाराभां क'ं थ लेह नथी अने आ ललिता आपणी सखी छे । ते तमारी छे तेथी हुवे अने शाप थयो छे तेनो छुटकारो करे । त्यारे श्रीचंद्रावलीजी कडे, के ललिता आपणी छे । तेथी हुवे अने क'ं थ थयुं छे ते जगत उपर लीला करवाने अर्थे थयुं छे । आ ललिता प्रेत थयो तेनो हुं न उद्धार करीश अने माइं निश्चय वचन छे । त्यारे ललिताये श्रीचंद्रावलीजीना चरणोभां पडीने कहुं, के मे' तमारो अपराध कयो ते यामी छुं त्यारे श्रीस्वामिनीजीये कहुं, के आ गधो परिकर कलियुगभां श्रीगिरिराज उपर लीला करवी छे त्यां गधो प्रकट थयो । श्रीस्वामिनीजीनां आ वचन सांभणीने श्रीठाकुरजी, श्रीचंद्रावलीजी, ललिता आदि गधां प्रसन्न थयां । तेथी लीला सृष्टिभां अलौकिक स्नेह छे अने अलौकिक शाप छे अने अलौकिक ईर्ष्या छे माया-कृत त्यां नथी । त्यां करीने (अह्नीं पणु) छे ते भूमि उपर यश प्रकट करवाने अर्थे । ईर्ष्या शाप तो भिष मात्र, भूमिना एव लीलागान करी प्रभुने भेगवे अने अलौकिक

सो यही अलौकिक करनो । सो लौकिक ईर्ष्या शाप जाने ताको बुरो होय, और अपराधी होय सो लीला सृष्टि में सब अलौकिक क्रिया है । यह जाननो । या प्रकार श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी की इच्छा तें श्रीगोवर्द्धन गिरिराज में प्रगट भये, और श्रीस्वामिनी रूप श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीगोवर्द्धनधर कों प्रगट किये । सो लीला में श्रीस्वामिनीजी तें चंद्रावलीजी को प्रागट्य । ताही भांति सों यहां श्रीआचार्यजी सों श्रीगुसाईंजी को प्रागट्य, और ललिता सो कृष्णदास अधिकारी भये । और श्रीगोवर्द्धनधर के अनेक स्वरूप हैं, परंतु दोय रूप तदा रहत हैं । सो एक तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन ने उहां पधराये सो तहां विराजमान हैं, और एक स्वरूप (भक्तोद्धारक) सों सगरे भक्तन कों सुख देत हैं । जो-कुंभनदास, गोविंदस्वामी के संग खेलते । सो जहां तहां भगवदीय हैं, तिनकों अनुभव करावत हैं । तातें जा समय श्रीगुसाईंजी आपु भोग समर्पते हते और गंगावाई क्षत्राणी की दृष्टि परी, ता समय श्रीगुसाईंजी राजभोग धरे हैं सो आरोगे (कयों) जो-श्रीगोवर्द्धनधर आरोगे नाहीं, तो असमर्पित खाय के सगरे सेवक भ्रष्ट होय जाय ? तातें श्रीआचार्यजी के मंदिर में पधराये सो स्वरूप ने आरोग्यो । यातें श्रीस्वामिनीजी ने श्रीगोवर्द्धननाथजी सों कह्यो, जो-श्रीगुसाईंजी कों छै महीना को वियोग होय, तासों गंगावाई को नाम लीजियो । सो कृष्णदास की और गंगावाई की प्रीति है

करवुं. तेथी लौकिक ईर्ष्या शाप जाणु तेनुं 'पोटुं' थाय अने अपराधी थाय. माटे लीला-सृष्टिमां अधी अलौकिक क्रिया छे ऐम जाणवुं. ऐ प्रकारे श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजीनी धर्याथी श्रीगोवर्द्धन गिरिराजमां प्रकट थया अने श्रीस्वामिनीजी रूप श्रीआचार्यजी महाप्रभुजे श्रीगोवर्द्धनधरने प्रकट कय्या. लीलामां श्रीस्वामिनीजीथी श्रीचंद्रावलीजीनुं प्राकटय तेज रीते अही श्रीआचार्यजीथी श्रीगुसाईंजीनुं प्राकटय अने ललिता ते कृष्णदास अधिकारी थया. वणी श्रीगोवर्द्धनधरनां अनेक स्वरूप छे परंतु जेन रूप सदा रहै छे. तेमां ऐक तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुजे त्यां (गिरिराजमां) पधराव्या ते त्यां विराजमान छे अने ऐक स्वरूप (भक्तोद्धारक) थी भक्तोने सुख आपे छे. जे कुंभनदास, गोविंदस्वामिना संगे रमता ते न्यां न्यां भगवदीय छे तेमने अनुभव करावे छे. तेथी जे समये श्रीगुसाईंजी पोते लोगसमर्पता हुता अने गंगावाई क्षत्राणीनी दृष्टि परी ते-समये श्रीगुसाईंजीजे राजभोग धर्ये ते आरोग्ये. ऐम जे श्रीगोवर्द्धनधर आरोगे नही तो असमर्पित पाधने गधा सेवके भ्रष्ट थय. तेथी श्रीआचार्यजीजे मंदिरमां पधराव्या ते स्वरूपे आरोग्युं. तेथी श्रीस्वामिनीजीजे श्रीगोवर्द्धनधरने कहुं, जे श्रीगुसाईंजीने छ महीना वियोग थाय. तेथी गंगावाईनुं नाम लेले. कृष्णदासनी

सो गंगावाई सों श्रीगुसाईंजी कहेंगे । और कृष्णदास कों बोली मारेंगे । तब कृष्णदास कों बुरी लगेगी । सो काहेतें ? जो—यह कार्य करनो, जो—कृष्णदास के मन में बुरी लागे, तब श्रीगुसाईंजी कों वियोग होय । तासों तुम जाय के कहो, जो—मैं भूख्यो हूं । तब श्रीनाथजी ने रामदास सों जाय कही । परि रामदास यह भेद जाने नहीं । सो रामदास ने श्रीगुसाईंजी सों जाय कछो, तब श्रीगुसाईंजी मन में जाने जो—सामग्री ऊपर गंगावाई की दृष्टि परी । अब हम सों और कृष्णदास सों लीला में बात भई हती सो पूरन करिवे की श्रीनाथजी की इच्छा है सो निश्चय होयगो, यह जानि परत है । सो तासों अब जो सेवा बने, सो प्रीति सों करनी । क्यों ? जो—सेवा अब दुर्लभ है । यह विचारि के तत्काल न्हाय बड़ी भात यहां नहीं भयो हतो और श्रीगोकुल तें आरोगि के आये, तासों गिरिराज के ठाकुर कों हू धरनो, सो वेगि सिद्ध करि धरे । ता पाछे सेनभोग की संग राजभोग धरे । ता पाछे सेन आरती करि अनोसर कराय के मन में विचारे, जो—अब श्रीगोवर्द्धननाथजी को दरसन महाप्रसाद सब ही दुर्लभ भयो । सो बड़ी भात को डबरा उठाय मृत्तिका के पात्र ही में ठलाय के परवत तें उतरि रंचकरंचक सवन कों दिये, सो आपही लिये, बहोत सराहे तब कृष्णदास ने भगवद् इच्छातें बोली मारी (व्यंग) जो—आपही करन हारे, और आपही आरोगन हारे । सो क्यों न स्वाद होय ?

अने गंगाणाथनी प्रीति छे अेटवे गंगाणाथने श्रीगुसांथल कडेशे अने कृष्णदासने भडेलुं मारशे. त्पारे कृष्णदासने षोठुं लागेशे, डेमके आ कार्य करवुं. जेथी कृष्णदासना मनमां षोठुं लागे. त्पारे श्रीगुसांथलने वियोग थाय. तेथी तमे जधने कडो के डुं भुंये छुं. त्पारे श्रीनाथलये रामदासने जध कहुं परंतु रामदास आ लेह नल्ले नहीं. ते रामदासे श्रीगुसांथलने जधने कहुं त्पारे श्रीगुसांथलये मनमां नल्लयुं के सामग्री ऊपर गंगाणाथनी दृष्टि परी. डवे अमारथी अने कृष्णदासथी लीलामां वात थध डती ते पूरलु करवानी श्रीनाथलनी धन्धा छे. ते निश्चय थशे अेम नल्लयुं नय छे. तेथी डवे जे सेवा अने ते प्रीतिथी करवी, डेम जे सेवा डवे दुर्लभ छे. अेम विचारीने तत्काल न्हाध, वडीभात अही नहीं थथे डतो अने श्रीगोकुलथी आरोगीने आव्या तेथी गिरिराजना ठाकुरने पलु धरवे तेथी जल्ही सिद्ध करी धर्ये ते पछी सेनलोगनी साथे राजभोग धर्ये. ते पछी सेन आरती करी, अनोसर करी मनमां विचारे के डवे श्रीगोवर्द्धननाथलनां दर्शन महाप्रसाद अधुंज दुर्लभ थथुं. पछी वडीभातने उणरे डडवी मृत्तिकानाज पात्रमां ठलावीने परवतथी उतरी रंचक रंचक अधाने आय्ये अने पोते पलु लीधे. अहु वप्पाय्ये. त्पारे कृष्णदासे भगवद् इच्छाथी व्यंग कहुं जे आपज

सो यामें यह जताये जो—हमसों न पूछे, जो—तुम ही जाय सामग्री किये, और तुमही जायके आरोगे। ऐसो सौभाग्य तिहारो ही है। यह बोली कृष्णदास मारे। तब श्रीगुसाईंजी आपु कहे, जो—यह तिहारो ही कियो भोग भोगत हैं। सो यह कहिके दोऊ बात जताये, जो—गंगावाई क्षत्राणी सों प्रीति करि वाकों वैठारि राखे, सो वाकी राजभोग की सामग्री पे दृष्टि परी। सो यह तिहारो कार्य है। नाहीं तो गंगावाई ऊहां कैसे जाय ? और तुमने लीला में श्रीस्वामिनीजी सों श्राप दिवायो, सोह तिहारो कार्य है। सो तिहारे ही भोग भोगत हैं। यामें यह जताये, जो—हमकों खवरि परि गई, जो—अब तिहारो भाग्य खुल्यो, सो तुम करो सो भोगोगे। जो—मन में तो आय चुकी है। अब ऊपर तें करनो है, सो करोगे।

सो यह बात सुनिके कृष्णदास के मन में बहोत बुरी लगी। तब कृष्णदास मनमें विचारे, जो—श्रीगुसाईंजी के दरसन बंद करने। सो या बात को कौन प्रकार सों उपाय करनो। तब श्रीगोपीनाथजी श्रीगुसाईंजी के बड़े भाई तिनके पुत्र श्रीपुरुषोत्तमजी हते। सो तिनसों कृष्णदास मिलिके कहे, जो—तुम श्रीआचार्यजी के बड़े पुत्र श्रीगोपीनाथजी हैं, तिनके पुत्र हो। सो तुम क्यों चुप बैठि रहे हो ? जो श्रीगोवर्द्धननाथजी को सेवा सिंगार सब करो। जो—श्रीगुसाईंजी ने

करवावाणा अने आपन आरोगवावाणा ते केम स्वाह न थाय ? अेमां अे जल्लाव्युं के अमने न पूछ्युं, तमे ज जळ सामग्री करी अने तमेज जळने आरोग्या. अेवुं सौभाग्य तमाइं ज छे. आ ज्यंग कृष्णदासे कहुं, त्यारे श्रीगुसांठल पोते कडे. के आ तमारोज कर्था लोग लोगवीअे छीअे. अेम कहुंने गन्ने वात जल्लावी के गंगायां क्षत्राणीधी प्रीति करी अेने अेसाडी राणी जेधी अेनी राजलोगनी सामग्री पर दृष्टि पडी ते पल्ल तमाइं काम छे नहीं तो गंगायां त्यां केम जाय ? अने तमे लीलांमां श्रीस्वामिनी- लधी श्राप देवअाव्ये ते पल्ल तमाइं कार्य छे. ते तमारज कर्था लोग लोगवीअे छीअे. अेमां अे जल्लाव्युं के अमने अणर पडी गळ छे के उवे तमाइं लाग्य अुल्युं तेधी तमे करे ते लोगवशे. जे मनमां तो आवी अुक्युं छे उवे उपरधी करवुं छे ते करशे.

आ वात सांलणीने कृष्णदासना मनमां अहुज अोटुं लाग्युं. त्यारे कृष्णदासे मनमां विचार्युं, के श्रीगुसांठलनां दर्शन अत्र करयां तेधी अे वातने कथा प्रधारथी उपाय करवा ? त्यारे श्रीगोपीनाथल श्रीगुसांठलना सोदा लांछ तेमना पुत्र श्रीपुरुषोत्तमल उता तेमने कृष्णदास भणीने कहे, के तमे श्रीआचार्यलना सोदा पुत्र श्रीगोपीनाथल छे तेमना पुत्र छे तेधी तमे केम अूप अेसी रखा छे ? श्रीगोवर्द्धननाथलनां सेवा-

अपनी सब हुकम करि राख्यो है। टीकेत तो तुम हो। तब श्रीपुरुषोत्तमजी ने कही, जो-हमारी सामर्थ्य नाही है, जो-श्रीगुसाईजी सों विगारें। तब कृष्णदास ने कही, जो-हमारे संग न्हायके चलो, जो-परवत के ऊपर मंदिर में जायके श्रीनाथजी को सेवा सिंगार करो, जो-हम सब करि लेंगें। पाछें श्रीपुरुषोत्तमजी उत्थापन तें दोष घड़ी पहले न्हाये, सो कृष्णदास के संग परवत ऊपर जायके मंदिर में बैठि रहे। और कृष्णदास दंडोती सिला पै जायके बैठि रहे। इतने में श्रीगुसाईजी आपु स्नान करिकें दंडोती सिला के पास आये। तब कृष्णदास ने श्रीगुसाईजी सों कही, जो-श्रीपुरुषोत्तमजी न्हायके मंदिर में पधारे हैं। टीकेत तो वे हैं, तासों जब वे आप कों बुलावेंगे, तब आपु परवत ऊपर आइयो। तासों अब आपु परवत ऊपर मति चढ़ो, जो-श्रीगोवर्द्धनधर के दरसन न होंगें तब श्रीगुसाईजी श्रीनाथजी की ध्वजा कों दंडवत करि लीला की बात सुसरन करिके परासोली कूं पधारे, तहाँ रहे। सो तहाँ विप्रयोग को अनुभव करन लागे।

भावप्रकाश—सो श्रीगोकुल हू श्रीनवनीतप्रियजी के यहां याते नहीं पधारे, जो-श्रीस्वामिनीजी के वचन हैं। जो-हमहूं कों और श्रीठाकुरजी कों हू

शृंगार भधुं करो, श्रीगुसांभल्ये पोताने हुकम भवे करी राख्यो छे। टीकेत तो तमे छे। त्तारे श्रीपुरुषोत्तमल्ये कलुं, के अमारी सामर्थ्य नथी के श्रीगुसांभल्ये भगाडीये। त्तारे कृष्णदासे कलुं, के अमारी साथे न्हायने आलो। पर्वत उपर न्हाते श्रीनाथल्ये सेवा-शृंगार करो (श्रीलुः) अमे भधुं करी लभशुं। पछी श्रीपुरुषोत्तमल्ये उत्थापनथी जे घड़ी पहलेन न्हाया। ते कृष्णदासनी साथे पर्वत उपर न्हाते जेसी रखा अने कृष्णदास दंडवती सिला उपर न्हाते जेसी रखा। अटलाभां श्रीगुसांभल्ये पोते स्नान करीने दंडवती सिलानी पास आग्या। त्तारे कृष्णदासे श्रीगुसांभल्ये कलुं, के श्रीपुरुषोत्तमल्ये न्हायने मंदिर उपर पधार्या छे। टीकेत तो अे छे जेथी न्यारे अे आपने पोसावे त्तारे आप पर्वत उपर आग्ये। हवे लभणुं आप पर्वत उपर न अढे। श्रीगोवर्द्धनधरनां दर्शन नहीं थाय, त्तारे श्रीगुसांभल्ये श्रीनाथल्ये ध्वजने दंडवत करी दीलानी वाततुं स्मरण करीने परासोलीये पधार्या त्यां रखा। त्यां विप्रयोगने अनुभव करवा लाग्या।

भावप्रकाश—श्रीगोकुल पलु श्रीनवनीतप्रियल्ये, त्यां अेथी न पधार्या के श्रीस्वामिनील्ये वचन छे, के अमने पलु अने श्रीठाकुरल्ये, पलु विप्रयोग धरे, तेथी

विप्रयोग होयगो । तासों श्रीगोकुल जायेंगे तो कहा जानिये कैसी होय ? तासों अब छै महिना लों मिलाप श्रीठाडुरजी सों दुर्लभ हैं, तासों परासोली में बैठि रहैं ।

और श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में परासोली की ओर एक बारी हती, सो जा पर श्रीगोवर्द्धननाथजी आयके श्रीगुसाईंजी कों दरसन देते । सो श्रीगुसाईंजी आपु लगरे दिन परासोली तें बारी कों देखते । सो कृष्णदास मंदिर में ते नीचे जाँय तब श्रीगोवर्द्धननाथजी बारी पर आय बैठते । सो कृष्णदास एक दिन आन्धोर में आये, तब बारी पर श्रीगोवर्द्धननाथजी कों बैठे देखे । तब कृष्णदास प्रातःकाल मंदिर में आयके बारी चिनवाय के श्रीगोवर्द्धननाथजी सों कह्यो, जो- मैं तो श्रीगुसाईंजी के दरसन की मने कियो हूं, सो तुम बारी पर क्यों बैठे ? और अब उनकी ओर मति जैयो । सो कृष्णदास परासोली की ओर श्रीनाथजी कों खेलिवे कों हू न जान देते । सो श्रीगोवर्द्धन- धरकों श्रीगुसाईंजी बैठि बैठिके विज्ञप्ति करते । सो रामदास मुखिया भीतरिया जब श्रीगुसाईंजी के पास राजभोग आरती सों पहुँचि के जाते, सो आपु कों श्रीनाथजी को चरणोदक देते । तब श्रीगुसाईंजी आपु फूल की माला करि राखते, सो माला के भीतर विज्ञप्ति को श्लोक लिखि देते । सो रामदासजी ले जाते । सो श्रीगोवर्द्धननाथजी

श्रीगोकुल जायेंगे तो केम लखिये गुं थाय ? तेथी हुवे छ महिना सुधी मिलाप श्री- ठाडुरजी (थवे) दुर्लभ छे. तेथी परासोलीमां जेसी रह्या.

पणी श्रीगोवर्द्धननाथजी मंदिरमां परासोलीनी तरङ्ग ओके बारी हुती. तेना उपर आवीने श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगुसांइंजने दर्शन देता. श्रीगुसांइंज पीते पधे दिवस परासोलीथी बारीने जेता. कृष्णदास मंदिरमांथी नीचे जाय तयारे श्रीगोवर्द्धननाथजी बारी उपर आवी जेसता. पछी कृष्णदास ओके दिवस आन्धोरमां आन्ध्या तयारे (तेभजे) बारी उपर श्रीगोवर्द्धननाथजीने जेहेसा जेया. तयारे कृष्णदासे प्रातःकाल मंदिरमां आवीने बारी यणुवावीने श्रीगोवर्द्धननाथजीने कहुं, के में तो श्रीगुसांइंजने दर्शननी मना करी छे तेथी तमे बारी उपर केम जेसा ? हुवे जेनी तरङ्ग न जता. ते कृष्णदास परासोलीनी तरङ्ग श्रीनाथजीने रभवाने पलु न जया देता. पछी श्रीगोवर्द्धनधरने श्रीगुसांइंज जेसी जेसीने विज्ञप्ति करता. ते रामदास मुखिया भीतरिया नयारे श्रीगुसांइंजनी पास राजभोग आर्तिथी पहुँचीने जता तयारे आपने श्रीनाथजीनुं चरणोदक देता. तयारे श्रीगुसांइंज पीते हुसनी माला करी राखता ते मालानी अंदर विज्ञप्तिना श्लोक लखी देता. ते रामदासछे लभ जता. पछी श्रीगो-

कों साला पहिरावते, तब साला में ते विज्ञप्ति को कागज निकासिके श्रीनाथजी बांचते । पाछें वाको प्रतिउत्तर श्रीनाथजी बीड़ा के पान की ऊपर अपनी पीरू सों सींकते लिखि देते । सो रामदास कों देते । सो रामदास दूसरे दिन राजभोग सों पहुँचिके जाते, तब श्रीनाथजी को लिखयो पत्र श्रीगुसांईजी कों देते । सो श्रीगुसांईजी आपु बांचिके पाछें जलमें घोरिके पान करते । यातें श्रीनाथजीके किये श्लोक जगतमें प्रकट न भये । श्रीगुसांईजी आपु विज्ञप्ति किये सो श्रीनाथजी आपु बांचिके रामदासजीकों देते, तासों विज्ञप्ति प्रकटी है । सो एक दिन श्रीगुसांईजीकों बहोत विरह भयो, सो यह लिखे । श्लोक—

त्वद्दर्शनविहीनस्य त्वदीयस्य तु जीवितम् ।
व्यर्थमेव यथा नाथ ! दुर्भगाया नवं वयः ॥

सो यह श्लोक लिखिके पठाये, जो-तिहारे भक्त हैं सो तिहारे विना जीवत हैं सो वृथा ही जीवत हैं । सो दुर्भगावत् । सो यह श्रीगोवर्द्धननाथजी बांचिके यह लिखे, जो-मेघको लक्षण यह है, जो-समय होय वर्षा को, तब आयके वर्षे । सो सगरो जगत जानत है । सो ऐसे अवही कृष्णदान को समय होय चुकेगो तब मिलाप होयगो । सो यह तुमहू जानत हो, और हमहू जानत हैं । तासों धीरज धरि समय होन देउ, जो-इतनो विरह क्यों करत हो ? सो यह पत्र

वर्द्धननाथजीने भासा पहिरावता त्पारे भासाभांठी विज्ञप्तिने पत्र झडीने श्रीनाथजी वांचता. पछी अने प्रति उत्तर श्रीनाथजी भीडाना पान उपर पोतानी पीडथी सणी वउ लणी देता ते रामदासने आपता. त्पारे रामदास भीज द्विसे राजसोगथी पहोय्तीने जता त्पारे श्रीनाथजीने लभेलेो पत्र श्रीगुसांईजीने आपता. ते श्रीगुसांईजी पोते वांच्तीने पछी जलमां घोणीने पान करता. तेथी श्रीनाथजीना करेला श्लोक जगतमां प्रकट न थया. श्रीगुसांईजीपोते विज्ञप्ति करी ते श्रीनाथजी पोते वांच्तीने रामदासजीने आपता. तेथी 'विज्ञप्ति' प्रकटी छे ते अेक द्विसे श्रीगुसांईजीने घणेो विरह थयो त्पारे आ लभ्युं. श्लोक-त्वद्दर्शन विहीनस्य० (उपर लुओ). अे श्लोक लणीने भेदथेो. जे तभारा लकतो छे ते तभारा विना लवे छे ते वृथान लवे छे. ते दुर्भगावत्. आ श्रीगोवर्द्धननाथजीने वांच्तीने अे लभ्युं, के मेघतु लक्षण अे छे के वर्षाते समय थाय त्पारे (वर्षा) आवीने वर्षे. ते लभ्युं जगत नल्ले छे. अेभन लभणं कृष्णदासने समय थय चूकरो त्पारे मिलाप थरो. अे तमे पलु नल्ले छे अने अमे नल्ले छे. तेथी धीरज धरी समय थया दा जे आरलेो विरह

रामदासजी लेके आये। तब श्रीगुसाईंजी आपु वांचिके यह लिखे जो—

‘अंबुदस्य स्वभावोऽयं समये वारि मुञ्चति ।

तथापि चातकः खिन्नो रटत्येव न संशयः ॥’

सो मेघ को यह स्वभाव है, जो—समय होयगो, तब ही बरसेगो (मिलाप होयगो) परंतु चातकने मेघ सों प्रीति करी है। सो ऐसे भक्त हैं सो तो तिनकों (मेघरूप श्रीकृष्ण कों) रटत है, सो चैन नहीं है। सो (आपु) चाहो तब समय होय। तुम बिना धीरज हमकों नहीं है। सो भक्तन को यही धर्म है, जो—चातक की नाई सदा तिहारी चाह करिवो करें। सो यह लिखि पठाये। या प्रकार रामदासजी नित्य आवते, सो श्रीगुसाईंजीके पास सब सेवक आवते, सो कृष्णदासजी जानते। परंतु सेवकन सों कछु चलती नहीं। रामदासजी कों बरजे हू सही, जो—तुम श्रीगुसाईंजी के पास पत्र ले जात हो, और पत्र ले आवत हो, सो यह बात ठीक नहीं है। तब रामदासजी कहे, जो—हम तो नित्य श्रीगुसाईंजी के दरसन कों जांयगे, चाहे हमकों सेवामें राखो चाहे मति राखो। तब कृष्णदास चुप होय रहे। सो काहेतें ? जो ऐसे सेवक फेरि कहाँ मिले ? तासों कृष्णदास कछु बोले नहीं। सो पौष सुदी ६ तें आषाढ सुदी ५ ताई श्रीगुसाईंजी ने विप्रयोग कियो। पाछें आषाढ सुदी ५ आई, ता दिन राजा

केम करे छे ? ओ पत्र रामदासछु लखने आव्यां। त्पारे श्रीगुसाईंछुमे वांचिने पोते आ लभ्युं। जे—‘अंबुदस्य स्वभावोऽयं’ (उपर लुओ)। ते मेघने ओ स्वभाव छे के समय थरे त्पारे न परसरे (मिलाप थरे) परंतु यातके मेघ साथे प्रीति करी छे ते ओवा लक्ष छे ते तो तेभने (मेघरूप श्रीकृष्णने) रहे छे। तेने चैन नथी तथी आप याहो त्पारे समय थाय, तभारा बिना धीरज अभने नथी। लक्ष्मिने ओन धर्म छे। यातकनी भाइक सदा तभारी याहु कर्या करे, आ लभी भोइल्युं। आ प्रकारे रामदास नित्य आवता, श्रीगुसाईंछुनी पासो अधा सेवक आवता ते कृष्णदासछु लभता, परंतु सेवकेथी कंठ याततुं नहीं। रामदासछुने रोइया पलु अर, के तमे श्रीगुसाईंछुनी पासो पत्र लख जाय छे, अने पत्र लख आवे छे ते यात हीक नथी। त्पारे रामदासछु कहे, के अमे तो नित्य श्रीगुसाईंछुनां दर्शने लभ्युं। याहो अभने सेवामें राखो याहो न राखो, त्पारे कृष्णदास चुप थइ रह्या। केमके ओवा सेवक इरी क्यां भणे ? तथी कृष्णदास कंठ ओइया नहीं। ते पौष सुद ६ थी अपाठ सुद ५ मुधी श्रीगुसाईंछुमे विप्रयोग कर्या। पछी अपाठ सुद ५ आवी ते दिवसे राजा भीरबस

वीरबल श्रीगोकुल आयो। सो श्रीगुसांईजी तो परासोली हते, और श्रीगिरिधरजी घर हते। तब वीरबल श्रीगिरिधरजी के पास आयके दंडवत करिके पूछे, जो-श्रीगुसांईजी कहाँ है ? हमको दरसन किये बहोत दिन भये। हमने उनके दरसन पाये नहीं। तब श्रीगिरिधरजी वीरबल सों कहे, जो-श्रीगुसांईजी तो परासोली में बैठि रहे हैं, जो-कृष्णदास अधिकारीने श्रीगुसांईजी के दरसन बंद किये हैं। सो श्रीगुसांईजी छै महिना तें बड़ो खेद करत हैं। तब वीरबल ने कह्यो, जो-अवही मैं जायके कृष्णदास को निकामत हों। सो यह कहिके वीरबल श्रीमथुराजी आयो। सो मथुरा की फौजदारी वीरबल की हती, सो मथुरातें पांचसे मनुष्य वीरबल ने पठाये और वीरबलने उनसों कह्यो, जो-श्रीगोवर्द्धनमें जायके कृष्णदास को पकरि लावो। तब मनुष्य गये, सो सांझ के समय श्रीगोवर्द्धन में आये। पाछें कृष्णदास को पकरिके वे मनुष्य मथुरा ले आये। तब वीरबलने अर्द्धरात्रि ही को मनुष्य श्रीगोकुल पठायके कह्यो, जो-कृष्णदास को पकरिके बंदीखाने में दिये हैं, जो-तुम श्रीगुसांईजी को लेके श्रीगोवर्द्धननाथजीके मंदिर में जावो। तब ये समाचार मनुष्यनने श्रीगिरिधरजी सों कहे। सो रात्रिही को श्रीगिरिधरजी घोड़ा ऊपर असवार होयके परासोली कू पधारे, सो प्रातःकाल ही आषाढ़ सुदी

श्रीगोकुल आव्यो। तयारे श्रीगुसांईजी तो परासोली हुता अने श्रीगिरिधरजी घर हुता। तयारे भीरभले श्रीगिरिधरजी पास आवीने दंडवत करीने पूछ्युं, के श्रीगुसांईजी क्यां छे ? अमने दर्शन करे धरुा द्विस थया छे, अमे अमनां दर्शन क्यां नथी। तयारे श्रीगिरिधरजी भीरभलेने कहे, के श्रीगुसांईजी तो परासोलीमां पिराए रखा छे। कृष्णदास अधिकारीअे श्रीगुसांईजीनां दर्शन अंध क्यां छे, श्रीगुसांईजी छ महुिनाथी अहु जेद करे छे। तयारे भीरभले कछुं, लभणुं ज हुं जधने कृष्णदासने डाहुं छुं, अम इहीने भीरभले श्रीमथुराए आव्यो। ते मथुरानी डेजदारी भीरभलेनी हुती। ते मथुराथी पांचसे मनुष्य भीरभले भोइलया अने भीरभले अमने कछुं, के श्रीगोवर्द्धनमां जधने कृष्णदासने पकडी लावो। तयारे मनुष्यो गया। ते सांजना समये श्रीगोवर्द्धनमां आव्यो। पछी कृष्णदासने पकडीने अे मनुष्यो मथुरा लभ आव्यो। तयारे भीरभले अर्धा रात्रे ज भाएसने श्रीगोकुल भोइलीने कछुं, के कृष्णदासने पकडीने अंदीखानामां भूक्या छे। तमे श्रीगुसांईजीने लभने श्रीगोवर्द्धननाथजीना मंदिरमां जव। तयारे अे सभावार मनुष्योअे श्रीगिरिधरजीने कल्या। तयारे रात्रिअे ज श्रीगि-

६ आई । सो श्रीगिरधरजी जायके श्रीगुसांईजी कों नमस्कार करिके कही, जो-आपु श्रीगोवर्द्धनधर के मंदिर में पधारो, और सेवा सिंगार करो । तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीगिरधरजी सों कहे, जो-कृष्णदास की आज्ञा होय तो चलें । तब श्रीगुसांईजी सों श्रीगिरधरजीने कही, जो-कृष्णदास कूं तो मथुरा में बंदीखाने में दियो है । यह सुनिके श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-हाय हाय ! श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के कृपापात्र सेवक भगवदीय कृष्णदास कों इतनो दुःख, और इतनो कष्ट । सो श्रीगुसांईजीने श्रीगिरधरजी सों कही, जो-तुमने वीरबल सों कह्यो होयगो । तब श्रीगिरधरजी ने कही, जो-हम तो सहज ही वीरबल सों कह्यो हतो, जो-श्रीगुसांईजी के दरसन कृष्णदास ने बंद किये हैं, इतनो कह्यो हतो । और तो कछु नाहीं कह्यो । तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-कृष्णदास आवेगो, तब ही भोजन कसंगो । सो इतनो सुनत ही श्रीगिरधरजी तत्काल घोड़ा ऊपर असवार होयके श्रीमथुराजी आये । तब वीरबल तें जायके श्रीगिरधरजी ने कह्यो, जो-काकाजी तो भोजन तब करेंगे जब कृष्णदास वहाँ जायेंगे । तासों कृष्णदास कों छोड़ि देउ । तब वीरबलने कृष्णदासकों बंदीखाने में तें बुलायके कह्यो, जो-देखि, श्रीगुसांईजी की कृपा, जो-तेरे विना भोजन

रिधरल घोडा उपर असवार थधने परासोदी पधार्या. पछी प्रातःकाले न अपाड सुद इ. आवी. तेथी श्रीगिरिधरलमे नधने श्रीगुसांइलने नमस्कार करीने कलुं, के आप श्रीगोवर्द्धनधरना मंदिरमां पधारो अने सेवा-शृंगार करे. त्यारे श्रीगुसांइल पोते श्रीगिरिधरलने कहे, के कृष्णदासनी आज्ञा होय तो यादीअे. त्यारे श्रीगुसांइलने श्रीगिरिधरलमे कलुं, के कृष्णदासने तो मथुरामां बंदीखानामां भूक्या छे. अे. सांलणीने श्रीगुसांइल पोते कहे, के हाय, हाय ! श्रीआचार्यल महाप्रभुना कृपापात्र सेवक भगवदीय कृष्णदासने आरलुं दुःख अने आरलुं कष्ट ! पछी श्रीगुसांइलमे श्रीगिरिधरलने कलुं, के तमे भीरअने कलुं लसे. त्यारे श्रीगिरिधरलमे कलुं, के अमे तो सहजमां भीरअने कलुं लतुं के श्रीगुसांइलनां दर्शन कृष्णदासने अंध कयां छे अरलुं कलुं लतुं. भीलुं तो कंध कलुं नथी. त्यारे श्रीगुसांइल आप-कहे, के कृष्णदास आवशे त्यारे न भोजन करीश. अरलुं सांलणतां न श्रीगिरिधरल तत्काल घोडा उपर असवार थधने श्रीमथुराल आव्या. त्यारे भीरअने नधने श्रीगिरिधरलमे कलुं, के कडाळ तो भोजन त्यारे करशे न्यारे कृष्णदास त्यां नशे. तेथी कृष्णदासने छोडी दे. त्यारे भीरअने कृष्णदासने अंधीखानामांभी पोसावीने कलुं, के अे श्रीगुसांइलनी कृपा ! तारा विना भोजन नथी करता अने

नाहीं करत हैं और तैनें उनसों ऐसी करी । तासों अब तोकूं छोड़त हूं, और आजु पाछें जो-तू श्रीगुसांईजी सों बिगारेगो, तब मैं तोकों फेरि कबहू नाहीं छोड़ूंगो । सो या प्रकार बीरबल ने कहिके कृष्णदास कों श्रीगिरधरजी के हवाले करि दिये । तब श्रीगिरधरजी कृष्णदास कों लेके परासोली में पधारे । तब श्रीगुसांईजी आपु कृष्णदास कों देखिके श्रीगोवर्द्धननाथजी को अधिकारी जानिके उठि ठाड़े भये । तब कृष्णदास दीन होयके श्रीगुसांईजी कों दंडवत करि चरन परस करिके यह पद गायो । सो पद—

राग सारंग—ताही कों सिर नाँहए जो श्रीवल्लभसुत पदरज रति होइ । कीजे कहा आन उँचे पद तिनसों कहा सगाइ मोइ ॥ १ ॥ जाके मनमें उग्र भरम है श्री-विठ्ठल श्रीगिरिधर दोइ । ताकौ संग विषम विष हू ते भूले चतुर करो जिनि कोइ ॥ २ ॥ सारासार विचार मतो करि श्रुति-वच गोधन लियो निचोइ । तहां नवनीत प्रगट पुरुषोत्तम सहजई गोरस लियो है विलोइ ॥ ३ ॥ उग्र प्रताप देखि अपने चख अस्ससार ज्यों भिदे न तोय । 'कृष्णदास' सुर तें असुर भए असुर तें सुर भए चरनन छोय ॥ ४ ॥

यह पद सुनिके श्रीगुसांईजी आपु बहोत प्रसन्न भये । तब कृष्णदास ने बिनती कीनी, जो-महाराज ! मेरो अपराध क्षमा करिये, और अब आप श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा में पधारिये । तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-तिहारी आज्ञा भई है, सो अब चलेंगे । तब कृष्णदास कों संग लेके श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोवर्द्धननाथजी के मंदिर में पधारे । और श्रीगोवर्द्धनधर कों दंडोत करी । पाछें सिंगार

तें अभनाथी आपुं क्युं. तेथी हवे तने छोडुं छुं अने आन पथी जे तू श्रीगुसां-
इथी अगाडीश त्यारे हुं तने इरी कदीय नहीं छोडुं. अे प्रकारे भीरभले कडीने
कृष्णदासने श्रीगिरिधरलना हवाले इरी दीधा. त्यारे श्रीगिरिधरल कृष्णदासने लधने
परासोली पधार्या. त्यारे श्रीगुसांइल पोते कृष्णदासने जेधने श्रीगोवर्द्धननाथलना
अधिकारी लएलीने उडी उला थया. त्यारे कृष्णदासे दीन थधने श्रीगुसांइलने दंडवत
इरी अरलरुपशं इरीने आ पद गायुं. ते पद-‘ताडीकें शिर नाथये’ (उपर लुअे).
अे पद सांखपीने श्रीगुसांइल पोते अहु प्रसन्न थया. त्यारे कृष्णदासे बिनंती इरी,
के महाराज ! मेरो अपराध क्षमा इरो अने हवे आप श्रीगोवर्द्धननाथलनी सेवाभां
पधारो. त्यारे श्रीगुसांइल पोते कहे, के तमारी आज्ञा थछ छे तो हवे आदीशुं. त्यारे
कृष्णदासने संग लधने श्रीगुसांइल पोते श्रीगोवर्द्धननाथलना मंदिरभां पधार्या
अने श्रीगोवर्द्धननाथलने दंडवत क्युं. पथी शृंगारने समय हतो अने अपाठ सुद

को समय हतो और आषाढ़ सुदी ६ को दिन हतो सो कसूमल कुलह पिछोड़ा धराये । तब राजभोग सों पहुँचे । पाछें उत्थापन तें सेन पर्यंत की सेवा सों पहुँचि के सेन आरती करि श्रीगुसांईजी आपु श्रीनाथजी के सन्मुख कृष्णदास कों दुसाला उढाये । और कहे, जो-श्रीगोवर्द्धनधर को अधिकार करो । तुम धन्य हो । तब वा समय कृष्णदास ने यह पद गायो । सो पद—

राग कान्हरो—परम कृपाल श्रीवल्लभनंदन करत कृपा निज हाथ दे माथै ।
जे जन सरनि आप अनुसर ही गहि सोंपत श्रीगोवर्द्धननाथै ॥ १ ॥ परम उदार चतुर
चितामनि राखत भवधारा तें साथै । भजि 'कृष्णदास' काज सब सरही जो
जानें श्रीविट्ठलनाथै ॥ २ ॥

सो यह पद कृष्णदास ने गायो, और विनती कीनी, जो-महाराज ! मेरो अपराध क्षमा करिये । तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुखसों कहे, जो-तिहारो अपराध श्रीनाथजी क्षमा करेंगे । ता पाछें श्रीगुसांईजी अनोसर कराय के सबन को समाधान कियो, तब सगरे वैष्णव सेवक प्रसन्न भये । पाछें जैसें नित्य सेवा सिंगार आप श्रीगोवर्द्धनधर को करते, वैसेही करन लागे । और कृष्णदास श्रीगुसांईजी की आज्ञा तें अधिकार की सेवा करन लागे । सो वे कृष्णदास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते ।

वार्ता-प्रसंग ९—और एक समय श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल में हते, सो कृष्णदास श्रीगोवर्द्धन तें श्रीगोकुल आये । तब श्रीगुसांईजी

इ नो दिवस हतो तेथी कसुंया, कुलह, पिछोड़ा धराया त्यारे राजलोगथी पहुँच्यो । पछी उत्थापनथी सेन पर्यंतनी सेवाथी पहुँचीने सेन आरती करी श्रीगुसांईजी पोते श्रीनाथजीनी सन्मुख कृष्णदासने दुसालो ओढायेो अने कहे, के श्रीगोवर्द्धनधरनो अधिकार करो. तमे धन्य छे. त्यारे ते समये कृष्णदासे आ पद गायुं. ओ पद :—
'परम कृपाल श्रीवल्लभनंदन' (उपर लुग्यो). ओ पद कृष्णदासे गायुं अने विनती करी, के महाराज ! मेरो अपराध क्षमा करीये. त्यारे श्रीगुसांईजी पोते श्रीमुखथी कहे, के तमारो अपराध श्रीनाथजी क्षमा करये. ते पछी श्रीगुसांईजी अनोसर करा-
वीने अथांतुं समाधान क्युं. त्यारे अथा वैष्णव सेवक प्रसन्न थया. पछी जेम नित्य सेवा-सिंगार पोते श्रीगोवर्द्धनधरने करता तेमज करया लाग्यो अने कृष्णदास श्रीगुसांईजीनी आज्ञाथी अधिकारनी सेवा करया लाग्यो.

वार्ता-प्रसंग ८-वणी ओक समय श्रीगुसांईजी पोते श्रीगोकुलमां हता. त्यारे कृष्णदास श्रीगोवर्द्धनथी श्रीगोकुल आये. त्यारे श्रीगुसांईजी उडीने श्रीगोवर्द्धनना-

उठिके श्रीगोवर्द्धननाथजी को अधिकारी जानि कृष्णदास को बहोत प्रसन्नता पूर्वक समाधान कियो, और अपने पास बैठाये। पाछें श्रीगोवर्द्धनधर के कुशल समाचार पूछे और कृष्णदास को अपने श्रीहस्तसों श्रीनवनीतप्रियजी को महाप्रसाद धरे। ता पाछें सेनभोग को महाप्रसाद लिवाय के रात्रि को सुंदर सेज पर सेन करायो। सो जब प्रातःकाल भयो तब कृष्णदास चलन लागे। ता समय कृष्णदास ने श्रीगुसाईजीसों विनती कीनी, जो-महाराज ! मेरो मन वृन्दावन देखिवे को बहोत है। तब श्रीगुसाईजी आपु कहे, जो-आछो जावो, परन्तु दुःख पावोगे। तब कृष्णदास श्रीयसुनाजी पार गये, जो-श्रीगुसाईजी ने मने किये तोऊ मन न मान्यो, श्रीवृन्दावन को चले। सो मध्याह्न समय वृन्दावन आये। तब वृन्दावन के संत महंत कृष्णदास सों मिलन आये, सो कृष्णदास को वा समय ज्वर चढ्यो, सो प्यास लागी। तब कंठ सूखन लाग्यो। सो कृष्णदास ने कही, जो-प्यास बहोत लगी है, सो कंठ सूखत जात है। तब संत महंतन ने कही, जो-वेगि जल लावे। सो कृष्णदास अकेले ही रथ पर बैठिके गये हते। सो कृष्णदास ने कही, जो-श्रीगोकुल को बल्लभी वैष्णव होय सो वासों कहो, जो-बह जल लावे तो मैं पीऊं। तब सगर संत महंतन ने कृष्ण-

थलना अधिकारी जानिने कृष्णदासनुं भुहु प्रसन्नतापूर्वक समाधान क्युं अपने पीतानी पासो भेसाया। पछी श्रीगोवर्द्धनधरना कुशल समाचार पूछया अपने कृष्णदासने पीताना श्रीहस्तसथी श्रीनवनीतप्रियथलना महाप्रसाद धर्यो। ते पछी सेनसोगना महाप्रसाद लेवजावीने रात्रिमे सुंदर सेज उपर शयन कराव्युं। पछी न्यारे प्रातःकाल थयो त्यारे कृष्णदास यासवा लाग्यो। ते समये कृष्णदासे श्रीगुसांभलने विनती करी के महाराज ! भाइं मन वृंदावन जेयानुं धलुं छे। त्यारे श्रीगुसांभल पीते कडे, के साइं। नव परंतु दुःख पाभसो। त्यारे कृष्णदास श्रीयसुनाथलना पार गया। श्रीगुसांभलमे ना कहुं तो पलु मन न मान्युं ने श्रीवृंदावन यात्या। ते मध्याह्नना समये वृंदावन आव्या त्यारे वृंदावनना संत महंत कृष्णदासने भणवाने आव्या। ते समये कृष्णदासने ज्वर चढयो जेथी तरस लागी। त्यारे कंठ सूखावा लाग्यो। त्यारे कृष्णदासे कलुं, के तरस धली लागी छे, कंठ सूख्यो नव छे, त्यारे संतमहंतोमे कलुं, के जलदी जल लावीये। त्यारे कृष्णदास जेकाल रथ उपर भेसीने गया लना ते कृष्णदासे कलुं, के श्रीगोकुलना वल्लभी वैष्णव होय तेने कहुं के ते जल लावे, तो हुं पीउं। त्यारे भधा संत महंतोमे कृष्णदासने तई करीने कलुं, के आहीं तो केय वैष्णव नथी, श्रीगोकुलना लगीं आहीं

दास सों तर्क करिके कह्यो, जो-यहाँ कोई वैष्णव नहीं हैं, जो-श्री-गोकुल को भंगी यहां गयाहो है, सो यहां आयो है, सो बाकों तुम कहो तो बुलावें । तब कृष्णदास ने कही, जो-वह गोकुल को भंगी सबतें श्रेष्ठ हैं । सो बासों कहियो, जो-कुम्हार के घर तें कोरो वासन लेके श्रीयमुनाजी में न्हाय के जल भरि लावे । सो तब उनने जायके वा भंगी सों कह्यो, जो-कृष्णदास कों ज्वर चढ्यो है, वह प्यासे हैं । सो कहत हैं, सो तू उनकों जल ले जा । तब वह भंगी उहां सों दोरयो । सो श्रीगुसाईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजी की राजभोग आरती करि श्रीनाथजीद्वार पधारिवे कूं घाट ऊपर आये हते । सो इतने ही में वा भंगी ने कपड़ा की आड़ करिके मुख तें कह्यो, जो-महाराज ! कृष्णदास श्रीवृन्दावन में हैं । तहाँ उनकों ज्वर चढ्यो है, सो प्यासे हैं । जल मोसों मांग्यो है, सो मैं वृन्दावन तें यहां दोर्यो आयो हूं । तब श्रीगुसाईजी खवास सों झारी जलकी लेके, घोड़ा ऊपर अमवार होयके वेगि ही आपु वृन्दावन पधारे । सो तब कृष्णदास कों रथ ऊपर ते उठाय के जल प्याये । पाछें कृष्णदास सावधान भये । सो ज्वर हू उतरि गयो । तब कृष्णदास श्रीगुसाईजी कों दंडवत करिके यह पद गाये । सो पद—

राग कान्हरो—श्रीविट्ठलजु के चरननि की बलि । हमसे पतित उद्धारन परम
कृपाल आपु आप चलि ॥ १ ॥ उज्वल अरुन दया रंग रंजित नव नखचंद्र विरहतम
निर्दलि । सेवत सुखकर सोभा पावन भक्त मुदित ललित पद भंगुलि ॥ २ ॥ अतिसै
मृदुल सुगंध सु सीतल परसत त्रिविध ताप डारत मलि । कहे 'कृष्णदास' वार
एक सुधि करि तेरो कहा करेगो रिपु कलि ॥ ३ ॥

वियाहो छ ते आही आब्यो छ, अने तमे इहो तो जोसावीअे, त्पारे कृष्णदासे इधुं, देअे श्रीगोकुलना भंगी भधाथी श्रेष्ठ छ अने इहोअे दे कुंभारना धरथी डोइं वासथु सावीने श्रीयमुनाल्लभां न्हाअने जस लरी लाये, त्पारे अेमथे जअने भंगीने इधुं, दे कृष्णदासने जवर चढयो छ ते तरस्या छ, ते इहो छ तेथी तू अेमने माटे जस लअना, त्पारे अे भंगी त्प्रांथी दाडयो, ते समथे श्रीगुसांथल येते श्रीनवनीतप्रियलनी राज-भोग आति करी श्रीनाथलद्वार पधारवाने घाट उपर आब्या हुता, अेरसाभां अे भंगीअे इपडानी अेर करीने मुअथी इधुं, दे महाराज ! कृष्णदास श्रीवृन्दावनभां छ, त्प्रां अेमने जवर चढयो छ अेरसे तरस्या छ, जस मासे पासे मांग्युं छ, तेथी हुं वृन्दावनथी आहीं होअ्यो आब्यो छुं, त्पारे श्रीगुसांथल भवास पासेथी जसनी झारी

सो यह पद गायके कृष्णदास ने श्रीगुसाईजी सों बिनती कीनी, जो-महाराज ! मैंने आपको कह्यो न मान्यो तासों इतनो दुःख पायो । ता पाछें श्रीगुसाईजी के संग कृष्णदास श्रीगोवर्द्धन आये, तब सेन आरती को समय भयो, तब श्रीगुसाईजी न्हाय के सेन आरती किये । तब कृष्णदास ने यह पद गायो । सो पद—

राग कान्हरो—आजु कौ दिन धनि धनिरी माई नैनन भरि देखे नंद नंदन । परम उदार मनोहर मूरति ताप हरत लखि, पूजत चंदन ॥ १ ॥ नवलराय श्रीगोवर्द्धनधारी रूप रासि युवती मन फंदन । ध्वजा वज्राकुंज जब विराजत 'कृष्णदास' कीनो पद वंदन ॥ २ ॥

पाछें श्रीगुसाईजी अनोसर कराय के परवत तें नीचे पधारे । सो या प्रकार कृष्णदास ने बहोत दिन लों श्रीगोवर्द्धननाथजी को अधिकार कियो ।

वार्ता-प्रसंग ९—पाछें एक दिन एक वैष्णव ने आयके कृष्णदास सों कही, जो-मोकू यहां एक कुँआ बनवावनो है, और मोकों अपुने देस जानो है, सो मैं तो अपने देश कों जाउंगो, तासों तुम या द्रव्य कों राखो । सो ऐसे कहिके वह वैष्णव तीनसे रुपैया देके अपुने देश कों गयो । तब कृष्णदास वा वैष्णव के रुपैयान में ते एक सौ रुपैया एक कुल्हरा में धरिके बाग में एक आँव के वृक्ष नीचे गाड़ि राखे ।

सभने घोडा उपर असवार थभने जल्दीज आप वृंदावन पधार्या । त्यारे कृष्णदासने स्थ उपरथी उठावीने जस पायुं । पछी कृष्णदास सावधान थया । जवर पखु उतरी गयो । त्यारे कृष्णदासे श्रीगुसांभलने दंडवत करीने आ पद गायुं । ते पद—' श्रीविदुस लु डे थरलुन डी अलि ' (उपर लुओ) । ते पद गाभने कृष्णदासे श्रीगुसांभलने बिनती करी, डे महाराज ! में आपुं कछुं न मान्युं तेथी आरलुं दुःख पाभ्ये । ते पछी श्रीगुसांभलना संगे कृष्णदास श्रीगोवर्द्धन आव्या । त्यारे सेनआर्तिना समय थयो । त्यारे श्रीगुसांभलने न्हाभने सेनआर्ति करी । त्यारे कृष्णदासे आ पद गायुं । ते पद—' आजु डे दिन धनि री माभो ' (उपर लुओ) । पछी श्रीगुसांभल अनोसर करावीने पर्वतथी नीचे पधार्या । ऐ प्रकारे कृष्णदासे अलु द्विस सुधी श्रीगोवर्द्धननाथलने अधिकार कर्या ।

वार्ता-प्रसंग ६—पछी ऐक द्विस ऐक वैष्णवे आवीने कृष्णदासने कछुं, डे भने अहों ऐक डुवो भनावरावयो छे अने भारे भारा देश जपुं छे तो लुं तो भारा देश जस । तेथी तमे आ द्रव्यने राभ्ये । ऐभ कहीने ऐ वैष्णव त्रलुसो इपीआ आपीने पोताना देश गयो । त्यारे कृष्णदासे ऐ वैष्णवना इपैयाभांथी ऐकसो इपीआ ऐक

चौरासी वैष्णवन की वार्ता



अपने वनवाये हुए अधूरे कृए का निरीक्षण करते हुए—

कृष्णदास

जन्म सं० १५५३]

[देहावसान सं० १६३६



ता पाछें आछो महरत देखिके पूछरी के पास बागमें कुँआ को आरंभ कियो । तब कितनेक दिन पाछें कुँआ बनिके तैयार भयो, और दोयसे रुपैया लगे । पाछें कुँआ को मोहड़ो बनवावनो रह्यो, सो कृष्णदासजी मनमें विचारे, जो-सौ रुपैया में मोहड़ो आछो बनेगो । ता पाछें श्रीगोवर्द्धनधर के उत्थापन के दरसन करिके कृष्णदास वा कुँआ देखवे कू गये, सो वा कुँआ कौं देखन लागे । सो कृष्णदास के हाथ में आसा (लकड़ी) हतो, सो आसा टेक के कृष्णदास वा कुँआ पर ठाड़े भये । इतने में आसा सरक्यो, सो कृष्णदास आसा सहित वा कुँआ में जाय परे । तब सगरे मनुष्य पास ठाड़े हते, सो तिनने सोर कियो । जो कृष्णदास कुँआ में गिरे पाछें कितेक मनुष्य दौरे, सो रस्सा टोकरा लाये, और दोय मनुष्य कुँआ के भीतर उतरे । सो वहीत दूँडे परि कृष्णदास को सरीर हू न पायो । तब वे मनुष्य पाछे फिरि आये । ता समय श्रीगुसाईंजी श्रीगोवर्द्धनधर कौं सेनभोग धरिके बाहिर विराजे हते, सो रामदास भीतरिया श्रीगुसाईंजी के पास बैठे हते । ता समय मनुष्य ने जायके कही, जो-प्रहाराज ! कृष्णदास कुँआ कौं देखत हते, सो आसा सरक्यो । सो कुँआ में गिरे । पाछें मनुष्य कुँआ में दूँडिवे कौं उतरे । सो कृष्णदास को

इसका भां धरिने भागमां अेक आंभाना वृक्ष नीचे दाटी राख्या. ते पछी सुंदर मुहुत जेधने पूछरीनी पासे भागमां कुवाने आरंभ कर्यो. त्तारे डेरसाक दिवस पछी कुंवा अपनीने तैयार थयो अने असो इपीआ लाग्या. पछी कुवानुं भडोडुं अनावनुं रथुं त्तारे कृष्णदासअे मनमां विचार्युं, के सो इपीआमां भडोडुं साइं अनरी. ते पछी श्रीगोवर्द्धनधरनां उत्थापननां दर्शन करिने कृष्णदास अे कुवाने जेवाने गया. त्तारे अे कुवाने जेवा लाग्या. त्तारे कृष्णदासना हाथमां लाकडी लती. ते लाकडीने देखिने कृष्णदास ते कुवा उपर उला रह्या. अेरसामां लाकडी असी. त्तारे कृष्णदास लाकडी सहित ते कुवामां जध पड्या. त्तारे अधा मनुष्य पासे उला लता तेभणे भुभराण करी, के कृष्णदास कुवांमां पड्या. पछी डेरसाक मनुष्य दाड्या. दोरसां टोपसा लाग्या अने जे मनुष्य कुवानी अंदर उतर्यो, ते अहु भोण्या; परंतु कृष्णदासनुं शरीर पल्लु न मलयुं. त्तारे अे मनुष्य पाछा इरी आव्या. ते समये श्रीगुसाईंजी श्रीगोवर्द्धनधरने सेनभोग धरिने अहार अिराज्या लता अने रामदास लीतरिया श्रीगुसाईंजीनी पासे भेला लता. ते समये मनुष्याअे जठने कथुं, के भडाराज ! कृष्णदास कुवाने जेवा लता ते लाकडी असी तेथी कुवांमां पड्या. पछी मनुष्य कुवांमां भोणवाने उतर्यो. ते कृष्ण-

सरीर हू पायो नाहीं है । ता समय रामदासजी उहाँ ठाड़े हते, सो कहे 'तामसानामधोगतिः' तब यह सुनिके श्रीगुसाईजी आपु कहे, जो-रामदासजी ऐसे न कहिये । जो कृष्णदास तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के कृपापात्र वैष्णव हते, जो यह लीला है । कूप में गिरे तो कहा भयो ? कहा जानिये, कहा है ?

भावप्रकाश—सो याको कारन श्रीगुसाईजी आपु तो जानत हते, जो प्रेतयोनि को शाप है । तासों आपु प्रगट न किये । सो कृष्णदास या देह समेत प्रेत भये । सो पूछरी के पास एक पीपर को वृक्ष है । ताके ऊपर जायके बैठे ।

वार्ता-प्रसंग १०—और श्रीगुसाईजी आपु श्रीमुख सों कहे, जो-कृष्णदास श्रीगोवर्द्धनधर को अधिकार भलो ही किये और अब ऐसे सेवक कहाँ मिले ? और अधिकारी बिना काम चलेगो नाहीं सो विचार करनो । सो या भांति कहे । तब रामदासजीने विनती कीनी, जो-महाराज ! जाकों तुम आज्ञा करोगे, सोई करेगो । जो श्रीगोवर्द्धननाथजी की सेवा भाग्य सों मिलत है । तब श्रीगुसाईजी आपु कहे, जो-हम कौनसे जीव कों कहें, जो-कौनसे जीव को बिगार करें । सुधारनो तो बहोत कठिन है । और बिगारनो तो तत्काल है ।

भावप्रकाश—सो याही सों श्रीआचार्यजी श्रीसुबोधिनीजी में कहे

दासतुं शरीरे मरुत्तुं नथी. ते समये रामदास त्यां उला उता ते कहे 'तामसानामधोगतिः'. त्पारे अे सांभलीने श्रीगुसांभल आपु कहे, के रामदासल ! अेम न कडिअे. कृष्णदास ते श्रीआचार्यल महुाप्रभुलना कृपापात्र वैष्णव उता. आ ते दीसा छे. इयांमां पड्या ते शुं थयुं ? शुं न्नाणुअे शुं छे ?

भावप्रकाश—अेतुं कारणु श्रीगुसांभल आपु ते न्नाणुता उता के प्रेतयेनीने। शाप छे तेथी आपे प्रकट न क्युं ते कृष्णदास आ देह सुद्धां प्रेत थया. ते पूछरीनी पासे पीपरतुं वृक्ष छे तेनी उपर न्धने अेडा.

वार्ता-प्रसंग १०-वणी श्रीगुसांभल पोते श्रीमुखथी कहे, के कृष्णदासे श्रीगोवर्द्धनधरने अधिकार सारे न् क्यो अने उवे अेया सेवक कयां भणे ? वणी अधिकारी बिना काम आसने नहीं, तेथी विचार करवो, अे प्रकारे क्युं. त्पारे रामदासलअे विनती करी, के महाराज ! नेने तमे आज्ञा करशां तेन करशा. श्रीगोवर्द्धननाथलनी सेवा भाग्यथी भणे छे. त्पारे श्रीगुसांभल पोते कहे, के अमे कया लवने कडिअे, कया लवने अगाड करीअे ? सुधारवो तो अहु कडणु छे अने अगाडवो तो तत्काल छे.

भावप्रकाश—ते अेथी के श्रीआचार्यल श्रीसुबोधिनीलमां कहे छे के श्री-

हैं। जो-श्रीभागवत नारायण ने ब्रह्मा सों कह्यो है, परि ब्रह्मा सृष्टि करन को अधिकारी है। तासों श्रीभागवत फलित न भयो। पाछे ब्रह्मा नारदजी सों कही, सो नारद कों सगरे देसन में फिरवे को अधिकार है तासों फलित न भयो। तत्र नारद ने वेदव्यासजी सों कह्यो, सो वेदव्यासजी सास्त्र करन के अधिकारी हैं, तासों व्यासजी कों हू फलित न भयो। पाछे व्यासजी ने श्रीशुकदेवजी सों कह्यो। सो शुकदेवजी सर्वत्याग क्रियो है। सो यही त्याग में लगे। पाछे परीक्षित को सर्व-त्याग भयो, तत्र अधिकारी भागवत के भये। (जब) श्रीशुकदेवजी रात दिन ताई कथा कहे। तत्र सातमें दिन भगवत् प्राप्ति भई। सो तैसे ही यह श्रीभागवत रूप पुष्टिमार्ग है। सो याके अधिकारी निरपेक्ष होय, ताही के माथे यह मार्ग होय। और जाको अधिकार पाये अहंकार बढ़े, सो ताकों कछु फल सिद्ध न होय।

तासों श्रीगोवर्द्धनधर को अधिकार हम कौन कों देंय ? कौन को विगार करें। तब रामदासजी सुजिके चुप होय रहे। इतने में सेनभोग को खनय भयो, सो सेनभोग श्रीगुसांईजी सरायें। सो सेन आरती करे पाछें श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोवर्द्धनधर सों पूछे, जो-महाराज ! कृष्णदास की तो देह छूटी और अधिकारी विना चलेगी नहीं, सो हम कौनकों अधिकार देके विगार करें ? तासों आपु कह्यो ताकों अधिकारी करें। तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो-हमहू

लागवत नारायणु प्रह्वाने कहुं छे परंतु प्रह्वाने सृष्टि करवाने अधिकारी छे तेथी श्रीलागवत इलित न थयुं। पछी प्रह्वाने नारदलने कहुं, ते नारदलने अथा देशोभां करवाने अधिकार छे तेथी इलित न थयुं। त्पारे नारदे वेदव्यासलने कहुं, ते वेदव्यासल शास्त्र करवाना अधिकारी छे, तेथी व्यासलने पणु इलित न थयुं। पछी व्यासलने शुकदेवलने कहुं, ते शुकदेवलने सर्व त्याग क्यो छे तेथी ते पणु त्यागभां लाग्या। पछी परीक्षितने सर्व त्याग थयो त्पारे अधिकारी श्रीलागवतना थया। त्पारे शुकदेवलने रात दिवस (सात दिवस) सुधी कथा कही त्पारे सातमा दिवसे लगवत्प्राप्ति थय। तेवे न आ श्रीलागवत रूप पुष्टिमार्ग छे जेना अधिकारी निरपेक्ष होय तेना न माथे आ मार्ग होय अने जेने अधिकार भणे अहंकार वधे तेने कंछ इल सिद्ध न थाय।

तेथी श्रीगोवर्द्धनधरने अधिकार अमे डेने द्यमे ? डेना अगाड करीमे ? त्पारे रामदासल सांखणीने चुप थय रह्या। अटलाभां सेन लोगने समय थयो। त्पारे सेन लोग श्रीगुसांइलने सराय्या। पछी सेन आति कथा पछी श्रीगुसांइल तेते श्रीगोवर्द्धनधरने पूछे, डे महाराज ! कृष्णदासनी तो देह छुटी अने अधिकारी विना व्यासजी

के ऊपर कृष्णदास अधिकारी प्रेत होयके बैठे हैं। तब कृष्णदास अधिकारी ने गोपीनाथदास ग्वाल सों जैश्रीकृष्ण किये और कह्यो, जो-अरे भैया ! गोपीनाथदास ग्वाल ! तू मेरी बिनती श्रीगुसांईजी सों करियो, और कहियो, जो-आपके अपराधतें मेरी यह अवस्था भई है। और श्रीगोवर्द्धनधर दरसन देत हैं सो आपकी कृपा ते देत हैं।

भावप्रकाश—सो जब श्रीगोवर्द्धननाथजी के आगे अधिकार को हुसाला श्रीगुसांईजी ने कृष्णदास कों (दुवारा) उढायो। तब कृष्णदास ने यह पद गायो—‘परम कृपाल श्रीवच्छभनंदन करत कृपा निज हाथ दे माथे।’ सो यह पद गाय के कृष्णदास ने श्रीगुसांईजी सों कही, जो-महाराज ! मैं छै महिना लों आपकों विप्रयोग करायो, सो आपु मेरो अपराध क्षमा करिये। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-तिहारो अपराध श्रीनाथजी क्षमा करेंगे। सो यह श्रीगुसांईजी आपु कहे, तासों श्रीगोवर्द्धनधर दरसन देत हैं, ओर बोलत हैं बातें करत हैं। परंतु श्रीगुसांईजी आपु अपराध क्षमा नहीं किये हैं, तासों प्रेतयोनि छुटत नहीं है। और कृष्णदास श्रीगोवर्द्धनधर सों हू कहते, जो-महाराज ! मोकों दरसन देत हो, सो प्रेतयोनि क्यों नहीं छुड़ावत हो ? तब गोवर्द्धननाथजी कहे, जो-यह हमारे हाथ है नहीं, उद्धार तो तेरो श्रीगुसांईजी के हाथ है। सो काहेतें ? जो-

पासे ओक पीपणनी नीचे जेले छे अने पीपणनी उपर कृष्णदास अधिकारी प्रेत थधने जेले छे। तयारे कृष्णदास अधिकारीजे गोपीनाथदास ग्वालने जय श्रीकृष्ण कर्था अने कहुं, के अरे भाइ ! गोपीनाथदास ग्वाल ! तू भारी बिनती श्रीगुसांईजीने कऱे अने कहे जे के आपना अपराधथी भारी आ अवस्था थध छे अने श्रीगोवर्द्धनधर दर्शन हे छे ते आपनी कृपाथी हे छे।

भावप्रकाश—इवे श्रीगोवर्द्धननाथजीनी आगण अधिकारने हुशावे श्रीगुसांईजीजे कृष्णदासने (पीपणवार) ओढाव्यो (इतो) तयारे कृष्णदासे आ यह गायुं (इतुं)। ‘परम कृपाल श्रीवच्छभ नंदन’। ओ यह गायने कृष्णदासे श्रीगुसांईजीने कहुं, के महाराज ! मे छ महिना सुधी आपने विप्रयोग करायोते आप भारो अपराध क्षमा करे। तयारे श्रीगुसांईजी पोते कहे के तभारो अपराध श्रीनाथजी क्षमा करथे। ओ श्रीगुसांईजी पोते कहे, तेथी श्रीगोवर्द्धनधर दर्शन हे छे अने जेले छे अने वातो करे छे। परंतु श्रीगुसांईजीजे पोते अपराध क्षमा नधी कर्था तेथी प्रेतयोनि छुटती नधी अने कृष्णदास श्रीगोवर्द्धननाथजीने पणु कहेता के महाराज ! मने दर्शन हो छे तो प्रेतयोनि केम छे डवता नधी ? तयारे श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, ओ अमार हाथमां नधी।

कौन जीवको विगार करे ? जो-कोई अधिकार लेयगो ताको विगार होयगो । तासों तुम एक काम करो, जो-अधिकार को दुसाला ले सबके आगे कहो, जाकों अधिकार करना होय सो दुसाला ओढ़ो । तब जो आयके कहे ताकों देऊ । सो जाकों गिरनो होयगो सो आपुही आवेगो । ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु प्रसन्न होयके श्रीगोवर्द्धननाथजी कों सेन कराये । पाछें दूसरे दिन राजभोग आरती के समय सगरे ब्रजवासी वैष्णव भेले करिके श्रीगुसांईजी आपु दुसाला हाथ में लियो । पाछें सबनकों सुनायके कह्यो, जो-जाकों श्रीनाथजी के घर को अधिकार करना होय सो या दुसाला कों ओढ़ो । यह सुनिके कितनेकने कही, जो-हम करेंगे । सो पहले एक क्षत्री बोल्यो हतो, सो ताकों दुसाला उढ़ायो । ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी की आरती करि अनोसर कराय श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल पधारै ।

पाछें कछुक दिन बीते तब एक समय श्रीगोवर्द्धननाथजी की भैंस खोय गई, सो बरहे में निकसि गई । तब भैंस ढूंढिवे के लिये गोपीनाथदास ग्वाल और पांच सात ग्वाल पूछरी की ओर गये । वे सब परम कृपापात्र भगवदीय हते । सो तब देखे तो श्रीगोवर्द्धननाथजी सखान सहित पूछरी पास एक पीपरके नीचे खेलत हैं । और पीपर

नहीं। तेथी अमे कोने अधिकार छनते (तेना) अगाउ करीअे ? तेथी आपु कहे तेने अधिकारी करीअे. त्पारे श्रीगोवर्द्धननाथलु कहे, के अमे पणु क्या लवना अगाउ करीअे ! के कोठ अधिकार लेशे तेना अगाउ थशे. तेथी तमे अेक काम करे के अधिकारने दुशालो लधने अधानी आगण कहे जेने अधिकार करयो होय ते दुशालो ओढे. त्पारे जे आवीने कहे तेने से. जेने पउधुं लेशे ते आपु भेणे ज आवशे. ते पछी श्री गुसांथलुअे पोते प्रसन्न थधने श्रीगोवर्द्धननाथलुने सेन कराव्या. पछी भील द्विवसे राजभोग आर्तिना समये अधा ब्रजवासी वैष्णवोंने लेगा करीने श्रीगुसांथलुअे पोते हाथमां दुशालो लीयो. पछी अधाने सांलणावीने कहुं, के जेने श्रीनाथलुना धरनो अधिकार करयो होय ते आ दुशालाने ओढे. अे सांलणीने केरदाके कहुं, के अमे करीशुं. त्पारे पहेलां अेक क्षत्री भेाल्यो हुतो तेने दुशालो ओढायो. ते पछी श्रीगोवर्द्धननाथलुनी आरती करी अनोसर करायी श्रीगुसांथलु पोते श्रीगोकुल पधार्या.

पछी केरदाके द्विवस वित्या त्पारे अेक समय श्रीगोवर्द्धननाथलुनी भैंस ओवाउ गध. ते जंगलमां निकणी गध त्पारे भैंस ओणवा भाटे गोपीनाथदास ग्वाल अने पांच सात ग्वाल पूछरीनी तरफ गया. अे अधा परम कृपा पात्र भगवदीय हुता. त्पारे ते लुअे तो श्रीगोवर्द्धननाथलु सभाअो सहित पूछरी

के ऊपर कृष्णदास अधिकारी प्रेत होयके बैठे हैं। तब कृष्णदास अधिकारी ने गोपीनाथदास ग्वाल सों जैश्रीकृष्ण किये और कह्यो, जो-अरे भैया ! गोपीनाथदास ग्वाल ! तू मेरी विनती श्रीगुसांईजी सों करियो, और कहियो, जो-आपके अपराधतें मेरी यह अवस्था आई है। और श्रीगोवर्द्धनधर दरसन देत हैं सो आपकी कृपा ते देत हैं।

भावप्रकाश—सो जब श्रीगोवर्द्धननाथजी के आगे अधिकार को हुआला श्रीगुसांईजी ने कृष्णदास कों (दुवारा) उढ़ायो। तब कृष्णदास ने यह पद गायो—‘परम कृपाल श्रीवृद्धनंदन करत कृपा निज हाथ दे साथे।’ सो यह पद गाय के कृष्णदास ने श्रीगुसांईजी सों कही, जो-महाराज ! मैं छै सहिना लों आपकों विप्रयोग करायो, सो आपु मेरो अपराध क्षमा करिये। तब श्रीगुसांईजी आपु कहे, जो-तिहारो अपराध श्रीनाथजी क्षमा करंगे। सो यह श्रीगुसांईजी आपु कहे, तासों श्रीगोवर्द्धनधर दरसन देत हैं, ओर बोलत हैं बातें करत हैं। परंतु श्रीगुसांईजी आपु अपराध क्षमा नहीं किये हैं, तासों प्रेतयोनि छुटत नहीं है। और कृष्णदास श्रीगोवर्द्धनधर सों हू कहते, जो-महाराज ! मोकों दरसन देत हो, सो प्रेतयोनि क्यों नहीं छुड़ावत हो ? तब गोवर्द्धननाथजी कहे, जो-यह हमारे हाथ है नहीं, उद्धार तो तेरो श्रीगुसांईजी के हाथ है। सो काहेतें ? जो-

पासे अक पीपणनी नीचे जेले छे अने पीपणनी उपर कृष्णदास अधिकारी प्रेत थधने जेले छे. त्तारे कृष्णदास अधिकारीजे गोपीनाथदास ग्वालने जय श्रीकृष्ण कर्या अने कहुं, के अरे भाइ ! गोपीनाथदास ग्वाल ! तू भारी विनति श्रीगुसांईजीने क-ले अने कहे ले के आपना अपराधथी भारी आ अपरथा थध छे अने श्रीगोवर्द्धनधर दर्शन दे छे ते आपनी कृपाथी हे छे.

भावप्रकाश—इवे श्रीगोवर्द्धननाथजीनी आगण अधिकारने दुशादे। श्रीगुसांईजीजे कृष्णदासने (दुवारा) ओठाख्यो (इतो) त्तारे कृष्णदासे आ यह गायुं (इतुं)। ‘परम कृपाल श्रीवृद्धनंदन’। अे यह गायने कृष्णदासे श्रीगुसांईजीने कहुं, के महाराज ! मे छे सहिना सुधी आपने विप्रयोग करायेते आप भारो अपराध क्षमा करे। त्तारे श्रीगुसांईजी पोते कहे के त्तारो अपराध श्रीनाथजी क्षमा करये. अे श्रीगुसांईजी पोते कहे, तेथी श्रीगोवर्द्धनधर दर्शन दे छे अने जेले छे अने वातो करे छे. परंतु श्रीगुसांईजीजे पोते अपराध क्षमा नथी कर्यां तेथी प्रेतयोनि छुटती नथी अने कृष्णदास श्रीगोवर्द्धननाथजीने पछु कहेता के महाराज ! मने दर्शन हो छे तो प्रेतयोनि केम छे डावता नथी ? त्तारे श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, अे अमारो हाथमां नथी.

लीला में श्रीचंद्रावलीजी को शाप है, जो-प्रेतयोनि होय । सो कौन छुड़ावे ? तासों यद्यपि श्रीस्वामिनीजी की सखी ललिता रूप (कृष्णदास) हैं । परंतु आगे को बचन विचारि नहीं छुड़ावत हैं । तासों कृष्णदास ने गोपीनाथदास ग्वाल साँ कह्यो, जो-तू मेरी चिनती श्रीगुसाँईजी साँ करियो, जो-श्रीगुसाँईजी की कृपा विना मेरी गति नहीं है ।

और बिलछ की ओर बाग में आमके वृक्ष के नीचे रूपया सो एक कुलरा में भरिके गाड़े हैं, सो निकालि के कूप के ऊपर को मोहड़ो बनवाय दीजियो । यह श्रीगुसाँईजी साँ कहियो । और श्रीनाथजी की भैंस तुम दूँदिवे काँ आये हो सो उह घना में चरत है । पाछे गोपीनाथदास ग्वाल घना में तें भैंस लेके गोपासपुर आये । सो भैंस वांधि गोदोहन गाय भैंस को किये । ता पाछे श्रीगुसाँईजी आपु श्रीनाथजी की सेन आरती करिके अनोसर कराय परवत तें उतरे और अपनी बैठक में आयके बिराजे । तब गोपीनाथदास ग्वाल ने श्रीगुसाँईजी काँ दंडवत करिके कह्यो, जो-महाराज ! आज श्रीनाथजी की भैंस खोय गई हली सो दूँदन काँ पूछरी की ओर गये हो । तहां कृष्णदास अधिकारी प्रेत भये देखे हैं सो कृष्णदास पीपर के वृक्ष के ऊपर बैठे हैं । कृष्णदास ने सोकाँ भगवत् स्मरण कियो हतो । और

उद्धार तो तारे श्रीगुसाँइजीना हाथ छे केमके ? लीलाभा श्रीचंद्रावलीजीना शाप छे. के प्रेतयोनि थाव. ते कोणु छोडावे ? तेथी यद्यपि श्रीस्वामिनीजीनी सखी ललिता रूप कृष्णदास छे परंतु आगणतुं वचन विचारिने छोडावता नथी. तेथी कृष्णदासे गोपीनाथदास ग्वालने कहुं, के तू भारी चिनती श्रीगुसाँइजीने करले, केमके श्रीगुसाँइजीना कृपा विना भारी गति नथी.

अने प्रिलक्ष्मणी तरङ्ग आगमां आंभाना वृक्षनी नीचे रूपियां सो एक कुलरा मां भरिने गाड्या छे. ते काढीने कुवाना उपरतुं मछोडुं बनावडावी देजे अ श्रीगुसाँइजीने कहुंजे. वणी श्रीनाथजीनी लेस तमे भोगया आव्या छे ते अे घना (आडोनी सघन घरा) मां चरे छे. पछी गोपीनाथदास ग्वाल घनामांथी लेस लधने गोपालपुर आव्या. ते लेस आंधी गोदोहन गाय-लेसतुं कथुं. ते पछी श्रीगुसाँइजी पोते श्रीनाथजीनी सेनआरति करिने अनोसर कराय परवततथी उतर्या अने पौतानी भेडकमां आवीने प्रिराज्या. तयारे गोपीनाथदास ग्वाल श्रीगुसाँइजीने दंडवत करिने कथुं, के महाराज ! आज श्रीनाथजीनी लेस भोवाय गछ हली ते भोगवाने पूछरीनी तरङ्ग गया हता. त्यां कृष्णदास अधिकारीने प्रेत थयेला देज्या छे. कृष्णदास पीपणा

कृष्णदास ने आपसों यह विनती करी हैं, जो-मैं प्रेत हूं, मैंने आपको अपराध कियो है; तासों मोकों प्रेत योनि भई है। आपु कें हाथ मेरो उद्धार है। और बाग में आम के वृक्ष के नीचे कुलरा में रुपया सौ गड़े हैं। सो निकासि के कुँआ को मोहड़ो बनवायवे को कह्यो है। ओर भैंस हू कृष्णदास ने बताया दीनी है, सो हम ले आये हैं। तब श्रीगुसांईजी आपु अपने मन में विचारे जो-कृष्णदास कों बड़ो दुःख है। सो अब याकों प्रेतयोनि में सों छुड़ावने, यह कहिके तत्काल उठिके बाग में पधारे। तब रुपया १००) निकासि के नया अधिकारी कियो हतो, सो वाकों देके कह्यो, जो-ये रुपयान को कृष्णदास वारे कुँआ को मोहड़ो बनवाइयो। ता पाछे श्रीगुसांईजी आपु वाही रात्रि कों असवार होयके मथुराजी पधारे। पाछे प्रातःकाल भये श्रीगुसांईजी आपु अपने श्रीहस्तसों कृष्णदास को क्रिया-कर्म करि, ध्रुवघाट ऊपर श्राद्ध कियो, और कृष्णदास कों प्रेतयोनि छुदाय के दिव्य शरीर करिके लीला में प्राप्त किये। सो बिलछ नाम्हे गिरिराज में वारी, ता द्वार के मुखिया कृष्णदास हैं, सो तहां जायके चिराजे। सो या प्रकार कृष्णदास की लीला-प्राप्ति श्रीगुसांईजी आपु कीये।

भावप्रकाश—तहां यह संदेह होय, जो-श्रीगुसांईजी की कृपा तें

वृक्ष उपर गेहा छे कृष्णदासे भने लगवहस्तभरखु कर्था हुता अने कृष्णदासे आपने आ विनंती करी छे, के हुं प्रेत छुं. में आपना अपराध कर्था छे तेथी भने प्रेतयोनि प्राप्त थछ छे. आपना हुथे भारे उद्धार छे अने आगमां आंभाना वृक्षनी नीचे कुंडलामां सो इपीआ गार्या छे ते डाढीने कुंआतुं भडोडुं अनावराववाते कछुं छे. वणी खेंस पखु कृष्णदासे अतापी दीधी छे ते असे लभ आव्या श्रीमे. त्यारे श्रीगुसां-इछु पोते पोताना मनमां विचारे, के कृष्णदासने अहु दुःख छे हुये अने प्रेतयोनि-सांथी छेडाववा. अम कहीने तत्काल उठीने आगमां पधार्था. त्यारे इपीआ १००) डाढीने नयो अधिकारी कर्था हुतो अने दधने कछुं, के आ इपीआथी कृष्णदासवाणा कुंआतुं भडोडुं अनावराववे. ते पडी श्रीगुसांइछु पोते अने रात्रिमे असवार थछने मथुराछ पधार्था. पडी प्रातःकाल थये श्रीगुसांइछुमे पोते पोताना श्रीहस्तथी कृष्ण-दासतुं क्रिया-कर्म करी ध्रुवघाट उपर श्राद्ध कर्था अने कृष्णदासनी प्रेतयोनि छेडावीने दिव्य शरीर करीने लीलामां प्राप्त कराव्या. ते बिलछु सामे गिरिराजमां वारी छे ते द्वारना मुखिया कृष्णदास छे त्यां जछने चिराव्या. आ प्रकारे कृष्णदासनी लीलाप्राप्ति श्रीगुसांइछुमे पोते करी.

उद्धार न भयो ? सो आपु मथुराजी पधारे और ध्रुवघाट ऊपर श्राद्ध किये ? सो कृपातें (कहा) श्राद्ध अधिक है ? तहां कहत हैं, जो—गोपीनाथदास ग्वाल कृष्णदास कों प्रेत भये देखिके आये । सगरे सेवक ब्रजवासीन के आगे गोपीनाथदास ग्वाल नें श्रीगुसांईजी तें कह्यो, जो—कृष्णदास प्रेत भये हैं । सो आपु सों बिनती करी है, जो—आप मोकों प्रेतयोनि सों छुड़ावो । जो—श्रीगुसांईजी चाहें तो रंचक मन में विचारे तें छुटकारो होय । परंतु पाछे जो सेवक ब्रजवासी कोई प्रेत होय सो श्रीगुसांईजी सों कहे, जो—आपु छुड़ावो । सो तत्र न छुड़ावें तो दोषबुद्धि होय, तब जीव को विगार होय । तासों श्रीगुसांईजी आपु श्रीमथुराजी में पधारि के ध्रुवघाट ऊपर श्राद्ध कियो, सो या मिष तें छुड़ाये । सो सबन ने जानी, जो—ध्रुवघाट को श्राद्ध एसो ही है, सो यह महिमा बढ़ाये । सो अपुनो महात्म्य काल—कठिनता जानि छिपाये । सो याको कारन यह है । और दूसरो कारन यह है, जो—कृष्णदास ऐसे भगवदीय हते जो इनके कोटानकोटि पुरुषान को उद्धार होय, सो काहेतें ? जो—श्रीभागवत में नृसिंहजी तें प्रह्लाद ने कह्यो है, जो—महाराज ! मेरे पिता को उद्धार होय, तब श्रीनृसिंहजी कहे, जो—जा कुल में भगवद्भक्त होइ सो वाके इकीस पुरुषा तरे । तासों तुम संदेह क्यों करत हो ? सो प्रह्लादजी तो मर्यादाभक्त भये, और कृष्णदासजी पुष्टिमागीय भगवदीय भये । सो इनके तों

भावप्रकाश—त्यां ओ स'देह थाय, के श्रीगुसांईजीनी कृपाथी उद्धार न थयो ? ते पोते मथुरा पधार्यां अने ध्रुव घाट उपर श्राद्ध क्युं ? ते कृपाथी शु' श्राद्ध अधिक छे ? त्यां कहे छे, के गोपीनाथदास ग्वाल कृष्णदासने प्रेत थयेला नोधने आंव्या. यथा सेवके ब्रजवासीओनी आगण गोपीनाथदास ग्वाले श्रीगुसांईजीने क्युं, के कृष्णदास प्रेत थया छे तेमणे आपने बिनती करी छे के आप अने प्रेतयोनीथी छोडावो. तेथी श्रीगुसांईजी आडे तो रंचक मनमां विचारे तो छुटकारो थाय. परंतु पछी जे सेवक ब्रजवासी को छे प्रेत थाय तो श्रीगुसांईजीने कहे, के आप छोडावो. त्यारे न छोडावे तो दोष बुद्धि थाय. त्यारे लवने अगाड थाय. तेथी श्रीगुसांईजीओ पोते 'श्रीमथुरा'मां पधारिने ध्रुव घाट उपर श्राद्ध क्युं. ओ अहाने छोडाव्या. तेथी यथाओ नोधुं के ध्रुव घाटनु' श्राद्ध ओवुं छे. आ महिमा पधारी अने 'पितातु' माहात्म्य काल—कठिण नोधने हांक्युं. ओतुं कारण आ छे. गीनुं कारण ओ छे के कृष्णदास ओवा भगवदीय हुता के ओभना तो कोटान कोटी पुरभाओनो उद्धार थाय केभके श्रीभागवतमां श्रीनृसिंहजीने प्रकृताहे क्युं, के महाराज ! मारा पितानो उद्धार थाय. त्यारे श्रीनृसिंहजी कहे, के जे कुलमां भगवद्भक्त थाय तेना ओकवीश पुरणा तरे तेथी तमे स'देह केभ करे छे ? ते प्रकृताहे तो मर्यादा भक्त थया अने कृष्णदासजी तो पुष्टिमागीय भगव-

कोटानकोटि पुरुषान को ऊद्धार है । परंतु श्रीआचार्यजी महाप्रभुन के संबन्ध विना लीला में प्रवेश न होय । तासों कृष्णदास के मिष करि सृष्टि में मुक्त किये । सो काहे तैं ? जो-कृष्णदासजी, श्रीगुसांईजी, सगरो श्रीगोवर्द्धनधर को परिकर अलौकिक है । सो यहां ईर्ष्या नाहीं है । सो भूमि पर हू भगवद्लीला जानि कहनों, सुननों ।

सो या प्रकार कृष्णदास की वार्ता महा अलौकिक है । तासों श्रीगुसांईजी कहे, जो-कृष्णदास ने रासादिक कीर्तन ऐसे अद्भुत किये सो कोई दूसरे सों न होय । और श्रीआचार्यजीके सेवक होयके सेवा हू ऐसी करी, जो-दूसरे सों न बनेगी, और श्रीनाथजी को अधिकार हू ऐसी कियो जो दूसरे सों न होयगो । सो या प्रकार श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुखसों कृष्णदास की सराहना किये । सो वे कृष्णदास अधिकारी श्रीआचार्यजी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते । जिनके ऊपर श्रीगोवर्द्धनधर सदा प्रसन्न रहते । तातें इनकी वार्ता को पार नाहीं । तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है सो कहां तांई कहिए ॥८४॥

इति श्री चौरासी वैष्णवन की वार्ता श्रीगोकुलनाथजी प्रगट किये
ताको भाव श्री हरिरायजी कह्यो, सो संपूर्णम् ।

दीय थाया. तो ऐमना तो कोटान कोटी पुरभाओनेो उद्धार छे परंतु श्रीआचार्यल महाप्रभुलना संबन्ध विना लीलाभां प्रवेश न थाय. तेथी कृष्णदासना मिष करी सृष्टिभां मुक्त कर्या. केमके कृष्णदासल, श्रीगुसांईल, जधे श्रीगोवर्द्धनधरनेो परिकर अलौकिक छे. अही' ईर्ष्या नथी. तेथी भूमि उपर पण भगवद् लीला जाणी कडेवु' सांवाणवु'.

या प्रकारे कृष्णदासनी वार्ता महा असौकिक छे. तेथी श्रीगुसांईल कहे के कृष्णदासे रासादिक कीर्तन ऐवां अद्भुत कर्या, के भीजथी न थाय अने श्रीआचार्यलना सेवक थधने सेवा पण ऐवी करी जे भीजथी न अने अने श्रीनाथलनो अधिकार पण ऐवो कर्या के भीजथी न थाय. या प्रकारे श्रीगुसांईलजे पोते श्रीमुखथी कृष्णदासनां वयाणु कर्या. जे कृष्णदास अधिकारी श्रीआचार्यलना ऐया कृपापात्र भगवदीय हुता. ऐमना उपर श्रीगोवर्द्धनधर सदा प्रसन्न रहेता. तेथी ऐमनी वार्तानो पार नथी, तेथी ऐमनी वार्ता अनिर्वचनीय छे, ते कर्यां सुधी कहीजे ? वार्ता ॥ ८४ ॥

इति श्री चौरासी वैष्णवन की वार्ता श्रीगोकुलनाथलजे प्रगट करी
तेनो भाव श्रीहरिरायलजे कह्यो ते संपूर्णम् ।

* राग-बिहाग *

★

दृढ इन चरनन केरो भरोसो, दृढ० ॥ टेक ॥
श्रीवल्लभ नखचंद्र छटा बिना सत्र जगमांझ अंधेरो ॥ १ ॥
साधन और नहीं या कलि में जासों होत निबेरो ।
'सूर' कहा कहे द्विविध आंधरो बिना मोलको चैरो ॥ २ ॥



(सचित्र)

२५२ वै. की वार्ता (तीन जन्म की भावनावाली)

तीन खंड के २८)

मिलने का पता :—(१) मोरवाला जीन, डभोई.

(२) निरंजनदेव शर्मा, बंगालीघाट, मथुरा.

